सरोज-सर्वेक्षण

[आगरा विश्वविद्यालय की पी एच० डी० उपाधि के लिए स्वीकृत, हिन्दी साहित्य के इतिहास के प्रमुखतम सूत्र शिवसिंह 'सरोज' के कवियो विषयक तथ्यो एव तिथियो का विवेचनात्मक और गवेषणात्मक परीक्षण]

डॉ० किशोरीलाल गुप्त
प्राचार्य, हिन्दू डिग्री कालेज,
जमानियाँ, गाजीपुर।

हिन्दुस्तानी एकेडेमी
इलाहाबाद

प्रकाशक—
हिन्दुस्तानी एकेडेमी,
इलाहाबाद

प्रथम संस्करण, मार्च १९६७
मूल्य २५.०० रु०

मुद्रक—
आर सी राही,
वीनस आर्ट प्रेस,
३६५ मुट्ठीगंज, इलाहाबाद।

समर्पण

सेंगर जी,

आपने आज से ८८ वर्ष पहले 'शिवसिंह सरोज' का प्रणयन उस समय किया था, जब कि साहित्यकारो के पीछे न तो सस्थाओ का बल था, न सरकार की अनुदानमयी कृपादृष्टि थी, न अह-तुष्टि के लिए प्रचार के साधन थे और न सामग्री की प्रचुरता ही थी। तब से आज तक आपका उक्त ग्रन्थ हिन्दी के अनुसन्धित्सुओ के लिए प्रकाश-स्तम्भ रहा है। आपने उस युग मे स्वकीय स्वतन्त्र-चेतना से जिस महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ की रचना की, उसमे अनेक त्रुटियो का रह जाना असम्भव नही था। कुछ त्रुटियाँ आपसे हुईं, कुछ आपके प्रकाशको ने सरोज के तृतीय सस्करण की रूपरेखा बदलकर उत्पन्न कीं, और कुछ यारो की समझ की बलिहारी ने पैदा की। मैने 'सरोज-सर्वेक्षण' मे यथाशक्ति उन त्रुटियो के निरसन का प्रयास किया है। यह कार्य छिद्रान्वेषण की दृष्टि से नहीं हुआ है, बल्कि इसका उद्देश्य आपकी स्वर्गीय आत्मा को सन्तोष प्रदान करना है। जिस लक्ष्य से आपने 'सरोज' का प्रणयन किया था, 'सर्वेक्षण' उसी लक्ष्य पर अग्रसर हुआ है। अपनी सम्पूर्ण श्रद्धा से मै यह 'सर्वेक्षण' आपके चरणो मे अर्पित कर रहा हूँ, क्योकि एक तो इसके द्वारा मै एक प्रकार से ऋषि-ऋण से उऋण होने का प्रयास कर रहा हूँ, दूसरे मेरे मन के किसी कोने मे यह आशा भी कहीं छिपी हुई है कि आज से ८८ वर्ष बाद, जब सामग्रियो का अनन्त भण्डार हिन्दी वालो के सम्मुख प्रस्तुत हो गया रहेगा, हमारी राष्ट्र-भारती हिन्दी जब पूर्ण प्रफुल्ल हो उठेगी, तब कोई शोधी-सुधी मेरे 'सर्वेक्षण' की भी भ्रान्तियो का सम्यक् निरसन करेगा और मेरी ही परम्परा पर चलकर वह ग्रन्थ मुझे ही समर्पित करेगा।

पितृपक्ष स० २०२३

किशोरीलाल गुप्त

आत्म-परिचय

औध देसवासी, पुरी काथा को निवासी, जो है—

एक सुखरासी, दूजी कासी गति जाल के।

सभु कला'ति प्रकासी, दास शिव अविनासी,

पाप पुञ्ज पग नासी, मुक्ति दासी जनपाल के।

भृङ्गी वस जाए, छत्री सेंगर कहाए,

रनजीत सुत गाए, नीति विपुल विसाल के।

चाकर महारानी[1] के, किंकर शिवदानी के,

नाम शिवसिंह, हम कवि चन्दभाल[2] के।

—शिवसिंह सेंगर

---

[1] महारानी विक्टोरिया।

[2] चंदभाल—गोला गोकर्णनाथ मे शिवसिंह द्वारा बनवाए गए शिवालय मे स्थापित शिव-मूर्ति का नाम।

प्रकाशकीय

हिन्दी साहित्य का इतिहास प्रस्तुत करने वाले ग्रन्थो मे शिवसिंह सरोज का स्थान अन्यतम है। १९वी सदी के उत्तरार्द्ध मे हिन्दी साहित्य के इतिहास को कई विद्वानो ने लिपिवद्ध करने की चेष्टा की थी, जिनमे सरोज के पूर्ववर्ती फ्रेन्च विद्वान गर्सा द तासी (इस्त्वार द ल लितरेत्यूर ऐंदुई ए ऐंदुस्तानी), महेशदत्त (भाषा काव्य सग्रह) तथा मातादीन मिश्र (कवित्त रत्नाकर) का नाम उल्लेखनीय है। किन्तु जिस विशाल पैमाने पर श्री शिवसिंह सेंगर ने अट्ठासी वर्ष पूर्व शिवसिंह सरोज नामक इतिहास ग्रन्थ की रचना की थी, वह आगे चलकर साहित्य के इतिहास के लिए अमूल्य निधि सिद्ध हुई। पुस्तकालयो, खोज रिपोर्टो और अभिभावको के अभाव मे श्री शिवसिंह सेंगर ने एक हजार के लगभग रचयिताओ के कृतित्व और उनकी जीवनी का वर्णन सरोज मे किया था। वास्तव मे यह एक अद्भुत कार्य था, जो सेंगर जी जैसे मनीषी व्यक्ति द्वारा सम्पन्न हुआ। कालान्तर मे शिवसिंह सरोज के परवर्ती सस्करणो मे अनेक क्षुप्त अश सम्मिलित हो गये और कवियो की तिथियो मे भी उलट-फेर हो गया। इससे हिन्दी साहित्य के इतिहास मे कई भ्रांतियाँ उत्पन्न हुई। ग्रियर्सन और पण्डित रामचन्द्र शुक्ल ने 'शिवसिंह सरोज' से सहायता ली है, किन्तु इसकी भ्रन्तियो का निराकरण ये विद्वान् भी नहीं कर सके। वस्तुत शिवसिंह सरोज के कवियो और उनकी तिथियो पर एक अलग कार्य की अपेक्षा थी, और यह हर्ष का विषय है कि डॉ० किशोरीलाल गुप्त ने 'सरोज" को अपना शोध का विषय बनाकर उसका तुलनात्मक सर्वेक्षण प्रस्तुत किया। डॉ० किशोरीलाल गुप्त का अध्यवसाय और उनकी वैज्ञानिक कार्य-पद्धति स्तुत्य है और वे साधुवाद के पात्र हैं। आगरा विश्वविद्यालय से इस सर्वेक्षण पर डॉ० गुप्त को पी-एच० डी० की उपाधि मिली है।

डॉ० गुप्त के इस ग्रन्थ "सरोज सर्वेक्षण" मे शिवसिंह सरोज मे वर्णित प्रत्येक कवि की कृति और उसकी जीवनी का नये सिरे से सर्वेक्षण किया गया है और सरोज को लेकर जो भ्रान्तियाँ उत्पन्न हो गयी थीं, उन्हे दूर करने की चेष्टा की गयी है।

हमारा विश्वास है, यह ग्रन्थ हिन्दी साहित्य के सुधी पाठको, शोध छात्रो और प्राध्यापको के लिए समान रूप से उपयोगी सिद्ध होगा।

उमाशंकर शुक्ल
सचिव तथा कोषाध्यक्ष

इलाहाबाद
फरवरी १९६७।

वक्तव्य

सम्पूर्ण हिन्दी काव्य की पूर्णता एव विविधता के निदर्शन करने वाले वृहद्काव्यसग्रहो का अभाव मुझे चिरकाल से खटकता रहा है। इस ओर ६ खण्डो मे प्रथम सर्वग्राही प्रयास लाला सीताराम जीने कलकत्ता विश्वविद्यालय के लिए सन् १९२१-२६ ई०मे किया था। किन्तु वे सग्रह न तो अब सुलभ ही हैं और न तो सर्वथा पूर्ण ही। इनमे कवियो की सख्या भी बहुत नही है। इस ओर दूसरा खण्ड-प्रयास हिन्दुस्तानी एकेडेमी के लिये गणेशप्रसाद द्विवेदी ने वीरकाव्य, सन्तकाव्य सूफीकाव्य सम्बन्धित तीन सग्रहो के द्वारा किया। अत दस वर्ष पहले मैंने हिन्दी के सम्पूर्ण काव्य-साहित्य को समाहित करने वाले काव्य संग्रह प्रस्तुत करने की एक योजना बनाई। यह संग्रह, योजना भाषानुसारी थी। सबसे पहले मैंने स्वरुचि की अनुकूलता एवं व्रजभाषा काव्य की प्रधानता के कारण व्रजभाषा मे लिखित काव्य को ही सङ्कलित एवं संरक्षित करने का विचार किया और व्रजकाव्यधारा नाम से निम्नाङ्कित छह भागो में यह सग्रह प्रस्तुत करना प्रारम्भ किया, जो अब समाप्तप्राय है—

१ पूर्व भक्तिकाल — सवत् १५५० से १६४० तक
२ उत्तर भक्तिकाल—सवत् १६४० से १७०६ तक
३ पूर्व रीतिकाल — सवत् १७०६ से १८०० तक
४ उत्तर रीतिकाल—सवत् १८०० से १९०० तक
५ सक्रमणकाल —संवत् १९०० से १९५७ तक
६ आधुनिककाल —सवत् १९५७ से २०१० तक

इस सग्रह के प्रस्तुत करने मे मुझे 'शिव सिंह सरोज' को बार-बार उलटना पडा। ऐसा करते समय मुझे सरोज मे दिये कवियो के परिचय मे अनेक त्रुटियाँ दिखाई पडी। एक ही कवि तीन-तीन, चार-चार कवि के रूपो मे उल्लिखित मिला, अनेक कल्पित कवियो से भेंट हुई, स्त्री

पुरुष के रूप मे दिखाई पडी और सन्-सवत् की भूलें भी अनेक स्थलो पर खटकी। सरोज, हिन्दी साहित्य के इतिहास का प्रमुखतम सूत्र है। इसी के आधार पर ग्रियर्सन ने अपना 'द मॉडर्न वर्नाक्यूलर लिटरेचर ऑफ हिन्दुस्तान' लिखा, जिसका सहारा खोज-रिपोर्टों एव विनोद मे लिया गया। ऐसी स्थिति मे मेरे मन में यह विचार उठा कि सरोज मे कवियो के सम्बन्ध मे दिये तथ्यो एव तिथियो की यथासम्भव जाँच हो जाय, तो हिन्दी साहित्य का इतिहास निर्भ्रान्त हो जाय। मेरे इसी विचार की परिणति यह 'सरोज-सर्वेक्षण' है।

मेरा यह ग्रन्थ तीन भागो मे बँटा है। प्रथम भाग मे १२६ पृष्ठो की भूमिका है, जिसमे सरोज सम्बन्धी सभी आवश्यक सामग्रियाँ एव सूचनाएँ निम्नाङ्कित ६ अध्यायो मे दी गई हैं—

१ परिचय—इसमे सरोज, सरोजकार तथा सरोजकार के पुस्तकालय का परिचय दिया गया है। सरोज के रचना एव प्रकाशन-काल पर भी विचार किया गया है।

२ सरोज का महत्त्व—इसमे सरोज के पूर्ववर्ती तासी एव महेशदत्त तथा मातादीन मिश्र के ग्रन्थो से तथा परवर्ती ग्रियर्सन के ग्रन्थ 'द मार्डन वर्नाक्यूलर लिटरेचर ऑफ हिन्दुस्तान से सरोज की तुलना की गई है। तथा इसकी उपयोगिता एव श्रेष्ठता प्रतिपादित की गई है' हिन्दी-साहित्य का ग्रियर्सन रचित प्रथम इतिहास, सरोज का कितना ऋणी है, यहाँ अनेक। तुलनात्मक तालिकाओ के सहारे पर्याप्त विस्तार से इस पर भी विचार किया गया है।

३ सरोज के आधार ग्रन्थ—इसमे सरोज के आधार ग्रन्थो का परिचय है। जिन ग्रन्थो को मैंने स्वय देखा है, उनका परिचय पर्याप्त विस्तार से दे दिया है।

४ सरोज की भूलें एव इसके एक सुसम्पादित सस्करण की आवश्यकता—इस प्रकरण मे सरोज के प्रमाद एव अज्ञान वश हुई सब प्रकार की भूलो का विवेचन किया गया है और सरोज के एक सुसम्पादित सस्करण की आवश्यकता पर बल दिया गया है।

५ सरोज के सन्-सवत्—यह अध्याय भूमिका के सभी अध्यायो से बडा और महत्त्वपूर्ण है। इसमें सरोज के उ० का रहस्य भेद किया गया है और सिद्ध किया गया है कि सरोजकार का उ० से अभिप्राय उपस्थित है, न कि उत्पन्न, जैसा कि ग्रियर्सन एव उनके अनुयायी खोजरिपोर्टों के निरीक्षक गणो, मिश्र बन्धुओ एव हिन्दी साहित्य के अन्य इतिहास लेखको ने समझ रखा है।

६ सरोज के अध्ययन की आवश्यकता, सीमा विस्तार और प्रमुख सहायक सूत्र

दूसरे खण्ड मे सर्वेक्षण है। यही इस ग्रन्थ का मुख्य अश है। सरोज मे वर्णानुक्रम से १००३ कवियो के जीवन चरित्र दिये गये हैं। इस ग्रन्थ का उद्देश्य प्रत्येक कवि के सम्बन्ध मे

सरोज-दत्त तथ्य एव तिथियो की जाँच करना है, साथ ही यदि खोज मे इन कवियो के सम्बन्ध मे कोई अन्य सूचनाएँ सुलभ हुई हैं तो उनको भी पूर्णता की दृष्टि से एकत्र कर देना है। इस खण्ड मे कवियो के सर्वेक्षण की निम्नाङ्कित पद्धति अपनाई गई है—

१ सबसे पहले प्रत्येक कवि की अपनी ओर से एक क्रमसख्या दी गई है, क्योकि सरोज मे प्रत्येक वर्ण के कवियो का सख्याक्रम अलग-अलग है। क्रम सख्या के आगे तिर्यक् रेखा के उपरान्त एक अन्य सख्या और दी गई है। इस दूसरी सख्या पर कवि की रचनाएँ सरोज के सग्रह-खण्ड मे उदाहृत हैं। सरोज मे उदाहृत कवियो की क्रमसख्या अटूट रूप से दी गई है। जिस कवि की क्रम-सख्या के पश्चात् इस ग्रन्थ मे उदाहरण सख्या नही दी गई है, उसकी कविता सरोज मे उदाहृत नही है।

२ इसके पश्चात् प्रत्येक कवि के सम्बन्ध मे सरोज मे जो कुछ लिखा गया है उसे ज्यो का त्यो अविकल रूप से यहाँ उद्धृत कर लिया गया है। यदि ऐसा न कर प्रत्येक कवि के सम्बन्ध मे यह लिखा जाता कि इस कवि के सम्बन्ध मे अमुक अमुक बाते लिखी गई हैं, तो अधिकाश स्थलो पर अनावश्यक विस्तार हो जाता, क्योकि अधिकाश कवियो के सम्बन्ध मे सरोजकार ने एक-एक, आध-आध पक्ति मे अधिक नही लिखा है। और कतिपय स्थलो पर बिना मूल देखे हुए सन्तोष भी नही हो सकता। लेखक की बात की प्रामाणिकता जाँचने के लिए प्रत्येक कवि के सम्बन्ध मे मूल ग्रन्थ भी उलटने की आवश्यकता पाठक को पड सकती है, अत कवियो का परिचय मूल रूप मे ही दे देना समीचीन समझा गया। इस मूल उद्धरण मे भी प्रत्येक कवि का कोई न कोई सख्या-क्रम है। वह सख्या-क्रम प्रत्येक वर्ण के साथ बदलता गया है और स्वय सरोजकार का दिया हुआ है। कवि-परिचय के पश्चात् सरोजकार ने प्रसङ्गप्राप्त कवि के उदाहरण का पृष्ठ निर्देश भी किया है किन्तु अनावश्यक समझकर यह पृष्ठनिदेश यहाँ छोड दिया गया है।

३ इसके पश्चात् कवि के सम्बन्ध मे सर्वेक्षण प्रारम्भ होता है। यदि उस कवि के ग्रन्थ खोज मे उपलब्ध हुए हैं, तो उनका उल्लेख किया गया है और प्राप्त ग्रन्थो के आगे उन रिपोर्टों का भी निर्देश कर दिया गया है, जिनमे उनके विवरण हैं। पहली सख्या रिपोर्ट के सन् की है तथा दूसरी सख्या उस ग्रन्थ अथवा कवि की है, जिन पर उसके उद्धरण एव परिचय उक्त रिपोर्ट मे दिए गए हैं।

सर्वेक्षण करते समय जो उद्धरण सरोज से दिए-गए हैं, उनका पृष्ठ-निर्देश अनावश्यक समझा गया है। अन्य स्थलो से जब भी कोई उद्धरण दिया गया है, उद्धरण के ठीक नीचे दाईं ओर निर्देश कर दिया गया है। यदि उद्धरण न देकर किसी आधार पर कोई कथन किया गया है, तो उस आधार का निर्देश पाद-टिप्पणी मे कर दिया गया है। विनोद और ग्रियर्सन के आधार

पर जब कोई बात कही गई है, तब विनोद और ग्रियर्सन शब्दो के आगे तुरन्त कोष्टक मे उन ग्रन्थों की सम्बद्ध कविसख्या दे दी गई है। सुविधा की दृष्टि से यत्र-तत्र खोज रिपोर्टों का भी निर्देश सर्वेक्षण के अन्तर्गत ही कोष्टक मे कर दिया गया है।

ग्रन्थ के तृतीय खण्ड मे उपसहार है। इसमे सरोज के तथ्यो एव तिथियो पर भिन्न-भिन्न कवियो के प्रसङ्ग मे सर्वेक्षण के अन्तर्गत जो अलग-अलग विचार प्रकट किये गए है, उन पर सामूहिक रूप से विचार किया गया है और जो भी निर्णय पहले किए गए है, उन पर निष्कर्ष निकाला गया है।

उपसहार के पश्चात् ग्रन्यान्त मे तीन परिशिष्ट हैं। पहले परिशिष्ट मे सरोज के आधार पर हिन्दी साहित्य का सक्षिप्त इतिहास प्रस्तुत किया गया हे। दूसरे मे सहायक-ग्रन्थ-सूची दी गई है। और तीसरे मे अनुक्रमणिका तथा सरोज, ग्रियर्सन एव विनोद के कवियो की कालतुलनात्मक तालिका प्रस्तुत की गई हे। इस तालिका से अन्य अनेक काम भी लिए गए है, जिनका उल्लेख तालिका के ठीक पहले कर दिया गया है।

लेखन सुविधा की दृष्टि से इस ग्रन्थ मे कतिपय स्थलो पर सक्षेपण का भी सहारा लिया गया है। प्रमुख सक्षेपो की सूची नीचे दी जा रही है।

	सक्षिप्त रूप	मूल रूप
१	सरोज	शिवसिंह सरोज
२	विनोद	मिश्रबन्धु विनोद
३	ग्रियर्सन	द मॉडर्न वर्नाक्यूलर लिटरेचर ऑफ हिन्दुस्तान
४	तासी	इस्त्वार द ल लितरेत्यूर ऐंदूई ए ऐंदुस्तानी
५	सभा	नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
६	शुक्ल	आचार्य पण्डित रामचन्द्र शुक्ल
७	खोज-रिपोर्ट	खोज मे उपलब्ध हस्तलिखित हिन्दी ग्रन्थो के विवरण, सभा के लिये उत्तरप्रदेशीय सरकार द्वारा अग्रेजी मे राजकीय मुद्रणालय, इलाहाबाद से प्रकाशित १९००-२५ ई०, और सभा द्वारा हिन्दी मे प्रकाशित १९२६-४० ई०।
८	पञ्जाब-रिपोर्ट	रिपोर्ट आन दी सर्वे फार हिन्दी मैनुस्क्रिप्ट्स इन द पञ्जाब, सभा के लिये उत्तरप्रदेशीय सरकार द्वारा प्रकाशित।

९	दिल्ली रिपोर्ट	रिपोर्ट ऑन द सर्वे फार हिन्दी मैनुस्क्रिप्ट्स इन द डेलही प्राविंस, सभा के लिए उत्तरप्रदेशीय सरकार द्वारा प्रकाशित।
१०	राजस्थान रिपोर्ट	राजस्थान मे हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थो की खोज, प्रकाशक, प्राचीन साहित्य शोध सस्थान, उदयपुर विद्यापीठ, उदयपुर।
११	विहार रिपोर्ट	प्राचीन हस्तलिखित पोथियो का विवरण, प्रकाशक, विहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना।

ग्रन्थ पर्याप्त वडा हो गया है। इसके दो प्रमुख कारण हैं—एक तो इसमे सरोज, वर्णित १००३ कवियो का सर्वेक्षण किया गया है। यदि एक-एक कवि का सर्वेक्षण एक-एक पृष्ठ भी ले लें तो केवल सर्वेक्षण मे १००० पृष्ठ लग जायँगे। यह पृष्ठ सख्या तभी कम हो सकती थी, जब सर्वेक्षित कवियो की सख्या कम कर दी जाती, परन्तु ऐसा करने से जिस अभीष्ट से ग्रन्थ-रचना मे हाथ लगाया गया था, उसकी पूर्ति सम्भव न थी। ग्रन्थ विस्तार का दूसरा कारण इसमे कवियो के सरोज लिखित परिचय का ज्यो का त्यो उद्धृत कर देना है। इस उद्धरण से ही लगभग १०० पृष्ठ वढ गये है। यह परिचय मूलग्रन्थ के १२५ वडे पृष्ठो मे आया है। प्रयत्नपूर्वक इस ग्रन्थ की पृष्ठसख्या परिसीमित की गई है। अनावश्यक विस्तार से वचने का निरन्तर सायास प्रयास किया गया है। फिर भी ग्रन्थ इतना वडा हो गया तो विषय के साथ न्याय करने की दृष्टि से ही।

इस ग्रन्थ के द्वारा मैंने हिन्दी साहित्य के इतिहास को निर्भ्रान्त बनाने मे अपना यथाशक्य योग दिया है। अभी तक सरोज मे दिये सवत् उत्पत्तिकालसूचक समझे जाते रहे है, किन्तु मैंने पूर्ण प्रमाणित कर दिया है कि सरोजकार ने अपनी समझ से उपस्थितिकाल दिया है। अभी तक सामान्य धारणा यह भी रही है कि सरोज के सभी सन्-सम्वत् विक्रम सवत् हैं, पर मैंने यह भी प्रमाणित कर दिया है कि इनमे से कुछ सवत विशेषकरत् अकवरी दरवार से सम्वन्धित कवियो के सवत्, ईस्वी-सन् है। सरोजकार ने यद्यपि अपनी समझ से उपस्थितिकाल दिया है, पर उनके सभी सवत् शुद्ध नही है। इनमे कुछ तो पूर्णतया अशुद्ध हैं और कुछ निकटतम जन्मकाल सिद्ध होते है।

सन्-सम्वत् सम्वन्धी इन खोजो के अतिरिक्त विभिन्न कवियो के सम्वन्ध मे तथ्य सम्वन्धी सैकडो छोटी-वडी नयी वाते मैंने इस ग्रन्थ मे प्रस्तुत की है। मैंने प्रमाणित किया है कि सरोज मे वर्णित एक ही नाम के अनेक कवि वस्तुत एक ही हैं, यथा—अनन्य नाम के चारो कवि और सुखदेव नाम के तीनो कवि, जिसे सरोज मे पुरुष समझा गया है वह स्त्री हैं यथा, ताज और सुजान। सरोज

मे जो एक कवि है, वस्तुत वह दो है यथा, नाभादास और नारायणदास अभी तक एक ही कवि के दो नाम समझे जाते रहे है, पर ये वस्तुत दो भिन्न-भिन्न कवि हैं। इसी प्रकार सरोज मे वर्णित मतिराम एक नही दो है। एक प्रसिद्ध भूषण के भाई हैं, दूसरे छन्दसार के रचयिता है। जिन्हे सरोज मे कवि समझ लिया गया है, वे वस्तुत कवि ही नही है, यथा—तीखी, तेही, लक्ष्मण-शरणदास आदि। सरोजकार ने जो भूलें की है, उनमे से अनेक का मूल उत्स मैंने खोज निकाला है, यथा अनन्यदास चकदेवा वाले को अक्षर अनन्य से भिन्न एव उनसे लगभग पॅच सौ वर्ष पूर्ववर्ती समझने की भूल सरोजकार की कोई मौलिक भूल नही है। 'प्रेम रतन' की रचयित्री, राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द की पितामही, रतन कुँवरि से भिन्न, काशीवासी एक अन्य रतन ब्राह्मण कवि की उद्‌भावना की भूल भी इनकी अपनी नही है। दोनो भूलो का मूल-स्रोत महेशदत्त जी का 'भाषाकाव्य सग्रह' है। भूषण के सम्बन्ध मे जो वितण्डावाद श्रीभगीरथ दीक्षित की कृपा से उठ खडा हुआ था, उसका भी निराकरण इस ग्रन्थ मे पूर्णरूप से कर दिया गया है।

तथ्य एव तिथियो सम्बन्धी सभी नवीन शोधें विस्तृत रूप से तो अलग-अलग कवियो के सर्वेक्षण मे ही देखी जा सकती हैं। किन्तु फिर भी सामूहिक रूप से इन पर एकत्र विचार उपसहार मे देखा जा सकता है।

इस ग्रन्थ के प्रणयन मे जिन-जिन लोगो की सहायता मुझे मिली है, उनके प्रति आभार प्रकट करना मेरा परम पुनीत कर्त्तव्य है। सर्वप्रथम मैं डॉ० छैलविहारी लाल गुप्त, 'राकेश', डी० फिल्, डी० लिट्०, अध्यक्ष हिन्दी विभाग काशी नरेश राजकीय महाविद्यालय ज्ञानपुर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करता हूँ, जिन्होने मेरे इस शोधनिबन्ध का निर्देशक होना स्वीकार कर मेरा पन्थ प्रशस्त किया। तदुपरान्त मैं प्रो० पण्डित विश्वनाथप्रसाद मिश्र, हिन्दी विभाग, हिन्दू विश्वविद्यालय,काशी के प्रति अत्यन्त श्रद्धापूर्वक नतमस्तक हूँ, जिन्होंने समय-समय पर मेरी बातें ध्यानपूर्वक सुनी, उपयुक्त सुझाव दिये, यही नहीं, समय-समय पर यथासम्भव उपयुक्त सामग्री भी प्रदान की और निरन्तर मेरे प्रेरक बने रहे। नागरी प्रचारिणी सभा काशी के खोजविभाग के अन्वेषक दौलतराम जुयाल के प्रति भी मैं कृतज्ञ हूँ, जिन्होने सभा की खोजरिपोर्टों के अप्रकाशित सक्षिप्त विवरण को सुलभ करने मे सदैव सप्रीति तत्परता दिखलाई। इस अवसर पर यदि मैं स्वर्गीय डॉ० श्यामसुन्दर दास की उस सूझ-बूझ का, जिसके कारण उन्होने सभा द्वारा हस्तलिखित हिन्दी-ग्रन्थो की खोज का कार्य प्रारम्भ कराया, सादर साभार स्मरण न करूँ तो घोर कृतघ्नता होगी, क्योकि खोज रिपोर्टो के अभाव मे मेरा यह कार्य कदापि अग्रसर नही हो सकता था। अन्य सुधी साहित्यकारो के प्रति भी मैं कृतज्ञ हूँ जिनके ग्रन्थो एव लेखो से मुझे सामग्री सुलभ हुई है।

शिबली कालेज आजमगढ

जुलाई १९५७

किशोरीलाल गुप्त
अध्यक्ष हिन्दी विभाग

विषय-सूची

अध्याय १

परिचय — पृष्ठ १९—३४

भूमिका

परिचय

क शिवसिह सरोज

शिवसिह सरोज के नाम से हिन्दी के प्राय. सभी साहित्य सेवी परिचत है, क्योकि जव भी किसी प्राचीन कवि के सम्वन्ध मे कोई जानकारी किसी शोधी विद्वान् द्वारा प्रस्तुत की जाती हे, तव कवि के सम्वन्ध मे सरोज ने क्या लिखा हे, यह उल्लेख सर्वप्रथम किया जाता है, पर इसके स्वरूप से सभी का परिचय नही है। कुछ लोगो को यह भी भ्रम हो सकता है कि यह सम्भवत हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास है। वात ऐसी नही है। सरोज एक काव्य-सग्रह है। ग्रन्थ के आरम्भ मे वारह पृष्ठो की भूमिका है। इसमे ग्रन्थ लिखने का कारण, आधार ग्रन्थो की सूची, सस्कृत साहित्य-शास्त्र का निर्णय और भाषा काव्य का निर्णय दिया गया है। तदनन्तर ३७६ पृष्ठो मे काव्य-सग्रह है। कुल ८३९ कवियो की कविताये कवि-वर्णानुक्रम से सकलित है। काव्य-सग्रह मे पहले कवि का नाम दिया गया है,फिर उसका उदाहरण। यहा कवि सख्या अटूट रूप से १ से लेकर ८३९ तक दी गई है। ८०७ एव ८१६ सख्याये प्रमाद से छूट गई है, पर ८११ और ८१८ सख्याये दुहरा भी उठी हे, अत. उदाहृत कवियो की सख्या मे कोई अन्तर नही पडता। काव्य-सग्रह के अनन्तर १२५ पृष्ठो मे कुल १००३ कवियो के जीवन-चरित्र दिये गए हे। जीवन चरित्र भी कवि-वर्णानुक्रम से ही है। यहा एक-एक वर्ण के कवियो की क्रम सख्या अलग-अलग दी गई है। सग्रह खड मे कवियो का जो क्रम है, वही क्रम जीवन-चरित्र-खण्ड मे नही है। जीवन-चरित्र-खण्ड मे ८३९ मे से ८३३ कवियो के जीवन-चरित्र आ गए है। सुजान की कविता ७३० और ७६७ सख्याओ पर दो वार उदाहृत हो गई है। निम्नाकित ५ कवियो की रचनाये उदाहृत है, पर इनके जीवन चरित्र नही दिए गए है —

(१) औसेरी वन्दीजन अवभेश (? अवध) वासी, उदाहरण २० सख्या पर, एक कवित्त भँडोआ सम्वन्धी।

(२) वलराम, उदाहरण ४७० सख्या पर, एक शृगारी कवित्त।

(३) राम जी कवि (२), उदाहरण ६३६ सख्या पर, दो शृगारी कवित्त।

(४) लाल साहव महाराज त्रिलोकीनाथ सिह, द्विजदेव महाराज मानसिह वहादुर के भतीजे और जा-नशीन, भुवनेश कवि, उदाहरण सख्या ६९४ पर, उदाहरण भुवनेश भूषण नामक ग्रन्थ से दिए गए हैं, दो शृगारी सवैए एवम् एक कवित्त उद्धृत है।

(५) सीताराम त्रिपाठी पटनावाले, सख्या ७९८ पर उदाहृत, गगास्तुति-सम्वन्धी एक कवित्त उद्धृत है।

ख शिवसिह सेगर

डलमऊ निवासी महानन्द वाजपेयी[१] ने शिव पुराण[२] का विशद अनुवाद किया था। वाजपेयी

---

१ देखिए इसी ग्रन्थ मे महानन्द वाजपेयी, सख्या ६९९

२ खोज रिपोर्ट १९२३, २९२ ए

जी की मृत्यु सम्वत् १६१६ मे हुई। १६२६ विक्रमी मे यह ग्रन्थ शिवसिंह सेगर के हाथ लगा। उन्होंने इस ग्रन्थ का उर्दू अनुवाद करके प्रकाशित कराया एवम् वाजपेयी जी वाले भाषा अनुवाद मे भी यत्र-तत्र सशोधन किया। इस ग्रन्थ की पद्य-बद्ध भूमिका भी लिखी। इसमे इन्होने यह सारी सूचना दी है, साथ ही अपना एवम् अपने पिता का परिचय भी दिया है। इस परिचय के अनुसार यह काँथा के रहने वाले थे। काँथा लखनऊ से १० कोस दक्षिण एक गाव है। शिवसिंह के पिता रणजीत सिंह यही के राजा (ताल्लुकेदार) थे —

लखनऊ ते कोस दस दच्छिन बसे एक ग्राम
महावीर विराजही जहँ कहत काँथा नाम
वश शृगी शान्ता जहँ ऊर्वीपति साज
धर्म धर छत्री विराजैं विधा से द्विजराज
करत रच्छा जनन की जहँ शूल पाणि महेश
मम पिता हैं तहँ भूमिपति रणजीत सिंह नरेश

शिवसिंह जी अपने पिता के सम्बन्ध मे पर्याप्त जानकारी निम्नाकित पक्तियो मे देते है :—

धर्म कर्ता शत्रु हरता शास्त्रवेत्ता दानि
प्रजा भर्ता दया धर्ता विजय जस की खानि
रिपु भये वनचारी, सुखारी मित्र जाके सर्व
सग्राम मे जिन शत्रु को सब टारि डार्यो गर्व
मारतड द्वितीय लौं है प्रगट तेज अखण्ड
अनल से प्रज्वलित है भुजदड चड प्रचड
यदपि सेवक भृत्य गन बहु रहत निसि दिन पास
तदपि शिव पर पुष्प शैलुप टारि अरचत खास
श्रवन वेद पुरान कौ अस्मरन गौरीकन्त
रन त्यागि सत्यहि धरत निसिदिन मनहुँ योगी संत

रणजीत सिंह के यहा वन्दीजन गुणानुवाद किया करते थे —

भक्ति भूसुर वृन्द को गोविन्दपद रति ओज
गाय गाय सुनावही जस गाय वदी रोज

इन्ही वन्दीजनो मे से एक विश्वनाथ हुये है, जिनका उल्लेख सरोज मे हुआ है।[1] उन्होने निम्नाकित कवित्त रणजीत सिंह की प्रशस्ति मे लिखा है।

मनमथ दिलीते लखनऊ ते खैरखाही
लन्दन ते खुलत विसाति विना सक से
भार भुज दडन सँभारे भुव मडल कौ
जाको धाक धाम धराधीश धकाधक से
हाँक सुने हालत हरीफ नाक दम होत
कहे 'विश्वनाथ' अरि गिरे जाके मक्से

[1] देखिए यही ग्रन्थ—विश्वनाथ वन्दीजन, सख्या ८४७

कहाँ लौ सराही तेरे उर की उमाही
भूप रणजीत सिंह तेरे पातसाही नक्शे

सरोज मे भी विश्वनाथ के उदाहरण मे यही छन्द उद्धृत है।

शिवसिंह ने इस प्रसग का एक और कवित्त उद्धृत किया है, जिसमे कवि छाप नहीं है :—

देवन अदेव भूत भैरवादि बचिजात,
बचिजात जच्छ कूष्माण्ड की कटक ते
बचि जात हूलहू, त्रिशूलहू से बचिजात,
बचिजात साप शूल सूल की सपट ते
बचिजात आधि व्याधि, घातहू से बचिजात,
बचिजात वर व्याल व्याघ्र की डपट ते
बचिजात यम सों जमाति जोरि जमन की,
बचत न अरि रनजीत की झपट ते

रणजीत सिंह के बादशाही नक्शे थे। इनके यहा दरबार मे सदैव गुणीजन रहा करते थे। इनमे से प्रमुख व्यक्ति ये हैं :—

(१) वेनी शुक्ल शास्त्री, राजगुरु, (२) श्री सीताराम मिश्र, राजवैद्य (३) मोहन लाल त्रिपाठी, राज ज्योतिषी (४) ईश्वरी शुक्ल, पौराणिक (५) भोलानाथ और (६) गगा अवस्थी, सस्कृत, फारसी, अरबी और अग्रेजी के पडित, इन सबका उल्लेख शिवसिंह जी ने उक्त ग्रन्थ मे इस प्रकार किया है :—

(१) विराजैं जहाँ शास्त्री शुक्ल वेनी
गुरुदेव मम स्वर्ग की है निसेनी
(२) अभय जीव है, है न रोगादि भीता
सुधा से लसैं मिश्र श्रीराम सीता
(३) बडे जोतिषी राजमत्री बली है
मनो भाष्यकर गर्ग से मगली है
महाराज श्रीमान् से मान पायो
रह्यो मान वाके न जो मान लायो
त्रिपाठी गणिक लाल मोहन विराजै
जकी देखि जेहि ज्योतिषी की समाजै
गणित जासु की ब्रह्म लिपि लौं सही है
मनो देह मानुष्य धातै गही है
(४) ज्वलित जाल जनु शेष दूजो विराजै
पुराणज्ञ श्री ईश्वरी शुक्ल आजै
पढे सर्व इतिहास अरु आयुर्वेदै,
लहे युक्ति सो काव्य कोषादि भेदै

(५) दिली मित्र सबके अमी सौं कलामैं
मिया नाथ भोला गहे युग्म वामैं
(६) पढे संस्कृत आरबी फारसी हैं
सबै इल्म अंग्रेज की आरसी है
रह्यो शेष जामें न विद्यांश अगा
अवस्थी है अभिधान विख्यात गगा

शिवसिंह के दो भाई थे, गुरुबक्स सिंह और महीपति —

सर्व मन रंजन, विभंजन दुःख, सज्जन मित्र
दुष्ट दल गंजन, गुणालय, सर्व गुनको चित्र
गर्व हर, हरभक्त, श्री गुरु बक्श मेरे भ्रात
मूर्तिमान त्रिदेव लौं है धरे मानुज गात
ज्येष्ठ श्रेष्ठ दयाल मम भ्राता सहोदर तात
महीपति है नाम मानो मही रवि दरसात

अपने सम्बन्ध मे भी कवि ने एक छन्द लिखा है —

नाम मम शिवसिंह है, शिव चरण रज की खोज
भद्रायु लौं सुख लहत निशि दिन पाय दिल की मौज

सरोज के अन्तर्गत शिवसिंह ने अपने सम्बन्ध मे निम्नांकित विवरण दिया है —

"२१ शिवसिंह सेंगर (२) कांथा, जिले उन्नाव के निवासी संवत् १८७८ मे उ०"

अपना नाम इस ग्रन्थ मे लिखना बडे सकोच की बात है। कारण यह कि हमको कविता का कुछ भी ज्ञान नहीं। इस हमारी ढिठाई को विद्वज्जन क्षमा करे। हमने बृहच्छिवपुराण को भाषा और उर्दू दोनो बोलियो मे उल्था करके छपा दिया है और ब्रह्मोत्तर खण्ड की भी भाषा की है। काव्य करने की हममे शक्ति नहीं है। काव्य इत्यादि सब प्रकार के ग्रन्थो के इकट्ठा करने का बडा शौक है। हमने अरबी, फारसी, संस्कृत आदि के सैकडो अद्भुत ग्रन्थ जमा किये है और करते जा रहे हैं। इन विद्याओ का थोडा अभ्यास भी है।"

जिस बृहच्छिवपुराण का उल्लेख शिवसिंह ने किया है, वह वस्तुत ऊपर वर्णित महानन्द वाजपेयी कृत ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ की भूमिका मे शिवसिंह जी लिखते है —

श्री वाजपेयि गुन गण निधान
विख्यात महानँद सब जहान
तिन्ह भाषा कीन्ही शिव-स्मृत्ति
दोहा चौपाई छंद वृत्त
वास सो कैलाश में, नहि ग्रथ कीन्ह प्रकाश
विस्तार छत्तिस सहस भाषा ग्रन्थ है मति रास
यद्यपि चाविस सहस है शिव कौ पुराण अनूप
तदपि भाषा ह्वै गयो छत्तीस सहस सरूप

उन्नीस सौ छब्बीस सवत मे लह्यो हम ग्रन्थ
हित सर्व जन कौ ठानि कैं करि दीन सलिल सुपन्थ
अर्थात् उर्दू प्रथम उल्था छापि दीन्हौ याहि
जो चहै लेवै ग्रन्थ कौ तिनकाहि दुर्लभ नाहि
पुन भाषा ग्रन्थ मे लखि छिद्र छुद्र अनेक
सुद्ध कीन्हौ तिन्हहि जिय मे धारि भूरि विवेक

शिवसिंह ने सरोज की भूमिका मे अपने एक अन्य ग्रन्थ 'कविमाला' का उल्लेख किया है। इस ग्रन्थ से चौतीस दोहे भी पृष्ठ ५-८ पर उद्धृत किये गये है।

शिवसिंह का महत्व न तो शिव पुराण के कारण है और न ब्रह्मोत्तर खड भाषा एवम् कविमाला के कारण ही हिन्दी साहित्य मे वे एक मात्र 'शिवसिंह सरोज के कारण अविस्मरणीय बने रहेगे।

विनोद[1] के अनुसार शिवसिंह सेगर, काथा, जिला उन्नाव के रहने वाले थे। इनके पिता का नाम रणजीत सिंह एवम् पितामह का बख्तावर सिंह था। शिवसिंह का जन्म सम्वत् १८९० वि० मे और देहावसान ४५ वर्ष की वय मे सम्वत् १९३५ मे हुआ। खोज रिपोर्ट[2] मे भी, सम्भवत विनोद का ही अनुसरणकर, शिवसिंह का जन्मकाल सन् १८३३ ई० दिया गया है।

सरोज मे शिवसिंह ने अपने को "स० १८७८ मे उ०" लिखा है। 'उ०' का अर्थ 'उत्पन्न' करके एवम् इसे विक्रम सम्वत् समझ कर प्रो० रामकुमार वर्मा[3] ने लिखा है कि "शिवसिंह सेगर का जन्म सवत् १८२१ मे हुआ था।" प्रो० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने भी इसे जन्म काल समझ लिया है, यद्यपि अन्यत्र सर्वत्र ही वे 'उ०' का अर्थ उपस्थित मानते है।[4] वास्तविकता तो यह है कि १८७८ ई० सन् है। यह सरोज का प्रकाशन काल है। इस समय कवि 'उ०' अर्थात् उपस्थित था।

ग शिवसिंह का पुस्तकालय

शिवसिंह पुलिस इन्स्पेक्टर थे, फिर भी यह काव्यप्रेमी एवम् कवि थे। अरबी, फारसी, सस्कृत की भी इनकी कुछ जानकारी थी, हिन्दी, उर्दू तो यह जानते ही थे। इन्हे ग्रन्थो के इकट्ठा करने का बडा शौक था। अत इनके पास एक बहुत अच्छा पुस्तकालय हो गया था, जिसमे हस्त-लिखित ग्रन्थ ही अधिकाश मे थे। सम्वत् १९२४ मे जब प० ठाकुर प्रसाद त्रिपाठी, किसुनदासपुर जिला रायबरेली वाले का देहान्त हुआ, तब इनके चारो महामूर्ख पुत्रो ने पिता द्वारा सगृहीत पुस्तको के अठारह-अठारह बस्ते बाट लिये और कौडियो के मोल बेच डाले। शिवसिंह ने भी प्राय. २०० ग्रन्थ इनसे मोल लिये थे। यह उल्लेख इन्होने प० ठाकुर प्रसाद त्रिपाठी के विवरण मे किया है[5]।

शिवसिंह के पुस्तकालय मे अनेक बहुमूल्य ग्रन्थ थे। उनके मरने के पश्चात् उनका पुस्तकालय उनके भतीजे नौनिहाल सिंह के अधिकार मे आया, क्योकि विनोद के अनुसार शिवसिंह अपुत्र मरे थे। मिश्रबन्धुओ ने काँथा जाकर इस पुस्तकालय को देखने का उल्लेख किया है। 'भूषण-विमर्श' के

---

[1] विनोद कवि सख्या २१९९

[2] खोज रिपोर्ट १९२३।२९२

[3] हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, पृष्ठ २, पाद टिप्पणी २

[4] 'शिवसिंह सरोज के सवत्', हिंदुस्तानी, अप्रैल-जून १९४२

[5] देखिए, यही ग्रथ, कवि सख्या ३१२

लेखक भगीरथ प्रसाद दीक्षित ने भी उक्त पुस्तकालय के देखने का उल्लेख उक्त ग्रन्थ मे किया है।[1] नौनिहाल सिंह के अधिकार मे रक्षित अनेक ग्रन्थो के विवरण विभिन्न खोज-रिपोर्टों मे उपलब्ध हैं। निश्चय ही ये सभी ग्रन्थ शिवसिंह के पुस्तकालय मे है। शिवसिंह के पुस्तकालय की पूर्ण छानबीन कभी नहीं हुई, यदा-कदा कुछ पुस्तकों के विवरण ले लिये गये है। सभा को इस पुस्तकालय का सभी पुस्तकों का विवरण एक साथ लेकर अलग रिपोर्ट मे प्रकाशित करना चाहिये था।

शिवसिंह के पुस्तकालय के ग्रन्थो की एक अपूर्ण अनुमित सूची नीचे दी जा रही है।

(अ) वे १५ संग्रह ग्रन्थ जिनमे सरोज के प्रणयन मे सहायता ली गई है :—

(१) कालिदास का हजारा
(२) लाल-गोकुल प्रसाद व्रज का दिग्विजय भूषण
(३) तुलसी कवि कृत कविमाला
(४) श्रीधरकृत विद्वन्मोद तरंगिणी
(५) बलदेवकृत सत्कवि गिरा विलास
(६) भारतेन्दु कृत सुन्दरी तिलक
(७) ठाकुरप्रसाद त्रिपाठी कृत रसचन्द्रोदय
(८) मातादीन कृत कवित्त रत्नाकर
(९) महेश दत्त कृत काव्य-संग्रह
(१०) कृष्णानन्द व्यासदेव कृत राग कल्पद्रुम
(११) दलसिंह कृत संग्रह
(१२) किशोरकृत संग्रह
(१३) ग्वाल कृत संग्रह
(१४) निपट निरंजन कृत संग्रह
(१५) कमंच कृत संग्रह

इनके अतिरिक्त २८ नामहीन संग्रहों से सरोजकार ने सहायता ली, ऐसा उल्लेख उसने भूमिका मे किया है।

(ब) पाच अन्य सहायक ग्रन्थ —

(१) टाड कृत आनल्स आफ राजस्थान (अंग्रेजी)
(२) कल्हण कृत काश्मीर राज तरंगिणी (संस्कृत)
(३) रघुनाथ मिश्र कृत दिल्ली राजतरंगिणी (संस्कृत)
(४) विद्याधर कृत राजावली (संस्कृत)
(५) तुलसी राम अग्रवाल कृत भक्तमाल का उर्दू अनुवाद

(स) सरोज के संग्रह खंड मे उद्धरण देते समय प्राय यह उल्लेख है कि किस ग्रन्थ से उद्धरण दिया जा रहा है। सम्भवत ये सभी ग्रन्थ सरोजकार के पुस्तकालय मे थे। ऐसे २५९ ग्रन्थो की सूची निम्नांकित है —

---

[1] भूषण विमर्श प्राक्कथन २२२

ग्रन्थ	लेखक
१. साहित्य सुधा सागर	अयोध्या प्रसाद वाजपेयी
२ यमक शतक	अब्दुल रहिमान
३ दुर्गा भाषा	अनन्य (२), (अक्षरा अनन्य)
४ स्कन्द विनोद	स्कन्द गिरि
५ अनन्य योग	अनन्य दास चकदेवा (अक्षरा अनन्य ही)
६ रामविलास	ईश्वरी प्रसाद त्रिपाठी
७ ब्रह्म विलास	इच्छा राम अवस्थी
८ कवि प्रिया	केशव दास मिश्र
९ रसिक प्रिया	
१० रामचन्द्रिका	
११. विज्ञान गीता	
१२ राम अलंकृत मजरी पिंगल	
१३. भ्रमरगीत	केशव राम
१४ रसिक रसाल	कुमार मणि भट्ट
१५. रस कल्लोल	करण भट्ट } दोनो एक ही कवि हैं।
१६ साहित्य चन्द्रिका	करण ब्राह्मण
१७. किशोर सग्रह	किशोर
१८ वधूविनोद	कालिदास त्रिवेदी
१९ विनोद चन्द्रोदय	कवीन्द्र उदयनाथ
२०. कवीन्द्र कल्पलता	कवीन्द्राचार्य सरस्वती
२१ चित्र चन्द्रिका	काशिराज कवि, बलवान सिंह
२२ दोहावली रतनावली	कोविद कवि प० उमापति
२३. नखशिख	कलानिधि (२), श्रीकृष्ण भट्ट
२४ भागवत भाषा	कृपाराम ब्राह्मण, नरैनापुरवाले
२५ समय बोध	कृपाराम, जयपुरवाले
२६ मदनाष्टक	खानखाना अब्दुल रहीम
२७. बरवै	
२८ लक्ष्मण शतक	खुमान
२९. नायिका भेद	
३० भूषण दाम	खडन
३१ कुंडलिया	गिरिधर कविराज
३२. भारती भूषण	गिरिधर बनारसी
३३ काव्य कला निधि	गुमान मिश्र, साडीवाले
३४ कर्णाभरण	गोविन्द कवि
३५ कृष्ण चन्द्रिका	गुमान कवि, बुन्देलखडी

३६ उपसतसैया	गगाधर (२)
३७ गोपाल पचीसी	गोपाल कायस्थ, रीवावाले
३८ यमुना लहरी	ग्वाल
३९ चेत चन्द्रिका	गोकुल नाथ, बनारसी
४० ग्रन्थ साहब नाम ग्रन्थ	गुरु गोविन्द सिंह
४१. वृत्तहार पिंगल	गजराज उपाध्याय बनारसी
४२ वाग् मनोहर पिंगल	गुरुदीन पाडे
४३ पृथ्वीराज रायसा पद्ममावती खड ४४ ,, ,, आल्ह खड ४५ ,, ,, दिल्ली खड	चद वरदायी
४६ भारत दीपिका ४७ शृगार सारावली	चैन सिंह खत्री, उपनाम हरचरण
४८ छद विचार पिंगल ४९ काव्य विवेक ५० रामायण ५१ कवि कुल कल्पतरु	चिन्तामणि
५२ पथिक बोध ५३ काव्यभरण ५४ चन्दन सतसई ५५ केशरी प्रकाश ५६ कल्लोल तरगिणी ५७ शृगार सार	चन्दन राय
५८ भारत भाषा	चिरजीव गोसाई
५९ अश्व विनोदी	चेतन चन्द
६० ज्ञान स्वरोदय	चरण दास
६१ मनोज लतिका	
६२ देवी चरित्र सरोज ६३ त्रिदीप	क्षितिपाल, राजा माधोसिंह, अमेठी
६४. कवि नेह पिंगल ६५ पिंगल	छेदी राम
६६ साहित्य सुधा निधि	जगत सिंह बिसेन, देउतवाले
६७ अलकार निधि	
६८. नीति विलास	राजा युगुल किशोर भट्ट, दिल्ली
६९ राम चन्द्रिका तिलक	जानकी प्रसाद पँवार
७०. छदसार पिंगल	जानकी प्रसाद बनारसी
	जयकृष्ण कवि

७१ शृगार शिरोमणि ७२ शालिहोत्र ७३. भाषा भूषण	जयवत सिह, राजा तिर्वा। भाषा भूषण वस्तुत. जोधपुर नरेश यसवत सिंह की कृति है।
७४ वसत पचीसी	जीवनाथ भाट
७५ वरवै नाकिया भेद	जशोदानन्दन
७६ दोहावली	जुगुल प्रसाद चौवे
७७ वैद्य रत्न	जनार्दन भट्ट
७८ रामायण ७९ दोहावली रामायण ८० छदावली रामायण ८१ वरवै रामायण ८२ गीतावली रामायण ८३ कवितावली रामायण ८४. सतसैया ८५ हनुमद्वाहुक ८६ रामशलाका ८७ विनय पत्रिका	तुलसी दास, गोस्वामी
८८ संग्रह माला	तुलसी कवि, यदुराय के पुत्र
८९ सुधानिधि	तोप
९० व्यग्य शतक ९१ नखशिख	तोप निधि
९२ भाषा समर सार	तीर्थराज कवि वैसवारे के
९३ शृगार लतिका	द्विजदेव
९४ गोसाई चरित्र	वेणीमाधवदास
९५ छदोर्णव पिंगल ९६ काव्य निर्णय ९७. शृगार निर्णय ९८. रस साराश	भिखारी दास
९९ प्रेम रत्नाकर	देवीदास
१०० अलकार रत्नाकर	दलपतिराय, वशीधर
१०१ नखशिख	दिनेश
१०२ अनेकार्थ	दिलाराम
१०३ शालिहोत्र	दयानिधि वैसवारे के
१०४ अनयोक्ति कल्पद्रुम	दीनदयाल गिरि
१०५ विनयामृत	देवकवि, काष्ठ जिह्वा स्वामी, बनारसी
१०६ कविकुल कठाभरण	दूलह

१०७ काव्य रसायन	देव
१०८ अष्टयाम	
१०९ षटऋतु	
११० आनन्द रस नायिका भेद	दयानाथ दुबे
१११ योगतत्व	देवदत्त (२)
११२. रमल प्रश्न	धौंकल सिंह वैस
११३ शालिहोत्र	निधान (२)
११४ शान्ति सरसी वेदान्त	निपट निरंजन
११५. अलंकार दर्पण	नाथ (५) हरिनाथ गुजराती ब्राह्मण
११६ सुदामा चरित्र	नरोत्तमदास
११७ रामकृष्ण गुणमाल	नंदकिशोर कवि
११८ ज्ञान सरोवर	नवलदास क्षत्रिय, गूढगाववाले
११९ भक्तमाल	नाभादास
१२० छंदसार पिंगल	नारायणदास वैष्णव
१२१ जगद्विनोद	पद्माकर भट्ट
१२२ काव्य विलास	प्रताप साहि
१२३ मधुप्रिया	पजनेश
१२४. अनेकार्थमाला	प्रेमी यमन। यह अब्दुर्रहमान दिल्लीवाले हैं।
१२५ चक्रव्यूह इतिहास	प्राणनाथ बैसवारे के
१२६ नाभा के भक्तमाल का तिलक	प्रियादास
१२७ शालिहोत्र	प्रधान केशवराय
१२८ सतसई	बिहारी लाल चौबे
१२९ रस चन्द्रिका पिंगल	बालकृष्ण त्रिपाठी
१३० विक्रम विरदावली	विक्रम, राजा विजय बहादुर चरखारी
१३१. विक्रम सतसई	
१३२ मानस शंकावली	बंदनपाठक बनारसी
१३३ सत्कवि गिराविलास	बलदेव बघेल खंडी
१३४ प्रेम दीपिका	वीरकवि, दाऊदादा वाजपेयी, मंडलावाले
१३५ कृष्ण चन्द्रिका	वीर कायस्थ, दिल्ली वाले
१३६ रागमाला	ब्रजनाथ
१३७ नखशिख	बलभद्र मिश्र
१३८ दिग्विजय भूषण	ब्रज, गोकुल प्रसाद
१३९ अष्टयाम	
१४० चित्रकलाधर	
१४१ रसिक विलास	बारन कवि, राउनगढ़वाले।

१४२ प्रबोध चन्द्रोदय नाटक	ब्रजवासी दास } दोनो एक ही कवि है।
१४३ ब्रज विलास	ब्रजवासी दास
१४४ शृंगार सुधाकर	बलदेव अवस्थी
१४५ भाषा कृष्ण खंड	बलदेव दास जौहरी
१४६ रमल सार	बालन दास
१४७ नासिकेतोपाख्यान	भगवती दास ब्राह्मण
१४८ भर्तृहरि शतक भाषा	भगवान दास निरंजनी
१४९ मिश्र शृंगार	भोजमिश्र
१५० भोजभूषण	भोजकवि, बिहारी लाल भाँट चरखारी
१५१ काव्य शिरोमणि	भावन कवि, भवानी प्रसाद पाठक
१५२ शृंगार रत्नाकर	भौन कवि, खेतीवाले
१५३ रामायण सुन्दर काण्ड	भगवन्त राय
१५४ शिवराज भूषण	भूषण त्रिपाठी
१५५ कृष्ण कल्लोल, कृष्णखंड भाषा	मानकवि, बैसवारे के
१५६ माधवी शंकर दिग्विजय	माधवानन्द भारती काशीस्थ
१५७ रामाश्वमेध	मधुसूदनदास, माथुर ब्राह्मण, इष्टकापुरवासी
१५८ ललित ललाम	मतिराम। छंदसार पिंगल
१५९ छंदसार पिंगल	वत्सगोत्री मति राम की रचना है।
१६० रसराज	भूषण के भाई मतिराम की नही।
१६१ रसरत्नावली }	मंडन
१६२. नयन पचासा	
१६३. अर्जुन विलास }	मदन गोपाल सुकुल फतूहाबादी
१६४ वैद्य रत्न	
१६५ चित्र भूषण	मेधा
१६६. छंद छप्पनी पिंगल	मनीराम मिश्र कन्नौजवासी
१६७ भाषा बृहच्छिवपुराण	महानन्द वाजपेयी
१६८ हास्य रस ग्रन्थ	मकरन्द राय भाट, पुवावा
१६९ मनोहर शतक	मनोहर काशी राम, भारतपुरवाले
१७० मानिक बोध	मानिक दास, मथुरावासी
१७१ भाषा गणेश पुराण	मोती लाल
१७२ काव्य संग्रह	महेश दत्त
१७३ शृंगार रत्नावली	मनभावन
१७४ हनुमत छब्बीसी }	मनियार सिंह बनारसी
१७५ भाषा सौन्दर्य लहरी	
१७६ रस सागर	राम कवि (१)
१७७ बरवै नायिका भेद	राम रत्न, गुजराती ब्राह्मण, फर्रुखाबाद

१७८ बृहत् तरंगिणी	राम सहाय, कायस्थ, बनारसी
१७९ राम कलेवा	रामनाथ प्रधान
१८० यमुना शतक	रघुराइ
१८१ नखशिख	रसराज
१८२ विनय पचीसी	राम कृष्ण चौबे, कालिञ्जरवासी
१८३ भाषा महिम्न	रघुनाथ पंडित, शिवदीन, रसूलाबादी
१८४ नृत्य राघव मिलन	राम सखे
१८५ वंशी कल्पलता	ऋषि राम मिश्र, पट्टीवाले
१८६ प्रेम रत्न	रतन कुंवरि। इसी ग्रन्थ से रतन कवि,ब्राह्मण,बनारसी के नाम से भी उद्धरण दिया गया है,जो अशुद्ध है
१८७ हनुमत चरित्र सुन्दर शतक	रघुराज सिंह, रीवां नरेश
१८८ बरवै अलंकार	रसाल कवि, अगने लाल भाट, बिलग्रामी
१८९ निर्णय मंजरी	रघुनाथ उपाध्याय, जौनपुरवासी
१९० फतेहशाह भूषण १९१ फतेह प्रकाश	रतन कवि, श्रीनगर, बुन्देलखण्डी। वस्तुतः यह कवि गढ़वाली है।
१९२ रस मंजरी भाषा	रतन कवि (२) पन्ना वाले
१९३ रूप विलास	रूप साहि कायस्थ
१९४ रसिक मोहन १९५ जगत मोहन १९६ काव्य कलाधर १९७ इश्कमहोत्सव	रघुनाथ बनारसी
१९८ गीत गोविन्दादर्श	राय चन्द्र नागर, गुजराती
१९९ रागमाला	राम दया
२०० भूषण कौमुदी २०१ काव्य रत्नाकर	राजा रणधीर सिंह, सिरमौर, सिंगरामऊ
२०२ प्रस्तार प्रभाकर पिंगल	रसपुञ्जदास
२०३ रस प्रबोध	रसलीन गुलाम नबी बिलग्रामी
२०४ कायस्थ धर्म दर्पण	राम चरण, ब्राह्मण, गणेशपुरवाले
२०५ विष्णुविलास नायिका भेद	लाल प्राचीन
२०६ भाषा राजनीति	लाल कवि (४)
२०७ भागवत भाषा	लोने सिंह, मितौलीवाले
२०८ शिव सरोज	लछिराम, होलपुर वाले
२०९ रस रत्नाकर २१० लघुभूषण २११ गंगा भूषण	लेखराज, नन्दकिशोर मिश्र, गँधौली वाले
२१२ सभा विलास	लाल (५) लल्लू जी लाल

२१३ शालिहोत्र	लाला पाठक
२१४ भुवनेश भूषण	लाल साहब, त्रिलोकीनाथ सिह, भुवनेश, द्विवेदी के भतीजे।
२१५ काव्य सरोज	श्रीपति
२१६ साहित्य सरसी २१७ रसिक प्रिया तिलक	सरदार बनारसी
२१८. सूर सागर २१९ सूर विनय	सूरदास
२२० विद्वन्मोद तरगिणी	श्रीधर, सुब्बासिह ओयलवाले
२२१ कवि विनोद पिगल	श्रीधर मुरलीधर
२२२ काव्य कल्पद्रुम	सेनापति
२२३ अलकार माला	सूरति मिश्र
२२४ भवानी छद	श्रीधर (४) राजपूताना वाले — दोनो एक ही कवि हैं
२२५ रसार्णव	सुखदेव मिश्र, दौलतपुर वाले — दोनो एक ही कवि हैं
२२६ वृत्त विचार २२७ फाजिल अली प्रकाश	सुखदेव मिश्र, कपिला वाले
२२८ रसिक विलास २२९ अलकार भूषण २३०. पिंगल	शिव कवि अरसेला वन्दीजन देवनहवाले।
२३१ रसनिधि	शिव कवि भाट, विलग्रामी
२३२ भूगोल हस्तामलक २३३ इतिहास तिमिर नाशक	शिव प्रसाद, सितारे हिन्द,
२३४ रस रजन	शिवनाथ कवि
२३५ राम विलास रामायण	शम्भुनाथ (२)
२३६ अलकार दीपिका	शम्भुनाथ ब्राह्मण (३) असोथरनिवासी
२३७. वैताल पचीसी २३८ मुहूर्त मजरी	शम्भुनाथ त्रिपाठी (४), डौडियाखेरे वाले।
२३९ वंश वशावली	शम्भुनाथ मिश्र (५), सातनपुरवावाले
२४० सुन्दर शृगार	सुन्दर, ग्वालियरवाले
२४१ रामायण कवित्त	शकर त्रिपाठी, विसवावाले
२४२. वामा मनरजन	सागर कवि
२४३ कुण्डलिया (सतसई का तिलक)	सुल्तान पठान
२४४ रामायण	सहज राम वनियाज पेतैंपुरवाले
२४५ राम तत्व बोधिनी	शिव प्रकाश सिंह, डुमराव
२४६ षटऋतु-वरवै (भाषा ऋतुसहार)	सबल सिंह
२४७ कृष्ण दत्त भूषण	शिवदीन कवि, भिनगावाले

२४८. प्रहलाद चरित्र	सहज राम सनाढ्य बधुवावाले। यह भी सहज राम बनिया ही है।
२४९ स्वरोदय भाषा	श्याम शरण
२५० भारत भाषा	सबल सिंह चौहान। ऋतु सहार का भाषा अनुवाद करने वाले सबल सिंह भी यही है।
२५१ रस कौमुदी	हरिदास कायस्थ, पन्ना निवासी
२५२ छद पयोनिधि	हरिदेव बनिया, वृन्दावनी
२५३ पिगल	हरीराम कवि
२५४ शृगार नवरस	हिरदेश कवि, झासीवाले
२५५ राधा शतक	हटी
२५६ नरेन्द्र भूषण	हरिभान
२५७ सुन्दरी तिलक	हरिश्चन्द्र, भारतेन्दु
२५८ भाषा वृहत्कवि वल्लभ	हरिचरण दास
२५९ छद स्वरूपिणी पिगल	हरिश्चन्द्र बरसानेवाले

(द) सरोज मे कवि परिचय देते समय अनेक कवियो के प्रसग मे उनके कुछ ग्रन्थो के शिव सिंह के पुस्तकालय मे होने का उल्लेख हुआ है। ऐसे कुल ग्रन्थ सख्या मे २३ हैं। इनमे से निम्नाकित ७ ग्रन्थ ऊपर वाली सूची मे नही आ सके है।

१ भाषा भूषण का तिलक	उनियारे के राजा। वस्तुत.
२ बलभद्र के नखशिख का तिलक	ये ग्रन्थ इनके आश्रित मतीराम के है।
३ जजीरा बद	कालिदास
४ हनुमन्नखशिख	खुमान
५ काव्य प्रकाश	चिन्तामणि
६ निरजन सग्रह	निपट निरजन
७ राम रावण युद्ध	मून

इस प्रकार कुल २८६ ग्रन्थो के नाम ज्ञात होते ह। इनमे से ६ सग्रह ग्रन्थ दोहरा उठे है। अत शिव सिंह के पुस्तकालय के, २८० ज्ञात नाम के एवम् २८ अज्ञात नाम के, कुल ३०८ हिन्दी ग्रन्थ हो जाते हैं। शिवसिंह के पुस्तकालय मे कुल इतने ही ग्रन्थ थे, ऐसा न समझना चाहिये। हिन्दी के ग्रन्थो के अतिरिक्त उनके यहा सस्कृत, फारसी, अरबी एवम् उर्दू के भी ग्रन्थ थे। इनका कोई लेखा-जोखा यहा नही किया जा सका है। इनके अतिरिक्त शिवसिंह ने आनन्दघन, ग्वाल, ठाकुर, तोष, देवकी नन्दन, नारायाण राय बनारसी, ब्रह्म (बीरबल) मुबारक एवम् शिवलाल दुबे आदि कवियो के सैकडो फुटकर कवित्तो के अपने पुस्तकालय मे होने का उल्लेख किया है।

घ सरोज की प्रेरणा का स्रोत

सरोज क्यो लिखा गया, इसका उत्तर स्वय शिव सिंह ने सरोज की भूमिका के प्रारम्भ मे इस प्रकार दे दिया है।

'मैंने सम्वत् १९३३ मे भाषा कवियो के जीवन चरित्र विषयक एक दो ग्रन्थ ऐसे देखे, जिनमे

ग्रन्थ-कर्ता ने मतिराम इत्यादि ब्राह्मणो को लिखा था कि वे असनी के महापात्र भाट है। इसी तरह की वहुत सी वाते देखकर मुझसे चुप न रहा गया। मैंने सोचा अव कोई ग्रन्थ ऐसा वनाना चाहिये जिसमे प्राचीन और अर्वाचीन कवियो के जीवन चरित्र, सन्, सम्वत्, जाति, निवास स्थान आदि कविता के ग्रन्थो समेत विस्तार पूर्वक लिखे हो।'

एक ग्रन्थ की एक भूल ने शिवसिंह को प्रेरित किया कि वे एक ऐसा ग्रन्थ लिखे जो ऐसी भद्दी भूलो से न भरा हो। हमारी कुतूहल वृत्ति उस ग्रन्थ का नाम जानना चाहे, उस ग्रन्थ मे मति-राम के सम्वन्ध मे क्या लिखा गया है उसे देखना चाहे, यह स्वाभाविक है। वह ग्रन्थ जिसकी भूल ने सरोज ऐसे ग्रन्थ की उद्भावना को प्रेरित किया 'भाषा काव्य सग्रह' है। इसके सम्पादक हैं महेश दत्त पडित। उन्होने यह ग्रन्थ सम्वत् १९३० मे सकलित किया। यह सम्वत् १९३२ मे प्रकाशित हुआ। इसी को सम्वत् १९३३ मे शिवसिंह ने देखा। इस ग्रन्थ मे मतिराम का निम्नाकित विवरण दिया गया है —

मतिराम कवि—"ये कवि फतेपुर के जिले मे असनी ग्राम के निवासी महापात्र भाट औरगजेव वादशाह के समय मे थे। इनके भाई का भूषण नाम था। मतिराम जी ने रसराजादि ग्रन्थ वनाये और वादशाही दरवार मे जन्म पर्यन्त रहे।" भाषा काव्य सग्रह, पृष्ठ १३६

ड सरोज का रचना काल

सरोज की भूमिका की तिथि ज्येष्ठ शुक्ल १२ सम्वत् १९३४ है। सामान्यतया इसी को सरोज का समाप्ति काल समझा जा सकता है। भूमिका मे शिवसिंह ने लिखा है कि उन्होने १९३३ मे एक सग्रह ग्रन्थ (भाषा काव्य सग्रह) मे मतिराम भूषण को असनी का भाट होना लिखा पाया। इससे उन्हे अत्यन्त कष्ट हुआ। उन्होंने अपने पुस्तकालय को ठीक से सजाया और अध्ययन करते रहे। इस काम मे उन्हे छह महीने लगे। इसके अनन्तर उन्होने कवियो का एक सूचीपत्र वनाकर उनके विद्यमान होने के सन् सवत् और उनके जीवन चरित्र, जहा तक प्रकट हुये, सव लिखे और ग्रन्थ पूर्ण किया। भूमिका के अनुसार शिवसिंह ने सरोज को अधिक से अधिक साढे आठ महीने मे पूर्ण किया। सम्वत् १९३३ के अधिक से अधिक छह महीने और १९३४ के ढाई महीने। अत: यह ग्रन्थ सम्वत् १९३३-३४ मे लिखा गया।

खोज रिपोर्ट मे सरोज की एक हस्तलिखित प्रति की नोटिस है।[1] उक्त हस्तलिखित ग्रन्थ की पुष्पिका यह है :—

"इति श्री शिवसिंह सेगरकृत शिवसिंह सरोज समाप्त सम्वत् १९३१ लिषत गौरीशकर"

उक्त पुष्पिका के अनुसार सरोज की रचना सम्वत् १९३१ या उसके पहले कभी हुई। पर ऊपर सिद्ध किया जा चुका है कि इसकी रचना सम्वत् १९३३-३४ मे हुई। दो तीन वर्ष का अन्तर पड रहा है। खोज रिपोर्ट मे सरोज के आदि और अन्त के कुछ अश अवतरित है। आदि वाले अश मे अकवर की कविता है। अत वाले अश मे हकार के अतिम १३ कवियो का इतिवृत्त दिया गया है। स्पष्ट है कि ग्रन्थ मे प्रतिलिपि करते समय तक भूमिका नही लगी थी, अन्यथा आदि वाले अश के उदाहरण मे भूमिका वाला भाग ही उद्धृत हुआ होता। यह भूमिका या तो सम्पूर्ण ग्रन्थ के

---

[1] खोज रिपोर्ट १९२३।३९८

मुद्रित हो जाने के उपरान्त लिखी गई और मुद्रित हुई अथवा छपने के ठीक पहले लिखी गई और मुद्रित हुई। उक्त प्रतिलिपि ग्रन्थ के प्रकाशन के पूर्व ही की गई होगी, क्योंकि यदि पुस्तक पहले ही प्रकाशित हो गई होती, तो उसकी प्रतिलिपि कराने की कोई आवश्यकता न पडती। स्पष्ट है कि ग्रन्थ सम्वत् १९३४ ज्येष्ठ शुक्ल १२ के पहले पूर्ण हो चुका था और इस तिथि के पहले ही कभी उसकी प्रतिलिपि की गई। पर यह प्रतिलिपि १९३१ मे की गई, भूमिका इस बात को स्वीकार नही करती। भूमिका के अनुसार इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि १९३३ से पहले नही की जा सकी। अब या तो शिवसिंह झूठे हैं या उक्त पुष्पिका मे दिया हुआ प्रतिलिपि काल दोनो बाते एक साथ सत्य नही हो सकती।

सरोज के अत साक्ष्य से यह स्पष्ट होता है कि उक्त ग्रन्थ १९३३ से पहले सकलित एवम् विरचित नही हुआ। इसके प्रमाण मे निम्नाकित बातें कही जा सकती है सरोज की रचना मे जिन सग्रह ग्रन्थो से सहायता ली गई है उनमे से तीन का रचनाकाल १९३१-३४ है। ये तीनो ग्रन्थ ये है —

(अ) सुन्दरी तिलक—इसका पहला सस्करण सम्वत् १९२५ एव दूसरा सम्वत् १९२६ मे हुआ। शिव सिंह ने जिस सस्करण का प्रयोग किया वह सम्वत् १९३१ मे प्रकाशित हुआ था।

(ब) कवित्त रत्नाकर—यह सग्रह १९३३ मे छपा।

(स) भाषा काव्य सग्रह—यह सम्वत् १९३२ मे प्रकाशित हुआ। जीवन खड मे इन तीनो ग्रन्थो का हवाला दिया गया है। सुन्दरी तिलक से ११ कवि लिये गये है, जिनमे से अलीमन का समय सम्वत् १९३३ दिया गया है, जो स्पष्ट सूचित करता है कि ग्रन्थ १९३३ के पहले नही बना। महेश दत्त के काव्य सग्रह मे यो तो अनेक कवियो के विवरण लिये गये है, पर केवल दो कवियो के सम्बन्ध मे स्पष्ट स्वीकार किया गया है कि इनके सम्बन्ध की जानकारी उक्त सग्रह से प्राप्त की गई है।

यह ग्रन्थ सम्वत् १९३१ के बाद बना इसके भी स्पष्ट प्रमाण है। इसमे कोविद कवि, श्री पडित उमापति त्रिपाठी, अयोध्या निवासी का देहावसान काल सम्वत् १९३१ दिया गया है। यदि यह सग्रह १९३१ या उसके पहले प्रस्तुत किया गया होता और सत्य ही १९३१ मे इसकी प्रतिलिपि की गई होती, तो जीवन खड मे इन तीनो ग्रन्थो का न तो नाम आया होता, न अलीमन का समय सम्वत् १९३३ दिया गया होता और न कोविद कवि की १९३१ मे मृत्यु होने का उल्लेख हुआ होता।

च सरोज का प्रकाशन काल

सरोज कब प्रकाशित हुआ यह भी एक समस्या है। सरोज की भूमिका का लेखन काल सम्वत् १९३४ ज्येष्ठ सुदी १२ है। यह भूमिका या तो मूल ग्रन्थ के मुद्रित हो जाने के बाद लिखी गई, इस दशा मे प्रकाशन काल भी १९३४ ही होना चाहिये या फिर प्रकाशन के लिये देने के ठीक पहले लिखी गई। पहले भूमिका प्रकाशित हुई फिर मूल ग्रन्थ। इस दशा मे प्रकाशन काल १९३४ के बाद भी हो सकता है। यदि १९३५ हो जाय तो शिवसिंह का अपने सम्बन्ध मे दिया हुआ "सम्वत् १८७८ मे उ०" की समस्या भी सरल हो जाय। ग्रन्थ के प्रकाशन मे कुछ समय तो लग ही गया होगा। इस ग्रन्थ का सातवा सस्करण (सन् १९२६ ई०) उपलब्ध है। इस सस्करणो का प्रकाशन काल

नही लिखा गया है। इस ग्रन्थ के तीसरे सस्करण की एक-एक प्रति सभा के आर्य भाषा पुस्तकालय एवम् प्रो० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र के पास है। इस सस्करण का प्रकाशन काल सन् १८९३ ई० है। ग्रन्थ के प्रथम सस्करण की कोई भी प्रति मेरे देखने मे नही आई, जिससे उसके प्रकाशन काल की तिथि जानी जा सके। प्रो० रामकुमार वर्मा इसका रचना काल सम्वत् १९४० देते हैं जो अत्यन्त आश्चर्य जनक है।[1] शुक्ल जी ने भी अपने प्रसिद्ध इतिहास के प्रथम सस्करण मे जो वक्तव्य दिया है, और जो अन्य सस्करणो मे भी समान रूप से सलग्न है, उसका पहला वाक्य यह है —

"हिन्दी कवियो का एक वृत्त सग्रह ठाकुर शिवसिंह सेगर ने सन् १८८३ ई० मे प्रस्तुत किया था।"

आचार्य शुक्ल एव श्री रामकुमार वर्मा ने यह सम्वत् ग्रियर्सन से लिया है। ग्रियर्सन ने स्पष्ट स्वीकार किया है कि मैंने सरोज का द्वितीय सस्करण जो सन् १८८३ ई० मे प्रकाशित हुआ, प्रयुक्त किया है, पर श्री शुक्ल एव श्री वर्मा ने प्रमाद से इसे सरोज का रचनाकाल ही समझ लिया है। तो, इस १८८३ ई० या १९४० विक्रमी मे सरोज का द्वितीय सस्करण हुआ और १८७८ ई० (जिसे सरोजकार ने अपना 'उ०' सम्वत् माना है) या १९३५ विक्रमी मे (जो विनोद के अनुसार शिवसिंह का मृत्यु सम्वत् है) इसका पहला सस्करण हुआ। सम्भवत. ग्रन्थ प्रकाशन के पश्चात् ही शिवसिंह की मृत्यु हुई।

---

१ हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास पृष्ठ ८ और २७

अध्याय २

सरोज का महत्व

सरोज का महत्व

सरोज हिन्दी साहित्य के इतिहासो की आधार शिला है। यह ग्रन्थ आज से प्राय ८० वर्ष पहले प्रस्तुत किया गया था, जब आज के समान सुविधाये सुलभ नही थी, न तो विशाल पुस्तकालय थे न प्रकाशित ग्रन्थो की प्रचुर सख्या थी। हस्तलिखित ग्रन्थ दुर्लभ थे, इतिहास सम्बन्धी ग्रन्थ भी वहुत नहीं थे। ऐसी दशा मे जो काम शिव सिह ने अकेले किया, वह आज वडी-वडी सस्थाये मिलकर कर पा रही है। फिर भी यह नही कहा जा सकता कि उक्त कार्य पूर्ण रूप से सतोपजनक ही होगा और उसमे तथ्य तथा तिथियो की एक भी भ्रान्ति नही होगी। ऐसी दशा मे सरोज मे यदि वहुत सी भ्रान्तिया हो और है, तो यह दोप मार्जनीय है, और सरोज को प्रस्तुत करने के लिए शिव सिह सदैव हमारे धन्यवाद के पात्र रहेगे।

शिवसिह ने सरोज के द्वारा जो महत्वपूर्ण कार्य किया, वे उससे अवगत थे। भूमिका के प्रथम पृष्ठ पर ही वे लिखते हैं —

मुझको इस वात के प्रकट करने मे कुछ सदेह नही कि ऐसा सग्रह कोई आज तक नही रचा गया परन्तु इस वात को प्रगट करना अपने मुंह मिया मिट्ठू वनना है।"

सरोज के इस कथन की प्रामाणिकता इसके इसी प्रकार के पूर्ववर्ती ग्रन्थो से तुलना करने पर ही जानी जा सकती है।

सरोज और पूर्ववर्ती ग्रन्थ

क सरोज और तासी

इतिहास नाम से अभिहित सवसे पहला ग्रन्थ फ्रान्सीसी लेखक गार्सा द तासी कृत 'इस्त्वार द ल लितरेत्यूर ऐंदूइ ए ऐंदूस्तानी'[१] है। इसका पहला सस्करण दो भागो मे प्रकाशित हुआ था। पहला भाग १८३९ ई० मे एव दूसरा १८४७ ई० मे। दोनो भाग भारतेन्दु के जन्म (१८५० ई०) के पहले प्रकाशित हो चुके थे, जव कि हिन्दी साहित्य मे पुरातनता का ही अधिवास था। यह पुस्तक हिन्दुई और हिन्दुस्तानी का इतिहास कही गई है, तासी पेरिस विश्वविद्यालय मे उर्दू के प्रोफेसर थे। हिन्दुई से उनका अभिप्राय हिन्दुओ मे वोली जाने वाली हिन्दी से है, जिसका आधार सस्कृत है तथा हिन्दुस्तानी से उनका अभिप्राय मुसलमानो मे वोली जाने वाली हिन्दी से है, जिसका आधार फारसी-अरवी है। हिन्दुस्तानी के दो रूप है, उत्तरी भारत के मुसलमानो द्वारा व्यवहृत हिन्दुस्तानी, जो उर्दू कहलाती है तथा दक्खिनी भारत मे मुसलमानो द्वारा वोली जाने वाली हिन्दुस्तानी, जिनको दक्खिनी कहते है। उर्दू के प्रोफेसर होने के कारण उक्त ग्रन्थ मे तासी ने उर्दू के कवियो को अत्यधिक स्थान दिया है, हिन्दी के कवियो को कम। उक्त ग्रन्थ के प्रथम भाग मे कुल ७३८ कवि और लेखक है। इस वडी सख्या मे हिन्दी मे सम्वन्धित कवि और लेखक केवल ७२ है। द्वितीय भाग मे प्रथम भाग मे आये प्रमुख कवियो के उद्धरण एव उनके विश्लेपण है।

---

[१] इसका अग्रेजी रूप यह है 'The History of Literature Hindui and Hindustani'

उक्त ग्रन्थ का द्वितीय संस्करण तीन भागों में हुआ। प्रथम एवं द्वितीय भाग सन् १८७० ई० में एवं तृतीय भाग १८७१ ई० में पेरिस में प्रकाशित हुए। प्रथम भाग में अत्यन्त विस्तृत भूमिका एवं १२२३ कवियों और लेखकों का उल्लेख है। द्वितीय में भूमिका नहीं है। १२०० कवि और लेखक हैं। तीसरी जिल्द में एक छोटी सी विज्ञप्ति है, तदनन्तर ८०१ कवियों और ग्रन्थों का विवरण, फिर ग्रन्थों एवं लेखकों सम्बन्धी दो परिशिष्ट और दो ही अनुक्रमणिकायें हैं। कुल मिलाकर तीनों भागों में १९१८ बड़े पृष्ठ और ३२२४ कवि और लेखक हैं। पहले संस्करण के द्वितीय भाग में जो सामग्री थी, दूसरे संस्करण में सम्बन्धित कवियों के साथ संलग्न कर दी गई है।

प्रयाग विश्वविद्यालय के डा० लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय ने उक्त ग्रन्थ में आये हुए हिन्दी के कवियों एवं लेखकों सम्बन्धी विवरणों का हिन्दी अनुवाद 'हिन्दुई साहित्य का इतिहास' नाम से किया है, जो सन् १९५३ ई० में हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ है। इस ग्रन्थ में कुल ३५८ कवि और लेखक आये हैं, जिनमें से अनेक उर्दू, संस्कृत और मराठी के हैं। इस सम्बन्ध में स्वयं तासी का यह कहना है —

"मेरे द्वारा उल्लिखित ३००० भारतीय लेखकों में से २२०० से अधिक मुसलमान लेखक हैं, हिन्दू लेखक ८०० हैं और इन पिछलों में से भी केवल २५० के लगभग हैं जिन्होंने हिन्दी में लिखा है। वास्तव में, इस वर्ग के सभी लेखकों को जान लेना कठिन है क्योंकि हिन्दी कवियों के तजकिरों का अभाव है और इस प्रकार एक बहुत बड़ी संख्या हमें अज्ञात है, जब कि उर्दू लेखकों के बारे में यह बात नहीं है, जिनकी मूल जीवनियों में, कम से कम नाम देने का ध्यान तो रखा गया है।"—हिन्दुई साहित्य का इतिहास भूमिका, पृष्ठ ११३

तासी ने २५० (३५८) हिन्दी कवियों और लेखकों का विवरण दिया है, इनमें से वस्तुत आधे से अधिक ऐसे हैं जो या तो पाठशालाओं के लिए पाठ्य ग्रन्थ लिखनेवाले हैं या जिन्होंने ऐसे विषयों पर ग्रन्थ रचना की है जो विशुद्ध साहित्य के भीतर नहीं आते। इनमें १२५ से अधिक नाम न होंगे, जिन्हें हिन्दी साहित्यकारों के इतिवृत्त संग्रह में स्थान दिया जा सके।

शिवसिंह को इस ग्रन्थ की जानकारी नहीं थी। इसका उपयोग केवल सर जार्ज ए ग्रियर्सन ने अपने 'द मार्डन वर्नाक्यूलर लिटरेचर आफ नदर्न हिन्दुस्तान' में किया है। फ्रेंच में होने के कारण कोई हिन्दुस्तानी लेखक इसका सदुपयोग नहीं कर सका है। इस ग्रन्थ का अनुवाद अँग्रेजी में भी नहीं हुआ है, जिसका लाभ उठाया जा सकता। १९३८ ई० में डाक्टर राम कुमार वर्मा ने 'हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास' लिखा। उन्होंने पृष्ठ २१३ पर इस ग्रन्थ का उल्लेख किया है। इसमें प्रायः सभी आकडे अशुद्ध दिये गये है। प्रथम संस्करण के द्वितीय भाग को १८४६ ई० में प्रकाशित होना कहा गया है, जब कि यह १८४७ ई० में प्रकाशित हुआ। इसी प्रकार द्वितीय संस्करण के तीनों भागों को १८७१ ई० में प्रकाशित होना कहा गया है, जब कि उक्त सन् में तीसरा भाग ही प्रकाशित हुआ, प्रथम एवं द्वितीय भाग तो १८७० ई० ही में प्रकाशित हो गये थे। तीनों भागों की सम्मिलित पृष्ठ संख्या १८३४ दी गई है, जो १९१८ है। भूमिका के पृष्ठों को छोड़ देने पर इसके कुल १८३५ पृष्ठ हैं। वर्मा जी ने भूमिका की पृष्ठ संख्या १४ बताई है। वस्तुतः प्रथम भाग के प्रारम्भ में संलग्न भूमिका में ७१ पृष्ठ है। साथ ही, पृष्ठ ४ पर शिवसिंह सरोज प्रकरण में तासी द्वारा उल्लिखित "हिन्दी कवियों की संख्या ७० से कुछ ऊपर है" ऐसा लेख है, जो पूर्णतः भ्रान्त है।

जब २० वी शताब्दी मे डाक्टर वर्मा को तासी के ग्रन्थ के सम्बन्ध मे ऐसी अपूर्ण सूचनाये प्राप्त हो, तब आज से ८० वर्ष पहले शिवसिह को यदि इसकी जानकारी भी न रही हो, तो कोई आश्चर्य नही। ऐसी स्थिति मे उनका यह कहना कि उनके द्वारा सग्रहीत शिवसिह सरोज अपने ढग का अनूठा सग्रह है और ऐसा सग्रह पहले नही बना ठीक ही है। इन दोनो ग्रन्थो मे हिन्दी कवियो और लेखको के इतिवृत्त दिये गये है, यहा तक इनमे समानता है, पर सरोज एक काव्य सग्रह भी है जो तासी की रचना नही है। सरोजकार ने सग्रह की ही प्रशसा की है, यद्यपि उसका कारण सलग्न इतिवृत्त ही है।

सरोज और तासी मे एक और महान् अन्तर है। यह अन्तर दृष्टिकोण और निष्ठा का है। शिवसिंह की निष्ठा एक मात्र हिन्दी मे है। तासी की निष्ठा बँटी हुई है। यह भी कहा जा सकता है कि उसकी निष्ठा हिन्दी के प्रति कम और उर्दू के प्रति अधिक है।

तासी द्वारा दी गई सूचनाये अधिकाश मे छपे हुये ग्रन्थो के सम्बन्ध मे हैं। कहा से छपे, किसके द्वारा सम्पादित हुये, कब प्रकाशित हुये, ग्रन्थ का आकार क्या है, उसमे कितने पृष्ठ हैं, प्रत्येक पृष्ठ मे कितनी पक्तिया हैं, आदि आदि बातें बताई गई हैं। ये सूचनाये तो ठीक हैं, पर इतिवृत्त सम्बन्धी बहुत-सी सूचनाये अशुद्ध है। कवि सख्या भी सरोज की तुलना मे बहुत कम है। बहुत कम सूचनाये ऐसी है, जो तासी मे अधिक हो और अन्यत्र दुर्लभ हो, और साथ ही जिनकी जानकारी से हिन्दी साहित्य का किसी भी अग मे विशेष उपकार होने की सम्भावना हो। सन् सम्वत् बहुत ही कम दिये गये है। तासी का महत्व इतना ही है कि उसने सुदूर विदेश मे रहते हुये एक विदेशी भाषा के प्रति इतनी अभिरुचि दिखलाई और उसके कवियो के सम्बन्ध मे इतनी जानकारी प्राप्त की तथा उन्हे पुस्तक रूप मे सकलित किया, साथ ही उस पुस्तक का नाम भी साहित्य का इतिहास रखा जो ऐसे ग्रन्थ के लिये अत्यन्त महत्वाकाक्षापूर्ण है। शिवसिंह ने अपने ग्रन्थ को कही भी साहित्य का इतिहास नही उद्घोषित किया है। इन दोनो ग्रन्थो मे वर्णानुक्रम से कविवृत्त दिया गया है, काल क्रम से नहीं। ऐसी दशा मे प्रवृत्तियो के अनुसार युग विभाजन और युगो के अनुसार सामान्य प्रवृत्तियो का विश्लेषण तो सम्भव ही नही। इन सबके अभाव मे कोई भी ग्रन्थ इतिहास नाम प्राप्त करने का अधिकारी नही हो सकता।

जैसा कि डा० वार्ष्णेय ने तासी के ग्रन्थ के हिन्दुई वाले अश के हिन्दी अनुवाद के प्रारम्भ मे 'अनुवादक की ओर' से, के अन्तर्गत लिखा है कि तासी ऐतिहासिक पद्धति से अवगत थे, पर कुछ व्यावहारिक कठिनाइयो के कारण ऐसा न कर सके, ठीक है। इस सम्बन्ध मे तासी ने प्रथम एव द्वितीय, दोनो सस्करणो की भूमिकाओ मे लिखा है। यहा द्वितीय सस्करण की भूमिका से सम्बन्धित अश उद्धृत किया जा रहा है —

"मौलिक जीवनिया जो मेरे ग्रन्थ का मूलाधार हैं सब तखल्लुसो या काव्योपनामो के अकारादि क्रम से रखी गई है। मैंने यही पद्धति ग्रहण की है, यद्यपि शुरु मे मेरा विचार कालक्रम ग्रहण करने का था और मैं यह बात छिपाना नही चाहता कि यह क्रम अधिक अच्छा रहता या कम से कम जो शीर्षक मैंने अपने ग्रन्थ को दिया है उसके अधिक उपयुक्त होता, किन्तु मेरे पास अपूर्ण सूचनाये होने के कारण उसे ग्रहण करना कठिन ही था। वास्तव मे, जब मैं उसके सम्बन्ध मे कहना चाहता हूँ, मौलिक जीवनिया हमे यह नही बताती कि उल्लिखित कवियो ने किस काल मे लिखा, जहा तक हिन्दुई लेखको से सम्बन्ध है, उनकी भी अधिकाश रचनाओ की निर्माण

निश्चिया निश्चित नही है। यदि मैंने कालक्रम वाली पद्धति ग्रहण की होती, तो अनेक विभाग स्थापित करने पड़ते, पहले मैं उन लेखकों को रखता जिनका काल अच्छी तरह ज्ञात है। दूसरे मे उनको जिनका काल संदेहात्मक है, अन्त मे, तीसरे मे, उन्हे जिनका काल अज्ञात है। .अपना काय सरल बनाने और पाठक की सहूलियत दोनो ही दृष्टियो से मुझे, यह पद्धति, यद्यपि वह अधिक बुद्धि गगत थी, स्वेच्छा से छोडने के लिये वाध्य होना पडा।" हिन्दुई साहित्य का इतिहास, भूमिका, पृष्ठ १०६-१०७।

शिवसिंह भी इस पद्धति से अनभिज्ञ नही थे। भूमिका के अन्तर्गत पृष्ठ ८ पर उन्होंने 'भाषा काव्य निर्णय' शीर्षक दिया है। इस प्रकरण के अन्तर्गत ४ पृष्ठो मे उन्होंने हिन्दी भाषा का मूल खोजने का प्रयास किया है। साथ ही एक-एक शताब्दी मे होने वाले प्रमुख कवियो का नामोल्लेख किया है। उन्होंने इस प्रकार का विवरण सम्वत् ७७० से लेकर १९३४ तक दिया है। उनका काल विभाग शताब्दियो के अनुसार है, साहित्य प्रवृत्तियो के अनुसार नही। सम्भवत. उसका विशेष पता भी उन्हे नहीं था। इस दृष्टि मे भी तासी को विशेष महत्व नही दिया जा सकता।

अब थोडा व्यावहारिक दृष्टिकोण से भी तासी और सरोज के तुलनात्मक महत्व पर विचार कर लेना चाहिये। तासी का ग्रन्थ विदेशी भाषा मे है, जिससे हिन्दी साहित्य के प्रायः सभी इतिहास लेखक अनभिज्ञ रहे है। फलत. उन्होंने इसका उपयोग नही किया है। केवल ग्रियर्सन फ्रेंच से अभिज्ञ थे और उन्होंने उक्त ग्रन्थ का उपयोग अपने "द वर्नाक्यूलर लिट्रेचर आफ नर्दन हिन्दुस्तान" मे किया है, परन्तु हिन्दी साहित्य का कोई भी इतिहास, स्वय ग्रियर्सन का भी नही, ऐसा नही जिसने सरोज का उपयोग न किया हो। तासी के ग्रन्थ को यह गौरव कभी भी नही मिला है और न आगे मिलने की सम्भावना ही है।

८ भाषा-काव्य सग्रह तथा कवित्त रत्नाकर और सरोज

प्रो० रामकुमार वर्मा ने हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास के विषय-प्रवेश प्रकरण मे हिन्दी साहित्य के इतिहास सम्बन्धी ग्रन्थो का कालक्रमानुसार वर्णन किया है। उन्होंने पहला स्थान तासी को दिया है, दूसरा स्थान महेशदत्त कृत भाषा काव्य-सग्रह को। इस सग्रह को अन्य किसी इतिहासकार ने कोई महत्त्व नही दिया है। राधाकृष्ण दास ने इस ग्रन्थ के आधार पर एक स्वतन्त्र लेख 'कुछ प्राचीन भाषा कवियो का वर्णन" शीर्षक लिखा था और इस ग्रन्थ को पर्याप्त महत्त्व दिया था।[1] पर इस ग्रन्थ का न तो काव्य सग्रह की दृष्टि से कोई महत्त्व है और न कवि वृत्त की ही दृष्टि से। सकलित रचनाये अत्यन्त साधारण कोटि की है, विशेष ध्यान प्रबन्ध रचनाओ की ओर है, मुक्तक बहुत कम हैं। इस सग्रह मे कवियो की सख्या भी बहुत कम है। कवियो को न तो कालक्रम से प्रस्तुत किया गया है, न वर्णानुक्रम से, न विषय क्रम से, मनमाना ढग है। कवियो के विवरण भी भ्रान्त हैं। इस ग्रन्थ का महत्व दो दृष्टिकोणो से है। एक तो इसी ग्रन्थ मे मतिराम को अपनी का भॉट लिखा गया है, अत यह सरोज का प्रेरक ग्रन्थ है। दूसरे सरोज मे दिये हुए सम्वत् जन्म-काल समझे जाते रहे हैं, इस ग्रन्थ की सहायता से उनमे से अनेक उपस्थिति काल, रचना काल एव मृत्युकाल सिद्ध होते हैं। इस प्रकार सरोज के सन् सम्वतो की समस्या को हल

---

[1] नागरी प्रचारिणी पत्रिका, भाग ५, १९०१ ई० अथवा राधाकृष्णदास ग्रन्थावली, प्रथम भाग, पृष्ठ ९७-१०२

करने की दृष्टि से इसका महत्त्व है। इसके ये दोनो महत्त्व सापेक्ष्य है। स्वत अपने मे यह कोई महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ नही है।

मातादीन मिश्र द्वारा सकलित कवित्त रत्नाकर भी भाषा काव्य-सग्रह की ही कोटि का ग्रन्थ है। यह दो भागो मे है। प्रत्येक भाग मे सकलित कवि का परिचय भी अत मे दे दिया गया है। दोनो भागो मे मिलाकर कुल ४२ कवि है। इस ग्रन्थ का भी न तो काव्यसग्रह महत्त्वपूर्ण है और न कवि वृत्त ही। इसका भी महत्व इतना ही है कि यह भी सरोज के आधार ग्रन्थो मे से एक है।

भाषा-काव्यसग्रह और कवित्त रत्नाकर दोनो मे एक ही पद्धति का अनुसरण है। पहले काव्य-सग्रह फिर कवि वृत्त। ठीक इसी पद्धति का अनुसरण सरोज मे भी किया गया है। पर सरोज मे इन दोनो से बढकर अनेक ऐसी विशेषताये है जो इन्हे अपनी छाया के अधकार मे पडी रहने के लिए बाध्य करती रही है और करती रहेगी। यथा :—

(१) सरोज मे सकलन एव कवि परिचय वर्णानुक्रम से दिया गया है, जिससे कवि शीघ्रता-पूर्वक ढूँढ निकाला जा सकता है। उक्त दोनो ग्रन्थो मे इस पद्धति का अनुसरण नही है, पर वे ग्रन्थ इतने छोटे है कि एक निगाह मे ही कवियो को ढूँढ लेना कोई कठिन नही।

(२) पूर्ववर्ती दोनो ग्रन्थ हिन्दी मिडिल के विद्यार्थियो के उपयोग के लिये शिक्षा विभाग की ओर से बनवाये गये है, सम्पादको की निजी प्रेरणा के परिणाम नही हैं। सरोज साहित्य-सेवा की दृष्टि से भ्रान्तियो का निराकरण करने के लिये, अधिक से अधिक कवियो का सन् सम्वत् और वृत्त देने के लिए, प्रस्तुत किया गया है। यह हिन्दी साहित्य का प्रथम शोध-ग्रन्थ है। पूर्ववर्ती दोनो ग्रन्थो को यह गौरव कदापि नही प्राप्त हो सकता।

(३) पूर्ववर्ती दोनो प्रयास वामन के सदृश है, अत. लघु ही नही है, छलपूर्ण भी है, विशेषकर प्रथम। सरोज विराट सदृश है, जो अपने तीन डगो के भीतर पुण्ड (७७० वि०) से लेकर हरिश्चन्द्र (१९३४ वि०) तक के हिन्दी साहित्य के भूत और वर्तमान को समेट कर भविष्य को भी पूर्ण प्रभाव-क्षेत्र मे समाहित कर लेता है। हिन्दी साहित्य का ऐसा कौन-सा इतिहास ग्रन्थ है, जो सरोज का ऋणी न हो?

सरोज और परवर्ती ग्रन्थ

यह तो रही सरोज और इसी पद्धति पर लिखित पूर्ववर्ती ग्रन्थो की बात। अब इसी प्रकार के उन परवर्ती ग्रन्थो पर विचार करना चाहिये जो इसके प्रभाव क्षेत्र मे आकर लिखे गये हैं। इसी प्रभाव-दर्शन से सरोज का महत्व ठीक-ठीक आँका जा सकेगा।

क द माडर्न वर्नाक्यूलर लिट्रेचर आफ नदर्न हिन्दुस्तान

सर जार्ज ए ग्रियर्सन रचित 'द माडर्न वर्नाक्यूलर लिट्रेचर आफ नदर्न हिन्दुस्तान' हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास है। आश्चर्य है कि हमारे साहित्य के इतिहास का प्रणयन एक विदेशी विद्वान् ने, एक विदेशी भाषा मे, और वह भी विदेशियो के ही उपयोग के लिए किया। उक्त ग्रियर्सन साहब मिथिला मे कलक्टर थे। १८८६ ई० मे उन्होने प्राच्य विद्या-विशारदो की अन्तर्राष्टीय सभा के वियना अधिवेशन मे, हिन्दुस्तान (हिन्दी भाषा-भाषी-प्रदेश) के मध्यकालीन भाषा साहित्य और तुलसी पर एक लेख पढा था। इसकी तैयारी के लिए इन्होने कई वर्षो मे समस्त हिन्दी साहित्य पर टिप्पणियाँ प्रस्तुत की थी, जिनके एक अश का ही उपयोग उक्त लेख मे हो सका था। यह लेख

विशेष ध्यानपूर्वक सुना गया था। अत लेखक को जो प्रोत्साहन मिला, उससे प्रेरित होकर उसने अपनी सारी टिप्पणियो को सुव्यवस्थित कर यह ग्रन्थ प्रस्तुत किया, जो सर्वप्रथम १८८८ ई० के "रायल एशियाटिक सोसाइटी आफ वगाल" के जर्नल प्रथम भाग मे प्रकाशित हुआ, तदुपरान्त १८८९ ई० मे उसी सोसाइटी की ओर से स्वतत्र ग्रन्थ के रूप मे प्रकाशित हुआ। इस ग्रन्थ का पुनर्मुद्रण नही हुआ और अव यह दुष्प्राप्य हो गया है। पुस्तकालयो मे यत्र-तत्र इसकी प्रतियाँ है जो पढने के लिए भी नही दी जाती।

"प्रस्तावना" मे लेखक ने अत्यन्त विनम्रता पूर्वक स्वीकार किया है कि उनका ग्रन्थ "भाषा साहित्य के उन सम्मत लेखको की सूची मात्र से अधिक और कुछ नही है, जिनका नाम मैं एकत्र कर सका हूँ और जो सख्या मे ९५२ है।' इस ग्रन्थ मे मारवाडी, हिन्दी, विहारी लिखित साहित्य का उल्लेख हुआ है। ग्राम साहित्य की चर्चा नही हुई है। अधिकाश लेखको का केवल नाम दिया गया है। कोई विशेष विवरण नही है। प्रत्येक लेखक की रचना के नमूने ग्रियर्सन ने पढे है, ऐसा उनका कहना है। पर सवको समझा भी है, ऐसा उनका दावा नही है।

ग्रन्थ का आकार सामान्य पुस्तको के आकार से कुछ वडा है। यह ग्रन्थ तीन खडो मे विभक्त कहा जा सकता है — (१) प्रस्तावना आदि, (२) मूल ग्रन्थ, (३) अनुक्रमणिका।

प्रथम खड मे मे तीन विभाग हैं :—

(अ) प्रस्तावना (Preface) इसमे कुल ५ पृष्ठ (७ से ११ तक) है। इसमे ग्रन्थ लिखने का अवसर और आवश्यकता आदि पर विचार है।

(व) भूमिका (Introduction) इसमे कुल ११ पृष्ठ (१३ से २३ तक) है। वारहवाँ पृष्ठ सादा है। भूमिका के चार उप-विभाग है — (१) सूचना के सूत्र, (२) विपयन्यास का सिद्धान्त, (३) हिन्दुस्तान (हिन्दी-भाषा-भाषी-प्रदेश) के भाषा साहित्य का सक्षिप्त विवरण, (४) चित्र-परिचय,

(स) शुद्धिपत्र और परिशिष्ट (addenda)

इसमे दस-वारह पृष्ठ है। अशुद्धियाँ प्राय हिन्दी नामो के वर्णविन्यास से सम्बन्ध रखती हैं। ग्रन्थ के छपते-छपते लेखक को जो नई सूचनाये प्राप्त हुई, उन्हे उसने परिशिष्ट मे दे दिया है। इसी के अन्तर्गत तुलसीदास लिखित प्रसिद्ध पचनामे का रोमन लिपि मे प्रत्यक्षीकरण और उसका अग्रेजी अनुवाद भी दिया गया है। द्वितीय खड मे, जो कि मूल ग्रन्थ है, कुल १६८ पृष्ठ है। ग्रन्थ वारह अध्यायो मे विभक्त है। प्रत्येक अध्याय मे तीन अश है, जिनमे सामान्य परिचय, प्रधान कवि-परिचय और अप्रधान कवि नाम सूची क्रम से है।

तीसरे खड मे तीन अनुक्रमणिकाये है। पहली मे व्यक्ति-नाम सूची, दूसरी मे ग्रन्थ-नाम सूची और तीसरी मे स्थान नाम सूची वर्णानुक्रम से है। इन नामो के आगे जो सख्याये दी गई है, वे पृष्ठो की न होकर कवियो की है।

भूमिका मे ग्रियर्सन ने निम्नालिखित १८ ग्रन्थो से सहायता लेने का उल्लेख किया है :—

	ग्रन्थ	लेखक	रचनाकाल
१	भक्तमाल	नाभादास	१५५० ई० के लगभग (?)
२	गोसाई चरित्र	वेनीमाधवदास	१६०० ई० के लगभग (?)

३	कविमाला	तुलनी	१६५५ ई०
४	हजारा	कालिदास त्रिवेदी	१७१८ ई०
५	काव्य निर्णय	भिखारी दास	१७२५ ई० के लगभग
६	सत्कवि गिरा विलास	वलदेव	१७४६ ई०
७	सूदन द्वारा प्रशसित कवि सूची	सूदन	१७५० ई० के लगभग
८	विद्वन्मोद तरगिणी	मुब्वासिह	१८१७ ई०
९	राग सागरोद्भव राग कल्पद्रुम	कृष्णानन्द, व्यासदेव	१८४३ ई०
१०	शृगार सग्रह	सरदार	१८४८ ई०
११	भक्तमाल का उर्दू अनुवाद	तुलसीराम	१८५४ ई०
१२	रसचन्द्रोदय	ठाकुर प्रसाद त्रिपाठी	१८६३ ई०
१३	दिग्विजय भूषण	गोकुल प्रसाद	१८६८ ई०
१४	सुन्दरी तिलक	हरिश्चन्द्र	१८६९ ई०
१५	काव्य सग्रह	महेश दत्त	१८७८ ई०
१६	कवित्त रत्नाकर	मातादीन मिश्र	१८७६ ई०
१७	शिवसिह सरोज	शिवसिह सेगर	१८८३ ई०
१८	विचित्रोपदेश	नकछेदी तिवारी	१८८७ ई०

इन १८ ग्रन्थो मे से १७ वा सरोज है, १८ वा इसका परवर्ती ग्रन्थ है। प्रथम १६, सरोज की पूर्ववर्ती रचनायें हैं। इनमे से केवल 'शृगार सग्रह' ऐसा है, जिसका उल्लेख शिवसिह ने नही किया है। शेष १५ की सहायता उन्होने ली है। ग्रियर्सन इन सभी ग्रन्थो से सहायता लेने का उल्लेख करते है, पर यह ठीक नही प्रतीत होता। उन्होने केवल निम्नाकित ५ ग्रन्थो की सहायता ली है —

१ राग कल्पद्रुम २ शृङ्गार सग्रह ३ सुन्दरी तिलक ४ शिवसिह सरोज ५ विचित्रोपदेश।

राग कल्पद्रुम को वडे परिश्रम पूर्वक और वडी कठिनाई से प्राप्तकर ग्रियर्सन ने देखा था। ऐसा उल्लेख राग कल्पद्रुम द्वितीय सस्करण के सम्पादक श्री नगेन्द्र नाथ वसु ने उक्त ग्रन्थ मे किया है। ग्रियर्सन ने उक्त ग्रन्थ के प्रथम सस्करण की भूमिका से हिन्दी कवियो और ग्रन्थो की सूचिया दी हैं, जिससे यह तथ्य स्पष्ट है। शृगार सग्रह का उल्लेख सरोज मे नहीं है। पर ग्रियर्सन ने न केवल इसका उल्लेख किया है, वल्कि इसमे आये कवियो की सूची भी दे दी है। अत इसका भी सदुपयोग उन्होने अवश्य किया है। इसी प्रकार सुन्दरी तिलक मे आये कवियो की भी सूची ग्रियर्सन ने दी है। अत' उन्होंने इसका भी उपयोग किया है, इसमे सदेह नहीं। सरोज तो इस ग्रन्थ का मूल आधार कहा जा सकता है। भूमिका मे इस सम्वन्ध मे ग्रियर्सन स्वय लिखते है —

"एक देशी ग्रन्थ जिस पर मैं अधिकाश मे निर्भर रहा हूँ, और प्राय. सभी छोटे कवियो और अनेक अधिक प्रसिद्ध कवियो के भी सम्वन्ध मे प्राप्त सूचनाओ के लिए जिसका मैं ऋणी हूँ, शिवसिह द्वारा विरचित और मुशी नवल किशोर द्वारा प्रकाशित अत्यन्त लाभदायक 'शिवसिह सरोज' (द्वितीय सस्करण १८८३ ई०) है।"—भूमिका पृष्ठ १३

विचित्रोपदेश एक परवर्ती रचना है। शिवसिह इसका उल्लेख कर भी नहीं सकते थे। ग्रियर्सन ने इसे देखा था, इसमे सदेह नहो।

इन पाचो के अतिरिक्त शेष १३ ग्रन्थो को ग्रियर्सन ने देखा था, यह पूर्ण सदेहात्मक है। इनकी सहायता उन्होंने प्रत्यक्ष रूप से नही, सरोज द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से ली है। सरोज मे कवियो के जीवन-चरित्र वाले प्रकरण मे बराबर इनका उल्लेख होता गया है। सरोज मे स्पष्ट लिखा है कि प्रसग प्राप्त कवि की रचना किस सग्रह मे सकलित है। इन्ही का उल्लेख ग्रियर्सन ने भी अपने ग्रन्थ मे कर दिया है। गोसाईं चरित्र तो उन्हे मिला नही, ऐसा उल्लेख तुलसीदास के प्रकरण मे उन्होने किया है, फिर उससे सहायता ली ही कैसे जा सकती है? हा, शिवसिंह ने इस ग्रन्थ से एक उदाहरण सरोज मे अवश्य दिया है, जिससे स्पष्ट है कि उन्होने उक्त ग्रन्थ अवश्य देखा था। काव्य निर्णय मे दास जी ने एक कवित्त मे कुछ कवियो का नाम लिया है, जिनकी ब्रज भाषा को उन्होने प्रमाण माना है। इस कवित्त को शिवसिंह ने उद्धृत किया है और जिस भ्रान्त ढग से इसका उपयोग उन्होने किया है, उसी ढग से ग्रियर्सन ने भी किया है। इन्होने भी अब्दुर्रहीम खान-खाना और रहीम को दो कवि माना है, नीलकठ को मिश्र मान लिया है। अत स्पष्ट है कि ग्रियर्सन ने काव्य निर्णय को शिवसिंह की आखो देखा है, स्वय अपनी आखो नही। ग्रियर्सन न तो सूदन रचित सुजान चरित्र को जानते थे और न इसके आदि मे दिये छन्दो से परिचित थे। पाच से लेकर दस सख्यक छह छदो मे सूदन रचित कवि-सूची है। शिवसिंह ने प्रमाद मे इसे दस छद समझ लिया है। अतिम छद उनके पास था। इसमे आये कवियो का नाम उन्होने सरोज मे दिया है। इसी का उल्लेख शिवसिंह का निर्देश करते हुए ग्रियर्सन ने भी कर दिया है। अत स्पष्ट है कि उन्होने इस ग्रन्थ का भी उपयोग अप्रत्यक्ष रूप से ही किया है। सत्कवि गिराविलास मे १७ कवियो की रचनायें सकलित है। इसकी सूची सरोज मे दी गई है। ग्रियर्सन ने यही से उक्त सूची अपने ग्रन्थ मे उतार ली है। ऐसा कोई प्रमाण नही मिलता, जिससे सिद्ध हो कि इन्होने उक्त ग्रन्थ देखा भी था। कविमाला, हजारा, विद्वन्मोद तरगिणी, रसचन्द्रोदय, दिग्विजय भूषण, काव्य सग्रह और कवित्त रत्नाकर को यदि उन्होने देखा होता तो निश्चय ही इनमे सकलित कवियो की भी सूची उन्होने दे दी होती। काव्य सग्रह को तो वे कभी भी भूल नही सकते थे, क्योकि इस ग्रन्थ के अन्त मे सरोज के ही समान, इसमे सकलित सभी ५१ कवियो का जीवन-चरित्र दे दिया गया है, जिनमे तिथिया भी है जो एक साहित्य शोधी के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है और जिनके सहारे सरोज की तिथियो की जाच भली-भाति की जा सकती है कि वे जन्म-काल सूचक है अथवा रचना-काल सूचक। 'कवि रत्नाकर' यह अशुद्ध नाम सरोज की भूमिका मे प्रमाद से छप गया है। ग्रियर्सन ने भी कवि रत्नाकर ही लिखा है। ग्रन्थ का असल नाम 'कवित्त रत्नाकर' है। सरोजकार ने जीवन-चरित्र खड मे यह नाम दिया भी है। ग्रियर्सन ने मक्षिका स्थाने मक्षिका लिखा है। यह स्पष्ट सिद्ध करता है कि यह ग्रन्थ भी उनकी आखो के सामने से नही गुजरा। यह सम्भव है कि भक्तमाल और उसका उर्दू अनुवाद तथा एकाध और ग्रन्थ उन्होंने देखे भी रहे हो, पर निश्चयपूर्वक कुछ कहा नही जा सकता।

ग्रियर्सन ने कुछ और भी ग्रन्थो तथा सूत्रो का उपयोग किया है। इनकी गणना यद्यपि उन्होने भूमिका की उक्त सूची मे नही की है, पर उल्लेख कर दिया है तथा मूल ग्रन्थ मे इनका हवाला बार-बार दिया है। इनमे प्रथम ग्रन्थ है प्रसिद्ध फ्रासीसी लेखक गार्सा द तासी कृत "हिस्त्वायर द ला लितरेत्योर हिन्दुई ए हिन्दुस्तानी"। इसका उपयोग ग्रियर्सन ने स्व-सकलित टिप्पणियो की जाच के लिए किया है। प्रतीत होता है कि ग्रन्थ के इस प्रथम सस्करण का ही उपयोग उन्होने किया है, क्योकि उन्होंने जहा भी हवाला दिया है, प्रथम खड का। पहले सस्करण मे प्रथम भाग मे जीवनवृत्त

था, दूसरे भाग मे सकलन था। द्वितीय सस्करण मे तीन भाग है। तीनो मे वृत्त और सकलन साथ साथ है, साथ ही तासी मे हिन्दी के लगभग ७० ही कवियो के होने का उल्लेख ग्रियर्सन ने किया है। यह भी प्रथम सस्करण की ही ओर सकेत करता है। तासी का द्वितीय सस्करण ग्रियर्सन के ग्रन्थ के पद्रह सोलह साल पहले प्रकाशित हो गया था, फिर न जाने क्यो वे इसका उपयोग नही कर सके। इसमे हिन्दी के २५० से अधिक कवि और लेखक है।

दूसरा ग्रन्थ, जिसकी सहायता ग्रियर्सन ने ली है, विलसनकृत 'रेलिजस सेक्ट्स आफ हिन्दूज़' है। प्राय. सभी भक्त कवियो के सम्बन्ध मे इस ग्रन्थ से सहायता ली गई है।

तीसरा ग्रन्थ है टाड का प्रसिद्ध 'राजस्थान का इतिहास'। राजपूताने के चारण कवियो एव उनके आश्रयदाता राजाओ या राज कवियो के विवरण एव तिथियो के सम्बन्ध मे इस ग्रन्थ की सहायता पद-पद पर ली गई है।

इनका सहायक चौथा सूत्र है "जर्नल आफ रायल एशियाटिक सोसाइटी आफ बगाल।" विशेषकर भाग ५३ का एक अक, जिसमे मैथिल कवियो का इतिहास दिया हुआ है। प्राय सभी मैथिल कवियो का विवरण इसी लेख के आधार पर इस ग्रन्थ मे सकलित हुआ है।

ग्रियर्सन ने कवियो का इतिवृत्तदेते समय निम्नलिखित पद्धति का अनुसरण किया है .—

(१) सर्वप्रथम वे कवि की क्रम सख्या देते ह। ये सख्याये कुल ९५२ है। ७०६ सख्या पर किसी विशेष कवि का उल्लेख न होकर हिन्दी और बिहारी नाटको पर एक सक्षिप्त टिप्पणी है। इस प्रकार इस ग्रन्थ मे कुल ९५१ कवियो का विवरण है। आगे चलकर विनोद मे भी यही पद्धति अपनाई गई।

(२) क्रमसख्या देने के अनन्तर कवि नाम देव नागरी अक्षरो मे दिया गया है। इस सम्बन्ध मे नियमो का पालन किया गया है। पहले तो नामो को उस ढग से लिखा गया है, जिस ढग से सर्व-साधारण उनका उच्चारण करते है। पढे-लिखे शिष्ट जनो के उच्चारण को महत्व नही दिया गया है, यद्यपि साहित्यकारो के सम्बन्ध मे यही पद्धति अपनाई जानी चाहिये थी। इस प्रकार वल्लभाचार्य न लिखकर वल्लभाचारज लिखा गया है। इस पद्धति का परित्याग कतिपय जीवित भारतीय साहियत्यकारो के ही सम्बन्ध मे इस सिद्धात पर किया गया है कि प्रत्येक व्यक्ति को स्वेच्छानुसार अपना नाम लिखने की स्वतत्रा प्राप्त है। इन लोगो का नाम हिन्दी लिपि मे उसी प्रकार लिखा गया हे, जिस प्रकार वे अग्रेजी मे लिखते है।

विदेशी लोग, जिनके लिये यह ग्रन्थ लिखा गया हे, हिन्दी नामो का ठीक-ठीक उच्चारण कर सके, इसलिए नामो के पद-विभाजन की दूसरी पद्धति स्वीकार की गई है। जहाँ प्रत्येक पद के अनन्तर रुका जा सके, दो पदो के बीच विन्दु दे दिया गया है, जो अग्रेजी के पूर्ण विराम से पर्याप्त बडा है। यथा—देओकी नन्दन सुकुल। प्रस्तावना मे इन दोनो बातो पर लेखक ने विचार किया है।

(३) हिन्दी मे नाम देने के अनन्तर उसको रोमन लिपि मे दिया गया है और यदि नाम के साथ कोई अतिरिक्त अश भी जुडा हुआ है, तो उसका अनुवाद कर दिया गया हे, जैसे पुप्य कवि को 'द पोयट पुप्य' लिखा गया है। गोसाई तुलसीदास के गोसाई का अनुवाद 'होली मास्टर' किया गया है। इस ग्रन्थ के हिन्दी अनुवाद मे न तो दो बार नाम देने की आवश्यकता है (एक बार नागरी लिपि मे, दूसरी बार रोमन लिपि मे, और न तो नामो के वीच अग्रेजी का वृहत् पूर्ण

विराम देने की, क्योकि इन दोनो मे से किसी की कोई उपयोगिता हम भारतीयो के लिए नही है। विदेशियो के लिए तो ये दोनो बाते आवश्यक थी।

(४) नाम के साथ पिता का नाम स्थान का नाम, और समय एक साथ दे दिये गये है, जैसे वे नाम के ही अग हो, यह सब विना किसी क्रिया का सहारा लिए हुये किया गया है। ग्रियर्सन ने यह पद्धति सरोज से अपनाई हे।

(५) इसके पश्चात् उन सग्रहो का सक्षिप्त नाम दे दिया गया है, जिनमे उस कवि की रचनाये सकलित ह।

(६) इस प्रकार नाम दे देने के अनन्तर दूसरे अनुच्छेद मे उपलब्ध इतिवृत्त दिया गया हे। यही क्रम सरोज का भी हे।

(७) किसी कवि के इतिवृत्त मे यदि किसी अन्य कवि का उल्लेख आ गया है तो उसकी भी क्रम सख्या सुविधा के लिये नाम के आगे कोप्टक मे दे दी गई है।

ग्रियर्सन के ग्रन्थ को ठीक-ठीक समझने के लिये उनके द्वारा प्रयुक्त कुछ अग्रेजी शब्दो का ठीक-ठीक हिन्दी अर्थ जान लेना आवश्यक हे, नही तो भयानक भ्रान्ति हो सकती है। Style का प्रयोग उन्होने रस के अर्थ मे किया है। उनके द्वारा नवरसो के लिये प्रयुक्त पदावली नीचे दी जा रही है —

(१) शृ गार रस The erotic style
(२) हास्य रस The comic style
(३) करुण रस The elegiac style
(४) वीर रस The heroic style
(५) रौद्र रस The tragic style
(६) भयानक रस The terrible style
(७) वीभत्स रस The satiric style
(८) शान्त रस The quietistic style
(९) अद्भुत रम The sensational style

कुछ अन्य शब्द जिनका हिन्दी रूप जानना आवश्यक हे, ये हे—

Occasional poem—सामयिक कविता
Didactic poem—चेतावनी सम्बन्धी कविता
Emblematic poem—दृष्टिकूट
A work on lovers—नायिका भेद

सरोज सर्वेक्षण के समय मैंने ग्रियर्सन के इस ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत किया है। अनुवाद करते समय मुझे ज्ञात हुआ कि उन्होने स्थान-स्थान पर सरोज का अग्रेजी अनुवाद किया है और यह अनुवाद कभी-कभी ऐसा हो गया है, जैसे कोई विद्यार्थी "मेरा, सर चक्कर खा रहा है" का अग्रेजी अनुवाद "माइ हेड इज ईटिंग सरकिल" कर दे, अथवा जैसा कि एक अन्य अग्रेज सस्कृतज्ञ ने कुशासन का अनुवाद "सीट आफ रामाज़ सन" किया था। बिचारे को राम के पुत्र कुश का पता था, सन्धि विग्रह भी वह जानता था, पर उसे कुश नामक घास विशेष का पता नही था।

गुमान मिश्र ने प्रसिद्ध नैपध चरित्र का हिन्दी पद्यानुवाद 'काव्य कला निधि, नाम से प्रस्तुत किया था। इस अनुवाद की प्रशसा करते हुये सरोजकार लिखता है :—

"पचनली, जो नैपध मे एक कठिन स्थान है, उसको भी सलिल कर दिया"

इसका जो अनुवाद ग्रियर्सन ने किया है उसका हिन्दी रूपान्तर यह है —

"इन्होंने पचनलीय पर, जो नैपध का एक अत्यन्त कठिन अश है, सलिल नाम एक विशेप टीका लिखी।"

ग्रियर्सन को इस सम्वन्ध मे सदेह था और उन्होने इस सलिल पर यह पाद टिप्पणी दे दी है .—

"अथवा शिवसिंह का, जिनसे मैंने यह लिया है, यह अभिप्राय है कि उन्होने पचनलीय को विलकुल पानी की तरह स्पष्ट कर दिया है।"

चतुर सिंह राना के सम्वन्ध मे शिवसिंह ने लिखा है —

"सीधी वोली मे कवित्त है।"

उदाहरण से स्पष्ट है कि शिवसिंह का अभिप्राय खडीवोली से है। ग्रियर्सन ने सीधी वोली का अनुवाद" सिम्पुल स्टाइल" किया है।

इसी प्रकार शिवसिंह ने नृप शभु[1] के सम्वन्ध मे लिखा है "इनकी काव्य निराली है।" सरोज मे काव्य सर्वत्र स्त्रीलिंग मे प्रयुक्त हुआ है। ग्रियर्सन ने निराली को ग्रन्थ समझ लिया है। ग्रियर्सन को आधार मान कर यदि कोई अन्वेपक सिर मारता फिरे, तो असम्भव नही इतिहास लेखक तो इस कवि के इस निराले ग्रन्थ निराली का उल्लेख सहज ही कर सकते हैं।

ग्रियर्सन मे कुल ९५१ कवि हैं। इनमे से निम्नाकित ६५ कवि अन्य सूत्रो से लिए गये हैं, जिनमे विलसनकृत रेलिजस सेक्ट्स आफ हिन्दुज और जर्नल आफ एशियाटिक सोसाइटी आफ वगाल (विशेपकर अक ५३) प्रमुख हैं। मैथिल कवि इसी अक से लिये गये हैं।

१।९ जोधराज	२।१० रामानन्द
३।११ भवानन्द	४।१४ भगोदास
५।१५ श्रुतगोपाल	६।१७ विद्यापति, मैथिल
७।१८ उमापति, मैथिल	८।१९ जयदेव मैथिल
९।४९ हठी नारायण	१०।५८ ध्रुवदास
११।१२२ जगन्नाथ, अकवरी दरवारवाले	१२।१६३ दादू
१३।१६७ प्राणनाथ, पन्नावाले	१४।१६८ वीरभान
१५।१७१ नजीर अकवरावादी	१६।१७४ वेदाग राय
१७।१८४ जगतसिंह, चित्तौर के राना	१८।१९४ सूजा
१९।२०६ गम्भीर राय	२०।३२० गगापति
२१।३२१ शिवनारायण	२२।३२२ लाल जी
२३।३२४ दूल्हाराम	२४।३६० मनवोध झा, मैथिल
२५।३६१ केशव, मैथिल	२६।३६२ मोद नारायण, मैथिल

[1] यही ग्रथ। कवि सख्या ८३७

२७|३६३ लाल झा मैथिल
२८|४३४ ठाकुर द्वितीय
२९|४३७ मीर अहमद
३०|४८७ देवी दास, जगजीवन दास के शिष्य
३१|५१८ बलदेव, विक्रमसाहि चरखारी के आश्रित
३२|५६२ हरिप्रसाद, बनारसी
३३|६२८ जयचन्द, जयपुरी
३४|६३४ बखतावर, हाथरसवाले
३५|६४० तुलसी राम अगरवाला, मीरापुरवाले
३६|६४२ भानुनाथ झा, मैथिल
३७|६४२ हरखनाथ झा, मैथिल
३८|७०० लछमीनाथ ठाकुर, मैथिल
३९|७०१ फतूरी लाल मैथिल
४०|७०२ चन्द्र झा, मैथिल
४१|७०३ जानकिरिञ्चिदन
४२|७०४ प० अम्बिकादत्त व्यास
४३|७०५ प० छोट्टू राम तिवारी
४४|७३८ अम्बिका प्रसाद
४५|७३९ काली प्रसाद तिवारी
४६|७४० बिहारी लाल चौबे
४७|७६७ नामदेव
४८|८०६ किसनदास, भक्तमाल के एक टीकाकार
४९|८१४ गुमानी, कवि पटना के
५०|८२२ चक्रपानि, मैथिल
५१|८२३ चतुरभुज, मैथिल
५२|८२८ जयानन्द, मैथिल
५३|८३४ डाक
५४|८४५ नजामी
५५|८४७ नन्दी पति
५६|८५५ परमल्ल
५७|८५६ प्रेमसेश्वर दास
५८|८६५ वरगराम
५९|८८३ बुलाकी दास
६०|८८१ भजन, मैथिल
६१|८८२ भट्टरि
६२|८९० महिपति, मैथिल
६३|९०० रमापति, मैथिल
६४|९११ रमाकान्त
६५|९३० नरसराम मैथिल

इस प्रकार ग्रियर्सन ने ९५१—६५-८८६ कवियो का उल्लेख एक मात्र सरोज के सहारे किया है, जो कुल का ९४ प्रतिशत है।

सरोज के कवियो की सख्या १००३ है। इनमे से ४६ कवियो को ग्रियर्सन ने गृहीत नही किया है। सरोज के कुल ९५७ कवि ग्रियर्सन मे उल्लिखित है, जिनमे से ८८६ को तो एक-एक स्वतन्त्र अक दिया गया है, शेष ७१ कवि अन्य कवियो मे मिला दिये गये है।

इन ४६ अस्वीकृत कवियो मे से १२ का तो सरोज मे सन्-सम्वत् दिया हुआ है और ४ को "वि०" (विद्यमान) कहा गया है। शेष ३० तिथिहीन है।

इनकी सूची यथास्थान आगे दी गई है।

सरोज के १००३ कवियो मे ६८७ कवि तिथियुक्त हैं, ५३ कवि वि० हैं और २६३ कवि तिथिहीन है। ६८७ स-तिथि कवियो मे से ६७५ ग्रियर्सन मे स्वीकृत है, इनमे से ४३८ सम्वत् भी ग्रियर्सन ने स्वीकार कर लिये हैं। इन ४३८ सम्वतो मे से ३८५ जन्म सम्वत् माने गये है और ३७ उपस्थिति सम्वत्। १५ सम्वतो के सम्बन्ध मे ग्रियर्सन यह नही निश्चय कर पाये है कि इन्हे जन्म सम्वत् माना जाय अथवा उपस्थिति सम्वत्। आगे दी हुई सारिणी से स्पष्ट हो जायगा कि किन-किन सख्या वाले कवियो के सम्वत् सीधे सरोज से स्वीकार कर लिये गये है। सारिणी मे सदिग्धावस्था वाले सम्वतो की सख्या १९ है। इनका कारण यह है कि ४४३ और ४४७ सख्यक कवि

सरोज के एक ही कवि सोमनाथ है जिन्हे सोमनाथ और ब्राह्मणनाथ नाम से दो कवि मान लिया गया है। इसी प्रकार ६३५ और ६३६ सख्यक दलपतिराय एव वशीधर वस्तुत दो कवि है। ग्रियर्सन मे इन्हे दो अक दिये गये ह सरोज मे एक ही। इसीलिये इन सख्याओ को कोष्टक मे रख दिया गया है। २७८ सख्यक कमन्च कवि के सम्बन्ध मे भी सरोज मे दिया सम्वत् स्वीकार किया गया है। पर इन्हे उक्त सम्वत् (१६५३ ई०) के पूर्व उपस्थित कहा गया है।

ग्रियर्सन के उन कवियों की सारणी जिनके सम्वत् सरोज से लिये गये है

अध्याय	जन्म सम्वत्	योग	उपस्थिति सम्वत्	योग	संदिग्ध जन्म या उपस्थिति	योग	पूर्ण योग
१ चारणकाल			१	१			१
२ पद्रहवीं गती का धार्मिक पुनरुत्थान	२२	१					१
परिशिष्ट	२३-३०	८					८
३ मलिक मुहम्मद का प्रेम काव्य							
परिशिष्ट	३२	१					१
४. व्रज का कृष्ण सम्प्रदाय	५३, ५५, ६४-६६	८					८
परिशिष्ट	७०-७२,७५,७७-८३ ८५-१०२	२८	७३,७४	२			३०
५ मुगल दरबार	१०५, १०६, १०६, ११५-२१, १२५, १२७	१२	११४,१२६	२			१४
६ तुलसीदास	१२६,	१					१
७ रीति शास्त्र	१४०, १४१, १४४, १५०, १५४, १५५, १५८	७	१४२,१५३, १५७,	३	१५६	१	११
८ तुलसीदास के अन्य परवर्ती							
(क) धार्मिक कवि	१६५, १६६, १७०	३					३
(ख) अन्य कवि	१७२, १७५-८०, १८२, २०८, २१०, २१३-१७	१५	१७३	१	२११	१	१७
परिशिष्ट	२१८-३४, २३६-४५ २४७-५४, २५६-६०, २६२-६६, २६८, २७०-७१, २७३-७७, २७६-८४, २८६-८८, २६१-३०४,३०६, ३०७, ३०६-१८	८८	२३५,२७२, २८५, २८६-६०, ३०८	६			६४

अध्याय	जन्म सम्वत्	योग	उपस्थिति सम्वत्	योग	संदिग्ध जन्म या उपस्थिति	योग	पूर्ण योग
९ अठारहवी शताब्दी							
(क) धार्मिक कवि							
(ख) अन्य कवि	३४४-४६,३५५,३६४, ३६५,३६७	७	३५०,३५८, ३३६,३६९, ३७०,३७२ ३७४	७			१४
परिशिष्ट	३८२-८५,२८७-९१,३९३-९४,३९७-४०२,४०४-३०, ४३२-३३,४३६-३८,४४०-४२, ४४५-४६,४४८-६०, ४६२-८२,४८५,४८६,४८९, ४९१-९९ ५००-०१	९९	४०३,४८८, ४९७	३	(४४३,४४७) ४४४,४८३ ४८४	५	१०७
१० कम्पनी के अन्दर हिन्दुस्तान							
(क) बुन्देलखड और बघेलखड	५१०-१२	३	५०४	१	५२७	१	५
परिशिष्ट	५३३-४३,५४५-५८	२५					२५
(ख) बनारस	५७०,५७४,५७८	३	५५९,५८२	२	५६०	१	६
परिशिष्ट	५८४-८८	५					५
(ग) अवध	५८९,५९१-९२,५९४-९७ ६०३,६०५-०६	१०	५९०,५९८	२	५९३	१	१३
परिशिष्ट	६०७-१७,६१९-२७	२०					२०
(घ) अन्य	६३०-३२,६४३-४४	५			(६३५,६३६) ६३७ ६३९	४	९
परिशिष्ट	६४६-४८,६५०-५९, ६६१,६६३-६७,६६९, ६७१,६७३-७६,६७८, ६७९,६८१-८९	३६	६४९,६६७ ६६८-६७२ ६७७,६९०	६			४२
११ विक्टोरिया की छत्रछाया मे हिन्दुस्तान			६९१ (मृत्यु)	१			१
परिशिष्ट					७०७-०९	३	३
सरोज दत्त सम्वत् से पूर्व उपस्थित २७८		३८५		३७		१७	४३९ १

कुल ४४०

ग्रियर्सन के प्रथम ११ अध्यायों मे सन्तिथि कवियो का विवरण है। १२ वे अध्याय मे उन

कवियो का उल्लेख हुआ है, जिनका सन्-सम्वन् ग्रियर्सन नही कर पाये है। प्रथम ११ अध्यायो मे कुल ७३९ कवि हैं। इनमे से ४४० के सम्वन् (कुल ४३८ सम्वत् ज्यो के त्यो सरोज मे लिये गये है। अत. ग्रियर्सन मे कुल २९९ सम्वत् नये हैं।

इन २९९ नये सम्वतो मे से ४६ कवि तो पूर्णरूपेण नये है। ये ग्रियर्सन मे नये आये ६५ कवियो मे से प्रथम ४६ कवि हैं। यह सूची पीछे दी जा चुकी है। अत इन २९९ कवियो मे से केवल २५३ कवि सरोज से उद्धृत हैं। इनमे से निम्नाकित ११ कवियो की तिथियाँ पूर्णरूपेण नई है। सरोज मे इनकी कोई तिथि नही दी गई है।

क्रम सं०	कवि नाम	ग्रियर्सन सख्या	सरोज सख्या
१	गदाधर दास	४६	१५६
२	जगामग	१२३	१०२
३	नीलाधर	१३३	४४१
४	सुन्दर दास (सत)	१६४	८७७
५	हरिचन्द, चरखारीवाले	१७४	१०७२
६	राव रतन राठौर	२०७	७९६
७	प्रह्लाद, चरखारीवाले	५१३	४८५
८	मान कवि, बुन्देलखडी	५१७	७०२
९	देव, काष्ठ-जिह्वा स्वामी	५६९	३६१
१०	दिनेश	६३३	३५५
११	रघुनाथ दास, महन्थ, अयोध्या	६९२	७४२

रघुनाथ सिंह, रीवाँ नरेश एव राजा शिव प्रसाद सितारे हिन्द को सरोज मे वि० लिखा गया है। ग्रियर्सन ने इनका जन्म एव सिहासनारोहण सम्वत् दिया गया है, साथ ही इन्हे १८८३ ई० (सरोज के द्वितीय सस्करण का समय) मे उपस्थित कहा गया है। ये सम्वत् भी नये हैं। अब ग्रियर्सन के २५३-११-२ = २४० कवियो के सम्वतो पर विचार करना शेष रहा जाता है।

सरोज मे कुल ५३ कवि वि० कहे गये हैं इनमे से ४४ का उल्लेख ग्रियर्सन के प्रथम ७४० स-तिथि कवियो के भीतर हुआ है। रघुराज सिह एव शिव प्रसाद सितारे हिन्द को छोडकर शेष ४२ कवियो को सन् १८४३ ई० मे जीवित कहा गया है। यह समय सरोज के द्वितीय सस्करण के प्रकाशन का है। इसी सस्करण का उपयोग ग्रियर्सन ने किया था। सरोजकार ने जिसे १८७८ ई० मे विद्यमान कहा था, ग्रियर्सन ने उसे १८८३ मे भी विद्यमान मान लिया है। इन ४२ कवियो की सूची निम्नाकित है :—

अध्याय १०

१।५७१ सरदार

२।५७२ नारायण राय

३।५७३ गणेश, बनारसी

४।५७६ बदन पाठक, बनारसी

५।५७९ सेवक, बनारसी

६।५८१ हरिश्चन्द्र, बनारसी

७।५८३ मन्नालाल द्विज, बनारसी

८।६०१ जगन्नाथ अवस्थी

९।६०४ माधव सिह, राजा अमेठी (छितिपाल)

अध्याय ११

१०।६६३ अयोध्या प्रसाद वाजपेयी
११।६६४ गोकुल प्रसाद 'ब्रज'
१२।६६५ जानकी प्रसाद पँवार
१३।६६६ महेशदत्त मिश्र
१४।६६७ नन्दकिशोर मिश्र, लेखराज
१५।६६८ मातादीन मिश्र
१६।७११ आनन्द सिंह उपनाम दुर्गासिंह
१७।७१२ ईश्वरी प्रसाद त्रिपाठी
१८।७१३ उमराव सिंह पँवार
१९।७१४ गुरुदीन राय वदीजन
२०।७१५ दलदेव अवस्थी
२१।७१६ रणजीत सिंह राजा
२२।७१७ ठाकुर प्रसाद त्रिवेदी
२३।७१८ हजारी लाल त्रिवेदी
२४।७१९ गगा दयाल दुबे
२५।७२० दयाल कवि, बेतीवाले।
२६।७२१ विश्वनाथ, टिकईवाले
२७।७२२ वृन्दावन, सेमरौता
२८।७२३ लछिराम होलपुरवाले
२९।७२४ सत वकस
३०।७२५ समर सिंह
३१।७२६ शिव प्रसन्न
३२।७२७ सीताराम दास, वनिया
३३।७२८ गुणाकर त्रिपाठी
३४।७२९ सुखराम
३५।७३० देवीदीन, विलग्रामी
३६।७३१ मानादीन सुकल, गजगरावाले
३७।७३२ कन्हैया वक्स, वैसवाडा के
३८।७३३ गिरिधारी भाँट, मऊरानीपुर के
३९।७३४ जवरेश
४०।७३५ रणवीर सिंह, राजा सिंगरामऊ उपनाम रघुनाथ रसूलावादी,
४१।७३६ शिवदीन
४२।७३८ राम नारायण, कायस्थ

इन ४२ कवियो को भी वाद दे देने पर केवल १९८ कवि ऐसे वचते हे, जो सरोज एव ग्रियर्सन मे एक ही हैं। पर ग्रियर्सन मे जिनकी तिथिया सरोज की तिथियो से भिन्न हे। इन १९८ कवियो की सख्या निम्नाकित है —

अध्याय	सख्या	योग
१	२,३,४,५,६,७,८,	७
२	१२,१३,१६,२०,२१	५
३	३१,३३,	२
४	३४-४५,४७,४८,५०,५१,५२,५४,५६,५७, ५९-६३,७१,७६,८४	२८
५	१०३,१०४,१०७,१०८,११०-१३,१२४	९
६	१२८,१३०,१३१,१३२	४
७	१३४-१३६,१४३,१४५-१४६,१५१,१५२,१५९-६२	१८
८	१६६,१८१,१८३,१८५ ९३,१९५-२०३,२०५, २०६,२१२,२४६,२५५,२६१,२६७,२६९,३०५	३०
९	३१६,३२३,३२५-४३,३४७,३४८,३४९,३५१ ३५२,३५३,३५४,३५६,३५७,३५९,३६८,३७१ ३७३,३७५-८०,३८१,३८६,३९२,३९५,३९६ ४३१,४३९,४६१,४९०,४९८,४९९,	५१

१०	५०२,५०३,५०५-०६,५१४-१६,५१६-२६, ५२८-३१,५४४,५६१,५६३-६८,५७५,५७७, ५८०,५६६,६००,६२२,६१८,६२६,६३८,६४५, ६६२,६७०,६८०	४२
११	७१०	१
		कुल १६८

ये १६८ सम्वत् ऐसे है जिनमे से लगभग १५० को ग्रियर्सन ने अन्य सूत्रो से जाच कर लिखा है शेष ऐसे है जिनका मूल आधार वस्तुत सरोज ही है। जोडने घटाने मे साधारण अशुद्धि हो गई है और ग्रियर्सन मे दिया हुआ सन् सरोज के सम्वत् से भिन्न हो गया है।

इस प्रकार ग्रियर्सन के ७३६ सम्वतो मे मे ४४० + ४२ वि०—४८२ सीधे सरोज के आधार पर हैं। यह कुल का ६४ ४% है। सरोज के सम्वतो के ग्रियर्सन कितने आभारी हैं इससे स्पष्ट हो जाता है। इस सम्बन्ध मे स्वय ग्रियर्सन भूमिका मे लिखते हैं –

"(तिथियो की जाँच के) जब सभी उपाय असफल सिद्ध हुये, अनेक बार सरोज ही मेरा पथ प्रदर्शक रहा है। शिवसिह बराबर तिथियाँ देते गये हैं और मैंने सामान्यतया उनको पर्याप्त ठीक पाया है। हाँ, वे प्रसग प्राप्त कवि की जन्म-तिथि ही सर्वत्र देते हैं। जब कि वस्तुत अनेक बार ये तिथियाँ उक्त कवियो के प्रमुख ग्रन्थो का रचनाकाल है। फिर भी सरोज की तिथियो का कम मे कम इतना मूल्य तो है ही कि किसी अन्य प्रमाण के अभाव मे हम पर्याप्त निश्चिन्त रहे कि प्रसग प्राप्त कवि उस तिथि को जिसे शिवसिह ने जन्म काल के रूप मे दिया है, जीवित था।'—ग्रियर्सन, भूमिका, पृष्ठ १४

ग्रियर्सन ने सर्वत्र ई० सन् का प्रयोग किया है। ये सन् प्राय सरोज के सम्वतो मे मे ५७ घटाकर प्राप्त किये गये हैं। ग्रियर्सन ने सरोज के जिन सम्वतो को स्वीकार किया है उन्हे उन्होने तिर्यक अको मे मुद्रित कराया है। विभिन्न अध्यायो के परिशिष्टो मे जो अप्रधान कवि परिगणित हुये है, वे और उनकी तिथियाँ प्राय सरोज के ही आधार पर हैं।

सरोज मे कुल ६८७ स-तिथि कवि है। इनमे से निम्नाकित १३ को ग्रियर्सन मे अ-तिथि बना दिया गया है।

कवि	सम्वत	सरोज सख्या	ग्रियर्सन सख्या
१ जसवत	१७६२	२६६	७४७
२ लोधे	१७७०	८१६	७५२
३ लोकनाथ	१७८०	८२०	७५३
४ गुलाम नबी, रसलीन	१७६८	७५५	७५४
५ अलीमन	१६३३	२६	७८४
६ नवलदास	१३१६	४४०	७६८
७ गोसाई	१८८२	१६६	८१७
८ बशीधर मिश्र, सडीले वाले	१६७२	५२५	८६४
६ मून	१८६०	७४१	८६५

१० लक्षमरण सिंह	१८१०	८१४	६१५
११ लोने, बुन्देलखडी	१८७६	८१०	६२२
१२ सोमनाथ	१८८०	६१६	६३७
१३ हेम गोपाल	१७८०	६८१	६५१

निम्नांकित ११ कवियो को ग्रियर्सन मे स्वीकार ही नहो किया गया है।

१।१७ अनूप १७९८	२।७७ किशोर, दिल्ली १८०१
३।१८० गोविन्द कवि १७९१	४।२४७ छेम (१), १७५५
५।४०८ नारायण दास कवि (३), १६१५	६।५६३ वरवै सीता कवि १२४९
७।६२४ भीष्म १७०८	८।७०७ मीरा मदनायक १८००
९।७६५ रतन ब्राह्मण वनारसी १९०५	१०।८६६ श्रीधर प्राचीन १७८९
११।९१० सुखलाल १८५५	

४४० की तिथियाँ सरोज से ही ली गई हैं, जिनका विवरण पीछे सारिणी मे दिया जा चुका है। १९८ कवियो की तिथियाँ सरोज की तिथियो से भिन्न है, इनकी भी सूची पीछे दी जा चुकी है। सरोज के स-तिथि कवियो मे से गणना के अनुसार ६८७-(१३+११+४४०+१९८)= २५ कवि अन्य कवियो मे विलीन कर दिये गये है। इनकी सूची निम्नांकित है।

नाम	सरोज सख्या	ग्रियर्सन के जिस कवि मे विलीन हुये है, उसकी सख्या।
१ अगर	३४	४४
२ आनन्द	३९	३४७
३ कविराम	९२	७८५
४ कामता प्रसाद ब्राह्मण	१३३	६४४
५ गुमान (२)	१८६	३४९
६ घन आनन्द	२१२	३४७
७ छीत कवि	२५०	४१
८ जमाल	२८०	८५
९ तालिब शाह	३२६	४३९
१० देवदत्त कवि	३६२	२६१
११ देवदत्त कवि (२)	३६५	
१२ नाथ (४)	४३३	१६२
१३ नाथ (५), हरिनाथ	४३४	३५५
१४ प्रधान	४६२	८५४
१५ वल्लभ	५१७	२३९
१६ विजय, राजा विजय बहादुर बुन्देला	५०५	५१४
१७ विश्वनाथ कवि (१)	५४६	७२१
१८ महेश	६८४	६९६

१९ मक्खन	६३७	६७०
२० रघुराय (२)	७३५	४२०
२१ रतन (२)	७६६	१५५
२२ श्यामलाल	८९४	२६९
२३ सविलादत्त	९०३	३०४
२४ सुखराम	८७९	७२९
२५ हरिराम	९६४	१५१

सरोज के सतिथि कवियो को ग्रियर्सन के कवियो की तुलना मे सक्षेप मे इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है

सरोज	ग्रियर्सन
६८७ स-तिथि कवि	१३ अतिथि बना दिये गये
	११ स्वीकार नही किये गये
	४४० तिथि सहित स्वीकार किये गये
	१९८ भिन्न तिथि के साथ स्वीकार किये गये
	२५ अन्य कवियो मे विलीन कर लिये गये
	योग ६८७

सरोज के ५३ विद्यमान कवियो मे से ग्रियर्सन मे ४२ सन् १८८३ ई० मे जीवित मान लिये गये हैं। रघुराज सिंह एव शिव प्रसाद सितारेहिन्द इन दो कवियो को नये सन्-सम्वत् दे दिये गये हैं। निम्नाकित ४ कवियो को न जाने क्यो ग्रियर्सन ने ग्रहण भी नही किया है।

१ चोवा

२ मखजात, जालपा प्रसाद वाजपेयी।

३ मनोहर, काशीराम रिसालदार भरतपुर

४ शकर सिंह, चडरा, सीतापुर

शेष ५ को वारहवे अध्याय मे अनिश्चित कालीन कवियो मे स्थान दे दिया गया है।

१ कविराम, रामनाथ कायस्थ ७८५

२ रसिया नजीव खा ७८८

३ हनुमान वनारसी ७९६

सुन्दरी तिलक मे इन तीनो की रचना है। अत इन्हे १८६९ ई० से पूर्व उपस्थित माना गया है।

४ कालिका वन्दीजन काशी ७८० इन्हे १८६३ ई० से पूर्व उपस्थित कहा गया है, क्योकि इनकी रचना ठाकुर प्रसाद त्रिपाठी के रस चन्द्रोदय मे है।

५ कालीचरण वाजपेयी ८०१

सरोज के वि० कवियो को ग्रियर्सन की तुलना मे सक्षेप मे इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है।

=

सरोज	ग्रियर्सन
५३	२ को नई तिथियाँ दी गई है
	४२ को १८८३ ई० मे जीवित कहा गया है
	४ को स्वीकार नही किया गया है
	५ को अज्ञातकालीन बना दिया गया हे
	योग ५३

सरोज मे कुल २६३ अ-तिथि कवि है। इनमे से ११ को ग्रियर्सन मे तिथियाँ दे दी गई है। इनकी सूची पीछे दी जा चुकी हे। निम्नांकित ३० कवियो को ग्रियर्सन मे ग्रहण नही किया गया है :—

१।१३४ कृष्ण कवि प्राचीन	२।६४ केशव दास (२)
३।१५० गगाधर, बुन्देलखडी	४।२१० गदाधर कवि
५।१५७ गदाधर राम	६।१६० गिरिधारी (२)
७।२१६ चद कवि (३)	८।२२० चन्द कवि (४)
९।२३४ चैन राय	१०।३०१ जगन्नाथ
११।३१६ तुलसी (४)	१२।३५३ द्विज राम
१३।४३५ नाथ (६)	१४।४०९ नारायण दास वैष्णव (४)
१५।४६४ पचम (२) डलमऊवाले	१६।४७३ परशुराम (१)
१७।४९३ फूनचन्द	१८।५५६ बाल कृष्ण (२)
१९।५६२ वृन्दावन कवि	२०।६७७ मदन गोपाल (२)
२१।६८५ मदन गोपाल (३) चरखारी	२२।६५४ मुरली
२३।६६६ मुरलीधर (२)	२४।६५३ मोती लाल
२५।८१७ लछिराम (२) बृजबासी	२६।८२३ लोकनाथ उपनाम बनारसीनाथ
२७।८६० शकर (२)	२८।८५२ शिवदीन
२९।८७३ सन्त (१)	३०।९६० सुमेर

इनमे ४७ अ-तिथि कवि अन्य कवियो में विलीन कर दिये गये हे, जिनकी सूची यह है :—

कवि	सरोज सख्या	ग्रियर्सन स० जिनमे विलीन
१ अनन्य (२)	३१	४१८
२ कृपाराम	१२६	७९७
३ कृपाराम	१२७	
४ खुमान	१३६	१७०
५ खेम, बुन्देलखडी	१४५	१०३
६ चतुर	२२८	६५
७ चतुर बिहारी	२२९	
८ चतुर्भुज	२३०	४०
९ चिन्तामणि	२२२	१४३

कवि	सरोज सख्या	ग्रियर्सन स० जिनमें विलॅन
१० चैन	२३२	६२७
११ छत्रपति	२५३	७५
१२ छेम करण	२४४	३११
१३ जगन्नाथ दास	२८६	७६४
१४ जानकी दास (३)	२६२	६६५
१५ जुगल दास	३०३	३१३
१६ जुगल किशोर कवि (१)	२५७	३४८
१७ जैत राम	२७२	१२०
१८ तारा	३२२	४१९
१९ दयानिधि (२)	३३६	७८७
२० दयाराम (१)	३३४	३८७
२१ दामोदर कवि	३४७	८४
२२ दास बृजवासी	३७५	३६९
२३ नन्द	४२४	६९७
२४ नन्द किशोर	४२९	
२५ नवल	४३८	८४९
२६ प्रेम	४८०	३५१
२७ वश गोपाल, वन्दीजन	५४२	५४९
२८. वशीधर	५२४	५७४
२९ वशीधर (३)	५२८	
३० विष्णुदास (१)	५२६	७९९
३१ बीठल	५२१	३५
३२ ब्रह्म, राजा बीरवल	५८९	१०६
३३ बृजवासी	५३४	३६९
३४ भगवत	६००	३३३
३५ भगवान कवि	६०१	
३६ भीषमदास	६१३	२४०
३७ मनसा	६३९	८८५
३८ मनीराम (१)	६७४	६७६
३९ मान कवि (१)	६२९	५१७
४० राम कृष्ण (२)	७२९	५३८
४१ राय जू	७७९	९१३
४२ रूप	७७१	२६८
४३ शकर (१)	८५९	६१३
४४ शिव दत्त	८४९	५८८
४५ सवल सिह	९१२	२१०

४६ हरिलाल (?)	९७३	९४६
४७ हुलास राम	१००३	९४९

सरोज के निम्नांकित १७५ अ-तिथि कवि ग्रियर्सन में गृहीत हुए हैं।

(क) केवल सरोज में उल्लिखित—

७९९,८००,८०२-५,८०७-१३,८१५-१६,८१८-२१,८२४-२७,८२९-३३,८३५-४४, ८४६,८४८-५८ ८५६-५८ ८६०-६३,८६६-७२,८७४-८०,८८३-८६,८९१-९४,८९६-९९,९०१-१०,९१२-१४,९१६-२१,९२३-२९,९३१-३६,९३८-५०,९५२ कुल १२८ कवि

(ख) अन्य सूत्रों में भी उपलब्ध--

(१) तुलसी के कवि माला में उल्लिखित, अत १६५५ ई० से पूर्व स्थित—७४१,७४२, ७४३, ७४४,७४५,७४६
योग ६ कवि

(२) कालिदास के हजारा में उल्लिखित, अत' १७१८ ई० से पूर्व स्थित ७४८–५१
योग ४ कवि

(३) भिखारी दास के काव्य निर्णय में उल्लिखित, अत. १७२३ ई० से पूर्व स्थित ७५५–५६
योग २ कवि

(४) सूदन द्वारा उल्लिखित, अत १७५३ ई० से पूर्व स्थित ७५७ – ६२ योग ६ कवि

(५) कृष्णानन्द व्यासदेव के राग कलपद्रुम में उल्लिखित, अत. १८४३ ई० से पूर्व स्थित ७६३-६६,७६८-७९
योग १६ कवि

(६) गोकुल प्रसाद, 'ब्रज' के दिग्विजय भूषण में उल्लिखित, अत १८६८ ई० के पूर्व स्थित ७८१-८३
योग ३ कवि

(७) हरिश्चन्द्र के सुन्दरी तिलक में उल्लिखित, अत. १८६९ ई० से पूर्व स्थित ७८६-८७, ७८९-९५
योग ९ कवि

(८) महेश दत्त के काव्य-संग्रह में उल्लिखित, अत. १८७५ ई० से पूर्व स्थित, ७९७
योग १ कवि

कुल योग ४७ कवि

संक्षेप में अ तिथि कवियों का तुलनात्मक विवरण यह है —

सरोज	ग्रियर्सन
२६३	११ को नई तिथियाँ दी गई
	३० को ग्रहण नहीं किया गया
	१७५ को ग्रहण किया गया और कोई तिथि नहीं दी गई
	४७ को अन्य कवियों में विलीन कर दिया गया।
	कुल योग २६३

किन्तु इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि ग्रियर्सन का यह ग्रन्थ पूर्णतया सरोज का अनुवाद है। इतना विस्तार यह दिखलाने के लिये किया गया कि हिन्दी साहित्य के इतिहास के सहायक सूत्रों में सरोज का महत्व सर्वाधिक है। ग्रियर्सन की अनेक ऐसी विशेषतायें हैं जिन्होंने बाद में लिखे जाने वाले हिन्दी साहित्य के इतिहासों को पर्याप्त प्रभावित किया है।

(१) यह ग्रन्थ हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास है। इसमे पहली बार कवियो का विवरण कालक्रमानुसार दिया गया है। इसके पूर्व लिखित सरोज एव तासी मे कवियो का विवरण वर्णानुक्रम से है।

(२) इस ग्रन्थ मे हिन्दी साहित्य के इतिहास के विभिन्न काल विभाग भी किये गये है। विनोद मे बहुत कुछ इन्ही कालो को स्वीकार कर लिया गया है।

(३) प्रत्येक काल की तो नही, कुछ कालो की सामान्य प्रवृत्तियाँ भी दी गई है, यद्यपि यह विवरण अत्यन्त सक्षिप्त है।

(४) प्रत्येक कवि को एक-एक अक दिया गया है, बडी आसानी से किसी भी कवि को उसके नियत अक पर देखा जा सकता है। इसी पद्धति का अनुकरण बाद मे विनोद मे भी किया गया है। सरोज मे भी किसी अश तक यह पद्धति है, यहाँ एक वर्ण के कवियो की क्रम-सख्या अलग-अलग दी गई है।

(५) सरोज मे कवियो के विवरण अत्यन्त सक्षिप्त है। इस ग्रन्थ मे भी यही बात है। पर निम्नाकित १६ कवियो का विवरण पर्याप्त विस्तार से दिया गया है —

(१) चन्दबरदाई (२) जगनिक (३) सारगधर (४) कबीरदास (५) विद्यापति ठाकुर (६) मलिक मुहम्मद जायसी (७) वल्लभाचार्य (८) विठ्ठलनाथ (६) सूरदास (१०) नाभादास (११) बीरबल (१२) तुलसी दास (१३) बिहारी लाल (१४) सरदार (१५) हरिश्चन्द्र (१६) लल्लू जी लाल (१७) कृष्णानन्द व्यास देव (१८) राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द।

इनमे से जायसी और तुलसी पर तो अलग-अलग अध्याय ही है। सम्भवत इन्ही अध्यायो ने आचार्य शुक्ल का विशेष ध्यान इन कवियो की ओर आकृष्ट किया। अब हिन्दी मे अनेक अच्छे इतिहास प्रस्तुत हो गये है। और ग्रियर्सन को आधार मानकर हिन्दी साहित्य के इतिहास की जानकारी प्राप्त करना न तो वाछनीय है और न श्रेयस्कर ही। इसी को आधार मानकर चलने वाले को अनेक भ्रान्तियाँ हो सकती है। सरोज की अधिकाश भ्रान्तियाँ यहाँ भी सुरक्षित हैं, जो यहाँ से खोज रिपोर्टो मे और अन्यत्र पहुँची। यही सरोज के सन् सम्वतो के उ० का भ्रान्त अर्थ सर्वप्रथम हुआ, जो इसी के आधार पर आज तक चलता जा रहा है। इतना सब होते हुए भी शोध के विद्यार्थी के लिए इस ग्रन्थ का महत्व है। हिन्दी साहित्य के पहले इतिहास की रूप रेखा क्या थी, बाद मे लिखे गये इतिहासो को इसने कहाँ तक प्रभावित किया, यह सब जानने के लिए इस ग्रन्थ के हिन्दी अनुवाद की नितान्त आवश्यकता है।

ख सभा की खोज रिपोर्ट एव विनोद

सभा हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थो की खोज का कार्य १६०० ई० मे प्रारम्भ किया। प्रारम्भिक खोज रिपोर्टो मे कवियो का विवरण एव सन्-सम्वत् ग्रियर्सन के आधार पर दिया गया है। ग्रियर्सन का ही यह प्रभाव है कि रिपोटो मे ई० सन् का प्रयोग होता रहा। यहाँ तक कि जिन कवियो के ग्रन्थो मे रचनाकाल विक्रम सम्वत् मे दिये गये है, उनके भी समय कभी-कभी ई० सन् मे परिवर्तित कर दिये गये है। खोज रिपोर्टो को प्रस्तुत करने वालो ने ग्रियर्सन का पल्ला पकडा है। स्वय ग्रियर्सन ने जिन शिवसिह सेगर का सहारा लिया था उन्हे भुला दिया गया है। एक अग्रेज सिविलियन का काम एक पूर्ववर्ती देशी पुलिस इस्पेक्टर के काम से अच्छा और प्रामाणिक माना गया। परिणाम यह हुआ

कि ग्रियर्सन ने 'उ०' का अर्थ करने मे जो भ्रान्ति की थी वह खोज रिपोर्टों मे भी ज्यो की त्यो उतर आई जो रिपोर्टो पर सरोज का प्रत्यक्ष नहीं, अप्रत्यक्ष प्रभाव है।

विनोद का हिन्दी मे लिखित हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास है। इसका प्रथम सस्करण १९१३-१४ मे प्रस्तुत किया गया था। इसके पश्चात् कालीन सस्करणो मे परिवर्धन होता रहा है। विनोद की रचना के दो मुख्य आधार है, ग्रियर्सन एव सभा की खोज रिपोर्टे। सरोज का भी यत्र-तत्र सीधा सहारा लिया गया है। ग्रियर्सन एव खोज रिपोर्टो द्वारा इसका सहारा अप्रत्यक्ष रूप से तो लिया ही गया है सरोज के सम्वतो को प्राय जन्म सम्वत् स्वीकार किया गया है। इनमे से अधिकाश को विनोद मे भी जन्म-सम्वत् ही माना गया है। पर अनेक स्थलो पर विनोद मे सरोज अथवा ग्रियर्सन मे दिये गये सम्वतो को रचनाकाल भी माना गया है। उदाहरण के लिये अनीस, अवध वक्स, आकूव, आसिफ खा, उधो राम, कविराज वन्दीजन का नाम लिया जा सकता है। यह अन्तर अन्य स्थलो पर मिलेगा, जो परिशिष्ट मे दी हुई तुलनात्मक तालिका मे स्पष्ट देखा जा सकता है। पर इसका अर्थ यह कदापि नही कि मिश्रवन्धु सरोज मे दिए हुये सम्वत् को उपस्थित काल अथवा रचनाकाल समझते है। वास्तविकता यह है कि वे भी ग्रियर्सन की ही आँखो देखते है और उ० का अर्थ उत्पन्न ही करते है। यह वात उन कवियो के प्रसग मे स्पष्ट हो जाती है, जहाँ विनोद मे सरोज के सम्वत् को जन्म सम्वत् मान कर नवोपलब्ध प्रमाणो के आधार पर अशुद्ध सिद्ध किया गया है। यदि सरोज के उक्त सम्वत् को उपस्थिति सम्वत् मान लिया जाय, तो अशुद्ध सिद्ध सम्वत् शुद्ध सिद्ध हो जाता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि सरोज की सहायता विना ग्रियर्सन अपने 'द माडर्न वर्नाक्यूलर लिटरेचर आफ नदर्न हिन्दुस्तान' की रचना नही कर सकते थे। परन्तु यदि ग्रियर्सन का ग्रन्थ न लिखा गया होता, तो भी सभा की खोज प्रारम्भ की जाती, उसकी खोज रिपोर्टें प्रस्तुत की जाती एव उनके आधार पर विनोद का प्रणयन होता। नि.सदेह तव इनमे सीधे सरोज की सहायता ली जाती और कौन जाने तव उ० का अर्थ उपस्थित ही किया जाता।

अध्याय ३

सरोज के आधार ग्रन्थ

सरोज के प्रणयन मे तीन प्रकार के ग्रन्थो से सहायता ली गई है —

१ कवियो के मूल ग्रन्थ, २ प्राचीन सग्रह ग्रन्थ, ३ इतिहास ग्रन्थ।

इनके अतिरिक्त कुछ अन्य सहायक सूत्र भी है जैसे, भिखारी दास और सूदन के ग्रन्थ।

क. कवियों के मूल ग्रन्थ

शिवसिंह के पास अनेक कवियो के हस्तलिखित ग्रन्थ थे। इनमे से अनेक ग्रन्थो मे से उन्होने उनकी कविताओ के उदाहरण दिये है। उदाहरण देते समय इन ग्रन्थो का निर्देश कर दिया गया है। इन ग्रन्थो की सूची शिवसिंह के पुस्तकालय प्रकरण मे पीछे दी जा चुकी है। जीवनचरित्र खड मे अनेक ग्रन्थो के अपने पुस्तकालय मे होने का उल्लेख उन्होने किया है। किन्ही-किन्ही ग्रन्थो का उन्होने कुछ विस्तृत विवरण भी दिया है, जिससे लगता है कि उन्होने इन ग्रन्थो को अवश्य देखा था।

ख प्राचीन सग्रह ग्रन्थ

शिवसिंह के यहाँ अनेक काव्य सग्रह थे। दस नाम वाले और २८ बिना नाम वाले सग्रह-ग्रन्थो से सहायता लेने का उल्लेख शिवसिंह ने भूमिका मे किया है। यहाँ एक-एक करके नाम वाले सग्रह ग्रन्थो का यथाशक्य परिचय एव उनसे ली गई सहायता का उल्लेख किया जा रहा है।

१. कवि माला

यह सग्रह कवि यदुराय के पुत्र तुलसी ने सम्वत् १७१२ मे प्रस्तुत किया था। इसमे सम्वत् १५०० से लेकर सम्वत् १७०० तक के ७५ कवियो के कवित्त थे। यह ग्रन्थ अब उपलब्ध नही है। जीवन खड मे शिवसिंह ने निम्नाकित ८ कवियो के विवरण मे उनकी रचनाओ के कवि माला मे होने का उल्लेख किया है .—

(१) जदुनाथ, (२) तोप, (३) शख, (४) साहब, (५) सुबुद्धि, (६) श्रीकर, (७) श्रीहठ, (८) सिद्ध।

२ कालिदास हजारा

कालिदास त्रिवेदी बनपुरा अन्तरवेद के निवासी थे। औरगजेब की सेना के साथ ये गोलकुडा की लडाई मे गये थे। हजारा मे इन्होने सम्वत् १४८० से लेकर सम्वत् १७७५ तक के २१२ कवियो के १००० हजार छद सकलित किए थे। सरोज के प्रणयन मे इस ग्रन्थ से बहुत सहायता ली गई थी। भूमिका के अनुसार यह ग्रन्थ सम्वत् १७५५ के लगभग बनाया गया। जीवन खड के अनुसार इसमे सम्वत् १७७५ तक के कवियो की रचनाये थी। अभी तक यह ग्रन्थ खोज मे उपलब्ध नही हो सका है।

निम्नाकित ८५ कवियो के विवरण मे यह उल्लेख किया गया है कि इनकी रचनाये अथवा इनके नाम हजारा मे थे .—

(१) अमरेश, (२) कोलीराम, (३) अभयराम, वृन्दावनी, (४) ऊधोराम, (५) कुन्दन कवि, बुन्देलखडी, (६) कबीर, (७) कल्याण कवि, (८) कमाल, (९) कलानिधि कवि (१) प्राचीन, (१०) कुलपति मिश्र, (११) कारबेग फकीर, (१२) गोविन्द अटल, (१३) गोविन्द जी कवि, (१४) ग्वाल

प्राचीन, (१५) घनश्याम शुक्ल, (१६) घासी राम, (१७) चन्द कवि (४), (१८) छैल, (१९) छीत, (२०) जमाल कवि (२), (२१) जलालउद्दीन कवि, (२२) जगनन्द, वृन्दावनवासी, (२३) जोइसी, (२४) जीवन, (२५) जगजीवन, (२६) ठाकुर, (२७) तत्ववेत्ता, २८) तेगपाणि,(२९) ताज, (३०) तोष, (३१) दिलदार, (३२) नागरी दास, (३३) निधान (१) प्राचीन, (३४) नन्दन, (३५) नन्दलाल (१), (३६) परमेश प्राचीन, (३७) पह्लाद, (३८) पतिराम, (३९) पृथ्वीराज, (४०) परवत, (४१) बलदेव प्राचीन (४), (४२) व्यास जी कवि, (४३) वल्लभ रसिक, (४४) ब्रजदास कवि प्राचीन, (४५) ब्रज लाल, (४६) बिहारी कवि प्राचीन (२), (४७) बाजीदा, (४८) बुधिराम, (४९) बलि जू, (५०) भूषण, (५१) भीषम कवि, (५२) भूधर काशीवाले, (५३) भृंग, (५४) भरमी, (५५) मुकुन्द प्राचीन, (५६) मोती राम, (५७) मनसुख, (५८) मिश्र कवि, (५९) मुरलीधर, (६०) मीर रुस्तम, (६१) मुहम्मद, (६२) मीरामाधव (६३) मधुसूदन, (६४) राम जी कवि (१), (६५) रघुनाथ प्राचीन, (६६) रसिक शिरोमणि, (६७) रूपनारायण, (६८) राजाराम कवि (१), (६९) लालन दास, ब्राह्मण, डलमऊवाले, (७०) लोधे, (७१) सेख, (७२) श्याम कवि, (७३) शिरोमणि, (७४) शशिशेखर, (७५) सहीराम, (७६) सदानन्द, (७७) सकल, (७८) सामन्त, (७९) सेन, (८०) सेनापति, (८१) शिव प्राचीन, (८२) हुसेन, (८३) हरिजन कवि, (८४) हरजू, (८५) हीरामणि।

३ सत्कवि गिराविलास

इस सग्रह के सकलयिता बलदेव, बघेलखडी है। यह सग्रह सम्वत् १८०३ मे प्रस्तुत किया गया। इसमे बलदेव के अतिरिक्त निम्नाकित १७ कवियो की रचनायें है —

(१) शम्भुनाथ मिश्र, (२) शम्भुराज, सोलकी, (३) चिन्तामणि, (४) मतिराम, (५) नीलकठ, (६) सुखदेव पिंगलो, (७) कविन्द त्रिवेदी, (८) कालिदास, (९) केशव दास, (१०) बिहारी, (११) रविदत्त, (१२) मुकुन्द लाल, (१३) विश्वनाथ अताई, (१४) बाबू केशव राय, (१५) राजा गुरुदत्त सिंह अमेठी, (१६) नवाब हिम्मत बहादुर, (१७) दूलह।—शिवसिंह सरोज, पृष्ठ ४५२

निम्नाकित कवियो का विवरण देते समय इनकी रचनाओ के सत्कवि गिराविलास मे होने का उल्लेख हुआ है--

(१) केशव राय बाबू बघेलखडी

(२) विश्वनाथ अताई बघेलखडी

(३) रविदत्त
(४) सविता दत्त बाबू } दोनो एकही कवि है। सविता रवि का पर्याय है।

(५) हिम्मत बहादुर नवाब

यह ग्रन्थ अभी तक उपलब्ध नही हो सका है।

४ विद्वन्मोद तरगिणी

यह सग्रह ओयल के राजा सुब्बा सिंह उपनाम 'श्रीधर' द्वारा सम्वत् १८७४ (विनोद के अनुसार सम्वत् १८८८) मे इनके काव्य गुरु सुवश शुक्ल की सम्मति से रचा गया। इस ग्रन्थ मे नायिका-नायक भेद, चारो दर्शन, सखी, दूती, षट्ऋतु, रस निर्णय, विभाव, अनुभाव, भाव, भाव शबलता, भाव उदय इत्यादि विषय विस्तारपूर्वक कहे गये है। अन्य कवियो की रचनायें उदाहरणस्वरूप दी गई हैं। सरोज मे किसी कवि के विवरण मे नही कहा गया है कि इनकी रचनाये विद्वन्मोद तरगिणी

मे है। विनोद के अनुसार इसमे श्रीधर के २५, ३० से अधिक छद नही है। सुवंश के छद अधिक है। श्रीधर के अतिरिक्त इसमे निम्नाकित ४४ कवियो के छद है :—

(१) सुवश, (२) कविन्द, (३) रघुनाथ, (४) तोष, (५) ब्रह्म, (६) शम्भु, (७) शम्भुराज, (८) देव, (९) श्रीपति, (१०) बेनी, (११) कालिदास, (१२) केशव, (१३) चिन्तामणि, (१४) ठाकुर, (१५) देवकीनन्दन, (१६) पद्माकर, (१७) दूलह, (१८) बलदेव, (१९) सुन्दर, (२०) सगम, (२१) जवाहिर, (२२) शिवदास, (२३) मतिराम, (२४) सुलतान, (२५) सखी सुख, (२६) हठी, (२७) शिव, (२८) दास, (२९) परसाद, (३०) मोहन, (३१) निहाल, (३२) कविराज, (३३) सुमेर, (३४) जुगराज, (३५) नन्दन, (३६) नेवाज, (३७) राम, (३८) परमेश, (३९) काशीराम, (४०) रसखानि (४१) मनसा, (४२) हरिकेश, (४३) गोपाल, (४४) लीलाधर।—मिश्रबन्धु विनोद, कवि सख्या १२४२

यह ग्रन्थ खोज मे मिल चुका है।[१]

५ राग कल्पद्रुम

राग कल्पद्रुम सगीत शास्त्र का विशाल ग्रन्थ है। प्रारम्भ मे संस्कृत के सगीत ग्रन्थो से शास्त्रीय उद्धरण दिये गये हे। बाद मे विभिन्न राग-रागिनियो मे गाई जाने योग्य रचनाओ का सकलन है। ये रचनाये अधिकाश मे हिन्दी की है, यो तो इनमे प्रत्येक भारतीय भाषा के गीतो का कुछ-न कुछ सकलन हुआ है। शिवसिंह ने इस ग्रन्थ का रचनाकाल सम्वत् १८०० दिया हे, जो ठीक नही। यह ग्रन्थ सम्वत् १९०० मे पहली बार प्रकाशित हुआ। कृष्णानन्द व्यास देव इसके सकलयिता हे। ये जयपुर दरबार के विख्यात गायक थे। वृन्दावन के गोसाइयो ने इन्हे राग सागर की उपाधि दी थी। सरोज मे राग कल्पद्रुम को प्रायः राग सागरोद्भव कहा गया है, ठीक उसी प्रकार जैसे हम रामचरित्र मानस को केवल तुलसीकृत कह कर काम चला ले। गीतो का सकलन राग सागर ने ३२ वर्ष तक सम्पूर्ण भारत मे घूम-घूम कर किया था। अत. पाठ की दृष्टि से इसका बहुत महत्व नही। पहली बार यह ग्रन्थ चार खडो मे छपा था और इसका मूल्य १००) था। इसका दूसरा सस्करण १९७१ मे ३ भागो मे हुआ। प्रकाशित करते समय सम्पादको को प्रथम सस्करण के चारो खड नही मिल सके। प्रथम दो खड हिन्दी मे एव तृतीय बगाक्षरो मे है। प्रथम सस्करण का भी तृतीय खड बगला ही मे छपा था। सरोजाकर ने द्वितीय भाग मे सकलित कीर्तन पदो से अपने ग्रन्थो मे उद्धरण दिये है। यह विशाल ग्रन्थ साढे दस इच लम्बा और आठ इच चौडा है। प्रत्येक पृष्ठ दो कालमो मे विभक्त है। प्रत्येक पृष्ठ मे ३५ पक्तिया है। अक्षर उतने ही बडे है जितने बडे सामन्यतया व्यवहृत होते है। द्वितीय सस्करण के तीनो खड प्रो० प० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, काशी के पास है। मेरे पास भी प्रथम खड है। यह सारी सूचना इन्ही ग्रन्थो की सहायता से दी जा सकी है।

निम्नाकित ६१ कवियो की रचनाओ के राग कल्पद्रुम मे होने का उल्लेख सरोज मे कवियो के विवरण के अन्तर्गत हुआ हे . —

(१) अग्रदास, (२) आसकरणदास, कछवाहा, (३) कुम्भन दास, (४) कृष्णदाम, (५) कल्याण दास, कृष्णदास पयहारी के शिष्य, (६) केशव दास, व्रजवासी, कश्मीर के रहने वाले, (७) केवल,

---

१. खोज नं० १९१२।१७७ बी, १९२३।४०१ बी

व्रजवासी, (८) कान्हर दास व्रजवासी, (९) खेम कवि (२), (१०) गदाधर मिश्र, व्रजवासी, (११) गोपाल दास, व्रजवासी, (१२) गोविन्द दास, व्रजवासी, (१३) चतुर विहारी, व्रजवासी, (१४) चतुर्भुज दास, (१५) चन्दसखी, व्रजवासी, (१६) छबीले कवि, व्रजवासी, (१७) छीत स्वामी, (१८) जगन्नाथ दास, (१९) तुलसीदास, (२०) तानसेन, (२१) दामोदर दास, व्रजवासी, (२२) धोधे दास, व्रजवासी, (२३) नरसी, (२४) नारायण भट्ट गोसाई, गोकुलस्थ, (२५) नाथ (७) व्रजवासी, (२६) परमानन्द दास, (२७) परशुराम, व्रजवासी (२), (२८) पद्मनाभ, व्रजवासी, (२९) व्यास (हरिराम शुक्ल), (३०) वल्लभाचार्य, (३१) विठ्ठल नाथ, (३२) विपुल विठ्ठल, (३३) वलराम दास, व्रजवासी, (३४) वशीधर, (३५) विष्णुदास, (३६) व्रजपति, (३७) विहारी दास कवि, (४) व्रजवासी, (३८) वृन्दावन दास, (२) व्रजवासी, (३९) विद्यादास, व्रजवासी, (४०) भगवान हितराम राय, (४१) भगवान दास, मथुरा-निवासी, (४२) भीषम दास, (४३) मानदास, व्रजवासी, (४४) मुरारि दास व्रजवासी, (४५) मदन-मोहन, (४६) माधवदास, (४७) मानिक चन्द कवि, (४८) मीरावाई, (४९) राम राइ राठौर, राजा खेम पाल के पुत्र, (५०) रामदास वावा, सूर के पिता, (५१) रसिक दास, व्रजवासी, (५२) लछिराम कवि (२) व्रजवासी (५३) लक्ष्मणसरण दास, (५४) श्री भट्ट, (५५) सतदास, व्रजवासी, (५६) श्याम दास, (५७) श्याम मनोहर, (५८) सगुण दास, (५९) सूरदास, (६०) हरिदास स्वामी, वृन्दावनी, (६१) हित हरिवश।

इन ६१ कवियो मे से तुलसी, तानसेन, मीरा, सूरदास और हित हरिवश के जीवन विवरण मे यह उल्लेख नही है कि इनकी रचनायें राग कल्पद्रुम मे हैं। यह उल्लेख कृष्णानन्द व्यासदेव के वर्णन मे हुआ है। सरोज की भूमिका के अनुसार इस ग्रन्थ मे लगभग २०७ महात्माओ के पद हैं। सरोज मे सकलित प्रायः सभी पद रचयिता कवि इसी ग्रन्थ से लिये गए हैं।

६ रस चन्द्रोदय

यह ग्रन्थ सम्वत् १९२० मे ठाकुरप्रसाद त्रिपाठी कवि, किशुनदासपुर, जिला रायबरेली द्वारा रचा गया। इसमे २४२ कवियो के नव रस के कवित्त है। इन्ही ठाकुरप्रसाद के मूर्ख पुत्रो से शिवसिंह ने २०० हस्तलिखित ग्रन्थ खरीदे थे। कामता प्रसाद और कालिका कवि वन्दीजन काशी के विवरण मे यह उल्लेख किया गया है कि इनकी रचनायें रस चन्द्रोदय मे थी। यह ग्रन्थ भी अभी तक नही मिला है।

७ दिग्विजय भूषण

लाला गोकुल प्रसाद वलरामपुरी उपनाम 'व्रज' ने सम्वत् १९१९ मे वलरामपुर, जिला गोडा के राजा दिग्विजय सिंह के नाम पर यह ग्रन्थ वनाया। नाम से तो यह अलकार ग्रन्थ हे, पर इसमे नायिक भेद, नख शिख और ऋतु-वर्णन तथा विविध प्रौढोक्तियाँ भी सकलित है।

निम्नलिखित ७ कवियो के सम्बन्ध मे सरोज मे कवि विवरण के अन्तर्गत उल्लेख हुआ है कि इनकी रचनायें दिग्विजय भूषण मे हैं :—

(१) अनीस, (२) कवि दत्त, (३) खान कवि, (४) धुरन्धर, (५) नायक, (६) परशुराम, (७) सदानन्द।

वस्तुत यह सूची इतनी छोटी नही है। निम्नाकित ४७ कवि ऐसे है जिनको शिवसिंह ने दिग्विजय भूषण से ही जाना और वहीं से इनके उदाहरण लिये। इन कवियो के जितने छंद उक्त

ग्रन्थ मे हैं या तो सब के सब सरोज मे उद्धृत कर लिये गए हैं, या इनमे भी कुछ को चुन लिया गया है। इन ४७ कवियो के उदाहरणो मे कोई भी ऐसा छद नही है, जो दिग्विजय भूषण मे न हो —

(१) अकबर बादशाह, (२) अनीस, (३) अनुनैन, (४) अभिमन्य, (५) इन्दु, (६) उदयनाथ, (७) कवि दत्त, (८) कृष्ण सिंह, (९) केहरी, (१०) खान, (११) गगापति, (१२) चतुर, (१३) चतुर विहारी, (१४) चतुर्भुज, (१५) चैन राय, (१६) जैन मुहम्मद, (१७) तारा, (१८) तारा पति, (१९) दया देव, (२०) दयानिधि, (२१) दिनेश, (२२) धुरन्धर, (२३) नवी, (२४) नरोत्तम, (२५) नायक, (२६) परशुराम, (२७) पुरान, (२८) पहलाद, (२९) वीठल, (३०) मदन गोपाल, (३१) मन निधि, (३२) मन्य, (३३) मनि कठ, (३४) महाकवि, (३५) मुकुन्द, (३६) मुरली, (३७) मोती लाल (३८) रघुराय, (३९) राम किशुन (कृष्ण), (४०) रूप, (४१) रूप नारायण, (४२) सदानन्द, (४३) सवल श्याम, (४४) शशिनाथ, (४५) सोमनाथ, (४६) हरिजीवन, (४७) हरिजन।

इन ४७ कवियो मे ४६ अप्रसिद्ध कवि है। केवल सोमनाथ प्रसिद्ध है। किन्तु प्रतीत होता है कि सोमनाथ ऐसे प्रसिद्ध आचार्य का पता शिवसिंह को नही था। इसी से उन्होने उक्त कवि की कविता दिग्विजय भूषण से उद्धृत की और शशिनाथ और सोमनाथ को व्रज जी की भूल के कारण दो अलग कवि समझ लिया।

और भी वहुत से कवि है जिनके काव्य सग्रह मे दिग्विजय भूषण से निश्चित सहायता ली गई है, साथ ही अन्य सूत्रो से भी।

दिग्विजय भूषण मे निम्नाकित १९२ कवियो की रचनाये सकलित हैं। इनको सूची ग्रन्थारम्भ मे दे दी गई है।

(१) गोसाई तुलसीदास, (२) सूरदास, (३) चद कवि, (४) गग कवि, (५) अमर कवि, (६) नरोत्तम, (७) केहरी, (८) काशीराम, (९) मुकुन्द, (१०) शिरोमणि, (११) वीरवल, ब्रह्म, (१२) प्रताप कवि, (१३) प्रसाद कवि, (१४) जसवत सिंह, (१५) श्रीपति, (१६) ठाकुर, (१७) मन्य, (१८) महाकवि, (१९) रसखानि, (२०) वशीधर, (२१) नन्दन, (२२) तोष, (२३) दास, (२४) मडन, (२५) शम्भु, (२६) कविन्द, (२७) पुषी, (२८) नेवाज, (२९) मनसा, (३०) चतुर, (३१) उदयनाथ, (३२) अमरेश, (३३) जैन मुहम्मद, (३४) दूलह, (३५) घनश्याम, (३६) सुन्दर, (३७) शिवलाल, (३८) वोधा, (३९) मतिराम, (४०) चिन्तामणि, (४१) किशोर, (४२) नीलकठ, (४३) गगापति, (४४) चन्दन, (४५) हित हरिवश, (४६) पद्माकर, (४७) देव कवि, (४८) जगत सिंह, (४९) शिव कवि, (५०) भगवन्त सिंह, (५१) मीरन, (५२) सूरति, (५३) राम कृष्ण, (५४) कविराज (५५) सेनापति, (५६) सुमेर, (५७) देवीदास, (५८) कालिदास, (५९) महराज, (६०) हेम कवि, (६१) अन्य कवि, (६२) सगम, (६३) रघुनाथ, (६४) केशवदास, (६५) गुरुदत्त, (६६) नारायण, (६७) रघुराय, (६८) शोभ कवि, (६९) मोतीराम, (७०) कान्ह कवि, (७१) प्रहलाद, (७२) राम कवि (७३) दयानिधि, (७४) प्रवीन राय, (७५) कुलपति, (७६) अन्य कवि, (७७) नाथ कवि, (७८) लाल कवि, (७९) गोविन्द, (८०) पुरान, (८१) माखन, (८२) नागर, (८३) निपट, (८४) जगजीवन, (८५) वेनी, (८६) रतन, (८७) धुरन्धर, (८८) आनन्दघन, (८९) प्रेम सखी, (९०) राम सखी, (९१) तोष निधि, (९२) सुखदेव, (९३) कृष्ण सिंह, (९४) हरि, (९५) आलम, (९६) घासीराम, (९७) दयाराम, (९८) गोकुल नाथ, (९९) तारा पति, (१००) मननिधि, (१०१) भूपति, नाम गुरुदत्त, (१०२) अनीस, (१०३) सवल श्याम, (१०४) दीनदयाल गिरि, (१०५) देवकी नन्दन, (१०६) नायक, (१०७) खान,

(१०८) पजनेस, (१०९) गिरधारी, (११०) पुन सुखदेव, (१११) लीलाधर, (११२) कवि दत्त, (११३) हरि जीवन (११४) सदानन्द, (११५) भूधर, (११६) कृष्ण कवि, (११७) नृप शम्भू, (११८) मबारक (मुबारक), (११९) हरदेव, (१२०) निधि मल्ल, (१२१) नवी, (१२२) भूषण, (१२३) पुहकर, (१२४) सोमनाथ, (१२५) अनुनैन, (१२६) वलभद्र, (१२७) अन्य तीसर, (१२८) द्विज देव, (१२९) ग्वाल (१३०) अयोध्या पसाद बाजपेयी औध, (१३१) सरदार, (१३२) अन्य कवि चतुर्थ, (१३३) रसलीन, (१३४) राम सहाय (१३५) अब्दुर्रहीम खानखाना, (१३६) विहारी लाल चौबे, (१३७) पजनेस कवि, (१३८) चतुर विहारी, (१३९) नरहरि, (१४०) प० उमापति गोविंद, (१४१) अन्य कवि पञ्चम, (१४२) लाल, (१४३) इन्दु, (१४४) अन्य कवि छठवाँ, (१४५) मुरली, (१४६) भरमी, (१४७) मनिराम, (१४८) दिनेश, (१४९) मदन गोपाल, (१५०) हरिकेश, (१५१) मनिकण्ठ, (१५२) तारा, (१५३) जीवन, (१५४) भजन, (१५५) हरिलाल, (१५६) परशुराम, (१५७) रूप, (१५८), बलदेव, (१५९) अन्य कवि सातवा, (१६०) शेख, (१६१) निधि, (१६२) नवरा कवि, (१६३) भगवन्त, (१६४) दत्त कवि, (१६५) मतन, (१६६) कृष्ण लाल, (१६७) अन्य कवि आठवा, (१६८) गोपाल, (१६९) हरिजन, (१७०) गुलाल, (१७१) मधुसूदन, (१७२) सिंह कवि, (१७३) शिवनाथ, (१७४) बृजचद, (१७५) मुरारि, (१७६) बीठल, (१७७) हृदेश, (१७८) चतुर्भुज, (१७९) ऋषिनाथ, (१८०) मकरन्द, (१८१) रूपनारायण, (१८२) अन्य कवि राम, (१८३) मोतीलाल, (१८४) दयादेव, (१८५) अकबर बादशाह, (१८६) अहमद, (१८७) अभिमन्य, (१८८) चैनराय, (१८९) शशिनाथ, (१९०) मुकुन्द लाल, (१९१) परवान, (१९२) रामदास।

यह न समझना चाहिये कि दिग्विजय भूषण की उक्त सूची दोष रहित है। नव-बार तो इनमे अन्य कवि आये है जो छाप रहित हैं। अनेक कवियो को दोहरा दिया गया है। जैसे गुरुदत्त उप नाम 'भूपति' और सुखदेव मिश्र। बहुत से कवि सूची मे आने से छूट गये है। जैसे घनश्याम, राम सखी, चन्द्र बरदाई, धर्मसिंह, भाषा भूषण वाले राजा जसवत सिंह, मनसाराम, आदि आदि।

डी० ए० वी० कालेज बलरामपुर के प्रिंसिपल डा० भगवती प्रसाद सिंह ने दिग्विजय भूषण का सम्पादन कर लिया है। आशा है, शीघ्र ही ग्रन्थ प्रकाशित होगा।

८ सुन्दरी तिलक

भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र द्वारा सकलित इस सग्रह मे केवल सवैये हे। ये नायिका भेद के क्रम से हैं। अन्त मे ऋतु-वर्णन भी तासी ने तमन्ना लाल प० का उल्लेख किया है जो वस्तुतः प० मन्नालाल द्विज हैं। तासी ने इन्ही को सुन्दरी तिलक का रचयिता माना है। तासी के अनुसार इसमे ४५ विभिन्न प्राचीन तथा अर्वाचीन कवियो के चुने हुए छन्द हैं। यह ग्रन्थ बाबू हरिश्चन्द्र के आश्रय मे तथा उन्ही के व्यय से बनारस मे सम्वत् १९२५ मे प्रकाशित हुआ। इसमे कुल ५८ अठ पेजी पृष्ठ हैं। प्रत्येक पृष्ठ मे २२।२२ पक्तियाँ हैं। इस ग्रथ के मुख पृष्ठ पर सग्रह मे सकलित कवियो की यह सूची दी गई है :—

(१) बेनी, (२) देव, (३) सुखदेव मिश्र, (४) रघुनाथ, (५) नृप शम्भु, (६) द्विज देव, महाराजा मानसिंह, (७) तोष, (८) मतिराम, (९) प्रेम, (१०) नेवाज, (११) रसखान (रसखानि), (१२) कवि शम्भु (१३) दास (भिखारीदास), (१४) सुन्दर, (१५) आलम, (१६) मणिदेव (१७) हनुमान, (१८) श्रीपति, (१९) गग, (२०) ब्रह्म, (२१) बेनी प्रवीन, (२२) केशवदास, (२३) सूरदास,

(सरदार), (२४) ठाकुर, (२५) बोधा, (२६) बाबू हरीचन्द्र, (२७) नवनिधि, (२८) कालिका, (२९) सेवक, (३०) मब्रूरक (मुबारक), (३१) अलीमन, (३२) घनानन्द (घनानन्द), (३३) नरेन्द्र सिंह महाराजै पटियाला, (३४) अजवेस, (३५) हरिकेश, (३६) परमेस, (३७) छितिपाल, महाराजा अमेठी, (३८) रघुराज सिह, महाराजै रीवाँ, (३९) मडन, (४०) देवकी नन्दन, (४१) महाकवि (कालिदास), (४२) गोकुल नाथ, (४३) गिरिवरदास (बाबू गोपालचन्द); (४४) धनुपपाम (घनश्याम), (४५) किशोर।—हिन्दूई साहित्य का इतिहास पृष्ठ ८९

डाक्टर रामकुमार वर्मा ने अपने आलोचनात्मक इतिहास मे सुन्दरी तिलक को भारतेन्दु की रचना माना है और इसका रचना काल सम्वत् १९२६ दिया है। कवि सख्या ६९ दी है।[1] हो सकता है यह उक्त सुन्दरी तिलक का द्वितीय परिवर्धित सस्करण हो। इसी का तृतीय या और कोई सस्करण शिवसिंह के हाथ लगा जो सम्वत् १९३१ मे प्रकाशित हुआ था। मेरे पास जो लघु सस्करण है वह नवल किशोर प्रेस का है, बारहवा सस्करण है, १९३३ ई० का छपा हुआ है। सरसरी तौर पर देखने पर मुझे इसमे ९३ कवि मिले। कुछ कविताओ मे कवियो की छाप नही। कुछ पर दृष्टि न पडी होगी। सम्भवत. यह उसी ग्रन्थ का नवीन सस्करण है, जिसका हवाला डा० वर्मा एव शिवसिंह ने दिया है। मेरी पुस्तक मे ८६ पृष्ठ है तासी वाली मे ५८। मेरी पुस्तक के प्रति पृष्ठ पर २० पक्तियाँ है, तासी वाली मे २२। पुस्तक पहले से ड्योढी हो गई है। इसमे पद्माकर, तुलसी, नायक, ऋषिनाथ, श्रीधर, चन्द्र, ब्रजनाथ, भगवन्त, गुनदेव, कविराम, बलदेव, द्विज, दूहल, ग्वाल, कवि दत्त, पारस, शेखर, नाथ, शिव, कान्हर, नरेश और लाल आदि की कवितायें बढ गई है।

बाद मे इस सग्रह का और भी परिवर्द्धन हुआ है। पहले सस्करण मे $\frac{५८ \times २२}{४} = ३१९$ सवैये थे, दूसरे परिवर्द्धित सस्करण मे ४२७ छद है जब कि तीसरे परिवर्धित रूप मे कुल १४५५ सवैये है। ग्रन्थ पहले सस्करण का पाच गुना हो गया है। इसमे पहले सस्करणो मे आये कवियो की कविताय वढा दी गई है। साथ ही और अनेक नये कवि प्रस्तुत कर लिये गये है। जैसे ककन सिंह, चतुर्भुज, जगदीश, ताहिर, दिवाकर, नन्दन, नरोत्तम, प्रेम सखी, वान, विजयानन्द, माधव, माथुर, मुकुन्द, रसिकेश, राम गोपाल, लालमुकुन्द, लछिराम, साहब राम, सेवक श्याम और हरिऔध आदि। इस वडे सग्रह मे देव के ५३, पद्माकर के ६९, घनानन्द के ३९, मतिराम के ३१ ठाकुर के ५१ और रसखानि के १९ छन्द है। यह परिवर्धन बहुत बाद मे हुआ होगा, क्योकि इसमे हरिऔध जी की भी रचनाये हैं। यह सग्रह भारतेन्दु (मृत्यु सम्वत् १९४२) के पर्याप्त पश्चात् परिवर्धित हुआ होगा और इसमे हरिश्चन्द्र का कोई हाथ न रहा होगा।

निम्नाकित ११ कवियो के विवरण मे उल्लेख किया गया है कि इनकी रचनाएँ सुन्दरी तिलक मे है .—

(१) अलीमन, (२) कविराम, (३) रामनाथ कायस्थ, (४) कालिका कवि वन्दीजन काशी-वासी, (५) तुलसी श्री ओझा जी जोधपुरवाले, (६) द्विज कवि, मन्नालाल बनारसी, (७) नरिन्द (२) महाराजा नरेन्द्र सिह पटियाला, (८) महराज कवि, (९) मुरलीधर कवि (२), रसिया कवि नजीव खाँ, सभासद पटियाला, (१०) सुमेर सिंह साहबजादे, (११) हनुमान।

---

१ हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, पृष्ठ २६

९ भाषा काव्य सग्रह

प० महेशदत्त ने यह सगह सम्वत् १९३० मे बनाया और नवल किशोर प्रेस, लखनऊ से सम्वत् १९३२ मे प्रकाशित कराया। सरोज के ही समान इसके भी प्रारम्भ मे काव्य सग्रह है और अत में निम्नांकित ५१ सग्रहीत कवियो का जीवन-चरित्र है —

(१) महेशदत्त, (२) तुलसीदास, (३) मदन गोपाल, (४) नारायणदास, (५) हुलास राम, (६) सहजराम, (७) भगवतीदास, (८) रत्न कवि, (९) ब्रजवासी दास, (१०) सबलसिंह, (११) नरोत्तम दास, (१२) नवलदास, (१३) लल्लू जी लाल, (१४) गिरिधर राय, (१५) बिहारी लाल, (१६) अनन्य दास, (१७) रघुनाथदास, (१८) मलूकदास, (१९) मोती लाल, (२०) कृपा राम, (२१) क्षेम करण, (२२) सीताराम दास, (२३) चरणदास, (२४) भिखारीदास, (२५) राम नाथ प्रधान, (२६) महाराज मानसिंह, (२७) अयोध्याप्रसाद बाजपेयी औध, (२८) शिव प्रसन्न, (२९) श्रीपति, (३०) पद्माकर, (३१) केशवदास, (३२) हिमाचल राम, (३३) रगाचार, (३४) प्रियादास, (३५) मीरा, (३६) देवदत्त, (३७) नाभादास, (३८) वेणीमाधव दास, (३९) वशीधर मिश्र, (४०) जानकी दास, (४१) मतिराम, (४२) राम सिंह, (४३) सूरदास, (४४) गिरिजा दत्त, (४५) सुन्दर दास, (४६) नरहरि, (४७) हरिनाथ, (४८) रसखानि, (४९) गदाधर, (५०) चन्दवरदाई, (५१) शिव प्रसाद।

इन ५१ कवियो मे से रगाचार, गिरिजादत्त और शिव प्रसाद केवल ये तीन कवि सरोज मे नही ग्रहीत हुए हैं। इसी ग्रन्थ ने सरोज के प्रणयन को प्रेरणा दी। इस ग्रन्थ की एक अशुद्धि सुधारने के लिये शिवसिंह ने सरोज रचा, पर इसकी अनेक अशुद्धियो को अपना कर उन्होंने भ्रम भी बहुत पैदा किया। इस ग्रन्थ मे अनेक कवियो के विवरण सरोज मे सक्षिप्त रूप मे लिये गये हैं, पर उल्लेख केवल निम्नांकित २ कवियो के सम्बन्ध मे किया गया है —

(१) कृपा राम ब्राह्मण नरैनापुर जिले गोंडा

(२) नवलदास क्षत्रिय गूढ गाँव जिले बाराबकी

१० कवित्त रत्नाकर

इस सग्रह के सकलयिता हैं मातादीन मिश्र। यह दो भागो मे सम्वत् १९३३ मे नवल किशोर प्रेस, लखनऊ मे छपा। यह ग्रन्थ काशी की कारमाइकेल लाइब्रेरी मे उपलब्ध है। इसके दोनो भागो मे मिलाकर निम्नांकित ४२ कवि हैं :—

(१) कादिर, (२) कुन्ज गोपी, (३) कृष्ण, (४) केशवदास, (५) खगनिया, (६) गिरिधर कविराय, (७) गुरुदत्त, (८) घनश्याम, (९) घाघ, (१०) चन्दवरदाई, (११) छत्रमाल, (१२) जलील, बिलग्रामी, (१३) तुलसीदास, (१४) तोष, (१५) देव, (१६) नरहरि, (१७) नरोत्तम, (१८) नारायण, (१९) पमार, जानकीप्रसाद सिंह, (२०) प्रवीण राय, (२१) वशीधर, (२२) बिहारी, (२३) ब्रह्म, (२४) भीष्म, (२५) भूपनारायण भाट, (२६) भूषण (२७) भोलानाथ, (२८) मतिराम, (२९) मलिक मुहम्मद जायसी, (३०) महेश, (३१) मातादीन मिश्र, (३२) यशवत सिंह, (३३) रहीम, (३४) राम (३५) राम प्रसाद, (३६) रामरत्न भट्ट, (३७) शिवप्रसाद सितारे हिन्द, (३८) सुखदेव मिश्र, (३९) श्यामलाल, (४०) श्रीलाल, (४१) सबल सिंह चौहान, (४२) सूर।

ग इतिहास ग्रन्थ

(१) टॉड का राजस्थान—[इस ग्रथ के समर्पण की तिथि २० जून १८२९ ई० (स० १८८६) है।

टाड का जीवन काल १७८२-१८३५ ई० (स० १८३९-१८९२) है।[1] राजपूताना के रेजीडेन्ट टाड साहब ने सम्बत् १८८० मे राजस्थान का प्रसिद्ध इतिहास प्रस्तुत किया। इस ग्रन्थ मे राजाओ के साथ-साथ चन्दबरदाई आदि अनेक कवियो का भी वर्णन हो गया है। सरोजकार ने निम्नाकित ४ कवियो के सम्बन्ध मे इस ग्रन्थ से सहायता लेने का उल्लेख जीवन खड मे यथास्थान किया है —

(१) अमर जी, कवि, राजपूतानावाले (२) करण, कबि वन्दीजन, जोधपुरवाले (३) कुम्भ-करण, रानाकुम्भा, चित्तोर (४) खुमानसिह, राणा चित्तौर।

(२) काश्मीर राज तरगिणी } इन ग्रन्थो से सरोजकार ने क्या सहायता ली इसका उल्लेख
(३) दिल्ली राज तरगिणी } उन्होने कहा नही किया है।

(४) भक्तमाल—शिवसिह ने मीरापुरवाले तुलसी राम अग्रवाल कृत भक्तमाल के उर्दू अनुवाद का उपयोग किया था। यह ग्रन्थ सम्बत् १९११ मे अनूदित हुआ। निम्नाकित ४ कवियो के सम्बन्ध मे कहा गया है कि इनका वर्णन भक्तमाल मे है।

[१] केवल राम, कवि, ब्रजवासी, [२] नाभा दास, [३] नरवाहन, [४] रसखान।

वस्तुत. भक्तमाल से सरोज मे अनेक कवियो का विवरण लिया गया है। इनका उल्लेख मुख्य ग्रन्थ मे यथास्थान आगे किया गया है।

घ. अन्य सहायक सूत्र

१ भिखारीदास

भिखारीदास ने काव्य निर्णय के निम्नाकित कवित्त मे कुछ कवियो की ब्रजभाषा को प्रमाण माना है —

सूर केसौ, मडन, विहारी, कालिदास, ब्रह्म
चितामनि, मतिराम, भूषन सो जानिये
लीलाधर, सेनापति, निपट, नेवाज, निधि,
नीलकठ, मिश्र सुखदेव, देव मानिये
आलम, रहीम खानखाना, रसलीन वली,
सुन्दर अनेक गन गनती बखानिये
ब्रजभाषा हेत ब्रज सब कीन अनुमान,
एते एते कविन की बानिहु ते जानिये

काव्य निर्णय की रचना सम्वत् १८०३ मे हुई। अत ये सभी कवि या तो १७८० के पहले के हैं अथवा इस समय वर्तमान थे। शिवसिह ने इस कवित्त की सहायता ली है, पर अशुद्ध ढग से। उन्होने रहीम खानखाना को दो कवि मान लिया है और दूसरे चरण का अशुद्ध पाठ ग्रहण कर लिया हे तथा मिश्र सुखदेव मिश्र को नीलकठ के आगे जोडकर नीलकठ त्रिपाठी के अतिरिक्त एक अन्य नीलकठ मिश्र की कल्पना कर ली है। अशुद्ध पाठ के कारण लीलाधर नीलाधर हो गये हैं।

२ सूदन

सूदन ने सम्वत् १८१० के आस पास सुजान चरित्र की रचना की। इस ऐतिहासिक काव्य मे सम्बत् १८०२ से लेकर १८१० तक की घटनाओ का उल्लेख हुआ है।[2] ग्रन्थारम्भ मे सूदन ने अपने

---

[1] टाड अनल्स आफ रायस्थान, द्वितीय सस्करण की प्रकाशकीयटिप्पणी।

[2] विनोद, कवि सख्या ८४४—सूदन

पूर्ववर्ती १७५ भाषा-कवियों को ६ कवित्तो [छंद ४ से लेकर ६ तक] मे प्रणाम दिया है। शिवसिंह ने प्रमाद से इन्हे १० कवित्त समझ लिया है। शिवसिंह के पास ये कवित्त थे, पर सरोज की रचना करते समय सब खो गये। केवल अंतिम बच रहा था। इसे उन्होने सरोज से उद्धृत भी किया है। कवि नामावली वाले छहो कवित्त नीचे उद्धृत किये जा रहे ह —

(१)

केशव किशोर कासी कुलपति कालिदास
केहरि कल्यान कर्न कुन्दन कविन्द से
कंचन कमच कृष्ण केसौ राय कनकसेन
केवल करीम कविराइ कोकचन्द से
कुँवर किदार खानिखाना खगपति खेम
गंगापति गंग गिरिधरन गयन्द से
गोप गदद गदाधर गोपीनाथ गदाधर
गोरधन गोकुल गुलाब जो गुविन्द से ॥४॥

(२)

घन घनश्याम घासीराम नरहर नैन
नाइक नवल नन्द निपट निहारे है
नित्यानन्द नन्दन नरोतम निहाल नेही
नाहर निवाज नन्द नाम अजवारे है
चन्द बरदाई चन्द चिन्तामनि चेतन हैं
चतुर चतुर चिरजीव चतुरारे है,
छीत रु छबीले जदुनाथ जगनाथ जीव
जयकृष्ण जसुवन्त जगन विचारे हैं ॥५॥

(३)

टीकाराम टोडर तुरत तारापति तेज
तुलसी तिलोक देव दुलह दयाल से
दयादेव देवीदास दूनाराइ दामोदर
धीरधर धीर औ धुरन्धर विसाल से
पंडित प्रसिद्ध पुखी पीत पहलाद पाती
प्रेम परमानँद परम प्रतपाल से
परवत प्रेमी परसोतम विहारी बान
बीरबर बीर विजैन बालकृष्ण बाल से ॥६॥

(४)

बलिभद्र बल्लभरसिक बृन्द बृन्दाबन
बंशीधर ब्रह्म औ बसत बुद्धराव रे
भूपन से भूधर मुकुन्द मनिकंठ माधौ
मतिराम मोहन मलूक मत बावरे

मदन मुबारख मुनीम मकरन्द मान
मुरली मदन मित्र मरजाद गाव रे
अच्छर अनन्त अग्र आलम अमर आदि
अहमद आजमखान अभिमान आव रे ॥७॥

(८)

इच्छाराम ईसुर उमापति उदय ऊधौ
उदधत उदयनाथ आनंद असाने हैं
राधाकृष्ण रघुराइ रमापति रामकृष्ण
राम से रहीम रनछोर राइराने हैं
लीलाधर लीलकंठ लोकनाथ लीलापति
लोकमनि लाल लच्छलछी लोक जाने हैं
सूरदास सूर से सिरोमनि सदानद से
सुन्दर सभा से सुखदेव सत माने हैं ॥८॥

(६)

सोमनाथ, सूरज, सनेह, सेख, स्यामलाल,
साहेब, सुमेर, सिवदास, सिवराम हैं
सेनापति, सूरति, सरब सुख सुखलाल,
श्रीधर, सबल सिह श्रीपति सुनाम हैं
हरिपरसाद, हरिदास, हरिबंश, हरि
हरीहर, हीरा से हुसेन, हितराम हैं
जस के जहाज जगदीश के परम मीत,
सदन कविन्दन को मेरा परनाम है ॥१०॥

—सुजान चरित्र, पृष्ठ १-३

विनोद मे इन कवियो की सूची इस प्रकार दी गई है—

केशव, किशोर, काशी, कुलपति, कालिदास, केहरि, कल्यान, करन, कुन्दन, कविन्द, कचन, कमन्च, कृष्ण, कनक सेन, केवल, करीम, कविराज, कुँवर, केदार ।

खानखाना खगपति, खेम ।

गगापति, गग, गिरिधरन, गयन्द, गोप, गदाधर, गोपीनाथ, गोवर्धन, गोकुल गुलाब, गोविन्द ।

घनश्याम, घासीराम ।

नरहरि, नैन, नायक, नवल नन्द, निपट, नित्यानन्द, नन्दन, नरोत्तम, निहाल, नेही; नाहर, नेवाज ।

चन्दबरदाई, चन्द, चिन्तामनि, चेतन, चतुर, चिरजीवि ।

छीत, छबीले ।

जदुनाथ, जगनाथ, जीव, जयकृष्ण, जसवत, जगन ।

टीकाराम, टोडर ।

तुरत, तारापति, तेज, तुलसी तिलोक, देव, दूलह, दयादेव, देवीदास, दूनाराय, दामोदर।
धीरधर, धीर, धुरन्धर।
पुखी, पीत, पह्लाद, पानी, प्रेम, परमानन्द, परम, पर्वत, प्रेमी, परसोतम।
बिहारी, बान, बीरबल, बीर, बिजय, बालकृष्ण, बलभद्र, वल्लभ, बृन्द, बृन्दावन।
बंशीधर, ब्रह्म बसन्त, (राव) बुद्ध।
भूषन, भूधर।
मुकुन्द मनिकंठ माधव, मतिराम, मलूकदास, मोहन मंडन, मुबारक मुनीस मकरन्द, मान, मुरली, मदन, मित्र।
अक्षर अनन्य, अग्र, आलम, अमर, अहमद आजम खाँ।
इच्छाराम, ईसुर।
उमापति, उदय ऊधो, उधृत, उदयनाथ।
राधाकृष्ण, रघुराय, रमापति, रामकृष्ण, राम, रहीम रणछोरराय।
नीलाधर, लीलकंठ, लोकनाथ, लीलापति, लोकपति, लोकमनि, लाल, लच्छ, लच्छी।
सूरदास, सिरोमनि, सदानन्द, सुन्दर, सुखदेव, सोमनाथ, सूरज, सनेही, सेख, श्यामलाल, साहेब सुमेर, शिवदास, शिवराम सेनापति, सूरति, सबसुख, सुखलाल श्रीधर, सबल सिंह, श्रीपति।
हरिप्रसाद हरिदास हरिबंश हरिहर हरी हीरा, हुसेन और हितराम।

निम्नांकित ६ कवियों के सम्बन्ध में सरोज में लिखा है कि सूदन ने इनकी प्रशंसा की है —

(१) लोकमणि (२) शिवराम (३) सनेही (४) सूरज (५) सर्वसुखलाल (६) हितराम।

अध्याय ४

सरोज की भूलें और इसके एक सुसम्पादित संस्करण की आवश्यकता

सरोज मे अनेक प्रकार की भूले है। कुछ भूले तो अनवधानता के कारण हो गई है और कुछ अज्ञान के कारण।

(क) अनवधानता के कारण हुई अशुद्धियाँ

१ वर्णानुक्रम के गडबडी

यो तो सरोज मे कवियो को वर्णानुक्रम से स्थान दिया गया है, पर यह बहुत ठीक नही है। अ के अन्तर्गत अ, आ, ओ, औ, अ, आदि सभी सकलित कर दिये गये है। उनका कोई क्रम नही है कि पहले अ हो, फिर आ और फिर इसी प्रकार और भी आगे। इसी प्रकार ग एव स को एक ही मे मिला दिया गया है। ऋ को र के अन्तर्गत स्थान दे दिया गया है। व को अधिकाश मे व मे विलीन कर दिया गया है। य तो है ही नही, सव ज हो गया है। गडवडी यही तक नही, जहाँ यह मिश्रण नही हुआ है, वहाँ भी वर्णानुक्रम का पूर्ण अनुसरण नही हुआ है, केवल प्रथमाक्षर का विचार किया गया है। अत किसी कवि को तुरन्त ढूँढ लेना असभव है। साथ ही सरोज के काव्य-खड मे जिस क्रम से कविगण प्रस्तुत किये गये है, वही क्रम जीवन खड मे नही रखा गया है, और सग्रह खड मे कवि सख्या १ से लेकर ८३९ तक दी गई है, जव कि जीवन खड मे प्रत्येक वर्ण के कवियो की क्रम-सख्या अलग-अलग है। दोनो खडो मे कवियो का क्रम एक ही होना चाहिये था। अनुदाहृत कवियो की सूची प्रत्येक वर्ण की कवि सूची के अत मे दे देना चाहिये था अथवा सारे अनुदाहृत कवियो की सूची एकदम अत मे एक साथ होनी चाहिये थी।

२ पृष्ठ निर्देश सम्बन्धी भूले

जीवन खड मे जहाँ एक ही नाम के कई कवि है, वहाँ उन्हे एक-दूसरे से अलग करने के लिए १,२,३,४, आदि सख्याओ से युक्त कर दिया गया है, जो कही-कही अशुद्ध हो गया है और कवि विवरण तथा उदाहरण का मेल नही मिलता। इस खड मे प्रत्येक कवि के विवरण के पश्चात् उसके काव्य-सग्रह का पृष्ठ निर्देश किया गया है। जहाँ एक ही नाम के अनेक कवि है, वहाँ प्राय यह पृष्ठ-निर्देश उलट-पलट कर अशुद्ध हो गया है। ऐसी अशुद्धियाँ सख्या मे ३६ है, जिनकी सूची यह है '—

कवि	निर्दिष्ट पृष्ठ	वास्तविक पृष्ठ
१ अग्रदास	१८	८
२ कृष्ण कवि (१)	—	४३
३ कृष्ण कवि (२)	३३	३४
४ कृष्ण कवि (३)	३४	३३
५ कृपाराम कवि, जयपुरवासी	—	४४
६ खेम कवि (१) वुन्देलखडी	५३	५४
७ खेम कवि (२) व्रजवासी	५४	५३

८ गदाधर कवि	—	६०
९ गदाधर दास मिश्र, व्रजवासी	—	८०
१० गोकुल विहारी	७९	७८
११ गोविन्द कवि	७३	६३
१२ गुलामी कवि	८२	७४
१३ चन्द कवि (२)	८५	८६
१४ चन्द (४)	८६	८५
१५ चरणदास	९४	९६
१६ चेतन चन्द्र	९६	९४
१७ जयकवि भाट, लखनऊवाले	११४	१११
१८ तुलसी यदुराय के पुत्र (३)	१२३	१२४
१९ तुलसी (१)	१२४	१२३
२० देवीदास, बुन्देलखडी	१३५	१३४
२१ द्विजदेव	१३४	१२९
२२ द्विज कवि मन्नालाल बनारसी	१३५	१३०
२३ परमेश वन्दीजन (२)	१७९	१७८
२४ परशुराम कवि (१)	१७९	१८५
२५ परशुराम (२)	१७५	१७९
२६ पद्मेश	१८६	१८३
२७ पचम कवि डलमऊवाले	१८६	१९०
२८ मदन कवि	१९९	२००
२९ भोलासिंह बुन्देलखडी	२६६	२३६
३० रसरूप कवि	—	२९०
३१ शकरसिंह कवि (४)	३४५	३४७
३२ सेवक कवि (२) चरखारीवाले	३५३	३४२
३३ सेवक कवि (१) बनारसी	३४२	३५३
३४ सुकवि कवि	३५७	३५८
३५ सगुणदास	३५८	३५९
३६ हेम कवि	३७२	३७१

कान्ह कवि प्राचीन (१) नायिका भेद के रचयिता कहे गये है, और कान्ह कवि, कन्हई लाल (२) नखशिख के रचयिता हैं। दोनो की कविता के उदाहरण पृष्ठ ३६ पर हैं, पर नखशिखवाले दूसरे कान्ह को उदाहरण देते समय पहला कान्ह कहा गया है और नायिका भेद वाले को दूसरा। यह उलट-पलट की गडबडी है।

ये सभी भूले जीवन खड एव सग्रह खड के अलग-अलग होने के कारण हुई है। यदि कवि का विवरण दे कर ठीक वहीं उसकी कविता का उदाहरण दे दिया गया होता, तो न तो कवियो मे यह उलट-पलट होता और न पृष्ठ निर्देश की आवश्यकता पडती।

(३) ऐजन की भूले

सरोज मे सक्षेप करने की दृष्टि से कवि विवरण मे 'ऐज़न' का प्रयोग हुआ है। ऐज़न का चिह्न ["] न देकर अक्षरो मे ऐजन लिखा गया है। इसका अर्थ है जो कुछ ऊपर लिखा गया है वही, पूर्ववत, यथापूर्व। सरोज मे १३ ऐसे भी स्थल है जहाँ ऐजन का यह प्रयोग अत्यन्त भ्रामक हो गया है। जिससे यदि उसका ठीक अर्थ लिया जाय तो अनर्थ हो सकता है। उदाहरण के लिये केवल राम व्रजवासी का विवरण यह है।

"ऐज़न—इनकी कथा भक्तमाल मे है।"—सरोज, पृष्ठ ३९६

केवल राम के पहले केशव दास, व्रजवासी का निम्नाकित विवरण दिया गया है—

"इनके पद रागसागरोद्भव मे वहुत है। इन्होने दिग्विजय की और व्रज मे आकर श्रीकृष्ण चैतय से शास्त्रार्थ मे पराजित हुए।"—सरोज, पृष्ठ ३९६

यदि ऐज़न का ठीक अर्थ लिया जाय तो इसका अभिप्राय यह हुआ कि केवल राम के पद रागसागरोद्भव मे हैं और केवल राम ने केशव कशमीरी की ही भाँति दिग्विजय किया और व्रज मे आकर श्रीकृष्ण चैतन्य से पराजित हुए, जो कदापि ठीक नही हो सकता। इस ऐज़न का अधिक से अधिक इतना ही अर्थ ठीक हो सकता है कि केवल राम व्रजवासी के भी पद रागसागरोद्भव मे वहुत हे।

केवल राम जी के ठीक वाद कान्हर दास कवि व्रजवासी का यह विवरण है—

"ऐज़न इनके यहाँ जव सभा हुई थी तव उसी मे नाभा जी को गोसाई की पदवी मिली थी।"—सरोज, पृष्ठ ३९६

इस ऐज़न का अर्थ होगा :—

(१) कान्हर दास के वहुत से पद रागसागरोद्भव मे है।

(२) कान्हर दास ने भी केशव दास कशमीरी और केवल राम, व्रजवासी की भाँति दिग्विजय किया और व्रज मे आकर श्रीकृष्ण चैतन्य से पराजित हुए।

(३) इनकी कथा भक्तमाल मे है।

जिस प्रकार केवल राम जी के सम्बन्ध मे दूसरा तथ्य ठीक नही है, उसी प्रकार कान्हर दास जी के भी सम्वन्ध मे उक्त तथ्य ठीक नही हो सकता। उक्त ऐज़न का इतना ही अर्थ हो सकता हे कि कान्हर दास के भी पद रागसागरोद्भव मे एव उनकी कथा भक्तमाल मे है।

परवत कवि के विवरण मे केवल ऐज़न है। इनके पहले पृथ्वीराज कवि का निम्नाकित विवरण दिया गया है :—

"ऐज़न—यह कवि वीकानेर के राजा और सस्कृत भाषा के वडे कवि थे।"—सरोज, पृष्ठ ४४८

निश्चय ही परवत कवि न तो वीकानेर के राजा थे और न सस्कृत के वडे कवि ही। अव रहा पृथ्वीराज का ऐज़न। इनके पहले मतिराम कवि है जिनका विवरण है "हजारे मे इनके कवित्त हे।" अत. पृथ्वीराज वाले ऐज़न का अर्थ हुआ कि पृथ्वीराज के भी कवित्त हजारे मे हे। अव परवत वाले ऐज़न का भी यही अर्थ हो सकता है कि इनके भी कवित्त हजारे मे है।

केवल राम, व्रजवासी, कान्हरदास, व्रजवासी और परवत कवि के विवरण मे जो ऐज़न हैं उनका कुछ अर्थ है, जो ऊपर विवेचित है। इनके अतिरिक्त निम्नाकित ९ कवियो के विवरण मे

जो ऐज़न दिया गया है वह निरर्थक है। सम्भवतः यह प्रमाद से हो गया है। तृतीय सस्करण मे भी ये ऐज़न है। द्वितीय सस्करण मे भी ये रहे होगे, क्योकि ग्रियर्सन ने इन कवियो के सम्बन्ध मे ऐसा ही उल्लेख किया है।

(१) कुज गोपी, गौड ब्राह्मण जयपुर राज्य के वासी, (२) कृपाल कवि, (३) कनक कवि, (४) कल्याण सिह भट्ट, (५) कृष्णकवि प्राचीन, (६) खेतल कवि, (७) खुसाल पाठक, राय बरेली वाले, (८) खेम कवि (१) बुन्देलखडी, (९) तीखी कवि, (१०) तेही कवि।

सरोज के नये सस्करण मे ऐज़नो को या तो पूर्ण रूपेण हटा देना चाहिये और उनके स्थान पर पूर्ण विवरण दे देना चाहिये अथवा कम से कम इन १३ दोषपूर्ण ऐजनो को हटा देना चाहिये। इनमे से अन्तिम १० तो निरर्थक ही हैं और प्रथम ३ ही कुछ सार्थक हैं। इस सर्वेक्षण मे ऐज़न के आगे कोष्टक मे उचित अश जोड दिये गये हैं।

सरोज के प्रथम एव द्वितीय सस्करणो मे कवर्ग का अतिम कवि, ऊपर के ७२ कृष्ण कवि प्राचीन है ही नहीं, और ऊपर वर्णित दसो निरर्थक ऐज़न भी नही है। अत सरोज के नवीन सस्करण मे तो इन १० को हटा ही देना चाहिए।

४ छापे की भूले

सरोज मे यो तो छापे की अनेक भूले है, पर दो भूले यहाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय है :—

(१) भूमिका पृष्ठ ३ पर नवा सहायक ग्रन्थ है 'कवित्त रतनाकर' पर छपा है, कवि रतनाकर। एक अक्षर के छूट जाने से गन्थ का नाम ही बदल गया है। मातादीन के विवरण मे ग्रन्थ का ठीक नाम दिया गया है। ग्रियर्सन ने इसी भूल के कारण अपने ग्रन्थ मे इसका नाम 'कवि रतनाकर' ही दिया है।

(२) पृष्ठ १३४ पर सत्रहवी पक्ति के बाद भिखारी दास के उदाहरण समाप्त हो जाते है। अठारहवी पक्ति है 'प्रेम रतनाकर ग्रन्थे'— यह प्रेम रतनाकर ग्रन्थ देवीदास कवि बुन्देलखडी की रचना है। इनकी कविता का उदाहरण पृष्ठ १३५ के प्रारम्भ मे दिया गया है। होना यह चाहिये था कि ऊपर वाले 'प्रेम रतनाकर ग्रन्थे' के ठीक ऊपर देवीदास का नाम होता। ऐसा न होने के कारण अनभिज्ञो के लिये प्रेम रतनाकर भिखारी दास का ग्रन्थ हो गया है। [ग्रियर्सन (३४४) ने भी इसे भिखारी दास का ग्रथ मान लिया है। छापे की यह भूल सरोज के प्रथम सस्करण से ही प्रारम्भ हो गई है।]

५ अशुद्ध पाठ

सरोज मे एक दूसरी गडबडी कविताओ के अशुद्ध पाठ की है। इन अशुद्ध पाठो के कारण अर्थ ग्रहण मे बाधा पडती है। इन अशुद्ध पाठो का उत्तरदायित्व बहुत कुछ उन प्राचीन सग्रह ग्रन्थो पर है, जिनका उपयोग शिवसिह ने किया। ऐसे कुछ उदाहरण उदाहरण के लिए नीचे उद्धृत किये जा रहे हैं।

(१) जैनदीन अहमद पिठी है तिहारी तो पै
राखो वहि उर जो चलै न कछु जोर है—सरोज, पृष्ठ १०६

'उर' के स्थान पर 'ओर' पाठ समीचीन प्रतीत होता है।

(२) तृषावत भइ कामिनी, गई सरोवर बाल।
सर सूख्यो आनँद भयो कारन कौन जमाल—सरोज, पृष्ठ १०६

वाल शब्द से पुनरुक्ति दोप होता है, क्योकि पहले कामिनी शब्द आ चुका है। वाल के स्थान पर पाल (भीटा) पाठ होना चाहिये।

(१) अहि रस नाथन धेनु रस, गनपति द्विज गुरुवार —सरोज, पृष्ठ १२२

दोहे के इस दल मे रचनाकाल दिया हुआ है। इसका शुद्ध पाठ यह है :—

अहि रसना, थन धेनु, रस, गनपति द्विज, गुरुवार

इसके अनुसार रचनाकाल सम्वत् १६४२ हैं। अहि रसना = २, थन धेनु = ४, रस = ६, गनपति द्विज = १।

६. उदाहरण की भूले

सरोज मे अनेक ऐसे स्थल है जहाँ एक कवि की रचना दूसरे के नाम पर चढी हुई है। कही पर यह अत्यन्त अनर्थकारिणी सिद्ध हुई है। ऐसे कुछ उदाहरण नीचे दिये जा रहे हें ।—

(१) अहमद कवि के नाम पर निम्नाकित दोहा उद्धृत है :—

अहमद् या मन सदन में, हरि आवैं केहि बाट
विकट जुरे जौ लौं निपट, खुले न कपट कपाट ॥४॥—सरोज, पृष्ठ ६

यह विहारी का दोहा है और विहारी रतनाकर मे ३६१ सख्या पर है।

(२) अहमद के ही नाम पर निम्नाकित सोरठा भी चढा हुआ है :—

बूँद समुद्र समान, यह अचरज कासो कहौ
हेरनहार हेरान, अहमद आपै आप मैं ॥७॥—सरोज, पृष्ठ ६

यह सोरठा रहीम का हे और रहिमन विलास मे २६५ सख्या पर है।

(३) निम्नाकित सवैया मुअज्जम के आश्रित कवि लाला जैनसिंह महापात्र रचित 'माजम प्रभाव' नामक अलकार ग्रन्थ का है।[१] पर यह आलम के नाम चढा हुआ है, क्योकि द्वितीय चरण मे आलम शब्द आया हुआ है, जो वस्तुतः ससार का सूचक है। सरोजकार ने प्रमाद से इसे कवि छाप समझ लिया है।

जानत औलि किताबन को जे निसाफ के माने कहे हैं ते चीन्हे
पालत हौ इत आलम को उत नीके रहीम के नाम की लीन्हें
मोजमशाह तुम्हे करता करिबे को दिलीपति है वर दीन्हे
काबिल हैं ते रहै कितहूँ, कहूँ काबिल होत है काबिल कीन्हे
—सरोज, पृष्ठ १०

(४) निम्नाकित सवैया घनानन्द के नाम चढा है, पर है यह केशव पुत्र वधू का[२]

जैहै सबै सुधि भूलि तुम्हे, फिरि भूलि न मो तन भूलि चितैहैं
एक को आँक बनावत मेटत, पोथिय काँख लिए दिन जैहैं
सांची हौं भाखति मोहि कका कि सौ पीतम की गति तेरिहु ह्वैहैं
मोसों कहा अठिलात अजासुत, कैहौं कका जी सौं तोहूँ सिखैहै
—सरोज, पृष्ठ १२

(५) निम्नाकित सवैया प्रसिद्ध कवि ठाकुर बुन्देलखडी की रचना है,[३] पर यह ईश्वर के नाम उद्धृत है और इसमे ईश्वर की छाप भी है ।—

---

[१] ना० प्र० पत्रिका, वर्ष ५० अंक १।२। [२] घन आनंद ग्रन्थावली, पृष्ठ ४३,४४ और विनोद कवि सख्या ३३९। [३] ठाकुर ठसक, छन्द १५५

चारिहुँ ओर उदै मुख चंद की चांदनी चारु निहारि ले री
यह प्रानहि प्यारी अधीन भयो मन माहि विचार विचारि ले री
कवि ईश्वर भूलि गयो जुग पारिबो या बिगरी को सुधारि ले री
यह तौ समयो बहुर्यो न मिलै बहती नदी पाँय पखारि ले री
—सरोज, पृष्ठ १५

(६) ऊंचे धौल मंदिर के अंदर रहन वाली
ऊंचे धौल मंदिर के अंदर रहाती हैं
कंद पान भोगवारी कंद पान करैं भोग
तीन बेर खान वाली तीनि बेर खाती हैं
मैन नारि सी प्रमान मैन नारि सी प्रमान
बीजन डुलाती ते वै बीजन डुलाती हैं
कहै कवि इन्दु महाराज आज वैरी नारि
नगन जडाति ते वै नगन जडाती हैं
—सरोज, पृष्ठ १५

यह छन्द प्रसिद्ध कवि भूषण[1] का है

(७) चहचही चटकीली चुनिचुनि चातुरी सों
चोखी चारु चांदनी की रंगी रंग गहरे
कंचन किनारी तापै लागी छोर लों हैं, खुली
दामिनी सी गोरे गात प्यारी सारी पहरे
इन्द्रजीत धनुष सो कही न परत छबि
आनन झलक चहुँ ओर ऐसी छहरे
गहगही पचरंग महमही सोंधे सनी
लहलही लसैं ये लहरिया की लहरें
—सरोज, पृष्ठ १६,१७

सरोज मे यह कवित्त औरंगजेब के किसी नौकर इन्द्रजीत के नाम से उद्धृत है। बुन्देल वैभव मे यही छंद महाकवि केशव के आश्रय दाता इन्द्रजीत सिंह के नाम पर दिया गया है।[2]

(८) कीधौं मोर सोर तजि गए री अनेक भाँति
कीधौं उत दादुर न बोलत नए दई
कीधौं पिक चातक चकोर कोऊ मारि डाले
कीधौं बग्पाति कहूँ अंतगत है, गई
झींगुर झिंगारे नाहिं कोकिला उचारै नाहिं
बैन कहै जयसिंह दसो दिशा स्वै गई
जारि डारे मदन मरोरि डारे मोर सब
जूझि गये मेघ कीधौं दामिनी सती भई
—सरोज, पृष्ठ ११७

---

[1] भूषण, छन्द ४२१। [2] बुन्देल वैभव, प्रथम भाग, पृष्ठ २०४

सरोज मे यह कवित्त जयसिह के नाम उद्धृत है, पर यह प्रसिद्ध सिंगारी कवि आलम की रचना है।[१]

(९) बसि वर्ष हजार पयोनिधि मे, बहु भांतिन सीत की भीति सही
कवि देव जू त्यो चित चाह घनी, सत सगति मुक्तनहूँ की लही
इन भांतिन कीनौ सबै तपजाल, सु रीति कछूक न बाकी रही
अजहूँ लौ इते पर सीप सबै, उन आनन की समता न लही
—सरोज, पृष्ठ १४६

यह महाकवि देव की रचना नही है, द्विज देव की रचना है।[२]

(१०) देश विदेश के देखे नरेश, न रीझि कै कोऊ जु बूझि करैगो
ताते तिन्हे तजि जाति गिने गुन औंगुन सौगुनी गाँठि परैगो
बासुरी वारो बडो रिझवार है देव जु नेक सुढार ढरैगो
छोहरा छैल वही जो अहीर को पीर हमारे हिये की हरैगो
—सरोज, पृष्ठ १४६,१४७

यह सवैया भी महाकवि देव का नही है, यह रसखानि की रचना है।[३]

(११) कुक्कुट कुटुंबिनी की कोठरी में डारि राखो
चिक दै चिरैयन की रोकि राखी गलियो
सारँगी में सारँग सुनाइ कै प्रवीन बीना
सारँग दै सारँग की ज्योति करी मलियो
बैठी परजंक मे निसक ह्वै कै अंक भरौं
करौंगी अधरपान मैन मद मिलियो
मोहि मिले प्रान प्यारे धीरज नरिन्द आजु
ये हो बलि चन्द नेकु मन्द गति चलियो
—सरोज, पृष्ठ १५१

यह कवित्त सरोज मे धीरज नरिन्द, श्री राजा इन्द्रजीत सिंह, गहरवार, उडछा बुन्देलखडी के नाम से उद्धृत है। बुन्देल वैभव मे यह प्रवीण राय के नाम से दिया गया है।[४] यह छद स्त्रीत्व-भावना से युक्त है भी।

(१२) रँग भरि भरि भिजवत मोरि अगिया
दुइ कर लिहिसि कनक पिचकरवा
हम सब ठनगन करत डरत नहि
मुख सन लगवत अँतर अगरवा
अप कस बसियत सुनि ननदी हो
फगुन के दिन इहि गोकुल नगरवा

---

[१]हिन्दी के मुसलमान कवि, पृष्ठ १०८। [२]शृङ्गार लतिका, छद २१२। [३]रसखानि, छंद, ७।
[४] बुन्देल वैभव, पृष्ठ २९०

मुहि तन तक्त बक्त पुनि मुसिक्त
रसिक गोविन्द अभिराम लँगरवा
—सरोज, पृष्ठ ७६

इस पद मे स्पष्ट ही 'रसिक गोविन्द' की छाप है, पर यह गोविन्द जी कवि के नाम से उद्धृत किया गया है।

(१३) आम पास पुहुँस प्रकास के पगार सूझै
बनन अगार डीठि ह्वै रही निबरते
पारावार पारद अपार दसौ दिसी बूडी
चन्द ब्रह्मंड उतरात विधु वर ते
सरद जुन्हाई जहु धार सहसा सुधाई
सोभा सिन्धु नव सुभ्र नव गिरिवर ते
उमडो परत जोति मंडल अखड
सुधा मडल मही ते विधु मंडल विवर ते
—सरोज पृष्ठ ८५

यह छद चन्द (२) के नाम पर सरोज मे उद्धृत है। वस्तुतः यह महाकवि देव की रचना है।[1]

(१४) दाढ़ी के रखैयन की दाढी सी रहित छाती
बाढी मरजाद अब हद्द हिन्दुआने की
मिटि गई रैयति के मन की कसक अरु
कढि गई खसक तमाम तुरकाने की
भनत नेवाज दिल्ली पति दल धक धक
हाक सुनि राजा छत्रसाल मरदाने की
मोटी भई चन्डी विन चोटी के सिरन खाय
खोटी भई सम्पत्ति चकत्ता के घराने की
—सरोज, पृष्ठ १५६,१५७

सरोज मे यह छद नेवाज कवि ब्राह्मण प्राचीन (२) के नाम पर उद्धृत है। यही छद 'रस कुसुमाकर' मे भूषण के नाम पर पृष्ठ १८७ पर, छत्रशाल की प्रसशा मे दिया गया है। भूषण ग्रन्थावलियो मे भी यह छद शिवा जी की प्रशस्ति मे मिलता है। नेवाज के स्थान पर भूषण हो गया है और छत्रशाल के स्थान पर शिवराज।[2]

(१५) कवि को समान ढूँढि हेरे प्रभु आन
ये निदान दान जूझ मे न कोऊ ठहरात हैं
पचम प्रचड भुजदड के बखान सुनि
भागिबे को पच्छी लौं पठान थहरात हैं
सका मानि काँपत अमीर दिल्ली वाले, जब
चम्पति के नन्द के नगारे घहरात हैं
चहूँ ओर कत्ता के चकत्ता दल ऊपर
सु छत्ता के प्रताप के पताके फहरात हैं
—सरोज, पृष्ठ १९०

[1] देव-सुधा, छद ४६। [2] भूषण, छद ४०४

यह छद पचम कवि प्राचीन (१) के नाम से उद्धृत है। दूसरे चरण मे आया हुआ पचम कवि का नाम नही है। यह बुन्देलो के पूर्व पुरुष पचम सिंह का सूचक है। भूषण ग्रन्थावलियो मे यह छद प्रसिद्ध कवि भूषण का माना गया है।[1]

(१६) जब नैननि प्रीति ठई ठग स्याम, सयानो सखी हठि यों बरजी
नहि जान्यो वियोग को रोग है आगे, झुकी तब हौ तिहि सों तरजो
अब देह भये पट नेह के भाले सों, ब्यौंत करै विरहा दरजो
ब्रजराज कुमार विना सुनु भृ ग, अनंग भयो जिय को गरजी
—सरोज, पृष्ठ २३२

यह कविता भृ ग के नाम पर चढी हुई है। भृ ग कवि का नाम नही है। यह उद्धव के लिये प्रयुक्त हुआ है। यह गोपियो की उक्ति है। यह गोस्वामी तुलसीदास की रचना है।[2]

(१७) छूटे चन्द्र बान भले वान औ कुहुक वान
छूटत कमान जिमी आसमान छ्वै रह्यो
छूटैं ऊट नालैं जम नालैं हथ नालैं छूटैं
तेगन को तेज सो तरनि जिमि ग्वै रह्यो
ऐसे हाथ हाथन चलाइ कै मुकुन्द सिह
अरि के चलाइ पाइ बीर रस च्वै रह्यो
हय चले हाथी चले सग छोडि साथी चले
ऐसी चलाचल मे अचल हाडा ह्वै रह्यो
—सरोज, पृष्ठ २४७

सरोज मे मुकुन्द सिंह के नाम पर दिया हुआ यह कवित्त भूषण की रचना के रूप मे विख्यात है और सभी भूषण ग्रन्थावलियो मे मिलता है।[3]

(१८) लखमन ही सग लिये, जोवन विहार किये,
सीत हिये बसै कहो तासो अभिराम को
नवदल शोभा जाकी, विकसै सुमित्रै लखि
कोसलै बसत कोऊ धाम धाम ठाम को
कवि मतिराम शोभा देखिये अधिक न ति
सरस निधान कवि कोविद के काम को
कीनो है कवित्त एक तामरस ही को
यासो राम को कहत कै कहत कोउ वाम को
—सरोज, पृष्ठ २५५

मतिराम के नाम उद्धृत यह छद सेनापति का होना चाहिए या किसी अन्य कवि का।

(१६) चोथते चकोर चहुँ ओर जानि चदमुखी
रही बीच डरन दसन दुति दम्पा के

---

१ भूषण, छंद २२४। २ कवितावली उत्तर काड, छद १३३। ३ भूषण छद २२८।

लौलि जाते वरही विलोकि बेनी बनिता के
गुही जो न होती यो कुसुम सर कम्पा के
राम जी सुकवि ढिग भौहैं ना धनुष होती
कीर कैसे छोडते अधर बिम्ब झम्पा के
दाख के से भौरा झलकत जोति जोबन की
भौर चाटि जाते जो न होती रग चम्पा के
—सरोज, पृष्ठ २८८

यह कवित्त राम जी कवि (२) के नाम उद्धृत है। यह पुखी के नाम से भी मिलता है। प्रभुदयाल प्रणीत ब्रजभाषा साहित्य के नायिका भेद मे इसे पुखी के नाम रूपगर्विता के उदाहरण मे दिया गया है। 'राम जी सुकवि के' के स्थान पर 'पुखी कहे जो पै' पाठ है।

(२०) साध सराहै सो सती, जती जोषिता जान
रज्जब साचे सूर की बैरी करत बखान
—सरोज, पृष्ठ २९२

रज्जब के नाम पर उद्धृत यह दोहा रहीम के नाम से प्रसिद्ध है।[1]

(२१) सुनिये विटप प्रभु पुहुप तिहारे हम
राखिये हमै तो सोभा रावरी बढाइ है
तजिहौ हरस तो विरस ते न चारो कछू
जहाँ जहाँ जैहै तहाँ दूनी छबि पाइ हैं
सुरन चढ़ैंगे सुर नरन चढ़ैंगे सीस
सुकवि रहीम हाथ हाथ ही विकाइ हैं
देस मे रहैंगे, परदेस मे रहैंगे, काहू
भेस मे रहैंगे, तऊ रावरे कहाइ है
—सरोज, पृष्ठ ३०२।१३

यह कवित्त सरोज मे अनीस और रहीम नामक दो-दो कवियो के नाम पर चढा हुआ है। यह वस्तुत' अनीस की रचना है।

(२२) दारा और औरग लरे है दोउ दिल्ली बीच
एकै भाजि गए एकै मारे गये चालि मै
बाजी दगा बाजी करि जीवन न राखत है
जीवन बचाए ऐसे महा प्रलै काल मे
हाथी ते उतरि हाडा लर्यो हथियार लै कै
कहै लाल वीरता बिराजै छत्रसाल मे
तन तरवारिन में, मन परमेस्वर मे,
पन स्वामि कारज मे, माथो हर माल मे
—सरोज, पृष्ठ ३०२

यह कवित्त लाल कवि (१) प्राचीन के नाम पर सकलित है। यह छद भूषण के नाम से भी प्रसिद्ध है।[2]

---

[1] रहिमन विलास, छद २४८। [2] भूषण छद ४०३

(२३) बसै बुराई जासु उर, ताही को सनमान
भलो भलो कहि त्यागिये, खोटे ग्रह जप दान
—सरोज, पृष्ठ ३०५

यह दोहा लाल कवि (४) के भाषा राजनीति से उद्धृत है। यह उनकी रचना नही है। यह उद्धरण का उद्धरण है और विहारी का है।[1]

(२४) नीकी पै फीकी लगै बिन अवसर की बात
जैसे बरनत जुद्ध मे रस सिंगार न सुहात
फीकी पै नीकी लगै कहिये समय विचारि
सबके मन हरषित करै ज्यों विवाह मे गारि
—सरोज, पृष्ठ ३१२

यह दोहे लल्लू जी लाल कृत सभा विलास से उद्धृत है। सभा विलास पुराने कवियो की कविताओ का सग्रह-ग्रन्थ है। ऊपर उद्धृत छद लल्लू जी लाल के नही है, वृन्द के है।[2]

(२५) उपमा कालिदासस्य, भारवेरर्थगौरवं
नैषधे पदलालित्य, माघे सति त्रयो गुणा

सस्कृत के इस प्रसिद्ध श्लोक से प्रेरणा ग्रहण कर न जाने किसने निम्नाकित दोहा लिखा—

सुन्दर पद कवि गग के, उपमा के बर वीर
केसव अर्थ गभीर के, सूर तीनि गुन तीर
—सरोज, पृष्ठ ३२०

सरोज मे यह सूरदास के नाम पर चढा हुआ है। इसमे मुख्यतया सूर की ही प्रशस्ति है। भला स्वय सूर अपने मुँह मिया मिठ्ठू कैसे बने होगे ?

(२६) चाह सिंगार सँवारन की नव वेस बनी रतिवारन की है
सोभ कुमार सिवारन की सिर सोहति जोहति वारन की है
हसन के परिवारन की पग जीत लई गति वारन की है
याहि लखै सरवारन की छनभी रति के परिवारन की है
—सरोज, पृष्ठ ३३८

यह सवैया सोभ कवि के नाम से चढा हुआ है। द्वितीय चरण के प्रारम्भ मे सोभ शब्द आया है जिसे शिवसिह ने प्रमाद से कविछाप समझ लिया है। यह शब्द 'शोभा' के अर्थ मे प्रयुक्त हुआ है। शोभ के आगे कुमार शब्द आया हे, यही कवि की छाप है। यह रचना कुमारमणि शास्त्री 'कुमार' के 'रसिक रसाल' नामक रीति ग्रन्थ मे है।[3]

(२७) हूल हियरा मे धाम धामनि परी है रोर
भेंटत सुदामै स्यामै बनै ना अघात ही

---

[1] विहारी रत्नाकर छंद ३८१। [2] वृन्द सतसई, छद ४,९। [3] रसिक रसाल, सप्तम उल्लास, छद १४

सिरोमनि सिद्धिन मे सिद्धिन म सोर पर्यो
काहि वकमी धौं कांपै ठाढ़ी कमला तहीं
नर लोक नाग लोक नभ लोक नाक लोक
थोक थोक कांपे हरि देखे मुसक्याति हो
हालो पर्यो हालिन में, लालो लोक पालिन में
चालो पर्यो चालिन में चिउरा चवान ही
—सरोज, पृष्ठ ३३८,३९

यह कवित्त शिरोमणि के नाम से दिया हुआ है, पर है नरोत्तम कवि का।[१]

(२८) दिसि विदिसान ते उमडि मढि लीनो नभ
छोरि दिए धुरवा जवासे जूह जारिगे
टहडहे भए द्रुम रंचक हवा के गुन
कुहू कुहू मोरवा पुकारि मोद भारिगे
रहि गये चातक जहाँ के तहाँ देखत ही
सोभ नाथ कहूँ कहूँ बूंदहू न करिगे
सोर भयो घोर चहूँ ओर नभ मडल मे
आए घन आए घन, आय कै उघरिगे
—सरोज, पृष्ठ ३५६,५७

यह कवित्त सोभनाथ कवि के नाम से दिया गया है। वस्तुत. यह है सोमनाथ। भ और म की प्रतिलिपि सम्बन्धी असावधानी के कारण सरोजकार को एक और कवि सोभनाथ की कल्पना करनी पडी है।[२]

(२९) काल कसाल कराल करालन साल विसालन चाल चली है
हाल विहालन ताल तमाल प्रवाल के बालक लाल लली है
लोल विलोल कलोल अमोल कलाल कपोल कलोल कली है
बोलन बोल कपोलन डोल गलो लग लोल रलोल गली है
—सरोज, पृष्ठ ३७६

यह छंद हरिचन्द्र कविवरसाने वाले के नाम पर उद्धृत है। यही किंचित्पाठान्तर के साथ महाकवि केशवदास की कवि-प्रिया के दोष प्रकरण मे अर्थहीन मृतक दोष के उदाहरण मे दिया गया है।[३]

ख. अज्ञान के कारण हुई अशुद्धियाँ

१ एक ही कवि को कई कवि समझने की भूले

सरोज मे एक ही कवि कभी-कभी प्रमाद से दो-दो वार चढ गया है, जैसे ब्रह्म, वलिजू,

---

[१] सुदामाचरित्र छंद ४२। [२] सोमनाथ रत्नावली, पृष्ठ ९४। [३] केशव ग्रन्थावली खंड, १, पृष्ठ १०२, १०३, छंद १२

भीषम आदि। कभी-कभी सरोजकार ने एक ही कवि को निश्चित रूप से कई कवि भ्रम के कारण समझ लिया है, जैसे अक्षर, अनन्य। यह एक कवि चार कवियो के रूप मे उल्लिखित हुआ है। एक ही कवि कई स्थानो पर रहा है, और शिवसिंह यदि एक ही व्यक्ति से उन स्थानो का मामञ्जस्य नही कर पाये तो उन्हे अलग मान लिया, जैसे सुखदेव मिश्र। एक सुखदेव तीन हो गये हैं—एक वार कम्पिला वाले, दूसरी वार असोथर वाले और तीसरी वार दौलतपुर वाले। कभी-कभी सरोजकार ने जिस सूत्र को पकडा, वह सूत्र ही अशुद्ध था और कई कवियो की वृद्धि हो गई, जैसे अनन्यदास चकदेवा जिला गोडावासी ब्राह्मण। अशुद्ध सूत्र के कारण ही एक ही कवि कभी स्त्री के रूप मे और कभी पुरुप के रूप मे उल्लिखित हुआ है, जैसे रत्नकुँवरि बीबी, शिवप्रसाद सितारे हिन्द की प्रपितामही। इनका उल्लेख एकबार रत्नकवि ब्राह्मण काशी वासी के नाम से भी हुआ है। सरोज मे उदयनाथ, काशीनाथ, शिवनाथ, शम्भुनाथ, सोमनाथ, हरिनाथ आदि कवियो का अलग-अलग उल्लेख तो हुआ ही है, नाथ नाम के ७ कवि अलग से भी दिये गये है। ये नाथ कोई स्वतत्र कवि नही हैं। ऊपर वाले ही कवि कभी-कभी अपनी कविताओ मे नाथ छाप भी रखते थे। छाप भेद से भी अनेक कवियो की वृद्धि हो गई है। सोमनाथ कवित्तो मे सोमनाथ और सवैयो मे शशि नाथ छाप रखते थे। सरोज मे सोमनाथ से भिन्न एक अन्य शशिनाथ की कल्पना कर ली गई है। कुल मिलाकर सरोज मे ७० से अधिक कवि ऐसे है जो या तो दोहरा-तेहरा उठे है अथवा कवि ही नही हैं।

(२) सन सम्वत् की भूले

सरोज मे वहुत से कवियो के सन्-सम्वत् भी दिये गये हैं। जिन कवियो का समय अनुमान से ही दिया गया है, वह प्राय. अशुद्ध हो गया है। ऐसे अशुद्ध सम्वतो की सख्या भी १०० से अधिक होगी। इन पर विस्तृत विचार आगे उपसहार मे किया गया है।

ग सरोज के सम्पादन की आवश्यक्ता

सरोज हिन्दी-साहित्य के इतिहास का मूल आधार है। इसमे वहुत-सी त्रुटियाँ हैं, जिनका उल्लेख ऊपर किया गया है। इस ग्रन्थ की उपयोगिता को देखते हुए, इसके एक सु-सम्पादित सस्करण की आवश्यकता है। यह सम्पादन सरोज के सवसे पुराने उपलब्ध तृतीय सस्करण के आधार पर होना चाहिये, क्योकि इसका जो सातवाँ अतिम सस्करण उपलब्ध है, उसमे वहुत से परिवर्त्तन कर दिये गये है।

अध्याय ५

सरोज के सन् सम्बत्

क. 'उ०' का स्वीकृत अर्थ

सरोज के सन्-सम्बतो के आगे मे "उ०" लगा हुआ है। उ० उत्पन्न अथवा उपस्थित का सक्षिप्त रूप हो सकता है। सर्वप्रथम ग्रियर्सन ने इस उ० का अर्थ उत्पन्न किया और उन्होने सरोज के सम्वतो को उत्पत्ति काल माना। तभी से सरोज के सम्वत् उत्पत्ति अथवा जन्म-काल समझे जाते रहे है। ग्रियर्सन के बाद सभा की खोज रिपोर्टो मे, फिर विनोद मे एव अन्यत्र सर्वत्र, ये उत्पत्ति काल के रूप मे स्वीकृत हुए है। जहाँ नवीन उपलब्ध सूत्रो की सहायता से ये सम्वत्, जन्म-सम्वत् सिद्ध नही हुए है, वहाँ आलोचको ने सरोज के सम्वतो को अशुद्ध मान लिया है अन्यथा आँख मूदकर जन्म-सम्वत् स्वीकार किया है। विचारणीय है कि क्या यह सम्वत् वस्तुतः जन्म-सम्वत् है और उ० का अर्थ उत्पन्न ही है।

ख परस्पर सम्बन्धित लोगों के सम्वतों पर विचार

गुरु शिष्य से, पिता पुत्र से, बडा भाई छोटे भाई से और पति पत्नी से जेठा होता है। इस प्रकार सम्बन्धित कुछ लोगो के सम्वतो का तुलनात्मक अध्ययन मनोरजक होगा। सबसे पहले हम गुरु-शिष्य सम्बन्ध को लेगे।

(१) गुरु—वल्लभाचार्य, सम्वत् १६०१ में उ०
  शिष्य—(१) कुम्भन दास, सम्वत् १६०१ मे उ०
     (२) कृष्ण दास, सम्वत् १६०१ मे उ०
     (३) परमानन्द दास, सम्वत् १६०१ मे उ०

तीनो शिष्यो और इनके गुरु का सम्वत् एक ही दिया गया है। क्या ये चारो एक ही सम्वत् में उत्पन्न हुए थे ?

(२) गुरु—विट्ठल नाथ, १६२४ मे उ०
  शिष्य—(१) चतुर्भुज दास, १६०१ मे उ०
     (२) छीत स्वामी, १६०१ मे उ०
     (३) नन्ददास, १५८५ मे उ०
     (४) गोविन्द दास, १६१५ मे उ०

यदि उक्त सम्वत् जन्म-सम्वत् ही है तो विट्ठलनाथ जी के ये चारो शिष्य उम्र मे उनसे बहुत बडे है। वल्लभाचार्य के पुत्र-शिष्य चतुर्भुज दास और छीत स्वामी उनके समवयस्क हो जाते है और नन्ददास उनसे भी १६ वर्ष बडे। क्या यह आश्चर्यजनक नही है ?

(३) गुरु—हरिदास स्वामी, सम्वत् १६४० मे उ०
  शिष्य (१) विट्ठल विपुल, सम्वत् १५८० मे उ०
     (२) भगवत रसिक, सम्वत् १६०१ मे उ०

यहाँ एक शिष्य गुरु से ६० वर्ष पहले पैदा हो जाता है और दूसरा ३६ वर्ष पहले। उ० को यदि उत्पत्ति काल मान लिया जाता है, तो यह सब अनर्थ होते हैं।

अब हम कुछ पिता पुत्रों से सम्बन्धित सम्वत् तुलना के लिए नीत कर रहे है।

(१) पिता—रामदास बाबा, सम्वत् १७८८ मे उ०

पुत्र—सूरदास सम्वत् १६४० मे उ०

पुत्र का जन्म पिता के जन्म से १४८ वर्ष पहले हो जाता है जो नितात असंभव है।

(२) पिता—रतनेश बुन्देलखडी, सम्वत् १७८८ मे उ०

पुत्र—परताप साहि, सम्वत् १७६० मे उ०

यहाँ भी पुत्र पिता से २८ वर्ष पहले उत्पन्न हो गया है।

(३) पिता—कवीन्द्र उदयनाथ त्रिवेदी, सम्वत् १८०४ मे उ०

पुत्र—दूलह त्रिवेदी, सम्वत् १८०३ मे उ०

यहाँ पुत्र पिता से एक वर्ष पहले उत्पन्न हुआ है।

(४) पिता—शीतल त्रिपाठी टिकमापुर वाले, सम्वत् १८६१ मे उ०

पुत्र—लाल कवि विहारी लाल त्रिपाठी, सम्वत् १८८५ मे उ०

बेटा बाप से ६ वर्ष पहले हो गया है। पुत्र का जन्म पिता से पहले हो जाय, यह सब अनर्थ उ० को उत्पन्न मानने के कारण होते हैं। अत. यह अर्थ समीचीन नही प्रतीत होता।

अब बडे भाई और छोटे भाई से सम्बन्धित कुछ सम्वत् भी देख लिये जाय।

(१) अग्रज—फैजी, सम्वत् १५८० मे उ०

अनुज—फहीम, सम्वत् १५८० मे उ०

दोनो सहोदर है और एक ही सम्वत् मे पैदा हुए है। क्या दोनो जुडवा है? यदि नही तो दोनो का एक ही सम्वत् मे पैदा होना असभव है।

(२) अग्रज—भूषण त्रिपाठी, सम्वत् १७३८ मे उ०

अनुज—मतिराम त्रिपाठी, सम्वत् १७३८ मे उ०

क्या भूषण और मतिराम भी जुडवा भाई थे अथवा चचेरे? परम्परा से तो सगे भाई माने जाते है।

(३) अग्रज—बलभद्र मिश्र, सम्वत् १६४२ मे उ०

अनुज—केशवदास मिश्र, सम्वत् १६२४ मे उ०

यहाँ बडा भाई छोटे भाई से १८ वर्ष बाद उत्पन्न हुआ है। यह सब अनर्थ उ० का अर्थ उत्पन्न करने के कारण है।

अत मे पति-पत्नी सम्बन्धी कुछ सम्वत् भी लगे हाथो देख लिये जायँ।

(१) पति—आलम, सम्वत् १७१२ मे उ०

पत्नी—शेख, सम्वत् १६८० मे उ०

क्या आलम अपने से ३२ वर्ष बडी बुढ़िया पर आशिक हो कर उसके लिए मुसलमान हुए थे?

(२) पति—कुम्भ कर्ण, राना चित्तौर, सम्वत् १४७५ के लगभग उ०

पत्नी—मीरा बाई, सम्वत् १४७५ मे उ०

परमात्मा को धन्यवाद है कि यहाँ पति-पत्नी समवयस्क हैं। पत्नी पति से बडी नही है।

ग उ० का वास्तविक अर्थ

विभिन्न सम्बन्धियो के जो सम्वत् ऊपर उद्धृत किये गये है, वे स्पष्ट सकेत करते है कि सरोज के सम्वत् जन्म-सम्वत् नही हैं। शिर्वासिह के पास हर एक कवि की जन्म कुण्डली नही थी, जिसे देखकर वे जन्म सम्वत् देते जाते। 'उ०' वस्तुतः उपस्थिति काल का सूचक है। यदि ऊपर के उदाहरणो मे उ० को उपस्थित मान ले, तो ऊपर उठाई हुई बाधाये अधिकाश मे समाप्त हो जाती हैं। गुरु-शिष्य, भाई-भाई, पिता-पुत्र और पति-पत्नी सब साथ-साथ किसी एक विशेष सम्वत् मे उपस्थित रह सकते है। यह उपस्थिति सम्वत् मुख्यतया कवियो का रचनाकाल सूचित करता है।

सरोज के सन्-सम्वतो के सम्बन्ध मे स्वय शिर्वासिह की यह उक्ति ध्यान देने योग्य है .—

"जिन कवियो के ग्रन्थ मैंने पाये, उनके सन्-सम्वत् बहुत ठीक-ठीक लिखे है, और जिनके ग्रन्थ नही मिले उनके सन्-सम्वत् हमने अटकल से लिख दिये है | कवि लोग इस ग्रन्थ मे प्रशसा के बहुत कवित्त देखकर कहेगे कि इतने कवित्त वीररस के क्यो लिखे ? मैंने सन्-सम्वत् और उस कवि के समय-निर्माण करने को ऐसा किया है, क्योकि इस सग्रह के बनाने का कारण केवल कवियो के समय, देश, सन्-सम्वत् बताना है।" —शिर्वासिह सरोज, भूमिका, पृष्ठ २

घ ग्रन्थ-रचनाकाल और 'उ०' की एकता

शिर्वासिह ने बहुत से कवियो की कविता उद्धृत करते समय उनके ग्रन्थ-रचनाकाल सूचक छंद भी उद्धृत किये है। इन छदो के द्वारा जो रचनाकाल निकलता है, वही सम्वत् उन कवियो के जीवन-चरित्र मे भी दिया गया है, जो निश्चय ही उनका उत्पत्ति-काल नही हो सकता। नीचे ऐसे कवियो की तालिका प्रस्तुत की जा रही है।

(१) इच्छा राम अवस्थी सम्वत् १८५५ मे उ०, ब्रह्म विलास का रचनाकाल-सूचक छद —

सम्वत् सत दस आठ गत ऊपर पाच पचास
सावन सित दुति सोम कह कथा अरम्भ प्रकाश

(२) करण भट्ट, सम्वत् १७९४ मे उ०, साहित्य चन्द्रिका का रचनाकाल-सूचक छद :—

वेद[४] खड[९] गिरि[७] चद्र[१] गनि भाद्र पचमी कृष्ण
गुरु वासर टीका करन पूर्यो ग्रथ कृतष्ण

(३) कालिदास त्रिवेदी, सम्वत् १७४९ मे उ०, वधू विनोद का रचनाकाल सूचक छद .—

सम्वत् सत्रह सै उनचास
कालिदास किय ग्रथ विलास

(४) कवीन्द्र, उदयनाथ त्रिवेदी, सम्वत् १८०४ मे उ०, रस चन्द्रोदय का रचनाकाल सूचक छद .—

सम्वत् सतक अठारह चारि
नाइकादि नामक निरधारि
लहि कविन्द लच्छित रस पंथ
किय विनोद चद्रोदय ग्रंथ

सरोज मे 'सतक' के स्थान पर 'सकत' छप गया है।

(५) गुमान मिश्र, साडी वाले, सम्वत् १८०५ मे उ०, नैषधचरित के हिन्दी अनुवाद, 'काव्य-कला निधि' का रचनाकाल सूचक छद .—

मयुत प्रकृति पुरान सै, संवत्सर निरदंभ
सुर गुरु सह सितसप्तमी कर्यो ग्रंथ आरम्भ
प्रकृति=९, पुरान सै=१८००

(६) गोविन्द कवि, सम्वत् १७९१ मे उ०, कर्णाभरण का रचनाकाल सूचक छंद :—
नग[७] निधि[९] ऋषि[७] विधु[१] बरस मे, सावन सित तिथि संभु
कीन्ह्यो सुकवि गोविन्द जू कर्नाभरन अरम्भ

जीवन उड मे सम्वत् १७९१ दिया हुआ है। इस सम्बन्ध मे प० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र का यह अनुमान है :—

"उत्तरार्ध मे स० १७९१ दिया गया है और ग्रन्थ का निर्माण-काल "नग निधि ऋषि विधु" दिया है, जिससे १७९७ होता है। मैं समझता हूँ कि नग के स्थान पर नभ है जिसका अर्थ शून्य होता है, पर सेंगर ने नभ का कहीं-कहीं एक भी अर्थ ले लिया है। अथवा उत्तरार्ध मे १७९७ ही रहा होगा, पर वह पढा गया १७९१, या १७९७ के स्थान पर १७९१ छापे की भूल से हो गया।

—हिन्दुस्तानी, अप्रैल-जून १९४३

यह ग्रन्थ भारत जीवन प्रेस से प्रकाशित हो चुका है। इसमे उक्त दोहे का ऊपर वाला ही पाठ है और पाद टिप्पणी मे "सम्वत् १७९७" भी दिया गया है। अत. ग्रन्थ का रचनाकाल सम्वत् १७९७ ही है। सरोज मे प्रमाद से १७९१ छप गया है। जो हो सरोज मे इस दोहे के आधार पर ही सम्वत् दिया गया है। इसमे सदेह के लिये रच मात्र भी अवकाश नही। प्रथम सस्करण मे इसका समय १७९८ दिया गया है।

(७) ग्वाल कवि, सम्वत् १८७९ में उ०, यमुना लहरी का रचनाकाल सूचक छद :—
सम्वत् [९]निधि रिसि[७] सिद्धि[८] ससि[१] कार्तिक मास सुजान
पूरनमासी परम प्रिय राधा हरि को ध्यान

(८) गुरुदीन पाडे, सम्वत् १८९१ मे उ०, वाक् मनोहर पिंगल का रचनाकाल सूचक छद :—
सिसिर सुखद ऋतु मानिये, माह महीना जन्म
सम्वत् नभ[०] रस[६] वसु[८] ससी[१] वाक मनोहर जन्म

रचनाकाल हुआ स० १८६० पर शिवसिंह ने अनेक स्थलो पर नभ का अर्थ शून्य न लेकर एक लिया है।[१] यहाँ रस का अर्थ ९ किया है। अत उन्होंने रचनाकाल १८९१ मे दिया है।

(९) चेतन चन्द्र कवि, सम्वत् १६१६ में उ०, शालिहोत्र का रचनाकाल सूचक छद :—
सम्वत् सोलह सौ अधिक चार चौगुने जान
ग्रन्थ कह्यो कुम्लेश हित रच्छक श्री भगवान
(१६००)+(चार चौगुने=४×४=१६)=१६१६

(१०) छेदीराम कवि, सम्वत् १८९४ में उ०, कविनेह पिंगल का रचनाकाल सूचक छद: —
मकर महीना पच्छ सित सम्वत् सर हरकेह
जुग[४] ग्रह[९] वसु[८] शिव[१] कुज सहित जन्म लियो कविनेह

---

(१) देखिये, आगे उद्धृत १६ सख्यक प्राणनाथ कवि।

(११) जशोदा नन्द कवि, सम्वत् १८२८ मे उ०, बरवै नायिका भेद का निर्माणकाल सूचक छंद :—

मै लिखि लीनों चैतहि तेरसि पाइ
सम्वत हय[७] बिधि[२] करि[८] कै ब्रह्म[१] मिलाइ

प्रमाद से शिवसिंह ने १८२७ के बदले १८२८ सम्वत् दे दिया है।

(१२) तुलसी (३) यदुराय के पुत्र, सम्वत् १७१२ मे उ०, सग्रह माला का रचनाकाल सूचक दोहा :—

सत्रह सौ बारह बरस सुदि असाढ़ बुधवार
तिथि अनग को सिद्ध यह भई जु सुख को सार

(१३) दीनदयाल गिरि, सम्वत् १९१२ में उ०, अन्योक्ति कल्पद्रुम का रचनाकाल सूचक दोहा :—

कर[२] छिति[१] निधि[९] ससि[१] साल में माघ मास सितपच्छ
तिथि बसंत जुत पंचमी रविवासर सुभ स्वच्छ
सोभित तेहि अवसर विषे बसि कासी सुखधाम
बिरच्यो दीनदयाल गिरि कलपद्रुम अभिराम

(१४) दयानाथ दुबे, सम्वत् १८८९ मे उ०, आनन्द रस नायिका भेद का रचनाकाल सूचक दोहा :—

सम्वत् ग्रह[९] वसु[८] गज[८] मही[१] कह्यो यहै निरधार
सावन सुदि पूनो सनी भयो ग्रन्थ परचार

(१५) नाथ (५), हरिनाथ गुजराती, सम्वत् १८२६ मे उ०, अलकार दर्पण का रचनाकाल सूचक दोहा :—

रस[६] भुज[२] बसु[८] अरु रस[१] दे सम्वत् कियो प्रकास
चन्दवार सुभ सत्तमी माधव पच्छ उजास

(१६) प्राणनाथ कवि, ब्राह्मण, वैसवारे के सम्वत् १८५१ मे उ०, 'चक्राव्यूह का इतिहास' का रचनाकाल सूचक दोहा :—

सम्बत व्योम[०] नराच[५] वसु[८] मही[१] महिज उर्ज मास
शुक्ल पच्छ तिथि नवमि लिखि चक्राव्यूह इतिहास

शिवसिंह ने व्योम का अर्थ शून्य नही किया है, एक किया है। इस सम्वन्ध मे पडित विश्वनाथ प्रसाद मिश्र अपने हिन्दुस्तानी वाले लेख मे निम्नाकित टिप्पणी देते है :—

"यहा कदाचित व्योम के स्थान पर सोम होगा अथवा व्योम का अर्थ शून्य न ग्रहण करके एक मान लिया गया होगा।"

(१७) बीर (२) बीरवर, कायस्थ, दिल्ली निवासी, सम्वत् १७७७ मे उ०, कृष्ण चन्द्रिका का रचनाकाल सूचक दोहा :—

चन्द्र[१] वार[७] ऋषि[७] निधि[७] सहित लिखि सम्वत्सर जानि
चन्द्रवार एकादसी माघ वदी उर आनि
कर्‍यो जथा मति आपनी कृष्ण चन्द्रिका ग्रन्थ
जैसे कछू बताइ गे पूरब पडित पथ

यहा 'अकानाम् वामतो गति.' का अनुसरण नही हुआ है और निधि समुद्र के अर्थ मे स्वीकार किया गया है।

(१८) वालनदास कवि, सम्वत् १८५० मे उ०, रमल सार का रचनाकाल सूचक दोहा :—

इन्दु[१] नाग[८] अरु बान[५] नभ[०] अंक शब्द श्रुति मास
कृष्ण पच्छ तिथि पचमी बरनेउ बालन दास

यहाँ भी 'अकानाम वामतो गति' का अनुसरण नही हुआ है।

(१९) मान कवि, ब्राह्मण (३) वैसवारे के, सम्वत् १८१८ मे उ०, कृष्ण कल्लोल का रचनाकाल सूचक दोहा :—

अष्टादस सै वरस सो सरस अष्ट दस साल
सुन सैनी वर वार को प्रगट्यो ग्रन्थ विशाल

(२०) मेधा कवि, सम्वत् १८६७ मे उ०, चित्रभूषण का रचनाकाल सूचक दोहा :—

सम्बत मुनि[७] रस[६] वसु[८] ससी[१] जेठ प्रथम सनिवार
प्रगट चित्र भूपन भयो कवि मेधा सिंगार

(२१) रस साहि, कायस्थ, सम्वत् १८१३ मे उ०, रस विलास का रचनाकाल सूचक दोहा :—

गुन[३] ससि[१] वसु[८] ससि[१] जानिये सम्बत् अक प्रकास
भादौ सुदि दसमी सनी जनम्यो रूप विलास

(२२) रघुनाथ, बनारसी, सम्वत् १८०२ मे उ०, काव्य कलाधर का रचनाकाल सूचक दोहा —

ठारह सत पै द्वै अधिक सम्वत्सर सुखसार
काव्य कलाधर को भयो कातिक मे अवतार

(२३) रसलीन, सय्यद गुलाम नबी, बिलग्रामी, सम्वत् मे १७९८ उ०, रस प्रबोध का रचना काल सूचक दोहा—

सत्रह सै अट्ठानवे मधु सुदि छठि बुधवार
बिलग्राम मे आई के भयो ग्रन्थ अवतार

(२४) सूरति मिश्र, सम्वत् १७६६ मे उ०, अलकार माला का रचनाकाल सूचक दोहा —

सम्वत् सत्रह सै बरस छासठि सावन मास
सुरगुरु सुदि एकादसी कीन्हों ग्रन्थ प्रकास

(२५) शम्भुनाथ कवि (२) वन्दी जन, सम्वत् १७९८ मे उ०, राम विलास रामायण का रचनाकाल सूचक दोहा —

वसु[८] ग्रह[९] मुनि[७] ससधर[१] वरस सित फागुन कर मास
शभुनाथ कवि ता दिनै कीन्हों राम विलास

(२६) शभुनाथ कवि (४) त्रिपाठी, डौंडियाखेरे वाले, स० १८०९ मे उ०, वैताल पचीसी के अनुवाद का रचनाकाल सूचक दोहा :—

नद[९] व्योम[०] धृति[१८] जानि कै सम्वत् सर कवि शम्भु
माघ अँध्यारी द्वैज को कीन्हौ तत आरम्भु

(२७) सुन्दर कवि, ग्वालियर निवासी, स० १६८८ मे उ०, सुन्दर शृगार का रचनाकाल सूचक दोहा :—

सम्बत् सोरह सौ वरस वीते अट्ठासीति
कातिक सुदी पष्ठी गुरुहि रच्यो ग्रन्थ करि प्रीति

इन २७ कवियो के उ० सम्वत् और उनके ग्रन्थो के सरोज मे उद्धृत रचनाकाल सूचक छदो से निकलने वाले सम्वत् मे पूरी एकता है। इनके अतिरिक्त सरोज मे हठी का सम्बत १८८७ दिया गया है और इनके राधा सतक का रचनाकाल सम्बन्धी निम्नाकित दोहा भी उदाहरण मे उद्धृत किया गया है।

ऋषि[७] सु वेद[४] वसु[८] ससि[१] सहित निर्मल मधु को पाइ
माधो तृतीया भृगु निरखि रच्यो ग्रन्थ सुखदाइ

इसका रचनाकाल सम्वत् १८४७ हुआ। भारत जीवन प्रेस से प्रकाशित प्रति में "वेद" के स्थान पर 'देव' पाठ है जिसका अर्थ है त्रिदेव (ब्रह्मा, विष्णु, महेश)। ऐसी स्थिति मे रचनाकाल सम्वत् १८३७ हुआ। प० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र इस सम्बन्ध मे अपने हिन्दुस्तानी वाले लेख मे लिखते है :—

"हठी जी के नाम के साथ उत्तरार्ध मे १८८७ सम्वत छपा है। मुझे यह छापे की अशुद्धि जान पडती है। यह वस्तुत. १८४७ ही है। १८८७ मे हठी जी का जन्म माना जाय तो क्या होगा, इसे समझदार ही समझे।" प्रथम सस्करण मे १८४७ है भी।

इन उद्धरणो से स्पष्ट है कि सरोज के सम्वत् उपस्थिति सूचक हैं न कि उत्पत्ति सूचक।

ङ भाषाकाव्य संग्रह और सरोज के सन्-सम्वत्

सरोज कें सकलन-सपादन मे महेशदत्त के काव्यसग्रह से भी सहायता ली गई है। इसे ग्रन्थ के अन्त मे सभी ५१ सकलित कवियो का सक्षिप्त जीवन चरित्र भी दे दिया गया है। शिवसिंह ने अनेक कवियो के जीवन की सामग्री एव सन्-सम्वत् इसी ग्रन्थ से लिये है। काव्य सग्रह मे जो सम्वत् ग्रन्थ का रचनाकाल है या मृत्यु सम्वत् है, सरोज मे वही सम्वत् देकर "मे उ०" लिख दिया गया है और स्पष्ट बात को भी अस्पष्ट कर दिया गया है। इससे भी स्पष्ट है कि सरोज मे दिये गये सम्वत् जन्मकाल न होकर उपस्थिति काल या रचनाकाल है। आगे दोनो ग्रन्थो के तथ्य प्रमाण रूप उद्धृत किये जा रहे है।

सरोज	भाषाकाव्य सग्रह
(१) नवल दास, सम्वत् १३१६ मे उ० हमको सन् सम्वत् के ठीक होने मे सदेह है।	(१) नवलदास ग्राम गूढ के रहने वाले थे और सम्वत् १९१३ मे वही मृत्युवश हुये। (सरोजकार को १९१३ का १३१६ मिला, सम्भवत. प्रथम सस्करण मे छापे की उलट-पुलट के कारण ऐसा हो गया था।)

(२) चरण दास, सम्वत् १५३० मे उ०	(२) ये सम्वत् १५३७ मे मरे थे।
(३) रामनाथ प्रधान, सम्वत् १९०२ मे उ०	(३) ये सम्वत् १८५६ मे उत्पन्न हुये थे और सम्वत् १९२५ मे वही (अयोध्या मे) मृतक हुये। (शिव सिंह ने वीच का सम्वत् उठाकर रख दिया है।)
(४) श्रीपति कवि, सम्वत् १७०० मे उ०	(४) ये वडे प्राचीन कवि है अर्थात् सम्वत् १७०५ मे थे।
(५) हिमाचल राम, सम्वत् १९०४ मे उ०	(५) और सम्वत् १९०५ मे वही मृतक हुये।
(६) दास (२) वेनीमाधव दास, सम्वत् १६५५ मे उ०, सम्वत् १६९९ में देहान्त हुआ।	(६) ये सम्वत् १६९९ मे हरिपुर वासी हुये।
(७) वंशीधर मिश्र, सम्वत् १६७२ मे उ०	(७) यह वात (मृत्यु) सम्वत् १६७२ की है।
(८) नरहरि कवि, सम्वत् १६०० के वाद उ०	(८) सम्वत् १६६६ मे ये स्वर्गी (य) हुये।
(९) हरिनाथ, सम्वत् १६४४ मे उ०	(९) अपने वाप (नरहर) के मरने के समय (१६६६) २२ वर्ष के थे। और १७०३ सम्वत् मे मरे। (इस ग्रन्थ के अनुसार हरिनाथ जी १६४४ मे उत्पन्न हुये। अतः सरोज के '१६४४ मे उ०' का अर्थ हुआ १६४४ मे उत्पन्न।)
(१०) मदनगोपाल शुक्ल, सम्वत् १८७६ मे उ०	(१०) इन्होने सम्वत् १८७६ मे वलराम पुर के महाराजा दिग्विजय सिंह जी के पिता अर्जुनसिंह के नाम से अर्जुन विलास नामक ग्रन्थ वनाया।
(११) सहज राम (२) सनाढ्य वंधुआ वाले, सम्वत् १९०५ मे उ०	(११) सम्वत् १९०५ मे इस असार ससार से निराश हो स्वर्गवास किया।
(१२) भगवतीदास, ब्राह्मण सम्वत् १६८८ मे उ०	(१२) इन्होने सम्वत् १६८८ मे नासिकेतोपाख्यान निर्माण किया। और ये सम्वत् १७१५ मे स्वर्गी (य) हुये।
(१३) रतन कवि (१) ब्राह्मण वनारसी, सम्वत् १९०५ मे उ०	(१३) इन्होने 'प्रेम रत्न' नामक ग्रन्थ सम्वत् १८०५ मे वनाया। (प्रमाद से शिवसिंह ने १८०५ को १९०५ लिख दिया है। इस कवि का विवरण इसी ग्रन्थ से लिया गया है जो स्वयम् अत्यन्त भ्रमपूर्ण है।)

भाषाकाव्य सग्रह इस वात को पूर्ण रूप से प्रमाणित कर देता है कि सरोज के सन् सम्वत् उपस्थिति-काल ही हैं।

च. उ० को उपस्थित प्रमाणित करने वाले कुछ अन्य अन्तः साक्ष्य

जीवन खड मे कवियो के जो इतिवृत्त दिये गये है और भूमिका मे जो सूचनाएँ हे उन पर यदि विचार किया जाय तो कतिपय तथ्य एवम् तिथियाँ ऐसी मिलती हैं, जो स्पष्ट सिद्ध करती हैं कि सरोज मे कवियो के नामो के साथ सलग्न सम्वत् जन्म सम्वत् नही है, उपस्थिति-सम्वत् है। प्रमाण के लिए आगे ऐसे कुछ विवरण प्रस्तुत किये जा रहे है :—

(१) अजीत सिंह राठौर, उदयपुर के राजा सम्वत् १७८७ में उ०। इन्होंने अपने वंश के सम्बन्ध मे 'राजरूप का ख्यात' नामक ग्रन्थ बनवाया। इसके तीसरे खंड में सूर्य वश जहाँ से प्रारम्भ हुआ वहाँ से यशवत सिंह के पुत्र अजीत सिंह के बालेपन अर्थात् १७८७ तक का वर्णन है। स्पष्ट है कि १७८७ अजीत सिंह की बाल्यावस्था का सम्वत् है, न कि जन्म का।

(२) कोविद कवि, श्री प० उमापति त्रिपाठी, अयोध्या निवासी, सम्वत् १९३० मे उ०। इनके विवरण मे आगे लिखा है, "सम्वत् १९३१ मे कैलाश को पधारे।" यदि यह उल्लेख न होता तो भी १९३० इनका जन्म काल नही हो सकता था, क्योकि चार ही वर्ष बाद सरोज का प्रणयन हुआ और उस समय यह षट् शास्त्र के वक्ता, शास्त्रार्थ मे दिग्विजयी और कवि के रूप में प्रसिद्ध थे।

(३) कमन्च कवि राजपूताने वाले, सम्वत् १७१० मे उ०। इनकी कविता हमको एक संग्रह पुस्तक मे मिली है जो सम्वत् १७१० की लिखी हुई है। स्पष्ट है १७१० कमंच का जन्म काल नही है। अधिक से अधिक यह उनका रचना काल हो सकता है। यह भी संभावना है कि कवि १७१० के बहुत पहले हो गया हो। वह १७१० के पहले हुआ इतना निश्चित है। कब हुआ, ठीक नही कहा जा सकता।

(४) खानखाना, नवाब अब्दुल रहीम, सम्वत् १५८० मे उ०। विवरण मे लिखा गया है— "यह ७२ वर्ष की अवस्था मे सन् १०३६ हिजरी मे सुरलोक को सिधारे।" १०३६ हिजरी बराबर १६८६ विक्रमी या १६२९ ई०। अत. इनका जन्मकाल हुआ सं० १६१४ विक्रमी या १५५७ ई०। अतः १५८० इनका जन्म काल नही हो सकता।

(५) ज्ञान चन्द्र यती, राजपूताने वाले सं० १८७० मे उ०। इन्ही की सहायता से टाड ने राजपूताने का इतिहास लिखा था। टाड राजस्थान की रचना सम्वत् १८८० मे हुई, सरोज की भूमिका में यह उल्लेख हुआ है। ऐसी स्थिति मे क्या १० वर्ष के बालक की सहायता से टाड का राजस्थान लिखा गया ?

(६) छेम करण, ब्राह्मण घनौलीवाले, सम्वत् १८७५ मे उ०। विवरण मे लिखा गया है— "प्रायः ९० वर्ष की अवस्था मे, स० १९१८ मे देहान्त हुआ।" अतः इनका जन्म १८२८ के आस-पास होना चाहिये था और १८७५ इनका रचना काल है।

(७) जुगल किशोर भट्ट (२) कैथलवासी, सं० १७९५ मे उ०। इन्होंने स० १८०३ मे अलंकार निधि नामक एक ग्रन्थ अलकार का अद्वितीय बनाया है यदि १७९५ जन्म स० है तो क्या कवि ने ८ वर्ष की अल्प आयु मे यह अलंकार ग्रन्थ बना डाला ?

(८) जानकी प्रसाद बनारसी, स० १८६० मे उ०। सरोज मे लिखा गया है कि उन्होने "सं० १८७१ मे केशव कृत रामचन्द्रिका ग्रन्थ की टीका बनाई है।" क्या ११ वर्ष के बालक ने रामचन्द्रिका ऐसे गूढ ग्रन्थ की टीका तैयार कर ली ?

(६) जरावत सिंह वघेले राजा तिरवा, स० १८५५ मे उ० । इनके सम्बन्ध मे लिखा गया है—"यह महाराज सस्कृत भापा, फारसी आदि मे वडे पडित थे ।[२] स० १८७१ मे स्वर्गवास हुआ ।" यदि १८५५ इनका जन्म स० है तो १६ वर्ष की ही अवस्था मे सस्कृत, हिन्दी और फारसी के पडित कैसे हो गये और कैसे नायिका भेद ग्रन्थ लिखा ?

(१०) गोस्वामी तुलसीदास, सम्वत् १६०१ मे उ० । इनके विवरण मे लिखा गया है—"स० १५८३ के लगभग उत्पन्न हुये थे ।" जव १५८३ जन्म स० दिया हुआ है तो १६०१ मे ये कैसे उत्पन्न हो सकने है ?

(११) तीर्थराज ब्राह्मण वैसवारे के, स० १८०० मे उ० । विवरण मे लिखा गया है कि इन्होने "स० १८०७ मे समरसार भापा किया"[१] । ऐसी स्थिति मे स० १८०० इनका जन्म काल नही हो सकता ।

(१२) तोपकवि, स० १७०५ मे उ० । इनके सम्वन्ध मे लिखा गया है—"कालिदास तथा तुलसीजी ने भी इनकी कविता अपने ग्रन्थो मे वहुत सी लिखी है ।" भूमिका के अनुसार तुलसी की कवि-माला का सकलन स० १७१२ मे हुआ । यदि १७०५ तोप जी का जन्म काल है तो १७१२ तक तो तोप जी ने अक्षराभ्यास भी न किया रहा होगा । अतः १७०५ उनका जन्म काल नही हो सकता ।

(१३) द्विज देव, स० १६३० मे उ० । विवरण मे लिखा गया है कि "स० १६३० मे देहान्त हुआ ।" जव १६३० मृत्यु काल है तो यही उनका जन्म काल कैसे हो सकता है ? आगे इसी विवरण मे यह भी उल्लेख है—"प्रथम स० १६०७ के करीव इनको भापा काव्य करने की वहुत रुचि थी ।"

(१४) पुण्ड कवि, स० ७७० मे उ० । इतिवृत्त मे इनके आश्रयदाता राजा मान को स० ७७० मे उपस्थित वताया गया है । अत. ७७० पुण्ड का जन्म स० नही हो सकता ।

(१५) वेनी कवि (२) वदीजन वेंदी, वाले सम्वत् १८४४ मे उ० । इनके सम्वन्ध मे लिखा गया है कि यह "वहुत वृद्ध होकर सम्वत् १८९२ के करीव मर गये ।" यदि १८४४ को जन्म काल माना जाता है तो वेनी की मृत्यु ४८ वर्ष की वय मे हुई, जिसे वहुत वृद्ध होना नही कहा जा सकता ।

(१६) व्यास स्वामी, हरीराम शुक्ल उडछेवाले सम्वत् १५६० मे उ० । इनके विवरण मे लिखा है "इन महाराज ने सम्वत् १६१२ मे ४५ वर्ष की अवस्था मे उडछे से वृन्दावन मे आकर भागवत धर्म को फैलाया ।" उक्त कथन के अनुसार व्यास जी का जन्म सम्वत् १५६७ है न कि १५६० ।

(१७) व्रजवासी दास, सम्वत् १८१० मे उ० । सरोज के अनुसार "सम्वत् १८२७ मे व्रजविलास नामक ग्रन्थ वनाया ।" तो क्या १७ वर्ष की अल्प वय मे व्रजविलास ऐसा विशाल ग्रन्थ वनाया था ?

(१८) वेनी दास कवि, वन्दी जन मेवाड देश के निवासी सम्व्रत् १८९२ मे उ० । यह कविराज सम्वत् १८७० के करीव मारवाड देश के प्रवन्ध-लेखक अर्थात् तारीखनवीसो मे थे ।" यदि १८९२ जन्म काल है तो क्या जन्म लेने से २२ वर्ष पहले ही यह प्रवन्ध लेखक हो गये थे ?

(१९) मीरावाई सम्वत् १४७५ मे उ० । " . मीरावाई का विवाह सम्वत् १४७० के करीव राना मोकल देव के पुत्र राना कुम्भ करणसी, चित्तौर नरेश के साथ हुआ ।" यदि १४७५ जन्म काल है तो क्या जन्म लेने के ५ वर्ष पहले ही मीरा का विवाह हो गया था, जव कि वह माँ के गर्भ मे भी नही आई थी ?

(२०) लाल कवि (२) बिहारी लाल त्रिपाठी, टिकमापुरवाले, सम्वत् १८८५ मे उ०। चिन्तामणि के विवरण मे इनके सम्बन्ध म लिखा गया है कि यह सम्वत् १९०१ तक विद्यमान थे। यदि १८८५ जन्म काल है तो क्या बिहारी लाल त्रिपाठी १६ वर्ष तक ही जीवित रहे और इसी अल्प आयु मे सुकवि भी हो गये ?

(२१) श्रीधर कवि (२) राजा सुब्बा सिंह चौहान, कोयलवाले, सम्वत् १८७४ मे उ०। विद्वन्मोद तरगिणी इनकी रचना है। सरोज की भूमिका के अनुसार यह ग्रन्थ १८७४ मे बना। यदि १८७४ जन्म काल भी है तो क्या जिस साल यह उत्पन्न हुये, उसी साल इन्होने ग्रन्थ रचना भी कर ली ?

(२२) बलदेव बघेल खडी, सम्वत् १८०९ मे उ०। भूमिका के अनुसार इन्होने सम्वत् १८०३ मे "सत्कवि गिराविलास" की रचना की। यदि १८०९ जन्म काल है, तो क्या जन्म से ६ वर्ष पहले ही ग्रन्थ रचना हो गई ?

(२३-५०) जो भी कवि १९१० या इसके बाद उ० कहे गये हैं, यदि उ० उत्पन्न का ही अर्थ देता है तो २० या इससे कम ही वर्ष की वय मे वे इतने समर्थ नही हो सकते कि उन्हे सरोज मे सम्मिलित किया जा सकता। ऐसे कवियो की सूची पर्याप्त लम्बी है जो नीचे दी जा रही है।

कवि	सम्वत् मे उ०
(१) असकन्द गिरि	१९१६
(२) अलीमन	१९३३
(३) अनीस	१९११
(४) अम्बर भाट	१९१०
(५) कुन्ज लाल	१९१२
(६) कान्ह कवि, कन्हई लाल	१९१५
(७) कामता प्रसाद	१९११
(८) कामता प्रसाद ब्राह्मण	१९११
(९) चैन सिंह खत्री	१९१०
(१०) जनकेश भाट	१९१२
(११) जवाहिर भाट, बुन्देलखडी	१९१४
(१२) दीनदयाल गिरि	१९१२
(१३) दीनानाथ, बुन्देल खडी	१९११
(१४) नरेन्द (२) महाराज नरेन्द्र सिंह, पटियाला	१९१४
(१५) पचम कवि नवीन (३)	१९११
(१६) पडित प्रवीण, ठाकुर प्रसाद मिश्र	१९२४
(१७) पचम कवि, डलमऊ वाले	१९२४
(१८) फूलचन्द, ब्राह्मण, बैसवारे वाले	१९२८
(१९) बलदेव, क्षत्रिय, द्विजदेव के गुरु	१९११
(२०) भूमि देव	१९११
(२१) भूसुर	१९११

(२२) माखन लखेरा (२) पन्ना वाले १९११
(२३) मानिकचन्द, कायस्थ १९३०
(२४) रघुनाथ उपाध्याय, जौनपुर १९२१
(२५) राधेलाल कायस्थ, बुन्देलखण्डी १९११
(२६) शिवदीन, भिनगा वाले १९१५
(२७) सुदर्शन सिंह, राजा चन्दापुर के राजकुमार १९३०
(२८) हरिजन, ललितपुर निवासी १९११

यदि इन सब कवियों का दिया हुआ सम्वत् जन्मकाल है, तो ये सब सरोज के प्रणयन काल मे विद्यमान रहे होगे। ऐसी स्थिति मे शिवसिंह ने सब को "वि०" लिखा होता। इससे भी स्पष्ट है कि ये सम्वत् उपस्थिति काल है।

(५१-५७) कालिदास हजारा का संग्रहकाल सरोज की भूमिका के अनुसार सम्वत् १७५५ है। हजारा मे आये निम्नांकित १७ कवियों को १७३५ या इसके बाद उ० कहा गया है। निश्चय ही यह इन कवियों का जन्मकाल नही हो सकता।

कवि	सम्वत उ०
(१) कुन्दन	१७५२
(२) कारबेग	१७५६
(३) गोविन्द	१७५७
(४) छैल	१७५५
(५) जसवत (२)	१७६२
(६) ब्रजदास	१७५५
(७) बिहारी (२)	१७३८
(८) भूषण	१७३८
(९) मोती राम	१७४०
(१०) मन सुख	१७४०
(११) मिश्र	१७४०
(१२) मुरलीधर	१७४०
(१३) मीर रुस्तम	१७३५
(१४) मुहम्मद	१७३५
(१५) मीरी माधव	१७३५
(१६) लोधे	१७७०
(१७) सामन्त	१७३८

(६८-६९) तुलसी कवि के संग्रह माला का रचनाकाल १७१२ है। इस ग्रन्थ मे आये दो कवियों, श्री हठ एवम् सिद्ध का काल क्रमश १७६० और १७८५ दिया गया है। निश्चय ही यह इनका जन्म काल नही हो सकता।

छ उ० को उपस्थित प्रमाणित करने वाले कुछ बाह्य साक्ष्य

यहाँ तक तो अन्त साक्ष्य की बात रही। अब बहि साक्ष्य के आधार पर भी सरोज के सम्वतो की कुछ जाँच कर ली जाय। सभा की खोज रिपोर्टो से प्राचीन काल के अनेक कवियों के

ग्रन्थो का रचनाकाल ज्ञात होता है। ऐसे कुछ कवियो के ग्रन्थो का सरोज मे दिया हुआ सम्वत् और खोज-विवरणो से प्राप्त सम्वत् तुलनात्मक अध्ययन के लिये प्रस्तुत किये जा रहे हैं, जिसमे स्पष्ट हो जायगा कि सरोज के 'उ०' का अर्थ उत्पन्न नही है, वल्कि उपस्थित है।

कवि	सरोज का सम्वत्	ग्रन्थ	रचनाकाल	खोज रिपोर्ट-सन्
(१) अजवेस	१८९२	वघेल वश वर्णन	१८९२	१९०१ ई०
(२) अहमद	१६७०	सामुद्रिक	१६७८	१९१७ ई०
		गुण सागर	१६४८	१९०६ ई०
(३) असकन्दगिरि	१९१६	रस मोदक	१९०५	१९०५ ई०
(४) अनाथ दास	१७१६	प्रवोध चन्द्रोदय नाटक या सर्वसार उपदेशविचारमाला	१७२६ / १७२६	१९२६ ई० / १९२० ई०
(५) अनवर खाँ	१७८०	अनवर चन्द्रिका	१७७७	१९०६ ई०
(६) कुमार मणि भट्ट	१८०३	रसिक रसाल	१७७६	१९२० ई०
(७) कुलपति मिश्र	१७१४	रस रहस्य	१७२७	१९२० ई०
(८) काशिराज	१८८९	चित्रचन्द्रिका	१८८९	१९०९ ई०
(९) गोकुल नाथ	१८३४	चेतचन्द्रिका	१८२८	१९२० ई०
(१०) गुलावसिंह	१८४९	मोक्ष पथ	१८३५	१९२० ई०
(११) दूलह	१८०३	कविकुल कठाभरण	१८०७	१९२० ई०
(१२) प्रियादास	१८१६	भक्ति रसवोधिनी	१७६९	१९२० ई०
(१३) वेनी प्रवीण	१८७६	नवरस तरग	१८७४	१९२० ई०
(१४) वशीधर	१९०१	साहित्य तरगिणी	१९०७	१९२० ई०
(१५) सुखदेव मिश्र	१७२८	वृत्त विचार	१७२८	१९२० ई०

ऊपर जो तालिका दी गई है वह बहुत वढाई जा सकती है, पर लक्ष्य तक पहुँचने के लिये इतना ही पर्याप्त है।

इन सव प्रमाणो से स्पष्ट है कि सरोज मे उत्पत्ति काल देने की प्रणाली नही ग्रहण की गई है। शिवसिंह ने उपस्थिति काल ही दिया है। सरोज मे ५३ कवियो को वि० कहा गया है। यदि जन्मकाल देने की प्रणाली ग्रहण की गई होती, तो इन समकालीन कवियो का जन्म काल अधिक आसानी से दिया जा सकता था और इनको वि० लिखने की कोई आवश्यकता न पडती।

ज उ० का रहस्य

अव एक वार इस उ० पर पुन. विचार कर लेना चाहिये। यदि शिवसिंह का उ० से तात्पर्य उत्पन्न नही था, उपस्थित था, जैसा कि ऊपर सिद्ध किया गया है, तो उन्होने परिचय देते समय अकवर के सम्वन्व मे "सम्वत् १५८४ मे उत्पन्न हुये" क्यो लिखा? न उन्होने ऐसा लिखा होता और न यह भ्रान्ति उत्पन्न हुई होती।

[illegible] रिपोर्ट मे सरोज की एक हस्तलिखित पोथी का विवरण सख्या ३६८ पर [illegible] [illegible], पोष्ट विसवाँ, जिला सीतापुर के तालुकेदार ठा० दिग्विजय सिह [illegible] के आदि और अत के अश नमूने के लिये उद्धृत किये गये हैं। अत के [illegible] १३ कवियो का विवरण दिया है। इन १३ कवियो मे ५ कवियो का सन्-सम्वत् [illegible] है, पर सन् सम्वत् के साथ "मे उ०" नही लगा है, यह आश्चर्यजनक है। उक्त [illegible] इन १३ कवियो के विवरण प्रमाण के लिये उद्धृत किये जा रहे है :—

(१) [illegible]राम प्राचीन, सम्वत् १६८०। इनका नखशिख अति सुन्दर है।

(२) हि[illegible]चलराव कवि ब्राह्मण भटौली जिला फैजाबाद सम्वत् १९०४ सीधी-सादी कविता है।

(३) हीरालाल कवि, शृगार मे बहुत उत्तम कवित्त है।

(४) हुलास कवि, ऐजन।

(५) हरचरण दास कवि, इन्होने एक ग्रन्थ भाषा-साहित्य मे महासुन्दर अद्भुत अपूर्व "वृहत कवि वल्लभ" नामक बनाया है। इस ग्रन्थ मे अपने ग्राम, सन्-सम्वत् आदि का पता नही दिया है।

(६) हरिचन्द बरसाने वाले, ग्रन्थ बहुत सुन्दर बनाया है लेकिन सन्-सम्वत नही है।

(७) हजारी लाल त्रिवेदी विद्यमान हैं। नीति-शान्ति सम्बन्धी इनका काव्य सुन्दर है।

(८) हरिनाथ ब्राह्मण, काशी निवासी १८२६ सम्वत्। इन्होने अलकार-दर्पण नामक ग्रन्थ बनाया।

(९) हिम्मत बहादुर नवाब। बलदेव कवि ने सत्गिराविलास मे इनके कवित्त लिखे हैं। सम्वत् १७६५ वि०।

(१०) हिम्मत राम कवि, सूदन कवि ने इनकी प्रसशा की है।

(११) हरिजन कवि, ललित पुर निवासी, सम्वत् १९११। राजा ईश्वरी नारायन सिंह, काशी राज के यहाँ रसिक प्रिया की टीका की।

(१२) [illegible] कवि, बन्दीजन चरखारी वाले। राजा छत्रसाल चरखारी के यहाँ थे।

(१३) [illegible] राय कवि सालिहोत्र भाषा मे बनाया।

[illegible] श्री शिवसिंह सेंगर कृत शिवसिंह सरोज समाप्तम् सम्वत् १९३१ लिपतम् गौरी शकर।"

[illegible] उद्धरण से स्पष्ट है कि मूलग्रन्थ मे कही भी कवि नाम के साथ लगे हुये सम्वतो मे "मे उ०" नही लगा हुआ है। यदि यह "मे उ०" न लगा रहता तो सरोज को आधार मानकर [illegible] ऐसी भ्रान्ति न की होती। अस्तु, यह "मे उ०" आया कहाँ से? यह प्रश्न [illegible] है। इसके लिये दो सम्भावनायें हो सकती है। एक सम्भावना तो यह है कि प्रकाशन के समय छापने वालो ने यह कारस्तानी की हो, दूसरी सम्भावना यह है कि स्वय शिवसिंह ने प्रकाशन के लिये देने के पूर्व अपनी प्रति मे सम्वतो के साथ "मे उ०" लगा दिया हो और छापने वालो ने इसका अर्थ "मे उत्पन्न हुये" समझकर अपनी समझ से पाठको की सुविधा के लिये पहले कवि अकबर के सम्वत् के साथ इस "मे उ०" को पूर्ण रूप मे दिया और शेष कवियो के सक्षिप्त रूप "मे उ०" ही बना रहने दिया।

सरोज का प्रथम सस्करण सरोजकार के जीवनकाल मे निकल गया था। यह लीथो मे छपा था। इस सस्करण की एक प्रति मुझे सुलभ हो गई है। इसमे कवियो का विवरण ५ विभिन्न स्तभो

मे दिया गया है और "मे उ०" नामक वस्तु के यहाँ दर्शन नही होते। उदाहरण के लिए जीवन-चरित्र वाले पहले पृष्ठ का कुछ अश यहाँ उद्धृत किया जा रहा है—

कवियों का जीवन चरित्र

सख्या	कवि का नाम	सवत्	जीवन चरित्र	पत्र जिसमे उनकी कविताई है
१	अकवर वादशाह दिल्ली	१५८४	इनके हालात मे अकवर नामा...	१

पहले सस्करण की पूर्ण प्रति सुलभ है। इसमे भूमिका के १०, सग्रह ग्रन्थ। संग्रह खड मे ३३७ और जीवन चरित्र खड मे १३८ पृष्ठ है। प्रत्येक खड की पृष्ठ सख्या अलग-अलग दी गई है। एक और प्रति मिली है, जो खडित है। इसमे प्रारम्भ के ७८ पृष्ठ नही है। सग्रह खड पृष्ठ ३४४ पर समाप्त हुआ है? जीवन खड की पृष्ठ सख्या अलग से न देकर इसी मे आगे दी गई है। ग्रन्थ अत मे भी खडित है। इस खडित प्रति मे कुल ४८२ पृष्ठ है। अत के केवल तीन-चार पन्ने खडित है। इसमे भी कवियो का जीवन चरित्र उक्त ५ विभिन्न स्तम्भो मे विभाजित करके दिया गया है। यह सरोज का द्वितीय सस्करण होना चाहिये, क्योकि तृतीय सस्करण मे यह स्तभ-विभाजन समाप्त हो गया है और उसमे "मे उ०" आ गया है। ग्रियर्सन ने द्वितीय सस्करण का उपयोग किया था और उनके अनुसार द्वितीय सस्करण १८८३ ही मे हुआ था परन्तु १८८३ ई० तो तृतीय सस्करण का प्रकाशन काल है, अत. सरोज का द्वितीय सस्करण १८७२ और १८७८ के वीच किसी समय हुआ और ग्रियर्सन ने तृतीय सस्करण का उपयोग किया। द्वितीय सस्करण भी लिथो मे है। प्रथम दोनो सस्करणो के उदाहरण खड मे कवियो की कोई क्रमसख्या नही दी गई है, यह क्रम सख्या तृतीय सस्करण मे भी नही है। सप्तम सस्करण मे यह है। ऐसा प्रतीत होता है कि कागज की वचत करने के लिए जीवन चरित के स्तभ शैली तृतीय सस्करण मे समाप्त कर दी गई और इन सवतो को उत्पत्ति काल मान लिया गया। पहले कवि अकबर के लिए लिखा गया—"स १५८४ मे उत्पन्न हुए", शेष कवियो के सवतो के साथ 'मे उ०' जोड दिया गया। तो इस 'उ०' का भी उत्तरदायित्व नवल किशोर प्रेस पर है, न कि सरोजकार पर।

झ सरोज के सम्वत् और ई० सन्

सरोज के अनुसार अकबर सबत् १५८४ मे उत्पन्न हुआ। उत्पन्न हुआ को यदि हम उपस्थित काल मान ले तो वह सम्वत् १५८४ मे उपस्थित था। इतिहास-ग्रन्थो से स्पष्ट है कि अकवर का जन्म १५४२ ई० मे हुआ और उसने सन् १५५६ ई० से १६०५ ई० तक राज्य किया। विक्रम सम्वत् के अनुसार अकवर १५९९ विक्रमी मे उत्पन्न और १६६२ विक्रमी मे दिवगत हुआ। विक्रम सम्वत् की दृष्टि से देखे तो अकवर १५८४ मे पैदा भी नही हुआ था, फिर यह उसका रचना काल या उपस्थिति काल कैसे हो सकता है? हा, यदि १५८४ को हम ई० सन् मान ले, तो उस समय उसकी वय ४२ वर्ष होती है और उक्त सन् उसका रचनाकाल सिद्ध होता है। अत स्पष्ट है कि अकवर के सम्बन्ध मे विक्रमी सम्वत् नही प्रयुक्त हुआ है, ई० सन् व्यवहृत हुआ है।

प्रश्न उठता है, एक ही ग्रन्थ मे कही हम ई० सन् मान ले, कही विक्रम-सवत, क्या यह अपनी सुविधा के अनुसार सरोज के सवतो का मनमाना अर्थ करना नही हुआ, विशेपकर जव

सर्वत्र सम्वत् का सक्षिप्त 'स०'' ही प्रयुक्त हुआ है। इस प्रश्न का उत्तर देने के लिये हमे एक बार पुन सरोज की भूमिका के इस वाक्य पर ध्यान देना होगा।

"जिन कवियो के ग्रन्थ मैने पाये उनके **सन् सम्वत्** बहुत ठीक-ठीक लिखे है, और जिनके ग्रन्थ नही मिले उनके सन् सम्वत् हमने अटकल से लिख दिये है।... मैंने **सन् सम्वत्** और उस कवि के समय निर्माण करने को ऐसा किया है।"

शिवसिंह ने सन्-सवत् दोनो शब्दो का प्रयोग किया है। इससे स्पष्ट है जहाँ उन्हे ई०-सन् मिला उन्होंने ई० सन् का प्रयोग किया और जहाँ विक्रम-सवत मिला वहाँ विक्रम-सवत् का, परन्तु जीवन खड मे प्रमाद वश उन्होने प्रत्येक स्थल पर "स०" का ही प्रयोग किया है, जो सवत् का सूचक है। जहाँ जहाँ उन्होने ई० सन् का व्यवहार किया है, वहाँ-वहाँ उन्हे "स०" के स्थान पर सन् देना चाहिये था। ऐसा न करके उन्होने घपला ही किया है। सभी इतिहासकारो ने सरोज के सन्-सवत् को विक्रम-सवत् माना है, यह एक बहुत बडी भूल है जिसका निराकरण होना चाहिये। या तो ई०-सनो को विक्रम-सवत् मानकर उन्हे अशुद्ध सिद्ध करने की भूल की गई है अथवा उन्हे ज्यो का त्यो विक्रम-सवत् स्वीकार करके और भी बडी भूल की गई है।

किन-किन कवियो के सम्बन्ध मे शिवसिंह ने ई० सन् का प्रयोग किया है ? उनके सम्बन्ध मे उन्होने ई० सन् का ही प्रयोग क्यो किया ? ऐसा करने से उन्हे क्या सुख या सुविधा मिल गई ? ये सभी प्रश्न विचारणीय ह।

विश्लेषण करने से पता चलता है कि सन्-सवत् का निर्णय करने के लिये शिवसिंह ने निम्नांकित साधन स्वीकार किये थे :—

(१) लेखक की मूल पुस्तक प्राप्त करना और उसमे दिये हुये रचनाकाल को लेखक का रचनाकाल मानना। पीछे इसके कई उदाहरण दिये जा चुके ह।

(२) सग्रह-ग्रन्थो का सहारा लेना। जिस सन् या सवत् मे सग्रह तैयार हुआ उस सग्रह के सारे कवि उस सन्-सवत् के समय या तो जीवित थे या उस युग से पूर्ववर्ती थे। इसी दृष्टिकोण से शिवसिंह बराबर उल्लेख करते गये हैं कि इस कवि की कविता कालिदास के हजारे मे है, तुलसी के सग्रह मे है, सूदन ने इसकी प्रशसा की है या दास ने इनकी व्रजभाषा को प्रमाण माना है। निश्चित रचनाकाल वाले ये सग्रह-ग्रन्थ कवियो के जीवन काल की एक निश्चित अधोरेखा स्थापित करने मे निश्चित ही सहायक होते है। ऊर्ध्व रेखा की स्थापना अनुमान के सहारे ही हुई है और ऐसी स्थिति मे भूल के लिये निरन्तर सम्भावना बनी हुई है।

(३) कवियो की ऐसी उक्तियाँ उद्धृत करना जिनमे उन्होने अपने आश्रयदाताओ की या तो प्रशसा की है या उनका उनमे किसी प्रकार उल्लेख हो गया है। यदि ये व्यक्ति प्रसिद्ध ऐतिहासिक पुरुष है, तो इतिहास ग्रन्थो मे इनकी तिथियाँ निर्धारित कर ली गई हैं। इतिहास ग्रन्थो मे ई० सन् का ही व्यवहार हुआ है। अत शिवसिंह ने ऐसे कवियो के सम्बन्ध मे, जिनका सम्बन्ध राज दरबारो विशेषकर मुगल दरबार से था, इतिहास ग्रन्थो से उठाकर ई० सन् दे दिया है और उस ई० सन् को विक्रम सवत् मे बदलने का कष्ट नही उठाया है। यदि उठाया भी है, तो बहुत कम।

यदि इन तीसरे सिद्धान्त के अनुसार अकबरी दरबार के कवियो के सन् सम्वतो की जाँच कर ली जाय तो बात अत्यन्त स्पष्ट हो जाती है और उक्त सिद्धान्त की स्थापना भी दृढतापूर्वक हो जाती है।

(१) नरहरि	१६००
(२) गग	१५९५
(३) रहीम	१५८०
(४) व्रह्म	१५८५
(५) तानसेन	१५८८
(६) राममनोहर दास कछवाहा	१५९२
(७) शेख अवुलफैज फैजी	१५८०
(८) शेख अवुलफजल फहीम	१५८०
(९) अमृत	१६०२
(१०) जैत	१६०१
(११) जगदीश	१५८८
(१२) जोध	१५९०

ऊपर के सारे कवियो का कविता काल १५८० और १६०२ के वीच दिया गया है। यह अकवर के शासन-काल (१५५६-१६०५ ई०) का उत्तरार्ध है। इससे स्पष्ट है कि ये सभी सम्वत् ई० सन् हैं।

च निष्कर्ष

सरोज के सम्वतो पर इतना विचार कर लेने के पश्चात् हम निम्नाक्ति निर्णयो पर पहुँचते है :—

(१) सरोज के अधिकाश सम्वत विक्रम सवत् हैं, कुछ ई० सन् भी है।

(२) सरोज मे दिये हुये अधिकाँश सवत् कवियो की उपस्थिति के सूचक है। इनमे से कुछ जन्मकाल-सूचक भी हो सकते है।

(३) सरोज के कुछ सवत उपस्थित काल मान लेने पर भी शुद्ध सिद्ध नही होते। इनमे से कुछ अशुद्ध भी हे।

(४) सरोजकार ने अपनी समझ से इन्हे उपस्थिति काल ही के रूप मे प्रस्तुत किया है। 'उ०' प्रथम एव द्वितीय सस्करणो मे नही था। यह तृतीय सस्करण से आ गया।

अध्याय ६

सरोज के अध्ययन की आवश्यकता, सीमा विस्तार और प्रमुख सहायक सूत्र

सरोज के अध्ययन की आवश्यकता, सीमा-विस्तार और प्रमुख सहायक सूत्र

क अध्ययन की आवश्यकता

जिस प्रकार सरोज मे सन्-सम्वत् की गडबडियाँ है—कुछ तो उनमे स्वय हैं और कुछ को लोगो ने जन्म काल एवम् विक्रम सम्वत् समझकर गडबड कर रखा है—इसी प्रकार इस ग्रन्थ मे तथ्यो की भी अनेक भूले हैं। उदाहरण के लिये एक अजबेस प्राचीन की कल्पना की गई है जिन्हे जोधपुर के राजा बीरभान सिंह के यहाँ होना बताया गया है। वास्तविकता यह है कि इस नाम का कोई भी राजा जोधपुर की गद्दी पर कभी भी नही बैठा। हाँ, सोलहवी शताब्दी मे इस नाम का राजा रीवाँ मे अवश्य हुआ, पर इस राजा के दरबार मे अजबेस नाम का कोई कवि नही हुआ है। वस्तुत' अजबेस नाम का एक ही कवि रीवाँ नरेश विश्वनाथ सिंह जू देव के दरबार मे हुआ है। उसी ने उनके पूर्वज बीरभान सिंह देव की भी प्रशस्ति मे कुछ छद लिख दिये हैं जिसके आधार पर शिवसिंह ने एक अजबेस प्राचीन की भी कल्पना कर ली है। इसी प्रकार सरोज मे चार-चार अक्षर अनन्य हो गये है, जिनमे से एक को पृथ्वीचन्द दिल्ली देशाधीश के यहाँ सम्वत् १२२५ मे होना बताया गया है। यह पृथ्वीचन्द वस्तुत' दतिया के राजा के लडके थे और सेनुहडा के जागीरदार थे। यह रसनिधि नाम से बहुत सुन्दर कविता भी लिखते थे। अक्षर अनन्य इन्ही के दरबार मे थे। इनका समय सम्वत् १७१०-१७६० है। यह जानकारी न होने से एक अक्षर अनन्य की कल्पना उनके वास्तविक समय से ५०० वर्ष पूर्व कर ली गई है। इस प्रकार की अनेक अशुद्धियाँ सरोज मे है। सब का उल्लेख यहाँ नही किया जा सकता।

तथ्यो एवम् तिथियो मे जो गडबडियाँ हैं, या तो स्वय मौलिक रूप से अथवा भ्रान्त व्याख्या के कारण, वे हिन्दी साहित्य के इतिहास को विकृत बना रही है। सम्वत् १७३८ को भूषण का जन्म-काल मानकर एक बावेला-सा मचा दिया गया है और भूषण को शिवा जी की मृत्यु के बाद उत्पन्न हुआ कह कर उनके 'शिवा जी के दरबार मे कभी भी न जाने पर बल दिया जा रहा है। दो-दो आलमो की कल्पना कर ली गई है। एक शृगारी कविता करनेवाले शेख के प्रेमी पति प्रसिद्ध स्वच्छन्दतावादी कवि और दूसरे माधवानलकामकन्दला नामक प्रसिद्ध प्रेमाख्यान काव्य के रचयिता। इन सब एवम् ऐसी ही अन्य सभी भ्रान्तियो का निराकरण करने के लिये आवश्यक है कि सरोज का ठीक-ठिकाने से अध्ययन किया जाय। यह अध्ययन तभी पूर्ण होगा, जब एक-एक कवि के सम्बन्ध मे जितने तथ्य एवम् तिथियाँ दी गई है उनकी भलीभाँति जाँच हो जाय।

ख सरोज के अध्ययन का सीमा-विस्तार

सरोज का अध्ययन तीन दृष्टियो से किया जा सकता है—काव्य सग्रह की दृष्टि से, आलोचना ग्रन्थ की दृष्टि से और हिन्दी साहित्य के इतिहास के प्रमुख सूत्र की दृष्टि से।

१ सरोज काव्य सग्रह

पृष्ठ सख्या की दृष्टि से सरोज एक काव्य सग्रह ही है जिसके अन्त मे एक हजार तीन कवियो का सक्षिप्त इतिवृत्त दिया हुआ है। इस सग्रह मे अनेक ऐसे कवियो की रचनाये हैं जिनकी कविता के उदाहरण अन्य किसी सूत्र से उपलब्ध नही होते जैसे, जोइसी। सभा की खोज रिपोर्टों मे यद्यपि न जाने कितने अज्ञात कवियो की रचनाये उद्धृत है और उनके यथासभव जीवन-वृत्त दिये गये है, फिर भी सरोज के प्राय. आधे कवि ऐसे है, जिनकी चर्चा उक्त विवरणो मे नही हो पाई है, क्योकि इनके ग्रन्थो की हस्तलिखित प्रतियाँ अभी तक उपलब्ध नही हो सकी है। इनमे से बहुतेरो ने ग्रन्थ न भी लिखे होगे, केवल फुटकर रचनाये की होगी, फिर सैकडो कवि ऐसे रह जाते हैं जिनका नाम और जिनकी रचनाओ के उदाहरण हमे एकमात्र सरोज मे मिलते है।

इस सग्रह मे दो प्रकार की रचनाये मिलेंगी, एक तो वे जो अत्यन्त सरस है और दूसरी वे जिनका काव्य की दृष्टि से कोई महत्त्व नही। दूसरी कोटि की रचनाये काव्य की दृष्टि से नही सकलित की गई हैं। वे इस सग्रह मे इस दृष्टि से सगृहीत हुई हैं, क्योकि इनसे कवियो के सम्बन्ध मे प्रामाणिक सूचनायें प्राप्त होती है। किसी मे कवि और उसकी कृति का नाम है, किसी मे ग्रन्थ का विषय बताया गया है, किसी मे कवि का निवास-स्थान दिया गया है, किसी मे ग्रन्थ का रचनाकाल दिया गया है और किसी मे कवि के आश्रयदाता का उल्लेख हुआ है, जिसकी सहायता से कवि के काल-निरूपण मे सुविधा होती है। इस प्रकार ये नीरस रचनाये उस उद्देश्य की पूर्ति करती है, जिसके लिये सरोज की सृष्टि हुई।

उस युग मे अथवा उसके पूर्व भी जितने काव्य-सग्रह हिन्दी मे प्रस्तुत किये गये, उनमे से किसी का भी उद्देश्य कवियो के समय की छानबीन करना अथवा अन्य विवरण जानना नही था। तुलसी कवि द्वारा सगृहीत कवि माला एवम् कालिदास हजारा न तो उपलब्ध है और न इनके नाम से ही इनके विशिष्ट उद्देश्य का निश्चित पता चलता है। दिग्विजय भूषण अलकार का ग्रन्थ है, सुन्दरी-तिलक मे विभिन्न प्रकार की सुन्दरियो (नायिकाओ) पर लिखित सर्वश्रेष्ठ सवैयो का सकलन हुआ है। राग कल्पद्रुम का सकलन सगीत की दृष्टि से हुआ है। ठाकुरप्रसाद कृत रामचन्द्रोदय स्पष्ट ही रस-ग्रन्थ है। मातादीन मिश्र द्वारा सकलित कवित्त-रत्नाकर एवम् महेशदत्त शुक्ल द्वारा सगृहीत भाषा-काव्य-सग्रह तत्कालीन शिक्षा निर्देशक की आज्ञा से प्रस्तुत किये गये थे। इनका दृष्टिकोण बहुत कुछ शैक्षणिक है, अत. ये लघुकाय है और इनमे सरस शृगारी छदो के लिये स्थान नही है तथा वर्णनात्मक काव्यो के अश इनमे विशेष रूप से सकलित हुये है। अत. स्पष्ट है कि सरोज के सकलन का उद्देश्य सभी पूर्ववर्ती एवम् समकालीन सग्रहो से सर्वथा भिन्न है और इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये इसमे बहुत से नीरस छद भी सादर स्वीकृत हैं।

नीरस छदो को छोड़ देने के पश्चात् काव्य की सज्ञा से अभिहित किये जाने योग्य छदो पर विचार किया जाय तो भी यह सग्रह ऊपर उल्लिखित सभी सग्रहो मे अपनी विशिष्टता प्रतिष्ठित कर लेगा। इसमे प्रायः सभी विषयो की, सभी रसो की, सभी प्रकार के छदो मे मुक्तक एवम् प्रबन्ध रचनायें सकलित हुई है, हिन्दी या ब्रजभाषा काव्य मे जो भी वैविध्य है, यहाँ सब एक साथ देखा जा सकता है। निश्चय ही अधिकतर रचनायें शृगारी हैं। नखशिख, सयोग, वियोग, नायिका भेद, नायक भेद, दर्शन, सखी, दूती, हाव, अनुभाव, ऋतु, आदि सभी शृगारी विषयो के छद यहाँ सुलभ हैं। कुछ

ऐसी शृ गारी रचनाएँ है जिन्हे सुरुचि पूर्ण नही कहा जा सकता, पर सकलयिता को प्रसग प्राप्त कवियो की सम्भवतः अन्य सुरुचि पूर्ण रचनाये नही मिली और उसने विवश हो इन्हे स्थान दे दिया। भक्ति और शान्त रस के अत्यन्त सुन्दर छद इस सग्रह मे हैं। कृष्ण, राधा, सीता, राम, दुर्गा, शिव, हनुमान, गगा, यमुना, आदि की स्तुतिया एवम् विरक्ति तथा ज्ञान की रचनाओ का यहाँ प्राचुर्य है। वीर रस की भी पर्याप्त रचनाये हैं। अन्य रसो की रचनाये वहुत कम हैं। छदो की दृष्टि से अधिकतर रचनाये कवित्त-सवैयो मे है। इस सग्रह मे पाये जाने वाले अन्य प्रमुख छद, कुण्डलिया, छप्पय, वरवै, दोहा, चौपाई आदि है। वर्णवृत्त भी खोजने पर मिल जायँगे। विषय की दृष्टि से विचार किया जाय तो पर्याप्त विविधता मिलेगी। धार्मिक, ऐतिहासिक पौराणिक, आलोचनात्मक, नैतिक, दार्शनिक, सभी विषयो के प्रचुर छद इस सग्रह मे उपलब्ध हैं।

२ सरोज हिन्दी का प्रथम आलोचन-ग्रन्थ

सरोज के जीवन-खड मे कवियो का इतिवृत्त ही नही दिया गया है, कभी-कभी उनकी कविता पर सरोजकार ने अपना अभिमत भी दिया है। कवियो की कविताओ पर जो टीका-टिप्पणी की गई है, वह निश्चय ही आलोचना का अग है। अत. सरोज का अध्ययन आलोचना ग्रन्थ के रूप मे भी किया जा सकता है।

शिवसिंह ने कवियो के सम्वन्ध मे वहुत कम लिखा है, ऐसी दशा मे उनसे विस्तृत आलोचना की अपेक्षा नही की जा सकती। कभी-कभी तो उन्होने अपना अभिमत केवल एक वाक्य मे दिया है। सभी कवियो के सम्वन्ध मे उन्होने अपना अभिमत दिया भी नही है। ये अभिमत प्राय. प्रशसात्मक है, जैसे—"इनकी कविता वडी उत्तम है, इनके दोहा सोरठा वहुत ही चुटीले-रसीले हैं"। कुछ ऐसे कवियो की शिवसिंह ने अत्यन्त प्रशसा की है जिनके सम्वन्ध मे प्रसिद्ध इतिहास ग्रन्थो मे कुछ भी नही लिखा गया है, यहाँ तक कि नाम भी नही है। सम्भवत. ऐसा इसीलिये हुआ है कि इनकी रचनाये उपलब्ध नही हो सकी है। वीर कवि दाऊ, दादा वाजपेयी, इच्छा राम अवस्थी, ईश कवि, कमलेश, काशीराज कवि, काशीनाथ, केहरो, गगाधर, मडन, आदि कुछ ऐसे ही कवि हैं। आलम, घनानन्द, केशव, चन्दवरदाई, चिन्तामणि, ठाकुर, गोस्वामी तुलसीदास, तोष, भिखारी दास, देव, नरोत्तमदास, नन्ददास, पजनेश, विहारी, भूषण, मतिराम, रघुनाथ, रसखानि, लल्लू जी लाल, सुखदेव मिश्र, श्रीपति एवम् सेनापति आदि प्रमुख कवियो के सम्वन्ध मे सरोजकार के आलोचनात्मक अभिमत उल्लेखनीय है।

सरोज मे कवीर, जायसी, सूर, मीरा, पद्माकर, द्विज देव और भारतेन्दु आदि महाकवियो के भी विवरण हैं, पर इनके सम्वन्ध मे कोई आलोचनात्मक उल्लेख नही है।

सरोज मे कुछ ऐसे भी कवि ह, जिनकी प्रशसा शिवसिंह ने नही की है। उन्हे स्पष्ट शब्दो मे साधारण कवि कहा है। आनन्द सिंह, इन्दु, ऊधो आदि को सामान्य कवि कहा है। अयोध्या प्रसाद शुक्ल के सम्वन्ध मे लिखा है—"यह कुछ विशेष उत्तम कवि तो नही थे, हाँ, कविता करते थे।" गोकुल विहारी के लिये लिखा है—"इनकी कविता मध्यम है,"। सीताराम दास वनिया के लिये लिखा है, "जोड गाँठ लेने है।"

सरोज के आलोचनात्मक अशो को प्रभाववादी समीक्षा के अन्तर्गत रखा जा सकता है जहाँ आलोचक अपना निर्णय भी देता चलता है।

जव भी आलोचना के उद्भव और विकास पर चर्चा हुई है, लेख लिखे गये है अथवा ग्रन्थो

की रचना हुई है, शिवसिंह को आलोचक के रूप मे किसी ने भी स्मरण नही किया। शिवसिंह के पहले कवियो के सम्बन्ध म किसी भी ज्ञात आलोचक ने इस प्रकार गद्य मे अपना लिखित अभिमत नही दिया था। अत हिन्दी के प्रारम्भिक आलोचको मे शिवसिंह का नाम आदर से लिया जाना चाहिये और उन्हे आधुनिक अर्थ मे हिन्दी का प्रथम ज्ञात आलोचक कहना चाहिये। अधिकाश आलोचको ने सरोज का नाम ही नाम सुना है, इसी से यह प्रमाद हुआ है। इस ग्रन्थ के सम्बन्ध मे एक शोध-ग्रन्थ के निम्नाकित वाक्य इसके प्रमाण हैं —

'शिवसिंह सरोज मे कवियो को काल-क्रम से रखने का प्रयास माना जाता है, पर इसके पूर्व भी हिन्दी साहित्य का इतिहास प्रस्तुत करने का प्रयत्न हुआ है। स्वय शिवसिंह ने ऐसी कुछ सामग्री का उल्लेख किया है[1]।"

सरोज मे कवियो को काल-क्रम से नही रखा गया है, वर्णानुक्रम से रखा गया है। लेखक ने ग्रन्थ स्वय नही लिखा है, इसलिये वह प्रमाद से ऐसा लिख गया है। शिवसिंह से पूर्व अवश्य फ्रान्सीसी भाषा मे हिन्दुस्तानी (उर्दू) का इतिहास लिखा गया था, जिसमे हिन्दुई का भी समावेश किंचित् मात्रा मे हो गया है। यह ग्रन्थ भी इतिहास नहीं है, क्योकि इसमे भी कालक्रम का अनुसरण नही किया गया है। इस ग्रन्थ से सरोजकार को अभिज्ञता नही थी, अत उसने इसका उल्लेख तो किया नही है। हो सकता है विद्वान् लेखक का अज्ञात सकेत महेश दत्त के काव्य सग्रह की ओर हो, पर यह भी हिन्दी साहित्य का इतिहास प्रस्तुत करने का प्रयत्न नही है। एक छोटा-सा काव्य सग्रह मात्र है, जिसके अन्त मे सभी ५१ सकलित कवियो का प्राय भ्रम पूर्ण सक्षिप्त विवरण भी दिया गया है।

शिवसिंह पर गद्य लेखक की दृष्टि से भी विचार किया जा सकता है। इनका गद्य यद्यपि भारतेन्दुकालीन गद्य है, पर भारतेन्दु के गद्य के सामने अत्यन्त लचर है। इसमे उर्दू, फारसी के शब्दो का प्रचुर प्रयोग हुआ है। शिवसिंह पुलिस के आदमी थे, अत वे उसी युग मे शुद्धतावादी हो भी नही सकते थे। साथ ही सरोज का सप्तम सस्करण (१९२६ ई०) रूपनारायण पाडेय द्वारा सशोधित है और मूल भाषा मे भी कुछ परिवर्तन कर दिया गया है, जो तृतीय सस्करण (१८९३ ई०) से मिलान करने पर स्पष्ट हो जाता है। तृतीय सस्करण मे प्राय कुतुबखाना शब्द का प्रयोग हुआ है। सप्तम सस्करण मे यह पुस्तकालय के रूप मे बदल गया है। तृतीय सस्करण मे 'करना' क्रिया का भूतकाल रूप 'करी' है, जिसे बदल कर 'की' कर दिया गया है। सरोजकार के गद्य का श्रेष्ठतम उदाहरण टोडरमल का विवरण है। सरोज के गद्य मे व्याकरण की भूलें भी हैं। काव्य शब्द को सर्वत्र स्त्रीलिंग माना गया है। अरबी-फारसी शब्दो का प्रयोग तो हुआ ही है, वह कभी-कभी फारसी व्याकरण से भी अनुशासित और उर्दू वाक्य विन्यास पद्धति पर सगठित भी है। शब्दो का वाक्य मे ठीक स्थान पर प्रयोग न करना तो शिवसिंह के लिये कोई बहुत बडा दोष नही है। सप्तम सस्करण मे विराम चिन्हो का जो प्रयोग मिलता है, वह अधिकाश मे सशोधक की कृपा है।

३ सरोज हिन्दी साहित्य के इतिहास का प्रमुखतम सूत्र

सरोज के जीवन-खड मे १००३ कवियो के सन्-सम्वत् और जीवन विवरण है। वे कवि उपस्थित हैं, उनके कौन-कौन से ग्रन्थ हैं, उनकी रचनायें यदि फुटकर ही हैं तो किन प्राचीन सग्रहो मे मिलती हैं, वे किसके आश्रय मे थे आदि बातें इन विवरणो मे दी गई हैं। इन विवरणो एवम् सन् सम्वतो का उपयोग सभी परवर्ती इतिहासकारो विशेषकर ग्रियर्सन एवम् मिश्रबन्धुओ ने किया है।

---

१ हिन्दी आलोचना उद्भव और विकास, पृष्ठ २३९

ग्रियर्सन ने इन सम्वतो को जन्म काल समझने की भूल की, जिसको मानने की बाद मे परम्परा-सी चल गई। प्रायः प्रत्येक पुराने कवि पर लिखते समय सरोज का उल्लेख सर्वप्रथम किया जाता है। सरोज का सर्वाधिक महत्व हिन्दी साहित्य के इतिहास-ग्रन्थ प्रथम एवम् प्रमुखतम सूत्र के रूप मे ही है। इसका महत्व काव्य सग्रह और आलोचना ग्रन्थ के रूप मे उतना नहीं है। नये पुराने काव्य सग्रह अनेक है और आलोचना इसमे अपने अकुर रूप मे ही है, परन्तु सरोज को छोडकर हिन्दी साहित्य के इतिहास के कोई और दूसरे इससे पुराने और इतने विशाल सूत्र उपलब्ध नही।

ग. सर्वेक्षण का सीमा विस्तार

प्रस्तुत ग्रन्थ मे सरोज का अध्ययन हिन्दी साहित्य के इतिहास के प्रमुखतम सूत्र के रूप मे ही किया गया है। सरोज मे कवियो के सम्बन्ध मे जितने तथ्य एवम् तिथियाँ दी गई है उन सब की जाँच बिना किसी पूर्वाग्रह के निरपक्ष रूप से की गई है। ग्रन्थ को पूर्ण बनाने की दृष्टि से कवियो के के सम्बन्ध मे जो भी नई सूचनाये मिली है, उनका भी समावेश कर दिया गया है। यद्यपि यह विस्तार ग्रन्थ के शीर्षक के अनुसार अध्ययन की सीमा के भीतर नही आता और ऐसा करने से स्वय मेरा कार्य भी बढ जाता है।

घ. सर्वेक्षण के प्रमुख सहायक सूत्र

क प्राचीन काव्य-संग्रह

सरोज के प्रणयन मे शिवसिंह ने अनेक सग्रह ग्रन्थो से सहायता ली थी। इनमे से १० प्रमुख सग्रहो का नाम भी उन्होने भूमिका मे दिया है, जिनकी विस्तृत चर्चा पहले की जा चुकी है। इनमे से निम्नाकित ५ मुझे कही भी नही मिले :—

(१) तुलसी कवि कृत माला, सम्वत् १७१२
(२) कालिदास कविकृत हजारा, सम्वत् १७५५
(३) बलदेव कवि बघेलखडी कृत सत्कवि गिराविलास, सम्वत् १८०३
(४) श्रीधर कृत विद्वन्मोदतरगिणी, सम्वत् १८७४
(५) ठाकुर प्रसाद कविकृत रस चन्द्रोदय, सम्वत् १६२०

शेष ५ मुझे मिले है और उनसे पर्याप्त सहायता भी मिली है। इनकी सूची यह है —

(१) कृष्णानन्द व्यास देव कृत राग कल्पद्रुम, सम्वत् १६००
(२) गोकुल प्रसाद ब्रज कृत दिग्विजय भूषण, सम्वत् १६१६
(३) भारतेन्दु कृत सुन्दरी तिलक, सम्वत् १६२५
(४) महेश दत्त कृत भाषा काव्य सग्रह, सम्वत् १६३२
(५) मातादीन मिश्र कृत कवित्त रत्नाकर, सम्वत् १६३३

इन पाँच ग्रन्थो का विस्तृत विवरण पीछे दिया जा चुका है। इन सग्रहो के अतिरिक्त मैंने दो अन्य प्राचीन सग्रहो का भी सदुपयोग किया है :—

(१) सरदार कृत शृगार सग्रह, सम्वत् १६०५
(२) नवीन कृत सुधासर, सम्वत् १८६५

सुधासर के अन्त मे नाम राशी कवियो एवम् दो-दो छाप वाले एक ही कवियो की सूची भी दी गई है, जो शोध-विद्यार्थी के लिये परमोपयोगी है। इस ग्रन्थ का प्रारम्भिक अश भारत जीवन प्रेस, काशी से पहले प्रकाशित हुआ था। सभा के आर्य भाषा पुस्तकालय मे इसकी कई हस्तलिखित प्रति-

लिपियाँ सूची मे उल्लिखित है, पर सभी अनुपलब्ध है। उक्त नाम राशी कवि सूची एवम् दुत छापी कवि नाम सूची की प्रतिलिपि प्रो० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने अपने लिये कराई थी। उनकी कृपा से उस प्रतिलिपि का सदुपयोग मैंने किया है। सूचियो की उपयोगिता को ध्यान मे रखते हुये उन्हे यहाँ अविकल रूप मे प्रस्तुत किया जा रहा है।

(१) नाम राशी कवि की सूची

अथ जे जे नामरासी कवि है सो लिख्यते।

ईस ॥ २ ॥
- प्राचीन ईस ॥ १ ॥
- जैपुर वारे ईस नवीन के श्रीगुर ॥ १ ॥

ग्वाल ॥ २ ॥
- ग्वाल प्राचीन ॥ १ ॥
- ग्वाल राइ मथुरा वारे ॥ १ ॥

परमेस ॥ २ ॥
- प्राचीन ॥ १ ॥
- वृन्दावन वासी ॥ १ ॥

विहारी ॥ ४ ॥
- चौवे सतसया वारे ॥ १ ॥
- मतिराम के नाती ॥ १ ॥
- फरकावादी ॥ १ ॥
- विहारी ढोली नरवर वारो ॥ १ ॥

मान ॥ २ ॥
- प्राचीन ॥ १ ॥
- जोधपुर वारे राव ॥ १ ॥

गुपाल ॥ २ ॥
- राम गुपाल ॥ १ ॥
- गुपाल ॥ १ ॥

मडन ॥ २ ॥
- प्राचीन ॥ १ ॥
- जैपुर वारे लाल कवि के नाती ॥ १ ॥

प्रिया ॥ २ ॥
- प्राचीन ॥ १ ॥
- प्रियादास भक्तमाली वृन्दावन वासी ॥ १ ॥

शिवनाथ ॥२॥
- प्राचीन ॥ १ ॥
- जोधपुर वारे ॥ १ ॥

घासी राम ॥ २ ॥

प्राचीन ॥ १ ॥
कोटा वारे राव ॥ १ ॥
हरि ॥ २ ॥
प्राचीन हरि चरन दास कृष्णगढ वारे ॥ १ ॥
हरिनाथ कुल करन सुत ॥ १ ॥
कल्यान ॥ २ ॥
प्राचीन ॥ १ ॥
कल्यान जी राव ॥ १ ॥
प्रवीन ॥ २ ॥
प्राचीन ॥ १ ॥
बेनी प्रवीण वाजपेयी ॥ १ ॥
कृष्ण ॥ ३ ॥
प्राचीन सतसैया के टीकाकार ॥ १ ॥
कृष्ण राय कुल करन सुत ॥ १ ॥
कृष्ण लाल ॥ १ ॥
बसी ॥ २ ॥
प्राचीन ॥ १ ॥
दलपति वशीधर हजारा ग्रन्थ के कर्त्ता ॥ १ ॥
मुरली ॥ २ ॥
प्राचीन ॥ १ ॥
आगरे वारे ब्राह्मन ॥ १ ॥
ठाकुर ॥ ३ ॥
प्राचीन मसल बन्द ॥ १ ॥
झासी वारे ठाकुर दास ब्राह्मन ॥ १ ॥
लाला वृन्दावन वासी ॥ १ ॥
लाल ॥ २ ॥
जैपुर वारे ॥ १ ॥
गोरे लाल पद्माकर के नाना आतकी ॥ १ ॥
उदै ॥ २ ॥
प्राचीन ॥ १ ॥
उदैनाथ कवीन्द्र ॥ १ ॥
जगन ॥ २ ॥
प्राचीन ॥ १ ॥
जगन्नाथ जी भट्ट जैपुर वारे ॥ १ ॥
राम ॥ २ ॥
राम कवि ॥ १ ॥

राम जी फरुखावादी ॥ १ ॥

चन्द ॥ २ ॥

चौधरी आनन्द चद नरवर वारे ॥ १ ॥

गुलाई चन्द लाल जी राधा वल्लभी ॥ १ ॥

वरेधा ॥ २ ॥

प्राचीन ॥ १ ॥

वोधा राइ ॥ १ ॥

जीवन ॥ २ ॥

प्राचीन ॥ १ ॥

व्रज जीवन वृन्दावन वासी ॥ १ ॥

तोष ॥ २ ॥

प्राचीन लखनऊ वारे ॥ १ ॥

तोष निधि कम्पिला वारे ॥ १ ॥

इति श्री नाम रासी कवि सम्पूर्णम्

(२) अथ दुत छाप वारे कवि निरूपन ।

एक कवि की दो छाप है सोहू वोधहित ऐसे जानिवी ।

उदैनाथ ॥ कविन्द ॥ १ ॥

नागर ॥ पडित ॥ १ ॥

ससिनाथ ॥ सोमनाथ ॥ १ ॥

नृप सभु ॥ सभुराज ॥ १ ॥

आनन्द ॥ चन्द ॥ १ ॥

दत (? दत्त) ॥ गुरुदत्त ॥ १ ॥

कालिदास ॥ महाकवि ॥

इति दूत छापी कवि नाम रासी कवि सम्पूर्णम् ॥

ग कवियों का मूल-ग्रन्थ

सग्रह ग्रन्थो के अतिरिक्त, कवियो के मूलग्रन्थो से मुझे इस सर्वेक्षण मे प्रचुर सहायता मिली है। भारत जीवन प्रेस, काशी और उसके अध्यक्ष बाबू रामकृष्ण वर्मा की सेवायें इस क्षेत्र मे विशेष उल्लेखनीय हैं। वर्मा जी ने सैकडो प्राचीन काव्य ग्रन्थो को सुलभ मूल्य मे प्रकाशित कर प्राचीन सुकवियो की कीर्ति रक्षा का सुन्दर प्रयास किया था। कवियो के मूलग्रन्थ सरोज के तथ्यो एवम् तिथियो की जाँच के लिए सर्वाधिक प्रामाणिक सामग्री हैं। यदि मेरे पास नवल किशोर प्रेस, लखनऊ से प्रकाशित प्रेम रत्न की प्रति न होती तो मैं रतन ब्राह्मण, बनारसी के अनस्तित्व को नही ही सिद्ध कर सकता था। इसी प्रकार भक्तमाल ने नारायणदास एवम् नाभादास की विभिन्नता स्थापित करने मे तो सहायता दी ही है, साथ ही तत्कालीन अधिकाश भक्त कवियो के सम्बन्ध मे दिये तथ्यो की जाँच मे भी अत्यन्त लाभकर सिद्ध हुआ है।

ग हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज रिपोर्टें

सर्वेक्षण करने मे सबसे अधिक सहायता हस्तलिखित ग्रन्थो की खोज रिपोर्टों से मिली है। हस्तलिखित ग्रन्थो की खोज का काम बाबू श्यामसुन्दर दास जी की प्रेरणा से सभा ने सन् १९०० ई० मे प्रारम्भ किया था। १९०० ई० से लेकर १९०६ ई० तक सभा की वार्षिक खोज रिपोर्ट छपती रही, फिर वे त्रैवार्षिक रूप मे छपने लगी। १९०० ई० से लेकर १९२५ ई० तक की रिपोर्ट अग्रेजी मे गवर्नमेन्ट प्रेस, इलाहाबाद से छपी हैं। १९०० से १९०८ तक की रिपोर्टें अब वहा से सुलभ नही है। शेष सुलभ है। १९२६ से १९४० तक की खोज रिपोर्टें हिन्दी मे अनूदित होकर उत्तर प्रदेशीय सरकार की आर्थिक सहायता से नागरी प्रचारिणी सभा के नागरी मुद्रण मे प्रकाशित हुई हैं। शेष के प्रकाशन की व्यवस्था हो रही है। एक ही कवि के भिन्न-भिन्न ग्रन्थ अथवा एक ही ग्रन्थ, भिन्न-भिन्न समयो पर, भिन्न-भिन्न स्थानो मे, प्राप्त हुये है, जिनका उल्लेख भिन्न-भिन्न रिपोर्टों मे हुआ है। सभा ने हस्तलिखित ग्रन्थो का एक सक्षिप्त विवरण भी प्रस्तुत कराया है। इस विवरण मे पहले कवि का परिचय दिया गया है, तदनन्तर अकारादिक्रम से उसके ग्रन्थो की सूची दी गई है। प्रत्येक ग्रन्थ के आगे जिस या जिन-जिन रिपोर्टों मे और जिन-जिन सख्याओ पर उस ग्रन्थ की नोटिसे प्रकाशित हुई है, उनका उल्लेख हुआ है। त्रैवार्षिक रिपोर्टों का उल्लेख प्रथम वर्ष के नाम से हुआ है, यथा १९०६-०८ वाली रिपोर्ट को १९०६ की रिपोर्ट कहा गया है। रिपोर्ट के सन् के आगे नोटिस की सख्या दे दी गई है। उदाहरण के लिये दामोदरदास ब्रजवासी के नाम पर इस सक्षिप्त विवरण मे पहला ग्रन्थ इस प्रकार चढा है .—

(१) गुरु प्रताप लीला—१९१२।४६ की, १९४१।५०३ ख

इसका अभिप्राय यह हुआ कि दामोदरदास जी के गुरु प्रतापलीला की अभी तक दो हस्त-लिखित प्रतियाँ उपलब्ध हुई है। पहली का विवरण १९१२-१५ वाली रिपोर्ट मे ४६ सख्या के बी भाग मे तथा दूसरी का १९४१-४३ वाली रिपोर्ट मे ५०३ सख्या पर ख भाग मे प्रस्तुत किया गया है।

यह सक्षिप्त रिपोर्ट अनुसधित्सुओ के बड़े काम की है। सभा ने इसे तैयार कराकर उनका बहुत-सा बोझ हलका कर दिया है। इसका प्रकाशन यथाशीघ्र होना चाहिये।

मैंने सभा की सभी प्रकाशित-अप्रकाशित खोज रिपोर्टो एवम् अप्रकाशित सक्षिप्त विवरण का सदुपयोग किया है। १९२२-२४ ई० मे पजाब मे एवम् १९३१ मे दिल्ली मे सभा ने हस्तलिखित ग्रन्थो की खोज कराई थी। इनकी रिपोर्टें अलग-अलग और अलग से प्रकाशित हुई है। सक्षिप्त विवरण मे इनका उल्लेख प और द के सक्षिप्त रूपो द्वारा सकेतित है।

सभा की खोज रिपोर्टों के अतिरिक्त राजपूताना मे भी उदयपुर विद्यापीठ के प्राचीन साहित्य शोध-सस्थान की ओर से खोज का कार्य हुआ है। इस खोज की चार रिपोर्टें "राजस्थान मे हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थो की खोज" नाम से अभी तक प्रकाशित हुई है। सभा की रिपोर्टो मे असावधानी से यत्र-तत्र अनेक अशुद्धियाँ हो गई है। राजस्थान रिपोर्ट अत्यन्त शुद्ध है। मैंने इन चारो रिपोर्टो का सदुपयोग किया है और इनकी सहायता से अनेक कवियो के सन्-सम्वतो की जाँच मे अच्छी सहायता मिली है।

बिहार राष्ट्रभाषा-परिषद् ने भी बिहार मे हस्तलिखित ग्रन्थो की खोज का कार्य प्रारम्भ किया है। इसकी भी दो रिपोर्टें निकल चुकी है। आर्डर देकर मँगाने पर भी इसका केवल दूसरा

खड मुझे मिल सका। प्रथम-खड का उपयोग इसीलिये मैं नही कर सका हूँ। बिहार-रिपोर्ट अशुद्धियो से परिपूर्ण है।

घ हिन्दी साहित्य के इतिहास-ग्रन्थ

तासी सरोज की पूर्ववर्ती रचना है। श्री लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय द्वारा अनूदित "हिन्दुई साहित्य का इतिहास' का उपयोग मैंने किया है, पर सरोज के अध्ययन मे इससे अधिक सहायता नहीं मिलती। हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास ग्रियर्सन कृत 'द माडर्न वर्नाक्यूलर लिटरेचर आफ नदर्न हिन्दुस्तान' है जिसका उपयोग मैंने किया है और हिन्दी साहित्य के इतिहासो पर उसके प्रभाव को देखते हुये तथा उस पर सरोज के पूर्ण प्रभाव को ध्यान मे रखते हुये मैंने उसका हिन्दी अनुवाद भी प्रस्तुत कर लिया है। विनोद हिन्दी मे लिखा हुआ हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास है। कवियों का वृहत् इतिवृत्त होने के कारण यह अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुआ है। आचार्य शुक्ल के सुप्रसिद्ध इतिहास का भी उपयोग किया है। इन ग्रन्थो के अतिरिक्त बुन्देल वैभव और राजस्थानी भाषा और साहित्य नामक दो अन्य क्षेत्रीय इतिहास ग्रन्थो का भी उपयोग मैंने किया है। इनमे क्रमश बुन्देलखड एवम् राजस्थान मे उद्भूत हिन्दी साहित्य का इतिहास कवि वृत्त रूप मे लिखा गया है।

ङ इतिहास-ग्रन्थ

मुगल बादशाहो की वशावली एव्म् अवध के नवाबो और उनके वजीरो की सूची मैंने प्रसिद्ध इतिहास ग्रन्थो से ली है। सरोजकार ने टॉड के राजस्थान का उपयोग किया था। ग्रियर्सन ने टाड की पूरी छान-बीन कर ली है, अत. मैं टाड के पीछे नही पडा हूँ। एक मात्र इतिहास ग्रन्थ जिसने मेरी अत्यधिक सहायता की है, पडित गोरेलाल तिवारी रचित बुन्देलखड का सक्षिप्त इतिहास है, जो पहले नागरी प्रचारणी पत्रिका के कई अको मे क्रमश. प्रकाशित हुआ था।

च पत्र-पत्रिकायें

माधुरी के प्रारम्भिक ७-८ वर्षो के अको मे प्राचीन कवियो के सम्बन्ध मे अत्यन्त बहुमूल्य सामग्री प्रकाशित होती रही थी। प्रत्येक अक मे कवि चर्चा शीर्षक एक स्तम्भ ही रहा करता था जिनमे प्राचीन कवियो के विवादास्पद प्रसगो पर सूचनायें, वादविवाद, आलोचना-प्रत्यालोचना और खडन-मडन बराबर रहा करता था। माधुरी की इस सारी सामग्री का मैंने पूरा उपयोग किया है। नागरी प्रचारणी पत्रिका एवम् व्रज भारती आदि शोध पत्रिकाओ मे भी कवियो के सम्बन्ध मे बडे अच्छे शोध-लेख प्रकाशित होते रहे हैं। मैंने इनका भी उपयोग किया है।

मैं तीन लेखो का विशेष रूप से उल्लेख करना चाहता हूँ। प्रथम लेख है प० दयाशकर याज्ञिक द्वारा लिखा हुआ माधुरी मे प्रकाशित 'भरतपुर राज्य और हिन्दी', दूसरा लेख है कुँवर-कन्हैया जू द्वारा लिखित एवम् नागरी प्रचारिणी पत्रिका मे प्रकाशित 'चरखारी राज्य के हिन्दी कवि'—इन दोनो लेखो से बहुत से कवियो के सम्बन्ध मे प्रामाणिक सूचनायें मिली हैं। तीसरा महत्वपूर्ण लेख है, प्रो० प० विश्वनाथ प्रसाद जी मिश्र लिखित हिन्दुस्तानी मे प्रकाशित 'सरोज के सन् सम्वत्'। इस लेख ने मेरा पर्याप्त पथ-निर्देश किया है।

सारी सहायक सामग्री का उल्लेख करना यहाँ अभीष्ट नही है, केवल प्रमुख सूत्रो की चर्चा कर दी गई है। सारी सहायक सामग्री की परिगणना ग्रन्थान्त मे सहायक-सूची मे की गई है।

सर्वेक्षण

अ (अ , अ , आ , ओ , औ)

१ । १

१ अकवर वादशाह, दिल्ली, सम्वत् १५८४ मे उत्पन्न हुये ।

इनके हालात मे अकवर नामा, आईन अकवरी, तवकात अकवरी, अब्दुल कादिर वदायूनी की तारीख इत्यादि वडी-वडी लिखी गई है जिनसे इस महाप्रतापी वादशाह का जीवन-चरित्र साफ-साफ मालूम हो जाता है । यहाँ केवल हमको उनकी कविता का वर्णन करना आवश्यक है । हमको इनका कोई ग्रन्थ नही मिला । दो-चार कवित्त जो मिले, सो हमने लिख दिये है । जहाँगीर वादशाह ने अपने जीवन-चरित्र की किताव तुजुक जहाँगीरी मे लिखा है कि अकवर वादशाह कुछ पढे-लिखे न थे, परन्तु मौलाना अब्दुल कादिर की किताव से प्रकट है कि अकवर वादशाह एक रात को आप ही सस्कृत महाभारत का उल्था कराने वैठे थे । सुलतान मुहम्मद थानेसरी और खुद मौलाना वदायूनी और शेख फैजी ने जहाँ-जहाँ कुछ आशय छोड दिया था, उसका फिर तरजुमा करने का हुक्म दिया । इनके समय मे नरहरि, करन, होल, खानखाना, वीरवल, गग इत्यादि वडे-वडे कवि हुये हैं । पाँच खास कवि जो नौकर थे, उनके नाम इस सवैया मे हैं :—

पृथ्वी प्रसिद्ध पुरन्दर ब्रह्म सुधारस अमृत अमृत बानी
गोकुल गोप गोपाल गनेश गुनी गुनसागर गग सु ज्ञानी
जोध जगन्न जमे जगदीश जगामग जैत जगत्त है जानी
को र अकव्वर सै न कथ, इतने मिल कै कविता जु बखानी

श्री गोसाई तुलसीदास इनके दरवार मे हाजिर नही हुये । सूरदास जी और उनके पिता वावा रामदास गाने वालो मे नौकर थे जैसा कि आईन अकवरी मे लिखा है । केशवदास जी उस समय मे इनके मत्री श्री राजा वीरवल के दरवार मे हाजिर हुये थे, जव इन्द्रजीत राजा उडछा वुन्देलखडी पर प्रवीनराय पातुर के लिये वादशाही कोप था ।

जाको जस है जगत मे, जगत सराहै जाहि
ताको जीवन सफल है, कहत अकव्वर साहि

सर्वेक्षण

अकवर का जन्म २३ नवम्वर १५४२ ई० (सम्वत् १५९९ वि०) मे हुआ था । वह १३ वर्ष की वय मे १५५५ ई० (सम्वत् १६१३ वि०) मे सिहासन पर वैठा और ४९ वर्ष राज्य करने के अनन्तर सन् १६०५ ई० (सम्वत् १६६२ वि०) मे उसकी मृत्यु हुई । सरोज का यह कथन है कि वह सम्वत् १५८४ मे उत्पन्न हुआ, अशुद्ध है । वह इसके १५ वर्ष वाद पैदा हुआ । वस्तुत. यह ई० सन् है और यह उसके रचनाकाल का सूचक है । उस समय उसकी अवस्था ४२ वर्ष की थी और वह वीरवल के प्रभाव से कुछ छद भी रच लेने लगा था ।

अकवर की निरक्षरता के सम्वन्ध मे जहाँगीर ने तुजुक जहाँगीरी मे जो कुछ लिखा है, उसका हिन्दी अनुवाद यह है :—

"मेरे पिता सदैव प्रत्येक धर्म और विश्वास के विद्वानो, विशेषकर भारत के प्रसिद्ध पडितो का साथ करते थे । वह निरक्षर थे किन्तु विद्वानो के सम्पर्क मे आने पर उनकी उस निरक्षरता

का बोध नही हो पाता था और वे कविता के प्रधान गुणो से इतने परिचित हो गये थे कि कोई व्यक्ति उनकी निरक्षरता का अनुमान भी नही कर सकता था[१]।"

निश्चय ही आईने अकबरी मे, जो सम्वत् १६५३-५४ मे बनी, एक सूरदास एवम् उनके पिता रामदास जी दरबार के गायको की श्रेणी मे लिखे गये है। यह कोई दूसरे सूरदास है[२]। सूर ने तो राधा-कृष्ण की गुलामी छोड किसी दूसरे की गुलामी नही की। चौरासी वैष्णवन की वार्ता के अनुसार सूर और देशाधिपति (अकबर) की भेंट एक बार अवश्य हुई थी। उस समय सूर ने दो पद सुनाये थे —

(१) मन रे तू करि माधौं सों प्रीत (२) नाहिंन रह्यो मन में ठौर

ऐसे सूर अकबरी दरबार के गायक कभी नही हो सकते। इसी मुलाकात के आधार पर उन्हे दरबारी गायक कहा गया हो, तो इसे अबुलफजल का दुराग्रह ही कहा जायगा।

श्री मायाशकर याज्ञिक ने अकबर की समस्त प्राप्त रचनाओ का सकलन 'अकबर सग्रह' नाम से किया था[३]। इसमे अधिकाँश रचनाये ऐतिहासिक घटनाओ विषयक है।

सरोज मे उद्धृत तीनो छद दिग्विजय भूषण मे एक ही स्थान पर है और वही से लिये गये है[४]।

२।३

(२) अजबेस प्राचीन (१) सम्वत् १५७० मे उ०।

यह कवि श्री राजा वीरभान सिंह जोधपुर के यहाँ थे और उसी देश के रहने वाले बदीजन मालूम होते है।

सर्वेक्षण

सरोजकार ने इस कवि का यह छद उद्धृत किया है —

बढ़ी बादशाही ज्योंही सलिल प्रलै के बढै
राना राव उमराव सबको निपात भो
बेगम बिचारी बही, कतहूँ न थाह लही
बाधौगढ गाढ़ो गूढ़ ताको पच्छपात भो
शेरशाह सलिल प्रलै को बढ्यो अजबेस
बूड़त हुमायूँ के बड़ोई उतपात भो
बलहीन बालक अकबर बचाइबे को
बीरभान भूपति अछैबट को पात भो

वीरभान जोधपुर के राजा नही थे। यह बाँधवगढ (रीवाँ) के राजा थे। ऊपर वाले छद से ही यह स्पष्ट है। जोधपुर राज्य की वशावली मे इस नाम का कोई राजा नही हुआ[५]। ऊपर लिखित छद मे जिस घटना का उल्लेख हुआ है उसके सम्बन्ध मे श्री गोरेलाल तिवारी लिखते है :—

"बघेल राजा वीरभानदेव हुमायूँ का समाकालीन है।. जब शेरशाह ने "हुमायूँ को

---

[१] अकबरी दरबार के हिन्दी कवि, पृष्ठ ११

[२] इस सम्बन्ध मे ७३३ सख्या पर सूर के तथाकथित पिता बाबा रामदास देखिये

[३] खोज रिपोर्ट १९३२।३ [४] दिग्विजय भूषण, पृष्ठ ६४०–४१

[५] खोज रिपोर्ट १९०२ के अत में दी हुई जोधपुर नरेशों की वशावली देखिये।

भगाया तब वघेल राजा वीरभान देव ने हुमायूँ की स्त्री आदि को अपने यहाँ रखा था, पर किसी भी मुसलमान इतिहासकार ने यह वात नही लिखी है। वघेल राजा रामचन्द्र वीरभान का पुत्र है। यह वि० सम्वत् १६१२ मे गद्दी पर वैठा था[1]।"

इस उद्धरण से स्पष्ट है कि वीरभान ने १६१२ विक्रमी तक राज्य किया। ग्रियर्सन ने इनका शासन काल सन् १५४० ई० से १५५४ ई० तक माना है[2]। इनके पुत्र रामचन्द्र के दरवार मे पहले नरहरि और तानसेन थे। यही से वे अकवरी दरवार मे आये थे।

वीरभान के दरवार मे अजवेस नाम के कोई कवि नही हुये। ऊपर उद्धृत छद के आधार पर शिवसिंह ने एक अजवेस प्राचीन की कल्पना कर ली है। अजवेस वहुत वाद मे रीवाँ नरेश जयसिंह के आश्रय मे हुये हैं। यह कवित्त उन्ही का है। रीवाँ दरवार के इस आश्रित कवि ने अपने आश्रयदाता के पूर्वजो की भी प्रशस्ति लिखी है और उनकी वशावली भी प्रस्तुत की है। वीरभान की प्रशस्ति लिखने के कारण यह कवि उनका समकालीन और दरवारी नही हो सक्ता, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार हल्दी घाटी का रचयिता राणाप्रताप का समकालीन नही है। वास्तविक अजवेस का वर्णन आगे सख्या ३ पर है।

३।४

(३) अजवेस नवीन भाट (२) सम्वत् १८९२ मे उ०। यह कवि श्री महाराजा विश्वनाथ सिंह वान्धव नरेश के यहाँ थे।

सर्वेक्षण

रीवाँ नरेश विश्वनाथ सिंह का राज्यकाल-सम्वत् १८९२ से लेकर सम्वत १९११ विक्रमी तक है। अजवेस विश्वनाथ सिंह जू के दरवारी कवि थे। यह इनके पिता महाराजा जयसिंह के भी दरवार मे रह चुके थे। अजवेस के लिखे हुये निम्नाकित तीन ग्रथ खोज मे मिले हैं —

(१) विहारी सतसई की टीका—१९२०।३, १८२। यह टीका गद्य मे है। यह टीका सक्षिप्त है और सुप्रसिद्ध नही है। अम्विकादत्त व्यास ने 'विहारी-विहार' मे और रतनाकर जी ने 'विहारी सतसई सवधी साहित्य मे इसका उल्लेख नही किया है। इस टीका का पाठ और क्रम अनवर चन्द्रिका के अनुसार है। इसकी रचना सम्वत् १८६८ मे हुई।

महापात्र अजवेस यह पुस्तक लिखी वनाइ
सवत दस अरु आठ से अरसठि दिए गनाइ

(२) वघेल वश वर्णन—१९०१।१५। इस ग्रन्थ मे रीवाँ नरेशो के पूर्वज व्याघ्रदेव के पूर्वजो का वर्णन है। व्याघ्रदेव के वाद का विवरण नही है। व्याघ्रदेव वघेलखड के प्रथम विजेता थे। यह ग्रन्थ केवल ३२ पन्ने का है। ग्रन्थ का प्रतिलिपिकाल सवत् १८९२ है —

"इति श्री अजवेस कृत वसउली सपूरन शुभमस्तू माघ वदि ११ गुरौवार सवत १८९२ के साल।"

---

[1] बुन्देलखड का सक्षिप्त इतिहास, नागरी प्रचारिणी पत्रिका, खड १२, अक ३ (कातिक १९८८), पृष्ठ ४१३-१४ [2] ग्रियर्सन, कवि सख्या २४

जब अजवेस का रचनाकाल १८६८ सिद्ध है, ऐसी स्थिति मे सम्वत् १८९२ इनका उत्पत्ति काल कदापि नही हो सकता।

(३) सरूप विलास[१]—यह चरित काव्य है। इसमें रीवाँ एव दिल्ली के राजाओ की साहित्यिक उदारता का वर्णन है।

अजवेस असनी के निवासी थे, प्रसिद्ध नरहरि महापात्र के वशज थे। इनके वशज अभी तक असनी (फतेहपुर) मे है। इनके पुत्र शिवनाथ भी सुकवि थे और महाराज विश्वनाथ सिंह जू देव के आश्रय मे रह कर इन्होने रासा[२] तथा वशावली[३] नामक ग्रन्थ लिखे है।

४। ५

(४) अयोध्या प्रसाद वाजपेयी, सातन पुरवा, जिला रायबरेली, 'औध छाप' विद्यमान है। यह कवि सस्कृत और भाषा के महान् पंडित आज तक विद्यमान है। इनकी कविता बहुत सरस और अनोखी है। छदानन्द, साहित्य सुधासागर, राम कवित्तावली इत्यादि ग्रन्थ बनाये हैं और बहुधा श्री अयोध्या जी मे बाबा रघुनाथ दास के यहाँ और चन्दापुर के राजा जगमोहन सिंह के यहाँ रहा करते हैं।

सर्वेक्षण

अयोध्या प्रसाद वाजपेयी, 'औध' का जन्म सम्वत् १८६०, वि० मे सन्तन पुरवा, तहसील महाराजगज, जिला रायबरेली मे हुआ था। उनका देहावसान सम्वत् १९४२ वि० मे कार्तिक शुक्ल २ को ८२ वर्ष की वय मे अयोध्या मे हुआ। इनके पिता पडित नन्दकिशोर वाजपेयी सस्कृत के साधारण पडित थे और लेन-देन का काम करते थे। अयोध्या प्रसाद जी चार भाई थे। अन्य तीन भाइयो के नाम लक्ष्मण प्रसाद, चतुर्भुज और भारत थे। इन्होंने निकटस्थ ग्राम हसनपुरवा के पण्डित और कवि गजाधर प्रसाद जी से व्याकरण, ज्योतिष और काव्य पढा तथा इन्ही से काव्य रचना भी सीखी। औध जी की ससुराल कन्नौज मे थी। एक बार यह कन्नौज गये थे। उस समय सोरो मे जाकर यह पद्माकर से मिले थे। पद्माकर जी इनकी प्रतिभा से तुष्ट हुये थे और इन्हे नर काव्य न करने का आदेश दिया था। अयोध्या के बाबा रघुनाथ दास महन्त इन्हे बहुत मानते थे। औध जी को निम्नाकित राजाओ ने धन-भूमि आदि देकर सम्मानित किया था :—

(१) महाराज हरिदत्त सिंह, रियासत बौंडी, जिला बहराइच। इन्होने औध जी को पडित पुरवा नामक ग्राम मे कुछ जमीन दी थी।

(२) राजा सुदर्शन सिंह, रियासत चदापुर, जिला बहराइच। इन्होने औध जी को एक गाँव दिया था, जिसका नाम वाजपेयी का पुरवा हुआ।

(३) महाराज दिग्विजय सिंह, बलरामपुर, जिला गोडा।

(४) पाडेय कृष्ण दत्त, गोडा।

(५) राव मुनीश्वर बख्श सिंह, रियासत मल्लापुर।

---

[१] आज, रविवार विशेषांक, ३१-३-५७ [२] खोज रिपोर्ट १९२०।१८२ [३] खोज रिपोर्ट १९०१।१०६

औव जी के दो पुत्र हुये, वैद्यनाथ और शिवनाथ। शिवनाथ की सन्तान चदापुर, जिला बहराइच मे है और वैद्यनाथ जी के पुत्र श्री रमाशकर और शिवनारायण जी १६७३ ई० मे वाजपेयी पुरवा, चदापुर, जिला बहराइच मे उपस्थित थे। इन्हीं से यह सारा विवरण सभा के अन्वेपक को मिला था[1]। औघ जी के निम्नलिखित ग्रन्थ खोज मे मिले हैं :—

(१) अवध शिकार—१६२३।२४ ए १६४७।६। इस ग्रन्थ मे त्रिभगी छदो मे राम के आखेट का वर्णन है। कवि ने हाथी, घोड़ो और रगो की अच्छी जानकारी का परिचय इस ग्रन्थ मे दिया है। इसका रचनाकाल रिपोर्ट मे सम्वत् १६०० है।

रघुनाथ शिकार—१६२३।२४ वी। शिकारगाह, अवध शिकार, राम आखेट, रघुनाथ आखेट आदि एक ही ग्रन्थ के भिन्न-भिन्न नाम हैं[2]। सम्भवत. इसी ग्रन्थ का एक अन्य नाम रघुनाथ सवारी १६२६।२१ भी है।

(२) राग रत्नावली—१६२३।२४ सी। परमात्मा, शकर, राम, कृष्ण आदि की महिमा का पदो मे वर्णन। रचनाकाल सम्वत् १६०७ है।

(३) साहित्य सुधा सागर—१६२३।२४ वी। गणपति, महादेव, ब्रह्मा, विष्णु आदि देवताओ पर नाना प्रकार की कविता। रचनाकाल सम्वत् १८६७ है।

औघ जी के अन्य ग्रन्थो के नाम ये हैं :—

(१) छदानन्द, (२) शकर शतक, (३) व्रज व्रज्या, (४) चित्रकाव्य। आग लग जाने से इनके अनेक ग्रन्थ नष्ट हो गये[3]। विनोद (२०८६) मे इनके एक ग्रन्थ रास सर्वस्व का और उल्लेख हुआ है। छदानद का रचनाकाल सं० १६०० है[4]।

५।६

(५) अवधेश ब्राह्मण बुन्देलखडी, चरखारी, सम्वत् १६०१ मे उ०। यह कवि राजा रतनसिंह बुन्देला चरखारी अधिपति के कदीम कवि हैं। इनकी कविता सरस है परन्तु मैंने कोई ग्रन्थ इनका नही पाया।

सर्वेक्षण

विक्रम सतसई के रचयिता चरखारी नरेश महाराज विजय विक्रमादित्य का देहान्त सम्वत् १८८६ वि० मे हुआ था। तदनन्तर उनके पौत्र रतनसिंह जी चरखारी की गद्दी पर बैठे, क्योकि उनके चारो पुत्र उनके जीवनकाल ही मे दिवगत हो गये थे। रतनसिंह जी ने सम्वत् १८८६ वि० से सम्वत् १६१७ वि० तक राज्य किया। इनके दरबारी कवि अवधेश को सम्वत् १६०१ मे उ० कहा गया है। यह सवत् रतनसिंह के शासनकाल के मध्य मे पड़ता है। यह अवधेश का जन्मकाल कदापि नही हो सकता, क्योकि यदि इसे जन्मकाल माना जायगा, तो रतनसिंह के मृत्यु के समय इनकी अवस्था केवल १६ वर्ष की रही होगी और वे रतनसिंह के कदीमी कवि नही कहे जा सकेंगे।

---

[1] खोज रिपोर्ट १६२३।२४ डी [2] माधुरी वर्ष ७, खड १ अंक ३, आश्विन स० १६८०
[3] वही [4] हिन्दी साहित्य का बृहत् इतिहास, भाग ६, पृष्ठ ४६२

इन रतनसिंह जी के दरबार के अन्य कवि है गोपाल और व्यंगार्थ कौमुदी के प्रसिद्ध रचयिता प्रताप साहि। स्वय रतनसिंह जी भी साहित्य सेवी थे। इन्होने रतन चन्द्रिका नाम से बिहारी सतसई की टीका की थी। विनय पत्रिका का भी तिलक किया था। मिताक्षरा भाषा वर्तमान कानून की रीति पर बना था तथा हिंदी की सुन्दर कविताओ का एक सग्रह रतनहजारा नाम से किया था, जो भारत जीवन प्रेस, काशी से कई बार छप चुका है[१]।

पाँच एवम् छह सख्यक दोनो अवधेश वस्तुत एक ही है। यद्यपि ग्रियर्सन मे दोनो को अलग-अलग स्वीकार किया गया है, पर विनोद मे दोनो की अभेदता स्वीकृत है। सरोज के सशोधक रूपनारायण पाडेय ने भी इनकी अभेदता मानी है। दोनो अवधेश ब्राह्मण है, बुन्देलखडी हैं। पहले अवधेश का ग्राम नही दिया गया है, केवल बुन्देलखडी कहा गया है, दूसरे को भी बुन्देलखडी कहा गया है, साथ ही गाँव का नाम सूपा भी दिया हुआ है। समय भी दोनो का एक ही है, केवल ६ वर्ष का अन्तर है। साथ ही दोनो की कविता भी एक ही-सी सरस है। इससे स्पष्ट होता है कि दोनो कवि सम्भवत. एक ही है।

खोज १९४७।८ मे किसी 'अवधेश के कवित्त' का उल्लेख है और कोई सूचना नही दी गई है।

६।७

(६) अवधेश ब्राह्मण सूपा के (२) बुन्देलखडी, सम्वत १८९५ मे उ०। यह कवि बहुत सुन्दर कविता करने मे चतुर थे, परन्तु कोई ग्रन्थ मैने इनका नही पाया।

सर्वेक्षण

तृतीय सस्करण मे सूपा के स्थान पर भूपा पाठ है, पर शुद्ध सूपा ही है। जैतपुरी कवि मडन के रस रतनावली की एक प्रति के लेखक गुमानसिंह, ब्राह्मण, जुझोलिया स्थान सूपा, के कहे गये हैं[२]। विशेष विवरण सख्या ५ पर देखिये।

७।८

(७) अवध बकस सम्वत् १९०४ मे उ०। कविता सरस है, गाँव-ठाँव मालूम नही।

सर्वेक्षण

सरोज मे इस कवि का एक ही कवित्त उद्धृत है, जिसका तीसरा चरण यह है :—

अवध बक्स भूप कीरति है छंद ऐसो
छाजत गिरा के मुख सुषमा अपार सी

इस चरण मे आये अवध बकस शब्द से कवि का बोध हो सकता है, साथ ही यह उस राजा का भी नाम हो सकता है जिसकी प्रशस्ति मे उक्त छद लिखा गया है। ऐसी स्थिति मे कवि का अस्तित्व सदिग्ध है, यद्यपि ग्रियर्सन (६८५) और विनोद (२००२) मे यह कवि स्वीकृत है। ग्रियर्सन

[१] चरखारी राज्य के कवि, ना० प्र० पत्रिका भाग ६ अक ४, माघ १९८५ [२] खोज रिपोर्ट १९२६।२९३ ए (पुष्पिका)

मे १६०४ जन्मकाल एवम् विनोद मे रचना काल माना गया है। खोज, इस कवि के सम्वन्ध मे मौन है।

८।१४

(८) औघ कवि, सम्वत् १८९६ मे उ०। इनके हालात से हम नावाकिफ है और भ्रम होता है कि शायद जो कवित्त हमने इनके नाम से लिखा है, वह वाजपेयी अयोध्या प्रसाद का न हो।

सर्वेक्षण

शैली की दृष्टि से सानुप्रास होने के कारण सरोज मे उद्धृत छद अयोध्या प्रसाद वाजपेयी 'औध' के छन्दो के पूर्ण मेल मे है और सरोजकार का भ्रम ठीक प्रतीत होता है। सम्वत् १८९६ उक्त वाजपेयी जी का रचनाकाल भी है, जैसा कि हम पीछे चार सख्या पर देख चुके हैं। विनोद मे (२५३०) विजावर के रहने वाले अयोध्या प्रसाद 'औघ' कायस्थ कवि का भी उल्लेख है जो सम्वत् १९४५ मे उपस्थित थे। यह कायस्थ और उक्त वाजपेयी 'औघ' से भिन्न है।

९।१५

(९) अयोध्या प्रसाद शुक्ल, गोला गोकरन नाथ, जिला खीरी, सम्वत् १९०६ मे उ०। यह कुछ विशेष उत्तम कवि तो नही थे, हा कविता करते थे और वहुतेरे ग्रन्थ इनके वनाये मैंने देखे हैं। राजा भूड के यहा इनका वडा मान था।

सर्वेक्षण

अयोध्या प्रसाद शुक्ल के सम्वन्ध मे विशेष कोई जानकारी उपलब्ध नही हो सकी है। सरोज मे उद्धृत सवैये मे इनकी छाप जोधी है।

१०।१८

(१०) आनन्दसिह, नाम दुर्गासिह, अहवन दिकोलिया, जिला सीतापुर विद्यमान है। सामान्य कवि हे। अभी कोई ग्रन्थ नही वनाया।

सर्वेक्षण

कवि का मूल नाम दुर्गासिह है। इनका एक ग्रन्थ पहलाद चरित्र मिला है[1]। यह ग्रन्थ सम्वत् १९१७ मे लिखा गया था पर सरोजकार को इसका पता न था। खोज रिपोर्ट के अनुसार दुर्गासिह जी ग्रन्थ प्राप्ति के समय (१९२३ ई० मे) जीवित थे। वे उस समय लगभग १०० वर्ष के थे। उक्त ग्रन्थ उन्ही के पुस्तकालय से प्राप्त हुआ था। उस समय उनके वडे पुत्र ७५ वर्ष के हो चुके थे। विनोद के अनुसार (सख्या २०९२) दुर्गासिह की मृत्यु ७० वर्ष की वय मे हुई। रिपोर्ट के अनुसार विनोद का यह कथन ठीक नही है। मिश्र वन्धुओ की भेट दुर्गासिह जी से हुई थी और उन्होने इनके वहुत से छन्द सुने थे। दुर्गासिह जी जमीदार थे। इनकी समस्या पूर्तियाँ 'काव्य सुधाकर' मे छपा करती थी।

---

[1] खोज रिपोर्ट १९२३।१०९

११।१६

(११) अमरेस कवि, सम्वत् १६३५ मे उ० । इनकी कविता वहुत उत्तम है। कालिदास जू ने अपने हजारे मे इनकी कविता वहुत सी लिखी है।

सर्वेक्षण

कालिदास के हजारे मे इनकी कविता थी, अत इनके सम्वन्ध मे अधिक से अधिक यही कहा जा सकता है कि यह सम्वत् १७५० के पूर्व उपस्थित थे। इनकी कवितायें दिग्विजय भूषण मे भी है और वहुत उत्कृष्ट हैं। खोज से इनके सम्वन्ध मे कोई सूचना नही मिलती।

१२।१०

(१२) अम्वुज कवि सम्वत् १८७५ मे उ०। इनके नीति सम्वन्वी कवित्त और नखशिख वहुत सरस है।

सर्वेक्षण

अम्वुज महाकवि पद्माकर के पुत्र थे। इनके दूसरे भाई का नाम मिही लाल था। पद्माकर का जीवनकाल सम्वत् १८१०-९० वि० है। अत सम्वत् १८७५ अम्वुज का रचनाकाल ही है। अम्वुज की वंश-परम्परा यह है[1] :—

अम्वुज का असल नाम अम्वा प्रसाद है[2]।
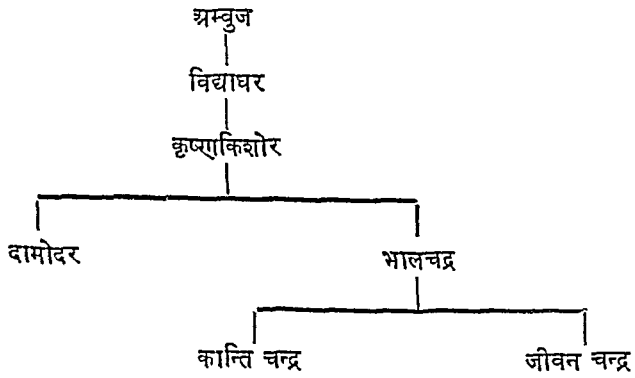
१३।११

(१३) आजम कवि, सम्वत् १८६६ मे उ०। यह मुसलमान कवि कविता के चाहक थे और कवियों के सत्सग मे सुन्दर काव्य करते थे। इनका वनाया हुआ नखशिख और षट्ऋतु अच्छा है।

सर्वेक्षण

दिल्ली के मुगल वादशाह मुहम्मद शाह रँगीले की आज्ञा से आजम खाँ ने नवरस सम्वन्धी

---

[1] माधुरी, माघ १९९०, 'महाकवि पद्माकर' शीर्षक लेख, लेखक पद्माकर के वंशज भालचन्द्र
[2] यही ग्रथ, सख्या १५५

श्रृंगार दर्पण[१] नामक ग्रन्थ लिखा। आश्रयदाता एवम् कवि दोनो हिन्दी प्रेमी मुसलमान है। इस ग्रन्थ मे कुल ३१७ छन्द है और पृष्ठ सख्या ५४ है। रिपोर्ट मे आदि के १, २, ३, ४, ५, २० और अत के ३१६, ३१७ सख्यक छन्द उद्धृत है। ये सभी दोहे है। प्रतीत होता है ग्रन्थ दोहो मे ही लिखा गया है। सरोज मे इनका एक श्रृंगारी कवित्त दिया हुआ है। श्रृंगार दर्पण की रचना सम्वत् १७८६ वि०, जेठ सुदी २, रविवार को हुई .—

सत्रह सै पुनि छियासिह सम्वत् जेठ सु मास
द्वैज सुदी रविवार को कीन्हों ग्रन्थ प्रकास ॥२०॥

अतः सरोज मे दिया हुआ सम्वत् १८६६ पूर्णतया अशुद्ध है। विनोद (१८२३), ग्रियर्सन (६४८) और हिन्दी के मुसलमान कवि मे १८६६ को जन्म काल माना गया है जो और भी भ्रष्ट है।

१४।१२

(१४) अहमद कवि सम्वत् १६७० मे उ०। इनका मत सूफी अर्थात् वेदान्तियो से मिलता-जुलता था। इनके दोहा-सोरठा वहुत ही चुटीले रसीले है।

सर्वेक्षण

अहमद आगरे के रहने वाले थे। इनका उपनाम ताहिर था। यह सम्वत् १६१८-७८ वि० के लगभग वर्तमान थे। सभा की खोज मे इनके निम्नलिखित ५ ग्रन्थ मिले है :—

(१) अहमद वारहमासी—१६३२।२। इस ग्रन्थ मे साल के प्रत्येक महीने मे विरहिणी की दशा और अन्त मे मिलन का हृदयग्राही वर्णन है।

(२) कोकसार —१६०६।३१६, १६२०।२ बी०। इसी ग्रन्थ का दूसरा नाम गुणसागर (१६०६।३३५, १६२०।२ ए, बी) भी है।

(३) रति विनोद भाषा—१६४१।४७३

(४) रस विनोद १६२३।५ यह भी औषधियो और कामशास्त्र सम्वन्धी ग्रन्थ है।

(५) सामुद्रिक १६१७।२

कोकसार का रचनाकाल सम्वत् १६७८ आपाढ वदी ५ है .—

सम्वत् सोरह सै वरस अठहत्तरि अधिकाय
वदि अषाढ तिथि पचमी कहि कीन्हीं समुझाय—१६०६।३१६

उस समय जहाँगीर राज्य कर रहा था .—

चारि चक्र सव विधि रचे जैसे समुद गभीर
छत्र धरे अविचल सदा राज्य साहि जहँगीर ॥१२॥—१६२०।२ वी

सामुद्रिक ग्रन्थ का रचनाकाल सम्वन्धी दोहा भी ऊपर वाला ही है। जहागीर सम्वन्धी दोहे भी इस ग्रन्थ मे ज्यो के त्यो है।

कोकसार और सामुद्रिक के रचनाकाल (सम्वत् १६७८ वि०) से स्पष्ट है कि सरोज मे दिया हुआ सम्वत् १६७० अहमद का रचनाकाल ही है।

अहमद सूफी थे पर इनका झुकाव विपमता की ओर भी था। इनकी अधिकतर रचनाये

---

[१] खोज रि० १६०६।११

वामना सिक्त हैं। अधिक खोज करने पर बहुत सम्भव है कि रति विनोद भाषा और रस विनोद ये दोनों भी कोकसार के ही अन्य नाम सिद्ध हो।

१५।१३

(१५) अनन्य कवि (१) सम्वत् १७१० मे उ०। वेदान्त सबधी तथा नीति चेतावनी सामयिक वार्ता मे इनकी बहुत कविता है।

सर्वेक्षण

१५, ३०, ३१, ३६ सख्यक चारो अनन्य वस्तुतः एक ही है। इनका पूर्ण विवरण सख्या ३० पर देखिये।

सरोज मे अनन्य (१) के तीन छन्द (दो कवित्त और एक सवैया) उद्धृत हैं। उक्त सवैया सभा द्वारा प्रकाशित अनन्य ग्रन्थावली के अन्तर्गत सकलित ज्ञान योग (ज्ञान पचासा) का प्रथम छन्द है और ज्ञान योग अक्षर अनन्य का सर्व स्वीकृत ग्रन्थ है।

१६।२१

(१६) आलम कवि (१) सम्वत् १७१२ मे उ०। पहले सनाढ्य ब्राह्मण थे। पीछे किसी रँगरेजिन के इश्क मे मुसलमान होकर मुअज्जमशाह (शाहजादे शाहजहा बादशाह) की खिदमत में बहुत दिनो तक रहे। कविता बहुत सुन्दर है।

सर्वेक्षण

सरोज मे आलम के निम्नाकित दो छन्द उद्धृत हैं :—

(१) आलम ऐसी प्रीति पर सरबस दीजे वारि
गुप्त प्रकट कैसी रहै दीजै कपट पिटारि

(२) जानत औलि किताबनि को जो निसाफ के माने कहे हैं ते चीन्हे
पालत हौं इत आलम को, उत नीके रहीम के नाम को लीन्हें
मोजम शाह तुम्हें करता करिबे को दिलीपति है वर दीन्हे
काबिल हैं ते रहैं कितहूँ कहूँ काबिल होत है काबिल कीन्हे

द्वितीय छन्द मे आलम शब्द संसार के अर्थ मे प्रयुक्त हुआ है। शिवसिंह ने प्रमाद से इसे कवि की छाप समझ लिया है और चूँकि इसमे मोजम शाह की प्रशस्ति है, इसलिये आलम को मोजम शाह का दरबारी कवि मान लिया है। मोज्जमशाह औरगजेब का बेटा था, उसी की प्रतिकृति था। इसका एक नाम शाह आलम भी था। यह औरङ्गजेब की मृत्यु के अनन्तर बहादुरशाह के नाम से दिल्ली की गद्दी पर बैठा। इसने १७०७ ई० से १७१२ ई० तक राज्य किया। शिवसिंह ने आलम का रचनाकाल १७१२ माना है। यह १७१२ वस्तुत. इसी बहादुरशाह के शासन का अतिम वर्ष है। यह विक्रम-सम्वत् नही है, ई० सन् है, और आलम के समय का अनुमान शिवसिंह ने बहादुरशाह के मृत्युकाल से लगाया है परन्तु मूल आधार ही भ्रान्त है, अत भूल स्वाभाविक है। उक्त छन्द आलम का न होकर उक्त मुअज्जमशाह के दरबारी कवि लाला जैतसिंह महापात्र का है। जैतसिंह सम्वत् १७०३ वि० मे उत्पन्न हुये थे। उन्होंने सम्वत् १७२७ वि० मे माजम प्रभाव नामक अलकार ग्रन्थ उक्त मुअज्जमशाह के नाम पर लिखा था और सम्वत् १७६२ मे प्रबोध चन्द्रोदय का अनुवाद किया था। उक्त सवैया भी १७६२ के आसपास कभी बना रहा होगा। शिवसिंह की इस भ्रान्ति

ने हिन्दी साहित्य के इतिहास मे वडी गडवडी उत्पन्न कर दी है। लोगो ने दो आलमो की कल्पना कर ली है। एक अकवरकालीन और दूसरे १७१२ मे उपस्थित। वस्तुतः आलम एक ही हुए। इनका रचनाकाल सम्वत् १६४० ई० से लेकर सम्वत् १६८० तक है।

आलम के लिखे हुये चार ग्रन्थ है—(१) माधवानल कामकन्दला, (२) श्याम सनेही, (३) सुदामा चरित्र, (४) आलम केलि।

ऊपर उद्धृत दोहा माधवानल कामकन्दला का है। इसकी रचना ९९१ हिजरी (१५८३ ई०, १६४० वि०) मे हुई। इसके ग्रन्थारम्भ मे अकवर और टोडरमल का भी समसामयिक के रूप मे उल्लेख हुआ है।

सरोज मे शेख की भी कविता है। पर शिवसिंह नही जानते थे कि शेख स्त्री थी और यह वही रँगरेजिन थी, जिसके इश्क मे आलम आलम हुये। डा० भवानी शकर याज्ञिक का अभिमत है कि 'शेख' किसी स्त्री का नाम होना असगत है। वस्तुतः आलम 'शेख' जाति के थे। इनका पूरा नाम 'शेख आलम' था। यह अपनी छाप कभी-कभी 'आलम' और कभी-कभी 'शेख' रखा करते थे। आलम के प्राचीन हस्त लेखो मे "इति शेख आलम के कवित्त सम्पूर्ण" जैसी पुस्तिकाएँ भी मिलती हैं[१]।

प्रो० प० विश्वनाथ प्रसाद जी मिश्र ने 'आलम और उनका समय[२]' शीर्षक निवन्ध मे एक आलम की स्थापना की है और शिवसिंह के भ्रम से उत्पन्न हिन्दी साहित्य के इतिहासो मे आलम सम्बन्धी भ्रान्तियो का पूर्णरूपेण मूलोच्छेद कर दिया है। पहले एक ही आलम माने जाते थे। सन् १९०४ ई० की खोज मे माधवानल कामकन्दला की पहली हस्तलिखित प्रतिलिपि मिली और रचनाकाल सम्वत् १६४० के आधार पर दो आलमो की सदेहात्मक धारणा प्रारम्भ हुई।

१७।२३

(१७) असकन्दगिरि, वादा, बुन्देलखण्डी स० १९१६ मे उ०। यह कवि गोसाईं हिम्मत वहादुर के वश मे थे, और कविता के वडे चाहक गुण-ग्राहक थे। नायिका भेद का एक ग्रन्थ 'अस्कन्द विनोद' नाम वहुत अद्भुत रचा है।

सर्वेक्षण

स्कन्दगिरि का 'रस मोदक' नाम, ग्रन्थ खोज मे मिला है[३]। यह कोई रस-ग्रन्थ प्रतीत होता है। इसका रचनाकाल सम्वत् १९०५ वि० है। रचनाकाल सम्बन्धी दोहा हस्तलिखित प्रति मे आधा फट गया है। उसका उपलब्ध अश इस प्रकार है :—

(द) स नौ सै औ पाँच को, सम्वत्
(भादव मास) . (।) शुक्ल पच्छ द्वादसि रचौ
(रस मोदक पर) कास ॥२॥

प्रतिलिपि काल भी सम्वत् १९०५ ही है। अत. स्पष्ट है कि सम्वत् १९१६ उपस्थिति काल है, न कि उत्पत्ति काल।

१८२४

(१८) अनूपदास कवि, सम्वत् १८०१ मे उ०। शान्त-रस मे वहुधा इनके कवित्त, दोहा, गीत आदि देखे गये।

---

[१] पोद्दार अभिनन्दन ग्रंथ, पृष्ठ ३००-३०१ [२] नागरी प्रचारिणी पत्रिका, वर्ष, ५०, अंक १, संवत् २००२ [३] खोज रिपोर्ट १९०५।३२

सर्वेक्षण

विनोद मे १८ सख्यक अनूपदास और ४३ सख्यक अनूप के एक ही व्यक्ति होने की सम्भावना की गई है, क्योकि दोनो के समय मे केवल तीन वर्ष का अन्तर है। विनोद की यह सम्भावना ठीक हो सकती है। खोज मे इनका कोई पता नही।

१९।२५

(१९) ओली राम कवि, सम्वत् १६२१ मे उ०। कालिदास जी ने इनका काव्य अपने हजारे मे लिखा है।

सर्वेक्षण

कालिदास के हजारे मे इनकी कविता थी, अत इनका १७५० के पूर्व होना निश्चित है। इनका ठीक-ठीक समय नही बताया जा सकता। खोज मे इनका कोई ग्रन्थ नही मिला है।

२०।२६

(२०) अभयराम कवि वृन्दावनी, सम्वत् १६०२ मे उ०। ऐज़न। (कालिदास जी ने इनका काव्य अपने हजारे मे लिखा है।)

सर्वेक्षण

अभयराम की कविता हजारे मे थी, अत यह सम्वत् १७५० के पूर्व उपस्थित थे। विनोद मे इनका जन्म काल सम्वत् १५९१ और रचनाकाल सम्वत् १६२५ माना गया है। राजस्थान रिपोर्ट[1] मे एक अभयराम सनाढ्य है जो भारद्वाज कुल, सनाढ्य जाति, करैया गोत्रीय केशवदास के पुत्र एवम् रणथम्भौर के समीपवर्ती वैहरन गाँव के रहने वाले थे। यह सब उल्लेख इन्होने बीकानेर नरेश अनूपसिंह के नाम पर लिखित अपने 'अनूप शृगार' नामक ग्रन्थ मे किया है। अनूपसिंह ने प्रसन्न होकर इन्हे कविराज की उपाधि दी थी। इस ग्रन्थ की रचना अगहन सुदी २ रविवार, सम्वत् १७५४ को हुई थी। यह अभयराम भी कालिदास के समकालीन है। हो सकता है इन्ही की कविता हजारे मे सकलित हुई रही हो। ऐसी स्थिति मे सरोज का सम्वत् अशुद्ध है। अभमराम जी राधा-वल्लभ सप्रदाय के थे। यह जाति के ठाकुर थे। इनकी एक रचना 'श्री वृन्दावन रहस्य विनोद' वृन्दावन से सम्वत् २००९ मे प्रकाशित हुई है।

२१।२७

(२१) अमृत कवि, सम्वत् १६०२ मे उ०। अकबर बादशाह के यहा थे।

सर्वेक्षण

सरोजकार को अमृत का नाम सम्भवत अकबरी दरबार के कवियो के नामोल्लेख करने वाले सवैये से मिला :—

पूरबी, प्रसिद्ध, पुरन्दर, ब्रह्म, सुधारस अमृत, अमृत बानी १६०२ ई० हैं, न कि विक्रमी सम्वत्, और यह कवि का उपस्थिति काल है, क्योकि १६०५ ई० मे तो अकबर की मृत्यु हो गई थी। १६०२ मे उत्पन्न होने वाला कवि उसका दरबारी नही हो सकता।

[1] राजस्थान रिपोर्ट, भाग २, पृष्ठ १६

विनोद मे अमृत को महाभारत का रचयिता माना गया गया है जो पूर्णरूपेण भ्रामक है। महाभारत की रचना करने वाले अमृत पटियाला नरेश महाराज नरेन्द्र सिंह के यहा थे[1]।

२२।२८

(२२) आनन्द घन कवि दिल्ली वाले, सम्वत् १७१५ मे उ०। इस कवि की कविता सूर्य के समान भासमान है। मैंने कोई ग्रन्थ इनका नही देखा। इनके फुटकर कवित्त प्राय. पाच-सौ तक मेरे पुस्तकालय मे होगे।

सर्वेक्षण

२२ सख्यक आनन्दघन और २१२ सख्यक घन आनन्द एक ही कवि है। हिन्दी साहित्य मे तीन आनन्द घन है :—

(१) नन्दगाँव वासी आनन्द घन—यह सोलहवी शती के उत्तरार्द्ध मे हुये। इनके रचे दो ही चार पद है।

(२) जैन आनन्द घन—यह सत्रहवी शती के उत्तरार्द्ध मे हुये। इन्होंने जैन तीर्थंकरो के स्तवन मे 'आनन्द घन वहत्तरी स्तवावली' लिखा है।

(३) वृन्दावन वासी आनन्द घन—यह अट्ठारहवी सदी के उत्तरार्द्ध मे हुये। यह कृष्णगढ के राजा सावन्तसिंह, सम्बन्ध नाम नागरी दास के समकालीन थे। यही हिन्दी साहित्य मे प्रसिद्ध है। इन्ही का उल्लेख सरोज मे हुआ है और प्रमाद से दो बार हुआ है। पर सरोज के इन दोनो कवियो के काल मे सौ वर्ष का अन्तर आ गया है।

सरोज मे आनन्द घन के नाम पर निम्नाकित दो सवैये है :—

(१)

आपुहो ते तन हेरि हँसे तिरछे करि नैनन नेह के चाउ मै
हाय दई सु विसारि दई सुधि, कैसी करौ सु कहौ कित जाउँ मै
मीत सुजान, अनीति कहा यह, ऐसी न चाहिये प्रीत के भाउ मै
मोहनी मूरति देखिवे को तरसावत हौ बसि एकहि गाउ मै

(२)

जैहै सबै सुधि भूलि तुम्है फिरि भूलि न मोतन भूलि चितैहैं
एक को आँक वनावत मेटत, पोथिय काँख लिये दिन जैहैं
साँची हौं भाखति मोहि कका की सौं पीतम की गति तोरिहु ह्वैहै
मोसों कहा अठिलात अजासुत, कैहौं कका जी सों तोहू सिखैहैं

और घन आनन्द के नाम पर निम्नाकित सवैया उद्धृत है :—

गाइहौं देवी गनेश महेश दिनेसहि पूजत ही फल पाइहौ
पाइहौ पावन तीरथ नीर सुनेकु जही हरि को चित लाइहौ
लाइहौ आछे द्विजातिन को अरु गोधन दान करौं चरचाइहौं
चाइ अनेकन सौं सजनी घन आनन्द म तहिं कठ लगाइहौ।

श्री विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने उक्त तीनो छन्दो की छान-बीन की है। उनके अनुसार प्रथम सवैया घनानन्द का ही है, यद्यपि यह सुधासर नामक सग्रह मे सुजान के नाम से चढा हुआ है। दूसरा

---

[1] विनोद २१०६।१

सवैया घनानन्द का नही है, यह केशव-पुत्र-वधू की रचना है। सभा के हस्तलेख सग्रह सख्या ८५९ के १२५वें पृष्ठ पर यही एक सवैया केशव-पुत्र-वधू के नाम पर दिया हुआ है। तीसरा सवैया घनानन्द के किसी सग्रह मे नही मिलता। मिश्र जी के अनुसार यह रीतिकालीन किसी कविन्द का छन्द है और घन आनन्द मीतहि का विशेषण है। उक्त ८५९ सख्यक हस्तलेख वस्तुतः कालिदास हजारा का अशपूर्ण रूप है। उक्त हस्तलेख मे आनन्द घन के ७ छन्द सकलित करने के अनन्तर केशव-पुत्र-वधू का एक छन्द दिया गया है। शिवसिंह ने आनन्दघन के ७ छन्दो मे से १ छन्द सरोज मे ले लिया, पर अनवधानता के कारण वे केशव-पुत्र-वधू वाले छन्द को भी आनन्दघन के नाम पर चढा गये।

घनानन्द मुगल सम्राट् मुहम्मद शाह रँगीले (१७१९-४८ ई०, १७७६-१८०५ वि०) के मुन्शी थे। दरबार की एक मुसलमान वेश्या पर, जिसका हिन्दू नाम सुजान राइ था, जो सुन्दरी, गायिका, नर्तकी एवम् कवियित्री थी, यह अनुरक्त थे। बादशाह के आग्रह पर न गाकर, सुजान राय के अनुरोध मात्र पर, उसकी ओर मुँह और बादशाह की ओर पीठ कर इन्होने दरबार मे गाया था। बादशाह इनके सगीत पर मुग्ध हुआ, पर गुस्ताखी पर रुष्ट भी। अत इनको प्राणदण्ड न देकर दरबार से निर्वासित कर दिया। सुजान साथ न आई, केवल उसका नाम साथ आया। यह वृन्दावन मे आकर रहने लगे पर सुजान को न भूले। इन्होने सुजान को राधाकृष्ण का पर्याय बना दिया। सम्वत् १८१७ मे यह अहमद शाह अब्दाली के आक्रमण मे वृन्दावन मे मारे गये। यह निम्बार्क सम्प्रदाय मे दीक्षित हुये थे। 'वृन्दावन देव' इनके गुरु थे। सम्प्रदाय के अन्तर्गत इनका नाम 'बहुगुनी' था।

श्री विश्वनाथ प्रसाद मिश्र जी ने सम्पूर्ण घन आनन्द ग्रथावली का बडे श्रम से सम्पादन और प्रकाशन किया है। इसमे कुल छत्तीस ग्रथ है एवम् ग्रथान्त मे प्रकीर्णक के अन्तर्गत फुटकर रचनायें हैं। ग्रन्थ के आदि मे अत्यन्त शोध पूर्ण भूमिका भी लगी हुई है। इसी भूमिका के आधार पर ऊपर का सब विवरण दिया गया है।

आनन्द घन के सम्बन्ध मे दिया हुआ १७१५, ई० सन् है और उनका रचनाकाल है। शुक्ल जी इनका जन्मकाल सम्वत् १७४६ के लगभग मानते हैं।

२३।२९

(२३) अभिमन्यु कवि, सम्वत् १६८० मे उ०। इनकी कविता शृगार-रस मे चोखी है।

सर्वेक्षण

विनोद के अनुसार (कवि सख्या ३४४) अभिमन्यु के बनाये हुये कुछ छद खानखाना की प्रशसा के भी मिले है। और यदि खानखाना वही प्रसिद्ध पुरुष हो तो अभिमन्यु के कविता काल के और भी पहले होने की सम्भावना की गई है। खानखाना नाम से और कोई व्यक्ति ऐसा नही हुआ है, जिसके लिये हिन्दी के कवियो ने प्रशस्तियाँ लिखी हो। नि.सदेह अभिमन्यु के कवित्तो मे सु-प्रसिद्ध अब्दुर्रहीम खानखाना की ही प्रशसा है। खानखाना की मृत्यु, सम्वत् १६८३ के फाल्गुन मास मे हुई। दोनो की सम-सामयिकता को ध्यान मे रखते हुये सम्वत् १६८० को उपस्थिति काल ही मानना चाहिये।

२४।३०

(२४) अनन्त कवि, सम्बत् १६९२ मे उ०। नायिका-भेद का इनका एक ग्रन्थ अनन्तानन्द है।

सर्वेक्षण

खोज मे किसी अनन्त कवि के ७० शृगारी कवित्त-सवैयो का एक ग्रन्थ 'कवित्त संग्रह' मिला है[1]। रिपोर्ट मे उसके तीन छद भी उद्धृत हे। ग्रन्थ मे न तो रचनाकाल दिया है, न प्रतिलिपि काल ही। यह फुटकर छन्दो का सग्रह है। सम्भवत. यह कवित्त सग्रह सरोज मे उल्लिखित अनन्तानन्द के रचयिता इन्ही अनन्त कवि का है। सरोज मे इस कवि के दो सवैये उद्धृत है। दोनो उपजाति हे, शुद्ध नही। एक छद मे कवि ने अपना नाम तृतीय चरण के प्रारम्भ मे ही रख दिया है, जो सारे छन्द के प्रवाह के मेल मे नही वैठता और भद्दा लगता है।

मन मोहन है जिन वे सुख दीने, इतै चितयो चित भूलि न जैये
और सुनो सखी मीत (? रीत) मिताई की, मंत जो बेचै तौ वेचे विकैये
अनन्त हँसे ते हँसै विचचक्खन, रूपै हँसें ते गँवारि कहेये
मान करौ तै करौ घरी आध लौ, प्यारी बलाय ल्यों, सोह न खैये

ऐसा ही त्रुटिपूर्ण उक्त रिपोर्ट का पहला छन्द भी है .—

एक सहो इत को सतराहतु औ मुहि ढोस लगावतु ओऊ
अनन्त कहा इतै मान हमारो, कहा करिहै दुख मानिकै कोऊ
इतैं तो स्याम उतै है वे भामिनि, आपुहि आपु महारस होऊ
तिहारेव बीच परे सोइ बावरी, हौं तुम एक पटा पढे दोऊ

ध्यान देने की वात है कि दोनो सवैये एक ही प्रसग (मान) वाले भी हैं।

२५।३१

(२५) आदिल कवि, सम्वत १७६२ मे उ०। फुटकर काव्य है। कोई ग्रन्थ देखा सुना नही।

सर्वेक्षण

इनके सम्वन्ध मे खोज रिपोर्टें मौन है।

२६।३२

(२६) अलीमन कवि, सम्वत १९३२ मे उ०। सुन्दरी तिलक मे इनके कवित्त है।

सर्वेक्षण

अलीमन के सम्वन्ध मे दिया हुआ सम्वत् १९३३ इस वात के प्रवल प्रमाणो मे से एक है कि उ० का अर्थ उत्पन्न नही, उपस्थित है। सुन्दरी तिलक मे कवित्त है ही नही, सभी सवैये है। अलीमन के भी सवैये इसमे है।

---

[1] खोज रिपोर्ट १९२३।१७

२७।३३

(२७) अनीश कवि, सम्वत् १९११ मे उ० । दिग्विजय भूषण मे इनके कवित्त हैं ।

सर्वेक्षण

अनीश का एक ही छन्द दिग्विजय भूषण मे है, वही सरोज मे भी उद्धृत है । विनोद के अनुसार (कवि सख्या ७१६-१७) दलपत राय वशीधर के 'अलकार रत्नाकर' मे भी अनीस की रचना है । कहा नही जा सकता कि वहाँ भी यही प्रसिद्ध कवित्त है अथवा इसके अतिरिक्त और भी कुछ छन्द हैं । अलकार रत्नाकर का रचनाकाल सम्वत् १७९८ विक्रमी है । अत. १९११ न तो जन्म काल हो सकता है और न रचनाकाल ही । निश्चय पूर्वक इतना ही कहा जा सकता है कि यह कवि १७९८ के आस-पास या कुछ पूर्व उपस्थित था ।

२८।३४

(२८) अनुनैन कवि, सम्वत् १८९६ मे उ० । इनका नखशिख अच्छा है ।

सर्वेक्षण

सर्वेक्षण के लिये कोई सूत्र सुलभ नही । विनोद मे (२१३२) इनका जन्मकाल १८८६ दिया गया हे, पर यह १८९६ के स्थान पर प्रमाद से हो गया है और विनोद मे ग्रियर्सन (६७३) का अनुसरण कर सरोज-दत्त सम्वत् को जन्मकाल ही माना गया है ।

२९।३६

(२९) अनाथदास कवि, सम्वत् १७१६ मे उ० । इन्होने शान्त रस सम्वन्धी काव्य लिखा है और विचारमाला ग्रन्थ वनाया है ।

सर्वेक्षण

अनाथ दास के तीन ग्रन्थ खोज मे मिल चुके हें :—

(१) विचारमाला १९०६।१२९ वी, २६५ , १९०९।७ , १९२०।८ वी, प० १९२२।७ ए, वी, १९२३।१९, ४१, १९२६।१५ ए, वी, १९२९।१५, ए, वी, सी, डी, ई, एफ, जी, १९४१।३ क, ख, विचारमाला की रचना सम्वत् १७२६ मे हुई ।

सत्रह सै छब्बीस, सवत माघव मास शुभ
मो मति जितक हुतीस, तेतिक वरनी प्रकट कर —२।१९२६।१५ ए

इस ग्रन्थ की रचना कवि ने अपने मित्र नरोत्तमपुरी की आज्ञा से की है :—

पुरी नरोत्तम मित्रवर, खरो अतिथि भगवान्
वरनी माल विचार में, तेहि आज्ञा परमान —४२।१९२३।४१

अनाथ दास के अन्य नाम जन अनाथ और अनाथ पुरी भी हैं । पुरी शब्द सूचित करता है कि यह सन्यासी हो गये थे । विचार माला की एक प्रति की पुष्पि मे इन्हे स्पष्ट रूप से सन्यासी कहा गया है ।

"इति श्री विचारमाला अनाथ पुरी सन्यासी कृत ।"—१९२६।१५ ए ।

(२) राम रत्नावली १९०६।१२८ ए ।

(३) प्रबोध चन्द्रोदय नाटक १९०९।१३१, १९१२।७, १९२०।८ ए, १९२९।१५, १९४१।३ क, ख। यह वस्तुत. नाटक नही है, एक वर्णनात्मक काव्य है।

कीर्ति वर्मन चदेल (१०५२-१११५ ई०) के सभाकवि कृष्ण मिश्र रचित इसी नाम के सस्कृत नाटक के अनुसार यह ग्रन्थ लिखा गया है। मूल सस्कृत नाटक मे कर्णदेव (१०४२ ई०) के दोषो और वेदान्त-दर्शन का विवेचन है। इस हिन्दी ग्रन्थ मे केवल वेदान्त-दर्शन है[१]। इसी का एक अन्य नाम सर्वसार उपदेश भी है।

प्रबोध चन्दोदय का रचनाकाल क्वार बदी ११ बुधवार, सम्वत् १७२० है .—

सम्वत सत्रा सै गये, वर्ष विन्स निरधार
अस्विन मास रचना रची, सारासार निरधार —१९२०।८ ए

१९१२ वाली रिपोर्ट मे षष्टविंश पाठ है। इसके अनुसार इसकी रचना सम्वत् १७२६ मे हुई। यह ग्रथ १२ दिनो मे रचा गया और दो दिनो मे शोधा गया :—

द्वादस दिन मे ग्रन्थ यह, सर्वसार उपदेश
जन अनाथ बरनन कियो, कृपा सो अवध नरेश
सोधत लागो दिवस द्वै, सिद्ध भयो रुचि ग्रन्थ
बॉह पकरि जो लै चलै, अगम मुक्ति को पथ —१९२०।८ ए

ग्रन्थ-रचना के पश्चात् ही अनाथ दास जी ने दीक्षा ली .—

सोधत मास उभय (गये), भये कछुक दिन और
जन अनाथ श्रीनाथ को, सरनहि पायो ठौर —१९१२।७

अनाथ दास के गुरुदेव का नाम हरिदेव थ '—

श्री गुरु सुख मगल करन, आनॅद तहॉ वसन्त
कीरति श्री हरिदेव की, मुद भरि सदा कहन्त —१९२०।८ ए

यह हरिदेव जी मौनी बाबा के नाम से भी प्रख्यात थे —

पद बन्दन आनन्द युत, कर श्रीदेव मुरारि
विचार माल बरनन करूँ, मौनी जी उरधारि १८२०।८ बी

खोज रिपोर्ट के अनुसार जन अनाथ ने सर्वसार उपदेश की रचना किसी राजा मकरन्द के कहने पर की[२]। पर इसका कोई प्रमाण नही दिया गया है। इस जन अनाथ को इस रिपोर्ट मे अनाथदास से भिन्न माना गया है, जो ठीक नही। विनोद मे (५२०) इन्हे १९०९ की रिपोर्ट के आधार पर दादू पथी कहा गया है, यह भी ठीक नही है। यह रामानुज सम्प्रदाय के वैष्णव थे। विनोद मे सर्वसार, उपदेश और प्रबोध चन्द्रोदय तीन ग्रन्थ माने गये है। सर्वसार और उपदेश दो अलग नाम नही है, ग्रन्थ का पूरा नाम है सर्वसार उपदेश। यह प्रबोध चन्द्रोदय का ही दूसरा नाम है। विनोद मे जन अनाथ (४५२) को अनाथ दास से भिन्न माना गया है, यह भी भ्रम ही है।

३०।३७

(३०) अक्षर अनन्य कवि, सम्वत् १७१० मे उ०। शान्त रस का काव्य लिखा है।

सर्वेक्षण

अक्षर अनन्य कायस्थ सन्यासी थे। यह पृथ्वी सिंह के आश्रित थे। अपने ग्रन्थो मे कवि ने

[१] खोज रिपोर्ट १९२०।८ ए [२] खोज रिपोर्ट १९०९।१३१

पृथ्वी सिंह को पृथि चन्द नाम से स्मरण किया है। पृथ्वी सिंह दतिया के राजा दलपत राव (शासन काल सम्वत् १७४०–६४ वि०) के पुत्र थे। यह दलपत राव की तीसरी रानी, वरछा पमार की पुत्री गुमान कुवरि के गर्भ से उत्पन्न हुये थे। दतिया की गद्दी दूसरी रानी, नोनेर की चाद कुवरि के पुत्र रामचन्द्र को मिली। पृथ्वी सिंह को सेनुहडा की जागीर से सतोप करना पडा। इनको सम्वत् १७६६ वि० मे आजमशाह के आक्रमण के समय जहाँदार शाह के सेनापति के रूप मे ख्याति मिली थी। अक्षर अनन्य ने पृथ्वी सिंह को नरेश कहा है। पर यह केवल आदि सूचक है। पृथ्वी सिंह स्वय सुकवि थे और हिन्दी साहित्य मे 'रसनिधि' के नाम से प्रख्यात है। अक्षर अनन्य बुन्देल खड मे अत्यन्त लोक प्रिय थे। उनके ग्रन्थो के हस्तलेख दतिया, चरखारी, विजावर आदि दरवारो के पुस्तकालयो मे मिलते हैं।[१] अक्षर अनन्य सम्वत् १७६४ और उसके वाद अवश्य उपस्थित थे। अनुमानत. सम्वत् १७१० और १७९० उनके जन्म और मरण काल की सीमायें हैं। अक्षर अनन्य के निम्नाकित १६ ग्रन्थ खोज मे मिले है .—

(१) अनन्य प्रकाश १९०६।८ ए। कुल १०३ छद।

(२) अनुभव तरग १९२६। २ ए। नीति और अध्यात्म सम्बन्धी विभिन्न प्रकार के १०१ छद।

(३) उत्तम चरित्र १९०४।१४ ए, १९०६।२ एच, १९२३।७ डी० एफ० जी० अथवा
दुर्गापाठ भाषा १९२६।१४ ए
अथवा,
सुन्दरी चरित्र १९२३।७ ई, १९२६।१४ जी, १९४७।१ ग। तीन नामो वाला यह ग्रन्थ प्रसिद्ध दुर्गा सप्तशती का ३१५ छदो मे अनुवाद है।

(४) ज्ञान पचासा (अनन्य पचासिका या ज्ञान योग) १९०६।२ ई। इसमे अध्यात्म सबन्धी ५० सवैये हैं।

(५) ज्ञान वोध या ज्ञान योग ,या सर्व उपदेश १९०६।२ डी, १९२३।७ ए
अथवा,
शिक्षा १९२०।४ सी,
अथवा,
वीआन वोध (? ज्ञानवोध) १९४७।१ क। इस ग्रन्थ मे अध्यात्म शिक्षा सम्बन्धी कुल १४ छद हैं।

(६) देव शक्ति पचीसी १९०६।२ जी, १९०६।८ सी। इस ग्रन्थ मे दुर्गा की प्रशस्ति २८ छदो मे है। इसको शक्ति पचीसी भी कहते है।

(७) प्रेम दीपिका १९०५।१, १९०६।२ सी, १९२०।४ ए, १९२६।१४ वी,सी, ई। यह वडा ग्रन्थ है। इसमे भ्रमरगीत और कुरुक्षेत्र मे पुर्नमिलन वर्णित है।

(८) ब्रह्म ज्ञान १९०६।८ डी।

(९) भवानी स्तोत्र १९०६।२ आई। इस ग्रन्थ मे केवल ८ छद हैं।

(१०) योग शास्त्र १९०६।२ के इस ग्रन्थ मे २८ छद हैं।

(११) राज योग १९०५।२, १९२६ क २ वी,१९२०।४वी, १९२३।७वी, सी, १९४७।१ ख। इस ग्रन्थ मे कुल ३१ छद हैं। १९२० वाली प्रति मे ८० छद हैं।

[१] खोज रि० १९२०।४

(१२) विज्ञान योग १६२३।७ एच ।

(१३) विवेक दीपिका १६०६।८ बी । इसमे ७० छद है ।

(१४) वैराग तरग १६०६।२ जे । इस ग्रन्थ मे कुल १७ छद है ।

(१५) सिद्धान्त बोध १६२६।१४ ई, एफ । इसमे कुल १६७ छद है ।

(१६) कविता १६०६।२ एफ ।

विनोद मे (४३६) अक्षर अनन्य के १५ ग्रन्थो की सूची दी गई है, जिनमे से निम्नाकित ४ का खोज मे पता नही चला है :—

(१) ज्ञान बोध, (२) हर सवाद भाषा, (३) योगशास्त्र स्वरोदय, (४) श्री सरस मजावली । सम्भवतः खोज मे प्राप्त ऊपर उल्लिखित दसवा ग्रन्थ ही योगशास्त्र स्वरोदय है ।

अक्षर अनन्य के कुछ ग्रन्थ प्रकाशित भी हो चुके हैं । १६१३ ई० मे ठाकुर सूर्यकुमार वर्मा ने अनन्य ग्रन्थावली का सम्पादन करके सभा से प्रकाशित कराया था । इस ग्रन्थावली मे निम्नाकित लघु ग्रन्थ है :—

(१) राज योग, (२) ज्ञान योग या ज्ञान पचीसी, (३) विज्ञान योग या ज्ञान बोध, (४) विज्ञान बोध ।

इनमे से विज्ञान बोध को छोड सभी सभा की खोज मे मिल चुके है । लाला सीताराम जी ने भी प्रेम दीपिका को सम्पादित कर हिन्दुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग से प्रकाशित कराया था ।

३१।२२

(३१) अनन्य कवि (२) दुर्गा जी का भाषा अनुवाद किया है ।

सर्वेक्षण

१५,३०,३१,३६ सख्यक कवि एक ही है । उक्त दुर्गा जी के भाषा अनुवाद की कई प्रतियाँ उत्तम चरित्र, दुर्गा पाठ भाषा, सुन्दरी चरित्र आदि नामो से खोज मे मिल चुकी है । इनका विवरण सख्या ३० पर पीछे दिया जा चुका है ।

३२।९

(३२) अब्दुल रहिमान दिल्ली वाले, सम्वत् १७३८ मे उ० । यह कवि मुअज्जम शाह के यहाँ थे और यमक शतक नामक ग्रन्थ अति विचित्र बनाया है ।

सर्वेक्षण

सरोज मे यमक शतक के ५ दोहे उद्धृत है । इनमे से निम्नाकित दो, कवि-जीवन पर भी प्रकाश डालते है :—

साजत छत्रपती सुपति दिल्लीपति जु प्रवीन
चकता आलमशाह सुत कुतुबदीन पद लीन २
काको मनसजदा जगत कवि अब्दुल रहिमान
कवि ईश्वर ईश्वर कियो, कियो ग्रन्थ अभिराम ३

इन दोहो से स्पष्ट है कि कवीश्वर अब्दुल रहिमान दिल्लीश्वर मुअज्जमशाह (कुतुबद्दीन शाह आलम बहादुरशाह) के मनसबदार थे । बहादुरशाह का राज्य काल सम्वत् १७६३-६८ वि० है ।

यही इस ग्रन्थ का रचना काल होना चाहिये। यमक शतक मे १०७ दोहे है, जिनमे श्लेष, यमक और एकाक्षर छदो के उदाहरण है।

खोज रिपोर्ट के अनुसार वह मुगल बादशाह फर्रुखसीयर (शासनकाल सम्वत् १७७०-७६ वि०) के आश्रित मनसबदार थे। और इन्होने नखशिख नामक ग्रन्थ रचा था।[१]

फरके फरुखसेर सुलतान वर सुन्दर सुभट सुजान
ताको मनसबदार सुभ कवि अबदुर रहमान २

इनका उपनाम प्रेमी था। नखशिख के कवित्तो मे 'रहमान प्रेमी' छाप है। आगे इन्ही का वर्णन प्रेमी यमन मुसलमान दिल्ली वाले के नाम से भिन्न कवि समझ कर किया गया है। इन्हे अनेकार्थ नाम मालाकोष का रचयिता एवम् सम्वत् १७९८ मे उ० कहा गया है। यमन यवन का विकृत रूप है और मुसलमान अर्थ देता है। सरोज मे दिया हुआ ऊपर वाला सम्वत् १७३८ ई० सन् प्रतीत होता है और कवि की पूर्ण प्रौढावस्था का द्योतक है।

३३।२

(३३) अमर दास कवि, सम्वत् १७१२ मे उ०। सामान्य काव्य है। कोई ग्रन्थ इनका देखा सुना नही।

सर्वेक्षण

अमरदास का नाम अम्मर दास और अम्बर दास भी है। खोज मे इनके एक ग्रन्थ भक्त विसदावली की अनेक प्रतिया मिली है।[२] रिपोर्टों मे भक्त विसदावली के कर्त्ता की, सरोज मे उल्लिखित इन्ही अमरदास मे अभिन्नता स्थापित की गई है, जो ठीक प्रतीत होती है। इस ग्रन्थ का रचनाकाल चैत्र शुक्ल ७, सम्वत् १७५२ है।

जो नेन[२] सर[५] रिषि[७] चद[१] है
सो जानु संवत छद है
मधुमास उजरो मास है
तिथि सत्तमी को सास है—१९२६।६ बी

कवि के गुरु का नाम परसराम प्रतीत होता है —

गुरु परम परमानन्दनम्
श्री परसराम मन रजन १९२६।६ बी।

सरोज मे दिया हुआ सम्वत् १७१२ कवि के जीवन का प्रारम्भिक काल प्रतीत होता है। इसी के आस-पास इनका जन्म हुआ रहा होगा।

विनोद मे (९०) इन्हे नानक का शिष्य कहा गया है, जो पूर्णतया भ्रमपूर्ण है।[३] सिक्ख गुरुओ मे एक अमरदास अवश्य हुये है, पर सरोज वाले अमरदास उनसे भिन्न है।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९०३।५० (२) खोज रिपोर्ट १९०६।१३६, १९२०।५, १९२६।८ ए, बी, १९२६।९ ए, बी (३) खोज रिपोर्ट १९२०।४

३४।१७

(३३) अगर कवि, सम्वत् १६२६ मे उ० । नीति सम्वन्धी कुण्डलिया, छप्पय, दोहा इत्यादि वहुत वनाये है ।

सर्वेक्षण

मेरा अनुमान है अगर प्रसिद्ध स्वामी अग्रदास हे । इस नाम का कोई दूसरा कवि नही हुआ । ग्रियर्सन मे भी (४४) यही सम्भावना की गई है । अग्र का मुख सुख के अनुसार अगर हो जाना अत्यत स्वाभाविक है । फिर अगर का हस्तलेखो मे आ जाना भी असभव नही । अग्रदास स्वामी का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ 'कुण्डलिया हितोपदेश उपखाण वावनी' है । इसकी एक प्रति का विवरण विहार राष्ट्र भापा परिपद् द्वारा प्रकाशित 'प्राचीन हस्तलिखित पोथियो का विवरण,' दूसरा खड, सख्या १०४ पर है । इस ग्रथ की प्रत्येक कुण्डलिया मे 'अगर' ही छाप है ।

३५।१६

(३५) अग्रदास, गलता, जयपुर राज्य के निवासी सम्वत् १५९५ मे उ० । इनके वहुत पद राग सागरोद्भव राग कल्पद्रुम मे है । ये महाराजा कृष्णदास पय अहारी के शिष्य थे । और इन महाराज के नाभादास भक्तमाल ग्रन्थ कर्त्ता शिष्य थे ।

सर्वेक्षण

प्रसिद्ध रामानन्द के शिष्य अनन्तानन्द थे । अनन्तानन्द के शिष्य कृष्णदास पय अहारी हुये । यह अष्टछाप वाले कृष्णदास अधिकारी से भिन्न हे । इनकी गद्दी जयपुर के निकट गलता (गालवाश्रम) मे थी । कृष्णदास पय अहारी के शिष्य अग्रदास जी थे । यह वाल्यावस्था मे शरणागत हुए थे । पय अहारी जी की मृत्यु के अनन्तर अग्रदास ने जयपुर के निकट रैवासा मे अपनी गद्दी स्थापित की । इन्ही अग्रदास जी के शिष्य नाभादाम जी थे । शुक्ल जी ने अग्रदास को सम्वत् १६३२ मे उपस्थित माना है ।[१] सरोज मे दिया हुआ सम्वत् १५९५ अग्रदास जी का प्रारम्भिक जीवन काल है ।

अग्रदास जी के दो ग्रन्थ हैं—कुण्डलिया और ध्यान मजरी । इन ग्रन्थो की अनेक प्रतियाँ खोज मे मिल चुकी है । कुण्डलिया का मूल नाम 'हितोपदेश उपखाणा वावनी' था । स्पष्ट है कि इस ग्रन्थ मे ५२ कुण्डलियाँ है और प्रत्येक मे कोई न कोई उपखान (उपाख्यान लोकोक्ति) प्रयुक्त हुआ है । वाद मे कुण्डलियो की सख्या वढती गई । किसी प्रति मे ५२, किसी मे ५४ (१९०३।५), किसी मे ६८, किसी मे ७१ (१९२०।१ ए) और किसी मे ७६ (१९१७।१) तक छद मिलते हे । इसी को हितोपदेश उपाख्यान भी कहते है । १९२०।१ वाली प्रति मे इसी ग्रन्थ को कुण्डलिया रामायण कहा गया है, जो ठीक नही, क्योकि इस ग्रन्थ मे रामचरित्र है ही नही ।

ध्यान मजरी मे अयोध्या, सरयू, राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, आदि का ध्यान वर्णित है । इस ग्रन्थ मे रोला छद के १५८ चरण है । इसी को राम ध्यान मजरी भी कहते है ।[२] खोज रिपोर्ट १९०६।२१ ए, १९२०।१ वी १९२३।४, १९२६।४ ए, वी, सी, १९२९।३ ए, वी, सी, और १९३१।३ मे इसका उल्लेख ध्यान मजरी नाम से हुआ है ।

शुक्ल जी ने अपने सुप्रसिद्ध इतिहास मे अग्रदास जी के चार ग्रन्थ माने हे जिनमे से

(१) हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ १४६ (२) खोज रिपोर्ट १९००।७७, पं० १९२२।१

हितोपदेश उपखाणा बावनी और कुण्डलिया एक ही ग्रन्थ है। इसी प्रकार ध्यान मञ्जरी और राम ध्यानमञ्जरी भी एक ही ग्रन्थ है। खोज मे अग्रदास जी का अन्य ग्रन्थ राम जेवनार भी मिला है। ग्रन्थ मे कवि छाप है[1]—

"अगरदास धन धन्य सुनैना वार वार सीतावर की"

इनका एक अन्य ग्रन्थ गुरु अष्टक भी खोज मे मिला है।[2] इसमे ८ छदो मे रामानन्द की स्तुति है और नवें छद मे पाठफल। अतिम छद मे कवि छाप भी है।

श्री गुरु रामानन्द दयाला आतुर ध्याय सून समाधिनं
अक रूप तिहुँ लोक गमता श्री गुरु, चरन प्रणामिह ८
श्री गुरु अष्टक पढत निसिदिन प्राप्यते फलदायक
अग्र स्वामी चरण वदित श्री गुरु, चरन प्रणामिह ६

'श्री गुरु चरन प्रणामिह' प्रत्येक-छद के अत मे प्रयुक्त हुआ है।

रूप कला जी ने भक्तमाल की टीका मे अग्रदास के चार ग्रन्थो का उल्लेख किया है—(१) अष्टयाम, (२) ध्यान मञ्जरी, (३) कुण्डलिया, (४) पदावली।

खोज मे अष्टयाम और पदावली भी मिल चुके हैं। रिपोर्ट मे एक अष्टयाम अग्रअली के नाम से चढा हुआ है[3] जिनके प्रारम्भ मे लिखा हुआ है —

"अथ श्री सीताराम चन्द जी की अष्टजाम श्री अग्रअली कृत लिख्यते।"

पुष्पिका मे कवि का नाम नही है। यह अष्टयाम दोहा चौपाइयो मे है। खोज रिपोर्ट मे एक अष्टयाम नाभा जी के नाम से दिया गया है, जिसमे केवल पुष्पिका मे नाभा नाम आया है।[4] इन दोनो अष्टयामो का अन्तिम अश एक ही है। प्रतीत होता है यह अष्टयाम अग्रदास जी का ही है। नाभादास का भी एक अष्टयाम है, जो इनसे एकदम भिन्न है।[5] अग्रदास वाला ही अष्टयाम रामचरित्र शीर्षक से नारायणदास के नाम पर खोज रिपोर्ट मे चढा हुआ है[6]। शुक्ल जी ने इसी का एक अश नाभा की कविता के उदाहरण मे उद्धृत किया है। अग्रदास का सस्कृत भाषा मे लिखित एक अष्टयाम[7] इधर प्रकाशित हुआ है।

खोज मे अग्रदास जी का एक ग्रन्थ 'राम चरित्र के पद' नाम से मिला है।[8] यही सम्भवतः रूप कला जी द्वारा उल्लिखित अग्रदास पदावली है। ग्रन्थ मे ८७ पन्ने हैं। पदो मे अगरदास की छाप है पर पुष्पिका मे लिखा है —

"इति श्री राम चरित्र के पद स्वामी नारायण दास कृत सम्पूर्ण।"

यह लेखक के प्रमाद का स्पष्ट प्रमाण है। सरोज मे अग्रदास जी के नाम पर एक पद उद्धृत है जिसमे अग्रअली छाप है :—

"अग्र अली भजु जनक नन्दनी पाप भँडार ताप सीता की"

यह पद अग्रदास पदावली का होना चाहिये।

राम भक्ति मे रसिक सम्प्रदाय की स्थापना अग्रदास जी ने ही की। इसीलिये उन्होंने अपना नाम अग्रअली रखा। नाभादास ने अपने अष्टयाम मे स्पष्ट लिखा है —

---

(१) खोज रि० १९४७।२ (२) खोज रि० १९४४।२ (३) खोज रि० १९०६।२ (४) खोज रि० १९२०।११ (५) खोज रि० १९२३।२८९ ए (६) खोज रि० १९२३।२८९ सी (७) राम भक्ति में रसिक सम्प्रदाय, पृष्ठ ३८१ (८) खोज रि० १९०६।२०२

अग्र सुमति को बंस उदारा
अली भाव रति जुगल किशोरा—१६२३।२८६ ए

युगल प्रिया जी ने इन्हे सीता की प्रिय सखी चन्द्रकला का अवतार माना है। रसिक अली जी ने भी इसका समर्थन किया है। अग्रदास इनका शरणागति सूचक नाम है और अग्रअली इनके महती परिकर स्वरूप का। अग्र, अग्रदास, अग्रअली और अग्र स्वामी इनकी ये चार छापे हैं। नाभादास ने इन्हे बाग-प्रेमी कहा है। इनकी भेट वाटिका मे जयपुर नरेश मानसिंह से हुई थी।[1]

३६।३५

(३६) अनन्य दास चकदेवा, जिले गोंडा वासी, ब्राह्मण, सम्वत् १२२५ मे उ०। महाराजा पृथ्वीचन्द्र दिल्ली देशाधीश के यहाँ अनन्ययोग नामक ग्रन्थ वनाया है।

सर्वेक्षण

१५, ३०, ३३ और ३६ सख्यक चारो अनन्य एक ही है। महेश दत्त ने अपने भाषा-काव्य सग्रह मे अनन्यदास का विवरण इन शब्दो मे दिया है :—

"अनन्यदास—ये कान्य कुब्ज ब्राह्मण जिले गोडा ग्राम चक्यदवा के रहने वाले राजा पृथ्वीराज के समय मे थे। इन्होने अनन्ययोग नाम के ग्रन्थ बनाया। उसके देखने से विदित होता है कि अच्छे कवि थे। सम्वत् १२७५ मे वैकुण्ठ यात्रा की।"

—भाषा काव्य सग्रह, पृष्ठ १२८-२९

शिव सिंह ने अनन्यदास का विवरण इसी ग्रन्थ से लिया है। अनन्य ग्रन्थावली मे प्रथम ग्रन्थ राजयोग है। इसमे प्रारम्भ मे एक सवैया, मध्य मे २८ पद्धटिका छद और अन्त मे २ दोहे हैं। उक्त भाषा-काव्य सग्रह मे अनन्यदास की रचना 'गृहस्थ और राजाओ का योग' शीर्षक से उद्धृत है। यह उद्धरण अनन्य ग्रन्थावली मे सकलित राजयोग का उत्तरार्द्ध (१६ से लेकर २८ तक पद्धटिका छद और अतिम दोनो दोहे) है। अट्ठाईसवे छद मे अक्षर अनन्य नाम भी आया है।

यह ज्ञान भेद अरु, बेद साखि
अक्षर अनन्य सिद्धान्त भाषि २८

भाषा काव्य सग्रह मे जो अश उद्धृत है, उसमे दो वार पृथिचन्द नरेश को सम्वोधित किया गया है।

(१) सुख मारग यह पृथि चन्द राज
यहि सम न आन तम है इलाज ४ (१६)
(२) राज योग सिद्धान्त मत जानि राज पृथि चन्द
यहि सम मत नहि दूसरो खोजि शास्त्र वहु छंद १४ (१)

महेश दत्त जी ने पृथि चन्द को पृथ्वीराज चौहान समझने की भूल की और इसीलिये अनन्य दास को ५०० वर्ष पूर्व तेरहवी शताब्दि मे खीच ले गये। अक्षर अनन्य जी महेश दत्त के हाथो किस प्रकार चक्यदवा जिले गोंडा वासी कान्य कुब्ज ब्राह्मण हो गये, यह रहस्मय है। सम्भवतः कोई

---

(१) राम भक्ति मे रसिक संप्रदाय—पृष्ठ ३७६-३८१

प्रतिलिपिकार चक्यदेवा जिला गोंडा निवासी कान्यकुब्ज ब्राह्मण था और गणेश दत्त ने प्रमादवश ये सभी विशेषण अनन्यदास के समझ लिये ।

शिवसिंह ने विवरण देते समय थोडा-सा सशोधन किया । उन्होने स्पष्ट रूप से लिख दिया कि यह पृथ्वी चन्द दिल्ली देशाधीश थे । साथ ही सरोजकार ने समय मे भी ५० वर्ष का सशोधन किया । ऐसा उन्होंने पृथ्वीराज चौहान के समय (मृत्यु सम्वत् १२५० वि०) को ध्यान मे रखकर किया । शिवसिंह ने इस कवि की कविता का उदाहरण भी भाषा-काव्य सग्रह से ही दिया है, और उन्होंने ध्यान रखा है कि वही अश उद्धृत किया जाय, जिसमे पृथि चन्द नाम आया है ।

ग्रियर्सन ने (५) सदेह किया है कि अनन्यदास बीकानेर के पृथ्वीराज के समकालीन थे, जो सोलहवी शताब्दि में हुये थे । ग्रियर्सन के ही आधार पर खोज रिपोर्ट १९०४ मे प्रेम दीपिका का विवरण देते समय अनन्य को बीकानेर वाले, अकबर के दरबारी पृथ्वीराज का सम-सामयिक माना गया है । यह सब पूर्णतया भ्रम है । विनोद मे (१९४) भी सदेह प्रकट किया गया है :—

"भाषा बिल्कुल आधुनिक है और उस समय (सम्वत् १२२५) की नहीं हो सकती । जान पडता है पृथ्वी चन्द नाम से सरोजकार को पृथ्वीराज का भ्रम हो गया, अत. उन्होने इतना प्राचीन सम्वत् लिख दिया । यह कवि जी वास्तव मे अक्षर अनन्य है ।"

सन्देह रहते हुए भी ग्रियर्सन और मिश्र बन्धुओ ने इस कवि को १२२५ के आस-पास अपने इतिहासो मे स्थान दिया, यह आश्चर्य-जनक है ।

ऊपर वाले पृथ्वी चन्द वस्तुत. सेनुहडा के जागीरदार पृथ्वी चन्द थे, जो रसनिधि नाम से कविता भी लिखते थे ।

३७।३८

(३७) आस करनदास कछवाह, राजा भीम सिंह नरवर गढ वाले के पुत्र, सम्वत् १६१५ मे उ० । पद बहुत बनाये हैं, जो कृष्णानन्द व्यासदेव के सगृहीत ग्रन्थ मे मौजूद है ।

सर्वेक्षण

आसकरन दास जी का विवरण नाभादास जी ने भक्तमाल के इस छप्पय मे दिया है :—

धर्म शील गुन सींव, महा भागौत राज रिषि
पृथ्वीराज कुलदीप, भीम सुत विदित कील्ह सिषि
सदाचार अति चतुर, विमल बानी रचना पद
सूर धीर उद्दार, विनय भलपन भक्तनि हद
सीतापति राधा सु वर, भजन नेम कूरम धर्यौ
(श्री) मोहन मिश्रित पद कमल, आस करन जस विस्तर्यौ १७४

इस छप्पय के अध्ययन से आसकरन जी के सम्बन्ध मे निम्नाकित सूचनायें मिलती हैं । यह परम वैष्णव राजा थे । प्रियादास जी ने इन्हे नरवर पुर का राजा कहा है —

नरवर पुर ताकौ राजा नरवर जानौ
मोहन जू धरि हिये सेवा नीके करी है

यह कूर्मवशी (कछवाहे) थे । जयपुर नरेश भक्त पृथ्वीराज कछवाहा के वशज थे । भीम के सुत और कील्ह के शिष्य थे । कील्ह दास अग्रदास के गुरुभाई थे । आसकरन जी मधुर पदो की रचना

करने वाले सुकवि थे तथा राम एवम् कृष्ण दोनो की आशा करने वाले थे। इनके पदो मे कवि नाम के साथ भगवान का नाम 'मोहन' भी निरन्तर प्रयुक्त हुआ है .—

"आस करन प्रभु मोहन तुम पर वारौं तन मन प्रान अकोर सरोज"

मैंने आसकरन जी के १९ पद सकलित किये है जिनमे से १४ पदो मे 'आसकरन प्रभु मोहन नागर' छाप है। आसकरन दास का उल्लेख 'आईन अकबरी' मे अबुलफजल द्वारा दी हुई प्रभावशाली सामन्तो तथा राजाओ की सूची मे हुआ है। इनकी कथा २५२ वैष्णवो की वार्ता मे भी है। गुसाई विट्ठलदास जी से इन्होने सेवा विधि-सीखी थी।[1]

भक्तमाल की रचना सम्वत् १६४९ मे हुई। यदि सम्वत् १६१५ को आसकरन दास जी का जन्म सम्वत् माना जाता है, तो उस समय तक इनकी अवस्था २४ वर्ष की ही होती है, जो प्रसिद्धि-प्राप्त भक्त होने के लिये बहुत कम है। अत. सम्वत् १६१५ इनका जन्म काल नही हो सकता। कवि का जन्म १६०० वि० से पहले ही किसी समय होना चाहिये। अकबर की मृत्यु १६०५ ई० मे हुई थी। १६१५ ई० सन् भी हो सकता है जो कवि का उपस्थिति-काल सूचित करता है।

३८।X

(३८) अमर सिंह हाडा जोधपुर के राजा सम्वत् १६२१ मे उ०। यह महाराज अमर सिंह श्री हाडा वशावसत सूर सिंह के पौत्र है, जिन सूर सिंह ने छ लाख रुपये एक दिन मे छह कवियो को इनाम मे दिये थे, और जिनके पिता गजसिंह ने राजपूताने के कवियो को धनाधीश कर दिया था। राजा अमर सिंह की तारीफ मे जो बनवारी कवि ने यह कवित्त कहा है कि "हाथ की बडाई की बडाई जमधर की"—इसकी बाबत टाड साहब की किताब 'टाड राजस्थान से हम कुछ लिखते है :—

"प्रकट हो कि राजा अमर सिंह हाडा महागुण ग्राहक और साहित्य शास्त्र के बडे कदरदान और खुद भी महाकवि थे। इन्ही महाराज ने पृथ्वीराज रायसा चन्द कवि कृत को सारे राजपूताने मे तलाश कराकर उनहत्तर खड तक जमा किया, जो अब सारे राजपूताने मे बडे-बडे पुस्तकालयो मे मौजूद है। शाहजहाँ बादशाह के यहाँ अमर सिंह का मनसब तीन हजारी था। अमर सिंह बहुधा सैर-शिकार मे रहा करते थे। इसलिये एकदफे शाहजहाँ ने नाराज होकर कुछ जुर्माना किया और सलावत खा बखशी उलमुल्क को जुर्माना वसूल करने को नियत किया। अमर सिंह महाक्रोधाग्नि से प्रज्वलित हो दरबार मे आये। पहले एक खजर से सलावत खाँ का काम तमाम किया, पीछे शाहजहाँ पर भी तलवार आबदार झाडी। तलवार खम्भे मे लगी। बादशाह तो भाग बचे। अमर सिंह ने पाँच और बडे सरदार मुगलो को मारा। आप भी उसी जगह अपने साले अर्जुन गौर के हाथ से मारे गये।" विस्तार के भय से मैंने सक्षेप लिखा है।

सर्वेक्षण

अमर सिंह हाडा नही थे, यह राठौर थे। यह कवि के रूप मे ख्यात नही हैं। सरोज मे दी हुई घटना परम प्रख्यात है। अमर सिंह शाहजहाँ के दरबार मे थे। यह घोडे पर चढ किले के बाहर

---

(१) अकबरी दरबार के हिन्दी कवि—पृष्ठ ३९

कूद आए थे और वच गए थे, मारे नही गए थे। शाहजहाँ ने सन् १६२८ ई० से १६५८ ई० तक राज्य किया। अमर सिंह जोधपुर के राजा नही थे। यह अपनी उद्दडता के कारण जोधपुर से सन् १६२४ ई० मे अपने पिता द्वारा निकाल दिये गये थे। इसी समय यह शाहजहाँ के दरबार मे आये।[1] अत. १६३४ और १६५८ ई० के वीच कभी यह घटना हुई थी। सरोज मे दिया हुआ १६२१ वि० सम्वत् नही हो सकता। यदि यह विक्रम सम्वत् है तो इस सन् १५६४ ई० मे अमर सिंह की उपस्थिति असभव है। अमर सिंह की मृत्यु शाहजहाँ के दरवार मे आने के प्रथम वर्ष मे भी मान ली जाय और सम्वत् १६२१ को जन्म काल तो ७० वर्ष की वय मे यह दुःसाहस पूर्ण घटना सभव नही। ऐसी स्थिति मे १६२१ वि० सवत् न होकर ई० सन् है और यह अमर सिंह का जन्म-काल न होकर उनका उपस्थिति काल है। विनोद के अनुसार (४७५) अमर सिंह का जन्म सम्वत् १६९० मे हुआ। यह जोधपुर नरेश गज सिंह के वडे पुत्र और भाषाभूषण के रचयिता जसवतसिंह के वडे भाई थे। इनका जन्म सम्वत् १६७० मे हुआ था। रासो का सकलन चित्तौर नरेश अमर सिंह (महाराणा प्रताप के पुत्र) ने कराया था।

३९।

(३९) आनन्द कवि सम्वत् १७११ में उ०। कोकसार और सामुद्रिक दो ग्रन्थ इनके वनाये हैं।

सर्वेक्षण

आनन्द के निम्नलिखित चार ग्रन्थ खोज मे मिले हैं —

(१) कोक मजरी—१९२६।१० वी। इस ग्रन्थ से ज्ञात होता है कि यह हिसार (पजाब) के रहने वाले कायस्थ थे और इन्होने कोक म जरी नामक ग्रन्थ की रचना सम्वत् १६६० मे की। ऐसी स्थिति मे सरोज मे दिया हुआ सम्वत् १७११ अशुद्ध है।

> कायथ कुल, आनन्द कवि, वासी कोट हिसार
> कोक कला इति रुचि करन जिन यह कियो विचार
> ऋतु वसत सम्वत सरस सोरह सै अरु साठ
> कोक मजरी यह करी धर्म कर्म करि पाठ

१९२६ वाली रिपोर्ट मे इस ग्रन्थ की ११ प्रतियो के विवरण है, जिनसे ज्ञात होता है कि कोकसार, कोक म जरी और कोक विलास ये तीन नाम उक्त ग्रन्थ के है।

(२) इन्द्रजाल १९२३ १३ ए।

(३) आसन म जरी १९२९।११ एच।

(४) वचन विनोद—राजस्थान रिपोर्ट द्वितीय भाग। इस ग्रन्थ की पुष्पिका से ज्ञात होता है कि यह भटनागर कायस्थ थे और इनका पूरा नाम आनन्द राय था —

"इति आनन्द राय कायस्थ भटनागर हिसारि कृत वचन विनोद समाप्त।"

इस ग्रन्थ से ज्ञात होता है कि यह सुप्रसिद्ध कवि एवम् राम-भक्त कासी वासी गोस्वामी तुलसीदास जी के शिष्य थे।

---

(१) ग्रियर्सन कवि सख्या १६१ (२) जोधपुर राज्य का इतिहास, पृष्ठ ४०२

नमो कमल दल जमल पग श्री तुलसी गुरु नाम
प्रगट जगत जानत सकल जहँ तुलसी तहँ राम २
कासी वासी जगत गुरु अविनासी रस लीन
हरि दरसन दरसत सदा जल समीप ज्यों मीन ३

वचन-विनोद का प्रतिलिपिकाल सम्वत् १६७९ वि० है। अत. यह ग्रन्थ उस समय के पहले किसी समय रचा गया होगा। यह भूषण सम्बन्धी ग्रन्थ है और इसमे कुल १२५ छद है।

ये भूषन दूषन समुझि, रचै जू कवि जन छंद
ताहि पढ़त अति सुख वढत, श्रवन सुनत आनन्द १२४

४०।

(४०) अम्बर भाट, चौजीतपुर, बुन्देल खडी, सम्वत् १९१० मे उ०।

सर्वेक्षण

सर्वेक्षण के लिए कोई सूत्र सुलभ नही। १९१० उपस्थिति-काल है, क्योकि इसके २५ वर्ष बाद ही सरोज की रचना हुई।

४१।

(४१) अनूप कवि, सम्वत १७९८ मे उ०।

सर्वेक्षण

विनोद मे (६५५) इनके १८ सख्यक अनूपदास होने की सभावना की गई है। देखिये, सख्या १८।

४२।

(४२) आकूब खाँ कवि, सम्वत् १७७५ मे उ०। रसिक प्रिया का तिलक बनाया है।

सर्वेक्षण

याकूब खा का एक ग्रन्थ रस-भूषण सभा की खोज मे मिला है।[1] इसमे रचनाकाल आदि कुछ भी नही दिया गया है। विनोद के अनुसार (६७३) सरोज मे दिया हुआ सम्वत् १७७५ ही इस ग्रन्थ का रचनाकाल है। इसमे ५०० के लगभग छद हैं। नाम से यह रस ग्रन्थ प्रतीत होता है। विनोद के अनुसार यह अलकार ग्रन्थ है। वस्तुत. यह रस और अलकार दोनो का सम्मिलित ग्रन्थ है.—

"अलंकार संयुक्त, कहौं नायिका भेद पुनि"

इस ग्रन्थ मे एक ही छद मे साथ-साथ नायिका भेद और अलकार के उदाहरण तथा लक्षण दिये गये हैं। यथा—

लक्षण—पूरन उपमा जानि, चारि पदारथ होइ जिहि
ताहि नायिका मानि, रूपवत सुन्दर सु छवि

उदाहरण—है कर कोमल कज से, ससि दुति से मुख ऐन
कुन्दन रग पिक वचन से, मधुरे जाके बैन

---

(१) खोज रिपोर्ट १९०४।७१

कवि के अनुसार बिना अलकार के नायिका सोहती ही नही। इसीलिये वह दोनो का सम्मिलित वर्णन कर रहा है .—

अलकार बिनु नायिका सोभित होइ न आन
अलकार जुत नायिका याते कहौं बखानि

४३।

(४३) अनवर खान कवि, सम्वत् १७८० मे उ०। अनवरचन्द्रिका नाम ग्रन्थ सतसई का टीका बनाया है।

सर्वेक्षण

अनवरचन्द्रिका नाम से बिहारी सतसई को जो टीका मिलती है, वह अनवर खा की बनाई हुई नही है। नवाब अनवर खा की आज्ञा से यह टीका शुभकरण तथा कमलनयन नामक दो कवियो ने मिलकर की थी। मङ्गलाचरण वाले छप्पय मे शुभकरण का नाम आया है।

प्रभु लम्बोदर चारन वदन, विद्या मय बुधि वेद मय
सुभ करन दास इच्छित करन, जय जय जय शकर तनय

अनवर खा की प्रशस्ति की एक कवित्त मे कोल नैन की भी छाप है —

सीखत सिपाही त्यों सिपाहगिरी कौल नैन
काम तरु, दान सीखे तजि अहमेव जू
करै को जवाब अनवर खाँ नवाब जू सौं
और सब शिष्य एक आप गुरुदेव जू

प्रथम प्रकाश मे इन कवियो ने मगलाचरण, अनवर खा की वशावली और ग्रन्थ रचना का कारण तथा काल आदि दिया है।

अनवर खा जू कविन सौ आयसु कियो सनेहु
कवित रीति सब सतसया मध्य प्रगट करि देहु १०

ग्रन्थ की रचना सम्वत् १७७१ वि० मे हुई .—

ससि[१] ऋषि[७] ऋषि[७] ससि[१] लिखि लखौ सम्वत्सर सविलास
जामै अनवरचन्द्रिका कीन्हों बिमल विकास ११

टीकाकारो ने अनवर खा की विस्तृत वशावली दी है, पर न तो उनका निवास-स्थान दिया है और न अपना कुछ परिचय।[१] खोज के अनुसार यह राजगढ (भोपाल) के पठान सुलतान नवाब मुहम्मद खा के कनिष्ठ भ्राता थे[२], और यह टीका कुण्डलियो मे है।

अनवरचन्द्रिका की रचना सम्वत् १७७१ मे हुई, अत सरोज मे दिया हुआ सम्वत् १७८० उपस्थिति-काल ही है।

४४।

(४४) आसिफ खाँ कवि, सम्वत् १७३८ मे उ०।

(१) बिहारी सतसई सम्बन्धी साहित्य—जगन्नाथदास रतनाकर, नागरी प्रचारिणी पत्रिका, वैशाख १९८९। (२) खोज रिपोर्ट १९०६।२०

सर्वेक्षण

सर्वेक्षण का कोई सूत्र सुलभ नही।

४५।

(४५) आछेलाल भाट, कनौज वासी, सम्वत् १८८९ मे उ०।

सर्वेक्षण

सर्वेक्षण का कोई सूत्र सुलभ नही।

४६।

(४६) अमर जी कवि, राजपूताने वाले, राजपूताने मे ये कवीश्वर महानामी हो गुजरे हैं। ाड साहव ने राजस्थान मे इनका जिक्र किया है।

सर्वेक्षण

टाड मे इस कवि का उल्लेख है, अत' यह सम्वत् १८८० के पूर्व किसी समय उपस्थित था। ायर्सन ने (७९९) इस कवि को खोजने पर भी टाड मे नही पाया।

४७।

(४७) अजीतसिंह राठौर उदयपुर के राजा, सम्वत् १७८७ मे उ०। इन महाराज ने राजरूप ा ख्यात नामक एक ग्रन्थ वहुत वडा वशावली का वनवाया है। इस ग्रन्थ मे वशावली जयचंद राठौर हाराज कन्नौज की तब से प्रारम्भ की है, जब नयनपाल ने सम्वत् ५२६ मे कन्नौज को फते करके जयपाल राजा कन्नौज का वध किया था। तब से लेकर जयचन्द तक सब हालात लिख, फिर दूसरे ाड मे राजा यशवतसिंह के मरण अर्थात् सम्वत् १७३५ तक के सब हाल लिखे हैं। तीसरे खड मे ्यं वश जहा से प्रारम्भ हुआ, वहाँ से यशवतसिंह के पुत्र अजीतसिंह के वालेपन अर्थात् १७८७ तक ा वर्णन किया है।

सर्वेक्षण

अजीतसिंह राठौर उदयपुर के राजा नही थे, जोधपुर के राजा थे। यह भाषाभूषण के सिद्ध रचयिता जोधपुर नरेश महाराज यशवत सिंह के पुत्र थे, जिनकी मृत्यु कावुल मे सम्वत् १७३५ हुई थी। पिता की मृत्यु के तीन मास पश्चात् अजीतसिंह का जन्म हुआ था। यह पैदा होते ही ाजा हुये। राठौरो ने तीस वर्ष तक युद्ध करके इनको औरगजेब के चगुल से वचाया था। इन्होंने म्वत् १७८१ वि० तक राज्य किया। इनका वल वढता देख दिल्ली के मुगल वादशाह मुहम्मदशाह इनके वडे कुमार अभयसिंह को मिलाया और अभयसिंह ने अपने छोटे भाई वखतसिंह से सम्वत् ७८१ वि० मे अजीतसिंह की हत्या करा दी। इस हत्या के सम्बन्ध मे यह दोहा प्रसिद्ध है :—

> वखता वखत जवाहिरा, क्यों मारयो अजमाल।
> हिंदवाणों को सेहरी, तुरकाणो री साल[1]॥

खोज मे अजीत सिंह के लिखे हुये निम्नलिखित ग्रन्थ मिले है :—

(१) अजीत सिंह (महाराज) जी रा कय्या दुहा—१९०२।८५। इस ग्रन्थ मे आप ने दोहो

---

(१) खोज रिपोर्ट १९०२।४०

मे अपने जन्म की कथा कही है और राक्षसो को मारने के लिये अपने को हिन्गुलाज देवी का अवतार कहा है।

(२) गुण सागर—१६०२।८३, १६३। रचनाकाल सम्वत् १७५० वि०। इसमे राजा सुमति और रानी सतरूपा की गद्य-पद्यमय उत्पाद्य कथा है। ये राजा-रानी धर्म पर आरूढ रहे और अन्त मे स्वर्ग गये।

(३) दुर्गा पाठ भाषा—१६०२।४०। दुर्गापाठ का यह अनुवाद मार्गशीर्ष सुदी १३, रोहिणी, रविवार, शक-सम्वत् १६४१ और वि० सम्वत् १७७६ मे प्रस्तुत किया गया :—

> योधन सम्वत् रिषि अलख वर पर रस मुनि भाप
> माक सिगार दवै ओस इक इक सक्र गुण दाप
> सुदि मिगनर तेरस दिवस रोहिणि सुध रविवार
> पाठ दुर्गि पूरण भयो श्री अजीत आधार

(४) दुहा श्री ठाकुरा रा—१६०२।८६। इस ग्रन्थ मे व्रजभाषा मे कृष्ण-स्तुति सम्वन्धी १७१ दोहे है।

(५) निर्वाण दुहा—१६०२।८४-८५। इसका प्रतिपाद्य विषय भक्ति है जो निर्वाण की साधिका है।

(६) भवानी सहस्र नाम—१६०२।८७। सस्कृत के देवी सहस्र नाम का सम्वत् १७६८ मे किया हुआ भाषा मे अनुवाद।

(७) गज उधार (उद्धार)— राजस्थान रिपोर्ट भाग ४।

विनोद मे (५५६) राजरूपकाख्यात की भी गणना अजीत सिंह के ग्रन्थो मे की गई है, जो ठीक नही।

अजीत सिंह की मृत्यु सम्वत् १७८१ मे हो गई थी। अत सरोज मे दिया हुआ सम्वत् १७८७ या तो अशुद्ध है अथवा प्रेस के भूतो की वदौलत अंतिम १ का ७ हो गया है। ऐसी दशा मे यह इनके वालेपन का ही सम्वत् कैसे हो सकता है।

इ (इ, ई)

४८।४२

(१) इच्छा राम अवस्थी, पचरुआ, इलाके हैदरगढ के, सम्वत् १८५५ मे उ०। व्रह्म विलास नामक ग्रन्थ वेदान्त से वहुत वडा वनाया है। यह वडे सत् कवि थे।

सर्वेक्षण

इच्छाराम कृत व्रह्म विलास से ६ दोहे सरोज मे उद्धृत हैं। इनसे से ४ कवि और उसके ग्रन्थ के सम्वन्ध मे भी प्रकाश डालते है —

> गनपति दिनपति पद सुमिरि, करिय कथा हिय हेरि
> व्रह्म विलास प्रयास विनु, वनत न लागै देरि २
> विप्र सदा महि देवता, सुचि वानी तेहि केरि
> श्रवन ने दूपन नहीं, भूपन हरि हिय हेरि ४

तीसरे दोहे मे कवि ने अपने नाम और जाति का उल्लेख किया है :—

बानी इच्छा रामकृत बिप्र वरन तन जानि
पढिहै सज्जन समुझि हिय देवगिरा परमानि ३

पहले दोहे मे ग्रन्थ का रचनाकाल श्रावण सुदी २, सोमवार, सम्वत् १८५५ दिया गया है।

सम्वत् सत दस आठ गत ऊपर पांच पचास
सावन सित दुति सोम कहँ कथा अरम्भ प्रकास १

यही सम्वत् सरोजकार ने जीवन परिचय मे दिया है, जो स्पष्ट सिद्ध करता है कि उक्त सम्वत् १८५५ कवि का रचनाकाल है।

इच्छाराम जी के निम्नाकित ग्रन्थ खोज मे मिले हैं :—

(१) गोविन्द चन्द्रिका—१६०६।२६३ ए। यह ग्रन्थ सम्वत् १८४७ वि० मे रचा गया। यह भागवत दशम स्कन्ध का भावानुवाद है। इसमे एकादशी कथा भी है।

(२) प्रपन्न प्रेमावली—१६०६।१२१ ए। इस ग्रन्थ से स्पष्ट होता है कि इच्छाराम जी रामानुज सम्प्रदाय के वैष्णव थे। ग्रन्थारम्भ मे "श्रीमते रामानुजाय नमः" है और रामानुज के चरण कमलो की वन्दना भी है।

श्रीमद्रामानुज चरन करन मगलाचर्न
असरन सरन समर्थं अति वदौं भव भय हर्न २
सानुज रवि ससि कुल तिलक सम्प्रदाय सविवेक
रामानुज यह नाम ते एक प्रनाम अनेक ३

इस ग्रन्थ की रचना सम्वत् १८२२ वि० मे हुई :—

दस वसु सै दिवि बीस पर विक्रम वर्ष उदार
क्रदम अप्टमी सिन्ध रवि प्रेमावलि अवतार ११

(३) शालिहोत्र—१६०६।१२१ वी। इस ग्रन्थ की रचना सम्वत् १८४८ मे हुई :—

एक सहस सन अष्ट पर अरतालिस अधिकाय
ऋतु बसंत पुनि जानिये इच्छादेव बताय
फागुन सित तिथि पंचमी भयो ग्रन्थ अवतार
गुन अवगुन सब अश्व के शालिहोत्र मत सार

अतिम छद मे कवि की छाप इच्छागिरि है :—

शालिहोत्र मत देखि के, भाषा कियो विचार
इच्छागिरि कवि विनय कर, बुधिजन लेहु सुधारि ३

साथ ही पुष्पिका मे भी "इच्छा गिरि गोसाई विरचित" लिखा हुआ है। लगता है कि कवि वृद्धावस्था मे सन्यासी हो गया था। पचरुआ, बाराबकी जिले की हैदरगढ तहसील मे है। विनोद मे इसी एक कवि का उल्लेख ५६५, ६३० और १०४७ सख्याओ पर तीन बार हुआ है, जो ठीक नही। तीनो कवि एक ही है।

(४) हनुमत पचीसी—१६०६।२६३ वी।

४६।३६

(२) ईश्वर कवि, सम्वत् १७३० मे उ० । यह कवि औरङ्गजेव के यहाँ थे । कविता सरस है ।

सर्वेक्षण

औरङ्गजेव के दरबार मे किसी ईश्वर कवि का पता खोज रिपोर्टो से नही चलता । औरङ्गजेव का शासनकाल सन् १६५८ ई० से सन् १७०७ ई० तक है । अत ऊपर दिया हुआ सम्वत् १७३० विक्रम सम्वत् है और कवि का रचनाकाल है । इस कवि के दो सरस सवैये सरोज मे सकलित हैं । इनमे से दूसरा प्रसिद्ध बुन्देलखडी कवि ठाकुर का है ।

औरङ्गजेव के समकालीन दो ईश्वरदास खोज मे मिले हैं । परन्तु कोई ऐसा सूत्र सुलभ नही, जिसके द्वारा सरोज मे उल्लिखित इन ईश्वर कवि से इन दोनो मे से किसी का भी तादात्म्य स्थापित किया जा सके । इनमे से पहले हैं अलकार चन्द्रोदय नामक ग्रन्थ के रचयिता रसिक सुमति के पिता, जो सम्वत् १७८५ के पूर्व उपस्थित थे और जिन्होने दोहा-चौपाइयो मे भरत मिलाप[1] नामक ग्रन्थ लिखा है । दूसरे ईश्वर दास, आगरा निवासी, खरे सक्सेना कायस्थ और लोकमणि दास के पुत्र हैं । इन्होने सम्वत् १७५६ मे गोपाचल (ग्वालियर) मे ग्रहफल विचार नामक ग्रन्थ लिखा[2] ।

५०।४०

(३) इन्दु कवि, सम्वत् १७६६ मे उ० । यह कवि सामान्य हैं ।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई भी सूचना सुलभ नही हो सकी । इस कवि के नाम पर सरोज मे जो छन्द उद्धृत है, वह वस्तुत. महाकवि भूषण का है ।[3]

५१।४१

(४) ईश्वरी प्रसाद त्रिपाठी, पीर नगर, जिले सीतापुर, विद्यमान हैं । राम विलास ग्रन्थ, वाल्मीकि रामायण का उल्था, नाना छन्दो मे काव्य रीति से किया है ।

सर्वेक्षण

ईश्वरी प्रसाद त्रिपाठी का रामविलास नामक ग्रन्थ खोज मे मिल चुका है ।[4] इस ग्रन्थ के आदि का गणेश वदना वाला जो छन्द रिपोर्ट मे उदधृत है, वही सरोज मे भी उदाहृत है । ग्रन्थ के अत से रिपोर्ट मे निम्नाकित अश उद्धृत हैं, जिसमे सरोज के विवरण की प्रामाणिकता प्रकट होती है —

यह कथा श्री रघुनाथ की ऋषि वालमीकि जो गायऊ
व्यासादि मुनि बहु भाँति कहि शिव शिवा सों समुझायऊ
तेहि बरनि भाषा छन्द मे कश्यप कुलोद्भव द्विज बरे
इश्वरी त्रिपाठी बसत सारावती सरि तट सुख भरे
लछिमन पुर तें पचजोजन पीर नगर निवास है
तहँ बरनि रामायन कलुपहर नाम राम विलास है

---

(१) खोज रिपोर्ट १९२३।१७२ (२) खोज रिपोर्ट १९२६।१५६ (३) वही अ ग, भूमिका, पृष्ठ ८१ (४) खोज रिपोर्ट १९२६।१८६

रस[६] चन्द[१] नव[९] शशि[१] शब्द मधु सुदि रामनवमी मानिकै
हरि प्रेरना ते प्रकट करि अति जक्त हित निज आनि कै
रामायन भाषा बरनि इसुरी मति अनुरूप
रीझि देउ मोहि राम सिय निज पद भक्ति अनूप

स्पष्ट है कि कश्यप कुलोद्भव ईश्वरी त्रिपाठी ने चैत सुदी ६ सम्वत् १६१६ वि० को वाल्मीकि रामायण का भाषानुवाद रामविलास नाम से प्रस्तुत किया। लछिमन पुर से अभिप्राय लखनऊ से है। पीरनगर, सीतापुर जिले की सिधौली तहसील मे है। रिपोर्ट के अनुसार रामविलास मे रामचरित मानस से भिन्न छद प्रयुक्त हुये हैं।

५२।४३

(५) ईश कवि, सम्वत् १७६६ मे उ०। शृ गार और शान्त रस की इनकी कविता बहुत ही ललित है।

सर्वेक्षण

सुधासर के अन्त मे जो नाम राशि कवि सूची है उसके अनुसार दो ईश हुये हैं। एक प्रचीन ईश, दूसरे सुधासर के सकलयिता नवीन के गुरु, जो जयपुर के निवासी थे। इस साक्षी पर एक पुराने ईश का अस्तित्व सिद्ध है, पर कोई अन्य विवरण उपलब्ध नही।

५३।४४

(६) इन्द्रजीत त्रिपाठी, वनपुरा, अतरवेद वाले, सम्वत् १७३९ मे उ०। औरङ्गजेव के नौकर थे।

सर्वेक्षण

औरगजेव के नौकर इन्द्रजीत त्रिपाठी के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही है। औरगजेव के शासनकाल को ध्यान मे रखते हुए ऊपर दिया हुआ सम्वत् १७३९ कवि का रचनाकाल है। सरोज मे इस कवि का जो छन्द उद्धृत है, वही वुन्देल वैभव मे महाकवि केशवदास के आश्रय दाता इन्द्रजीत सिंह के नाम से दिया गया है।[१]

५४।

(७) ईसुफ खाँ कवि, सम्वत् १७९१ मे उ०। सतसई और रसिक प्रिया की टीका की है।

सर्वेक्षण

खोज से ईसुफ खाँ और उनकी टीकाओ का कोई पता नही चलता। रत्नाकर जी की धारणा है कि सतसई की रसचन्द्रिका टीका के रचयिता ईसवी खाँ को ही सरोजकार ने भ्रमवश ईसुफ खाँ लिख दिया है।[२] सरोज के ही आधार पर इस कवि का उल्लेख ग्रियर्सन (४२१), विनोद, विहारी-विहार आदि ग्रन्थो मे हुआ है। किसी ने ईसुफ खाँ के ग्रन्थ को देखा नही है। ईसवी खाँ की रस-चन्द्रिका टीका चैत पूर्णिमा, गुरुवार, सम्वत् १८०९ को पूर्ण हुई —

नंद[९] गगन[०] वसु[८] भूमि[१] गुनि कीजे वरस विचार
रस चन्द्रिका प्रकाश किय मधु पून्यो गुरुवार[३]

---

(१) वुंदेल वैभव, भाग १, पृ० २०४ (२) नागरी प्रचारिणी पत्रिका, भाग ६, अंक २, श्रावण १६८५ (३) खोज रिपोर्ट १६४१।१४ ख

उ (उ, ऊ)

५५।

(१) उदयसिंह महाराज माडवार, सम्वत् १५१२ मे उ० । ख्यात नामक ग्रन्थ बनाया, जिसमे अपने पुत्र गजसिंह और अपने पोते यशवत सिंह के जीवन चरित्र लिखे हैं।

सर्वेक्षण

सरोज मे दिया हुआ सम्वत् ठीक नही है। ग्रियर्सन ने (७६) टाड के अनुसार इनको १५८४ ई० (१६४१ वि०) मे उपस्थित बताया है। साथ ही गजसिंह, उदयसिंह के पुत्र नही, पौत्र हैं एवम् यशवत सिंह प्रपौत्र हैं। ख्यात नामक ग्रन्थ स्वय उदयसिंह ने नही बनाया, किसी अज्ञात कवि ने बनाया। इसकी रचना उदयसिंह के जीवनकाल मे हुई हो, यह भी सम्भव नही।

५६।४५

(२) उदयनाथ वन्दीजन काशी वासी, सम्वत् १७११ मे उ०। उदयनाथ नाम कविन्द का भी है, जो कालिदास कवि के पुत्र और दूलह कवि बनपुरा निवासी के पिता थे।

सर्वेक्षण

सुधासर की नाम राशि कवि सूची मे दो उदय है। एक प्राचीन उदय है, दूसरे उदयनाथ कवीन्द्र। इससे सिद्ध है कि एक उदयनाथ प्रसिद्ध कविन्द से पहले हुये है। अन्य कोई सूत्र सुलभ नही हो सका है।

५७।४६

(३) उदेश भाट, बुन्देलखडी, सम्वत् १८१५ मे उ०। सामयिक कवित्त बहुधा कहे हैं।

सर्वेक्षण

इनके भी सम्बन्ध मे कोई जानकारी नही प्राप्त हो सकी है।

५८।४७

(४) ऊधो राम कवि, सम्वत् १६१० मे उ०। इनकी कविता कालिदास जू ने अपने हजारे मे लिखी है।

सर्वेक्षण

इनके सम्बन्ध मे निश्चय पूर्वक इतना ही कहा जा सकता है कि यह सम्वत् १७५० के पूर्व उपस्थित थे, क्योंकि इनकी कविता हजारे मे थी। सूचना के अन्य कोई सूत्र सुलभ नही।

५९।४८

(५) ऊधो कवि, सम्वत् १८५३ मे उ०। सामान्य कवि थे।

सर्वेक्षण

इस कवि के नाम पर सरोज मे एक कवित्त दिया गया है, जिसके तीसरे चरण मे ऊधो जू आया है।

ऊधो जू कहत हमे करने कहा री वाम
हम तो करत काम श्याम की रटन के

यह ऊधो जू कृष्ण सखा ऊधो के लिये प्रयुक्त हुआ है। हो सकता है यह कवि का भी नाम हो, परन्तु इसी एक कवित्त के सहारे इस कवि का अस्तित्व सदिग्ध ही बना रहेगा।

६०।४६

(६) उमेद कवि, सम्वत् १८५३ मे उ०। इनका नखशिख सुन्दर है। मालूम होता है यह कबि अन्तरवेद अथवा शाहजहापुर के निकट किसी गाँव के रहने वाले थे।

सर्वेक्षण

खोज रिपोर्ट १९१७।५६ मे कवि गगाप्रसाद कृत विनय पत्रिका के तिलक का विवरण है। पुष्पिका मे गगाप्रसाद को उमेद सिह का पुत्र कहा गया है :—

इति श्री मिश्रवशावतस उमेदसिहात्मज श्रीमत्पडित गगाप्रसाद विरचित विनयपत्रिका तिलक सम्पूर्णम्। शुभमस्तु॥ चैत वदी १० भौमे। १९१६॥

खोज रिपोर्ट मे इन उमेद मिश्र को सरोज वाले उमेद कवि से अभिन्न कहा गया है। रिपोर्ट मे १८५३ को जन्मकाल समझकर इनके पुत्र गगाप्रसाद का रचनाकाल १८५०ई० (१९०७ वि०) स्थिर किया गया है, जो ठीक नही। १८५३ कवि का उपस्थिति-काल ही होना चाहिये।

६१।५०

(७) उमराव सिंह, पवार सैद गाव, जिला सीतापुर, विद्यमान है। कुछ कविता करते और कवि लोगो का सत्सग रखते है।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही। ग्रियर्सन ने (७१३) सैद गाँव को सैदपुर कर दिया है और इनको 'बार्ड' कहा है। यदि बार्ड का अर्थ भाँट है तो ठीक नहीं, क्योकि उमराव सिह पँवार क्षत्रिय थे। यदि बार्ड का अर्थ कवि है तो ठीक है।

६२।

(८) उनियारे के राजा कछवाहे, सम्वत् १८८० मे उ०। भाषा भूषण और बलभद्र के नखशिख का तिलक बहुत विचित्र बनाया है। नाम हमारी किताब से जाता रहा। उनियारा एक रियासत का नाम है, जो जयपुर मे है।

सर्वेक्षण

उनियारे के राजा का नाम राव महासिह था। महासिह के आश्रय मे मनिराम कवि थे, जिन्होने उनकी आज्ञा से बलभद्र के नखशिख की टीका की[1] —

महासिह जू को हुकुम मनीराम द्विज पाय
सिखनख की टीका कियो भूल्यो लेहु बनाय

---

[1] खोज रिपोर्ट १९१२।१०८

यह टीका गद्य मे है। साथ मे मूल भी दिया गया है। इसकी रचना अगहन वदी ५, सोमवार सम्वत् १८४२ को हुई :—

अष्टादस व्यालीस है, सम्वत् मगसिर मास
कृष्ण पक्ष पाँचे सुतिथि, सोमवार परकास

मनिराम वत्तीसी देश मे तोमर कुल की वृत्ति पाकर रहते थे :—

वसत वत्तीसी देश में, तूँवर कुल की वृत्ति
जुक्लु विचारो चित्त मे कहौं सु ताकी कृत्ति

उक्त उनियारा नागर चाल मे है :—

देश सु नागर चाल मे गढ उनियारो थान
धर्म नीति राजत तहाँ कृत जुग कैसी आनि

स्पष्ट है उनियारे के राजा राव महासिंह स्वय कवि नही थे, आश्रयदाता थे। सरोज मे दिया हुआ सम्वत् १८८० ठीक नही। ग्रन्थ की रचना १८४२ वि० मे हुई। वतीसी और नागर चाल स्थानो की पहचान कठिन है। सम्भवतः चाल का अर्थ है, चकला, जिला। सरोज के अनुसार उनियारा जयपुर के अन्तर्गत है। सरोज का यह कथन ठीक हो सकता है। राव महासिंह तोमर क्षत्रिय है। सरोजकार ने जयपुर की सयोग से उनियारा के राजा को भी कछवाहा मान लिया, जो ठीक नही है। हो सकता है मनीराम ने भाषाभूषण का भी तिलक रचा रहा हो।

क

६३।५१

(१) केशवदास सनाढ्य मिश्र (१) वुन्देलखडी, सम्वत् १६२४ मे उ०। इनका प्राचीन निवास टेहरी था। राजा मधुकर शाह उडछा वाले के यहाँ आये और वहाँ इनका बडा सम्मान हुआ। राजा इन्द्रजीत सिंह ने २१ गाँव सकल्प कर दिये। तव कुटुम्ब सहित उडछे मे रहने लगे। भाषाकाव्य का तो इनको भाम, मम्मट और भरत के समान प्रथम आचार्य समझना चाहिये क्योकि काव्य के दसो अग पहले पहल इन्ही ने कविप्रिया गन्थ मे वर्णन किये। पीछे अनेक आचार्यो ने नाना ग्रन्थ भाषा मे रचे। प्रथम मधुकर शाह के नाम से विज्ञानगीता ग्रन्थ वनाया और कविप्रिया ग्रन्थ प्रवीण राय, पातुर के लिये रचा। रामचन्द्रिका राजा मधुकर शाह के पुत्र इन्द्रजीत के नाम से वनाई और रसिकप्रिया साहित्य और रामअलकृतमजरी पिंगल, ये दोनो ग्रन्थ विद्वज्जनो के उपकारार्थ रचे। जब अकवर वादशाह ने प्रवीण राय पातुर के हाजिर न होने, उदूल हुकुमी और लड़ाई के कारण राजा इन्द्रजीत पर एक करोड रुपये का जुर्माना किया, तव केशवदास जी ने छिपकर राजा वीरवल मन्त्री से मुलाकात की और वीरवल की प्रशसा मे "दियो करतार दुहूँ कर तारी" यह कवित्त पढा। तव राजा वीरवल ने महा प्रसन्न हो जुर्माना माफ कराया। परन्तु प्रवीण राय को दरवार मे आना पडा।

सर्वेक्षण

केशवदास का प्राचीन निवास टेहरी था। सरोज का अनुकरण कर केवल ग्रियर्सन ने (१३४) ऐसा उल्लेख किया है। यह टेहरी उरछा और टीकमगढ के पास ही स्थित कोई गाँव है। अक्षर अनन्य के एक ग्रन्थ ज्ञानपचासा के लाला परमानन्द, पुरानी टेहरी स्टेट, टीकमगढ के पास होने का उल्लेख खोज विवरण मे है।[१]

---

[१] खोज रिपोर्ट १९०६।२ ई०

केशवदास का जन्म सम्वत् १६१२ और मृत्यु सम्वत् १६७४ के आस पास हुई।[1] लाला भगवान दीन इनका जन्म सम्वत् १६१८ मानते है।[2]

केशवदास के पिता का नाम काशीनाथ, पितामह का कृष्णदत्त था। केशव ने यह सूचना स्वय रामचन्द्रिका के प्रथम प्रकाश मे देदी है। इनके प्रपितामह का नाम ब्रह्मदत्त था।[3] इनके वडे भाई नागेन्द्र मिश्र थे जिनका नखशिख परम प्रसिद्ध है, और छोटे भाई कल्याण मिश्र थे। कल्याण मिश्र भी कवि थे।

केशवदास जी उडछा नरेश मधुकर शाह (शासनकाल सम्वत् १६११ से १६४६ वि० तक) के आश्रय मे पहले थे। केशव का प्रथम प्रसिद्ध ग्रन्थ रसिक प्रिया इन्ही के शासनकाल मे रचा गया था। मधुकर शाह के ८ पुत्र थे। इनमे सबसे वडे रामसिंह या राम शाह थे, जिन्होने ओरछा मे १६४६ से १६६६ वि० तक शासन किया। इनके छोटे भाई इन्द्रजीत सिंह थे। इन्हे कछौआ की जागीर मिली थी। यह ओरछा के राजा नही थे जैसा कि सरोजकार को भ्रम है। इन्द्रजीत सिंह का केशव से विशेष स्नेह था। इन्होने इन्हे गुरु माना और ३१ गाँव दिये, २१ नही, जैसा कि सरोज मे लिखा गया है :—

गुरु करि मान्यो इन्द्रजित तन मन कृपा विचारि
ग्राम दये इकतीस तज ताके पाँय पखारि
—कवि प्रिया, द्वितीय प्रभाव, २०

मधुकर शाह की मृत्यु के वाद ओरछा राज्य इनके आठो पुत्रो—(१) रामसिह (२) होरिल देव (मृत्यु १६३४ वि०), (३) इन्द्रजीत (४) वीरसिंह देव (५) हरिसिह देव (६) प्रताप राव (७) रतन सिंह (८) रणसिह देव मे वँट गया। रामसिह राजा हुये, शेष सभी जागीरदार, कहने को अधीन, वस्तुतः स्वतन्त्र। केशव ने वीरसिंह देव का गुणानुवाद वीरसिंह देव चरित्र मे किया है और रतनसिंह का रतन वावनी मे।

केशवदास की भाषा काव्य का भाम कहा गया है। यह भाम नही है, भामह है। शिवसिंह पहले व्यक्ति है, जिन्होने केशव को भाषा काव्य का प्रथम आचार्य लिखा है। उनका कथन आज तक मान्य है। केशवदास के निम्नाकित ग्रथ है —

(१) रतन वावनी—इस ग्रन्थ मे कुल ५२ छद हैं। इसमे रतनसिंह के शौर्य का वर्णन है। रतनसिंह १६ वर्ष की ही वय मे अकवरी सेना से वीरतापूर्वक युद्ध करते हुये मारे गये थे। मधुकरशाह के समय मे अकवर की दो चढाइयाँ ओडछा पर हुई थी। पहली १६३४ मे जिसमे होरिल देव मारे गये थे और रामसिंह घायल हुये थे। दूसरी सम्वत् १६४५ मे। सम्भवत. इसी मे रतनसिंह मारे गये। रतन वावनी १६४५ के आसपास की ही रचना होनी चाहिये। यही केशव की प्रथम ज्ञात कृति है।

(२) रसिक प्रिया—यह रस ग्रथ है। इसकी रचना कार्तिक सुदी ७, सोमवार, सम्वत् १६४८ को हुई :—

---

[1] शुक्ल जी का इतिहास, पृष्ठ २०१ [2] केशवपंच रत्न, आकाशिका, पृष्ठ ३ [3] भाषा काव्य-सग्रह, पृष्ठ १३३

सम्वत सोरह सै वरस बीते अडतालिस
कातिक सुदि तिथि सप्तमी वार बरनि रजनीश

यह ग्रथ इन्द्रजीत के लिये बना —

इन्द्रजीत ताको अनुज,सकल धर्म को धाम ८
तिन कवि केशवदास सों कीन्हों धर्म सनेह
सब सुख दै करि यों कह्यो रसिक प्रिया करि देहु १०

—रसिक प्रिया, प्रथम प्रकाश

(३) कवि प्रिया—यह कवि शिक्षा का ग्रथ है। इसमे मुख्यतया अलकार वर्णित हैं, यो काव्य के और अग भी आ गए हैं। इसकी रचना सम्वत् १६५८ वि०, फागुन ५, बुधवार को हुई :—

प्रगट पचमी को भयो कवि प्रिया अवतार
सोरह सै अट्ठावनों फागुन सुदि बुधवार

इसकी रचना इन्द्रजीत की प्रवीण पातुर प्रवीण राय के लिये हुई थी :—

नाचत गावत पढत सब, सबै बजावत बीन
तिनमें करत कवित्त इक, राय प्रवीण प्रवीण ६०
सविता जू कविता दई, जा कहँ परम प्रकाश
ताके कारज कवि प्रिया, कीन्ही केशव दास ६१

—कवि प्रिया, प्रथम प्रकाश

(४) राम चन्द्रिका—इस ग्रथ की भी रचना सम्वत् १६५८ ही मे हुई :—

सोरह सै अट्ठावने कार्तिक सुदि बुधवार
रामचन्द्र की चन्द्रिका तब लीन्हों अवतार ६

—रामचन्द्रिका, प्रथम प्रकाश

सरोज के अनुसार रामचन्द्रिका की रचना इन्द्रजीत के नाम पर हुई, पर इसका कोई उल्लेख स्वय रामचन्द्रिका मे नहीं है।

(५) वीरसिंह देव चरित्र—यह एक अत्यत श्रेष्ठ चरित काव्य है। इसकी रचना सम्वत् १६५४ वि० के प्रारम्भ मे हुई —

सम्वत सोरह सै त्रेसठा, बीत गये प्रगटे चौसठा।
अनल नाम सबत्सर लग्यो, भाग्यो दुख, सब सुख जगमग्यो॥
रितु बसत है स्वच्छ विचार, सिद्ध जोग सातैं बुधवार।
शुक्ल पच्छ कवि केशोदास, कीनो वीर चरित्र प्रकाश॥

—खोज रिपोर्ट १९०६।५८

वीरसिंह देव ने सम्वत् १६५९ मे अबुलफजल को मारकर अकबर को रुष्ट और सलीम (बाद मे जहांगीर) को तुष्ट किया था। सम्वत् १६६२ मे अकबर की मृत्यु के बाद सलीम जहांगीर के नाम से सिंहासनासीन हुआ। उसने वीरसिंह देव को ओड़छा का राजा बनाया। केशव पर कुछ दिन विपत्ति के रहे। फिर उन्होंने इस ग्रथ की रचना कर वीरसिंह देव को तुष्ट किया और इनके दुख गये और सब सुख जगमगा गये।

(६) विज्ञान गीता—यह ग्रन्थ सम्वत् १६६७ मे बना। मधुकर शाह की मृत्यु सम्वत् १६४९ मे ही हो गई थी। अत. इनके मधुकर शाह के नाम पर बनने का जो उल्लेख सरोज मे हुआ है, वह भ्रान्त है। यह ग्रन्थ किसी के भी नाम पर नही बना है।

(७) जहागीर जस चन्द्रिका—यह ग्रन्थ सम्वत् १६६९ मे बना :—

सोरह सै उनहत्तरा माह्म मास विचारु
जहाँगीर सक साहि की करी चन्द्रिका चारु

यह ग्रन्थ सम्भवतः वीरसिह देव की प्रेरणा से रचा गया।

(८) नखशिख—यह भी इनका एक स्वतत्र ग्रन्थ कहा जाता है। कवि प्रिया मे भी चतुर्दश प्रभाव की समाप्ति पर नखशिख वर्णन है जिसमे ९६ छद है। यह स्वय अपने मे एक छोटा-मोटा ग्रन्थ है।

सम्पूर्ण केशव ग्रन्थावली का प्रामाणिक सम्पादन प० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने किया है। इसका प्रकाशन हिन्दुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग से तीन भागो मे हो रहा है जिसके प्रथम दो भाग प्रकाशित भी हो चुके है।

६४।५२

(२) केशवदास (२) सामान्य कविता है।

सर्वेक्षण

खोज रिपोर्टों मे महाकवि केशव के अतिरिक्त अन्य अनेक केशव है। केवल नाम और सरोज मे उद्धृत एक छद के सहारे इस कवि को अन्य केशवो से अलग ढूंढ निकालना असम्भव है।

६५।५३

(३) केशवराय बाबू बघेलखडी, सम्वत् १७३९ मे उ०। इन्होने नायिका भेद का एक ग्रन्थ बहुत सुन्दर बनाया है और इनके कवित्त बलदेव कवि ने अपने सगृहीत ग्रथ सत्कवि गिरा-विलास मे रखे है।

सर्वेक्षण

विनोद मे (५९३) केशवराय के दो ग्रन्थ कहे गये है—नायिका भेद और रस लतिका (द्वि० त्रै० रि०)। नायिका भेद का कोई ग्रन्थ इन्होने लिखा था, सरोजकार का ऐसा कथन है। सरोजकार ने विषय निर्देश किया है और मिश्र-बन्धुओ ने उसे ही ग्रथ का नाम मान लिया है। सरोज निर्दिष्ट नायिका भेद वाले ग्रथ का नाम 'रस ललित'[1] है, 'रस लतिका' नही। खोज रिपोर्ट मे इस ग्रन्थ का रचनाकाल नही दिया गया है, सम्भावना की गई है कि यह बघेलखडो केशवराय की ही रचना है।

६६।५४

(४) केशवराय कवि। इन्होने भ्रमर गीत नामक गन्थ रचा है।

---

[1] खोज रिपोर्ट १९०९।१४९

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई भी सूचना-सूत्र सुलभ नही।

६७।५५

(५) कुमारमणि भट्ट गोकुल निवासी, सम्वत् १८०३ मे उ०। यह कवि कविता करने मे महा चतुर थे। इन्होंने साहित्य मे एक ग्रन्थ रसिक-रसाल नाम का बनाया है जिसकी खूबी उसके अवलोकन से विदित हो सकती है।

सर्वेक्षण

रसिक-रसाल की अनेक प्रतियां खोज मे मिल चुकी है।[1] यही नही इसका एक सस्करण विद्याविभाग काकरोली की ओर से सम्वत् १९९४ मे कुमारमणि के वशज कण्ठमणि शास्त्री द्वारा सु-सम्पादित और गगा पुस्तक माला, लखनऊ से मुद्रित और प्रकाशित हुआ है। इस ग्रन्थ की भूमिका से कुमार मणि के सम्बन्ध मे निम्नाकित बातें ज्ञात होती है।

कुमारमणि भट्ट का जन्म सम्वत् १७२० और १७२५ के भीतर कभी हुआ। यह आध्रदेशीय तैलग ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम शास्त्री हरि वल्लभ भट्ट था। इनका स्थायी निवास सागर जिले का गढ पटरा नामक गाँव था। यहाँ से यह बुन्देलखड के विभिन्न रजवाडो मे जाया करते थे। दतिया के राजा रार्मासिह के यहा इनका विशेष सम्मान था। काव्य-प्रकाश के आधार पर इन्होने सम्वत् १७७६ मे रसिक-रसाल की रचना की :—

रस[६] सागर[७] रवि-तुरग[७] विधु[१] संवत् मधुर बसत
विलस्यो रसिक रसाल लखि हुलसत सुहृद बसंत

यह सस्कृत के भी कवि थे। कुमार सप्तसती इनकी आर्यायो का सकलन है। इन्होने सस्कृत कवियो की ७०० आर्याओ का भी रसिक रजन नाम से एक सकलन सम्वत् १७६५ मे प्रस्तुत किया था। इसमे इनकी भी अनेक आर्यायें हैं। सम्वत् १७७९ वि० की इनके हाथ की लिखी एक पुस्तक उपलब्ध है।

सरोज मे कुमारमणि को गोकुल निवासी कहा गया है। हो सकता है यह अपने अतिम दिनो मे गोकुल मे आ रह हों। सरोज मे इनको सम्वत् १८०३ मे उ० कहा गया है। सम्वत् १७७९ वि० तक इनके जीवित रहने का प्रमाण सुलभ है। यह सम्वत् १८०३ तक भी जीवित रहे हो, ऐसा असम्भव नही। सरोज वर्णित सम्वत् जन्मकाल कदापि नही है।

६८।६७

(६) करनेश कवि वन्दीजन असनी वाले, सम्वत् १६११ मे उ०। यह कवि नरहरि कवि के साथ दिल्ली मे अकबर शाह की सभा में जाते थे। इन्होने कर्णाभरण, श्रुतिभूषण, और भूपभूषण, ये तीन ग्रन्थ बनाए हैं।

सर्वेक्षण

नरहरि का जन्म सम्वत् १५६२ मे हुआ और ये सम्वत् १६६७ तक जीवित रहे। करनेश कवि नरहरि महापात्र के साथी थे। एक वय वालो का ही साथ होना, सुना और देखा गया है।

---

[1] खोज रि० १९०५।५, १९०६।१८६, १९२०।९०, १९२३।२२९

ऐसी दशा मे सम्वत् १६११ करनेश का जन्मकाल नही हो सकता। यह १६११ वस्तुत' ई० सन् है और कवि का रचनाकाल है, जो अकबर के शासनकाल (१६१३-६२ वि०) और नरहरि के समय को ध्यान मे रखते हुये उचित ही प्रतीत होता है, भले ही यह कवि का अतिम रचनाकाल हो।

करनेश के तीन ग्रन्थो—कर्णाभरण, श्रुतिभूषण और भूपभूषण का उल्लेख सरोज, एव सरोज के आधार पर ग्रियर्सन (११५), विनोद (१४३) तथा अन्य इतिहास-ग्रन्थो मे हुआ है, पर खोज मे आज तक इनमे से किसी का भी पता नही चला है। जैसा कि नाम से प्रकट हो रहा है, ये अलकार ग्रन्थ हैं। मेरी धारणा है कि ये तीन ग्रन्थ न होकर एक ही ग्रन्थ के विभिन्न नाम हैं। कर्णाभरण का ही पर्याय श्रुतिभूषण है। (श्रुति = कान = कर्ण)। किसी भूप, सम्भवत. अकबर से सम्बन्धित होने के कारण इसका नाम भूपभूषण भी रहा होगा। इतिहास ग्रन्थो मे इसे केशव के रीति ग्रन्थो—रसिक प्रिया (१६४८ वि०) एव कवि प्रिया (१६५८ वि०) का पूर्ववर्ती कहा गया है। पर इसका कोई पुष्ट प्रमाण नही है। अकबर का उपस्थिति-काल १६६२ वि० तक है। मेरा अनुमान है कि करनेश ने केशव की देखा देखी इस अलकार ग्रन्थ की रचना सम्वत् १६६० वि० के आस-पास किसी समय की। इसे तब तक कवि-प्रिया से पूर्ववर्त्ती न माना जाना चाहिये, जब तक वैसा मानने के पुष्ट प्रमाण न उपलब्ध हो जायँ।

कहा जाता है एक बार इनकी कविता पर प्रसन्न होकर अकबर ने कोपाध्यक्ष से कुछ पुरस्कार देने को कहा, पर वह टाल-मटोल करता रहा। इस पर खीझकर इन्होने इस कवित्त द्वारा उसे फटकारा :—

खात है हराम दाम, करत हराम काम
घट-घट तिनही के अपयश छावेगे
दोजख हू जैहै तब काटि-काटि कीडे खैहैं
खोपरी के गुदा काग टोटनि उडावेंगे
कहै 'करनेस' अब घूस खात लाज नाही
रोजा औ निमाज अत काम नहि आवेगे
कविन के मामिले में करै जोन खामी
तौन निमक हरामी मरे कफन न पावेंगे[१]

६९।५७

(७) करन भट्ट, पन्ना निवासी, सम्वत् १७९४ मे उ०। इन्होने साहित्य-चन्द्रिका नामक ग्रन्थ विहारी सतसई की टीका, श्री बुन्देलवंश वतस राजा सभासिंह हृदयशाहि पन्नानरेश की आज्ञानुसार बनाया है। पहले यह कवि काव्य पढकर एक दिन पन्ना नरेश राजा सभासिंह की सभा मे गये। राजा ने यह समस्या दी, "वदन कंपायो दावि रहना दसन सो"। इसी के ऊपर करन जी ने "बडे-बडे मोतिन की लसत नथुनी नाक" यह कवित्त पढा। राजा ने बहुत प्रसन्न होकर बहुत दान-सम्मान किया।

सर्वेक्षण

सरोज मे उल्लिखित यह करन भट्ट और ७२ सख्या पर वर्णित आगे आने वाले कर्ण ब्राह्मण

---

[१] अकबरी दरबार के हिन्दी कवि, पृष्ठ, ३२-३३

दोनो एक ही है। पहले को पन्ना निवासी एव दूसरे को बुन्देलखडी कहा गया है। पन्ना बुन्देलखंड ही मे है, अत पन्नावासी भी बुन्देलखडी है। दोनो कवि पन्ना दरबार से सम्बन्धित कहे गये है। करणभट्ट को हृदयशाहि (सभासिह के पिता, १७८८-१७९६ वि०) और राजा सभासिह (१७९६-१८०९ वि०) का दरबारी एव करण ब्राह्मण को हिन्दू पति (सभासिह के पुत्र, १८१३-३४ वि०) का दरबारी कवि माना गया है। दोनो कवियो के समय मे भी बहुत अन्तर नही है। एक का समय १७९४ एव दूसरे का समय १८५७ दिया गया है। एक प्रारम्भिक कविता काल है और दूसरा अतिम। सम्भवत कवि १८५७ वि० के आस-पास दिवगत हो गया रहा होगा। आश्रयदाताओ के शासनकाल को ध्यान मे रखते हुये सरोज मे दिये हुये सम्वत् रचनाकाल ही सिद्ध होते है। ये जन्मकाल कदापि नही हो सकते। सरोज मे करण भट्ट को विहारी सतसई की साहित्यचन्द्रिका-टीका का कर्त्ता कहा गया है, किन्तु उदाहरण देते समय करण ब्राह्मण पन्नावाले के नाम पर साहित्यचन्द्रिका के उद्धरण दिये गये हैं। इसी प्रकार कर्ण ब्राह्मण को साहित्य-रस और रस-कल्लोल नामक दो ग्रन्थो का कर्त्ता कहा गया है। रस कल्लोल के उद्धरण करन भट्ट के नाम पर दिये गये हैं। शुक्ल जी के इतिहास मे करन कवि (ब्राह्मण) है करन भट्ट नही। इनकी कविता के उदाहरण मे "कत कित होत गात विपिन समाज देखि" से प्रारम्भ होने वाला कवित्त दिया गया है।[1] सरोज मे यही कवित्त करन भट्ट के नाम से उद्धृत है। इन सब बातो को ध्यान मे रखते हुये मानना पडता है कि करन भट्ट और करन ब्राह्मण एक ही कवि है।

करन कवि भट्ट भी थे और ब्राह्मण भी। यह या तो पद्माकर भट्ट और कुमार मणि भट्ट के समान दाक्षिणात्य ब्राह्मण रहे हो या प्रसिद्ध निबध लेखक बालकृष्ण भट्ट के समान उत्तर भारतीय ब्राह्मण अथवा ब्रह्म भट्ट। यह भाट नही थे। आचार्य शुक्ल इनको कान्यकुब्ज ब्राह्मण मानते है। इसका आधार रस कल्लोल का यह दोहा प्रतीत होता है :—

पट कुल पाडे पहिदिया भारद्वाजी बस
गुन निधि पाइ निहाल के बन्दौ जगत प्रसस

इस दोहे मे गुणनिधि एव जगत् प्रशसनीय निहाल के पैरो की वन्दना की गई है। दोहे के प्रथम दल मे इन्ही निहाल को "पट कुल पाडे पहितिया भारद्वाजी वश" का कहा गया है। यह निहाल, कवि के गुरु हैं। उदाहरण देते समय करन भट्ट को श्रीमद्वशीधरात्मज कहा गया है, जिससे स्पष्ट है कि इनके पिता का नाम वशीधर भट्ट था। सरोज मे एक निहाल ब्राह्मण भी है[2] जो निगोहा जिले लखनऊ के रहने वाले थे और सम्वत् १८२० मे उपस्थित थे। करन और यह निहाल दोनो सम-सामयिक हैं। अतः यही निहाल, करन भट्ट के काव्य-गुरु प्रतीत होते है। खोज मे इनके निम्नलिखित दो ग्रन्थ मिले है :—

(१) साहित्य चन्द्रिका—१९०६।५७। इस ग्रन्थ के प्रारम्भ मे कवि ने अपना नाम टीकाकार के रूप मे दिया है :—

सुमिरत नहि कवि करन कर सह साहित्य सहेत
सुकबि बिहारी सतसई विरचित तिलक समेत २

सरोज मे इस ग्रन्थ का रचनाकाल सूचक दोहा दिया गया है :—

---

[1] हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ २०६ [2] देखिये, यही ग्रथ, कवि सख्या ३९०

वेद[४] खंड[९] गिरि[७] चन्द्र[१] गनि भाद्र पचमी कृष्ण
गुरु वासर टीका करन पूर्यो ग्रन्थ कृतष्ण

इस दोहे के अनुसार इस ग्रन्थ की रचना सम्वत् १७९४, भादों वदी ५, गुरुवार को हुई।

(२) रस कल्लोल—१९०४।१५, १९१७।९५, १९२३।२०४ ए, वी। इस ग्रन्थ की जितनी प्रतियाँ मिली है, सभी के अत मे पुष्पिका मे करन कवि को वशीधरात्मज कहा गया है। १९२३।२०४ ए वाली प्रति शिवसिंह की है। इस गन्थ मे रस, ध्वनि, गुण, लक्षणा एव काव्य-भेद आदि सभी वर्णित है।

रस धुनि गुन अरु लच्छना कवित भेद मति लोल
बाल बोध हितकर सदा कीन्हों रस कल्लोल ५

इस ग्रन्थ मे कुल २५० छद है। रचनाकाल इसमे नही दिया है। १९१७ वाली रिपोर्ट मे रस कल्लोल एव साहित्य चन्द्रिका, दोनो के कविता अभिन्न माने गये हैं।

७०।५६

(८) कर्ण ब्राह्मण बुन्देलखडी, सम्वत् १८५७ मे उ०। यह कवि राजा हिन्दू पति पन्ना नरेश के यहाँ थे और साहित्य रस, रस कल्लोल ये दो गन्थ रचे है।

सर्वेक्षण

६९ और ७० सख्यक दोनो कवि एक ही है।

७१।

(९) करन कवि वन्दीजन जोधपुर वाले, सम्वत् १७८७ मे उ०। यह राठौर महाराजो के प्राचीन कवि है। इन्होने सूर्य प्रकाश नामक ग्रन्थ राजा अभयसिंह राठौर की आज्ञानुसार बनाया है। इस ग्रन्थ की श्लोक सख्या ७५० है। श्री महाराजा यशवत सिंह से लेकर महाराज अभयसिंह तक अर्थात् सम्वत् १७८७ से सरबलद खाँ की लडाई तक सब समाचार इस ग्रन्थ मे वर्णन किये हैं। एक दिन राजा अभयसिंह और महाराजा जयसिंह आमेर वाले पुष्कर तीर्थ पर पूजन-तर्पण इत्यादि करते थे। उसी समय करन कवि गये। दोनो महाराज बोले, कवि जी कुछ शीघ्र ही कहो। करन कवि ने यह दोहा कहा :—

जोधपूर आमेर ये दोनों थाप अथाप
कूरम मारा बैकरा कामध्वज मारा बाप

अर्थात् राजा जोधपुर और आमेर गद्दी-नशीनो को गद्दी से उठा सकते है। कूरम अर्थात् कछवाह राजा ने अपने पुत्र शिवसिंह का और कामध्वज अर्थात् राठौर ने अपने पिता बखतसिंह का वध किया। टाड साहब राजस्थान मे लिखते है कि कर्ण कवि राज सम्बधी कार्यो मे, युद्ध मे और कविता मे, इन तीनो बातो मे महा निपुण थे।

सर्वेक्षण

करन कवि का असल नाम करणीदान है। यह कवि जाति के चारण और मेवाड राज्य के शूलवाडा गाँव के निवासी थे। यह जोधपुर नरेश महाराज अभयसिंह (शासनकाल सम्वत् १७८१-१८०५ वि०) के आश्रित थे। इन्होने उक्त महाराजा के आदेश से सूरज प्रकाश की रचना की। इस ग्रन्थ मे कुल ७५०० छद है। सरोज मे प्रमाद से छद-सख्या ७५० ही दी गई है। इसकी रचना

मे प्रसन्न होकर उक्त महाराज ने इन्हे लाख पसाव दिया और इनका इतना मान बढाया कि इन्हे हाथी पर सवार कराया और स्वय घोडे पर चढकर इनकी जलेब (हाजिरी) मे चले और इनको घर पहुँचाया। इस विषय का यह दोहा प्रसिद्ध है —

अस चढियो राजा अभो, कवि चढै गजराज
पहर एक जलेब मे, मौहर चले महराज

यह ग्रथ डिंगल भाषा मे है। इसमे अभयसिह की गुजरात विजय तक (सम्वत् १७८७) का राठौर राजाओ का इतिहास वर्णित है। इस ग्रन्थ का सक्षिप्त रूप 'विडद सिणगार' नाम से कवि ने राजा को सुनाने के लिये प्रस्तुत किया था। इसमे १२६ पद्धरी छद हैं। यह भी डिंगल भाषा मे है।[1]

सूरज प्रकाश की रचना सम्वत् १७८७ मे हुई :—

सत्रह सै सम्वत सतासियै विजय दसमि सनि जीत
वदि कातिक गुरु वरणिये दसमी वार अदीत

—खोज रिपोर्ट १९४१।२४

७२।

(१०) कुमारपाल महाराजा अनहल वाले, सम्वत् १२२० मे उ०। यह महाराज अनहल वाले के राजा थे और कवीश्वरो का वडा मान करते थे। जैसे चन्द कवि ने पृथ्वीराज के हालात मे पृथ्वीराज रायसा लिखा है, वैसे ही इन महाराज की वंशावली ब्रह्मा से लेकर इन तक एक कवीश्वर ने बनाकर उसका नाम कुमारपाल चरित्र रखा।

सर्वेक्षण

कुमारपाल गुजरात के नाथ प्रसिद्ध सिद्धराज जयसिह के उत्तराधिकारी थे। इन्होने सम्वत् ११९९ से लेकर सम्वत् १२३० वि० तक शासन किया। अतः १२२० मे उ० का यह स्पष्ट अर्थ है कि कुमारपाल उक्त सम्वत् मे उपस्थित थे। यह स्वय कवि नहीं थे, कवियो के समादर कर्त्ता थे। सम्वत् १२४१ आषाढ शुक्ल अष्टमी रविवार को अनहिल पट्टन मे सोमप्रभु सूर्य ने जिन धर्म प्रतिबोध अर्थात् कुमारपाल प्रतिबोध की रचना समाप्त की, यह ग्रन्थ संस्कृत मे है। बीच-बीच मे प्राकृत और अपभ्रश के भी अश हैं। जैसा कि नाम से प्रकट है, यह ग्रन्थ कुमारपाल के ही नाम पर लिखा गया था। सरोज मे उल्लिखित 'कुमारपाल चरित्र' नामक ग्रन्थ की रचना प्रसिद्ध जैनाचार्य हेमचन्द्र ने की थी। यह द्वाश्रय काव्य कहलाता है। इस ग्रन्थ मे जयसिह एवम् कुमारपाल का इतिहास है। साथ ही 'सिद्ध हैम शब्दानुशासन' नामक हेमचन्द्र के प्रसिद्ध व्याकरण के उदाहरण भी हैं। कुमारपाल चरित्र के प्रथम ७ अध्याय शब्दानुशासन के समान संस्कृत मे है। आठवाँ उसी के समान प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पैशाची, चूलिका पैशाची और अपभ्रश मे है। जिस भाषा का व्याकरण कहा गया है, उसी मे कुमारपाल चरित्र के उस अग की रचना की गई है। शब्दानुशासन की रचना सिद्धराज की मृत्यु (सम्वत् ११९९) के पूर्व हुई। द्वाश्रय काव्य की, उसके बाद सम्वत् १२१८ और १२२९ वि० के बीच किसी समय।[2]

---

[1] राजस्थानी भाषा और साहित्य, पृष्ठ १७८ [2] चन्द्रधर शर्मा गुलेरी लिखित पुरानी हिन्दी (नागरी प्रचारिणी पत्रिका, सम्वत् १९७८, पृष्ठ २९, ३८६, ३८९) के आधार पर।

७३।६०

(११) कालिदास त्रिवेदी, वनपुरा अतरवेद के निवासी, सम्वत् १७४९ मे उ०। यह कवि अंतरवेद मे वडे नामी-गरामी हुये है। प्रथम औरङ्गजेब वादशाह के साथ गोलकुण्डा इत्यादि दक्षिण के देशो मे वहुत दिन तक रहे। पीछे राजा जोगाजीत सिंह रघुवशी महाराजा जम्बू के यहाँ रहे और उन्ही के नाम से वधू विनोद नाम का ग्रन्थ महा अद्भुत वनाया। एक कालिदासहजारा नामक सग्रह ग्रन्थ वनाया, जिसमे सम्वत् १४८० से लेकर अपने समय तक अर्थात् सम्वत् १७७५ तक के कवियो के एक हजार कवित्त, २१२ कवियो के, लिखे है। मुझको इस ग्रन्थ के वनाने मे कालिदास के हजारे से वडी सहायता मिली है। एक ग्रन्थ और 'जजीरावद' नाम का महा विचित्र इन्ही महाराज का मेरे पुस्तकालय मे है। इनके पुत्र उदयनाथ कवीन्द्र और पौत्र कवि दूलह वडे भारी कवि हुये हे।

सर्वेक्षण

सरोज मे जो सम्वत् १७४९ दिया गया है, वह वधू विनोद का रचनाकाल है। रचनाकाल-सूचक छंद स्वय सरोज मे उद्धृत है :—

सबत् सत्रह सै उनचास
कालिदास किय ग्रथ विलास

यह ग्रन्थ वृत्तिसिंह के पुत्र जोगाजीत के लिये रचा गया है —

वृत्तिसिह नन्दन उद्दाम
जोगाजीत नृपति के नाम

जोगाजीत किसी त्रिपदा नदी तट स्थिति जम्बू नगर के राजा थे —

नगर सु जम्बू दीप मे जम्बू एक अनूप
तरे वहै त्रिपदा नदी त्रिपथगामनी रूप

जोगाजीत का वश-वर्णन भी इस ग्रन्थ मे है। इसके अनुसार मालदेव, रामसिंह, जैतसिंह माधवसिंह, रामसिंह, गोपालसिंह, हरीसिंह, गोकुलदास, लक्ष्मीसिंह, वृत्तिसिंह और जोगाजीत यह वश-क्रम है। यह रघुवशी क्षत्रिय थे। जोगाजीत सिंह के सम्वन्ध मे तीन दोहे दिये गये है —

तिलक जानि जा देस को दुवन होत भयभीत
जाहिर भयो जहान मे जालिम जोगा जीत
वृत्तिसिह जिमि धरनि ध्रुव जाते अरि भयभीत
जाहिर भयो जहान में ताको जोगाजीत
जोगाजीत गुनीन को दीन्हे वहुविधि दान
कालिदास ताते कियो ग्रन्थ पन्थ अनुमान

ऊपर उद्धृत सभी छद सरोज मे उदाहृत हैं। जम्बू सम्भवत. वैसवाडे मे स्थित कोई स्थान है। कालिदास त्रिपाठी के निम्नाकित ग्रन्थ खोज मे मिले हैं :—

(१) वधू विनोद या वार वधू विनोद—१९०६।१७८ वी, १९२०।७५, १९२३।२०० ए, वी, सी, १९४१।४७९, प० १९२२।५२। इस ग्रन्थ का विवरण पीछे दिया जा चुका है।

राधामाधवमिलन वुधविनोद नामक इनका एक ग्रय और मिलता है (१९०१।६८)। मेरी ऐसी धारणा है कि वधू विनोद और वुध विनोद सम्भवत. एक ही ग्रथ हैं। मात्रा के हेर-फेर से नाम वदल गया है। वस्तुत. दोनो ग्रथ एक ही हैं, दोनो का पाठ एक ही हैं।

(२) जजीरा वद—१६०४।५, १६०६।१७८ ए, १६२३।२०० डी। इस ग्रथ में कुल ३२ कवित्त हैं। यह लघु ग्रथ बहुत पहले श्री वेकटेश्वर प्रेस, बम्बई से प्रकाशित हुआ था।

हिन्दी साहित्य मे कालिदास अपने हजारे के लिये प्रसिद्ध ह, पर यह ग्रथ अभी तक खोज मे नही मिला है। कालिदास का सम्बन्ध औरगजेब से था। कहा जाता है कि यह औरगजेब के साथ दक्षिण गये थे और गोलकुण्डा की लडाई के समय (सम्वत् १७४५ वि०) वहाँ उपस्थित थे। इस लडाई का वर्णन कालिदास ने इस कवित्त मे किया हे, जो सरोज मे भी उदाहृत हे —

गढन गढ़ी से गढ़ि महल मही से मढि
बीजापुर ओप्यो दलमलि उजराई मे
कालिदास कोप्यो बीर औलिया आलमगीर
तीर तरवारि गह्यो पुहुमी पराई मे
बूँद ते निकसि महि मडल घमड मची
लोहू की लहरि हिमगिरि की तराई मे
गाडि के सु झडा आड कीन्ही पादशाह ताते
डकरी चमुण्डा गोलकुण्डा की लडाई मे।

कालिदास अपनी रचनाओ मे कभी-कभी 'महाकवि' भी छाप रखते थे। १६०६।१४४ वाली रिपोर्ट मे कालिदास के नाम पर एक 'भँवरगीत' चढा हुआ है, यह भँवरगीत वस्तुत नददास का है। अतिम चरण के अशुद्ध लेख के कारण यह भ्रम उत्पन्न हुआ है।

७४।६१

(१२) कवीन्द्र (१) उदयनाथ त्रिवेदी, बनपुरा निवासी कवि कालिदास जू के पुत्र सम्वत् १८०४ मे उ०। यह कवि अपने पिता के समान महाकवीश्वर हो गुजरे है। प्रथम राजा हिम्मतसिंह बघल गोत्री अमेठी महाराज के यहा बहुत दिन तक रहे और कविता मे अपना नाम उदयनाथ रखते रहे। जब राजा के नाम से रसचद्रोदय नाम का ग्रथ बनाया तब राजा ने कवीन्द्र पदवी दी। तब से अपना नाम कवीन्द्र रखते रहे। इस ग्रथ के चार नाम ह—१ रति विनोद चद्रिका, २ रति विनोद चद्रोदय, ३ रस चद्रिका, ४ रस चद्रोदय। यह ग्रथ भाषा साहित्य मे महा अद्भुत है। पीछे कवीन्द्र जी थोडे दिन राजा गुरुदत्त सिंह अमेठी के यहाँ रहकर फिर भगवत राय खीची और गजसिंह महाराजा आमेर और राव बुद्ध हाडा बूँदी वाले के यहाँ महा मान-सम्मान के साथ काल व्यतीत करते रहे। एक कवीन्द्र त्रिवेदी बैंती गाँव, जिले रायबरेली मे भी महान् कवि हो गये हे।

सर्वेक्षण

कवीन्द्र जी का सरोज वर्णित ग्रथ खोज मे मिल चुका हे।[1] इस ग्रथ के चार ही नाम नही है, सात नाम है —(१) रस चद्रोदय, (२) रति विनोद चद्रोदय, (३) रस चद्रिका, (४) रति विनोद चद्रिका, (५) विनोद चद्रिका, (६) विनोद चद्रोदय, (७) रति विनोद रस चन्द्रिका। इस ग्रथ की रचना सम्वत् १८०४ मे हुई :—

सम्वत् सतक अठारह चारि
नायिकादि नायक निरधारि

---

(१) खोज रिपोर्ट १६०२।४२, ११८, १६०३।१८, १६०५।२, १६०६।२४६, १६१२।१६२ १६२३।२३५ ए

लहि कविन्द लच्छित रस पथ
किय विनोद चद्रोदय ग्रन्थ

इस ग्रथ के एक छद मे कवीन्द्र ने अपने पिता के नाम, अपने असली नाम और कवीन्द्र उपाधि देने वाले अपने आश्रय दाता का उल्लेख किया है '—

कालिदास कवि के सुवन उदयनाथ सरनाम
भूप अमेठी के दियो रीझि कविन्द्र सु नाम

कवि ने अपने पुत्र दूलह के पढने के लिये इस ग्रथ की रचना की .—

तासु तनय दूलह भयो ताके पढिबे हेतु
रस चद्रोदय तब कियो कवि कविन्द करि चेतु

शुक्ल जी ने कवीन्द्र का जन्मकाल सम्वत् १७३६ के लगभग माना है और रस चद्रोदय के अतिरिक्त विनोद चद्रिका और जोगलीला नामक इनके दो और ग्रथो का भी उल्लेख किया है। इनमे से विनोद चद्रिका तो रस चद्रोदय का ही दूसरा नाम है। परतु न जाने किस आधार पर शुक्ल जी ने इसका रचनाकाल सम्वत् १७७७ दिया है।

कवीन्द्र का सम्वध अमेठी (सुलतानपुर) नरेश राजा गुरुदत्त सिंह, असोथर (फतेहपुर) नरेश भगवत राय खीची, आमेर (जयपुर) नरेश गजसिंह, बूँदी नरेश राव बुद्ध सिंह हाडा के दरबार से था। सरोज मे इन सभी राजाओ की प्रशस्ति मे लिखे हुये कवीन्द्र के कवित्त उद्धृत है।

सभा की अप्रकाशित सक्षिप्त खोज रिपोर्ट मे छद पचीसी (१९१७।१९८) नामक एक ग्रथ का उल्लेख हुआ है। पर यह इन उदयनाथ कवीन्द्र की रचना नही है। यह ग्रथ भरतपुर के राज्य-पुस्तकालय मे है। नाम से तो प्रतीत होता है कि यह २५ छदो का कोई छोटा-सा ग्रथ होगा, पर यह १९३ पन्नो का बडा ग्रथ है और इसमे १०७८ कवित्त सवैये आदि छद है। मुझे तो यह विभिन्न कवियो की रचनाओ का सग्रह ग्रथ प्रतीत होता है। इस ग्रथ के चार छद रिपोर्ट मे उद्धृत हैं। इनमे से केवल प्रथम छद मे उदैनाथ छाप है। शेष तीन छाप हीन है। यह ग्रथ सम्वत् १८५३ मे बना है '—

सावन सुदि की तीज को करी पचीसी सार
संवत् अट्ठारह सतहि त्रेपन थिर शनिवार १०७८

इस समय तक तो उदयनाथ जीवित भी न रहे होगे। यह रचना भरतपुर नरेश महाराज रणजीत सिंह (शासनकाल सम्वत् १८३४-६२ वि०) के दरबारी कवि उदयराम की है। उदयराम ने अनेक छोटे-छोटे ग्रथ रचे थे, जिनमे श्रीमद्भागवत दशमस्कध के पूर्वार्द्ध मे कथित राधा-कृष्ण की लीला मे वर्णित है। इनका 'सुजान सम्वत्' नामक ग्रन्थ अपूर्व है। इसमे महाराज सूरजमल का चरित्र कवि जन्य कल्पना के आधार पर वर्णित है।[१]

खोज मे उदयनाथ के नाम पर 'सगुन विलास' नाम का ग्रन्थ चढा है।[२] इसकी रचना सवत् १८४१ मे हुई थी .—

---

(२) भरतपुर और हिन्दी, 'माधुरी', फरवरी १९२७, पृष्ठ ८१ (३) खोज रिपोर्ट १९१२।१९१

वैसाख मास पच्छ सित होइ
तिथि सप्तमी सगुन भा सोइ
तन[१] औ वेद[४] वसु[८] इन्दु[१] बखानौ
ये सम्वत् बीते बुध जानो

ग्रन्थ मे कवि का नाम आया है —

"उदयनाथ हरि भक्ति बिन, सुख नहिं पावे कोइ"

काशीवाले उदयनाथ का समय १७११ है। उदयनाथ कवीन्द्र सम्वत् १८४१ तक जीवित नही रह सकते। इस समय भरतपुर वाले उदयनाथ या उदयराम विद्यमान थे। सम्भवत. सगुन विलास भी इन्ही की रचना है।

७५।

(१३) कवीन्द्र (२) सखी सुत ब्राह्मण, नरवर, बुन्देलखड निवासी के पुत्र सम्वत् १८५४ मे उ०। इन्होने रस दीपक नाम ग्रन्थ बनाया है।

सर्वेक्षण

रस दीपक नामक ग्रथ खोज मे मिल चुका है। इसकी रचना सम्वत् १७९९ वि० कार्तिक सुदी ३, बुधवार को हुई।

सत्रह सतक निन्नायवे, कातिक सुदि बुधवार
ललित तृतीया में भयो, रस दीपक अवतार

—खोज रि० १९०४।२८

सरोज मे इस कवि का कोई उदाहरण नही दिया गया है। बुन्देल वैभव मे इनके ५ शृगारी कवित्त सवैये उद्धृत हैं। इसमे इनका जन्मकाल सम्वत् १७६० और कविताकाल सम्वत् १७९० दिया गया है, जो ठीक है।[१] सरोज मे दिया हुआ सम्वत् १८५४ अशुद्ध है। इस समय तक तो कवि जीवित भी न रहा होगा। फिर यह उसका जन्मकाल कैसे हो सकता है?

७६।६२

(१४) कवीन्द्र (३) सारस्वत ब्राह्मण, काशी निवासी, सम्वत् १६२२ मे उ०। यह कवीन्द्राचार्य महाराज सस्कृत साहित्य शास्त्र मे अपने समय के भानु थे। शाहजहाँ बादशाह के हुक्म से भाषा-काव्य बनाना प्रारम्भ किया और बादशाही आज्ञा के अनुसार 'कवीन्द्र कल्पलता' नामक ग्रथ भाषा मे रचा, जिसमे बादशाह के पुत्र दाराशिकोह और बेगम साहबा की तारीफ मे बहुत कवित्त है।

सर्वेक्षण

कवीन्द्राचार्य सरस्वती गोदावरी तट स्थित पण्य भूमि के निवासी आश्वलायन शाखा के दक्षिणी ब्राह्मण थे —

गोदातीरनिवासी पश्चाद्येनाश्रिता काशी।
ऋग्वेदीयाभ्यस्तासागा शाखाश्वलायनी शाखा ॥—कवीन्द्र चन्द्रोदय

---

(१) बुदेल वैभव, भाग २, पृष्ठ ४३०

बचपन मे ही विरक्त हो यह काशी आ रहे। काशी मे यह वरुणा तट पर रहते थे। उनका निवास स्थान अब भी वेदान्ती का बाग नाम से प्रसिद्ध है। इनके नेतृत्व मे काशी के पडितो का एक प्रतिनिधि मडल तीर्थयात्रा कर से मुक्ति पाने के लिये आगरा गया था, जिसमे उसे कवीन्द्राचार्य सरस्वती के परम पाडित्य के कारण सफलता मिली थी। शाहजहाँ ने प्रसन्न होकर इन्हे 'सर्व विद्या निधान' की पदवी दी थी। इनके मूल नाम के सम्बन्ध मे विवाद है। कवीन्द्र और आचार्य इनकी उपाधियाँ हैं। इनका नाम सभवत. 'विद्यानिधि' था। इसी विद्यानिधि को शाहजहाँ ने सर्व विद्या-निधान मे बदला। शाहजहाँ ने तीर्थयात्रा कर से मुक्ति दी, इन्हे उक्त उपाधि दी, दारा के पडित-समाज का प्रधान बनाया और २००० रुपये वार्षिक की वृत्ति भी दी। इस विजय पर ही प्रसन्न होकर काशी के लोगो ने इन्हे कवीन्द्र और आचार्य कहा था। वर्नियर नामक यात्री के साथ यह आगरे मे तीन वर्ष रहे। इनका गुणानुवाद तत्कालीन सस्कृत कवियो ने 'कवीन्द्र चन्द्रोदय' मे एव हिन्दी कवियो ने 'कवीन्द्र चान्द्रिका' मे किया है।

कवीन्द्राचार्य जी सस्कृत और हिन्दी दोनो के विद्वान् थे और काशी के विद्वन्मन्डली के शिरमौर थे। इनके सस्कृत ग्रन्थ है—(१) कवीन्द्र कल्पद्रुम, (२) पदचन्द्रिका दशकुमार टीका, (३) योग भापाकर योग, (४) शतपथब्राह्मण भाष्य, (५) हसदूत काव्य। इनके हिन्दी ग्रन्थ तीन हैं—(१) कवीन्द्र कल्पलता, (२) योग वाशिष्ठसार या ज्ञानसार, (३) समर सार। कवीन्द्र कल्पलता मे विनोद (२८६) के अनुसार १५० छद हैं। योग वाशिष्ठसार सम्वत् १७१४ मे लिखा गया। समर सार का रचनाकाल विनोद के ही अनुसार सम्वत् १६८७ है।

कवीन्द्राचार्य सरस्वती का समय सम्वत् १६५७ से १७३२ वि० तक श्री पी के गोडे ने माना है। सरोज मे दिया हुआ सम्वत् ई सन् है। इस समय (सम्वत् १६७ वि०) कवीन्द्र जी उपस्थित थे। कवीन्द्राचार्य का पुस्तकालय अद्भुत था। उसमे सस्कृत की चुनी हुई पुस्तके थी[१]। योग वाशिष्ठसार भी खोज मे मिल चुका है[२]। हिन्दी कवियो ने 'कवीन्द्र चन्द्रिका मे इनकी सस्तुति की है। यह ग्रन्थ भी खोज मे मिल चुका है।[३] इसमे हिन्दी के निम्नाकित कवियो को रचनाये थीं —

(१) सुखदेव	४ छद	(१०) रघुनाथ	१ छद
(२) नन्दलाल	१ ,,	(११) विश्वम्भर मैथिल	१ ,,
(३) भीख	२ ,,	पुन धर्मेश्वर	१ ,,
(४) पडित राज	१ ,,	(१२) शकरोपाध्याय	१ ,,
(५) रामचन्द्र	१ ,,	(१३) रघुनाथ की स्त्री	३ ,,
(६) कविराज	४ ,,	(१४) भैरव	२ ,,
(७) धर्मेश्वर	२ ,,	(१५) सीतापति त्रिपाठी पुत्र मणिकठ	२ ,,
(८) कस्यापि	१ ,,	(१६) मगराय	१ ,,
(९) हीराराम	२ ,		

---

(१) नागरी प्रचारिणी पत्रिका, ५२।२, श्रावण-आश्विन २००४ मे प्रकाशित श्रीवटे कृष्ण लिखित कवीन्द्राचार्य सरस्वती लेख के आधार पर। (२) १६२०। ७६ ए० बी०, १६२६।१६१, १६४१। २७७ (३) राजस्थान रिपोर्ट, भाग २, पृष्ठ ६२,६३

(१७) कल्यापि रचित १२ छद
(१८) गोपाल त्रिपाठी, पुत्र मणिकठ १ ,,
(१९) विश्वनाथ जीवन (विश्वनाथ छाय) १ ,,
(२०) नाना (विभिन्न) कवि १० ,,
(२१) चिन्तामणि १७ ,,
(२२) देवराम २ ,,
(२३) कुलमणि १ ,,
(२४) त्वरित कविराज २ छद
(२५) गोविन्द भट्ट २ ,,
(२६) जयराम ५ ,,
(२७) गोविन्द २ ,,
(२८) वशीधर १ ,,
(२९) गोपीनाथ १ ,,
(३०) यादव राय १ ,,
(३१) जगतराय १ ,,
(३२) रायकवि की स्त्री ३ ,,

विनोद मे सुखदेव मिश्र पिंगली के सम्बन्ध मे लिखा है कि इन्होने काशी मे एक सन्यासी से तत्र एव साहित्य पढा था। सभवत. वे सन्यासी कवीन्द्राचार्य ही थे। और कवीन्द्र चन्द्रिका मे जिन सुखदेव के ४ छद प्रारम्भ ही मे हैं, वे सभवत. प्रसिद्ध सुखदेव मिश्र ही के है।

इस ग्रन्थ के प्रारम्भिक २ छद निम्न है। इनमे कवि के वास्तविक जीवन पर प्रकाश पडता है —

पहिले गोदातीर निवासी
पाछे आइ बसे श्रीकासी
ऋगवेदी असुलायन साखा
तिनको ग्रन्थ भयो है भा । ५
सब विषयनि सों भयो उदास
बालापन मे लयो सन्यास
उनि सब विद्या पढी पढाई
विद्यानिधि सु कवीन्द्र गोसाई ६

इसी ग्रन्थ मे करमुक्त सूचक निम्नाकित छद है —

कासी और प्रयाग की कर की पकर मिटाइ
सबहिन को सब सुख दियो श्री कवीन्द्र जग आइ २

—राजस्थान रिपोर्ट, भाग २ पृष्ठ ९२-९३

८

७७।५९

(१५) किशोर युगुल किशोर, वन्दीजन दिल्लीवाले, सम्वत् १८०१ मे उ०। यह कविता में महानिपुण और मुहम्मदशाह के यहा थे। इनका ग्रन्थ मैंने कोई नही पाया। केवल किशोर सग्रह नाम का एक इनका सग्रहीत ग्रन्थ मेरे पुस्तकालय मे है, जिसमे सिवा सत् कवियो के इनका भी काव्य बहुत है।

सर्वेक्षण

७७ सख्यक किशोर और २५६ सख्यक जुगल किशोर भट्ट दोनो कवि वस्तुत एक ही हैं। ग्रियर्सन ने भी इनकी अभिन्नता स्वीकार की है। सरोज मे प्रमाद से यह कवि दो बार उल्लिखित हो गया है। विशेष विवरण सख्या २५६ पर देखिये।

७८।५८

(१६) कादिर, कादिर बख्श मुसलमान पिहानी वाले, सम्वत् १६३५ मे उ०। कविता मे निपुण थे और सैय्यद इब्राहीम पिहानी वाले रसखानि के शिष्य थे।

सर्वेक्षण

रसखानि का रचनाकाल सम्वत् १७४० है। यदि कादिर रसखानि के शिष्य हैं तो स० १६३५ इनका उपस्थिति काल ही हो सकता है, यह जन्मकाल नही हो सकता। सरोज मे इनके दो नीतिपरक-कवित्त उद्धृत हैं जिनमे पहला बहुत प्रसिद्ध है—

"गुन ना हिरानो गुन गाहक हिरानो है'

७९।६३

(१७) कृष्ण कवि (१) सम्वत् १७४० मे उ०। यह कवि औरंगजेब बादशाह के यहाँ थे।

सर्वेक्षण

रत्नाकर जी का अनुमान है कि यह कृष्ण कवि बिहारी के तथाकथित पुत्र हैं, जिन्होंने सम्वत् १७१९ मे बिहारी सतसई की पहली टीका लिखी —

सवत ग्रह[९] ससि[१] जलधि[७] छिति[१] छठ तिथि वासर चन्द
चैत मास पख कृष्ण मैं पूरन आनँद कंद

रत्नाकर जी इस दोहे को इसी टीका का रचनाकाल मानते है बिहारी सतसई का नहीं। उनके अनुसार बिहारी सतसई सम्वत् १७०४-०५ के आस-पास पूर्ण हो गई थी। औरंगजेब सम्वत् १७१५ मे गद्दी पर बैठा, कृष्ण ने सम्वत् १७१९ मे टीका लिखी। सरोज मे उद्धृत प्रशस्ति सम्बन्धी कवित्त मे घोडे पर चढे औरंगजेब का आतक वर्णित है। अत उस समय वह युवा ही रहा होगा।[1]

कृष्ण कवि की कविता का पृष्ठ-निर्देश नही किया गया है। पर कृष्ण प्राचीन सख्या १३४ की कविता का जो उदाहरण दिया गया है, उसमे औरंगजेब की प्रशस्ति है। अत दोनो कवि एक ही हैं। प्रमाद से दो सख्याओ पर इनका उल्लेख हो गया है। प्रथम एव द्वितीय सस्करण मे १३४ सख्या कृष्ण प्राचीन है ही नही। इनकी वृद्धि तृतीय सस्करण मे हुई है। ग्रियर्सन मे (१८०) सम्वत् १७४० को कृष्ण कवि का जन्मकाल माना गया है और औरंगजेब का शासन-काल भी दिया गया है। कल्पना की गई है कि जयपुरी कृष्ण कवि भी सभवत यही हैं। यह सब मान्यताये निराधार एव आश्चर्यजनक हैं।

८०।६३

(१८) कृष्णलाल कवि, सम्वत् १८१४ मे उ०। इनकी कविता शृंगार-रस मे उत्तम है।

सर्वेक्षण

विनोद मे (१२०९) कृष्णलाल जी गोस्वामी बूँदी वाले का उल्लेख है, केवल कृष्णलाल का नहीं। इनका रचनाकाल सम्वत् १८७४ दिया गया है। इन्हे प्रसिद्ध गोस्वामी गदाधर लाल का

---

(१) बिहारी सतसई सम्बन्धी साहित्य, ना० प्र० पत्रिका ९।१, वैशाख १९८५, पृष्ठ ९६

वशज और कृष्ण विनोद (१८७२), रस भूषण (१८७४) तथा भक्तमाल की टीका नामक तीन ग्रन्थों का रचयिता कहा गया है। यदि विनोद के यह कृष्णलाल गोस्वामी ही सरोज के उक्त कृष्णलाल कवि हैं, तो सरोज मे दिया हुआ सम्वत् १८१४ अशुद्ध है।

८१।६६

(१६) कृष्ण कवि (२) जयपुर वाले, सम्वत् १६७५ मे उ०। विहारी लाल कवि के शिष्य और महाराजा जय सिह सवाई के यहाँ नौकर थे। विहारी सतसई का तिलक कवित्तो मे विस्तार पूर्वक वार्तिक सहित बनाया है।

सर्वेक्षण

जयपुरी कृष्ण कवि के निम्नाकित दो ग्रन्थ खोज मे उपलब्ध हुये हैं :—

(१) विहारी सतसई की कवित्त बद्ध टीका—१६०४।१२६, १६०६।५२, १६२३।२२२ ए १६२६।२४८ ए, बी, १६२६।२०५ ए। ग्रथ के अन्त मे कवि ने ३५ दोहे लिखे हैं जिनसे इनके सबध मे पर्याप्त जानकारी होती है। महाकवि विहारी जिन मिर्जा राजा जयसिह (शासनकाल सम्वत् १६७८-१७२४ वि०) के यहाँ थे, उनके पुत्र रामसिह, पौत्र कृष्ण सिंह, प्रपौत्र विष्णु सिह और प्रप्रपौत्र सवाई जयसिह (शासन काल सम्वत् १७५६-१८०० वि०) थे। इन्ही सवाई जयसिह के मत्री आया मल्ल जी थे। इनको राजा की उपाधि मिली हुई थी। इन्हे कृष्ण काव्य से परम प्रेम था। इन्हीं की आज्ञा से कृष्ण कवि ने विहारी सतसई की कवित्त बद्ध टीका लिखी :—

रघुवशी राजा प्रगट पुहुमि धर्म अवतार
विक्रम निधि जयसाहि रिपु तुड विहडन हार ११
सुकवि विहारी दास सों तिन कीनों अति प्यार
बहुत भाँति सनमान करि दौलत दई अपार १२
राजा श्री जयसिंह के प्रगट्यो तेज समाज
राम सिंह गुन राम सम नृपति गरीब नेवाज १३
कृष्ण सिंह तिनके भये केहरि राजकुमार
बिसुनु सिंह तिनके भये सूरज के अवतार १४
महाराज बिसुनेस के धरम धुरन्धर धीर
प्रगट भये जैसाहि नृप सुमति सवाई बीर १५
प्रगट सवाई भूप कौ मन्त्री मनि सुख सार
सागर गुन सतशील कौ नागर परम उदार १६
आया मल्ल अखड तप जग सोहत जस ताहि
राजा कीनों करि कृपा महाराज जयसाहि १७
लीला जुगल किसोर की रस कौ होई निकेतु
राजा आया मल्लकौं ता कविता सौं हेतु १८
आया मल कवि कृष्ण पर ढर्‌यो कृपा कै ढार
भाति भाति विपदा हरी दीनी लच्छि अधार २६
एक दिना कवि सौं नृपति कही कहीं कौ जात
दोहा दोहा प्रति करौ कवित बुद्धि अवदात २७

पहिलैं हूँ मेरे यहै हिय मैं हुतौ विचार
करौ "नायिका भेद को ग्रथ सुबुधि अनुसार २८
जो कीने पूरब कबितु सरस ग्रथ सुखदाइ
तिनहि छाडि मेरे कबित को पढिहै मनलाइ २६
जानि यहे अपने हियैं कियो न ग्रथ प्रकाश
नृप को आयसु पाय कै हिय मैं भयो हुलास ३०
उक्ति जुक्ति दोहानि की अच्छर जोरि नबीन
करे सात सै कवित मैं पढैं सुकवि परवीन ३३

यह टीका अगहन सुदी ५, रविवार, सम्वत् १७८२ को पूर्ण हुई :—

सतरह सै द्वै आगरे असी बरस रबिवार
अगहन सुदि पाचैं भये कवित बुद्धि अनुसार[1] ३५

इस कवि के सम्बध मे सरोजकार ने १०० वर्षो की भूल कर दी है। कृष्ण कवि का रचना-काल सम्वत् १७८२ है, न कि १६७५। अतः यह विहारी के शिष्य भी नही हो सकते। एक दोहे मे कवि ने अपना वश परिचय भी दिया है :—

माथुर विप्र ककोर कुल लह्यो कृष्न कवि नाव
सेवक हौं सब कविन कौ बसत मधुपुरी गांव[2] २५

इस दोहे के अनुसार कृष्ण कवि मथुरा के रहने वाले ककोर कुल के माथुर ब्राह्मण थे। इस टीका मे गद्य का भी उपयोग हुआ है। पहले मूल दोहा, फिर गद्य मे प्रसग एव नायिका आदि कथन, तदनतर कवित्त या सवैया मे भावपल्लवन है।

(२) विदुर प्रजागर—१६०५।७, १६०६,६३ बी, प० १६२२,५६, १६२६ २०६ बी, सी, डी। यह ग्रथ भी उक्त राजा आयामल्ल की ही आज्ञा से बना —

राजा आयामल्ल की आज्ञा अति हितु पाय
विदुर प्रजागर कृष्ण कवि भाषा करी बखान ३६
मै साहस अति ही कर्यो कवि कुल जाति सुभाइ
भूलि चूकि जो होइ कछु लीजौ समुझि बनाइ ४०

ग्रथ की रचना कार्तिक शुक्ल ५, गुरुवार, सवत् १७६२ को हुई :—

सतरह सै अरु बानवे सम्वत् कातिक मास
सुकुल पच्छ पाँचै गुरौ कीन्यो ग्रन्थ प्रकास ४२

यह ग्रथ महाभारत के उद्योग पर्व के अतर्गत आये धृतराष्ट्र-विदुर सवाद का अनुवाद है।

इसी युग मे कृष्ण नाम के एक और कवि हुए है। इन्होने धर्म-सवाद नामक ग्रथ लिखा है।[3] इसमे महाभारत के अनुसार युधिष्ठिर एव धर्म का सवाद है। इसकी रचना सम्वत् १७७५ मे हुई —

सम्वत सतरह सै पचहत्तर समये कीलक नाम
सावन सुदि परिवा तिथी सुरगुर पहिलै जाम ५

---

(१) बिहारी सतसई संबधी साहित्य, ना० प्र० पत्रिका, ६।१, वैशाख १६८५, पृष्ठ १११–१२,
(२) वही (३) खोज रिपोर्ट १६०१।८, १६०६।६३ ए, १६२०।८६

ताही दिन या ग्रंथ को कीन्हो कृष्ण विचारु
कवित सवैया दोहरा वेद भेद व्यवहारु ६

कवि का निवास-स्थान बुंदेलखंड के अंतर्गत वेतवा तटस्थित ओरछा के पास रतनगज के निकटस्थ भाडर ग्राम था :—

कविवासी भाडेर जो रतनगज सो ठाउ
निकट चतुर्भुज वेतवै नग्र ओडछौ गाव ७

यह कवि सनाढ्य ब्राह्मण थे :—

सनाढ्य रा वरन कुल रावत करै बखान
सेवक सबही दुजन के कविता कृष्णनिदान ८

खोज-रिपोर्टों एवं अप्रकाशित संक्षिप्त विवरण मे माथुर कृष्ण और इन सनाढ्य कृष्ण को एक कर दिया गया है। विनोद मे दोनो कवियो का अलग-अलग वर्णन है। पजाव रिपोर्ट १९२२-५६ मे साभर युद्ध के रचयिता कृष्ण (भट्टलाल कवि कलानिधि) से भी इन दोनो कवियो के घोल मेल की आशका व्यक्त की गई है। बुदेल-वैभव में भी विदुर प्रजागर और धर्म सवाद के कर्ता एक माने गये हैं।[१]

८२।६५

(२०) कृष्ण कवि (३), सम्वत् १८८८ मे उ०। नीति सम्वन्धी फुटकर काव्य किया है।

सर्वेक्षण

'वैद को वैद, गुनी को गुनी, ठग को ठग, ठूमक को मन भावे' से प्रारम्भ होने वाला नीति सम्वन्धी सवैया इस कवि के नाम से सरोज मे उद्धृत है। इस कवि के सम्वन्ध मे और कोई सूचना नही उपलब्ध है।

८३।६८

(२१) कुज लाल कवि वदीजन, मऊरानी पुरा, सम्बत् १९१२ मे उ०। ग्रथ कोई नही देखने मे आया। फुटकर कवित्त देखे सुने है।

सर्वेक्षण

सरोज मे कुज लाल का एक कवित्त उद्धृत है, जिसमे शब्दो की कुछ ऐसी कलाबाजी है, जो अर्थ तक नही पहुँचने देती। इस कवि के सम्बध मे भी कोई सूचना सुलभ नही। सम्वत् १९१२ को रचनाकाल ही होना चाहिये। विनोद मे इन्हे सम्वत् १९४० मे उपस्थित कवियो की सूची मे स्थान दिया गया है।

८४।६९

(२२) कुन्दन कवि वुदेलखडी, सम्वत् १७५२ मे उ०। नायिका भेद का इनका ग्रथ सुन्दर है। कालिदास जी ने इनका नाम हजारे मे लिखा है।

सर्वेक्षण

कुन्दन की कविता कालिदास के हजारे मे थी। अत. वह सम्वत् १७५० के पूर्व अथवा आस-पास अवश्य उपस्थित थे। सरोज मे दिये स० १७५२ को किसी भी प्रकार जन्मकाल नही स्वीकार

---

(१) बुन्देल-वैभव, भाग २, पृष्ठ ३६६

किया जा सकता है। यह इनका रचनाकाल है, जैसा कि विनोद मे भी (५५८) स्वीकार किया है। 'कवित्त कवि जय कृष्ण कृत'[1] नामक सग्रह मे इन कुन्दन की भी रचनाये है। प्रथम सस्करण मे इन्हे बुन्देलखडी नही कहा गया है।

८५।७०

(२३) कमलेश कवि, सम्वत् १८७० मे उ०। यह कवि महा निपुण कवि हो गये है। नायिका भेद का इनका ग्रन्थ महासुन्दर है।

सर्वेक्षण

अभी तक न तो इनका भेद का ग्रथ मिला है और न कोई अन्य सूचना ही।

८६।७२

(२१) कान्ह कवि प्राचीन (१) सम्वत् १८५२ मे उ०। नायिका भेद मे इनका गन्थ है।

सर्वेक्षण

इस कवि के निम्नाकित ग्रथ खोज मे मिले हैं :—

रस-रग—१९२६।१८३, १९३२।१०७ ए, १९४७।२८। यह वही नायिका भेद का ग्रन्थ है, जिसका सकेत सरोज मे किया गया है। इस गन्थ की रचना क्वार सुदी १३, सोमवार, सम्वत् १८०४ विक्रमी को हुई :—

संवत धृति सत जुग वरन कान्हा सुकवि प्रसंग
क्वार सुदी तेरसि ससी रच्यो ग्रथ रस रंग

धृति से सर्वत्र १८ का अर्थ पुराने कवियो ने लिया है। जुग २ का अर्थ देता है और ४ का भी। १९२६ वाली रिपोर्ट मे जुग का अर्थ ४ माना गया है और लिखा गया है कि "जाच करने पर चन्द्रवार ५ अक्टूबर, सन् १७४७ ई० (सम्वत् १८०४) को ठहरता है।" रिपोर्ट मे अनुमान किया गया है कि यह कान्ह प्राचीन वृन्दावन के रहने वाले थे। एक जैन कान्ह के निम्नाकित दो ग्रन्थ मिले है :—

(१) ज्ञान छत्तीसी—(राजस्थान रिपोर्ट, भाग ४, पृष्ठ १०३) इस ग्रन्थ मे ज्ञान सम्बन्धी छत्तीस कवित्त सवैये हैं। यह कवि जैन है, क्योकि इसके एक छद मे कवि लिखता है :—

"कान्ह जी ज्ञान छतीसी कहै, सुभ सम्मत है शिव जैननि कू" १

ग्रन्थ मे न तो रचनाकाल दिया गया है, न प्रतिलिपिकाल।

(२) कौतुक पच्चीसी—(राजस्थान रिपोर्ट, भाग ४, पृष्ठ १११) इस गन्थ का रचनाकाल सम्वत् १७६१ है :—

सतरै से इक्सठि समै उत्तम माह असाढ
दूरस दोहरे दोहरे गुरु अर्थ करि गाढ २६

कवि के सद्गुरु का नाम प्रम सिह जू था —

सदगुरु, श्री प्रम सिह जू, पाठक गुणे प्रधान
कौतुक पच्चीसी कहो, कवि बणारसा कान्ह २७

---

(१) खोज रिपोर्ट १९०२।६८

ज्ञान छत्तीसी एव कौतुक पच्चीसी के कर्ता एक ही कान्ह है। यह कान्ह वृन्दावनी से भिन्न हैं और उनसे प्राय. ५० वर्ष पुराने हैं। यह सम्भवतः कोई राजस्थानी जैन कवि है। ये दोनो ग्रथ राजपूताने मे ही मिले हैं। कौतुक पच्चीसी के रचनाकाल के अनुसार यह सम्वत् १७६१ के आसपास विद्यमान थे।

खोज मे एक और पुराने कान्ह मिले है। इनका पूरा नाम कन्हैयालाल भट्ट उपनाम 'कान्ह' था। यह जयपुर निवासी थे और मथुरा मे भी रहा करते थे। यह किसी सरदार नरेश के आश्रित थे। इनके ग्रन्थ का नाम है 'श्लेपार्थ विंशति'।[१]

८७।७१

(२५) कान्ह कवि, कन्हई लाल (२) कायस्थ, राजनगर, बुन्देलखंडी, स० १९१४ मे उ०। इन्होने वहुत सुन्दर कविता की है। इनका नखशिख देखने योग्य है।

सर्वेक्षण

सरोज मे दिया हुआ सम्वत् १९१४ उपस्थितिकाल ही है, जन्मकाल नही, क्योकि यदि यह जन्म काल है तो सम्वत् १९३४ तक प्रसिद्धि पाने के लिये २० वर्ष की वय वहुत कम है। इस वय तक तो लोग पढते-लिखते रहते हैं। कान्ह के नाम पर 'नखशिख' नामक ग्रन्थ खोज मे मिला है।[२] १९०३ वाली रिपोर्ट मे इसे कान्ह वुन्देलखडी की रचना माना गया है और १९३२ वाली रिपोर्ट मे कान्ह प्राचीन की, क्योकि रस-रग और नखशिख ये दोनो ग्रन्थ एक जिल्द मे मिले है। रस-रग का प्रतिलिपिकाल सम्वत् १८९८ है। नखशिख मे कोई भी सूचना नही दी गई है। हो सकता है, इसकी भी उसी समय प्रतिलिपि की गई रही हो। इसमे कोई बाधा नही आती। सम्वत् १९१४ मे कवि उपस्थित था, उसने १८९८ या उसके आस-पास नखशिख की रचना की। इस नखशिख मे चौपाई-छद भी प्रयुक्त हुआ है। दोनो रिपोर्टो मे ग्रन्थ का अन्तिम छद छपा है .—

करन फूल कलिकावलि कान्ह
सीस फूल माग मुक्तान
पाटी वेनी वार विराजै
अग सुवास वसन छबि छाजै ७१

८८।७५

(२६) कान्ह कन्हैया वख्स वैस, वैसवारे के विद्यमान। शान्त रस का इनका काव्य सुन्दर है। यह कवियो का वहुत आदर करते हैं।

सर्वेक्षण

विनोद मे (२३३६) इन्हे सम्वत् १९३० मे उपस्थित कवियो की सूची मे रखा गया है। इनका जन्म काल सम्वत् १९०० माना गया है। इन्हे 'देवी विनय'[१] का कर्त्ता कहा गया है। स्वय ग्रन्थ मे ऐसा कोई सूत्र नही है जिससे यह निश्चयपूर्वक कहा जा सके कि यह किस कान्ह की रचना है।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९४४।३१ (२) खोज रिपोर्ट १९०३।९० १९३२।१७ बी

८६।७३

(२७) कमल नयन कवि बुन्देलखडी, सम्वत् १७८४ मे उ०। इनके शृंगार रस के बहुत कवित्त देखे गये हैं। ग्रन्थ कोई नही मिला। कविता सरस है।

सर्वेक्षण

बिहारी सतसई की अनवर चन्द्रिका टीका के कर्ता है कमलनयन और शुभकरन। यह टीका सम्वत् १७७१ मे लिखी गई। सरोज के कमलनयन का समय सम्वत् १७८४ है। दोनो के समय मे केवल १३ वर्ष का अन्तर है। दोनो की समसामयिकता दोनो की अभिन्नता सिद्ध करती है। इस नाम के और भी कवि हुये हैं, पर वे प्राय. एक शतक पश्चात् हुये है।

कमलनयन बुन्देलखडी थे, यह पन्ना के प्रसिद्ध कवि रूपसाहि के पिता थे। रूपसाहि ने सवन् १८१३ मे 'रूप विलास'[२] नामक पिगल ग्रन्थ की रचना की थी। इस ग्रन्थ मे उन्होने अपना वश-परिचय दिया है :—

कायथ गुनिये वारहै श्रीवास न राम
शुभ परना अस्थान है बाग महल अभिराम ३
कायथवश कुलीन अति प्रगट नरायन दास
शिवाराम तिनके सुवन कमल नयन सुत तास ४
फौजदार तिनके तनय रूप शाहि यह नाम
कीन्हो रूप विलास यह ग्रन्थ अधिक अभिराम ५

इस परिचय के अनुसार कमलनयन जी बागमहल पन्ना के रहने वाले श्रीवास्तव कायस्थ थे। इनके पिता का नाम शिवाराम और पितामह का नारायणदास था। इनके पुत्र का नाम फौजदार था जो रूपशाहि नाम से कविता करते थे। इन कमलनयन को छोड हिन्दी मे तीन और कमलनयन नाम के कवि बाद मे हुये है .—

(१) कमलनयन, काशीराम के पुत्र, सक्सेना कायस्थ, करौली के राजा रणधीर सिह के राज्य-काल मे उपस्थित थे। इन्होने अपने पुरोहित शम्भूलाल के लिये १७३५ मे 'कमल प्रकाश'[३] नामक वैद्यक ग्रन्थ की रचना की।

(२) कमलनयन उपनाम 'रस सिंधु', गोकुल-मथुरा निवासी, पिता का नाम गोकुल कृष्ण, विष्णु सिह के पुत्र बूंदी नरेश महाराज रामसिह (शासनकाल सम्वत् १८८८–१९४६ वि०) के आश्रित। इन्ही के लिये रस सिधु ने 'राम सिंह मुखारविन्द मकरन्द'[४] नामक नायिका-भेद के ग्रन्थ की रचना की।

विनोद मे (८४२) इन कमलनयनो को मिला दिया गया है और इन दोनो से भिन्न इनके पूर्ववर्ती सरोज के कमलनयन के उ० को इनका उत्पत्ति काल मानकर उनको भी इन्ही मे सान लिया गया है।

(३) कमलनयन—इटावा परगने के अन्तर्गत भीम गाव क्षेत्र मे, मैनपुरी के निवासी, पिता का नाम हरचन्द राय, भाई का छत्रपत, चाचा का नन्दराय और चचेरे भाई का श्यामलाल। यह जैन थे। इन्होने सम्वत् १८७० मे 'जिन दत्त चरित्र भाषा[५]' नामक ग्रन्थ लिखा।

९०।७६

(२८) कविराज कवि वन्दीजन, सम्वत् १८८१ मे उ०। सामान्य प्रशसक इधर-उधर घूमने

---

(१) खोज रिपोर्ट १९०६।३७७ (२) खोज रिपोर्ट १९२०।६७, १९०५।८३ (३) खोज रिपोर्ट १९१७।९४, (४) खोज रिपोर्ट १९१२।९० (५) खोज रिपोर्ट १९४७।२५

वाले कवि मालूम होते हैं । सुखदेव मिश्र कम्पिलावासी ने भी अपना नाम बहुत जगह कविराज लिखा है, पर यह वह कविराज नही है ।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही । यह कायस्थो की कलम रोशन रहे, ऐसा आशीर्वाद देने वाले अत्यन्त सामान्य कोटि के कवि हैं :—

मेरु सक्सेना श्रीवास्तव भटनागर है
रोशन कलम रहे सब की सबार की

६१।७१

(२९) कविराय कवि सम्वत् १८७५ मे उ० । नीति सम्बन्धी चोखी कविता की है '

सर्वेक्षण

इस कवि का एक कवित्त सरोज मे उद्धृत है जिसमे सूमो की निन्दा की गई है। कवित्त मे कविराज सतन की छाप है। फिर भी न जाने कैसे कविराइ कवि की कल्पना शिवसिह ने कर ली है —

कविराइ सतन सुभाइ सुने सूमन के
धरम बिहूने धन धरा धरि धरिंगे

सरोज मे दो सतन है। एक बिन्दकी वाले सतन दुबे (सख्या ८७०), जो धनी थे, भिखारियो को दान दिया करते थे, दूसरे जाजमऊ के एकाक्ष सतन पाडे (सख्या ८७१) जो निर्धन थे और गोदान के लेने वाले थे। सतन पाडे ने यह विभिन्नता अपने एक छद मे स्वय व्यक्त की हे जो सरोज मे उद्धृत है :—

"वे वरु देत लुटाई भिखारिन, ये विधि पूरुव दान गऊ के"

सरोज मे कविराइ के नाम से जो छद उद्धृत है वह इन्ही एकाक्ष सतन पाडे का प्रतीत होता है। सरोज के दोनो सतन सम्वत् १८३४ मे उपस्थित थे और यह कविराइ सम्वत् १८७५ मे उ० थे। यह १८७५ सतन पाडे का अतिम रचनाकाल हो सकता है।

६२।७६

(३०) कविराम कवि (१) सम्वत् १८९८ मे उ० । कोई ग्रन्थ नही देखा, स्फुट कवित्त है ।

सर्वेक्षण

कविराम नाम नहीं है सरोजकार ने व्यर्थ के लिये अत मे भी एक और कवि जोटकर कविराम कवि बना दिया है। आजतक किसी का भी नाम कविराम नही सुना गया। कवि का नाम (उपनाम) राम है, कविराम नही। कविराम सख्या ६२ और कविराम (२) रामनाथ कायस्थ वस्तुत एक ही कवि हैं। इन दोनो कवियो के दो-दो सवैये सरोज मे उद्धृत हे, जो समान रूप से सरस हैं और एक ही कवि के प्रतीत होते हैं। शिवसिंह ने एक ही कवि की रचना दो स्थानो से ली है और उन्हे भिन्न भिन्न स्थानो मे लेने के कारण भिन्न-भिन्न कवियो की समझ ली हे। ग्रियर्सन (७८५) और विनोद (२२७७) मे भी इन कवियो की एकता सम्भावित मानी गई हे। विनोद मे तो ६३ सख्यक कविराम (२) का जन्म काल ही सम्वत् १८९८ दिया गया है जो कि ६२ सख्यक कविराम (१) का उ० काल है।

९३।९०

(३१) कविराम (२) रामनाथ कायस्थ वि०। इनके कवित्त सुन्दरी-तिलक मे है, जो बाबू हरिश्चन्द्र जी ने सग्रह बनाया है।

सर्वेक्षण

सुन्दरी तिलक मे कविराम के दो सवैये उद्धृत हैं। (छद सख्या १२५, १८६)। १८६ सख्यक सवैया सरोज मे उद्धृत है। यह कवि ९२ सख्यक कविराम कवि (१) से अभिन्न है। प्रथम सस्करण मे इन्हे 'कायस्थ' नही कहा गया है, 'काश्यस्थ' कहा गया है।

९४।८८

(३२) कविदत्त कवि, सम्वत् १८३९ मे उ०। इनके कवित्त दिग्विजय भूषण मे कविदत्त के नाम से जुदे लिखे है। मुझे भ्रम है, शायद दत्त कवि और कविदत्त एक ही न हो।

सर्वेक्षण

दिग्विजय भूषण मे कविदत्त के नाम मे निम्नाकित दो छद है :—

अथ कविदत्त के, प्रतीप सामान्य शकर, सवैया—

(१) हीरन के मुक्तान के भूषन अगन लै घनसार लगाये
सारी सफेद लसै जरतारी की सारद रूप सो रूप सुहाये
प्रीतम पैं चली यों 'कवि दत्त' सहाय ह्वै चाँदनी याही छपाये
चाँदनी को यहि चन्दमुखी मुख चाँद की चाँदनी सो सरसाये—अष्टम प्रकाश, छद २९

दत्त कवि के, लुप्तोपमा उल्लेख तुल्ययोगिता, दडक—

(२) चोप करि विरची विरंचि रूप रासि कैंधो
कोक की कला सी चारु, चातुरी की साला सी
चंद्रमा सी, चाँदनी सी, लोचन चकोर ही को,
सुधा सखीजन ही को, सौतिन को हाला सी
कहाँ मंजु घोषा उरबसी व सुकेसी दत्त
जाकी छबि आगे वारियत मैंने बाला सी
चम्पक की माला सी लगै है हिये वसि काला
सिसिर दुसाला होत ग्र पम में पाला सी—नवमप्रकाश, छद ५६

दत्त कवि के नाम से दिग्विजय भूषण मे केवल एक छद है।

दत्त कवि

मृगनैनी के पीठ पै बेनी विराजै सुगन्ध समूह समोय रही
अति चीकन चारु चुभी चित मैं रविजा समता सम जोय रही
कवि दत्त कहा कहिये उपमा जनु दीप सिखा सम जोय रही
मनो कचन के कदली दल ऊपर साँवरी साँपिन सोय रही—पचदश प्रकाश, छद १९८

दिग्विजय भूषण की कवि-सूची मे कविदत्त का उल्लेख सख्या ११२ पर और दत्त कवि का उल्लेख सख्या १६४ पर हुआ है। कवि दत्त के नाम दो छद दिये गये है, जिनमे से पहले मे तो कविदत्त छाप है, दूसरे मे केवल दत्त। पहला छद सरोज मे उद्धृत है। दत्त कवि के नाम से जो छद उद्धृत है, उसमे भी छाप कविदत्त ही है। साथ ही नवम प्रकाश मे कविदत्त का जो छद उद्धृत है,

और जिनमे केवल दत्त छाप है, कवित्त उद्धृत करने के पहले वहाँ भी कविदत्त नही कहा गया है, 'दत्त कवि के' कहा गया है। अत स्पष्ट है कि तीनो छद एक ही कवि के है जिसका कवि नाम, उपनाम दत्त है, जो सम्भवत देव दत्त नाम का उत्तरार्ध है। दो छदो मे दत्त के साथ कवि शब्द केवल पाद-पूर्ति के निमित्त आया है। शिवसिंह का भ्रम ठीक है। दिग्विजय भूषण की कवि-सूची निर्भ्रान्त नही है। एक ही कवि कई बार उल्लिखित हुआ है और हरबार उसे नवीन सख्या दी गई है। उदाहरण के लिये, सुखदेव मिश्र का उल्लेख एक बार ६२ सख्या पर हुआ है, दूसरी बार इनका उल्लेख ११० सख्या पर 'पुन सुखदेव' नाम से हुआ है।

सरोज के यह दत्त कानपुर वाले देवदत्त हैं, जिनका उल्लेख इस ग्रन्थ मे ३४२ सख्या पर हुआ है। इनको भी सरोज मे १८३६ मे उ० कहा गया है। इन देवदत्त के ७ छद सरोज मे उद्धृत है। दो और ५ मे दत्तकवि, १, ४, ६ मे दत्त और छद सख्या ३ मे कविदत्त छाप है। अब इस आधार पर इस एक दत्त के कोई तीन दत्त करले तो क्या इलाज? ग्रियर्सन मे भी कविदत्त (४७५) और देव दत्त (५०८) की अभिन्नता की सम्भावना की गई है। इस कवि का विशेष विवरण सख्या ३४२ पर देखिये।

९५।७४

(३३) काशीनाथ कवि, सम्वत् १७५२ मे उ०। इन्होने महाललित काव्य किया है।

सर्वेक्षण

ग्रियर्सन मे (१३६) काशीनाथ को सन् १६०० ई० मे उपस्थित कहा गया है। इन्हे वलभद्र का पुत्र, केशवदास का भतीजा और बालकृष्ण त्रिपाठी का भाई कहा गया है। ग्रियर्सन के इस कथन का आधार सरोज मे वर्णित बालकृष्ण कवि का यह विवरण है —

> "५६, बालकृष्ण त्रिपाठी (१) वलभद्र जी के पुत्र और काशीनाथ कवि के भाई सम्वत् १७८८ मे मे उ०। इन्होने रस चद्रिका नाम पिंगल बहुत सुन्दर बनाया है।"

ग्रियर्सन ने त्रिपाठी पर ध्यान नही दिया वलभद्र पर ध्यान दिया और इन्हे प्रसिद्ध नखशिख प्रणेता वलभद्र मिश्र का पुत्र मान लिया। ऐसा होने पर यह स्वयमेव प्रसिद्ध कवि केशव दास के भतीजे हो गये। फलत इनका रचनाकाल भी सम्वत् १७५२ से खिसकाकर सन् १६०० ई० ले जाना पड़ा। सरोज मे कहीं नही लिखा है कि बालकृष्ण त्रिपाठी महाकवि केशवदास के भतीजे थे। यहाँ एक ऊट-पटाँग बात ग्रियर्सन की समझ मे नहीं आई। उन्होने मान लिया कि वलभद्र के दो पुत्र थे बालकृष्ण और काशीनाथ। काशीनाथ तो वलभद्र मिश्र के पिता का भी नाम था, फिर यही नाम उनके पुत्र का भी कैसे हो सकता है? अगरेजी मे यह प्रणाली भले ही हो, हिन्दुओ मे तो है नही। इस सम्बन्ध मे विनोद मे (२०५) काशीनाथ के प्रसग मे मिश्रबन्धुओ ने लिखा है —

> "सोज मे लिखा है कि ये महाशय वलभद्र के पुत्र और केशवदास के भतीजे थे। पर केशवदास के पिता का नाम भी काशीनाथ था, इससे हमे यह सम्बन्ध अशुद्ध जँचता है।"

खोज मे यह विवरण ग्रियर्सन के अधानुसरण के कारण दिया गया है।

बुन्देल वैभव मे सबको बुन्देलखडी बनाने की प्रवृत्ति है। अत. बालकृष्ण (मिश्र) के सम्बध मे कल्पना की गई है कि "सरोज मे भूल मे मिश्र के स्थान पर त्रिपाठी छप गया होगा या लिख

गया होगा।" सरोजकार पर एक और भी अचिन्त्य भूल का आरोप किया गया है जिसका सम्बध प्रसग प्राप्त काशीनाथ से है।

"सरोजकारो (?) ने आपके भाई को भी कवि होना लिखा है, किन्तु नाम लिखने मे यहाँ फिर भूल कर दी गई है। आपके भाई का नाम काशीनाथ लिखा है जो ठीक नही जान पडता, क्योकि महाकवि बलभद्र जी मिश्र के पिता का नाम स्वय काशीनाथ मिश्र था। प्रतीत होता है काशीराम या और कुछ नाम के स्थान मे काशीनाथ भूल से लिख दिया गया है।"—बुन्देल वैभव भाग १, पृष्ठ २०७।०८

यहाँ मुझे यह निवेदन करना है कि यदि बाबा का नाम काशीनाथ है तो पोते का नाम काशी शब्द से नही प्रारम्भ हो सकता क्योकि चाहे वह काशीराम, काशी प्रसाद, काशीगति, काशीलाल या और भी कोई कल्पित अकल्पित नाम हो, पुकारते समय उसे केवल काशी कहा जायगा और रेरी मारकर उसे कशिया कहा जायगा, कोई भी बाप अपने बेटे का ऐसा नाम नही रखेगा, जिसमे स्वय उसके बाप को रेरी पडे।

विनोद मे (२०५) काशीनाथ को बलभद्र का पुत्र, केशवदास का भतीजा कहा गया है और रचनाकाल भी सम्वत् १६५७ दिया गया है। यह सब ग्रियर्सन की आँखो देखने का फल है।

काशीनाथ त्रिपाठी, कवि बालकृष्ण त्रिपाठी के भाई थे। यह बलभद्र त्रिपाठी के पुत्र थे, नखशिख-प्रणेता प्रसिद्ध बलभद्र मिश्र के नही। अत' इनका सम्बध महाकवि केशव से नही होता। काशीनाथ मिश्र बलभद्र मिश्र के बाप का नाम था, कोई बलभद्र त्रिपाठी के बाप का नही। अत: यह बाधा भी स्वत. दूर हो जाती है और असमजस प्रकट करने के लिये कोई स्थान नही रह जाता। सरोजकार ने बालकृष्ण त्रिपाठी की रसचद्रिका रचना से दो छप्पय उद्धृत भी किये है। अत. स्पष्ट है कि यह ग्रन्थ उसके पुस्तकालय मे था। रसचद्रिका खोज मे मिल चुकी है।[१] पर इस ग्रन्थ से कवि के सम्बन्ध मे और कोई जानकारी नही होती। ऐसा प्रतीत होता है कि काशीनाथ बालकृष्ण के अग्रज है। अतः इनका सम्वत् १७९२ दिया गया है और अनुज का समय १७८८। खोज मे इस काशीनाथ के अतिरिक्त ४ और काशीनाथ मिले है।

(१) काशीनाथ मिश्र—सुप्रसिद्ध केशवदास एव बलभद्र मिश्र के पिता, सम्वत् १६००के आसपास उपस्थित।

(२) काशीनाथ भट्टाचार्य—इन्होने शीघ्रबोध नामक ज्योतिष ग्रन्थ का भाषानुवाद किया। (१९२६।२२८)।

(३) काशीनाथ वैद्य—अमृतमजरी नामक वैद्यक ग्रन्थ के रचयिता (१९२०।७८)

(४) काशीनाथ—लोकभाषा भरथरी चरित्र की रचना करने वाले (१९२६।२२९ ए, बी, सी, १९२९।१८९, १९३२।१०९)।

९६।१०१

(३४) काशीराम कवि, सम्वत् १७१५ मे उ०। यह कवि निजामत खाँ सूबेदार आलमगीर के साथ थे। इनकी कविता ललित है।

---

(१) खोज रि० १९४१।१५७

सर्वेक्षण

सरोज मे एक कवित्त ऐसा है जिससे सिद्ध होता है कि काशीराम का सम्बन्ध निजामत खाँ मे था :—

"करा चोली कसि झुकि निकस निजामत खाँ
आवत रकाव जब बर जोरी पाइ के"

सरोज के अनुसार यह निजामत खा आलमगीर औरगजेब का सूबेदार था। औरगजेब का शासनकाल सम्वत् १७१५ से लेकर सम्वत् १७६४ वि० तक है। काशीराम का समय सम्वत् १७१५ दिया गया है जो औरगजेब के सिंहासनासीन होने के सम्वत् से मेल खाता है। अत. सरोज मे दिया हुआ सम्वत् कवि का उपस्थिति काल है, न कि उत्पत्ति काल।

खोज विवरण के अनुसार काशीराम सक्सेना कायस्थ थे, कमल नयन के पिता थे और औरगजेब के सूबेदार निजामत खा के आश्रित थे। इनके निम्नाकित ३ ग्रन्थ माने गये है :—

(१) कनक मजरी—१६०३।७। यह पद्मावत प्रणाली पर लिखित एक प्रेमाख्यान काव्य है। काशीराम ने इसकी रचना राजकुमार लक्ष्मीचन्द के लिये की थी और पुरस्कृत हुये थे। इस ग्रन्थ मे प्रतिलिपि-काल सम्वत् १८३४ दिया गया है, रचनाकाल नही, परन्तु एक दोहे मे तुलसी का नाम आया है, अत कवि सम्वत् १६६० के वाद कभी हुआ —

पीपा गये न द्वारिका बदरी गये न कबीर
भजन भावना से मिले, तुलसी से रघुवीर

(२) परशुराम सम्वाद—१६२३।२०६। कवित्तो मे लिखित यह ग्रन्थ रचनाकाल और प्रतिलिपिकाल से रहित है। कवित्तों मे काशीराम नाम है, परन्तु विना किसी अन्य आधार के यह रचना इन्हीं काशीराम की स्वीकृत की गई है।

(३) कवित्त काशीराम—१६४१।२५। इस ग्रन्थ के भी इन्ही काशीराम के होने की सम्भावना व्यक्त की गई है। इनका लिपिकाल सम्वत् १७८७ है। 'कवि जय कृष्ण के कवित्त[१]' नामक संग्रह मे एक काशीराम के कुछ छद हैं। वे भी इन्ही काशीराम के प्रतीत होते हैं।

इन काशीनाथ से भिन्न एक काशीराम पाठक बनारसी हैं, जो मगलसेन पाठक के पुत्र है और जिन्होंने ज्योतिष सम्बन्धी दो ग्रन्थ 'लगन सुन्दरी[२]' और 'जैमिनीय सूत्र भाषा टीका[३]' लिखे हैं। दूसरा ग्रन्थ गद्य मे है; पहले की रचना सम्वत् १६७० मे हुई थी।

९७।१०२

(३५) कामताप्रसाद, सम्वत् १६११ मे उ०। इनके कवित्त ठाकुर प्रसाद त्रिपाठी ने अपने सग्रह मे लिखे है। किन्तु मुझे भ्रम है, शायद यह बाबू कामता प्रसाद असोथर वाले न हो, जो खीची भगवत राय जू के वशमुख विद्या मे निपुण हैं। इनका नखशिख बहुत अच्छा है।

---

(१) खोज रि० १६०४।६८ (२) खोज रि० १६३२।११० ए (३) खोज रि० १६३२।११० बी

सर्वेक्षण

विनोद मे इस समय के दो कामताप्रसाद है :—

(१) कामताप्रसाद (२२३७), यह सम्वत् १९३० मे उपस्थित थे। जाति के सेवक कायस्थ थे। तारापुर जिले फतेहपुर के रहने वाले थे। इन्होने 'राघो बत्तीसी' तथा 'हरिनाम पच्चीसी' नामक ग्रन्थ लिखे। इनका जन्मकाल सम्वत् १९०४ दिया गया है।

(२) कामता प्रसाद असोथर वाले (१३५९) नखशिख के रचयिता। इन्हे अज्ञात कालिक प्रकरण मे स्थान दिया गया है।

ग्रियर्सन (६४४) मे असोथर वाले कामताप्रसाद खीची का लखपुरा वाले कान्यकुब्ज ब्राह्मण कामता से अभेद स्थापित किया गया है, जो जाति भेद के कारण ठीक नही।

सरोज के यह कामताप्रसाद यदि कामताप्रसाद खीची से भिन्न है, तो इन्हे ऊपर वर्णित कायस्थ कामता प्रसाद होना चाहिये।

९८।१०४

(३६) कबीर कवि, कबीरदास जोलाहा काशीवासी, सम्वत् १६१० मे उ०। इनके दो ग्रन्थ अर्थात् बीजक और रमैनी मेरे पास है। इनके चरित्र तो सब मनुष्यो को विदित है। कालिदास जू ने हजारे मे इनका भी नाम लिखा है, इसलिये मैंने भी लिख दिया।

सर्वेक्षण

कबीर काशी निवासी जोलाहे थे। यह निर्गुण ज्ञानाश्रयी शाखा के श्रेष्ठतम कवि और कबीरपथ के प्रवर्त्तक महात्मा थे। यह रामानद के शिष्य एव धर्मदास तथा भग्गोदास के गुरु थे। इनके पिता का नाम नीरू और माता का नाम नीमा था, पत्नी का नाम लोई और पुत्र का कमाल था। शुक्ल जी के अनुसार इनका जन्म काशी मे जेठ सुदी पूर्णिमा,सोमवार, सम्वत् १४५६ वि० को और मृत्यु स० १५७५ वि० मे १२० वर्ष की वय मे हुई।[1] रूपकला जी ने भक्तमाल की टीका (छप्पय १५२) मे कबीर का जन्म सम्वत् १४५१, मगहर गमन सम्वत् १५४९ एव मृत्यु सम्वत् १५५२ माना है। जो हो, सरोज मे दिया हुआ सम्वत् १६१० अशुद्ध है। इस सम्वत् के बहुत पहले कबीर की मृत्यु हो चुकी थी।

कबीर की रचना बीजक के नाम से प्रसिद्ध है—बीजक, साखी, सबदी और रमैनी इन तीन भागो मे विभक्त है। यो कबीर के नाम पर बहुत साहित्य मिलता है, जिसमे से अधिकाश औरो की रचना है।

९९।१०५

(३७) किंकर गोविन्द बुन्देलखडी, सम्वत् १८१० मे उ०। शान्तरस की इनकी कविता विचित्र है।

सर्वेक्षण

किंकर गोविद का 'रामचरण चिह्न प्रकाश' नामक ग्रन्थ खोज मे मिला है।[2] इसमे रामसीता के चरण चिह्नो का वर्णन है। ग्रन्थारभ मे गणेश, भारती और गुरु की वदना है। भारती की वदना मे कवि ने अपना नाम भी दे दिया है।

---

(१) हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ ७५।७६ (२) विहार रि०, भाग २, संख्या १९

पुनि भारती पदारविन्द ए कामधेनुवर
वन्दित ई किंकर गोविन्द की वुद्धि विमल पर

पुष्पिका मे भी ग्रन्थ कर्त्ता का नाम आया है :—

" इति श्री किंकर गोविंद विरचिते श्री रामचरण चिन्ह सम्पूर्णम् । श्री सम्वत् १८६७ जेठ सुदी ।"

इतने पर भी उक्त विवरण के सम्पादक को न जाने कहा से प्रतीत हुआ कि यह ग्रन्थ रामचरण या रामचरण दास का है। पुष्पिका मे जो सम्वत् १८६७ दिया गया है, उसे सम्पादक ने रचनाकाल माना है। इसके प्रतिलिपिकाल होने की अधिक सभावना है। इस ग्रन्थ मे केवल चरण चिह्नो क वर्णन है पर सम्पादक को भ्रम है कि "इस रचना मे रस और अलकार सम्वधी पद्य भी हैं।" यहा ठीक नहीं। उक्त हस्तलेख मे वस्तुत किसी दूसरे वडे रस ग्रन्थ का एक पन्ना जुड गया है। यह तथ्य विवरण के पृष्ठ १२८ पर स्वीकार भी किया गया है, फिर भी न जाने यह प्रमाद क्यो ? यह रस-ग्रन्थ किंकर गोविंद का नही है, किसी महा कविराय का है —

देवि पूजि सरस्वती पूजे हरि के पाय
नमस्कार करि जोरि के कहे महाकविराय

इस रस-ग्रथ मे कुल ७०६ छद है।

सभा की खोज-रिपोर्ट मे किसी किंकर प्रभु की 'गोपी वलदाऊ की वारामासी'[१] का उल्लेख है। इसका प्रतिलिपि-काल सम्वत् १९१४ है। पुष्पिका मे कवि का नाम है और वारामासी के अतिम चरण मे भी।

"वारवार मनहर्र भयो अति किंकर प्रभु गुण करत बडाई"

सभा की खोज-रिपोर्ट मे एक किंकर कवि की 'महेश्वर महिमा[२]' का विवरण है। इसमे न तो प्रतिलिपि-काल है और न पुष्पिका ही। ग्रन्थ के अतिम छदो मे कवि का नाम अवश्य आया है —

"सब अपराध छिमा कर शङ्कर किंकर को विनती सुनयो"

सरोजकार के अनुसार किंकर गोविंद ने शान्त रस की रचनाये की है। ऊपर उल्लिखित तीनो ग्रन्थ भक्ति सम्वधी है। सरोजकार की वात का ध्यान रखते हुये ये, सभी किंकर गोविन्द की ही रचनायें हैं। किंकर गोविंद के काल और स्थान-निर्णय का कोई दूसरा सूत्र सुलभ नही है।

१००।१०६

(३८) कालीराम कवि वुन्देलखडी, सम्वत् १८२६ मे उ०। सुन्दर कविता की है।

सर्वेक्षण

परिचय देते समय कवि का नाम कालीराम दिया गया है पर उदाहरण देते समय कलीराम लिखा गया है। यह विभेद तृतीय सस्करण मे भी ऐसा ही है। सरोज मे इनके दो कवित्त उद्धृत हैं। दोनो मे छाप कलीराम ही है। खोज से भी इनका नाम कलीराम ही सिद्ध होता है। प्रथम सस्करण मे भी कवि नाम 'कलीराम' ही है।

---

(१) खोज रिं० १९२६।२४१ (२) खोज रि०१९३८।८२

कलीराम जी का एक ग्रन्थ 'सुदामा चरित्र' खोज मे मिला है।[1] रचना, काव्य की दृष्टि से उत्तम है। सरोज मे उद्धृत दो छदो मे से एक सुदामा चरित्र सम्बधी है। वह सम्भवत इसी ग्रन्थ का एक अश है। ग्रन्थ का अतिम अश इस प्रकार है :—

"इति श्री सूदामा चरित लिख्यो छै मिति मगसिर सुदि १३ सम्वत् १७३१ वि०।"

दोहा

चतुर्वेद माथुर विदित मथुर मधुपुरी धाम
सुकविन को सेवक सदा कलीराम कविनाम
चरित सुदामा को रच्यो हौं निज मति अनुसार
भूल चूक होवे कछू लीज्यो सुकवि सुधार

इस दोहे के अनुसार कलीराम जी मथुरानिवासी माथुर चतुर्वेदी थे, बुन्देलखडी नही। समय देने के पश्चात् कवि ने परिचय दिया है। इससे सूचित होता है कि सम्वत् १७३१ प्रतिलिपिकाल न होकर रचनाकाल है। रिपोर्ट के अनुसार यह सम्भवत. कवि द्वारा प्रस्तुत मूल प्रति है। इस दृष्टि से प्राप्त प्रति का महत्व है। सरोज मे दिया हुआ सम्वत् १८२६ भी अशुद्ध सिद्ध होता है। सरोज मे उदाहृत दूसरे-दूसरे छद से सिद्ध होता है कि कलीराम जी का सम्बध किसी अवधूत सिंह से था। सम्भवत यह रीवा नरेश अवधूत सिह है, जिनकी प्रशस्ति भूषण ने भी की है।

१०१।८१

(३९) कल्याण कवि सम्वत् १७२६ मे उ०। इनकी कविता कालिदास ने हजारे मे लिखी है।

सर्वेक्षण

महाकवि केशव दास तीन भाई थे, वडे बलभद्र मिश्र, मझले स्वय केशव और छोटे कल्याण। कवि प्रिया के प्रथम प्रकाश मे केशव दास लिखते है :—

जिनको मधुकर शाह नृप बहुत कियो सनमान
तिनके सुत बलभद्र बुध प्रकटे बुद्धि निधान
बालहि ते मधुशाह नृप तिनसो सुन्यो पुरान
तिनके सोदर द्वै भये केशवदास, कल्यान

सरोज मे कल्याण के नाम पर जो कविता उदाहृत है, बुन्देल वैभव मे वह केशवदास के अनुज इन्ही कल्याण मिश्र की मानी गई है।[2] कल्याण मिश्र के प्रपौत्र हरिसेवक मिश्र ने भी अपने कामरूप कथा महाकाव्य मे अपनी वशावली देते हुये केशव और कल्याण को भाई कहा है।[3]

कृष्णदत्त सुत गुन जलधि काशिनाथ परमान
तिनके सुत जू प्रसिद्ध है केशवदास कल्यान
कवि कल्यान के तनय हुव परमेश्वर इहि नाम
तिनके पुत्र प्रसिद्ध हुव प्रागदास अभिराम
तिन सुत हरि सेवक किनो यह प्रबन्ध सुखदाय
कवि जन भूल सुधारवी अपनी चातुरताय

---

(१) खोज रि० १९३८।७८ (२) बुदेल वैभव २०५-०६ (३) वही

बुन्देल वैभव के अनुसार कल्याण मिश्र का जन्म सम्वत् १६३५ के लगभग उरछे मे हुआ था।[1] इनका कविता काल सम्वत् १६६० के आसपास माना जा सकता है। सरोज मे दिया हुआ सम्वत् ठीक नही है।

१०२।८२

(४०) कमाल कवि, कवीर जू के पुत्र काशीस्थ, सम्वत् १६३२ मे उ०। ऐजन। (इनकी कविता कालिदास ने हजारे मे लिखी है।)

सर्वेक्षण

कमाल कवीर के पुत्र थे, काशी निवासी थे। इनकी माता का नाम लोई था। काशी मे हरिश्चन्द्र घाट के पास कमाल की इमली अब भी प्रसिद्ध है। यहाँ ये उपदेश दिया करते थे। इनका कवीर से मतभेद था। इसी से कहा गया है :—

"वूडा वश कवीर का उपजे पूत कमाल"

कमाल की वाणी खोज मे मिल चुकी है।[2]

कवीर का जीवन काल सम्वत् १४५६ से लेकर १५७५ तक माना जाता है। कमाल की भी उत्पत्ति सम्वत् १४८० के आसपास हुई रही होगी। सरोज मे दिये हुये कवीर एव कमाल दोनो के सम्वत् अशुद्ध हैं।

१०३।८३

(४१) कलानिधि कवि (१) प्राचीन, सम्वत् १६७२ मे उ०। ऐजन। (इनकी कविता कालिदास ने हजारे मे लिखी है)।

सर्वेक्षण

हजारे मे कलानिधि की कविता है। अत. सम्वत् १७५० के पूर्व इनकी उपस्थिति निर्विवाद है। परन्तु इनकी कोई रचना अभी तक खोज मे नही मिली है, जिससे इनके सम्वन्ध मे कुछ और जानकारी हो सके।

१०४।९५

(४२) कलानिधि कवि (२) सम्वत् १८०७ मे उ०। इनका नखसिख वहुत सुन्दर है।

सर्वेक्षण

'कवि कलानिधि' उपाधि है, जिसे सरोजकार ने कलानिधि नाम कवि समझ लिया है। कवि का मूल नाम है श्रीकृष्ण भट्ट, उपनाम है 'लाल'। यह लाल कलानिधि भी कहे गये है। श्रीकृष्ण भट्ट का जन्म सम्वत् १७२९ वि० मे भट्ट तैलग ब्राह्मण लक्ष्मण भट्ट के यहा मद्रास के निकट हुआ। वहा से किसी कारण छोडकर यह इलाहावाद जिले के देवरिष्या नामक गाँव मे आकर वसे। तभी से इनके वशज देवर्षि कहलाये। देवरिष्या से श्रीकृष्ण भट्ट वूँदी गये, जहाँ रावराजा वुद्धसिह (शासनकाल सवत् १७६७-९७ वि०) के राजकवि हुये। वहा इनको कवि कलानिधि की उपाधि एव जागीर मिली जिसका उपभोग चार पीढी तक इनके वशज करते रहे। इनकी काव्यगुणगरिमा पर मोहित होकर सवाई जयसिह (शासनकाल १७५६ १८०० वि०) इन्हे अपने वहनोई रावराजा वुद्धसिह से माँगकर

---

(१) वही (२) खोज रि० १९३२।१०५

जयपुर ले गये। इस प्रसग का उल्लेख कलानिधि के प्रपौत्र देवर्षि वासुदेव भट्ट ने अपने 'श्रीराधा-रूपचरित्र चद्रिका' नामक ग्रन्थ के आदि मे यो किया है :—

छप्पय

दच्छिन दिसि तैलग देस इक राजत नीकौ
तहँ के परम कुलीन बिप्र कविराज सही कौ
कृष्णभट्ट इमि नाम वेद सास्त्रन में पारग
लौकिक वैदिक रीति कृष्ण को जान्यो मारग
जिन कियउ ग्रन्थ सब सास्त्र के रामायन तप तेह भौ
तिनसो जयशाह नरीन्द्र कै गुन गरिमा भल नेह भौ

दोहा

बूँदीपति बुधसि ह सौ लाए मुख सौं जाँचि
रहे आइ आमेर मे प्रीति रीति बहु बाँचि

सवत् १७७४ मे जयसिह ने श्रीकृष्ण भट्ट को एक ग्राम जागीर मे दिया और राजकवि बनाया। जागीर का उपभोग अभी तक इनके वशज करते आ रहे है। ये सभी कवि भी होते आए हैं।

श्रीकृष्ण भट्ट का देहावसान अस्सी वर्ष की पूर्ण वय मे सवत् १८०९ मे हुआ। सरोज मे दिया हुआ सम्वत् १८०७ इनका उपस्थिति काल है और ठीक है।

श्रीकृष्ण भट्ट लाल कलानिधि के बनाये हुये निम्नाकित ग्रथ हे :—

(१) रामरासा (रामायण) —जयपुर नरेश के आश्रय मे दो महीने मे यह ग्रन्थ बना। इस ग्रन्थ की समाप्ति पर इन्हे रामरासाचार्य की उपाधि दी गई थी। इस ग्रन्थ का बहुत थोडा अश उपलब्ध है। घर मे आग लग जाने से यह जल गया।

(२) अलकार कलानिधि—१९१२।१७९ ए। यह इनका सबसे बडा ग्रन्थ है। इसमे १६ कलाये है और प्रत्येक कला मे प्राय: २०० छद है। ध्वनि, काव्य निरूपण, भाव, रस, व्यग, षट्ऋतु-वर्णन, अलकार, नायक-नयिकाभेद आदि सभी साहित्यागो का इसमे समावेश है। कविता सरस शृगार ही की अधिक है, जो सानुप्रास एव यमक युक्त है। यह ग्रन्थ भोगीलाल जी के लिये लिखा गया था, जैसा कि खोज मे प्राप्त प्रति की पुष्पिका से प्रकट है :—

"इति श्रीमन्महाराज श्री भोगीलालभूपालवचनाज्ञात कविकोविद चूडामनि श्रीकृष्ण भट्ट कवि लाल कलानिधि विरचिते अलकार कलानिधौ नायिकानायकहावभाव निरूपनम् षोडशमो कला ग्रन्थ समाप्तम्।"

यह भोगीलाल वही प्रतीत होते हैं, जिनके लिये देव ने लिखा है :—

"लाखन खरचि जिन आखर खरीदे हैं"

(३) शृंगार रस माधुरी—१९१२। १७९ सी, १९१७।९३ ए। बूंदी नरेश रावराजा बुद्धसिह के लिये सम्वत् १७६९ मे यह ग्रन्थ रचा गया :—

बलावन्ध पति शाह को हुकुम पाइ बहु भाइ
करौं ग्रथ रस माधुरो क्वी कलानिधि राइ १५
सम्वत् सत्रह सै बरष उनहत्तर के साल
सावन सुदि पून्यो सुदिन रच्यो ग्रथ कवि लाल १६

छत्र महल बूँदी तखत कोटि सूर ससि नूर
बुद्ध बलापति माह कै कीनौ ग्रथ हजूर १७

(४) साँभर युद्ध—१६०६।३०१। इस ग्रन्थ मे जयपुर नरेश सवाई जयसिंह तथा सैयद हुसेन-अली तथा सैयद अवदुल्ला (दिल्ली बादशाहत के सेनापति) के साँभर मे हुये युद्ध का वर्णन है।

(५) जयसिंह गुण सरिता।

(६) श्रीमद्भागवत की अनन्यानन्दिनी नाम टीका। यह टीका अपूर्ण है।

(७) बिहारी सतसई की विश्वप्रकाश नामक टीका। यह टीका भी अपूर्ण है।

(८) नखशिख—१६००।११२, १६०५।५, १६१२।१७६ बी, १६२३।१६६। इस ग्रन्थ में कुल ६३ छंद है। इसके अधिकाश छंद नवीन कवि के सुधासर मे लाल कवि के नाम से सकलित हैं।

(९) वृत्त चद्रिका—१६००।८३, १६१७।६३ जी। यह ग्रन्थ अनिरुद्ध सिंह के पुत्र बूँदी नरेश राय बुद्धसिंह के लिये लिखा गया था।

"युद्ध को विशुद्ध मन उद्दत प्रबुद्ध अनिरुद्ध सुत बुद्ध राव राजा गुन गानियै"

(१०) राधागोविन्द सगीत सार—१६१२।१११। गानविद्या, बाजो और स्वरो का गद्य-पद्यमय वर्णन। यह ग्रन्थ भरतपुर नरेश बदनसिंह के कनिष्ठ पुत्र प्रताप सिंह की आज्ञा से मथुरा, श्रीकृष्ण भट्ट, चुन्नीलाल और रामराय इन चार विद्वानो के सम्मिलित प्रयास से रचा गया'—

मथुरा सहित तैलग भट सिरी किसन सुखदाय
लियो भट चुन्नीलाल है कवि कुल सम्परदाय १०७
गौड मिश्र इन्दिरमा राम राय कवि जान
इन जुत कीजै ग्रथ कौ व्रज भाषा परवान १०८

(११) रामायण सूचनिका—१६१७।६३ इ। यह रामायण की प्रसिद्ध-प्रसिद्ध घटनाओ की चार पन्नो मे पद्यात्मक सूची है।

(१२) राम चद्रोदय—यह वाल्मीकि रामायण का अनुवाद है। कवि ने केवल निम्नाकित तीन काण्डो का अनुवाद किया था —

(क) वालकाण्ड १६१७।६३ बी
(ख) युद्ध काण्ड १६१७।६३ सी, १६३८।१४६
(ग) उत्तर काण्ड १६१७।६३ डी

यह अनुवाद भरतपुर नरेश बदनसिंह के कनिष्ठ पुत्र राजकुमार प्रतापसिंह के लिये किया गया था —

(क) जब श्री कुँवर प्रताप ने करी ग्रथ की आन
रामायण भापा किय्यो सुकवि कलानिधि जान १०

(ख) बालकाड अरु युद्ध अरु उत्तरकाड उदार
रच्यो भट्ट श्रीकृष्ण ने सजुत प्रेम अपार ११

(ग) व्रज चक्रवति कुमार गुन गन गहिर सागर गाजही
श्री रामचरन सरोज कलि परताप सिंह विराजही
तिहि हेत रामायन मनोहर कवि कलानिधि ने रच्यो

पुष्पिका मे स्पष्ट ही इन्हे भरतपुर नरेश वदनसिंह का पुत्र कहा गया है।

"इति श्री व्रजमडलमगलीक महाराज श्री वदनसिंघ जी सुत श्री परतापसिंघ प्रेम समुद्भव श्रीरामायणे उत्तरकाडे भापाया कविकलानिधि कृताया विशत्यधिक शततम. सर्ग"

वदनसिंह का राज्यकाल सम्वत् १७७६ से १८१२ वि० तक है। मयाशकर जी याज्ञिक के अनुसार कलानिधि वदनसिंह के समय मे भरतपुर आये।[1]

(१३) दुर्गाभक्ति तरगिणी—इस ग्रन्थ का उल्लेख विनोद मे हुआ है। मयाशकर जी के अनुसार श्रीकृष्णभट्ट ने इनकी रचना प्रसिद्ध कवि सोमनाथ चतुर्वेदी के आग्रह से भरतपुर मे की।[2]

(१४) नवसई—१६१७।६३ एच। यह दोहो का सग्रह है। प्राप्त प्रति मे, खडित होने के कारण, केवल ४८० दोहे है।

(१५) फुटकर कवित्त।

(१६) समस्या पूर्ति—१६१७।६३ एफ।

प्राप्त ग्रन्थो के आधार पर यह स्पष्ट हे कि कलानिधि का सम्बन्ध बूँदी नरेश बुद्धसिंह, जयपुर नरेश सवाई जयसिंह, भरतपुर नरेश वदनसिंह के कनिष्ट पुत्र राजकुमार प्रतापसिंह एव महाराज भोगीलाल के दरवार से था।

विनोद मे इस एक कवि का विवरण ५ कवियो के रूप मे दिया गया है—देखिये, विनोद कवि सख्या ७४६, ८२०, ६१२, ६६६, और १०१७।

इस कवि के सम्वध मे जो विस्तृत विवेचन किया गया, है वह इन्ही के वंशज देवर्षि भट्ट मनमोहन शर्मा लिखित 'कवि कलानिधि श्रीकृष्णभट्ट (लाल)' शीर्षक निवध के आधार पर है।[3]

१०५।८४

(४३) कुलपति मिश्र, सम्वत् १७१४ मे उ०। इनकी कविता हजारे मे है।

सर्वेक्षण

कुलपति मिश्र आगरे के रहने वाले चतुर्वेदी ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम परशुराम मिश्र था। यह प्रसिद्ध कवि विहारी के भानजे थे और उनके आश्रयदाता जयपुर नरेश जयसिंह के सुपुत्र रामसिंह के दरवारी कवि थे। इन्ही के आश्रय मे रहकर इन्होने अपना सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ 'रस रहस्य'[4] सम्वत् १७२७, कार्तिक कृष्ण ११ को पूर्ण किया :—

> सम्वत् सत्रह से वरस व्रते सत्ताईस
> कातिक वदी एकादसी वार वरनि वानीस २३२

इस ग्रन्थ मे कवि ने अपने वश का परिचय दिया है :—

> वसत आगरे नगर मे गुन तप सील विलास
> विप्र मथुरिया मिश्र है हरि चरनन को दास २६

---

(१) माधुरी, फरवरी १६२७, पृष्ठ ७६ (२) माधुरी फरवरी, १६२७, पृष्ठ ८१ (३) माधुरी, अक्टूवर १६२५, 'कवि चर्चा' शीर्षक स्थायी स्तम्भ के अतर्गत। (४) खोज रिपोर्ट १६०३।५१, १६२०।२६ ए, वी, १६२३।२२८ ए, वी, सी, १६२६।२५० ए, वी, सी, पं० १६२२।५७

अभू मिश्र तिन वश मे परसराम जिमि राम
तिनके सुत कुलपति कियो रस रहस्य सुख धाम ३०

यह ग्रन्थ मम्मट के अनुसार है :—

जिते साज हैं कवित के मम्मट कहे बखानि
ते सब भाषा मे कहे रस रहस्य में आनि ३१

इस रीति ग्रन्थ मे पद्य के साथ-साथ यत्र-तत्र व्रजभाषा गद्य का भी प्रयोग हुआ है, फिर भी अस्पष्टता बनी है। इस ग्रन्थ मे रामसिंह की प्रशस्ति के छद अधिक है। यह ग्रन्थ पहले इडियन प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हो चुका है। रस रहस्य के अतिरिक्त इनके निम्नाकित ग्रन्थ और भी मिले हैं :—

(१) दुर्गाभक्ति चद्रिका—१६१२।१००, १६४१।४८० । निम्नाकित छद मे कवि ने ग्रन्थ और ग्रन्थकर्त्ता का नाम दिया है :—

दुर्गा भक्ति चन्द्रिका नाम। पोथी अष्ट सिद्ध को धाम
माथुर कुलपति मिश्र बनाई। दुर्गा भक्तन को सुखदाई ७४

इस ग्रन्थ की रचना सम्वत् १७४६ मे हुई :—

नन्द[९] वेद[४] रिषि[७] चंद[१] है सवत अगहन मास
सुकुल पच्छ की पचमी कियो ग्रथ परकास ७५

यह ग्रन्थ विष्णुसिंह की आज्ञा से रचा गया था। आश्रयदाता का नाम पुष्पिका से ज्ञात होता है —

"इति श्री विष्णुसिंघ देवाज्ञाया मिश्रकुलपति विरचिताया दुर्गाभक्तिचद्रिका सम्पूर्ण समाप्त"

(२) (अ) द्रोण पर्व १६००,७२, १६३२।१२७ बी

(ब) सग्राम सार १६०६।१६०, १६३२।१३७ ए

इस ग्रन्थ की रचना सम्वत् १७३३ मे जयपुर नरेश रामसिंह की आज्ञा से हुई —

"इति श्रीमन् महाराजाधिराज श्री रामसिंह देव आज्ञा कुलपति मिश्रेण विरचिते द्रोणपर्व भाषा सग्रामसार नाम षोडसो परिच्छेद."

रचनाकाल सूचक छद किसी भी रिपोर्ट मे नही उद्धृत है। इस ग्रन्थ स कवि का वश-परिचय और भी विस्तार से ज्ञात होता है। माथुर वश मे प्रसिद्ध अभयराज मिश्र हुये। उनके पुत्र तारा पति थे, तारा पति के पुत्र मयलाल, मयलाल के पुत्र हरिकृष्ण, हरिकृष्ण के पुत्र परशुराम और परशुराम के पुत्र कुलपति हुये :—

माथुर वश प्रवीन मिश्र कुल अभयराज भय
सब विद्या परबीन वेद अध्ययन तपोमय
तारा पति जिहि पुत्र विप्र कुल जिमि तारापति
तासु तनय मयलाल, ब्रह्म विद्या बिचित्र गति
हरिकृष्ण कृष्ण भजि कृष्ण मय तासु तनय भगवत सगा
भय परसुराम जाको तनय गुरु सम भजि राम पगा

(३) नखशिख-१६०६।१८५ बी।

(४) युक्ति तरंगिणी—१६०६।१८५ ए, १६४१।२६। यह नवरस सम्बन्धी ग्रन्थ है। इसकी रचना सम्वत् १७४३ वि० मे हुई थी :—

गुण[३] रु वेद[४] रिषि[७] ससि[१] बरस सावन सुदि की तीज
कीनी जुगति तरंगिनी तन मन हरि रस भीज

शुक्ल जी ने अपने इतिहास मे कुलपति मिश्र के एक अन्य ग्रन्थ 'रस रहस्य' का उल्लेख किया है और इसका रचना काल सम्वत् १७२४ दिया है[१]। यह उल्लेख सभवत. प्रमाद से हो गया है।

सरोज मे दिया हुआ सम्वत् १७१४ कवि का उपस्थिति काल है, जन्म काल नही, क्योकि इसके तेरह वरस बाद ही कवि ने अपना सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ 'रस रहस्य' सम्वत् १७२७ मे बनाया।

१०६।८५

(४४) कारबेग फकीर, सम्वत् १७५६ मे उ०। ऐजन (इनकी कविता हजारे मे है।)।

सर्वेक्षण

कारबेग मुसलमान थे, कारे नाम से कविता करते थे। ये जमुना के किनारे स्थित परासौली गाव के निवासी थे। यह वही परासौली है, जहा सूरदास ने सदा के लिये आँखे वन्द की। कारे जाति के रँगरेज थे। इनकी पत्नी का नाम भूरी था। यह बुन्देलखड मे अधिक रहे थे, इसीलिये लोगो ने इन्हे बुन्देलखडी कह दिया है। इनका रचना काल सम्वत् १७१७ है। इनके गुरु कोई रामदेव थे, जो बुन्देलखडी प्रतीत होते हैं :—

जमुना के तीर परसौली कौ बसइया हौं
भारत के सखा प्रीति रीति कछु जानी नही
संतन को सगो, हरि गीत कौ गवइया हौं
चूक रँगरेज की सौ अरज कहू मानी नहीं
सतरह सौ सतरह कवि कारे कवित्त कीन्हे
नैनन ते नेकहु हरि दरसन ठानी नहीं
येहो बुन्देलखड बार बार झाड डारो
हरी पीर रामदेव ऐसो गुरु ज्ञानी नही[२]।

'हिन्दी के मुसलमान कवि' मे कारे को सागर जिले के रतली नामक कस्बे का निवासी कहा गया है। वस्तुत' उक्त कस्बे मे कवि रहता था। यह उसका जन्म-स्थान नही है। उक्त ग्रन्थ के अनुसार, यहा इनकी एक ब्राह्मण से मित्रता हो गई। एक वार यह कही वाहर गये थे, इसी बीच वह मर गया। जब उसका शव चिता पर रख दिया गया, तब यह वहा पहुँचे। इन्होने लोगो को आग लगाने से रोका और कहा कि उक्त व्यक्ति अभी जीवित है। इसके अनन्तर इन्होने कृष्ण स्तवन के १०८ कवित्त कहे, जिनमे से प्रत्येक के अन्त मे था .—

"क्यों हमारो बार बार की"

कहते हैं, ब्राह्मण जी गया। इन्ही १०८ कवित्तो मे से एक सरोज मे एव दो हिन्दी के मुसलमान कवि मे उद्धृत हैं।[३]

---

(१) हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ २४८ (२) ब्रज भारती, वर्ष १३ अक १, जेठ २०१२, ब्रजभाषा का उपेक्षित कवि कारबेग (३) हिन्दी के मुसलमान कवि, पृष्ठ २१८-२०

सरोज मे दिया हुआ सम्वत् अधिक से अधिक कवि का अन्तिम जीवन काल हो सकता है, यह उसका जन्म-काल कदापि नही है।

१०७।८६

(४५) केहरी कवि, सम्वत् १६१० मे उ०। महाराजा रतन सिंह के यहाँ थे। कविता मे महा चतुर थे।

सर्वेक्षण

सरोज मे केहरी कवि का एक कवित्त उद्धृत है, जो दिग्विजय-भूपण से लिया गया है। इस कवित्त के चतुर्थ चरण मे रतन नाम आया है —

रतन सहारे भट भेदै रवि मडल कौं,
मंडल घरीक नट कुन्डल सो ह्वै रह्यो

सरोजकार ने अपने उद्धरण मे न जाने क्यो 'रतन' के स्थान पर 'समर' पाठ कर दिया है। सरोज का यह उल्लेख उक्त छद मे आये रतन के आधार पर ही है, इसमे सदेह नही। बुन्देल-वैभव मे केहरी कवि को ओरछा निवासी कहा गया है, इन्हें तत्कालीन ओरछा नरेश रामशाह का आश्रित एव दरवारी कवि कहा गया है। इनका जन्मकाल सम्वत् १६२० एव कविता काल सम्वत् १६६० वि० दिया गया है।[1] इनकी कविता के उदाहरण मे सरोज मे उदाहृत कवित्त ही उद्धृत किया गया है। सभवत. इस कवित्त मे राम शाह के भाई उन रतन सिंह की प्रशसा है, जिनका गुणगान महाकवि केशव ने रतनबावनी मे किया है। ग्रियर्सन (७०) और विनोद (१६१) के अनुसार उक्त कवित्त मे प्रशसित रतन सिंह सम्भवत' बुरहानपुर जिला नीमार के राव रतन है जो १५७६ ई० मे हुये।

केहरी नामक एक कवि ने पटियाला नरेश पृथ्वीपाल सिंह के आश्रय मे सम्वत् १८६० वि० मे भूप-भूपण नामक ग्रन्थ की रचना की।[2]

१०८।८७

(४६) कृष्ण सिंह बिसेन राजा-भिनगा जिले वहिरायच, स० १६०६ मे उ०। यह राजा, काव्य मे बहुत निपुण थे और इस रियासत मे सदैव कवि-कोविद लोगो का मान होता था। भैया जगत सिंह इसी वश मे बडे नामी कवि हो गये है और शिव कवि इत्यादि इन्ही के यहा रहे। अब भी भैया लोग खुद कवि है और काव्य की चर्चा बहुत है, जैसा बुन्देलखड और बघेल खड के रईस अपना काल काव्यविनोद मे व्यतीत करते है, वैसे ही इस रियासत के भाई बन्धु है।

सर्वेक्षण

सवत् १६०६ कवि का उपस्थिति काल ही है, जन्म काल नही। विनोद मे (२३१७) इनके एक ग्रन्थ गगाष्टक का उल्लेख है। इनका पूरा नाम कृष्णदत्त सिंह था। इनके पितामह का नाम शिवसिंह (रचनाकाल स० १८५०-७५) और पिता का नाम सर्वजीत सिंह था।[3] शिवदीन कवि बिलग्रामी ने इनके नाम पर कृष्णदत्त रासा नामक ग्रथ रचा था। इसमे इनके और अवध के नवाब के नाजिम महमूद अली खाँ के बीच स० १६०१ मे हुए युद्ध का वर्णन है।[4]

---

(१) बुन्देल वैभव भाग २, पृष्ठ २८३ (२) खोज रिपोर्ट १६०३।११७ (३) यही ग्रथ, कवि सख्या ८२३, खोज रि० १६२३।३६० (४) यही ग्रथ, कवि सख्या ८२७

१०९।८९

(४७) कालिका कवि वन्दीजन, कासी वासी, वि० । सुन्दरी तिलक और ठाकुरप्रसाद के सग्रह मे इनके कवित्त है ।

सर्वेक्षण

सुन्दरी तिलक मे कालिका के दो सवैये हे । छद सख्या २८१,३११ । इनमे से दूसरा सवैया सरोज मे उद्धृत है । खोज मे किसी कालिका प्रसाद का नखशिख नामक ग्रन्थ मिला है[1] । इसमे राम का नखशिख है । हो सकता है यह काशिकेय कालिका की ही रचना हो ।

११०।९२

(४८) काशीराज कवि, श्रीमान् कुमार वलवान सिंह जू, काशी नरेश चेत सिंह महाराज के पुत्र, सम्वत् १८८९ मे उ० । इन्होने चित्र चन्द्रिका नामक भाषा साहित्य का अद्भुत ग्रन्थ रचा है, जो देखने योग्य है ।

सर्वेक्षण

काशिराज के निम्नाकित दो ग्रन्थ खोज मे मिले है :—

(१) चित्र चन्द्रिका—१९०९।१४५, १९२३।२०५,१९२९।१८९ ए ।

(२) मुष्टिका प्रश्न—१९२९।१८९ बी ।

चित्र चन्द्रिका मे कवि ने अपना परिचय दिया है । गौतमवशीय भूमिहार-ब्राह्मण वरिवड सिंह (वलवन्त सिंह) ने वर्तमान काशी राज्य की स्थापना की । वरिवड सिंह के पुत्र प्रसिद्ध चेतसिंह हुए, जिनके नाम पर काशी का मुहल्ला चेतगज वसा हुआ है और जिन्होने वारेनहेस्टिंग्स से सघर्ष किया था । इन्ही चेतसिंह के पुत्र वलवान सिंह हुये, जो काशिराज नाम से कविता करते थे :—

गौतम ऋषि के वश मे भये नृपति वरिवंड
काशी में शिव कृपा ते कीनो राज अखड
तासु तनै जग विदित हैं चेत सिंह महराज
आगम निगम प्रवीन अति दानिन मे सिरताज
हौं सुत तिनके जानिये विदित नाम वलवान
काशी राज सु ग्रथ मे कियो नाम परधान

ग्रथ की रचना सम्वत १८८९ मे प्रारभ हुई—

देव गुरुवार सोहैं त्रसैप्रिय धृति योग
श्रवण सुखद गुण आगम वखानिये
आशा तिथि पूरी जहाँ इषु शुक्ल पच्छ युत
हरन विघन खल जग मे प्रमानिये
निधि सिधि[९] नाग[८] चन्द्र[१] विक्रम सु अक अलि
राशि[८] है ललित तहा राजै पहिचानिये
कवि काशीराज मन आनंद करन हार
ग्रंथ को जनम दिन कियौ शिव जानिये

यह सवत् १९३१ मे पूर्ण हुआ—

---

(१) खोज रिपोर्ट १९२३।२०१

इदु[१] राम[३] ग्रह[९] ससि[१] वरस मार्ग शुक्ल रविवार
चित्र चद्रिका पूर्ण भो पर्चमि तिथि सविचार
—हिन्दी साहित्य का वृहत इतिहास, भाग ६, पृष्ठ ४७६

इस प्रकार स्पष्ट है कि सरोज मे कवि के सम्बध मे जो भी तथ्य और तिथि दी गई है, वह अक्षर-प्रति-अक्षर ठीक है। सरोज मे दिया हुआ सम्वत् १८८६ चित्रचद्रिका का रचना काल है, कवि का जन्मकाल नही।

अप्रकाशित सक्षिप्त खोज विवरण मे इन्हे किसी लक्ष्मीनारायण का पुत्र कहा गया है, जो अशुद्ध है, और १९०६ मे प्राप्त प्रति की अशुद्ध पुष्पिका के कारण है।

"इति श्रीमत् श्रीलक्ष्मीनारायणचरणकमलप्रसादात्मज श्री कवि काशीराज विरचित चित्रचन्द्रिका ग्रन्थ सम्पूर्ण।"

अन्य प्रतियो मे प्रसादात्मज के स्थान पर प्रसादात् पाठ है। इस प्रसादात्मज ने ही यह भ्रान्ति उत्पन्न की है। लक्ष्मीनारायण महाराज काशिराज चेतसिंह के इष्ट देव थे। उन्होने सम्वत् १८४० मे लक्ष्मीनारायण विनोद[१] नामक ग्रन्थ लिखा था :—

गगन[०] वेद[४] वसु[८] चन्द्रमा[१] माघ पुण्यमय मास
कृष्ण पक्ष तिथि अष्टमी गुरु वासर सुख रास २८

ग्रन्थ के आरम्भ मे चेतसिंह ने स्पष्ट लिखा है —

श्री लक्ष्मीनारायण श्रीपति परम पुरुष अभिराम
आनँद करत गुरु इष्ट सम सुमिरैं अष्टौ जाम १
नमस्कार तुमको करौं जग व्यापक जगदीश
परब्रह्म लक्ष्मीनारायण इष्ट हमारे ईस २
परमात्मा लक्ष्मीनारायण सुगुन तिहारौ लेखि
पावत है आनन्द-चित चरन चारु तव देखि ३
चरण सरण है रावरो मोको अति सुखदानि
परब्रह्म लक्ष्मीनारायण प्रतिपालक तव बानि ४

यही लक्ष्मीनारायण चेतसिंह के पुत्र बलवान सिंह के भी इष्ट देव हैं। इन्ही के चरण कमल के प्रसाद से कवि ने ग्रन्थ की समाप्ति की।

चित्रचन्द्रिका मे चित्र काव्य वर्णित है। मुष्टिक-प्रश्न ज्योतिष सम्बन्धी ग्रन्थ है। इसमे मुष्टिक प्रश्न द्वारा शुभाशुभ वर्णन है। इसकी पुष्पिका मे ग्रन्थकर्त्ता का नाम काशिराज दिया गया है।

१११।९४

(४९) कोविद कवि, श्री पडित उमापति त्रिपाठी, अयोध्या निवासी, सम्वत् १९३० मे उ०। यह महाराज षट्शास्त्र के वक्ता थे। प्रथम काशी मे पढकर वहुत दिनो तक दिग्विजय करते रहे, अन्त मे श्री अवधपुरी मे आये। क्षेत्र सन्यास लेकर विद्यार्थी लोगो के पढाने, उपदेश देने और काव्य करने मे काल व्यतीत करते-करते सम्वत् १९३१ मे कैलाश को पधारे। इनके ग्रन्थ सस्कृत में

(१) खोज रिपोर्ट १९०६।४७

बहुत है। भाषा मे हमने केवल दोहावली, रत्नावली इत्यादि दो-चार ग्रन्थ छोटे छोटे देखे है। इस महाराज का बनाया हुआ एक श्लोक हम लिखते हैं, जिससे इनकी विद्वता का हाल मालूम होगा—

भिल्लीपल्ली वश पादद्रुगृहिपुरी चचरीकस्य चपावल्ली—
वाभाति कम्पाकलित दलवती फुल्ल मल्लीमतल्ली।
झिल्लीगीष्केवयेषा सुरवरवनिता तल्लजस्फीतगीति
विन्मल्लावल्लभाश्श विदधतु शिशवो भारतीभल्लकस्ते॥

सर्वेक्षण

त्रिपाठी जी का एक हिन्दी गद्यग्रन्थ 'अयोध्या माहात्म्य' खोज मे मिला हे।[1] इसकी रचना सवत् १९२४ मे भाद्रकृष्ण ११, रविवार को रघुवरपुरी अयोध्या मे हुई। इनके सम्बन्ध मे दिया हुआ सवत् इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि सरोजकार ने कवियो का उपस्थितिकाल दिया है, न कि उत्पत्तिकाल।

———

११२।९७

(५०) कृपाराम कवि, जयपुर निवासी, सवत् १७७२ मे उ०। यह महाराज जयसिंह सवाई के यहाँ ज्योतिषियो मे थे और इन्होने भाषा मे 'समयबोध' नामक एक ग्रन्थ ज्योतिष का बनाया है।

सर्वेक्षण

कृपाराम कवि नागर ब्राह्मण थे। यह जयपुर नरेश सवाई जयसिंह (शासनकाल सवत् १७५६-१८०० वि०) के आश्रय मे थे। इनके ज्योतिष ग्रन्थ समयबोध की प्रतियाँ खोज मे मिल चुकी हैं।[2] सरोज मे दिया हुआ सवत् १७७२ इसी ग्रन्थ का रचनाकाल है।

सवत दस अरु सात सै बरस बहत्तर लेखि
मालव देश उजैनमधि उपजो ग्रन्थ विशेष ६

इस ग्रन्थ मे कवि की छाप कृपाराम, किरपाल और कृपाल मिलती है—

(१) सिधि बुधि रिधि को देत हैं एक दंत विधुभाल
प्रथम गनाधिप को सुकवि करि बन्दन किरपाल

(२) तिन कृपाल ते हेत करि, राख्यौ ढिग दै मान
राम कृपा कवि नाम है, नागर विप्र निदान

पुष्पिका मे कवि का नाम कृपाराम दिया हुआ है। ऊपर के उद्धृत दोहे से स्पष्ट है कि कविनागर विप्र था। यह ग्रन्थ सवाई जयसिंह के लिए लिखा गया था।

श्री सवाई जयसिंह नाव जौ हितपुरकिन्नो
दान कृपान विधान साधि सवविधि जस लिन्नो

(१) खोज रिपोर्ट १९०१।३१ (२) खोज रिपोर्ट १९०९।१५६, १९२६।

इस ग्रन्थ मे नायिका के मुख से नायक के प्रति बादल और वायु तथा बिजली की चमक आदि मे बारहो महीने, पक्ष और तिथि तथा समय को लेकर वर्षा और उससे होने वाले समय का भला बुरा परिणाम आदि वर्णित है।

मेरा अनुमान है कि हिततरङ्गिणी इन्ही कृपाराम की रचना है, जो सवत् १७९८ मे रची गई है।[1] कृपाराम के नाम से शिखनख नामक तीस कवित्तो का पर्याप्त सुन्दर ग्रन्थ मिला है। इसका प्रतिलिपिकाल सवत् १८५७ है।[2] मेरा अनुमान है कि यह शिखनख भी इन्ही कृपाराम की रचना है। खोज मे एक कृपाराम और मिले है जो वैद्य थे, जिनके ग्रन्थ का नाम नयनदीप है।[3] इन्होने यह ग्रन्थ उदयपुर नरेश महाराणा सग्राम सिंह द्वितीय (शासनकाल सवत् १७६७-९० वि०) के आदेश से सवत् १७८५ मे रचा। इनके पूर्वज ऋषीकेश प्रसिद्ध पृथ्वीराज चौहान के पुरोहित थे, जिन्हे रावल समर सिंह अपने यहाँ लाये थे। यह सारी सूचानएँ इस ग्रन्थ से मिलती हैं। कवि की छाप कृपाल और कृपाराम दोनो है।

(१) सुमति सदन गज वदन को करि कृपाल परनाम
विघन हरन बुधि करन कवि एक रदन निधि धाम १

(२) विनती करी कृपाल तव जव प्रभु आज्ञा कीन

(३) सो कृपाराम दुज नाम है जामे केऊ गुन बसै
सग्राम सिंघ महराज ढिग नगर उदेपुर मे बसै

यह कृपाराम कई गुणो से युक्त थे। यह ज्योतिषी थे, कवि थे, वैद्य भी थे। हो सकता है, समयबोध, हित-तरङ्गिणी एव शिखनख के रचयिता कृपाराम ही नयन दीप के भी रचयिता हो। समयबोध जयपुर नरेश के लिए रचा गया, पर रचा गया उज्जैन मे। कवि ने सवाई जय सिंह के अनुरोध से कुछ काल तक जयपुर मे भी निवास किया था। इसी प्रकार वह कुछ दिनो तक उदयपुर मे भी रहा होगा। कवि लोग प्राय एक दरबार से दूसरे दरबार मे आया-जाया करते ही थे।

११३।९६

(५१) कृपाराम, ब्राह्मण, नरैनापुर, जिले गोडा। इन्होने श्रीमद्भागवत के द्वादस स्कन्ध का उल्था भाषा मे किया है, दोहा-चौपाई सीधी बोली मे। महेशदत्त ने इनका नाम काव्य-सग्रह मे लिखा है। हमको अधिक मालूम नही।

सर्वेक्षण

महेशदत्त ने कृपाराम को सरवरिया ब्राह्मण नरैनापुर जिला गोडा का रहने वाला और

---

(१) देखिये, इसी ग्रन्थ मे कवि सख्या १२७ (२) राजस्थान रिपोर्ट, भाग १, सख्या १४९ (३) वही भाग ३, पृष्ठ १७४, सख्या २७

भागवत एकादश स्कन्ध का रचयिता कहा है।[1] यह रामानुज सम्प्रदाय के साधु थे। खोज के अनुसार नरैनापुर का अन्य नाम नारायनपुर और नरयनिया भी हैं। अन्त मे यह चित्रकूट मे रहने लगे थे। इनके निम्नाङ्कित ग्रन्थ खोज मे मिले है —

(१) अ—भागवत दशमस्कन्ध भाषा—(१६०६।१५५) इसका प्रतिलिपिकाल सवत् १८१६ है। इस ग्रन्थ के प्रथम छन्द से हमे इनका रामानुजाचार्य का अनुयायी होना सूचित होता है —

बदौं प्रभु पद कज, श्री रामानुज ज्ञान निधि
त्रिविध ताप अघपुञ्ज, जासु नाम सुनि नसत सब

(ब) भागवत एकादश स्कन्ध भाषा—(१६२६।२४५ ए)। इस ग्रन्थ से इनके गुरु का नाम वालकृष्ण ज्ञात होता है।

ऐसे कृष्ण कृपालु प्रभु सव घट पूरण काम
सोइ मम श्री गुरु भे प्रगट वालकृष्ण अस नाम

(स) श्रीमद्भागवत भाषा—(१६०५।६, १६४४।४६) इस ग्रन्थ का रचनाकाल श्रावण सुदी १२, सवत् १८१५ है—

५ १ ८ १
बान निसाकर वहुरि बसु धरै फेरि ससि अक
तेहि सवत यह प्रगट किय भाषा मनुह मयंक
सुभग मास नभ पक्ष सित तिथि अति परम पवित्र
विष्णु महाव्रत द्वादसी अघहर सुखद विचित्र

(२) अष्टादश रहस्य—(१६२३।२२६)। इस ग्रन्थ की रचना सवत् १६०६ मे हुई। इसमे १८ प्रकार के साधुओ का वर्णन है।

सहस एक सत आठ, बरस अधिकषट जानि
यह कीन्हेउ भाषा पाठ, माधव शुक्ला पंचमी

(३) चित्रकूट माहात्म्य—१६०६।१८३

(४) चित्रकूट विलास—१६४७।४०

(५) भाष्य प्रकाश—(१६०४।४६)। श्रीमद्रामानुजाचार्यकृत श्रीमद्भगवदगीता के भाष्य का अनुवाद। रचनाकाल चैत शुक्ल ७ सवन् १८०८।

---

(१) भाषाकाव्य संग्रह, पृष्ठ १३०

सत अष्ट दस आठ पुनिसवत वरससुभमास

माघव शुक्ला सप्तमी प्रगट्यो भाष्य प्रकाश

१६२६ वाली खोज रिपोर्ट मे भागवत एकादशस्कन्ध भाषा को जयपुर वाले कृपाराम की रचना कहा गया है, जो ठीक नही ।

बुन्देल वैभव मे एक कृपाराम गूदड का उल्लेख है, इनका जन्मस्थान चित्रकूट, जन्म-सवत् १७८० वि०, कविताकाल सवत् १८०५ वि० और ग्रन्थ का नाम भागवत दशमस्कन्ध कहा गया है एव विवरण मे इन्हे चित्रकूट का महन्त वताया गया हे ।[1]

सम्भवत यह कृपा राम गूदड ऊपरवाले कृपाराम ही हे । ऐसी स्थिति मे इनका चित्रकूट मे जन्म लेना असङ्गत है ।

११४।६८

(५२) कमञ्च कवि, राजपूतानेवाले, सवत् १७१० मे उ० । इनकी कविता हमको एक सग्रहपुस्तक मे मिली है जो सवत् १७१० की लिखी हुई माडवार देश की है ।

सर्वेक्षण

सरोज मे इनका एक छन्द उद्धृत है जिसकी भापा सधुक्कडी है । इसमे कवि की छाप कमच है,कमञ्च नही । छन्द की दृष्टि से भी कमच ही उपयुक्त है—**"महि मडल मडली कमच कहि जिहि नवखड विस्वधर वण्टी ।"**

जिस सग्रह मे कमच की कविता सरोजकार को मिली, वह सवत् १७१० का हे । अत १७१० कमच का जन्म-सवत् नही हो सकता । कमच अधिक से अधिक १७१० मे जीवित रह सकते हैं । उस समय उनकी अवस्था ५० वर्ष से कम क्या रही होगी । यह १७१० के पूर्ववर्ती कवि भी हो सकते हैं । सरोजकार ने कमच द्वारा सङ्कलित एक अन्य काव्य-सग्रह का भी उपयोग सरोज के प्रणयन मे किया था, उसने ऐसा उल्लेख भूमिका मे किया है ।

११५।६६

(५३) किशोर सूर कवि, सवत् १७६१ मे उ० । इनके वहुत से कवित्त और छप्पय हैं ।

सर्वेक्षण

सरोज मे इनका एक कवित्त और एक सवैया उद्धृत है । दोनो राम कथा सम्वन्धी हैं ।

(१) बुन्देल वैभव, भाग २, पृष्ठ ५०४

लगता है, इन्होने रामकथा सम्वन्धी कोई ग्रन्थ लिखा था। खोज मे एक ग्रन्थ अङ्गद-रावण सवाद मिला है।[1] इसे किसी परधान की रचना माना गया है, क्योकि निम्माङ्कित चरण मे परधान शब्द आया है—

"कहत परधान महाराज रावण बली आभ सौं नाथ मारे"—६

यहाँ परधान सम्भवत मन्त्री के लिए प्रयुक्त हुआ है, यह कवि का नाम नही है। इस ग्रन्थ के रचयिता वस्तुत किशोर सूर हैं। एक चरण मे इनका नाम आया भी है।

"सूर किशोर जव वालि नन्दन कह्यो कौन अव सीस तोसो पचावै।"

सूर किशोर रामोपासक भक्त थे। इनकी उपासना वात्सल्यभाव की थी। यह सीता जी को अपनी वेटी मानते थे। विदेहराज की ही भाँति इन्होंने भी सीताराम का विवाह किया था। यह जवलपुर मे वहुत दिनो तक रहे। यह कामदगिरि (चित्रकूट) और अवध मे भी रहे, पर अवध मे उसे अपनी वेटी की ससुराल समझ वहुत कम दिन रहे। सूर किशोर ने अनेक सुन्दर पदो की रचना की है जो'मिथिला-विलास' तथा 'सूर किशोर जी के ग्रन्थ' नामक ग्रन्थो मे सगृहीत है।

सूर किशोर रामानन्द सम्प्रदाय के प्रसिद्ध भक्त कील्हदास के पौत्रशिष्य थे।[2] कील्हदास और अग्रदास गुरुभाई एव कृष्णदास पय-अहारी के शिष्य थे। अग्रदास का समय स० १६३२ माना जाता है,[3] अत कील्हदास का भी यही समय हुआ। अग्रदास के शिष्य नाभादास स० १७१६ तक जीवित रहे। यही समय कील्हदास के भी किसी पुत्र-शिष्य का हो सकता है। अत सरोज मे दिया हुआ सूर किशोर का सवत् १७६१, कील्हदास के पौत्रु-शिष्य का अन्तिम जीवनकाल होना असम्भव नही और शुद्ध है।

११६।६४

(५४) कुम्भनदास व्रजवासी, वल्लभाचार्य के शिष्य, सवत् १६०१ मे उ०। इनके पद कृष्णानन्द व्यास देव जी ने अपने सगृहीत ग्रन्थ रागसागरोद्भव रागकल्पद्रुम मे लिखे है। इनकी गिनती अष्टछाप मे है।

सर्वेक्षण

कुम्भनदास का जन्म कार्तिक वदी ११, सवत् १५२५ वि० को गोवर्धन के निकट जमुनावती नामक गाँव मे हुआ था। परासौली गाँव के पास अपनी थोडी सी पैतृक-भूमि मे खेती कर यह अपने कुटुम्व का पालन करते थे। यह गौरवा क्षत्रिय थे। इनकी प्रारम्भ से ही काव्यरचना और सङ्गीत की ओर अभिरुचि थी। सवत् १५५६ के लगभग यह महाप्रभु वल्लभाचार्य के शिष्य हुए। यह इनके प्रारम्भिक शिष्यो मे थे। सवत् १५३५ मे गोवर्धन मे श्रीनाथ जी के रूप का प्राकट्य हुआ था जिसमे वल्लभाचार्य जी ने एक लघु मन्दिर बनवाकर मूर्ति प्रतिष्ठित कर दी थी। कुम्भनदास इस मन्दिर मे सेवा का कार्य करते थे। सूरदास के आगमन के पूर्व यही कीर्तन सेवा-करते थे।

---

(१) खोज रिपोर्ट १६४४।२१३ (२) हिन्दी अनुशीलन, सन १६५६ का सयुक्ताक, रामानन्द सम्प्रदाय के हिन्दी कवि,लेखक डॉ० वदरी, (३) हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ १४६

यह सन्तोषी और निर्लोभ प्रकृति के पुरुष थे। सवत् १६३८ के लगभग फतेहपुर सीकरी मे इन्होने अन्य मनस्क भाव से अकबर से भेंट की थी और गाया था—भक्तन कौं कहाँ सीकरी काम।

इनके सात पुत्र थे जिनमे सबमे छोटे चतुर्भुजदास थे। यह भी सुकवि थे और कुम्भनदास के समान इनकी भी गणना अष्टछाप मे है। कुम्भनदास ने ११५ वर्ष की वय मे सवत् १६४० के लगभग शरीर त्याग किया।[1]

कुम्भनदास ने फुटकर पद रचना की है। इनकी पदावली अभी हाल ही मे विद्याविभाग, कांकरोली, द्वारा प्रकाशित हुई है। इसमे कुल ४०१ पद हैं। इन्होने युगल लीला के पदो का गायन किया है। भक्तमाल मे ९८ सख्यक छप्पय मे उल्लिखित १८ भक्तो मे एक यह भी हैं। इनका अलग छप्पय मे वर्णन नही हुआ है।

११७।

(५५) कृष्णानन्द व्यास देव व्रजवासी, सवत् १८०६ मे उ०। यह महात्मा महाकवीश्वर थे। इन्होने सूरसागर तथा बडे-बडे महात्मा कवीश्वर कृष्ण भक्तो के काव्य इकट्ठे कर एक ग्रन्थ सगृहीत 'रागसागरोद्भव राग कल्पद्रुम के नाम से बनाया है। इसमे सूर तुलसीदास, कृष्णदास, हरीदास, अग्रदास, तानसेन, मीराबाई, हित हरवश, विठ्ठल स्वामी इत्यादि महात्माओ के सेकडो पद लिखे हैं। यह ग्रन्थ किसी समय कलकत्ते मे छापा गया था और १००) को मोल आता था पर, अब नही मिलता।

सर्वेक्षण

कृष्णानन्द व्यास देव जी की कविता का उदाहरण पृष्ठ ४९ पर निर्दिष्ट किया गया है, पर उक्त पृष्ठ पर कृष्णदास अष्टछापी की कविता है, कृष्णानन्द व्यास देव की नही। यह अपनी कविता मे कृष्णानन्द या व्रज के गोस्वामियो से मिली उपाधि रागसागर की छाप रखते थे, कृष्णदास की नहीं।

रागसागर उपाधि है, कृष्णानन्द व्यास देव नाम है। रागकल्पद्रुम ग्रन्थ का नाम है। अनेक स्थलो पर प्रमाद से शिवसिंह ने इस ग्रन्थ का नाम रागसागरोद्भव भी लिखा है, यह तो ऐसा ही है जैसे कोई रामचरितमानस न कहकर केवल तुलसीकृत कहे। इस ग्रन्थ का विस्तृत परिचय भूमिका मे दिया जा चुका है।

रागसागर जी उदय राज्यान्तर्गत जोहैनी नामक स्थान के रहने वाले गौड ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम हीरानन्द व्यास देव और पितामह का प्रमदानन्द व्यास देव था। इनका जन्म-सवत् १८५१ वि० के आस-पास हुआ था, क्योकि श्री नगेन्द्रनाथ वसु ने इन्हे जब सवत् १९४१ वि० मे राजा राधाकान्त देव बहादुर के यहाँ कलकत्ता मे देखा था, उस समय इनकी वय ९० वर्ष की थी। प्राय १५ वर्ष की ही वय मे इन्हे रागसागर की उपाधि मिल चुकी थी। इसके ही बाद यह ३२ वर्ष तक भारत भ्रमण कर गीत सङ्कलन करते रहे और १८९९ मे उसका प्रकाशन प्रारम्भ किया जो सवत् १९०६ वि० मे जाकर समाप्त हुआ, यद्यपि ग्रन्थ रागसागर की इच्छा के अनुकूल

---

(१) अष्टछाप परिचय, पृष्ठ ९९-१०४

७ भागो मे न पूर्ण हो सका इसके केवल ४ भाग निकले। इनका देहावसान सवत् १९४५ के लगभग ९४-९५ वर्ष की वय मे हुआ।[1]

सरोज मे रागकल्पद्रुम का प्रकाशनकाल सवत् १८०० और कृष्णानन्द जी का उपस्थिति-काल सवत् १८०६ दिया गया है। सरोजकार ने पूरे १०० वर्ष की भूल प्रमाद से कर दी है।

११८।७८

(५६) कल्याणदास, कृष्णदास पय अहारी के शिष्य, सवत् १६०७ मे उ०। इनके पद रागसागरोद्भव मे हैं।

सर्वेक्षण

सरोज मे इनका निम्नाङ्कित पद दिया गया है :—

सुमिरौं श्री बिठलेस कुमार
अति अगाध अपार भवनिधि भयो चाहो पार
गोकुलेस हृदै बसौ मम भाल भाल निहाल
नव किसोर कल्याण के प्रभु गाऊँ बारम्बार

उदाहरण से स्पष्ट है कि सरोज के अभीष्ट कल्याणदास कृष्णदास पय-अहारी के शिष्य कल्याणदास से भिन्न हैं। कृष्णदास पय-अहारी के २४ शिष्यो का नामोल्लेख भक्तमाल के ३९ सख्यक छप्पय मे हुआ है। इस सूची मे कल्याणदास का भी नाम है। कल्याणदास का समय १६०७ ठीक है। सरोजकार ने जीवन परिचय तो पय-अहारी जी के शिष्य का दिया है परन्तु उदाहरण गोस्वामी विठ्ठलनाथ के पुत्र गोकुलनाथ के शिष्य कल्याणदास का दिया है। विठ्ठलनाथ जी का देहावसान सवत् १६४२ मे हुआ था। इसी के पश्चात् कल्याणदास ने गोकुलनाथ से वल्लभ। सम्प्रदाय की दीक्षा ली होगी। अत इन कल्याणदास का समय सवत् १६५० के आस-पास होना चाहिये।

११९।८०

(५७) कालीदीन कवि। इन्होने दुर्गा को, भाषा के कवित्तो मे महा कविता मे उल्था किया है।

सर्वेक्षण

सरोज मे दुर्गा सप्तशती के भाषानुवाद से एक ओजपूर्ण कवित्त उद्धृत है। इस कवि के सम्बन्ध मे अन्य कोई सूचना सुलभ नही।

१२०।

(५८) कालीचरण वाजपेयी, विगहपुर जिले, उन्नाव, वि०। यह कविता मे निपुण है। हमने इनका कोई ग्रन्थ नही देखा।

---

(१) रागकल्पद्रुम, द्वितीय संस्करण मे सलग्न सूचनाओ के आधार पर।

सर्वेक्षण

कालीचरण वाजपेयी का 'वृन्दावन प्रकरण' नामक ग्रन्थ खोज मे मिला है।[1] इस ग्रन्थ मे १९०२ वि० मे की हुई भोजपुर के राजकुमार रामेश्वर सिंह की ब्रज यात्रा का वर्णन है।

१२१।१०७

(५९) कृष्णदास गोकुलस्थ, वल्लभाचार्य के शिष्य, सवत् १६०१ मे उ०। इनके वहुत से पद रागसागरोद्भव मे लिखे है और इनकी कविता अत्यन्त ललित और मधुर हैं। यह कवि सूरदास, परमानन्द और कुम्भनदास ये चारो वल्लभाचाय के शिष्य थे। कृष्णदास जी की कविता सूरदास की कविता से मिलती थी। एक दिन सूर जी बोले, आप अपना कोई पद सुनाओ जैसा हमारे काव्य मे न मिले। कृष्णदास जी ने ४ पद सुनाये। उन सव पदो मे सूर जी ने अपने पदो की चोरी साबित की, तव कृष्णदास जो ने कहा, कल हम अनूठे पद सुनावेंगे। ऐसा कह सारी रात इसी सोच मे नहीं सोये। प्रात काल अपने सिरहाने यह पद लिखा हुआ देख सूर जी के आगे पढा "आवत वने कान्हगोप बालक सँग छुरित अलकावली"

सूर जी जान गये कि यह करतूत किसी और ही कौतुकी की है। बोले, अपने वावा की सहायता की है। इनकी गिनती अष्टछाप मे है। अर्थात् व्रज मे ८ वडे कवि हुए हे। तुलसी शब्दार्थ प्रकाश ग्रन्थ मे गोपाल सिंह ने अष्टछाप का ब्योरा इस भाँति लिखा है कि सूरदास, कृष्णदास, परमानन्द, कुम्भनदास ये चारो वल्लभाचार्य के शिष्य और चतुर्भुज, छीत स्वामी, नन्ददास, गोविन्ददास ये चारो विठ्ठलनाथ, वल्लभाचार्य के पुत्र, के शिष्य अष्टछाप के नाम से विख्यात हैं। कृष्णदास का वनाया हुआ 'प्रेम रस रासि' ग्रन्थ वहुत सुन्दर है।

सर्वेक्षण

कृष्णदास का जन्म-सवत् १५५३ म गुजरात के चिलोतरा नामक गाँव मे एक धनी कुनवी पटेल के घर मे हुआ था। घर से रुष्ट होकर यह व्रज आये और १३ वर्ष की वय मे सवत् १५६७ के लगभग वल्लभाचाय जो, से इन्होने गोवर्धन मे दीक्षा ली। इन्हे श्रीनाथ जी की भेंट एकत्र करने का कार्य प्रारम्भ मे दिया गया था। वाद मे यह उक्त मन्दिर के अधिकारी हुए। सवत् १६०० एव १६०५ के वीच किसी समय इन्होने मन्दिर के वङ्गाली पुजारियो को बलपूर्वक हटाया और श्रीनाथ जी का राजसी शृङ्गार प्रारम्भ हुआ। गृहकलह मे इन्होने पुरुषोत्तम जी का पक्ष लिया था और विठ्ठलनाथ जी का श्रीनाथ जी के मन्दिर की ड्योढी मे प्रवेश तक वन्द कर दिया था। इनका देहावसान सवत् १६३८ से पूर्व सम्भवत १६३६ वि० मे हुआ। इनके सम्पूर्ण पदो का कोई सग्रह अभी तक नही निकला है। इनके पद अधिकाश मे प्रियाप्रिय के विहार विषयक हैं। खण्डिता के पद भी पर्याप्त हैं। जुगलमान चरित्र, भ्रमर गीत, प्रेम तत्व निरुपण इनके ग्रन्थ है।[१]

सरोज मे दिया हुआ सवत् १६०१ उपस्थितिकाल है। भक्तमाल मे कृष्णदास अधिकारी का विवरण छप्पय सख्या ८१ मे है। सरोज मे सूर एव कृष्णदास जी की जिस प्रतिद्वन्द्विता का

---

(१) खोज रिपोर्ट १९०४।८१

भक्तमाल की प्रिया दास की टीका के आधार पर है। इसी आधार पर इनके एक ग्रन्थ 'प्रेमरस राशि' का भी उल्लेख किया गया है :—

प्रेमरस रास कृष्णदास जू प्रकास कियो
लियो नाथ मान सो प्रमान जग गाइये ३४४

कृष्णदास अधिकारी और कृष्णदास पयहारी को ग्रियर्सन मे (३६) एक ही समझ लिया गया है। यह भूल अनेक इतिहासकारो ने की है।

कृष्णदास जी कभी भी गोकुल मे नही थे। यह गोवर्द्धन के पास ही बिलछू कुड पर रहा करते थे। सरोजकार ने अष्टछाप से व्रज के आठ कवि समझा है, यह भी ठीक नही। ये वल्लभ सप्रदाय के उस समय तक हुए आठ बडे कवि है।

१२२।१०८

(६०) केशवदास व्रजवासी, कश्मीर के रहने वाले, सम्वत् १६०८ मे उ०। इनके पद रागसागरोद्भव मे बहुत है। इन्होने दिग्विजय की और व्रज मे आकर श्रीकृष्ण चैतन्य से शास्त्रार्थ मे पराजित हुये।

सर्वेक्षण

चैतन्य का आविर्भाव काल सम्वत् १५४२ और तिरोधान काल सम्वत् १५८४ है।[१] केशव कश्मीरी चैतन्य महाप्रभु से शास्त्रार्थ मे पराजित हुये थे। यह घटना १५८४ के पूर्व किसी समय घटी होगी, इस तथ्य को ध्यान मे रखते हुये इनका जन्म सम्वत् १५४० के आस पास हुआ, मानना होगा। सम्वत् १६०८ मे यह पर्याप्त वृद्ध हो गये होगे। सरोज मे दिया हुआ समय इनका उपस्थिति-काल है।

शिवसिंह ने केशव कश्मीरी का वर्णन भक्तमाल एव उसकी प्रियादास कृत टीका के आधार पर किया है .—

कस्मीरी की छाप पाप तापनि जग मडन
दृढ हरि भक्ति कुठार आन धर्म विटप विहंडन
मथुरा मध्य मलेच्छ वाद करि बरबट जीते
काजी अजित अनेक देखि परचै भै भीते
बिदित बात ससार सब, सत साखि नाहिन दुरी
केशो भट नर मुकुट मणि, जिनकी प्रभुता बिस्तरी ७५

प्रियादास जी ने चैतन्य महाप्रभु एव केशव कश्मीरी के शास्त्रार्थ का अत्यन्त सरस वर्णन कवित्त सख्या ३३३-३५ मे किया है। प्रियादास जी के अनुसार यह शास्त्रार्थ शान्तिपुर नदिया (नव द्वीप) मे गगा के तीर पर हुआ था, व्रज-मडल मे नही। आप का नाम केशवदास नही, केशवभट्ट था। प्रसिद्ध श्री भट्ट आप के शिष्य थे। विनोद के अनुसार (६५) इनका एक ग्रन्थ 'भ्रमर-बत्तीसी' है। सर्वेश्वर मे केशव कश्मीरी भट्टाचार्य का विस्तार से विवरण दिया गया है, पर वह अलौकिकता से भरा हुआ है। इससे लाभ की इतनी ही बातें मिलती है —

---

(१) हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ १८२

(१) इनका जन्म-स्थान तैलग देशस्थ वैदूर्य पट्टन (मगी पट्टन या पैठण) है। इनका आविर्भाव श्री निंबार्काचार्य के वंश ही मे हुआ था।

(२) इन्होने श्रीरग वेंकटाचल, तोताद्रि, काची, उज्जैन, द्वारिका, काश्मीर, हरिद्वार, काशी, गगासागर, जगन्नाथपुरी आदि सभी तीर्थो की यात्रा की थी। इनके १४ हजार शिष्य थे। इन्होंने यवनो को परास्त किया था।

(३) आपने वृन्दावन मे ही निवार्क सप्रदायाचार्य श्री गगल भट्ट से दीक्षा ली थी। वृन्दावन ही आपका प्रारम्भिक एव अतिम केंद्र था।[१]

चैतन्य से पराजित होने का उल्लेख इसमे नही है।

१२३।६१

(६१) केवल राम कवि ब्रजवासी, सम्वत् १७६७ मे उ०। ऐजन। (इनके पद रागसागरोद्भव मे बहुत हैं।) इनकी कथा भक्तमाल मे है।

सर्वेक्षण

भक्तमाल मे एक केवल जी कृष्णदास पय अहारी के २४ शिष्यो मे परिगणित है। (छप्पय ३६)। छप्पय १७३ मे एक केवलराम का विवरण है, जिससे कवि के जीवन के सम्बन्ध मे कोई जानकारी नही उपलब्ध होती। प्रियादास की टीका से भी कोई तत्त्व हाथ नही लगता। केवलराम की कथा भक्तमाल मे है, अत सरोज मे दिया हुआ सम्वत् १७६७ निश्चित रूप से भ्रान्त है, क्योकि भक्तमाल की रचना सम्वत् १६४६ वि० मे हुई थी। ग्रियर्सन मे (४५) इन्हे कृष्णदास पय अहारी का शिष्य कहा गया है और रचनाकाल सम्वत् १६३२ दिया गया है। केवलराम का एक पद सरोज मे उद्धृत है, जिससे इनकी छाप "केवल राम वृन्दावन जीवन" ज्ञात होती है —

केवल राम वृन्दावन जीवन

छके सब सखी, दृगनि सों रूप जोहै

इनके पदो का एक सग्रह 'पदावली'[२] खोज मे मिला है। रिपोर्ट मे कवि का नाम 'केवलराम-वृन्दावन जीवन' दिया गया है और अनुमान किया गया है कि यह सम्भवत पजाब के निवासी थे। सम्भवतः यह अनुमान पदावली की भाषा के सहारे किया गया है। केवलराम के नाम से भी एक ग्रन्थ 'रासमान के पद'[३] खोज मे मिला है। ग्रन्थ का वास्तविक नाम 'मान के पद' है। इसमे केवल मान के पद हैं, रास के नही, रिपोर्ट मे यह सूचना दी गई है। प्रतिलिपि मे प्रारम्भिक अश यह है—

"अथ श्रीराम मान के पद श्री केवलराम गोसाईं जी कृत लिखते"

विराम लगा देने से इसका रूप यह होगा —

"अथ श्रीराम ॥ मान के पद ॥ श्री केवलराम गोसाईं जी कृत लिखते ॥"

राम को रास पढकर ग्रन्थ का नाम अशुद्ध दे दिया गया है।

सरोज के केवलराम, कृष्णदास पय अहारी के शिष्य कदापि नही है। यह कृष्णदास है। वृन्दावनी है, 'केवल राम वृन्दावन जीवन' इनकी छाप है। इनका समय अनिश्चित है। कृष्णदास

---

(१) सर्वेश्वर, वर्ष ५, अक १-५, चैत्र २०१२, पृष्ठ २१४-१६ (२) खोज रि० १९४१।३३
(३) खोज रि० १९३२।११४

पय अहारी के शिष्य कवि थे, इसका कोई निश्चित प्रमाण नही। वह रामावत सम्प्रदाय के थे और सभवतः कोई राजस्थानी थे।

१२४।१००

(६२) कान्हरदास कवि व्रजवासी, विट्ठलदास चौबे मथुरावासी के पुत्र, सम्वत् १६०८ मे उ०। ऐजन। (इनके पद रागसागरोद्भव मे बहुत है। इनकी कथा भक्तमाल मे है।) इनके यहा जब सभा हुई थी तब उसी सभा मे नाभा जी को गोसाईं की पदवी मिली थी।

सर्वेक्षण

भक्तमाल मे ४ कान्हर है :—

(१) छप्पय १०० मे उल्लिखित भक्तो के प्रतिपालन करने वाले २६ भक्तो मे से एक।
(२) छप्पय ११७ मे उल्लिखित १२ भक्त राजाओ मे से एक।
(३) छप्पय १७१ मे वर्णित कान्हर दास।
(४) छप्पय १९१ मे वर्णित कन्हर जी।

कृष्णभक्ति को थम्भ ब्रह्म कुल परम उजागर
छमाशील गम्भीर सर्वलच्छन कौ आगर
सर्वसु हरिजन जानि हृदै अनुराग प्रकासै
असन बसन सनमान करत अति उज्ज्वल आसै
सोभीराम प्रसाद ते कृपा दृष्टि सब पर बसी
बूडियै विदित कन्हर कृपाल आत्माराम आगम दरसी १९१

इनमे से प्रथम एव चतुर्थ कान्हर एक ही है। यही भक्तो के प्रतिपालक हुये है। यह ब्रह्म-कुल के थे। किन्हीं सोभूराम की इन पर कृपा थी। सोभूराम का उल्लेख भक्तमाल, छप्पय १९० मे हुआ है। इन्ही कान्हरदास ने नाभा जी का सम्मान किया था। रूपकला जी के अनुसार सम्वत् १६५२ मे कान्हरदास जी के भडारे मे बहुत महानुभाव इकट्ठे थे, वही सबो ने मिलकर नाभा जी को गोस्वामी की पदवी दी।[1] ऐसी स्थिति मे सरोज मे दिया सम्वत् १६०८ कान्हरदास जी का प्रारम्भिक यौवन काल प्रतीत होता है। यह न तो उनका जन्म काल है और न अंतिम जीवन काल।

सरोज के अनुसार कान्हरदास विट्ठलदास चौबे के पुत्र थे। भक्तमाल मे विट्ठलदास माथुर का विवरण छप्पय ८४ मे है। प्रियादास ने इसकी टीका ७ कवित्तो मे की है। प्रियादास के अनुसार विट्ठलदास माथुर के एक पुत्र रगी राय थे। कान्हरदास का उल्लेख न तो उक्त छप्पय मे है, न प्रियादास की टीका मे।

सरोज मे कान्हरदास जी का एक पद उद्धृत है, जिसके अनुसार यह वल्लभ सम्प्रदाय के वैष्णव थे और इन्होने महाप्रभु वल्लभाचार्य के पुत्र गोस्वामी विट्ठलनाथ जी की शरण गही थी। विट्ठलनाथ जी का देहावसान सम्वत् १६४२ मे हुआ था। कान्हरदास जी ने सम्वत् १६४२ के पूर्व ही कभी वल्लभसम्प्रदाय की दीक्षा ली रही होगी —

---

(१) भक्तमाल, पृष्ठ ९९३

श्री विट्ठलनाथ जू के चरन सरनं
श्री वल्लभनंदन कलि कलुस खंडन परमं पुरुषं त्रयताप हरनं
सकल दुख दारन भवसिंधु तारन जनहित लीला देह धरन
कान्हरदास प्रभु सब सुखसागरं भूतले दृढ़ भक्तिभाव करन

१२५।

(६३) केदार कवि बन्दीजन, सम्वत् १२८० मे उ० । यह महान् कवीश्वर अलाउद्दीन गोरी के यहा थे और यद्यपि इनकी कविता हमारी नजर से नही गुजरी, परन्तु हमने किसी तारीख मे भी इनका जिक्र पढा है ।

सर्वेक्षण

गग के विवरण मे सरोज मे एक कवित्त उद्धृत है, जिसका तृतीय चरण यह है :—

चद चउहान के केदार गोरी साहि जू के,
गग अक्बर के बखाने गुनगात है।

इसके अनुसार केदार किसी गोरी के यहाँ थे । इस गोरी का नाम अलाउद्दीन नही था, शहाबुद्दीन था । शुक्ल जी इसको भट्ट भणन्त मानते हैं । शुक्ल जी के अनुसार भट्ट केदार और भट्ट मधुकर (सम्वत् १२२४-४३) नामक कवि कन्नौज के राजा जयचद के यहाँ थे । भट्ट केदार ने, जयचद प्रकाश, नामक महाकाव्य लिखा था, जो आज उपलब्ध नही । इसका उल्लेख बीकानेर के राज-पुस्तक भडार मे सुरक्षित सिंघायचदयाल दास कृत 'राठौडा री ख्यात' मे है ।[१]

१२६।

(६४) कृपाराम कवि (३) । माधवसुलोचना चम्पू भाषा मे बनाया ।

सर्वेक्षण

माधवसुलोचनाचम्पू की कोई प्रति अभी तक खोज मे नही मिली है, जिससे इस कवि के सम्बन्ध मे कुछ निश्चित रूप से कहा जा सके । ग्रियर्सन (७९७) और विनोद (८१५) मे माधव सुलोचना के कर्ता कृपाराम को नरैनापुर वाले कृपाराम से अभिन्न माना गया है ।

खोज मे सरोज मे वर्णित कृपारामो से भिन्न निम्नाकित ४ कृपाराम और मिले हैं । हो सकता है, इन्ही मे से कोई माधवसुलोचनाचम्पू के भी रचयिता हो —

(१) कृपाराम शाहजहापुर निवासी कायस्थ, सम्वत् १७९२ के लगभग वर्तमान । ज्योतिषसार भाषा के रचयिता (१९०६।१८८) ।

(२) कृपाराम ब्राह्मण—वीरजराम के पिता, सम्वत् १८१० के पूर्व वर्तमान, १९०६।७२, १९१७।४६, पं० १९२२।२७ ।

(३) कृपाराम—सेवापन्थी भाई अडन जी के शिष्य । 'कीमियाय सआदत' नामक मुसलमानो के सबसे प्रसिद्ध वेदान्त ग्रन्थ का गद्य मे "मुहम्मद गजाली किताब अमर भाषा पारस भाग"

---

(१) शुक्ल जी का इतिहास, पृष्ठ ५०, पाद-टिप्पणी ।

(१६०६।११) नाम से अनुवाद करने वाले। विनोद मे(८१५)इस पुस्तक को भी नरैनापुर वाले कृपाराम की रचना कहा गया है, जो ठीक नही।

(४) कृपाराम—कठमाल या विसुनपद के रचयिता १६४१।३८।

१२७।

(६५) कृपाराम कवि (४)। हित तरगिणी शृगार दोहा छद मे एक ग्रन्थ महाविचित्र काव्य बनाया।

सर्वेक्षण

हित तरगिणी का एक सु-सम्पादित सस्करण स्वर्गीय रत्नाकर जी ने भारतजीवन प्रेस, काशी से प्रकाशित कराया था। यह नयिका-भेद का ग्रन्थ है। इसमे कुल ३६६ छद हें। इनमे से अधिकाश दोहे हैं। दो-चार वरवै,सोरठे और एक-आध अन्य छद भी हैं। इस ग्रन्थ का रचनाकाल सम्वत् १५६८ माना जाता है, जिसका आधार हित तरगिणी का अतिम दोहा है :—

सिधि[८] निधि[९] शिव मुख[५] चंद्र[१] लखि माघ शुद्ध तृतियासु
हित तरंगिनी हौं रची कवि हित परम प्रकासु

हित तरगिणी का एक दोहा है :—

वरनत कवि सिगाररस छंद वडे विस्तारि
मैं वरन्यो दोहानि विच याते सुघर विचारि—प्रथम तरग ४

रस-वर्णन की पद्धति विशेप रूप से सम्वत् १७५० के पश्चात् प्रवल होती है, जव छोटे छद दोहा मे, लक्षण और कवित्त-सवैया आदि वडे छदो मे उदाहरण देने की प्रथा प्रगाढ हुई। ऊपर वाले दोहे मे इसी तथ्य की ओर सकेत किया गया है। ऐसी स्थिति मे हित तरगिणी का रचनाकाल सम्वत् १५६८ ठीक नही प्रतीत होता। विनोद मे (६१) भी इसके विहारी सतसई की परवर्ती रचना होने का सदेह प्रगट किया गया है :—

"इस कवि के पद कही-कही विहारी लाल से मिल जाते हैं, जिससे यह सदेह किया जा सकता है कि यह कवि विहारी से पीछे हुआ, परतु अन्य प्रमाणो के अभाव मे इस ग्रथ का ठीक सम्वत् अप्रामाणिक नही माना जा सकता। और यही कहना पडेगा कि या तो विहारी ने इनकी चोरी की या पद दैवात् मिल गये।"

इधर पडित चद्रवली पाडेय ने हित तरगिणी के रचनाकाल पर अपने ग्रथ केशवदास के अत मे विचार किया है।[१] उन्होने लिखा है कि हित तरगिणी की रचना सम्वत् १५६८ मे न होकर सम्वत् १७६८ मे हुई। उनका कहना है कि 'शिव मुख' के स्थान पर मूल पाठ 'सवनुख' रहा होगा जो किसी लिपिकर्त्ता के अज्ञान के कारण 'शिव मुख' हो गया। 'सुख' का 'मुख' और 'मुख़ का 'सुख' हो जाना हस्तलेख मे कोई कठिन वात नही। 'सव' का 'सव' ओर 'सव' का 'सिव' अर्थ लगाने के लिये कर लिया गया। सब सुख का अर्थ सातो सुख होता है। ये सातो सुख ये है :—

तन तिय तनय धाम धन धरनी
मित्र सहित सुख सातौ बरनी

महाकवि केशव ने भी कवि प्रिया मे 'सप्त वर्णन' सात सुखो का उल्लेख किया है :—

---

(१) केशवदास पृ० ४०८-१०

सात छंद, सातों पुरी, सात तुचा, सुख सात
चिरंजीव मुनि सात नर, सप्तमात्रिका तात
—एकादश प्रभाव, छंद १८

प्रसिद्ध नीति कवि वृंद ने 'काव्यालंकर सतसैया' या 'वृंद विनोद' की रचना सम्वत् १७६३ में की थी। निम्नांकित दोहे मे उन्होने रचना काल दिया है। यहाँ उन्होने सात के लिए सुख का प्रयोग किया है —

गुन[३] रस[६] सुख[७] अमृत[१] वास, वरस सुकुल नभ मास
दूज सुकवि कवि वृंद ए दोहा किए प्रकास १४
—खोज रि० १६४४।३६६

इसी प्रकार मातादीन मिश्र ने कवित रत्नाकर के प्रकाशन काल (१८७५ ई०) की सूचना वाले छद मे ७ के लिए सुख का प्रयोग किया है —

सर[५] सुक्ख[७] अष्ट[८] अरु लेहु चद[१]
ईसा सवत अति अनंद

इस ग्रन्थ की दो प्रतियाँ खोज मे मिली हैं।[१] यद्यपि दोनो मे शिव मुख ही पाठ है, पर पाडेय जी की बात स्वीकार कर लेने पर, वडे छदो मे शृ गार रस वर्णन करने की प्रचलित रीति और बिहारी के दोहो से मेल की बात ठीक सध जाती है। सम्वत् १७९८ के आस-पास कृपाराम नाम से एक कवि जयपुर दरबार मे थे। मेरा अनुमान है कि हित तरगिणी इन्ही की रचना है। जयपुर दरबार से सम्वन्वित होने के कारण उनका बिहारी सतसई से प्रभावित होना और भी समीचीन प्रतीत होता है।[२] बुन्देल वैभव मे न जाने किस आधार पर इन कृपाराम को बुन्देलखडी मान लिया गया है।[३]

१२८।

(६६) कुन्ज गोपी, गौड़ ब्राह्मण, जयपुर राज्य के वासी। ऐजन। (निरर्थक) प्रथम एव द्वितीय सस्करणो मे यह 'ऐजन' नही है।

सर्वेक्षण

कुन्ज गोपी का विवरण मातादीन मिश्र कृत कवित्त रतनाकर से लिया गया है।[४] उक्त ग्रन्थ मे कुन्ज गोपी का एक कवित्त उद्धृत है जिसकी भाषा राजस्थानी मिश्रित है :—

कहै कुन्ज गोपी यमुना तीर हों मे
मुडि मुडि कान्हरा वंशी बजावै छे जी

कुन्ज मणि नामक एक कवि खोज मे मिले हैं, जिनकी रचनाओ मे कुन्ज, कुन्जमणि, कुन्ज जन, कुन्ज दास आदि छाप है। मेरा अनुमान है, इन्ही कुन्जमणि की एक अन्य छाप कुन्ज गोपी भी है। कुन्जमणि के दो ग्रन्थ मिले हैं :—

(१) उपा चरित्र (वारहखड़ी) १९०६।२८२, १९२०।९१, १९२६।२५२ बी, प० १९२२।५८।

१—खोज रि० १९०६।२८०, १९०९।१५७ २—देखिये, यही ग्रथ, कृपाराम, संख्या ११२
३—बुन्देल वैभव, भाग २, पृष्ठ २७४ ४—कवित्त रत्नाकर, भाग १, कवि संख्या २१

(२) पत्तल १६२६।२५२ ए। ऊषा चरित्र की रचना सम्वत् १८३१ मे हुई :—

एक सहस पर आठ सै सम्वत सुभ एकतीस
कातिक सुदि सुभ द्वादसी कृपा करी जगदीस

और पत्तल की रचना सम्वत् १८३३ मे :—

एक सहस पर आठ सै सम्वत सुभ तेंतेस
दुतिया सुदि वैसाख में कृपा करी जगदेस

ऊषा चरित्र मे ऊषा-अनिरूद्ध का विवाह एव पत्तल मे सीता-राम का विवाह वर्णित है। कवि रामोपासक प्रतीत होता है, क्योकि ऊषा चरित्र के भी अत मे वह सीता-राम से ही मनो वाछित फल पाने की बात करता है :—

दास कुन्ज पावन भयो कृष्ण चरित यह गाइ
सीताराम प्रताप तें मन वाछित फल पाइ

मिश्रबन्धुओ ने ऊषाचरित्र के रचयिता कुन्जमणि को ओरछावासी कुन्ज कुवर माना है।[1]

१२६।

(६७) कृपा कवि। ऐजन (निरर्थक, प्रथम एव द्वितीय सस्करणो मे 'ऐजन' नही है।)

सर्वेक्षण

सरोज मे कवि का केवल नाम है, न सन्-सम्वत् है, न उदाहरण है और न कोई अन्य सूचना ही। केवल नाम के सहारे कोई निश्चित पकड सम्भव नही।

१३०।

(६८) कनक कवि, सम्वत् १७४० मे उ०। ऐजन। (निरर्थक, प्रथम एव द्वितीय सस्करण मे 'ऐजन' नही है।)

सर्वेक्षण

खोज मे किसी कनक सिंह के दो ग्रन्थ मिले हैं :—

(१) भागवत दशमस्कध भाषा—१६२६।१८२। ग्रन्थारम्भ मे लिखा गया है :—

"अथ पोथी दशमस्कध भाषा कनक सिंह कायस्थकृत लिख्यते"

पुष्पिका से भी कवि की जाति का उल्लेख हुआ है। प्राप्त प्रति का लिपिकाल सम्वत् १८८५ है। अत: रचना इसकी पूर्ववर्ती है। रिपोर्ट के उद्धृत अश मे कवि का नाम आया है :—

कनक सिंह विनवै वहु भाई
टूटत अच्छर देहु वनाई

---

(१) विनोद, कवि संख्या ६८६

(२) वभ्रुवाहन कथा—१६२६।२२१, १६४१।४७३। ग्रन्थ के उद्धृत अश मे कवि का नाम आया है —

वभ्रुवाहना कथा यह पडव कुल के भूप
कनक सिंह कवि भाषा कथा कीन्ह अनुरूप

सभवत यही कनक सिंह सरोज के कनक कवि है, जिनका उपस्थित काल सम्वत १७४० है।

खोज मे किसी कनक सोम की रचना 'आषाढ भूत चौपाई'[1] मिली है।

१३१।

(६६) कुम्भ कर्ण,, राना चित्तौड, मीराबाई के पति, सम्वत् १४७५ के लगभग उ०। यह महाराना चित्तौड मे सम्वत् १५०० के लगभग राजगद्दी पर बैठे और सम्वत् १५२५ मे उदाना के पुत्र ने इनको मार डाला। टॉड साहब चित्तौड की हिन्दी तारीख से इनका जीवन-चरित्र विस्तार पूर्वक लिखकर कहते हैं कि, राना कुम्भा महान् कवि थे। नायिका भेद के ज्ञान मे प्रवीण थे और गीत गोविन्द का तिलक बहुत विस्तार पूर्वक बनाया है। प्रकट नही होता कि राना के कवि होने के कारण उनकी स्त्री मीराबाई ने काव्य-शास्त्र को सीखा अथवा मीराबाई के कवि होने से राना साहब कवि हो गये।

सर्वेक्षण

ग्रियर्सन (२१) के अनुसार कुम्भकरण जी १४०० ई० के आस-पास सिंहासनासीन हुये और १४६६ ई० मे अपने पुत्र ऊदाजी द्वारा मारे गये। टाड के अनुसार यह कुशल कवि थे और इन्होने गीत गोविन्द की टीका की थी। विनोद के अनुसार (२३) इन्होने सम्वत् १४१६ से १४६६ पर्यन्त राज्य किया। ऐसी स्थिति मे सरोज-दत्त सम्वत् अशुद्ध है।

राना कुम्भा मीरा के पति नही थे। यह दोनो समकालीन तक नही थे।[2]

१३२।

(७०) कल्याण सिंह भट्ट। ऐजन। (निरर्थक, प्रथम एव द्वितीय सस्करणो मे ऐजन नही लिखा गया है।

सर्वेक्षण

खोज मे एक कल्याण भट्ट मिले हैं, जो प्राणनाथ भट्ट के पिता थे और सम्वत् १८७६ के पूर्व वर्तमान थे। प्राणनाथ भट्ट ने सम्वत् १८७७ मे 'वैद्य दर्पण' नामक ग्रन्थ लिखा था। इस ग्रन्थ की पुष्पिका मे इनके पिता का नाम कल्याण भट्ट ज्ञात होता है।

"इति श्री कल्याणभट्टात्मज श्री प्राणनाथ भट्ट विरचिते वैद्य दर्पण प्रथम खड समाप्त।"

खोज रि० १६१७।१३५

हो सकता है ये कल्याण भट्ट काव्य भी करते रहे हो।

---

(१) खोज रिपोर्ट १६४१।२०५ (२) देखिये, यही ग्रन्थ, मीरा, सख्या ७००

एक कल्याण का खडित 'सुदामा चरित्र'[१] मिला है। इसमे १८ सवैये एव दो कवित्त अवशिष्ट हे। अन्य कोई सूचना उपलब्ध नही है। खोज मे एक और कल्याण सिंह का पता चलता है। यह भट्ट नही थे, छत्र कवि के आश्रयदाता थे और सम्बत् १७५७ के लगभग वतमान थे।[२]

१३३।१०३

(७१) कामता प्रसाद, ब्राह्मण, लखपुरा, जिला फतेहपुर, सम्वत् १९११ मे उ०। यह महाराज साहित्य मे अद्वितीय हो गये हैं। सस्कृत, प्राकृत, भाषा, फारसी इन सब मे कविता करते थे। इनके विद्यार्थी सैकडो काव्यकला के महान् कवि इस समय तक विद्यमान हे।

सर्वेक्षण

ग्रियर्सन मे (६४४) इन्हे असोथर के भगवन्त राय खीची का वशज कहा गया है और इस ग्रन्थ के ९७ और १३३ सख्यक कामता प्रसादो को मिला दिया गया है, पर यह ठीक नही। ब्राह्मण और क्षत्रिय को एक ही समझना ग्रियर्सन की भूल है। इस कवि के सम्वन्ध मे अन्य कोई सूचना सुलभ नही है।

१३४।

(७२) कृष्ण कवि प्राचीन। ऐजन। (निरर्थक)

सर्वेक्षण

इनकी कविता का उदाहरण पृष्ठ ४३ पर कहा गया है। उक्त पृष्ठ पर कृष्ण कवि का जो कवित्त है, वह औरगजेव की प्रशस्ति मे है।

चढे ते तुरग नवरगसाह वादसाह
जिमी आसमान थरथर थहरात है

७९ सख्या पर भी एक कृष्ण कवि है, जिनका रचना काल सम्वत् १७४० दिया गया है। इन्हे औरगजेव वादशाह का आश्रित कहा गया है। अत यह उदाहरण ७९ सख्यक कृष्ण कवि का भी है। इसलिये १३४ सख्यक कृष्ण कवि प्राचीन और ७९ सख्यक कृष्ण कवि (१) अभिन्न हैं। इस कवि की वृद्धि तृतीय सस्करण से हुई है। प्रथम एव द्वितीय सस्करणो मे यह कवि है ही नही।

ख

१३५।११०

(१) खुमान वन्दीजन, चरखारी, बुन्देलखडी, सम्वत् १८४० मे उ०। बुन्देलखड मे आज तक यह वात विदित है कि खुमान जन्म से अन्धे थे। इसी कारण कुछ लिखा-पढा नही। दैवयोग से इनके घर मे एक महापुरुष सन्यासी आये और ४ महीने तक वास कर चलने लगे। वहुतेरे चरखारी के सज्जन, कवि, कोविद, महात्मा, थोडी दूर जाकर सन्यासी महाराज की आज्ञा से अपने घरो को लौट आये। खुमान साथ ही चले गये। सन्यासी ने वहुत समझाया पर जव खुमान जी ने कहा कि हम घर

---

(१) खोज रिपोर्ट १९२९।४० (२) खोज रिपोर्ट १९०६।२२, १९३१।२१, १९३२।४९

मे किस लियेजायँ, हम अन्धे, अपढ, निकम्मे, घर के काम के नही, ' धोवी के ऐसे गदहा न घर के न घाट के", हम आप ही के सग रहेगे। तब सन्यासी यह बात श्रवण कर बहुत प्रसन्न हो खुमान जी की जीभ मे सरस्वती का मन्त्र लिख बोले, प्रथम हमारे कमडल की प्रशसा मे कवित्त कहो। खुमान ने शीघ्र ही २५ कवित्त कमडल के बनाये और सन्यासी के चरणारविन्दो को दड प्रणाम कर घर आकर सस्कृत और भाषा की सुन्दर कविता करने लगे। एक बार सेंधिया महाराज ग्वालियर के दरबार मे गये। सेंधिया ने आज्ञा दी कि सस्कृत मे रात भर मे एक ग्रन्थ बनाओ। खुमान जी ने प्रतिज्ञा करके एक ही रात्रि मे ७०० श्लोक दिये। कविता देखने से इनकी कविता मे दैवी-शक्ति पाई जाती है। लक्ष्मणशतक और हनुमन्नखशिख, ये दो ग्रन्थ इनके बनाये हुये हमारे पुस्तकालय मे मौजूद हैं।

सर्वेक्षण

खुमान चरखारी के राजा विजय विक्रमाजीत सिंह (विक्रमसाहि) के यहाँ रहते थे। कविता मे यह अपना नाम मान भी रखते थे। इनका जन्म छतरपुर के निकट खर गाव मे हुआ था। यह चरखारी के अन्तर्गत काकिनी गाँव के हनुमान जी के भक्त थे और इन्होने उन पर कई काव्य-ग्रन्थ लिखे हैं।[1]

अतिम दिनो मे यह महाराज विजय विक्रमाजीत से रूठकर ग्वालियर चले गये थे। यह घटना सम्वत् १८८६ के पहले घटी होगी, क्योकि उक्त महाराज का देहावसान इसी साल हुआ था। फल यह हुआ कि इन्हे माफी मे मिला गाँव खालसा (जब्त) हो गया, जो इनके पौत्र बलदेव को ग्वालियर से वापस आने पर तत्कालीन चरखारी नरेश जयसिह (राज्यारोहणकाल १९१७ वि०) द्वारा पुन मिला।[2]

विजय विक्रमाजीत के पिता खुमान सिह के दरबार मे उदयभान नामक कवि थे। उन्ही के पौत्र खुमान वन्दीजन थे। अपने ग्रन्थ लक्ष्मण शतक मे कवि ने स्ववश वर्णन भी किया है।

हठे सिंघ बसहरिय प्रगट बन्दीजन बसहि
हरिचन्दन सुत तासु इन्द्रगढ जासु प्रससहि
तासु तनय प्रहलाद दास ईंम लौहट छाइव
ता सुत दानीराम अखय खडगाम बसाइव
कवि वैदभान ता सुत उदित विश्व विदित विद्वनि वलित २
ता सुत कनिष्ट कवि मान यह लखन चरित किन्हिय ललित १२१

—खोज रिपोर्ट १९०६।७० डी

स्पष्ट है कि इनके पूर्व पुरुष हठे सिह थे जो बसहरिय स्थान पर रहते थे। हठे सिह के पुत्र हरिचन्दन हुये, जो इन्द्रगढ मे रहते थे। हरिचन्दन के पुत्र प्रहलाद हुये, जो लोहट मे थे। प्रहलाद दास के पुत्र दानीराम हुये, जिन्होने खडगाँव (खरगाँव) बसाया। दानीराम के पुत्र कवि वैदभान (उदयभान) हुये। उदयभान के पुत्र उदित और उदित के कनिष्ट पुत्र कवि मान हुये। मान के पुत्र का नाम ब्रजलाल था। नीति निधान ग्रन्थ मे कवि ने अपने को उदयभान का पौत्र कहा है।

उदैभान कवि कौ खुमान कवि पौत्र पवित्र कविन मे ३२२

---

(१) नागरी प्रचारिणी पत्रिका, भाग १३, अक ४, माघ १९८९, 'खुमान कृत हनुमन्नखशिख लेख (२) नागरी प्रचारिणी पत्रिका, भाग ६, सख्या ४, माघ १९८९, पृष्ठ ३८३

खुमान के निम्नलिखित ग्रन्थ खोज मे मिल चुके है —

(१) अमर प्रकाश—१९०३।७४, १९०५।८६। यह सस्कृत के प्रसिद्ध अमर कोश का हिन्दी अनुवाद है। इसकी रचना सम्वत् १८३६, वैशाख शुक्ल, नृसिंह चतुर्दशी, बुधवार को हुई थी।

रस[6] गुन[3] बसु[8] ससि[1] बरष नरहरि तिथि बुधवार
तव कवि मान कियो बिरचि अमर प्रकाश प्रचार

—खोज रि० १९०५।८६

(२) अष्टयाम—१९०६।७० जे। इसमे चरखारी नरेश विक्रम साहि की दिनचर्या है। इसकी रचना सम्वत् १८५२, मार्गशीर्ष वदी ६, भौमवार को हुई :—

सम्वत दृग[2] सर[5] नाग[8] ससि[1] मारग वदि छठ भौम
वरनौ विक्रम वीर को अष्टजाम जस सौम ६१

(३) नरसिंह चरित्र—१९०४।४५, १९०६।७० एच, १९२६।२३७ सी। इसकी रचना सम्वत् १८३९, वैशाख शुक्ल १४ (नृसिंह चतुर्दशी) को हुई :—

सम्बत नव[9] गुन[3] बसु[8] कुमुदबन्धु[1] निबध पवित्र
नरहरि चौदस को भयो श्री नरसिंह चरित्र

—खोज रि० १९०६।७० एच, १९२६।२३७ सी

१९०४ वाली रिपोर्ट मे 'गुन' के स्थान पर 'मुनि' पाठ है, तदनुसार इसका रचना-काल सम्वत् १८७९ होना चाहिये।

(४) नीति निधान—१९०६।७० एफ। इस ग्रन्थ मे चरखारी के राजा खुमान सिंह के सबसे छोटे भाई (विक्रम साहि के चाचा) दीवान पृथ्वी सिंह का हाल है।

कवि मान राव पृथीस की जय पढै स्वामित धर्म की ६८१

(५) नरसिंह पचीसी—१९०६।७० आई। इस ग्रन्थ मे नरसिंह भगवान की स्तुति के २५ छद हैं।

(६) राम रासो—१९२६।२३७ डी। इसमे तुलसीकृत रामायण के अनुसार लकाकाण्ड का अगद सवाद से राम के अयोध्या पहुँचने तक का वर्णन है।

(७) राम कूट विस्तार—१९०६।७२।

(८) लक्ष्मण शतक—१९०६।७० डी, १९२६।२३७ ए, बी। इस ग्रन्थ मे १३३ छदो मे लक्ष्मण-मेघनाद का युद्ध वर्णित है। ग्रन्थ की रचना खरगाँव मे सम्वत् १८५५, वसत पचमी, रबिवार को हुई :—

इपु सौ ससि बसु नित्तवर रवि पचमी वसत
थिर खडगाव खुमान कवि लच्छमण सतक रचंत १३३

—खोज रि० १९०६।७० डी।

न जाने किस प्रकार इस दोहे से रचनाकाल सम्वत् १८५५ निकाला गया है।

(८) समरसार—१९०६।७० जी। इस ग्रन्थ मे विजय विक्रमाजीत के पुत्र धर्मपाल की उस वीरता का वर्णन है, जिसे उन्होने अपने पिता द्वारा ब्रिटिश सरकार से सम्बन्ध स्थापन के समय किसी उद्दड अँगरेज अफसर के अनुचित व्यवहार के दमन करते मे प्रदर्शित की थी। कवि ने इस युद्ध की तिथि सम्वत् १८७८ दी है।

सम्वत् वसु[८] मुनि[७] नाग[८] ससि[१] अगिन असत तिथि भूत
भृगु सु वार ता दिन हनो मेजर सैन अकूत २
धर्मपाल महाराज ने करी जुद्ध को ठान
सुभट सूर बुलवाइ के बोले बोल प्रमान ३

शुक्ल जी ने प्रमाद से इस ग्रन्थ के विषय मे लिखा है कि इसमे युद्ध-यात्रा के मुहूर्त आदि का विचार है।[१]

(१०) हनुमत नखशिख—१९०६।७० ई, १९२३।२१०, १९२६।२३७ ई।

(११) हनुमत पचीसी—१९०६।७० बी, सी। इस ग्रन्थ मे २५ कवित्त सवैये हैं।

(१२) हनुमत विरुदावली—१९२०।१००, इस ग्रन्थ मे २५ घनाक्षरी, १ सवैया और १ दोहा है।

(१३) हनुमान पचक—११०६।७० ए। इसमे ५ कवित्त है।

खुमान का रचना-काल सम्वत् १८३० से १८८० तक माना जा सकता है। इनका जन्म सम्वत् १८०० के आस-पास हुआ होगा। सरोज मे दिया सम्वत् १८४० इनका रचना-काल है। लक्ष्मण शतक, भारत जीवन प्रेस, काशी से एव हनुमलखशिख, नागरी प्रचारिणी पत्रिका के अन्तर्गत (गान १२, अक ४, माघ १९८९) प्रकाशित हो चुका है।

जिन सन्यासी का उल्लेख सरोज मे हुआ है, उनका'नाम रामाचार्य था। वे चित्रकूट मे निवास करते थे। लक्ष्मण शतक मे मान ने अपने को इनका दास कहा है —

चित्रकूट मन्दाकिनी राघौ प्राग निवास
श्रीमद्रामाचार्ज के सदा मान कवि दास १३२

—खोज रि० १९०६।७० डी

१३६।

(२) खुमान कवि। एक काण्ड अमरकोष का भाषा मे छदोवद्ध उलथा किया है।

सर्वेक्षण

यह खुमान १३५ सख्यक खुमान है। इन्होने अमरकोष का भाषानुवाद अमरप्रकाश नाम से सम्वत् १८३६ मे किया था।[२]

१३७।

(३) खुमान सिंह, महाराज खुमान राउत गुहलौत सिसोदिया, चित्तौरगढ के प्राचीन राजा सम्वत् ८१२ मे उ०। यह महाराज कविता मे अति चतुर और कवि लोगो के कल्पवृक्ष थे। सम्बत् ९०० मे इनके नाम से एक कवि ने खुमान रायसा नामक एक ग्रन्थ वनाया है, जिसमे इनके वश वाले प्रतापी महाराजो के और खुद इनके जीवन चरित्र लिखे हैं। टाड साहव ने राजस्थान मे इस ग्रन्थ का जिक्र किया है और लिखा है कि इस ग्रन्थ के दो भाग है। प्रथम भाग तो खुमान सिंह के समय मे वनाया गया, जिसमे पवार राजो का रामचन्द्र से लेकर खुमान तक कुर्सीनामा है और दसवी सदी मे जव कि मुसलमानो ने चित्तौड पर धावा किया और तेरहवी सदी मे जव अलाउद्दीन गोरी से युद्ध हुआ और चित्तौड लूटा गया, दूसरा भाग राना प्रताप सिंह के समय मे वनाया गया, जिसमे राना प्रताप सिंह और अकवर वादशाह के युद्ध का वर्णन है।

---

(१) हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ ३८६ (२) देखिये, यही ग्रथ, पृष्ठ २४२

सर्वेक्षण

सरोज के आधार पर खुमानरासो के सम्बन्ध मे पर्याप्त भ्रान्तियाँ रही है। इस सम्बन्ध मे सबसे पहले अगरचन्द नाहटा ने "खुमानरासो का रचनाकाल और रचयिता"[१] शीर्षक खोज पूर्ण निबध नागरी प्रचारिणी पत्रिका मे प्रकाशित कराया। तदनन्तर दूसरा महत्त्वपूर्ण लेख श्री मोतीलाल मेनारिया, एम० ए०, पी-एच० डी० ने 'खुमाण रासो'[२] नाम से प्राय. १५ वर्ष बाद उसी पत्रिका मे प्रकाशित कराया। इन दोनो लेखो का निष्कर्ष यह है —

(१) इस ग्रथ के रचयिता तपागच्छीय जैन कवि दौलत विजय हैं जिनका दीक्षा से पूर्व का नाम दलपत था। यह शान्ति विजय के शिष्य थे।

(२) ग्रथ की भाषा राजस्थानी है।

(३) इस ग्रन्थ मे बाप्पारावल से लेकर राना प्रताप तक का ही वर्णन नही है, राणा प्रताप के बाद के ७ राणाओ, सग्राम सिंह द्वितीय तक का वर्णन है।

(४) इस ग्रथ का नाम खुमानरासो इसलिये नही है कि इसमे खुमान द्वितीय (सम्वत् ८७०-९०० वि०) के खलीफा अलमामू से हुये युद्धो का वर्णन है, अथवा इसमे इन खुमान का प्रसग कुछ अधिक विस्तार से है और औरो का कम विस्तार से, बल्कि यह नाम इसलिये है कि इसमे चित्तौर के राणाओ का आख्यान है, जिनकी एक उपाधि खुमान (खुमाण) भी है। अन्य उपाधिया राणा, महाराणा, दीवाण, सीसोदा, केलपुरा, चीत्तौड़ा आदि हैं।

(५) इस ग्रन्थ का रचनाकाल सम्वत् १७६७ और १७९० विक्रमी के बीच है। यही अमरसिंह के पुत्र सग्राम सिंह द्वितीय का राज्यकाल है।

अत. खुमाणरासो न तो वीरगाथा काल का सर्वप्रथम ग्रन्थ है, न इसका रचयिता राजस्थान का आदि कवि है, न इसमे प्रताप सिंह तक का ही वर्णन है, न इसका रचनाकाल १६ वी शताब्दी है, न यह प्राचीन पुस्तक का परिवर्धित सस्करण है, न ८०० वर्षो का परिमार्जित ग्रन्थ, न पीछे के राणाओ का वर्णन इसमे परिशिष्ट रूप से जोडा गया है और न उपलब्ध रूप इसे १७ वी शताब्दी मे ही प्राप्त हुआ। सरोजकार ने खुमान रासो के सम्बन्ध मे जो भूल की है, वह टाड के कारण है।

१३८।१०९

(४) खानखाना, नवाब अब्दुलरहीम खानखाना, बैराम खा के पुत्र, रहीम और रहिमन छाप है, सम्वत् १५८० मे उ०।

यह महाविद्वान अरबी, फारसी, तुरकी, इत्यादि यावनी भाषा और सस्कृत तथा ब्रजभाषा के बड़े पडित अकबर बादशाह की आँख की पुतली थे। इन्ही के पिता बैरम की जवाँमर्दी और तदबीर से हुमायूँ को दुबारा चिक्त का राज्य प्राप्त हुआ। खानखाना जी पडित, कवि, मुल्ला, सायर, ज्योतिषी और गुणवान मनुष्यो के बडे कदरदान थे। इनकी सभा रात दिन विद्वज्जनो से भरी पुरी रहती थी। सस्कृत मे बनाये इनके श्लोक बहुत कठिन हैं और भाषा मे नवो रसो के कवित्त-दोहे बहुत ही

---

(१) ना० प्र० पत्रिका, माघ १९९६ (२) ना० प्र० पत्रिका, माघ २००९

सुन्दर है। नीति सबन्धी दोहे ऐसे अपूर्व है कि जिनके पढने से कभी पढने वाले को तृप्ति नही होती। फारसी मे इनका दीवान बहुत उम्दा है। वाकयात बाबरी अर्थात् बाबर बादशाह ने जो अपना जीवन चरित्र तुर्की जबान मे आप ही लिखा है, उसका इन्होने फारसी जबान मे तर्जुमा किया है। यह ७२ वर्ष की अवस्था मे सन् १०३६ हिजरी मे सुरलोक को सिधारे।

श्लोक

आनीता नटवन्मया तव पुर श्रीकृष्ण या भूमिका।
व्योमाकाशखखाम्बराब्धिवसवस्त्वत्प्रीतये ऽद्यावधि ॥
प्रीतिर्यस्य निरीक्षणे हि भगवन्यत्प्रार्थित देहि मे।
नोचेद् ब्रूहि कदापि मा नय पुनर्मामीदृशीं भूमिकाम् ॥

शृगार का सोरठा भाषा

पलटि चली मुसक्याय, दुति रहीम उजियाय अति
बाती सी उसकाय, मानो दीनी दीप की १
गई आगि उर लाइ, आगि लेन आई जु तिय
लागी नहीं बुझाय, भभकि भभकि बरि बरि उठै २

नीति का दोहा

खीरा सिर धरि काटिये, मलिये निमक लगाय
कटुये मुख को चाहिये, रहिमन यही सजाय १

एक दिन खानखाना ने यह आधा दोहा बनाया :—

तारायनि ससि रैन प्रति, सूर होंहि ससि गैन

दूसरा चरण नही बना सके। रोज रात्रि को यह दोहा पढा करते थे। दिल्ली मे एक खत्रानी ने यह हाल सुन आधा चरण बनाकर बहुत इनाम पाया।

तदपि अँधेरो है सखी, पीव न देखे नैन।

सर्वेक्षण

गुरुवार, माघ बदी, सम्वत् १६१३ विक्रमी को रहीम का जन्म हुआ। अत ऊपर दिया हुआ सम्वत् १५८० विक्रमी सम्वत् नही है, ई० सन् है। उस समय रहीम २४ वर्ष के थे। यह उनका ई० सन् मे उपस्थिति काल है। रहीम ने ११ वर्ष से ही काव्य रचना प्रारम्भ की थी। इनकी मृत्यु ७० वर्ष की उम्र मे सम्वत् १६८३ मे फागुन के महीने मे हुई।[1] हिन्दू पचाग से इनकी आयु ७० वर्ष की है, पर मुसलिम पचाग से यह ७२ वर्ष है।

रहीम की रचनाओ के अनेक सुन्दर सम्पादित सकलन निकल चुके हैं। इनमे सर्वश्रेष्ठ है मयाशकर द्वारा सम्पादित रहीम रतनावली। इनमे निम्नलिखित रचनायें है —

(१) दोहावली—नीति के लगभग ३०० दोहे
(२) नगर सोभा—विभिन्न जातियो की स्त्रियो के रूपवर्णन करने वाले १४२ दोहे।
(३) बरवै नायिका भेद।
(४) खानखाना कृत बरवै।
(५) मदनाष्टक।

---

(१) अकबरी दरबार के हिन्दी कवि, पृष्ठ १३३-३७, १६४-७१

(६) शृगार सोरठा—६ शृगारी सोरठे।

(७) फुटकर।

(८) खेट कौतुक जातकम्—सस्कृत मे ज्योतिष ग्रन्थ।

सरोज मे प्रमाद से दो रहीमो की स्थापना हो गई है। एक तो खानखाना के नाम से (सख्या १३८), दूसरे रहीम के नाम से (सख्या ७७८)।

१३९।११२

(५) खूबचन्द कवि, माडवार देशवासी। इन्होने राजा गम्भीर साहि ईडर के रईस के भडौवा मे एक कवित्त बनाया है। इसके सिवाय और कविता इनकी हमने नही देखी।

सर्वेक्षण

प्रसग प्राप्त छद सरोज से यहाँ उद्धृत किया जा रहा है :—

मान दस लाख दियो दोहा हरिनाथ के पै
हरिनाथ कोटि दै कलक कवि कैहै को
बेरबर दै छ कोटि केशव कवित्तन में
शिवराज हाथी दियो भूपन ते पैहै को
छप्पै मे छत्तीस लाख गगै खानखाना दियो
याते दिन दूनो दान ईदर मे ऐहै को
राजा श्री गम्भीर सिंह छंद खूबचन्द के में
विदा में दगा दई, न दीन कोऊ दैहै को

इस कवि के सम्वन्ध मे और कोई सूचना सुलभ नही।

१४०।११५

(६) खान कवि, इनके कवित्त दिग्विजयभूषण मे हैं।

सर्वेक्षण

सरोज मे इनका एक कवित्त है जिसमे परिसख्या अलकार की सहायता से किन्ही राजन जू की प्रशसा की गई है। अन्य कोई सूचना सुलभ नही।

१४१।११३

(७) खान सुलतान कवि, इनका एक ही कवित्त मिला है, परन्तु उसमे भी भ्रम है।

सर्वेक्षण

सरोज मे इनका एक कवित्त उद्धृत है जिसमे पावस पचवान का सागरूपक है। द्वितीय चरण मे खान सुलतान शब्द आया है।

दादुर दरोगा, इन्द्रचाप इत माम घटा,
जाली बगजाल ठाढो खान सुलतान है।

सरोजकार का भ्रम यह है कि यह कवित्त किसी खान सुलतान नामक कवि का है अथवा कवि का नाम केवल खान है। सुलतान रूपक का भी अग हो सकता है।

१४२।१११

(८) खडन कवि, बुन्देल खडी, सम्वत् १८८४ मे उ० । इन्होने भूपणदास नाम का एक ग्रन्थ नायिका भेद सम्बन्धी महाविचित्र रचा है। यह ग्रथ झाँसी मे रामदयाल कवि के, बीजापुर मे ठाकुर दास कवि और कुञ्जविहारी कायस्थ के तथा दिलीपसिंह वन्दीजन के पास है।

सर्वेक्षण

खडन के निम्नलिखित ५ ग्रथ खोज मे मिले हैं। इनमे सरोज मे उल्लिखत भूपणदास भी हैं —

(१) सुदामा समाज—१९०६।५६ ए। इस ग्रन्थ का दूसरा प्रसिद्ध नाम 'सुदामा चरित्र' भी है। इसमे ५१ छन्द हैं।

(२) मोहमर्दन की कथा—१९०६।५६ वी। मोहमर्दन नामक एक धार्मिक राजा की कथा, दोहा-चौपाइयो मे कुल ३६१ छद। ग्रथ की रचना भादौं सुदी ११, बुधवार, सम्वत् १७८१ को हुई।

सत्रह सै इक्यासिया समवो नाम अनन्द
भादौं सुदी एकादशी बार जान सुत चन्द

खडन जी दतिया के अन्तर्गत पचोखर नामक ग्राम के श्रीवास्तव कायस्थ थे। यह दतिया नरेश रामचन्द्र (शासनकाल सम्वत् १७६३-९० वि०) के समय में थे। इनके पिता का नाम मलूकचद था। यह सब सूचना इस ग्रन्थ से मिलती है :—

पचोखर उत्तिम स्थान
जहाँ बसै नर धर्म निधान
नृप जहँ रामचन्द्र बुन्देल
पौरिप दीह जुद्ध दल ठेल ३
जहाँ मलूक चन्द परधान
श्रीवास्तव गुन बुद्धि निधान
तिनके सुत कवि खडन भये
नृपति मोह मर्दन गुन ठये ४

(३) भूपणदास—१९०५।६६, १९०६।५६ सी। यह अलकार ग्रन्थ है। रचनाकाल-सूचक दोहा इसमे दिया गया है, पर उसका अर्थ बहुत स्पष्ट नही हैं।

सवत् रिपि वसु गुन सुसत रस ऊपर सुखदान
माघ मास त्रितिया सुकुल बार तमीपति जान ४१९

१९०५ वाली रिपोर्ट मे इसको सम्भवतः सम्वत् १७८७ माना गया है और १९०६ वाली रिपोर्ट मे १७४९ ई० (सम्वत् १८०६ वि०)। दोनो मे दोहा एक ही है। १९०५ वाली रिपोर्ट मे सु नत रस के स्थान पर सुमत रस पाठ है जिसका कोई अर्थ नही। मेरी समझ से इसका पाठ यह है :—

सवत रिखि[७] वसु[८] गनि सु सत्तर सौ १७०० ऊपर सुखदान

इसमे ग्रन्थ का रचनाकाल माघ सुदी ३, सोमवार, सम्वत् १७८७ निकलता है। इस ग्रन्थ मे भी कवि ने अपना परिचय दिया है।

काइथ खरे सुढारिया श्रीवास्तव बुधिधाम
वासी नगर दतीय के चन्द मलूक सुनाम ४१२
तिनके सुत खंडन भये मन्द सुमति वसु जाम
रच्यो ग्रथ तिन यह सुखद नाम सु भूषन दाम ४१३

(४) नाम प्रकाश—१९०६।५६ डी। यह एक पद्यवद्ध शब्द कोष है, जिसकी रचना आश्विन वदी ११, बुधवार, सम्बत् १८१३ को हुई। इसमे १११९ दोहे हैं।

सम्वत दस वसु सत गनौ ऊपर नव श्रुति दोइ
आश्विन वदि एकादशी वार ससीसुत सोइ ८

इस ग्रन्थ मे भी कवि ने अपना परिचय दिया है।

(५) जैमिनि अश्वमेध—१९०६।५९ ई। युधिष्ठिर के अश्वमेध यज्ञ की कथा। इसका रचनाकाल पौष सुदी ७, सम्वत् १८१९ है।

सम्वत दस वसु सै गनौ ऊपर द्वादस सात
पौष मास सुदि सप्तमी ससि सुत मत अवदात

कवि ने एक वार वाल्यावस्था मे भी यह कथा लिखी थी, अब प्रौढावस्था मे उसने यही कथा फिर लिखी।

सिसुपन मैं पहिले कही वनौ न सत उच्चार
तातै अव वरनत वहुरि पाइ चित्त मत भार ३
पहिल रची तो यह कथा वनो न सुन्दर सोइ
ताते वर्ननि फिर करौं ज्ञान नीर हिय धोइ २०
अव विरची मजुल महा खडन लहि मति छन्द
वढ़ै वुद्धि जाके पढे सुनत होइ आनन्द २१

इस ग्रन्थ मे भी कवि ने आत्म परिचय दिया है। इम प्रकार खडन जी का रचनाकाल सम्वत् १७८१ से सम्वत् १८१९ तक है। अत' सरोज मे दिया हुआ सम्वत् १८८४, अशुद्ध है।

१४३।

(१) खेतल कवि। ऐजन। (निरर्थक, प्रथम एव द्वितीय सस्करणो) मे नही है।

सर्वेक्षण

खेतल कवि खरतरगच्छीय जिन राज सूरि जी के शिष्य दयावल्लभ जी के शिष्य थे। दीक्षा नन्दी सूची के अनुसार आप की दीक्षा सम्वत् १७४१ के फागुन वदी ७, रविवार को चन्द्र सूरि के पास हुई थी। आपने पद्यो मे अपना नाम खेतसी, खेता और खेतल दिया है। दीक्षा नन्दी सूची के अनुसार इनका मूल नाम खेतसी और दीक्षित अवस्था का दयासुन्दर था। इन्होने 'चित्तौड गजल' सम्बत् १७४८, सावन वदी २ को और 'उदयपुर गजल' सम्वत् १७५७ मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष मे बनाई थी। आप का एक ग्रन्थ वावनी है जिसकी रचना अगहन सुदी १५, शुक्रवार, सम्वत् १७४३ को दहरवास गाँव मे हुई थी।[१] इसका अतिम छद यह है :—

(१) खोज रि० भाग २, पृष्ठ १००, १०२

संवत सत्तर त्र्याल मास सुदी पत्त मगस्सिर
तिथि पूनम शुक्रवार थपी बावनो सुथिर
वार खरी रो बन्ध कवित्त चौंसठ कथन गति
दहरवास चौमास समय तिथि भया सुखी अति
श्री जैनराज सूरीसवर दयावल्लभ गणि तास सिखि
सुप्रसाद तास खेतल सुकवि लहि जोडि पुस्तक लिखि ६४

१४४।

(१०) खुसाल पाठक, रायबरेली वाले। ऐजन। (निरर्थक, प्रथम एव द्वितीय सस्करणो मे नही है।)

सर्वेक्षण

इस कवि के सन्बम्ध मे कोई सूचना सूलभ नही हो सकी। ग्रियर्सन मे (८०८) इनके सबध मे जो कुछ लिखा गया है, वह ऐजन का अशुद्ध अर्थ करने के कारण है।

१४५।११६

(११) खेम कवि (१) बुन्देल खडी । ऐजन। (निरर्थक , प्रथम एव द्वितीय सस्करणो मे नही है।)

सर्वेक्षण

इनका सरोज मे एक शृगारी सवैया उद्धृत है, अतः यह रीतिकालीन कवि प्रतीत होते हैं। बुन्देल वैभव[१] मे एक खेमराज ब्राह्मण हैं, जो सम्वत् १५६० मे ओरछा मे उत्पन्न हुये थे। यह तत्कालीन ओरछा नरेश रुद्रप्रताप के दरबारी कवि थे। इन्होने 'प्रताप हजारा' नामक ग्रन्थ की रचना की थी। इनका कविता काल सम्वत् १५६० वि० है। सम्भवत' यही सरोज के खेम बुन्देलखडी हैं और सरोज मे इनके नाम से किसी दूसरे खेम का सवैया उद्धृत हो गया है।

१४६।११४

(१२) खेम कवि (२) ब्रजवासी, सम्वत् १६३० मे उ०। रागसागरोद्भव रागकल्पद्रुम मे इनके पद हैं।

सर्वेक्षण

भक्तमाल मे कुल ६ खेम हैं :—

(१) खेम गोसाईं, इनका उल्लेख छप्पय सख्या ८३ मे, हुआ है। यह रामोपासक थे।

(२) खेम, छप्पय सख्या ९८ मे वर्णित २८ पर अर्थपरायण भक्तो मे से एक सूरज, कुम्भनदास, विमानी, खेम विरागी।

(३) छप्पय १०० मे वर्णित २६ भक्तपाल दिग्गजभक्तो मे मे एक।

खेम श्रीरंग, नन्द, विषद, बीदा बाजूसुत

(४) छप्पय १४७ मे वर्णित २३ भक्तो मे से एक।

---

(१) बुन्देल वैभव, भाग २, पृष्ठ २७२

किंकर, कुन्डा, कृष्णदास, खेम, सोठा, गोपानंद

(५) छप्पय १४९ मे वर्णित मधुकरी माँग माँग कर भक्तो की सेवा करने वाले १३ भक्तो मे से एक। यह खेम पडा के नाम से प्रसिद्ध थे और गुनौर के रहने वाले थे।

बीठल ठौंडे, खेम पंडा गुनौरे गाजै

(६) छप्पय १५० मे उल्लिखित अग्रदास जी के सोलह शिष्यो मे से एक।

इनमे से पहले और छठवे खेम एक ही प्रतीत होते है, क्योकि ये दोनो रामोपासक है। हो सकता है ऊपर वर्णित ६ खेमो मे से कोई सरोज का अभीष्ट खेम हो। बुन्देल वैभव के अनुसार खेम या खेमदास का जन्म सम्वत् १६५५ वि० मे हुआ था। इनका रचनाकाल सम्वत् १६८० कहा गया है, और इनके एक ग्रन्थ 'सुखसवाद' का नामोल्लेख है।[1] विनोद मे (२१८।१) एक खेम हैं जिनका रचनाकाल १६६० के पूर्व कहा गया है। यह दादूदयाल के शिष्य और 'रम्भा-शुक सवाद' के रचयिता थे। मुझे तो ऊपर का 'सुख सवाद' यही 'रम्भा-शुक सवाद' प्रतीत होता है। परन्तु खेम कवि ब्रजवासी वैष्णव थे, दादू के शिष्य को निर्गुनिया होना चाहिये। सरोज मे रागकल्पद्रुम से इनका कृष्ण-भक्ति सम्बन्धी एक पद उद्धृत है। यही पद बुन्देल वैभव मे भी उतार लिया गया है।

१४७।

(१३) खडगसेन कायस्थ, ग्वालियर निवासी, सम्वत् १६६० मे उ०। इन्होने दान लीला, दीपकालिका चरित्र इत्यादि ग्रन्थ बडे परिश्रम से उत्तम बनाये है।

सर्वेक्षण

सरोज मे इनका विवरण भक्तमाल के आधार पर दिया गया है :—

गोपी ग्वाल पितु मातु नाम निरनै कियो भारी
दान केलि दीपक प्रचुर अति बुद्धि उचारी
सखा सखी गोपाल काल लीला मे वितयो
कायथ कुल उद्धार भक्ति दृढ़ अनत न चितयो
गौतमी तंत्र उर ध्यान धरि, तन त्याग्यो मडल सरद
गोबिन्द चन्द गुन ग्रथन कौं खरगसेन बानी बिसद १६१

टीका मे प्रियादास ने इन्हे ग्वालियर वासी कहा है —

ग्वालियर वास, सदा रास को समाज करै,
सरद उजारी अतिरंग चढ्यो भारी है ५६३

रूपकला जी के अनुसार कहते है कि ये श्री हितहरिवश जी के सम्प्रदाय युक्त थे।[2] सरोज मे दिया स० १६६० उपस्थिति काल है, क्योकि भक्तमाल की रचना स० १६४९ मे हुई थी।

---

(१) बुन्देल वैभव, भाग १, पृष्ठ २३४ (२)माल, पृष्ठ ८८७

ग

१४८।११७

(१) गग कवि (१) गगा प्रसाद, ब्राह्मण, एकनौर, जिला इटावा अथवा बदीजन, दिल्ली वाले, सम्वत् १५९५ मे उ० । गग कवि को हम सुनते रहे कि दिल्ली के वन्दीजन है और अकबर वादशाह के यहाँ थे, जैसा कि किसी कवि ने वन्दीजनो की प्रशसा मे यह कवित्त लिखा है :—

कवित्त

प्रथम विधाता ते प्रगट भये वन्दीजन
पुनि पृथु जज्ञ ते प्रकास सरसात है
मानो सूत सौनकन सुनत पुरान रहै
जस को बखाने महा सुख बरसात है
चन्द चउहान के, केदार गोरी साहि जू के
गग अकवर के बखाने गुनगात है
काग कैसो मास अजनास धन भाटन को
लूटि धरे ताको खुराखोज मिटि जात है ॥१॥

परन्तु अव जो हमने जाँचा तो विदित हुआ कि गग कवि एकनौर गाव, जिले इटावा के ब्राह्मण थे । जव गग मर गये और जैन खा हाकिम ने एकनौर मे जुल्म किया तव गग जी के पुत्र ने जहाँगीर शाह के यहा एक कवित्त अर्जी के तौर पर दिया, जिसका अतिम अश था :—

जैन खाँ जुनारदार मारे एकनौर के,

जुनारदार फारसी मे जनेऊ रखने वाले का नाम है लेकिन खास ब्राह्मण ही को जुनारदार कहते हैं । खैर जो हो, गग जी महाकवि थे । राजा वीरवल ने गंग को "अमर अमत" इस छप्पय मे एक लक्ष्य रुपये इनाम दिये थे । इसी प्रकार अकवर, जहाँगीर, वीरवल, खानखाना, मानसिंह सवाई इत्यादि सव ने गग को वहुत दान-मान दिया है ।

सर्वेक्षण

अकवरी दरवार के हिन्दी कवि मे गग को ब्रह्मभट्ट माना गया है और इस सम्वन्ध मे कई प्रमाण भी दिये गये है । इनका जन्म-सम्वत् १५९५ वि० माना गया है जो वस्तुत' सरोज मे दिया हुआ सम्वत् ही है । सरोज मे दिया हुआ यह सम्वत् अकवरी दरवार से सम्वद्ध होने के कारण ई० सन् है । इस सन् मे अर्थात् सम्वत् १६५२ वि० मे गग उपस्थित थे । यह उनका जन्मकाल नही है । उक्त ग्रन्थ मे गग की मृत्यु सम्वत् १६७४ और १६८२ के वीच किसी समय हुई, ऐसा अनुमान किया गया है । गग की मृत्यु जहागीर की आज्ञा से हाथी से कुचले जाकर हुई थी ।[१]

अकवरी दरवार के हिन्दी कवि मे "जैन खाँ जुनारदार मारे एकनौर के" चरणान्त वाले ३ कवित्त उद्धृत किये गये हैं जिन्हे क्रमश गग, कोई अज्ञात कवि और काशीराम की रचना कहा गया है । लिखा गया है कि सरोज के अनुसार काशीराम गग के पुत्र थे । सरोज मे गग के पुत्र का उल्लेख है, पर उसका नाम कही भी नही दिया गया है ।

---

(१) अकवरी दरबार के हिन्दी कवि, पृष्ठ ११४-३३

गंग एकनौर, जिला इटावा के ब्रह्मभट्ट थे। अकबरी दरबार के प्रसिद्ध कवि थे। नर-काव्य करने वालो मे इनकी परम ख्याति है। इनके फुटकर छद ४०० तक मिलते है। इनका एक गद्य ग्रन्थ 'चन्द छद बरनन की महिमा' है, जो खडी बोली मे है। सम्वत् १६२७ मे गग ने यह रचना अकबर को सुनाई थी। इसमे चन्दबरदाई के प्रसिद्ध छद (पृथ्वीराजरासो) की महिमा वर्णित है। खोज मे इनकी निम्नाकित रचनाये मिली हैं। —

(१) खानखाना कवित्त १६१२।५५

(२) गग पचीसी १६२६।१२६ ए, बी, सी, १६२६।१०६

(३) गगपदावली १६३२।६२ ए

(४) गग रनतावली १६३२।६२ बी

(५) (गग) सग्रह १६२३।११४

(६) चन्द छद बरनन की महिमा १६०६।८४

श्री बटे कृष्ण, एम० ए०, ने नागरी प्रचारिणी सभा, काशी की आकरग्रन्थमाला के लिये गग ग्रन्थावली का सम्पादन कर लिया है, जिसका प्रकाशन शीघ्र होने जा रहा है।

१४६।११८

(२) गग कवि (२) गगाप्रसाद ब्राह्मण, सपौली, जिले सीतापुर सम्वत् १८६० मे उ०। सपौली गाव इनको कविता करने के कारण माफी मे मिला है। इनके पुत्र तीहर नाम कवि विद्यमान हैं। गगाप्रसाद ने एक ग्रन्थ 'दूती विलास' बनाया है। उसमे सब जाति की दूतियो का श्लेष से वर्णन है।

सर्वेक्षण

ग्रियर्सन मे (५६७) से दिया हुआ सम्वत्-जन्म सम्वत् माना गया है। पर विनोद मे (२४४५) इन्हे सम्वत् १६४० मे उपस्थिति कवियो की सूची मे स्थान दिया गया है। ग्रियर्सन मे "इनके पुत्र तीहर नाम कवि विद्यमान है" को "इनके पुत्र अब तिहरना मे विद्यमान हैं" के भ्रष्ट रूप मे स्वीकार किया गया है।

खोज मे एक गगाप्रसाद मिले है जो चतुर्भुज दीक्षित के पुत्र थे। चतुर्भुज दीक्षित महावन, मथुरा के रहने वाले सनाढ्य ब्राह्मण थे। यह महावन छोडकर बदायूँ जिले मे आ बसे थे।[1]सम्भवतः इन्ही बदायूँ जिले वाले गगाप्रसाद को अपने काव्य के लिये सपौली गाव माफी मे मिला। सरोज से स्पष्ट है कि यह मूलतः सपौली के निवासी नही थे। बदायूँ वाले गगाप्रसाद ने सम्वत् १८८० मे 'सुबोध' नामक वैदक ग्रन्थ की रचना की थी।

संवत ठारह सै असी, चैत शुक्ल तिथि काम
सोमवार शुभ योग मे कियो ग्रन्थ अभिराम

१५०।११६

(३) गगाधर (१) कवि बुन्देलखडी महा ललित कविता की है।

---

(१) खोज रिपोर्ट १६१२।४७

सर्वेक्षण

विक्रम की २०वी शताब्दी मे बुन्देलखडी कवियो मे गगाधर अग्रगण्य है। इनका जन्म माघ वदी ६, मगलवार, सम्वत् १८६६ को हुआ था। यह सनाढ्य ब्राह्मणो के व्यास कुल मे उत्पन्न हुये थे। इनके पिता का नाम रामलाल व्यास और पितामह का लटोरे लाल व्यास था। इनके पूर्वज पहले ब्रज-मडल मे निवास करते थे, फिर वे लोग महोवा मे आ बसे, जहाँ से पुन. वे लोग छत्रपुर में आये। गगाधर व्यास इसी छत्रपुर के रहने वाले थे। सत्योपाख्यान नामक रामचरित्र सम्बन्धी ग्रथ मे कवि ने अपनी जन्मभूमि का वर्णन किया है —

अपनो देश ग्राम कुल नामा
विधि मुहि जन्म दियो जिहि ठामा
देसन गाई सुन्दर धरनी
कहूँ बुन्देलखड वर बरनी
छत्रसाल नृप को यश छायो
सुदिन सुभ करी शहर बसायो
नाम छतरपुर तासे राख्यो
देश देश जाहिर जस भाख्यो

गगाधर व्यास तत्कालीन छत्रपुर नरेश विश्वनाथ सिह जू देव के आश्रय मे थे जिनकी ओर से इन्हे मासिक वँधेज वँधा हुआ था।

रहै सदा सुख सो सब प्रानो
विश्वनाथ नृप की रजधानो

इस ग्रन्थ मे कवि ने स्वय अपना वश-परिचय दिया है —

द्विज सनाढ्य कुल मे जनम व्यास वश अभिराम
गगाधर की कृपा ते भो गगाधर नाम

कवि ने अपनी छाप गग भी रखी है —

द्विज गग भनत पूरन प्रगट, तुव प्रताप चौदह भुवन
श्रीराम चरित बरनन करत, कृपा करहु अजनि सुवन

श्री गगाधर व्यास का देहान्त सावन सुदी १४, सोमवार, सम्वत् १९७२ को हुआ। इनकी बनाई हुई ७-८ पुस्तकें हैं, जिनमे से ५ है :—

(१) मजरी, (२) गो माहात्म्य, (३) भरथरी चरित्र, (४) श्री विश्वनाथपताका—ओरछा नरेश की प्रशस्ति, (५) सत्योपाख्यान। यह सस्कृत से दोहा-चौपाइयो मे अनुवाद है।

इन ग्रन्थो के अतिरिक्त इन्होने फुटकर कवित्त, सवैये, फाग, शेर आदि छन्दो की रचना भी बहुत की है। सम्वत् १९८४ के आस-पास व्यास जी की कुछ रचनायें हिन्दी चित्रमय जगत् मे प्रकाशित हुई थी। वियोगी हरि ने कवि कीर्तन मे इनका विवरण सख्या १५४ पर दिया है।[1]

---

(१) माधुरी वर्ष ६, खड २, सख्या ४, वैसाख १९८५ (मई १९२८) में कवि चर्चा स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित कविवर गंगाधर जी व्यास का भाषा छंदोबद्ध सत्योपाख्यान के आधार पर।

१५१।१३२

(४) गगाधर (२) कवि । उप सतसैया नाम सतसई का तिलक कुंडलिया, छद और दोहो मे बनाया है ।

सर्वेक्षण

बिहारी सतसई सम्बन्धी साहित्य मे रत्नाकर जी ने इन गगाधर से अनभिज्ञता प्रकट की है और सरोज मे जो परिचय और उदाहरण दिया गया है, उसी को उद्धृत करके सतोष किया है। विनोद मे (१४२२) भ्रम से इन्हे बुन्देलखडी मान लिया गया है। खोज मे एक गगाधर उपनाम गगेश मिश्र मिले हैं। यह माथुर ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम मकरन्द था। इनका निम्नाकित ग्रन्थ मिला है :—

विक्रम विलास—१६०६।८६,१६१२।५६, १६१७।५६, १६२६।१११ ए, बी। सम्भवत. इसी ग्रन्थ की किसी खडित प्रति का विवरण १६२३।१२१ मे 'विक्रम वैताल सवाद' नाम से दिया गया है। इसके कर्त्ता भी गगेश ही कहे गये हैं। इसी ग्रन्थ से पता चलता है कि कवि के पिता का नाम मकरन्द था, जो माथुर कुल मे कलश सदृश श्रेष्ठ थे। .—

माथुर कुल कलसा भये मति अमद मकरन्द
तिनके भयो तनूज मैं गंगाधर मतिमंद

१६१२ वाली प्रति मे गगाधर के स्थान पर गगापति पाठ है। इन्ही मकरन्द के पुत्र गगाधर ने सम्बत् १७३६ मे विक्रम-विलास की रचना की —

तिन किनी विक्रम कथा अपनी मत अनुसार
जो विशेष जह चाहिये सो तह लेहु सुधार
सम्बत सत्रह सै बरस बीते उनतालीस
माघ सुदी कुज सप्तमी कीन्हो ग्रन्थ नदीस

इस दोहे मे कवि ने अपना नाम 'नदीश' दिया है, समुद्र के अर्थ मे नही, नदियो मे श्रेष्ठ गगा के रूप मे। आशीर्वाद वाले अन्त के छप्पय मे कवि का नाम गगेश आया है।

जब लगि प्रवाह गगा जमुन जब लगि वेदन को कहौ
विक्रम विलास गंगेश कृत तब लगि या जग थिर रहौ

पुष्पिका मे भी "गगेश मिश्र विरचिते" कहा गया है। अस्तु, कवि के चार नाम हैं—गगाधर, गगापति, गगेश, और नदीश। सम्भवत. विक्रमविलास वाले यह गगाधर ही उप सतसई वाले गगाधर हैं। इन गगाधर के अतिरिक्त दो गगाधर और भी खोज मे मिले हैं —

(१) राजयोग भाषा नामक गद्य मे लिखित वैद्यक ग्रथ के रचयिता—(१६३२।६३)
(२) गोवर्धन लीला नामक गीत प्रबन्ध के रचयिता—(द १६३१।३२, १६३८।५०)

१५२।१५७

(५) गगापति कवि, सम्बत् १८४४ मे उ०। कविता सरस है।

सर्वेक्षण

सरोज के तृतीय सस्करण मे १७४४ के स्थान पर १८४४ सम्वत् दिया गया है। सरोज मे गगापति का भ्रमरगीत सम्बन्धी एक अत्यन्त सरस कवित्त दिया गया है, जो दिग्विजय भूषण से लिया गया है, (अध्याय ६, सख्या ६६) । विनोद मे (६७५) गगापति को 'विज्ञान विलास' नामक वेदान्त ग्रन्थ का रचयिता माना गया है और कविता काल सम्वत् १७७६ दिया गया है। ग्रियर्सन (३२०) मे विज्ञान विलास का रचना-काल सम्वत् १७७५ दिया गया है और १८४४ को जन्म-काल मानकर सरोज मे वर्णित गगापति का उल्लेख सख्या ४८१ पर किया गया है तथा जन्मकाल सन् १७८७ ई० (सम्वत् १८४४ वि०) दिया गया है। वस्तुतः ग्रियर्सन के दोनो गगापति एक ही हैं और इनका रचना-काल सम्वत् १७७५ है।

१५३।१५८

(६) गगादयाल दुवे, निसगर, जिले रायबरेली के विद्यमान हैं। सस्कृत के महापडित और भाषा-काव्य मे भी निपुण हैं।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्वन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही है।

१५४।१६३

(७) गगाराम कवि, बुन्देल खडी, सम्वत् १८६४ मे उ०। सामान्य कविता है।

सर्वेक्षण

विनोद मे (२११३) गगाराम के तीन ग्रन्थो का उल्लेख है—सिहासन वत्तीसी, देवी-स्तुति, रामचरित्र। ये सभी ग्रन्थ खोज मे भी मिल चुके हैं। किसी मे भी रचना-काल नहीं दिया गया है। सिहासन वत्तीसी[1] दोहा-चौपाइयो मे है। देवी-स्तुति और रामचरित्र की प्रति एक जिल्द मे मिली है।[2]

एक गगाराम की कृति ज्ञानप्रदीप है। यह मालवी त्रिपाठी ब्राह्मण थे। —

गगाराम त्रिपाठि द्विज मालवीय विख्यात
कीन्हों ज्ञान प्रदीप वर बिमल ग्रन्थ अवदात

ग्रन्थ की रचना सम्वत् १८४६ मे हुई —

अष्टादश शत अरु अधिक छालिस सम्बत माह
भयो ग्रन्थ भादो सुदी चतुर्दशी गुरुखोज रिपोर्ट १६०३।१६ काह

सरोज मे अर्द्धनारीश्वर शिव का ध्यान सम्बन्धी एक छप्पय उद्धृत है, जिससे इनकी भक्ति-प्रवृत्ति परिलक्षित होती है। मुझे तो ज्ञान प्रदीप के रचयिता गगाराम त्रिपाठी जी सरोज के गगाराम जान पड़ते हैं। विनोद वाले (२११३) ऊपर उल्लिखित गगाराम भी यही हो सकते हैं। विनोद मे (१८३४।१) एक और गगाराम हैं, जिनकी रचना 'शब्दब्रह्म जिज्ञासु' है।

---

(१) खोज १६०३।६ (२) खोज १६०६।८८

इसकी प्रतिलिपि सम्वत् १८९३ की है। अतः यह उक्त सम्वत् के पूर्ववर्त्ती है। यह भी सरोज के अभीष्ट गगाराम हो सकते है। गगाराम जी का कविता काल सम्वत् १८४६ से सम्वत् १८९४ तक माना जा सकता है।

१५५।१२०

(८) गदाधर भट्ट, वांदा वाले, कवि पद्माकर जू के पौत्र, सम्वत् १९१२ मे उ०। इनके प्र-पितामह मोहन भट्ट बुन्देलखड के नामी कवि पन्ना के राजा हिन्दू पति बुन्देला के यहाँ रहे। पीछे राजा जगत सिह सवाई के यहाँ रहे। उनके पुत्र पद्माकर जी के मिहीलाल और अम्बा प्रसाद दो पुत्र हुये। मिहीलाल के वशीधर, गदाधर, चन्द्रधर और लक्ष्मीधर ये चार पुत्र हुये। अम्बाप्रसाद को एक पुत्र विद्याधर नामक उत्पन्न हुआ। यद्यपि ये सब कवि है तथा सब मे उत्तम कवि गदाधर हे। यह राजा भवानी सिंह, दतिया नरेश, के आस रहा करते है। अलकार चन्द्रोदय नामक एक ग्रन्थ इन्होने बनाया है।

सर्वेक्षण

सरोज मे जो तथ्य एव तिथि दी गई है, सभी ठीक है। सम्वत् १९१२ कवि का रचना-काल है। इनका जन्म सम्वत् १८६० के लगभग हुआ था। यह पहले दतिया राज दरबार मे राजा भवानी सिंह के यहा रहे। सम्वत् १९४० मे यह मालवा प्रान्तान्तर्गत राजधानी सुढालिया, जिला ऊमदवाडी के राजा माधव सिंह वर्मा के यहाँ गये। यही इन्होने छदोमजरी नामक प्रसिद्ध पिंगल ग्रन्थ सम्वत् १९४१ मे वनाया। इसका प्रथम सस्करण सम्वत् १९४५ वि० मे भारत जीवन प्रेस, काशी से प्रकाशित हुआ था।[1] विनोद मे प्रमाद से गदाधर भट्ट का उल्लेख १८३६।२ और २०७९ सख्याओ पर दो वार हो गया है। १८३६।२ पर इन्हे दतिया वासी और पद्माकर का पौत्र कहा गया है। सम्वत् १८९४ रचना-काल दिया गया है। वृत्त चन्द्रिका (रचना-काल १८९४), कामन्दक (र० का० १८९५), विरदावली (र० का० १८९४), वृजेन्द्र विलास (रचना-काल १९०३), केसर सभा विनोद (रचनाकाल १९३९) और देशाटन विनोद (प्र० त्रै० रि०) का रचयिता माना गया है। सख्या २०७९ पर इन्हे अलकार चन्दोदय, गदाधर भट्ट की वानी, कैसर सभा विनोद और छदोमजरी का कर्त्ता माना गया है। इनमे से गद धर भट्ट की वानी चैतन्य महाप्रभु के शिष्य प्रसिद्ध भक्त गदाधर भट्ट की रचना है। शेष इन गदाधर भट्ट की रचनाये है। विनोद के अनुसार लगभग ८० वर्ष की वय मे इनकी मृत्यु सम्वत् १९५५ के आस-पास हुई।

१६६। १२५

(९) गदाधर कवि, शान्त रस के कवित्त चोखे हैं।

---

(१) छदोमजरी, द्वितीय संस्करण की भूमिका के आधार पर।

सर्वेक्षण

सरोज मे इनका शान्त रस का एक कवित्त उद्धृत है। नाम, रस और एक उदाहरण मात्र के सहारे इनकी पकड सम्भव नही प्रतीत होती।

१५७।१६०

(१०) गदाधर राम, इनकी कविता सरस है।

सर्वेक्षण

सरोज में इनका भँवरगीत सम्बन्धी एक सरस सवैया उद्धृत है। मात्र इतनी सामग्री के सहारे इन गदाधर राम को भी खोज निकालना असभव है। यह छद, भाषा काव्य-सग्रह से उद्धृत है। उक्त ग्रंथ मे इनका यही एक छद है, विवरण भी नही है।

१५८। १६८

(११) गदाधरदास मिश्र ब्रजवासी, सम्वत् १५८० मे उ०।

इनके पद रागसागरोद्भव मे हैं। इनका बनाया हुआ यह पद "सखी हौं श्याम के रग रँगी" और "विकाय गई वह सुरति मूरति हाथ विकी" देखकर स्वामी जीव गोसाईं जो उस समय बडे महात्मा थे, इनसे बहुत प्रसन्न हुये।

सर्वेक्षण

सज्जन सुहृद सुशील वचन आरज प्रतिपालय
निर्मत्सर निहकाम कृपा करुणा कौ आलय
अनन्य भजन दृढ़ करनि धर्‌यो फलु भक्तनि काजै
परम ध्यान कौ सेतु विदित वृन्दावन गाजै
भागौत सुधा बरपै बदन, काहू को नाहिन दुखद
गुन निकर गदाधर भट्ट अति, सबहिन कौ लागै सुखद

—भक्तमाल छप्पय १३८।

रूपकला जी लिखते हैं कि "ये बंगाली नही थे और बाँदा-वाले भी नही थे। और श्री वल्लभाचार्य जी के शिष्य गदाधर मिश्र दूसरे ही थे"।[1] इससे स्पष्ट है कि सरोजकार ने वल्लभ-सम्प्रदाय के गदाधर मिश्र का नाम लिया है और जीवन के तथ्य चैतन्य सम्प्रदाय के गदाधर भट्ट के दिये हैं। 'श्याम के रग रँगी' वाले पद का उल्लेख प्रियादास जी ने अपनी टीका मे किया है।[2]

गदाधर भट्ट दाक्षिणात्य ब्राह्मण थे और ब्रजभाषा के अत्यन्त प्रौढ भक्त कवि थे। यह पहले से ही राधा-कृष्ण के भक्त थे और गृहस्थ जीवन व्यतीत करते थे। इनके सरोज

---

(१) भक्तमाल, पृष्ठ, ७८७ (२) भक्तमाल, कवित्त सख्या ५२३-२४

वर्णित उक्त दोनो पदो को दो रमते राम साधुओ ने जीवगोसाई के आगे गाया। उक्त गोसाई परम प्रभावित हुये। उन्होने साधुओ को निम्नाकित श्लोक लिखकर दिया और गदाधर जी को दे देने का आदेश दिया :—

अनाराध्य राधा पदाम्भोज युग्म मनाश्रित्य वृंदाटवीं तत्पदाकाम्।
असंभाव्य तद्भावगंभीर चितान् कुत श्यामसिन्धो रसस्यावगाह ॥

श्लोक को पढकर गदाधर जी मूर्छित हो गये। सज्ञा प्राप्त होने पर यह घर वार छोड वृन्दावन चले आये।

आचार्य शुक्ल के अनुसार गदाधर भट्ट ने वृंदावन मे जाकर चैतन्य महाप्रभु से दीक्षा ली थी। यह उन्हे भागवत सुनाया करते थे। इनका रचना-काल स० १५८० एव मृत्युकाल स० १६०० के पीछे किसी समय हुआ।[1] पर शुक्ल जी का कथन असमीचीन है। चैतन्य महाप्रभु का जन्म फाल्गुन पूर्णिमा, स० १५४२ को हुआ था। उन्होने सं० १५६६ मे सन्यास लिया, स० १५७२ की विजय-दशमी को वृदावन के लिए प्रस्थान किया। रास्ते मे आते-जाते काशी मे रुके और वैशाख १५७३ मे काशी से पुरी के लिए प्रस्थान किया। पुरी मे १८ वर्ष रहकर १५९० मे वही दिवगत हुए। यह वृदावन मे स० १५७२ मे केवल दो महीने रहे। गदाधर भट्ट जीवगोस्वामी के आमत्रण पर वृंदावन गए थे। जीव गोस्वामी, रूप और सनातन के अनुज वल्लभ के पुत्र थे। इनका जन्म रामकेली ग्राम मे स० १५६८ मे हुआ था। यह नदिया एव काशी मे शिक्षा प्राप्त कर २४ वर्ष की वय मे स० १५९२ मे वृंदावन पहुँचे थे और अत तक वही रहे। यही इनका देहावसान सं० १६५२ पौषशुक्ल ३ को हुआ। स्पष्ट है गदाधर भट्ट स० १५९२ के पश्चात् किसी समय वृंदावन आए। यह न चैतन्य के शिष्य थे और न उन्हे भागवत की कथा ही सुनाते थे। चैतन्य महाप्रभु को कथा सुनाने वाले भी गदाधर नाम के ही एक सज्जन थे, जो बगाली थे और गदाधर प्रभु या गदाधर पडित नाम से प्रख्यात थे।

गदाधर भट्ट चैतन्य सप्रदाय मे दीक्षित थे। यह चैतन्य महाप्रभु के शिष्य श्री रघुनाथ भट्ट के शिष्य थे जो महाप्रभु के ६ प्रसिद्ध शिष्य गोस्वामियो मे से एक थे। गदाधर भट्ट ने वृदावन मे राधा वल्लभ जी के मदिर के सामने 'मदन मोहन' जी का विग्रह स्थापित किया था, जिसकी पूजा आज भी इनके वशज करते हैं। इनके दो पुत्र हुए—रसिकोत्तस जी और वल्लभ रसिक जी। वल्लभ रसिक जी भी अत्यत सुदर कवि थे।[2]

गदाधर जी की फुटकर रचनाये भी मिलती हैं। इनका एक फुटकर सग्रह गदाधर भट्ट की बानी नाम से मिला है। इसमे कुल ६२ रचनायें हैं। रिपोर्ट में इन्हे बल्लभ सम्प्रदाय का वैष्णव कहा गया है, जो ठीक नही है।[3] इस ग्रन्थ का ६२ वां पद शुक्ल जी के इतिहास में गदाधर भट्ट की रचना के उदाहरण मे उद्धृत है।

जयति श्री राधिका कृष्ण सुख साधिका
तरुनि मनि नित्य नूतन किशोरी

---

(१) हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ० १८२-८३ (२) साहित्य, वर्ष ६, अंक ४, जनवरी १९५९ —'श्री गदाधर भट्ट, ले० श्री ब्रजरत्नदास, पृष्ठ ६३-६५ (३) खोज रिपोर्ट १९०९।८१

ध्यान मजरी इनकी एक अन्य रचना है,[1] जो रोला छद के ११४ चरणो मे समाप्त हुई है। इसमे श्रीकृष्ण का ध्यान वर्णित है।

१५६। १२१

(१२) गिरिधारी ब्राह्मण, बैसवारा, गाँव सातन पुरवा वाले (१) सम्बत् १९०४ मे उ०। इनकी कविता या तो श्रीकृष्ण चन्द्र की लीला सम्बन्धी है या शान्त रस की। यह कवि पढ़े वहुत न थे परन्तु ईश्वर के अनुग्रह से कविता सुन्दर रचते थे।

सर्वेक्षण

गिरिधारी लाल त्रिपाठी, ब्राह्मण, सातन पुरवा, जिला रायबरेली, के रहने वाले थे। यही के रहने वाले अयोध्याप्रसाद बाजपेयी, औध भी थे। यह सम्वत् १९०४ मे उपस्थित थे। इनके पौत्र केदार नाथ त्रिपाठी, गाव उत्तर पाडा, पोस्ट भाव, जिला रायबरेली, मे सम्वत् १९८४ मे विद्यमान थे।[2] गिरिधारी लाल जी ने भागवत दशम स्कध का अत्यन्त ललित यमक पूर्ण घनाक्षरियो मे अनुवाद किया था। खोज मे यह ग्रन्थ भागवत दशम स्कन्ध भाषा,[3] श्याम विलास,[4] श्री कृष्ण चरित्र [5] तथा गिरिधारी काव्य [6] नाम से मिल चुका है। इनके दो ग्रन्थ और मिले हैं :—

(१) रहस्य मडल—१९२३।१२४ बी। इसमे कवित्तो मे रासलीला का सरस वर्णन है।

(२) सुदामा चरित्र—१९२३।१२४ सी, १९४७।६६ क। यह भी कवित्तो मे है। प्रमाद से खोज के कवि परिचय मे सुदामा चरित्र को सूदन चरित्र लिख दिया गया है। सम्भवत. यह दोनो स्वतत्र ग्रन्थ नही है, उक्त भागवत के ही अग हैं।

१६०।१२२

(१३) गिरीधारी कवि (२)। स्फुट कवित्त इनके मिलते हैं।

सर्वेक्षण

सरोज मे इन गिरिधारी का एक कवित्त उद्धृत है, जिसमे श्रीमद्‌भागवत को कल्पतरु सिद्ध किया गया है। कवि भक्त प्रतीत होता है। सम्भवत. यह भक्तिमाहाम्त्य के रचयिता गिरिधारी हैं।[7] भक्तिमाहात्म्य की रचना दोहा-चौपाइयो मे सम्वत् १७०५ मे हुई। यह गगा तट पर कही रहते थे और इनके पिता का नाम गगाराम था।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९१२।५४ (२) माधुरी, वर्ष ५, खड १, सख्या :६, जनवरी १९२७, पृष्ठ ८८५, "एक अप्रकाशित ग्रन्थ" शीर्षक टिप्पणी के आधार पर (३) खोज रिपोर्ट १९२३।१२४ ए (४) खोज रिपोर्ट १९२६।१४१ (५) खोज रिपोर्ट १९१२।६१ (६) खोज रिपोर्ट १९४७।६६ ख, ग, घ (७) खोज रिपोर्ट १९०१। ६४ ए, बी, १९४१। ४८९

फागुन सुदि तिथि प्रतिपदा शुकवार सो वार
संवत सत्रह सै अधिक पाच पख उजियार
ते दिन कथा कीन्ह गिरिधारी
धर्म वाक्य सब कहा सवारी
जन्म भूमि कर करौं बखाना
सुरसरिता उत्तिम अस्थाना
करामात तेहि पुर की आही
गगाराम पिता कर आही

भारतेन्दु के पिता के अतिरिक्त एक गिरिधर बनारसी और हुये हैं जो काशी के गोपाल मदिर के अधिष्ठाता थे। इन्होने सम्वत् १८८७ मे मुकुन्दराय की वार्ता लिखी। इसमे श्रीनाथ (मेवाड) से मुकुन्दराय के काशी आगमन और गोपाल मदिर मे पधारे जाने की कथा, गद्य मे वर्णित है।[१] सरोज वाले गिरिधारी यह गिरधर बनारसी भी हो सकते हैं। एक अन्य गिरिधारी लाल और मिले हैं, जिन्होने विभिन्न छदो मे नायिका भेद लिखा है।[२]

१६१। १२३

(१४) गिरिधर कवि, वन्दीजन, होलपुर वाले (१) सम्वत् १८४४ मे उ०। यह कवि महाराज टिकैत राय दीवान नवाब आसफुद्दौला लखनऊ के यहाँ थे।

सर्वेक्षण

नवाब आसफुद्दौला का शासन काल सम्वत् १८३२-५४ है। अतः सरोज मे दिया सम्वत् १८४४ कवि का उपस्थिति काल है। इन गिरिधर कवि का 'रस मसाल' नामक ग्रन्थ खोज मे मिला है।[३] यह नायिका भेद का ग्रन्थ है। इसमे १८५ कवित्त और २६२ दोहे हैं। ग्रन्थ मे कवि का नाम गिरधर आया है, अन्य कोई सूचना इससे नही मिलती। खोज रिपोर्ट एव विनोद (१०५४) मे इन्ही गिरधर के इस ग्रन्थ का रचयिता होने की सम्भावना व्यक्त की गई है। ग्रियर्सन मे (४८३) सम्भावना की गई है कि यही होलपुर वाले गिरिधर प्रसिद्ध कुंडलियाकार गिरिधर कविराज हैं। पर यह सम्भावना ठीक नही।

१६२। १२४

(१५) गिरिधर कविराय अन्तरवेद वाले; सम्वत् १७७० मे उ०। इनकी सामयिक नीति सम्बन्धी कुडलियाँ विख्यात हैं।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९०६।६३ (२) खोज रिपोर्ट १९२३।१२३ (३) खोज रिपोर्ट १९०६।६२

सर्वेक्षण

पंडित मातादीन मिश्र ने अपने कवित्त रत्नाकर मे लिखा है कि गिरिधर भाट थे, जयपुर के निवासी थे, महाराज जयशाह के दरबार मे थे। उक्त महाराज ने इन्हे कविराय की उपाधि दी थी। इनकी पत्नी भी कवयित्री थी। उन्होंने भी कुन्डलियां लिखी हैं। जिन कुन्डलियो मे साई शब्द आया है, इन्हा की रचनायें है, गिरिधर की नही।[1] सरोज के अनुसार यह अन्तर्वेद के रहने वाले थे और सम्वत् १७७० इनका उपस्थिति काल हैं। ग्रियर्सन (३४५) और विनोद (७३१) मे सम्वत् १७७० को उत्पत्ति काल माना गया है। ग्रियर्सन मे इनके होलपुर वाले गिरिधर[2] से अभिन्न होने की सभावना की गई है, जो पूर्णतया अशुद्ध है। सच बात तो यह है कि इस कवि के सम्बन्ध मे अभी तक कोई बहुत प्रामाणिक विवरण उपलब्ध नही हो सका है। इनका केवल एक ग्रन्थ मिलता है जो नीति सम्बन्धी फुटकर कुन्डलियो का संकलन है।

१६३।१२६

(१६) गिरिधर बनारसी, बाबू गोपाल चन्द्र, साहुकाले हर्षचन्द्र के पुत्र, श्री बाबू हरिश्चंद्र जू के पिता, सम्वत् १८९६ मे उ०। इनका बनाया हुआ दशावतार कथामृत ग्रन्थ बहुत सुन्दर है और अलकार मे भारतीभूषण नामक भाषा भूषण की टीका बहुत अपूर्व बनाया है। इनके पुत्र बाबू हरिश्चन्द्र बनारस मे बहुत प्रसिद्ध और गुण-ग्राहक है। इनके सरस्वती भडार मे बहुत ग्रन्थ थे।

सर्वेक्षण

बाबू गोपाल चन्द्र उपनाम गिरिधर दास का जन्म काशी के एक अत्यन्त सम्पन्न अग्रवाल कुल मे पौष कृष्ण १५, सम्वत् १८९० वि० को हुआ था। इनके पिता का नाम हर्षचन्द्र काले था। इनके पुत्र प्रसिद्ध बाबू हरिश्चन्द्र हुये, जो भारतेन्दु के नाम से अधिक प्रख्यात हैं। इनकी मृत्यु २७ वर्ष की अल्प आयु मे वैशाख सुदी ७, सम्वत् १९१७ को हुई। सम्वत् १८९६ में यह केवल ६ वर्ष के थे। भारतेन्दु के अनुसार इन्होने कुल ४० ग्रन्थ रचे थे।

> जिन श्री गिरिधर दास कवि रच्यो ग्रन्थ चालीस[३]
> ता सुत श्री हरिचन्द को न नवावै सीस

इनके निम्नांकित २४ ग्रन्थों का उल्लेख ब्रजरत्नदास जी ने किया है :—

(१) जरासन्ध वध महाकाव्य, (२) भारती भूषण, (३) भाषा व्याकरण, (४) रस रत्नाकर, (५) ग्रीष्म वर्णन, (६) मत्स्यकथामृत, (७) कच्छपकथामृत, (८) बाराहकथामृत, (९) नृसिंहकथामृत, (१०) बावनकथामृत, (११) परशुरामकथामृत, (१२) रामकथामृत, (१३) बलरामकथामृत, (१४) बुद्धकथामृत (१५) कल्किकथामृत, (१६) नहुष नाटक, (१७) गर्ग सहिता (१८) एकादशी माहात्म्य (१९) प्रेम तरंग, (२०) ककारादि सहस्रनाम, (२१) कीर्तन के पद, (२२) मलार के पद, (२३) बसत के पद (२४) बहार।

श्री राधाकृष्ण दास ने इनके निम्नांकित ग्रन्थो का और भी नामोल्लेख किया है। :—

---

(१) कवित्त रत्नाकर, भाग १, कवि संख्या २. (२) देखिए, यही ग्रंथ, कवि संख्या १६७
(३) चंद्रावली नाटिका, प्रस्तावना।

(१) बाल्मीकि रामायण, (२) एकादशी की कथा, (३) छदार्णव, (४) नीति, (५) अद्भुत रामायण, (६) लक्ष्मीनखशिख, (७) वार्ता सस्कृत, (८) गया यात्रा, (६) गयाष्टक, (१०) द्वादश दल कमल, (११) सकर्पणाष्टक, (१२) रामाष्टक, (१३) कालियकालाष्टक, (१४) दनुजारिस्तोत्र, (१५) रामस्तोत्र, (१६) शिवस्तत्र, (१७) गोपालस्तोत्र, (१८) राधास्तोत्र, (१६) भगवतस्तोत्र, (२०) बाराहस्तोत्र ।

भारतीभूषण और दशावतार कथामृत, नवल किशोर प्रेस, लखनऊ, से प्रकाशित हो चुके हैं। रसरत्नाकर हरिश्चन्द्र कला के अतिम खड मे सकलित है। जरासन्ध वध को बाबू ब्रजरत्नदास ने पूर्ण करके काशी से प्रकाशित कराया है। हाल ही मे इनका नहुप नाटक भी नागारी प्रचारिणी सभा, काशी, से प्रकाशित हुआ है।

१६४। १२७

(१७) गोपाल कवि प्राचीन, सम्वत् १७१५मे उ०। केहरी कल्याण, मित्रजीत सिंह के यहा थे।

सर्वेक्षण

सरोज मे इनका एक कवित्त उद्धृत है, जिसमे इनके आश्रयदाता का नाम आया है।

केहरी कल्यान मित्रजीत जू के तेरे डर
सुत तजि पति तजि वैरिनी विहाल हैं

मेरा अनुमान है कि आश्रयदाता का नाम कल्यान सिंह है। उक्त छद मे सिंह के स्थान पर केहरी शब्द का प्रयोग हुआ है। मित्रजीत, कल्यान सिंह के पिता का नाम होना चाहिये।

खोज मे अनेक गोपाल मिले हैं। इनमे सबसे पुराने कुवर गोपाल सिंह है, जिन्होने रागरत्नावली की रचना सम्वत् १७५८ में की थी—

संवत गनि बसु[८] बान[५] रिसि[७] चन्द्र[१] सु माधव मास
सुद्ध तृतीया सुद्ध जुत रत्नावलि परकास ७
—खो रि० १६०६।४२

यह बुन्देल क्षत्रिय थे और त्रिलोक सिंह के पुत्र थे।

१६५। १३४

(१८) गोपाल कवि (१) कायस्थ, रीवाँ वासी, सम्वत् १६०१ मे उ०। महाराजा विश्वनाथ सिंह बान्धव नरेश के यहाँ कामदार थे। गोपाल पचीसी ग्रन्थ बहुत सुन्दर बनाया है।

सर्वेक्षण

गोपाल बक्सी-कृत शृंगार पचीसी तिलक समेत खोज मे मिली है।[२] कवि ने अंत मे सूचित किया है कि तिलक भी उसी का रचा हुआ है।

श्री बगसी गोपाल, विरचि सिंगार पचीसिका
किय यह तिलक रसाल, सुनत गुनत सुकविहि सुखद

---

(१) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, पृष्ठ ४१, ५३, ले० ब्रजरत्नदास (२) खोज रिपोर्ट १६०६।२५४, १६२३।१३२

ग्रन्थ की रचना सम्वत् १८८५ में हुई —

सवत सर[५] वसु[८] वसु[८] ससी[१], चैत दुवैज सित पक्ष
बार सोम सुभ समय येहि, भो सपूरन स्वच्छ

इस ग्रन्थ की कविता अत्यन्त सरल है। यह वक्सी गोपाल, रीवाँ वाले गोपाल कायस्थ ही हैं, और सरोज मे दिया हुआ सम्वत् १९०१ इनका उपस्थिति काल है, जो इनके आश्रयदाता रीवाँ नरेश विश्वनाथ सिंह जू देव के शासन काल का अन्तिम वर्ष है। ग्रथ का खोज मे दिया हुआ नाम शृगार पचीसी है, और सरोज मे दिया हुआ गोपाल पचीसी। एक रस के अनुसार है दूसरा कवि और आलम्बन के अनुसार।

१६६।१३५

(१९) गोपाल वन्दीजन (२) चरखारी, बुन्देलखड, सम्वत् १८८४ मे उ०। यह कवि महाराजा रतनसिंह बुन्देला, चरखारी भूप के यहाँ थे।

सर्वेक्षण

इनकी कविता के उदाहरण में सरोज मे निम्नाकित छप्पय उद्धृत है, जिससे पता चलता है कि चरखारी के किस राजा के दरबार मे कौन कवि था।

प्रथम पढ़िव हरिचद भूप छतसाल निवासह
बिय पढ़िव पहलाद भूप जगतेस सुवासह
गुन पढि दानी राम भूप की कीर्ति सुहाई
नृप खुमान ढिग भान दास बहु काव्य सुनाई
विक्रम महीप कवि भान पढि सुजस साखि साखिन बढे
करुनानिधान रतनेस ढिग कवि गोपाल नित प्रति पढे।

रतन सिंह विक्रमाजीत सिंह के पुत्र रणजीत सिंह के पुत्र थे और विक्रमाजीत सिंह की मृत्यु के अनन्तर सम्वत् १८८५ मे चरखारी की गद्दी पर बैठे थे। इन्होंने सम्वत् १९१७ तक राज्य किया। इन्ही के दरबार मे गोपाल कवि थे, जो मृगया विनोद के लेखक थे। यह तीन भाई थे। तीनो का नाम दरबार मे एक ही था—(१) गोपाल कवि (२) गुपाल दत्तात्रै (३) गोपाल भट्ट[१]।

गोपाल वन्दीजन थे। श्यामदास के पुत्र थे। चरखारी नरेश के आश्रित थे। इन्हें सुकवि की उपाधि मिली थी। इनका निम्नाकित ग्रन्थ खोज मे मिला है :—

शिख नख दर्पण—१९०६।४०। यह बलभद्र के प्रसिद्ध नखसिख की टीका है। इसकी रचना सम्वत् १८९१ मे हुई :—

सम्वत ससि[१] नव[९] बसु[८] धरा[१] सीत पक्ख बुधवार
सिखनख दर्पन को भयो ताही दिन अवतार १५

ग्रथ रतन सिंह के आश्रय मे लिखा गया। इसमे उनकी प्रशस्ति भी है।

चिरजीव रतनेस नृप छत्रसाल कुल छत्र
दीह दान किरिन कौ जिहि भुआवन जयपत्र

---

(१) ना० प्र० पत्रिका, भाग ६, अंक ४, माघ १९८९, पृष्ठ ३८२-८३

पुष्पिका से कवि के पिता का नाम ज्ञात होता है।

"इति श्री स्यामदासात्मज गोपाल कवि कृत सिखिनख दर्पण समाप्त"

कवि के विवरण मे लिखा गया है कि यह वलभद्री व्याकरण, हनुमन्नाटक की टीका तथा गोवर्धन सतसई की टीका के भी रचयिता थे। रिपोर्ट की यह वात ठीक नही। इन तीनो ग्रन्थो के रचयिता प्रसिद्ध कवि केशव के भाई वलभद्र मिश्र थे, न कि गोपाल। गोपाल ने लिखा है कि जिन वलभद्र ने वलभद्री व्याकरण की रचना की, हनुमन्नाटक का तिलक किया, गोवर्धन सतसई की टीका की, भला उनकी गति का वर्णन कौन कर सकता है? किन्तु मुझ मतिमन्द ने महाराज रतनसिंह की आज्ञा से उनके प्रताप तथा यश का जप करते हुये वलभद्र के नखशिख की यह टीका लिखी है —

जिहि वलभद्र क्यिो वियो वलभद्री व्याकर्न
हनुमन्नाटक को कियो तिलक अर्थ आभर्न
गोवर्धन सतसई को टीको कीन्हौं चारु
इत्यादिक बहु ग्रन्थ जिहि कीने अर्थ अपार
तिहि की गति को कहि सकै, किहि की मति सु अमन्द
करी ढिठाई मै सु यह, अबुध अधिक मतिमन्द
रतन सिंह महराज को अद्भुत अमित प्रताप
तिहि वल तै कछु मै कह्यो हियो तासु जस जाप

खोज मे एक ग्रन्थ चारो दिशाओ के सुख-दुख या पुरुष-स्त्री सवाद मिला है।[१] इसे कभी चरखारी वाले गोपाल की रचना कहा गया है और कभी वृन्दावन वाले गोपाल की। कभी विना कोई निर्णय दिये यो ही छोड दिया गया है। इसकी प्राचीनतम प्रति सम्वत् १८९६ वि० की है।

१६७।१३६

(२०) गोपाल लाल कवि (३) सम्वत् १८५२ मे उ०। शान्त रस मे इनके कवित्त अच्छे है।

सर्वेक्षण

एक गोपाल कवि का सुदामा चरित्र नामक ग्रन्थ खोज मे मिला है जो कवित्त-सवैयो मे लिखा गया है। उसकी रचना सम्वत् १८५३ वि० मे हुई थी।[२]

एक सतनामी साधु गोपाल नामक हुये हैं जिन्होने सम्वत् १८३१ मे वोध प्रकाश[३] नामक ग्रन्थ लिखा। इसमे कवित्त वहुत से है —

अष्टादस सत सवत अधिक वर्ष एक्तीस
सुचि सित नौमी भानु दिन पूर्ण घटी गत वीस

इस ग्रन्थ मे भी राम नाम का महत्त्व वर्णन करने के वहाने प्रह्लाद की कथा कही गई है। प्रतीत होता है कवित्त सवैयो मे सुदामा एव प्रह्लाद की कथा कहने वाले दोनो गोपाल एक ही हैं। बोध प्रकाश के रचयिता गोपाल ने अपना पता यह दिया है —

---

(१) खोज रिपोर्ट १९२६।१४७ ए, वी, १९२९।१२४, १९३८।५४ (२) खोज रिपोर्ट १९०६।२५३ (३) खोज रिपोर्ट १९२३।१३१

अवध नगर जयसिंह पुर अग्नि कुण्ड के तीर
आश्रम दास गरीव के अग्नि कोन जाहीर

सरोज के शात रस वाले गोपाल यही प्रतीत होते है। ऐसी स्थिति मे सरोज मे दिया हुआ सम्वत् १८५२ कवि का निश्चित रूप से उपस्थिति काल है।

१९८।१५९

(२१) गोपाल राय कवि। नरेन्द्रलाल शाह और आदिल खाँ की प्रशसा मे कवित्त कहे हैं।

सर्वेक्षण

सरोज मे गोपाल राय के दो कवित्त उद्धृत हैं। पहले मे नरेन्द्रलाल शाह और दूसरे मे आदिल खाँ की प्रशसा है। इनमे से नरेन्द्रलाल शाह पटियाला नरेश नरेंद्र सिंह हैं, जिन्होने सम्वत् १९०२ से १९१९ तक राज्य किया था।[1] खोज मे पटियाला दरबार से सम्बन्धित गोपाल राय के ग्रथ मिले हैं। इन गोपाल राय ने पटियाला नरेश के अनुज अजीत सिंह के लिये रासपचाध्यायी सटीक नामक ग्रन्थ लिखा था, जिसमे इन्होने इस तथ्य का स्पप्ट उल्लेख किया है :—

हरि राधा सखि ज नन के, चरनन करि परनाम
सिरी अजित सिंह नृपति हित, कियो ग्रन्थ अभिराम २२६

—खोज रिपोर्ट १९१२।६२

गोपाल राय वृन्दावन के रहने वाले थे। यह चैतन्य महाप्रभु के गौडीय सम्प्रदाय के वैप्णव थे। इनके पिता का नाम खड्ग राय, उपनाम प्रवीन राय था और गुरु का नाम रामवस्श भट्ट था। इनका रचना काल सम्वत् १८८५-१९०७ है। इनके निम्नलिखित ग्रन्थ खोज मे मिले हैं —

(१) दम्पत्ति वाक्य विलास—१९२२।६२ ए। यह १३१ पन्ने का एक बडा ग्रन्थ है। इसमे परदेश के दुख-सुख, ब्याह प्रवन्ध, यात्रा प्रवन्ध, सवारी प्रवन्ध, निवास प्रबन्ध, काव्य प्रवन्ध, वनिज प्रवन्ध और जाति प्रवन्ध आदि का वर्णन है। इसकी रचना सम्वत् १८८५ मे हुई —

ठारे से पिच्चासिया पून्यो अगहन मास
दम्पत्ति वाक्य विलास को तब कीनो परकास

(२) रस सागर १९१२।६२ बी। यह नायिका भेद का ग्रथ है। इसकी रचना सम्वत् १८८७ मे हुई —

ठारह सै सत्तासिया जेठ वदी रवि तीज
कवि गोपाल वर्नन कर्यो रस सागर को बीज

(३) वन जात्रा—१९१२।६२ सी। इस ग्रथ मे व्रज की परिक्रमा और व्रज के तीर्थो का वर्णन ललित पद छद मे है। ग्रन्थ की रचना सम्वत् १८९७ मे हुई।

पूस मास नवमी रविवासर सुकुल पच्छ सुखदाई
सम्वत सहस अठारह ऊपर सत्तानवे गनाई

---

(१) पञ्जाब रिपोर्ट १९२२।११७

ग्रन्थारम्भ मे महाप्रभु (चैतन्य) की वन्दना है —

श्री आचारज महाप्रभुन को वन्दूँ बारम्बारा
जिनकी शिक्षा मत्रहिं सुनि नरनारि भये भवपारा

(४) वृन्दावन माहात्म्य—१९१२।६२ डी। यह माहात्म्य पद्मपुराण के अनुसार है।

वृन्दावन माहात्म्य यह, पद्म पुराण मझार
कवि गुपाल भाषा करें, संतन हित सुखकार

इस ग्रन्थ की रचना सम्वत् १९०३ मे हुई —

सम्वत सत उन्नीस पर तीन और सुखकार
भाद्रमास तिथि सप्तमी कृष्ण पक्ष बुधवार

(५) धुनि विलास—१९१२।६२ ई। इस ग्रन्थ मे ध्वनि-काव्य है। इसकी रचना सम्वत् १९०७ मे चैत्र शुक्ल ९ को हुई —

सम्वत सत उन्नीस पर सात राम अवतार
ता दिन ग्रन्थ भयो प्रगट धुनि विलास कौ त्यार

(६) रास पचाध्यायी सटीक—१९१२।६२ एफ। यह कवित्त वन्ध ग्रन्थ है, और पटियाला नरेश के अनुज अजित सिंह के लिये लिखा गया था।

(७) भाव विलास—१९१२।६२ जी। यह भाव सम्वन्धी ग्रन्थ है।

(८) दूषण विलास—१९१२।६२ एच। यह काव्य दोष सम्वन्धी ग्रन्थ है। इसका प्रतिलिपि काल जन्माष्टमी १९०७ है।

(९) भूषण विलास—१९१२।६२ आई। यह ९७ पन्नो का एक बडा अलकार ग्रन्थ है।

(१०) वृन्दावनधामानुरागावली—१९१२।६२ जे, १९०९।९७ वी। वृन्दावन के धामो का वर्णन इस ग्रन्थ मे हुआ है। प्राचीनतम प्राप्त प्रति का लिपिकाल सम्वत् १९०० है।

(११) वर्पोत्सव—१९१२।६२ एल। इसमे वर्ष भर के वैष्णव उत्सवो एव त्योहारो का वर्णन है। ग्रन्थ का प्रतिलिपि काल सम्वत् १९०३ है।

(१२) मान पचीसी—१९०९।९७ ए। ग्रन्थकर्त्ता ने इसमे अपने पिता का नामोल्लेख किया है—रायप्रवीन के नद गुपालनै सोधि के मान पचीसो वनायो। इस ग्रन्थ मे मुद्रा अलकार की अद्भुत छटा है।

(१३) अस्फुटिक कवित्त—प १९२२।११६ ए। यह सग्रह ग्रन्थ है। इसमे देव, गिरिधर, प्रताप आदि पुराने कवियो की दुर्गा, गगा, यमुना, राम आदि सम्वन्धी रचनायें सकलित हैं। इसका सकलन-काल सम्वत् १९११ है।

(१४) वैराग्य शति—प १९२२।११६ वी। इसमे पटियाला नरेश नरेन्द्र सिंह तथा उनके पुत्र युवराज रघुराज सिंह की मृत्यु का वर्णन है। रघुराज सिंह मराठो की लडाई मे दिवगत हुये थे। इसमे कुछ छद वैराग्य सम्वन्धी भी हैं।

बसीलीला[१] नामक एक और ग्रन्थ इनका कहा गया है। पर यह किसी अन्य गोपालराय की रचना है जो हित सम्प्रदाय के अनुयायी थे।

---

(१) खोज रिपो० १९१२।६२ के

(१) श्री हरिवंश की लेलहि कों हरिवंशहि के पद वदहि हैं,
सखि भावना के रत व्यास जू कों पद जो अति आनंदकदहि है।
रवि की प्रभु व्यास के वैन लिखे निज ग्रन्थहि मैं मति मदहि है,
तिहि की दुति तैं सु-गुपाल के वैन रु वीतैं प्रकाश ज्यो चदहि है।
(२) श्री गुपालहि का हित के वश मे लखि कै हरि के जन जांचत हैं

इस ग्रन्थ मे ६६ सवैये है। प्रारम्भ मे इसे गुपालराय की ही रचना कहा गया है। सभव है कि यह हित हरिवंश के ही राधावल्लभी सम्प्रदाय के रहे हो, गौडीय सम्प्रदाय के न रहे हो जैसा कि रिपोर्ट मे (१९१२।६२) लिखा गया है। १९२१ वाली रिपोर्ट मे उल्लिखित बारहो ग्रन्थ वृन्दावन मे एक व्यक्ति, लाला बद्रीदास वैश्य के यहाँ मिले हैं।

विनोद मे गुपालराय का वर्णन १०६४, १२८१ और १६६३ सख्याओ पर तीन-तीन बार हो गया है।

१६६।१६५

(२२) गोपाल शरण राजा, सम्वत् १७४८ मे उ०। इन्होने महाललित पद और प्रबन्ध घटना नामक सतसई का टीका बनाया है।

सर्वेक्षण

सरोज मे इनका एक पद राधारूप सम्बन्धी है। अन्तिम चरण मे इनके नाम के साथ नृप लगा हुआ है, जिससे ज्ञात होता है कि यह कही के राजा थे —

"गज गति चाल चलत मोहन दुति, नृप गोपाल पिय सदा विशेष"

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई अन्य प्रामाणिक सामग्री उपलब्ध नही।

१७०।१६७

(२३) गोपाल दास व्रजवासी, सम्वत् १७३६ मे उ०। इनके पद रागसागरोद्भव मे है।

सर्वेक्षण

गोपाल दास व्रजवासी का एक पद सरोज मे उद्धृत है, जिससे ज्ञात होता है कि यह कृष्णोपासक सगुणधारा के भक्त थे। रागकल्पद्रुम के अतिरिक्त इनके पद ख्याल टिप्पा नामक सग्रह ग्रन्थ मे भी हैं।[1]

सरोज में गोपलदास व्रजवासी के नाम पर जो पद उद्धृत है, उसके अतिम चरण मे कवि छाप के साथ-साथ उनके इष्टदेव मदनमोहन का भी नाम है.—

"गोपालदास मदनमोहन कुज भवन वसति रंग,
मुदित अवनि भावती सु मानि के रली"

मदनमोहन जी काशीवासी सेठ गोपालदास के इष्टदेव थे। यह स्वरूप इनके बाप सेठ पुरुषोत्तम दास को सवत् १५५० मे मकान की नीव खुदवाते समय मिला था। अत. स्पष्ट है कि सरोज के अभीष्ट गोपलदास व्रजवासी नही थे, काशीवासी चौपडा खत्री थे। इन गोपालदास जी का जन्म सवत् १५५१ मे हुआ था। यह अपने पिता के साथ स० १५५२ मे वल्लभ सप्रदाय मे दीक्षित —

---

(१) खोज रिपोर्ट १९०२।५७

हुए थे। गोसाई विट्ठलनाथ जी के जीवन काल (मृ० १६४२) मे यह जीवित थे। स्पष्ट है कि सरोज मे दिया सं० १७३६ भी अशुद्ध है। गोपालदास जी ने विरह के वहुत से पद लिखे हैं। इनका विवरण चौरासी वैष्णवन की वार्ता मे पुरुषोत्तम दास की वार्ता (स० ६) के अन्तर्गत दिया गया है।[1]

खोज मे एक 'गोपाल' मिले है जिन्होने स० १७५५ मे 'रास पचाध्यायी' की रचना भाद्रपद की अष्टमी (कृष्ण जन्माष्टमी) बुधवार को की:—

सम्वत सत्रह सै समय, पचपन भादव मास
आठौ बुध गोपाल जन, वरन्यो रास विलास

—खोज रिपोर्ट १६४१।५६

सरोज मे वर्णन इनका है, उदाहरण गोपालदास वनारसी का है।

खोज मे एक और गोपाल दास मिले है, जिन्होहे प्रह्लाद चरित्र,[2] ध्रुव चरित्र[3], मोहमर्द राजा की कथा[4], राजा भरत चरित्र,[5] मोह विवेक[6], और परिचयी स्वामी दादू जी की[7] रचना की। यह दादू के शिष्य थे, और निरगुनिये थे। इनका रचना काल सम्वत् १७०० के आस-पास है।

१७१।१३७

(२४) गोपा कवि, सम्वत् १५६० मे उ०। इन्होने राम भूषण, अलकार चन्द्रिका, ये दो ग्रंथ बनाये है।

सर्वेक्षण

सरोज मे कवि परिचय देते समय कवि का नाम गोपा दिया गया है, पर उदाहरण देते समय उसे गोप कहा गया है (यह वैपम्य तृतीय सस्करण मे भी है)। साथ ही जो उदाहरण दिया गया है, उसमे भी छाप गोप ही है। अत' कवि का नाम गोप है, न कि गोपा। खोज मे गोप कवि की दो रचनाये मिली है :—

(१) पिंगल प्रकरण—१६०६।३६ वी। यह ६ उल्लासो मे विभक्त है।

(२) रामालकार १६०६।३६ ए, १६४७।७७। यह अलंकार ग्रन्थ है। इसमे दिये हुये उदाहरण राम कथा से सम्वन्वित है। सरोज मे गोप के दो ग्रन्थो का नाम दिया हुआ है—राम भूषण और अलकार चन्द्रिका। खोज मे प्राप्त यह रामालकार या रामचन्द्राभरण ही रामभूषण है। सम्भवत' इसी का एक अन्य नाम अलकार चन्द्रिका भी है। अलकारो मे राम कथा से युक्त होने के कारण इनका नाम राम भूषण पडा और अलकार ग्रन्थ होने के कारण अलकार चन्द्रिका। रामालकार के प्रारम्भ मे कवि ने अपना वश परिचय विस्तार पूर्वक दिया है। इसके अनुसार नन्दनाथ दीक्षित दक्षिण से गोकुल मे आये। उनके पुत्र रामकृष्ण थे, जो अपनी विरादरी के गोकुलस्थो के सरदार थे। रामकृष्ण के पुत्र वलभद्र जू हुये, जिनका स्वभाव ही जप, तप, यज्ञ का था। वल्लभाचार्य

---

(१) प्राचीन वार्ता रहस्य भाग ३, पृष्ठ २४–२५, उसी ग्रंथ का गुजराती विवरण, पृष्ठ १–६। (२) खोज रि० १६००।२३, १६२६।१२३ डी (३) खोज रि० १६००।२५ १६२६।१२३ वी सी (४) खोज रि० १६२६।१२३ ए (५) खोज रि० १६००।२८ (६) खोज रि० १६०२।२१५ (७) खोज रि० १६०२।२३६

के किसी वशज ने इनके पैर पूजे थे, और इन्हे सोने के पचपात्र और अनेक सामग्रियाँ दा था, तथा इन्हे भट्टमणि कहा था। इन वलभद्र जू के पुत्र यदुनाथ कवि हुये, जो परम पडित एव रामविलास के रचयिता थे। इन यदुनाथ के तीन पुत्र हुये। सबसे ज्येष्ठ थे केशव राय, मझले थे गोप और कनिष्ट थे वालकृष्ण। इन गोप ने गोकुल से ओरछा आकर, पृथ्वी सिंह के आश्रय मे रहकर, रामालकार ग्रथ की रचना की :—

दच्छिन ते दीछित प्रगट, नन्द नाथ अवतार
राम कृष्ण तिनके तनय, गोकुलस्थ सरदार २
तिनके सुत वलभद्र जू, जप तप जज्ञ सुभाइ
वल्लभ कुल प्रभु जगत गुरु, पूजो जिनके पाइ ३
कचन की पँचहड दई, अरु लदाउ को ठाम
भट्टनि - मनि सबते सरस, महापात्र तुव नाम ४
तिनके सुत जदुनाथ कवि, पडित परम प्रवीन
राम विलास प्रकाश कर, सदा भागवत लीन ५
तिनके प्रगटे तीन सुत, जेठे केशव राय
मझले सुत कवि गोप जू, वालकृष्ण लघु भाय ६
नगर ओरछे आइ कै, पृथ्वीसिंह नृप पास
वैठि जज्ञसाला सरस, कीन्हें ग्रन्थ प्रकाश ७

खोज रिपोर्ट मे अनुमान किया गया है कि गोप का पूरा नाम सम्भवत: गोपाल भट्ट था। ओरछा के राजा पृथ्वीसिंह का राज्य-काल १७३५-५२ ई० दिया गया है। अत. गोप कवि का रचना-काल भी सम्वत् १७९२-१८०९ वि० हुआ और उन्होने रामालकार की रचना सम्वत् १८०० के आस-पास किसी समय की, सम्वत् १७९३ के पूर्व तो की नही। पडित मयाशकर जी याज्ञिक के अनुसार गोप सम्वत् १७७२ मे उपस्थित थे।[1] विनोद मे गोपा और गोप को दो कवि माना गया है। गोपा का उल्लेख सख्या १२१ पर, गोप का सख्या ११५ एव ६६३।३ पर हुआ है। विनोद मे गोपा का विवरण सरोज के आधार पर एव गोप का खोज के आधार पर है। वस्तुत. दोनो एक ही कवि हैं। श्री भगीरथ मिश्र ने भी गोप और गोपा को एकही कवि माना है।[2] सरोज मे दिया हुआ गोपा का सम्वत् १५९० अशुद्ध है।

१७२।१४२

(२५) गोकुलनाथ वदीजन, वनारसी, कवि रघुनाथ के पुत्र, सम्वत् १८३४ मे उ०। इनका चेतचन्द्रिका ग्रन्थ कवि लोगो मे प्रामाणिक समझा जाता है और गोविन्द सुखद विहार नामक दूसरा ग्रन्थ वहुत सुन्दर वना है। यह कवि महाराजा चेत सिंह काशीनरेश के प्राचीन कवीश्वर हैं। चेतचन्द्रिका मे राजा की वशावली का विस्तारपूर्वक वर्णन है। चौरा गाँव जो पचकोसी के भीतर है, उसमे इनका घर है। महाराजा उदित नारायण की आज्ञानुसार, अष्टादसपर्व भारत के हरिवश पर्यन्त का भाषा मे उल्था किया है। गोपीनाथ इनके पुत्र और मणिदेव गोपीनाथ के शिष्य भी

---

(१) मर्यादा वर्ष १०, संख्या ३, सन् १९१५ ई० (२) हिन्दी काव्य शास्त्र का इतिहास, पृष्ठ ५१

भारत के उल्था मे शरीक है। काशी मे रघुनाथ कवीश्वर का घराना कविता करने मे महा उत्तम और इस भारतवर्ष मे सूर्य के समान प्रकाशमान् है।

सर्वेक्षण

गोकुलनाथ जी काशी के प्रसिद्ध कवि रघुनाथ वन्दीजन के पुत्र थे। यह काशीनरेश महाराजा बरिबण्ड सिंह (शासन काल १७६७-१८२७ वि०), महाराजा चेत सिंह (शासनकाल १८२७-३८ वि०) और महाराजा उदित नारायण सिंह (शासन काल सम्वत् १८५२-९२ वि०) के आश्रय मे रहे। खोज मे इनके निम्नाकित ग्रन्थ मिले हैं :—

(१) चेतचन्द्रिका—१९०४।१२, १९०९।९६ बी, १९२०।५१, ए १९२२।१३०। यह अलकार ग्रन्थ है और चेत सिह के नाम पर बना है। इसका रचना काल नहीं दिया गया है। यह भारत जीवन प्रेस, काशी, से प्रकाशित भी हो चुका है।

(२) राधाकृष्ण विलास—१९०३।१५। यह ग्रन्थ सम्वत् १८५८ मे रचा गया :—

वसु[८] सर[५] वसु[८] विधु[१] (बरस मैं) माधव मास अमद
ग्रन्थ कर्यो प्रारम्भ लहि पून्यो पूरन चन्द

ग्रन्थ मे राधाकृष्ण चरित्र के साथ-साथ नायिका भेद भी है।

(३) राधा नखशिख—१९०९।९६ सी। इस ग्रन्थ मे ९१ सोरठे है।

(४) नाम रत्नमाला या अमरकोष भाषा—१९००।२, १९०९।९६ ए। इस ग्रन्थ की रचना सम्वत् १८७० मे हुई :—

गगन[०] अद्रि[७] वसु[८] विधु[१] सम्वतवर कार्तिक पुन्य कढव
सुकुल पचमी पाय पुन्य भव कियो कोष प्रारम्भ

(५) सीताराम गुणार्णव—१९०४।२३। यह अध्यात्म रामायण का अनुवाद है।

(६) कवि मुख मडन—१९०३।३५। काशी नरेश महाराजा बरिवण्ड सिंह की आज्ञा से २१ दिनो मे लिखित अलकार ग्रन्थ।

'गोविन्द सुखद विहार' की कोई प्रति नही मिली है। हो सकता है कि यह राधाकृष्ण विलास का ही दूसरा नाम हो। इन सातो ग्रन्थो से अधिक महत्वपूर्ण कार्य इनका महाभारत दर्पण नामक महाभारत का भाषानुवाद है। इसे इन्होने अपने पुत्र गोपीनाथ और शिष्य मणिदेव की सहायता से पूर्ण किया था। अनुवाद सम्वत् १८३० मे महाराजा उदित नारायण की आज्ञा से प्रारम्भ हुआ और ५४ वर्ष के पश्चात् सम्वत् १८८४ मे पूर्ण हुआ। इस महान् ग्रन्थ के निम्नाकित अश[१] गोकुलनाथ जी द्वारा अनूदित हुए :—

(१) आदि पर्व, (२) सभा पर्व, (३) वन पर्व, (४) अध्यायो को छोडकर, इन्हे मणिदेव ने पूरा किया), (४) विराट पर्व, (५) उद्योग पर्व (६) भीष्म पर्व (केवल ५ अध्याय, शेष इनके पुत्र गोपीनाथ ने पूरा किया), (७) द्रोण पर्व (केवल ४ अध्याय, शेष इनके पुत्र गोपीनाथ ने पूरा किया) (८) शान्ति पर्व (केवल ९ अध्याय, ३० अध्याय गोपीनाथ ने अनूदित किये।)

---

(१) विनोद, भाग २, पृष्ठ ७४१

मणिदेव गोपीनाथ के शिष्य नही थे, गोकुलनाथ के ही शिष्य थे।[1]

१७३।१४५

(२६) गोपीनाथ वन्दीजन, वनारसी, गोकुल नाथ के पुत्र, स० १८५० मे उ०। इनकी अवस्था का वहुत-सा भाग भारत के उल्था करने मे व्यतीत हुआ, शेष काल शृङ्गारादि नवरसो के काव्य मे वीता। हमने भारत के सिवाय और कोई ग्रन्थ नायिका भेद अथवा अलकार इत्यादि का इनका वनाया नही देखा। शृगार मे स्फुट कवित्त देखे ह। लोग कहते हैं कि महाराजा उदितनारायण ने भारत का भाषा करने के लिये एक लक्ष रुपये इन्हे दिये थे।

सर्वेक्षण

गोपीनाथ, गोकुलनाथ वन्दीजन वनारसी के पुत्र थे। यह काशीनरेश महाराज उदितनारायण सिंह (शासन काल १८५२-९२ वि०) के आश्रित थे। इन्होने अपने पिता गोकुल नाथ और उनके शिष्य मणिदेव की सहायता से उक्त काशी नरेश की आज्ञा से महाभारत का अनुवाद विविध छदो मे किया था। सरोज मे दिया हुआ सम्वत् १८५० इनका उपस्थिति काल है। इन्होने महाभारत के निम्नांकित अगो का अनुवाद किया था —[2]

(१) भीष्म पर्व (५ अध्याय छोडकर, इन्हे इनके पिता गोकुल नाथ ने अनूदित किया था), (२) द्रोण पर्व (४ अध्याय छोडकर, इन्हे इनके पिता गोकुलनाथ ने अनूदित किया था), (३) अश्वमेध पर्व, (४) आश्रमवासिक पर्व, (५) मुशल पर्व (६) स्वर्गारोहण पर्व, (७) शाति पर्व (केवल ३० अध्याय, इसके ९ अध्यायो का अनुवाद इनके पिता गोकुलनाथ ने किया था।), (८) हरिवश पुराण।

१७४।१६२

(२७) गोकुलविहारी, सम्वत् १६६० मे उ०। इनकी कविता मध्यम है।

सर्वेक्षण

सरोज मे इनका एक कवित्त उद्धृत है जिसमे कृष्ण और कस के कुवलयापीड हाथी का सामना वर्णित है।

झूमत झुक्त मतवारो अति भारो गज
गरजन गरजत महा प्रलै काल की
कोमल कमल उत गोकुल बिहारी लाल
जैसी कोउ कुञ्ज मैं फिरन कजनाल की

कुछ पता नही कवि का नाम गोकुल है, गोकुल विहारी है, गोकुल विहारी लाल है, अथवा केवल लाल है या सव कृष्ण के लिये ही प्रयुक्त हुआ है। इस कवि के सम्वन्ध मे कोई भी सूत्र सुलभ नही।

१७५।१५६

(२८) गोपनाथ कवि सम्वत् १६७० मे उत्पन्न। इनके वहुत अच्छे कवित्त है।

---

(१) विनोद, भाग २, पृष्ठ ७३९ (२) वही, पृष्ठ ७४१

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही ।

१७६। १४७

(७६) श्रीगुरु गोविन्द सिंह शोडी खत्री पजावी, सम्वत् १७३८ मे उ०। यह गुरु साहव गुरु तेगवहादुर के आनन्द पुर पटना शहर मे उत्पन्न हुये थे। गुरु तेगवहादुर का औरगजेव ने वध किया था। हिन्दुओ के मन्दिर इत्यादि खुदाने के कारण रुष्ट होकर गुरु गोविन्द सिंह ने नैना देवी के स्थान मे महा घोर तप द्वारा वरदान पाकर सिख-मत को स्थापित कर एक ग्रन्थ वनाया, जिसमे इनके सिवाय और कवि महात्माओ का काव्य भी है, और शिष्य लोग जिसको ग्रन्थ साहव कहते है। इसमे भविष्य काल का भी वर्णन है। गुरु साहव ने व्रजभाषा, पजावी और फारसी, तीनो जवानो मे महासुन्दर कविता की है।

सर्वेक्षण

गुरु गोविन्द सिह सोढी खत्री जाति के पजावी और सिक्खो के दसवे और अतिम गुरु थे। इनका जन्म पूस सुदी ७, सम्वत् १७२३ मे पटना मे और सत्यलोक-वास सम्वत् १७६५ मे हुआ। यह सिक्खो के नवे गुरु तेगवहादुर के पुत्र थे। इनके वनाये हुये ग्रन्थ निम्नाकित है—

(१) सुनीति प्रकाश—नीति सम्वन्धी रचनाये।
(२) सर्वलोह प्रकाश—नानक की रचनाओ की टीका।
(३) प्रेम सुमार्ग—सिक्ख धर्म के लक्ष्य।
(४) वुद्धिसागर—भजन सग्रह।
(५) चडी चरित्र—दुर्गा सप्तशती की कथा। इसके तीन अनुवाद हैं। सवैयो मे, पोडियो मे और नाना छदो मे।
(६) गोविन्द रामायण।
(७) त्रियाचरित्रोपाख्यान।
(८) जफर नाना—फारसी मे

इनमे से गोविन्द रामायण का प्रकाशन अभी हाल ही मे श्रीरामचन्द्र वर्मा ने अपने साहित्य रत्नमाला कार्यालय, काशी से किया है। त्रियाचरित्रोपाख्यान का एक अश 'भूप मत्री सवाद' सभा की खोज (१६२६। १५५) मे मिला है। इस ग्रन्थ मे ४०४ स्त्री चरित्र वर्णित है। इसका रचना काल सम्वत् १७५३ है। दशम ग्रन्थ इनकी प्रायः समस्त रचनाओ का सकलन है।[1]

गुरु गोविन्द सिह हिन्दी, फारसी, पजावी के अच्छे ज्ञाता और कवि थे। यह न तो सिख-मत के प्रवर्त्तक थे और न गुरु ग्रन्थ साहव के रचयिता। सिक्ख मत का प्रवर्तन गुरु नानक ने किया था और गुरु गोविन्द सिह ने सिक्खो को एक सैनिक शक्ति के रूप मे वदला। गुरु ग्रन्थ साहव के सकलयिता सिक्खो के ५ वे गुरु अर्जुन देव थे।

---

(१) शुक्ल जी का इतिहास, पृष्ठ ३३१-३२, हरिऔध कृत हिन्दी भाषा और साहित्य का विकास, पृष्ठ ३८२-६०। ग्रियर्सन कवि संख्या १६६

सरोज मे दिया हुआ सम्वत् १७३८ गुरु गोविन्द सिह का उपस्थिति काल है। इस समय उनकी अवस्था १५ वर्ष की थी। सप्तम सस्करण मे १७२८ है, प्रथम मे १७३८।

१७७। १५४

(३०) गोविन्द, अष्टम कवि, सम्वत् १६७० मे उ०। इनके कवित्त हजारे में हैं।

सर्वेक्षण

सरोज मे गोविन्द अटल का नीति सम्बन्धी एक छप्पय उद्धृत है, जिसका अतिम चरण यह है—

गोविन्द अटल कवि नन्द कहि, जो कीजै सो समय सिर

कुछ सदेह होता है कि कवि का नाम गोविन्द अटल है अथवा कवि नन्द। यह भी हो सकता है कि कवि का भूत नाम नन्द हो और गोविन्द अटल विशेषण के ढग पर व्यवहृत होने वाला उपनाम हो। इस कवि के सम्बन्ध मे अभी तक कोई सूचना सुलभ नही।

१७८। १५५

(३१) गोविन्द जी कवि, सम्वत् १७५७ मे उ०। ऐजन। (इनके कवित्त हजारा मे है।)

सर्वेक्षण

सरोज मे इस कवि का एक पद उद्धृत है, जिसके अतिम चरण मे कवि छाप रसिक गोविन्द है।

मुँह तन तकत वक्त पुनि मुसिकत
रसिक गोविंद अभिराम लँगरवा

रसिक गोविद जी निम्बार्क सम्प्रदाय के वैष्णव थे और जयपुर के रहने वाले थे। शुक्ल जी ने अपने इतिहास मे इनके निम्नाकित ६ ग्रन्थो का विवरण दिया है—

१. रामायण सूचनिका—३२ दोहो मे रामायण की कथा।

२ रसिक गोविन्दानन्द घन—यह एक रीति ग्रन्थ है। इसकी रचना सम्वत् १८५८ मे हुई थी—

वसु[८] सर[५] वसु[८] ससि[१] अक रवि दिन पंचमी वसंत
रच्यो गोविन्दानन्दघन वृन्दावन रसवन्त

इस ग्रन्थ मे कवि ने अपना पूरा परिचय दिया है।

जादोदास साह को सपूत पूत सालिग्राम
सुत न रानी (?) बात मुकुन्द कहायो है
जैपुर वसैया विलसैया कोक काव्यनु को
ताको लघु भैया श्री गोविन्द कवि गायो है
सम्पति विनासी तब चित्त में उदासी भई
सुमति प्रकासी यातो व्रज को सिधायो है

सब हरि व्यास कृपा विनहो वितास रास
सब सुख रासि वास वृन्दावन पायो है

दू ।

मात गुमान गुविन्द को, पिता जु सालिगराम
श्री सरवेश्वर शरण गुरु, बा विन्दावन धाम
रच्यो गोविन्दानन्द घन, श्री नारायण हित्त
कृष्ण दत्त पाडे तिन्हे, दियो जानि निज मित्त

यह नारायण जिनके लिये ग्रन्थ रचा गया इन्ही के वडे भाई वालमुकुन्द के पुत्र थे।

वेटा बालमुकुन्द कौ श्री नारायण नाम
रच्यो तासु हित ग्रन्थ ये रसिक गोविंद अभिराम

एक छद मे कवि ने अपना परिचय पुन. दिया है।

वैष्णव रसिक गोविन्द लोक कोक काव्य विलसैया
सालिग्राम सुत जात नटनी बाल मुकुन्द को भैया
जयपुर जन्म जुगल पद सेवी नित्य विहार गवैया
श्री हरि व्यास प्रसाद पाय भो वृन्दाविपिन वसैया

२ लछिमन चन्दिका—यह रसिक गोविन्दानन्दघन के लक्षणो का सक्षिप्त सग्रह है। यह सग्रह-लछिमन कान्यकुब्ज के आग्रह से कवि द्वारा सम्वत् १८८६ मे किया गया था।

४. अष्टदेश भाषा—व्रज, खडी, पजाबी, पूर्वी आदि ८ बोलियो मे राधाकृष्ण-लीला का वर्णन।

५. पिंगल।

६. समय प्रबन्ध—८५ पद्यो मे राधाकृष्ण की ऋतुचर्या।

७ कलिजुग रासो—१६ कवित्तो मे कलिकाल की बुराइयो का वर्णन। रचना काल-सम्वत् १८६५ ।

८ रसिक गोविन्द—यह अलकार ग्रन्थ है। रचना काल सम्वत् १८९० ।

९. युगल रस माधुरी—इस ग्रन्थ मे रोला छदो मे राधाकृष्ण विहार वर्णित है। लछिमन चन्द्रिका और रसिक गोविन्द को छोड शेष सभी १९०६ की खोज मे मिल चुके है।

सरोज मे उद्धृत पद तो इन्ही अलि रसिक गोविन्द का है। इनका रचना काल सम्वत् १८५०-९० है। अत. इनकी रचना हजारे से नही हो सकती। हजारे मे किसी दूसरे गोविन्द की, सम्भवत. अष्टछापी गोविन्द स्वामी की रचना रही होगी।

१७९। १६६

(३२) गोविन्द दास व्रजवासी, सम्वत् १६१५ मे उ०। रागसागरोद्भव मे इनकी कविता है। यह कवि नामा जी के शिष्य थे।

सर्वेक्षण

सरोज मे जो पद उद्धृत है, वह अष्टछापी गोविन्द स्वामी का है। गोविन्द स्वामी का जन्म

सम्वत् १५६२ मे भारतपुर राज्यान्तर्गत आँतरी गाँव मे हुआ था। वे सनाढ्य ब्राह्मण थे। वे विरक्त होकर महावन से आकर भगवद् भजन करते थे। इनके शिष्य भी थे, जो इनके पदो को गाया करते थे। सम्वत् १५९२ वि० मे गोविन्द स्वामी ने विट्ठलनाथ जी से वल्लभ सम्प्रदाय मे दीक्षा ली। और तबसे वे गोवर्धन के निकट कदमो के एक मनोरम उपवन मे रहने लगे जो आज गोविन्द दास की कदमखडी नाम से प्रसिद्ध है। यह इतने सुन्दर गायक थे कि स्वय तानसेन इनकी कला पर मुग्ध था। इनकी भी गणना अष्टछाप मे है। पुष्टि-सम्प्रदाय की मान्यता के अनुसार इनका देहावसान फल्गुन वदी ७, सम्वत् १६४२ को गोवर्द्धन ही मे हुआ।[१]

व्रजवासी कवि के अनुसार गोविंद स्वामी का जन्म सम्वत् १५७७, चैत्र शुक्ल ९ को हुआ था। आपके पिता का नाम द्वारिका नाथ और माता का कालिंदी देवी था—

जनमे नाथ द्वारिका घर में
गोविंद स्वामी मातु कालिंदी आनँदधाम सुघर में
सवत पंद्रह सौ सत्तर हुति सात, मास मधुवर में
नौमी तिथि, पछ सुकल, जोग वरन सुभ कर मे
व्रजवासी कवि प्रगट भए हैं, नाथ सखा रसवर मे[२]

गोविद स्वामी ने अपने पिता से ही हिन्दी, सस्कृत, सगीत, वाद्य, वेद आदि की शिक्षा पाई। उनका स्वय-कथन है—

लागे फेर सोंपे पढाय
साँझ प्रात खान लागे पिता श्री समुझाइ
संग बालक गाँव के तो ज्ञान दीजौ भाइ
भेद भाषा वेद विद्या गान वाद्य सुभाई
कर दियो गुन रूप आगर चतुर नागर जाइ
'दास गोविंद' दया करिकै कर दियौ गति भाइ[३]

गोविन्द स्वामी का कोई ग्रन्थ नही है। ५०० के लगभग फुटकर पद है। विद्या विभाग, कारोकोली द्वारा इनकी रचनाओ का एक सुन्दर सु-सम्पादित सस्करण अभी हाल ही मे 'गोविन्द दास पदावली' नाम से प्रकाशित हुआ है। इसके पहले इनके केवल २५२ पद उपलब्ध थे।

सरोज मे प्रमाद से गोविन्द स्वामी को नाभादास का शिष्य कहा गया है। सम्वत् १६१५ मे तो नाभादास जी बहुत बच्चे रहे होगे। गोविन्द स्वामी उस समय पूर्ण प्रौढ रूप मे उपस्थित थे। भक्तमाल मे अष्टछाप वाले गोविन्द स्वामी का उल्लेख १०२ सख्यक छप्पय मे हुआ है। भक्तमाल मे १९२ सख्यक छप्पय मे एक भक्तमाली गोविन्द का वर्णन है, जिन्हे नारायण दास ने भक्तमाल पढा दी थी। यह उसका अत्यन्त सुन्दर ढग से एव शुद्ध पाठ करते थे। सरोजकार ने इन्ही गोविन्द दास भक्तमाली को नाभा का शिष्य कहा है, पर उदाहरण अष्टछापी गोविन्द स्वामी का दे दिया है और इस प्रकार दो व्यक्तियो को एक मे मिला दिया है।

---

१ अष्टछाप परिचय, पृष्ठ २४१-४५

२,३ कल्याण, वर्ष ३३, अंक १, नवम्बर १९५९ में 'गोविंद स्वामी—एक अध्ययन, लेखक आचार्य श्री पीतावर राव जी तैलंग।

१८० । १२६

(३३) गोविन्द कवि, सम्वत् १७६१ मे उ० । यह कवीश्वर बडे नामी हो गये हैं। इनका बनाया हुआ 'कर्णाभरण' बहुत कठिन और साहित्य मे शिरोमणि है ।

सर्वेक्षण

कर्णाभरण अलकार ग्रन्थ है । यह भारत जीवन प्रेस, काशी से प्रकाशित हो चुका है । इसकी रचना सम्वत् १७६७ मे हुई थी ।

नग[७] निधि[९] ऋषि[७] विधु[१] वरस मे सावन सित तिथि सभु
कीन्ह्यो सुकवि गुविन्द जू कर्नाभनर अरंभु

प्रथम सस्करण मे १७६१ के स्थान पर १७६८ है।

१८१।१६४

(६४) गुरुदीन पाडे कवि, सम्वत् १८६१ मे उ० । इन महाराज ने वाकमनोहर पिंगल बहुत बडा ग्रन्थ रचा है, जिसमे पिंगल के सिवाय अलकार, षट्ऋतु, नखशिख इत्यादि और भी साहित्य के अग वर्णन किये है । यह ग्रन्थ वहुत अपूर्व है और कवि लोगो के पढने योग्य है ।

सर्वेक्षण

ग्रन्थ के जो अश सरोज मे उद्धृत है, उनमे से तीन दोहे ये है :—

कहत चतुरमुख चपित नाय सीस तिन तीन
वाक मनोरथ ग्रन्थ मति प्रगटति कवि गुरुदीन

बहु ग्रथन को विविध मत, अति विस्तार न पार
कहत सुकवि गुरुदीन निज मति मन रुचि अनुसार

सिसिर सुखद ऋतु मानिए माह महीना जन्म
सम्वत नभ रस वसु ससी वाक मनोहर जन्म

इन दोहो से स्पष्ट है कि ग्रन्थ का नाम वाकमनोहर है। यह साहित्य शास्त्र सवधी सभी विषयो का निरूपण करता है । अतः सरोज मे दिया हुआ इसका नाम वाकमनोहर पिंगल ठीक नही । शुक्ल जी ने इस ग्रन्थ का नाम 'वाग मनोहर' दिया है ।[१] यह भी ठीक नही । इस ग्रन्थ के कर्त्ता गुरुदीन है, जिन्होने इसकी रचना सम्वत् १८६० वि० मे की । पुराने कवियो ने सर्वत्र रस से ६ का ही अर्थ लिया है । शुक्ल जी ने भी इसका रचनाकाल सम्वत् १८६० ही माना है ।[२] पर शिवसिंह ने 'रस' से ६ और 'नभ' से एक का अर्थ लेकर कवि का समय सम्वत् १८६१ दिया है। सरोजकार ने अनेक स्थलो पर नभ को एक का सूचक माना है। इस ग्रन्थ मे वर्णवृत्तो का भी प्रयोग हुआ है ।

एक गुरुदीन पाडे का शालिहोत्र नामक ग्रन्थ खोज मे मिला है ।[३] सम्भवत. यह सरोज वाले ही गुरुदीन पाडे हैं ।

वाक मनोहर के रचयिता गुरुदीन पाँडे के निवास-स्थान का कुछ पता नही । एक गुरुदीन का पिंगल भाषा प्रस्तार नामक खडित ग्रन्थ खोज मे मिला है ।[४] यह मोहन लाल गंज, लखनऊ के निवासी कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे । इनके भाई ईश्वरी प्रसाद के वशज अभी तक उक्त ग्राम मे है । कवि

१—हिन्दी साहित्य का इतिहास पृष्ठ ३०६ । (२) वही (३) खोज रि० १६४४।८४ क ख, १६४७।६८ (४) १६४७।६६

वर्तमान ग्रन्थस्वामी के बाबा या परबाबा थे, जिनका समय १६०० के आस-पास होना चाहिये। बहुत सम्भव है पिंगल प्रस्तार वाले यह गुरुदीन, सरोज के अभीष्ट गुरुदीन पाँडे ही हो।

१८२।१४६

(३५) गुरुदीन राय वन्दीजन, मैंपैतेपुर जिले सीतापुर के, विद्यमान हैं। यह कवि राजा रणजीत सिंह जाँगरे, ईसा नगर, जिले खीरी के यहाँ रहा करते हैं। कविता में निपुण हैं।

सर्वेक्षण

गुरुदीन राय वन्दीजन के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही हो सकी है। एक अन्य गुरुदीन अवश्य मिले है जो सम्वत् १८७८ के पूर्व वर्तमान थे। यह दास मनोहर नाथ के शिष्य थे। इन्होने आल्हा छदो मे श्रीरामचरित्र राग सैरा[1] और रामाश्वमेध यज्ञ व राम चरित्र[2] ग्रन्थो की रचना की थी।

१८३।१५०

(३६) गुरुदत्त कवि प्राचीन (१) सम्वत् १७८७ मे उ०। यह कवि राय शिवसिंह सवाई जयसिंह के पुत्र के यहाँ थे।

सर्वेक्षण

सरोज मे गुरुदत्त प्राचीन के तीन कवित्त उद्धृत हैं, जिनमे से प्रथम यह है :—

बाजत नगारे बीर गजात निसान गहे
गुरुदत्त तेज की अगारो लेखियतु हैं
काँपै कोप कीन्हों राव जै सिंह को नन्द आजु
नैन अरु कान लाल रग लेखियतु है
सिंह सो समर पैठि सत्रुन की सेना पर
राव सिव सिंह वीर रूप पेखियत है
सनमुख आई सो सिरोही की फिरोही रन
मेटी जा सिरोही सो गिरो ही देखियतु है

प्रथम सस्करण मे 'राव जै सिंह के नद' पाठ है, पर सप्तम सस्करण मे 'रावसिंह जू के नद' पाठ हैं, इससे पिता के नाम मे सदेह हो सकता है। पुनः प्रथम सस्करण मे १७८७ दिया गया है, जो सप्तम सस्करण मे १८८७ हो गया है। यह सब उलट पलट बहुत भ्रामक है।

सप्तम सस्करण मे एक और भी उलट-पलट है। प्रथम सस्करण मे पहले 'गुरदत्त शुक्ल' का वर्णन है, तदनन्तर गुरदत्त प्राचीन का। सप्तम मे पहले गुरुदत्त प्राचीन को कर दिया गया है, गुरुदत्त शुक्ल को बाद मे कर दिया गया है।

खोज मे एक गुरुदत्त मिले हैं, जो ब्राह्मण हैं, जिनके पिता का नाम विष्णुदत्त और पितामह का दिनमणि है तथा जो भक्ति मजरी[3] के रचयिता हैं। एक और गुरुदत्तके तीन ग्रन्थ 'कवित्त',

---

(१) खोज रि० १९०४।२४ (२) खोज रि० १९०९।१०१, १९२९।१३२ (३) खोज रिपोर्ट १९४७।९७।

'कवित्त श्री विन्ध्याचल देवी जी के' और 'कवित्त हनुमान जी के' खोज मे मिले हैं।[1] पहले ग्रन्थ मे सिक्खो के अकाली दल और गुरुगोविन्द सिंह की प्रशस्ति है।

१८४।१५१

(३७) गुरुदत्त कवि २, शुक्ल मकरन्द पुर अन्तर्वेद वाले, सम्वत् १८६४ मे उ०। यह महाराज बडे कवि थे। देवकी नन्दन, शिवनाथ, गुरुदत्त ये तीन भाई थे। तीनो महान् कवि थे। इनका बनाया पर्व विलास ग्रन्थ बहुत सुन्दर है।

सर्वेक्षण

गुरुदत्त और देवकी नन्दन यह दोनो भाई-भाई थे। शिवनाथ इनके पिता का नाम था :—

प्रकट भये शिवनाथ कवि सुकुल वश मे अस
ताको सुत गुरुदत्त कवि कविता को अवतस

—विनोद कवि सख्या १२४७

अवधूत भूषण मे देवकी नन्दन ने भी अपने पिता का नाम शिवनाथ दिया है। देवकी नन्दन ने अवधूत भूषण की रचना सम्वत् १८५६ मे की थी।[2] अतः सरोज मे दिया हुआ गुरुदत्त का सम्वत् १८६४ यदि ठीक है तो उपस्थिति काल ही है।

गुरुदत्त जी का पर्व विलास खोज मे मिला है। यह अत्यन्त प्रौढ रचना है। प्रत्येक कवित्त सवैये मे कवि का पूरा नाम आया हुआ है। पर उपलब्ध प्रतियो से कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना नही मिलती।[3] समय को ध्यान मे रखते हुये असभव नही कि गुरुदत्त प्राचीन भी यही गुरुदत्त हो।

मातादीन के कवित्त रत्नाकर के अनुसार गुरुदत्त जी पक्षी विलास की रचना के अनन्तर मकरन्द नगर, कन्नौज, छोडकर गोरखपुर की ओर किसी राजा के यहाँ चले गए। यही इन्हे दो गाँव मिले। यही स० १८६३ मे इनका देहावसान हुआ। यह कान्यकुब्ज ब्राह्मण, शुक्ल थे।

१८५।१२८

(३८) गुमान जी मिश्र (१) साँडीवाले, सम्वत् १८०५ मे उ०। यह कवीश्वर साहित्य में महानिपुण, सस्कृत मे महा प्रवीण, काव्यशास्त्र को मिश्र सर्वसुख से पढकर प्रथम दिल्ली मे मुहम्मद शाह बादशाह के यहाँ राजा जुगल किशोर भट्ट के पास रहे। पीछे राजा अली अकबर खाँ मुहम्मदी अधिपति के पास रहे। अली अकबर बडे कवि थे। उनके यहाँ निधान, प्रेम इत्यादि बडे-बडे कवि नौकर थे। निदान गुमान जी ने श्री हर्ष कृत नैषध काव्य को नाना छदो मे प्रति श्लोक भाषा करि ग्रन्थ का नाम काव्य कलानिधि रक्खा। पच नली, जो नैषध मे एक कठिन स्थान है, उसको भी सरल कर दिया। इस ग्रन्थ के देखने से गुमान जी का पाडित्य विदित होता है। निम्नश्लोकानुवाद कितना सुन्दर है :—

तोटक

कवि तानि सुमेरुन बाँटि दियो
जतदावन सिंधु न सोकि लियो

---

(१) खोज रिपोर्ट १९४१।५० क ख ग (२) यही ग्रंथ, कवि संख्या २६४
(३) खोज रि० १९२३।१४५ ए बी।

दुहुँ ओर बँधी जुलफैं सुभती
नृप मानप औ यश को अवली

सर्वेक्षण

गुमान मिश्र, साँडी, जिला हरदोई के रहने वाले थे और सोमनाथ मिश्र के पुत्र थे।[1] इनके तीन ग्रन्थ खोज मे मिले हैं :—

१—नैपध ग्रन्थ—१९२३।१४१ वी। यह ग्रन्थ पहले श्री वैंकटेश्वर प्रेस, बम्बई से प्रकाशित हुआ था। इधर इसका एक अच्छा सस्करण काव्य कलानिधि नाम से हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ने निकाला है। यह ग्रन्थ मोहम्मदी जिला सीतापुर नरेश, अली अकबर खा के आश्रय मे बना था। ग्रन्थारम्भ मे कवि ने मुहम्मदी और वहाँ के उक्त राजा का पूरा विवरण दिया है।

खाँ साहेब के हुकुम ले मिश्र गुमान विचारि
वरनो नैवध की कथा सस्कृत की अनुहारि १७

कवि के गुरु का नाम मिश्र सर्वसुख था :—

मिश्र सर्व सुख सुकविवर श्री गुरूचरन मनाइ
वरनि कथा हौं कहत हौं ह्वै है बडी सहाइ १८

ग्रन्थ की रचना सम्वत् १८०३ मे हुई है —

सयुत प्रकृति पुराण से सम्वतसर निरदभ
सुर गुरू सह सित सप्तमी कर्‌यो ग्रथ प्रारम्भ १९

माधुरी[2] मे मिश्र सर्व सुख को ही प्रमाद से ग्रन्थकर्त्ता मान लिया गया है और ग्रन्थ का रचना काल सम्वत् १८२४ माना गया है, क्योकि साख्य शास्त्र के अनुसार प्रकृतियाँ २४ है।

२—अलकार दर्पण—१९१२।६८ ए, १९४१।४९० । अलकार का यह ग्रन्थ सम्वत् १८१८ मे रचा गया।

संवत दस वसु सै जहाँ बोई आगे देहु
माधव शुक्ला पचमी वार सुकवि गनि लेहु

यह अलकार ग्रन्थ मम्मट के अनुसार है :—

अलकार संक्षेप सो मैं वरने बुधि बोध
मम्मट मत अनुसार सो तीजो कवि जन सोधि ४२९

पुष्पिका से ज्ञात होता है कि यह ग्रन्थ विसवा, जिला सीतापुर के तालुकेदार गुलाल चन्द के आश्रय मे बना :—

"इति श्री विविधविद्यानिधान महालक्ष्मी कृपावलोकननिधान श्री लाला आत्माराम गुलाल चन्द कृते मिश्र गुमान विरचिते अलकार दर्पण अर्थालकार सम्पूर्णम् शुभम्"

गुलाल चन्द्रोदय—१९१२।६८ वी, १९२३।१४१ ए, १९२६।१५७ ए, वी। नवरस और नायिका भेद का ग्रन्थ है। इसकी रचना सम्वत् १८२० मे हुई :—

सवत नर्म लोचन[2] दुरद[8] भू[1] प्रमान सुख सार
पौष सुकुल दशमी गुरौ भयो ग्रन्थ अवतार

यह ग्रथ भी विसवाँ के उक्त तालुकेदार गुलाल चन्द के ही लिये बना। विसवा का वर्णन करते हुए कवि कहता है :—

---

(१) खोज रि० १९१२।६८ (२) माधुरी वर्ष ४, खड २, अंक १

धरम के धाम, नरनारी अभिराम, ऐसी
बीरनाथ नगरी सु विसवाँ बसति है।

ग्रन्थ की रचना भरत के अनुसार हुई है —

निरख सकल साहित्य मत, भरत मुनीस विचारि
श्री गुलाल चँद चन्द्र को, रचो उदै विस्तारि

इन तीनो पुस्तको मे कवि का नाम गुमान मिश्र ही लिखा गया है।

१८६।१३१

(३९) गुमान कवि (२) सम्वत् १७८८ मे उ० । इन महाराज ने 'कृष्णचन्द्रिका' नामक ग्रथ बनाया है।

सर्वेक्षण

यह गुमान त्रिपाठी थे। महेवा छतरपुर बुन्देल खड के निवासी थे। गोपालमणि त्रिपाठी के पुत्र थे। इनके अन्य तीन भाई दीप साहि, खुमान, और अमान थे। इनका कविता काल सम्वत् १८३८ वि० है। सरोज मे दिया सम्वत् १७८८ इनके जन्म काल के निकट है। इनके दो ग्रन्थ खोज मे मिले है।—

(१) छदाटवी—१९०६ । ४४ बी । यह पिंगल ग्रन्थ है।

(२) श्रीकृष्णचन्द्रिका—१९०५ । २३, १९०६ । ४४ ए। इस ग्रन्थ की रचना सम्वत् १८३८ मे हुई ।—

वसु[८] गुन[३] वसु[८] ससि[१] ठीक दै, यह संवत निरधार
मधु माधव सित पच्छ की, त्रयोदसी गुरुवार

खुमान ने कृष्णायन लिखा और गुमान ने कृष्णचन्द्रिका। कृष्णचन्द्रिका अनुवाद नही है। कृष्णायन तुलसी-कृत रामायण की शैली मे एव कृष्णचन्द्रिका रामचन्द्रिका के प्रतिपक्ष मे विविध छदो मे लिखित हैं। उदय शकर भट्ट ने कृष्णचन्द्रिका का सम्पादन करके १९३५ ई० के आस-पास लाहौर से प्रकाशित कराया था।

ग्रियर्सन मे (३४९) गुमान मिश्र और गुमान कवि दोनो को एक मे मिला दिया गया है। शुक्ल जी ने भी दोनो को एक कर दिया है।[२] बुन्देल-वैभव मे भी दोनो को अभिन्न मान लिया गया है।[३] श्री विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने भी इन्हे एक मान लिया है[४]। यह सब ठीक नही। विनोद मे गुमान मिश्र का वर्णन ७३६ सख्या पर और गुमान तिवारी का १०३२ सख्या पर उचित ही अलग-अलग हुआ है।

१८७।१३३

(४०) गुलाल कवि, सम्वत् १८७५ मे उ०। यह कविराज कविता मे महा निपुण थे। इनके कवित्तो और इनके बनाये शालिहोत्र ग्रन्थ से इनका पाडित्य प्रगट होता है।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९०५ । २३ (२) हिन्दी साहित्य का इतिहास पृष्ठ ३५९–६० (३) बुन्देल वैभव भाग २, पृष्ठ ४४६ (४) हिंदी साहित्य का अतीत, भाग २, पृष्ठ ८१७-२४

१८८।१३८

(४१) ग्वाल कवि वन्दीजन (१) मथुरा निवासी, सम्वत् १८७९ मे उ० । यह कवि साहित्य मे वडे चतुर हो गये हे । इनके सगृहीत दो वहुत वडे-वडे ग्रन्थ हमारे पास हे । इनके नखशिख, गोपी पचीसी, यमुना लहरी इत्यादि छोटे-छोटे ग्रन्थ और साहित्य दूपरण, साहित्य दर्पण, भक्ति भाव, दोहा शृगार, शृगार कवित्त भी वहुत सुन्दर ग्रन्थ है ।

सर्वेक्षण

ग्वाल वृन्दावन मे उत्पन्न हुये थे और मथुरा मे रहते थे ।

वासी वृन्दा विपिन को, श्री मथुरा सुखवास

—यमुना लहरी, (सरोज)

यह जाति के वन्दीजन थे । इनके पिता का नाम सेवाराम था—

विदित विप्र वन्दी विसद वरने व्यास पुरान
ता कुल सेवाराम को सुत कवि ग्वाल सुजान

—जमुना लहरी, (सरोज)

सरोज मे इनका समय सम्वत् १८७९ दिया गया है, जो यमुना लहरी का रचना काल है ।

सवत निधि[९] ऋषि[७] सिद्धि[८] ससि[१] कार्तिक मास सुजान
पूरनमासी परम प्रिय राधा हरि को ध्यान

ग्वाल कवि का जन्म सम्वत् १८५६ और मृत्यु सम्वत् १९२४ है । शुक्ल जी ने इनका रचना-काल १८७९-१९१८ माना है । खोज मे ग्वाल कवि के निम्नाकित ग्रन्थ मिले है —

(१) अलकार भ्रम मजन—१९०५।१२, १९१७।६५ ए । १९३२।७३ ए, इस ग्रन्थ मे ४२६ छद है । ग्रन्थ मे कवि का नाम आया है, रचना काल नही दिया गया हे । ग्रन्थ गद्य-पद्य मय है ।

(२) (अ) पट्ऋतु सम्वन्धी कवित्त १९३५।३३वी
(ब) ऋतु सम्वन्धी कवित्त १९३५।३३ सी
(स) ग्रीष्मादि ऋतुओ के कवित्त १९३५।३३ ए
(द) कवित्त वसत १९३८।५५ वी, यह कोई स्वतन्त्र ग्रन्थ न होकर ग्रन्थ का एक अश मात्र है ।
(य) होरी आदि का छद १९३८।५५ सी, यह भी षट्ऋतु वर्णन का एक अश प्रतीत होता है ।

(३) (अ) कवित्तो का सग्रह १९३५।३३ ई
(व) कवित्त सग्रह १९३२।७३ वी
(स) फुटकर कवित्त १९३५।३३ एफ
(द) ग्वाल कवि के कवित्त १९३५।३३ डी
(य) शान्तरसादि के कवित्त १९३५।३३ जी
ये सभी फुटकर सग्रह हैं, स्वतन्त्र ग्रन्थ नही ।

(४) कवि दर्पण या दूपण दर्पण १९०९।१०२, १९१७।६५सी, राजस्थान रि० भाग ३, पृष्ठ ११२ । ग्रन्थ की रचना सम्वत् १८९१ मे हुई ।

संवत ससि[1] निधि[9] सिद्धि[8] ससि[1] आस्विन उत्तम मास
विजै दूसनि रवि प्रगट हुअ दूषन मुकुर प्रकास ४

ग्रन्थकर्ता ने इस ग्रन्थ मे अपना परिचय दिया है—

वन्दी विप्र सु ग्वाल कवि श्री मथुरा सुखधाम
प्रगट कियो या ग्रथ को दूषण दर्पण नाम ३

ग्रन्थ गद्य-पद्य दोनो मे हैं।

(५) कवि हृदय विनोद १९२०।५८ सी, १९२३।१४६ ए, १९२६।१३५ वी। इन ग्रन्थो मे देवी, गगा, यमुना, कृष्ण, राम की स्तुति और शोभा, गजोद्धार, वलदेव, शान्त रस के कवित्त है। फिर व्रज भाषा, पूर्वी भाषा, गुजराती भाषा, पजावी भाषा के छद है, तदनन्तर पट्ऋतु वर्णन, कलियुग वर्णन प्रस्तावक, नेत्र, कुच तथा फुटकर शृङ्गारी छद और अत मे गोपी पचीसी है। इस प्रकार स्पष्ट है कि यह कोई स्वतन्त्र ग्रन्थ नहीं है, कई छोटे-छोटे ग्रन्थो का सग्रह है।

(६) गोपी पचीसी १९०१।९०, १९२०।५८ ए, १९२३।१४९ सी, १९२६।१६१ ए, १९२९। १३५ ए, द १९११।३४, इस लघु ग्रन्थ मे गोपी उद्धव सवाद अत्यन्त ललित कवित्तो मे वर्णित ह। यह 'कवि हृदय विनोद' मे भी सकलित है।

(७) नखशिख १९०१।८९, १९२९।१३५ सी, इसमे कृष्ण का नखशिख है। ग्रन्थ मे कुल ६६ छद, मुख्यतया कवित्त हैं। इसकी रचना सम्वत् १८८४ मे हुई।

वेद[4] सिद्धि[8] अहि[8] रैनिकर[1] सवत आस्विन मास
भयो दसहरा कौ प्रगट, नख सिख सरस प्रकाश

(८) प्रस्तार प्रकाश १९३८।५५ ए, यह पिंगल सम्बन्धी गद्य-पद्य-मय ग्रन्थ है।

(९) प्रस्तावक कवित्त १९३८।५५डी। इसमे शान्त रस एव नीति के कवित्त हैं। यह ग्रन्थ 'कवि हृदय विनोद' मे सकलित है।

(१०) वशी बीसा १९२०।६५वी, १९३२।७३ ई मुरली सम्बन्धी २० कवित्त।

(११) भक्त भावना १९०५।१४, १९२०।६५ वी। यह जमुना लहरी, नखशिख, गोपी पचीसी, राधाष्टक, कृष्णाष्टक, रामाष्टक, गगा देवी गणेशादि का ध्यान, पट्ऋतु वर्णन, अन्योक्ति आदि-आदि का सकलन हैं। ग्रन्थारम्भ मे कवि ने स्वय स्वीकार किया है —

तिनके चरनाम्बुजन कों करि साष्टाग प्रनाम
ग्रन्थ फुटकान को करत एक ग्रन्थ अभिराम २

यह सकलन सम्वत् १९१९ मे हुआ।

संवत निधि[9] ससि[1] निधि[9] ससी[1], मास असाढ़ बखान
सित पख द्वितिया रवि विषे, प्रगट्यो ग्रन्थ सुजान ४

(१२) यमुना लहरी १९०१।८८, १९२०।५८ वी। यह ग्रन्थ सम्वत् १८७९ मे रचा गया था। यह ग्रन्थ भक्त भावना के अन्तर्गत सकलित है।

(१३) रस रग १९०५।११, १९३२।७३ डी, राज० रि० भाग ३, पृष्ठ १३९। यह नायिका-भेद का ग्रन्थ है। ग्वाल का पट्ऋतु वर्णन इसी ग्रन्थ का एक अश है। ग्रन्थ वडा है। इसमे कुल १५३ पन्ने है। इसकी रचना सम्वत् १९०४ मे हुई।

संवत वेद[४] ख[०] निधि[९] ससी[१], माधव सित पख सग
पचम ससि को प्रगट हुअ, ग्रन्थ जु यह रस रग
—खोज रि० १६०५।११

(१४) रसिकानन्द १६००।८४, १६२६।१६१ बी, राज० रि० भाग ३, पृष्ठ १४४। इस ग्रन्थ मे नायिका-नायक भेद, हाव, भाव, रस वर्णन आदि है। यह ग्रन्थ नाभा नरेश जसवत सिंह के लिए लिखा गया, ऐसा राजस्थान रिपोर्ट मे कहा गया है। ग्रन्थारम्भ मे पद्य ४ से २५ तक नाभा नगर, राज वश, तुरग और राज सभा का वर्णन है :—

१　श्री हमीर सिँह नन्द नर श्री जयवंत मृगेस
आयु तनय धन राजयुत वृद्धि करै परमेस

२　नाभा के नरिन्द आगे कवित कह्यौ करैं तो
कवि ताकी कविता की सिफल भयो करै।

विवरण मे ग्रथ का रचनाकाल सवत् १८७६ दिया गया है —

सवत निधि[९] ऋषि[७] सिद्धि[८] ससि[१] श्याम पक्ष मधु मास
अदितवार सु द्वादसो रसिकानन्द प्रकास

१५ लछना व्यजना १६३२।७३ सी। ग्रथ की पुष्पिका से ज्ञात होता है कि ग्वाल ने कोई ग्रथ साहित्यानन्द नाम का लिखा था, यह उसी का एक प्रकरण है।

इति श्री साहित्तानदे ग्वाल कवि विरचिते रूढादि शब्द अभिधा, लक्षना, व्यजना वर्णन नाम एकादशमो स्कन्द।

१६ हम्मीर हठ १६०५।१३।१६४१।४६१ ग्रथ की रचना सम्वत् १८८३ मे हुई।

सवत गुन[३] सिवि[८] सिधि[८], ससी[१] कातिक कुहू बखान
श्री हमीर हठ प्रगट्यो अमृतसर सुभ थान २३६

१७. रस रूप—राज०रि० भाग ३, पृष्ठ १४२। इस ग्रथ मे ८ कवित्त हैं। प्रथम कवित्त मे गणेश स्तुति एव अतिम मे राम-स्तुति है। यह कोई स्वतत्र ग्रथ नही ज्ञात होता। देवी देवताओ की स्तुति सबधी किसी ग्रथ का अश प्रतीत होता है, सभवत. कवि-हृदय-विनोद और भक्त-भावना का।

शुक्ल जी ने अपने सुप्रसिद्ध इतिहास मे राधा माधव मिलन नामक एक और ग्रथ का नाम लिखा है।

ग्वाल ब्रज भाषा के अत्यत समर्थ कवियो मे से हैं। इनका नाम पद्माकर के साथ लिया जाता है। इनकी समस्त रचनाओ का सपादन श्री विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने ग्वाल-ग्रथावली नाम से कर लिया है, जो प्रकाशन की प्रतीक्षा मे है।

१८६।५३

४२ ग्वाल प्राचीन २, स० १६१५ मे उ०। इनके कवित्त हजारा मे हैं।

सर्वेक्षण

ग्वाल के कवित्त हजारा मे थे, अत सवत १८५७ के पूर्व इनका अस्तित्व असदिग्ध है। नवीन ने भी सुधासर मे मथुरावाले ग्वाल के अतिरिक्त एक अन्य ग्वाल प्राचीन का उल्लेख किया है।[१] इस कवि के सबध मे अन्य कोई सूचना सुलभ नही।

---

(१) यही ग्रथ, भूमिका पृष्ठ, १२०

१६०।१३०

४३ गुनदेव बुंदेलखंडी, सं० १८५२ में उ० । कवित्त सुंदर हैं ।

सर्वेक्षण

गुनदेव का एक ग्रंथ 'कलिजुग कथा, खोज में मिला है ।[1] यह ना० प्र० सभा के आर्यभाषा पुस्तकालय में सुरक्षित है । इसका लिपिकाल सं० १८६८ है । ग्रंथ में कवि का नाम बराबर आया है—

'कहि गुनदेव कहाँ लौ बरनौं, ये कलिधर्म कहावैं'

कवि के संबंध में अन्य कोई प्रामाणिक विवरण सुलभ नहीं ।

१६१।१६१

४४ गुणाकर त्रिपाठी कांथा, जिला उन्नाव के निवासी, विद्यमान हैं । यह संस्कृत और भाषा दोनों में काव्य करते हैं । ज्योतिष शास्त्र तो इनके घर में बहुत काल से प्रसिद्ध चला आता है ।

सर्वेक्षण

गुणाकर जी शिवसिंह के समकालीन एवं उन्हीं के गाँव के थे, अतः इनके संबंध में दिये हुये तथ्य निर्भ्रांत माने जाने चाहिये । गुणाकर ने शिवसिंह के पिता रणजीत सिंह की प्रशस्ति लिखी है—

'श्री रनजीत की देखि प्रभा सब भूमि की भूपन कांथा बिराजत'

१६२।१५२

४५. गजराज उपाध्याय काशी वासी, सं० १८७४ में उ० । इन महाराज ने 'वृत्तहार' नामक पिंगल और 'रामायण' ये दो ग्रंथ रचे हैं ।

सर्वेक्षण

खोज में इनका पिंगल ग्रंथ सुवृत्तहार मिला है[2] । रिपोर्ट के अनुसार इनकी रचना सं० १९०३ में हुई थी—

गनाधिपै १९०३ गति बाम, बरस माघ सुदि पंचमी
गुरुवासर अभिराम, पूर्वभाद्र उडु परिघ जुजि

ऊपर उद्धृत सोरठे के गनाधिपै से न जाने किस प्रकार संवत् १९०३ निकलता है । रिपोर्ट में यह गनाधिपै के आगे ऊपर की तरह छपा भी हुआ है । सरोज में दिया हुआ सं० १८७४ कवि का जन्म-काल हो सकता है ।

१६३।१४८

४६ गुलामराम कवि । यह कवित्त सुंदर बनाये हैं ।

---

(१) खोज रि० १९३२।६६ (२) खोज रि० १९०३।७१, १९४४।७३

सर्वेक्षण

सरोज मे गुलामराम के दो कवित्त उद्धृत हैं। दोनो रामभक्ति सबधी हैं। मेरा ऐसा विचार है कि यह कवि मिर्जापुर के प्रसिद्ध रामायणी पडित रामगुलाम द्विवेदी हे। छद मे नाम का प्रयोग उलटकर गुलामराम हो गया है। बहुत सभावना है कि तुलसी की प्रशस्ति करनेवाले १४ सख्यक गुलामी कवि भी यही हो।

रामगुलाम जी अपने कवित्तो मे ऐसा प्रयोग करते थे —

(८) तऊ न 'गुलाम राम नकत विलोकि कलि,
हाय हनुमान मोसो दूसरो निकाम को

(९) वदत 'गुलाम' राम दया करि दीजै राम
मेरे मन बसै सोई मूरति कृपामई

—राम भक्ति मे, रसिक सप्रदाय, पृष्ठ ४२९-४३०

रामगुलाम जी मिर्जापुर के पास असनी नामक गाँव के निवासी थे। यह प्रसिद्ध रामभक्त एव मानस तत्वज्ञ थे। अल्पायु मे ही इनके पिता का देहात हो गया था, अत यह प्रारभ मे मिर्जापुर मे पल्लेदारी करते थे। लोहदी के महावीर के यह आजन्म भक्त थे। वहाँ यह नित्य जाकर मानस-पाठ किया करते थे। बाद मे इन्होने अयोध्यावासी परमहस रामप्रसाद जी से दीक्षा लेली और उनसे वाल्मीकि रामायण के गूढ तत्वो का अध्ययन किया। इनका देहावसान स १८८८ मे माघ शुक्ल ९ के आस पास उसी समय हुआ, जब अयोध्या के प्रसिद्ध रामायणी रामचरणदास का हुआ। इनके काव्यग्रथो की हस्तलिखित प्रतियाँ काशीवासी प० सीताराम चतुर्वेदी जी के पास हैं। डा० भगवती प्रसाद सिंह ने इनके निम्नाकित ग्रथो की सूची दी है —

(१) कवित्त प्रबध (२) रामगीतावली (३) ललितनामावली (४) विनय नवपचक (५) दोहावली रामायण (६) हनुमानाष्टक (७) रामकृष्ण सतक (८) श्रीकृष्णपचरत्न पचक (९) श्री रामाष्टक (१०) राम विनय (११) रामस्तवराज (१२) बरवा।

१९४।१४९

४७ गुलामी कवि। ऐजन, कवित्त सुदर बनाये हैं।

सर्वेक्षण

सरोज मे तुलसी प्रशस्ति सबधी इनका एक कवित्त उद्धृत है। सभवत यह १९३ सख्यक गुलामराम ही हैं।

१९५।१३९

४८ गुनसिंधु कवि बुदेलखडी, स० १८८२ मे उ०। इनके शृगार रस के चोखे कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

इस कवि के सबध मे कोई सूचना सुलभ नही।

---

१ राम भक्ति में रसिक सम्प्रदाय, पृष्ठ ४२८-३०

१९६।१४०

४९ गोसाईं कवि राजपूतानेवाले, स० १८०५ मे उ० । इनके नीति सबधी सामयिक दोहा बहुत अच्छे है ।

सर्वेक्षण

इस कवि के सबध मे कोई सूचना सुलभ नही । प्रथम सस्करण मे ज० स० १८०५ है, पर सप्तम सस्करण मे १८८२ ।

१९७।१४१

(५०) गणेश कवि, बन्दीजन बनारसी, विद्यमान है । ये कवीश्वर महाराजा ईश्वरीनारायण सिंह काशीनरेश के यहाँ कविता मे महा निपुण है ।

सर्वेक्षण

गणेश बन्दीजन काशी नरेश महाराज उदित नारायण सिंह (स० १८५२-९२) एव ईश्वरी नारायण सिंह (स० १८९२-१९४६) के यहाँ थे । इनका पूरा नाम गणेश प्रसाद था । यह गुलाब कवि के पुत्र एव लाल कवि के पौत्र थे । इनके पुत्र बशीधर स्वय सुकवि थे । बशीधर ने अपने पूर्वजो का उल्लेख निम्नाकित कवित्त मे इस प्रकार किया है :—

भए कवि लाल, जस जगत बिसाल,
जाके गुन को न पारावार, कहाँ लौ सो गाइए
ताके भए सुकवि गुलाब, प्रीति सन्तन मे,
कविता रसाल सुभ सुकृत सुनाइए
सुकवि गनेस की कविता गनेस सम
करै को बखान, मम पितु सोई गाइए
तिनतै सु पढ़ि कीन्हों मति अनुसार
जानौ सियाराम जस ग्रथ औघड सु भाइए
—खोज रि० १९२०।१२

शुक्ल जी ने अपने सुप्रसिद्ध इतिहास[1] मे गणेश बन्दीजन के इन तीन ग्रथो का उल्लेख किया है ।

(१) वाल्मीकि रामायण श्लोकार्थ प्रकाश— इसमे बालकाड का पूर्ण अनुवाद है तथा शुक्ल जी के अनुसार किष्किधा और खोज के अनुसार[2] सुन्दर काड के पाच अध्यायो का भी अनुवाद है । यह अनुवाद महाराजा उदित नारायण सिंह की आज्ञा से हुआ था ।

(२) प्रद्युम्न विजय नाटक—यह यद्यपि अक, प्रवेशक, विष्कभक आदि नाट्यागो से युक्त है, पर नाटक नही है । यह एक प्रबन्ध-काव्य है । जो बात गद्य मे रगमच निर्देश के रूप मे दी जानी चाहिए, वह भी अटूट रूप से पद्य मे दी गई है, अत नाटकत्व नही आ पाया है । उदाहरणार्थ—

बोले हरि इन्द्र सों बिनै कै कर जोरि दोऊ,
आजु दिग्विजय हमारे कर आयो है ।

(३) हनुमत् पचीसी

खोज मे गणेश के निम्नाकित ग्रथ मिले है :—

---

(१) हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ २७७-७८ (२) खोज रि० १९०३।२४

१ कालिकाष्टक १९४१।४७ क

२ जनक वश वर्णन १९४१।४७ ख

३ त्रिवेणी जू के कवित्त या पचाशिका १९४१।४७ ग

४ रामचन्द्र वश वर्णन और झाकी वर्णन १९४१।४७ घ

५ वाल्मीकि रामायण श्लोकार्थ प्रकाश १९०३।२४

६ हनुमत् पचीसी—१९०९।८३। इसकी रचना स० १८९६ मे हुई।

पट[६] ग्रह[९] गज[८] भू[१] बरस में कृष्ण अष्टमी पाय
कवित पचीसी कीसपति की कीन्हौ है राय

१९८।१४४

(५१) गीध कवि। इनके फुटकर छप्पै, दोहा, कवित्त है।

सर्वेक्षण

गीध कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही।

१९९।१४५

(५२) गड्डु कवि राजपूतानेवाले, स० १७७० मे उ०। कूट, गूढ और सामयिक छप्पे इनके विख्यात है।

सर्वेक्षण

खोज रिपोर्ट १९०२ के अनुमार जोधपुर के महाराज मानसिंह (शासनकाल स० १८६०-१९००) के यहाँ वागीराम और गाडूराम नामक दो भाई कवि थे। आश्विन १८८२ मे जोधपुर आ, इन्होने जसभूपण और जसरुपक नामक दो ग्रथ मिलकर वनाए, जिनमे क्रमश. जलधरनाथ और उक्त राजा मानसिंह का यश वर्णित हे। सभवत यही गाडूराम सरोज के उक्त गडडु अथवा ग्रियर्सन (३८९) और विनोद (६३६) के गडू कवि हैं। यदि ऐसा है तो सरोज मे दिया हुआ सवत् अशुद्ध हैं।

२००।

(५३) गिरिधारी भाट, मऊ रानीपुरा, बुन्देलखडी, विद्यमान हैं।

सर्वेक्षण

खोज मे एक गिरिधर भट्ट मिले हैं। इन्हें ब्राह्मण कहा गया है। यह बाँदा जिले मे गौरिहर की एक छोटी जागीर के रहने वाले थे। इनका रचनाकाल स० १८८६-१९१२ है। सभवत यह सरोज के उक्त गिरिधारी भाट हैं। यह भाट भट्ट का ही विकृत रूप है। यह या तो ब्रह्मभट्ट रहे होगे या पद्माकर की भाति दाक्षिणात्य भट्ट ब्राह्मण। कवि जन्मता कही है, यश लाभ कही करता है, अत. इनका सम्बन्ध गौरिहर और मऊरानीपुर दोनो स्थानो से होना असम्भव नही। दोनो स्थान बुन्देलखड के अन्तर्गत है। साथ ही समय दोनो का एक ही है। खोज से प्राप्त गिरिधर भट्ट का रचनाकाल स० १९१२ तक है। यह सरोजकार के समय मे भी विद्यमान रह सकते है।

गिरिधर भट्ट के तीन ग्रथ खोज मे मिले हैं।

(१) राधा नख शिख–१९०६।३८ ए । इस ग्रथ की रचना स० १८८६ मे हुई ।

रस[6] वसु[8] अहि[8] जुत सोम[1] सित आश्विन प्रतिपद बुद्ध
कवि गिरिधर विरच्यो विमल राधा नख सिख सुद्ध ३१

(२) सुवर्ण माला–१९०६।३८ बी । यह शृ गारी ग्रथ दोहो मे रचा गया है । प्रत्येक दोहे मे सभी मात्राओ के सहित एक विशेष अक्षर प्रयुक्त हुआ है । जैसे निम्नाकित दोहे मे हकार, ह हा हि ही आदि सभी रूपो मे, प्रयुक्त हुआ है ।

हसत हास हिसक्त नहीं, हुलस हूलसी हेर
है होसन हौं कहत चल, हसह गर्वनि सवेर ३८

इस ग्रथ मे कुल ३९ दोहे है, जिनमे प्रारम्भिक ९ दोहे भूमिका स्वरूप हैं और अन्तिम दोहा उपसहार रूप है । अत' उक्त चमत्कार से पूर्ण दोहे केवल २८ हैं । ये क ख ग घ च छ ज झ ट ठ ड त थ द ध न प फ ब भ म य र ल व श स ह वर्णों वाले दोहे हैं । यह ग्रथ किसी प्रभाकर पत के लिए रचा गया था ।

नाम प्रभाकर पत, प्रभा प्रभाकर के सदस
करत दया अत्यत, दीन दुखी द्विज देखिकै ४
कवि गिरिधर सौं नेहु, बाधि बेचन बोल्यो विमल
दोहा कछु रचि देहु, अकारादि सब बरन के ६
यह आयस को पाय, मोद महा उमडो हिए
गुरु गनेस को ध्याय, सुवरन माला रचत हौं ७

उपसहार मे कवि ने कहा है—

अच्छर तो औरौ कहे, ते नहि भाषा जोग
ताहीते बरने न इत, छमियो अधि कवि लोग ३९

यहाँ पर ङ ञ ढ ण प आदि अक्षरो की ओर सकेत है ।

यह ग्रथ स० १९०८ मे रचा गया—

वसु[8] नभ[0] ग्रह[9] ससि[1] जुत नवमि, जेठ मास सित बुद्ध
कवि गिरिधर विरच्यो विमल, सुवरन माला सुद्ध ९

(३) भाव प्रकाश–१९०६। ३८ सी । यह सस्कृत के प्रसिद्ध आयुर्वेद ग्रथ भाव प्रकाश के एक अध्याय का छदात्मक अनुवाद है—

यह आसय को पाइकै आनँद भयो निकंट
कवि गिरिधर भाषा रचत हरीतक्यादि निघट

इसकी रचना स० १९१२ मे हुई—

रासि[12] निरखि ग्रह[9] छिति[1] असित भाद्र चतुरदस चंद
हरीतक्यादि निघंट को भाषा करत दुचन्द

२०१।

(५४) गुलाब सिह पजाबी, स० १८४६ मे उ० यह कुरुक्षेत्र मे क्षेत्र सन्यास ले रामायण चन्द्रप्रबोध नाटक, मोक्षपथ, भॉवर साँवर इत्यादि नाना वेदान्त के ग्रन्थ भाषा किए है ।

सर्वेक्षण

गुलाब सिंह पंजाबी अमृतसर के रहने वाले सिक्ख थे। इनके निम्नांकित दो ग्रन्थ खोज मे मिले हैं—

(१) मोक्षपथ प्रकास—१६०३।७८, १६२०।५४ यह सरोज वर्णित मोक्षपथ ग्रंथ है। ग्रंथ की पुष्पिका से ज्ञात होता है कि यह मानसिंह के शिष्य और गौरी राय के पुत्र थे।

इति श्रीमन्मानसिंह चरण शिक्षित गुलाब सिंघेन गौरीरायात्मजेन विरचितं मोक्ष पथ प्रकासे विदेह मुक्ति निर्णयो नाम पंचमो निवास ॥ सं० १८३७ ॥ ग्रन्थ की रचना सं० १८३५ मे वसन्त पंचमी को हुई —

सत अष्टदसै सुभ संवत मै पुनि त्रिस रु पाँच भये अधिकाई
सुभ माघ सुदी सुभ भौम समै सुभ वासर सोम महा सुखदाई
तिथि पंचम नाम वसन्त कहैं सब लोकन को सुजने हरखाई
दिन ताहि सु पूरन ग्रंथ भयो हरि के पद पंकज भेंट चढाई

इन्होने गुरु नानक तथा गुरु गोविन्द सिंह आदि की भी स्तुति की है।

ता गुरु नानक के पद पंकज सीस नवाइ के वन्द हमारी

(२) भाव रसामृत—१६४७।७१। इस ग्रन्थ मे पहले कवि ने अपने गुरू मानसिंह की प्रार्थना की है।

विद्या सौंत सुज्ञान सुखदाइक फल सुभ चार
मानसिंह गुरु के सदा बन्दौ पाइ उदार

ग्रन्थ का नाम इस दोहे मे है—

कठ अँचै जिहि दुख मिटै, पावै सुख संसार
भावरसामृत ग्रंथ यह, भाखे हरि उर धारि

इस ग्रन्थ से भी कवि के पिता का नाम ज्ञात होता है। यह सेपव नगर के रहने वाले थे।

गोरीराइ आ मात-पित, सेपव नगर उदार
गुलाबसिंह कुल दीप सुत कर्यौ ग्रंथ निरधार

ग्रन्थ की रचना सं० १८३४ मे हुई—

सत अष्टदसा सुभ समत में पुनि त्रिंसु रू चारि भए अधिकाई
घन पूरि रहे दिसि चारि घने पुनि मद समीर सुवंद सुहाई
ससि पूरना मा रवि वासर थो सुभ हाउ सभापति को हित आई
दिन ताहि समापति ग्रंथ भयो हरि के पद पंकज भेंट चढ़ाई १३०

इस ग्रन्थ मे कवित्त सवैयो का प्रयोग हुआ है। इस ग्रन्थ की भी पुष्पिका से इनके गुरु और पिता का नाम ज्ञात होता है। कवि के ज्ञात ग्रन्थो का रचनाकाल सं० १८३४ और १८३५ है, अत सरोज मे दिया हुआ सं० १८४६ कवि का उपस्थितिकाल है।

२०२।

(५५) गोवर्द्धन कवि, सं० १६८८ उ०।

सर्वेक्षण

विनोद मे (३६५) एक गोवर्द्धन चारण है, जिन्होन १६०२ वाली रिपोर्ट के अनुसार

राजपूतानी भाषा मे स० १७०७ मे कुडलिया राजा पद्म सिंह जी री' नामक ग्रन्थ लिखा है। सभवत यही सरोज वाले गोवर्द्धन है। दोनो के समय मे केवल १६ वर्ष का अन्तर है तथा सरोजकार ने राजस्थानी काव्य सग्रहो का भी उपयोग सरोज के प्रणयन मे किया था।

खोज मे दो गोवर्द्धन और मिले है। एक को रचनाएँ स्याल टिप्पा नामक प्रचीन सग्रह मे मिलती है।[१] दूसरे गोवर्द्धन स्वामी है जो गोविन्द के गुरु थे और स० १८५८ के पूर्व वर्तमान थे।[२]

२०३।

५६ गोघू कवि स० १७५५ स० उ०।

सर्वेक्षण

इस कवि के सबध मे कोई सूचना सुलभ नही। ग्रियर्सन (३१०) और विनोद मे (५६७) इस कवि का उल्लेख प्रमाद से गोध नाम से हुआ है।

२०४।

५७ गणेश जी मिश्र, स० १६१५ मे उ०।

सर्वेक्षण

मल्लावा जिला हरदोई मे एक गनेश नामक कवि हुए हैं। इन्होने रसवल्ली नामक नायिका भेद का ग्रन्थ २२६ बरवै छदो मे लिखा है। इन्होने मालवा, वहाँ के राजा राजमनि और वहाँ के निवासियो का वर्णन किया है—

सहर मलामै दीसी पूरन जोति
सुरसरि चारि कोस दुति दूनी होति
सुकृत राजमनि राजै राजै राज
पडित कवि कुल मडित गुन गन साज
षट सहस्र परिपूरन पटकुल वृद
करम धरम जस बाढ़ सरद ज्यों चद

मलावां मे पटकुल कनौजियो का आधिक्य था। सभवत यह गणेश कवि कनौजिया ब्राह्मण थे और कनौजियो मे भी मिश्र। यह ग्रन्थ फागुन सुदी गुरुवार स० १८१८ को रचा गया था।

वसु[८] भू[१] करि पुनि वसु[८] भू[१] फागुन मास
सवत सुकुल द्वैजगुरु ग्रथ उजास

कवि ने अपने को मल्लावा का निवासी कहा है—

नगर मलामै बसत गनेस अनंद
किय सु ग्रन्थ सुनि छमियों कवि कुल चद

कवि ने अपने को रसवल्ली का कर्ता भी कहा है—

बरन विचारि प्रवीन सकज रस धाम
रच्यो गनेस ग्रन्थ रसवल्ली नाम २२६

यह ग्रन्थ खोज मे मिल चुका है।[३] इसका विशेष विवरण माधुरी मे प्रकाशित हो चुका है।[४] यदि सरोज के गणेश मिश्र मलावावाले यही गणेश है, तो सरोज का सवत अशुद्ध है।

---

(१) खोज रि० १९०२।२७ (२) खोज रि० १९१३।६४
(३) खोज रि० १९०१।८२ (४) माधुरी, वर्ष ५, खंड २, अंक ४, मई १९२७ पृष्ठ ५५५

खोज मे एक गणेशदत्त मिश्र मिले है। यह बलरामपुर गोडा निवासी थे। इनके पिता का नाम भवानी शर्मा था। यह प० द्वारिका प्रसाद जमीदार लखाही, परगना बलरामपुर के आश्रित थे। यह स० १९५८ के पूव वर्तमान थे। इनकी रचना वैष्णव विलास है।[1] यह सरोजवाले गणेश मिश्र से भिन्न प्रतीत होते है।

विनोद मे (१६३) गणेश मिश्र के नाम पर विक्रम विलास नामक ग्रन्थ चढा हुआ है। विक्रम विलास वस्तुत गणपति उपनाम गणेश की रचना है। रिपोर्ट मे प्रमाद से कवि परिचय वाले प्रकरण मे कवि नाम का दूसरा 'जी' छूट गया है और गणेश, गनेश या गणेश हो गया है।[2]

२०५।

५८ गुलाल सिह, स० १७८० मे उ०।

सर्वेक्षण

गुलाल सिह बख्शी पन्ना बुन्देलखड के निवासी थे। इन्होने स० १७५२ मे दफ्तरनामा नामक ग्रन्थ लिखा —

विधि[2] सर[5] सिधु[7] ससाक[1] गत सवत विक्रम राज
सिव बसत का अन्त यह जन करता सुभ काज
असित पच्छ आषाढ कौ सजुत चौथ बखान
सिद्ध जोग विनवत परौ करिहै सिद्ध निदान

इस ग्रन्थ मे बहीखाता की मुसलमानी प्रणाली वर्णित है।[3]

दफ्तरनामा के रचनाकाल को देखते हुए सरोज मे दिया हुआ सम्वत् १७८० कवि का उपस्थितिकाल सिद्ध होता है।

२०६।

(५६) गर्जसिह। इन्होने गर्जसिह विलास बनाया है।

सर्वेक्षण

विनोद मे (८३०) गर्जसिह का रचनाकाल सम्वत् १८०८-१८४४ दिया गया है और इन्हे गर्जसिह विलास तथा गर्जसिह के कवित्त का रचयिता कहा गया है।

२०७।

(६०) ज्ञानचन्द यती राजपूताने वाले, सम्वत् १८७० मे उ०। यह कवि टाडसाहब एजट राजपूताने के गुरु है, और इन्ही की सहायता से राजपूताने के बडे-बडे ग्रन्थ वशावली और प्रबन्ध साहब ने उल्था किए।

सर्वेक्षण

टाड ने राजस्थान की रचना सम्वत् १८८० मे की, अत. सरोज दत्त सम्वत् १८७० ज्ञानचन्द यती का उपस्थितिकाल है।

---

(१) खोज रि० १९२७।६• (२) खोज रि० १९१७।५६ (३) खोज रि० १९०५।२२

२०८।

(६१) गोविन्दराय वदीजन राजपूताने वाले । इन्होने हाडा लोगो की वशावली और सब राजो के जीवन चरित्र का एक ग्रन्थ हारावती इतिहास लिखा है, जिसमे राव रतन की प्रशसा मे यह दोहा कहा है—

दोहा

सरवर फूटा जल वहा, अब क्या करो जतन्न
जाता घर जहँगीर का, राखा राव रतन्न

सर्वेक्षण

विनोद मे (१०८) हाडावती के रचयिता गोविन्दराय का रचनाकाल सम्वत् १६०९ दिया गया है ।

२०९।

(६२) गोपालसिंह व्रजवासी । इन्होने तुलसी शब्दार्थ प्रकाश नामक ग्रन्थ बनाया है जिसमे आठ कवियो का अष्टछाप के नाम से वर्णन कर उनके पद लिखे है, अर्थात् सूरदास १, कृष्णदास २, परमानन्द ३, कुम्भनदास ४, चतुर्भुज ५, छीत स्वामी ६, नन्ददास ७, गोविन्ददास ८ ।

सर्वेक्षण

खोज मे तुलसी शब्दार्थ प्रकाश नामक एक ग्रन्थ मिला है ।[१] इसके रचयिता जयगोपाल सिंह हैं । यह व्रजवासी नही थे । यह बनारस के दारानगर मुहल्ले के रहने वाले थे । मार्गशीर्ष १८७४ में यह दर्शनार्थ विंध्याचल गए । वहाँ सुप्रसिद्ध रामायणी पं० रामगुलाम द्विवेदी को, मिर्जापुर मे देखा । तब इनके मन मे तुलसी के ग्रथो से सग्रह करके एक ग्रथ रचने की इच्छा हुई । इसी लिये ग्रथ का नाम तुलसी शब्दार्थ प्रकाश रक्खा । इस ग्रन्थ मे कुल नव प्रकरण है ।—

१ अष्टद वस्तु विचार, जैसे १ ब्रह्म, २ नेत्र, ३ लोक, ४ वेद आदि । २ स्फोटक भेद । ३ आह्निक भेद । ४ सामुद्रिक । ५ वैदक विचार । ६ काल ज्ञान । ७ गणित विधि विचार । ८ ज्योतिष विचार । ९ पिंगल विचार ।

यह ग्रन्थ सम्वत् १८७४ मे रचा गया । ग्रन्थ एव रचयिता के नाम का साम्य अद्भुत है । निवास और विषय मे घोर अन्तर है । तुलसी शब्दार्थ प्रकाश का अष्टछाप से कोई बुद्धि ग्राह्य सम्बन्ध नही प्रतीत होता । सम्भवत. सरोजकार ने ग्रन्थ नाम देने मे भूल की है ।

२१०।

(६३) गदाधर कवि

सर्वेक्षण

कवि परिचय के अन्तर्गत पृष्ठ ५६ पर इनकी कविता के उदाहरण होने का निर्देश किया गया है, पर उक्त पृष्ठ पर पद्माकर के पौत्र गदाधर भट्ट की रचना है । अत. यह कवि दोहरा उठा है । गदाधर भट्ट का विवरण देखिये कवि सख्या १५५। यह कवि प्रथम एव द्वितीय सस्करण मे नही । यह तृतीय से बढा है ।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९०२।१०३

घ

२११।१६६

(१) घनश्याम शुक्ल असनी वाले, सम्वत् १६३५ मे उ० । यह कवि कविता मे महा निपुण और बान्धव नरेश के यहाँ थे । ग्रन्थ तो पूरा हमने कोई नही पाया, इनके कवित्त २०० तक हमारे पास हैं । कालिंदास ने भी इनके कवित्त हजारा मे लिखे है ।

सर्वेक्षण

इस कवि का ठीक ठीक विवरण उपलब्ध नही है । विनोद मे दो घनश्याम शुक्ल है । पहले घनश्याम शुक्ल २२६ सख्या पर हैं । इनका जन्म सम्वत् १६३५ और रचना काल सम्वत् १६६० दिया गया है । इन्हे साखी और मानस पूरपक्षावली नामक दो ग्रन्थो का रचयिता कहा गया है । पर खोज मे मानस पूर पक्षावली के रचयिता का नाम घनश्याम त्रिवेदी दिया गया है ।[१] विनोद के दूसरे घनश्याम शुक्ल ४३८ सख्या पर हैं । यह सम्वत् १७३७ के लगभग उत्पन्न हुये और सम्वत् १८३५ तक वर्तमान रहे । यह रीवा नरेश के यहाँ थे । इनके छन्द मे कम्पनी का भी नाम आया है । इन्होने एक छन्द मे औरङ्गजेब के सेनापति दलेल खाँ का वर्णन किया है । १६३५ मे जन्म लेने वाले घनश्याम दूसरे होंगे क्योकि उस समय तक तो दलेल खाँ का जन्म भी न हुआ रहा होगा ।

२१२।१७०

(२) घन आनन्द कवि, सम्वत् १६१५ मे उ० । यह कवि कवि, लोगो मे महा उत्तम हो गये है ।

सर्वेक्षण

देखिये आनन्द घन कवि सख्या २२ । यहाँ दिया हुआ सम्वत् पूर्णरूपेण अशुद्ध है ।

२१३।१७१

(३) घासीराम कवि, सम्वत् १६८० मे उ० । कालिदास जी ने हजारा मे इनके कवित्त लिखे है ।

सर्वेक्षण

एक घासी राम का पक्षी विलास नामक ग्रन्थ खोज मे कई बार मिला है ।[२] बिना किसी आधार के पक्षी विलास वाले घासीराम का तादात्म्य सरोज वाले घासी राम से कर दिया गया है ।

एक घासीराम सम्वत् १७५० से पूर्व अवश्य हुये । क्योकि इनकी रचना हजारे मे थी पर वे घासी राम पक्षी विलास वाले ही थे, इसका कोई प्रमाण नही । पक्षी विलास वाले घासीराम ब्राह्मण और मलावा जिला हरदोई के रहने वाले थे । पक्षी विलास शृगारी ग्रन्थ है । इसमे ७२ कवित्त सवैये हैं । प्राय प्रत्येक छन्द मे किसी न किसी पक्षी का नाम अवश्य आया है । प्राप्त ग्रन्थ का अन्तिम छन्द ठाकुर कवि का है । पक्षी विलास वाले घासीराम के अतिरिक्त कुछ और भी घासीराम है—

(१) घासीराम—यह भरतपुर के रहने वाले थे । इन्होने काव्य प्रकाश तथा रस गगाधर की टीका लिखी । यह भाषा गीत गोविन्द के रचयिता हैं । इनका देहान्त सम्वत् १८१५ मे हुआ ।[३]

(२) घासीराम—समथर बुन्देलखड के रहने वाले उपाध्याय ब्राह्मण थे । इन्होने ऋषि पचमी की कथा लिखी है ।[४]

---

(१) खोज रि० १६०१।६० (२) खोज रि० १६०६।६१, १६२३।१२२, १६२६।१३६
(३) विनोद कवि सख्या ८४२।१ (४) खोज रिपोर्ट १६०६।३७

नवीन ने सुधासर के अत मे नामरासी कवियो की सूची मे दो घासीराम माने हैं। एक घासी राम प्रचीन, दूसरे घासीराम कोटा वारे राव। यह घासीराम प्राचीन सम्भवत सरोज के घासीराम हैं, जिनकी रचना हजारे मे थी।

२१४।

(४) घनराय कवि, सम्वत् १६६२ में उ०।

सर्वेक्षण

खोज मे एक घनराय मिले हैं, जिनका रचना काल सम्वत् १७५७ दिया गया है। यह कायस्थ थे और ओरछा नरेश राजा उदोत सिंह के दरबार मे थे। उदोत सिंह का शासन काल सम्वत् १७४६ से १७६२ तक है। इन घनराय का गणित का एक ग्रन्थ मिला है, जो सस्कृत की प्रसिद्ध कृति लीलावती का अनुवाद है।[१] इन घनराय के अतिरिक्त किसी अन्य घनराय का पता नही। यदि सरोज के घनराय यही हैं, तो सरोज मे दिया हुआ सम्वत् १६६२ अशुद्ध है। यह कवि का जन्म काल हो सकता है। बुन्देल वैभव के अनुसार कवि का जन्म सम्वत् १७२९ है।[२] सरोजकार को इनकी जानकारी हजारा से हुई।

२१५।

(५) घाघ कान्यकुब्ज अन्तरवेद वाले, सम्वत् १७५३ मे उ०। इनके दोहा, छप्पै, लोकोक्ति तथा नीति सम्वन्धी सामयिक ग्रामीण वोल चाल मे विख्यात हैं।

दोहा

मुये चाम ते चाम कटावैं, भुइ मा सक्रे सोवैं
घाघ कहैं ये तीनो भकुवा, उढरि जाइ फिरि रोवैं १

सर्वेक्षण

इस लोक-प्रसिद्ध कवि के सम्बन्ध मे कोई प्रामाणिक सूचना उपलब्ध नही।

२१६।

(६) घासी भट्ट

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्वन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही।

च

२१७।१७२

(१) चन्द कवि प्राचीन वन्दीजन (१) सभल निवासी, सम्वत् ११९६ मे उ०। यह चन्द कवि महाराजा वीसल देव चौहान रनथम्भोर वाले के प्राचीन कवीश्वर की औलाद मे थे। सम्वत् ११२० मे राजा पृथ्वीराज चौहान के पास आकर मत्री और कवीश्वर दोनो पद को प्राप्त हुये। पृथ्वी राज रायसा नामक एक ग्रन्थ मे एक लक्ष श्लोक भाषा के रचे। इसमे ६९ खण्ड हैं और पुरानी वोली हिन्दुओ की है। इस ग्रन्थ मे चन्द कवि ने सम्वत् १११० से सम्वत् ११४९ तक

---

(१) खोज रिपोर्ट १९०६।३५ (२) बुन्देल वैभव भाग २, पृष्ठ ५००

पृथ्वीराज का जीवन चरित्र महा कविता के साथ वहुत छन्दो मे वर्णन किया है। छप्पै छन्द तो मानो इसी कवि के हिस्से मे था, जैसे चौपाई छन्द श्री गोसाईं तुलसीदास के हिस्से मे पडा था। इस ग्रन्थ मे क्षत्रियो की वशावली और अनेक युद्ध, आबू पहाड का माहात्म्य, दिल्ली इत्यादि राजधानियो की शोभा और क्षत्रियो के स्वभाव और चाल चलन—व्यवहार का वहुत विस्तार पूर्वक वर्णन किये हैं। यह कवि केवल कवीश्वर नही थे वरन् नीति शास्त्र और चारण के काम-काज मे निपुण, महा शूरवीर भी थे। सम्वत् ११,४६ मे पृथ्वीराज के साथ यह भी मारे गये। इन्ही की औलाद मे शारङ्गधर कवि थे जिन्होंने हमीर रासा और हमीर काव्य भाषा मे वनाया है।

सर्वेक्षण

चन्द वरदाई के सम्वन्ध मे दिये हुये सरोज के सभी सम्वत् अशुद्ध है। चन्द का रचना काल सम्वत् १२२५ से १२४६ तक माना गया है। सरोजकार द्वारा दिये गये सम्वत् इतिहास प्रसिद्ध सम्वत् से १०० वर्ष कम है। ये सभी सम्वत् रासो से ही दिये गये हैं। पृथ्वीराज और चन्द की मृत्यु युद्ध मे सम्वत् १२४६ मे हुई, न कि सम्वत् ११४६ मे। चन्द को सभल निवासी कहा गया है। पर इसे आज तक किसी विद्वान् ने स्वीकार नही किया। कहा तो यह जाता है कि चन्द लाहौर मे उत्पन्न हुआ था। सभल से सरोजकार का अभिप्राय सभवत साभर से है न कि वदायूँ जिले के उक्त नाम के कस्वे से। पृथ्वीराज चौहान साभर, शाकम्भरी नरेश कहे जाते है। और इस स्थान से चन्द का लगाव रहा है। रासो के सम्वन्ध मे सरोज मे जो विवरण दिया गया है, वह ठीक है। शारङ्गधर ने हम्मीर रासो और हम्मीर काव्य की रचना की थी, यह ठीक है। यह शारङ्गधर प्रसिद्ध चन्द्र का वशधर था, ऐसा उल्लेख अन्य कही नही मिलता।

चन्द कवि की कविता के जो उद्धरण पद्मावती खण्ड, आल्ह खड और दिल्ली खंड से दिये गये है, उनमे प्राचीनता की पर्याप्त झलक है। परन्तु आदि मे जो दो कवित्त और चार दोहे दिये गये हैं, उनकी भाषा एकदम रीतिकालीन है। ये ६ छन्द दिग्विजय भूषण से लिये गये हैं और किसी दूसरे चन्द की रचना है। प्रथम एव द्वितीय सस्करण मे कवि का समय ११९६ तृतीय मे ११९८ एव सप्तम मे १०९८ दिया गया है।

२१८।१७५

(२) चन्द कवि (२) सम्वत् १७४९ मे उ०। यह कवि सुलतान पठान नव्वाब राज गढ भाई वन्धु वावू भूपाल के यहाँ थे। इन्होने विहारी सतसई का तिलक कुण्डलिया छन्द मे सुलतान पठान के नाम से वनाया है।

सर्वेक्षण

सरोज मे इस कवि के दो परिचयात्मक सोरठे उद्धृत है।

सुलतान मुहम्मद साह, नाम नवाव वखानिये
कविताई अतिचाह, करत रहत गढ़ नगर में
देश मालवा माहि, कुण्डलिया करि सतसई
हरगुन अधिक सराहि, चद कवीसुर तेहि सभा

चद द्वारा प्रस्तुत यह टीका मिलती नही। ५ दोहो पर इनकी लगाई कुण्डलियाँ विहारी विहार मे उद्धृत हैं, जिन्हे रत्नाकर जी ने भी विहारी सतसई सम्वन्धी साहित्य मे उद्धृत कर लिया है। इन चन्द के आश्रयदाता पठान सुलतान का विवरण इसी ग्रन्थ मे आगे संख्या ८८७ पर

दिया गया है। इसके अनुसार इनका नाम सुलतान मुहम्मद खाँ था और ये सम्वत् १७६१ मे राजगढ भूपाल के नवाव थे। यही समय इनके आश्रित चन्द कवि का भी होना चाहिये। सरोज मे दिया हुआ सम्वत् १७४६ कवि का उपस्थिति-काल ही है।

२१६।१७४

३ चन्द कवि ३। यह सामान्य कवि थे।

सर्वेक्षण

केवल नाम के सहारे इस कवि की कोई पकड सम्भव नही। कायस्थो की निन्दा की एक कवित्त इनकी कविता के उदाहरण मे सरोज मे उद्धृत है, जिससे इनका अत्यन्त सामान्य कवि होना स्पष्ट है।

२२०।१७३

४ चन्द कवि ४। इन्होने शृंगार रस मे वहुत सुन्दर कविता की है। हजारा में इनके कवित हैं।

सर्वेक्षण

इन शृंगारी चन्द के दो छद सरोज मे उद्धृत हैं जिनमे दूसरा प्रसिद्ध कवि देव का है।[1] इनकी कविता हजारे मे थी, अत. इनका अस्तित्व सम्वत् १८७५ के पूर्व स्वय सिद्ध है। इस समय के पूर्व के दो चन्दो का उल्लेख खोज रिपोर्ट मे हुआ है।

१. चन्द—सम्वत् १५६३ मे इन्होने हितोपदेश का भाषानुवाद दोहा-चौपाइयो मे किया है—

संवत पन्द्रह सय जव भयऊ
तिरसठि वरस अधिक चलि गयऊ
फागुन मास पाख उजियारा
सुभ नछत्र सातइ ससिवारा
तेहि दिन कवि आरभेऊ, चाद चतुर मन लाइ
हितोपदेस सुनत सुख-दुख वयराग्य नसाइ

२ चन्द—सवत् १७१५ मे इन्होने 'नाग लीला' नामक एक पुस्तक रची। इसका नाम विवरण 'नाग नौर की लीला[2]' और 'नाग लीला'[3] नाम दिया गया है। इस ग्रन्थ मे नाग नथइया की कथा है। कवि परिचय मे कवि को न जाने किस आधार पर रिपोर्ट मे वुन्देलखडी कहा गया है। रचना-कालसूचक छद यह है—

---

(१) देव सुधा, छंद ५६ (२) खोज रि० १९०६।१८ (३) खोज रि० १९२६।७६

संवत सत्रह सै दस पच छट्ठमसा मैं कही
स्रावन सुदि तिथि पचमी चद कवि यो कही
माडो गिरथु दिन मूल महा बुधवार है
परिह हली नाग ट्वन को छंद करो विस्तार है

सरोज मे शृगारी चन्द का जो सवैया उद्‌धृत है, वह अत्यन्त सुन्दर है। यह प्रौढ परिमार्जित व्रजभाषा मे है। उक्त छद इन दोनो मे से किसी भी चन्द की रचना नही प्रतीत होता।

चन्द के नाम से कई कवियो की रचनायें खोज रिपोर्टों मे उल्लिखित हैं। यह निश्चय करना अत्यन्त कठिन है कि २१९ और २२० संख्यक चन्द की रचनायें इनमे से कौन है।

२२१।१८०

४. चिन्तामणि त्रिपाठी टिकमापुर, जिले कानपुर वाले, स० १७२९ मे उ०। यह महाराज भाषा साहित्य के आचार्यों मे गिने जाते हैं। अतरवेद मे प्रसिद्ध है कि इनके पिता दुर्गा-पाठ करने नित्य देवी जी के स्थान मे जाते थे। वह देवी जी वनकी भुइया कहाती हैं, जो टिकमापुर से एक मील के अन्तर पर हैं। एक दिन महाराजराजेश्वरी भगवती प्रसन्न होकर चारि मुन्ड दिखाकर बोली, यही चारो तेरे पुत्र होगें। निदान ऐसा ही हुआ कि चिन्तामणि, भूषण, मतिराम जटाशकर या नीलकठ ये ४ पुत्र उत्पन्न हुये। इनमे केवल नीलकठ महाराज एक सिद्ध के आशीर्वाद से कवि हुये, शेष तीनो भाई सस्कृत काव्य पढकर ऐसे पडित हुये कि उनका नाम प्रलय तक बाकी रहेगा। इन्ही के वश मे शीतल और विहारी लाल कवि, जिनका उपनाम लाल है, सम्वत् १९०१ तक विद्यमान थे। निदान चिन्तामणि महाराज बहुत दिन तक नागपुर मे सूर्य वशी भोसला मकरन्द शाह के यहाँ रहे। उन्ही के नाम से इन्होंने छद विचार नामक पिंगल का बहुत ग्रन्थ बनाया। काव्य विवेक, कवि कुल कल्पतरु, काव्य प्रकाश, रामायण, ये ५ ग्रन्थ इनके बनाये हुये हमारे पुस्तकालय मे मौजूद हैं। इनकी रामायण कवित्त और अन्य नमूना छदो मे बहुत अपूर्व है। बाबू रुद्रसाहि सोलकी, शाहजहाँ बादशाह और जैनदी अहमद ने इनको बहुत दान दिया है इन्होने अपने ग्रन्थों मे कहीं-कहीं अपना नाम मणिलाल कहा है।

सर्वेक्षण

चिन्तामणि त्रिपाठी का उपनाम मणिलाल था। इनके पिता का नाम रत्नाकर त्रिपाठी था। इनका जन्मकाल सम्वत् १६६६ के लगभग और कविता काल सम्वत् १७०० के लगभग ठहरता है। यह रीतिकाल के प्रमुख आचार्यों मे गिने जाते हैं। इनके निम्नलिखित ग्रन्थ खोज मे मिल चुके हैं :—

१ कविकुल कल्पतरु—१९००। १२७, १९२३। ८० बी सी, इस ग्रन्थ मे मुख्यतया काव्य के सभी अगो का विवेचन हुआ है। इसकी रचना सम्वत् १७०७ मे हुई, ऐसा उल्लेख शुक्ल जी ने अपने इतिहास मे किया है, पर खोज के अनुसार इसकी रचना सम्वत् १७५१ चैत वदी ४, बुधवार को हुई—

सवत सत्रह सै जहाँ ऊपर इक्कावान वदि चैत
बुध दिन कवि कुल कल्पतरु चौथि रचित जग जैत

—खोज रि० १९२३। ८० बी

रचनाकाल वाले इस दोहे मे कही पाठ की अशुद्धि है। भगीरथ मिश्र ने दतिया राज्य पुस्तकालय मे ग्रन्थ के उपलब्ध हस्तलेख के आधार पर इसका रचनाकाल सम्वत् १७०७ ही दिया है। इस ग्रन्थ की रचना के पहले ही कवि अपना पिंगल रच चुका था, इसका उल्लेख उसने इस ग्रन्थ मे किया है।

मेरे पिंगल ग्रथ ते समुझै छद विचार
रीति सुभाषा कवित की वरनत बुधि अनुसार

इस ग्रन्थ मे रुद्रसाहि सोलङ्की की प्रशस्ति भी कवि ने की है। सरोज मे ऐसा एक छन्द उद्धृत है :—

साहेब सुलंकी सरताज बाबू रुद्रसाह
तोसो रन रचत बचत खल कत है

यह रुद्रसाहि सोलङ्की वही है, जिनके पुत्र हृदय राम ने भूषण को कवि भूषण की उपाधि दी थी और जिन्हे भूषण ने चित्रकूट अधिपति कहा है।

२—कवित्त विचार—१९२०।३१। यह भी सभी साहित्यागो से सम्बन्ध रखने वाला ग्रन्थ है। ग्रन्थ खडित मिला है, अत. रचनाकाल आदि ज्ञात नही हुये।

३—पिङ्गल चिन्तामणि या चिन्तामणि पिङ्गल या पिङ्गल या छन्द विचार या पिङ्गल-छन्द विचार—१९००।४०, १९०३।३६, १९०४।११९, १९०६।१५१, १९०९।५०, १९२३।८० ए, डी, ई, प १९२२।२१, द १९३१।२२। कहा जाता है कि यह ग्रन्थ नागपुर के भोसला राजा मकरन्द शाह के लिये बनाया गया था—

सूरजवंसी भोंसला लसत साह मकरन्द
महाराज दिगपाल जिमिभाल समुद सुभचद

यह दोहा सरोज मे भी उद्धृत है—

चिन्तामनि कवि को हुकुम कियो साहि मकरन्द
करो लच्छि लच्छन सहित भाषा पिंगल छंद

यह दोहा भगीरथ मिश्र ने 'हिन्दी काव्यशास्त्र का इतिहास' मे उद्धृत किया है। स्पष्ट है कि चिन्तामणि जी किसी सूर्यवशी भोसला राजा मकरन्द शाह के यहाँ अवश्य थे, पर यह मकरन्द शाह कहाँ के थे, कहा नही जा सकता। नागपुर मे उस समय इस नाम का कोई राजा नही था और न तो मराठो का अधिकार ही उस समय तक नागपुर पर हो पाया था। सम्भवत यह वही माल मकरन्द हैं, जो इतिहास मे मालो जी के नाम से प्रसिद्ध है और जिनका उल्लेख भूषण ने शिव भूषण मे इस प्रकार किया है :—

भूमि पाल तिनमे भयो बड़ौ माल मकरन्द ६
सदा दान करवान मे जाके आनन अभ
साहि निजाम सखा भयो दुग्ग देवगिरि खभ ७

इन्ही मालो जी के पुत्र साहि जी थे, जिनके पुत्र शिवाजी महाराज हुए। पजाब रिपोर्ट मे इस ग्रन्थ का रचनाकाल सम्वत् १७९७ दिया गया है—

कहत अक मन द्वीप द्वै जानु बराबर लेव

अक=९, मन=१, द्वीप=७। पूरा सम्वत् स्पष्ट नही होता। चिन्तामणि के समय को ध्यान मे रखवे हुये यह १७१९ हो सकता है, १७९७ कदापि नही।

श्री भगीरथ मिश्र ने चिन्तामणि रचित 'शृङ्गार मजरी' नामक नायिका-भेद का ग्रन्थ सम्पादित करके प्रकाशित कराया है। इसमे गद्य मे भी व्याख्या है। यह चिन्तामणि की मौलिक कृति नही है। यह तेलगू भाषा मे लिखित किसी ग्रन्थ का अनुवाद है। अधिकाश उदाहरण चिन्तामणि की मौलिक रचनाये हैं। मूल ग्रन्थ साहराज के पुत्र बडे साहिब अकबर साहि के नाम पर बना था। यह ग्रन्थ रसमजरी नाम से खोज मे भी मिल चुका है।[1] पर वहाँ स्पष्ट उल्लेख नही हुआ है कि यह रचना इन्ही प्रसिद्ध चिन्तामणि की है। वहाँ यह लेख है कि यह चिन्तामणि अकबर महान् अथवा अकबर द्वितीय के आश्रय मे थे। 'शृङ्गार मजरी' 'कविकुल कल्पतरु के पहले की रचना है। कविकुल कल्पतरु मे इसका उल्लेख कवि ने स्वय किया है—

प्रोषित भर्तृ को लच्छण, शृङ्गार मंजरी यथा[2] ।

काव्य विवेक, काव्य प्रकाश और रामायण अभी तक खोज मे नही मिले हैं।

२२२।१८१

६ चिन्तामणि २। इन्होने ललित काव्य की रचना किया है।

सर्वेक्षण

खोजरिपोर्टों मे अनेक चिन्तामणि हैं। इन्ही मे से कोई सरोजवाले यह दूसरे चिन्तामणि होंगे।

१—चिन्तामणि—सम्वत् १६११ के लगभग वर्त्तमान, राजा पहाड़ सिंह के आश्रित। गीतगोविन्द सटीक या गीतगोविन्दार्थ सूचनिका (१६१७।४१, १६२७।७१ ए) और सगीत चिन्तामणि (१६२६।७१ बी) के रचयिता। सम्वत् १८१६ गीतगोविन्द की टीका का रचना-काल है—

२—चिन्तामणि—रास मन्डान (१६४१।६७) के रचयिता।

३—चिन्तामणि—कर्मविपाक (१६३८।३१) के रचयिता।

४—चिन्तामणि दास—अम्बरीश चरित्र (१६०६।५१) के रचयिता।

२२३।१८२

७ चूडामणि कवि, सम्वत् १८६१ मे उ०। यह कविराज एक अपने ग्रन्थ मे गुमान सिंह और अजीत सिंह की बडाई करते है। ग्रन्थ का नाम मालूम नही होता।

सर्वेक्षण

एक चूडामणि ब्राह्मण चरखारी वाले मोहन लाल के पिता थे। (१६०५।७०)। एक अन्य चूडामणि का एक ग्रन्थ नागलीला खोज मे मिला है। (१६४४।११४) गुमान सिंह और अजीत सिंह

---

(१) खोज रिपोर्ट १६०६।१५० (२) हिन्दी काव्य शास्त्र का इतिहास, पृष्ठ ७८-८२

की प्रशस्ति मे लिखे हुये कवित्त सरोज मे उद्धृत हैं। कवि के सम्बन्ध मे कोई विशेष जानकारी नही सुलभ हो सकी है।

२२४।१८३

८. चन्दन राय कवि बन्दीजन नाहिल पुवाया, जिले शाहजहाँपुर वाले, सम्वत् १८३० मे उ०। यह कवि महा विद्वान् वडे सतोषी, राजा केसरी सिंह गौर के यहाँ थे। उनके नाम से केसरी प्रकाश ग्रन्थ रचा है। इनके ग्रन्थो की सख्या साफ जानी नही जाती। जो ग्रन्थ हमने पाये अथवा देखे हैं, उनका व्योरा निम्न है—

प्रथम शृ गार सार ग्रन्थ वहुत भारी काव्य है। दूसरा कल्लोल तरगणी, तीसरा काव्याभरण, चौथा चदन सतसई, पाँचवाँ पथिक वोध। ये सब ग्रन्थ बहुत ही सुन्दर, देखने पढने योग्य है।

इनके १२ शिष्य थे, और बारहो महान् कवि हुये। सबसे अधिक कवीश्वर मनभावन कवि हैं। चन्दन राय नाहिल छोडकर किसी राजा बाबू, बादशाह के यहाँ नही गये। एक दफे किसी बुन्देलखडी रईस ने वंश गोपाल कवि का बनाया हुआ कूट कवित्त इनके पास अर्थ लिखने के लिये भेजा। और जब इनके अर्थ लिखे देखे तो बहुत प्रसन्न होकर पालकी सवारी को कुछ द्रव्य सहित भेजी। चन्दन राय वहाँ नही गये। केवल यह दोहा लिख कर भेज दिया।

खरी टूक खर खरथुवा, खरी नोन सँजोग
ये तो जो घर ही मिलै, चंदन छप्पन भोग ॥ १ ॥

सर्वेक्षण

चन्दन राय भाट थे। इनका रचना-काल सम्वत् १८१० से १८६५ तक है। इनके पिता का नाम धर्मदास, पितामह का फकीरे राय, और प्र-पितामह का भीषम था। ये लोग विहंदर पुरी के निवासी थे। कवि ने प्राग्य विलास मे अपने पूर्वजो का परिचय दिया है—

विधि सो विधि छितितल रची विहदर पुरी पुनीत
तहा बस भूषन भये भीषम उत्तम गीत
तासु तनय गुण गन सदन भये फकीरे राय
सदा भजन भगवंत को करो मनो वच काय
धर्मदास तिनके भये धर्मदास बिन आस
बिश्वम्भर को भजन नित करत धरे विश्वास
तिनके सुत चन्दन भगत भयो देव दुज दास
करि बन्दन गुर को कह्यो प्राज्ञ विलास प्रकास

—खोज रि० १९२३।७३ सी

चदन राय के दो पुत्र थे—प्रेमराम और जीवन। इनका कविता काल सम्वत् १८१० से १८६५ तक है। कहा जाता है कि इन्होने कुल ५२ ग्रन्थ रचे थे। इनमे से ८ खोज मे मिल चुके हैं—

१ काव्याभरण—१९०६।४०, १९२३।७३ए, १९२६।७७, १९४७।९०। यह १९५ दोह का अलकार ग्रथ है। इसकी रचना सम्वत् १८४५ मे हुई—

सम्बत् ठारह सै जहाँ पैंतालीस बिचार
चद बार तिथि दूवैज सुदि मार्ग ग्रन्थ विस्तार

२ कृष्ण काव्य—१६१२।३४ ए। इसमे कृष्ण जन्म से कस वध तक की कथा भागवत के आधार पर है। इसकी रचना क्वार सुदी १०, मगलवार, सम्वत् १८१० को हुई—

सबत ठारह से जहाँ, दस बरनो कुजवार
क्वार सुदी दसमी विजै, कृष्ण काव्य अवतार

३ केशरी प्रकाश—१६१२।३४ बी। यह नायिका भेद का ग्रन्थ है। आश्रयदाता केशरी सिह गौर के नाम पर इसकी रचना सम्वत् १८१७ मे हुई—

प्रगट अठारह सै जहाँ, सत्रह सम्वत चारु
क्वार सुदी दसमी सु तिथि, विजै हतो रविवार

४ तत्व सज्ञा—१६०१।२६, १६१७।३७। इस ग्रन्थ मे विभिन्न वस्तुओ की नाम सूची है। यथा-पच ज्ञानेन्द्रिय, पच कर्मेन्द्रिय, ३० राग। यह एक प्रकार का कोष है। यह कोई योग सम्बन्धी ग्रन्थ नही हैं जैसा कि नाम से भ्रम हो सकता है।

५ नखशिख राधा जी को—१६१२।३४ ई, १६२३।७३ बी। रचना काल सम्वत् १८२५, यह सूचना १६२३ वाली प्रति की पुष्पिका से मिलती है।

६ प्राज्ञ विलास—१६१२।३४ सी, १६२३।७३ सी। वेद और मतो पर तर्क-वितर्क इस ग्रन्थ का विषय है। यह ग्रन्थ सम्वत् १८२५ मे रचा गया—

ठारह सै पच्चीस जहँ, सवत बरन्यो चारु
कातिक सुदि दुतिया प्रगट, भयो ग्रंथ अवतार

७. पीतम वीर विलास—१६१२।३४ डी। यह नायिकाभेद और नवरस का ग्रथ है। इसकी रचना सम्वत् १८६५ मे हुई—

सम्वत ठारह सै जहाँ, पैंसठ सुर गुरुवार
दुतिया सित मधु मास सुभ, भयो ग्रथ अवतार

८ रस कल्लोल—१६१२।३४ एफ। यह रस निरूपण सम्बन्धी ग्रन्थ है। सम्भवत. यही सरोज वर्णित कल्लोल तरगिणी है। ग्रियर्सन ने (१७४) इसका रचना काल सम्वत् १८४६ दिया है।

सरोज उल्लिखित चन्दन सतसई, पथिक बोध और शृङ्गार सार अभी तक खोज मे नही मिले है। शुक्ल जी ने शृङ्गार सागर, नाममाला कोष, तत्व सग्रह और सीत वसन्त नामक इनके अन्य ग्रन्थो का उल्लेख किया है। यह 'शृगार सागर' सम्भवतः सरोज का 'शृगार सार' है और 'तत्व सग्रह' सम्भवत. खोज मे प्राप्त 'तत्व सज्ञा' नामक ग्रन्थ है। 'नाममाला' सभवत. 'तत्वसग्रह' या 'तत्व सज्ञा' का ही पर्याय प्रतीत होता है। शुक्ल जी ने पथिक बोध के अतिरिक्त 'पत्रिका बोध' नामक इनके एक अन्य ग्रन्थ का भी उल्लेख किया है, पर मुझे लगता है कि 'पत्रिका बोध' 'पथिक बोध' का ही विकृत नाम है। सीत वसन्त एक कहानी है। चन्दन जी फारसी मे भी लिखते थे। इनका तखल्लुस चन्दन का पर्याय 'सदल' था। शुक्ल जी के अनुसार इनका 'दीवाने सदल' कही-कही मिलता है।

२२५।१७६

६ चोखे कवि। इनकी कविता चोखी है।

सर्वेक्षण

चोखे के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही।

२२६।१७७

१० चतुर बिहारी कवि, ब्रज वासी, सम्वत् १६०५ उ०। इनके पद रागसागरोद्भव मे बहुत हैं।

सर्वेक्षण

चतुर बिहारी गोसाई विट्ठलनाथ के शिष्य थे। यह आगरा के रहने वाले क्षत्री (? खत्री) थे। इनका विवरण दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता मे हैं। यह आठ वर्ष की ही वय से कविता करने लगे थे। गोकुल जाकर इन्होंने गुसाई जी से दिक्षा ली थी, ऐसा उल्लेख वार्ता मे है। गोसाई जी गोकुल मे १६२८ से रहने लगे थे, अतः इनका दीक्षाकाल १६२८ के बाद ही सिद्ध होता है। सरोज दत्त सवत् १६०५ इनका प्रारम्भिक जीवन काल है। वार्ता के अनुसार चतुर बिहारी जी गोकुल एव गोवर्द्धन छोड कही नही गए और संत दास से इनकी पटरी बैठती थी[1]। ख्याल टिप्पा नामक ग्रन्थ मे चतुर बिहारी के भी पद सकलित हैं।[2]

२२७।१८७

११ चतुर सिहराना, सम्वत् १७०१ मे उ०। सीधी बोली मे इनकेकवित्त हैं।

सर्वेक्षण

सीधी बोली से अभिप्राय खडी बोली है। इस कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही।

२२८।१८६

१२ चतुर कवि इनकी कविताएं सुन्दर हैं।

सर्वेक्षण

यह चतुर कवित्त सवैया लिखने वाले रीतिकालीन शृगारी कवि है। इनका कोई सूत्र अभी तक नही मिल पाया है। इनका कवित्त दिग्विजय भूषण से उद्धृत किया गया है। इन चतुर की अवतारणा सभवतः सुजान चरित्र के आधार पर हुई है। अत इनका समय सम्वत् १८१० के पूर्व या आरम्भ होना चाहिए।

एक चतुर दास ने, जो सत दास के शिष्य थे, सम्वत् १६९२ मे श्रीमद्भागवत के एकादश स्कध का भाषानुवाद किया था।[3] पर यह सरोज के 'चतुर' नही प्रतीत होते।

---

(१) दो सौ बावन वैष्णन की वार्त्ता, तृतीय खड, पृष्ठ २२७-२३० (२) खोज रिपोर्ट १९०२।४७ (३) खोज रिपोर्ट १९००।७१, १९०१।११०

२२९।१९०

१३ चतुर विहारी २ ऐजन। इनकी कविताएँ है।

सर्वेक्षण

सरोज के यह चतुर विहारी शृगारी कवित्त-सवैये लिखने वाले रीतिकालीन कवि हैं। इनका एक कवित्त जो दिग्विजय भूषण से उद्धृत है, सरोज मे उदाहृत है। इस कवित्त का पहला चरण है—

चतुर विहारी पै मिलन आई बाला साथ
मागत है आज कछु हम पै देवाइये

इस चरण मे चतुर विहारी कृष्ण के लिये प्रयुक्त प्रतीत होता हैं। यह कवि का नाम नही है। दिग्विजय भूषण मे कवि सूची मे चतुर विहारी नाम अवश्य है पर यह सूची एकान्त निर्भ्रान्त नही।

२३०।१९१

१४ चतुर्भुज ऐजन। इनकी सुन्दर कविता है।

सर्वेक्षण

सरोज वाले यह चतुर्भुज कवित्त सवैया रचने वाले शृगारी कवि हैं। इनकी कबिता दिग्विजय भूषण से उद्धृत की गई है। रीति परम्परा पर चलने वाले निम्नाकित दो चतुर्भुज खोज मे मिले हैं। इन्ही मे से एक प्रसग प्राप्त चतुर्भुज होने चाहिये—

१—चतुर्भुज वाजपेयी—नन्द किशोर के पुत्र, सातन पुरवा, जिला रायबरेली वाले, अयोध्या प्रसाद वाजपेयी 'औध' के भाई, सम्वत् १८६० के लगभग वर्तमान[१]।

२—चतुर्भुज मिश्र—गौतम गोत्रीय अहलुवा अल्ल के सुकुल। रामकृष्ण मिश्र के पुत्र कुलपति मिश्र के वशज, भरतपुराधीश महाराज वलवत सिंह के आश्रित। सम्वत् १८६९ मे 'अलकार-आभा' की रचना की।

२३१।१९४

१५. चतुर्भुज दास, सम्वत् १६०१ मे उ०। रागसागरोद्भव मे इनके बहुत पद हैं। यह महाराज स्वामी विठ्ठल नाथ करौली के राजा गोकुलस्थ के शिष्य थे। अष्टछाप मे इनका भी नाम है।

सर्वेक्षण

भक्तमाल मे अष्टछापी चतुर्भुजदास का उल्लेख नही है, यहाँ दो अन्य चतुर्भुज दास हैं—

१—करौली नरेश चतुर्भुज जी, छप्पय ११४—

यह रीति करौलीधीश की तन मन धन आगे धरैं।
चतुर्भुज नृपति की भक्ति को कौन भूप सरवर करैं॥

सरोजकार ने प्रमादवशविवरण मे अष्टछापी चतुर्भुजदास एव इन करौली धीश चतुर्भुज का

---

(१) खोज रि० १९२३।२४ (२) खोज रि० १९१७।१९, १९३८।२७

घालमेल कर दिया है। करौली नरेश कवि नही थे। सरोज मे उदाहरण अष्टछापी चतुर्भुज का है।

(२) कीर्तन करने वाले, हित हरिवंश के अनुयायी, मुरलीधर छाप रखने वाले राधा वल्लभी चतुर्भुज, छप्पय १५८। सरोज मे इनका उल्लेख नही है।

चतुर्भुज दास अष्टछाप के प्रसिद्ध एव सबसे ज्येष्ठ कवि कुम्भन दास के पुत्र थे एव स्वय भी अष्टछाप मे थे। यह गौरखा क्षत्रिय थे। सम्वत् १५८७ के लगभग इनका जन्म हुआ था। सम्वत् १५९७ विक्रमी मे १० वर्ष की वय मे यह विट्ठलनाथ द्वारा पुष्टि-सप्रदाय मे दीक्षित हुये। इन्हे बचपन से ही काव्य और सगीत की शिक्षा मिली थी तथा साम्प्रदायिक रहस्य की भी जानकारी हो गई थी। इनका देहावसान गोसाई विट्ठलनाथ जी की मृत्यु के अनन्तर ही सम्वत् १६४२ मे गोवर्धन मे रुद्र कुण्ड पर हुआ। इनका कोई काव्य ग्रन्थ नही, फुटकर पद हैं जिनका प्रकाशन सम्वत् २०१४ मे विद्या विभाग, कांकरोली से हुआ है। इसमे कुल ३६५ पद हैं। कल्पद्रुम द्वितीय भाग मे इनके पर्याप्त पद है।[1]

२३२।१७८

(१६) चैन कवि

सर्वेक्षण

'बाणी संग्रह' मे पृष्ठ ३८८-३९१ पर चैन कवि की साखियाँ है। इस सग्रह का लिपिकाल सम्वत् १८२५ है।[2] अत' चैन के सम्बन्ध मे इतना ही कहा जा सकता है कि यह सम्वत् १८२५ के पहले कभी हुये।

यह दादू के अनुयायी कहे गये हैं। इनका एक ग्रन्थ चित्रबन्ध खोज मे मिला है।[3]

२३३।१७९

(१७) चैन सिंह खत्री लखनऊ वाले सम्वत् १९१० मे उ०। इनका उपनाम हरचरण है। भारत दीपिका, शृगार सारावली, ये दो ग्रन्थ इन्होंने बनाये है।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई जानकारी सुलभ नही। १९१० कवि का उपस्थिति काल ही है। विनोद मे (२०३२) इनके एक तीसरे ग्रन्थ 'बृहत्कवि वल्लभ' का उल्लेख हुआ है। यह ग्रन्थ बिहारी सतसई के प्रसिद्ध टीकाकार हरिचरण दास का है, लखनऊ वाले चैन सिंह का नही।

२३४।१८८

(१८) चैनराय

सर्वेक्षण

सरोज के चैनराय रीतिकालीन शृङ्गारी कवि हैं। सरोज मे परकीया विप्रलब्धा सम्बन्धी इनका

---

(१) अष्टछाप परिचय, पृष्ठ २६३-७५ (२) रा० रि० भाग ३, पृष्ठ ६० (३) खोज रिपोर्ट १९४४। १५३

एक श्रृङ्गारी कवित्त उदाहृत है। इन श्रृङ्गारी चैनराय के सम्बन्ध मे सूचना का कोई सूत्र सुलभ नही।

श्रृङ्गारी चैनराय के अतिरिक्त खोज मे एक भक्त चैनराय मिले है। यह भक्तमाल की टीका करने वाले प्रियादास के शिष्य थे। इन्होने 'भक्ति सुमिरनी' नामक एक पुस्तिका लिखी है। इसमे भक्तमाल मे आये हुये भक्तो की नामावली है। प्रियादास की प्रेरणा से यह ग्रन्थ सम्बत् १७६६ मे लिखा गया।[१]

२३५।१६२

(१६) चण्डीदत्त कवि, सम्वत् १८६८ मे उ०। यह कवि महाराज मानसिंह के साथ अवध मे कुछ दिन रहे थे। इनकी कविता सरस है।

सर्वेक्षण

द्विजदेव महाराज मानसिंह ने सम्वत् १६०६ मे अपना प्रसिद्ध काव्य ग्रंथ 'श्रृङ्गार लतिका' लिखा। यही उनके जीवन काल का सबसे सरस समय था। इसी समय उन्होने कवियो को विशेष रूप से प्रश्रय दिया होगा। इस तथ्य को ध्यान मे रखते हुये यह स्पष्ट है कि सम्वत् १८६८ चडीदत्त जी का उपस्थिति काल है, न कि उत्पत्ति काल।

२३६।१६३

(२०) चरणदास, ब्राह्मण, पडित पुर, जिला फैजाबाद, सम्वत् १५३७ मे उ०। इन्होने ज्ञानस्वरोदय ग्रन्थ बनाया है।

सर्वेक्षण

खोज मे चरणदास के निम्नलिखित ग्रन्थ मिले हैं, जिनसे कवि के सम्बन्ध मे पर्याप्त प्रामाणिक सामग्री सुलभ हो गई है :—

१ ज्ञान स्वरोदय—१६०१।७०, १६०६।१४७ ई, १६१७।३८ सी, १६२०।२६ सी, १६२३।७४ जे के एल एम एन ओ, १६२६। ७८ एच एन ओ पी क्यू, १६२६।६६ डब्लू एक्स, वाई जेड, १६४७।६३ ग, प १६२२। १८ ए बी। इस ग्रन्थ के पहले ही दोहे से सूचना मिलती है कि इनके गुरु का नाम शुकदेव था।

नमो नमो शुकदेव जी करूँ प्रणाम अनत
तव प्रसाद स्वर भेद को चरणदास बरनत

ग्रन्थ के अन्त मे चरणदास ने एक दोहा और छप्पय दिया है जिससे सूचित होता है कि यह दहरा गाँव (अलवर राज्य) मे एक दूसर बनिये के घर मे पैदा हुये थे। इनके पिता का नाम मुरली था। इनका शिष्य होने के पहले का नाम रनजीत था। बाल्यावस्था मे घूमते-घामते यह दिल्ली आये। यहाँ गुरु शुकदेव से इनकी भेट हुई। यही इन्होने शिक्षा ली, तब इनका नाम चरणदास हुआ।

दोहा

सुखदेव गुरु क्रिया सु साध दया सुजान
चरणदास रनजीत ने कह्यो स्वरोदै ज्ञान २२६

---

(१) खोज रिपोर्ट १६०६। १४३

छप्पय

डहरे को मेरो जनम नाम रनजीत वखानो
मुरली को सुत जान जात दूसर पहिचानो
बालावस्था माहि बहुरि दिल्ली में आयो
रमत मिले सुखदेव नाम चरनदास धरायो
जोग जुगति हरि मुक्ति करि, ब्रह्म ज्ञान दृढ़ करि गह्यौ
आतम तत्त विचारि कै, अजपा मैं सत सत रह्यो २२७

स्वरोदय प्राणायाम को कहते है। इस ग्रन्थ मे योग की इसी क्रिया का वर्णन २२७ छदो, मुख्यतया दोहो मे हुआ है।

सरोज मे चरणदास का जो कुछ भी विवरण दिया गया है, सब अशुद्ध है। यह न तो ब्राह्मण थे, न तो पडित पुर जिला फैजाबाद के रहने वाले थे, और न तो सम्वत् १५३७ मे उपस्थित ही थे। हाँ, ज्ञानस्वरोदय इनका बनाया हुआ अवश्य है। सरोजकार की सारी जानकारी भाषा-काव्य सग्रह पर निर्भर है। इस ग्रन्थ मे चरणदास को सम्वत् १५३७ में मृत कहा गया है।[१] भाषा काव्य सग्रह मे जिस स्वरोदय का उल्लेख है, वह इन्ही चरणदास का है। भाषाकाव्य सग्रह मे इस ग्रन्थ के ७ दोहे उद्धृत हैं, जिनमे से पहले और दूसरे दोहे सरोज मे भी ले लिये गये हैं।

चारि वेद को भेद है, गीता को है जीव
चरणदास लखु आप मे, तो मै तेरा पीव १
सब योगन को योग है, सर्व ज्ञान को ज्ञान
सर्व सिद्धि की सिद्धि है, तत्व स्वरन को ध्यान २

इनमे से पहिला दोहा १९२३।७४ जो रिपोर्ट मे पृष्ठ ३८१ पर उद्धृत है, भाषा काव्य-सग्रह के पाँचवें दोहे मे कवि के गुरु का नाम आया है—

शुकाचार्य गुरु कृपा करि, दियो स्वरोदय ज्ञान
तब सौं यह जानो परी, लाभ होय की हानि ५

भाषाकाव्य-सग्रह के ६ और ७ सख्यक दोहे स्वरोदय के १० और ११ सख्यक दोहे है, जो रिपोर्ट १९२०।२९ बी, पृष्ठ १०१ पर उद्धृत हैं—

इँगला पिँगला सुषुमना, नाडी तीन विचार
दहिने बाए स्वर लखै, लखै धारणा धार ६
पिँगला दहिने अग है, इँगला सु बाए होइ
सुषुमन बीचोबीच है, जब चालै स्वर दोइ ७

(२)-अमरलोक अखंड धाम-१९०६।१४७ एफ, १९१७।३८ ए, १९२६।७८ ए, १९२९।६५ ए बी, इस ग्रन्थ मे गोलोक और राधा कृष्ण के प्रेम का वर्णन है।

(३) अष्टाग योग-१९०५।१७, १९१२।३६ बी, १९२९।६५ सी। गुरु-चेला सवाद रूप मे योगासन प्राणायाम और अष्टसिद्धि का वर्णन।

(४) काली नाथन लीला—१९३५।१६ बी।

(५) कुरुक्षेत्र लीला—१९०९।४५। इस ग्रथ मे गुरु का नाम आया है।

---

(१) भाषा काव्य संग्रह, पृष्ठ ३२

अपने गुरु सुखदेव को, सीस नवाय कै
कहूँ कथा भागवत, सुनो चित लाय कै

(६) चरणदास के पद—१९३८।२५ बी।
(७) चरणदास सागर—१९०१।७० ।
(८) जागरण माहात्म्य—१९३५।१६ ए।
(९) जोग—१९२९।६५ पी।
(१०) जोग शिक्षा उपनिषद्—१९३८।२५ जी।
(११) तत्व जोग नामोपनिषद्—१९३८।२५ एच।
(१२) तेज विद्योपनिषद्—१९३८।२५ एफ।
(१३) दान लीला—१९०६।१४७ जी।
(१४) धर्म जहाज—१९२९।६५ एन।
(१५) नासिकेत—१९०५।१८, १९२०।२९ सी, १९२९।६५ क्यू, आर, एस, टी।
(१६) निर्गुन बानी १९३५।१६ डी।
(१७) पच उपनिषद्, अथर्वण वेद की भाषा—१९२६।७८ एल, १९२९।६५ यू।
(१८) पद और कवित्त—१९३८।२५ ई।
(१९) बानी चरणदास की—१९३८।२५ ए।
(२०) बाल लीला—१९२९।६५ डी।
(२१) ब्रज चरित्र—१९२९।६५ एल, १९४७।९३ क।
(२२) ब्रह्मज्ञान सागर—१९१२।३६ सी, १९२६।७८ डी ई एफ जी, १९२९।६५ एच आई जे के, १९४७।९३ ख।
(२३) भक्ति पदार्थ—१९१७।२८ बी, १९०६।१४७ डी, १९२३।७४ बी से लेकर जे तक, १९२९।६५ ई एफ जी।
(२४) भक्ति सागर—१९१२।३६ ए, १९२६।७८ बी सी।
(२५) मटकी और हेली—१९३८।२५ डी।
(२६) मनविरक्तकरन गुटका—१९०६।१४७ बी, १९२३।७४ एफ जी, १९२९।६५ बी।
(२७) माखनचोरी लीला—१९३५।१६ सी।
(२८) योगसदेह सागर या सार—१९०५।१९, १९२६।७८ आई, जे, के।
(२९) राम माला—१९०६।१४७ ए।
(३०) शब्दो के मंगलाचरण या शब्द—१९०६।१४७ सी, १९१७।२८ डी, १९२३।७४ एफ आई, १९२९।६५ एम।
(३१) पद्रूप मुक्ति, गुरु चेले की गोष्ठी—१९२६।७८ एम, १९२६।६६ ओ।
(३२) सर्वोपनिषद्—१९३८।२५—आई।
(३३) स्फुट पद और कवित्त—१९३८।२५ सी।
(३४) हसनाद उपनिषद्—१९३२।३८।

कुछ और ग्रन्थ भी मिले है जो वस्तुत. एक ग्रन्थ न होकर कई ग्रन्थो के सकलन है, यथा—
१. अनेक प्रकार १९२०।२८ ए, १९२३।७४ ए। इसमे ब्रज चरित्र, अमरलोक कथा,

योग सार, ज्ञानस्वरोदय, ब्रह्मज्ञान सागर, भक्तिपदार्थ, मनविरक्तकरन गुटका, सदेश सागर आदि आठ ग्रन्थ और फुटकर छप्पय कवित्त और स्तुति आदि है।

२ भक्तिसागर—राज० रि० भाग १ पृष्ठ ८४। चरणदास की निम्नांकित १७ रचनाए हैं :—

१—ब्रज चरित्र, २—अमरलोक अखड धाम, ३—धर्म जहाज, ४—ज्ञान स्वरोदय ५—अष्टाग जोग, ६—पच उपनिषद् अथर्वण वेद की भाषा, ७—सदेह सागर ८—भक्ति-पदार्थ, ९—चारो जुग वर्णन कुडलिया, १०—नाम का अग, ११—सील का अग, १२—दया का अग, १३—मोह छुटावन का अग, —१४—भक्ति पदार्थ, १५—मनविरक्तकरन गुटका सार, १६—ब्रह्मज्ञान, १७—शब्द।

यह ग्रन्थ नवल किशोर प्रेस, लखनऊ से १८९८ ई० मे प्रकाशित हुआ था। इसमे ऊपर वर्णित, १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, १५, १६, १७ सख्यक ग्रन्थ और षट्रूप मुक्त तथा छप्पय कवित्त कुल १३ ग्रन्थ थे। चैत्र शुक्ल १५ सोमवार, स० १७८१ को चरणदास ने इस ग्रन्थ के रचने का विचार किया।

संवत सत्रह सै इक्यासी
चैत सुदी तिथि पूरणमासी
सुकुल पच्छ दिन सोमहिवारा
रचूं ग्रथ यों कियो विचारा
तब ही सों अस्थापन करिया
कछु इक बानी वा दिन करिया

—माधुरी, दिसम्बर १९२७, पृष्ठ ८९८-९९

चरणदास की शिष्या सहजोबाई ने इनका जीवन चरित्र सहजप्रकाश नाम से लिखा है। इसके अनुसार इनका जन्म भाद्रपद शुक्ल ३, मगलवार, स० १७६० को हुआ।[१] इनकी मृत्यु अगहन सुदी ४, स० १८३९ को दिल्ली मे हुई।[२] चरणदास जी की प्रधान गद्दी दिल्ली मे है। इनके ५२ शिष्य थे। इनमें सहजोबाई, दयाबाई, श्यामाचरण, रामरूप या गुरु भक्तानन्द और जसराम प्रसिद्ध हैं। चरणदास है तो निर्गुनिए, पर इन्होने कृष्ण लीला सम्बन्धी ग्रन्थ भी रचे हैं। इन ग्रन्थो मे भी इन्होने अपने गुरु का स्मरण किया है। यह इस बात को सूचित करता है कि इनमे सांप्रदायिक कट्टरता अधिक नही थी। अपने सप्रदाय के अनुयायियो मे यह कृष्ण के अवतार माने जाते हैं। यह श्यामचरणदासाचार्य नाम से भी स्मरण किए जाते हैं। डा० त्रिलोकीनारायण दीक्षित ने 'चरनदास' पर डी० लिट्० की उपाधि प्राप्त की है। 'चरनदास' हिन्दुस्तानी एकेडेमी से प्रकाशित हो चुका है।

२३७।१८६

(२१) चेतन चद्र कवि, स० १६१६ मे उ०। राजा कुशलसिह सेंगर वंशावतंश की आज्ञानुसार 'अश्व विनोद' नामक शालिहोत्र बनाया है।

सर्वेक्षण

अश्व विनोद की अनेक प्रतियाँ खोज मे मिली हैं।[३] इस ग्रथ का नाम अश्व विनोदी भी है। इसकी रचना कुशलसिंह के लिए हुई थी।

---

(१) उत्तर भारत की सत परम्परा, पृष्ठ ५१७ (२) वही, पृष्ठ ५१९ (३) खोज रि० १९०९। ४६, १९२३।७७ ए, बी, १९२६।८० ए, बी, १९२९।६६, १९४४।१३८ क ख, राज० रि० भाग ४, पृष्ठ २३२

श्री कुशलेश नरेश हित, नित चित चाह लह्यो
अश्व विनोदी ग्रन्थ यह, सार विचार कह्यो ७

ग्रन्थ का रचनाकाल स० १६१६ है—

सवत सोलह सौ अधिक चार चौगुने आन
ग्रन्थ कह्यो कुशलेश हित रक्षक श्री भगवान
माघ फालगुन शुक्ल पक्ष दुतिया सुभ तिथि नाम
चेतन चन्द सुभाखियत गुरु को कियो प्रनाम

—खोज रिपोर्ट १६२३।७७ ए

रचनाकाल सूचक यह छन्द सरोज मे भी है। कुशल सिह सेगरवशीय क्षत्रिय थे। कवि वाल्यावस्था से ही इनकी शरण मे था—

श्री महराजधिराज जू सेंगरवश नरेश
गुणग्राहक गुणि जनन के जगत बिदित कुशलेश
बालापन में शरन रहि मैं सुख पायो वृद
सालिहोत्र मत देखि कैं बरतत चेतन चन्द

चेतनचद कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम गोपानाथ था। यह चार भाई थे। तीन भाइयो के नाम इन्द्रजीत, लछिमन और यदुराय थे। यह चौथे भाई थे। इनका मूल नाम तारा चद था।

धुरहा पाढे गोपीनाथ
कान्यकुब्ज में भए सनाथ
तिनके सुत चारौं उधिकाइ
इन्द्रजीत लछिमन जदुराइ
चौथे ताराचन्द कहायो
जिन यह अश्व विनोद बनायो

—खोज रि० १६२६।६६, राज० रि० भाग ४, पृष्ठ २३२

कवि सभवत बैसवाडे का निवासी था।

२३८।१८५

(२२) चिरजीव ब्राह्मण बैसवारे के, स० १८७० मे उ०। इन्होने (स० १८१७ प्रथम सस्करण) भारत को भाषा किया है।

सर्वेक्षण

चिरजीव विरचित 'वर्णाकर पिंगल' खोज मे मिला है। इससे इनके पिता का नाम शकर विदित होता है।

संकर सुत चिरंजीव यह वर्णिक वृत्त गाई—खोज रि० १६२६।७२

खोज मे एक वालदास मिले हैं।[1] इन्होने 'चिन्ताबोध और ब्रह्मवाद' नामक वेदान्त ग्रन्थ रचे है। यह रायबरेली जिले के जयनगर निवासी कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। यह खाकी द्वारा के दिगबर अखाडे के थे, जो वैष्णवो का एक उपसप्रदाय है। इनके पिता का नाम चिरजीव प्रसाद तिवारी था। सरोज मे उदाहरण देते समय चिरजीव कवि को गोसाई कहा गया है। प्रतीत होता है कि इन

(१) खोज रि० १६२६।३१

बालदास के पिता चिरजीव तिवारी और भारत भाषा के रचयिता बैसवारे वाले उक्त चिरजीव ब्राह्मण एक ही व्यक्ति हैं। उनके गोसाई कहे जाने का रहस्य उनका वैष्णवो के उक्त सप्रदाय से सम्बन्धित होना है। अत' चिरजीव जी जयनगर जिला रायबरेली के रहने वाले कान्यकुब्ज तिवारी ब्राह्मण थे। विनोद मे (१२०१) इनको गोसाई खेरा का रहने वाला कहा गया है। इससे भी इनका गोसाई होना सूचित होता है। गोसाई खेरा जयनगर के पास कोई छोटा सा गाँव होना चाहिए।

चिरजीव गोसाई ने भारत भाषा मे अपना वश परिचय इस छप्पय मे दिया है :—

बैसवार सुभ देस मनो रतनाकर सागर
सुर गुरु सम कवि लसैं जहाँ बहु गुन के आगर
तहँ गोसाई खेर सबै गोस्वामिन को घर
रामनाथ तहँ बैस जाति जाहिर सब भू पर
तिनके सु वश प्रकट्यो सुकवि नाम चिरजू लाल कहि
सुभ भारत को भाषा करत सब पुरान को सार लहि
—सरोज, पृष्ठ ६४

चिरजीव का नाम सूदन की सूची मे है। अत इसका समय १८१० के आसपास या और पूर्व होना चाहिए। १८७० अशुद्ध है। प्रथम सस्करण मे इनका समय स० १८१७ दिया गया है, जो ठीक है।

२३६।१८४

(२३) चदसखी व्रजवासी, स० १६३८ मे उ०। इनके पद रागसागरोद्भव मे हैं।

सर्वेक्षण

चन्द्रसखी के सम्बन्ध मे अभी तक यह भ्रम रहा हैं कि यह मीरा के समान राजस्थान की कोई स्त्री भक्त थी। श्रीमती पद्मावती शबनम ने 'चन्द्रसखी और उनका काव्य' मे इन्हे स्त्री ही स्वीकार किया है। विनोद (१६१) मे इन्हे पुरुष स्वीकार किया गया है, जो ठीक है। चन्द्रसखी जी हित हरिवश के राधावल्लभ सप्रदाय के शिष्य थे। इनकी रचनाओ मे 'बालकृष्ण' शब्द आया है। यह बालकृष्ण इनके गुरु थे, जो उक्त सप्रदाय के नागा थे और अपने दल के साथ यत्र-तत्र विचरण किया करते थे। यह 'बालकृष्ण' गो० हरिलाल के शिष्य थे, स्वय हित हरिवश के वशज नही थे। चन्द्रसखी की कुछ रचनाओ मे गो० हरिलाल (जन्म स० १७१७ के लगभग) और गो० उदय लाल (जन्म स० १७०० के लगभग) की भी छाप है। अत. चन्द्रसखी जी का जन्म स० १७५० के आसपास हुआ प्रतीत होता है। चन्द्रसखी उपनाम है, इनका मूल नाम चन्द्रलता या चन्द्रकिशोर जैसा रहा होगा। इनकी रचनाओ मे 'चन्द्र' छाप भी प्रयुक्त है। किंवदन्ती के अनुसार इनका जन्म स्थान ओरछा एव मृत्यु स्थान वृन्दावन है। चन्द्रसखी जी भी अपने गुरु के समान अपने शिष्य मडली के साथ यत्र-तत्र विचरण किया करते थे। अत इनकी वाणी का प्रसार राजस्थान, व्रज, और उत्तरी मध्यप्रदेश मे बहुत है। इनके काव्य लोक-साहित्य मे घुल मिल गये हैं। इनका शिष्य समुदाय बहुत था। रसिक दास इनके बाद गद्दी पर बैठे थे। रसिकदास के शिष्य वल्लभ दास थे। ये लोग रसिक सखी और वल्लभ सखी नाम से रचना करते थे।[१]

---

(१) चन्दसखी की जीवनी और रचनाओं की खोज—प्रभुदयाल मीतल, हिन्दी अनुशीलन, अप्रैल, जून-वर्ष १०, अंक २।

२४०।१९५

(२४) चोवा कवि, हरि प्रसाद वंदीजन डालमऊ वाले विद्यमान है। यह कवि असोथर वाले खीचियों के पुराने कवि है। चोवा कवि कविता मे निपुण हैं और अब थोडे दिन से होलपुर मे रहा करते हैं।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही है।

छ

२४१।१९७

(१) छत्र साल बुन्देला, महाराजा पन्ना बुन्देलखड, स० १६९० मे उ०। यह महाराज महान् कवि, कवि लोगो के कल्पवृक्ष, गुणग्राहक, साहित्य के निपट चाहक, सूर शिरोमणि, उदार चित्त बडे नामी हुए हैं। इनके दरबार तक जो कवि पहुँचा वह मालामाल हो गया। बहुतेरे कवि नित्य प्रति के लिए नौकर थे, और सैकडो भूमि के चारो ओर से इनका सुयश सुन हाजिर होते थे। इनके जमाने से लेकर आज तक जो, जो राजा दीवान बाबू भाई बेटे सभासिंह, हृदय साहि, अमानसिंह हिन्दूपति इत्यादि पन्ना मे हुए, वे सब कवि कोविदो के कदरदान रहे। राजा छत्रसाल ही के दान सम्मान सुन सुन किसी जमाने मे बुन्देलखन्ड, बैसवारा, अन्तरवेद इत्यादि मे सैकडो हजारो मनुष्य कवि हो गए थे। एक दफे उडछे के बुन्देला राजा ने राजा छत्रसाल जी को ठट्ठा के तौर पर यह लिखा कि 'ओडछे के राजा अरु दतिया की राई। अपने मुँह छत्रमाल वन भना बाई।' तब छत्रसाल ने 'सुदामा तन हेर्‌यो तब रकहू ते राव कीन्हो' यह कवित्त बनाकर उनके पास भेजा। राजा छत्रसाल ने 'छत्र प्रकाश' ग्रन्थ बनवाया है जिसमे बुन्देलो की उत्पत्ति से लेकर अपने समय तक बुन्देल खडी राजो का वृत्तात है। जो युद्ध राजा वीरसिंह देव और अब दुस्समद खाँ अबुलफजल के दमाद से हुआ है, सो देखने योग्य है। बुन्देला अपने को एक गहरवार की शाखा अर्थात् काशी नरेश के वश मे समझते हैं। महेवा मे इनकी आदि राजधानी है।

सर्वेक्षण

छत्रसाल चपतराय के पुत्र थे। इनका जन्म ज्येष्ठसुदी ३, सवत् १७०५ को हुआ था और यह ज्येष्ठ वदी ३, स० १७८८ को दिवगत हुए। इनके १७ रानियाँ और ६९ पुत्र थे। इनके बडे पुत्र हृदय साहि (शासनकाल स० १७८८-९६) थे हृदयसाहि के पुत्र सभासिह (शासनकाल स० १७९६-१८०९) हुए, सभासिह के पुत्र अमान सिंह (शासनकाल १८०९ १३) और हिन्दूपति (शासनकाल स० १८१३-३४) हुए जो क्रमश पन्ना के राजा हुए। ये सभी कवियो के आश्रय दाता हुए हैं।

महाराज छत्रसाल स्वय कवि थे। इनकी कविताओ का सकलन वियोगीहरि द्वारा सपादित होकर 'छत्रसाल ग्रन्थावली' नाम से प्रकाशित हो चुका है। बुन्देल वैभव[1] मे इनके निम्नाकित आठ ग्रन्थो की सूची दी गई है। ये आठो ग्रन्थ छत्रसाल ग्रन्थावली मे सकलित हैं—

(१) श्री राधाकृष्ण पचीसी, (२) कृष्णावतार के, कवित्त, (३) रामावतार के कवित्त, (४) ग्राम ध्वजाष्टक, (५) हनुमान पचीसी, (६) महाराज छत्रसाल प्रति अक्षर अनन्य प्रश्न, (७) दृष्टाती औरफुटकर कवित्त, (८) दृष्टाती तथा राजनैतिक दोहा समूह।

---

(१) बुन्देल वैभव, भाग २, पृष्ट ३२१

छत्रसाल के दरबार मे प्रसिद्ध कवि लाल थे, जिन्होने वीर रस का प्रसिद्ध ग्रन्थ 'छत्र प्रकाश' लिखा था। यह ग्रन्थ सभा द्वारा प्रकाशित हो चुका है। लाल के अतिरिक्त इनके यहाँ नेवाज, हरिचन्द, हरिकेश, पुरुषोत्तम, पचम, लालमणि आदि कवि भी थे। अक्षर अनन्य से भी इनका पूरा सपर्क था। महाकवि भूषण की पालकी मे तो इन्होने अपना कधा ही लगा दिया था।[1]

छत्रसाल की राजधानी पहले मऊ के पास महेवा थी, फिर पन्ना हुई। छत्रपुर इन्ही का बसाया हुआ है।

सरोज मे दिया हुआ १६६० ईस्वी सन् है। इस सन् अर्थात् स० १७४७ मे छत्रसाल उपस्थित थे। स० १६६० विक्रमी मे तो छत्रसाल का जन्म भी नही हुआ था। छत्रसाल ने स० १७२२ से १७८८ तक राज्य किया। इस बीच ओरछे मे निम्नाकित राजा हुए[2] :—

(१) सुजान सिंह १७२०-२६
(२) सुजान सिंह के भाई, इन्द्रमणि १७२६-३२
(३) इन्द्रमणि के पुत्र जसवन्त सिंह १७३२-४७
(४) जसवन्त-सिंह के पुत्र भगवन्त सिंह १७४७-४८
(५) उदीत सिंह १७४८-६३

इन पाँच राजाओ मे से किसने छत्रसाल को 'अपने मुँह छत्रसाल बनत भनावाई' कहा था, निश्चित रूप से नही कहा जा सकता। यह घटना छत्रसाल के प्रारम्भिक जीवनकाल की होगी।

२४२।१६६

(२) छितिपाल, राजा माधव सिंह, बन्धल गोत्री, अमेठी जिले सुल्तांपुर के रईस, विद्यमान है। इन महाराज के वश मे सदैव से काव्य को चर्चा रही है। राजा हिम्मत सिंह, राजा गुरु दत्त सिंह, राजा उमराव सिंह इत्यादि सब खुद भी कवि थे। इनके यहाँ कवि लोगो मे जो शिरोमणि कवि थे उनका मान रहा और ऐसा दान मिला कि फिर दूसरी सरकार मे जाने की चाह कम रही। राजा हिम्मत सिंह के यहाँ भाषाकाव्य के महान् पडित सुखदेव मिश्र और गुरुदत्त सिंह के पास उदय नाथ कवीद्र तथा उमरावसिंह के पास सुवश शुक्ल जैसे नामा गिरामी कवि थे और उनके नाम के बडे-बडे साहित्य के ग्रथ रचे है। राजा माधव सिंह इस अवध प्रदेश मे कविकोविदो की कदरदानी मे बहुत ही गनीमत है। इन महाराजा के बनाए हुए मनोज-लतिका, देवीचरित्र सरोज, त्रिदीप अर्थात् भर्तृहरि शतक का भाषा उल्था, ये तीन ग्रथ हमारे पास मौजूद हैं। और ग्रन्थ हमने नही देखे।

सर्वेक्षण

अमेठी के राजा माधव सिंह छितिपाल नाम से कविता करते थे। यह भारतेंदुयुगीन कवि हैं। द्विजदेव इनसे कुछ पूर्ववर्ती कवि है। सरोज मे छितिपाल के मनोज-लतिका ग्रन्थ से 'कूकि उठी कोकिलान ' कवित्त उद्धृत है। यह द्विजदेव के शृङ्गार-लतिका छन्द १४ की पूर्ण छाया है।

---

(१) बुन्देलखड का सक्षिप्त इतिहास, अध्याय २३, पैरा ११, १३, १४, १५, १६ (२) वही, अध्याय १५, पैरा १४-१७

मनोज-लतिका मे कुल २२७ और शृङ्गार-लतिका मे २२८ छन्द है। शृङ्गार-लतिका के अतिम छन्द की पूर्ण छाया मनोज-लतिका का २२५ वाँ छन्द है। शृङ्गार-लतिका की रचना स० १६०७ मे और मनोज-लतिका की रचना स० १६१३ मे हुई।

गुन[3] भू[1] खड[9] सचद[1], वत्सर पावन जानिए
गुरु वासर आनन्द, माघ शुक्ल तिथि पचमी

ग्रन्थ मे कवि ने अपना परिचय भी दिया है :—

सूरज कुल कछवाह ते, प्रगट्यो बधुल गोत
अरि तम दारन हित कर्‌यो, दूजा भान उदोत
रतनाकर सो कुल विदित, विदित रतन से भूप
प्रगट भयो छितिपाल तहँ, माधो सिंह अनूप
देश अमेठी पाइ, रामनगर वर वाटिका
रही सघन झलराइ, यह मनोजलतिका ललित

—खो० रि० १६४१।१६८

सुन्दरी तिलक मे छितिपाल की रचना है। ग्रियर्सन मे (३३२) छितिपाल को गुरुदत्त सिंह का उपनाम समझ लिया गया है। सुवश शुक्ल के आश्रयदाता उमराव सिंह बिसवाँ, जिला सीतापुर के कायस्थ तालुकेदार थे। अमेठी मे उमराव सिंह नामक कोई राजा यदि हुआ भी हो, तो सुवश से उसका कोई सम्बन्ध नही।

२४३।२०६

(३) छेमकरण कवि ब्राह्मण, घनौली जिले बाराबकी, स० १८७५ मे उ०। इनके बनाए हुए ग्रन्थ रामरत्नाकर, रामास्पद, गुरु कथा, आह्निक, रामगीत माला, कृष्णचरितामृत, पदविलास, वृत्तभास्कर, रघुराज घनाक्षरी इत्यादि बहुत सुन्दर है। प्रायः ६० वर्ष की अवस्था मे स० १६१८ मे इनका देहान्त हुआ।

सर्वेक्षण

छेमकरन का पूरा परिचय महेशदत्त ने अपने भाषा काव्य सग्रह मे दिया है। छेमकरन जी उक्त महेशदत्त के नाना थे। इनके अनुसार छेमकरन जी सरयूपारीण ब्राह्मण थे। यह गोमती नदी तट-स्थित घनौली नामक ग्राम, तहसील राम सनेही, जिला बाराबकी के रहने वाले थे। इनके पिता का नाम आधार मिश्र, पितामह का लक्ष्मणराम और प्रपितामह का लालमणि मिश्र था। सवत् १८३५ मे इनका जन्म हुआ था। इन्होने कई पडितो से सस्कृत का अध्ययन किया था। इनका मुख्य कार्य अध्यापन था। यह अबाला, बडौदा और बम्बई आदि नगरो मे द्रव्योपार्जनार्थ गए थे। इनके आठ कन्याएँ थी। इन्होने अपने जीवन के अन्तिम १४ वर्ष अयोध्या मे बिताए। यही स० १६१८ मे इनका देहावसान हुआ। यह सस्कृत और हिन्दी मे समान रूप से रचना करते थे। महेशदत्त ने इनके निम्नाकित ग्रथो की सूची दी है।

सस्कृत ग्रन्थ—(१) श्रीरामरत्नाकर वृत्त, (२) रामास्पद (३) गुरुकथा, (४) आह्निक।
हिन्दी ग्रन्थ—(१) रामगीत माला, (२) कृष्णचरितामृत, (३) पदविलास, (४) वृत्तभास्कर, (५) रघुराज घनाक्षरी (६) गोकुलचन्द्र कथानक।

यह रामोपासक थे और इन्होने अपने ग्रथो मे हरि का यशोवर्णन ही किया है।

छेमकरण जी के निम्नाकित ग्रन्थ खोज मे मिले है :—

(१) कृष्णचरितामृत—१९०९।४९

(२) गोकुलचन्द्र प्रभाव या उषा चरित्र—१९२३।२२७ ए। यह ३८ पन्नो का ग्रन्थ है। इसके २० पन्नो मे इनके आश्रयदाता गोकुलचद्र का वर्णन है। गोकुलचद्र नैऋत्यकोण मे मथुरा से ३६ कोस की दूरी पर स्थित हिडोन नामक स्थान के रहने वाले सनाढ्य ब्राह्मण थे। कवि से इनकी भेट बम्बई मे हुई थी। अन्तिम १८ पन्नो मे उषा-अनिरुद्ध की कथा है।

(३) पद विलास—१९२३।२२७ बी। रामचरित तथा विविध देवी देवताओ की आरती।

(४) रघुराज घनाक्षरी—१९२३।२२७ सी। कविता मे राम कथा। इसकी रचना अयोध्या मे स० १९११ मे हुई :—

> इंदु[१] इंदु[१] अंक[९] चद्र[१] सम्वत सँभारे पर
> फागुन की सातैं शुचि बुधवार वर में
> राज रघुराज की घनाच्छरी प्रथित भई
> छेमकर छेमकर अवध नगर में

(५) रामचरित वृत्तप्रकाश—१९२३।२२७ डी। यह पिंगल ग्रन्थ है, साथ ही साथ इसमे राम कथा भी है। इसका रचनाकाल स० १९०० है :—

> नभगनाथ प्रति कृपा तें, नभ[०] नभ[०] नव[९] ससि[१] जोरि
> सँवत्सर आनन्द कहि, आनन्द हरिहि निहोरि

(६) रामगीत माला—१९२३।२२७ ई, १९३१।५२ ए बी।

'पक्षी चेतावनी' नामक एक ग्रन्थ और भी खोज मे मिला है।[१] यह निश्चय पूर्वक नही कहा जा सकता कि यह इन्ही क्षेमकरण मिश्र की रचना है अथवा नही। इस ग्रन्थ मे कवि की छाप खेमकर है। यह कवि भी ब्राह्मण है। क्षेमकरण मिश्र भी कभी-कभी अपनी छाप खेमकर रखते थे, जैसा कि रघुराज घनाक्षरी के ऊपर उद्धृत कवित्त से स्पष्ट है। सभवत. यह इन्ही क्षेमकरण मिश्र की रचना है। इस ग्रन्थ मे कुल ३१ दोहे हैं। प्रत्येक दोहे मे किसी न किसी पक्षी का नाम आया है। यह सभवतः शकुन विचार सम्बन्धी ग्रन्थ है। इसकी नायिका विरहिणी है। ग्रन्थ का दूसरा नाम 'चिरई चेतन' भी है।

> कहत खेमकर द्विज समुझि, खेमकरनि विश्राम
> नृपति सभा महँ चित्त दै, चिरई चेतन नाम ३१

२४४।२०१

(४) छेमकरन २, अतरवेद वाले। इनके कवित अच्छे है।

सर्वेक्षण

ग्रियर्सन (३११) और विनोद मे (१४४४, ११३७।१) धनौली वाले क्षेमकरण से इन अन्तर्वेद वाले क्षेमकरण को अभिन्न समझा गया हैं। अन्तरवेदी क्षेमकरण की छाप क्षेम है, जिसके खेम हो जाने की भी सभावना है। चिरई चेतन या पक्षी चेतावनी १९२६।२३५ इन अन्तरवेदी छेमकरण की भी रचना हो सकती है।

---

(१) खोज रि० १९२६।२३५

२४५।१९६

(५) छत्तन कवि। इनकी कविता बहुत विचित्र है।

सर्वेक्षण

छत्तन के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही।

२४६।१९८

(६) छत्रपति कवि।

सर्वेक्षण

ग्रियर्सन मे (७५) इनके विजय मुक्तावली वाले छत्र कवि होने की सभावना की गई है' इस कवि के भी सबध मे कोई सूचना सुलभ नही।

२४७।२००

(७) छेम कवि, स० १७५५ मे उ०।

सर्वेक्षण

पद्माकर के चाचा, मोहनलाल के बडे भाई, एव जनार्दन भट्ट के पुत्र 'क्षेमनिधि अपनी कविता मे क्षेम छाप रखते थे। क्षेमनिधि का जन्म मोहनलाल के जन्म (स० १७४३) के पहले कभी हुआ होगा। अत सरोज मे दिया हुआ क्षेम का स० १७५५ कवि का रचनाकाल है। पद्माकर के पुत्र अबुज के वशज भालचद्र ने महाकवि पद्माकर शीर्षक लेख मे इनका एक कवित्त उद्धृत किया है।[१]

२४८।२०२

(८) छबीले कवि ब्रजवासी। रागसागरोद्भव मे इनके पद हैं।

सर्वेक्षण

विनोद मे (३३२) इनका रचनाकाल स० १७०० दिया गया है। सूचना-सूत्र नही सूचित किया गया है। सूदन ने प्रणम्य कवियो की सूची मे इनका भी नामोल्लेख किया है, अत. यह संवत १८१० के पूर्ववर्ती अवश्य हैं।

२४९।२०३

(९) छैल कवि, स० १७५५ मे उ०। हजारा मे इनके कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

छैल की कविता कालिदास के हजारे में थी और हजारे का रचनाकाल स० १८७५ के आसपास है, अत. अधिक से अधिक यही कहा जा सकता है कि छैल कवि उक्त सवत् के लगभग उपस्थित थे।

एक छैल जौनपुर निवासी थे। यह राजाराम कायस्थ और शेख फतह मुहम्मद के आश्रित थे। इनका रचनाकाल नही ज्ञात है, जिससे इनके हजारा वाले छैल से अभेद स्थापित किया जा सके। इनका एक ग्रन्थ कवित्त नामक मिला है।[२]

---

(१) माधुरी वर्ष १२, खंड २, अक १, माघ १९९० (२) खोज रि० १९४४।११७

१. सहस धारा धारा बिथरिगो विमल किति
निति निति नई रुचि पुहुमी बिसेखिए
कायथ मयक महि मंडल मे मंडलीक
खंड खड सुखद प्रचड तेज पेखिए
गोवरधन तनै को पूरन प्रताप राजै
क्व-याहि थे राजाराम राजाराम लेखिए
करन करतूति रीति प्रीति धर्म द्वार जाके
जौनपुर माहि छैल छहु रितु देखिए १

२ छैल भनै कुरसै जु करै सिगडी गढ़ टूटत ख्याल सुनीके
श्री सेख फते मुहम्मद को जस फैलि चल्यो मुख माह गुनी के २

यह सिगडी आजमगढ जिले के अन्तर्गत सगडी तहसील तो नही है ?

२५०।२०४

(१०) छीत कवि, स० १७०५ मे उ० । ऐजन । हजारा मे इनके कवित्त हैं ।

सर्वेक्षण

हजारे मे इनकी रचना है, अत यह स० १८७५ के पूर्ववर्ती है । सरोज मे दिया हुआ स० १७०५ असदिग्ध रूप से न तो जन्मकाल माना जा सकता है, न रचनाकाल । सरोज मे इस कवि का शृगारी कवित्त उद्धृत है, जिससे यह कवि रीतिकालीन ज्ञात होता है और अष्टछापी छीत स्वामी से इसकी विभिन्नता भी सिद्ध हो जाती है । ग्रियर्सन मे (४१) दोनो को अभिन्न समझ लिया गया है ।

२५१।२०५

(११) छीत स्वामी, ब्रजवासी, स० १६०१ मे उ० । इनके पदराग कल्पद्रुम मे बहुत हैं । यह महाराज वल्लभाचार्य के पुत्र विट्ठलनाथ जी के शिष्य थे । इनकी गिनती अष्टछाप मे है ।

सर्वेक्षण

छीत स्वामी का जन्म स० १५७२ के लगभग मथुरा मे हुआ था । यह मथुरा के चौबे पडा, बीरबल के पुरोहित एव शैव मतावलबी थे । साथ ही दुष्ट प्रकृति के भी थे । मथुरा के प्रसिद्ध गुडो मे वे थे और छीतू चौबे के नाम से कुख्यात थे । स० १५९२ मे इन्होने गोस्वामी विट्ठलनाथ जी से वल्लभ सप्रदाय मे दीक्षा ली । दीक्षा लेने के अनन्तर यह गोवर्द्धन के पास पूँछरी नामक स्थान पर एक श्याम तमाल के नीचे रहने लगे । गोसाई विट्ठलनाथ के देहावसान के अनन्तर, ७० वर्ष की आयु मे, १६४२ मे ही, इनका भी देहावसान, पूँछरी मे हो गया । इनके मृत्यु-स्थल पर इनका स्मारक बना हुआ है ।[१]

छीत स्वामी का कोई ग्रन्थ नही । इनके २०१ फुटकर पद हैं, जो २०१२ मे विद्या विभाग, काँकरोली से सुसपादित होकर प्रकाशित हुए हैं ।

(१) अष्टछाप परिचय, पृष्ठ २६२-६३

भक्तमाल मे छीत स्वामी का नामोल्लेख भगवद्गुणगान करने वाले २२ भक्तो की सूची में छप्पय १४६ मे हुआ है।

२५२।२०७

(१२) छेदीराम कवि, स० १८६४ मे उ०। इन्होने कवि नेह नामक पिंगल बनाया है। यह कविता मे महा निपुण मालूम होते है। यद्यपि यह ग्रन्थ हमारे पुस्तकालय मे है, तथापि इनके ग्राम का नाम उसमे नही पाया गया।

सर्वेक्षण

कवि नेह पिंगल की रचना सं० १८९४ मे हुई। यही सवत् सरोज मे दिया हुआ है। सरोज मे रचनाकाल सूचक यह दोहा भी उद्धृत है —

मकर महीना पच्छ सित, सवतसर हर केह
जुग[४] ग्रह[९] वसु[८] जिव[१] कुज दिवस, जन्म लियो कवि नेह

विनोद के अनुसार (६८६) छेदीराम वैश्य थे, 'नेह' इनका उपनाम था, नेह पिंगल में 'नष्ट उदिष्ट मेरु मर्कटी पताका' इत्यादि कहे गए हे और ग्रथ २६० अनुष्टुप श्लोको के बराबर है। विनोद मे अक विपर्यय से १८६४ का १८४६ हो गया है।

२५३।

(१३) छत्र कवि, स० १६२५ मे उ०। इन्होने विजय मुक्तावली नामक ग्रन्थ अर्थात् भारत की कथा का बहुत ही सक्षेप से सूची-पत्र के तौर से नाना छन्दो मे वर्णन किया है।

सर्वेक्षण

छत्र कवि के तीन ग्रन्थ खोज मे मिले हैं —

(१) विक्रम चरित्र—१६३२।४४। इस ग्रन्थ मे विक्रमादित्य की कथा है। इसकी रचना अगहन पूर्णिमा, बुधवार को स० १७५१ मे हुई—

सवत सत्रह से इक्यावन
मारग सुदि पून्यो मनभावन
बिधु सुत बास (वार?) सदा सुखकारी
तादिन कीन्यो ग्रन्थ विचारी

उस समय दिल्ली मे औरङ्गजेब का शासन था .—

दिल्लीपुर अमरावती, सुरपति औरँगसाहि
गिरिवर गन अरि बस किए, अरु सम दीजै काहि

(२) विजय मुक्तावली—१६०६।२३, १६०६।४८, १६२६।८३ ए से के तक, कुल ११ प्रतियाँ। १६२६।६८ ए से ई तक, द १६३१।२१। सरोज मे इस ग्रन्थ का उल्लेख हुआ है इसकी रचना स० १७५७ मे हुई —

सवत सत्रह सै सपत ऊपर बाहि पचास
शुक्ल पच्छ एकादशी रच्यौ ग्रन्थ नभ मास

—खोज रि० १६०६।२३

इसमे बहुत सक्षेप मे महाभारत की कथा है।

(३) सुधा सार—१९२६।६८ एफ। यह श्रीमद्भागवत के दशम स्कध का भाषानुवाद है। इसकी रचना स० १७७६ मे हुई—

संवत सत्रह सै बरस और छिहत्तरि तत्र
चैत्र मास तिस अष्टमी ग्रथ कियो कवि छत्र

इन तीनो ग्रन्थो मे कवि ने अपना और अपने आश्रयदाताओ का परिचय दिया है। कवि का पूरा नाम छत्र सिह था। यह श्रीवास्तव कायस्थ थे। यह अँटेर राज्य भदावर ग्वालियर के निवासी थे। वह अँटेर नगर अब ग्वालियर मे है। भदावर के राजा का राज्य इधर बहुत सकुचित हो गया था। अँटेर भिड से हटकर उनका राजधानी आगरा जिले की बाह तहसील के नौगवाँ नामक गाँव मे आ गई थी।

मथुरा मंडल मे बसैं देस भदावर ग्राम
उगलत प्रसिद्ध महि छेत्र बटेश्वर नाम
सुजस सुवास सु निकट ही पुरी अटेरहि नाम
जप जाज्ञ होमादि व्रत रचन धाम प्रति धाम
नगर आहि अमरावती वासी विवुध समान
आखडल सों लसत तहँ भूपति सिंह कल्यान
श्रीवास्तव कायस्थ है छत्रसिंह यह नाम
रहत भदावर देस मे ग्रह अटेर सुख धाम
—बिजय मुक्तावली १९२६।६८ बी

छत्रसिंह के पिता का नाम भगीरथ और पितामह का नाम गोविन्द दास था —

श्रीवास्तव कायस्थ है अमर दास के वंस
गोविन्द दास भए प्रगट निज कुल के अवतस १४
तिनके भगीरथ भए कुल दीपक गुन ग्राम
तिनके प्रगटे निज तनय छत्रसिंह इहि नाम १५
—विक्रम चरित्र १९२०।४४

विजय मुक्तावली की रचना करते समय, स० १७५७ मे छत्र कवि भदावार नरेश कल्यान सिंह के आश्रय मे थे, किन्तु सुधासार की रचना के समय वही के गोपाल सिंह के आश्रय मे थे।

सोहहि सिंह गुपाल की कीर्ति दिसा बिदिसानि
भूतल खलभल अरिन के गहतु खर्ग जब पानि
भूपति भानु भदोरिया किरनि क्राति जुग छाइ
सुहृद सकल नृप के सुखद तम अरि गए बिलाइ
ताको सुखद अटेर पुर मुलुक भदावर माँहि
चारि वर्ण युत धर्म तहँ रहत भूप की छाह

खोज रिपोर्ट १९०६ और १९०९ मे प्रमाद से कल्यान सिंह अमरावती के राजा कहे गए हैं। वस्तुत. वह अहेर के राजा थे। अमरावती अटेर का उपमान है। विजय मुक्तावली से उद्धृत ऊपर वाले अश मे यह स्पष्ट देखा जा सकता है।

छत्र सिंह के ग्रन्थो के आधार पर स्पष्ट है कि इनका रचनाकाल स० १७५१ से १७७६ है। अत. सरोज मे दिया सवत् १६२५ ठीक नही।

२५४।२०८

(१४) छेम कवि २, वन्दीजन, डलमऊ के, स० १५८२ मे उ०। यह कवि हुमायूँ वादशाह के यहाँ थे।

सर्वेक्षण

हुमायूँ का शासनकाल स० १५८७-९७ है, अत. सरोज मे दिया हुआ सवत् कवि का रचनाकाल है। कवि के सवध मे कोई अन्य सूचना सुलभ नही।

२५५।२०९

(१) जगत सिंह विसेन, राजा गोडा के भाई वद, स० १७९८ मे उ०। यह कवि राजा गोडा और भिनगा के भैया थे और देउतहा नामक रियासत के ताल्लुकेदार थे। शिव कवि अरसेला वन्दीजन इन्ही के ग्राम देउतहा के वासी थे। उनसे काव्य पढकर यह महा विचित्र कविता की है। छन्द श्रृङ्गार ग्रन्थ पिंगल मे और साहित्य सुधानिधि नामक ग्रन्थ अलकार मे वनाए हैं, पर वे हमारे पुस्तकालय मे नही हैं।

सर्वेक्षण

जगत सिंह विसेन ठाकुर थे। यह भिनगा जिला वहराइच के ताल्लुकेदार ठाकुर दिग्विजय सिंह के पुत्र थे। यह सरजू के उत्तरी किनारे पर स्थित देउतहा, जिला गोडा मे रहा करते थे। इनका रचनाकाल सवत १८२० से १८७७ तक है, जो खोज मे प्राप्त इनके १२ ग्रन्थो से ज्ञात होता है। अत. सरोज मे दिया हुआ सवत् १७९८ इनके जन्मकाल के निकट है। हा, यदि यह ईस्वी-सन् हो तो रचनाकाल भी हो सकता है।

खोज मे इनके निम्नाकित १२ ग्रथ मिले हैं —

(१) अलकार साठि दर्पण—१९२३।१७९ ए। लगभग २०० के अलकार कहे गए हैं, जिनके हजारो भेदोपभेद हैं। इनमे से मम्मट ने ६० मुख्य अलकार चुन लिए थे। मम्मट के आधार पर इन ६० अलकारो का वर्णन इस ग्रथ मे हुआ है।

सत सहस्र मथि साठि जे मम्मट लिए निकारि
तिनै प्रगट भाषा करौ नाना शास्त्र विचारि ६

यह ग्रन्थ 'साहित्य सुधानिधि' के वाद की रचना है जिसका उल्लेख इस साठि मे हुआ है :—

कहे एक सै आठ जे अलंकार परिमान
भरत सूत्र के मत समुझि अगनित भेद वखान १२३
मम कृत साहित सुधानिधि कह्यो सवै तेहि माह
अलकार वामैं सवै जानि लेहु कवि नाह १२४

इस ग्रन्थ मे कुल १२४ दोहे हैं। पुष्पिका मे इन्हे श्रीमन्महाराजकुमार विशेनवशावतस दिग्विजयसिंहात्मज जगत कवि कहा गया है। इससे इनकी जाति और इनके पिता का नाम ज्ञात होता है। राज वश के होने के कारण यह अपने को महाराजकुमार कहते थे। पुष्पिका से ही इसका रचनाकाल स० १८६४ ज्ञात होता है।

(२) उत्तम मजरी—१९२३।१७९ ओ। यह चार पन्ने का छोटा सा ग्रन्थ है। इसमे विहारी सतसई के चुने हुए १८ दोहो की टीका है। ये दोहे उत्तम काव्य, व्यग, के उत्कृष्ट नमूने हैं। यह साहित्य सुधानिधि की परवर्ती रचना है। इसमे लक्षण साहित्य सुधानिधि से दिए गए हैं और उदाहरण विहारी सतसई से।

अलंकार चुनि वनि सहित दोष रहित रसखान
सतसैया मथि कैं रच्यो उत्तम काव्य प्रमान

रचनाकाल नही दिया गया है।

(३) चित्र मीमासा या चित्र काव्य—१९०९।१२७ वी, १९२०।६४ सी। यद्यपि भरत आदि ने चित्र काव्य की चर्चा नही की है, पर व्यास के अनुसार, और कवियो के आग्रह से जगत सिंह ने इस ग्रथ की रचना की है।

चित्र काव्य भरतादि मत नहीं कियो परिमान
तदपि व्यास मत समझि कै करत पत्त सज्ञान २

(४) जगत प्रकाश—१९२३।१७९ सी। दोहो मे नायक नायिका का नखशिख वर्णन है। यह रस मृगाक के बाद की रचना है, क्योकि इसमे इसका नामोल्लेख हुआ है। ग्रन्थ का रचनाकाल स० १८६५ है।

घर तरु रस वसु ससी कहि, वितसर रवबार
माधव सित सुख सप्तमी लियो ग्रन्थ अवतार ३

(५) जगत विलास—१९२६।१९२ ए। या रसिकप्रिया का तिलक १९२३।१७९ एच, आई, जे। टीका गद्य मे है।

(६) नायिका दर्श—१९२३।१७९ ई। इस ग्रथ मे कुल ११८ छन्द हैं, १ छप्पय, ३३ दोहे, ८४ कवित्त। ग्रन्थ नखशिख सम्बन्धी है। इसका रचनाकाल स० १८७७ है।

संवत नग[७] नग[७] नाग[८] ससि[१] ससि बासर सुभ चारु
माधव सित तिथि पंचमी, लियो ग्रन्थ अवतारु

१९०९।१२७ सी पर वर्णित नखशिख इसी ग्रन्थ की एक खडित प्रति है, जिसमे ५९ ही छद है।

(७) नखशिख—१९२३।१७९ डी। यह ऊपर वर्णित ग्रन्थ से पूर्णतया भिन्न है। रचनाकाल नही दिया गया है। इसमे नायिका के अगो के वर्णन के साथ-साथ राधाकृष्ण का मिलन आदि भी वर्णित है। इसमे कवित्त सवैये प्रयुक्त हुए हे।

(८) भारती कठाभरण—१९२३।१७९ वी, १९४७।१०६ क। यह पिंगल ग्रन्थ है। इसमे कुल ५५५ छन्द हैं।

पचावन अरु पाच सै, सकलछन्द परिमाण
सेस मतो उर आनि कै, भाषा कियो विधान

प्राप्त प्रति का लिपिकाल स० १८६४ है। शिवसिह ने सभवत इसी ग्रन्थ का उल्लेख छन्द शृङ्गार नाम से किया है। इसमे कवि ने अपने वश का भी वर्णन किया है। वत्स गोत्र मे मयूर नामक कवि हुए हे। उन्ही मयूर के वश मे विसेन हुए। विसेनो ने मझौली मे राज्य किया। इसी

वश के एक राजकुमार ने गोडा राज जीता। इस राजकुमार का नाम प्रतापमल था। इनके पुत्र साहिमल्ल हुए। साहिमल्ल के कुसुम सिंह हुए। कुसुम सिंह के मान सिंह हुए, जिनकी प्रशसा स्वय दिल्लीपति ने की। मान सिंह के लछिमन सिंह हुए, लछिमन सिंह के नरवाहन हुए। नरबाहन के पुत्र दुर्जन सिंह और दुर्जन सिंह के पुत्र अमर सिंह हुए। अमर सिंह के रामचन्द्र, रामचन्द्र के दत्तसिंह, दत्तसिंह के उदवतसिंह हुए। दत्तसिह के छोटे भाई का नाम भवानी सिंह था, जो नरसिंह सदृश थे। इन भवानी सिंह ने अजवार क्षत्रियो को हराकर भिनगा राज्य की स्थापना की। इनके पुत्र का नाम वरिवड था। वरिवड सिंह के पुत्र का नाम दिग्विजय सिंह था। इन्ही दिग्विजय सिंह के पुत्र जगत सिंह हुए, जो इस ग्रन्थ के रचयिता है। इन्हे द्योतहरी गाँव जागीर मे मिला था।

दत्तसिह को वधु लघु नाम भवानी सिंह
हाटक कस्यप रिपु भए उदै आय नरसिंह २३
महा जुद्ध कीने अमित जानत सब ससार
बसि लीन्हे भिनगा सकल भाजे सब जनवार २४
भरत खण्ड मण्डन भयो ताको सुत वरिवंड
जिन उजीर सों रन रचे अपने ही भुजदंड २५
शिव पुरान भाषा कियो जानत सब संसार
सकल शास्त्र को देखि मत सुने पुरान अपार २६
ता सुत भो दिग्विजय सिह सकल गुनन को खानि
सबै महीपति भूमि के राखत जाकी आनि २७
जाहिर था ससार में जस विवेक को ऐन
जाके गुन जानै गुनी जो देखै निज नैन २८
जगत सिह ताको तनय वंदि पिता के पाय
पिंगल मत भाषा करत छमियो सब कविराय २९

(९) रत्न मजरी कोष—१९२३।१७९ एल। क से ह तक और क्ष तथा स्वरो के नाम सज्ञा का वर्णन। कुल ६१ दोहे। रचनाकाल स० १८६३ :—

कहे राम[३] रस[६] नाग[८] ससि[१] कातिक दुतिया सेत
जगत सिह भाषा कियो जानि लेहु कवि हेतु ६०

यह ग्रन्थ क्षपणक के अनुसार है।

छपनक, मतो विचारि के निज मति के अनुसार
रतन मजरी नाम कहि रचे कवित करतार ६१

(१०) रस मृगाक—१९२३।१७९ के। इस ग्रन्थ मे रस, अलकार, नखशिख और नायिका-भेद, सभी कुछ है। इसमे केवल उदाहरण है, लक्षण नही। इसमे सब दोहे ही दोहे हैं। लिपिकाल स० १८६३ है। यही रचनाकाल भी हो सकता है।

(११) रामचन्द्र चन्द्रिका—१९२३।१७९ एफ। या राम चन्द्रिका की चन्द्रिका १९२३।१७९ जी। कवि ने राम चन्द्रिका के छन्दो के लक्षण इस ग्रन्थ मे दिए हैं।

केशवदास प्रकास करि, राम चन्द्रिका चारु
बहु छन्दनि जुत पावनी राम चरित सुख सारु १

छंद ज्ञान जिनको नही, लिखि लिखि कियो अशुद्ध
ताते मै लच्छन कियो, होइ न छन्द विरुद्ध

(१२) साहित्य सुधानिधि—१९०९।१२७ ए, १९२०।६४ ए बी, १९२३।१७९ एम, एन, १९२६।१९२ बी, १९४७।१०६ ख। यह ग्रन्थ वरवै छन्दो मे रचा गया है। इसमे कुल ६३६ वरवै हैं। ग्रन्थ १० तरङ्गो मे विभक्त है।

कहे छ सै छत्तीसै वरवै वीनि
दस तरङ्ग कर जानी ग्रथ नवीन

ग्रन्थ की रचना स० १८५८ मे हुई।

सवत वसु[८] सर[५] वसु[८] ससि[१] अरु गुरुवार
शुक्ल पचमी भादों रच्यो उदार

प्रथम तरग मे काव्य निरूपण उत्तम मध्यम अधम, द्वितोय मे शब्द निरूपण, तृतीय मे उत्तम और मध्यम गुणीभूत काव्य, चतुर्थ मे कुटिला वृत्ति लक्षणा, पचम मे सरलावृत्ति अभिधा, षष्ट मे अलकार, सप्तम मे गुण, अष्टम मे भाव, नवम मे रीति, दशम मे दोष वर्णित हैं। ग्रन्थ मे कवि ने दो वरवो मे अपने निवास स्थान का भी परिचय दिया है, जो सरोज मे भी उद्धृत है।

श्री सरजू के उत्तर गोंडा ग्राम
तेहि पुर बसत कविन गन आठों जाम
तिन महँ एक अल्प कवि अति मतिमन्द
जगत सिंह सो बरनत बरवै छन्द

ग्रन्थ सस्कृत के पुराने साहित्याचार्यो के आधार पर रचा गया है। यह रसमृगाक का परवर्ती ग्रन्थ है। कवि ने नायिका भेद आदि को रसमृगाक मे देखने का निर्देश किया है।

नायिकादि संचारी सात्विक हाव
रसमृगाक ते जानौ सब कविराव

विनोद मे (८७९) चित्र मीमासा और चित्र काव्य, दो अलग ग्रन्थ मान लिए गए हैं। इसमे छन्द शृगार ग्रन्थ भी दिया गया है और न जाने किस आधार पर इसका रचनाकाल स० १८२७ स्वीकार किया गया है।

२५६।२१५

(२) जुगुल किशोर भट्ट २, कैथलवासी, स० १७९५ मे उ०। यह महाराज मुहम्मदशाह के बड़े मुसाहबो मे थे। इन्होने सवत् १८०३ मे 'अलकार निधि' नामक एक ग्रन्थ अलकार का अद्वितीय बनाया है, जिसमे ६९ अलकार उदाहरण समेत वर्णन किए है। उसी ग्रन्थ मे ये दोहे अपने नाम और सभा के समाचार मे कहे हैं।

दोहा—ब्रह्मभट्ट हौ जाति को, निपट अधीन नदान
राजा पद मोको दियो, महमद साह सुजान १
चारि हमारी सभा मे, कवि कोविद मति चारु
सदा रहत आनद बढ़े, रस को करत विचारु २

मिश्र रुद्रमनि विप्रवर और सुखलाल रसाल
सतजीव सु गुमान हैं, सोभित गुनन बिसाल ३

सर्वेक्षण

अलंकार निधि की एक प्रति खोज मे मिली हैं।[१] इसमे कवि ने अपने सम्बन्ध मे अनेक सूचनाएँ दी है। कवि जाति का ब्रह्म भट्ट था। बादशाह महम्मदशाह ने (राज्यकाल स० १७७६-१८०५ वि०) इसे राजा का पद दिया था। इनकी सभा मे रुद्रमणि, सुखलाल, सतजीव, गुमान, आदि चार प्रसिद्ध कवि थे। यह सब सूचनाएँ सरोज उद्धृत दोहो से मिल जाती हैं। ग्रन्थ मे और भी परिचयात्मक दोहे है, जिनसे ज्ञात होता है कि इनके पिता का नाम बालकृष्ण और पितामह का निहबल राम था, स्वय इनका पूरा नाम जुगल किशोर था। इनके छह पुत्र थे। इनका जन्म-स्थान कैथल था। यह दिल्ली मे सुखपूर्वक रहते थे।

जुगल किसोर सु नाम हे, बालकृष्ण मो तात
दादो निहबल राम है, छ अमल सुत अवदात ४
कैथल जन्म स्थान है, दिल्ली है सुखवास
जामे विविध प्रकार है, रस कौ अधिक विलास ५

सरोज के अनुसार इसकी रचना स० १८०३ मे हुई थी, पर वस्तुतः इसकी रचना स० १८०५ मे हुई।

सर[५] नभ[०] वसु[८] ससि[१] सहित है संवत फागुन मास
कृष्ण पच्छ नौमी बुधौ पूर्यो ग्रथ विलास ४२

इस ग्रथ के ७७ सख्यक किशोर भी यही है। दोनो कवियो का पूरा नाम जुगुल किशोर है, दोनो वन्दीजन है, दोनो दिल्ली मे रहते थे, दोनो बादशाह मुहम्मदशाह के आश्रित थे। इनके किशोर सग्रह की कोई प्रति खोज मे नही मिली है। इनके दो अन्य सग्रह मिले है, जिनमे किशोर सग्रह के ही समान अन्य कवियो की भी रचनाएँ सकलित है। ये सग्रह है, 'कवित्त सग्रह' (१९२३।२१२) और 'फुटकर कवित्त' (१९०२।५९) कवित्त सग्रह मे पद्माकर, गुलाल, किशोर, मडन, भूधर, महबूब और परसाद के ४३ कवित्त सकलित हैं।

ग्रियर्सन (३४८) के अनुसार कैथल पजाब के करनाल जिले मे है।

२५७।२१४

(३) जुगुल किशोर कवि १। इनके शृंगार रस मे कवित्त अच्छे है।

सर्वेक्षण

इस नाम के तीन कवि अभी तक खोज मे मिले हैं। इनमे से किस के साथ सरोज के इस कवि का अभेद स्थापित किया जाय, कहना कठिन है।

(१) जुगल किशोर—१९०६।२७५। जुगल आह्निक इनकी रचना है। इसमे राधाकृष्ण का दैनिक कार्य-क्रम है। यह अष्टयाम-सा है। सरोज मे दिया हुआ कवित्त इसी ग्रन्थ का प्रतीत होता है। विनोद मे (१४६६) इस कवि का उल्लेख अज्ञात कालिक प्रकरण मे हुआ है।

---

(१) खोज रि० १९०३।१४२

(२) युगलकिशोर मिश्र—१६२६।५०८, १६१२।८७ वी रिपोर्टो मे इनके युगल कृत नामक ग्रन्थ का उल्लेख है। वस्तुत' पदो मे लिखित यह ग्रथ जुगल दान[१] की रचना है।

(३) युगल किशोर चारण—यह लिबडी राज्य के चारण थे। यह स० १६३५ मे उपस्थित थे।[२] इनके पूर्वज सम्भवतः पजाबी थे। यह महाराज जसवन्त सिंह के आश्रित थे।[३]

२५८।२३०

(४) युगराज कवि। इनका बहुत ही सरस काव्य है।

सर्वेक्षण

इस कवि के सबध मे कोई सूचना सुलभ नही। विनोद मे (१४६५) इस सरस कवि को बहुत ही निम्न श्रेणी दी गई है।

२५६।२४८

(५) जुगुल प्रसाद चौबे। इनकी बनाई हुई दोहावली बहुत सुन्दर है।

सर्वेक्षण

विनोद मे (१४६७।१) प्रथम त्रैवार्षिक खोज रिपोर्ट के आधार पर इनके 'रामचरित्र-दोहावली' नामक ग्रन्थ का उल्लेख है। सभवत यही सरोज वर्णित दोहावली है, पर सरोज के अन्तर्गत जो रचना दोहावलो से उद्धृत है, वह न तो दोहा है, न राम चरित्र। वह तो रोला छन्द मे राधा-कृष्ण काव्य है।

पट भूषन अनुराग सहज सिंगार जुगल वर
रसनिधि रूप अनूप वैस ऐस्वर्य गुनन गुर
लीला पट ऋतु दान मान मंजुल मन मोदी
भोजन सदन विहार करैं ललिता की गोदी—सरोज, पृष्ठ ११७

२६०।२४३

(६) जुगुल कवि, स० १७५५ मे उ०। इनके बनाए हुए पद अति अनूठे एव महा ललित हैं।

सर्वेक्षण

ग्रियर्सन (३१३) मे इस ग्रन्थ के इन २६० सख्यक जुगुल कवि और ३०३ सख्यक जुगुलदास की अभिन्नता की सम्भावना की गई है। इस सम्भावना मे सार है। दोनो पद रचयिता हैं। जुगुलदास अपने पदो मे जुगुल और जुगुलदास दोनो छाप रखते हैं। सरोज मे जुगुलदास की कोई रचना उद्धृत नही है, जुगुल कवि का एक पद उद्धृत है जो राधावल्लभी सप्रदाय के पूर्ण रूपेण अनुकूल है। इसके अन्तिम दो चरण ये हैं —

---

(१) यही ग्रन्थ, कवि संख्या ३०३ (२) विनोद कवि संख्या २३३२।१ (३) माधुरी, जून १६२७, 'गुजरात का हिन्दी साहित्य' शीर्षक लेख।

मंद मंद मुसकात परसपर प्रेम के फन्द परे हैं
छतियाँ जुगुल जुगुल सियरावत वतियाँ करत खरे हैं

खोज रिपोर्टो मे जुगुलदास के ५ पूर्ण और १ अपूर्ण पद उद्धृत हैं। अपूर्ण पद मे कवि छाप नही है, ३ पूर्ण पदो मे जुगुल छाप है और २ मे जुगुलदास। जुगुल छाप वाले पद :—

१ मैन के जाल विसाल नैन दोउ मैन फँसी ऐसो को न फँसी है
जुगुल जाहि अनुराग न या छवि ताहि त्यागि मुँह लाइ मसी है
२ सुर मुनि गावत पार न पावत जा जस दस आठ चार पट
जुगुल जाहि सिव धरत समाधा, ताहि लगी राधा राधा रट—१९१२।८७ बी

३ ब्रह्म सनातन सहित प्रेम
जुगुल कियौ वस विनहि नेम—१९२६।२११

जुगुलदास छाप वाले पद —

१ चमक परत वनत मास, पुहमि सुहमि पर प्रकास,
ठान्यो जनु दुतिय रास, निरखत अधिकारी
सव विधि मति मन्द जासु, वरनत कवि जुगुलदास,
दीजै रति रसिक रास, आन आस टारी—१९१२।८७ बी

२ जुगुलदास जस कीट अग
कृष्ण सुमिरि हो कृष्ण रंग—१९२६।२११

जुगुलदास का रचनाकाल स० १८२१ है।[1]सरोज मे जुगुल का समय स० १७५५ दिया गया है। इसे कवि का जन्मकाल माना जा सकता है।

२६१।२२१

(७) जानकी प्रसाद पँवार, जोहे वनकटी, जिले रायवरेली। वि०। यह कवि ठाकुर भवानी प्रसाद के पुत्र फारसी, सस्कृत, भाषा इत्यादि विद्याओ मे वहुत प्रवीण है। इनके वनाए हुए वहुत ग्रन्थ हमारे पास है। उर्दू जवान मे शाहनामा अर्थात् हिन्दुस्तान की तारीख, और भाषा मे रघुवीर ध्यानावली, राम नवरत्न, भगवती विनय, रामनिवास रामायण रामानन्द विहार, नीति विलास, ये सात ग्रन्थ हैं। यह चित्रकाव्य और शांत रस के वर्णन मे वहुत अच्छे हैं। इनमे सहनशीलता उदारता भी वहुत है।

सर्वेक्षण

मातादीन मिश्र ने इनको जुहवा ग्राम रायवरेली का रहने वाला कहा है। इन्हें जीवित कवियो मे माना है, जैसा कि ये थे भी। इनकी नीति व्यवहार सम्बन्धी एक पुस्तक का उल्लेख है जिसमे

---

(१) यही ग्रंथ, कवि सख्या ३०३

३६० कवित्त थे ।[1] विनोद (१८१२) के अनुसार इनका 'नीति विलास' नामक ग्रन्थ १६०६ मे छपा था । इसमे ३६१ कवित्त थे । यह वही ग्रथ है जिसकी ओर सकेत मातादीन जी ने किया है ।

जानकी प्रसाद जी अपनी रचनाओ मे कभी-कभी पूरा नाम रखते थे, कभी-कभी केवल पसार । खोज मे इनके दो ग्रन्थ मिले है —

(१) भगवती विनय १६२६।१६६ए, १६४७।१३० क ।

(२) राम नवरत्न १६२६।१६६ बी, १६४७।१३० ख । इस ग्रन्थ का रचनाकाल स०१६०८ है ।

भई पूर्ण ज्यों पूर्णिमा चद आनन्दमै जैति श्री राम निर्भेद गीता
तिथी कातिकी पूर्णिमा विक्रमादित्त, उन्नीस सै अष्ट संवत पुनीता

इस ग्रन्थ मे कवि ने अपने प्रपितामह का नाम निहाल सिंह, पितामह का नाम झाऊ सिंह और पिता का नाम भवानी सिंह दिया है :—

नाम निहाल सिंह जग जाहिर
झाऊ सिंह तासु सुत माहिर
तासु भवानी सुवन सुजाना
ताकै मै मतिमन्द अजाना

इस ग्रन्थ मे नव विनय है :—

(१) अवधी भाषा मे २५१ छन्दो मे देवी देवताओ आदि की वदना
(२) नाम की ओर चित्ताकृष्ट करने वाले ५१ छन्द
(३) राम नाम का माहात्म्य ५१ छन्द
(४) कृष्ण-लीला १०१ छन्द
(५) राम-कृष्ण की प्रार्थना के १०१ छन्द, चित्र काव्य
(६) व्रजभाषा मे स्तुतियाँ
(७) राम-स्तुति ५१ छन्द
(८) पजावी ढङ्ग पर वाह गुरु की वदना
(९) पूर्वीय भाषा मे १२३ छन्दो मे राम भक्ति

ग्रन्थकार ने इस ग्रन्थ मे अपने निवास स्थान का भी वर्णन कर दिया है ।

राम कृपा ते पद रति माते जमीदार पुर जोहवै
दच्छिन गगा डेढ कोस है परगन डलमरू सोहवै

इसके अनुसार इनका गाँव जोहवै है, जो गगा से डेढ कोस दक्षिण रायबरेली जिले के डलमऊ परगने मे स्थित है । यह जमीदार के रहने की जगह है ।

२६२।२२२

(८) जानकी प्रसाद २ । दुशाले की याचना सिंहराज से करने का केवल एक कवित्त हमने पाया है ।

---

(१) कवित्त रत्नाकर भाग २, कवि सख्या ८

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही।

२६३।२२३

(९) जानकी प्रसाद कवि वनारसी ३, स० १८६० मे उ०। इन्होने सवत् १८७१ मे केशव कृत रामचन्द्रिका ग्रन्थ की टीका वनाई है, और युक्ति रामायण नाम ग्रन्थ रचा है, जिसके ऊपर घनीराम कवि ने तिलक किया हे।

सर्वेक्षण

देवकी नन्दन की प्रसिद्ध हवेली वाले काशी नरेश के भाई देवकीनन्दन के पुत्र का नाम जानकी प्रसाद था। विहारी सतसई की सतसैयावर्णार्थ देवकी नन्दन टीका के रचयिता असनी वाले ठाकुर देवको नन्दन के यहाँ थे। इन ठाकुर के पुत्र धनीराम जानकी प्रसाद के आश्रय मे थे। इन्ही धनीराम के पुत्र प्रसिद्ध कवि सेवक हुए।

जानकी प्रसाद ने केशव कृत राम चन्द्रिका की जो टीका वनाई है, उसी का नाम राम भक्ति प्रकाशिका है। विनोद (११३१) मे इस एक ग्रन्थ को दो ग्रन्थ समझ लिया गया है। यह टीका स० १८७२ मे वनी थी, न कि १८७१ मे, जैसा कि सरोज मे लिखा है। खोज मे इसकी ३ प्रतियाँ मिली है।[1]

जानकी प्रसाद कृत युक्ति रामायण की दो प्रतियाँ खोज मे मिली है।[2] धनीराम ने इस ग्रन्थ की टीका तत्वार्थ प्रदीप नाम से की है। इस ग्रन्थ की भी एक प्रति खोज मे मिली है।[3] अप्रकाशित सक्षिप्त रिपोर्ट मे लिखा गया है कि यह रचना भूल से जानकी प्रसाद के नाम से चढ गई है, है धनीराम की ही। पर रिपोर्टों मे उपलब्ध सारी सामग्री के अध्ययन से यह वात ठीक नही प्रतीत होती, सरोज की ही वात ठीक सिद्ध होती हैं। तत्वार्थ प्रदीप के अन्त मे दो पुष्पिकाएँ है। पहली मूल ग्रन्थ के अन्त मे, दूसरी टीका के अन्त मे। पहली पुष्पिका मे मूल ग्रन्थ के रचयिता का नाम जानकी प्रसाद दिया गया है—

इति जानकी प्रसाद विरचिते युक्ति रामायण प्रतिहार सर्ग ७

दूसरी पुष्पिका मे टीकाकार का नाम धनीराम दिया गया है—

इति श्री धनीराम विरचितस्य तत्वार्थ प्रदीपस्य समाप्त. सवत् १९६३ अश्वनि मासे कृश्न पक्षे अमावस्या ग्रन्थ समाप्त.।

२६४।२१३

(१०) जनकेश भाट, मऊ, बुन्देलखड, स० १९१२ मे उ०। यह कवि छत्रपुर मे राजा के यहा नौकर है। इनका काव्य बहुत मधुर है।

---

(१) खोज रि० १९०३।२०, १०४७।१२६ क, ख (२) खोज रि० १९२६।१९७, १९४१।८० (३) खोज रि० १९२६।१०३

सर्वेक्षण

मऊ झासी जिले मे है। स० १९१२ कवि का उपस्थिति काल ही होना चाहिए, क्योकि यदि इसे जन्मकाल माना जायगा तो सरोज के प्रणयनकाल मे कवि की वय केवल २३ वर्ष की होगी, जो प्रसिद्धि प्राप्त करने के लिए पर्याप्त नही है। सूचना का अन्य कोई सूत्र सुलभ नही।

२६५।२२६

(११) जसवन्त सिंह बघेले, राजा तिरवा, जिले कन्नौज, स० १८५५ मे उ०। यह महाराज सस्कृत, भाषा, फारसी आदि मे बडे पडित थे। अष्टादश पुराण और नाना ग्रन्थ साहित्य इत्यादि सब शास्त्रो के इकट्ठे किए। शृङ्गार शिरोमणि ग्रन्थ नायिका भेद का, भाषा भूषण अलकार का और शालिहोत्र, ये तीन ग्रन्थ इनके बनाए हुए बहुत अद्भुत है। सम्वत् १८७१ मे स्वर्गवास हुआ।

सर्वेक्षण

जसवत सिंह बघेल क्षत्रिय थे। यह फर्रुखाबाद जिले के अतर्गत स्थित तिरवा के राजा थे। शृङ्गार शिरोमणि की अनेक प्रतियाँ खोज मे मिली हैं।[1] पर इनसे कवि के विषय मे कोई सूचना नही मिलती। यह रस ग्रन्थ है। इसमे अन्य कवियो के भी उदाहरण हैं। विनोद (११०५) के अनुसार इनका रचनाकाल स० १८५६ है। शालिहोत्र की कोई प्रति अभी तक नही मिली है, भाषा भूषण तिरवा नरेश जसवत सिंह की रचना नही है। यह जोधपुर नरेश प्रसिद्ध जसवन्त सिंह राठौर की रचना है।

यह सस्कृत विद्या मे पडित, बडे कवि, शूर, योगी तथा पडित कवि और गुणी लोगो का आदर करने वाले थे। इनके पुस्तकालय मे अठारहो पुराण मूल सस्कृत मे थे। ये स० १९३० मे इनके पौत्र राजा इन्द्र नारायण के यहाँ विद्यमान थे। इनके कोई पुत्र नही था, अत इन्होने अपने भाई के पुत्र को गोद लिया था। इनकी मृत्यु स० १८७१ मे हुई। इनके पश्चात इनके अनुज प्रीतम सिंह स्थानापन्न हुए।[2]

सभा के अप्रकाशित सक्षिप्त विवरण के अनुसार प्रसिद्ध कवि ग्वाल ने इन्ही जसवन्त सिंह के आश्रय मे रहकर रसिकानन्द नामक ग्रन्थ की रचना की, यह कथन ठीक नही। ग्वाल ने रसिकानन्द की रचना स० १८७९ मे नाभा नरेश जसवन्त सिह के नाम पर की थी। उक्त ग्रन्थ मे नाभा नाभा राज वश आदि का पूरा वर्णन प्रारम्भ के ४-२५ छन्दो मे हुआ है।[3]

२६६।२३७

(१२) जसवन्त कवि २, स० १७३२ मे उ०। इनके कवित्त हजारा मे हैं।

सर्वेक्षण

खोज मे स० १७५० के पूर्व दो जसवन्त मिलते हैं। एक हैं जसवन्त सिंह स्थविर जैन, सारङ्गपुर, मालवा निवासी, जिन्होने स० १६६४ मे कर्मरेख की चौपाई लिखी।[4] दूसरे हैं जोधपुर नरेश प्रसिद्ध जसवन्त सिंह राठौर। सम्भवत इन्ही दूसरे जसवन्त की रचना हजारे मे रही होगी।

---

(१) खोज रि० १९०३।१२६, १९२३।१८४ ए बी सी डी, १९२६।२०२ (२) कवित्त रत्नाकर, भाग १, कवि सख्या १७ (३) राज० रि०, भाग ३, पृष्ठ १४४।४५ (४) द १९३१।४२

जसवन्त सिंह जोधपुर के महाराज गज सिंह के पुत्र और सूर सिंह के पौत्र थे। यह अजीत सिंह के पिता थे। इनका जन्म स० १६८३ मे हुआ था। इनका राज्यकाल स० १६९५ से १७३५ तक है। यह बादशाह शाहजहा के कृपा पात्र थे। बलख और कधार की लडाइयो मे यह अटक पार गए थे। यह दक्षिण मालवा और गुजरात के सूबेदार भी थे। औरङ्गजेब के भाई शुजा से मिलकर इन्होने औरङ्गजेब से युद्ध किया था। और उसका खजाना लूटकर जोधपुर ले गए थे। औरगजेब ने इन्हे फिर गुजरात का सूबेदार बनाया था और शिवा जी का दमन करने को भेजा था, किन्तु इन्होने उन्हें विशेष कष्ट नही दिया। अतः बादशाह ने अप्रसन्न होकर इन्हे काबुल भेज दिया, जहा ६ वर्ष रह कर इन्होने पठानो को दबाया। वही जमुर्रद नदी के किनारे स० १७३५ मे इनका देहावसान हुआ।

खोज के अनुसार आगरे के प्रसिद्ध कवि सूरति मिश्र इनके काव्य गुरु थे, [1] पर यह बात ठीक नही। सूरति मिश्र का रचनाकाल स०१७६६-१८०० है[2] और जसवन्त सिंह का देहान्त स० १७३५ मे हो गया था। अत दोनो का भेट भी सभव नही, गुरु शिष्य होना तो दूर की बात है।

जसवन्त सिंह के निम्नाकित ग्रन्थ खोज मे मिले हैं .—

(१) अनुभव प्रकाश १९०१।७२, १९०४।१५०, राज० रि०, भाग १। इस ग्रन्थ मे ईश्वर और माया का वर्णन है।

(२) आनन्द विलास १९०१।७३, १९०४।१७, राज० रि०, भाग १। इसमे शकर के अनुसार वेदान्त कथन है। इसका रचनाकाल स० १७२४, कार्तिक सुदी १०, बुधवार है।

संवत सत्रह सै बरस ता ऊपर चौबीस
सुकुल पक्ष कार्तिक विषे दसमी सुत रजनीस

(३) अपरोक्ष सिद्धान्त १९०१।७१. १९०४।१४, १९२६।२०१ ए राज० रि०, भाग १। इसमे आत्म तत्त्व का विवेक है।

(४) इच्छा विवेक—राज० रि०, भाग १। इसमे केवल ६ कवित्त है।

(५) प्रबोध चन्द्रोदय नाटक—१९०४।२२, राज० रि० भाग १

(६) भाषा भूषण १९०४।४७, १९०६।१७६, २५१, १९२०।७०, १९२३।१८३ ए बी सी डी ई एफ, १९२६।२०१ बी सी डी ई, १९२९।१७०, द १९३१।४३, राज० रि०, भाग १। यही जसवन्त सिंह का सर्वाधिक ख्यात ग्रन्थ है। यह अलकार ग्रन्थ है। इसमे एक ही दोहे मे लक्षण और उदाहरण दिए गए है। इसकी बहुत सी टीकाएँ हुई है। यह ग्रन्थ काव्य की दृष्टि से नही लिखा गया है, आचार्यत्व की दृष्टि से लिखा गया है। यह कवियो मे आचार्य गिने भी जाते हैं। भाषा भूषण की कुछ प्रतियो मे कतिपय अन्य साहित्याग भी मिलते है।

(७) सिद्धान्त बोध—१९०४।१६, राज० रि०, भाग १। इसमे ब्रह्मज्ञान का विवेचन है।

(८) सिद्धान्त सार—१९०४।४६, राज० रि०, भाग १। मोक्ष और आत्मज्ञान का निरूपण इसका विषय है।

---

(१) खोज रि० १९०१।८६ (२) देखिए, यही ग्रथ, सूरति मिश्र_ कवि संख्या ९३१

२६७।२१०

(१३) जवाहिर कवि १, भाट बिलग्रामी, स० १८८५ मे उ० । इन्होने जवाहिर रत्नाकर नामक ग्रन्थ बहुत सुन्दर बनाया है ।

सर्वेक्षण

जवाहिर राय, बिलग्राम, जिला हरदोई के भाट थे । इनके पिता का नाम रतन राय था । जवाहिर के निम्नलिखित तीन ग्रन्थ खोज मे मिले है —

(१) जवाहर रत्नाकर—१६१२।८४ बी । यह अलकार का ग्रथ है । इसमे कुल ४६४ छन्द हैं। यह स० १८२६, भादो सुदी ७, गुरुवार को पूर्ण हुआ ।

भादों सुदि तिथि सप्तमी और वार गुरुवार
अठारह सत सिती औ षट सम्वत् चारु
संभु कृपा अपार ते सुभ दिन अरु सुभवार
सिरी नगर बिलग्राम में भयो ग्रंथ अवतार

कवि के किसी पूर्वज परशुराम को गो० तुलसीदास ने अपने हाथ की लिखी रामचरित मानस की एक प्रति दी थी —

स्वामी तुलसी दास जू तिन पर कीन्हों नेहु
रामायन निज हाथ की लिखी दई सुनि लेहु
अबही जो सो धरी है रामायन अभिराम
स्वामी तुलसी दास की पूजन मन के काम

इस ग्रथ मे अमीर मीर हैदर की प्रशस्ति भी है । यह सभवत. इनके आश्रयदाता थे:—

जगत सकल तह प्रगट कर करन करन छवि धीर
कलिजुग अमी अमी वचन हयदर मीर अमीर

(२) बारह-मासा—१६१२।८४ ए, १६२३।१८५ । इस ग्रन्थ मे १३० छन्दो मे राधा-कृष्ण का चरित्र है । इसकी रचना स० १८२२ आषाढ सुदी ३ को हुई ।

सुदि असाढ तृतिया रुचिर, बार शुक्र अवतार
बारहमासा का भयो संवत् ये उर धार १२६
ठारह सत बाईस, सबत लीजो जानि कै
कृपा करैं हरि ईस, कहत जवाहर जो सुनै १३०

(३) नखशिख—१६१२।८४ सी । इसमे कुल २६४ दोहे है । रचनाकाल नही दिया गया है । जवाहर का रचनाकाल स० १८२२-२६ है । अत' सरोज मे दिया हुआ स० १८४५ कवि का उपस्थितकाल ही हो सकता है, जन्म काल नही ।

२६८।२११

(१४) जवाहिर कवि २, भाट, श्री नगर, बुन्देलखडी, स० १६१४ मे उ० । इन्होने बहुत सुन्दर कविता की है ।

सर्वेक्षण

सरोज मे दिया हुआ स० १६१४ कवि का उपस्थितिकाल ही होना चाहिए, क्योकि यदि यह जन्मकाल है तो २० वर्ष के कवि की कविता का सरोज मे सकलित किया जाना वहुत सम्भव नही।

२६७ सय्यक जवाहिर, विलग्रामी के जवाहिर रत्नाकर मे एक दोहा है—

शंभू कृपा अपार ते, सुभ दिन अरु सुभवार
सिरी नगर विलग्राम में, भयो ग्रथ अवतार

—खोज रि० १६१२।८४ वी

दोहे के द्वितीय दल मे सिरी नगर शब्द आया हुआ है। कही इसने तो सरोजकार को नही छला। यदि ऐसा है तो २६७, २६८ सय्यक दोनो जवाहिर एक ही है और स० १६१४ विशुद्ध कल्पना प्रसूत है। उस युग मे ऐसी भ्रातियाँ वहुत हुई है।

२६६।२१७

(१५) जैनुद्दीन अहमद कवि, स० १७३६ मे उ०। यह कवि लोगो के महा मानदान दायक और आप भी महान् कवि थे।

सर्वेक्षण

ग्रियर्सन १४४ के अनुसार यह चितामणि त्रिपाठी के आश्रयदाता थे। ऐसी स्थिति मे सरोज मे दिया हुआ स० १७३६ इनका उपस्थितिकाल ही है। सरोज मे उदाहृत पीठ वाला इनका कवित्त दिग्विजय भूषण रो उद्धृत है।

२७०।२१८

(१६) जयदेव कवि १, कपिला निवासी, स० १७७८ मे उ०। यह कवि नवाव फाजिलअली खाँ के यहाँ थे और सुखदेव मिश्र कपिला वाले के शिष्यो मे उत्तम थे।

सर्वेक्षण

विनोद के अनुसार (४३०) सुखदेव मिश्र स० ७६० तक अवश्य जीवित रहे, अत उनके शिष्य जयदेव का रचना काल स० १७६० के पूर्व होना चाहिए। जयदेव स० १७७८ मे भी उपस्थित रहे हो, असभव नही। नवाव फाजिलअली खाँ औरङ्गजेब के सिपहसालार थे। सुखदेव मिश्र ने इनके नाम पर 'फाजिलअली प्रकाश' की रचना की थी। गुरु-शिष्य एक ही दरवार से सम्वन्धित रहे हो, असम्भव नही।

२७१।२१६

(१७) जयदेव कवि २, स० १८१५ मे उ०। इनके कवित्त चोखे है।

सर्वेक्षण

इन जयदेव दूसरे के सम्वन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही।

२७२।२२०

(१८) जैतराम कवि। इनके शात रस के कवित्त अच्छे हैं।

सर्वेक्षण

जैतराम के तीन ग्रन्थ खोज मे मिले है, सभी शान्त रस के हैं। इनका रचनाकाल सं० १७६५ है।

(१) गीता की सुबोधिनी टीका। १९१२।८५, १९१७।८८, राज० रि०, भाग ४, पृष्ठ ७। इस टीका मे ७६२ चौपाई, ३६३ दोहे, ४ छन्द, और २ श्लोक है। इस ग्रन्थ से सूचित होता है कि यह वृन्दावन मे निवास करते थे।

श्री वृन्दावन पुलिन मधि वास हमारी सोइ
जहा जैत भाषा करी सुनत सबै सुख होइ
रास स्थली याही कूँ कहिए
प्रेम पीठ नाम सो लहिए
ज्ञान गूदरी प्रसिद्ध मानो
ताके मधि स्थान सु जानो

—राज० रि०, भाग ४, पृष्ठ ७

इस टीका का आधार श्रीधर की सस्कृत टीका है। यह टीका दोहा-चौपाइयो मे है।

ताते कछुक भाषा ज्ञानु
दोहा अरु चौपाई बखानुं
श्री गुरु की अज्ञा भई, जयतराम उर धारि
कहौ सुबोध प्रकासिनी श्रीधर के अनुसार

—खोज रि० १९१७।८८

(२) सदाचार प्रकाश। १९०९।१४०। यह ग्रथ ७६२ चौपाइयो, ३६३ दोहो, ४ छन्द, औेर २ श्लोको मे है। इसमे भक्ति और वैराग्य का प्रतिपादन हुआ है। इसका रचनाकाल स० १७९५ है।

सवत सत्रह सै गया असी पचदस और
पूर्णिमा असौज की पक्ष सु जानै गौर ११३०
चन्दवार अस्वनि बिसे सिद्धि योग पुनि जोय
जयतराम या ग्रन्थ की भई समापति सोय ११३१

(३) योगप्रदीपिका स्वरोदय—राज० रि०, भाग २। इस ग्रथ की रचना स० १७९४ मे हुई -

सम्वत सतरा सै असी अधिक चतुर्दश जान
आश्विन सुदि दसमी विजै पूरण ग्रंथ समान ९०

१९१७ वाली रिपोर्ट मे इन्हे १५७३ ई० मे अकबर के दरबार मे उपस्थित कहा गया है, जो ठीक नही। अकबर के दरबारी कवि जैत इन जैतराम से भिन्न है।

२७३।२४५

१९ जैत कवि, स० १६०१ मे उ०। यह अकबर बादशाह के यहाँ थे।

सर्वेक्षण

जैत, अकबरी दरबार के कवि है। अकबरी दरबार के कवियो की सूची वाले सवैये मे इनका भी नाम है। सं० १६०१ ईस्वी-सन् है। यह कवि का रचनाकाल है।

'जोध जगन्न जमे जगदीश जगामग जैत जगत्त है जानी'

२७४।२२४

(२०) जयकृष्ण कवि, भवानी दास कवि के पुत्र। इन्होने छन्दसार नामक पिंगल ग्रन्थ वनाया है। इनका सन्-सवत्, निवास, ग्रथ के खडित होने के कारण नही मालूम हुआ।

सर्वेक्षण

भवानी दास के पुत्र जयकृष्ण कटारिया गोत्र के पुष्करण वीसा ब्राह्मण थे। सरोज वर्णित इनके छन्दसार की अनेक प्रतियाँ मिली है।[१] इसका नाम 'रूप दीप' और 'नामरूप दीप पिंगल' है। ग्रन्थ मूलरूप मे प्राकृत मे है। कवि ने विद्यार्थियो के लाभ के लिए इसका भाषानुवाद किया। कवि के गुरु का नाम कृपाराम था। इनसे उसने यह ग्रन्थ पढा था। मेरा अनुमान है कि यह कृपाराम जयपुर वाले है, जिन्होने हित तरगिणी की रचना की है। इस ग्रन्थ मे कुल वावन छन्दो का विवेचन हैं।

सारद माता तुम वरी सुबुधि देत हर हाल
पिंगल की छाया लिए वरनो वावन चाल १
गुरु गणेश के चरण गहि हिये धारि कै विष्णु
कुंवर भवानी दास को जुगत करै जयकृष्ण २
रूप दीप परगट करौ भाषा वुद्धि समान
वालक को सुख होत है उपजै अधार ज्ञान ३
प्राकृत को वानो कठिन भाषा सुगम प्रतच्छ
कृपाराम की कृपा सौं कंठ करे सब शिष्य ४

द्विज पुहकर नेन्यात, तिसमें गोत कटारिया
सुनि प्राकृत सौं वात, तैसौं हौ भाषा करी ५४

वावन वरनी चाल सब, जैसी मोमै वुद्धि
भूत भेद जाको सहै, करो कवीसुर सुद्ध ५५

ग्रन्थ की रचना स० १७७६, भादो सुदी २, गुरुवार को हुई।

सम्बत सत्रह सै वरस और छिहत्तर पाय
भादौं सुदि दुतिया गुरू, भयो ग्रन्थ सुखदाइ ५६

सरोज म इस ग्रन्थ से जो उद्धरण दिया गया है, उसमे रूपमाला छन्द मे इस ग्रन्थ मे आए निम्नाकित वावनो छन्दो की सूची है :—

१ सारङ्ग, २ दोधक, ३ मोतीदास, ४ तोटक, ५ तारलनैन, ६ भुजङ्गी, ७ कामिनी मोहन, ८ मैनावती, ९ नाराच, १० प्रमाणिका, ११ मल्लिका, १२ सखनारी, १३ मालती, १४ तिलका, १५ विमोहा, १६ दोहा, १७ सोरठा, १८ गाथा, १९ उगाहा, २० चुल्लिका, २१ चौपाई, २२ अरिल्ल, २३, तोमर, २४, मधुभार, २५ अनुकूला, २६ हाकलि, २७ चित्रपदा, २८ पवंगम, २९ आसावरी या रसावली, ३० पद्धरी, ३१ द्रवैया या दुवहिया, ३२ सकर, ३३ द्रिपदठा या भटपट, ३४ त्रिभगी, ३५ मरहटा, ३६ लीलावती, ३७ उपमावली, ३८. गीता, ३९ पडी, ४० रोला, ४१ कुडलिया, ४२. कुडली, ४३ रगिका, ४४ रगी, ४५ घनाक्षरी, ४६ दूमल, ४७. मत्तगयद, ४८ कड़खा, ४९ झूलना, ५० सवैया, ५१ छप्पय, ५२. साटिका।

(१) खोज रि० १९००।८०, १९०९।१३८, १९२३।१९० ए वी, प १९२२।४६

सभा के अप्रकाशित संक्षिप्त विवरण में जयकृष्ण को जोधपुर का निवासी कहा गया है और जोधपुर नरेश महाराज वखत सिंह के दीवान फतहमल सिंघी के पुत्र ज्ञानमल सिंघी का आश्रित कहा गया है। यह ज्ञानमल जोधपुर के हाकिम थे और परम शैव थे। इन्ही के कहने मे इन्होने ये दो ग्रंथ रचे।

(१) शिव माहात्म्य भाषा—१९०२।८९। इसकी रचना सं० १८२५ मे हुई :—

सवत ठारै सै वरस वहुरि पचीसो जान
सिव महात्म भाषा रच्यौ ज्ञान हेत सुखदान

(२) शिव गीता भाषार्थ १९०२।९१। इसकी रचना स० १८२४ मे हुई। प० १९२२।४६ और १९०६।१३८ मे संदेह प्रकट किया गया है कि ये दोनो ग्रंथ रूप दीप के अनुवादक जयकृष्ण के नही है, क्योंकि दोनो के रचनाकाल मे ५० वर्षों का अन्तर है। पर यह सन्देह ठीक नही। रूप दीप, कवि के प्रारम्भिक जीवन की रचना है और ये दोनो ग्रन्थ उसकी वृद्धावस्था के हैं, यह भी अनुमान किया जा सकता है।

जयकृष्ण का एक ग्रन्थ जयकृष्ण के कवित्त नाम का और भी मिला है।[१] विनोद (६७८) के अनुसार इसका रचनाकाल स० १८१७ है। रिपोर्ट के अनुसार इसमे जयकृष्ण के अतिरिक्त रस-पुंज, रसचन्द, भूषण, रामराय, कुन्दन, मकरन्द, वलभद्र 'काशीराम के भी कवित्त संकलित है।

२७५।२२९

(२१) जय कवि बन्दीजन लखनऊ वाले १९०१ मे उ०। यह कवि वाजिद अली वादशाह लखनऊ के मुजराई थे। इन्होने वहुत सी कविता भाषा उर्दू जवान मे की है। इनका काव्य नीति सामयिक चेतावनी सम्वन्धी होने से सब को प्रिय है। मुसलमानो से वहुत दिनो तक इनका झगडा दीन की वावत होता रहा। अन्त मे इन्होने यह चौवोला वनाया, तव मुसलमानो से वचे।

सुनौ रे तुरकौ करौ यकीन
कुरआँ माझ खुदाय कहि दीन
लुकुमदीन कुवलुकुमुद्दीन

सर्वेक्षण

वाजिद अली का शासनकाल स० १९०४-१३ वि० है। अतः सरोज मे दिया हुआ स० १९०१ जय कवि का उपस्थितिकाल है।

२७६।२४२

(२२) जय सिंह कवि। इनके शृंगार रस के कवित्त चोखे हैं।

---

(१) खोज रि० १९०२।६८

सर्वेक्षण

खोज मे दो जयसिह मिले है। एक रायरायान जयसिह कायस्थ। यह पहले किसी मुगल वादशाह के आश्रित थे। अन्त मे अयोध्या चले गए थे और सन्यासियो की भाँति रहने लगे थे। स० १८१२ मे इन्होने सन्तो की श्रेष्ठता प्रतिपादित करने वाला एक ग्रन्थ सतसई लिखा था। इसमे कुल ४६१ दोहे हैं।

सम्वत दस औ आठ सै आठ चारि अधिकाइ
दरसन ठाकुर करि रच्यो सतसई सुखदाइ

—खोज रि० १९०९।१३९

दूसरे जय सिंह प्रसिद्ध रीवाँ नरेश हैं जो विश्वनाथ सिंह के पिता और रघुराज सिंह के पितामह थे। यह स० १८२१ मे उत्पन्न हुए थे, स० १८६१ मे इन्होने अपने पुत्र विश्वनाथ सिंह के लिये सिंहासन छोड दिया था। इन्होने लगभग १०० वर्ष की वय पाई थी। अनुभव प्रकाश, उभय मत सार, कृष्ण-चरित्र, हरि चरितामृत इनकी खोज मे उपलब्ध रचनाएँ है।[1]

ये दोनो जयसिह भक्त हैं। सरोज के जयसिह कोई रीतिकालीन शृङ्गारी कवि हैं। इन दोनो में से किसी के साथ इनकी अभिन्नता नही स्थापित की जा सकती। सरोज मे उद्धृत कवित्त आलम के प्रसिद्ध कवित्त 'कीधो मोर सोर तजि गए री अनत भाजि' का किंचित् परिवर्तित रूप है। यह कवित्त इन्हे अत्यत साधारण कोटि का कवि सिद्ध करता है।

२७७।२१२

(२३) जगन कवि, स० १६५२ मे उ०। ऐजन इनके शृङ्गार रस के कवित्त चोखे हैं।

सर्वेक्षण

यह अकवरी दरवार के कवि है। इनका नाम अकवरी दरवार के कवियो की सूची प्रस्तुत करने वाले सवैये मे है—

'जोध जगन्न जमे जगदीस जगामग जैत जगत्त है जानी'

सरोज मे दिया हुआ स० १६५२ विक्रमी सवत है। यह अकवर के शासनकाल मे पडता है। अकवर की मृत्यु स० १६६२ में हुई थी। यह कवि का रचनाकाल है।

खोज मे जगन कवि की जगन वत्तीसी[1] नामक पुस्तक प्राप्त हुई है। इसमे ३२ सवैये और १ कवि है। इसमे राम चरित वर्णित है। इनके गुरु का नाम सभवत. छल था।

सरसुति सुमरू हुआ रस वुधि दीजै मोहि
नमो पाइ गनपति गुनहि गभीर के
एक चित्त ह्वैके गुर छल को प्रनाम करूँ
जाके गुन ऐसे जैसे गुन दुधि छीर के
जिते कवि कलि में कलोलै करै कविता को
वचन रचन जो पवित्र गंगा नीर के

---

(१) राज० रि०, भाग १

जनक प्रसाद के जे 'जगन' भगत होंहि
सवैया वतीस राज राम रघुवीर के
—खोज रि० १९४४।१२२

यह जगन, २९९ सख्यक जगनेस और ३०१ सख्यक जगन्नाथ एक ही कवि हैं।

२७८।२१६

(२४) जनार्दन कवि, स० १७१८ मे उ०। ऐजन। इनके शृङ्गार रस के कवित्त चोखे है।

सर्वेक्षण

जनार्दन, क्षेमनिधि एव मोहन लाल के पिता तथा पद्माकर के पितामह थे। यह स० १७४३ में उपस्थित थे, क्योकि इसी वर्ष इनके पुत्र मोहनलाल का जन्म हुआ था। सरोज मे दिया हुआ स० १७१८ इनका प्रारम्भिक रचनाकाल प्रतीत होता है। पद्माकर के पूर्वजो मे काव्य इन्ही से प्रारम्भ होता है, जो इनके वश मे आज तक चला जा रहा है। इसी से पद्माकर का वश कवीश्वर वश नाम से प्रसिद्ध है।[१]

२७९।२४९

(२५) जनार्दन भट्ट। इन्होने वैद्य रत्न नामक ग्रथ वैद्यक का वनाया है।

सर्वेक्षण

जनार्दन भट्ट के निम्नाकित ६ ग्रन्थ खोज मे मिले है।

(१) वैद्य रत्न १९०२।१०५, १९०६।२६७ वी, १९२०।६८, १९२३।१८१ ए, वी, १९२६। २०० ए, वी, सी, १९२९।१६८ ए, वी, सी, डी, प १९२२।४५, राज० रि० भाग २ पृष्ठ १४८-४९। राज० रि० के अनुसार इसका रचनाकाल स० १७४९, माघ सुदी ६ है। पजाव रिपोर्ट के अनुसार ग्रन्थकर्ता का नाम गोस्वामी जनार्दन भट्ट है।

(२) वाल विवेक१९०६।२६७ ए। यह ज्योतिष का प्रारम्भिक ग्रन्थ है।

(३) हाथी का शालिहोत्र १९०६।२६७ सी। इसमे हाथी की वीमारियो और तत्सम्वन्धी दवाओ का वर्णन है।

(४) दुर्ग सिंह शृङ्गार—राज० रि० भाग २, पृष्ठ २२। यह शृङ्गार रस का ग्रथ है और किसी दुर्ग सिंह के लिए लिखा गया है। इस ग्रन्थ मे भी ग्रथकर्त्ता गोस्वामी कहे गए हैं। इसका रचनाकाल स० १७३५, जेठ शुक्ल ९, रविवार है —

सतरे सै पैंतीस सम, जेठ शुक्ल रविवार
तिथि नौमी पूरण भयो दुर्ग सिंह शृङ्गार ३४४

(५) व्योहार निर्णय—राज० रि० भाग ४, पृष्ठ ६७। इस ग्रन्थ मे व्यवहार का वर्णन हुआ है।

---

(१) माधुरी, माघ १९९०, पृष्ठ ७९

नृप देखे व्योहार सब, द्विज पडित के सग
धरम रीति गहि, छोडि के काम लोभ परसग

ग्रथ की रचना स० १७३०, कार्तिक वदी ६, रविवार को पूर्ण हुई .—

सत्रह सै तीस वदि कातिक अरु रविवार
तिथि षष्टी पूरन भयो यह भाषा व्योहार

ग्रथ की पुष्पिका मे इनके पिता और पितामह का नाम दिया गया है —

इति श्री गोस्वामि श्रीनिवास पौत्र, गोस्वामि जगन्निवास पुत्र "गोस्वामि जनार्दन भट्ट विरचित" भाषा व्योहार निर्णय सपूर्ण ।

६ लक्ष्मीनारायण पूजा सार—राज० रि० भाग २, पृष्ठ १४८ । यह ग्रथ बीकानेर नरेश अनूप सिंह के लिए लिखा गया था ।

प्राप्त गथो के आधार पर जनार्दन भट्ट का रचना काल स० १७३०-४७ है । कवि राजस्थान निवासी है ।

---

२८० । २२५

(२६) जमाल कवि, स० १६०२ मे उ० । यह कवि गूढ कूट मे बहुत निपुण थे । इनके दोहे बहुत सुन्दर हैं ।

सर्वेक्षण

इस ग्रथ के २८० सख्यक जमाल और २८६ सख्यक जमालुद्दीन एक ही है ।

सरोज मे जमालुद्दीन को पिहानी निवासी कहा गया है । पिहानी जिला हरदोई मे गोमती नदी के किनारे स्थित है । जमाल ने एक दोहे मे गोमती का स्पष्ट उल्लेख किया है ।

गलियन गलियन गरकि गइ, गति गोमति की आज
बिकल लोग, यह तिय खुशी, कह जमाल किहि काज १६४

मनीषी समर्थदान जमाल को पिहानी का ही रहने वाला मानते हैं । अत इन दोनो कवियो की एकता मे कोई सदेह नही । खोज मे जमाल के ३ ग्रथ कहे गए है —

१ जमाल पचीसी १६१२।८२ ए

२ स्फुट दोहे १६२०।६५

३ भक्तमाल की टिप्पणी १६१२।८२ बी

जमाल पचीसी कोई स्वतत्र ग्रथ नही है । यह जमाल के २५ दोहो का सकलन मात्र है । स्फुट दोहे भी कोई स्वतत्र ग्रथ नही है, जैसा कि नाम से ही प्रकट है । भक्तमाल की टिप्पणी जमाल की रचना नही है । गद्य और पद्य मे लिखित इस ग्रथ मे जमाल का यह दोहा देखकर अन्वेषक ने इसे पूरी की पूरी जमाल की कृति समझ लिया ।

चित्र चितेरा जो करै, रचि पचि सूरत बाल
वह चितवनि, वह मुरि चलनि, क्योंकर लिखै जमाल ४६

न तो ग्रथ के आदि मे और न तो अत ही मे ग्रथकर्ता का नाम दिया गया है । प्रतीत होता है कि किसी भावुक ने यह भक्त वार्ता लिखी और बीच-बीच मे उसने अन्य कवियो के दोहे भी

जोड दिए। इसी दोहे के ऊपर विहारी का यह दोहा दिया गया है, अन्वेषक की दृष्टि इस पर नही गई[१]।

लिखन बैठि जाकी सबी, गहि गहि गरब गरूर
भए न केते जगत के चतुर चितेरे कूर

श्री महावीर प्रसाद गहलौत ने जमाल की सारी प्राप्य रचनाओ का सकलन जमाल दोहावली नाम से एक सुन्दर भूमिका और आवश्यक टिप्पणी सहित सपादित कर प्रकाशित कराया है।

जमाल अकबरकालीन है। ऐसी स्थिति मे सरोज मे दिया हुआ स० १६०२ विक्रम-सवत् न होकर ईस्वी-सन् है। यह जमाल का उपस्थितिकाल है।

———

२८१।२२७

(२७) जीवनाथ भाट, नवलगज जिले उन्नाव के, स० १८७२ मे उ०। यह कवि महाराजा बाल कृष्ण, बादशाह के दीवान के घराने के प्राचीन कवि हे। इन्होने 'वसत पचोसी' ग्रथ महा अद्भुत वनाया है।

सर्वेक्षण

बालकृष्ण लखनऊ के नवाव आसफुद्दौला (शासन काल स० १८३२-५४ वि०) के दीवान थे। अत. सरोज मे दिया हुआ स० १८७२ कवि का उपस्थितिकाल है। इस तथ्य को ध्यान मे रखकर विनोद (९५७) मे इनका जन्मकाल स० १८०३ और रचनाकाल स० १८३० दिया गया है।

———

२८२।२२८

(२८) जीवन कवि १, स० १८०३ मे उ० ' मोहम्मद अली बादशाह के यहाँ थे। इन्होने कविता सुन्दर की है।

सर्वेक्षण

मोहम्मद अली लखनऊ के नवाव थे। इनका शासनकाल स० १८९४-९९ वि० है। अत. जीवन जी को कम से कम स० १९०० के आस-पास तक अवश्य जीवित रहना चाहिए।

जीवन जी पुवाआ जिला शाहजहापुर के भाट थे। यह हिन्दी के प्रसिद्ध कवि चदन के पुत्र थे। चदन का रचनाकाल स० १८१०-६५ है। अत. सरोज मे दिया हुआ स० १८०३ पूर्ण रूप से अशुद्ध है। सरोजकार को मोहम्मद अली मे दिल्ली के मुगल बादशाह मोहम्मद शाह रँगीले (शासन काल स० १७७६-१८०५) का भ्रम हो गया है।

जीवन का 'बारिवड विनोद' नामक ग्रथ खोज मे मिला है। इसकी रचना सीतापुर जिलातर्गत नेरी के रईस बारिबड सिंह के नाम पर हुई। इनका रचनाकाल स० १८७३ श्रावण २ गुरुवार है।

---

(१) जमाल दोहावली की भूमिका के आधार पर।

आवनै सु द्वैज ही गुरै सु वार गनिए
नछत्र आवनै तही सो प्रीत जोग आनिए
सवत अठारहै तिहितनै सु मानिए
वरवद सो विनोद को भयो वतार जानिए
—खोज रि० १६१२।८६

२८३।२३१

(२६) जगदेव कवि, स० १७६२ मे उ०। इनकी कविता सरस है।

सर्वेक्षण

इस कवि के सवध मे कोई सूचना सुलभ नही।

२८४। २३२

(३०) जगन्नाथ कवि १, प्राचीन। शातरस के इनके कवित्त अच्छे हैं।

सर्वेक्षण

विनोद (६७६) मे जगन्नाथ प्राचीन को मोहमर्दराज की कथा का कर्त्ता माना गया है। इस ग्रथ की रचना कार्तिक वदी १२, सोमवार स० १७७६ को हुई —

सवत सत्रह सै छयोत्रा वर्ष
यह भाषो करि वहुत हर्ष
कातिक वदी द्वादसी दिनै
सोमवार यह गिनोतर गिनै
—खोज रि० १६२६।१६३ सी, डी, ई।

इसी ग्रन्थ से सूचित होता है कि यह किसी तुलसीदास के शिष्य थे :—

श्री तुरसीदास जु धरयो सिर हाथ
यह मोह मरद कथा कही जन जगन्नाथ

इन जगन्नाथ प्राचीन या जन जगन्नाथ के निम्नाकित ग्रन्थ और भी मिले हैं —

१ गुरुचरित या गुरुमहिमा १६०६।१२६। इस ग्रन्थ मे १० दोहे और ४६ चौपाइयाँ हैं।

दस दोहा वर्णन किए, चोपाई उनचास
जगन्नाथ उनसठि वचन, गुरु चरित्र की रास

इस ग्रन्थ मे भी कवि ने अपने गुरु का नाम तुलसीदास दिया है :—

स्वामी तुलसीदास के सेवक अति मति हीन
जगन्नाथ भाषा सरस गुरु चरित्र कहि कीन्ह

ग्रन्थ की रचना स० १७६०, माघ सुदी ८, मगलवार को हुई :—

संबत सत्रह सै अरु साठै
माघ मास उजियारी आठै
भरणी ऐंद्र रू मंगलवार
गुरु चरित्र भाषा विस्तार ४०

इसी ग्रन्थ का एक अन्य नाम गुरू माहात्म्य[1] भी है।

२ मन बत्तीसी १६०६।२६६। इस ग्रन्थ मे मानव मन पर ३२ छद है। यह ग्रन्थ भी इसी वर्ष लिखा गया।

३. होली सग्रह १६२६।१६४ ए। इस ग्रन्थ मे राधा-कृष्ण की लीला वर्णित है। कवि परिचय मे इसका रचनाकाल स० १७७५ दिया गया है।

इस जगन्नाथ के अतिरिक्त निम्नाकित जगन्नाथ और मिलते है, जो शात रस के कवि न होने के कारण सरोज के अभीष्ट जगन्नाथ प्राचीन से भिन्न है।

१ जगन्नाथ—यह जैसलमैर के रावत अमर सिह के यहाँ थे। इन्होने उनके लिए स० १७१४ जेठ सुदी १० सोमवार को 'रति भूषण'[2] नामक ग्रन्थ बनाया। स० १७४४ मे उन्ही के लिए 'माधव चरित्र'[3] की रचना की। सभवत इसमे माधवानल कामकदला की कथा है।

२ जगन्नाथ भट्ट—यह सखी सप्रदाय के भक्त थे। इनका सखी नाम किशोरी अली था। इन्होने 'सार सग्रह'[4] नामक एक ग्रन्थ सकलित किया है जिसमे सतो की महिमा, सत्सग का प्रभाव और नवधा भक्ति का वर्णन है। यह सखी सप्रदाय के भक्त कवियो की रचनाओ का सग्रह है। प्रतिलिपिकाल स० १८८७ है। अत. कवि इससे पूर्वकालीन है।

३ जगन्नाथ—यह ढिगवस जिला प्रतापगढ के एक विसेन ठाकुर थे। इन्होने स० १८८७ मे 'जुद्धजोत्सव'[5] नामक ग्रन्थ लिखा।

२८५।२३३

(३१) जगन्नाथ कवि २ अवस्थी, सुमेरपुर जिला उन्नाव। वि०। यह महाराज सस्कृत साहित्य मे इस समय अद्वितीय है। प्रथम महाराजा मान सिंह अवध नरेश के यहा बहुत दिन तक रहे। अब महाराजा शिवदान सिंह अलवर देशाधिपति के यहाँ है। इनके सस्कृत के बहुत ग्रन्थ है। भाषा मे काव्य का, कोई ग्रन्थ सिवा स्फुट कवित्त दोहो के नही देखने मे आया।

सर्वेक्षण

कवि सरोजकार का समकालीन है, अत' दिए हुए तथ्य प्रामाणिक हैं। द्विज देव ने स० १६०७ मे शृङ्गार लतिका लिखी। यही इनका काव्यानुराग काल है। इसी समय के आस-पास जगन्नाथ जी अयोध्या मे रहे होगे।

२८६।२४४

(३२) जगन्नाथदास। रागसागरोद्भव मे इनके पद है।

---

(१) खोज रि० १६२६।१६३ ए (२) राज० रि० भाग २ (३) राज० रि० भाग ४ पृष्ठ २१४-१५ (४) खोज रि० १६२६।१६४ ए, बी (५) खोज रि० १६०६।१२३

सर्वेक्षण

सरोज मे उद्धृत पद से सूचित होता है कि इनकी छाप जगन्नाथ कविराय है । यह अकबरकालीन कवि है । सभवत' इनका सम्बन्ध अकबरी दरबार से था । यह तानसेन के समान सगीतज्ञ कवि थे ।

जगन्नाथ कविराय के प्रभु रीझि हँसे
तब होंहू हँसो, वह सुख कहत बनै ना

२८७।२४१

(३३) जलालउद्दीन कवि, स० १६१५ मे उ० । हजारा मे इनके कवित हे ।

सर्वेक्षण

जलालुद्दीन के कवित हजारे मे थे, अत इनका समय स० १८५० से पूर्व है, इतना ही निश्चय पूर्वक कहा जा सकता है । सरोज मे इनका एक सवैया उद्धृत है । सवैयो की भरमार स० १६४० के आस-पास हुई । अतः स० १६१५ इनका जन्मकाल माना जा सकता है ।

२८८।२४७

(३४) जसोदानन्दन कवि, स० १८२८ मे उ० । इन्होने बरवै छद मे बरवै नायिका भेद नामक ग्रन्थ अति विचित्र बनाया है ।

सर्वेक्षण

सरोज मे रचनाकाल सूचक यह बरवै उद्धृत है .—

मैं लिखि लीनो चैतहि तेरसि पाइ
सम्वत हय[७] विधि[२] कारि[८] कै ब्रह्म[१] मिलाइ

स्पष्ट है कि ग्रन्थ का रचनाकाल स० १८२७ है । सरोज मे दिया हुआ स० १८२८ उपस्थिति काल है । प्रमाद से ग्रियर्सन (४६५) विनोद (११०६) और शुक्ल जी के इतिहास मे (पृष्ठ ३०५) इसे जन्मकाल मान लिया गया है ।

खोज मे एक यशोदानन्द शुक्ल मालवीय का रागमाला[१] ग्रन्थ मिला है । सेठ महताबराय के निर्देश से इस सगीत ग्रन्थ की रचना चैत्र शुक्ल नवमी, रविवार स० १८१५ को हुई —

बीत अठारह सै बरस अरु पंद्रह परिमान
चैत्र शुक्ल नवमी रवौ भयो ग्रन्थ सुखदान ३१

इसमे कुल ४१७ छद हैं । सभवत सभी दोहे हैं । पुष्पिका मे कवि का नाम आया है :—

"इति श्री सकल कला कोविद रसिक सुखकद शुक्ल यशोदानन्द विरचित रागमाला समाप्त"

बरवै वाले यशोदानदन और रागमाला वाले यशोदानद के रचनाकाल मे केवल १२ वर्ष का अतर है । अतः दोनो कवि एक भी हो सकते हैं ।

---

(१) खोज रि० १९०६।२३४

२८६।२३४

(३५) जगनद कवि वृदावन वासी, स० १६५८ मे उ० । इनके कवित्त हजारा मे हे।

सर्वेक्षण

हजारा मे इनकी कविता हे । अतः निश्चयपूर्वक इतना ही कहा जा सकता है कि यह स० १८५० से पूर्वकालीन है । सरोज मे उद्धृत कवित से इनका ब्रज प्रेम प्रकट होता है ।

इस कवि की सम्पूर्ण सुलभ कविताओ का प्रकाशन 'जगतानद' नाम से विद्या विभाग काकरोली द्वारा १९३२ ई० मे हुआ है । ग्रन्थो मे कवि का परिचय भी दिया गया है । इस परिचय के अनुसार विनोद के ३०५ जगनद और ४७४ जगतानद दोनो एक ही व्यक्ति हैं । इस कवि की छाप जगनद, नद, जगतनद एव जगतानद है । इस ग्रन्थ मे इनके निम्नाकित ६ ग्रन्थ ह —

(१) श्री वल्लभ वशावली
(२) श्री गुसाईं जी की वनयात्रा
(३) व्रज वस्तु वर्णन
(४) व्रज ग्राम वर्णन
(५) दोहरा साखी
(६) उपखाने सति दशम कथा (भागवत दशम स्कध की कथा) ।

इनकी रचनाओ से स्पष्ट है कि कवि वल्लभ सप्रदाय का अनुयायी था । वल्लभ वशावली के अनुसार इमके गुरु का नाम गोवर्द्धनेश था । गोवर्द्धनेश जी गुसाईं विट्ठल नाथ के चतुर्थ पुत्र गोकुलनाथ के पौत्र, और गोकुल नाथ के कनिष्ठ पुत्र विट्ठलराय के पुत्र थे । गोवर्द्धनेश जी का जन्म समय सम्वत् १६७३ है । इसी के वाद, सपादक के अनुसार स० १७०० के आस-पास जगतानद का जन्म हुआ । वल्लभ वशावली मे कवि ने रचनाकाल स० १७८१ दिया है .—

सम्वत् सत्रह सै वन्यौ इक्यासी वदि माह
द्वैज चद पोथी लिखी जगतनद करि चाह १८४

स्पष्ट है सरोज का सम्वत् अशुद्ध है । जगनद जी वृन्दावन मे न रहकर गोकुल मे रहा करते थे ।

२९०।२३५

(३६) जोइसी कवि, स० १६५८ मे उ० ।इनके कवित हजारा मे है ।

सर्वेक्षण

हजारा मे इनकी रचना है, अत इनका रचनाकाल स० १७५० से पूर्व है । इनका एक ही सवैया उपलव्ध हे, जो सरोज मे भी उद्धृत है । विनोद (२९०) के अनुसार यह परम विशद है । जोइसी कवि का असल नाम नही है । जोइसी ज्योतिपी का ही रूप है । कवि ज्योतिषी था, सभवत' ब्राह्मण भी । उसने अपने पेशेवाले नाम को अपना उपनाम वना लिया है ।

करुणाभरण के रचयिता लछीराम के एक मित्र मोहन थे । मोहन के पिता का नाम शिरोमणि, पितामह का रामकृष्ण ओर प्रपितामह का जो इसी ईसुरदास था ।[२] इनमे से रामकृष्ण श्रेष्ठ

---

(२) देखिए, यही ग्रन्थ, कवि सख्या ८१७

कवि थे। सभवत शिरोमणि और जोयसी ईसुरदास भी कवि थे। लछीराम का समय स० १७०० के आस-पास है। लछीराम के मित्र मोहन के प्रपितामह स० १६५८ तक पूर्ण वृद्ध रूप मे जीवित रह सकते है। हो सकता है कि यही जोयसी ईसुरदास सरोज के प्रसग प्राप्त जोयसी हो।

२६१।२३६

(३७) जीवन कवि, स० १६०८ मे उ०। ऐजन। इनके कवित्त हजारा मे है।

सर्वेक्षण

जीवन कवि की रचना हजारे मे थी, अत' स० १८५० के पूर्व इनका अस्तित्व था, इसमे सदेह नही। द्रौपदी चीरहरण सबधी इनका एक अत्यत कलापूर्ण कवित्त सरोज मे उद्धृत है। इसे स० १६५० के बाद की रचना होना चाहिए। इस दृष्टि से सरोज मे दिया हुआ स० १६०८ कवि के जन्मकाल के निकट है।

पन्ना के प्रसिद्ध साधु प्राणनाथ के एक शिष्य जीवन मस्ताने हुए हैं। इन्होने स० १७५७ के आस-पास पचक दहाई नामक ग्रन्थ लिखा।[१] यह सरोज के जीवन से भिन्न है। यह अपने नाम के साथ मस्ताने जोडते थे, साथ ही इनकी भाषा मे खडी बोली का कुछ मेल है।

२६२।२३८

(३८) जगजीवन कवि, स० १७०५ मे उ ०। ऐजन। इनके कवित्त हजारा मे है।

सर्वेक्षण

सरोज मे उद्धृत छदो से सिद्ध होता है कि जगजीवन कवि रीति परपरा मे पूर्णरूपेण डूबे हुए है। इनको रचना हजारे मे थी, अत स० १७५० के पूर्व इनका अस्तित्व सिद्ध है। खोज मे कई जगजीवन मिले हैं। किसी के साथ इनकी अभिन्नता स्थापित करानेवाला कोई सूत्र सुलभ नहीं है।

१. जगजीवन—आगरावासी जैन, सत्यसार की टीका के रचयिता। विनोद (३४६) मे इन्ही को हजारेवाला जगजीवन कहा गया है।

२ राधावल्लभीय जगजीवनदास—इन्होने स० १७४६ मे अपने पिता धरणीधरदास के ग्रन्थ चौरासी सटीक की प्रतिलिपि की थी।[२]

३ जगजीवन—हनुमान नाटक के रचयिता[३]।

२६३।२३६

(३६) जदुनाथ कवि, स० १६८१ मे उ०। तुलसी के सग्रह मे इनके कवित्त हैं।

---

(१) खोज रि० १६०५।३३ (२) खोज रि० १६१२।५१, (३) राज रि० भाग २,

सर्वेक्षण

जदुनाथ की कविता तुलसी के सग्रह मे है, अत. इनका रचनाकाल स० १७१२ के पूर्व होना चाहिए। इस दृष्टि से स० १६८१ ही इनका रचनाकाल हो सकता है। कवि रीति-परपरा मे पूर्णरूपेण डूबा हुआ है।

२९४।२४०

(४०) जगदीश कवि, स० १५८८ मे उ०। यह अकबर बादशाह के यहाँ थे।

सर्वेक्षण

अकबरी दरबार के कवियो की नामावली प्रस्तुत करनेवाले सवैये[1] मे जगदीश का भी नाम है। १५८८ ईस्वी-सन् है। यह कवि का रचनाकाल है।

२९५।

(४१) जय सिंह कछवाहे महाराजा आमेर, स० १७५५ मे उ०। यह महाराज सर्वविद्या-निधान, कविकोविदो के कल्प वृक्ष, महान् कवि थे। आपही अपना जीवनचरित्र लिख, उस ग्रन्थ का नाम जयसिंह कल्पद्रुम रक्खा है। यह ग्रन्थ अवश्य विद्वानो को दर्शनीय है।

सर्वेक्षण

जयसिंह सवाई द्वितीय जयपुर के वह प्रसिद्ध महाराज है, जिन्होने जयपुर नगर बसाया। इनका जन्म स० १७४५ मे हुआ था और देहावसान स० १८०० मे हुआ। यह सस्कृत, फारसी और ज्योतिष के बहुत बडे विद्वान् थे। कृष्ण भट्ट कवि कलानिधि और कृपाराम इन्ही के आश्रय मे थे। इनका शासनकाल स० १७५६-१८०० है। सरोज मे दिया हुआ स० १७५५ शुद्ध है। यह उपस्थितिकाल है।

२९६।

(४२) जय सिंह सिसौदिया, महाराना उदयपुर, स० १६८१ मे उ०। यह महाराजा राना राज सिंह के पुत्र, महान् कवि और कविकोविदो के कल्पवृक्ष थे। एक ग्रन्थ जयदेव विलास नामक अपने वश के राजो के जीवन चरित्र का बनवाया है।

सर्वेक्षण

टॉड के अनुसार ग्रियर्सन (१८८) मे इनका शासनकाल १६८१-१७०० ई० दिया गया है। स्पष्ट ही सरोज मे दिया हुआ स० १६८१ ईस्वी-सन् है। यह जयसिंह का राज्यारोहण काल है। ग्रियर्सन के अनुसार जयदेव विलास मे उन राजाओ का जीवन चरित्र है, जिन्हे जयसिंह ने जीता था। इस सबध मे सरोज की ही बात ठीक जान पडती है। विनोद (४९७) मे भी सरोज की ही बात स्वीकार की गई है। प्रथम सस्करण मे प्रमाद से सीसौदिया को राठौर लिख दिया गया है।

---

(१) यही ग्रन्थ, कवि संख्या १

२९७।२४६ ,

(४३) जलील, सैयद अब्दुल जलील विलग्रामी, स० १७३९ मे उ० । यह कवि औरगजेब वादशाह के यहाँ वडे पद पर थे । अरवी, फारसी, इत्यादि यावनीभाषा मे इनका पाण्डित्य इनके वनाए हुए ग्रन्थो से प्रकट होता है । अत मे हरिवश मिश्र कवि विलग्रामी से भापा काव्य पढकर सुन्दर कविता की है ।

सर्वेक्षण

जलील हिन्दी के प्रसिद्ध कवि मीर गुलाम नवी रसलीन के चचेरे मामा थे । इनका रसलीन के परिवार पर विशेष स्नेह था । इन्होने रसलीन का जन्मसवत्सूचक छद फारसी मे लिखा है । रसलीन के जन्म के समय यह औरगजेव के साथ गढ सितारा के निकट डेरा डाले पडे थे । यही इन्होने उक्त छद लिखा था । उक्त तिथि २० जून १६९९ ई० है । इससे स्पष्ट है कि स० १७५६ मे जलील जीवित थे । हरिवश मिश्र के पुत्र दिवाकर मिश्र ने इनके सबध मे यह दोहा कहा है —

हुआ न है औ होयगा ऐसो गुनी सुशील
जैसो अहमद नंद जग हुय गयो मीर जलील

इस दोहे से स्पष्ट है कि जलील के वाप का नाम अहमद था ।[१]

सरोज की सूचनाएँ मातादीन मिश्र के कवित्त रत्नाकर के अनुसार है । मिश्र जी के अनुसार यह दिल्ली से ईरान के वादशाह के यहाँ राजदूत होकर गए थे । वहाँ से लौटने पर औरगजेब के यहाँ अन्य राजाओ और वादशाहो के नाम खत लिखने के मुन्शी हुए थे ।[२] सरोज मे इनकी कविता का उदाहरण भी मिश्र जी के उक्त ग्रन्थ से लिया गया है । औरगजेव का शासनकाल स० १७१५-६४ है । इसी के वीच पडनेवाला स० १७३९ कवि का रचनाकाल ही हे ।

२९८।

(४४) जमालुद्दीन पिहानीवाले, स० १६२५ मे उ० । यह अच्छे कवि थे ।

सर्वेक्षण

२८० सख्यक जमाल और २९८ सख्यक जमालुद्दीन एक ही कवि हैं । स० १६२५ उपस्थितिकाल है । विशेप विवरण सख्या २८० पर देखिए ।

२९९।

(४५) जगनेश कवि । ऐजन । अच्छे कवि थे ।

सर्वेक्षण

३०१ सख्यक जगन्नाथ अपनी छाप जगनेस भी रखते थे, जो 'जगन' से सवधित है । अत' २७७, २९९, ३०१ सख्यक कवि एक ही हैं ।

---

(१) सपूर्णानंद अभिनंदन ग्रन्थ पृष्ठ १२७-१२९ । (२) कवित्त रत्नाकर, भाग १, कवि संख्या ४

३००।

(४६) जोध कवि, स० १५६० मे उ० । यह अकवर वादशाह के यहाँ थे ।

सर्वेक्षण

अकवरी दरवार के कवियो की सूची प्रस्तुत करनेवाले सवैये मे जोध का नाम है।[1] १५६० ई० सन् है और यह कवि का उपस्थितिकाल है।

३०१।

(४७) जगन्नाथ । ऐजन । यह अकबर वादशाह के यहाँ थे ।

सर्वेक्षण

जगन्नाथ मिश्र अकबरी दरबार के कवि थे। इन्हे मुगल दरवार की ओर से कुछ जमीन जौनपुर जिले मे आज के आजमगढ जिले की निजामवाद तहसील मे मिली हुई थी। अकबर का शासनकाल स० १६१३-६२ है। यही समय जगन्नाथ मिश्र का भी होना चाहिए। इनके वशज अभी तक आजमगढ के गुरु टोला मुहल्ले मे रहते हैं। इनकी लिखी एक पुस्तक राजा हरिश्चन्द्र की कथा मिलो है। यह दोहा-चौपाइयो मे लिखित एक साधारण कृति है।[2] यह 'जनजगन्नाथ' और 'जगनेश' छाप भी रखते थे। यह २७७ जगन और २६६ जगनेस से अभिन्न है।

३०२।

(४८) जगामग । ऐजन । अकवर वादशाह के यहाँ थे ।

सर्वेक्षण

अकवरी दरवार के कवियो की सूची प्रस्तुत करनेवाले सवैये मे जगामग का नाम है।[3] अकवर का शासनकाल स० १६१३-६२ है। यही जगामग का भी समय होना चाहिए।

३०३।

(४९) जुगुलदास कवि । इन्होने पद वनाए है ।

सर्वेक्षण

जुगुलदास के ३ ग्रन्थ खोज मे मिले है :—

१ चौरासी सटीक १६१२।८७ ए। यह हित चौरासी की टीका है। इसकी रचना स० १८२१ मे हुई —

> अठारह सै इकीस के सवत में भई पूरि
> यह बानी अद्भुत सरस रसिकनि जीवन मूरि

---

(१) यही ग्रथ कवि संख्या १ (२) खोज रि० १९०९।१२४, १९४७।१०८ (३) यही ग्रंथ, कवि संख्या १

२ जुगल कृत १९१२।८७ बी। ग्रन्थ का पूरा नाम जुगलकृत पद होना चाहिए। इसमे श्रीकृष्ण सबधी विनय और प्रेम के १२६ पद है। यही रचना युगलकिशोर के नाम से भी प्रमाद से दे दी गई है।[1]

३. जुगुलदास की वानी १९२६।२११। इस ग्रन्थ मे कुल ४९ रचनाएँ है।

खोज मे जगन्नाथ रिचारिया का कृष्णायन नामक ग्रन्थ मिला है। यह स० १८४५ मे लिखा गया था। कवि परिचय मे बताया गया है कि यह जुगलदास के पुत्र थे। यह छतरपुर बुन्देलखण्ड के रहने वाले थे—

> वान[५] वेद[४] वसु[८] इन्द्र[१] लौ अंक वास गत चारु
> असुना सुदी दसमी गुरौ कृष्णाइन औतारु ३१
> दुज रिछारिया सेव जू, कौसिक गोत्र बखान
> कृष्णाइन भाषा करी, लिखी प्रीति उर आनि
>
> —खोज रि० १९०९।१२५

अत. जुगलदास जी राधावल्लभ सप्रदाय के वैष्णव थे। यह कौशिक गोत्रीय ब्राह्मण थे। यह छतरपुर के रहनेवाले थे और इनका रचनाकाल स० १८२१ है। इस ग्रन्थ के २६० सख्यक जुगल कवि भी यही हैं।

३०४।

(५०) जगजीवन दास चन्देल, कोठवा जिला बाराबकी, स० १८४१ मे उ०। यह महाराज बडे महात्मा सत्यनामी पथ के चलानेवाले थे। भाषा काव्य भी किया है। और आजतक जलालीदास इत्यादि जो महात्मा इनकी गद्दी पर बैठे है, सब काव्य करते है। परन्तु बहुधा शात रस की ही इनकी कविता है। दूलमदास, देवीदास इत्यादि सब इसी घराने के शिष्य है, जिनके पद बहुत सुनने मे आते है।

सर्वेक्षण

यह सतनामी पथ के प्रवर्तक एक सुप्रसिद्ध महात्मा हो गए हैं। इनका जन्म सरदहा कोटवा जिला बाराबकी मे एक चदेल क्षत्रिय घराने मे माघ सुदी ७, मगलवार, स० १७२७ को हुआ था। इनके पिता का नाम गगाराम था। यह विश्वेश्वर पुरी और बुल्ला साहब के शिष्य थे। गुलाल साहब इनके गुरुभाई थे। यह दामोदरदास, दूलनदास, नवलदास, तथा देवीदास के गुरु थे। दुलारेदास, दूलनदास का उपनाम है। इस नाम का कोई अन्य शिष्य नही हुआ। कोटवा मे अब तक इनके सप्रदाय का प्रधान केन्द्र है। इनका देहावसान वैशाख वदी ७, मगलवार, स० १८१७ को हुआ।[2] सरोज मे दिया हुआ स० १८४१ अशुद्ध है। इसके २४ वर्ष पहले जगजीवन दास का देहात हो चुका था। खोज मे इनके निम्नाकित ग्रन्थ मिले हे .—

१ अघ विनाश १९२३।१७५ ए, बी, १९४७।१०५ क, ख, ग, घ,। रचनाकाल स० १७८०

२. अस्तुति महावीर जी की, जन्म की, १९४७।१०५ ङ

---

(१) खोज रि० १९२६।५०८ (२) अप्रकाशित संक्षिप्त विवरण और खोज रिपोर्ट १९२३।१७५

३. आरती १६१३।१७५ सी
४. उग्र ज्ञान १६२६।१६२ के। रचनाकाल स० १८११
५ कहरानामा प्रथम १६२६।१६२ ई, १६४७।१०५ च, । रचनाकाल स० १८१०
६. कहरानामा दूसर १६२६।१६२ एफ। रचनाकाल स० १८१२
७ कहरानामा तीसर १६२६।१६२ जी। रचनाकाल स० १८१४
८. चरण वदगी १६२६।१६२ एच। रचनाकाल स० १८११
६. छद विनती १६२६। १६२ एल। रचनाकाल स० १८११
१० जगजीवन दास जी की बानी १६०६।१२२,१६४१।७३, या बाणियाँ १६४७।१०५ ठ
११ ज्ञान प्रकाश १६२६।१६२ आर, १६४४।११८ ख, १६४७।१२५ छ ज। रचनाकाल स० १८१३
१२. दृढ ध्यान १६२६।१६२ सी। रचनाकाल स० १८१०
१३. दृप्टात की साखी १६२६।१६२ एस
४१. दोहावली १६२६।१८७ ए। रचनाकाल स० १७८५
१५ परम ग्रथ १६१२३।१७५ ई, १६२६।१६२ वो, १६४७।१०५ झ। रचनाकाल स० १८१२
१६. बारह मासा १६२६।१६२ एम। रचनाकाल स० १८१२
१७. बुद्धि वृद्धि १६२६।१६२ बी। रचनाकाल स० १७८५
१८, मन पूरन १६२६।१६२ ए। रचनाकाल स० १८१४
१६. महाप्रलय १६२६।१६२ क्यू, १६४४।११८ क। रचनाकाल स० १८१३
२०. महाप्रलय कहरानामा १६४७।१०५ ञ
२१. लीला १६२३।१७५ डी, १६२६।१८७ बी, १६४७।१०५ ट
२२ विवेक ज्ञान १६२६।१६२ जे। रचनाकाल स० १८११
२३ विवेक मन्त्र १६२६।१६२ डी। रचनाकाल स० १८१०
२४. शरन वदगी १६२६।१६२ आई। रचनाकाल स० १८१४
२५ शब्द सागर १६२६।१७५ जी एच, १६२६।१८७ सी १६४७।१०५ ड

२६ स्तुति महावोर जी की १६२३।१७५ एफ, १६२६।१६२ एन, ओ। रचनाकाल स० १८१२। इन २६ ग्रन्थो मे से जगजीवन दास की बानी और शब्द सागर इनके प्राय सभी ग्रन्थो के सकलन ही है।

३०४।

(५१) जुल्फकार कवि, स० १७८२ मे उ०। इन्होने बिहारी सतसई का तिलक बहुत विचित्र बनाया है।

सर्वेक्षण

जुल्फिकारअली अलीबहादुर के पुत्र थे। इन्हे शाह आलम ने नजफर खा की उपाधि दी थी। बाजीराव पेशवा जब महाराज छत्रसाल की मदद के लिए पन्ना आए थे, तब उन्होने

पन्ना दरवार की वेश्या की वेटी मस्तानी को रख लिया था और उसे अपने साथ पूना ले गये थे। उसके गर्भ से वाजीराव को एक पुत्र शमशेर वहादुर हुआ था, जिसकी मृत्यु पानीपत की तीसरी लडाई मे हुई थी। शमशेर वहादुर के लडके का नाम अली वहादुर था। अली वहादुर मराठो की मदद के लिए वुन्देलखण्ड भेजा गया था। यहा वह स० १८४६ मे आया। हिम्मत वहादुर को सहायता से यह वादा का नवाव हुआ। कालिजर के युद्ध के समय अली वहादुर की मृत्यु स० १८५६ मे हुई। अली वहादुर के दो लडके थे। वडे का नाम शमशेर वहादुर और छोटे का नाम जुल्फिकार अली था। जिस समय अली वहादुर मरे, उस समय वडा लडका शमशेर वहादुर पूना मे था, अत. हिम्मत वहादुर और अली वहादुर के चचा गनी वहादुर ने जुल्फिकार अली को ही वादा का नवाव वना दिया। पर मराठो की सहायता से शीघ्र ही शमशेर वहादुर वादा का नवाव हो गया। अपने वावा गनी वहादुर को जहर दे दिया। स० १८६१ मे अग्रेजो ने शमशेर वहादुर के राज्य को हडप लिया और उसे चार लाख रुपयो की जागीर दे दी गई। इसी साल स० १८६१ मे ही शमशेर वहादुर मर गया। तदुपरात जुल्फिार अली को चार लाख की पेंशन मिली और यह वादा का नवाव भी कहलाता रहा। इसके वशज इन्दौर मे वहुत दिनो तक रहे और १३ हजार सालाना पेंशन पाते रहे।[१]

इन्ही जुल्फिकार अली ने विहारी सतसई का तिलक कु डलिया वृत्तो मे किया। यह ग्रन्थ जुल्फिकार सतसई के नाम से प्रख्यात है। इसका असल नाम कु डलिका वृत्त है। इसका रचनाकाल श्रावण सुदी पचमी वुधवार, स० १९०३ है[२] —

गुन[३] नभ[०] ग्रह[९] अरु इन्द्र[१] नाभ सित पचमि वुधवार
जुल्फिकार सतसई को प्रगट भयौ अवतार[२]

ऐसी स्थिति मे सरोज मे दिया हुआ सवत् १७८२ अशुद्ध हे।

३०६।

(५२) जगनिक वदीजन, महोवा, वुन्देलखड, स० ११२४ मे उ०। यह कवि चद कवीश्वर के समय मे था। जैसे चद का पद पृथ्वीराज चौहान के यहाँ था, वैसे परिमाल महोवेवाले चदेल राजा के यहाँ जगनिक का मान-दान था। चद ने रासो मे वहुत जगह इनकी प्रशसा की है।

सर्वेक्षण

जगनिक चद के समकालीन थे, अत इनका समय स० ११२४ अशुद्ध है। इनका रचनाकाल स० १२५० के आस-पास होना चाहिए। इनकी रचना जनवाणी मे मिलकर अपना मूल रूप खो चुकी है। इनकी कृति आल्हा की कोई पुरानी प्रति नही मिलती।

३०७।

(५३) जवरेश वदीजन, वुन्देलखण्डी वि०।

सर्वेक्षण

विनोद (२४४६) के अनुसार जवरेश रीवा नरेश के यहा स० १९४० मे उपस्थित थे।

---

(१) वुन्देलखण्ड का सक्षिप्त इतिहास, अध्याय ३११ (२) खोज रि० १९०४।२० तया विहारी सतसई सम्बन्धी साहित्य ना० प्र० पत्रिका, कार्तिक १९८५, पृष्ठ ३२९

ट

३०८।२५०

(१) टोडर कवि, राजा टोडरमल खत्री, पजाबी, स० १५८० मे उ०। यह राजा टोडरमल अकवर बादशाह के दीवान आला थे। इनके हालात से तारीख फारसी भरी हुई है। अरबी, फारसी और सस्कृत मे यह महा निपुण थे तथा श्रीमद्भागवत का सस्कृत से फारसी मे उल्था किया है और भाषा मे नीति सम्बन्धी वहुत कवित्त कहे है। इन महाराज ने दो काम वहुत शुभ हिंदुस्तानियो के भलाई के लिए किए है, एक तो पजाब देश मे खत्रियो के यहाँ रिवाज तीनसाला मातम का उठाकर केवल वार्षिक रस्म को नियत किया, दूसरे फारसी हिसाब किताब को ईरान देश के माफिक हिंदुस्तान मे जारी किया। सन् ६६८ हिजरी मे शहर लाहौर मे देहात हुआ।

सर्वेक्षण

टोडरमल पहले शेरशाह के यहाँ ऊँचे पद पर थे। फिर अकबर के समय मे भूमिकर-विभाग मे मन्त्री हुए। इन्होने शाही दफ्तरो मे हिन्दी के स्थान पर फारसी का प्रचार किया, जिसके लिए हिन्दी वाले इनके कभी भी कृतज्ञ नही हो सकते, क्योकि फारसी की ही जगह पर उर्दू आई, जो एक युग तक हिन्दी की जड काटती रही।

टोडरमल की मृत्यु का सम्वत् निश्चित है। यह सन् ६६८ हिजरी (स० १६४६ वि०) मे लाहौर मे दिवगत हुए। सरोज मे दिया स० १५८० ईस्वी-सन् है और कवि का उपस्थितिकाल है।

सं० १५६७ मे शेर खाँ ने आगरा-दिल्ली पर अधिकार किया था। स० १६०० मे हुमायूँ ईरान भागा था। शेरशाह की मृत्यु २२ मई सन् १५४५ ई० तदनुसार स० १६०२ मे हुई। अत स० १६०२ के पूर्व टोडरमल शेरशाह के यहाँ उच्चाधिकारी रहे होगे। यदि सरोज-दत्त सवत् १५८० को विक्रम सवत् और टोडरमल का जन्मकाल माने तो २२ वर्ष की अल्प आयु मे वे शेरशाह के यहाँ उसकी मृत्यु के समय उच्चाधिकारी थे। यदि दो वर्ष भी पहले उनकी नियुक्ति हुई रही हो तो उस मुस्लिम युग मे किसी हिंदू का २० वर्ष की ही वय मे उच्चाधिकारी हो जाना सभव नही। स० १५८० न तो जन्मकाल है और न तो विक्रम सवत् है, यह ई० सन् मे उपस्थितिकाल है।

टोडरमल ने कोई काव्य ग्रथ नही लिखा। यह कभी-कभी नीति सवधी फुटकर छद लिखा करते थे। श्री मया शकर याज्ञिक ने वडे श्रम से इनकी रचनाओ को ढूँढकर टोडरमल सग्रह नाम से सकलित किया है।[१] शुक्ल जी के अनुसार इनका जन्मकाल स० १५५० है।

३०६।

(२) टेर कवि, मैनपुरी जिले के वासी, स० १८८८ मे उ०। इन्होने सुन्दर कविता की है।

सर्वेक्षण

टेर के सवध मे कोई सूचना सुलभ नही।

---

(१) खोज रि० १६३२।२१८

३१०।

(३) टहकन कवि पजाबी। इन्होने पाडवो के यज्ञ इतिहास की कथा सस्कृत से भाषा मे की है।

सर्वेक्षण

टहकन कवि का एक ग्रन्थ अश्वमेध भाषा मे मिला है। वह जलालपुर, पजाब के रहनेवाले चोपडा खत्री थे। यह रगीलदास के पुत्र थे। यह कृष्ण भक्त भी थे। इन्होने अश्वमेध भाषा की रचना स० १७२६ मे की।[१] सरोज मे उल्लिखित पाडवो के यज्ञ इतिहास की कथा तथा विनोद (४५२।१) मे वर्णित जैमिनि अश्वमेध ग्रथ यही है।

३११।२५१

(१) ठाकुर कवि प्राचीन, स० १७०० मे उ०। ठाकुर कवि को किसी ने कहा है कि वह असनी ग्राम के वदीजन थे। स० १८०० के करीब मोहम्मदशाह वादशाह के जमाने मे हुए हैं। और कोई कहता है कि नही, ठाकुर कवि कायस्थ वुन्देलखण्डवासी हैं। किसी वुन्देलखण्डी कवि का वयान है कि छत्रपुर वुँदेलखण्ड मे वुँदेला लोग हिम्मत वहादुर गोसाई को मारने को इकट्ठा हुए थे। ठाकुर कवि ने यह कवित 'समयो यह वीर वरावने हैं,' लिख भेजा। सव वुन्देला चले गए और हिम्मत वहादुर ने ठाकुर को वहुत रुपये इनाम मे दिए। हिम्मत वहादुर स० १८०० मे थे। कवि कालिदास ने हजारा सवत् १७४५ के करीब वनाया है और ठाकुर के वहुत कवित्त और ऊपर लिखा हुआ कवित्त भी लिखा है। इससे हम अनुमान करते हैं कि ठाकुर कवि वुन्देलखण्डी अथवा असनी वाले, भाट या कायस्थ कुछ हो, पर अवश्य सवत् १७०० मे थे। इनका काव्य महा मधुर लोकोक्ति अलकारो से भरापुरा सर्वप्रसन्नकारी है। सवैया इनके वहुत ही चुटीले है। इनके कवित्त तो हमारे पुस्तकालय मे सैकडो है, पर ग्रथ कोई नही। न हमने किसी ग्रन्थ का नाम सुना।

सर्वेक्षण

वस्तुत दो ठाकुर हुए है। हजारा के सम्बन्ध मे मैंने जो शोध किया है, उसके अनुसार हजारा १८७५ के आस-पास की रचना है। और ठाकुर प्राचीन का अस्तित्व नही सिद्ध होता।

१. ठाकुर कायस्थ वुन्देलखडी, जिनका सवध पन्ना दरवार से था, जो पद्माकर के समकालीन थे, और हिम्मत वहादुर से जिनका सवध था, यही ठाकुर दोनो ठाकुरो मे सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं। इन्ही की रचनाओ के सकलन करने का प्रयास लाला भगवान दीन ने 'ठाकुर ठसक' मे किया है। पर इसमे दोनो ठाकुरो की रचनाएँ मिली जुली हैं। इस ठाकुर का जन्म स० १८२३ मे ओरछा मे हुआ था। इनका देहात स० १८८० मे हुआ। यह गुलाव राय के पुत्र थे।

२ ठाकुर वदीजन असनी वाले, यह ऋषिनाथ कवि के पुत्र, धनीराम कवि के पिता और सेवक कवि के पितामह थे। यह काशी नरेश के भाई देवकी नदन के यहाँ थे। उन्ही के नाम पर स० १८६१ मे इन्होंने विहारी सतसई की 'सतसई वरनार्थ देवकी नदन टीका' लिखी।

---

१. खोज रि० १६२२।११० ए, वी

३१२।२५२

(२) ठाकुरप्रसाद त्रिपाठी १ किशुनदासपुर जिले रायबरेली स० १८८२ मे उ०।

यह महान् पडित सस्कृत साहित्य मे महा प्रवीण थे। सारे हिंदुस्तान मे काव्य ही के हेतु फिरकर ७२ बस्ते पुस्तकें केवल काव्य की इकट्ठा की थी। अपने हाथ से भी नाना ग्र थ लिखे थे। बु देलखड मे तो घर घर कवियो के यहाँ फिर कर एक सग्रह भाषा के कवियो का इकट्ठा किया था। रस चद्रोदय ग्र थ इनका बनाया हुआ है। तत्पश्चात् काशी जी मे गणेश और सरदार इत्यादि कवियो से बहुत मेल-जोल रहा। अवध देश के राजा महाराजो के यहाँ भी गए। जब इनका सवत् १९२४ मे देहात हुआ, तो इनके चारो महामूर्ख पुत्रो ने अठारह-अठारह बस्ते बाँट लिए और कौडियो के मोल बेच डाले। हमने भी प्रायः २०० ग्र थ अत मे मोल लिए थे।

सर्वेक्षण

शिवसिंह, ठाकुरप्रसाद और उनके चारो पुत्रो से परिचित थे, अत इनके सबध मे दी हुई सारी सूचनाएँ ठीक समझी जानी चाहिए। स० १८८२ कवि का रचनाकाल ही है।

३१३।२५३

(३) ठाकुरराम कवि, इनके कवित्त शात रस के सुन्दर हे।

सर्वेक्षण

इस कवि के सबध मे कोई सूचना सुलभ नही है।

३१४।२५४

(४) ठाकुर प्रसाद त्रिवेदी, अलीगज जिले खीरी, विद्यमान हैं। यह सत्कवि हैं।

सर्वेक्षण

इस कवि के भी सबध मे कोई विशेष सूचना नही प्राप्त हो सकी।

ढ

३१५।२५५

(१) ढाखन कवि, इनका महा अद्‌भुत काव्य है।

सर्वेक्षण

इस कवि के भी सबध मे कोई विशेष सूचना नही सुलभ हो सकी।

त

३१६।२५६

(१) श्रीगोस्वामी तुलसीदास जी १, स० १६०१ मे उ०।

यह महाराज सरवरिया ब्राह्मण राजापुर, जिले प्रयाग के रहनेवाले सवत् १५८३ के लगभग उत्पन्न हुए थे। सवत् १६८० मे स्वर्गवास हुआ। इनके जीवन चरित्र की पुस्तक वेणीमाधव दास कवि उसका ग्रामवासी ने, जो इनके साथ-साथ रहे, वहुत विस्तार पूर्वक लिखी है। उसके देखने से इन महाराज के सत्र चरित्र प्रकट होते है। इस पुस्तक मे ऐसी विस्तृत-कथा को हम कहाँ तक सक्षेप मे वर्णन करें। निदान गोस्वामी जी वडे महात्मा रामोपासक महायोगी सिद्ध हो गए हैं। इनके वनाए ग्रथो की ठीक-ठीक सख्या हमको मालूम नही हुई। केवल जो ग्रथ हमने देखे अथवा हमारे पुस्तकालय मे ह, उनका जिकर किया जाता है। प्रथम ४६ कांड रामायण वनाया है, इस तफसील से, १ चौपाई रामायण ७ काड, कवितावली ७ काड, ३ गीतावली, ७ काड, ४ छदावली ७ काड, ५ वरवै ७ काड, दोहावली ७ काड, ७ कुडलिया ७ काड। सिवा इन ४६ काडो के १ सतसई, २ राम शलाका, ३ सकट मोचन, ४ हनुमत वाहुक, ५ कृष्ण गीतावली, ६ जानकी मगल, ७ पार्वती मगल, ८ करखा छद, ९ रोला छद, १० झूलना छद इत्यादि और भी ग्रथ वनाए है। अत मे विनयपत्रिका महा विचित्र मुक्ति रूप प्रज्ञानदसागर ग्रथ वनाया है। चौपाई गोस्वामी महाराज की ऐसी किसी कवि ने नही वना पाई और न विनयपत्रिका के समान अद्भुत ग्रथ आज तक किसी कवि महात्मा ने रचा। इस काल मे जो रामयण न होती, तो हम ऐसे मूर्खो का वेडा पार न लगता। गोसाई जी श्री अयोध्या जी, मथुरा-वृदावन, कुरुक्षेत्र, प्रयाग, वाराणसी, पुरुषोत्तम पुर इत्यादि क्षेत्रो मे वहुत दिनो तक घूमते रहे हैं। सबसे अधिक श्री अयोध्या, काशी, प्रयाग और उत्तराखड, वशीवट जिले सीतापुर इत्यादि मे रहे हैं। इनके हाथ की लिखी हुई रामायण जो राजापुर मे थी, खडित हो गई है पर मलीहावाद मे आज तक सपूर्ण सातो काड मौजूद हें। केवल एक पन्ना नही है। विस्तार भय से अधिक हालात हम नही लिख सकते। दो दोहे लिखकर इन महाराज का वृत्तात समाप्त करते है।

दोहा—कविता कर्ता तीनि है, तुलसी, केसव सूर
कविता खेती इन लुनौ, सीला बिनत मजूर ॥१॥
सूर सूर तुलसी ससी, उडुगन केसवदास
अवके कवि खद्योत सम, जहँ तहँ करत प्रकास ॥२॥

सर्वेक्षण

राजापुर को तुलसीदास की जन्मभूमि माना जाता है। पडित चद्रवली पाडेय इसे कर्म भूमि मानते हैं। वे तुलसी की जन्मभूमि होने का गौरव अयोध्या को देते है। कुछ लोगो का हठ सोरो के लिए भी हे। राजापुर, वादा जिले मे यमुना के दाहिने किनारे पर हे, न कि प्रयाग जिले मे।

स० १६०१ मे तुलसीदास जी उपस्थित थे। सरोजकार के अनुसार गोस्वामी जी स० १५८३ के लगभग उत्पन्न हुए, पर अधिकाश विद्वान् इनका जन्मकाल स० १५८९ मानते हैं। वावा वेणीमाधवदास और वावा रघुवरदास रचित मूल गोसाई चरित और तुलसी चरित के अनुसार गोस्वामी जी का जन्म स० १५५४ मे हुआ।

वावा वेणीमाधवदास के जिस गोसाईं चरित का उल्लेख सरोज मे हुआ है, वह वस्तुत भवानीदास का लिखा हुआ है और स० १८२५ के आस पास रचा गया था। यह ग्रियर्सन द्वारा संपादित और खड्ग विलास प्रेस, वांकीपुर से १८८९ ई० मे प्रकाशित रामचरित मानस के आदि मे सलग्न है।

तुलसीदास के नाम पर अनेक ग्रथ मिलते है, परतु निम्नाकित १२ ही प्रामाणिक माने जाते है।

१ रामचरित मानस, २ विनय पत्रिका, ३ गीतावली, ४ कृष्ण गीतावली, ५ कवितावली, हनुमान बाहुक सहित, ६ दोहावली, ७, बरवै रामायण, ८ जानकी मगल, ९. पार्वती मगल, १० राम लला नहछू, ११ वैराग्य सदोपनी, १२, सगुनावली या राम शलाका या रामाज्ञा प्रश्न।

मलीहाबाद वाली रामचरित मानस की प्रति के तुलसीदास लिखित होने मे सदेह प्रकट किया जाता है। राजापुर वाली प्रति मे केवल अयोध्याकाड शेष है, जिसे किसी को दिखाया नही जाता, अत. इसके भी सबध मे सशय बना हुआ है।

तुलसी जी के देहावसान के सबध मे यह दोहा प्रचलित है—

संवत सोरह सै असी, असी गग के तीर
श्रावण शुक्ला सप्तमी तुलसी तज्यो शरीर

श्रावण शुक्ला सप्तमी के स्थान पर, 'श्रावण श्यामा तीज शनि' पाठ भी कहा जाता है। यह भी कहा जाता है कि तुलसी के मित्र टोडर के वशज तुलसी के नाम पर अब भी सावन वदी तीज को ब्राह्मण को सीधा देते है।

३१७।२५८

(१) तुलसी २ श्री ओझा जी, जोधपुर वाले। सुदरी तिलक मे इनके कवित है। शृ गार रस का इन्होने चोखा वर्णन किया है।

सर्वेक्षण

तुलसीदास ओझा, जोधपुर के राजगुरु थे। यह कवि और पहलवान थे। यह स० १९२६ मे काशी आए थे। यहाँ बालक अंबिकादत्त व्यास की सरस और चमत्कार पूर्ण समस्यापूर्तियो को सुनकर परम प्रसन्न हुए थे और उन्हे प्रशसापत्र तथा पुरस्कार मे वस्त्र आदि दिए थे।[1]

३१८।२५९

(३) तुलसी ३, कवि यदुराय के पुत्र, स० १७१२ मे उ०। यह कवि कविता मे सामान्य कवि है। इन्होने कविमाला नामक एक सग्रह बनाया है, जिसमे प्राचीन ७५ कवियो के कवित्त लिखे है। ये सब कवि सवत् १५०० से लेकर १७०० तक के है। इस सग्रह के बनाने मे इस ग्रथ से हमको बडी सहायता मिली हे।

सर्वेक्षण

स० १७१२ कविमाल का रचनाकाल है। सरोज मे रचनाकाल सूचक यह दोहा दिया गया है .—

सत्रह सै बारह बरस, सुदि असाढ़ बुधवार
तिथि अनग को सिद्ध यह भई जो सुख को सार

विनोद (३३५) मे इनका एक ग्रन्थ 'ध्रुव प्रश्नावली' और दिया गया है। विनोद मे ३९२ सख्या पर एक तुलसी और है, जिनका रचना काल स० १७११ है और जो रस कल्लोल तथा रस-

---

(१) भारतेंदु मंडल, पृष्ठ ११३

भूषण के रचयिता हैं। ये दोनो ग्रन्थ कविमाला वाले तुलसी के ही हे। स० १७११ रस कल्लोल का ही रचनाकाल है।[१]

३१६।२५६

(४) तुलसी ४, इनका काव्य सरस है।

सर्वेक्षण

तुलसी नाम के अनेक कवि खोज मे मिले है। केवल नाम और एक उदाहरण के सहारे इस कवि की पकड बहुत सभव नही। सरोज मे उदाहृत कविता से यह धार्मिक प्रवृत्ति के ज्ञात होते हैं। सभवत भगवद्गीता भाषा और ज्ञान दीपिका के रचयिता तुलसी यही है। ज्ञान दीपिका की रचना स० १६३१ मे हुई थी।[२] यह सभवत ज्ञान सवधी फुटकर छदो का सग्रह है और सरोज मे उद्धृत कवित्त इसी ग्रन्थ का है।

३२०।२६८

(५) तानसेन कवि ग्वालियर निवासी, स० १५८८ मे उ०। यह कवि मकरद पाडे गौड ब्राह्मण के पुत्र थे। प्रथम श्री गोसाईं स्वामी हरिदास जी गोकुलस्थ के शिष्य होकर काव्यकला को यथावत सीखकर पीछे शेख मोहम्मद गौस ग्वालियर वासी के पास जाकर सगीत विद्या के लिए प्रार्थना की। शाह साहव तत्र-विद्या मे अद्वितीय थे। मुसलमानो मे इन्ही को इस विद्या का आचार्य सब तवारीखो मे लिखा गया है। शाह साहव ने अपनी जीभ तानसेन की जीभ मे लगा दी। उसी समय से तानसेन गान विद्या मे महानिपुण हो गए। इनकी प्रशसा आईन अकबरी मे ग्रन्थकर्ता फहीम ने लिखा हे कि ऐसा गाने वाला पिछले हजारा मे कोई नही हुआ। निदान तानसेन ने दौलत खा, शेर खा वादशाह के पुत्र, पर आशिक होकर उनके ऊपर वहुत सी कविता की। दौलत खा के मरने पर श्री बाघव नरेश राम सिंह बघेला के यहा गए। फिर वहा से अकवर वादशाह ने अपने यहा बुला लिया। तानसेन और सूरदास जी से वहुत मित्रता थी। तानसेन जी ने सूरदास की तारीफ मे यह दोहा वनाया—

किधौं सूर को सर लग्यो, किधौं सूर की पीर
किधौं सूर को पद लग्यो, तन मन धुनत सरीर ॥१॥

तव सूरदास जी ने यह दोहा कहा —

विधना यह जिय जानि कै, सेस न दीन्हे कान
धरा मेरु सब डोलते, तानसेन की तान ॥२॥

इनके ग्रन्थ रागमाला इत्यादि महा उत्तम काव्य के ग्रन्थ हैं।

सर्वेक्षण

तानसेन का वास्तविक नाम त्रिलोचन पाडे था। यह ग्वालियर निवासी मकरद पाडे के पुत्र थे। इन्होने प्रसिद्ध स्वामी हरिदास वृन्दावनी से पिंगल शास्त्र तथा सगीत विद्या का अध्ययन किया था। इन्होने ग्वालियर के प्रसिद्ध सगीतज्ञ शेख मुहम्मद गौस से भी गान विद्या सीखी थी। यह पहले

---

(१) खोज रि० १६०६।२३६ (२) खोज रि० १६०६।२३८

शेरखा के पुत्र दौलत खा के आश्रित थे, फिर रीवा नरेश महाराज राम सिंह के यहाँ रहे। राम सिंह ने स० १६१९ मे इन्हे अकबर के दरबार मे भेजा। यह अकबरी दरबार मे आने पर बहुत प्रसिद्ध हुए। यह अपने समय के सर्वप्रसिद्ध सगीताचार्य थे। ऐसी ख्याति का सगीतज्ञ आज तक कोई दूसरा नही हुआ। यह अकबरी दरबार के नव रत्नो मे थे।

'अकबरी दरबार के हिन्दी कवि' मे तानसेन पर कुछ विस्तार से विचार हुआ है। सरोज मे दिया स० १५८८ इनका जन्मकाल माना गया है पर यह ठीक नही। वस्तुत यह ईस्वी, सन् है और तानसेन का उपस्थितिकाल है। डा० सुनीतिकुमार तानसेन का जन्मकाल अनुमान से सन् १५२० ई० मानते है।[१] दो सौ बावन वैष्णवो की वार्ता के अनुसार तानसेन का सबध वल्लभ-सप्रदाय से भी था। 'अकबरनामा' मे स्पष्ट रूप से लिखा है कि तानसेन की मृत्यु अकबर के शासनकाल ही मे स० १६४६ (२३ अप्रैल १५८३ ई०) मे हुई।[२]

तानसेन का सपूर्ण काव्य नर्वदेश्वर चतुर्वेदी द्वारा सपादित होकर साहित्य भवन लिमिटेड प्रयाग, से प्रकाशित हो चुका है। इनके तीन ग्रथ हैं—१ सगीत सार, २ राग माला, ३ श्री गणेश स्तोत्र। विनोद (८१) के अनुसार प्रथम दो का रचनाकाल स० १६१७ है। इन ग्रथो के अतिरिक्त इनके फुटकर पद और गीत भी है। इनमे इनकी हिंदू आत्मा स्पष्ट झाँक रही है। इधर प्रभु दयाल मीतल, मथुरा ने, इनकी सपूर्ण रचनाओ का एक और सकलन प्रकाशित किया है।

३२१।२६०

(६) तारापति कवि, स० १७९० मे उ०। इनकी नखशिख के कविता सुदर हैं।

सर्वेक्षण

सरोज मे उरोज सबधी इनका एक सुदर कवित्त उदाहृत है, जो दिग्विजय भूषण से उद्धृत है। सभव है इन्होने नखशिख का कोई ग्रथ लिखा हो। कवि के सबध मे कोई अन्य सूचना सुलभ नही। इनका नाम सूदन ने लिया है।

३२२।२६१

(७) तारा कवि, स० १८३६ मे उ०। इन्होने सुंदर कविता की है।

सर्वेक्षण

ग्रियर्सन (४१९) ने ३२१ तारापति और ३२२ तारा को अभिन्न माना है। सरोज मे दोनो कवियो के नखशिख सबधी एक-एक कवित्त उदाहृत है, जो ग्रियर्सन की सभावना की सत्यता के लिए एक हलका आधार हो सकते है।

नीति के दोहो वाले प्रसिद्ध कवि वृद के गुरु काशीवासी तारा पडित थे।[४] वृद ने इनसे साहित्य, वेदात, तथा अनेकानेक विषयो का ज्ञान प्राप्त किया था, साथ ही इन्ही मे कविता करना भी

---

(१) ऋतंभरा पृष्ठ १११ (२) अकबरी दरबार के हिन्दी कवि, पृष्ठ ९८-११४ (३) वही (४) राजस्थानी भाषा और साहित्य, पृष्ठ १६४

सीखा था। अत वृ द के गुरु यह तारा पडित अच्छे कवि भी रहे होंगे। वृ द का जन्म स० १७०० मे और मृत्यु स० १७८० मे हुई। अत तारा पडित स० १७२० के आस-पास काशी मे उपस्थित रहे होगे। सरोज के तारा और इन तारा पडित के समय मे १०० वर्ष से भी अधिक का अतर है। तारा काशीस्थ और ३२१ तारापति के समय मे भी ५० वर्ष का अतर है। हो सकता है ये तीनो कवि एक ही हो और अनुमान पर आद्धृत होने के कारण सरोज के सवत् अशुद्ध हो।

५२३।२६२

(८) तत्ववेत्ता कवि, स० १६८० मे उ०। इनके हजारा मे कवित्त है।

सर्वेक्षण

तत्ववेत्ता जी निबार्क-सप्रदाय के सत, मारवाड राज्य के जैतरण नगर के निवासी और जाति के छैन्याती ब्राह्मण थे। इनके असली नाम का पता नही। तत्ववेत्ता इनका उपनाम था। ये सुकवि और चमत्कारी महात्मा थे। अपने पीछे सैकडो शिष्य छोडकर गोलोकवासी हुए, जिनमे तीन-चार की गद्दियाँ आज भी अजमेर, जयपुर, जैतारण आदि विभिन्न स्थानो मे चल रही है। इनका आविर्भाव काल स० १५५० के लगभग है। इनके एक ग्र थ का पता चलता है। राजस्थानी भाषा और साहित्य मे इसका नाम 'कवित्त' और राज० रि०,भाग १ मे 'तत्ववेत्तारा सवैया' है। यह ग्र थ न तो कवित्तो का है, न सवैयो का। इसमे कुल ९८ छप्पय हैं। इनमे राम, कृष्ण, नारद, जनक आदि महा पुरुषो की महिमा का कथन है। सरोज, राजस्थानी भाषा और साहित्य तथा राज० रि० मे इनके एक एक छुप्पय उद्धृत हैं। सभवत. ये सभी इसी ग्रथ से है। यह ग्रथ व्रज भाषा मे है।[1]

३२४।२६३

(९) तेगपाणि कवि, स० १७०८ मे उ०। ऐजन। हजारा मे इनके कवित्त है।

सर्वेक्षण

तेगपाणि के सवध मे कोई सूचना सुलभ नही।

३२५।२७०

(१०) ताज कवि, स० १६५२ मे उ०।ऐजन। हजारा मे इनके कवित्त है।

सर्वेक्षण

क्यामखानी वश का शासन राजस्थान के फतहपुर और झुंझनू मे कई शताब्दियो तक रहा है। इस वश का मूल पुरुष चौहान वशीय था। अत. इसके वशजो को अपने मूल चौहान वश का गौरव सदा ही रहा है। अकबर के समय मे फदन खाँ चौहान यहाँ के राजा थे। इन्ही की बेटी ताज थी। इसका व्याह अकबर से हुआ था। फदन खाँ के वशज अतप खाँ के पुत्र यामत खाँ उपनाम

---

(१) राज० रि० १ और राजस्थानी भाषा और साहित्य, पृष्ठ १०

जान कवि ने 'क्याम खाँ रासा नामक ग्रथ लिखा है, जिसमे उक्त विवाह का उल्लेख है, पर ताज का नाम नही हैं। यह विवाह अकवर वादशाह के कहने पर हुआ था। वादशाह को उस समय तक हिन्दुओ पर पूरा विश्वास नही हुआ था। अत यह अक्वर के शासन का प्रारभिक काल रहा होगा।

हिंदी के मुसलमान कवि मे, ताज स्त्री थी या पुरुष, यह प्रश्न उठाया गया है। सरोज मे इस सवध मे कुछ नही कहा गया है। सभवत सरोजकार इन्हे पुरुष ही समझते थे। सामान्यतया वे स्त्री मानी जाती रही हैं। अव तो वे अकवर की स्त्री सिद्ध हो गई हैं, फिर यह प्रश्न ही नही रह जाता।

ताज गोस्वामी विट्ठल नाथ की शिष्या थी। गोकुल के आस पास ही इनकी मृत्यु हुई। रसखान और ताज की समाधियाँ महावन के निकट कदमखडी मे प्राप्त हुई हैं। ताज की समाधि पर एक घिसा हुआ लेख है। उसके पूरे न पढे जाने पर भी उसमे ताज नाम स्पष्ट पढा जा सका है।

ताज ने कवित्त, सवैया, दोहा धमार एव पद प्रचुर मात्रा मे लिखे हैं। उनकी साढी वारह पुष्टि सप्रदाय मे मान्य है और पुष्टि सप्रदाय के मदिरो मे गाई जाती है। इनका एक ग्रथ है 'वीवी वाँदी का झगरा।' इस ग्रथ मे लोकोक्तियो का प्रयोग वहुत है।[१]

सरोज मे दिया स० १६५२ ताज का रचनाकाल है। ताज विट्ठल नाथ की शिष्या थी। उन्होने यह शिष्यत्व स० १६४२ के पूर्व किसी समय स्वीकार किया होगा। क्योकि यही उनका देहावसानकाल है।

'हिंदी के मुसलमान कवि' मे 'पूरवले जनम कमाई जिन खूव करी' के अनुसार इनको अवध, विहार अथवा वगाल मे उत्पन्न कहा गया है। पर पूरव और ले अलग अलग शब्द नही हैं। यह एक शब्द पूरवले है। पूरवले जन्म का अर्थ है पूर्व जन्म। पजावी शब्दो के प्राचुर्य के कारण मिश्रवधु इन्हे पजाविन समझते हैं।[२]

सिहोर निवासी गोविंद गिल्लाभाई को ताज की एक पुस्तक मिली थी, जिसमे निम्नाकित विषयो पर रचनाएँ थी।[३]

१ गणेश स्तुति, २ सरस्वती समाराधन, ३ भवानी वदना, ४ हरदेव जी की प्रार्थना, ५ मुरलीधर के कवित्त, ६. दशावतार वर्णन, ७ निरोष्ठ कवित्त, ८ होरी फाग, ६ वारहमासा, छप्पयो मे, १०. वारहमासा, कवित्तो मे, ११ वारहमासा, कुडलियो मे, १२. भक्ति पक्ष के कवित्त १३ फुटकर।

३२६।२७१

(११) तालिवशाह, स० १७६८ मे उ०। इनके कवित्त अच्छे हैं।

---

(१) कवियित्री ताज रचित एक अज्ञात ग्रथ, व्रज भारती, वर्ष १३, अक २, भाद्रपद २०१२
(२) विनोद, कवि सख्या ६६ (३) हिन्दी के मुसलमान कवि पृष्ठ १६२

सर्वेक्षण

ग्रियर्सन (४३१) मे तालिबअली उपनाम रसनायक बिलग्रामी और इन तालिब शाह के एक होने की सभावना की गई है, जो ठीक नही प्रतीत होती, क्योकि तालिबअली अपनी छाप रसनायक रखते थे और तालिब शाह अपने नाम का पूर्वांश केवल तालिब। इस कवि के सबध मे और कोई सूचना नही।

३२७।२६६

(१२) तीर्थराज ब्राह्मण, बैसवारे के, स० १८०० मे उ०। यह महाराज महान कवीश्वर वैस वशावतश राजा अचल सिंह वैस रनजीतपुरवावाले के यहाँ थे और उन्ही की आज्ञानुसार सवत् १८०७ मे समरसार भाषा किया।

सर्वेक्षण

अचल सिंह डौंडियाखेरा के राजा थे। तीर्थराज ने इन्ही के आश्रय में स० १८०७ मे समरसार की रचना की, जैसा कि सरोज मे कहा गया है तथा इसकी खोज मे प्राप्त प्रति मे दिए रचनाकाल सूचक दोहे से भी सिद्ध है—

सवत मुनि, नभ, उरग ससि, ज्येष्ठ सुक्ल रवि तीज
बयो सुजस फल तेहन को, समर सार को बीज

खोज रि० १९०६।११५

इस ग्रन्थ मे युद्ध प्रारभ करने का मुहूर्त विचार है।

३२८।२६६

(१३) तीखी कवि, ऐजन। (निरर्थक) प्रथम एव द्वितीय सस्करणो मे नही है।

सर्वेक्षण

तीखी कवि की कविता के उदाहरण मे सरोज मे यह कवित्त दिया गया है—

सिंह पै खवाओ, चाहौ जल मैं डुवाऔ,
चाहौं सूली पै चढाओ, घोरि गरल पियाइबी
बीछी सों डसाओ, चाहौ साप पै लिटाओ,
हाथी आगे डरवाओ, एती भीति उपजाइबी
आगि मे जराऔ, चाहौ भूमि में गडाओ,
तीखी अनी वेधवाऔ, मोहिं दुख नहिं पाइबी
व्रज जन प्यारे कान्ह कान यह बात करौ,
तुम सों विमुख ताको मुख ना दिखाइबी

'तीखी अनी वेधवाओ' मे 'तीखी' अनी का विशेषण है, न कि कवि का नाम। तीखी का अर्थ है तीक्ष्ण और अनी का अर्थ है नोक। यह कवित्त भक्तमाल के प्रसिद्ध टीकाकार प्रियादास की रचना है और उक्त टीका का अतिम(६२८ वा) कवित्त है।

---

(१) देखिए, यही ग्रन्थ, शभुनाथ, कवि सख्या ८४० (२) देखिए, यही ग्रन्थ, कवि संख्या २६२

३२९।६२७

(१४) तेही कवि । ऐजन । निरर्थक, प्रथम एव द्वितीय सस्करणो मे नही है ।

सर्वेक्षण

मेरी धारणा है कि कवि का नाम तेही न होकर नेही है । आगे इसी ग्रंथ मे नेही नामक कवि है ।[१] लिखते समय 'न' का 'त' और 'त' का 'न' हो जाना बहुत सरल है । इस कवि का एक ही छद सरोज मे उद्धृत है । जब तक इस कवि के अनेक छद तेही छाप से युक्त नही मिल जायें, इसके अस्तित्व के सबध मे सदेह बना ही रहना चाहिए ।

३३०।२६४

(१५) तोष कवि, स० १७०५ मे उ० । यह महाराज भाषा काव्य के आचार्यों मे हैं । ग्रन्थ इनका हमको कोई नही मिला । पर इनके कवित्तो से हमारा कुतुबखाना भरा हुआ है । कालिदास तथा तुलसी जी ने भी इनकी कविता अपने ग्रथो मे बहुत सी लिखी है ।

सर्वेक्षण

तोष का पूरा नाम तोषमणि[१] था जैसा कि इनके प्रसिद्ध ग्रथ सुधानिधि की एक हस्तलिखित प्रति की पुष्पिका से प्रकट है । सुधानिधि की रचना स० १६६१ मे हुई :—

संवत सोलह सै बरस गो इकानबे बीति
गुरु अषाढ़ की पूर्णिमा रच्यो ग्रन्थ करि प्रीति

अत स्पष्ट है कि सरोज मे दिया हुआ स० १७०५ कवि का रचनाकाल ही है और इनकी रचनाएँ अवश्य ही कवि माला (स० १७१२) और हजारा (स० १८७५) मे रही होंगी । शुक्ल जी ने प्रमाद से इस ग्रथ का रचनाकाल स० १७९१ दे दिया है । सुधानिधि रस का ग्रन्थ है । इसमे रस और नायिका भेद वर्णित है । यह ग्रन्थ भारत जीवन प्रेस, काशी से सन् १८९२ ई० मे प्रकाशित हो चुका है । सरोज मे यद्यपि तोष के किसी ग्रन्थ का नाम नही दिया गया है, और प्रमादवश सुधानिधि की गणना तोषनिधि के ग्रन्थो मे हो गई है, पर तोष की कविता का उदाहरण देते समय ऊपर 'सुधानिधि ग्रन्थे' लिख दिया गया है ।

तोषमणि शुक्ल चतुर्भुज शुक्ल के पुत्र थे । यह इलाहाबाद जिले के अतर्गत, गगा के तट पर स्थित सिंगरौर, (शृङ्गबेरपुर) के रहनेवाले थे । सुधानिधि के इस सवैये मे कवि ने अपना परिचय स्वय दे दिया है —

शुक्ल चतुर्भुज को सुत तोष बसै सिंगरौर जहां रिखि थानो
दच्छिन देवनदी निकटै दस कोस प्रयागहि पूरब मानो
सोधि के सुद्ध पढैंगे सुबोध सु हौं न कछू कवितारथ जानौं
केलि कथा हरि राधिका की पद छेम जथामति प्रेम बखानौं ५५४

३३१।२६५

(१६) तोषनिधि ब्राह्मण कपिलानगर वासी, स० १७९८ मे उ० ।

---

(१) खोज रि० १९०९।३१९

इनके बनाए हुए तीन ग्रन्थ हैं—१ सुधानिधि, २ व्यग्य शतक, ३ नखशिख। ये तीनो ग्रन्थ विचित्र हैं।

सर्वेक्षण

तोषनिधि कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। यह फर्रुखाबाद जिले के अतर्गत गगा तट स्थित कपिला के रहनेवाले थे, जहाँ के रहनेवाले प्रसिद्ध सुखदेव मिश्र थे। सुधानिधि इनका ग्रथ नही है। यह तोषमणि की रचना है।[1] इनके निम्नाकित ग्रथ खोज मे मिले है :—

१ व्यग्य शतक—१६१२, १८६, १६३२।२१६। यह १०० दोहो मे भगवान से अत्यत व्यग्य और मर्मपूर्ण प्रार्थना है। इसीलिए ग्रथ का नाम व्यगशतक या व्यग शत है। इसके प्रथम और अतिम दोहो मे कवि का नाम तोषनिधि आया है।

सुमिरि तोषनिधि दीन जन दीनबधु घनश्याम
सौ दोहा मय ग्रथ किय, दीन व्यग सत नाम १
नहिं पडित, कवि भक्त नहि, गुनी प्रवीन न सत
अर्थ पाइ निज तोषनिधि, कवि समुझायो तत १००

२ रति मजरी—१६२०।१६६। यह न तो रस ग्रथ है, न इसमे नायिका भेद ही है। इसमे रति सबंधी बातें हैं—

सुर नर नाग सबै रहे या रति के आधीन
ता सुख हित रति मजरी कहौ तोष परवीन

ग्रथ का रचनाकाल स० १७६४ है—

सत्रह सै चौरानबे सवत सौ गुरुवार
पौष कृष्ण तिथि पचमी रति मजरी विचार

यद्यपि इस ग्रथ मे एव पुष्पिका मे तोष ही नाम दिया गया है, फिर भी समय को ध्यान मे रखते हुए इसे इन्ही तोषनिधि की रचना मानना पडता है और इस ग्रथ के मिल जाने से सरोज मे दिया हुआ इस कवि का स० १७६८ रचनाकाल सिद्ध हो जाता है।

सरोज मे नखशिख से भी एक छद उद्धृत है जिसमे कविछाप तोषनिधि है। इससे स्पष्ट है कि यह भी इन्ही की रचना हे। विनोद (६८४।१) मे इनके निम्नाकित ग्रन्थो का नाम निर्देश है :—

१ कामधेनु, २ सरोज, ३ भैयालाल पचीसी, ४ कमलापति चालीसा, ५ दीन व्यंग शतक, ६ महाभारत छप्पनी।

विनोद के अनुसार इनके पिता का नाम ताराचद और पुत्र का नाम गिरिधर लाल है। इन्हे प्रमाद से कान्यकुब्ज शुक्ल माना गया है। यह कान्यकुब्ज अवस्थी थे। इनके वशज शिवनदन अवस्थी अभी तक कपिला में हैं।[2]

तोषनिधि-राजा दौलत सिह जिला एटा राज्य राजौर के दरबारी कवि थे। माधुरी[3] के अनुसार इनके निम्नाकित ग्रन्थो का पता चलता है —

१—भारत पचाशिका। यही विनोद का 'महाभारत छप्पनी' ग्रन्थ प्रतीत होता है।
२—दौलत चद्रिका।

---

(१) यही ग्रथ, तोष कवि सख्या ३३० (२) ब्रज भारती, वर्ष १२, अंक २, सवत् २०१२, पृष्ठ ३६ (३) माधुरी, नवम्बर १६२७, पृष्ठ ५८४-८५

३—राजनीति

४—आत्म शिक्षा

५—दुर्गा पच्चीसी। सभवत: यही 'भैयालाल पचीसी' है।

६—नायिका भेद—अपूर्ण।

७—व्यग्य शतक

यद्यपि सरोज, ग्रियर्सन और विनोद मे तोष और तोषनिधि को भिन्न भिन्न कवि माना गया है, और पडित कृष्ण विहारी मिश्र ने साहित्य समालोचक और माधुरी मे दोनो कवियो की विभिन्नता दिखलाने के लिए लेख लिखे थे, फिर भी आचार्य शुक्ल ने न जाने कैसे दोनो कवियो को एक कर दिया है।[१]

द

३३२।२७९

(१) राजा दत्त सिंह कवि, बुदेलखण्डी, स० १७८१ मे उ०। इन्होंने केवल प्रेम पयोनिधि नामक ग्रथ राधा माधव के परस्पर नाना लीला विहार के वर्णन मे बनाया है।

सर्वेक्षण

सरोज के आधार पर विरचित ग्रथो को छोड इस कवि का उल्लेख अन्यत्र कही नही मिलता।

३३३।२८२

(२) दलपति राय वशीधर श्रीमाल ब्राह्मण, अमदाबादवासी, स० १८८५ मे उ०। इन्होने भाषा-भूषण का तिलक दोनो ने मिलकर बहुत विचित्र रचना करके बनाया है।

सर्वेक्षण

भाषा-भूषण के जिस तिलक का उल्लेख सरोज मे हुआ है, उसका नाम अलकार रत्नाकर है। खोज मे इसकी अनेक प्रतियाँ मिली है।[२] इस ग्रथ से तीन दोहे सरोज मे उद्धृत हैं, जिनसे इन कवि-द्वय के सबध मे पर्याप्त अभिज्ञता होती है। दलपति राय श्रीमाल महाजन (तेली) थे और वशीधर मेदपाट ब्राह्मण। दोनो अहमदाबाद के रहने वाले थे। दलपतिराय ने गद्य मे इस ग्रथ के लक्षण लिखे और वशीधर ने कही-कही पर स्वरचित कवित्तो के उदाहरण दिए। महाराज जसवत सिंह कृत भाषा भूषण कही-कही लक्षण हीन है। दलपतिराय ने अत्यत श्रम से कुवलयानद के आधार पर उसको शोध भी दिया है।

भाषा भूषण अलकृत कहुँ यक लक्षण हीन
श्रम करि ताहि सुधारि सो दलपतिराय प्रवीन १
अर्थ कुवलयानद को बाध्यो दलपतिराय
वंशीधर कवि ने धरे कहूँ कवित्त बनाय २
मेदपाट श्रीमाल कुल, विप्र महाजन काइ
वासी अमदावाद के बंसी दलपतिराय ३

---

(१) हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ २८२ (२) खोज रि० १९०४।१३, १९१२।१८, ४५, १९२३।८२ ए बी, १९२६।८६ ए बी, राज० रि० ३, पृ० ११०

यह ग्रथ उदयपुर के महाराजा जगत सिंह की प्रेरणा से लिखा गया

उदयापुर सुरपुर मनौ सुरपति श्री जगतेस
जिनकी छाया छत्र वसि कीन्ही ग्रंथ असेस—१९२६।८६ ए

ग्रथ का रचनाकाल सूचक दोहा केवल एक प्रति मे दिया गया है —

सतरै सै अंठावने माह पख सितवार
सुभ वसंत पाचै भयो यहै ग्रथ अवतार—खोज रि० १९१२।४५

इस दोहे के अनुसार रचनाकाल स० १७५८ हुआ। पर शोध-निरीक्षक श्री श्याम विहारी मिश्र ने इसे उदयपुर नरेश जगत सिह के शासनकाल स० १७९१-१८०८ से सामजस्य न खाता देख अनुमान किया कि यह अठावने, अठानवे होना चाहिए। इतना सव होते हुए भी सभवत. लेख दोष मे विनोद (७१६-१७) और शुक्ल जी के इतिहास[1] मे इसका रचना काल स० १७९२ दिया गया है। राजस्थानी भाषा और साहित्य मे इसका रचनाकाल स० १७९८ अवश्य दिया गया है। इसके अनुसार अलकार रत्नाकर मे दलपति राय और वशीधर दोनो की कविता है और यह ग्रथ सवत् १९३८ मे उदयपुर के राज्य यत्रालय से प्रकाशित भी हुआ था। इस ग्रथ के उदयपुर सरकार द्वारा प्रकाशित किये जाने से यह और भी स्पष्ट हो जाता है कि इस कवि का सम्बन्ध इस दरवार से अवश्य था। एक रिपोर्ट मे इसका रचना काल माघ सुदी ५, स० १८९८ भी दिया हुआ है।[3] सरोज मे दिया इस कवि का समय अशुद्ध है।

दलपति राम के नाम पर श्रवणाख्यान नामक एक ग्रथ खोज मे मिला है।[4] यह कवि भी अहमदावाद का रहने वाला था। इसने इसे वलरामपुर नरेश दिग्विजय सिंह के आश्रय मे रहकर स० १९२४ मे रचा। इस कवि के वाप का नाम डाहिया था। यह कवि अलकार रत्नाकर वाले दलपति राय से भिन्न है। भास्कर रामचद्र भालेराव ने 'गुजरात का हिंदी साहित्य' शीर्षक लेख मे इस कवि का नाम दलपत राम दिया है और इसका कुछ और भी विवरण दिया है।[5] इन दलपत राम का जन्म स० १८७७ (१८२० ई०) मे एव देहान्त ७२ वर्ष की आयु मे १९५५ (१८९८ ई०) मे हुआ। यह स्वामि नारायण सप्रदाय के थे।[6]

विनोद के अनुसार अलकार रत्नाकर मे निम्नाकित ४४ अन्य कवियो की भी रचनाएँ उदाहृत हैं—

१ यशवत सिह—स्फुट छद और सारा भाषा भूषण, २ सेनापति, ३ केशवदास, ४ वलभद्र, ५ भगवत सिंह, ६ गग, ७ विहारी लाल, ८ मुकुन्द लाल ९ वदन, १० शिरोमणि ११ सुखदेव, १२ चातुर, १३ सूरति मिश्र, १४ नील कठ, १५ मीरन, १६ राम कृष्ण, १७ आलम, १८ देवी, १९ दास, २० धोरी, २१ कृष्ण दडी, २२ देव, २३ कालि दास,

---

(१) हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ २८३ (२) राजस्थानी भाषा और साहित्य पृष्ठ १८४
(३) खोज रि० १९०४।१३ (४) खोज रि० १९०९।१२ (५) माधुरी ५।२।१ जून १९२७
(६) साहित्य, वर्ष ८।१ अप्रैल १९२७, 'कवीश्वर दलपत राम कृत श्रवणाख्यान' लेखक— उमाशकर नागर, गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद।

२४ दिनेश, २५ बीठल राय, २६ अनीस, २७ काशी राम, २८. चिंतामणि, २९ पुखी, ३० शिव, ३१ गोप, ३२ रघुराय, ३३ नेही, ३४. मुबारक, ३५ रहीम, ३६ मतिराम३७ रसखान, ३८. निरमल, ३९ निहाल, ४० निपट निरजन, ४१ नदन, ४२ महाकवि, ४३ राधा कृष्ण, ४४. ईश।

३३४।२८९

(३) दयाराम कवि १। इन्होने अनेकार्थ माला ग्रथ बनाया है।

सर्वेक्षण

दयाराम नाम के अनेक कवि खोज मे मिले हैं। सभवत यह गुजराती दयाराम नागर हैं। यह नर्वदा तट पर बसे चडी ग्राम, जो अब चाणोद कहलाता है, के निवासी थे। यह वल्लभ सप्रदाय के अनुयायी थे। इनका जन्म स० १८२४ और मृत्यु स० १९०९ मे हुई।[१] इन्होने कृष्ण नाम चन्द्रिका, दयाराम सतसई, श्रीमद्भागवतानुक्रमणिका अनन्य चन्द्रिका और वस्तुवृन्द नामदीपिका[२] नामक ग्रथ लिखे हैं। सभवत वस्तुवृन्द नाम दीपिका ही सरोज वर्णित अनेकार्थ माला ग्रथ है। वस्तुवृन्द नाम दीपिका मे १०८ स्तवक हैं। इसमे विषयवार वस्तुओ के नामो का सग्रह है, जैसे चतुर्दश महामाया नाम, चतुर्दश मन्वतर नाम। इनमे से दयाराम सतसई का रचना काल स० १८७२ है।

शक अष्टादश दुहुतरा शुभ्र पच्छ नभ मास
मिति श्री राधा अष्टमीवार गुरु शुभ रास ७२६

दयाराम का मूल नाम दयाशकर था। पहले यह शैव थे। वैष्णव होने पर दयाराम हो गए। इनके पिता का नाम प्रभुराम और माता का महालक्ष्मी था। यह साठोदरा नागर कुल के थे। बाल्यावस्था मे ही यह मातृ-पितृहीन हो गए और बीस से चालीस की वय तक समस्त भारत मे तीर्थयात्रा करते घूमते रहे। यह बडे सुन्दर और शौकीन थे। इन्होने सस्कृत, मराठी, उर्दू, पजाबी और हिन्दी तथा गुजराती में रचना की है। गुजराती मे इनके ४२ एव हिन्दी मे ४१ ग्रथ हैं। इनके हिन्दी ग्रथो की सूची यह है—

१ सतसैया, २ रसिक रजन, ३ वस्तुवृन्द दीपिका, ४ व्रज विलासामृत, ५ पुष्टि भक्तरूप मलिका, ६ हरिदास मणिमाला, ७ क्लेश कुठार, ८. विज्ञप्ति विलास, ९ श्रीकृष्ण नाम चन्द्रकला, १०. पुष्टि पथ रहस्य, ११ प्रस्ताविक पीयूष, १२ स्वम्यापार प्रभाव, १३ श्रीकृष्ण नाममाहात्म्य मार्तंड, १४ श्रीकृष्ण नाम चद्रिका, १५. विश्वासामृत, १६. वृन्दावन विलास, १७. कौतुक रत्नावली, १८ दशम अनुक्रमणिका, १९ श्री भागवत अनुक्रमणिका, २० श्री भागवत माहात्म्य, २१ सकल चरित्र चद्रिका २२ श्रीकृष्ण नामरत्न मालिका, २३ अनन्य चन्द्रिका, २४ मगलानन्द माला, २५ प्रस्ताव चद्रिका, २६ चिंतामणि, २७ पिंगल सार, २८ श्रीकृष्ण नामामृत, २९ श्रीकृष्ण स्तवनामृत लघु, ३० स्तवन पीयूष, ३१ चतुर चित्त विलास ३२ श्रीहरि स्वप्न सत्यता ३३ अनुभव मजरी ३४ गुरु पूर्वार्द्ध शिष्य उत्तरार्ध ३५ माया मत खडन ३६ भगवद्भक्तोत्कर्षता ३७ ईश्वरता प्रतिपादक ३८ भगवद्-

---

(१) नागरी प्र० पत्रिका, वर्ष ६१, अक १, स० २०१३, पृष्ठ ४९, पाद टिप्पणी, खोज रि० १९४४।१४९ क ख ग घ ङ

इच्छोत्कर्षता ३९ मूर्ख लक्षणावलि ४०. श्रीकृष्ण नाममाहात्म्य ४१ शुद्धाद्वैत प्रतिपादन।

दयाराम जी वल्लभ सम्प्रदाय के वैष्णव थे। इनके गुरु का नाम गिरिधर लाल था। यह मुख्यतया श्रृंगारी कवि है।[1]

३३५।२९१

(४) दयाराम कवि त्रिपाठी, स० १७९९ मे उ०। इनके शात रस के कवित्त चोखे हैं।

सर्वेक्षण

स० १७९९ के आस पास एक दयाराम वैद्य मिले है, जो तीर्थराज प्रयाग के रहनेवाले थे। इनका दया विलास अथवा वैद्यक विलास नामक ग्रथ खोज मे मिला है।[2] इस ग्रन्थ की रचना कार्तिक सुदी ११, गुरुवार स० १७७९ को हुई—

खंड[9] दीप[6] मुनि[7] मेदिनी[1] विक्रम साहि सुजान
सवत सु न साके सुनो सालवाहिनी नाम
सालवाहिनी नाम वेद विधिमुख रस चदा
तूल के प्रगट पतंग सेत पख कहत कहेदा
दया सुवा सुख ग्रन्थ सिद्धिभृगु खेती आखे
उदित सयन प्रभु पूजि मितर गुरु लाभ सुभाखे

निम्नाकित चरणो मे कवि ने अपने निवास स्थान की सूचना दी है—

त त त तीर्थराजसजति प्रान प्राग सतगुन पद चारि
द द द दया वास जहँ शभु निरत माधौ वपु धारि

पुष्पिका मे इन्हे लछीरामात्मज कहा गया है। कवि दिल्ली के मुगल बादशाह मुहम्मदशाह (शासनकाल स० १७७६-१८०५) के समय मे हुआ। यह किसी चतुरसेन का आश्रित था। यह चतुरसेन दिल्ली निवासी थे और इनका सम्बन्ध मुहम्मद शाह के दरबार से था —

चतुरसेन चतुरगिनी राजत रजत ज्हान
सुरपति सम गम लच्छिमी दिल्लो सुजस मकान
दिल्ली सुजस मकान, तिमिर को बस तिमिरहर
लच्छण लच्छ प्रकार कहत कवि कोटि महीधर
तपै मुहम्मद साहि प्रनत भूपति महिमाकर
दया कविन को दास जासु जस चंद्र दिवाकर

सभा के सक्षिप्त अप्रकाशित विवरण मे इन्हे वदन कवि का पितामह और बेनीराम का गुरु कहा गया है। सभवत. यही सरोज के दयाराम त्रिपाठी है।

---

(१) साहित्य, वर्ष ७, अक २, जुलाई १९५६ ई०, श्री अबाशकर नागर कृत लेख 'कवि दयाराम की हिन्दी कविता, पृष्ठ ३६-३८ (२) खोज रि० १९०१।५०, १९०२।११४, १९०६।६३, १९२०।२७, १९२३।८७ ए बी, १९२६।९४, १९३८।२७, १९४१।५०१

३३६।२९३

(५) दयानिधि कवि २ ।

सर्वेक्षण

विनोद (१४८४।१) मे इन्हे राधावल्लभी कहा गया है । सरोज मे राधा के चरणो की स्तुति करनेवाला इनका एक कवित्त उद्धृत भी है ।

वसुधा ते न्यारी रस धारा बहै जामे ऐसी
दसधा त्रिवेनी प्रिया पाद पदमन में

दयानिधि के कवित्त ग्वालकृत कवि दर्पण या दूषण दर्पण[1] और षट्ऋतु वर्णन[2] मे सकलित है । दूषण दर्पण का रचनाकाल स० १८९१ है । अत. दयानिधि जी स० १८९१ के पूर्व किसी समय उपस्थित थे ।

३३७।२९४

(६) दयानिधि ब्राह्मण, पटनावासी, ३ ।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही है । सरोज मे उदाहृत छन्द दिग्विजय भूषण से लिया गया है ।

३३८।२९२

(७) दयानिधि कवि बैसवारे के, स० १८११ मे उ० । इन्होने राजा अचल सिंह बैस की आज्ञानुसार शालिहोत्र ग्रन्थ बनाया है ।

सर्वेक्षण

शालिहोत्र की अनेक प्रतियाँ खोज मे मिली हैं[3] । अचल सिंह बैस क्षत्रिय थे । यह डौंडिया खेरा (उन्नाव) के राजा थे । इनके पिता का नाम वीरशाह और पितामह सबलशाह था—

वयस वस अवतास मनि जगत सुजस चहुँ ओर
भूमडलपुरहूत मे सबल साह सिरमौर ३
वीरसाह जाके भये ज्यों कस्यप के भान
दान समै बलि करन से रन मे भीम समान ४
अचलसिह ताके भये ज्यों जजाति के पूर
धर्म धुरन्धर धरनि में ग्यानी दाता सूर ५
सुकवि दयानिधि सों कह्यो अचलसिह सुखमानि
सालिहोत्र को ग्रथ यह भाषा कीजै जानि ६
अचलसिह के हुकुम ते जानि संस्कृत पथ
भाषा भूषित करत हौं सालिहोत्र को ग्रथ ७

---

(१) राज० रि० ३, पृष्ठ ११५ (२) वही, पृष्ठ १४८ (३) खोज रि० १९०१।६२, १९२३।८६ ए बी, १९४७।१५३

अन्तिम दो दोहे सरोज मे उद्धृत हैं। ग्रथ मे रचनाकाल नही दिया गया है। प्राचीनतम प्रति सम्वत् १८१० की लिखी हुई है। तीर्थराज ने स० १८०७ मे इन्ही अचल सिह के लिए 'समर सार' नामक ग्रथ की रचना की थी।[1] अत. स० १८११ दयानिधि का उपस्थितिकाल ही है।

३३६।३०४

(८) दयानाथ दुबे, स० १८८६ मे उ०। इन्होने आनन्द रस नाम ग्रथ नायिका भेद का बनाया है।

सर्वेक्षण

सरोज मे दिया हुआ स० १८८६ आनन्द रस नामक नायिका भेद का रचनाकाल है। इसी वर्ष कवि ने सावन पूर्णिमा शनिवार को यह ग्रन्थ रचा। रचनाकाल सूचक यह दोहा सरोज मे उद्धृत है '—

सवत् ग्रह[९] वसु[८] गज[८] मही[१] कह्यो यहै निरधार
सावन सुदि पूनो सनी भयौ ग्रन्थ परचार १

३४०।२७४

(९) दयादेव कवि।

सर्वेक्षण

खोज मे इनके फुटकर कवित्तो का सग्रह 'दयादेव कवित्त' मिला है।[2] पर इससे कवि के सम्बन्ध मे कोई नवीन सूचना नही मिलती। सूदन ने इनका नाम प्रणम्य कवियो की सूची मे दिया है। अत. इस कवि का रचनाकाल स० १८१० मे पहले होना चाहिए। सरदार के शृङ्गार सग्रह मे भी इनके कवित्त है।

३४१।

(१०) दत्त प्राचीन, देवदत्त ब्राह्मण कुसमडा जिले कन्नौज, स० १८७० मे उ०। इन महाराज ने सुन्दर कविता की है।

सर्वेक्षण

ग्रियर्सन (२६१) मे ३४१ दत्त प्राचीन, ३६२ देवदत्त, ३६५ देवदत्त को तथा विनोद (२६१) मे ३४१ दत्त प्राचीन और ३६२ देवदत्त को अभिन्न माना गया है। यदि ऐसा है तो सरोज मे दिया स० १८७० अशुद्ध है। इस कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही। प्रथम सस्करण मे कवि का समय स० १७०३ दिया गया है।

महाकवि देव (सर्वेक्षण ३६०) का जन्म स० १७३० मे इटावा मे हुआ था। यही २६ वर्ष की वय मे इटावा छोड, कुसमडा जिला मैनपुरी मे आ बसे थे। यह कवि उक्त महाकवि देव ही हैं, जो १८२२ के आसपास तक जीवित रहे। यहां जिला और समय अशुद्ध दिए गए हैं। और १७०३ को यदि अक व्यत्यय मान लिया जाय तो यह १७३० हो सकता है, जो देव का जन्मकाल है। अन्यथा सवत् अशुद्ध है।

---

(१) यही ग्रन्थ, कवि संख्या ३२७ (२) खोज रि० १९४१।६९

३४२।३०३

(११) दत्त, देवदत्त ब्राह्मण साढ जिले कानपुर, स० १८३६ मे उ० । यह कवि पद्माकर के समय मे महाराज खुमानसिह बुन्देला चरखारी के यहाँ थे। उन दिनो पद्माकर, ग्वाल, तथा दत्त इन तीनो कवियो की वडी छेडछाड रहती थी। 'धारा वाधि छूटत फुहारा मेघमाला से' इस कवित्त पर राजा सुखमान सिंह ने दत्त जी को वहुत दान दिया था।

सर्वेक्षण

चरखारी नरेश खुमान सिंह का शासनकाल स० १८१२-३६ है। यही समय दत्त का भी होना चाहिए। सरोज मे दिया हुआ इनका स० १८३६ ठीक है और कवि का रचनाकाल है। इस दत्त के तीन ग्रन्थ खोज मे मिले हैं—

१ लालित्य लता—१९०३।५५, १९०६।५६। यह अलकार का ग्रन्थ है। इसकी रचना स० १७९१ मे हुई थी।

सवत सत्रह सै परे एकानवे प्रमान
यह लालित्य लता ललित रची पौष सुदि बान
—खोज रि० १९०३।५५

इस ग्रन्थ मे कवि ने अपना-निवास स्थान अतरवेद के अतर्गत, असनी और कन्नौज के बीच गगा तट पर स्थित जाजमऊ वताया है, जहाँ राजा ययाति ने ९९ यज्ञ किए थे—

अतरवेद पवित्र महा असनी और कनौज के मध्य विलास है।
भागीरथी भव तारनि के तट देखत होत सो पातक नास है।
देव सरूप सबै नर नारि दिनों दिन देखिये पुन्य प्रकास है।
जज्ञ निनानवे कीने जजाति सो जाजमऊ कवि दत्त को वास है।

लगता है जाजमऊ से लगा हुआ साढि कोई गाव है जिसका उल्लेख सरोजकार ने किया है।

२ सज्जन विलास—१९०३।३९। यह नायिका भेद का ग्रन्थ है। इसकी रचना चैत सुदी ९, बुधवार स० १८०४ को हुई —

सवत ठारह सै वरस, चारि चैत सुदि चारु
नौमी बुध दिन को भयो, नयो ग्रन्थ अवतारु

यह ग्रन्थ टिकारी, गया, के राजकुमार फते सिंह की आज्ञा से बना था।

३ स्वरोदय–१९०३।१२०। नासिका के सुर से राजाओ के चढाई पर जाने का मुहूर्त-विचार इस ग्रथ मे वर्णित है। प्राप्त प्रति अपूर्ण है और महाराज बनारस के पुस्तकालय मे है। इसके प्रथम छद मे दत्त छाप है। यह गणेश-वदना का कवित्त है। यही लालित्य लता का भी पहला छद है, अत यह ग्रन्थ भी इन्ही दत्त का है।

दत्त अवस्था मे पद्माकर से वहुत वडे थे। इनका रचनाकाल स० १७९१–१८३६ है। पद्माकर का जन्म स० १८१० मे हुआ था और इनका रचनाकाल उस समय प्रारम्भ होता है, जब कि दत्त का समाप्त होता है। इसी प्रकार ग्वाल का रचनाकाल स० १८७९ से १९१९

तक है। पद्माकर का देहावसान स० १८९० मे हुआ, अत. दत्त और पद्माकर कुछ समय तक साथ रहे होगे और दत्त, पद्माकर तथा ग्वाल कभी एक साथ न रहे होगे। ऐसी स्थिति मे तीनों कवियो की पारस्परिक छेड-छाड सम्बन्धी सरोज का कथन ठीक नही। सरोज मे प्रमाद से दूसरी बार खुमान सिंह के स्थान पर सुखमान सिंह छप गया है।

३४३।२८०

(१२) दास, भिखारीदास, कायस्थ, अरवत बुन्देलखडी, सं० १७८० मे उ०। यह महान् कवि भाषा साहित्य के आचार्य गिने जाते हैं। छदोर्णव नाम पिंगल, रस-साराश, काव्य निर्णय, शृङ्गार निर्णय, वाग वहार, ये पाँच ग्रन्थ इनके वनाए हुए अति उत्तम काव्य हैं।

सर्वेक्षण

लाला भिखारीदास हिन्दी के सुप्रसिद्ध आचार्य कवियो मे है। छदोर्णव के पाँचवें छद मे इन्होने अपना परिचय दिया है। छद के एक-एक अक्षर छोडकर पढने से यह परिचय प्राप्त होता है —

अभिलाषा करी सदा सेसनि का होय ब्रित्थ
सब ठौर दिन सब याही सेवा चरण चानि
लोभा लई नीचे ज्ञान हलाहलही को अंशु
अत है क्रिपा पाताल निदा रस ही को खानि
सेनापति देवी कर शोभा गनती को भूप
पन्ना मोती हीरा हेम सौदा हास ही को जानि
होय पर देव पर बढै यश रटै नाउं
खगासन नगधर सीतानाथ कोलपानि ५

रहस्य की कुंजी अगले दोहे मे है :—

या कवित्त अतर चरण तै तुकत द्वै छडि
दास नाम कुल ग्राम कहि नाम भगति रस मंडि ६

इस निर्देश का पालन करने पर यह पदावली हाथ लगती है —

भिखारीदास कायत्थ, वरन वही वार भाई चैनलाल को, सुत कृपालदास को,
नाती वीरभानु को, पन्नाती रामदास को, अरवर देश टेउगा नगर ता थल।

इसके अनुसार भिखारीदास वर्ण से कायस्थ थे। इनके भाई का नाम चैन लाल, पिता का नाम कृपालदास, पितामह का वीरभानु, तथा प्रपितामह का रामदास था। यह अरबर देशातर्गत टेउगा के रहनेवाले थे। यह स्थान प्रतापगढ शहर से एक मील दूर है। सरोजकार ने प्रमाद से इसे बुन्देलखड के अतर्गत समझ लिया है। यह प्रमाद दास के आश्रयदाता प्रतापगढी हिन्दूपति और छत्रसाल के पौत्र पन्नानरेश प्रसिद्ध हिन्दूपति के नाम-साम्य के कारण हुआ है।

१ अमर तिलक—१९२६।६१ ए, वी १९४७।२६१ क। यह सस्कृत के अमरकोश का क्रमवद्ध पद्यमय तिलक है। विनोद का कथित 'नाम प्रकाश' ग्रन्थ भी यही है। सरोज उल्लिखित 'बाग-वहार' ग्रन्थ की चर्चा किसी ने भी नही की है। विनोद (७१२) का अनुमान है कि यह अमरकोश के हिन्दी अनुवाद अमर तिलक का फारसी रूपातर है।[१] पर प० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र के अनुसार यह सब असगत है और दास ने वागवहार का कोई ग्रन्थ नही लिखा।[२]

---

(१) खोज रि० १९२६।६१ (२) भिखारीदास, भाग १, पृष्ठ ७

२ काव्य निर्णय—१९०३।६१, १९२०।१७ ए, बी, १९२३।५५ डी, ई, १९२६।६१ ई, एफ, जी, एच, आई, १९४७।२६१ ग, प० १९२२।२२। यह इनका सर्वाधिक प्रसिद्ध ग्रन्थ है। इसमे काव्य के विविध अगो का विवेचन हुआ है। इसकी रचना स० १८०३ मे हुई—

अट्ठारह सै तीन है सम्वत् आश्विन मास
ग्रथ काव्य निर्णय रच्यो विजै दसै दिन दास

इस ग्रन्थ के प्रमुख आधार चद्रालोक और काव्य प्रकाश है--

बूझि सु चद्रालोक अरु काव्यप्रकाश सु ग्रन्थ
समुझि समुझि भाषा कियो लै औरौ कवि पथ

यह ग्रन्थ अरवर देशाधीश के अनुज हिन्दूपति सोमवशी ठाकुर के लिए बना था—

जगत विदित उदयाद्रि सो अरवर देश अनूप
रवि लौ पृथ्वीपति उदित तहाँ सोम कुल भूप
सोदर ताके ज्ञाननिधि हिन्दूपति सुभ नाम
जिनकी सेवा से लह्यो दास सकल सुख धाम

इस ग्रन्थ का सक्षिप्त रूप तेरिज काव्य निर्णय नाम से खोज मे अलग भी मिला है।[१]

३ छदार्णव—१९०३।३१,१९२०।१७ सी, १९२३।५५ ए, बी, सी, १९२६।६१ सी, डी, १९४७।२६१ घ। इस पिंगल ग्रन्थ की रचना स १७९९ मे हुई—

सत्रह सै निन्नानबे मधु बदि नवै कविद
दास बढ्यौ छंदारनौ सुमिरि सावरे इद्दु

इसी ग्रन्थ का 'छद प्रकाश' नाम से एक परिशिष्ट काशीनरेश महाराज उदित नारायण सिंह (शासनकाल स० १८५२-९२) के किसी दरबारी कवि ने प्रस्तुत किया था। यह सूचना स्वय ग्रन्थ मे दी गई है पर प्रमाद से इसे दास का एक स्वतत्र ग्रन्थ मान लिया गया है।[२]

४ रस साराश—१९०४।२१, १९२३।५५ एफ, जी, १९२६।६१ जे, के, १९४७।२६१ च, छ, ज। यह नायिका भेद का ग्रन्थ है। इसकी रचना स० १७९१ मे हुई---

सत्रह सै इक्यानबे नभ सुदि छठि बुधवार
अरवर देश प्रताप गढ भयो ग्रन्थ अवतार

इस ग्रन्थ की एक सक्षिप्त प्रति तेरिज रस साराश नाम से भी मिली है।[३]

५ विष्णु पुराण भाषा—१९०९।२७ बी, १९२६।६१ क्यू, आर, १९४७।२६१ झ। यह ग्रन्थ दश हजार अनुष्टुप छदो के बराबर है —

यह सब नुष्टुप छंद में दस सहस्र परिमान
दास सस्कृत ते कियो भाषा परम ललाम

६ शतरज शतक—१९०९।२७ ए। ग्रन्थ मे केवल ५ पन्ने है। यह ग्रन्थ प्रतापगढ राज-

(१) खोज रि० १९२६।६१ ओ (२) खोज रि० १९०३।३२ (३) खोज रि० १९२६।६१ पी

पुस्तकालय मे प्राप्त हुआ है। पुष्पिका मे इसे भिखारीदास की कृति कहा गया है। छदो मे भी कवि की छाप दास है—

परम पुरुष के पाय परि पाय सुमति सानंद
दास रचै शतरज की सतिका आनँद कंद

७ शृगार निर्णय--१९०३।४६, १९२३।५५ एच, आई, १९२६।६१ एल, एम, एन। यह ग्रन्थ भी प्रतापगढ के राजा के छोटे भाई हिन्दूपति के लिए रचा गया—

श्री हिन्दूपति रीझि के समुझि ग्रथ प्राचीन
दास कियो शृंगार को निरनय सुनौ प्रवीन

इसकी रचना स० १८०७ वैशाख सुदी १३, गुरुवार को अरवर प्रदेश मे हुई—

सम्वत् विक्रम भूप को अट्ठारह सै सात
माधव सुदि तेरसि गुरौ अरवर थर विख्यात

महेशदत्त ने भिखारीदास का जन्मकाल स० १७४५ और मृत्युकाल स० १८२५ दिया है।[1] शुक्ल जी इनका रचनाकाल स० १७८५-१८०७ मानते हैं।[2] भिखारीदास ग्रन्थावली का प्रकाशन सभा की आकर-ग्रन्थमाला से दो भागो मे हुआ है। इधर जवाहर लाल चतुर्वेदी ने भी काव्य-निर्णय का एक वृहद् सटीक सस्करण सपादित करके प्रकाशित कराया है। यह ग्रन्थ पहले भी छप चुका है।

३४४।२७७

(१३) दास २ वेनी माधवदास, पसका, जिले गोडा, स० १६५५ मे उ०। यह महात्मा गोस्वामी तुलसीदास जी के शिष्य उन्हीं के साथ रहते रहे हैं और गोसाईं जी के जीवन-चरित्र की एक पुस्तक 'गोसाई चरित्र' बनाई है। सम्वत् १६९९ मे इनका देहात हुआ।

सर्वेक्षण

गो० तुलसीदास का वेनीमाधवदास नाम का कोई ऐसा शिष्य नही हुआ, जिसने 'गोसाई-चरित्र' नामक ग्रन्थ रचा हो। सरोजकार ने यह सब विवरण महेशदत्त शुक्ल कृत भाषाकाव्य सग्रह के आधार पर दिया है।[3] महेशदत्त ने भवानीदास की रचना को वेनीमाधवदास की रचना मान लिया है। भवानीदास ने गोसाईं चरित्र की रचना तुलसीदास की मृत्यु के १५० वर्ष बाद स० १८३० वि० के लगभग स० १८०८ और १८६० के बीच की, अत वेनीमाधवदास का अस्तित्व सिद्ध नही होता। पूर्ण विवरण 'गोसाईं चरित्र' की भूमिका मे मिलेगा। मैंने यह ग्रन्थ प्राप्त करके सपादित कर दिया है।

३४५।२८७

(१४) दान कवि। इनकी शृङ्गार रस की सरस कविता है।

---

(१) भाषा काव्य सग्रह, पृष्ठ १३२ (२) हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ २७७ (३) भाषा-काव्य संग्रह, पृष्ठ १३५

सर्वेक्षण

कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही।

३४६।३०८

(१५) दामोदर दास, ब्रजवासी, स० १६०० मे उ०। इनके पद रागसागरोद्भव मे हैं।

सर्वेक्षण

सरोज मे इनका एक पद उद्धृत है जिससे ज्ञात होता है कि यह हितहरिवश के राधावल्लभी सप्रदाय के थे, क्योकि इनके नाम के साथ हित जुडा हुआ है।

दामोदर हित सुवेस, सोभित सखि सुख सुदेस,
नव निकुज, भँवर गुज, कोकिल कल गाजै

यह हित दामोदर दास वृन्दावन निवासी थे और लाल कृपाल स्वामी के शिष्य थे। लाल कृपाल स्वामी गो० हित हरिवश के तृतीय पुत्र गोपीनाथ जी के शिष्य थे। दामोदर जी स० १६८७-६२ के लगभग वर्तमान थे। सरोज प्रथम सस्करण मे इनका समय स० १६२२ दिया गया है, जो सप्तम सस्करण मे १६०० हो गया है। दोनो सवत् अशुद्ध हैं। यह दामोदरदास, राधावल्लभ सप्रदाय के प्रसिद्ध कवि दामोदरदास उपनाम 'सेवक' जी से भिन्न है। सेवक जी गढा (जिला जबलपुर) मे स० १५७७ मे उत्पन्न हुए थे। यह हित हरिवश जी के समकालीन थे और उनकी मृत्यु के एक ही वर्ष बाद स० १६१० मे दिवगत हुए थे।[1] खोज मे इनके निम्नाकित ग्रन्थ मिले हैं—

१ गुरु प्रताप लीला—१६१२।४६ बी, १६४१।५०३ ख। इस ग्रन्थ मे गुरु माहात्म्य वर्णित है—

गुरु भक्तनि सौ इतनी आस
माँगत हित दामोदर दास ८०

२. जजमान कन्हाई जस—१६१२।४६ ए। इस ग्रन्थ मे कृष्ण लीलाएँ हैं। इसमे कुल ४२ छद है, जिनमे ३२ सवैये है। अत मे दो दोहे है। ग्रथ मे कवि की छाप है—

छाडि सबै हित दास दामोदर, सोई गह्यो जजमान कन्हाई

इस ग्रन्थ की रचना स० १६६२ मे कार्तिक वदी ७ को हुई—

सवत भुज[२] निधि[९] रस[६] ससी[१] कातिक सातैं आदि
बतिस सवैया अष्ठ सिद्धि जसु बरन्यो सु अनादि

३ नेम बत्तीसी—१६१२।४६ डी, १६२६।७५, १६४१।५०३ क। इस ग्रन्थ मे ३२ दोहे है। इस ग्रन्थ से कवि के गुरु, लाल कृपाल और इनके निवास-स्थान वृन्दावन का पता चलता है—

श्री गुरु लाल कृपाल बल, ये मेरे निर्धार
श्री वृदावन छाँडि के भटकौं नहि ससार १

---

(१) राधावल्लभ सप्रदाय—सिद्धात और साहित्य, पृष्ठ ३४६

श्री गुरु लाल कृपा करी, दयो वृदावन वास
अब हौ मन निश्चल करौं, तजों अनत की आस २
कुंज कुज निरखत फिरौं, जमुना जल मे न्हाउं
श्री वृदावन छाडि के, अनत न कतहूँ जाउं ३

ग्रन्थ की रचना स० १६८७, अगहन सुदी ११ को हुई—

सवत सागर[७] सिद्धि[८] गनि रस[६] ससि[१] गनि रितु हेम
अगहन मास रु पच्छ सित एकादसि कृति नेम ३१

अतिम दोहे मे कवि का नाम भी आ गया है—

सख पचीसो चढ रस नित प्रति पाठ कराउं
दामोदर हित रसिक जे तिनकी बलि बलि जाउं ३२

सभवत. इसी ग्रथ का उल्लेख निंब बत्तीसो[१] नाम से हुआ है।

४. पद, दामोदर स्वामी के पद—१६१२।४६ एफ, १६४१।१०२ क। श्री कृष्ण लीला सम्बन्धी पद्य ग्रन्थ वडा है। कुल १३६ पन्ने मे पूर्ण हुआ है। पदो मे हित दामोदर छाप है।

५ रहस विलास—१६१२।४६ एफ। राधाकृष्ण का विहार वर्णन। ग्रथ मे कुल २२ छद हैं, जिनमे १५ कवित्त और ३ सवैये है। आदि मे ३ दोहे हैं—

गनि पढिए गुन[३] दोंहरा, तिथि[१५] गुन[३] केलि कवित्त
दामोदर हित उर बसौ लाल लाडिली नित्त

६ राधा कृष्ण वर्णन—१६४१।१०२ख।

७. रास पचाध्यायी—१६१२।४६ जी। यह ग्रथ सवैयावध कहा गया है, पर है कवित्त वध। इस ग्रथ मे भी गुरु का नाम आया है—

लाल कृपाल कृपा करो, भयो कछु बुद्धि प्रकास
दामोदर हित भक्ति रति वरन्यौ रास विलास ३०

ग्रथ की रचना स० १६६६ मे हुई। इसमे कुल ३० कवित्त है —

रवि[१२] रस[६] गुन[३] अरु अक[९] मिलि ए गनि पढ़ो कवित्त
दामोदर हित के हियो चढे रहो सुख नित्त

८ रस लीला पावस वर्णन—१६१२।४६ आई। इस ग्रथ मे पावस काल की रस लीला वर्णित है। दो दो चरणो के ११७ छद है। ग्रथ मे कवि की छाप है—

दामोदर हित कै यह साधा
पुरवहु करुणा करि हरि राधा ११६

९ बसत लीला—१६१२।४६ ई। यह ग्रन्थ चौपहीवध है। इसमे दो-दो चरणो के कुल १०५ छद हैं। यह चौपही वस्तुत रोला छद है।

हरि रस माते रसक मध्य तिन मै दिन बासा
हित दामोदर दास की जु पुरवहु यहु आसा १०५

१० स्वगुरु प्रताप—१६१२।४६ सी। गुरु लाल कृपाल की प्रशस्ति। ग्रथ मे कुल ४४ छद है।

जय जय गुरु लाल कृपाल
पावन गुन भक्तनि प्रतिपाल

---

(१) खोज रि० १६४१।५०३ग

लाल कृपाल सदा सुख बरषें
लाल कृपाल सदा मन हरषें

ग्रथात मे कवि ने अपना नाम भी दिया है—

दामोदर हित जस दिन गावै
सत जनन को माथो नावै ४३

११. हरि नाम महिमा—१९४१।१०२ ग।

३४७।२७५

(१६) दामोदर कवि २।

सर्वेक्षण

दामोदर कवि का एक शृङ्गारी सवैया सरोज मे उद्धृत है। इससे यह कोई रीतिकालीन शृङ्गारी कवि प्रतीत होते हैं। पुराने साहित्य मे दो दामोदर मिलते हैं। एक तो निर्गुनिएँ हे जो दादू के शिष्य जगजीवनदास के चेले थे।[1] दूसरे दामोदर महाराष्ट्र हैं। यह ओरछा नरेश हमीर सिंह देव के गुरु थे। महाराज विक्रमाजीत ने ओरछा की गद्दी पर सम्वत् १८३३ से १८७४ तक राज्य किया। अपने जीवन काल ही मे इन्होने अपने पुत्र धर्मपाल को गद्दी दे दी थी, जो सम्वत् १८९१ मे नि सन्तान मरा। महाराजा विक्रमाजीत ने पुन राज्य की बागडोर सँभाली पर वे भी इसी साल दिवगत हो गये। तब इनके भाई तेज सिंह राजा हुए। इन्होने सम्वत् १८९१ से १८९८ तक राज्य किया। तेजसिंह के पश्चात् इनका पुत्र सुजानसिंह राजा हुआ, किन्तु धर्मपाल की महिषी लँडई रानी ने आपत्ति की और गोद लेने का दावा किया। सम्वत् १९११ मे अग्रेजी सरकार ने रानी के दावे को स्वीकार किया और रानी ने हमीर सिंह को गोद लिया। सम्वत् १९२२ मे हमीर सिंह को महाराजा की पदवी मिली। यह भी सम्वत् १९३१ मे नि.सन्तान मरे।[2] इन्ही हमीर सिंह के गुरु दामोदर देव थे।

दामोदर देव दाक्षिणात्य मराठे ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम पद्मदेव था। यह सम्वत् १८८८-१९२३ के लगभग उपस्थित थे। महाराष्ट्र की नारियाँ केशो मे पुष्प-प्रसाधन किया करती हैं, सरोज-उद्धृत छद मे ऐसी ही एक नारी का चित्र है, जो 'आछे से केस मे फूल भरावै।' अत सरोज के दामोदर यही दामोदर देव प्रतीत होते हैं। दामोदर देव के निम्नाकित पांच ग्रन्थ खोज मे मिले है—

१. रस सरोज—१९०६।२४ ए। यह रीति-ग्रन्थ है। सरोज मे उद्धृत छद इसी ग्रन्थ का प्रतीत होता है। इसकी रचना चैत्र शुक्ल पक्ष मे रविवार के दिन सम्वत् १८८८ मे चित्रकूट में प्रारम्भ हुई।

सम्वत वसु[८] वसु[८] वसु[८] सु विधु[१], मधु सु धवल हरि रोज
चित्रकूट यह आरम्भ्यो सुन्दर सरस सरोज

---

(१) विनोद कवि संख्या ३५७, ४० (२) बुन्देलखड का सक्षिप्त इतिहास, अध्याय ३२, अनुच्छेद ९. १० तथा अध्याय ४०, अनुच्छेद २

प्रतीत होता है कि ग्रन्थ धीरे-धीरे करके बहुत दिनो मे पूरा हुआ। लिखा गया है कि ओरछा नरेश हमीर सिंह की आज्ञा मे ग्रन्थ लिखा गया। ऐसा लगता है कि ग्रन्थारम्भ सम्वत् १८८८ में हुआ, जबकि हमीर सिंह न तो राजा हुये थे और न गोद ही लिये गये थे। इसके प्रारम्भ काल के २३ वर्ष बाद १९११ मे यह गोद लिये गये। सम्भवत इनके गोद लिये जाने की सभावना देख विनम्रता वश इन्हे राजा कहा गया है, जैसे अनन्य ने सेनुहडा के जागीरदार पृथ्वीचन्द्र को नरेश कहा है। यह भी सभव है कि ग्रन्थ मे बहुत से छद बहुत बाद मे जोडे गये। इस ग्रन्थ से पता चलता है कि दामोदर हमीर सिंह के गुरु थे।

माँगत दामोदर यहै, है सतन को दास
जो तुम अपनो गुरु कियो, तो दीजे ब्रजबास ६४८

यह पुष्टि-सम्प्रदाय के अनुयायी थे। ग्रन्थ के प्रथम छद से यह सूचना मिलती है—

पुष्ठि पथ कुवलय वलय, विमल चन्द्रिका चारु मुख
धरि हृदय पाद रज तन सुमति, सुमति पाइ मैं हुव विद्रुप १

कवि शृङ्गारी होता हुआ भी भक्त है—

रस सरूप श्री कृष्ण पद पदमा धरे उरोज
वे निज उर धरि जथा मति, बरनौं सुरस सरोज २

ग्रन्थ की निम्न पुष्पिका महत्त्व पूर्ण है—

"इति श्रीमन्महाराजाधिराज श्री महाराजा श्रीमहेन्द्र महाराज हमीरसिंह बहादुर जू देव की आज्ञानुसार वेद मूर्ति भट्टाचार्य पडित श्री दाव जू माह्व दामोदर देवकृत रसमरोज नाम काव्ये अष्टम दल।'

ग्रन्थ की प्रतिलिपि सम्वत् १९२३ की है, जब कि उक्त हमीर सिंह जी को राजा की पदवी मिले एक वर्ष हुआ था।

२ बलभद्र शतक—१९०६।२४ बी। इस ग्रथ मे बलराम सम्बन्धो कवित्त हैं। इसकी भी रचना हमीर सिंह की आज्ञा से हुई—

श्री गुरु गोपालै सुमिरि श्री बलभद्रै ध्याइ
श्री हमीर भूपत्ति के हुकुमै हेत मनाइ १
कियो सतक बलभद्र को गुरु दामोदर देव
नित प्रति याके पाठ ते बाढै छेम अछेव २

३ उपदेशाष्टक—१९०६।२४ सी। इसमे ८ कवित्त हैं, जिनका अतिम चरण यह है—

कीन्हें बहुतेरे सब साधन के ढेरे अरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण हरे कृष्ण कहु रे

४ वृन्दावनचन्द्र सिखनखध्यानमजूषा—१९०६।२४ डी। यह ग्रन्थ कवित्तो मे है। इसे भी नृप हमीर के लिये ही लिखा गया।

श्री हमीर नृप हेत, दामोदर गुरु प्रगट किय
मन चीते फल देत, श्री गरु चरनन की कृपा ४०

कवि ने इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि स्वय ही सम्वत् १९२३ मे राजा हमीर सिंह के पढ़ने के लिए

की तथा यह वल्लभाचार्य के अनुयायी थे। यह सब सूचना प्राप्त ग्रन्थ की पुष्पिका से मिलती है—

इति श्रीमद्वल्लभाधीशचरणशरण दासानुदास दामोदर भट्टाचार्यकृत श्री वृन्द्रावन चन्द्र सिखनख ध्यान मजूषा ॥ वा श्री गोपजन वल्लभार्पणमस्तु ॥ सम्वत् १९२३ श्रावण शुक्ल ७ भृगौ ॥ मु० टीकमगढ लि० स्वहस्तेन ॥ श्री मन्महाराजाधिराज श्री महेन्द्र महाराजा हमीर सिंहवहादुर जू देव पठनार्थं ॥०॥

५ वलभद्र पचीसी १९०६।२४ ई०। इस ग्रन्थ मे कुल ३४ छन्द है।

३४८।२७२

(१७) द्विजदेव, महाराजा मानसिंह शाकद्वीपी, अवध नरेश, सम्वत् १९३० मे उ०। यह महाराजा सस्कृत, भाषा, फारसी, अग्रेजी इत्यादि विद्याओ मे महा निपुण थे। प्रथम सम्वत् १९०७ के करीव इनको भाषाकाव्य करने की बहुत रुचि थी। इसी कारण 'शृङ्गार लतिका' नामक एक ग्रन्थ बहुत सुन्दर टीका सहित वनाया। इनके यहाँ ठाकुर प्रसाद, जगन्नाथ, वलदेव सिंह इत्यादि महान् कवि थे। अन्त मे इन दिनो अव कानून अँग्रेजी का शौक हुआ था। सम्वत् १९३० मे देहान्त हुआ और देश के रईसो के भाग फूट गये।

सर्वेक्षण

शृङ्गारलतिका अनेक वार प्रकाशित हो चुकी है। इसमे रचनाकाल नही दिया गया है, न तो कोई परिचयात्मक छन्द ही है। इस ग्रन्थ मे कुल २२८ कवित्त सवैये हैं। ग्रन्थ ३ खन्डो मे विभक्त है। प्रथम खड मे वसत वर्णन है, दूसरे मे कृष्ण लीला सम्वन्धी शृङ्गारी छन्द है और तीसरे में नखशिख है। ग्रन्थ सटीक है। कवि ने स्वय टीका लिखी हे। टीका व्रजभाषा गद्य मे है और वहुत साफ है। द्विजदेव का एक और ग्रन्थ 'शृङ्गार वत्तीसी' है। यह भी शृङ्गार लतिका के समान नवल किशोर प्रेस, लखनऊ से प्रकाशित हो चुका हे। इस ग्रन्थ के आदि मे मगलाचरण का छप्पय है, तदनन्तर आत्मपरिचय सम्वन्धी निम्नाकित दो दोहे हैं—

अवध ईस मडनभुवन, दर्शन सिंह नरेश
जिनके यश सों श्वेत भो दिशि दिशि देश विदेश १
तिनको सुत अति अल्पमति मानसिंह द्विजदेव
किय शृङ्गार वत्तीसिका हरि लाला परमेव २

फिर वत्तीसी मे शृङ्गारी कवित्त सवैये हैं, जिनमे अनेक मे पावस का सरस वर्णन है। अन्त मे दो फुटकर छन्द भी दे दिये गये है।

१८५७ ई० (स० १९१४) की क्राति मे द्विजदेव ने अग्रेजो की अच्छी सहायता की थी, जिसके लिए इन्हे दो लाख रुपये की जागीर मिली थी, पर विरोधियो के भडकाने मे अँग्रेजी शासन की कोपदृष्टि इन पर पडी और इन्हे कारावास मे डाल देने की योजना वनी। षड्यन्त्र का

पता द्विजदेव जी को चल गया और वे वृन्दावन चले गये।[१] सम्वत् १२६३ फसली मे ईस्ट इण्डिया कम्पनी के भय से द्विजदेव ने सावन-भादौं का महीना यही विताया था और यही पर भरी वरसात मे शृङ्गार वत्तीसी की रचना की थी। इसीलिए यह ग्रन्थ इतना पावसमय और सरस है। शरद्काल मे यह काशी आये। यहाँ मणिकर्णिका घाट पर गगा-स्नान किया। फिर अविमुक्त पचदसी वनाकर वाराणसी की स्तुति की और परमेश्वर की कृपा से उन्हे अपना राज्य पुन. वापस मिला।[२] अविमुक्त पचदसी मे १५ छन्द, सम्भवत कवित्त-सवैये ही हैं, पर यह ग्रन्थ आज तक देखा नही गया। द्विजदेव जी का जन्म अगहन सुदी ५, स० १८७७ (१० दिसम्वर १८२०) और देहान्त सम्वत् १९२७ मे कार्तिक वदी द्वितिया (१० अक्टूवर १८७० ई०) को हुआ।[३] यह स्वय सुकवि थे और कवियों के समादर कर्ता थे। जैसा कि सरोज मे लिखा गया है, ठाकुर प्रसाद, जगन्नाथ, वलदेव सिह, राम नारायण आदि कवि इनके दरवार मे थे।

३४६।२७३

(१८) द्विज कवि, पडित मन्नालाल वनारसी, विद्यमान हैं। इनके कवित्त सुन्दरीतिलक मे है।

सर्वेक्षण

द्विजकवि पडित मन्नालाल वनारसी भारतेन्दु वावू हरिश्चन्द्र के दरवारियो मे थे। 'सुन्दरी तिलक' मे इनके भी सरस शृङ्गारी सवैये सकलित हैं। किसी द्विज का एक ग्रन्थ 'श्री राधा नखशिख' महाराज वनारस के पुस्तकालय मे है।[४] यह मन्नालाल वनारसी की रचना नही है। क्योकि इस ग्रन्थ का प्रतिलिपिकाल सम्वत् १८८५ विक्रमी है और उस समय तक तो द्विज मन्नालाल जी का सम्भवत जन्म भी नही हुआ रहा होगा।

मन्नालाल जी ने सम्वत् १९२३ के लगभग एक सग्रह ग्रन्थ वनाया था जिसका नाम 'रघुनाथ शतक' है। इसमे २६ कवियो के रामचन्द्र विषयक उत्तमोत्तम छदो का सकलन हुआ है। इन्होने अपने वाराणसीय सस्कृत यन्त्रालय मे इस ग्रन्थ को समाधान कविकृत 'लक्ष्मण शतक' के साथ एक ही जिल्द मे छपाया था।

विनोद मे (२२५६) इनके एक अन्य सग्रह ग्रन्थ 'प्रेम तरग सग्रह' का उल्लेख हुआ है। इसमे भी दूसरे कवियो की शृङ्गारी रचनाएँ सकलित है। ग्रियर्सन मे (५८३) यद्यपि इनका अलग

---

(१) हिन्दी साहित्य का वृहत् इतिहास, भाग ६, पृष्ठ ४३९-४० (२) शृङ्गार वत्तीसी, तृतीय सस्करण (१८८५ ई०) की द्विजदेव के भतीजे भुवनेश जी लिखित भूमिका के आधार पर। (३) हिन्दी साहित्य का वृहत् इतिहास, भाग ६, पृष्ठ ४३९-४४० (४) खोज रि० १९०३।२७

वर्णन है, फिर भी भ्रान्त कल्पना की गई है कि यह सभवत अयोध्या नरेश मान सिंह ही है, क्योंकि दोनो का कवि नाम 'द्विज' समझ लिया गया है। मन्नालाल का नाम द्विज था और मान सिंह का द्विज देव। इस सूक्ष्म भेद पर ग्रियर्सन का ध्यान नही गया।

३५०।२९६

(१९) द्विजनन्द कवि।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही। इनका एक घोर शृङ्गारी कवित्त सरोज मे उद्धृत है, जिसमे यह रीतिकालीन कोई कविन्द प्रतीत होते हैं।

३५१।३०७

(२०) द्विज चन्द कवि, सम्वत् १७५५ मे उ०।

सर्वेक्षण

सरोज मे द्विज चन्द का एक कवित्त उद्धृत है, जिसमे किसी खरग मनि के खड्ग गहने की अयुक्तिपूर्ण प्रशसा है।

> को पि वर बर गहो खगुंसे खरगमनि
> भूतल खसाई भीर केते सरदार है।
> कहै द्विज चन्द रुन्ड मुन्डन पटित महि
> झुन्डन चमुन्डा लेत आमि। अहार है।

जब तक खरगमनि की पहचान नही हो जाती, इनके समय की जाच सम्भव नही और तब तक १७५५ को उपस्थिति-काल मानना ही समीचीन है।

३५२।२७६

(२१) दिलदार कवि, सम्वत् १६५० मे उ०। हजारा मे इनका काव्य है।

सर्वेक्षण

कालिदास के हजारे मे इनकी कविता थी। अत· यह सम्वत् १८७५ के पूर्व उपस्थित थे इतना ही निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है। सरोज मे इनका एक कवित्त उद्धृत है, जो परम प्रौढ है।

३५३।२९५

(२२) द्विजराम कवि।

सर्वेक्षण

कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही।

३५४।२६०

(२३) दिला राम कवि।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही।

३५५।२८८

(२४) दिनेश कवि। इनका नखशिख बहुत ही विचित्र है।

सर्वेक्षण

दिनेश कवि टिकारी, गया के रहने वाले थे। इनका 'रस रहस्य' ग्रन्थ खोज मे मिला है।[1] यह नायिका भेद और रस का ग्रन्थ है। इसमे टिकारी राज्य, राजवश, फल्गु नदी, मगध गौरव आदि पर भी सुन्दर रचना है। ग्रन्थ की रचना सम्वत् १८८३ वसत पचमी को हुई।

सम्वत ठारह से त्रिगुत असी माघ सित चारु
ऋतुपति पंचमि को भयो रस रहस्य अवतारु

मगलाचरण के गणेश वन्दनावाले कवित्त का अतिम चरण है।

चारि छौ अठारह दिनेश सद्ग्रन्थ आदि
जाको नाम पीठ पटिया पै पाइयत है।

सभवत. इसी 'चारि छौ अठारह' का शीघ्रता मे ठीक अर्थ न कर सकने के कारण इसे रचना काल समझकर ग्रियर्सन मे (६३३) रस-रहस्य का रचनाकाल सन् १८०७ ई० अर्थात् सम्वत् १८६४ दिया गया है। यह वस्तुत सदग्रन्थ है, जैसा कि कवि ने स्वय कहा है। इनसे चार वेद, छह शास्त्र और अठारह पुराण अभीष्ट हैं। दिनेश जी का एक अन्य ग्रन्थ 'काव्य कदब' है।[2] इसकी रचना सम्वत् १८९१ मे हुई।

वरस चन्द[1] अरु खंड[9] वसु[8] ससि[1] माधव सित पच्छ
सुक्ल पचमी को भयो अच्छ स्वच्छ प्रत्यच्छ

ग्रन्थ किसी मगधेश की आज्ञा से लिखा गया।

श्री नृप मनि मगधेश की उत्तम आज्ञा पाइ
कियौ ग्रन्थ सक्षेप जहँ काव्य पन्थ दरसाइ

इसमे छद, रस, नायिका भेद आदि सभी हैं।

---

(१) बिहार रिपोर्ट, भाग २, ग्रन्थ सख्या ४४ (२) माधुरी, दिसम्बर १६२८, पृष्ठ ७५१-५२, 'कवि दिनेश' शीर्षक लेख, लेखक शिवनन्दन सहाय

छंद सरूप प्रसिद्ध कछु नवरस रूप ललाम
रुहित नाइका भेद सो रच्यो ग्रन्थ अभिराम

सरोज मे नखशिख सम्बन्धी उद्धृत सवैया दिग्विजय भूषण से लिया गया है। दिग्वियज भूषण मे दिनेश के नखशिख सम्बन्धी बहुत से कवित्त-सवैये हैं। इसी के आधार पर शिवसिंह ने इनके नखशिख को "बहुत ही विचित्र" कहा है। दिग्विजय भूषण वाले दिनेश टिकारी वाले ही दिनेश है, जो अपने समय के प्रख्यात कवि प्रतीत होते है। इसीसे व्रज जी ने दिग्विजय भूषण मे इनके पर्याप्त छन्द दिये है।

दिनेश के पुत्र वैजनाथ भी सुकवि थे। वैजनाथ जौनपूर जिले के अन्तर्गत बादशाहपुर के निवासी सीताराम जी के आश्रित थे। इनके दो ग्रन्थ हैं—(१) आलम्बन विभाव, (२) वाम-विलास। इनमे से वाम-विलास की रचना सम्वत् १९१९ वि० मे हुई थी। कवि की अनुमति से सम्वत् १९२८ मे इसकी प्रतिलिपि की गई थी।[१] अत उस समय तक यह जीवित रहे होगे। ग्रियर्सन (६३३) के अनुसार दिनेश का 'रस रहस्य' रामदीन सिंह के खड्गविलास प्रेस, वाकीपुर, पटना द्वारा प्रकाशित भी हो चुका है।

विनोद के अनुसार (११७३) एक दिनेश के छन्द दलपति राय वशीधर कृत 'अलकार-रत्नाकर' (रचनाकाल सम्वत् १७९८) मे भी है। निश्चय ही यह दिनेश टिकारी वाले दिनेश से भिन्न हैं। विहार ही मे एक और दिनेश हुये हे, जो डुमराव के रहने वाले थे, वहाँ के राजा अमर सिंह के भाई प्रवल सिंह के आश्रय मे रहते थे। इन्होने सम्वत् १७२४ मे 'रसिक सजीवनी' नामक काव्य-ग्रन्थ वनाया था।

द्वितिया शुक्ल अषाढ़ की, पुष्प नखत गुरुवार
सत्रह सै चौबीस मे करी प्रगट करतार

यह दिनेश ब्राह्मण थे—

पूजै पाय पखारि जुग ज्ञानि मिश्र द्विजराज
गज तुरग आगे किये दिये सकल सुख साज

यह ग्रन्थ १८९३ ई० मे रत्नाकर जी द्वारा सम्पादित होकर प्रकाशित हुआ था। सम्भवत इन्ही दिनेश की रचना 'अलकार रत्नाकर' मे है।[२]

ग्रियर्सन के अनुसार (६३३) रस-रहस्य नखशिख का ग्रन्थ है। विनोद में (११७३) रस रहस्य और नखशिख को दो ग्रन्थ माना गया है।

३५६।२९७

(२५) दीन दयाल गिरि वनारसी, सम्वत् १९१२ मे उ०। यह कवि सस्कृत के महान् पडित थे। इन्होने भापा साहित्य मे 'अन्योक्ति कलपद्रुम' नामक ग्रथ वहुत ही सुन्दर वनाया है। 'अनुराग वाग' और 'वाग वहार' ये दो ग्रन्थ भी इनके वहुत विचित्र हैं।

---

(१) विहार रि० भाग २, ग्रन्थ ६, १०१ (१) माधुरी, दिसम्बर १९२८, पृष्ठ ७५१

सर्वेक्षण

बाबू श्यामसुन्दर दास जी ने 'दीनदयालगिरि ग्रन्थावली' सम्पादित करके सन् १९१९ ई० मे सभा से प्रकाशित कराई थी। प्रारम्भ मे एक लघु भूमिका भी है। बाबा जी का जन्म शुक्रवार, बसन्त पचमी, सम्वत् १८५९ वि० को काशी के गायघाट मुहल्ले मे एक पाठक ब्राह्मण कुल मे हुआ। जब यह ५-६ वर्ष के ही थे, तभी इनके माता-पिता दिवगत हो गये और मरने के पहले इन्हे महन्त कुशागिरि को सौंप गये। इन्ही महन्त जी ने इनका लालन-पालन किया तथा इन्हे शिक्षा-दीक्षा दी। जब महन्त जी के मरने पर उनकी जायदाद नीलाम हो गई, तब ये देहली विनायक के पास मौठली गाँव वाले मठ मे रहने लगे। इनकी मृत्यु सम्वत् १९२२ मे हुई। भारतेन्दु बाबू के पिता बाबू गोपाल दास उपनाम गिरिधरदास से इनका बड़ा स्नेह था। लाला भगवानदीन ने भी 'दीनदयालगिरि ग्रन्थावली' सम्पादित एवं प्रकाशित की थी। सभावाली ग्रन्थावली मे निम्न-लिखित ग्रन्थ हैं—

(१) अनुराग बाग—इस ग्रन्थ मे ३६६ कवित्त-सवैये आदि छन्द हैं। यह बाबा जी का श्रेष्ठतम ग्रन्थ है। इसकी रचना चैत सुदी नवमी, मगलवार, सम्वत् १८८८ को हुई—

> बसु[८] बसु[८] बसु[८] ससि[१] साल मे, रितु बसत मधुमास
> राम जनम तिथि भौम दिन भयो सुभाग विकास

(२) दृष्टान्त तरगिणी—इसमे दृष्टान्त देने वाले २०६ दोहे है। इसकी रचना सम्वत् १८७९ मे हुई थी—

> निधि[९] मुनि[७] बसु[८] ससि[१] साल मे आसुन मास प्रकास
> प्रतिपग मगल दिवस को, कीन्यौ ग्रन्थ विकास २०६

(३) अन्योक्तिमाला—इसमे कुण्डलिया छन्दो मे एक सौ दस अन्योक्तियाँ हैं।

(४) अन्योक्ति कल्पद्रुम—इस ग्रन्थ मे भी अन्योक्तियाँ हैं जो अधिकतर कुण्डलिया छन्दो मे है। अन्योक्तिमाला की अधिकाश रचनाएँ इसमे अन्तर्भुक्त है। इसकी रचना सम्वत् १९१२ मे हुई। यही समय सरोज मे दिया गया है।

> कर[२] छिति[१] निधि[९] ससि[१] साल में माघ मास सित पच्छ
> तिथि बसत जुत पचमी रबि बासर सुभ स्वच्छ
> सोभित तिहि औसर विषै, बसि कासी सुख धाम
> बिरच्यो दीनदयाल गिरि कल्पद्रुम अभिराम

यह इनका सर्वाधिक प्रसिद्ध ग्रन्थ है।

(५) वैराग्य-दिनेश—कवित्त सवैयो मे रचित इस ग्रन्थ का रचनाकाल सम्वत् १९०६ है—

> रितु[६] नभ[०] निधि[९] ससि[१] साल मे माधव कदम रसाल
> नर वैराग्य दिनेश यह उदै भयो तेहि काल

सरोज मे उल्लिखित ग्रन्थ 'बागबहार' सम्भवत अनुराग बाग ही है। बाबा जी का 'बागबहार'

नाम का कोई ग्रन्थ नही मिलता। खोज मे इनके निम्नलिखित लघु ग्रन्थ मिले है, जो सभी वैराग्य दिनेश के अश हैं, कोई स्वतत्र ग्रथ नही—

१ अन्तर्लापिका—१९०४।९९
२ काशी पचरत्न—१९०४।९१
३ कुण्डलिया—१९०४।९२
४ विश्वनाथ नवरत्न—१९२६।४४
५ चकोर पचक—१९०४।७१
६ दीपक पचक—१९०४।९२

३५७।२७८

(२६) दीनानाथ कवि, बुन्देलखडी, स० १९११ मे उ०। इनके कवित्त अच्छे हैं।

सर्वेक्षण

विनोद मे (२०४४) स० १९११ को कविताकाल माना गया है और खोज के आधार पर इनके एक ग्रथ 'भक्ति मजरी' का उल्लेख हुआ है।[१] सरोज मे इनका एक कवित्त उद्धृत है जिसमे दीनानाथ शब्द आया है अवश्य, पर वह स्पष्ट ही ब्रह्मवाचक है।

दीनबन्धु दीनानाथ एते गुन लिए फिरौं
करम न यारी देत ताको मैं कहा करौ

प्रच्छन्न रूप से इसमे कवि छाप भी हो सकती है, पर बात सदिग्ध ही है। इस खोज मे दो दीनानाथ और मिले हैं।

१ दीनानाथ—बोडा पुष्करणी ब्राह्मण, लक्ष्मीनाथ के पिता तथा बालकृष्ण के पुत्र। स० १८८३ के पूर्व वर्तमान।[२]

२ दीनानाथ—कान्यकुब्ज ब्राह्मण, ब्रह्मोत्तर खड भाषा[३] के रचयिता।

३५८।२८३

(२७) दुर्गा कवि, स० १८६० मे उ०।

सर्वेक्षण

खोज मे एक दुर्गा प्रसाद मिले हैं।[४] यह स० १८५३ के आसपास उपस्थित थे और पडित राजाराम के आश्रित थे। इन्होने अपने ग्रथ मे रीवा के महाराज अजीत सिंह के सरदारो और पेशवा के सरदार जसवत सिंह के साथ रीवा से चार मील दूर चारहट के मैदान मे होनेवाले स० १८५३ के युद्ध का वर्णन अजीत फते ग्रन्थ उपनाम नायक रासो मे किया है। इस युद्ध मे बघेलो की जीत हुई

---

(१) खोज रि० १९०९।७५ (२) खोज रि० १९०२।२१ (३) खोज रि० १९२६।१०७ (४) खोज रि० १९००।४१२

थी। राजाराम कौन थे, इसकी कोई सूचना नही मिलती। कवि ने अपने सम्बन्ध मे भी कुछ नही लिखा है। प्रतीत होता है कि कवि बुन्देलखण्डी था और उक्त युद्ध के समय उपस्थित था।

सरोज के दुर्गा और यह दुर्गा, समय की दृष्टि से एक ही प्रतीत होते है। सरोज में इस कवि का दुर्गास्तुति सम्बन्धी वीर रस का एक कवित्त उद्धृत है। अत सरोज का कवि भी वीर-रस का कवि प्रतीत होता है। यह तथ्य दोनो कवियो की अभिन्नता को और भी असदिग्ध बना देता है।

उक्त रीवा नरेश अजीत सिह के पुत्र महाराजा जयसिह (शासनकाल स० १८६६-९२) के लिए 'द्वैताद्वैतवाद' नामक दर्शन ग्रथ की रचना करनेवाले दुर्गेश कवि भी सम्भवत. यही है और दुर्गेश इनकी छाप है।[१]

नृप बघेल अवधूत सुत श्री अजीत महराज
ता सुत जै सिंघ देव नृप निखिल नृपति सिरताज २
कछुक विशिष्टाद्वैत कछु द्वैताद्वैत विधान
द्वै मतवाद विचार वर लिख्यो शास्त्र अनुमान ३
छदबद्ध के हेतु पुनि टीन्हेउ नृपति निदेस
द्वै मतवाद सो ग्रथ यह रचेहु सुकवि दुरगेस ४

प्राप्त प्रति का लिपिकाल स० १८८९ है। यह रचनाकाल भी हो सकता है।

३५९।३०१

(२८) दूलह त्रिवेदी, बनपुरावाले कविंद जी के पुत्र, स० १८०३ मे उ०। इनका बनाया हुआ 'कवि कुलकठाभरण' नामक ग्रथ भाषा साहित्य मे बहुत प्रामाणिक है।

सर्वेक्षण

दूलह हिन्दी के प्रसिद्ध कवि कालिदास के पौत्र और उदयनाथ 'कविंद' के पुत्र थे। कविंद ने स० १८०४ मे 'रस चन्द्रोदय' नामक ग्रन्थ की रचना अपने पुत्र दूलह के पढने के लिए की।[२] इस आधार पर विनोद मे (७३७) दूलह का जन्मकाल स० १७७७ के आसपास अनुमित है। पर अन्य प्रमाण इस मत के प्रतिकूल है। इस स्थिति मे या तो रसचद्रोदय का रचनाकाल अशुद्ध है अथवा कविंद ने अपने अत्यत प्रौढ पुत्र के अनुरोध से यह ग्रन्थ लिखा, उसकी काव्य शिक्षा के लिए नही।

कवि कुलकठाभरण की कुल ९ प्रतियाँ खोज मे मिली हैं।[३] किसी मे भी रचनाकाल नही दिया गया है। पर एक रिपोर्ट मे न जाने किस आधार पर इसका रचनाकाल स० १८०७ दिया गया है।[४] श्री शुकदेवविहारी मिश्र ने इसका एक सुसपादित और सटीक सस्करण स० १९९२ मे गगा

---

(१) खोज रि० १९१७।५३ (२) देखिए, यही ग्रन्थ कवि सख्या ७४ (३) खोज रि० १९०३।४३, १९०६।१६३, १९०९।७७, १९२०।४५ ए बी, १९२३।१०७ ए, बी, सी, डी। (४) खोज रि० १९२०।४५ बी।

पुस्तक माला, लखनऊ से प्रकाशित कराया था। इस प्रकाशित प्रति मे भी रचनाकालसूचक छन्द नही है। दूलह का एक ही ग्रथ कविकुलकठाभरण प्रसिद्ध है। इसमे कुल ८१ छन्द हैं। प्रारम्भ मे ७ छन्द भूमिका स्वरूप हैं, तदनतर ७४ कवित्त सवैयो मे अलङ्कार कथन है। एक ही छन्द मे लक्षण और उदाहरण दोनो दिए गए हैं। अत भाषाभूषण के समान यह ग्रन्थ भी अलकार के विद्यार्थियो के ही काम का है।

'दूलह विनोद' नामक एक ग्रन्थ का एक पन्ना खोज मे मिला है।[1] रिपोर्ट मे इस ग्रन्थ के ये तीन छन्द उद्धृत है .—

अलख अमूरति अगम गति, कहत न जीभ समाइ
अद्भुत अवगति जाहि को, सो क्यों बरनी जाहि १
आदि जन्म सब एक है, अरु पुनि अतहु एक
वौरें ते जग कहतु है, हिन्दू तुरुक विवेक ६
मोहन रूप अनूप सी मूरति, भूप बली, विधि रूप सुधारो
तेग बली अरु त्याग बली, अरु भाग्य बली, सिरताज गँवारो
साहि सुजान, विहान को भान, जहान को जान, औ नैननि तारो
साहिब आलम साहिनसाह महम्मद साहि सुजा जग प्यारो १

पहला छन्द मगलाचरण है, जिसमे निर्गुण ब्रह्म का गुणानुवाद है। दूसरे मे हिन्दू-मुसलमान की अभिन्नता का कथन है। तीसरे मे कवि ने अपने आश्रयदाता महम्मद साहि की प्रशस्ति की है। यह महम्मद साहि सम्भवत प्रसिद्ध मुगल बादशाह महम्मद शाह रँगीले है, जिनका शासनकाल स० १७७६-१८०५ है और जिनके दरबार मे प्रसिद्ध कवि घनानद और उनकी प्रिया सुजान थी। यही समय दूलह का भी है। इससे प्रतीत होता है कि 'दूलह विनोद' के रचयिता दूलह, प्रसिद्ध दूलह से अभिन्न है।

बूदी नरेश महराव बुद्ध सिंह ने औरगजेब की मृत्यु (स० १७६४) के अनतर उत्तराधिकार के लिए होनेवाले शाहजहाँ के युद्ध मे मुअज्जम (बहादुर शाह) की मदद की थी, जिसमे बहादुर शाह विजयी हुआ था। इस युद्ध का वर्णन दूलह ने निम्नाकित कवित्त मे किया है —

युद्ध माहि जाजव के बुद्ध ह्वै सक्रुद्ध उद्ध
आजम के महाबीर काटि डारे ऊजा से
कहै कवि दूलह समुद्र बढे सोणित के
जुग्गिन परेत फिरे जबुक अजूजा से
एक लीन्हे सीस खाय बेस इस एकन को
एकन की उपमा निहारी मनु ऊजा से
अधफटे फैलि फैलि कर में बिराजै मानो
माथे मुगलन के तरासे तरबूजा से

इस छन्द से सिद्ध है कि दूलह का सम्बन्ध राव बुद्ध सिंह से भी था।[2] इस कवित्त मे स० १७६४ के युद्ध का वर्णन है, अत स० १७७७ दूलह का जन्म काल नही हो सकता।

---

(१) राजस्थान रि०, भाग २, पृष्ठ २३ (२) माधुरी, वर्ष ७, खण्ड २, अंक १, पृष्ठ १२२

३६०।३०२

(२६) देव कवि प्राचीन, देवदत्त ब्राह्मण, समनि गाव, जिले मैनपुरी के निवासी, स० १६६१ मे उ०। यह महाराज अद्वितीय कवि अपने समय के भाम, मम्मट के समान भाषा-काव्य के आचार्य हो गये हैं। शब्दो मे ऐसी समाई कहाँ कि उनमे इनकी प्रशसा की जाय। इनके बनाए ग्रन्थो की सख्या आज तक ठीक ७२ हमको मालूम हुई है। इनमे केवल ११ ग्रथो के नाम जो हमको मालूम हुए है, लिखे जाते है, जिनमे से कुछ को अक्सर हमने भी देखा है—(१) प्रेम तरग, (२) भाव विलास (३) रस विलास, (४) रसानद लहरी, (५) सुजान विनोद, (६) काव्य रसायन पिंगल, (७) अष्टयाम, (८) देवमायाप्रपच नाटक, (९) प्रेम दीपिका, (१०) सुमिल विनोद, (११) राधिका विलास।

सर्वेक्षण

सरोज मे दिया हुआ न तो देव का स० १६६१ ठीक है, न इनके गाव का नाम समनि गाव है। भाम से तात्पर्य आचार्य भामह से है। महाकवि देव ने १६ वर्ष की वय मे स० १७४६ मे भाव-विलास की रचना की :—

सुभ सत्रह सै छियालिस चढत सोरही वर्ष
कढी देव मुख देवता भाव विलास सहर्ष—भाव विलास, अत में

अत. इनका जन्मकाल स० १७३० है। इनका जन्म इटावा मे द्योसरिहा कान्यकुब्ज ब्राह्मण कुल मे हुआ था—द्योसरिहा कवि देव को नगर इटावो वास। इनके पिता का नाम विहारीलाल था। २६ वर्ष की वय मे यह इटावा छोडकर कुसमरा, जिला मैनपुरी मे आ बसे। यहाँ इनके वशज अभी तक हैं। इनकी मृत्यु अनुमानत स० १८२५ मे हुई। मया शकर जी याज्ञिक ने इनको स० १८२२ तक निश्चित रूप मे जीवित सिद्ध किया है। उन्होने देव के सूरजमल और जवाहर सिंह, भरतपुर नरेश, की प्रशस्ति सम्बन्धी कई छन्द भी उद्धृत किए है। उनका अनुमान है कि सुजान विनोद मे सुजान से अभिप्राय सूरजमल उपनाम सुजान से ही है।[1] वस्तुत दिल्ली के रईस पतीराम के पुत्र सुजानमणि के लिए सुजान विलास की रचना हुई थी।[2] यह अपने प्रत्येक कवित्त और सवैया मे देव या देव जू छाप रखते थे। इनके निम्नलिखित ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं—

१ भाव विलास,
२ अष्टयाम भारत
३ भवानी विलास
} भारत जीवन प्रेस, काशी

---

(१) माधुरी, वर्ष ७, खंड २, अक २, फाल्गुन ३०० तुलसी सम्वत्, 'महाकवि देव और भरतपुर राज्य' शीर्षक लेख। (२) हिन्दी साहित्य का बृहद् इतिहास, भाग ६, पृष्ठ ३३०

४ सुजान विनोद
५ राग रत्नाकर } देव ग्रंथावली, प्रथम भाग, ना० प्र० सभा, काशी
६ प्रेम चन्द्रिका

७ सुख सागर तरंग—लखनऊ

८ शब्दरसायन या काव्यरसायन—हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

९ आत्म दर्शन पचीसी
१० तत्व दर्शन पचीसी } देव शतक नाम से जयपुर से प्रकाशित
११ प्रेम पचीसी
१२ जगद्दर्शन पचीसी

संस्कृत मे 'शृङ्गार विलासिनी' नामक नायिका भेद का ग्रन्थ महाकवि देव के नाम से जयपुर के बालचन्द्र यत्रालय से प्रकाशित हुआ है, पर विद्वान इसे किसी अन्य देव की रचना मानते है। देव के अप्रकाशित ग्रन्थ ये हैं—

(१) प्रेम तरंग, (२) कुशल विलास, (३) देव चरित्र, (४) रस विलास, (५) जाति विलास, (६) वृक्ष विलास, (७) पावस विलास, (८) रसानन्द लहरी, (९) प्रेम दीपिका, (१०) सुमिल विनोद, (११) राधिका विलास, (१२) नखशिख प्रेम दर्शन, (१३) नीति शतक, (१४) कोई वैद्यकग्रन्थ। इनमे से रस विनोद का रचनाकाल स० १७८३ है।—

सवत सत्रह सै बरस और तिरासी जानि
रस विलास दसमी विजय पूरन सकल कलानि

—हिन्दी काव्यशास्त्र का इतिहास, पृष्ठ ९६

देवमाया प्रपच नाटक भी इन्ही देव की कृति समझा जाता है। यह भी किसी अन्य देव की कृति है।

अमतु फिर्‌यो हौं आज लौं, जग मृग तृष्णा प्यास
श्री धन सोभा सिधु की लहर पियाई व्यास
जय जय जय राधेरमन, जय जय श्री जदुराइ
हृदै बसौ कवि देव के, सत संगति के पाइ

पहले दोहे मे आया हुआ व्यास सदेह बढाने के लिये पर्याप्त है। हिन्दी काव्यजगत् मे देव का बडा नाम है। डा० नगेन्द्र ने 'देव की कविता' नाम से इन पर सुन्दर आलोचना भी प्रस्तुत कर दी है। परन्तु जब तक इनकी समस्त ग्रथावली पूर्ण छानबीन के साथ प्रकाशित नही कर दी जाती, तब तक यह सब आलोचना पानी पर बने बेलबूटे के सदृश है। सरोज मे देव के १२ छन्द उद्धृत हैं। इनमे से छठाँ छन्द द्विजदेव का और दसवाँ छन्द रसखान का है। यह कवि ३४१ सख्यक दत्त प्राचीन से अभिन्न है।

३६१।३००

(३०) देव २, काष्ठजिह्वा स्वामी, काशीस्थ। यह महाराज पडितराज षट्‌शास्त्र के वक्ता थे। इन्होने प्रथम सस्कृत काशी जी मे पढी। दैवयोग से एक बार अपने गुरु से वाद कर बैठे। पीछे पछताय काष्ठ की जीभ मुँह मे डाल बोलना बद कर दिया। पाटी मे लिख के बातचीत

करते थे। उन्ही दिनो श्रीमन्महाराज ईश्वरी नारायण सिंह, काशी नरेश ने इनसे उपदेश ले, रामनगर मे टिकाया। तब इन महाराज ने भाषा मे विनयामृत इत्यादि नाना ग्रथ बनाए। इन्ही के पद आज तक काशी नरेश की सभा मे गाए जाते हैं।

सर्वेक्षण

जैसा कि सरोज, मे लिखा है, इन्होने गुरु से विवाद करने के प्रायश्चित स्वरूप अपनी जिह्वा पर काठ की खोल चढवा ली थी और काष्ठजिह्वा स्वामी कहलाने लगे थे। कविता मे इनकी छाप देव, देव कवि और देव स्वामी है। यह काशी नरेश महाराज ईश्वरी नारायण सिंह (शासनकाल स० १८९२-१९४६) के गुरु थे। उक्त महाराज का समय ही इनका भी समय है। सरोज की भूतकालिक क्रियाओ से ज्ञात होता है कि यह सरोज के प्रणयन के पूर्व ही दिवगत हो गए थे। इनके लिखे निम्नलिखित चार ग्रन्थ खोज मे मिले है।

१ जानकी—विंदु १९२६।९७

२ पदावली—१९०१।१४। इस ग्रन्थ मे पदो मे रामायण की कथा है। इसकी रचना सं० १८९७ की कृष्णाष्टमी को हुई।—

> हित मीत बनारस भूपति के युवराज महामतिमान धनी
> श्री राम प्रसन्न प्रसन्न रहे यह राम सभा एहि हेत बनी
> मुनि[७] अक[९] अठारह[१८] सवत् में तिथि मोहन जन्म अनद सनी
> अव कृष्ण सुधा छवि दा रसु मे जिहि मे बरनी एक बात छनी

३ रामलगन—१९०६।१७९

४ रामायण परिचर्या—१९०४।६९

विनोद मे (१७९०) विनयामृत और वैराग्य प्रदीप नामक इनके दो और भी ग्रथो का नाम दिया गया है। डा० भगवती प्रसाद सिंह ने इनके निम्नाकित १५ ग्रथो का उल्लेख किया है[१]—(१) रामायण परिचर्या, (२) विनयामृत, (३) पदावली, (४) राम लगन, (५) वैराग्य प्रदीप, (६) अयोध्या विंदु, (७) अश्विनी कुमार विंदु, (८) गया विंदु, (९) जानकी विंदु, (१०) पचक्रोश महिमा, (११) मथुरा विंदु, (१२) राम रग, (१३) श्याम रग, (१४) श्याम सुधा, (१५) उदासी सत स्तोत्र। काशीराज न्यास से इनके ग्रथ अब प्रकाशित हो रहे हैं।

३६२।३०५

(३१) देवदत्त कवि, स० १७०५ मे उ०। इनका ललित काव्य है।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे डा० नगेन्द्र की दो धारणाएँ है —

एक तो यह कि यह छन्द (इस कवि के नाम पर सरोज मे उद्धृत एकमात्र छन्द) देव के ही किसी प्रारम्भिक अप्राप्य ग्रन्थ मे से ही न हो। दूसरी यह कि रचयिता कोई दूसरा देवदत्त कवि था जो हमारे आलोच्य से अवस्था मे लगभग २५ वर्ष बडा था, वह भी रीतिकार कवि था और उसने भी नायिका भेद पर कोई ग्रथ लिखा था। प्रस्तुत छन्द उसी मे कलहातरिता के उदाहरण रूप दिया गया होगा। कविता मे यह अपना उपनाम न लिख कर पूरा नाम देवदत्त ही लिखता था,

---

(१) राम भक्ति में रसिक सम्प्रदाय, पृष्ठ ४५१

जब कि देव ने एक भी छन्द मे देव या देव जू छोड कही देवदत्त नही लिखा। हमारी धारणा यह दूसरी ही है।—देव और उनकी कविता, पृष्ठ १३

३६३।२८१

(३२) देवीदास कवि, बुन्देलखण्डी, स० १७१२ मे उ०। यह महान् कवि नाना ग्रन्थ बनाकर सम्वत् १७४२ मे भैया रतनपाल सिंह यादव वशावतस करौली अधिपति के यहाँ जाकर महा मान पाकर जन्म भर उसी जगह रहे और उन्ही के नाम से 'प्रेम रत्नाकर' नाम का एक महा अपूर्व ग्रथ रचा, जो हमारे पुस्तकालय मे मौजूद है। इनके नीति सम्बन्धी कवित्त हर एक मनुष्य को जानना आवश्यक है।

सर्वेक्षण

प्रेम रत्नाकर ग्रन्थ सरोजकार के पास था। उसने इस ग्रन्थ से सरोज मे उदाहरण भी दिए है, जिनसे सिद्ध होता है कि यह करौली नरेश के यहाँ थे और इन्होने उन्ही के लिए इस ग्रन्थ की रचना सं० १७४२ मे की —

संबत् सत्रह सै बरस बयालीस निरधार
आस्विन सुदि तेरसि कियो सुभ दिन ग्रथ विचार १
को रजपूतानी जन्यो ऐसो और सपूत
ना ऐसो दाता कहूँ ना ऐसो रजपूत २
ऐसे अगनित गुनन करि जगमगात रतनेस
जाके दावन सों लग्यो जदुमंडल को देस ३
रजधानी जदुपतिन की नगर करौरी राज
जहँ पंडित अरु कविन को राजत बडो समाज ४

इस ग्रन्थ की अनेक प्रतियाँ खोज मे मिली है।[1] इसमे कवि ने राजवश का बडे विस्तार से वर्णन किया है। कवि के अनुसार इस वश की वशावली है—गोपाल—द्वारिकादास—विनय मुकुन्द—जगमनि—छत्रपाल—धर्मपाल और रतनपाल।

इस ग्रन्थ मे प्रेम का निरूपण हुआ है। प्रेम के अधिकारी, साधुओ का प्रेम, सती का प्रेम, चातक, चकोर और हस आदि आदि सभी प्रेमियो की चर्चा है। 'सोमवश की वशावली' इनका एक अन्य ग्रन्थ प्राप्त हुआ है।[2]

नीति की कविता करनेवाले देवीदास इनसे भिन्न हैं। राजनीति के कवित्त वाले देवीदास का उल्लेख सीकर, जयपुर, के इतिहास मे मिलता है। यह जाति के वैश्य थे। यह सभवत. उत्तरप्रदेशीय थे और मारवाड मे जाकर बस गए थे। देवीदास जी राव लूनकरन के मत्री थे। लूनकरन जी का सम्बन्ध सीकर राजवश से है। यह सम्राट अकबर के समकालीन थे। एक बार राव लूनकरन और मन्त्री देवीदास मे लक्ष्मी और बुद्धि की श्रेष्ठता के सम्बन्ध मे विवाद उठ खडा हुआ। देवीदास ने बुद्धि का पक्ष लिया। राव लूनकरन ने रुठकर इन्हे अपने छोटे भाई रायसल के

---

(१) खोज रि० १९०६।२२०, १९१७।४७ बी, १९२३।९६ बी, १९२६।२७, १९३१।२५ (२) खोज रि० १९४४।१६५

पास लाम्या चले जाने के लिए कहा और कहा कि वहाँ अपने कथन को प्रमाणित करो। देवीदास रायसल के पास चले गए और उन्हे लेकर अकबर से मिले। उस समय अफगान कुतलू खा ने आक्रमण किया था। उस युद्ध मे रायसल ने शाहजादे की प्राण रक्षा की। अकबर ने प्रसन्न होकर रायसल को दस परगने दिये। यह सब देवीदास के वुद्धि वल से हुआ। यह कथा टॉड के राजस्थान मे भी दी गई है।[1] इनकी 'राजनीति के कवित्त' नामक ग्रन्थ खोज मे मिल चुका है, पर इसे प्रेम रत्नाकर वाले वुन्देलखण्डी देवीदास की ही कृति समझा गया है,[2] जो ठीक नही। विनोद मे (५२१) इन्हे एक अन्य ग्रन्थ 'दामोदर लीला' का भी कर्त्ता माना गया है, पर खोज रिपोर्ट मे इसे अन्य देवीदास की रचना कहा गया है।[3]

३६४।२९९

(३३) देवकीनन्दन शुक्ल, मकरदपुर, जिले कानपुर, स० १८७० मे उ०। यह महाराज काव्य मे बहुत ही निपुण थे। इनकी कविता देखने से इनका पाडित्य प्रगट होता है। यह तीन भाई थे—देवकीनन्दन १, गुरुदत्त २, शिवनाथ ३। तीनो महान् कवि थे। गुरुदत्त का बनाया हुआ 'पक्षी विलास' ग्रन्थ तो हमने देखा है, पर देवकीनन्दन का केवल नखशिख और स्फुट दो-तीन सौ कवित्त हमारे पास हैं। शिवनाथ का कोई ग्रन्थ नही देखने मे आया।

सर्वेक्षण

देवकीनन्दन, गुरुदत्त और शिवनाथ भाई-भाई नही थे। शिवनाथ पिता थे और देवकीनन्दन तथा गुरुदत्त परस्पर भाई थे अर्थात् शिवनाथ के पुत्र थे। अवधूत भूषण[4] मे इस सम्बन्ध में देवकीनन्दन ने स्वय उल्लेख किया है। इस ग्रन्थ के अनुसार इनके पूर्वजो का क्रम यह है—हरिदास शुक्ल—नाथ शुक्ल—मधुराम शुक्ल—सवली शुक्ल—शिवनाथ—देवकीनन्दन।

देवकीनन्दन कन्नौज से एक मील दूर स्थित मकरद नगर नामक गाँव के रहने वाले थे। यह रुदामऊ, तहसील मलायें, जिला हरदोई के रैकवार क्षत्रिय राजा अवधूत सिंह के यहाँ रहते थे। इनके आश्रय मे इन्होने 'अवधूत भूषण' नामक ग्रथ की रचना स० १८५६ मे की थी।

सवत् जुग निधि सैकरा छप्पन वरस निहारि
क्वार मास सित पंचमी रच्यो ग्रंथ विरतारि १०

रुदामऊ का पूरा भौगोलिक वर्णन भी कवि ने दिया है—

सहर मलाये के निकट रजधानी परसिद्ध
रैक्वार जामै वसे भरे सिद्धि अरु निद्धि

इनका दूसरा ग्रन्थ 'शृङ्गार चरित्र'[5] है। इसकी रचना स० १८४० मे हुई थी—

संवत युगनिधि सैकरा वेद सुन्य सुभ जानि
माघ मास तिथि पचमी रच्यों ग्रन्थ रसखानि

इनका तीसरा ग्रन्थ 'सरफराज चद्रिका' है।[5] यह स० १८४३ मे रचा गया था। यह उमराव गिरि के पुत्र कुवर सरफराज गिरि के नाम पर वना था।

---

(१) माधुरी, वर्ष अगस्त १९२७, पृष्ठ १२१-२२। (२) खोज रि० १९०२।१, ८२, १९०६ २०।४७ १९१७ए (३) खोज रि० १९२०।४० (४) खोजरि० १९०९।६२ बी, १९२३।९० ए (५) खो रि० १९०९।६२ ए, १९२३।९० डी

'ससुरारि पचीसी'' इनका चोथा ग्रथ हे। इसमें कुल ३५ कवित्त सवैये ह। यह माधुरी मे पूर्ण रूप से प्रकाशित हो चुका है।[2] प्राप्त ग्रन्थो के आधार पर देवकी नन्दन शुक्ल का रचनाकाल स० १४८० से १८५६ वि० तक है। अतः सरोज मे दिया हुआ स० १८७० इनका उपस्थितिकाल ही हे।[3] सरोज मे मकरदपुर को कानपुर जिले मे बताया गया है, जो ठीक नही यह फर्रुखाबाद जिले मे है।

३६५।३०६

(३४) देवदत्त, कवि २, स० १७१२ मे उ०। इन्होने 'योग तत्त्व' ग्रन्थ बनाया है।

सर्वेक्षण

कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही। ग्रियर्सन मे (२६१) ३६५,३४१ ३६१, सख्यक कवि अभिन्न समझे गये है। विनोद मे भी (४६४) ३४१, ३६५ को मिला दिया गया है।

३६६।२८४

(३५) देवीदत्त कवि। इनके शान्त और सामयिक कवित्त सुन्दर है।

सर्वेक्षण

देवीदत्त जैतपुर, बुन्देलखण्ड निवासी भाट थे। यह स० १८१२ के लगभग वर्तमान थे। इनके निम्नाकित ग्रथो का पता लगा है —

१ अटक पचीसी — १९०४। ८५, प १९२२।२६। यह पचीस यमकमय दोहो का सग्रह है।

जमक्न देवी दत्त ये दोहा करे पचीस
बुधजन तिनके अर्थ अब लीजो करि कवि ईस ३०

अर्थ करने मे कवियो की मति अटकेगी, इसी से यह नाम—

देवीदत्त जथा सुमति अटक पदन रमनीय
कवि मति अटकन के घटत अटक पचासी कीय २

यह ग्रन्थ स० १८०९ वि० मे रचा गया—

संवत निधि[९] नभ[०] नाग[८] भुव[१] पौच नवै सनिवार
जमकन करि प्रतिपद यहै अटक पचीसी चार ३१

'पौच नवै' के स्थान पर पौष नवै पाठ ठीक प्रतीत होता है।

इस ग्रन्थ का अटकाने वाला यमकमय एक दोहा उदाहरणार्थ उद्धृत किया जाता है :—

भाषत बनत (न) बाम कछु जैसी दरसी, आजु
भापत बनत (न) बाम कछु जैसी दरसी आजु २६

२ वैताल पचीसी—१९०५। २७। यह इसी नाम के सस्कृत ग्रन्थ का विविध छन्दो मे हिन्दी पद्यानुवाद है, जो स० १८१२ मे पूरा हुआ।

बरस अठारा सै हू बारा
सावन सुदि दसमी यतवारा
ता दिन देवीदत्त सुहाई
कथा भापि पूरन पहुढ़ाई

---

(१) खोज रि० १९०१।५७ (२) खोज रि० १९२३।९० बी, सी, १९४१।४०१ (३) माधुरी, ज्येष्ठ १९८६, पृष्ठ ६६१-६३

३६७।२८५

(३६) देवी कवि । इनके शृङ्गार रस के चोखे कवित्त हैं ।

सर्वेक्षण

सरोज मे उद्धृत दो शृङ्गारी कवित्त सवैयो और अधूरे नाम के सहारे इस कवि की कोई पकड सभव नही । इस नाम के अनेक कवि मिलते हे ।

३६८।२८६

(३७) देवीदास, वदीजन, स० १७५० मे उ० । इन्होने 'सूम सागर' इत्यादि हास्य रस के ग्रन्थ वनाये है ।

सर्वेक्षण

सूम सागर की दो प्रतियाँ खोज मे मिली हे ।(१) यह ग्रन्थ सम्वत् १७९४ मे रच गया—

सवत सत्रह सै जहा चौरानवे प्रमाण
चैत कृष्ण तिथि अष्टमी शनिबासर ठहरान २

इस ग्रथ मे सूमो की चरचा है—

सूमन को महिमा बडी, को कहि पावै पारु
कवि देवी सछेप सो कछु कछु कियौ विचारु ४

सक्षेप से विचार करने पर भी इस ग्रथ मे लगभग २०० प्रकार के मनुष्यो की प्रवृत्ति का चित्र खीचा गया है ।

१९२३ वाली रिपोर्ट मे अनुमान किया गया है कि यह सभवत जैतपुर निवासी, वैताल पचीसी तथा अटक पचीसी के रचयिता तथा सवत् १८१२ के लगभग उपस्थित देवीदत्त हे । प्रेम रत्नाकर और सूम सागर के रचनाकालो मे ५२ वर्षो का अन्तर है । इससे लगता है कि दोनो कवि भिन्न-भिन्न हैं । सरोज सप्तम सस्करण मे प्रमाद से सूम सागर के स्थान पर सूर सागर छप गया है । कवि का रचना काल १७९४ है । अत सरोज मे दिया हुआ सम्वत् १७५० इसका जन्म काल हो सकता है ।

३६९।३०९

(३८) देवीराम कवि, १७५० मे उ० । इनका काव्य मध्यम और शान्त रस का है ।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्वन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही है ।

३७०।२९८

(३९) देवा कवि (२) राजपूताने वाले, स० १८५५ मे उ० । यह कवि कृष्णदास पय अहारी गतला जी वाले के शिष्य और उदयपुर के समीप एक मदिर मे चतुर्भुज स्वामी के पुजारी थे ।

---

(१) खोज रि० १९२०। ४०,१९२३।९४

सर्वेक्षण

भक्तमाल, छप्पय ३९ मे कृष्णदास पयअहारी के चौबीस शिष्यो मे यह भी पारंगणित हैं। एक देवा जी का उल्लेख छप्पय ५२ मे भी हुआ है। प्रियादास के अनुसार (कवित्त २२७-२९) यह राना के चतुर्भुज के मन्दिर मे पुजारी थे। रूपकला जी ने दोनो को देवा जी पण्डा कहा है, अतः दोनो अभिन्न है। सरोज मे भी इन्हे अभिन्न ही माना गया है। रामानन्द के शिष्य अनतानद, अनतानद के कृष्णदास पयअहारो थे। कृष्णदास पयअहारी के शिष्य अग्रदास, कील्ह दास और देवा आदि थे। अग्रदास का समय १६३२ स्वीकृत[1] है, अत देवा का भी यही समय होना चाहिये।

३७१।

(४०) दौलत कवि, स० १६५१ मे उ०।

सर्वेक्षण

दौलत नाम के कम से कम ८ कवि खोज मे मिले हैं, पर सभी प्रसग प्राप्त दौलत कवि से भिन्न है। किसी के साथ इस कवि की अभिन्नता नही स्थापित की जा सकती।

३७२।

(४१) दील्ह कवि, स० १६०५ मे उ०।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही है।

३७३।

(४२) देव नाथ कवि।

सर्वेक्षण

विनोद मे (८३९,९७०।१,१४९७) देवनाथ का रचनाकाल स० १८३२ दिया गया है। खोज मे भी एक देवनाथ मिले हैं। इनकी कृति शिव सगुनविलास[2] है। यह शकुन विचार सम्बन्धी ग्रथ है। इसकी रचना वैशाख शुक्ल ७, स० १८४० को हुई।

माधौ शुक्ल पच्छ जब होई
तिथि सत्तमी प्रगट यह खोई
तन वेद वसु इन्दु बखाना
ये संवत बीतै बुध जानौ

सभवत. तन के स्थान पर गगन पाठ है। समय की दृष्टि से दोनो कवि एक ही प्रतीत होते है।

---

(१) शुक्ल जी का इतिहास, पृष्ठ १४६ (२) खोज रि० १९२३।९१

३७४।

(४३) देवमणि कवि, १६ अध्याय तक चाणक्य राजनीति को भाषा किया।

सर्वेक्षण

देवमणि के खोज मे २ ग्रथ मिले है—

१—राजनीति के भाव—१६०६।१५७ यह चाणक्य राजनीति का स्वतत्र अनुवाद है। प्राप्त प्रति मे केवल ७ अध्यायो तक का अनुवाद है। ग्रथ का प्रतिलिपि काल स० १८२४ है। अत देवमणि जी स० १८२४ के पूर्व के हैं।

२. चर नायके—१६०६।६६। ग्रथ मे केवल ७६ दोहे हैं। इसमे राजाओ के कर्तव्य का वर्णन है।

३७५।

(४४) दास व्रजवासी। इन्होंने प्रवोध चन्द्रोदय ग्रथ बनाया हे।

सर्वेक्षण

यह व्रज विलास के रचयिता व्रजवासीदास है। इन्होने प्रवोध चद्रोदय नाटक का सस्कृत से भाषानुवाद स० १८१६ मे किया था। इनका विस्तृत विवरण सख्या ५३७ पर है। सख्या ५३४ पर भी इन्ही का पुन. उल्लेख हुआ है।

३७६।

(४५) दिलीप कवि।

सर्वेक्षण

दिलीप, चैनपुर भभुआ, जिला शाहावाद, विहार के रहनेवाले थे। इन्होने स० १८५६ मे रामायन टीका नामक ग्रथ लिखा था।[१]

३७७।

(४६) दीनानाथ अध्वर्यु, मोहार, जिले फतेपुर, स० १८७६ मे उ०। इन्होने व्रह्मोत्तर खड को भाषा किया।

सर्वेक्षण

कवि के सम्वन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही।

३७८।

(४७) देवीदीन, वदीजन, विलग्रामी, विद्यमान हैं। यह कवि रसाल विलग्रामी के भाजे हैं और यद्यपि सत्कवि हैं, पर सतोष और घर वैठने के कारण दारिद्रय के हाथ से तग हैं। इनका वनाया हुआ नखशिख और रस दर्पण ये दो ग्रथ सुन्दर ह।

---

(१) खोज रि० १६०३।१४०

सर्वेक्षण

विनोद मे (२४५६) इनका उल्लेख स० १६४० मे उपस्थित कवियो की सूची मे है।

३७६।

(४८) देवी सिंह कवि।

सर्वेक्षण

देवी सिंह ओड़छा नरेश मधुकर साहि की पाचवी पीढी मे हुए थे। यह स० १७३३ के आस-पास तक वर्तमान थे। खोज मे इनके निम्नलिखित ग्रथ मिले हैं—

१ नृसिंह लीला—१६०६।२८ ए। इस ग्रथ मे कवि ने अपना वश परिचय दिया है।

श्री नृसिंह की लीला गाई
राज देवी सिंह बनाई
नृप मधुकर ते पाचो जो है
नृप भारथ को सुत सुख सो है
राजा राम साहि की पनती
राजा कविन माह की गनती
साहि सिग्राम नृपति कौ नाती
जाके करे ग्रथ वहु भाँती
सोम वश कासीसुर आही
कहत बुंदेला जग मे जाही
गहरवार कुल नृप अवतस
जाकी जगत माह परसंस

स्पष्ट है कि इनके पिता का नाम भारथ, पितामह का नाम सग्राम सिंह, प्रपितामह का नाम राम साहि और प्र-प्रपितामह का नाम मधुकर साहि था।

२ आयुर्वेद विलास—१६०६।२८ बी। यह वैद्यक का ग्रथ है। देवीसिंह विलास[1] और अर्बुद विलास[2] भी सभवत. इसी ग्रथ के अन्य नाम है। ग्रथ मे कवि का नाम है।

देवी सिंघ नारिंद कह आप वेद परकास
तत्त रूप यह देख सुन भाषा करौ विलास

'आप वेद परकास' सभवत 'आयुर्वेद प्रकाश' का भ्रष्ट पाठांतर है।

---

(१) खोज रि० १६२६। २८ डी (२) खोज रि० १६२६ ।२८ ई

३ रहस्य लीला—१९०६। २८ सी। यह रेखता मे कृष्ण लीला है।

मटक नाच्यो मुकटधारी
लटक पर सिंघ बलिहारी

४ बारामासी—१९०६।२८ एफ। इस ग्रन्थ मे विरहिणी विलाप है।

५ कौशिल्या की बारहमासी—१९२६।१०१, १९४७।१६७।

६ शृङ्गार शतक—राज० रि० ४, पृष्ठ ८०। यह लगभग १०० शृङ्गारी कवित्त सवैयो का सग्रह है। इसकी रचना जेठ वदी ९, स० १७२१ को हुई।

३८०।३१०

(४९) दयाल कवि वदीजन, बेंतीवाले भौन कवि के पुत्र, विद्यमान है।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई नई सूचना सुलभ नही। ६१० सख्यक भौन के प्रसग मे भी इनका उल्लेख सरोज मे हुआ है।

ध

३८१।३११

(१) धन सिंह कवि, स० १७९१ मे उ०। यह कवि मौरावा, जिले उन्नाव के रहनेवाले वदीजन महा निपुण कवि हो गए है।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही।

३८२।३१३

(२) धनीराम कवि वनारसी, स० १८८० मे उ०। इनकी कविता बहुत ललित है। बाबू देवकी नदन, वनारसी की आज्ञानुसार काव्य प्रकाश को सस्कृत से भाषा किया और रामचन्द्रिका का तिलक वनाया।

सर्वेक्षण

धनीराम जी असनी के कवि ऋपिनाथ के पौत्र, ठाकुर के पुत्र तथा सेवक और शकर के पिता थे। यह काशी नरेश के भाई बाबू देवकी नदन सिंह और उनके पुत्र बाबू रतन सिंह एव जानकी प्रसाद के आश्रित थे। विनोद (११३०) के अनुसार इनका जन्म स० १८४० के आसपास, कविता काल स० १८६७ और मृत्यु स० १८९० के लगभग हुई। इनके निम्नलिखित ग्रन्थ खोज मे प्राप्त हुए है—

१ काव्य प्रकाश—१९२३।९९। यह ग्रन्थ स० १८८० मे वसत पचमी, गुरुवार को प्रारम्भ किया गया था—

व्योम[0] सिद्धि[8] सिधि[8] चद्र[1] गुरु तिथि पंचमी वसंत
कर्यौ ग्रंथ प्रारंभ हौं सुमिरि हिये भगवंत ५

रिपोर्ट मे आश्रयदाता का नाम राय रात लिखा है, जो रायरतन होना चाहिए यह रायरतन देवकी नदन जी के पुत्र थे।

२ राम गुणोदय—१६०३।११६, १६२६।१०३ ए। इस ग्रन्थ मे रामाश्वमेध का वर्णन है। यह ग्रन्थ ज्येष्ठ वदी ११, शुक्रवार, स० १८६७ को श्री देवकी नदन की प्रेरणा से रचा गया था—

अब्धि[७] दर्शन[६] सिद्धि[८] सम्मित चद[१] संवत राजही
शुक्र श्री तिथि रुद्र शुक्र सु पच्छ स्यामल साजही
रेवती उडु मे प्रसस्त यह द्विजोग सो ठाइयो
चारु ता दिन ग्रन्थ पूरनता विसेषि सो पाइयो
—खोज रि० १६०३।११६

३ तत्वार्थ प्रदीप—१६२६।१०३ वी। यह इनके आश्रयदाता जानकी सिंह कृत 'युक्ति रामायण' की टीका है।

३८३।३१५

(३) धीर कवि स० १८७२ मे उ०। यह कवि, शाह आलम बादशाह दिल्ली के यहाँ थे।

सर्वेक्षण

शाह आलम का शासनकाल स० १८१८-६३ है। अतः सरोज मे दिया हुआ स० १८७२ कवि का उपस्थितिकाल ही है। प्रथम सस्करण मे १८७२ के स्थान पर १८२२ है। खोज मे इनका एक ग्रन्थ 'कवि प्रिया का तिलक' मिला है। यह तिलक स० १८७० मे किसी राजा वीर किशोर के निर्देश से किया गया। प्रतीत होता है कि स० १८६३ मे शाह आलम के देहावसान के अनतर धीर जी कही अन्यत्र चले गए।

सवत द्वादस षष्ट सत सत्तर सुभ नभ मास
प्रथम हंस बुध धीर कवि कीनो अर्थ प्रकाश २७

खोज मे एक धीर और मिले है। इन्होने अलकार मुक्तावली[१] की रचना चद्रालोक के आधार पर की थी—

ग्रन्थ चद्र अवलोकि के दीनो अर्थ जनाय
अलंकार मुक्तावली कीन्ही धीर बनाय ७६

पुष्पिका से पता चलता है कि यह कही के राजा थे—

"इति श्रीमन्महाराजाधिराज श्री महाराज धीर सिंघ विरचताया अलकारमुक्तावली सपुरन समापता सुभमस्तु श्रीरस्तु"

यह महाराज धीर सिंह किसी दूसरे के आश्रय मे रहकर काव्य नही कर सकते, अत यह सरोज के धीर से भिन्न हैं। १६४७ की खोज मे प्राप्त प्रति का लिपिकाल स० १८५२ है, अत. यह महाराज धीर स० १८५२ के या तो पूर्ववर्ती है या फिर समसामयिक। रिपोर्ट के उद्धृत अश मे कवि का नाम आया है।

---

(१) खोज रि० १६०४।३५, १६४७।१७४

अलकार उपमा इहै आनन चद समान
साधारन प्रयास है कीनो धीर बखान ६

३८४।३१४

(४) धुरधर कवि । इनके कवित्त दिग्विजय भूषण मे है ।

सर्वेक्षण

धुरधर की रचना सरदार के शृगार सग्रह मे भी है, अत. यह स० १९०५ के पूर्ववर्ती कवि है । विनोद मे (१९२८) इनके एक ग्रन्थ 'शब्द प्रकाश' का भी उल्लेख है ।

३८५।३१२

(५) धीरज नरिंद महाराजा इद्रजीत सिंह बुन्देला, उडछावाले, स० १६१५ मे उ० । इन्ही महाराज के यहाँ कवि केशवदास थे और प्रवीणराय पातुर भी इन्ही की सभा मे विराजमान थीं । इनके समय मे उडछा वडी राजधानी थी ।

सर्वेक्षण

इद्रजीत सिह के पिता मधुकरशाह का शासनकाल स० १६११-४९ है । केशव ने इद्रजीत के आश्रय मे स० १६४८ मे रसिकप्रिया की रचना की थी । ऐसी स्थिति मे सरोज मे दिया हुआ स० १६१५ इनका जन्मकाल हो सकता है । बुन्देल वैभव मे इनका जन्मकाल स० १६२० अनुमित है । इद्रजीत ओडछे के राजा नही थे । स० १६४९ मे मधुकरशाह की मृत्यु के अनतर ओड़छा का राज्य ८ भागो मे विभक्त हो गया । राम सिंह राजा हुए, शेष भाई जागीरदार । दूसरे पुत्र वीर सिंह देव को वडौनी और तीसरे पुत्र इन इद्रजीत को कच्छौवा की जागीर मिली थी । कालातर मे इनका वीरसिंह देव से गृह युद्ध भी हुआ था । यह अपने सबसे वडे भाई राजारामसिंह के दाहिने हाथ थे । यह सभवत. स० १६८० के आस पास तक जीवित रहे । इनका लिखा कोई ग्रन्थ नही मिलता ।

३८६।३१७

(६) धोधेदास, व्रजवासी । इनके पद राग सागरोद्भव मे है ।

सर्वेक्षण

विनोद (३३६) के अनुसार इनका रचनाकाल स० १७०० है । पर इन्होने १६२८-१६४२ के बीच किसी समय गोकुल जाकर गो० विट्ठलनाथ से पुष्टि-संप्रदाय की दीक्षा ली थी । वह मुसलमान थे । दिल्ली आगरा के बीच किसी गाव में इनका जन्म हुआ था । माता-पिता के मरने पर यह आगरा आ गये और गाकर जीवकोपार्जन करने लगे । तदनंतर गोकुल जाकर दीक्षा ले ली और गोकुल तथा गोवर्धन में रहने लगे । इनकी कथा २५२ वैष्णवों की वार्ता में है ।[१]

---

(१) २५२ वैष्णवों की वार्त्ता, तृतीय भाग, पृष्ठ २८४।८५

३८७।३१६

(७) धौकल सिंह बैस, न्यावा जिले रायबरेली, स० १८६० मे उ०। इन्होने रमल प्रश्न इत्यादि छोटे-छोटे ग्रन्थ बनाए।

सर्वेक्षण

रमल प्रश्न[1] शकुन-विचार सम्बन्धी ग्रन्थ है। यह संस्कृत से अनूदित है—

यह मत सकल ऋषिन कर साचैं
प्रश्न सो सत्य जानि मन भाई
भाषा धौकल सिंह बनाई।

ग्रन्थ की रचना स० १८६४ मे श्रावण पूर्णिमा रविवार को हुई—

निगमागम भूसुर वरण वस्तु लेव विचार
नभ सित रावर्तिथि सहित पुनि पर्व प्रकार निरधारि

वस्तु के स्थान पर संभवतः वसु तू शुद्ध पाठ है। निगम ४, आगम ६, भूसुर वरण १, और वसु ८। सरोज मे दिया स १८६० कवि का उपस्थिति-काल है।

न

३८८।३१८

---

(१) नरहरि राय, वदीजन, असनीवाले, स० १६०० के बाद उ०। यह कवि जलालुद्दीन अकबर बादशाह के यहाँ थे। असनी गाँव इनको माफी मे मिला था। इनके पुत्र हरिनाथ महाकवीश्वर और उदार चित्त थे। नरहरिवशी वदीजन इस समय वाराणसी और इधर-उधर देशातरो मे तितिर-वितिर हो गए है। गाव भी ब्राह्मणो के दखल मे है। इनका घर जो असनी से लगा हुआ पूर्व ओर ऐन गगा के किनारे बडे महाराजो का ऐसा गढ था, अब ढहा पडा है। ईंटे आज तक बिकती हैं। गीदड, श्वानादि दिन दोपहर फिरा करते हैं। इनका बनाया हुआ कोई ग्रन्थ हमारे देखने-सुनने मे नही आया। कवित्त और बहुधा छप्पै देखने-सुनने मे आए हैं। एक बार अकबर बादशाह ने करन कवि सिरोहिया वदीजन से पूछा कि तुम्हारी जाति मे कौन भाट बडे हैं। करन बोले, महाराज, सिरोहिया भाट कलगी के समान सर्वोपरि हैं। तब अकबर शाह ने नरहरि से पूछा। नरहरि बोले, महाराज सत्य है, सिरोहिया शिर के समान और हम पाव के तुल्य हैं। तब अकबर शाह बोले और सब भाट तो गुण के पात्र हैं, तुम महापात्र हो। तब से नरहरि वशी भाट महापात्र कहाए।

सर्वेक्षण

नरहरि रायबरेली जिले की डलमऊ तहसील के पखरौली नामक ग्राम मे उत्पन्न हुये थे।

---

(१) खोज रि० १९१७।५०

इनका जन्म स० १५६२ मे हुआ था। यह ब्रह्मभट्ट थे। इनका सपर्क बाबर, हुमायू, शेरशाह, सलेमशाह (इस्लाम शाह सूरी), पुरी के राजा मुकुन्द गजपति, रीवाँ नरेश रामचन्द्र सिंह, और अकबर से था। इनकी मृत्यु स० १६६७ मे हुई।[१] महेशदत्त ने इनका मृत्यु सम्वत् १६६६ माना है।[२]

नरहरि के तीन ग्रथ कहे जाते है—रुक्मिणी मगल, छप्पय नीति, और कवित्त सग्रह। रुक्मिणी मगल एक लघु प्रवन्ध है, जो दोहा-चौपाई छन्दो मे लिखा गया है। शेष दोनो फुटकर रचनाओ के सग्रह हैं।[३]

अकबर ने फतेहपुर जिले मे इनको असनी नामक गाँव दिया था। यहाँ पर इनके वशज अब भी हैं। इन्ही की प्रार्थना पर अकबर ने गो-वध वद करा दिया था। अकबर ने उन्हे महापात्र की उपाधि दी थी।

सरोज मे दिया हुआ स० १६०० विक्रम सम्वत् भी हो सकता है। अकबरी दरबार से सम्बन्धित होने के कारण यह ईस्वी-सन् प्रतीत होता है। हर हालत मे यह उपस्थितिकाल है और सरोज का सम्वत् शुद्ध है। खोज मे इनके ये दो ग्रन्थ मिले हैं—१ रुक्मिणी मगल—१९०३।११। २ नरहरि के कवित्त—१९४१।१२० क, ख। नरहरि के नाम पर 'अवतार चरित्र' नामक एक और बडा ग्रन्थ मिला है, पर यह किसी राजस्थानी 'बारहट नरहरदासेन विरचित' है।[४]

ग्रियर्सन मे (११३) इनका नाम नरहरि सहाय दिया गया है और अविश्वसनीय मानते हुए भी इनके सम्बन्ध मे निम्नाकित कथा दी गई है। नरहरि ने अपनी कविता से प्रसन्न करके शेरशाह से पुरस्कार मे हुमायूँ की चोली बेगम को माँग लिया। फिर उसे रीवा ले गया, जहाँ गर्भिणी चोलीबेगम ने अकबर को जन्म दिया। नरहरि के वशज अजबेस ने भी रीवा के किले मे हुमायूँ की बेगम और उसके पुत्र अकबर के शरण लेने की चर्चा एक कवित्त मे की है, जो सरोज मे उद्धृत है।[५]

३८९।३३५

(२) निपट निरजन स्वामी, स० १६५० मे उ०। यह महाराज गोस्वामी तुलसीदास के समान महान् सिद्ध हो गए हैं। इनके ग्रथो की ठीक-ठीक सख्या मालूम नही होती। पुरानी सग्रहीत पुस्तको मे सैकडो कवित्त हम इनके देखते हैं। हमारे पुस्तकालय मे शात-सरसी और निरजन सग्रह, ये दो ग्रन्थ इन महाराज के बनाए हुए हैं। इनकी कविता में बहुत बडा प्रभाव यह है कि मनुष्य कैसा ही काम-क्रोध इत्यादि पापो से वद्ध हो, इनके वाक्य के श्रवण-कीर्तन से नि सन्देह मुक्त हो जायगा।

---

(१) अकबरी दरबार के हिन्दी कवि, पृष्ठ २४-७६ (२) भाषाकाव्य संग्रह, पृष्ठ १३७ (३) अकबरी दरबार के हिन्दी कवि, पृष्ठ १४९-५१ (४) खोज रि० १९०९।२१, राज रि० भाग १, संख्या १२ (५) यही ग्रन्थ, कवि संख्या २

सर्वेक्षण

श्री सफीउद्दीन सिद्दीकी, आर्ट्स और साइस कालेज, औरङ्गाबाद, हैदराबाद, दकन मे अध्यापक है। इन्होने दिल्ली से निकलने वाले साप्ताहिक उर्दू 'आईना'[1] मे निपट निरजन पर एक लेख लिखा है, जिसका शीर्षक है 'औरङ्गजेब से गुस्ताखियाँ करनेवाले सत कवि, हिन्दी-उर्दू दोनो के मुश्तरका शायर'। इस लेख मे निपट निरजन के अनेक कवित्त उद्धृत हैं, जिनमे आलमगीर का नाम आया है। उदाहरण के लिये ऐसा एक कवित्त यहाँ उद्धृत किया जा रहा है।

हम तो फकीर खुद मस्त हैं खुदा पै फिदा
रहैं जग से जुदा, कुछ लेना है न देना है
शाहों के वे शाह, नहीं हमें कुछ परवाह
बैला बाटी की न चाह, ताना है न बाना है
मन ही नहाना धोना, पवन का खाना पीना
आस का ओढना, और पृथ्वी का बिछौना है
कहै निपट निरजन सुनो आलमगीर
सुन्न हरि महल बीच सोना ही तो सोना है

इस लेख के अनुसार निपट निरजन औरङ्गजेब के शासनकाल स० १७१५-६४ मे हुये। अत सरोज मे दिया हुआ स० १६५० ठीक नहीं। लेख के अनुसार यह बुन्देलखण्ड के चन्देरी गाँव के रहने वाले थे। यहाँ से जाकर यह खुल्दाबाद, औरङ्गाबाद, मे बस गए। बचपन ही मे इनके पिता का देहात हो गया था। इनकी माँ ने इनका लालन-पालन किया था। लडकपन ही से इनका साधुओ से सग रहा। इनका असल नाम अज्ञात है। कविता मे छाप निपट निरजन है। स० १७४० के आस-पास औरङ्गजेब ने दक्षिण मे औरगाबाद बसाया, उसी समय निपट निरजन दक्षिण गए और औरङ्गाबाद के निकट एकनाथ के मन्दिर मे बसेरा लिया। फिर कुटिया बनाकर वहाँ रहने लगे। यहाँ से यह देवगिरि (दौलताबाद) चले गए। औरङ्गजेब के २५ वर्षीय दक्षिण प्रवास के समय इनकी मुलाकात उससे हुई थी। आलमगीर निपट महाराज की आध्यात्मिक शक्ति का कायल था। इनकी कविता मे अरबी-फारसी के शब्द और खडी बोली के प्रयोग भी मिलते है। इसीलिए इनको हिन्दी उर्दू का सम्मिलित कवि कहा गया हैं। खोज मे इनके तीन ग्रन्थ मिले है —

१ कवित्त निपट जी के—१६१७।१२८। यह निपट जी की फुटकर कविताओ का सग्रह है। ग्रन्थ अपूर्ण है, फिर भी इसमे २१४ कवित्त सवैये हैं। सकलनकर्ता कोई दूसरा है, यह इस दोहे मे स्पष्ट है—

निपट निरजन समय पर, कहे जु वचन विलास
ते सब मे अनुक्रम करि, लिखे नाम धरि तास ३

२ शात रस वेदात—१६३२।३०६। यह प्रति शिव सिंह के पुस्तकालय की है। सभवत इसी का उल्लेख सरोजकार ने शात सरसी नाम से किया है। यह भी कवित्त सवैयो मे है और अपूर्ण है। इस प्रति मे ६५ छद है।

३—१६२६।२५३। प्राप्त ग्रन्थ आदि अत दोनो ओर से खडित है।

---

(१) आईना, १६ सितम्बर १६५५

३६०।३१६

(३) निहाल, ब्राह्मण, निगोहा, जिले लखनऊ, स० १८१० मे उ० । इनकी कविता वहुत ही ललित है ।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्वन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही । यह सभवत. वुदेलखण्डी करन भट्ट के काव्य गुरु थे । ऐसी दशा मे यह कान्यकुब्ज पाडेय ब्राह्मण थे ।[१]

निगोहावाले इन निहाल से भिन्न एक और निहाल हैं, जो पटियाला नरेश महाराज कर्मसिंह और नरेंद्रसिंह के आश्रित थे और स० १८९३-१९१९ के लगभग वर्तमान थे । इन्होने निम्नलिखित ग्रन्थ लिखे हैं .—

१ महाभारत भाषा—१९०४।६७ ।

२ साहित्य शिरोमणि—१९०३।१०५ । रचनाकाल स० १८९३ ।

३ सुनीति पथ प्रकाश—१९०३।१०६। रचनाकाल स० १८९६ ।

४ सुनीति रत्नाकर—१९०५।१०७। रचनाकाल स० १९०२ ।

३६१।३२३

(४) नानक जी वेदी, खत्री, तिलवडी गाँव पजाव वासी, स० १५२६ मे उ० । यह महात्मा कार्तिक पूर्णमासी को सवत् १५२६ मे उत्पन्न और सवत् १५९६ मे वैकुठवासी हुए । इनकी कथा सभी छोटे-वडो पर विदित है । इनका ग्रन्थ 'ग्रन्थ साहव' के नाम से नानकपथियो मे पूजनीय है । उसमे दसो गुरुओ की कविता के सिवा और भक्त कवि लोगो का काव्य भी शामिल है । इस तफसील से १ नानक जी, २ अगद जी, ३ अमरदास, ४ रामदास, ५ हरिरामदास, ६ हरि गोविंद, ७ हरि राय, ८ हरिकिसुन, ९ तेगवहादुर, १० गोविंद सिंह । इन दसो मे ६,७,८ के पद ग्रन्थ साहव मे नही हैं, और सव के हैं । छाप सव की नानक है । जहाँ महल्ला लिखा है, उसीसे मालूम होता है कि यह पद किस गुरु का है । सिवा इन दसो के और जिनके काव्य ग्रन्थसाहव मे हैं, उनके ये नाम हैं—१ कवीरदास, २ त्रिलोचन, ३ धना भक्त, ४ रैदास, ५. सेन, ६ शेखफरीद, ७ मीरा वाई, ८. नाम देव ९ वलभद्र ।

सर्वेक्षण

सिक्ख सम्प्रदाय के प्रवर्तक गुरु नानक वेदी खत्री थे । कार्तिक पूर्णिमा स० १५२६ को तिलवडी ग्राम (लाहौर) मे इनका जन्म हुआ । इनके पिता का नाम कालूचद था, जो लाहौर के पास सूवा वुलार के पठान के कारिंदा थे । स० १५४५ मे इनका विवाह गुरुदासपुर के मूलचद खत्री की कन्या सुलक्षिणी से हुआ था । इनका देहात स० १५९६ मे हुआ । सरोज मे गुरु नानक से सम्वन्धित सभी तथ्य और तिथियां ठीक है ।

गुरु नानक की सारी रचना ग्रन्थसाहव के पहले महले मे हे । ये रचनाएँ साखी, सुखमनी, और अष्टाग योग है । इनकी रचनाएँ हिन्दी ही मे हें ।

---

(१) देखिए, यही ग्रन्थ, कवि सख्या ९९

गुरु नानक पहुँचे हुए फकीर थे। इन्होने हिन्दू-मुसलमान मतो को मिलाने का प्रयास किया। यह एक ईश्वर को मानने वाले थे। इन्होने हरिद्वार, काशी, गया, मक्का आदि सभी स्थानो की यात्रा की थी।

३९२।३३१

(५) नेही कवि। इन्होने सरस कविता की है।

सर्वेक्षण

दलपति राय वशीधर कृत 'अलकार रत्नाकर' मे नेही की भी कविता है। अतः इनका रचना-काल स० १७९८ के पूर्व है। सूदन मे भी उल्लेख है।

३९३।३३२

(६) नैन कवि। ऐजन। इन्होने सरस कविता की है।

सर्वेक्षण

खोज मे नैन के दो ग्रन्थ मिले है—

१. कवित्त हजरत अली साह मरदानसेरे खुदा सलतातुलाह अलेहवाल ही वोसलम की हाल गढ लेबा की लडाई का तथा कवित्त हजरत अली के मिज़िजा के १९४१।१३० क। इस ग्रन्थ से प्रतीत होता है कि इनका सम्बन्ध किसी मुसलमान आश्रयदाता से अवश्य था, अन्यथा इस विषय पर लिखने की इन्हे कोई आवश्यकता नही थी।

२ अगद रावण सवाद—१९४१।१३० ख। सूदन मे नामोल्लेख है, अत १८१० के पूर्व या समकालीन हैं।

३९४।३२०

(७) नोने कवि, वदीजन, बांदा, बुन्देलखण्ड निवासी, कवि हरिलाल जी के पुत्र, स० १९०१ मे उ०। यह महान् कवि भाषा-साहित्य मे निपट प्रवीण बहुत अच्छा काव्य करते हैं। ग्रन्थ इनका हमने नही देखा है।

सर्वेक्षण

सरोज सप्तम संस्करण मे परिचय तथा उदाहरण देते समय दोनो स्थलो पर इन्हे कवि हरिलाल का पुत्र कहा गया है। साथ ही ९६१ सख्यक हरिदास के विवरण और उदाहरण देते समय दोनो स्थलो पर इन्हे नोने कवि का पिता लिखा गया है। ग्रियर्सन (५४५) और विनोद (२२९२) मे नोने के पिता का नाम हरिदास स्वीकार किया गया है। अन्य प्रमाणो के अभाव मे नोने के पिता का नाम हरिदास ही स्वीकार किया जा रहा है। कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही।

स० १७५० के लगभग बघौरा, बुन्देलखण्ड के जागीरदार राजा दुर्जन सिंह के आश्रय मे एक नोने व्यास नामक कवि हुए हैं, जिन्होने 'धनुष विद्या' नामक ग्रन्थ बनाया है।[1]

---

(१) बुन्देल वैभव, भाग २, पृष्ठ ५०२

३६५।३४९

(८) नैसुक कवि, बुन्देलखण्डी, स० १६०४ मे उ० । इनके शृङ्गार के सुन्दर कवित्त है।

सर्वेक्षण

नैसुक के सम्वन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही है।

३६६।३५५

(९) नायक कवि । दिग्विजय भूषण मे इनके कवित्त है ।

सर्वेक्षण

सरदार के 'शृगार सग्रह' मे भी नायक की रचना है। सूदन ने इनका भी नाम प्रणम्य कवियो की सूची मे दिया है, अतः इनका रचनाकाल सं० १८१० के आसपास अथवा उससे कुछ पूर्व है। खोज मे नायक के नाम पर ये दो ग्रन्थ मिले है —

१ दत्तात्रय सत्सग उपदेश सागर—१६४१।१२८ क ।

२ सर्व सिद्धात श्रीराम मोक्ष परिचय—१६४१।१२८ ख ।

३६७।३५६

(१०) नबी कवि । इनका नखशिख अद्भुत है।

सर्वेक्षण

नखशिख वाले नवी कवि का कोई पता नही मिलता। खोज मे एक शेख नवी अवश्य मिले हैं। यह मऊ जौनपुर के निवासी थे। इन्होने जहाँगीर के शासनकाल मे स० १६७६ मे ज्ञानदीप नामक प्रेमाख्यान काव्य लिखा, जिसमे राजा ज्ञानदीप और रानी देव जानी की प्रेम कथा है।[1]

३६८।३५७

(११) नागरीदास कवि, स० १६४८ मे उ० । हजारा मे इनके कवित्त है।

सर्वेक्षण

हिन्दी मे नागरीदास नामक कुल चार कवि हुए है –

१ आचार्य नागरीदास —श्री स्वामी हरिदास जी की शिष्य परम्परा मे, विहारिनिदास के शिष्य, एक प्रसिद्ध महात्मा और कवि। इनका असल नाम शुक्लाबरवर था। इनके पिता का नाम कमलापति था। यह स० १६०० मे माघ शुक्ल ५ को पैदा हुए थे। इनका देहावसान ७० वर्ष की वय में स० १६७० में वैशाख सुदी ९ को हुआ। सरस देव इनके भाई थे। इनका जन्म स० १६११ मे आश्विन शुक्ल १५ को हुआ था। इनकी मृत्यु स० १६८३ मे श्रावण सुदी १५ को हुई।[2] दोनो भाई अच्छे कवि थे। ध्रुवदास ने दोनो भाइयो का इस प्रकार स्मरण किया है—

कहा कहौ मृदुल सुभाव अति सरस नागरी दास
श्री विहारी विहारिन कौ सुजन गायौ हरसिहुलास

यह हरिदासी सम्प्रदाय के तीसरे आचार्य थे। इनका आचार्यत्वकाल स० १६५९-७० वि० है। इनके ग्रन्थ ये है.—

---

(१) खोज रि० १९०२।२१२ (२) हरिदास वंशानुचरित्र, पृष्ठ ६१, ७६,

१ नागरीदास की वानी—१९०५।३१, १९२३।२६१

२ स्वामी हरिदास जी का मगल १९०५।४०

२ नागरीदास—ओडछा के पास पलेहरा ग्राम के रहने वाले पँवार क्षत्रिय बुन्देलखण्ड अन्तर्गत ओडछा राजा के वशज स० १६५० के लगभग वर्तमान। हित हरिवश जी के ज्येष्ठ पुत्र स्वामी वनचद्र जी के शिष्य। पहले वृन्दावन मे रहते थे, वाद मे वरसाने चले गए थे। वहाँ इन्होने एक कुटी वनाई, जो आज तक मौजूद है। इनके ग्रन्थ ये हैं —

१. अष्टक या हिताष्टक—१९१२।११९ ए

२ नागरीदास की वानी—१९१२।११९ वी, १९४१।५१० क

३ नागरीदास के दोहे—१९१२।११९ सी

४ नागरीदास के पद—१९१२।११९ डी, १९४१।५१० ख

३ विप्र नागरीदास—चरणदास के ५२ शिष्यो मे से एक, उच्चकोटि के साधक और कवि, भागवत का स्वतत्र अनुवाद करनेवाले। इनका सम्बन्ध अलवर से था। यह अनुवाद मरुखडाधिपति जोरावर सिंह तत्पुत्र महव्वत सिंह और उनके पुत्र रावराजा श्री प्रताप सिंह के दीवान और प्रतिनिधि हलदिया कुलावतस श्री छाजूराम के स्नेहाकित अनुग्रह से चरणदास के जीवनकाल ही मे स० १८३२ वैसाख सुदी ३ को प्रारम्भ हुआ और छाजूराम के मृत्युकाल स० १८४५ के पूर्व ही किसी समय पूर्ण हुआ। इनका पूरा विवरण आगरा विश्वविद्यालय के हिन्दी इस्टीच्यूट की त्रैमासिक शोध-पत्रिका भारतीय साहित्य के प्रथम अक मे प्रकाशित हुआ है। इनके भागवत की प्रतियाँ खोज मे भी मिली हैं।[1]

४. नागरीदास—यह कृष्णगढ के राजा थे। इनका असल नाम सावत सिंह था। यही सरोज के अभीष्ट नागरीदास है। कृष्णगढ नरेश महाराज सावत सिंह, सम्बन्ध नाम नागरीदास का जन्म रूपनगर मे स० १७५६ मे हुआ था। इनकी मृत्यु स० १८२१ मे वृन्दावन मे हुई। ऐसी स्थिति मे सरोज मे दिया स० १६४८ अशुद्ध है। यह वल्लभ सम्प्रदाय के वैष्णव और अत्यन्त उच्च कोटि के कवि थे। इन्होने गृहकलह से ऊवकर स० १८१४ मे गद्दी छोड दी थी और विरक्त होकर वृन्दावन मे रहने लगे थे। इन्होने कुल ७५ ग्रन्थ लिखे थे, जिनका सर्वसकलन 'नागर समुच्चय' नाम से स० १९५५ मे निर्णय सागर प्रेस, वम्वई से प्रकाशित हो चुका है। यह वैराग्य सागर, शृगार सागर और पद सागर नामक तीन भागो मे विभक्त है।

वैराग्य सागर मे ये १५ ग्रन्थ हैं—१ भक्ति मग दीपिका, २ देह दशा, ३ वैराग्य वटी, ४ रसिक रतनावली, ५. कलि वैराग्य वल्ली, ६ अरिल्ल पच्चीसी, ७ छूटक पद, ८ छूटक दोहा, ९ तीर्थानन्द, १० रामचरित्र माला, ११ मनोरथ मजरी, १२ पद प्रवोधमाला, १३ जुगल भक्त विनोद, १४ भक्ति सार, और १५ श्रीमद्भागवत पारायण विधि।

शृङ्गार सागर मे ५१ ग्रन्थ है—१ व्रजलीला, २ गोपीप्रेम प्रकाश, ३ पदप्रसग माला,

---

(१) खोज रि० १९१७।११८, १९२६।२४१

४ व्रजवैकुण्ठ तुला, ५ व्रज सार, ६ विहार चन्द्रिका, ७ भोर लीला, ८ प्रातरसमजरी, ९ भोजनानन्द अष्टक, १० जुगलरस माधुरी, ११ फूल विलास, १२ गोधन आगम, १३ दोहनानन्द अष्टक, १४ लगनाष्टक, १५ फाग विलास, १६. ग्रीष्म विहार, १७ पावस पचीसी, १८ गोपी वैनविलास, १९ रासरस लता, २० रैन रूपारस, २१ सीत सार, २२ इश्क चमन, २३ छूटक दोहा मजलस मडन, २४ रास अनुक्रम के दोहा, २५ अरिल्लाष्टक, २६ सदा की माझ, २७ वर्षा ऋतु की माझ, २८ होरी की माझ, २९ शरद की माझ, ३०. श्री ठाकुर जी के जन्मोत्सव के कवित्त, ३१ श्री ठकुरानी जी के जन्मोत्सव के कवित्त, ३२ साझी के कवित्त, ३३ साझी फूल बीननि समै सवाद अनुक्रम, ३४ रास के कवित्त, ३५ चाँदनी के कवित्त, ३६ दिवारी के कवित्त, ३७ गोवर्द्धनधारण के कवित्त, ३८ होरी के कवित्त, ३९ फाग खेल समै अनुक्रम, ४० वसन्त वर्णन के कवित्त, ४१ फाग विहार, ४२ फाग गोकुलाष्टक, ४३ हिंडोरा के कवित्त, ४४ वर्षा के कवित्त, ४५ छूटक कवित्त, ४६ वन विनोद, ४७ वाल विनोद, ४८ सजनानन्द, ४९ रास अनुक्रम के कवित्त, ५० निकुञ्ज विलास, और ५१ गोविंद परचई।

पद सागर मे कुल तीन ग्रन्थ है—१ वन जन प्रशसा, २, पद मुक्तावली, ३ उत्सवमाला। कुल मिलाकर ६९ ग्रन्थ हुए। राधाकृष्ण दास[१] एव शुक्ल जी[२] ने इनके ७५ ग्रन्थो की सूची दी है। इन सूचियो के निम्नलिखित ६ ग्रन्थ नागर समुच्चय की ग्रन्थ सूची मे नही है :—

१ सिखनख, २ नखसिख, ३ चर्चरियाँ, ४ रेखता, ५ वैन विलास, ६ गुप्त रस प्रकाश। ये छहो ग्रन्थ अप्राप्त समझे जाते है, पर ऐसी बात नही, ये सभी पद 'मुक्तावली' नामक वृहत ग्रन्थ के अन्तर्गत हैं। इन ७५ ग्रन्थो मे से अनेक ग्रन्थ वहुत ही छोटे है, जिनमे कुछ ही छद है और जो शीर्षक मात्र है। शरद की माझ मे तो एक ही छद है। अनेक ग्रन्थो का रचनाकाल कवि ने स्वय दे दिया है, जिनके सहारे इनका रचनाकाल स० १७८२-१८१९ सिद्ध होता है। सभा भी आकर ग्रन्थमाला के अन्तर्गत नागरीदासग्रन्थावली प्रकाशित करने जा रही है। सरोज मे नागरीदास के तीन छद उद्धृत है, जो इनके ग्रन्थो मे मिल जाते ह।

१ भादो की कारी अँध्यारी निशा—वर्षा के कवित्त, छद ७वाँ

२ गास गँसीली ये वाते छिपाइए—होरी के कवित्त, छद १९वाँ

३ देवन की श्री रमापति की—काम विहार, छद ८वाँ

३९९।३५८

(१२) नरेश कवि। नायिका भेद का कोई ग्रन्थ वनाया है, क्योकि इनके कवित्तो से यह बात पाई जाती है।

सर्वेक्षण

नरेश के सम्वन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही।

---

(१) राधाकृष्ण भक्ति ग्रन्थावली, पृष्ठ २०२-३ (२) हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ ३४८

४००।३५६

(१३) नवीन कवि। इनके शृङ्गार रस के बहुत ही सुन्दर कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

नवीन का असल नाम गोपाल सिह था। यह वृन्दावन निवासी कायस्थ थे। जयपुर वाले ईश कवि इनके काव्य-गुरु थे। यह नाभा नरेश मालवेन्द्र महाराज जसवत सिह तथा उनके पुत्र देवेन्द्र सिह के आश्रित थे। इनके वशज अब भी अलवर राज्य के आश्रित है। इनके निम्नलिखित ग्रन्थ खोज मे मिले है —

१ नेह निदान—१९०५।३९। यह नायिका भेद का ग्रन्थ है। प्रतिलिपिकाल स० १९०७ है।

२ प्रबोध रस सुधा सागर या सुधारस या सुधा सर—१९३५।६६ ए बी, १९४७।१८५ यह अत्यन्त श्रेष्ठ सग्रह ग्रन्थ है। इसकी रचना स० १८९५ मे हुई —

प्रभु[५] सिधि[८] कवि रस[९] तत्व[५] गिन सवतसर अवरेख
अर्जुन शुक्ला पचमी सोम सुधासर लेख

यह सग्रह श्री जसवत सिह की आज्ञा से प्रस्तुत किया गया। इसमे शृङ्गार, ब्रज रसरीति, राज समाज, नीति, भक्ति, दान लीला, गोपी-कृष्ण प्रश्नोत्तर, विविध जानवरो और पक्षियो की लडाई का वर्णन, और वीर रस की रचनाओ का सग्रह है। इस ग्रन्थ मे २५७ पुराने कवियो की कविताएँ सकलित है। इस सग्रह मे ऐसी रचनाएँ सकलित है, जो सामान्यतया अन्य सग्रहो मे दुर्लभ है। रिपोर्ट मे केवल १८६ सकलित कवियो की सूची दी गई है। इसका नायिका भेद वाला अश, वह भी अपूर्ण रूप मे, सुधा सर नाम से बहुत पहले भारत जीवन प्रेस, काशी, से प्रकाशित हुआ था। ग्रन्थ के प्रकाशन की व्यवस्था होनी चाहिए। इस सग्रह मे २६९ दोहे, २२९५ कवित्त सवैये, ३५ छप्पय, ३ कुण्डलियाँ, १० बरवै और ४ चौपाइयाँ हैं। इस ग्रन्थ के अन्त मे एक ही नाम वाले और दो-दो नाम से कविता करने वाले कवियो की सूची दी गई है। उपयोगिता की दृष्टि से ये सूचियाँ प्रस्तुत ग्रथ के भूमिका भाग मे दे दी गई है। नवीन के दो अन्य ग्रन्थ सरसरस और रङ्गतरङ्ग है। विनोद (१७९५) के अनुसार रङ्गतरङ्ग का रचनाकाल स० १८९९ है। यह ग्रन्थ १८९८ मे प्रारम्भ हुआ—

प्रभु[१] सिधि[८] निधि[९] पर सिध[८] सरस सुभ संवत सुखसार
लीनों 'रङ्गतरङ्ग' वर ग्रन्थ आइ अवतार[१]

इसकी समाप्ति १८९९ मे हुई —

ठारह सै निन्यानवे सवत सर निरहार
माधव सुकला तीज गुरु भयो ग्रन्थ अवतार[२]

यह ग्रन्थ इण्डिया लिटरेचर सोसाइटी द्वारा मुरादाबाद मे १९०० वि० मे छपा भी था।[३] इन नवीन के अतिरिक्त दो नवीन और ह —

१ नवीन भट्ट, बिलग्राम, हरदोई के रहनेवाले। जन्मकाल स० १८६८, भक्त थे तथा बडी

(१-३) हिन्दी साहित्य का बृहत इतिहास, भाग ६, पृष्ठ ४११

सरस और मनोहर कविता करते थे। यह शिव ताडव भाषा तथा महिम्न भाषा के रचयिता हैं।[1]

२ नवीन—शृङ्गार शतक के रचयिता। प्राप्त प्रति क्वार सुदी ७, स० १८३५ की लिखी है। यह कवि सरोज के नवीन का पूर्ववर्ती है।[2]

४०१।३२४

(१४) नवनिधि कवि। इनकी कविता बहुत सरस है।

सर्वेक्षण

नवनिधि दास, लखौनिया, रसडा, जिला बलिया के निवासी कबीर पथी कायस्थ थे। यह चनरू राम उपनाम रामचन्द्र के शिष्य थे। इनके पुत्र का नाम रामखेलावन था। खोज मे इनके दो ग्रन्थ मिले हैं —

१. सकट मोचन—१९०९।२१२। इस ग्रन्थ के मगलाचरण से इनका निर्गुनियाँ होना सिद्ध है। इससे इनके गुरु का नाम रामचन्द्र ज्ञात होता है —

सत्त नाम सहिब धनी, सतगुरु चदहुराम
दास खास नवनिद्धि है, नमो नमो सुख धाम

इस ग्रन्थ मे भगवत्स्तुति सम्बन्धी ४० सवैये है, जिनमे से प्रत्येक का अतिम चरण एक ही है।

नवनिद्धि बिहाल पुकारत आरत क्यों मेरी बेर तू देर लगायो

२ मगल गीता—१९१४।१२१। इस ग्रन्थ की रचना स० १९०५ मे हुई —

तिरपन छप्पै जानिए कृष्ण चरित सुभ सिद्धि
समत उनइस सौ पाच है भाषेउ जन नवनिद्धि

इस ग्रन्थ मे निम्नलिखित विषय है—१ गङ्गा, २. कृष्ण पुकार, ३ ककहरा निर्गुण-सगुण के पद, ४ फगुवा, ५ बारहमासा, ६ सिद्धात, ७ रामखेलावन वाक्य।

४०२।३६५

(१५) नाभादास कवि, नाम नारायण दास महाराज दक्षिणी, स० १५४० मे उ०। इनको स्वामी अग्रदास जी ने गलता नाम इलाके आमेर मे लाकर अपना शिष्य बनाकर भक्तमाल नामक ग्रन्थ लिखने की आज्ञा की। नाभा जी ने १०८ छप्पै छन्दो मे इस ग्रन्थ को रचा। पीछे स्वामी प्रियादास वृदावनी ने इसका तिलक कवित्तो मे किया। फिर लाल जी कायस्थ काधला के निवासी ने सन् ११५८ हिजरी मे उसीका टीका बनाकर 'भक्त उरबसी' नाम रक्खा। इन दिनो उसी भक्तमाल को महा रसिक भगद्भक्त तुलसीराम अगरवाल मीरापुर निवासी ने उर्दू में उल्था कर 'भक्तमाल प्रदीप' नाम रक्खा है। नाभादास की विचित्र कथा भक्तमाल मे लिखी है।

(१) विनोद कवि सख्या २२३२ (२) खोज रि० १९२६।३३०

सर्वेक्षण

सरोज एव ग्रियर्सन (५१) के अनुसार भक्तमाल मे १०८ छप्पय हैं। माला के अनुरूप यह सख्या ठीक है भी। शुक्ल जी के अनुसार इस ग्रन्थ मे २०० भक्तो के चमत्कार पूर्ण चरित्र ३१६ छप्पयो मे लिखे गए हैं।[1] इस समय जो भी भक्तमाल मुद्रित या हस्तलिखित रूप मे उपलब्ध हैं, उनमे कुल २१४ छद (१७ दोहे[2] और १९७ छप्पय) हैं। स्पष्ट है कि भक्तमाल मे परिवर्द्धन हुआ है। इसमे कुल ८९ छप्पय बाद मे जोड़े गए।

सामान्यतया नाभादास भक्तमाल के रचयिता समझे जाते हैं और नारायनदास इनका मूल नाम समझा जाता है। मेरी धारणा है कि नारायनदास और नाभादास दो भिन्न-भिन्न व्यक्ति हैं और नारायनदास मूल भक्तमाल के कर्त्ता हैं तथा नाभादास परिवर्द्धित अश के। जिस रूप मे भक्तमाल आज उपलब्ध है, वह नाभादास का दिया हुआ है, अत यही भक्तमाल के रचयिता के रूप मे प्रख्यात हैं।

भक्तमाल की रचना विद्वानो के अनुसार गोसाईं विट्ठलनाथ की मृत्यु (स० १६४२) के पश्चात् और गोस्वामी तुलसीदास की मृत्यु (स० १६८०) के पूर्व किसी समय हुई, क्योकि भक्त-माल मे विट्ठलनाथ का स्मरण भूतकाल मे और तुलसीदास का स्मरण वर्तमान काल मे हुआ है। भक्तमाल के आधुनिक और गद्य टीकाकार रूपकला जी इसका रचनाकाल सं० १६४९ देते हैं। इन्ही के अनुसार स० १६५२ मे श्री कान्हरदास के भण्डारे मे समवेत महानुभावो ने मिलकर नाभादास को गोस्वामी की पदवी दी। नाभादास का देहावसान स० १७१९ मे हुआ,[3] अत. सरोज में दिया स० १५४० अशुद्ध है।

ग्रियर्सन (५१) के अनुसार नाभादास ने एक सौ आठ छप्पयो मे भक्तमाल रचा, फिर इनके शिष्य नारायणदास ने शाहजहाँ के शासनकाल मे इसे पुन लिखा। नारायणदास नाभादास के शिष्य नही थे, ज्येष्ठ गुरु भाई थे। जो हो, ग्रियर्सन भी भक्तमाल का सयुक्त कर्तृत्व मानते हैं। भक्तमाल की रचना अग्रदास की आज्ञा से हुई ---

> अग्रदेव आज्ञा दई, भक्तन कौ यश गाव
> भव सागर के तरन को नाहिन और उपाउ ४

मूल भक्तमाल के रचयिता नारायणदास हैं। इनका नाम ग्रन्थान्त मे आया है। नाभादास का नाम कही भी नही आया है।

> काहू के बल जोग जग, कुल करनी की आस
> भक्त नाम माला अगर उर (वसो) नरायनदास २१४

इस ग्रन्थ के दो छप्पय अग्रदास के हैं। इनमे अग्रदास की छाप है '—

> कविजन करत विचार बडौ कोउ ताहि भनिज्जै
> कोउ कह अवनी बडी जगत आधार फनिज्जै
> सो धारी सिर सेस सेस शिव भूषन कीनौ
> शिव आसन कैलास भुजा भर रावन लीनौ

---

(१) हिंदी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ १४७ (२) भक्तमाल, छद सख्या १-४, २९, २०३-१४ (३) भक्तमाल सटीक, भक्तिसुधा स्वाद तिलक, पृष्ठ ९९३

रावन जीत्यो कालि, बालि रायो इक सायक दई
अगर कहे त्रैलोक में हरि उर धरे तेई बड़े २००
नेह परस्पर अघट निबहि चारों जुग आयौ
अनुचर कौ उतकर्ष श्याम अपने मुख गायौ
ओत प्रोत अनुराग प्रीति सबही जग जाने
पुर प्रवेश रघुवीर भृत्य कीरति जु बखाने
अगर अनुग गुन बरनते सीतापति नित हॉय बस
हरि सुजस प्रीति हरिदास के त्यों भावैं हरिदास जस २०१

सभवत नाभादास ने श्रद्धापूर्वक गुरु के इन छप्पयो को अपने छप्पयो के साथ मूल ग्रन्थ मे जोड दिया है। भक्तमाल का रचनाकाल सवत १६४६ है, पर उपलब्ध भक्तमाल मे एकाध ऐसे भी भक्त हैं जिनका उस समय जन्म भी नही हुआ रहा होगा, जैसे —

कुजविहारी केलि सदा अभ्यंतर भापै
दम्पति सहज सनेह प्रीति परमिति परकासै
आनि भजन रस रीति पुष्ट मारग करि देखी
विधि निषेध बल त्यागि पागि रति हृदय विसेखी
माधव सुत सम्मत रसिक तिलक दाम धरि सेव लिय
भगवन्त मुदित उदार जस रस रसना आस्वाद किय १६८

माधवदास के पुत्र भगवन्त मुदित आगरे के सूबेदार के मुख्य मत्री थे। यह वृन्दावन के गोविन्ददेव के मन्दिर के अधिकारी श्री हरिदास जी के शिष्य थे। इनके लिखे हुए निम्नाकित चार ग्रन्थ खोज मे प्राप्त हुए है —

१ हित चरित्र—१६०६।१३ ए
२ सेवक चरित्र—१६०६।२३ बी
३ रसिक अनन्य माला—१६०६।२३ सी
४. वृन्दावन शतक—१६१२।२१

इनमे से वृन्दावन शतक का रचनाकाल स० १७०७ है —

सम्बत दस सै सात से अरु सात वर्ष हैं जानि
चैत मास में चतुर वर भाषा कियो बखानि

जिन भगवन्त मुदित का रचनाकाल स० १७०७ है, वे स० १६४६ के पूर्व प्रसिद्ध भक्त और महात्मा के रूप मे कदापि नही उपस्थित रहे होगे, सभवत उस समय उत्पन्न भी नही हुए रहे होगे। अत यह बाद मे जोडे हुए लोगो मे से है और यह छप्पय स्पष्ट ही नाभादास रचित है। इसी प्रकार एक भक्त गोविन्द दास भक्तमाली है, जिनका विवरण निम्नाकित छप्पय मे है .—

रुचिर सील घन नील लील रुचि सुमति सरितपति
विविध भक्त अनुरक्त व्यक्त बहु चरित चतुर अति

लघु दीरघ सुर सुद्ध वचन अविरुद्ध उचारन
बिस्व बास बिस्वास दास परिचै बिस्तारन
जानि जगत हित सब गुननि सु सम नरायन दास दिय
भक्त रत्न माला सुधन गोविन्द कंठ विकास किय १६२

इन गोविन्ददास को सम्पूर्ण ससारी जीवो का हित करने वाला और सब शुभ गुणो मे अपने समान जानकर नारायणदास ने इन्हे भक्तमाल पढा दिया था। यह उसका अत्यन्त शुद्ध पाठ करते थे। इस छप्पय से स्पष्ट है कि मूल भक्तमाल के रचयिता नारायणदास थे और मूल भक्तमाल मे यह छप्पय नही था। इसे बाद मे नाभादास ने जोडा। यदि यह छप्पय नारायनदास का ही होता, तो इन्होंने यह लिखा होता कि मैंने गोविन्ददास को भक्तमाल पढाया। वे यह कदापि न लिखते कि नारायनदास ने पढाया। जिस समय भक्तमाल रचा गया था, उस समय यह गोविन्ददास सभवत बच्चे रहे होंगे। मेरी धारणा है कि छप्पय ५-२८, जिनमे पौराणिक भक्तो का उल्लेख है, बाद की जोड़ तोड हैं। पहले २६ वाँ दोहा प्रारम्भ के चार दोहो के साथ पाचवें छन्द के रूप मे रहा होगा।

छप्पय २०२ या तो अग्रदास की कृति होगा अथवा नाभादास का। २००-२०१ संख्यक छप्पय तो अग्रदास कृत हैं ही। ६० छप्पय और भी नाभादास कृत होने चाहिये। भक्तमाल के एक छप्पय मे प्राय एक ही भक्त का विवरण है। कुछ छप्पय ऐसे भी हैं, जिनमे एक कोटि के बहुत से भक्तो का सामूहिक नामोल्लेख हुआ है, यथा ३२-३४, ४६-५८,६६,७८,८२,८५,६५-१०७,१०६, ११२-११४,११६-१२२. १३५,१३६,१३८,१४१-५१,१५३-५८ आदि ६१ छप्पय। मेरा विश्वास है कि भक्तो का सामूहिक रूप से उल्लेख करने वाले ये छप्पय भी नाभादास के हैं। भक्तो की माला मे एक भक्त एक मनका के समान होना चाहिये। बहुत से भक्तो को एक मनका बना देना ठीक नही प्रतीत होता। नारायणदास ने भक्तमाल को माला का रूप दिया था, नाभादास ने उसे परिवर्द्धित अवश्य किया, पर उसका माला का रूप जाता रहा। नाभादास के अष्टयाम से भी इनकी नारायणदास से भिन्नता सिद्ध होती है। नाभा ने इस ग्रथ मे नारायणदास को अपने से भिन्न व्यक्ति के रूप मे स्मरण किया है '—

सहचर श्री गुरुदेव के नाम नरायनदास
जगत प्रचुर सिय सहचरी विहरत सकल विलास ४
भवसागर दुस्तर महा मोहि मगन लखि पाइ
सदय हृदय जिनको सरस सब यह भई रजाय ५

—खोज रिपोर्ट १६२०।१११

स्पष्ट है कि नारायणदास और नाभादास दोनो ही अग्रदास के शिष्य थे, नारायणदास वय मे नाभा से पर्याप्त बडे थे, संभवत अग्रदास के वय के थे, इसी से इन्हे उनका सहचर कहा गया है।

नाभादास को अग्रदास और कील्हदास ने अकाल की दशा मे किसी वन मे पाया था। उस समय इनकी अवस्था ५ ही वर्ष की थी। कुछ लोग इन्हें क्षत्रिय कहते हैं, कुछ हनुमानवशीय डोम। मेरा ऐसा ख्याल है कि इनमे से एक जाति नारायणदास की है, दूसरी नाभादास की। जिस तरह इनके नाम मिल गये, उसी तरह इनकी जाति भी। नाभादास संभवत डोम थे। डोम से अभिप्राय शूद्र

(१) भक्तमाल सटीक, भक्तिसुधा स्वाद तिलक, पृष्ठ ६५१

बँसफोड डोमडे से नही है। यह भाट, चारण, कत्थक के समान गायको की एक उत्तम जाति है, जैसा कि इस कहावत से प्रकट है—

"नाच न जाने डोमनी, गावे ताल बेताल।"

भक्तमाल के अंश-कृतित्व के अतिरिक्त नाभा की दो रचनाएँ और है। इन दोनो का नाम अष्टयाम है। एक गद्य मे है, दूसरा पद्य मे। शुक्ल जी ने दोनो का उल्लेख किया है।[1] पद्यबद्ध अष्टयाम की एक प्रति खोज में मिली है।[2] इसमे अनेक बार कवि का नाम आया है—

१—ललित अंग सुख आभहि नाभहि देहु
पीतम लाल पियरवा यह जसु लेहु
२—श्री अग्र अगर सागर सुमन, नाभा अलि रस लीन्ह
अष्टजाम सिय राम गुन, जलधि कीन्ह मन मीन
३—नाभा श्री गुरु दास, सहचर अग्र कृपाल को
विहरत सकल विलास, जगत विदित सिय सहचरी

गुरु के रूप मे अग्रदास का भी उल्लेख अनेक बार हुआ है :—

१—श्री अग्रदेव करुणा करी, सिय पद नेह बढ़ाय
२—श्री अग्रदेव गुरु कृपा ते बाढ़ी नवरस बेलि

खोज मे एक और पद्यबद्ध अष्टयाम नाभा के नाम पर चढा[3] है। केवल पुष्पिका मे नाभा का नाम आया है। ग्रंथ अग्रअली के नाम से वर्णित अष्टयाम[4] से मिलता है, ऊपर वर्णित नाभा के अष्टयाम से नही। यही ग्रथ अन्यत्र रामचरित्र[5] के नाम से नारायणदास का कहा गया है। सभवतः दोहा चौपाई वाला यह अष्टयाम या रामचरित्र अग्रअली या अग्रदास का है। तीनो प्रतियो का अंतिम अश एक ही है। प्रारम्भिक अश मे अन्तर अवश्य है। बिना सम्पूर्ण ग्रन्थ को देखे निश्चयपूर्वक कुछ नही कहा जा सकता है। नाभादास अग्रदास द्वारा राम भक्ति मे चलाये गये सखी-सम्प्रदाय के वैष्णव थे।

अग्र सुमति को वस उदारा
अली भाव रति जुगल विहारा—खोज रिपोर्ट १९२३।२८९ ए

४०३।३२७

(१६) नरवाहन जी, कवि, भौगाव निवासी, स० १६०० मे उ०। यह कवि स्वामी हित हरिवश जी के शिष्य थे। इनके पद बहुत विचित्र है, इनकी कथा भक्तमाल मे है।

---

(१) हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ १४८ (२) खोज रिपोर्ट १९२३। २८९ ए (३) खोज रिपोर्ट १९२०।१११ (४) खोज रिपोर्ट १९०६।२ (५) खोज रिपोर्ट १९२३।२८९ सी

सर्वेक्षण

भक्तमाल छप्पय १०५ मे २२ भक्तो की नामावली के अन्तर्गत नरवाहन का भी नाम है। प्रियादास ने नरवाहन की कथा एक कवित्त मे दी है '—

रहै भव गाव नाव नरवाहन साधु सेवी,
लूटि लई नाव जाकी बंदी खाने दियौ है।
लौंडी आवै दैन कछु खायवें कौं, आई दया,
अति-अकुलाई, लै उपाय यह कियौ है।
बोलो राधा वल्लभ औ लेओ हरिवश-नाम,
पूछै सिष्य नाम कहौ, पूछी, नाम लियौ है।
दई मॅगवाय वस्तु राखि या दुराय बात,
आप दास भयौ कहीं रीझि पद दियो है॥

नरवाहन छाप के केवल दो पद मिलते हैं। ये दोनो पद हितचौरासी के ११, १२ सख्यक पद है। यह आश्चर्य की बात है कि नरवाहन के पद हित हरिवश के ग्रथ मे मिलें और वे हरिवश जी के ही समझे जायें। इन पदो के सम्बन्ध मे नागरीदास ने अपने गद्य ग्रन्थ पद प्रसगमाला में एक कथा दी है। यह कथा प्रियादास के ऊपर उद्धृत कवित्त को कथा से बहुत कुछ मिलती-जुलती है। नागरीदास के अनुसार नरवाहन जमीदार थे। यह राहजनी भी किया करते थे। एक वार इन्होने एक व्यक्ति को लूटा और उसे कैद कर लिया। वह व्यक्ति हित हरिवश के पदो का प्रतिदिन पाठ किया करता था। विना पाठ पूरा किए अन्न नही ग्रहण करता था। नरवाहन को जब यह ज्ञात हुआ कि वह वदी हरिवश जी का शिष्य है, तब उन्होने उसे तत्काल छोड ही नही दिया उसका सारा धन लौटा देने के साथ-साथ अपनी ओर से भी बहुत कुछ दिया, क्योकि यह भी हरिवश जी के शिष्य थे और वह वदी इनका गुरुभाई था। जब नरवाहन की इस गुरु भक्ति का पता हरिवश जी को चला, तो उन्होने प्रसन्न होकर अपने दो पदो मे इनके नाम की छाप देकर हित चौरासी मे सम्मिलित कर लिया। इस प्रसग से सिद्ध होता है कि नरवाहन हरिवश के शिष्य थे, इनके नाम पर हित चौरासी मे मिलने वाले दोनो पद वस्तुत. हरिवश जी के हैं, इनके नही।[१]

नरवाहन का निवास स्थान भौगाव नही, भैंगाव है। भैंगाव मथुरा जिले मे यमुना के इसी पार स्थित है। इनके वनाए दो ग्रन्थ है—१—दान वेलि, २—पदावली।[२]

हितहरिवश का समय स० १५५९-१६०९ है। अत. सरोज मे दिया हुआ नरवाहन का स० १६०० उपस्थितिकाल ही है। सम्प्रदाय के मान्यता के अनुसार यह स० १५७० मे उत्पन्न हुए थे।[३]

---

(१) नागरी प्रचारिणी पत्रिका, हीरक जयंती अक मे प्रकाशित 'नरवाहन और हित चौरासी' शीर्षक मेरा लेख। (२) राधावल्लभ सम्प्रदाय और साहित्य, पृष्ठ १०९, ५९७ (३) साहित्य, वर्ष ८, अक २—'राजा नरवाहन' शिर्षक लेख।

४०४।३६६

(१७) नरसिया कवि अर्थात् नरसी, जूनागढ निवासी, स० १५६० मे उ०। इनके पद रागसागरोद्भव मे है।

सर्वेक्षण

महा स्मारत लोग, भक्ति लौलेस न जानैं।
माला मुद्रा देखि तासु की निंदा ठानैं॥
ऐसे कुल उत्पन्न भयौ, भागौत सिरोमनि।
ऊसर तें सर कियो खंड दोषहिं खोयो जिनि॥
बहुत ठौर परचौ दियो रस रीति भक्ति हिरदे धरी।
जगत विदित नरसी भगत, जिन गुज्जर धर पावन करी॥

—भक्तमाल, छंद १०८

भक्तमाल के इस छप्पय से स्पष्ट है कि नरसी गुजरात की धरा को पवित्र करने वाले थे। प्रियादास ने २७ कवित्तो मे इनके चमत्कार पूर्ण जीवन का विवरण दिया है। प्रथम कवित्त के प्रथम शब्द से ही इनका जूनागढ वासी होना प्रकट होता है :—

जूनागढ़ वास, पिता माता तन बास भयो।
रहें एक भाई औ भौजाई रिस भरी है॥ ४२१

रूपकला जी के अनुसार नरसी मेहता का जन्मकाल स० १६०० और मृत्यु काल १६५३ है।[१] विनोद (१३६) मे इनका रचनाकाल स० १६३० ठीक ही दिया गया है। विनोद मे इन्हे स्फुट पद और सामलदास का विवाह का कर्ता माना गया है। ग्रियर्सन २८ मे नरसी के स्थान पर नरमी और नरसिया के स्थान पर नरमिया पाठ है। सरोज के तृतीय सस्करण मे भी यही पाठ है, यही पाठ द्वितीय सस्करण मे भी रहा होगा, और ग्रियर्सन ने मक्षिका स्थाने मक्षिका रख दिया।

४०५।३६६

(१८) नवखान कवि, बुन्देलखण्डी, स० १७६२ मे उ०। इनके कवित्त सुन्दर हैं।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही। यह रीतिकालीन कोई अत्यन्त साधारण कवि है। सरोज मे उद्धृत इनका एक मात्र प्राप्त कवित्त सरोज मे ही उद्धृत अकबर के दूसरे सवैये की पूर्ण छाया मात्र है।

४०६।३२६

(१६) नारायण भट्ट गोसाई, गोकुलस्थ, ऊँचगाँव बरसाने के समीप के निवासी, स० १६२० मे उ०। इनके पद रागसागरोद्भव मे हैं। यह महाराज बडे भक्त थे। वृन्दावन मथुरा, गोकुल इत्यादि मे जो तीर्थस्थान लुप्त हो गए थे, उन सब को प्रकट कर रासलीला की जड इन्होने प्रथम डाली है।

---

(१) भक्तमाल, पृष्ठ ६७४

सर्वेक्षण

नारायण भट्ट के दो ग्रन्थ खोज मे मिले हैं :—

१ गोवर्द्धन लीला—१६४४।१६२ क

२. स्वामिनी जी का व्याह—१६४४।१६२ ख

भक्तमाल के सहारे सरोज वर्णित इनका सब विवरण सत्य सिद्ध हो जाता है।

गोप्य स्थल मथुरा मंडल जिते बाराह बखाने।
ते किए नारायण प्रगट प्रसिद्ध पृथ्वी में जाने॥
भक्ति सुधा कौ सिंधु सदा सतसंग समाजन।
परम रसज्ञ अनन्य कृष्ण लीला को भाजन॥
ज्ञान समारत पच्छ को, नाहिन कोउ खंडन वियौ।
ब्रज भूमि उपासक भट्ट सो, रचि पचि हरि एकै कियो॥ ८७

बाराह पुराण वर्णित ब्रज के सभी तीर्थों की खोज आपने की थी। प्रियादास ने भी एक कवित्त मे इनका विवरण दिया है —

भट्ट श्री नारायन जु भए ब्रज परायन,
जायं याही ग्राम तहा व्रत करि आए हैं॥
बोलि कै सुनावै इहां अमुकौ सरूप है जू,
लीला कुंड धाय स्याम प्रगट दिखाए हैं॥
ठौर ठौर रास के विलास लै प्रकास किए,
जिए यौ रसिकजन कोटि सुख पाए है॥
मथुरा ते कही, चलौ बेनी, पूछै बेनी कहा,
ऊंचे गाव आप खोदि सोत लै लखाए है॥ ३५६

ऊचे गाँव का उल्लेख यहाँ अवश्य हुआ है, पर यह नही कहा गया है कि यह नारायण भट्ट का निवास स्थान था। नारायण भट्ट का उल्लेख एक और छप्पय मे भी हुआ है —

श्री नारायण भट्ट प्रभु परम प्रीति रस वस किए
ब्रज वल्लभ वल्लभ परम दुर्लभ सुख नैननि दिए ८८

इन वल्लभ के लिए वर्तमानकाल और अब का प्रयोग किया गया है :—

"अब लीला ललितादि बलित दंपतिहि रिझावत"

इससे स्पष्ट है कि यह वल्लभ भक्तमाल के रचनाकाल स० १६४६ मे विद्यमान थे। ऐसी स्थिति मे यह प्रसिद्ध महाप्रभु वल्लभाचार्य (मृत्यु स० १५८७) नही है। स० १६२० इन नारायण भट्ट का जन्मकाल नही हो सकता, यह उनका उपस्थितिकाल है। यदि इसे जन्मकाल माना जायगा, तो स० १६४६ मे इनकी वय केवल २६ वर्ष की होगी और यह वय प्रसिद्ध साधु महात्मा बनने के लिए अत्यन्त कम है।

नारायण भट्ट का जन्मकाल सवत् १५८८ माना जाता है और तिरोधान सवत् १७०० के कुछ

पहले अनुमान किया जाता है। इनकी तिरोधानतिथि वामन द्वादशी है। यह दक्षिणात्य ब्राह्मण थे। इन्होने ब्रज भक्तिविलास, ब्रज प्रदीपिका, ब्रजोत्सव चन्द्रिका, ब्रज महोदधि, ब्रजोत्सवाह्लादिनी, बृहत् ब्रजगुणोत्सव, ब्रज प्रकाश, ये सात ग्रन्थ राधाकुण्ड मे रहकर लिखे थे, फिर ऊँचे गाँव मे रहकर ५२ ग्रथ लिखे। भक्ति भूषण सदर्भ, भक्ति विवेक, भक्ति रस तरगिणी, साधन रसिकाह्लादिनी (भागवत की टीका) दीपिका, प्रभाकुर नाटक आदि भी आपके ग्रन्थ है। नीमरावा (अलवर) मे इनके वशज और इनके सेवक ठाकुर श्री लाडिले जी विराजमान हैं।[1] रास लीला के प्रवंतक हितहरिवश जी हैं।[2]

४०७।३२१

(२०) नारायण राय, वदीजन, वनारसी, कवि सरदार के शिष्य २, विद्यमान है। इन्होंने भाषाभूषण का तिलक कवित्तो मे और कवि प्रिया का टीकावार्तिक वनाया है। शृङ्गार रस के वहुतेरे कवित्त इनके हमारे पास हैं। ग्रन्थ कोई नहीं हैं।

सर्वेक्षण

नारायण राय प्रसिद्ध कवि सरदार वनारसी के शिष्य थे। यह सरदार के अनेक साहित्यिक कार्यों मे उनके सहयोगी भी रहे हैं। रसिकप्रिया की टीका मे सरदार ने यह स्वय स्वीकार किया है।

कहुँ कहुँ नारायण कियो याको तिलक अनूप
चित्त वृत्ति दै करि कृपा मुदित भए सव भूप २०

रसिक प्रिया की टीका स० १६०३ मे प्रस्तुत की गई :—

शिवदृग[3] गगनो[0] ग्रह[9] सु पुनि रदगनेस[1] को साल
जेठ शुक्ल दसमी सु गुरु करो ग्रंथ सुख माल १७

उस समय तक नारायण जी पर्याप्त प्रौढ वुद्धि वाले हो गए रहे होगे, तभी तो रसिक प्रिया जैसे प्रौढ ग्रथ की टीका मे उनका भी कुछ हाथ रहा। सरदार ने स० १६०५ मे शृङ्गार सग्रह प्रस्तुत किया। इसमे भी नारायण के वहुत से छद हैं। इस समय तक यह प्रौढ कवि भी हो गए थे। इससे सहज ही अनुमान किया जा सकता है कि यह स० १८७५ के आस-पास किसी समय उत्पन्न हुए रहे होगे। यह भारतेन्दु युग मे भी जीवित रहे होगे। इनके गुरु सरदार की मृत्यु भारतेन्दु की मृत्यु के दो साल पहले स० १६४० मे हुई थी।

नारायण राय ने स० १६२५ में उद्धवव्रजगमन चरित्र नामक ग्रथ धरगधर के राजा राममल्ल सिंह के लिए वनाया था। यह काशी के सोनारपुरा महल्ले के रहने वाले थे। इनके पिता का नाम भवानी दीन था। यह जाति के भाट थे।[3]

---

(१) सर्वेश्वर, वर्ष ५, अक १-५, चैत्र २०१३, पृष्ठ २६१-६२ (२) राधा वल्लभ संप्रदाय, सिद्धान्त और साहित्य, पृष्ठ २७७-६० (३) खोज रि० १६०६, पृष्ठ ४६८

विनोद मे इस एक कवि का विवरण १५२४,२१५२, २४५७ संख्याओ पर तीन-तीन बार हुआ है। इस घपले की भी कोई हद है।

४०८।३६४

(२१) नारायणदास कवि ३, स० १६१५ मे उ०। इन्होने हितोपदेश राजनीति को भाषा मे छदोवद्ध रचा है।

सर्वेक्षण

हितोपदेश की ११ प्रतियाँ खोज मे मिली है। इनसे यह ज्ञात होता है कि ग्रन्यकर्ता का नाम नारायण था।[१] सबसे पुरानी प्रति[२] की पुष्पिका मे इसे भट्ट नारायण-कृत कहा गया है। भट्ट नारायण नाम के आधार पर ऊँच गाव वाले ४०६ सख्यक नारायण भट्ट से इनका अभेद स्थापित किया जा सकता है। सरोज मे दिए दोनो के समय मे केवल ५ वर्षों का अतर है।

राजनीति की दो प्रतियाँ खोज मे मिली हैं।[३] यह चाणक्य का भाषानुवाद है। इसके अनुवादक भी यही नारायण प्रतीत होते है। अनुवाद और विषय की दृष्टि से यह अनुमान असगत नही प्रतीत होता। इस नाम के और भी अनेक कवि मिले हैं।

४०९।३६७

(२२) नारायणदास वैष्णव ४। इन्होने छदसार पिंगल बनाया है, जिसमे ५२ छदो का वर्णन है। ग्रन्थ मे सन्-सवत् नही लिखे है।

सर्वेक्षण

छदसार पिंगल[४] खोज मे मिल चुका है। इसी ग्रन्थ की प्रतियाँ पिंगल छद[५] और पिंगल मात्रा[६] नाम से भी मिली है। ग्रंथ स० १८२९ मे चित्रकूट मे बना। इसमे कुल ५२ छदो का वर्णन है।

सबत अष्टादस जु सत, अरु उनतीस मिलाइ
भादौं चौदसि वार गुरु, कृष्ण पच्छ सुखदाइ
—१९०६।७८ ए, छद १०४, १९१७।१२३ ए छन्द ५०

द्वादस अरु चालीस ए, छंद जु किए प्रकास
चित्रकूट महँ ग्रथ यह, कियो नरायनदास
—१९०६।७८ सी, छन्द ८७, १९१७।१२३ बी, छन्द ४९

ग्रन्थ का नाम छन्दसार है—

---

(१) खोज रि० १९०४।६०,१९०६।८६,१९२०।११५ ए, बी, १९२३।२९७ ए, बी, सी, डी, १९२६।३२२ ए, बी, सी (२) खोज रि० १९२६।३२२ ए (३) खोज रि० १९२६।३२१ ए, बी (४) खोज रि० १९०६।७८ ए, १९१७।१२३ ए, बी (५) खोज रि० १९२६।३२३ (६) खोज रि० १९०६।७८ सी

श्री गुरु हरि पद कमल को, वंदि मनोज्ञ प्रकास
छंद सार यह ग्रथ सुभ, करत नरायनदास १

इनमे ५२ छन्दो का वर्णन है—

पिंगल छद अनेक हैं, कहे भुजंगम ईस
तिनते लिए निकारि मैं, द्वादस अरु चालीस २

ये दोनो दोहे सरोज मे भी हैं। ग्रन्थ पिंगल का तो है ही, साथ ही हरि भक्ति का भी है।

बुधि को विलास, हरि नाम को प्रकास जामें
नारायनदास कियो ग्रन्थ छंदसार है

—१६०६।७८ ए, छन्द १०१, १६१७।१२३ बी, छन्द ४८

खोज मे इनका एक ग्रन्थ 'भाषाभूषण की टीका' और मिला है। गन्थ की पुष्पिका से स्पष्ट है कि ग्रन्थ इन्ही का है :—

"इति भाषा भूषन श्री राजा जसवन्त सिंघ कृत तस्य टीका वैस्नव नारायनदास"

—खोज रि० १६०६।७८ बी

इस टीका का नाम 'रहस्य प्रकाशिका' है। यह राम सिंह महाराज के लिए लिखी गई—

राम सिंह महराज जहँ नव रस विविध विलास
टीका रहसि प्रकासिका, कियो नरायनदास

—खोज रि० १६२०।६१६

यह टीका स० १८२८ मे लिखी गई :—

अष्टादस संवत जु सत, वरष आठ अरु बीस
गए मास तिथि पूर्णिमा, वासर सुमन दिनीस

रचनाकाल भी सूचित करता है कि यह छन्दसार के रचयिता की ही रचना है। ग्रन्थ के प्रारम्भ मे भी इसे 'वैष्णो नारायन कृत' कहा गया है।

४१०।३३३

(२३) निधान कवि १, प्राचीन, स० १७०८ मे उ०। इनकी कविता सरस है। हजारे मे इनका नाम है।

सर्वेक्षण

इन निधान का एक ग्रन्थ 'जसवन्त विलास' खोज मे मिला है।[१] यह अलङ्कार और नायिका भेद का सम्मिलित ग्रथ है। इसकी रचना स० १६७४ मे चैत्र शुक्ल १३, सोमवार को हुई।

सवत दिग[४] दिपु[७] सै जहाँ, पोडस[१६] आदि प्रमान
चैत सुकुल तेरस ससी, बरनो सुकवि निधान

प्रतिलिपिकार ने जसवन्त सिंह को महाराज कुमार कहा है, अत: स्पष्ट है यह कही के राजा नही थे।

---

(१) खोज रि० १६१२।१२३

'इति श्री मन्महाराजकुमार जसवन्त सिंह हेतवे सुकवि निधान विरचिताया जसवन्त विलासे अलकारदर्पणो नाम सप्त दसमो प्रभाव'' । ग्रन्थ ७२ पन्ने का है और अच्छा है ।

सरोज मे दिया हुआ स० १७०८ कवि का अन्तिम जीवनकाल हो सकता है ।

४११।३३४

(२४) निधान २, ब्राह्मण, स० १८०८ मे उ० । यह राजा अली अकबर खाँ बहादुर मोहम्मदी वाले के यहाँ महान् कवि थे। इन्होने शालिहोत्र भाषा मे बहुत ही अच्छी कविता की है ।

सर्वेक्षण

शालिहोत्र की कई प्रतियां खोज मे मिली है ।[1] ग्रन्थ की रचना स० १८१२ मे वैशाख सुदी ५, बुधवार को हुई —

सवत वसु[८] दस सै जहाँ उत्तर जानी भानु[१२]
शालिहोत्र भाषा रची नूतन सुकवि निधान २
शुक्ल पक्ष तिथि पचमी सहित सुभग बुधवार
माधव मास पुनीत अति भयौ ग्रथ अवतार ३

निधान, अली अकबर खाँ मोहम्मदी, सीतापुर के यहाँ थे । शालिहोत्र की रचना उन्ही के आदेश से हुई —

सैयद सवल समत्थ मति मडल बुद्धि निधान
अक्बर अली सभा भली विधा विदित विधान ४
एक दिना नृप कविन सौं दीयो यह फुरमाय
शालिहोत्र है संस्कृत भाषा देहु वनाय ५

ठीक इसी के आगे अकबर की वशावली वाला छप्पय है, जो सरोज मे भी उद्धृत है पर दोनो मे पाठान्तर बहुत है । सरोज का पाठ अधिक अच्छा है —

सदर जहाँ जग जानि सुजस सम वली खस मथ्यो
वली सव जाँ खान दान करि भावर थथ्यो
फेरि सैद महमूद सिंचिन वारि दारि करि
मुकुन्द रिम धाव पत्र की है सवाल धरि
खरम सैद साखा सघन वदुल्लाह खान सुमन हुव
दैत सक्ल मनकामना अली अक्बर फल प्रक्ट तुव

खोज मे निधान दीक्षित का एक ग्रन्थ 'वसतराज' मिला है ।[२] इसकी रचना स० १८३३ मे हुई —

अष्टादस सत तीस औ, तीन सु सवत जान
भादव कृष्णा त्रयोदसी, मंगल मगल खान

---

(१) खोज रि० १९१२।१२४, १९२३।२०४ ए वी, १९२६।३३४, १९४७।१९३ (२) खोज रि० १९१७।१२७

यह ग्रन्थ गङ्गा तट स्थित अनूपशहर, जिला बुलदशहर के राजा धर्म सिंह की आज्ञा से बना '—

धर्म सिंह भूपाल जहं, सुरसरि सहर अनूप
पूरन क्यौ निधान तह, ग्रथ सगुन गुन रूप

इस ग्रन्थ मे कवि ने राज वश और कवि वश का भी वर्णन किया है। धर्म सिंह के पूर्वज अनीराय थे, जो तत्कालीन दिल्ली सुलतान की सेवा मे रहते थे। इनके पुत्र सूरत सिंह, सूरत सिंह के छत्र सिंह, छत्र सिंह के अचल सिंह, अचल सिंह के तारा सिंह और तारा सिंह के धर्म सिंह हुए। निधान अपने बडे भाई घासीराम के साथ पहले तारा सिंह के तदनन्तर धर्म सिंह के दरबार मे रहे। निधान के पिता का नाम नदराम, पितामह का धरमदास और प्रपितामह का जगन्नाथ था। इनके गुरु का नाम सुखानन्द था।

शालिहोत्र और वसत राज दोनो के निघान एक ही प्रतीत होते है। विनोद मे दोनो का अभेद स्वीकृत भी है। प्रतीत होता है कि यह पहले अली अकबर खाँ के यहाँ थे, फिर धर्म सिंह के यहाँ चले आये।

४१२।३२२

(२५) निवाज कवि १, जुलाहा, विलग्रामी, स० १८०४ मे उ०। इनके शृगार के अच्छे कवित्त है।

सर्वेक्षण

जुलाहा निवाज विलग्रामी का अस्तित्व मान्य होना चाहिए। शृङ्गारी सवैये इन्ही के हैं। खोज इनके सम्बन्ध मे मौन है।

४१३।३२०

(२६) निवाज कवि २, ब्राह्मण, अतरवेद वाले, स० १७३६ मे उ०। यह कवि महाराजा छत्रसाल बुन्देला पन्ना नरेश के यहाँ थे। आजमशाह की आज्ञा के अनुसार शकुन्तला नाटक की सस्कृत से भाषा की। एक दोहे से लोगो को शक है कि निवाज कवि मुसलमान थे, पर हमने बहुत जाचा तो एक निवाज मुसलमान और एक निवाज हिन्दू पाए गए।

तुम्हे न ऐसी चाहिए, छत्रसाल महराज
जह भगवत गीता पढी, तह कवि पढे निवाज

सर्वेक्षण

खोज मे इनके दो ग्रथ मिले हैं :—

१. छत्रसाल विरुदावली—१९१७।१२६ बी। इस ग्रथ के प्राप्त हो जाने से यह सिद्ध हो जाता है कि निवाज कवि छत्रसाल के दरबार मे अवश्य थे। ग्रथ के आदि और अत दोनो स्थलो पर निवाज को ग्रन्थकर्ता कहा गया है। इस ग्रन्थ से एक अश उद्धृत किया जा रहा है, जिसमे कवि और आश्रयदाता दोनो का नाम आ गया है।

यह कवि निवाज मजलिस बनी, जय दुदुभि धुक्कार किय
छत्रसाल नायक बली, विजय दुलहिया ब्याह लिय

यह छत्रसाल पचम के वशज, बुन्देल, और चम्पति राय के पुत्र थे। इन सब का भी उल्लेख यथास्थान छदो मे हुआ है। इसलिए सदेह के लिए रच भी अवकाश नही रह जाता।

१ यह बरनिए विरुदावली पंचम छता छितिपाल की
२ छितिपाल चपति नद पूरन चद सो जग जगमगै
३. जगमगत जबू दीप में बुन्देल वश प्रदीप है

ग्रन्थ मे रचनाकाल नही दिया गया है। छत्रसाल का शासनकाल स० १७२२-८८ है। इसी बीच किसी समय यह ग्रन्थ रचा गया होगा।

२ शकुन्तला नाटक—१६०३।७५, १६१७।१२६ ए, १६२०।१२०, १६२३।३०३। यह ग्रन्थ आजम खान की आज्ञा से बना। कवि ने आजम खान का पूरा परिचय दिया है।

नवल फिदाई खान के नदन मुसवी खान
कर कसेर की है फते मो हक आजम खान २
वखत बिलंद महाबली आजम खान अमीर
दाता ज्ञाता सूरिमा साचौ सुदर धीर ३
देखि सूम साहिब सकल जस जग तै उठि आइ
हिम्मत आजम खान के, हिअ मे रहो समाइ ४
कलप वृच्छ सब सरन ज्यों करि पायो असमान
त्यों पायो सब गुनन मिलि भू मैं आजम खान ५
आजम खान नवाब कौ भावत सुकवि समाज
तातैं अति ही करि कृपा बोल्यो सुकवि निवाजि ६
आजम खान निवाज की दीनों इहि फुरमाइ
सकुन्तला नाटक हमे भाषा देव बनाइ ७ —खोज रि० १६१७।१२६ए

फिदाई खान के पुत्र मुसवी खान मुसले खान थे।[१] इनके शौर्य और साहस से फर्रुखसियर को फतह मिली थी। अत. इन्हे आजम खान उपाधि मिली। फर्रुखसियर का शासनकाल स० १७७०-७६ है। अत मुसवी खान या मुसलेखान स० १७७० मे आजम खान हुए रहे होगे और इसी के आस-पास शकुन्तला नाटक की रचना हुई रही होगी। आचार्य शुक्ल ने इस ग्रन्थ का रचनाकाल स० १७३७ दिया है।[२] यह ठीक नही, क्योकि उस समय तक तो आजम खान का अस्तित्व भी नही था, मुसवी खान का रहा हो तो रहा हो।

नेवाज और उनके आश्रयदाता मुसवी खान के सम्बन्ध मे दी हुई उपर की सामग्री हिन्दी के

---

(१) खोज रि० १६२०।१२०, १६२३।३०३ (२) हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ २६३

किसी इतिहास ग्रन्थ मे नही मिलती । पर आश्चर्य है कि तासी ने इनके सम्बन्ध मे ठीक यही विवरण दिया है । उसने मुसवी खान का नाम मौला खाँ दिया है । तासी का कहना है कि फोर्ट विलियम कालेज के लिए नेवाज के इसी शकु तला नाटक के आधार पर काजिम अली जवाँ ने उर्दू मे शकु तला नाटक ग्रन्थ प्रस्तुत किया था । जवाँ ने उक्त ग्रन्थ की भूमिका मे लिखा है कि नेवाज ने ११२८ हिजरी मे उक्त ग्रन्थ की रचना की थी । तासी ने इसे ईस्वी सन् १७१६ कहा है[१], जो विक्रम सवत १७७३ के बराबर हुआ । अत. नेवाज ने शकुतला नाटक की रचना स० १७७३ वि० मे की । शुक्ल जी ने किस आधार पर स० १७३७ दिया है, उन्होने कोई उल्लेख नही किया है । मेरा ऐसा खयाल है कि यह स० १७७३ ही अक व्यत्यय से १७३७ हो गया है है । यह व्यत्यय चाहे स्वय शुक्ल जी द्वारा हुआ हो, चाहे जहाँ से उन्होने यह सवत् स्वीकार किया वही हो गया रहा हो या यह प्रेस वालो से भी हो गया हो, ऐसी भी आशका है ।

शकुन्तला नाटक की प्राप्त ४ प्रतियो मे से किसी मे भी रचनाकाल नही दिया गया है। ऐसी स्थिति मे सरोज मे दिया हुआ स० १७३९ कवि का जन्मकाल हो सकता है । शकुन्तला नाटक यद्यपि अको मे विभक्त है, पर यह नाटक नही है । यह प्रबध काव्य है । अक सर्ग के स्थानीय है। यह ग्रन्थ महाकवि कालिदास के सुप्रसिद्ध नाटक अभिज्ञान शाकुन्तलम् के आधार पर है, इसलिए इसे नाटक की सज्ञा दे दी गई है । ग्रन्थ की पुष्पिका से ज्ञात होता है कि यह तिवारी थे —

"इति निवाज तिवारी विरचिताया सुधा तरन्या शकुन्तला नाटक"—खोज रि० १९१७।१२६ए

शुक्ल जी ने इनके आश्रयदाता को औरगजेब का पुत्र आजम शाह समझ लिया है ।[२] पर यह ठीक नही, जैसा कि ऊपर दिखाया गया है । उर्दू के इतिहासकारो ने निवाज तिवारी को मुन्शी निवाज और शाह निवाज समझ लिया है ।[३]

सरोज मे इनके नाम पर जो छद उदाहृत है, उसमे छत्रसाल की प्रशस्ति है । यही छद रस कुसुमाकर मे भूषण के नाम पर दिया गया है । यह भूषण की रचना के रूप मे ही प्रसिद्ध भी है। छद के प्रारम्भिक शब्द ये है .—

"दाढी के रखयन की दाढी सी रहत छाती"

४१४।३२६

(२७) निवाज ब्राह्मण ३, बुन्देलखण्डी, स० १८०१ मे उ० । यह कवि भगवत राय खीची गाजीपुर वाले के यहाँ थे ।

सर्वेक्षण

एक निवाज का अखरावती नामक ग्रन्थ खोज मे मिला है ।[४] इसका रचनाकाल स० १८२० है ।

---

(१) हिंदुई साहित्य का इतिहास, पृष्ठ १२०-२१ (२) हिंदी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ २६२ (३) हस, मई १९३६, पृष्ठ ५३, ५८ (४) खोज रि० १९०९।२१७

कहि नाम संवत से अठारह तिस सहत गुन गए
आषाढ सुदि तिस सविका ग्रन्थ सपूरन भए
रितु वार मंगल कारि पच्छ नछत्र उदार है
अस्थान सप्त प्रमान वरनौं नाम पुर रविवार है

यह गौडीय सम्प्रदाय के वैष्णव थे, जैसा कि इनके चैतन्य स्मरण से सूचित होता है —

चैतन्य मन में आनि करि धरि ध्यान परम उदारहीं
जस पवन गति ठहराय अविचल ध्यान गति अस मानहीं

कवि भक्त है और अपने को नेवाजदास कहता है —

जाकी कृपा लवलेस दास नेवाज सब पहिचानेऊ
अवगाह अगम अपार भव जल धार पार बखानेऊ

यह वेदात ज्ञान सम्बन्धी ग्रन्थ है। विविध छदो मे लिखा गया है। एक-एक छद वर्णानुक्रम से प्रारम्भ होता है—

कर जोरि सतगुरु चरन वर्दी ज्ञान जो सत पायऊ
आखर ककहरा छंद सोरठ दोहरा करि गायऊ

इन नेवाजदास का एक ग्रन्थ 'ग्रन्थ लीला' और मिला है।[१] अखरावती रिपोर्ट मे बुन्देलखण्डी नेवाज ब्राह्मण की रचना माना गया है। समय की दृष्टि से यह बात ठीक लगती है पर विषय और प्रवृत्ति की दृष्टि से यह भिन्न कवि प्रतीत होते हैं। हाँ, यदि कवि ने अपने अंतिम जीवनकाल मे गौडीय सम्प्रदाय मे दीक्षा ले ली हो, तो बात दूसरी है। मेरी यह धारणा है कि सरोज के दूसरे और तीसरे निवाज एक ही हैं। जो निवाज छत्रसाल के यहाँ थे, वही असोथर के भगवतराव खीची के यहाँ भी थे। पहले निवाज इनसे भिन्न हैं और मुसलमान हैं। दोनो कवि समसामयिक है।

४१५।३४८

(२८) नरोत्तम दास ब्राह्मण (१) वाडी जिले सीतापुर के, स० १६०२ मे उ०। इन्होने सुदामा-चरित्र बनाया है मानो प्रेम समुद्र बहाया है।

सर्वेक्षण

सुदामा चरित्र की बहुत-सी प्रतियाँ खोज मे मिल चुकी है। यह अत्यन्त जनप्रिय ग्रन्थ है और इसके अनेक सुन्दर सस्करण निकल चुके हैं। एक विशेष सूत्र के सहारे विनोद मे (७२) नरोत्तमदास के एक अन्य ग्रन्थ ध्रुव चरित्र का नामोल्लेख हुआ है और सुदामा चरित्र का रचना काल स० १५८२ दिया गया है। महेश दत्त ने भी सुदामा चरित्र का रचनाकाल यही दिया है, पर उन्होने ध्रुव चरित्र का कोई उल्लेख नहीं किया है। ग्रियर्सन ने (३३) इनका जन्मकाल स० १६१० माना है पर कवित्त और सवैया के प्रचलन पर ध्यान देते हुये सरोज मे दिया हुआ स० १६०२ रचनाकाल नहीं प्रतीत होता, उत्पत्ति काल प्रतीत होता है। इस कवि के काल निर्णय मे मेरा ग्रियर्सन से मतैक्य है।

४१६।३४३

(२९) नरोत्तम (२) बुन्देलखण्डी स० १८५६ मे उ०। इन्होने सरस कविता की है।

---

(१) खोज रि० १९४७।१९९

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही।

४१७।३६२

(३०) नरोत्तम (३) अन्तर्वेद वाले, स० १८९६ मे उ०। ऐजन। इन्होने सरस कविता की है।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे भी कोई सूचना सुलभ नही। मेरा अनुमान है कि ४१६,४१७ सख्यक दोनो नरोत्तम एक ही है। दोनो के समय मे केवल चालीस वर्ष का अन्तर है। स० १८५६ कवि का प्रारम्भिक कविताकाल और १८९६ अतिम कविताकाल है तथा १८२३-१९०० उसका जीवन काल हो सकता हे। अन्तर्वेद और बुन्देलखण्ड मे भी केवल यमुना का अन्तर है जिसे आसानी से पार किया जा सकता है। सरोज मे इन कवियो के एक-एक शृगार छद उद्धृत है। इनके भी कारण इन दोनो कवियो की अभिन्नता मे कोई बाधा नही आती।

४१८।३६३

(३१) नीलकठ मिश्र, अन्तर्वेद वासी, स० १६४८ मे उ०। दास जी ने इनकी प्रशसा व्रजभाषा जानने की की है।

सर्वेक्षण

दास जी के कवित्त का वह चरण जिसमे नीलकठ का नाम आया है, यह है—

लीलाधर सेनापति निपट नेवाज निधि
नीलकठ मिश्र सुखदेव देव मानिये

सरोज मे यह पक्ति अशुद्ध ढग से यो उद्धृत है—

नील कठ नील्लाधर निपट नेवाज निधि
नीलकंठ मिश्र सुखदेव देव मानिये

इस अशुद्ध पाठ के कारण दो नीलकठ हो गये। सरोजकार ने पहले नीलकठ को तो नीलकठ त्रिपाठी उपनाम जटाशकर, भूपण का भाई, मान लिया। दूसरे नीलकठ की समस्या उन्होने मिश्र सुखदेव के मिश्र को वहा से हटाकर नीलकठ के आगे जोडकर एक नये नीलकठ मिश्र की कल्पना द्वारा हल की। स्पष्ट है कि सरोजकार ने भ्रम से इस कवि की सृष्टि कर दी है।

४१९।३५०

(३२) नीलकठ त्रिपाठी, टिकमापुर वाले, मतिराम के भाई, स० १७३० मे उ०। इनका कोई ग्रन्थ हमने नही देखा।

सर्वेक्षण

विनोद मे (२९६) नीलकठ के एक ग्रन्थ अमरेसविलास का रचना काल स० १६९८ दिया

गया है। इस ग्रन्थ की एक प्रति खोज मे मिली है।[1] यह अमरुक शतक के १०८ श्लोको का पद्यानुवाद है। प्राप्त प्रति मे रचनाकाल सूचक यह छद दिया गया है, जिससे विनोद मे दिया स० १६६८ सत्य सिद्ध होता है—

वरस से सोरह ठानवे, सातैं सावन मास
नीलकंठ कवि उच्चरित श्री अमरेस विलास

इस ग्रन्थ के छन्दो मे 'कठ' भी छाप है।

नीलकठ जी का नायिका भेद का एक खड-ग्रन्थ और भी मिला है। इसमे भी 'कठ' और 'नीलकठ' दोनो छाप है।[2] सरोज मे दिया हुआ सं० १७३० स्पष्ट ही कवि का उपस्थितिकाल है।

४२०।४३०

(३३) नीलसखी, जैतपुरा, बुन्देलखण्डी, स० १६०२ मे उ०। इनके पद रसीले हैं।

सर्वेक्षण

सरोज मे नीलसखी का एक पद उद्धृत है—जय जय विसद व्यास की वानी। इससे सूचित होता है कि यह हरीराम व्यास के प्रशंसको मे थे। नीलसखी का जन्म स० १८०० वि० के आसपास ओरछा मे हुआ था। इनका रचनाकाल स० १८४० है। यह चैतन्य महाप्रभु के गौड सम्प्रदाय के वैष्णव थे। यह अपने अन्तिम दिनो मे वृन्दावन मे रहने लगे थे। इनकी वानी मे एक सौ दस सरस पद हैं।[3] सरोज मे दिया हुआ स० १६०२ अधिक से अधिक कवि का अन्तिम काल हो सकता है, यद्यपि इस समय तक जीवित रहने की सम्भावना बहुत कम है, फिर यह जन्म-काल कैसे हो सकता है, जैसा कि ग्रियर्सन (५४८) और विनोद (२२६०) मे स्वीकृत है।

४२१।३६८

(३४) नरिन्द कवि (१) प्राचीन, स० १८८८ मे उ०।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही है।

४२२।३६१

(३५) नरिन्द (२), महाराजा नरेन्द्र सिंह पटियाला के, स० १६१४ मे उ०। इनकी कविता सरस है। इनका नाम हमको केवल सुन्दरी तिलक से मालूम हुआ है।

---

(१) खोज रिपोर्ट १६०३।१ (२) खोज रिपोर्ट १६४७।१६४ (३) बुन्देल वैभव, भाग २, पृष्ठ ४६१

सर्वेक्षण

नरेन्द्र सिंह पटियाला नरेश थे। इनकी मृत्यु स० १६१६ मे हुई।[1] इनके दरबार मे अनेक कवि थे। इन्होने रामनाथ, अमृतराय, चद, कुवेर, निहाल, हंसराज, मगलराम, उमादास और देवीदिता राम से महाभारत का अनुवाद कराया था। इन कवियो के अतिरित, इनके दरबार मे चन्द्रशेखर वाजपेई, ऋतुराज, दल सिंह (दास), ईश्वर और वीर कवि भी थे। चन्द्रशेखर वाजपेई ने इन्ही नरेन्द्र सिंह की आज्ञा से हम्मीर हठ की रचना की थी।[2] नरेन्द्र सिंह जी के कुछ शृगार सवैये सुन्दरी तिलक मे हैं।

४२३।३३६

(३६) नन्दन कवि, स० १६२५ मे उ०। यह महाराज सत्कवि हो गये हैं। हजारे मे इनका नाम है।

सर्वेक्षण

हजारे में नन्दन जी की कविता है, अत. स० १७५० के पूर्व इनका अस्तित्व सिद्ध है। उदाहृत कवित्त की प्रौटता देखते हुये इनका रचनाकाल स० १६५० के पूर्व नही प्रतीत होता। ऐसी स्थिति मे सरोज मे दिया हुआ सवत् १६२५ इनका जन्मकाल माना जा सकता है, जैसा कि ग्रियर्सन (८६) और विनोद (१६५) मे माना गया है।

४२४।३३७

(३७) नन्द कवि। इनका कवित्त सुन्दर है।

सर्वेक्षण

इस कवि का नाम सूरत ने लिया है। नद नाम के चार कवि मिलते हैं उनमे से किसी के भी साथ इनका तादात्म्य स्थापित करना असम्भव है .—

१ केसरी सिंह—उपनाम नद, सगारथ लीला के रचयिता।[3]

२ नद व्यास—स० १७६६ के पूर्व वर्तमान। इनका ग्रथ है मान लीला और यज्ञ लीला।[4]

३ नद या नदलाल जैन—आगरा निवासी गोयल गोत्रीय अग्रवाल, पिता का नाम भैरव, माता का चन्दन और गुरु का त्रिभुवन कीर्ति। यह जहाँगीर के समकालीन थे और स० १६६३-१६७० के लगभग, वर्तमान थे। इनके लिखे ग्रन्थ सुदर्शन चरित्र और यशोधर चरित्र हैं।[5]

---

(१) ग्रियर्सन ६६० (२) अप्रकाशित सक्षिप्त विवरण (३) विनोद १५२३।१ और खोज रिपोर्ट १९०२।३७ (४) खोज रिपोर्ट १९०६।३०० ए, बी (५) खोज रिपोर्ट १९४७।१७८ क, ख, ग

४ नद या नद दास बुन्देलखण्डी, जन्म स० १७२० के लगभग, श्री लालबावा दाराशिकोह की गोष्ठ के रचयिता ।[1]

४२५।३२८

(३८) नद लाल, कवि (१), स० १६११ मे उ० । ऐजन । इनके कवित्त सुन्दर है । हजारे मे इनके कवित्त हैं ।

सर्वेक्षण

नदलाल की रचना हजारे मे थी, अत. यह स० १७५० के पूर्व अवश्य उपस्थित थे । इनके छद की प्रौढता को देखते हुए इनका रचनाकाल स० १६५० के पहले का नही हो सकता और सरोज मे दिया हुआ सवत् १६११ इनका जन्मकाल ही प्रतीत होता है, जैसा कि ग्रियर्सन (८०) और विनोद (१६८) मे माना गया है ।

४२६।३३८

(३६) नद लाल (२), स० १७७४ मे उ० । इनकी कविता सरस है ।

सर्वेक्षण

खोज मे कम से कम निम्नलिखित ६ नदलाल मिले है । कुछ कहा नही जा सकता कि सरोज के अभीष्ट नद लाल इनमे से कोई है भी या नही ।

१ नद लाल, पीताम्बरदत्त के पिता । छिन्दवाडा (मध्यप्रदेश) के निवासी स० १७०२ के पूर्व वर्तमान ।[2]

२. नद लाल, मलीहावाद निवासी । स० १८४४ के लगभग वर्तमान, राग प्रवोध के रचयिता ।[3]

३ नद लाल शाहावाद के निवासी, पिता का नाम मतिराम, सं० १८७२ के लगभग वर्तमान, जैमुनि पुराण (अश्वमेध) के रचयिता ।[4]

४. नद लाल, हावडा जंक, स०, १८८८ के लगभग वर्तमान, मूलाचार के रचयिता ।[5]

५ नद लाल, स० १६२१ के पूर्व वर्तमान, वारह मासा राधा कृष्ण के रचयिता ।[6]

६. नद लाल, पनघट की रगत लगडी के रचयिता ।[7]

---

(१) बुन्देल वैभव, भाग २ पृष्ठ ३६५ (२) खोज रि० १६१२।१२८ (३) खोज रि० १६२६।३१६ (४) खोज रि० १६२६।२४५ ए बी सी (५) खोज रि० १६१७।१२१ (६) खोज रि० १६२३।२६६ (७) खोज रि० १६२६।३१२

४२७।३३६

(४०) नदराम कवि । इनके शान्ति रस के चोखे कवित्त है ।

सर्वेक्षण

खोज मे निम्नलिखित नन्दराम मिले है :—

१ नदराम—खण्डेलवाल वैश्य, अमरावती निवासी, बलिराम के पुत्र, सं० १७४४ मे इन्होंने कलियुग वर्णन सम्बन्धी 'नदराम पचीसी' नामक ग्रन्थ लिखा। सभवतः यही सरोज के अभीष्ट नंदराम हैं। इन्होने अपने सम्बन्ध मे यह लिखा है—

नन्दराम खन्डेलवाल है 'बावति को वासी
सुत बलिराम गोत है रावत मत है कसन उपासी
संवत सत्रह से चौगोला कातिकचन्द्र प्रकाशा
नंदराम कछु दुनिया माही देख्या अजब तमाशा
—खोज रिपोर्ट १६००।१२६

२. नदराम—कान्यकुब्ज ब्राह्मण, निधान दीक्षित और घासीराम के पिता। स० १८३३ के पूर्व उपस्थित।[1]

३ नदराम—योगसार वचनिका, यशोधर चरित्र, त्रैलोक्यसार पूजा-ग्रन्थो के रचयिता। रचनाकाल स० १६०४।[2]

४ नदराम—लखनऊ के निकट सालेहनगर के रहने वाले कनौजिया ब्राह्मण, जन्म स० १८६४ के आस-पास और मृत्यु स० १६४४ के आस-पास हुई। स० १६२६ मे 'शृङ्गार दर्पण' नामक ग्रन्थ दोहा, सवैया, घनाक्षरी आदि छदो मे लिखा। यह ग्रन्थ भारत जीवन प्रेस, काशी से प्रकाशित हो चुका है।[3]

५ नदराम—यह मेवाड के महाराज जगत सिंह दूसरे के आश्रित थे। इन्होने स० १७६० ज ग विलास[4] और स० १८०२ मे शिकार भाव,[5] नामक ग्रन्थ लिखे।

६ नदराम—यह बीकानेर नरेश अनूप सिंह के यहाँ थे। इन्होने अलसभेदिनीनामक[6] नायिका-नायक भेद और अलकार का ग्रन्थ लिखा।

---

(१) खोज रि० १६१७।१२७ (२) विनोद, कवि संख्या २००४।१ (३) विनोद, कवि संख्या २१८६ (४) राज रि० भाग १, ग्रन्थ संख्या ४१ (५) राज० रि० भाग १, ग्रन्थ संख्या १५६ (६) राज० रि० भाग २ कवि संख्या ४८, पृष्ठ १५२

४२८।३७०

(४१) नददास, ब्राह्मण रामपुर, निवासी, विट्ठलनाथ जी के शिष्य, सं० १५८५ मे उ० । इनकी गणना अष्टछाप अर्थात् व्रजभूमि के आठ महान् कवि—सूर, कृष्णदास, परमानद, कु भनदास, चतुर्भु ज, छीत, नददास और गोविंददास मे की गई है । इनकी वावत यह मसल मशहूर है कि 'और सब पढिया नददास अडिया' । इनके बनाए हुए ग्रन्थो के नाम है—नाम माला, अनेकार्थ पचाध्यायी, रुक्मणी मगल, दशम स्कध, दान लीला, नाम लीला । इन ग्रन्थो के सिवा इनके हजार पद भी है । इन आठो महाकवीश्वरों के रचे अनेक ग्रन्थ आज तक व्रज मे मिलते है ।

सर्वेक्षण

लीला पद रस रीति ग्रन्थ रचना मे नागर
सरस उक्ति जुत जुक्ति भक्ति रस गान उजागर
प्रचुर पयध लौ सुजस, रामपुर ग्राम निवासी
सकल सुकुलसवलित भक्त पद रेनु उपासी
चंद्रहास अग्रज सुहृदुपरम प्रेम पै मैं पगे
श्री नंददास आनंद निधि रसिक सु प्रभु हित रंगपगे

—भक्तमाल, छप्पय ११०

सरोज मे दिया हुआ नददास का विवरण भक्तमाल के इस छप्पय के मेल मे है, अत प्रामाणिक है । नददास अष्टछापी कवियो मे वय के अनुसार सबसे छोटे हैं । कवित्व की दृष्टि से इनका नाम सूर के अनतर आता है । इनका जन्म स० १५९० के लगभग सोरो, जिला एटा के पास रामपुर गाँव मे सनाढ्य ब्राह्मण जीवाराम के घर हुआ । भक्तमाल के अनुसार यह चद्रहास के अग्रज एव सोरो सामग्री के अनुसार गो० तुलसीदास के चचेरे भाई थे ।

यह एक रूपवती खत्रानी पर आसक्त हो गए थे । उसका पीछा करते हुए गोकुल पहुँचे । वहाँ स० १६०७ के आस-पास विट्ठलनाथ जी ने इन्हे वल्लभ-सम्प्रदाय मे दीक्षित किया । सूरदास का सत्सग लाभ इन्हे हुआ । कुछ दिनो के अनतर यह अपने घर चले गए, वहाँ विवाह किया और गृहस्थ-जीवन विताया । स० १६२४ के लगभग पुन. विरक्त भाव से गोवर्द्धन चले गए । स० १६४० के लगभग गोवर्द्धन ही मे मानसी गगा के किनारे एक पीपल तरु के नीचे परम धाम लाभ किया ।[१]

नददास-ग्रन्थावली के दो सुन्दर सँस्करण प्रकाशित हो चुके हैं । एक तो प्रयाग विश्वविद्यालय की हिन्दी परिषद् द्वारा और दूसरा सभा द्वारा । ग्रथावली मे निम्नलिखित ग्रथ सकलित है :—

(१) अनेकार्थ मजरी या अनेकार्थ नाममाला या अनेकार्थ माला, (२) मान मजरी या नाम मजरी या नाममाला या नामचिन्तामणिमाला, (३) रस मजरी (४) रूप मजरी, (५) विरह मंजरी, (६) प्रेम बारह खडी, (७) स्याम सगाई, (८) सुदामा चरित, (९) रुक्मिणी मगल, (१०) भंवर गीत, (११) रास पचाध्यायी, (१२) सिद्धात पचाध्यायी, (१३) दशम स्कध भाषा, (१४) गोवर्द्धन लीला, (१५) पदावली ।

---

(१) अष्टछाप परिचय, पृष्ठ २०१-१२

सरोज मे दिया स० १५८५ इनके जन्मकाल के निकट है। यह इनका रचनाकाल नही है। इनके केवल ढाई-सौ पद मिलते है, जो उक्त ग्रन्थावलियो मे संकलित हैं। अभी तक इनके हजार के लगभग पद देखने मे नही आए।

४२६।३५४

(४२) नन्द किशोर कवि। इन्होने राम-कृष्ण गुणमाला नाम का ग्रन्थ बनाया है।

सर्वेक्षण

इस नाम के ४ और कवि मिलते है। किसी से इनका तादात्म्य स्थापित करना कठिन है।

१ नन्दकिशोर—इन्होने स० १७५८ मे पिंगल प्रकाश की रचना की।[१]

२. नन्दकिशोर बाजपेयी—सातनपुरवा वाले अयोध्या प्रसाद बाजपेयी औध के पिता। सं० १८६० के पूर्व वर्तमान।[२]

३ नन्दकिशोर—लखनऊ निवासी, सं० १९०५ के लगभग वर्तमान। सत्यनारायण कथा के रचयिता।[३]

४ नन्दकिशोर—श्रीमद्भागवत् के एक अश रास पचाध्यायी की ब्रजभाषा गद्य मे टीका करने वाले।[४]

४३०।३४०

(४३) नाथ कवि १। नाथ कवि के नाम से मालूम नही हो सकता कि कितने नाथ हुए। उदयनाथ, काशीनाथ, शिवनाथ, शम्भुनाथ, हरिनाथ, इत्यादि कई नाथ हो गए है। जहाँ तक हमको मालूम हुआ, हमने हर एक नाथ की कविता अलग-अलग लिख दी है।

सर्वेक्षण

इन नाथ के सम्बन्ध मे कुछ नही कहा जा सकता। स्वयं सरोजकार ने कुछ नही कहा है। इनके नाम पर सरोज मे उद्धृत कवित्त दिग्विजय भूषण से लिया गया है।

किसी नाथ के नाम से पावस पच्चीसी[५] और रगभूमि[६] नामक ग्रन्थ मिले हैं। रगभूमि मे सीता स्वयवर की कथा है। कहा नही जा सकता कि ये किस नाथ के ग्रन्थ है।

---

(१) विनोद ६१५।१ (२) खोज रि० १९२३।४४ (३) खोज रि० १९२६।२१७ (४) विहार रि०, भाग २, ग्रन्थ १०९ (५) खोज रि० १९४१।१२६ (६) खोज रि० १९२६।२२५

४३१।३४१

(४४) नाथ २, स० १७३० मे उ० । यह कवि नवावफजल अली खा के यहाँ थे ।

सर्वेक्षण

सरोज मे इनका एक कवित्त उदाहृत है, जिसमे फजल अलो की प्रशस्ति है । ग्रियर्सन (१६२) और विनोद (६१०) मे इन फजल अली को फाजिल अली समझ लिया गया है, जो ठीक नही । फाजिल अली औरङ्गजेब के मन्त्री थे । नाथ को भगवन्तराय खीची और इनके दरवार से सम्बन्धित कहा गया है । पर मूल ही नही, तो शाखा कहाँ ?

४३२।३४२

(४५) नाथ कवि ३, स० १८०३ मे उ० । यह मानिक चन्द के यहाँ थे ।

सर्वेक्षण

सरोज मे इन नाथ के दो कवित्त उद्धृत हैं, जिसमे मानिक चन्द की प्रशस्ति है । जब तक इन मानिक चन्द की पहचान न हो जाय, इस कवि के सम्बन्ध मे कुछ नही कहा जा सकता । ग्रियर्सन (४४०) मे मानिक चन्द के पुत्र का सम्भावित नाम इच्छन दिया गया है ।

४३३।३४३

(४६) नाथ ४, स० १८११ मे उ० । यह राजा भगवन्त राय खीचा के यहाँ थे ।

सर्वेक्षण

यह नाथ ४ और ८३६ सख्यक शम्भुनाथ मिश्र एक ही हैं । स० १८११ उपस्थितिकाल है ।

४३४।३४४

(४७) नाथ ५, हरिनाथ गुजराती, काशी वासी, स० १८२६ मे उ० । अलकार दर्पण नामक ग्रन्थ इन्होने वहुत अद्‌भुत वनाया है ।

सर्वेक्षण

आगे देखिये, हरिनाथ सख्या ९९८।

४३५।३४५

(४८) नाथ ६ । इनकी कविता सुन्दर है ।

सर्वेक्षण

इस नाथ के भी सम्वन्ध मे कुछ विशेष नही कहा जा सकता । सरोज मे इनका दुर्गा स्तुति सम्वन्धी एक सवैया उद्धृत है ।

४३६।३४६

(४६) नाथ कवि ७, ब्रजवासी, गोपाल भट्ट, ऊंचगाँव वाले के पुत्र, स० १६४१ मे उ०। इनका काव्य रागसागरोद्भव मे षट्ऋतु इत्यादि पर सुन्दर है।

सर्वेक्षण

नाथ भट्ट का विवरण भक्तमाल के इस छप्पय के आधार पर किया गया है और ठीक है—

आगम निगम पुरान सार शास्त्रनि जु विचार्‌यो
ज्यों पारो दै पुटहि सबनि को सार उधार्‌यो
श्री रूप सनातन जीव भट्ट नारायन भाख्यो
सो सर्बस उर साचि जतन करि नीके राख्यो
फनी वंश गोपाल सुव, रागा अनुपा को अयन
रस रास उपासक भक्तराज, नाथ भट्ट निर्मल बयन १९६

रूपकला जी ने इनको ऊँचगाव का रहने वाला कहा है।[१] नाथ भट्ट चैतन्य महाप्रभु के पट्ट शिष्य श्री गोपाल भट्ट के शिष्य थे। इनका पूरा नाम गोपीनाथदास था। इनके छोटे भाई दामोदर दास जी के वशज गोस्वामी लोग अब तक श्रीराधारमण जी के मन्दिर के सेवक हैं।[२]

विनोद मे १३७ मे इनका जन्मकाल स० १६०५ और रचनाकाल स० १६३० दिया गया है, पर सरोज मे दिया गया स० १६४१ इनका उपस्थितकाल है। खोज मे भागवत पचीसी नामक ग्रन्थ मिला है।[३] इसमे २५ कवियो मे भागवत महिमा वर्णित है। यह सम्भवत इन्ही नाथ ब्रजवासी की रचना है।

४३७।३५१

(५०) नवल किशोर कवि।

सर्वेक्षण

केवल नाम और एक शृङ्गारी कवित्त के सहारे कवि की पकड सम्भव नही। खोज मे इस नाम के दो व्यक्ति अभी तक मिले हैं :—

१ नवल किशोर उपनाम आनन्द किशोर—इन्होने सगीत का एक ग्रन्थ लिखा है। इसमे रागो का उदाहरण और दुर्गा तथा शिव की स्तुति साथ-साथ है।[४]

२ नवल किशोर—प्रेम जजीर के रचयिता गो० नन्दकुमार के पिता। यह वृन्दावनी थे, इनका समय १६ वीं शताब्दी का मध्य है।

---

(१) भक्तमाल सटीक भक्ति सुधास्वाद तिलक, पृष्ठ ८४६ (२) साहित्य ७ वर्ष ६ अक ४, जनवरी १६५८, पृष्ठ ६४ (३) खोज रि० १६०६।२०६ (४) पजाब रि० १६२२६,।

४३८।३५२

(५१) नवल कवि, सूदन मे नाम है। अन ये १८१० के आस पास थे।

सर्वेक्षण

सरोज मे इनका एक शृङ्गारी कवित्त उद्धृत है जिसमे इनकी छाप नील है। निश्चय ही नील इनका पूरा नाम नही हे। यह नाम का पूर्वार्द्ध है। कवि का नाम नवल दास, नवल किशोर, नवल राम, नवल कुमार जैसा ही कुछ रहा होगा। खोज मे कई नवल मिलते है। अपनी शृङ्गारी प्रवृति के कारण यह उन सबसे भिन्न है।

४३६।३५३

५२—नवल सिंह, कायस्थ, झासी के निवासी, राजा सथर के नौकर, स० १६०८ मे उ०। यह महान् कवि हैं और नाम रामायण, हरिनामावली, ये दो ग्रथ इन्होने अद्भुत बनाये है।

सर्वेक्षण

नवल सिंह, श्रीवास्तव कायस्थ थे, रामानुज सम्प्रदाय के वैष्णव थे। इनका उपनाम रामानुज शरण दास या श्री शरण था। यह झासी निवासी थे और समथर के राजा हिन्दूपति (शासन काल स० १८८४ १६४२) के यहाँ नौकरी करते थे। यह दतिया और टीकमगढ दरबारो मे भी रहे थे। यह कवि के अतिरिक्त चित्रकार भी थे। इनका भक्ति और ज्ञान की ओर विशेष झुकाव था। इन्होने भिन्न-भिन्न विषयो पर भिन्न-भिन्न शैलियो मे छोटे-छोटे अनेक ग्रन्थ लिखे है। शुक्ल जी ने अपने प्रसिद्ध इतिहास मे इनके २६ ग्रन्थो की सूची दी है।[१] इनके निम्नलिखित ग्रन्थो का विवरण खोज रिपोर्ट १६०६।७६ मे है।

१—रामायण कोश—इस ग्रन्थ मे पर्याय देने के साथ-साथ राम-कथा का कोई न कोई अश भी पद्यो मे आता गया है। इस ग्रन्थ का अन्य नाम नामरामायण भी है। इसमे कुल ७७७ दोहे है जो काण्डो मे विभक्त है। इसकी रचना स० १६०३ मे हुई।

राम[३] ख[०] निधि[९] ससि[१] साल मे, राम जन्म तिथि चीन
जन्म नाम रामायनहि जन्म समय मे लीन १०७

कवि ने अपना नाम, जाति और सप्रदाय निम्नाकित दोहे में दिया है—

नवल सिंह, कास्यथकुल, श्रीवास्तव सनाम
सम्प्रदाय श्री वैष्णवी दुतिय श्री शरण नाम १०८

इस ग्रन्थ की पुष्पिका भी काम की है। "इति श्री वैष्णवसम्प्रदायपरायन श्री सरन रामानुजवासामियेय प्रधान नवलसिंहेन श्री नामरामायने उतरकाण्ड समाप्त ॥७॥ एकत्र ७८७"

२—शका मोचन—सगुन सम्बन्धी पचीस कहानियाँ। कवि की छाप नव रस भी है—

---

(१) खोज रि० १६१८।१०४, प १६२२।४३, १६३८।१०५, १६०५।३८ (२) हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ ३८६

सनै नवलेस फैलो विसद मही मे जस
बरन न पावै पार भार फन पति से

इसकी रचना सं० १८७३ मे हुई—

संवत सहस्र सत अष्ट लेख
पुनि अधिक तिहत्तर तासु रेख
वैसाख मास तिथि तीज वेस
ससिवार चारु वृत्त पुष केस १०

३—रसिक रजनी—यह भानुदत कृत रसमजरी के आधार पर रचित नायिका-भेद का ग्रन्थ है :—

तरनि दत कृत मंजरी निज गुन गुफहु सोइ
रसिकन को रस जुक्त यह उर आभूषन होइ २

इसकी रचना सं० १८७७ मे हुई—

संवत ऋषि[७] ऋषि[७] अष्ट[८] ससि, हरि अष्टमी सुजान
बुध दिन इव प्रारभ किय, स्वय से सुखी मान ३

आत्मपरिचय सम्बन्धी निम्नाकित दोहा इस ग्रन्थ मे है—

श्रीवास्तव कायस्थ सुचि सुकुल कटेरावार
नवल सिंह नामाभिमत त्रपुरा अनुग उदार ४

४—निज्ञान भास्कर—इसमे चौपाई मे आध्यात्मिक ज्ञान और भक्ति का निरूपण है। भादो सुदी एकादशी, सं० १८७८ इसका रचना काल है।

वसु[८] ऋषि[७] वसु[८] ससि[१] सवत जाना
ताकर नन्दन नाम बखाना
वर्षा ऋतु वर भादव मासा
पच्छ पुनीत निसेस प्रकासा १४४
एकादसी तिथि रवि सुचवारु
दस घटिका चौबिस पल चारु
नखत उत्तरा षाढ सुहावा
घटिका तास एक पल ठाँवा १४५
सोभन जोत तब दिन दीसा
इक्तालीस घटी पल बीसा
त्रितिय चद्र सुखदायक तरन
तेहि दिन ग्रन्थ भयौ यह पूरन १४६

५—व्रज दीपिका—इसमे दोहा और कवित्त तथा अन्य विविध छन्दो मे व्रज का वर्णन है। आश्विन सुदी ५, सं० १८८३ मे यह ग्रथ रचित है—

सवत सिखि[३] वसु[८] सिद्ध[८] ससि[१] आश्विन सित तिथि बान[५]
किये प्रकाश व्रजदीपिका सुनि सुख लहहि सुजान २०५

६—शुक-रभा-सवाद—स० १८८८ मे यह विरचित हुआ।

नाग[८] सिद्धि[८] वसु[८] इन्दु[१] में माघ सक्ट मज चान
तिहि दिन रचि पूरन करो यह सुग्रन्थ मुद दान ६१

७—नाम चिन्तामणि—इस ग्रन्थ मे दोहो मे प्रत्यय और समास द्वारा नवीन शब्दो के निर्माण का सिद्धान्त वर्णित है। इसका रचनाकाल स० १६०३ है—

तीन[३] शून्य[०] नव[६] एक[१] में माधव सुदि कुजवार
तिथि नौमी दिन नाम भय चिन्ता मनि अवतार ५१

८—जौहरिन तरग—इसमे जौहरिन के रूप मे कृष्ण का राधा से भेंट करना वर्णित है। यह कवि के एक बडे ग्रन्थ 'सनेह सागर' का एक अश है। सनेह सागर सवत् १८७५ मे रचा गया था और उसमे ३०० छन्द है। सारी पुस्तक मे एक ही छन्द प्रयुक्त हुआ है।

दस वसु सत संवत तिहि ऊपर पचहत्तर परवानो
मास असाढ़ शुक्ल पख पाँच ससि सुतवार बखानो
छन्द तीन से बीन एक से रचो कथा रस भीनी
अभिजित समय जान तिहि वासर पुस्तक पूरन कीनी ३००

६—मूल भारत—स० १६१३ मे विरचित इस गय मे दोहा-चौपाइयो मे महाभारत की कथा है।

१०—भारत सामित्री—इसमे कवित्त छन्दो मे कौरव-पाण्डवो का मूल वर्णन है। ग्रन्थ स० १६१२ मे रचा गया।

दग[२] ससि[१] नव[९] महि[१] अब्द में माघ कृष्ण की तीज
रवि वासर मे वर्णियो यह भारत को बीज १३०

११—भारत कवितावली—कवित्तो मे महाभारत की कथा है। स० १६१३ मे इस ग्रथ की रचना हुई—

राम[३] चन्द्र[१] अक[९] त्यों मयक[१] अंक संवत को
मधु मधुमास शुक्ल पूनै बार मानवी

१२—भाषा सतसती—सस्कृत से भाषा मे यह पद्यानुवाद है। स० १६१७ मे इस ग्रथ को रचना हुई—

उनइस से सत्रा विदित संवतसर कौ अंक
ज्येष्ठ कृष्ण नवमी विदित सयुतवार मयक ३०

१३—कवि जीवन—स० १६१८ मे विरचित यह छन्द सम्बन्धी ग्रन्थ है।

अष्ट[८] ससि[१] अक[९] त्यों मयक[१] अंक वरसर को
माधव सुकुल त्रितिया सु रविवार कौ
पूरन भयो है मत अक्षय सु तुर्न करे
छन्द वर्ता सूरन को जोग अधिकार कौ

१४—महाभारत—स० १६२२ मे रचित इस ग्रथ मे कुल ५४६ छद हैं :—

उनइस से बाइस को भादों, सुदि आठै कुजवार
दिवस सत्तर वर्ष गाठ कौ, श्री व्रत आराधत किय वार

स० १६२२ मे कवि ७० वर्ष का हो गया था, अत. उसका जन्मकाल सं० १८५२ है।

१५—आल्हा रामायण—यह ग्रथ ५४६ आल्हा छदो मे स० १६२२ मे विरचित है—

उनइस सै बाइस के संवत् करि के हरि में प्रीति
आल्हा आल्हा कथा काढ़ि के बरनो आल्हा ही की रीति

१६—रुक्मिणी मगल—यह ३०७ रोला छदो मे स० १६२५ का लिखित है।

भादों सुदि आठैं दिवस सर५ दग२ नव९ भू१ ताल
श्री रुक्मिनि मगल चरित किय श्री शरन विसाल ७०

१७—मूल ढोला—यह स० १६२५ मे रचित है।

सबत् सवा उनैस सै सोभन आश्विन मास
वदि अष्टमि को श्री शरन रचि के क्यिो प्रकास २०१

१८—रहस लावनी—इसमे लावनी छन्दो मे रास पचाध्यायी की कथा है।

श्री वृन्दावन चद के चरन कमल उर ध्याय
कहा लावनी छन्द मे रास पंच अध्याय १

ग्रन्थ की रचना स० १६२६ मे हुई—

उनइस सै छब्बीस मे सुचि असाढ के मास
गुरु जुत कृष्ण सु अष्टमिहि किय श्री शरन प्रकाश

१६—अध्यात्म रामायण—चौपाई-छदो मे सस्कृत अध्यात्मरामायण का यह भाषानुवाद है।

२०—रूपक रामायण—इसमे हरिगीतिका छद मे राम की कथा हैं।

२१—नारी प्रकरण—सस्कृत ग्रन्थ हारीतसहिता के आधार पर नाडीज्ञान का यह ग्रंथ है—

'नारी प्रकरण कहत हौ हारीतक मत ल्याइ'

२२—सीता स्वयवर—कुल १३३३ छन्दो मे यह रचित है।

२३—रामविवाह खण्ड—दोहा-चौपाई मे यह रचित है।

२४—भारत वार्तिक—गद्य मे महाभारत की कथा है।

२५—रामायण सुमिरनी—१६ कवित्तो मे राम कथा है।

२६—विलास खण्ड—किसी सस्कृत ग्रन्थ के आधार पर चौपाई छदो मे राम-विवाह का वर्णन है।

२७—पूर्व शृङ्गार खण्ड—राम का विलास वर्णन।

२८—मिथिला खण्ड—इसमे सीता स्वयवर के समय का मिथिला का वर्णन है।

२६—दान लोभ सवाद।

३०—जन्म खण्ड।

नवल सिंह का रचनाकाल स० १८७३–१६२६ है। २२ वर्ष की अवस्था मे इन्होने काव्य-रचना आरम्भ की थी।

४४०।३६०

(५३) नवलदास, क्षत्रिय, गुडगाँव, जिला बाराबकी, स० १३१६ मे उ०। इन्होने 'ज्ञान सरोवर' नामक ग्रन्थ बनाया। यह नाम महेशदत्त ने अपनी पुस्तक मे लिखा है पर हमको सन्-सवत् ठाक होने मे सन्देह है।

सर्वेक्षण

नवलदास अनवार क्षत्रिय थे। यह जिला बाराबकी तहसील राम सनेही, ग्राम गूढ के रहने वाले थे। यह और सत्नामी सम्प्रदाय के प्रवर्तक जगजीवनदास के शिष्य थे, धनेसा ग्राम मे गोमती के किनारे कुटी बनाकर रहते थे। यहाँ इन्होने अजपा-जाप की साधना की थी और इन्हे कुछ सिद्धि भी मिली थी। यह स० १८१७-८५ के लगभग वर्तमान थे। सरोज मे इनके सम्बन्ध मे जो सूचनाये दी गयी है, सब महेशदत्त के भापा-काव्य सग्रह के आधार पर है।[1] सभवत. सरोजकार को इस ग्रन्थ का जो सस्करण प्राप्त था, उसमे १३१६ ही स० था। मेरी पुस्तक मे अपने ही गाँव मे इनके १६१३ मे मरने का उल्लेख है। स्पष्ट है कि प्रेस के भूतो की बदौलत १६१३ का १३१६ हो गया है। ग्रियर्सन (७६८) और विनोद (१४) मे इस कवि का उल्लेख है। किसी ने महेशदत्त के इस ग्रन्थ को उठाकर देखने का कष्ट नही किया। महेशदत्त ने इनका मृत्युकाल १६१३ दिया है। पहले तो यही अशुद्ध है, क्योकि कवि इसके बहुत पहले मर गया रहा होगा। प्राप्त पुस्तको से इसका रचनाकाल स० १८१७-३८ सिद्ध है। फिर इस १६१३ का १३१६ हो जाना कोढ मे खाज के सदृश है। नवलदास के बनाये हुए निम्नाकित ग्रन्थ खोज मे मिले है .—

१—(अ) भागवत दशम स्कध—१६०६।२१३, १६२७।२७८, १६२३।३०१ डी, १६४७।१८३ ज झ। आदि और अत मे ग्रन्थकर्ता का नाम साहेब नवलदास दिया गया है। मगलाचरण सस्कृत मे है, पर बिल्कुल निर्गुनियो का है—

अवतस निर्गुण्या भापा नाम रूप प्रभासितम्
आगारे अबर वाले आवरनं वरनं बिना[१]

(ब) भागवत पुराण भापा जन्मकाण्ड—१६०६।२१६। इसमे इन्होने अपने गुरु जग जीवन दास का उल्लेख किया है .—

सतगुरु साचै राम, तुम्ह स्वीकृत सद्रस प्रभु
हृदय करिय विश्राम, जगजीवन जग तारन

इस ग्रन्थ की रचना स० १८२३, क्वार सुदी १०, सोमवार को हुई—

सवत अठारह सै तहा, तेइस ऊपर जानि
तब गावत गुन श्याम के, दास नवल रुचि मानि
अस्विन मास विजै तिथि आई
अभि निकेत ससि वासर पाई
तब सत्गुरु प्रताप उर आवा
स्याम जन्म कीरति कछु गावा

यह कोई स्वतत्र ग्रन्थ नही है। ऊपर वर्णित भागवत दशम-स्कध का अश है।

२ कहरानामा—१६२६।२४६ बी, १६४४।१८४। ग्रथ मे कवि ने अपने को जगजीवनदास का चेला कहा है—

प्रभु साहेब जगजीवन स्वामो, भवन भवन विश्रामा रे
दास नवल तिनकर यक चेला, गावत कहरा नामा रे

---

(१) भापाकाव्य सग्रह, पृष्ठ १२८

रिपोर्ट के अनुसार इसका रचनाकाल स० १८१८ है। रचनाकाल सूचक छद नही उद्धृत है।

३ ज्ञान सरोवर—१९२३।३०१ ए, १९२६।३२७ ए, १९४७।१८३ ख, ग, घ, ड, च, छ। इस ग्रन्थ मे विविध धार्मिक कथाएँ है। ये पौराणिक परंपरा पर है, निर्गुन परपरा पर नही। इस ग्रन्थ की रचना स० १८१८ मे हुई।

> सम्वत अठारह सै अठारह, माघ पूरनमासिया
> सक्राति सुन्दर जानि कै, रवि मानि कथा प्रकासिया

कवि ने इस ग्रन्थ मे अपने तत्कालीन निवासस्थान की भी सूचना दी है।

> पश्चिम दिसि है अवध से, नवल रहे रटि नाम
> कोरान जोजन पाँच पर, ग्राम धनेसा नाम

४ माधवरत्न ज्ञान—१९२३।३०१ बी, १९४७।१८३ ज। इस ग्रन्थ की रचना स० १८३८ मे हुई—

> संवत अठारह सै अठतीसा
> कहियत नाइ भक्त पद सीसा
> माघ मास सुभ पूरनमासा
> कृपा समुझि हरि चरित प्रकासी

इस ग्रन्थ मे भी गुरु जगजीवनदास का नाम आया है।

> सतगुरु साचे राम, सत दिन कर भ्रम तमहरन
> हृदय करिय विसराम, जगजीवन जगतारनी

५ राम गीता—१९४७।१८३ ट।

६ शब्दावली—१९२६।२४९ ए, १९४७।१८३ ठ। रिपोर्ट के अनुसार इस ग्रन्थ की रचना स० १८१७ मे हुई। ग्रन्थ मे जगजीवन दास की आरती है।

> साहेब तुम जगजीवन स्वामी
> जीव जंतु सब अंतरजामी
> देवीदास और दूलनदासा
> इन्हके घर संपूरन वासा
> खेमदास श्री दास गोसाईं
> यह आए साहेब सरनाई
> दास नवल सुमिरे कर जोरे
> कब अइहो साहेब घर मोरे

७. सुख सागर—१९२३।३०१ सी, १९६२।३२७ बी, १९४७।१८३ ड, ढ, ण। इस ग्रन्थ की रचना स०१८१७ मे हुई।

> संवत अठारह सै सत्रह, यह मैं कहौं बखानि
> जेठ मास . . . . ।

८ स्तुति श्री बजरग जी—१९४७।१८३ क।

९ मगलगीत और शब्दावली—१९४७।१८४

४४१।

(५४) नीलाधर कवि, स० १७०५ मे उ० । इनकी दास जी ने प्रशसा की है ।

सर्वेक्षण

दास जी ने लीलाधर कवि का नाम लिया है, न कि नीलाधार का । अत तथाकथित नीलाधर कवि का अस्तित्व समाप्त हो जाता है ।[1]

४४२।

(५५) निधि कवि, स० १७५१ मे उ० । ऐजन । इनकी दास जी ने प्रशसा की है ।

सर्वेक्षण

ग्रियर्सन (१३१) मे निधि कवि को स० १६५७ मे समुपस्थित कहा गया है और कहा गया है कि इनका उल्लेख गोसाईचरित और रागकल्पद्रुम मे हुआ है ।

४४३।

(५६) निहाल, प्राचीन, स० १६३५ मे उ० ।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही ।

४४४।

(५७) नारायण, वदीजन, काकूपुर, जिले कानपुर, सं० १८०६ मे उ० । इन्होने राजा शिवराजपुर चन्देले की वशावली महा अपूर्व नाना छन्दो मे बनाई है ।

सर्वेक्षण

यह कवि दुहरा उठा है । इसका विस्तृत विवरण सख्या ६२५ (भूप नारायण, पर देखें ।

प

४४५।३७१

(१) परसाद कवि, स० १६०० मे उ० । यह कवि महाराना उदयपुर के यहां थे । इनकी कविता बहुत विख्यात है ।

सर्वेक्षण

परसाद कवि की श्रृङ्गारी रचनाएँ पुराने सग्रहो मे प्राय मिलती है । इस श्रृङ्गारी परसाद का पूरा नाम बेनीप्रसाद है । यह उदयपुर नरेश जगतसिंह दूसरे (शासनकाल, स० १७९१-१८०८)

---

(१) दास जी के कवित्त के प्रसंग-प्राप्त चरण के शुद्ध और अशुद्ध, दोनो पाठों के लिए देखिए—यही ग्रथ, कवि संख्या ४१८

के यहा थे। इन्होने 'शृङ्गार समुद्र' नामक नायिका भेद का ग्रन्थ उक्त जगतसिंह के लिए लिखा था। ग्रन्थ मे रचनाकाल सूचक यह दोहा है—

सत्रह सै पचवानें सावन सुदि दिन रुद्र
रसिकन के मुख देन को भो शृंगार समुद्र—खोज रि० १९१७।२१

इस दोहे के अनुसार ग्रन्थ का रचनाकाल स० १७५५, सावन सुदी ११ है। यह सवत् जगतसिंह के शासनकाल के पूर्व पडता है। हो सकता है कि अनवधानता के कारण प्रतिलिपिकार ने पचानवें के स्थान पर पचावनें लिख दिया हो। यदि ऐसा है तो ग्रथ का रचनाकाल स० १७९५ है। यदि ऐसा नही है, तो ग्रन्थ उस समय लिखा गया जब जगतसिंह युवराज ही थे। प्रथम सस्करण मे १६०० के स्थान पर १६८० है जो दोनो अशुद्ध हैं। प्राप्त प्रति के आदि और अत, दोनो स्थलो पर कवि का नाम बेनो प्रसाद दिया गया है। अत मे आश्रयदाता का भी उल्लेख है।

"इति श्री महाराजाधिराज जगतराजविनोदार्थ कवि वेनीप्रसाद कृत, शृङ्गार-समुद्र नामक वर्नन नाम द्वितीय प्रकास।"

खोज रिपोर्ट में जगतराज को छत्रसाल का पुत्र कहा गया है,[१] पर यह ठीक नही। जगतराज से अभिप्राय उदयपुर के जगतसिंह दूसरे से ही है। इन्ही के दरबार मे दलपतिराय वशीधर भी थे। सरोजकार परसाद को उदयपुर दरबार से सम्बन्धित मानते हैं। उनका यह अनुमान ठीक है। सरोज मे इनका जो कवित्त उद्धृत है, उसमे उदयपुर के राजाओ की इसलिए प्रशसा की गई है कि उन्होने मुसलमानो को अपनी बहिन-वेटी नही दी। यह कवित्त सरोज के कथन को पुष्ट करता है :—

बाढ़ी पातसाही ज्योंही सलिल प्रलै के बढे
बूडे राजा राव पै न कीन्हे तेग खर को
देन लगे नवल दुलहिया नौरोजन मे
नीठि तीठि पीछे मुख हेरे आनि घर को
वाही तरवारि बादसाहन सों कीन्ही रारि
भनै परसाद अवतार साची हर को
दुहूँ दीन जाना जस अकह कहाना ऐसे
ऊँचे रहे राना जैसे पात अछैबर को

४४६।३७२

पद्माकर भट्ट, बाँदा वाले, मोहन भट्ट के पुत्र, स० १८३८ मे उ०। यह कवि प्रथम आबा साहेब अर्थात् रघुनाथ राव पेशवा के यहाँ थे। जब पद्माकार जी ने यह कवित्त—'गिरि ते गरे ते निज गोद ते उतार ना' बनाया तो पेशवा ने एक लक्ष मुद्राएँ पद्माकर को इनाम मे दीं। फिर पद्माकरजी ने

(१) खोज रि० १९१७।२१

जयपुर मे जाकर सवाई जगत सिंह के नाम से जगद्विनोद नामक ग्रथ बनाया। बहुत रुपया, हाथी, घोडे, रथ, पालकी पाए और गगा सेवन मे शेष काल व्यतीत किया। गगालहरी नामक ग्रन्थ भी इनका है।

सर्वेक्षण

पद्माकर का जन्म स० १८१० मे सागर, मध्यप्रदेश मे हुआ था। यह तेलग ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम मोहनलाल भट्ट था। मोहनलाल भी सुकवि थे। पद्माकर का सम्बध निम्नलिखित राजाओ के दरबारो से था।

१ नागपुर के महाराज रघुनाथ राव, अप्पा साहब।

२ जयपुर-नरेश महाराज प्रताप सिंह एव जगतसिंह।

३ सगरा के नाने अर्जुन सिंह।

४ बाँदा के अनूप गिरि गोसाई, उपनाम हिम्मत बहादुर।

५ ग्वालियर-नरेश आलीजाह दौलत राव सिंधिया।

इन दरबारो से पद्माकर ने बडा यश और धन कमाया। अतिम दिनो मे यह कुष्ट रोग से पीडित होकर कानपुर आए, जहाँ गगा की कृपा से रोग मुक्त हो तो गए, पर छह महीने के बाद ही स० १८९० मे इन्हे गगा लाभ हो गया।

श्री प० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने पद्माकरग्रन्थावली स्वयं सम्पादित करके प्रकाशित करायी है जिसमे निम्नलिखित ग्रन्थ है —

१ हिम्मत बहादुर विरुदावली—इसमे हिम्मत बहादुर और अर्जुन सिंह के युद्ध का वर्णन है। यह युद्ध स० १८४९ बैशाख बदी १२, बुधवार को हुआ था।

२ पद्माभरण—यह दोहो मे अलकार ग्रन्थ है।

३ जगद्विनोद—जयपुरनरेश जगत सिंह के नाम पर नायिकाभेद का ग्रन्थ है। यह पद्माकर का श्रेष्ठतम ग्रन्थ है और कवित्त-सवैयो मे लिखा गया है।

४. प्रबोध पचासा—भक्ति और वैराग्य के ५० प्रौढ कवित्त।

५ गगालहरी—गगा महिमा सम्बधी ५० कवित्त।

इन ग्रन्थो के अतिरिक्त अत मे ३८ फुटकर छद खोज कर दिए गए है। उक्त ग्रन्थावली मे पद्माकर के निम्नलिखित ग्रन्थ नही सकलित हो सके है—

१ राम रसायन—बूँदी नरेश के कहने पर वाल्मीकि रामायण के कुछ काण्डो का अनुवाद। अनुवाद शिथिल है।

२ आलीजाह प्रकाश—ग्वालियर के दोलत राव सिंधिया के नाम पर नायिकाभेद का ग्रन्थ। इसमे और जगद्विनोद मे बहुत कम अतर है। इसकी रचना स० १८७८ मे हुई। एक मात्र इसी ग्रन्थ मे पद्माकर ने रचनाकाल दिया है।

निद्धि दुगुन करि जानि, उन पर अठहत्तर अधिक
विक्रम सो पहिचानि, सावन सुदि इंदु अष्टमी

३ हितोपदेश का गद्य-पद्यात्मक भाषानुवाद—उक्त दौलतराव के एक मुसाहब ऊदो जी के कथनानुसार रचित।

४, विरुदावली—जगत सिह की प्रशसा के कवित । १९०६।८२

५ ईश्वर पचीसी—१९०१।८५

सरोज मे दिया हुआ स० १८३८ कवि का उपस्थितिकाल है । पद्माकर का वशवृक्ष[1] निम्न है—

४४७।३७४
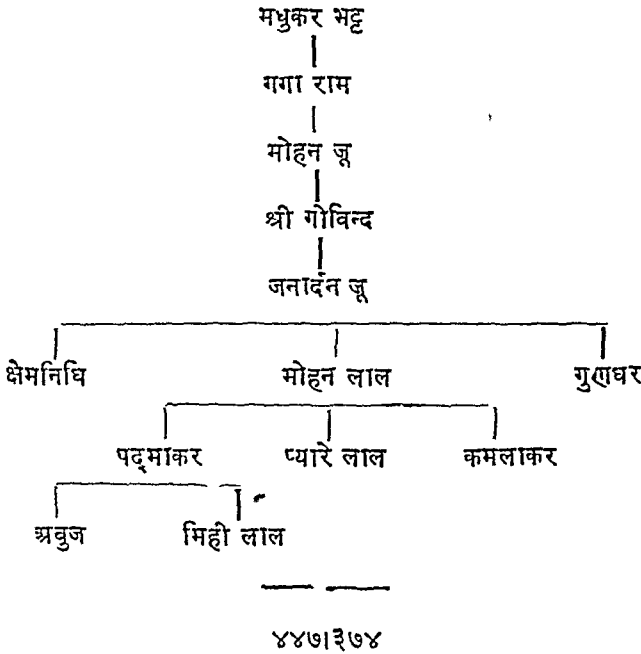
(३) पजनेस कवि, बुदेलखण्डी, स० १८७२ मे उ० । यह कवि पन्ना मे थे और इन्होने मधुप्रिया नामक ग्रन्थ भाषा-साहित्य का अद्भुत बनाया है । इस कवि की अनूठी उपमा, अनूठे पद तथा अनुप्रास और यमक प्रसशा के योग्य हैं । पर शृगार रस मे, टवर्ग, और कटु अक्षरो को जो अपनी कविता मे भर दिया है, इस कारण इनका काव्य कवि लोगो के तीररूपी जिह्वा का निशाना हो रहा है । इनका नखशिख देखने योग्य है । फारसी मे भी इन्होने श्रम किया था ।

सर्वेक्षण

मधुप्रिया की एक प्रति खोज मे मिली है, जो सटीक है[2] । प्राप्त प्रति मे केवल नखशिख सम्बधी ३१ कवित्त हे । प्रतीत होता है कि यह मधुप्रिया का एक अश-मात्र है । इस प्रति की पुष्पिका से ही यह सकेत मिलता है :—

"इति पजनेस कृत ग्रन्थ मधुप्रिया स्वामिनी जू को वर्णन मूल कवित्त टीका नखशिख समाप्तः"

---

(१) माधुरी, माघ १९९०, पृष्ठ ७९ (२) खोज रि० १९०५।९३

टीकाकार का नाम अज्ञात है। विनोद (१८०४) मे एव उसी के आधार पर शुक्ल जी के इतिहास मे इनके दो ग्रन्थो—मधुप्रिया और नखशिख का उल्लेख है। पर जैसा कि हम अभी देख चुके है, नखशिख कोई स्वतत्र ग्रन्थ न होकर मधुप्रिया का अग मात्र है। शुक्ल जी ने मधुप्रिया को मधुरप्रिया बना दिया है[1]।

महेशदत्त के भाषा-काव्यसग्रह के अनुसार 'प्रजनेस' महाकवि केशव के वश के थे।[2] भारत जीवन प्रेस, काशी ने पजनेस के ५६ कवित्त-सवैयो को पहले पजनेसपचासा नाम से फिर १२७ छदो को पजनेसप्रकाश नाम से प्रकाशित किया था। अन्य प्रमाणो के अभाव मे सरोज मे दिए स० १८७२ को कवि का जन्मकाल न समझकर उपस्थितिकाल ही समझना चाहिए।

४४८।३७३

(४) परतापसाहि, बदीजन, बुदेलखडी, रतनेश के पुत्र, स० १७६० मे उ०। यह कवि महाराज छत्रसाल परना पुरन्दर के यहाँ थे। इनका बनाया हुआ भाषा साहित्य का 'काव्य विलास' ग्रन्थ अद्वितीय है। भाषा भूषण और बलभद्र के नखशिख का तिलक, विक्रम साहि की आज्ञा के अनुसार इन्होने बनाया था। विज्ञार्थकौमुदी ग्रन्थ इनका बनाया हुआ बहुत ही सुन्दर है।

सर्वेक्षण

शिव सिंह ने प्रमाद से प्रताप साहि को छत्रसाल की सभा मे समुपस्थित मानकर इनका समय स० १७६० दिया है। न तो यह छत्रसाल की सभा मे थे, न इनका सरोज-दत्त सवत् ही ठीक है। यह चरखारी नरेश विजय विक्रमाजीत सिंह के दरबारी कवि थे। विक्रमाजीत का शासनकाल स० १८३९-८६ है। यही समय प्रतापसाहि का भी होना चाहिए। सरोज की भूल के कारण खोजियो ने दो प्रतापो की कल्पना कर ली, एक प्रताप वे जो छत्रसाल के दरबार मे थे, दूसरे वे प्रताप जो विक्रमाजीत के आश्रय मे थे। प्रतापसाहि बदीजन थे। रतनेस कवि के पुत्र थे, चरखारी नरेश विक्रमाजीत और रतन सिंह (शासनकाल स० १८८६-१९१७) के आश्रित थे। इनके निम्नाकित ग्रन्थ खोज मे मिले है :—

१ व्यगार्थ कौमुदी—१९०३।५२, १९०६।९१ जे, १९२०।१३२, १९२३।३२१ ए, बी, सी, डी। इस ग्रन्थ मे कुल १०३ छद हैं। इसमे ध्वनि काव्य मे नायिकाभेद कथित है। यह ग्रन्थ भारत जीवन प्रेस, काशी, से प्रकाशित हो चुका है। इस अत्यन्त प्रौढ और शृगारी ग्रथ की रचना स० १८८२ मे हुई।

संवत ससि[१] वसु[८] वसु[८] सु द्वै[२] गनि असाढ कौ मास
किय विग्यारथ कौमुदी, सुकवि प्रताप प्रकाश १२६

---

(१) हिन्दी साहित्य का इतिहास, पष्ठ ३९५ (२) भाषा काव्य-सग्रह पृष्ठ १३३-३४,

२ काव्य विलास—१९०५।४६, १९०६।६१ बी, १९२६।१५१ ए, बी, सी, डी, १९४१। १६। इसी ग्रन्थ का उल्लेख सरोजकार ने किया है। इसकी रचना स० १८८६ मे हुई।

संवत ससि[१] वसु[८] वसु[८] बहुरि ऊपर पट पहिचान
सावन मास त्रयोदसी, सोमवार उर आन ११५२

यह ग्रन्थ नायिका भेद का है और काव्यप्रकाश, काव्यप्रदीप, साहित्य दर्पण और रस-गगाधर के आधार पर बना है।

मत लहि काव्य प्रकाश को, काव्य प्रदीप सँजोइ
साहित दर्पन चित्त समुझि, रस गंगाधर सोइ

३ शृङ्गार मजरी—१९०६।६१ सी। यह ग्रन्थ भी नायिका भेद का है। इसकी रचना स० १८८९ मे हुई। इसका आधार भानुदत्त कृत ग्रन्थ है।

यह सिंगारही मजरी, सुकवि प्रताप विचार
बरनत नायक नायिका, निज मत के अनुसार
भानुदत्त को मत समुझि, मन मे सुकरि विचार
किय सिंगार की मंजरी, निज मति को अनुसार
संवत अष्टादस परे, साल नवासी जानि
मार्ग मास सित पचमी, भृगुवासर उर आनि

४. शृङ्गार शिरोमणि—१९०६।६१ डी। यह भी नायिका भेद का ग्रन्थ है।

रसमंजरी विचारि मोद परिमल सु चित्त धर
समुझि तिलक शृगार काव्य रूपक रतनाकर
साहित दर्पन साधि, भरत सूत्रहि के मत लहि
पुनि सुन्दर शृगार बहुरि रसराज भेद लहि
रसिक प्रिया सु विचारि चित अपर ग्रन्थ रस के गनत
शृगार सिरोमनि ग्रन्थ यह कवि प्रताप भाषा भनत

इसकी रचना स० १८९४ मे हुई।

संवत अष्टादस सरस, नब्बे ऊपर चार
माघ मास तिथि पचमी, यहै ग्रन्थ अवतार

५. अलकार चिंतामणि—१९०६।६१ ई। इस ग्रन्थ मे कुल १०८ अलकार हैं।

कहै एक से आठ सब, अलंकार निरधार
श्रुति नवीन प्राचीन मत, समुझि ग्रन्थ कौ सार ३९९

इसकी रचना स० १८९४ मे हुई।

सवत अष्टादस पुरे नब्बे ऊपर धारि
माघ मास पख कृस्न तहँ ससि सुत वार उदार ४००

६ रतन चद्रिका—१९०६।६१ एफ। चरखारी के राजा रतन सिंह के अनुरोध पर विहारी सतसई की यह गद्य टीका स० १८९६ मे लिखी गई।

सवत अष्टादस परैं, नवल परैं पट मानि
कृष्ण पच्छ तिथि पचमी, माधव मास वखानि

७ रसराज तिलक—१९०६।९१ जी। रसराज की यह टीका भी उक्त रतन सिंह के अनुरोध पर स० १८९६ मे ही लिखी गई थी।

रतन सिंघ नृप हुकुम तैं मन मे करि अति बोध
सुगम तिलक रसराज कौ, कीनौ निज मति सोध ४२५
संवत षट[6] नव[9] वसु[8] ससी[1] फागु मास सित पच्छ
वार ससी तिथि पचमी कीनौ तिलक सुदच्छ ४२७

८ काव्य विनोद—१९०६।९१ एच। यह ध्वनि का ग्रन्थ है।

काव्य प्रदेप निहारि कछु काव्य प्रकाश विचारि
सो भाषा करि कहत हौ धुनि के सकल प्रकार

यह गन्थ स० १८९६ मे बना—

संवत षट[6] नव[9] वसु[8] ससी,[1] मार्ग मास सित पच्छ
तिथि पंचमी, वार बुध, कियो ग्रन्थ यह स्वच्छ

९ जुगुल नखशिख—१९०५।५०, १९०६।९१ आई, १९०१।२२७। यह सीताराम का नखशिख है। इसमे २५ छन्द है। ग्रथ स० १८८६ मे बना।

संवत षट ऊपर असी हरि तिथि निसिकर वार
मार्ग मास सित पच्छ लहि शिख नख कह्यो विचार

१०. बलभद्र कृत नखशिख १९०६।९१ के। विक्रम साहि की आज्ञा से बलभद्र मिश्र के नख-शिख की गद्य टीका। इन सब ग्रथो का रचनाकाल स० १८८२-९६ है।

इनका एक ग्रन्थ जयसिंह प्रकाश और कहा गया है।[1] इसका रचनाकाल स० १८५२ है।

सवत ससि[1] वसु[8] सर[5] नयन[2] माघ मास सित बार
सुक्ल पच्छ तिथि पचमी यहै ग्रन्थ अवतार—खोज रि० १९०६।९१ ए

यह साहित्य का ग्रन्थ न होकर ज्योतिष का ग्रन्थ है। जय सिंह ने प्रसन्न होकर फादिलपुर गाँव इनाम मे दिया था।

होरा शास्त्र प्रसिद्ध जग अगम सु पारावार
लघु मति सुकवि प्रताप ने भाषा कियो विचार
फिरि बोले जय सिव नृप अमर कियो मो नाउ
ताको तुमको देत हौं फादिलपुर को गाउ

विक्रमाजीत और रतन सिंह के पश्चात् चरखारी मे जयसिंह नामक एक राजा हुए हैं, जिनका शासनकाल स० १९३७-९३ है। यह जयसिंह प्रकाश वाले जयसिंह से भिन्न और उनसे प्राय. सौ वर्ष पूर्ववर्ती हैं। यह ग्रन्थ इन्ही प्रतापसाहि का है, इसमे मुझे पूर्ण सदेह है।

---

(१) खोज रि० १९०६।९१ ए और मर्यादा, भाग ११, सख्या ५, सन् १९१६ ई० श्री माया शकर याज्ञिक का लेख।

४४१।३४६

(५) प्रवीणराय पातुर, उडछा, बुंदेलखण्ड वासिनी, स० १६४० मे उ० । इस वेश्या की तारीफ मे केशवदास जी ने कविप्रिया ग्रन्थ के आदि मे बहुत कुछ लिखा है । इसके कवि होने मे कुछ सदेह नही । इसका बनाया हुआ ग्रन्थ तो हमको कोई नही मिला, केवल एक सग्रह मिला है, जिसमे इसके बनाए सैकडो कवित्त है । हमने यह किसी तवारीख मे लिखा नही देखा कि बादशाह अकबर ने प्रवीण को बुलाया । केवल प्रसिद्धि है कि अकबर ने प्रवीण की प्रवीणता सुन दरबार मे हाजिर होने का हुक्म दिया तो प्रवीणराय ने प्रथम राजा इन्द्रजीत की सभा मे जाकर ये तीन कूट-कवित्त पढे—"आई हो बूझन मन्त्र" इत्यादि । फिर जब प्रवीण बादशाह की सभा मे गई, तो बादशाह से इस प्रकार प्रश्नोत्तर हुए ।

बादशाह—जुवन चलत तिय देह ते, बटकि चलत केहि हेत ।
पवीण—मनमथ बारि मसाल को, सेंति सिहारो लेत ॥१॥
बादशाह—ऊचे ह्वै सुर बस किए, सम ह्वै नर बस कीन ।
प्रवीण—अब पताल बस करन कौं, ढरकि पयानो कीन ॥२॥
इसके पीछे जब प्रवीण ने यह दोहा पढा कि—

बिनती राय प्रवीन की, सुनिए शाह सुजान ।
जूठी पतरी भखत हैं, बारी बायस स्वान ॥१॥

तब बादशाह ने उसे बिदा किया और प्रवीण इन्द्रजीत के पास आ गई ।

सर्वेक्षण

प्रवीणराय के सम्बन्ध मे सरोज मे जो भी बाते दी गई है, साहित्य के इतिहास ग्रथो मे वे ज्यो की त्यो स्वीकृत है । सरोज मे दिया हुआ स० १६४० प्रवीणराय का उपस्थितिकाल है, केशव ने इसी के लिए स० १६५८ मे कविप्रिया की रचना की थी ।

४५०।३८१

(६) प्रवीण कविराय २, स० १६६२ मे उ० । इनके नीति और शात रस के कवित्त सुन्दर हैं । हजारे मे इनके कवित्त है ।

सर्वेक्षण

बुदेलवैभव मे प्रवीण कविराय को ओरछावासी और तत्कालीन ओरछा नरेश का दरबारी कवि कहा गया है ।[१] सुधासर के नामरासी कवियो की सूची मे दो प्रवीण है—एक तो प्राचीन हैं, जो सरोज के प्रसग प्राप्त प्रवीण कविराय है, दूसरे, बेनी प्रवीण बाजपेयी है । इनकी रचनाएँ हजारे मे थी, अत. स० १७५० के पूर्व इनका अस्तित्व अवश्य सिद्ध है । पर इनकी कोई निश्चित तिथि देना सम्भव नही ।

---

(१) बुदेल वैभव, भाग २, पृष्ट ३०१

४५१।३७५

(७) परमेश कवि, प्राचीन १, स० १६६८ मे उ० । इनके कवित्त हजारे मे है ।

सर्वेक्षण

परमेश के कवित्त हजारे मे थे, अत. स० १७५० के पूर्व इनका अस्तित्व स्वय सिद्ध है, पर इनकी कोई निश्चित तिथि नही दी जा सकती । बुन्देल वैभव के अनुसार यह ओरछावासी थे और तत्कालीन ओरछा नरेश के दरबार मे थे ।[1] सुधासर के नामरासी कवि सूची मे दो परमेश हैं—एक तो प्राचीन, जो यही हैं, और दूसरे है वृन्दावन वासी परमेश । इनका उल्लेख सरोज मे नही हुआ है । सरोज मे एक तीसरे परमेश और हैं । यह सतावाँ, जिला रायबरेली के रहने वाले थे ।

४५२।३७६

(८) परमेश बदीजन २, सतावा, जिले रायबरेली, स० १८९६ मे उ० । इन्होने फुटकर कवित्त बनाए हैं । ग्रन्थ कोई नही है ।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही है ।

४५३।३७७

(९) प्रेम सखी, स० १७९१ मे उ० ।

सर्वेक्षण

प्रेमसखी जी का जन्म शृंगवेरपुर (प्रयाग) के निकट एक ब्राह्मण-कुल मे हुआ था । बाल्यावस्था मे ही विरक्त हो यह चित्रकूट चले गए । यहाँ यह रामदास गूदर के शिष्य हो गए । चित्रकूट से यह मिथिला गए और वहाँ से अयोध्या आए । इसके पश्चात् आजीवन चित्रकूट मे निवास किया । अवध के नवाब ने सवा लाख की थैली इनके पास भेजी थी, पर इन्होने उसे अस्वीकार कर दिया था ।[2]

प्रेमसखी जी रामानुज सप्रदाय के सखी-समाज के वैष्णव थे । यह पुरुष थे, स्त्री नही, जैसा कि बुदेल वैभव मे स्वीकार किया गया है । इस ग्रन्थ के अनुसार यह बुदेलखण्डी थे । इनका जन्म स० १८०० के लगभग एव रचनाकाल स० १८४० माना गया है ।[3] छतरपुर मे पूछताछ करके मिश्रबधुओ ने इनका रचनाकाल स० १८८० स्वीकार किया है । उन्होने इनके पद, कवित्त, होरी और नखशिख नामक चार ग्रन्थो का उल्लेख किया है ।[4] खोज मे इनके निम्नलिखित चार ग्रन्थ मिले हैं--

१ प्रेम-सखी की कविता—१९००।३९ । इसमे कुल १३८ छद हैं । अधिकतर कवित्त-सवैये

---

(१) बुदेल वैभव, भाग २, पृष्ट २८१ (२) रामभक्ति में रसिक संप्रदाय, पृष्ठ ४०७ (३) बुदेल वैभव, भाग २, पृ० ५११ (४) विनोद कवि सख्या १२३९

है। सभी सीताराम सम्बन्धी है।

२ सीताराम या जानकी राम को नखशिख—१९०६।२३० ए, बी, १९१७।१३७ सी डी, १९२०।१३४ बी।

३ होरी, छद, कवित्त, दोहा, सोरठा, छप्पय प्रबन्ध—१९०६।३०८, १९१७।१३७ ए, १९२०।१३४ ए।

४ कवित्तादि प्रबध—१९१७।१३७ बी।

रिपोर्टो मे उद्धृत अवतरणो से यह अच्छे कवि जान पडते है।

सरोज मे दिया सवत् १७९१ इनका जन्मकाल अनुमान किया जा सकता है।

४५४।३८२

(१०) परम कवि, महोबे के बदीजन, बुदेलखडी, स० १८७१ मे उ०। इनका बनाया नखशिख ग्रथ बहुत सुन्दर है।

सर्वेक्षण

सूदन ने प्रणम्य कवियो की सूची मे परम का भी नाम दिया है। अत एक परम स० १८१० के पूर्व अथवा आस-पास अवश्य हुए। विनोद मे दो परम है—एक सरोजवाले यह बदीजन (१९६९), दूसरे परम शुक्ल (५८०) जिनका समय सूदन के अनुसार देने का प्रयास करते हुए भी प्रमाद से स० १७५४ के पूर्व उपस्थित कहा गया है। यद्यपि जाति का अतर है, पर असभव नही यदि दोनो कवि एक ही हो। सरोज मे परम के नाम पर दो कवित्त उदाहृत है, एक मे कवि छाप परम है, दूसरे मे परमेश। यदि दोनो कवित्त एक ही कवि के है, तो परम और परमेश एक ही कवि के दो नाम हुए। यह भी सभव है कि सरोजकार ने प्रमाद से परमेश का भी छद परम के नाम पर उद्धृत कर दिया हो।

४५५।३८३

(११) प्रेमी यमन, मुसलमान, दिल्ली वाले, स० १७९८ मे उ०। इन्होने अनेकार्थमाला ग्रन्थ-कोष बहुत सुन्दर रचा है।

सर्वेक्षण

प्रेमी अब्दुल रहिमान दिल्ली वाले का उपनाम है[१]। यमन, यवन का विकृत रूप है। सरोज दत्त स० १७९८ कवि का रचनाकाल है। विनोद (९७१) के अनुसार अनेकार्थमाला मे कुल १०३ छद, विशेषकर दोहे है। ग्रियर्सन (४३३) मे प्रमाद से अनेकार्थ और नाममाला को दो ग्रथ समझा गया है।

---

(१) देखिये, यही ग्रन्थ, कवि सख्या २०

४५६।३८४

१२. परमानद लल्ला पौराणिक अजयगढ बुन्देलखडी, सं० १८९४ मे उ०। इनका नखशिख ग्रन्थ सुन्दर है।

सर्वेक्षण

परमानद जी अजयगढ, बुन्देलखड के रहने वाले थे। इनके पिता का नाम ब्रजचद था। सस्कृत के प्रसिद्ध ग्रथ हनुमन्नाटक का अनुवाद इन्होने 'हनुमन्नाटक दीपिका'[1] नाम से किया है। सभवत इन्ही परमानन्द ने किसी रामावतार की सहायता से आत्मबोध टीका[2] और तत्वबोध-टीका[3] नामक दो और टीकाएँ लिखी।

४५७।३८५

१३. प्राणनाथ कवि १, ब्राह्मण वैसवारे के, स० १८५१ मे उ०। इन्होने चक्रव्यूह का इतिहास, नाना छदो मे बहुत अद्भुत बनाया है।

सर्वेक्षण

वैसवारेवाले प्राणनाथ ने स० १८५० मे कातिक सुदी ६, मगलवार को चक्रव्यूह इतिहास की रचना की थी। रचनाकाल-सूचक यह दोहा सरोज मे दिया गया है—

संवत व्योम[0] नराच[5] वपु[8] मही[1] महिज उर्ज मास
सुक्ल पच्छ तिथि नवंम लिखि चक्रव्यूह इतिहास

कवि ने कवि प्रान और जन प्राननाथ छाप रखी है।

१. कवि प्रान किमि श्रीपति कथा नहि जात पसुपति सों कही
२. गोपाल लाल चरित्र पावन कहहिं सुनहिं जे गावही
जन प्राननाथ सनाथ ते फल चारि मंजुल पावही

स० १७६५ मे उपस्थित, जीवनाथ कथा[4] या जैमिनि पुराण,[5] वभ्रुवाहन कथा[6] और कल्कि-चरित्र[7] के रचयिता प्राणनाथ त्रिवेदी से यह भिन्न हैं।

४५८।४०६

१४ प्राणनाथ २ कोटावाले, स० १७८१ मे उ०। यह राना कोटा के यहाँ थे। इनकी कविता सुन्दर है।

(१.) खोज रि० १९०६।८८ (२) खोज रि० १९४४।२०१ क (३) खोज रि० १९४४।२०१ ख (४) खोज रि० १९०६।२२६ (५) खोज रि० १९४१।१४० (६) खोज रि० १९१२।१३१ (७) खोज रि० १९०३।२६, १९०४।१३५

सर्वेक्षण

विनोद मे (५०४) इनका जन्मकाल स० १७१४ और रचनाकाल स० १७४० दिया गया है, पर सूत्र का सकेत नही किया गया है। खोज मे एक प्राणनाथ त्रिवेदी मिले हैं, जिनके निम्नलिखित ग्रन्थो का पता चला है —

१ कल्कि चरित्र, १९०३।२९, १९०४।१३५। इस ग्रथ की रचना स० १७६५ मे हुई।

संवत सत्रह पै प्रगट पैंसठि मकर सुमास
बुध वासर श्री पंचमी कलकी कथा प्रकास

२ बभ्रुवाहन की कथा, १९१२।१३१, १९४७।२१९। इस ग्रन्थ का भी रचनाकाल स० १७६५ है।

३ जीवनाथ कथा, १९०९।२२६ या जैमिनि पुराण, १९४१।१४०। जैमिनि पुराण की रचना स० १७५७ मे हुई।

संवत सत्रह सै सुभग सत्तावन बर मास
मकर भूम रितु पंचमी कवि इतिहास प्रकास

ग्रन्थ मे कवि का नाम और जाति है—

विदित त्रिवेदी कान्ह कुल प्राननाथ कवि नाथ
सादर संभु प्रसाद बर बरन्यौ हरि गुन गाथ

इस ग्रथ मे पट्टन की देवी की स्तुति है —

पट्टन देवी रटन बिनु सकट बिकट कटै न
यथा अगोचर भास्कर मेचक छोर छुटै न

यह छद जीवनाथ की कथा मे भी है। इससे स्पष्ट है कि दोनो ग्रथो के रचयिता एक ही प्राणनाथ है।

हो सकता है कि इन तीनो ग्रथो के रचयिता प्राणनाथ कोटावाले यह प्राणनाथ ही हो। ऐसी स्थिति मे सरोज मे दिया हुआ स० १७८१ कवि का उपस्थितिकाल है।

४५९।४०९

१५ परमानद दास व्रजवासी, वल्लभाचार्य के शिष्य, स० १६०१ मे उ०। इनके पद राग-सागरोद्भव मे बहुत है। इनकी गिनती अष्टछाप मे है।

सर्वेक्षण

भक्तमाल मे अष्टछापी परमानद दास का विवरण नही है। छप्पय ७४ मे एक परमानद दास हैं, पर इनकी छाप सारग है, जो इन्हे अष्टछापी परमानददास से अलग करती है। वियोगीहरि जी ने व्रजमाधुरी सार मे यथासभव भक्तमाल के अथवा अन्य पुराने छप्पय कवियो के परिचय पहले दिए है। जब ऐसा सभव नही हो सका हे, तब अपने बनाए छप्पय दिए हैं। अष्टछापी परमानंददास का परिचय उन्होने स्व-रचित छप्पय मे दिया है। श्री चद्रबली पाडेय ने इस छप्पय मे वर्णित परमानद दास सारग को अष्टछापी परमानददास समझ लिया है।

परमानन्द दास का जन्म मार्गशीर्ष शुक्ल ७, सोमवार स० १५५० को कन्नौज मे एक कान्य

कुब्ज ब्राह्मण परिवार मे हुआ था । यह बचपन ही से काव्य और सगीत मे बहुत निपुण थे । युवावस्था ही मे यह कवि और कीर्तनकार के रूप मे प्रसिद्ध हो गए थे और स्वामी कहलाते थे । स० १५७६ मे यह सक्राति-स्नान के लिए प्रयाग आए । उन दिनो महाप्रभु वल्लभाचार्य यमुना पार अरैल मे थे । स० १५७७ की ज्येष्ठ शुक्ल १२ को परमानद स्वामी, वल्लभाचार्य के शिष्य बनकर परमानद दास हो गए । स० १५८२ मे वे अरैल से ब्रज आए । गोवर्द्धन आने पर वे सुरभि-कुण्ड पर श्याम तमाल वृक्ष के नीचे रहा करते थे । स० १६४१ भाद्रपद कृष्ण ६ को, ६१ वर्ष की वय मे इन्होने सुरभि कुंड पर ही नश्वर शरीर छोडा ।[1]

जिस प्रकार सूरदास जी सूरसागर कहे जाते थे, उसी प्रकार परमानद दास भी परमानद सागर कहलाते थे । इनकी पदावली परमानदसागर का सपादन प्रकाशन, विद्या विभाग, काकरोली द्वारा हो चुका है । इनके पद २००० के लगभग कहे जाते है। सरोज मे दिया स० १६०१ इनका उपस्थितिकाल है ।

४६०।४०८

१६ प्रसिद्ध कवि प्राचीन, स० १५६० मे उ० । यह महान् कवीश्वर खानखाना के यहाँ थे ।

सर्वेक्षण

सरोज में प्रसिद्ध के दो कवित्त है । प्रथम मे खानखाना के शौर्य की प्रशस्ति है ।

गाजी खानखाना तेरे धौंसा की धुकार सुनि,
सुत तजि पति तजि भाजी बैरी बाल है ।

अकबरी दरबार से सबध होने के कारण सरोज मे दिया हुआ स० १५६० ईस्वी-सन् है । इस समय (स० १६४७ मे) कवि उपस्थित था । अकबरी दरबार के कवियो की गणना करने वाले सवैये मे भी इनका नाम है ।

खोज मे एक नवीन प्रसिद्ध भी मिले है । इन्होने स० १८१३ मे 'जानकीविजय रामायन' की रचना की—

एक सहस अरु आठ सै संवत दस अरु तीन
सुक्ल पच्छ दुतिया मास मधु, भाषी कथा नवीन

४६१।४०४

१७ प्रधान केशवराव कवि, इन्होने शालिहोत्र भाषा बनाया है ।

सर्वेक्षण

केशवराय प्रधान का एक ग्रन्थ जैमुन की कथा खोज मे मिला है । इसकी रचना स० १७५३ विक्रमी मे हुई :—

---

(१) अष्टछाप परिचय, पृष्ठ १७७-८२

सम्बत सत्रा सै बरनि त्रेपन साल विचार
सुभग मास वैसाख की पून्यो अरु गुरुवार
ता दिन कथा प्रसंग किय उत्तिम पावन भाय
जैमुन ग्रत किय छंद रचि लघुमति केसव राय

इति श्री महाभारथे अस्वमेध के पर्वने जैमुनिव्रते प्रधान केसो राय विरचिताया फलस्तुति वर्ननो नाम सरसठयोध्याय ।।६७।।—खोज रिपोर्ट १६०५।१०

इस पुष्पिका से सूचित होता है कि यह जाति के प्रधान (कायस्थ) थे । रिपोर्ट के अनुसार यह माधोदास के पुत्र, मुरलीधर के भाई और पन्नानरेश महाराज छत्रसाल (१७०६-८८ वि०) और उनके धर्म पुत्र नरसिंह के आश्रित थे । महाराज छत्रसाल से इन्हे एक गाँव मिला था । यह बुन्देलखडी केशव राय ही सम्भवत. सरोज मे वर्णित बघेलखडी केशव राय हैं ।

४६२।४०५

१८ प्रधान कवि, स० १८७५ मे उ० । इनके कवित्त सुन्दर है ।

सर्वेक्षण

प्रधान के दो कवित्त सरोज मे उदाहृत है । दोनो छद नीति-सबधी हैं । एक मे सुजान वैद्य का और दूसरे मे कुत्सित वैद्य का वर्णन है । दोनो छद रामनाथप्रधान-कृत कवित्त राजनीति मे हैं । इस ग्रथ मे निम्नाकित लोगो के कवित्तवद्ध लक्षण है[1] —

१ भूप, २ देवान, ३ सरदार, ४, मुसद्दी, ५ बौहरा, ६ पच, ७ वैद ८ स्त्री, ९ पाखडी, १० दभी, ११ विद्यार्थी, १२ गुलाम, १३ सच्चा, १४ लवार, १५. मित्र, १६ दरबारी १७ चुगुल, १८ यारी, १९ जनाना, २० गरुरदार, २१ ब्राह्मण, २२ ठाकुर, २३ चाकर २४ रसोइया, २५ भडारी ।

अस्तु, यह प्रधान, रामनाथ प्रधान[2] है । स० १८७५ मे यह उपस्थित थे ।

४६३।४०१

१९. पचम कवि प्राचीन १, बदीजन बुदेलखडी, स० १७३५ मे उ० । यह महाराज छत्रसाल बुन्देला के यहाँ थे ।

सर्वेक्षण

पचम के नाम से सरोज मे एक कवित्त उद्धृत है, जिसकी दूसरी पक्ति यह है—

पचम प्रचड भुज दंड के बखान सुनि,
भागिबे को पच्छी लौं पठान थहरात हैं ।

यह छद भूषण का माना जाता है और छत्रसाल दशक मे नवी सख्या पर सकलित है । इस कवित्त मे भूषण की छाप नही है । पचम से पचम सिह का अर्थ लिया जाता है । पचम सिंह बुन्देलो के पुरखा थे । इन्ही के पुत्र महाराज बुन्देल हुए ।

---

(१) खोज रि० १९२०।१५२ बी (२) देखिए, यही ग्रथ, कवि सख्या ७१४

इस छद का कर्तृत्व सदिग्ध है। यदि इसे किसी पचम कवि की रचना माना जाय, तो उक्त कवि अवश्य ही छत्रसाल का समकालीन रहा होगा। ऐसी दशा मे सरोज मे दिया स० १७३५ कवि का उपस्थितिकाल है, क्योकि उक्त महाराज छत्रसाल का राज्यकाल स० १७२२—८८ है। खोज मे दो पुराने पंचम मिलते भी हैं—

१. पचम सिह, यह महाराज छत्रसाल के भतीजे थे। यह पन्ना-नरेश हृदय साह के सम-कालीन थे और प्राणनाथ के शिष्य थे। सं० १७९२ के लगभग यह वर्तमान थे। इनका एक ग्रथ कवित्त[1] मिला है, जिसमे रेखते हैं। विनोद मे इनका उल्लेख सख्या ६९५ पर है।

२ पचम सिह कायस्थ, यह ओरछा नरेश पृथ्वी सिंह के आश्रित थे। इन्होने स १७९९ मे नौरता की कथा[2] नामक ग्रथ लिखा —

सत्रह सै निन्यानवे, भादो सुदि है ग्यास
सुनि पचम परधान ने, ता दिन कीन्यो भ्यास

इन पक्तियो मे ओरछा और पृथ्वी सिंह का उल्लेख है :—

नगर ओडछौ उत्तिम थान
तहँ को राजा चतुर सुजान
पृथी सिंह मब जग मे जान

इनके पिता का नाम श्यामसुन्दर था :—

स्याम सुदर सुत पचम जान
जाति प्रधान नही अभिमान

विनोद मे (३६८) एक और पचम है, जिनका रचनाकाल स० १७०७ दिया गया है।

४६४।४०२

२० पचम कवि २, लखनऊ वाले।

सर्वेक्षण

सरोज के प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय सस्करणो मे २० सख्या पर डलमऊ वाले पचम नही हैं। सप्तम सस्करण मे इनका २० और ४२ सख्याओ पर दो बार उल्लेख हो गया है। तृतीय सस्करण मे इनका उल्लेख ४१ सख्या पर है। इस कवि का विवेचन आगे सख्या ४८६ पर देखिए।

४६५।४०३

२१ पचम कवि नवीन ३, वदीजन बुन्देलखड के, स० १९११ मे उ०। यह राजा गुमानसिह अजयगढ वाले के यहाँ थे।

---

(१) खोज रि० १९०६।८४ ए (२) खोज रि० १९०६।८६ ए

सर्वेक्षण

सरोज मे इन पचम का एक कवित्त उद्धृत है, जिसमे गुमान सिंह की प्रशस्ति है—

पचम गुमान सिंह हिंद के पनाह,
　　ठकुराइसि को टीको थार तेरे दरबार मे।

अत पचम का गुमान सिंह के दरबार मे होना निश्चित है। यदि पचम का अर्थ पचम वशीय बुदेल किया जाए, तो यह कवित्त किसी अज्ञात कवि की रचना है, जिसका सम्बन्ध उक्त गुमान सिंह के दरबार से था।

गुमान सिंह स० १८२२ मे बादा और अजयगढ के शासक हुए थे। यह छत्रसाल के प्रपौत्र, जगतराज के पौत्र, और कीरतराज के पुत्र थे[१]। इन्होने स० १८३५ तक शासन किया। अत. सरोज मे दिया स० १९११ अशुद्ध है।

———

४६६।३६९

२२ प्रियादास स्वामी वृ दावन वासी, स० १८१९ मे उ०। इन्होने नाभा जी के भक्तमाल की टीका कवित्तो मे बनाया है। यह महाराज बडे महात्मा हो गए है।

सर्वेक्षण

विरक्त होने के पूर्व प्रियादास का नाम कृष्णदत्त यह था, प्रियादासचरितामृत[२] मे उल्लेख हुआ है। सामान्यतया समझा जाता है कि प्रियादास नाभादास के शिष्य थे और उन्ही के कहने से उन्होने भक्तमाल की टीका की। पर बात ऐसी है नही। नाभादास रामानद-सप्रदाय के थे और प्रियादास गौडीय सप्रदाय के वैष्णव थे। नाभादास ने इनको प्रत्यक्ष कोई आज्ञा नही दी थी। प्रियादास चैतन्य महाप्रभु का ध्यान कर रहे थे, उसी ध्यानावस्था मे नाभादास ने उन्हे भक्तमाल की कवित्तबद्ध टीका करने की आज्ञा दी थी। टीका के इस कवित्त से यह तथ्य ज्ञात होता है।

महाप्रभु कृष्ण चैतन्य मनहरन जू के
　　चरन को ध्यान मेरे नाम मुख गाइए
ताही समै नाभा जू ने आज्ञा दई लाइ धरि
　　टीका बिसतारि भक्तमाल की सुनाइए
कीजिए कवित बध, छद अति प्यारो लगै
　　जगै जग माँहि कहि बानी बिरमाइए
जानौं निजमतिऐ, पै सुन्यो भागवत सुक
　　द्रुमनि प्रवेस कियो ऐसे ही कहाइए

---

(१) बुदेलखड का सक्षिप्त इतिहास, अध्याय २४,३०, ३२ (२) खोज रि० १९०१।११

इस कवित्त के प्रथम चरण मे मनहरन शब्द आया है, जो कृष्ण चैतन्य का विशेषण-सा है। पर यह प्रियादास के गुरु मनोहरदास[1] की ओर सकेत करता है। भक्तमाल की प्रियादास-कृत टीका की एक हस्तलिखित प्रति[2] की पुष्पिका यह है —

"श्री उदयपुर मध्ये राणा श्री सग्राम सिंह जी विजय राज्ये स्वामी श्री हरिदास तत शिष्य प्रियादास जी लिखावतम आत्मार्थे वाचनार्थ ।"

इस प्रति का लिपिकाल स० १७८९ है। लिपिकर्ता कोई नारायणदास है। प्रतिलिपि, स्वामी श्री हरिदास के शिष्य प्रियादास के पढने के लिए की गई थी। यह प्रियादास भक्तमाल की टीका करनेवाले प्रियादास से भिन्न हैं।

प्रियादास वृंदावन मे राधा-रमण जी के मदिर मे रहते थे। यही इन्होने स० १७६९, फाल्गुन वदी ७, को भक्तमाल की टीका पूर्ण की थी—

नाभा जू को अभिलाष पूरन लै कियो मै तो
ताकी साखि प्रथम सुनाई नीके गाइ के
भक्ति बिसवास जाके, ताही सौं प्रकास कीजै,
भीजे रंग हिये लीजै संतनि लडाइ के
संवत प्रसिद्ध दस सात सत उन्हत्तर
फालगुन मास बदि सप्तमी बिताइ के
नारायनदास सुखरास भक्तमाल लैके
प्रियादास दास उर बस्यौ रहै छाइ के ६२७

अप्रकाशित सक्षिप्त विवरण के अनुसार प्रियादास रसजानिदास के गुरु और वैष्णवदास के पिता थे। वस्तुत· यह वैष्णवदास के पितामह थे। वैष्णवदास ने स्व-रचित भक्तमाल-माहात्म्य मे यह उल्लेख स्वय किया है। यह माहात्म्य रूपकला जी वाली भक्तमाल की टीका के नवल किशोर प्रेस, लखनऊ वाले सस्करण मे सलग्न है।

प्रियादास अति ही सुखकारी
भक्तमाल टीका बिस्तारी
तिनको पौत्र परम रंग भीनो
भक्तन हित महात्म यह कीनो—भक्तमाल, पृष्ठ ९६४

वैष्णवदास का एक ग्रथ 'गीत गोविंद भाषा[3]' मिला है। इस ग्रथ से सिद्ध है कि यह वैष्णवदास भी चैतन्य महाप्रभु के गौडीय सप्रदाय के वैष्णव थे। इनके गुरु का नाम हरि जीवन था, यह भी वृन्दावन मे रहते थे, प्रियादास के यह कृपा पात्र थे और इस ग्रन्थ की रचना स० १८१४ मे हुई थी। ग्रथ की पुष्पिका मे रसजान वैष्णवदास के विशेषण के रूप मे प्रयुक्त हुआ है —

---

(१) यही ग्रंथ, कवि संख्या ६८२ (२) राज० रि०, भाग ३, पृष्ठ ३६-३७ (३) खोज रि०, १९०६।३२४

"इति श्री जयदेव कृत गीतगोविंद भाषाया रसजान वैष्णवदास कृताया द्वादश सर्ग।"

फिर भी सभव है कि प्रियादास के किसी शिष्य का भी नाम रसजानिदास रहा हो। खोज मे प्रियादास के निम्नलिखित ग्रथ मिले हैं—

१ भक्तमाल की रसबोधिनी टीका, १९०१।५५, १९०६।२४७, १९१७।१३८, १९२०।१३५ ए, बी, १९२३।३२३ ए, बी, सी, १९२६।३६१ ए, बी, १९२९।२७३ बी, १९३१।६७। जैसा कि हम अभी लिख आए हैं, यह टीका नाभा की प्रेरणा से स० १७६९ मे लिखी गई।

२ भक्ति प्रभा की सुलोचना टीका, १९२०।१३५ सी,

सेवनीयमिद शास्त्र तस्मात्सर्वत्र सर्वदा।
सोमसिद्धातवर्य्यो हि प्रियादास विनिर्मितम् ॥

ग्रथ के आदि और अत मे श्री राधावल्लभो जयति लिखा हुआ है।

३. पद रत्नावली, १९२०।१३५ डी, १९४१।१४२। यह पदो का सग्रह है। पदो मे प्रियादास छाप है।

४ प्रियादास सग्रह, १९२६।३६१ सी। इसमे भी कृष्ण लीला के पद हैं और पदो मे प्रियादास छाप है।

५ अनिन्द्य मोदिनी, १९२९।२७३ ए, १९४१।५१९ क। इस ग्रथ के प्रारभ मे गौडीय सप्रदाय के महात्माओ—चैतन्य महाप्रभु, मनोहरदास, नित्यानद, अद्वैत प्रभु, रूप और सनातन की प्रशस्ति है।

श्री राधावल्लभोजयति

श्री चैतन्य मनहरन भजि श्री नित्यानद सग
श्री अद्वैत प्रभु पारषद जैसे अंगी अग
रसिक शिरोमनि विज्ञवर श्री मति रूप अनूप
सदा सनातन धर हिये दोऊ एक सरूप
रसिक अनन्यनि कौ गमन जा मारग में होय
ताके आचारज एई यह छवि मन में सोय

कवि ने ग्रथात मे अपना नाम भी दिया है—

अनिन्द्य मोदिनी रुचि कही देत अनिन्द्य मोद
प्रियादास जे दृढ भरा तिनकी सुर भरी गोद

६ पीपा जी की कथा, १९२९।२७३ सी। यह भक्तमाल की टीका का एक अश हैं। रिपोर्ट मे इसका रचनाकाल स० १७६९ दिया गया है, जो उक्त टीका का रचनाकाल है।

७ रसिक मोदिनी, १९२९।२७३ डी। इस ग्रथ के भी प्रारभ मे गौडीय सप्रदाय के महात्माओ का गुण-गान है। गुरुमनोहरदास का भी नाम है।

महाप्रभू चैतन्य हरि रसिक मनोहर नाम
सुमिरि चरन अरविंद बर बरनौं महिमा धाम

ग्रथ दोहो मे है। अतिम दोहो मे से एक मे कवि का नाम भी आया है —

रसिक इन्दु गोविद श्री कुज वास अनयास
प्रियादास इह नाम जिन गुह्यो चातुरी वास

८ सगीत रत्नाकर, १९२९।२७३ ई। पदो मे प्रियादास की छाप है। प्रथम पद वही है जो पीछे ४ सख्या पर वर्णित प्रियादास-सग्रह का प्रथम पद है।

९. सगीत माला, १९२९।२७३ एफ। यह ग्रथ भी सगीतरत्नाकर के मेल मे है। उसी का सक्षिप्त रूप प्रतीत होता है। सगीतरत्नाकर और इसके आदि के दोनो उद्धृत पद एक ही हैं। अत के भी पदो मे एक, 'पडित रूप बने बनवारी', मिलता है।

१० सग्रह, १९२९।२७३ जी। यह ग्रथ भी प्रियादास सग्रह और सगीतरत्नाकर के मेल मे है। अत के पद तीनो ग्रथो के मिलते हैं।

तासी ने भागवत के भाषानुवादक एक प्रियादास का उल्लेख किया है। ग्रियर्सन (३१९) का अनुमान है कि वह प्रियादास यही है। खोज मे भी प्रियादास छाप युक्त भागवत का एक अनुवाद मिल चुका है। इन प्रियादास से भिन्न दो अन्य प्रियादास खोज मे और मिले हैं—

१ प्रियादास[1]—यह हित सप्रदाय के अनुयायी थे, रसिकानद लाल के शिष्य थे, यमुना तट स्थित दनकौर गाव, तहसील सिकदराबाद, जिला बुलदशहर के रहने वाले थे। इनके पिता का नाम श्रीनाथ और माता का नाम व्रज कुँवरि था। यह स० १८२७ के आसपास उपस्थित थे।

२ प्रियादास[2]—यह बीकानेर के रहनेवाले थे, इन्होने स० १८८० मे जलकेलि पचीसी और स० १८७९ मे झूला पचीसी की रचना की। दानलीला और सीता मगल भी इनके दो अन्य ग्रथ है।

———

४६७।४००

(२३) पुरुषोत्तम कवि बदीजन बुन्देलखडी, स० १७३० मे उ०। यह कवि राजा छत्रसाल के यहाँ थे।

सर्वेक्षण

सरोज मे पुरुषोत्तम कवि का एक कवित्त उद्धृत है, जिसमे छत्रसाल के युद्ध-कौशल की प्रशसा है—

कवि परसोत्तम तमासे लगि रहे मान
वीर छत्रसाल अदभुत जुद्ध ठाटे हैं
नाहर नरेस के सवाढ रजपूत लडे
मारैं तरवारैं गज बाढर से काटे हैं

छत्रसाल का शासनकाल स० १७२२-८८ है, अत स० १७३० पुरुषोत्तम कवि का उपस्थिति-काल है। खोज मे इन पुरुषोत्तम कवि का कोई पता नही चलता, पर अन्य कई पुरुषोत्तम मिले हैं।

१ पुरुषोत्तम[3]—कपिला निवासी, कुमाऊप्रवासी। हनुमान दूत रचनाकाल स० १७०१, और अमरुशतक भाषा रचनाकाल स० १७२० के रचयिता। राम के प्रपौत्र, गदाधर के पौत्र और मानिक के पुत्र। गोकरण गोत्र के सनाढ्य ब्राह्मण। नीलचद्र के पुत्र कुमाऊ के राजा बाज बहादुर चद के आश्रित।

२ पुरुषोत्तम[4]— फतेह चद कायस्थ के आश्रित, स० १७१५ के लगभग विद्यमान, राग विवेक के रचयिता।

---

(१) खोज रि० १९१२।१३७, १९०४।१३१। (२) खोज रि० १९१२।१३८ (३) रा० रि० भाग ४, पृष्ठ २१, ७०। (४) खोज रि० १९०३।४८

३. पुरुषोत्तम[1]—राधावल्लभी सप्रदाय के वैष्णव, इनके दो ग्रथ मिले है, जिसमे एक का नाम है उत्सव । यह ब्रजभाषा गद्य मे है । इसमे सप्रदाय के पर्वो का तिथि निर्णय है । दूसरा भक्तमाल माहात्म्य है । इसमे प्रियादास की टीका का भी उल्लेख है, अत यह स० १७६९ के बाद की रचना है ।

४६८।३९७

(२४) पहलाद कवि, सं० १७०१ मे उ० । इनके कवित्त हजारे मे हैं ।

सर्वेक्षण

पहलाद का एक शृंगारी कवित्त सरोज मे उद्धृत है, जो दिग्विजय भूषण मे लिया गया है । इनके कवित्त हजारे मे थे, अत इनका रचनाकाल स० १८७५ के पूर्व निश्चित है । खोज मे पहला कवि की एक रचना बैताल पचीसी[2] मिली है । प्राप्त प्रति मे रचनाकाल सं० १७६१ दिया हुआ है, किन्तु रचयिता के अनुसार—

अकबर साहि सिद्ध बरदाई
तिहि के राज यह कथा चलाई

अकबर का का शासन काल स० १६१३-६२ है । अत ऊपर वाला स० १७६१ ठीक नहीं । यह सभवतः लिपि काल है अथवा प्रमाद से १६६१ के स्थान पर १७६१ लिख गया है और सौ वर्ष की भूल हो गई है । रिपोर्ट मे ग्रथ का केवल विवरण दिया गया है, उद्धरण नही, अत. जाच सभव नही । स० १७०१ मे भी यह जीवित रह सकते है, पर उस समय इनकी अत्यन्त वृद्ध अवस्था होनी चाहिये । बहुत करके यह संवत् अशुद्ध है ।

४६९।३९८

(२५) पडित प्रवीण, ठाकुर प्रसाद, पयासी के मिश्र, अवध वाले, स० १९२४ मे उ० । यह महान् कवि पलिया शाहगज के करीब के निवासी थे और महाराजा मान सिंह के यहाँ रहे । इनकी कविता देखने योग्य है ।

सर्वेक्षण

सरोज मे पडित प्रवीण के १३ कवित्त उद्धृत हैं, जिनमे ६ मे मान सिंह की अत्युक्तिपूर्ण प्रशसा की गई है । यह मानसिंह अयोध्या नरेश प्रसिद्ध द्विजदेव हैं, जिनका देहान्त स० १९२७ मे हुआ था । अत सरोज मे दिया स० १९२४ पडित प्रवीण का उपस्थितिकाल है ।

पलिया नामक एक गाव आजमगढ जिले मे मऊ जकशन के पास पिपरीडीह और खुरहट स्टेशनो के बीच स्थित है । सभवत सरोज का अभीष्ट पलिया यही है ।

सार सग्रह[3] नाम का किसी प्रवीण कवि का एक ग्रन्थ खोज में मिला है । रिपोर्ट मे सभावना व्यक्त की गई है कि यह इन्ही पडित प्रवीण की रचना है ।

---

(१) खोज रि० १९१२।१२९ (२) पजाब रि० १९२२।८५ (३) खोज रि० १९०६, पृष्ठ ४७०, सख्या ४६ ।

४७०।३६६

(२६) पतिराम कवि, स० १७०१ मे उ० । हजारे मे इनके कवित्त है ।

सर्वेक्षण

पतिराम जाति के सुनार थे, ओरछा के रहने वाले थे और महाकवि केशव के मित्र थे। केशव ने इनका उल्लेख निम्नलिखित २ दोहो मे किया है[१]—

वाचि न आवै लिखि कछू, जानत छाह न घाम
अर्थ सोनारी वैदई, करि जानत पतिराम
तुला तौल कस वान वनि, कायथ लिखत अपार
राख भरत पतिराम पै सोनो हरति सोनार

इनका जन्मकाल स० १६२० और रचनाकाल स० १६६० स्वीकार किया जाता है।[१] यह स० १७०१ वि० तक जीवित रह सकते है ।

४७१।३७६

२७ पृथ्वीराज कवि, स० १६२४ मे उ० । ऐजन (हजारे मे इनके कवित्त हैं ।) यह कवि वीकानेर के राजा और सस्कृत भाषा के बडे कवि थे ।

सर्वेक्षण

पृथ्वीराज का विवरण भक्तमाल के आधार पर दिया गया है :—

सवैया, गीत, स्लोक, वेलि, दोहा गुन नव रस
पिगल काव्य प्रमान विविध विधि गायो हरिजस
पर दुख विदुख सलाध्य वचन रचना जु विचारै
अर्थ वित्त निर्मोल सबै सारँग उर धारै
रुक्मिनी लता बरनन अनूप, बागीश बदन कल्यान सुव
नरदेव उभै भाषा निपुन, पृथीराज कविराज हुव १४०

इसी 'उभै भाषा निपुन' के आधार पर सरोज मे इन्हे सस्कृत और भाषा का कवि स्वीकार किया गया है । प्रियादास की टीका के अनुसार इन्हे कावुल की लडाई मे अकवर की ओर से लडना पडा तथा इनकी मृत्यु मथुरा मे हुई थी ।

पृथ्वीराज[२] राठौर उपनाम कमलध्वज, वीकानेर नरेश राजा राव कल्याण मल के तृतीय पुत्र और महाराज राय सिंह के भाई थे । यह स्वय वीकानेर नरेश नही थे । इनका जन्म मार्गशीर्ष शुक्ल १, स० १६०६ को हुआ था । कुछ दिनो तक यह अकबर के दरवार मे नजरवद थे । यह महाराणा

---

(१) वुंदेल वैभव, भाग २, पृष्ठ २८१ (२) राजस्थानी भाषा और साहित्य, पृष्ठ १२१-३२

प्रताप सिह के वडे हितैपी और उत्तेजना देने वाले कवि थे। इनके द्वारा रचित 'श्रीकृष्णदेव रुक्मिनी वेलि' अत्यन्त प्रसिद्ध रचना है। यह डिंगल भाषा मे रचित ३०५ छन्दो का खड-काव्य है। इनके अनेक सुन्दर सटीक सुसपादित सस्करण प्रकाशित हो चुके हे। सबसे वडा और महत्वपूर्ण सस्करण हिन्दुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग का है। यह ग्रथ स० १६३७ मे प्रारम्भ किया गया था।

वरसि अचल[७] गुण[३] अग[६] ससी[१] सवति
तवियौ जस करि स्त्री भरतार
करि श्रवणे दिन राति कठि करि
पामै स्त्री फल भगति अपार

यह ग्रथ स० १६४४, वैशाख सुदी ३, सोमवार को पूर्ण हुआ —

सोलह सै सवत चमाले वरसै, सोम तीज वैशाख सुदि
रुक्मीण कृष्ण रहस्य रमण रस, कथी वेलि प्रथीराज कमधि

इनकी मृत्यु स० १६५७ मे हुई। राजस्थानी भाषा और साहित्य मे पृथ्वीराज के निम्नलिखित ५ ग्रन्थ कहे गए हैं।

१ वेलि क्रिसन रुक्मणी री।
२ दसम भागवत रा दूहा—कृष्णभक्ति विषयक १८४ दोहे।
३ दशरथ राव उत—राम-स्तुति के पचास दोहे।
४ वसदेव राव उत—१६५ दोहो मे कृष्ण का गुणानुवाद।
५ गगा लहरी—गगा महिमा के ८० दोहे।

४७२।३८८

(२८) परवत कवि, स० १६२४ मे उ०। ऐजन। (हजारे मे इनके कवित्त है)।

सर्वेक्षण

इनका निम्नलिखित शृ गारी सवैया सरोज मे उद्धृत है :—

फैलि रहो विरहा चहुँओर तें, भाजिवे को कोउ पार न पावै
जानत हौं परवत्त सवै तुम, जाल को मीन कहा लगि धावै
चाहै कछूक सँदेस कह्यौ सु तो जी महँ आवत, जीभ न आवै
ऊधौ जू वा मधुसूदन सों कहियों जो कछू तुम्हें राम कहावै

यही छन्द सख्या ५४६ पर मधुसूदन कवि के नाम से उद्धृत है। द्वितीय चरण मे जरा-सा अंतर कर दिया गया है—

जानत हौ पर वात सवै तुम जाल को मीन कहा लगि धावै

'वत्त' को वात कर दिया है वस। यह छन्द वस्तुत परवत कवि का ही है, मधुसूदन का नही। मधुसूदन स्पष्ट ही कृष्ण के लिये प्रयुक्त है। 'परवत्त' को 'पर वात' कर देने से वाक्य में शिथिलता तो आती ही है, अधिक पदत्व-दोष भी आ जाता है।

राज पुस्तकालय जोधपुर मे 'फुटकल कवित्त' नामक एक काव्य सग्रह है। इसमे परवत कवि की रचना सग्रहीत है[१]। अत इस नाम के कवि के अस्तित्व मे कोई सदेह नही रह जाता।

बु देल वैभव मे इस कवि का नाम परवते दिया गया है। इन्हे ओरछावासी सुनार कहा गया है। 'दशावतार कथा' और 'रामरहस्य कलेवा' नामक इनके दो ग्रथो का उल्लेख हुआ है। इनका जन्मकाल स० १६८४ और कविता काल स० १७१० माना गया है।[२] सूदन मे इसका उल्लेख है।

४७३।३९५

(२९) परशुराम कवि १। दिग्विजय भूपण मे इनके कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

सरोज मे द्विग्विजय भूपण से नखशिख सम्बन्धी इनका एक कवित्त उद्धृत है। यह परशुराम शृ गारी कवि है और भक्त कवि परशुराम बृजवासी[३] से भिन्न है।

खोज मे कई परशुराम मिले है। इनमे से किसी के भी साथ इनकी अभिन्नता स्थापित करना अत्यन्त कठिन है—

१. परशुराम मिश्र, कुलपति मिश्र के पिता, आगरा निवासी, १७ वी शताब्दी के अत मे वर्तमान। दे० १९००।७२
२. परशुराम, कायस्थ, टिकैतराय के पुत्र, मृत्यु स० १७१३। दे० १९४१।११४
३. परशुराम, प्रसिद्ध कवि सेनापति के पितामह। दे० १९०९।२९७
४ परशुराम, भागवत छठे और सातवें स्कध के अनुवादक। दे० १९३५।७३
५ परशुराम, अमर बोध शास्त्र, जोडा और राग सागर के रचयिता। दे० १९२२।१६३ ए बी सी।
६. परशुराम, सगुनौती प्रश्न के रचयिता। दे० १९२२।८१
७ परशुराम, शिव स्मरण के रचयिता। दे० १९२२।८२

४७४।३७९

(३०) परशुराम २, ब्रजवासी, स० १६६० मे उ०। इनके पद रागसागरोद्भव मे है। यह महाराज श्रीभट्ट और हरिव्यास जी के मत पर चलते थे। यह वडे भक्त थे। इनकी कविता वहुत सुन्दर है। यथा—

माया सगी न मन सगा, सगा न यह संसार
परशुराम यहि जीव को, सगा सो सिरजनहार

---

(१) खोज रिपोर्ट १९०२।४९ (२) बुंदेल वैभव, भाग २, पृष्ठ २९३ (३) यही ग्रन्थ, कवि सख्या ४७४

सर्वेक्षण

परशुराम व्रजवासी, निम्बार्क सम्प्रदाय के सत हरिव्यास देव के शिष्य थे। इनकी गणना उक्त सम्प्रदाय के प्रमुख आचार्यो मे होती है। इनका जन्म जयपुर राज्यातर्गत किसी पच गौड ब्राह्मण-कुल मे हुआ था। खोज मे इनका परशुराम सागर मिला है।[1] यह इनके छोटे-बडे २२ ग्रन्थो तथा ७५० के लगभग फुटकर कविताओ का सग्रह है। ग्रन्थ मे कुल २६६ पन्ने हैं। १७४ पन्नो मे २२ ग्रन्थ और शेष १२५ पन्नो मे ७५० फुटकर रचनाएँ है। इसमे सम्मिलित ग्रन्थो की सूची यह है :—

१ साखी का जोडा ८३ पन्ने, २ छद का जोडा ८ पन्ने, ३ सवैया दस अवतार का १ पन्ना, ४ रघुनाथ चरित्र २ पन्ने, ५ श्रीकृष्ण चरित्र ३ पन्ने, ६ सिंगार सुदामा चरित्र ७ पन्ने, ७ द्रौपदी का जोडा १ पन्ने, ८ छप्पय गज ग्राह-को १ पन्ना, ९ प्रहलाद चरित्र ११ पन्ने, १० अमर-बोध लीला ४ पन्ने, ११ नामविधिलीला १५ पन्ने, १२ साँच निषेध लीला ३ पन्ने, १३ नाथ-लीला १ पन्ना, १४ निज रूप लीला ४ पन्ने, १५ श्रीहरि लीला ४ पन्ने, १६ श्री निर्वाण लीला १३ पन्ने, १७ समझणी लीला १ पन्ना, १८ तिथि लीला १ पन्ना, १९ वार लीला १ पन्ना, २०. श्री नक्षत्र लीला ७ पन्ने, २१ श्री बावनी लीला २ पन्ने, २२ विप्रमती १ पन्ना।

इनमे से विप्रमती का रचनाकाल स० १६७७ कहा गया है पर यह वस्तुतः उस पोथी का लिपि काल है जिसकी प्रतिलिपि स० १८३७ मे की गई जिसका विवरण उक्त रिपोर्ट मे है। यह बात पुष्पिका से स्पष्ट है—

"इति विप्रमती। इति श्री परशुराम जी की वाणी सपूर्ण। पोथी को सवत १६७७ वर्ष।"

जो हो, सरोज मे दिया सवत् १६६० कवि का उपस्थितिकाल ही है, क्योकि इनके दादा गुरु श्री भट्ट[2] जी का काव्यकाल स० १६०० के आस-पास है। सूर पूर्व व्रजभाषा और उसका साहित्य[3] मे परशुराम जी का समय स० १६०० के आस-पास निर्धारित किया गया है, जो ठीक नहीं।

ऊपर लिखित ग्रन्थो मे से अतिम १२ खोज मे अलग-अलग भी मिले हैं। इसी वर्ष की खोज मे इनकी पदावली भी मिली है।[4] इनकी साखी भी मिल चुकी है।[5] इनके अतिरिक्त निम्नलिखित दो ग्रन्थ और मिले है जो परशुराम सागर मे नही सम्मिलित हैं।

१ वैराग्य निर्णय, १९००।७५

२ उषा चरित्र, १९१२।१२७, १९२३।३११, १९८६।३४४, १९२९।२६४ ए बी।

परशुराम ग्रथावली का सपादन सभा करा रही है। परशुराम का विवरण भक्तमाल के इस छप्पय मे है —

---

(१) राज० रि० भाग १, संख्या ७१, राजस्थानी भाषा और साहित्य, पृष्ठ १४१-४२ और खोज रि० १९१२।१२६ (२) देखिए, यही ग्रन्थ सख्या ८६४ (३) सूर पूर्व व्रजभाषा और उसका साहित्य, पृष्ठ २०२ (४) खोज रि० १९२९।७४ (५) खोज रि० १९२०।१२६

ज्यौ चंदन कौ पवन निंब पुनि चंदन करई
बहुत काल तम निविड उदै दीपक ज्यौ हरई
श्री भट पुनि हरि व्यास मत मारग अनुसरई
कथा कीरतन नेम रसन हरि गुण उच्चरई
गोविंद भक्ति गदरोगगति, तिलक दाम सद वैद्य हद
जंगली देस के लोग सब, परसुराम किय पारपद १३७

४७५।३७८

(३१) पुडरीक कवि बुन्देलखडी, स० १७६६ मे उ० । इनकी कविता बहुत ही सुन्दर है ।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही । इस कवि का राम चरित्र सम्बन्धी एक कवित्त उद्धृत है । जान पडता है कि तुलसीकृत कवितावली के ढग पर इस कवि ने रामचरित पर कोई छोटी-मोटी रचना की थी ।

४७६।३८६

(३२) पद्मेश कवि, स० १८०३ मे उ० । इन्होने सुन्दर कविता की है ।

सर्वेक्षण

सरोज मे पद्मेश के दो छद हैं, पहला छप्पय है जिसमे १८ पुराणो का नाम गिनाया गय है, दूसरे मे किसी करनेश की प्रशस्ति है ।

राजा करनेस के करेरे पदमेस वीर
तेरे कर करि कला राखी मुगलान मे

जब तक मुगलो से लोहा लेने वाले इन करनेश का पता नही लग जाता, तब तक पद्मेश के समय की जाच सभव नही ।

४७७।३८७

(३३) पुषी कवि ब्राह्मण, मैनपुरी के समीप के निवासी, स० १८०३ मे उ० । इन्होने सुन्दर कविता की हे ।

सर्वेक्षण

अकबरी दरबार के कवियो की गणना करने वाले प्रसिद्ध सवैये मे पहला नाम इन्ही का है ।

'पूखी प्रसिद्ध पुरंदर ब्रह्म... .

प्रथम सस्करण मे 'पूषी' पाठ है, द्वितीय मे यह 'पूई' हो गया है और सप्तम मे इसका 'पाई' रूप मे सशोधन हो गया है । स्पष्ट है कि पुखी अकबरी दरबार के कवि थे । अत. सरोज मे दिया इनका स० १८०३ अशुद्ध है । इनका रचनाकाल स० १६६२ के आसपास होना चाहिए ।

४७८।३६०

(३४) पद्मनाभ जी व्रजवासी, कृष्णदास पय अहारी गलता जी के शिष्य, स० १५७० मे उ० । इनके पद राग सागरोद्भव मे बहुत हैं। कील्ह, अग्रदास, केवलराम, गदाधर, देवा, कल्याण, हठी नारायण, पद्मनाभ ये सब कृष्णदास जी के शिष्य और महान् कवि हुए है । अग्रदास के शिष्य नाभादास थे ।

सर्वेक्षण

समय के थोडे ही हेर-फेर से तीन पद्मनाभ हुए हैं, एक पद्मनाभ कबीर के शिष्य थे, दूसरे कृष्णदास पय अहारी के, और तीसरे महाप्रभु वल्लभाचार्य के । कुछ पता नही, इनमे से पहले दो कवि थे या नही, तीसरे कवि थे । सरोजकार ने विवरण दूसरे पद्मनाभ का दिया है और उदाहरण तीसरे का ।

कबीर के शिष्य पद्मनाभ का विवरण भक्तमाल के इस छप्पय मे है—

नाम महानिधि मत्र, नाम ही सेवा पूजा
जप तप तीरथ नाम, नाम बिन और न दूजा
नाम प्रीति नाम बैर, नाम कहि नामी बोले
नाम अजामिल साखि, नाम बधन ते खोले
नाम अधिक रघुनाथ ते, राम निकट हनुमत कह्यो
कबीर कृपा तें परम तत्व, पद्मनाभ परचौ लह्यो ६८

कृष्णदास पय अहारी के शिष्यो का नाम भक्तमाल के निम्नलिखित छप्पय मे है । इसी मे पद्मनाभ का भी नाम है—

कील्ह, अगर, केवल, चरण, व्रत हठी नरायन
सूरज पुरुषो पृथू तिपुर हरि भक्ति परायन
पद्मनाभ, गोपाल, टेक, टीला, गदाधारी
देवा, हेम, कल्यान, गगा गंगा सम नारी
विष्णुदास, कन्हर, रंगा, चांदन, सबीरी, गोविद पर
पैहारी परसाद ते, सिष्य सबै भए पारकर ३६

तीसरे पद्मनाभ का अस्तित्व सरोज मे उदाहृत इस पद से स्वय सिद्ध है । इस पद मे वल्लभ और उनके पिता लछिमन भट्ट का नाम आया है—

हेली नव निकुज लीला रस पूरित श्री वल्लभ वन मोरे
अँग रवि पुन छिप न घन दामिनि दुति फल फल पति दोरे
करत अनेस विरह विरहिनि स्तुति भूतल बहुतक थोरे
पद्मनाभ मथुरेस विचारत श्री लछिमन भट सुत ओरे

खोज मे भी इन तीसरे पद्मनाभ का एक ग्रन्थ 'पद्मनाभ जी के पद'[1] नाम से मिला है। पदो मे गुजराती शब्दो की भरमार है । अत. अनुमान किया गया है कि यह गुजराती थे । यह

(१) खोज रि० १९२२।१२६

गुजरातीशब्द-बाहुल्य किसी गुजराती प्रतिलिपिकार के कारण भी सम्भव है। रिपोर्ट में उद्धृत पदो मे वल्लभ और उनके पिता लक्ष्मण भट्ट का नाम आया है।

१ 'श्री वल्लभ पद पकज माधुरी, जिनको अलिघा रुचि मानी'

२. 'श्री लक्ष्मण भटपुत्र पद रज बहुत रजधानी'

पद्मनाभदास जी का जन्म सवत १५२० मे कन्नौज मे एक कान्यकुब्ज ब्राह्मण परिवार मे हुआ था। १५५२ मे यह कन्नौज मे ही वल्लभाचार्य जी के पधारने पर पुष्टि सम्प्रदाय मे दीक्षित हुए थे। यह सवत्१६३० तक जीवित रहे। इनकी वार्ता 'चौरासी वैष्णवन की वार्ता' मे चौथी है। प्राचीन वार्तारहस्य, प्रथम भाग मे गुजराती मे जो विवेचन दिया गया है, उससे इनके जीवन-काल के सम्बन्ध मे विशेष जानकारी होती है।[१]

दूसरे पद्मनाभ अग्रदास के गुरु भाई थे। अग्रदास का समय स० १६३२ माना जाता है। यही इनका भी उपस्थितिकाल होना चाहिए। ग्रियर्सन (५०) और विनोद (१५७) मे भी यही इनका उपस्थितिकाल स्वीकृत है।

४७६।३६१

(३५) पारस कवि। इनके कवित्त सुन्दर है।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही। विनोद (२२०८) मे इनको वर्तमान प्रकरण के अतर्गत स० १६२६ के पूर्व स्थित कवियो मे माना गया है।

४७०।३६२

(३६) प्रेम कवि। ऐजन। इनके कवित्त सुन्दर हैं।

सर्वेक्षण

प्रेम कवि का एक घोर शृङ्गारी सवैया सरोज मे उदाहृत है '—

'रति के रस के, कुच के मसके, जे लई सिसके, ते अजौ कसकैं'

अतः सरोज के यह प्रेम, कोई रीतिकालीन कविद प्रतीत होते है।

खोज मे प्रेम नामक एक कवि मिले हैं, जिन्होने सं० १७४०, चैत सुदी १०, सोमवार को ६७ दोहो का प्रेम मजरी[२] नामक ग्रन्थ बनाया।

सतरै सै चालीतरा चैत्र मास उजियार
अटकनि अटकहि लिख चुके तिथि दसमी शिव वार

---

(१) प्राचीन वार्तारहस्य, प्रथम भाग, पृष्ठ १३८-१४१ (२) राज० रिपोर्ट, भाग २, पृष्ठ २५-५६

प्रथम दोहे मे गुरु गोविंद कूं प्रणाम किया गया है—

मन बच करूँ प्रणाम, प्रथमहि गुरु गोविंद कूं
पूजै मन की काम, जिनकी कृपा सु दृष्टि तैं १

इस गुरुगोविंद के तीन अर्थ हो सकते है— १ गुरु और गोविंद, २ गुरुरूपी गोविंद, ३ गोविंद नामक गुरु।

खोज मे एक प्रेम नामक कवि और मिले है। इनकी रचना का नाम उत्पत्ति अगाध बोध[1] है। इसमे भी प्रारम्भ मे इसी प्रकार गुरु गोविंद का स्मरण है।

गुरू गोविंद कृपा उर धारौं
ग्रन्थ अगाध बोध विस्तारौं

इस कवि का परिचय देते समय गुरु गोविंद का ऊपर लिखित तीसरा अर्थ लिया गया है और गुरु गोविंद की पहचान सिक्खो के दसवें गुरु गोविंदसिंह से की गई है। प्रेममजरी और उत्पत्ति अगाधबोध के रचयिता प्रेम एक ही प्रतीत होते है। गुरु गोविंद दोनो की एकता की ओर सकेत करता है। प्रेममजरी का रचनाकाल स० १७४० गुरु गोविंद सिंह के जीवनकाल स० १७२३-६५ के मेल मे भी है। प्रेममजरी कवि की प्रारम्भिक कृति होगी और उत्पत्ति अगाध-बोध उसकी वृद्धावस्था की।

४८१।३६३

(३७) पुरान कवि। ऐजन। इनके कवित्त सुन्दर हैं।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही। सरोज मे पुरान का एक कवित्त उदाहृत है, जो दिग्विजय-भूषण से उद्धृत है।

४८२।३६४

(३८) परवीने कवि। इनकी कविता देखने योग्य है।

सर्वेक्षण

सरोज के तृतीय सस्करण मे कवि का नाम पखाने है। सरोज के सशोधक श्री रूपनारायण पाडेय ने इसे अत्यन्त भ्रष्ट समझकर इसे परवीने बना दिया। सप्तम सस्करण मे यह इसी रूप मे उपस्थित है। सरोज मे जो ५ दोहे कवि के नाम पर उदाहृत है, वे 'दिग्विजय-भूषण' से उद्धृत हैं। दिग्विजय-भूषण मे 'अथ पखाने कवि कै' के अनतर ६ दोहे और ८ चौपाइयाँ उद्धृत हैं। इन्ही ६ दोहो मे से ५ सरोज मे अवतरित हैं। दिग्विजय-भूषण मे सकलित इन चौदहो छदो मे लोकोक्ति अलकार है। प्राय प्रत्येक छद मे 'कहै पखानो' शब्द आया है। व्रज जी ने 'पखानो' को कवि का

---

(१) खोज रि० १९३२।१६६

नाम समझ लिया। वस्तुत 'पखानो' उपाख्यान का तद्भव रूप है। उपाख्यान का अर्थ है लोकोक्ति अथवा कहावत। व्रज जी ने इस रहस्य को नही समझा। सरोजकार ने भी मक्षिका-स्थाने मक्षिका रख दिया।

पखाने कवि के नाम पर जो कविताएँ उदाहृत है, वे जयपुर के कवि राय शिवदास की हैं और उनके रसग्रन्थ 'लोकोक्तिरस कौमुदी' से ली गई है। यह ग्रन्थ स० १८०९ मे लिखा गया। इसमे लोकोक्तियो मे नायिका-भेद कहा गया है। महामहोपाध्याय पडित सुधाकर द्विवेदी ने स० १९४७ मे इस अत्यन्त सरस ग्रन्थ को सशोधित तथा सम्पादित कर भारत जीवन प्रेस, काशी से प्रकाशित कराया था। इस मुद्रित सस्करण की एक प्रति काशी के कारमाइकेल पुस्तकालय मे है। ग्रन्थ की एक हस्तलिखित प्रति बलरामपुर के राज पुस्तकालय मे है। वहाँ के दरबारी कवि व्रज ने इसी हस्तलिखित प्रति का उपयोग किया था। यह ग्रन्थ खोज[1] मे मिल चुका है।[2]

४८३।४०७

(३९) पुष्कर कवि। इन्होने 'रस-रतन' नामक साहित्य का ग्रन्थ बनाया है।

सर्वेक्षण

पुष्कर कवि जाति के कायस्थ थे। मैनपुरी जिले मे भोगाँव के पास सोम तीर्थ है। यही प्रतापपुरा मे इनका जन्म हुआ। यह बेन के प्रपौत्र थे। इनके पिता तीन भाई थे—प्रतापमल, मोहन दास और हरिवश। पुष्कर मोहनदास के पुत्र थे। यह स्वय सात भाई थे—१ पोहकर या पुष्कर, २. सुन्दर ३ राघव रतन, ४ मुरलीधर, ५ शकर, ६ मकरद राय और ७ सकत सिंह। यह जहाँगीर के शासनकाल मे हुए। जहाँगीर ने इन्हे किसी बात पर कैद कर लिया था। बदीगृह मे ही इन्होने 'रस रत्न' नामक ग्रन्थ लिखा।[3]

रस-रत्न, साहित्य-शास्त्र का ग्रन्थ नही है जैसा कि सरोज मे लिखा गया है। यह एक उत्पाद्य-प्रेम कहानी है। इसमे सयोग और वियोग की विविध दशाओ का साहित्य की रीति पर वर्णन है। वर्णन उसी ढग के है जिस ढग के मुक्तक कवियो ने किए हैं। पूर्वराग, सखी, मडन, नखशिख, ऋतु वर्णन आदि शृङ्गार की सब सामग्री एकत्र की गई है। कविता सरस और प्रौढ है।[4] इसमे चपावती नगरी के राजा विजयपाल की बेटी रम्भावती और वैरागढ के राजा सोमेश्वर के बेटे सूरसेन की प्रेम-कथा है। कहते हैं कि जहाँगीर ने बदी की कवि-प्रतिभा से प्रसन्न होकर उसे मुक्त कर दिया था। इस ग्रन्थ की रचना स० १६७३ मे हुई थी—

---

(१) खोज रि० १९०९।२४१ (२) हरिऔध, अप्रैल १९५६ मे मेरा लेख, शिवसिंह सरोज के परवीने कवि, पृष्ठ १४-२८। (३) खोज रि० १९०५।४८, १९०६।२०८, १९१७।१४०, १९२०।१२८, पजाब रि० १९२२।८४ (४) हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ २२८

अग्नि[३] सिंधु[७] रस[६] इंदु[१] प्रवाना
सो विक्रम सवत ठहराना—खोज रि० १९०५।४८

खोज मे इनका एक गन्थ नखशिख[१] और मिला है।

४८४।४१०

(४०) पराग कवि वनारसी, स० १८८३ मे उ०। यह कवि महाराजा उदितनारायण सिंह काशी-नरेश के यहाँ थे। तीनो काड अमरकोष की भाषा की है।

सर्वेक्षण

महाराज उदितनारायण सिंह का शासनकाल स० १८५२-९२ है।[२] अत' सरोज मे दिया स० १८८३ कवि का उपस्थितिकाल है। इस कवि के सम्बन्ध मे और कोई सूचना सुलभ नही।

४८५।

(४१) पहलाद वदीजन, चरखारी वाले। राजा जगतसिंह वु देला चरखारी वाले के यहाँ थे

सर्वेक्षण

चरखारी राज्य की स्थापना स० १८२२ मे खुमान सिंह के द्वारा हुई। स० १८२२ और सरोज के प्रणयनकाल स० १९३४ के वीच चरखारी मे जगत सिंह नाम का कोई राजा नही हुआ।[३] चरखारी राज्य के सस्थापक खुमान सिंह प्रसिद्ध छत्रसाल के प्रपौत्र, जगतराज के पौत्र और कीर्ति सिंह के पुत्र थे। जगत राज के हिस्से मे चरखारी भी सम्मिलित था। जगतराज ने स० १८१५ तक शासन किया। सरोजकार का अभिप्राय इन्ही जगतराज से है, और पहलाद का समय भी स० १८१५ के आस-पास होना चाहिए।

चरखारी के किस राजा के दरवार मे कौन कवि हुआ, इसका वर्णन चरखारी के ही गोपाल कवि ने एक छप्पय मे किया है। इस कवि की कविता के उदाहरण मे उक्त छप्पय सरोज मे उद्धृत है। इस छप्पय के अनुसार पहलाद कवि जगतेस के पास थे।[४]

पहलाद, चरखारी के प्रसिद्ध कवि खुमान के पितामह के पितामह थे। इनके पिता का नाम हरिचन्दन और पितामह का हर्ठेसिंह था। यह लोहट मे रहते थे। इनके पुत्र दानीराम, पौत्र उदयभान, प्रपौत्र उदित और प्र-प्रपौत्र खुमान थे। खुमान ने लक्ष्मण-शतक मे यह वश-परपरा स्वय दी है।[५]

---

(१) खोज रि० १९०३।१९१ (२) 'ससार' साप्ताहिक का काशीराज्य विशेषाक (३) ना० प्रचारिणी पत्रिका, भाग ९, अक ४, माघ स० १९८५, चरखारी राज्य के कवि (४) देखिए, यही ग्रन्थ, पृ० २९२

४८६।४०२

(४२) पंचम कवि, वदीजन, डलमऊ, जिले रायबरेली, स० १९२४ मे उ० ।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही । सरोज-दत्त स० १९२४ कदापि जन्मकाल नही हो सकता, क्योकि यदि यह जन्मकाल है तो सरोज के प्रणयन के समय कवि की वय केवल १० वर्ष की होती है और इस अल्प-आयु मे कोई कवि नही वन सकता ।

४८७।

(४३) प्रेमनाथ, ब्राह्मण, कलुआ जिले खीरी के, स० १८३५ मे उ० । राजा अली अकबर मोहम्मदी वाले के यहाँ थे । इन्होने ब्रह्मोत्तर खण्ड की भाषा की है ।

सर्वेक्षण

प्रेमनाथ मोम्हमदी जिला सीतापुर के राजा अली अकबर के यहाँ थे । इन्ही के यहाँ नैषध-चरित के प्रसिद्ध अनुवादक गुमान मिश्र थे । प्रेमनाथ कृत 'ब्रह्मोत्तरखड भाषा' की कोई प्रति अभी तक खोज मे नही मिली है । इनका एक अन्य ग्रन्थ 'महाभारत आदिपर्व' मिला है । इसका रचना-काल स० १८३९ है ।

ग्रह[९] गुन[३] वामहि जानु, जेष्ठ सुकुल गौरी दिवस

पूर्न ग्रन्थ यह जानु, प्रेमनाथ मोहे सक्त—खोज रि० १९१२।१३६

संभवत 'वामहि' के वदले 'वसु महि' पाठ रहा होगा । सरोज-दत्त स० १८३५ ठीक है और कवि का उपस्थितिकाल है ।

४८८।

(४४) प्रेम पुरोहित ।

सर्वेक्षण

प्रेम पुरोहित ने विहारी-सतसई के दोहो का कोई क्रम दिया है । इस सम्बन्ध मे रत्नाकर जी ने विहारी सतसई सम्बन्धी साहित्य मे विचार किया है ।[१] प्रेम पुरोहित का क्रम ग्यारहवाँ है । इस क्रम की एक सतसई जयपुर से रत्नाकर जी के पास आई थी । इसके प्रारम्भ मे ७ दोहे भूमिका स्वरूप थे । इसके दूसरे तीसरे दोहे ये हैं—

विप्र विहारी नाम हुव, सोती ख्याति प्रवीन

तिन कवि साढ़े सात सैं, दोहा उत्तम कीन २

बीते काल अपार तें, भए व्यतिक्रम देखि

करे अनुक्रम फेरि तें, प्रोहित प्रेम विसेखि ३

इससे प्रकट होता है कि विहारी के बहुत दिनो पश्चात् प्रेम पुरोहित ने यह अनुक्रम वाँधा था । रत्नाकर जी के अनुसार यह क्रम विषयानुसारी है । सातवे दोहे का उत्तरार्द्ध यह है—

'करे अनुक्रम राम जू जातें समझैं छिप्र'

रत्नाकर जी का अनुमान है कि यह अनुक्रम प्रेम पुरोहित ने जयपुर नरेश उन राम सिंह के लिए प्रस्तुत किया जो स० १८९१ मे सिंहासनारूढ हुए थे ।

विनोद मे (१९८४) एक रामजू हैं जिन्होंने विहारी-सतसई की एक टीका लिखी है । रत्नाकर जी का अनुमान है कि सभवत. ऊपर उद्धृत दोहे का ठीक-ठीक अर्थ न समझ पाने के

---

(१) नागरी प्रचारिणी पत्रिका, भाग ९, अंक १, पृष्ठ ८४, ८७

कारण राम जू की कल्पना कर ली गई है और अनुक्रम को टीका समझ लिया गया है। किंतु बात ऐसी नही है। विनोद मे राम जू का उल्लेख यह टीका देखकर नही हुआ है, सरोज देखकर हुआ है।

बिहारी सतसई की एक प्रति रत्नाकर जी के देहावसान के अनतर सन् १९३८ ई० मे मिली है।[१] यह प्रेम पुरोहित वाली टीका से सयुक्त है। इसके प्रारम्भ मे भूमिका सम्बन्धी सातो दोहो के अतिरिक्त सर्वप्रथम मगलाचरण सम्बन्धी दोहे भी है। मगलाचरण का पहला दोहा बिहारी का सुप्रसिद्ध दोहा 'मेरी भव बाधा हरो' है। दूसरा मगलाचरण प्रेम पुरोहित का है—

गज मुख, मोदक प्रिय मुदित, मूषक वाहन जास
विघन हरन, विधुवर विमल, नमो प्रेम नित तास २

तीसरा मंगलाचरण कवि राम का है—

नाग धरन सुत, नागधर, नाग वदन सुख जाल
इकहि जु छवि कवि राम कहि, दूज सोभै सुभ लाल ३

इसके आगे प्रेम कवि का मगलाचरण सम्बन्धी यह दोहा और है—

खान पान परधान बहु पान वान दिन दान
बुधिदा विधि बन आदि सों नमो प्रेम तिहि बान ४

इसके आगे भूमिका सम्बन्धी सातो दोहे हैं, जिनकी क्रमसख्या अलग से पुनः २ से ७ तक दी गई है। एक अक वाला दोहा नही है।

प्रेम पुरोहित वाली टीका पर विचार करते हुए रत्नाकर जी लिखते हैं, "इस क्रम मे यह विलक्षणता है कि मगलाचरण का दोहा 'मेरी भव बाधा' इत्यादि न होकर 'प्रगट भए द्विजराज कुल' इत्यादि है।" इस प्रति मे यह दोहा भूमिका वाले दोहो के समाप्त होने पर 'श्रीकृष्ण के दोहा' शीर्षक के नीचे प्रथम दोहा है। स्पष्ट है कि यह दोहा मगलाचरण रूप मे नही स्वीकृत है। १९३८ ई० वाली प्रति मे 'मेरी भव बाधा हरौ' वाला दोहा ही मगलाचरण के स्थान पर सर्वप्रथम दिया गया है। रत्नाकर जी वाली प्रति मे यह दोहा और मगलाचरण सम्बन्धी अन्य तीन दोहे नही है।

इस विस्तृत विवरण से इतना तो स्पष्ट है कि बिहारी-सतसई का एक अनुक्रम प्रेम पुरोहित ने लगाया। सन् १९३८ मे प्राप्त प्रति स० १८९० की लिखी हुई है, अत कवि उसी समय का है अथवा उससे कुछ पूर्ववर्ती है। ऐसी स्थिति मे जयपुर की गद्दी पर स० १८९१ मे बैठने वाले राम सिह को इसमे घसीटना ठीक नही, क्योकि वे परवर्ती सिद्ध हो जाते हैं। इस प्रति के मगलाचरण के तीसरे दोहे से स्पष्ट है कि इस ग्रन्थ से कवि राम का भी कुछ लगाव है। या तो यह प्रेम पुरोहित के भी कुछ बाद हुए अथवा दोनो समकालीन हैं। प्रेम पुरोहित और राम कवि के अनुक्रम एक ही हैं। ऐसी स्थिति मे मेरी यह धारणा है कि दोनो कवि समकालीन एव सह-श्रमी है। भरतपुर मे 'प्रेम' और 'राम' नामक वीररस के दो कवि साथ-साथ हुए है। कवि राम सूरजमल (शासन काल स० १८१२-२०) और कवि प्रेम मूल नाम मुरलीधर रणजीत सिंह (शासनकाल स० १८३४-६२) के दरबार मे थे।[२] हो सकता है कि यह अनुक्रम इन्ही का कृत्य हो।

बुन्देल-वैभव के अनुसार सतसई का अनुक्रम लगानेवाले राम जू कवि का जन्मकाल स० १६९२ एव कविताकाल स० १७२० है। इनका जन्म ओरछा मे हुआ था और यह ओरछा नरेश सुजान सिह के दरबारी कवि थे।[३]

---

(१) खोज रि० १९३८।११९ (२) माधुरी, फरवरी १९२७, मयाशकर याज्ञिक का 'भरतपुर और हिन्दी' शीर्षक लेख (३) बुदेल वैभव, भाग २, पृष्ठ ७९९

४८९।

(४५) राम पूरनचन्द। इन्होने 'राम-रहस्य रामायण' बनाई है।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही। प्रथम सास्करण मे कवि का नाम 'राम पूरनचन्द' एव अन्यो मे 'पूथ पूरनचन्द' है।

---

(४६) पुड कवि उज्जैन के निवासी, स० ७७० मे उ०। टाड साहब अपनी किताब 'राजस्थान' मे अवतीपुरी के पुराने प्रवन्धो के अनुसार लिखते है कि सवत् ७७० विक्रमी मे राजा मान अवतीपुरी का राजा बडा पडित और अलकार ज्ञान मे अद्वितीय था। उसके पास पुड भाट ने प्रथम सास्कृत अलकार ग्रन्थ पढा, पीछे भाषा मे दोहे बनाए। इसी राजा मान के सवत् ७७० मे राजा भोज उत्पन्न हुआ। हमको भाषा काव्य की जड यही कवि मालूम होता है क्योकि इससे पहले के किसी भाषा कवि और काव्य का नाम मालूम नही होता।

सर्वेक्षण

इस कवि का विवरण टाड के आधार पर किया गया है। टाड के अनुसार Pnshha ने अवती के राजा मान (जो कि भोज का बेटा था) की प्रशस्ति उनके चित्तौर के निकट बनवाए विशाल सरोवर 'मान सरवर' के तट पर निर्मित शिला-स्तभ का लेख रचा था। इस लेख को कदण के पौत्र सेवादित ने स० ७७० मे उत्कीर्ण किया था। Puhha ने कोई अलकार का ग्रन्थ नही रचा। वह अलकार मे प्रवीण अवश्य था (Verseel Alankars)।[1] स्पष्ट है कवि का नाम न तो पुण्ड है, न पुष्प है, न पुण्य और न पुष्पी है। यह कवि अपभ्रंश के प्रसिद्ध कवि पुष्पदत से २५० वर्ष पूर्व हुआ है, अत यह उससे भिन्न है। यह उमसे अभिन्न नही है जैसा कि डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी अनुमान करते हे।[2]

टाड के अनुसार यह नही सिद्ध होता है कि मान सास्कृत अलकार विद्या का पडित था और पूष ने उससे अलंकार पढा। भोज मान का बाप था न कि उसका पुत्र, और न भोज का जन्म-काल ही स० ७७० है। टाड से यह भी नही पता चलता है कि उक्त शिलालेख किस काल मे है। शिलालेख का अंग्रेजी अनुवाद टाड मे दिया गया है[3]।

फ

४९१।४११

(१) फेरन कवि। इनका काव्य बहुत ही सुन्दर है।

सर्वेक्षण

फेरन का कोई ग्रथ नही मिलता, केवल फुटकर रचनाएँ मिलती हैं। विनोद मे इनका दो बार उल्लेख है। एक बार अज्ञातकालिक प्रकरण मे सख्या १५५७ पर और दूसरी बार सख्या २०८२ पर। यहाँ इन्हे रीवाँ नरेश महाराज विश्वनाथ सिंह जू देव (शासनकाल स० १८९२-१९११) का दरबारी कवि कहा गया है और इनका रचनाकाल स० १९२० दिया गया है।

४९२।४१२

(२) फूलचद कवि। ऐज़न। इनका काव्य बहुत ही सुन्दर है।

सर्वेक्षण

इस कवि का कोई पता नही।

४९३।४१३

(३) फूलचद ब्राह्मण, बैसवारे वाले, स० १९२८ मे उ०।

---

(१) टॉड का राज स्थान, भाग १, द्वितीय संस्करण पृ० ६२५-२६ (२) हिन्दी साहित्य का आदि काल, पृ० ७(३) टॉड का राजस्थान, भाग १, द्वितीय सस्करण, पृ० ६२५-२६

सर्वेक्षण

फूलचद त्रिवेदी ब्राह्मण थे, बालादीन के पुत्र थे और रायबरेली जिले के रहनेवाले थे। इन्होंने स० १९३० मे 'अनिरुद्ध-स्वयवर'[1] नामक ग्रथ लिखा था। सरोज मे इनकी कविता का उदाहरण देते समय इनके नाम के आगे भोजपुर लिखा हुआ है, जो इनके गाँव का सूचक है। सरोज मे उदाहृत छद मे किसी रनजीत की प्रशसा है। यह रनजीत सम्भवत सरोजकार के पिता हैं।

४६४।

(४) कालकाराव अनोवानरह्य ग्वालियर निवासी स० १९०१ मे उ०। यह पडित जी लछिमनराव के मत्री और महान कवि थे। इन्होने कवि प्रिया का तिलक बहुत सुन्दर बनाया है।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही।

४६५।

(५) फैजी, शेख अबुलफैज, नागौरी, शेख मुबारक के पुत्र, स० १५८० मे उ०। इनको छोटे-बडे सभी विद्वान् भली भाँति जानते है कि यह अरबी, फारसी और सस्कृत भाषा मे महानिपुण थे। इनका ग्रन्थ भाषा का हमने नही पाया, केवल दोहरे मिले है। यह अकबर के दरबार के कवि थे।

सर्वेक्षण

ग्रियर्सन (११०) ने ब्लाचमैन कृत आईन-ए-अकबरी के अग्रेजी अनुवाद के आधार पर फैजी का जन्मकाल ९५४ हिजरी या १५४७ ई० दिया है। सरोज मे दिया स० १५८० ईस्वी-सन् मे कवि का उपस्थितिकाल है। सरोजकार ने अकबरी दरबार के प्राय सभी कवियो का समय ईस्वी-सन् मे दिया है, जो सदैव उपस्थितिकाल है।

४६६।

(६) फहीम, शेख अबुलफजल फैजी के कनिष्ठ सहोदर, स० १५८० मे उ०। इनके केवल दोहरे हमने पाए हैं, ग्रन्थ कोई नही मिला। यह अकबर के वजीर थे।

सर्वेक्षण

ग्रियर्सन (११०) मे फहीम का जन्मकाल अनुमान से १५५० ई० दिया गया है। यह फैजी (जन्मकाल १५४७) के छोटे भाई थे, अत ग्रियर्सन का अनुमान ठीक हो सकता है। सरोज में दिया हुआ स० १५८० ईस्वी-सन् है और कवि का उपस्थितिकाल है। यदि ऐसा नही माना जाता तो मानना पड़ेगा कि दोनो भाई जुड़वाँ थे, क्योकि दोनो भाइयो को स० १५८० मे उ० कहा गया है।

---

(१) खोज रि० १९०६, पृष्ठ ४६६, सख्या ४३

व

४६७।४६७

ब्रह्म कवि, राजा वीरवल ब्राह्मण अतरवेद वाले, सं० १५८५ मे उ० । इनका प्रथम नाम महेश दास था । यह कान्यकुब्ज ब्राह्मण दुवे, जिले हमीरपुर के किसी गाँव के रहने वाले थे । काव्य पढ लिख कर राजा भगवानदास आमेर नरेश के यहाँ कवियो मे नौकर हो गए। राजा भगवानदास ने इनकी कविता से वहुत प्रसन्न होकर अकवर वादशाह को नजर के तौर दे दिया । यह कवि काव्य मे अपना उपनाम 'ब्रह्म' रखते थे । अकवर ने कविता के सिवा इनमे सब प्रकार की वुद्धि पाकर पूर्व-सस्कार के अनुसार प्रथम अपना मित्र बनाकर कविराय की पदवी दी, तदुपरात पाँच हजारी का मनसव और मुसाहेव दानिशवर राजा वीरवल का खिताव दिया । इनके विचित्र जीवन चरित्र तवारीखो मे लिखे हैं । सन ६६० हिजरी मे विजौर इलाके कावुल मे पठानो के हाथ से समर भूमि मे मारे गये । इनका समग्र ग्रथ तो कोई हमने देखा सुना नही, पर इनकी फुटकर कविता वहुत-सी हमारे पुस्तकालय मे हैं । सूरदास जी ने कहा है—

सुन्दर पद कवि गंग के, उपमा को वरवीर
केसव अर्थ गंभीर को, सूर तीन गुन तीर

राजा वीरवल ने अकवर के हुक्म से अकवरपुर गाँव जिले कानपुर मे वसाकर आपने भी अपना निवास-स्थान उसी को नियत किया और नारनौल कसवे मे इनकी पुरानी वडी आलीशान इमारतें आज तक मौजूद हैं । चौधराई का ओहदा वहुधा ब्राह्मणो को मिला, गोवध वद हुआ, और हिंदू-मुसलमानो मे वहुत मेल जोल हो गया । ये सब वातें इन्ही महाराज की कृपा से हुई थी ।

सर्वेक्षण

अकवरी दरवार के हिंदी कवि मे वीरवल पर पर्याप्त विचार हुआ है[1] । इस ग्रथ के अनुसार ब्रह्म का असल नाम महेश दास था । इनके पिता का नाम गगा दास था । यह ब्रह्म-भट्ट थे । भट्ट को निकाल कर इन्होने केवल 'ब्रह्म' अपना उपनाम रख लिया था । इनका जन्म-स्थान काल्पी सरकार के अतर्गत तिकवाँपुर है । यह वही तिकवाँपुर है, जो अब कानपुर जिले मे है और जहाँ के रहने वाले भूषण, मतिराम आदि थे । इसी तिकवाँपुर से दो मील के अतर पर वीरवल द्वारा वसाया हुआ 'अकवरपुर वीरवल' नामक गाँव है ।

सरोज मे दिया गया स० १५८५ इनका जन्मकाल माना गया है । राजा वीरवल नामक ग्रन्थ मे इनका जन्मकाल स० १५८५ स्वीकार किया गया है । सरोज का स० १५८५ वस्तुत. ईस्वी-सन् है और यह कवि का उपस्थितिकाल है ।

कई दरवारो मे घूमते-घामते वीरवल अकवर के यहाँ पहुँचे थे । स्मिथ एव टॉड के अनुसार वीरवल पहले आमेर नरेश भगवानदास के यहाँ थे । इन्ही भगवानदास ने इन्हे अकवरी दरवार मे पहुँचाया । सरोज का भी यही कथन है । यह रीवाँ नरेश राम सिंह के भी यहाँ रह चुके थे । अकवर ने इन्हे कविराय की उपाधि दी थी और नगर कोट, पजाब, के पास अच्छी जागीर दी थी । इन्हे राजा की भी उपाधि दी थी और लाहौर के मिर्जा इब्राहीम के भाई मसऊद को पकड लाने के उपलक्ष मे मुसाहिव दानिशवर की उपाधि दी थी ।

(१) अकवरी दरवार के हिन्दी कवि, पृष्ठ ७६-८७

बीरवल की मृत्यु माघ सुदी १२, शुक्रवार, सं० १६४२ को काबुल के इलाके मे एक युद्ध मे हुई, जिसमे पारस्परिक द्वेष भी मिला हुआ था।

बीरवल दीन इलाही के सदस्य थे। साथ ही इनका सपर्क वल्लभ-संप्रदाय से भी था। इनकी बेटी इस सप्रदाय मे दीक्षित थी। अष्टछाप के प्रसिद्ध कवि मथुरिया छीत स्वामी इनके पुरोहित थे।

ब्रह्म के फुटकर छद ही मिलते हैं। इनके १०० कवित्त-सवैये अकबरी दरबार के हिंदी कवि में सकलित हैं। इनका एक कवित्त सग्रह[1] लखनऊ विश्व-विद्यालय के प्रोफेसर स्व० प० बद्रीनाथ भट्ट के पास था। इसमे कुल २३ कवित्त थे। इनका एक लघु-ग्रथ 'सुदामाचरित[2]' मिला है। रिपोर्ट मे प्रथम एव अतिम कवित्त उद्धृत हैं। अतिम कवित्त मे कवि ब्रह्म छाप भी है। पुष्पिका मे 'इति श्री बीरबल कृत सुदामाचरित्र सपूर्ण' लिखा हुआ है। ग्रथ गुटकाकार २३ पन्ने का है। यह अनूप संस्कृत पुस्तकालय, बीकानेर मे है। ब्रह्म छाप वाला अतिम कवित्त यह है—

जाके दरबार 'कवि ब्रह्म' व्यास बालमीकि,
कहाँ हाहा हूहू गायत सु कैसे कै रिझायबौ
रुद्र से महा सिंगारी, नारद से बीन धारी
रमा सी निरतकारी, सुक से पढायबौ
बैकुंठ निवासी आय, भयो ब्रजबासी स्याम
राधिका रमन कविवरन सोइ गायबौ
सुदामा चरित्र चितामनि सब सावधान
कंठ के पियार राखि साधनि सुनायबौ

'सुंदर पद कवि गग के' वाला दोहा सूर का नही है, न जाने किस अज्ञात कुल शील कवि आलोचक की रचना है।

ब्रह्म का उल्लेख सरोज मे एक बार पुन. हुआ है।[3]

४६८।४२७

(२) बुद्धराव, राव बुद्ध हाडा बूँदी वाले, स० १७५५ मे उ०। यह महाराज बूदी के राजा और आमेर वाले जयसिंह सवाई के बहनोई थे। बहादुर शाह बादशाह ने इनका बडा मान किया। इस बादशाह के यहाँ दूसरे की ऐसी इज्जत न थी। जब सय्यद बारहा बादशाह को बेदखल कर आपही बादशाही नक्कारा बजाते हुए गली कूचो मे निकलने लगा, तब भला इस शूर वीर से कब रहा जा सकता था। सय्यदो का मुंह तरवार की धार से फेर दिया और तमाम उमर बादशाह के यहाँ रहे। इनकी कविता बहुत ही अपूर्व है। यह कवि लोगो का बहुत मान-दान करनेवाले थे।

---

(१) खोज रि०, १९२३।६७ (२) राज० रि०, भाग ४, पृष्ठ ३२-३३। (३) देखिए यही ग्रंथ, कवि संख्या ५८६

सर्वेक्षण

रावराजा बुद्ध सिंह का जन्म स० १७४२ मे हुआ था। यह बूँदी नरेश महाराज अनिरुद्ध सिंह की मृत्यु के अनतर पौष कृष्ण १३ को, १० वर्ष की वय मे बूँदी के राजा हुए थे। सम्राटो के निर्माता सैयद बधुओ का इन्होने पूरा विरोध किया था। यह स्वय अच्छे कवि एव कवियो के उदार आश्रयदाता थे। श्रीकृष्ण भट्ट, 'लाल' कवि-कलानिधि पहले इन्ही के दरबार मे थे, फिर यही से जयपुर नरेश सवाई जयसिंह इन्हे माँग ले गए थे। यह जयसिंह राव बुद्ध सिंह के साले थे। जय सिंह यद्यपि बडे पडित और शूर थे, पर राज्य का लोभ कुछ ऐसा था कि इन्होने अपने बहनोई रावराजा बुद्ध सिंह को स० १७८७ मे हराकर गद्दी से उतार दिया था। बुद्ध सिंह की मृत्यु स० १७९६ मे हुई। उस समय यह बूंदी के शासक नही थे।[1] रावराजा इनकी पुश्तैनी उपाधि थी। बहादुरशाह ने इन्हे महारावराजा की उपाधि दी थी, क्योकि औरंगजेब की मृत्यु के अनंतर सं० १७६४ मे मुगल साम्राज्य के उत्तराधिकार के लिए हुए जाजव के युद्ध मे इन्होंने उसकी सहायता की थी। इनके दरबार मे लोकनाथ कवि थे। भूषण ने भी इनकी प्रशंसा एक कवित्त मे की है।

बुद्ध सिंह का लिखा एक रीति ग्रंथ 'स्नेह तरग' खोज मे मिला है।[2] इसमे दोहा, कवित्त, सवैया और छप्पय छंदो का प्रयोग हुआ है। इसकी छद संख्या ४४६ है। ग्रथ ब्रजी मे है और १४ तरंगो मे विभक्त है। इसमे रस और अलंकार दोनो हैं। इस सबंध मे कवि स्वयं कहता है —

नव रस पिगल छद कछु अलकार बहु रंग
कवि पडित हित समझि के बरन्यौ नेह तरंग ४४५

ग्रंथ की रचना स० १७८४ मे भादो सुदी ९, सोमवार को हुई —

सतरह सै चौरासिया, नवमी तिथि ससिवार
शुक्ल पच्छ भादो प्रगट, रच्यो ग्रंथ सुख सार ४४६

पुष्पिका मे कवि नाम आया है।

इति श्री नेह तरग रावराजा बुद्ध सुरचिता अलकार निरूपन नाम चतुरदशे तरग ॥१४॥

४९९।४३८

(३) बलदेव कवि १, बघेली खंडी, स० १८०९ मे उ०। यह कवि राजा विक्रमसाहि बघेली देवरा नगर वाले के यहाँ थे। उन्ही राजा की आज्ञानुसार एक 'सत्कविगिराविलास' नामक बहुत ही अद्भुत सग्रह-ग्रथ इन्होने बनाया। इस ग्रथ मे १७ कवियो की कविता है। उसमे शंभुनाथ मिश्र, शभुराज सोलकी, चितामणि, मतिराम, नीलकंठ, सुखदेव पिंगली, कविंद त्रिवेदी, कालिदास, केशवदास, बिहारी, रवि दत्त, मुकुदलाल, विश्वनाथ अताई, बाबू केशवराय, राजा गुरुदत्तसिंह अमेठी, नवाब हिम्मतबहादुर, दूलह और बलदेव का महाविचित्र काव्य है।

---

(१) माधुरी, वर्ष ७, खंड २, अंक १, माघ १९८५, पृष्ठ १३१-३४ (२) राज० रि०, भाग १, एवं भाग ४, पृष्ठ १३२, खोज रि० १९३८।१९

सर्वेक्षण

रीवाँ राज्य के अंतर्गत देउरा नामक एक बहुत बडा इलाका अथवा छोटी रियासत थी, किंतु जमींदारी-उन्मूलन कानून ने रियासत के अस्तित्व को समाप्त कर दिया है। उसके मालिक अब भी हैं। देउरा आजकल देवराज नगर कहलाता है, पर पारस्परिक बात-चीत मे अब भी लोग उसे देउरा ही कहते हैं। पहले यह रीवाँ जिले मे था। विंध्य-प्रदेश के निर्माण काल से वह सतना जिले मे चला गया। यह सोनभद्र के किनारे बसा हुआ है। यहाँ डाकखाना और मिडिल स्कूल है। विक्रमसाहि बघेल यही के राजा थे। इन्ही के दरबार मे रहकर बलदेव कवि ने सरोज की भूमिका के अनुसार सं० १८०३ मे 'सत्कविगिराविलास' की रचना की थी। इस ग्रंथ की कोई प्रति अभी तक खोज मे उपलब्ध नही हुई है। सरोज मे उद्धृत छदो मे से एक मे कवि ने देउरा का वर्णन इस प्रकार किया है—

'पूरन पाइ चले जहँ पुन्य सु भूमि को भूषन देवरा राजत

एक छंद मे विक्रमसाहि की सभा का वर्णन इस प्रकार है—

बैठि सिंहासन राजत आपु लसैं कवि कोविद वीर खुमानी
देखि सभा वर विक्रम भूप की नीकी लगे न सुरेस कहानी

इन विक्रमसाहि को चरखारीवाले विक्रम साहि समझने का भ्रम न होना चाहिए।

इन बलदेव का 'दशकुमार चरित्र'[1] नामक ग्रंथ खोज मे मिला है। नीचे के दोहो मे कवि और आश्रयदाता का नाम आया है—

दीन्हों आयसु करि कृपा श्री विक्रम महिपाल
दसकुमार की सब कथा भाषा करो बिसाल ५
पाइ हुकुम, बलदेव कवि कीन्हों ग्रथ प्रकास
जाते जानें जगत के नृप नृप-नीति-बिलास ६

पुष्पिका से इनका बघेली खडी होना सिद्ध है।

इति सकलाराति जनाकी कीर्ति छपामुखाभ्युदित यश चद्रिकानन्दिता मित्र चकोर बघेल वसावतंस श्री महाराजकुमार विक्रमाजीत देव प्रोत्साहित बलदेव कवि विरचिते दसकुमारचरिते अपहार वर्मा चरित नाम सप्तमोच्छ्वासः।

खोज में कादवरी का एक पद्यात्मक भाषानुवाद मिला है।[2] इसकी रचना बलदेव ने सं० १८४१ मे की—

चंद[1] वेद[4] वसु[8] चद[1] पुनि लिखि सवत लखि लेहु
सावन वदि गुरु त्रैदसी रची ग्रथ करि नेहु
ग्रथ नाम कादवरी कियो सुकविवर बान
ले ताको छाया कियो सोई धरि अभिधान

दिनोद (१०१३) मे यह ग्रथ बघेलखडी बलदेव का स्वीकार किया गया है। इस ग्रथ की रचना

---

(१) खोज रि० १९०४।२३१ (२) खोज रि० १९०५।५८

बलदेव ने किसी गौरीप्रसाद की आज्ञा से की थी। यह सूचना पुष्पिका से मिलती है। विनोद में, बलदेव बघेलखडी का जन्मकाल स० १८०९ दिया गया है, और रचनाकाल स० १८३५। बलदेव ने स० १८०३ मे 'सत्कविगिराविलास' की रचना कर ली थी। ऐसी स्थिति मे १८०९ कदापि जन्मकाल नही हो सकता। इसमे सदेह नहीं कि दशकुमार चरित और कादबरी, इन दोनो ग्रथो के अनुवादक दोनो बलदेव एक ही हैं। अत ये सत्कविगिराविलास वाले बलदेव से अभिन्न हैं। इनका रचनाकाल स० १८०३-४१ है।

५००।४३९

(४) बलदेव कवि, चरखारी वाले, २, स० १८९६ मे उ०। यह बहुत अच्छे कवि थे।

सर्वेक्षण

चरखारी नरेश विजय विक्रमाजीत, शासनकाल सं० १८३९-८६, के दरबारी कवि प्रसिद्ध खुमान थे। यह किसी बात पर रूठकर ग्वालियर चले गए थे। बलदेव इन्ही खुमान के नाती थे। यह चरखारी नरेश जयसिह के शासनकाल स० १९१७-३७ के बीच किसी समय चरखारी लौट आए। जयसिह ने खुमान का पुराना अपराध क्षमा कर उन्हे माफी मिले गाँव वापस दे दिए।[१] सरोज मे दिया स० १८९६ इनका प्रारभिक रचनाकाल हो सकता है। विनोद (१८४६) मे इसे रचनाकाल ही माना गया है। विनोद के अनुसार इनका एक ग्रथ 'विचित्र रामायण' है, यह कथन ठीक नहीं। विचित्र रामायण की रचना बलदेव खडेलवाल ने स० १९०३ मे भरतपुर नरेश बलवत सिह के लिए की थी। यह हनुमन्नाटक का अनुवाद है।[२]

सरोज मे इनका एक ही कवित्त उद्धृत है, जिसमे द्विज मोहन कवि की प्रशस्ति है।

> राम पद भक्ति माह आठो जाम राचो रहै
>
> साचो द्विज मोहन कविन मे कविंद है

सभवतः यह द्विज मोहन पद्माकर के पिता मोहनलाल भट्ट हैं, जो पन्ना नरेश हिंदूपत के गुरु थे।

५०१।४४८

(५) बलदेव क्षत्रिय ३, अवध इलाके के निवासी, सं० १९११ मे उ०। यह कवि महाराजा मान सिंह और राजा माधव सिंह के साहित्य विद्या के गुरु थे। यह काव्य मे बहुत अच्छे कवि हो गए हैं।

सर्वेक्षण

बलदेव जी अयोध्या नरेश मान सिंह द्विजदेव और अमेठी, सुलतान पुर नरेश राजा माधव सिंह, 'छितिपाल'—इन दोनो कवि राजाओ के काव्य-गुरु थे। द्विजदेव का काव्य-प्रेम स० १९०७ के

---

(१) ना० प्र० पत्रिका, भाग ६, अक ४, माघ १९८५, चरखारी राज्य के कवि (२) खोज रि० १९१७।१५

आस-पास अपने पूर्ण विकास पर था। अत. इनके काव्यगुरु बलदेव का सरोज-दत्त स० १९११ उपस्थितिकाल ही है।

५०२।४५८

(६) बलदेव कवि प्राचीन ४, स० १७०४ मे उ०। इनके कवित्त हजारे मे हैं।

सर्वेक्षण

इन बलदेव की रचना हजारे मे थी। अत. स० १८७५ के पूर्व इनका अस्तित्व सिद्ध है। यह स० १६५० और १८७५ के बीच किसी समय हुए। यह उल्लेख इनके शृगारी सवैये को देखकर किया जा रहा है।

५०३।४८२

(७) बलदेव कवि अवस्थी ५, दासापुर जिले सीतापुर के, वि०। इन्होने राजा दलथभन सिंह गौर सवैया हथिया के नाम 'शृगार सुधाकर' नामक नायिका भेद का ग्रथ बनाया है।

सर्वेक्षण

विनोद मे (२०८८) बलदेव अवस्थी का पूरा विवरण दिया गया है। इसके आधार पर इनका और इनके ग्रथो का परिचय दिया जा रहा है।

बलदेव अवस्थी, उपनाम द्विज बलदेव कान्यकुब्ज ब्राह्मण का जन्म कार्तिक वदी १२, स० १८९७, मौजा मानपुर, जिला सीतापुर मे हुआ था। इनके पिता का नाम ब्रजलाल था। ब्रजलाल जी खेती किसानी करते थे। बलदेव जी के तीन विवाह हुए, जिनसे इनके छह पुत्र और तीन पुत्रिया हुईं। इनका पुत्र गगाधर अच्छा कवि था, जो ३५ वर्ष की ही वय मे, इन्ही के जीवन-काल मे, स० १९६१ में, दिवगत हो गया था। इन्होने ज्योतिष, कर्मकाड और व्याकरण का अध्ययन था। १८ वर्ष की वय मे इन्होने दासापुर की भक्तेश्वरी देवी पर अपनी जिह्वा काटकर चढा दी थीं, जो बाद मे समय पाकर ठीक हो गई थी। इन्होने ३२ वर्ष की वय मे काशीवासी स्वामी निजानद सरस्वती से काव्य पढा और स० १९२९ मे भारतेदु से उत्तम कवि की सनद पाई। स० १९३३ मे इनके पिता का देहात हुआ। बलदेव जी काशिराज, रीवाँ नरेश, महाराज जयपुर और महाराज दरभगा के यहा क्रमश. गए और सर्वत्र सम्मानित हुए। यह आशु कवि थे। इनकी दर्पोक्ति थी—

देइ जो समस्या तापै कवित बनाऊँ चट,
कलम रुकै तो कर कलम कराइए।

विनोद के प्रणयन (स० १९७०) के कुछ पूर्व ही इनका देहात हो गया था। बलदेव अवस्थी के ग्रन्थो की सूची निम्न है—

१ प्रताप विनोद—इस ग्रन्थ मे सभी काव्यागो का वर्णन है। इसकी रचना स० १९२६ मे रामपुर मथुरा, जिला सीतापुर के ठाकुर रुद्रप्रताप सिंह के नाम पर हुई थी।

२ शृङ्गार सुधाकर—स० १९३० मे यह ग्रन्थ हथिया के पँवार दलथभन सिंह की आज्ञा से बना।

३ भक्तमाल—शात रस के १०८ छन्द, रचनाकाल स० १९३१ । यह रानी कटेसर जिला सीतापुर की आज्ञा से रचा गया ।

४ रामाष्टयाम—रचनाकाल स० १९३१ । उक्त रानी जी के ही लिए बना ।

५ समस्या प्रकाश—रचनाकाल सं० १९३२ । यह भी उक्त रानी जी के लिए बना ।

६ शृङ्गार-सरोज—रचनाकाल सं० १९५० ।

७ हीरा जुबिली—सं० १९५३ मे महारानी विक्टोरिया की हीरक-जयन्ती के अवसर पर विरचित ।

८. चन्द्रकला काव्य—रचनाकाल सं० १९५३ । बू दी की प्रसिद्ध कवियित्री चन्द्रकला बाई की प्रशस्ति ।

९ अन्योक्ति महेश्वर—रचनाकाल सं० १९५४ । रामपुर मथुरा के ठाकुर महेश्वर बख्श सिंह के नाम पर यह अन्योक्ति ग्रन्थ बना ।

१० ब्रजराज-विहार—रचनाकाल सं० १९५४ । इटौंजा जिला लखनऊ के राजा इंदु विक्रम सिंह की आज्ञा से रचित ।

११ प्रेम-तरंग—रचनाकाल सं० १९५८ । यह फुटकर रचनाओ का सग्रह है ।

१२ बलदेव विचारार्क—सं० १९६२ मे यह गद्य-पद्यमय ग्रन्थ रचा गया । इनमे से १, २, ३ १० संख्यक ग्रन्थ खोज मे भी मिल चुके है ।[१]

५०४।४८३

(८) बलदेवदास कवि ६, जौहरी, हायरस वाले, सं० १९०३ मे उ० । इन्होने कृष्ण खंड के ...र श्लोक का भाषा मे उल्था किया है ।

सर्वेक्षण

बलदेल हाथरस, अलीगढ निवासी, अग्रवाल बनियाँ थे । इनके पूर्वज जौहरी थे, अत. यह भी जौहरी कहलाते थे । यह स० १९०३-१६ मे निश्चित रूप से विद्यमान थे । यह धौलपुर के महाराज कीरत सिंह के आश्रित थे । खोज मे इनके निम्नलिखित ग्रन्थ मिले है—

१ कृष्ण खड—१९२३।३० ए, १९४७।२३०। यह ब्रह्मवैवर्तपुराण के कृष्ण खड का भाषानुवाद है । सं० १९०३ भादो बदी ६, बुधवार को यह ग्रन्थ पूर्ण हुआ । सरोज मे इसी का रचनाकाल दिया गया है । उदाहरण मे भी इसी के प्रारम्भ का दसवाँ दोहा उद्धृत है । रिपोर्ट के अनुसार यह ग्रन्थ एक बार आगरा से लीथो मे छप चुका है । यह ग्रन्थ धौलपुर मे और वही के महाराज की आज्ञा से रचा गया था । ग्रन्थ दोहा चौपाई मे है । रिपोर्ट मे उद्धृत अंश मे कवि का नाम आया है—

मति अनुसार कथा सुखदाई
यों बलदेव जौहरी गाई

---

(१) खोज रि० १९२३।२६ ए, बी, सी, डी ।

२ रामचन्द्र हनुमान की नामावली—१६२३।३० वी। इस ग्रन्थ की रचना स० १६१६ में हुई।

रस[६] ससि[१] अंक[९] चन्द्रमा[१] कातिक पूर्णा तिथि गुरुवारा
परम प्रीति बलदेव जौहरी हनुमत नाम उचारा

इस ग्रन्थ मे राम, सीता और हनुमान की पद्यबद्ध नामावली है।

सभा के अप्रकाशित संक्षिप्त विवरण मे विचित्र रामायण और कृष्ण लीला नामक दो ग्रन्थ इनके और कहे गए हैं। पर ये इनकी रचना नही हैं, अन्य समसामयिक बलदेवो की रचना है। विचित्ररामायण के कर्ता बलदेव खडेलवाल थे और अपने नाम के साथ जोहरी नही लगाते थे, जब कि हाथरस वाले बलदेव अपने नाम के साथ जौहरी अवश्य लगाते थे। विचित्ररामायण की रचना स० १६०३ मे भरतपुर नरेश ब्रजेंद्र बलवन्त सिह की आज्ञा से हुई थी।[१] यह हनुमत् नाटक का अनुवाद है। प० मयाशंकर याज्ञिक ने इनके एक अन्य ग्रन्थ 'गंगा लहरी' का भी उल्लेख किया है[२]।

इसी प्रकार कृष्णलीला[३] भी किसी अत्यंत असफल अन्य बलदेव की रचना है। इसमे कवि की छाप बलदेवा है। यह बहुत कम पढा लिखा कवि है। इसकी रचना स० १६०१ मे हुई।

५०५।४१६

(६) विजय, राजा विजय बहादुर बुंदेला टेहरीवाले, स० १८७८ मे उ०। यह कवियो के कदरदान कविता मे महा प्रधान थे।

सर्वेक्षण

विजय बहादुर चरखारी नरेश विजय विक्रमाजीत का जन साधारण मे बहु प्रचलित नाम है। यह कवि दुहरा उठा है। इसका विस्तृत विवरण आगे संख्या ५०६ पर देखिए। टेहरी गढवाल वाली टेहरी नहीं है। यह भी बुंदेलखंड के अंतर्गत है[४]।

५०६।४२०

(१०) विक्रम, राजा विजय बहादुर बुंदेला चरखारीवाले, स० १८८० मे उ०। इन्होने 'विक्रम विरदावली' और 'विक्रम सतसई', दो ग्रन्थ महा अद्भुत बनाए हैं।

सर्वेक्षण

बांदा गजेटियर से विजय विक्रमाजीत के सम्बन्ध मे पर्याप्त जानकारी होती है। उक्त गजेटियर के आधार पर 'चरखारी राज्य के कवि'[५] शीर्षक लेख मे चरखारी वासी कुंवर कन्हैया जू ने इनके विषय मे विस्तृत विवरण दिया है, जिसका सार यह है—

---

(१) खोज रि० १६१७।१५ (२) माधुरी, फरवरी १६२७, पृष्ठ ८२ (३) खोज रि० १६२६।३२ (४) देखिए, यही ग्रन्थ, केशवदास संख्या ६३ (५) ना० प्र० पत्रिका, भाग ६, अंक ४, माघ सं० १६८५

प्रसिद्ध छत्रसाल के पुत्र जगतराज थे। जगतराज के पुत्र कीर्ति सिंह हुए। कीर्ति सिंह के १० पुत्र हुए, जिनमे गुमान सिंह और खुमान सिंह प्रसिद्ध है। खुमान सिंह चरखारी के पहले राजा हैं। सं० १८३९ मे खुमान सिंह अपने भाई बांदा के राजा गुमान सिंह से उलझ गए और उसके सेनापति नौने अर्जुन सिंह के हाथ मारे गए। तदनतर खुमान सिंह के पुत्र विजय विक्रमाजीत चरखारी के राजा हुए। पर नौने अर्जुन सिंह ने इनको चरखारी से निकाल दिया। इस समय इन्होने झाँसी मे शरण ली। प्रवासकाल ही मे इन्होने 'विक्रम विरदावली' नामक ग्रथ रचा। इसमे १०८ दोहे थे, पर अब १०५ ही मिलते हैं। इसमे दशावतार विशेपत राम और कृष्ण की स्तुति है। अन्त मे हनुमान जी का नखशिख और स्तुति है। ग्रन्थ मे कवि ने अपने छिने हुए राज्य की पुन' सप्राप्ति के लिए प्रार्थना की है। स० १८४६ मे विजय विक्रमाजीत बांदा के नवाब अली वहादुर से मिले और उनके सेनापति राजा अनूप गिरि गोसाई उपनाम हिम्मत वहादुर ने इनका साथ दिया। इन्हे अपना राज्य पुन मिला। यह नौने अर्जुन सिंह और हिम्मत वहादुर वही हैं, जिनके दीक्षा-गुरु पद्माकर थे और जिनके युद्ध का विवरण पद्माकर ने 'हिम्मत वहादुर विरदावली' मे दिया है। स० १८६० मे अँगरेजो ने बुदेलखण्ड मे प्रवेश किया। विजय विक्रमाजीत पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने सं० १८६१ मे उनसे राज्य की सनद ली। सनद स० १८६८ मे दुहराई गई, क्योंकि पहली सनद मे कुछ गावो का उल्लेख नहीं हो पाया था। इन्होंने मौधा का किला वनवाया, चरखारी के ताल खुदवाए और गेस्ट हाउस कोठी वनवाई। इनका देहावसान स० १८८६ मे हुआ। यह चरखारी के लोगो मे विजय वहादुर नाम से ही अधिक प्रसिद्ध है। यह विक्रमादित्य और विक्रमसाहि नामो से भी प्रत्यात हैं। सरोज मे जो इनका नाम विजयबहादुर दिया गया है, वह यही जन-साधारण मे वहु प्रचलित नाम है।

विक्रम विरदावली से अधिक प्रसिद्ध विक्रम सतसई है। डा० श्यामसुन्दर दास ने हिंदुस्तानी एकेडेमी से प्रकाशित स्व-सपादित 'सतसई सप्तक' मे इसे स्थान दिया है।

इनका एक तीसरा ग्रन्थ 'हरि भक्ति विलास' नाम से श्रीमद्‌भागवत का अनुवाद है। खोज मे यह ग्रन्थ पूर्वार्द्ध[1] और उत्तरार्द्ध[2] दो खण्डो मे अलग-अलग प्राप्त हुआ है। यह अनुवाद सवत् १८८० मे पूर्ण हुआ --

सवत अष्टादस असी माघ मास गुरुवार
किय हरि भक्ति विलास यह सकल श्रुतिन कौ सार

ग्रन्थ मे कवि का नाम आया है—

नहि कविता सनवध कछु, नहिं वल वुद्धि विचार
जन विक्रम प्रभु चरित कहि, निज मति की अनुसार

—खोज रि० १९०३।७३

पुष्पिका के इनका पूरा पता ज्ञात होता है—

इति श्रीमान महाराज छत्रसाल वंसावतस नृपति विक्रमादित्य कृत हरिभक्तिविलास नन्वे अध्यायः ॥९०॥

---

(१) खोज रि० १९०३।७२ (२) खोज रि० १९०३।७३

विजय विक्रमाजीत के दरबार मे खुमान या मान, बिहारीलाल उपनाम भोज, प्रताप साहि और प्रयाग दास जैसे गुणी और अच्छे कवि थे।

सरोज मे दिया स० १८८० कवि का उपस्थितिकाल है। सरोज मे इनका उल्लेख पिछली संख्या पर एक बार और हुआ है।

५०७।४३४

११ बेनी कवि प्राचीन १, असनी जिले फतेपुर वाले, स० १६६० मे उ०। यह महा कवीश्वर हुए हैं। इनका एक नायिका भेद का ग्रन्थ अति विचित्र देखने मे आया है। इनकी कविता बहुत ही सरस, ललित और मधुर है।

सर्वेक्षण

बेनी कवि का 'रसमय'[1] नामक एक ग्रन्थ खोज मे मिला है। यही ग्रन्थ 'शृङ्गार'[2] नाम से भी मिला है। यही सरोज मे सकेतित नायिका भेद का ग्रन्थ है। इन दोनो ग्रन्थो मे नाम का ही और नाम मात्र का ही अन्तर है। रसमय मे ४४१ और शृङ्गार मे ४५० छन्द है। दोनो ग्रन्थो मे रचनाकाल-सूचक दोहा एक ही है। इसके अनुसार ग्रन्थ का रचनाकाल स० १८१७ है।

अष्टादश शत वर्ष गत सत्रह औरो जानि
फागुन दशमी सित सुभग चंद्रवार अनुमानि ४३६

अतः सरोज मे दिया इनका स० १६६० अशुद्ध है।

बेनी असनी जिला फतेहपुर के रहने वाले कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। यह उपमन्यु गोत्र के बाजपेयी थे। शुक्ल जी ने इन्हे स० १७०० मे उपस्थित असनी का बन्दीजन कहा है,[3] जो पूर्ण रूपेण भ्रष्ट है। प्राप्त ग्रन्थ के अन्त मे कवि ने अपना यह परिचय दिया है—

लसत बस उपमन्य वर बाजपेउ करि जज्ञ
सुकृती साधु कुलीन वर नव रस में सरवज्ञ ४३६
बेनी कवि को बासु है असनी वर सुभ थान
बसत सबै षट्कुल जहाँ करैं वेद को गान ४३७

नायिका भेद का यह ग्रन्थ किसी निहचल सिह के आदेश से बना। यह सूचना ग्रन्थ के आदि और अन्त दोनो स्थलो पर दी गई है।

आदि—कीनो निहचल सिंह जू बेनी कवि सौं नेहु
लीला राधा कान्ह की भाषा मे करि देहु
अन्त—निहचल सिह सुजान वर को अनुसासन पाइ
कीनो रसमय ग्रन्थ यह बरनि नाइका भाइ ४३८

बेनी के कवित्तो का एक सग्रह भी खोज मे[4] मिला है। इसमे २६७ कवित्त है। एक अन्य कवित्त सग्रह[5] भी मिला है, जिसे असनी के बेनी कवि का कहा गया है। यह सरोजकार के

---

(१) खोज रि० १६०३।१२२, १६०४।२२ (२) खोज रि० १६०१।६२ (३) हिंदी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ २४३ (४) खोज रि० १६०३।८६ (५) खोज रि० १६२३।३७

पुस्तकालय का ग्रन्थ है। इस कवित्त सग्रह मे वेनी के अतिरिक्त शिव, परमेश, शम्भु, शिवलाल और कलानिधि के भी फुटकर कवित्त है।

हिंदी-साहित्य के इतिहास ग्रन्थो मे यह वेनी शृङ्गारी वेनी के नाम से रयात है।

५०८।४३५

१२ वेनी कवि २, वन्दीजन, वेती जिले रायवरेली के निवासी, स० १८४४ मे उ०। यह कवि महाराज टिकैतराय, नवाव लखनऊ के दीवान, के यहाँ थे और वहुत वृद्ध होकर सवत् १८९२ के करीव मर गए।

सर्वेक्षण

वेनी कवि, वेती जिला रायवरेली के रहने वाले वन्दीजन थे। इनके लिखे हुए निम्नलिखित ग्रन्थ खोज मे मिले है—

१. अलकार प्रकाश १९२३।३८ सी। या टिकैतराय प्रकाश १९०९।१४, १९४७।२४३ख —ये दोनो ग्रन्थ एक ही है। यह ग्रन्थ टिकैतराय के लिए वना। इसमे टिकैतराय की प्रशसा के अनेक छन्द है। टिकैतराय लखनऊ के नवाव आसफुद्दौला के वजीर थे। आसफुद्दौला का शासनकाल स० १८३२-५४ है। यही वेनी वन्दीजन का भी समय है। इस ग्रन्थ मे रचना-सूचक दो दोहे हैं—

१ भूपित राय टिकैत को दीन्हों ग्रन्थ वनाय
चन्द्र[१] वान[५] वसु[८] चन्द्र[१] युत सवतसर को पाय
२ रभ्र[६] वेद[४] वसु[८] चन्द्र[१] युत सवतसर को पाइ
भादौ सुदि पाचै रचो अलकार गुरु ध्याइ

पहला दोहा ग्रन्थारम्भ मे एव दूसरा ग्रन्थात मे है। लगता है, स० १८४९ मे कवि ने ग्रन्थारम्भ किया और स० १८५१ मे ग्रन्थ-समाप्ति। दोनो ग्रन्थो मे प्रत्येक छन्द के अत मे टीका के नाम पर गद्य मे अलकार-निरुपण भी है।

२. रस विलास, १९१२।१९, १९२३।३८ ए, १९४७।२४३ क। ग्रन्थ का रचनाकाल स० १८७४ है.—

दिए वेद[४] रिषि[७] वसु[८] तहाँ शशि[१] सावन जिय जानि
वेनी कवि निरमित कियो रस विलास सुख खानि

पुष्पिका मे कवि का नाम वेनीराम है। वस्तुत: यह वेनीराय है, जैसा कि इन्ही के एक ग्रन्थ 'यशलहरी' के इस दोहे मे है भी—

राम नाम गुन कहि सकै, कैसे वेनीराय
पढे न भाषा संस्कृत, ना तो बुद्धि सहाय[3]
—खोज रि० १९२३।३८ वी

रिपोर्ट के अनुसार यह ग्रन्थ वैसवाडा के स्वामी खूवचन्द कायस्थ की आज्ञा से वना था। विनोद (९८५) के अनुसार यह वेनी सभवत. हित हरिवश के अनुयायी थे, ऐसी वात नही है। वेनो के आश्रयदाता स्वामी खूवचन्द कायस्थ राधावल्लभी सप्रदाय के थे, स्वय वेनी नही।

मिश्रवधुओ को यहा थोडा भ्रम हो गया है। 'रस विलास' के प्रारम्भ मे यह प्रसग कवि ने स्वयं उठाया है।

विद्या विनैविवेक ते भूतल के अवतस
राधावल्लभ पथ किय गोस्वामी हरिवस
गोसाईं हरिवंस के सेवक मोहन दास
कायथ वारह जाति मे कीन्हों सुयस प्रकास
मोहन मोहनदास के भे गिररिधारीदास
दानसील सपति सुजस पुहुमी पुन्य प्रकास
पर स्वारथ के जोग ते जगत जथारथ नाम
श्री गिरधारीदास के कुशल सिह सिरताज
कुशल सिह के सुत सुखद हरीलाल गुन जाल
दान ज्ञान मति मेरु से मूरति मरन विसाल

—खोज० रि१९२३।३८ ए

यह कवि के आश्रयदाता की वशावली है। इसी वश वाले हित० सप्रदाय के अनुयायी थे, उद्धरण से यह स्पष्ट है। रिपोर्ट मे इतना ही अश उद्धृत है और वशावली अपूर्ण हे।

३ यशलहरी, १९२३।३८ बी। यह वेनी कवि की फुटकर रचनाओ का सग्रह है। यह नाम स्वग कवि का दिया हुआ नही है। इसमे देवी-देवताओ, राजा-रईसो का यश वर्णित है। इस ग्रन्थ मे चापमल्ल के पुत्र राजा टिकैतराय कायस्थ, गुलाव राय, रामसहाय राजा, श्री खुशाल राय, शीतलप्रसाद, इच्छाराय, यशवतराय, हुलास राय, बैजनाथ, घनपति राय, राय मैकूलाल, तथा नवाव आसफुद्दौला के सुयश सम्बन्धी छन्द हैं। ग्रन्थ खडित है फिर भी इसमे २५१ छन्द है। पर यह वहुत खडित नही हे। २५२ वें छन्द का निम्नलिखित अश वचा है। यह रचनाकाल-सूचक दोहा है।

अस्विन सुदि गुरु प्रतिपदा वेद[४] वासर[७] (व) सु[८] वंद[१]
तिथि,.. .　　　　..　　　　. ।

वासर और सु के वीच सभवत व प्रमाद से छूट गया है। ऐसा मान लेने पर इस ग्रन्थ का रचनाकाल स० १८७४ सिद्ध होता है। यही 'रस विलास' का भी रचनाकाल है।

हिंदी साहित्य के इतिहास मे यह वेनी 'वेनी भँडौआकार' के नाम से प्रसिद्ध हैं।

५०९।४३६

१३ वेनी प्रवीन ३, वाजपेयी, लखनऊ के निवासी, स० १८७६ मे उ०। यह कवि महा सुन्दर कविता करने मे विख्यात हैं। इनका ग्रन्थ नायिका-भेद का देखने के योग्य है।

सर्वेक्षण

वेनी प्रवीन वाजपेयी के नायिका भेद ग्रन्थ का नाम 'नवरस तरग' हे। यह रसग्रन्थ भी है, जैसा कि इसके नाम से स्वत प्रकट है। ग्रन्थ खोज मे[१] मिल चुका है और इसका एक सुसपादित सस्करण श्रीकृष्णविहारी मिश्र ने लखनऊ से प्रकाशित कराया था। इसकी रचना स० १८७४ मे हुई।

समय देखि दिग[४] दीप[७] युत सिद्धि[८] चद्र[१] वल पाय
माघ मास श्री पंचमी श्री गोपाल सहाय २७

---

(१) खोज रि० १९०९।१९, १९२०।१३, १९२१।८०, १९२६।४५

वेनी प्रवीन, लखनऊ निवासी कान्यकुब्ज ब्राह्मण, उपमन्युगोत्रीय ऊँचे के वाजपेयी थे। लखनऊ के वादशाह गाजीउद्दीन हैदर (शासनकाल स० १८७१-८४) के दीवान राजा दयाकृष्ण कायस्थ के पुत्र नवल कृष्ण उपनाम 'ललन' के आश्रय मे यह थे। इन्ही ललन जी के कहने से यह ग्रन्थ रचा गया था। यह सूचना ग्रन्थ की पुष्पिका से मिलती है :—

इति श्रीमन्महाराजाधिराजमनि श्री नवलराय आज्ञप्त प्रवीन वेनी वाजपेयी कृत नवरस-तरग नाम ग्रन्थ सपूर्ण समाप्त शुभमस्तु।

इस ग्रन्थ से स्पष्ट प्रकट है कि वेनी प्रवीन धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे।

ऐसी कछु उपजै हियै छाँडि जगत की आस
स्यामा स्यामै ध्याइए करि वृदावन वास ५३१

अप्रकाशित सक्षिप्त रिपोर्ट के अनुसार यह हित हरिवश के वशज वशीलाल के आश्रित थे। पर मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि वशीलाल जी वेनी प्रवीन के दीक्षागुरु थे और वाजपेयी जी भी राधावल्लभी सप्रदाय मे दीक्षित थे। 'नवरस तरग' के प्रथम छन्द मे ही वशीधर के चरणो की वदना की गई है—

गणपति गुरु गौरी गिरा गगाधरहि मनाय
बरनत वेनी दीन कवि वशीधर के पाय १

दूसरे छन्द मे भी कवि ने कहा है—

दरद दरन, दुख हरन, करन सुख,
सेवत चरन हौ गुसाई बसीलाल के २

ग्रन्थ के अतिम छन्द मे तो नाम नही आया है, पर गुरुचरणो की कृपा का उल्लेख है—

राम नाम बोहित करनधार गुरु पाइ,
भव पारावार मे मगन होत बावरे ५३०

हिन्दी साहित्य के वृहत् इतिहास के अनुसार वेनी प्रवीन वल्लभसप्रदायी वशीलाल के शिष्य थे। वशीलाल वल्लभसप्रदाय के नही थे, राधावल्लभ सप्रदाय के थे। उक्त ग्रन्थ के ही अनुसार इनका मूल नाम बेनीदीन एव पिता का नाम शीतल था।[1]

सरोज मे दिया स० १८७६ कवि का उपस्थितिकाल है, क्योकि इसके दो वर्ष पूर्व ही कवि अपना प्रसिद्ध ग्रन्थ लिख चुका था। अत: उक्त सवत् जन्मकाल कदापि नही है, जैसा ग्रियर्सन (६०८) मे स्वीकृत है।

विनोद (११०४) मे वेनी प्रवीन का अच्छा विवरण है। इसके अनुसार इनका पहला ग्रथ 'शृगार भूषण' है। दूसरा ग्रन्थ 'नवरस तरग' है। इसका रचनाकाल स० १८७८ दिया गया है। ऐसा दिग का अर्थ ८ करने के कारण हुआ है। सामान्यतया दिशाएँ ४ ही मानी जाती हैं। नवरस-तरग मे बहुत से छन्द शृङ्गारभूषण के भी हैं। इनका तीसरा ग्रन्थ 'नानाराव प्रकाश' है। यह कवि-प्रिया के ढग का है और बिठूर के नानाराव के नाम पर लिखा गया है।

वाजपेयी जी के कोई सतान नही थी। अतिम दिनो मे रुग्ण होकर यह अरावली की पहाडियो पर चले गए थे। वही इनका देहात हुआ।

कहा जाता है कि अपने समकालीन वेती वाले वेनी वदीजन से विभिन्न समझे जाने के लिए यह अपनी कविताओ मे वेनी प्रवीन छाप रखते थे।

---

(१) हिन्दी साहित्य का वृहत् इतिहास, भाग ६, पृष्ठ ४१०

५१०।४३७

१४ वेनी प्रगट ४, ब्राह्मण, कविंद कवि नरवल निवासी के पुत्र, स० १८८० मे उ०। इनका काव्य महा सुन्दर है।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही। इनके पिता नरवल निवासी कविंद थे और पितामह सखीसुख। सरोज मे सखीसुख का समय स० १८०७ दिया गया है[1]। अतः १८८० वेनी प्रगट का उपस्थिति-काल ही है।

५११।४४०

१५ वीर कवि, दाऊ दादा वाजपेयी मडिला निवासी, स० १८७१ मे उ०। इनके भाई विक्रम साहि ने जो महान् कवि थे, अपने भाई दाऊ दादा को यह समस्या दी कि 'तिय झूमती भूमि ला' तव दाऊ दादा ने इसी समस्या पर 'स्नेह सागर' ग्रथ की जोड का 'प्रेम दीपिका' नामक एक ग्रथ महा अद्भुत वनाया। यह कवि महा निपुण थे।

सर्वेक्षण

वीर कवि कान्यकुब्ज वाजपेयी ब्राह्मण थे। यह मडला, जवलपुर के निवासी थे। इनका 'प्रेम दीपिका' नामक ग्रथ खोज मे मिला है।[2] इसमे विविध छदो मे कृष्ण-कथा है। गोपी सदेश, कुरुक्षेत्र मे पुर्नमिलन एव रुक्मिणी विवाह का कुछ विस्तार से वर्णन हुआ है। प्रेमदीपिका के ही नाम से इसके विभिन्न अश भिन्न-भिन्न स्थानो से मिले है। एक मे कुरुक्षेत्र मे पुर्नमिलन है, एक मे गोपी सदेश है, एक मे रुक्मिणी परिणय है। ग्रथ की रचना स० १८१८ मे हुई थी, अतः सरोज मे दिया स० १८७१ ठीक नही। सरोज के तीसरे सस्करण मे तो स० १८९१ दिया गया है, जो और भी बुरा है।

५१२।४४१

१६ वीर २, वीरवर कायस्थ दिल्ली निवासी, स० १७७७ मे उ०। यह महाकवि थे। इनका वनाया हुआ और 'कृष्ण चद्रिका' नामक ग्रथ साहित्य मे वहुत सुंदर और हमारे पुस्तकालय मे मौजूद है।

सर्वेक्षण

वीरवर श्रीवास्तव कायस्थ थे और दिल्ली के रहनेवाले थे। इनके पिता का नाम उत्तमचद था। कवि का असल नाम रामप्रसाद है, क्योकि कवि ने रामप्रसाद को महामतिमद कहा है और ऐसा विशेषण अपने को ही विनम्रतावश दिया जा सकता है, अपने किसी पुरखा को नही। ग्रथ की रचना स० १७७९ मे माघ वदी ११, सोमवार को हुई। यह सब सूचना सरोज मे कृष्णचद्रिका से उद्धृत इन दोहो से मिलती है—

कायथ कुल श्रीवासतव उत्तम उत्तिम चद
रामप्रसाद भयो तनय तासु महा मतिमद १
चंद्र[1] वार[7] ऋषि[7] निधि[9] सहित, लिखि सवत्सर जानि
चद्रवार एकादसी, माघ वदी उर आनि २

---

(१) यही ग्रथ कवि सख्या ८७८ (२) खोज रि० १९०६।१४०

निगम बोध कुरुक्षेत्र जहँ कालिन्दी के तीर
इंद्रप्रस्थ पुर बसत लखि इंद्रपुरी पुनि वीर ३
करयो जथामति आपनी कृष्णचंद्रिका ग्रन्थ
जैसो कछू बताइगे, पूरब पंडित पंथ ४

५१३।४४५

१७, बलभद्र १, सनाढ्य, टेहरी वाले केशवदास कवि के भाई, स० १६४२ मे उ०। इनका 'नखशिख' सारे कवि कोविदो मे महा प्रामाणिक ग्रन्थ है। इन्होने भागवतपुराण पर टीका भी बहुत सुंदर की है।

सर्वेक्षण

बलभद्र मिश्र सनाढ्य ब्राह्मण थे और हिंदी के प्रसिद्ध कवि केशवदास के बडे भाई थे। सरोज मे दिया स० १६४२ इनका रचनाकाल है। इनके छोटे भाई केशवदास ने इसके ६ ही वर्ष बाद स० १६४८ मे 'रसिक प्रिया' की रचना की। इनके पिता का नाम काशीनाथ था। इनका ग्रन्थ 'नखशिख' बहुत प्रसिद्ध है। यह भारत जीवन प्रेस ,काशी से प्रकाशित हो चुका है। यह नखशिख न होकर शिखनख है। इसमे ६५ कवित्त और एक छप्पय है। इसकी अनेक टीकाएँ हुई है। एक टीका चरखारी के गोपाल कवि ने शिखनख दर्पण[1] नाम से की है। उक्त टीका मे प्रारभ मे भूमिका स्वरूप तीन दोहे बलभद्र के सबध मे है।

जिहि बलभद्र कियो बियो बलभद्री व्याकर्न
हनुमन्नाटक को कियो तिलक अर्थ आभर्न
गोवर्द्धन सतसई को टीको कीन्हो चारु
इत्यादिक बहु ग्रंथ जिहि कीने अर्थ अपार
तिहिकी मति को कहि सकै, किहिकी मति सु अनद
करी ढिठाई मै सु यह अबुध अधिक मति मंद

इन दोहो से प्रकट है कि बलभद्र ने बहुत से ग्रन्थो की रचना की थी, जिनमे से ३ ये हैं—

१ बलभद्री व्याकरण
२ हनुमन्नाटक की टीका
३ गोवर्द्धन सतसई की टीका

खोज मे किसी बलभद्र का 'दूषण विचार[2]' नामक ग्रन्थ मिला है। विनोद १४५ मे सभावना की गई है कि हो न हो यह इन्हीं बलभद्र की रचना हो। पर यह बात समीचीन नही प्रतीत होती क्योकि इस ग्रन्थ का रचनाकाल स० १७१४ है और उस समय तक यह बलभद्र सभवत. जीवित भी न रहे होगे।

वेद[४] इदु[१] स्वर[७] ससि[१] सरद पुस्तक काव्य प्रकार
माघ शुक्ल एकादशी रिद्ध सुद्ध बुधवार ६०

इस ग्रन्थ का एक नाम 'भाषाकाव्य प्रकाश' भी है।

विनोद (१४५) के अनुसार बलभद्र मिश्र कृत भागवत का अनुवाद भी मिल चुका है।

(१) खोज रि० १९०६।४० (२) खोज रि० १९०९।१६, १९२३।२६

५१४।४५४

१८ व्यास जी कवि, स० १६८५ मे उ० । इनके दोहे नीति-व्यवहार सबधी बहुत सुदर है। हजारे मे बहुत दोहे इनके लिखे है।

सर्वेक्षण

यह व्यास ५१५ सख्यक हरीराम शुक्ल ओडछे वाले हैं। स० १६८५ अशुद्ध है। इनका देहात स० १६६३-७५ के बीच निश्चित रूप से हो चुका था। इस समय तक वे जीवित नही थे।

व्यास जी का पूरा विवरण आगे सख्या ५१५ पर देखिए।

५१५।४६०

१६. व्यास स्वामी, हरीराम शुक्ल उडछेवाले, स० १५६० मे उ० । इनके पद राग सागरोद्भव मे बहुत हैं। इन महाराज ने सवत् १६१२ मे, ४५ वर्ष की अवस्था मे, उड़छे से वृन्दावन आकर, भगवत-धर्म को फैलाया। इस गुरुद्वारे के सेवक हरव्यासी नाम से पुकारे जाते है।

सर्वेक्षण

व्यास जी की सारी वाणी सुसपादित होकर स० २००६ मे प्रकाशित हुई है। ग्रन्थ का नाम है, 'भक्त कवि व्यास जी'। इसके सपादक है उक्त व्यास जी के वशज श्री बासुदेव गोस्वामी और प्रकाशक है श्री प्रभुदयाल मीतल, अग्रवाल प्रेस, मथुरा। ग्रथ मे दो खड हैं—प्रथम खड मे जीवन और साहित्य का विवेचन है, द्वितीय मे उनकी रचनाएँ है। प्रथम खड के आधार पर व्यास जी का परिचय प्रस्तुत किया जा रहा है।

हरीराम व्यास का जन्म मार्गशीर्ष कृष्ण ५ बुधवार, स० १५६७ को ओरछा मे हुआ था। इनके पिता का नाम समोखन शुक्ल था और माता का देविका। हरीराम जी प्रारभ मे पुराण के वक्ता थे, अत इनका आस्पद हुआ व्यास। यह सनाढ्य ब्राह्मण थे। इनके परिवार मे पत्नी, एक छोटा भाई, बहिन, पुत्री तथा तीन पुत्रो का पता चलता है। व्यास जी को पुराण एव वेदात की अच्छी शिक्षा मिली थी। ये प्रसिद्ध शास्त्रार्थी पडित थे और अनेक पडितो को इन्होने हराया था।

स० १५६१ मे व्यास जी वृन्दावन आए। हितहरिवश के राधावल्लभी सप्रदाय का उस समय जोर था। व्यास जी पर भी हरिवश जी की भक्ति का प्रभाव पडा। वे आठ नौ वर्षो मे लौटे और अपने पिता समोखन शुक्ल से दीक्षित हो युगल-मत्र की साधना मे लीन हो गए। गुरु-पिता की मृत्यु के पश्चात् व्यास जी स० १६१२ मे सदा के लिए वृन्दावन आ रहे। यहाँ यह स्वामी हरिदास और हितहरिवंश के साथ रहने लगे। हरिवश जी से इन्हे अपनी साधना मे अत्यंत सहायता मिली। वे इनके साधना-गुरु थे। इनकी भक्ति माधुर्य-भाव की थी।

ओरछा नरेश मधुकरशाह (शासनकाल स० १६११-४६) इनके शिष्य थे। जब स० १६१२ मे व्यास जी वृन्दावन मे आकर बस गए, तब मधुकरशाह भी इन्हे वापस बुलाने गए थे।

व्यास जी स० १६६३ के पश्चात् तक निश्चित रूप से जीवित रहे। स० १६७५ मे ओरछा नरेश वीरसिह देव ने इनकी समाधि बनवाने मे हाथ लगाया। अत. इनकी मृत्यु स० १६६३ और स० १६७५ के बीच किसी समय हुई।

५१४ सख्यक व्यास के ४ दोहे सरोज मे उद्धृत है, जिनमे से प्रथम दो, भक्तकवि व्यास जी के साखी प्रकरण के ११२, ११३ सख्यक दोहे हैं। ५१५ सख्यक व्यास का पद इस ग्रन्थ का ३२५

सख्यक पद है। विनोद के ७८,२८१ सख्यक व्यासो के उदाहरण मे दिए पद ग्रंथ के क्रमशः ४,१६६ सख्यक पद है। उदाहरणो की यह एकता इन दोनो व्यासो की भी एकता सिद्ध करती है।

हरीराम व्यास की शिष्य-परपरा के लोग हरिव्यासी नही कहलाते, यह कथन सरोजकार का शुद्ध भ्रम हैं। श्री भट्ट जी के शिष्य हरिव्यासदेव थे। यह निवार्क सप्रदाय के अनुयायी और हरीराम व्यास के समकालीन थे। इन्ही हरिव्यासदेव के शिष्य हरिव्यासी कहलाए। हरिव्यासदेव का विवरण विनोद मे सख्या ४२।१ पर है और २८१ सख्या वाले व्यास के साथ भ्रमपूर्ण एकात्मकता का भी उल्लेख है।

ग्रियर्सन (५४) मे इन व्यास को एक बार ओरछा का और दूसरी बार देवबंद सहारनपुर का निवासी कहा गया है। वास्तविकता यह है कि हितहरिवश के पिता का भी नाम व्यास था। यह दूसरे व्यास देवबंद के रहनेवाले थे। ग्रियर्सन ने दोनो को मिलाकर घपला कर दिया है। यहाँ इन्हे विलसन के अनुसार नीमादित्य का शिष्य कहा गया है। यह कथन भी अनर्गल है।

भक्तमाल मे व्यास जी का विवरण छप्पय ६२ मे है।

५१६।४६५

२० वल्लभ रसिक कवि १, स० १६८१ मे उ०। हजारे मे इनके कवित्त बहुत सुंदर है।

सर्वेक्षण

वल्लभ रसिक जी चैतन्य संप्रदाय वाले प्रसिद्ध गदाधर भट्ट के पुत्र थे। इनके एक भाई रसिकोत्तंस जी थे।[1] यह स० १६८१ मे उपस्थित थे। इनके लिखे हुए निम्नलिखित ग्रथ खोज मे मिले है—

१. वल्लभ रसिक जी की माझ, १९००।६७। माझ छंद मे लिखित राधाकृष्ण की कुछ क्रीडाओ का वर्णन। यह लघु ग्रंथ २६ छदो मे पूर्ण हुआ है। प्रत्येक छद के चतुर्थ चरण के प्रारम्भ मे वल्लभ रसिक छाप है। यथा प्रथम छंद मे—

वल्लभ रसिक विलास रास उल्लास गांस सुधि आई।

२. वल्लभ रसिक जी की साझी, १९०९।३२६। खोज रिपोर्ट मे लिखा है कि यह ऊपर वर्णित माझ ग्रंथ ही है। यहाँ साझी का ही अशुद्ध रूप माझ माना गया है। प्रमाद से यह कल्पना कर ली गई है कि माझ नामक कोई वस्तु होती ही नही। पर यह अतथ्य है। माझ एक छद है, जिसके अन्य नाम ललितपद, दोवै, नरेद्र और सार है। इसके प्रत्येक चरण मे १६,१२ के विराम से २८ मात्राएँ होती है और चरणात मे दो गुरु होते हैं। नागरीदास के ४ ग्रंथ माझ अभिधान वाले है। साझी मे राधाकृष्ण की पुष्प चयन सबधी शरद साध्यलीला का वर्णन होता है। सब दृष्टियो से यह स्वतत्र ग्रथ है। इस ग्रन्थ का अतिम अश यद्यपि माझ छद ही मे है, पर इसका प्रारभिक भाग दूसरे छद मे है।

३ वल्लभरसिक बाईसी, १९२६।४९०। इस ग्रन्थ मे राधाकृष्ण सबधी २२ शृंगारी कवित्त हैं।

---

(१) यही ग्रंथ, कवि सख्या १५८ या साहित्य वर्ष ६, अंक ४, जनवरी १९५६, ब्रजरत्नदास जी का लेख 'गदाधर भट्ट', पृष्ठ ६३-६५

४ वारह वाट अठारह पैंडे, १९१२।१४ वी, १९४४।२३५। इस ग्रन्थ मे कुल १०८+२ छद है। इसमे राधाकृष्ण का स्नेह वर्णित है।

५ सुरतोल्लास, १९१२।१४ वी। इस ग्रन्थ मे २७ छद है। इसमे राधाकृष्ण की सुरति का वर्णन है।

इनका एक ग्रन्थ 'वल्लभ रसिक जी की वानी'[1] नाम से मिला है। यह संभवत. वल्लभ रसिक जी की सपूर्ण रचनाओ का सग्रह है। इसमे कुल ५७ पन्ने है। इस सग्रह का अतिम ग्रथ 'वारह वाट अठारह पैंडे' है। १९२६ वाली रिपोर्ट मे इनके ये तीन ग्रन्थ और गिनाए गए है—१ हिंडोर, २ सनेही विनोद, और ३ प्रेम चद्रिका। सभवतः ये सभी ग्रन्थ इस बडे ग्रथ मे समाहित हैं। हिंडोर तो इसका प्रथम ग्रन्थ प्रतीत होता है।

५१७।४७६

२१ वल्लभ कवि २, स० १६८६ मे उ०। इनके दोहे वहुत सुन्दर है।

सर्वेक्षण

वल्लभ का पूरा नाम वल्लभदास था। यह राधावल्लभीय सप्रदाय के वैष्णव, ब्रजवासी और सेवक स्वामी (मृत्युकाल स० १६१०) के अनुयायी थे। १६८९ इनका अतिम जीवन-काल हो सकता है। खोज मे इनके तीन ग्रन्थ मिले हैं—

१ सेवक वानी को सिद्धात, १९०९।३२५। यह एक गद्य कृति है। इसमे हितचौरासी मे कथित राधाकृष्ण के वृन्दावन, नित्य निकुज विलास और राधावल्लभीय सप्रदाय के दृढ रसिक अनन्य धर्म के सिद्धातो का वर्णन है। इस ग्रथ के आदि और अत मे वल्लभदास को महत कहा गया है।

२ मान विलास, १९१२।१३। इस ग्रन्थ मे राधा का कृष्ण से मान करना और कृष्ण का उन्हे मनाना वर्णित है। ग्रन्थ दोहो मे है, बीच मे कवित्त भी हैं। इसमे कुल ३९ छद हैं। अतिम छद मे कवि का नाम है।

> वल्लभ मान विलास को, गावत जे करि हेत
> लाल लली तिनको सदा, मन वाछित फल देत ३९

ग्रन्थ से कवि की भक्ति-भावना टपकती है—

> राधा मेरी स्वामिनी, वल्लभ स्वामि अनूप
> निसिदिन मो चित नित वसो, श्री वृंदावन भूप ३८

३ गूढ शतक, १९१७।१८। इस ग्रन्थ मे १०७ दोहे हैं। इनमे कृष्ण के अग, भूषण, वसन आदि का वर्णन और भक्तिरस पूर्ण उक्तियाँ है। ग्रन्थ के तीसरे दोहे मे कवि का नाम आया है—

> कहइ कुँवरि सुजान मनि, किय आयसु चित लाय
> रस सिंगार मत गूढ़ सत वल्लभ नित बनाय ३

---

(१) खोज रि० १९१२।१४ ए

सरोज मे उद्धृत दोहे सभवत. इसी ग्रथ के हैं।

वल्लभदास की रचनाएँ ख्याल टिप्पा [1] नामक सग्रह मे भी है।

किसी वल्लभ की एक लघु-कृति 'स्वरोदय'[2] मिली है। यह किसी हृदयराम के राज्य मे लिखी गई थी। कहा नही जा सकता कि यह ग्रथ राधावल्लभीय सप्रदाय के वल्लभदास का है अथवा किसी निर्गुनिए वल्लभदास का अथवा वल्लभ सप्रदाय के विट्ठलनाथ के शिष्य वल्लभ का।

एक वल्लभ का उल्लेख बुंदेल वैभव मे 'लग्न सुंदरी' ग्रथ के कर्त्ता के रूप मे हुआ है। इनका वास्तविक नाम मथुरा था। इनके पिता ओरछे मे आ बसे थे। यह केशव के सम-कालीन थे।[3]

५१८।४६१

२२. वल्लाभचार्य ३, व्रजवासी गोकुलस्थ, स० १६०१ मे उ०। इनके पद राग-सागरोद्भव मे बहुत हैं। राधावल्लभीय सप्रदाय के यही महाराज आचार्य है।

सर्वेक्षण

महाप्रभु वल्लभाचार्य भारद्वाज गोत्र के तैलग ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम लक्ष्मण भट्ट था तथा माता का इल्लमगारू। ये गोदावरी तट स्थित काँकरवाड गाँव के निवासी थे। ये दपति तीर्थयात्रा करते हुए दक्षिण से उत्तर आए और काशी मे रहने लगे। वल्लभाचार्य का जन्म रायपुर (मध्यप्रदेश) जिले के चपारण्य नामक वन मे वैशाख कृष्ण ११, रविवार, स० १५३५ को हुआ, जब इनके माता-पिता बहलोल के आक्रमण के भय से काशी से दक्षिण की ओर भागे जा रहे थे।

वल्लभाचार्य ने १० वर्ष की वय मे वेद, वेदाग, दर्शन, पुराण मे अद्भुत योग्यता प्राप्त कर ली थी। इन्होने सपूर्ण भारत की यात्रा की थी और शास्त्रार्थ मे विजय प्राप्त की थी। इनेहने शकर के मायावाद का खडन एव ब्रह्मवाद और भक्तिमार्ग का मडन किया। इनका मत दार्शनिक दृष्टि से शुद्धाद्वैत कहलाता है, भक्ति की दृष्टि से इनके पथ का नाम पुष्टि मार्ग है।

२३ वर्ष की वय मे इन्होने विवाह किया। इनके दो पुत्र हुए। बड़े पुत्र गोपीनाथ थे, जिनका जन्म स० १५६८, आश्विन कृष्ण १२ को प्रयाग के निकट अरइल नामक गाव मे हुआ था। दूसरे पुत्र विट्ठलनाथ का जन्म स० १५७२ मे पौष कृष्ण ९ को काशी के पास चरणाट गाँव मे हुआ था।

इन्होने श्रीनाथ जी का मदिर स० १५५६ मे प्रारभ किया, जो १७ वर्ष पश्चात् सवत्

---

(१) खोज रि० १९०२।५७ (२) राज० रि० भाग २, पृष्ठ १३० (३) बुंदेल वैभव भाग २, पृष्ठ ४५१

१५७६ मे वैशाख सुदी ३ को पूर्ण हुआ। इसी मदिर मे अष्टछाप के कवि लोग सेवा-कीर्तन किया करते थे।

वल्लभाचार्य के ३० ग्रंथ प्रसिद्ध हैं, जिनकी सूची प्रभुदयाल मीतल ने अष्टछाप परिचय मे दी है। इनमे अणुभाष्य और सुबोधिनी बहुत प्रसिद्ध है। अणुभाष्य बादरायण कृत ब्रह्मसूत्र की एव सुबोधिनी श्रीमद्भागवत की टीका है। इनमे शाकर अद्वैत का खडन और शुद्धाद्वैत का मडन है। सुबोधिनी मे केवल १,२,३,१०,११ स्कधो की टीका है। वल्लभाचार्य के समस्त ग्रन्थ सस्कृत मे हैं। यद्यपि इन्होने स्वय व्रजभाषा मे कोई रचना नही की, फिर भी व्रजभाषा काव्य की प्रगति मे इनका और इनके सम्प्रदाय का बहुत बडा योग रहा है। रागसागरोद्भव मे वल्लभ छाप वाले जो पद है, वे इनके नही है। व्रजभाषा मे इनका एक गद्य-ग्रन्थ 'चौरासी अपराध' इनका माना जाता है।

वल्लभाचार्य ने ४० दिन तक अनशन और विप्रयोग करने के अनन्तर स० १५८७ मे आषाढ शुक्ल ३ को मध्याह्न के समय काशी मे हनुमान घाट पर गगा की बीच धारा मे, ५२ वर्ष की वय मे, जल समाधि ली।[1]

सरोज मे दिया गया स० १६०१ ठीक नही। साथ ही वल्लभाचार्य के नाम पर इस ग्रंथ मे जो दो रचनाएँ दी गई है, वे किसी वल्लभ नामक अन्य कवि की हैं, जो इनके वल्लभ-सम्प्रदाय मे दीक्षित था और इनके पुत्र विट्ठलनाथ का शिष्य था। यह इन्ही रचनाओ से स्पष्ट है।

१. बाती कपूर की जोति जगमगै, आरती विट्ठलनाथ विराजै।

यह विट्ठलनाथ वल्लभाचार्य के पुत्र हैं और कवि के गुरु है।

२. गायो न गोपाल, मन लायो न रसाल लीला,
सुनि न सुबोध, जिन साधु संग पायो है
सोयो न सवाद करि धरि अवधरि हरि
क्बहु न कृष्ण नाम रसना कहायो है
वल्लभ श्री विट्ठलेस प्रभु की सरन आय
दीन ह्वै कै मूढ छन सीस ना नवायो है
रसिक कहाय अब लाजहु न आवै तोहि
मानुष सरीर धरि कहा धौं कमायो है

यहाँ सुबोध सुनने से अभिप्राय श्रीमद्भागवत की वल्लभाचार्य कृत सुबोधिनी टीका के श्रवण करने से है। वल्लभ, कवि का नाम है। विट्ठलेस की शरण मे आने से अभिप्राय वल्लभ-सम्प्रदाय मे गोसाई विट्ठलनाथ द्वारा दीक्षित होने से है।

सरोज और ग्रियर्सन (३४) के अनुसार वल्लभाचार्य राधावल्लभीय सम्प्रदाय के प्रवर्तक थे। किंतु यह बात ठीक नही। यह वल्लभ-सम्प्रदाय के प्रवर्तक थे, राधावल्लभीय सम्प्रदाय के प्रवर्तक तो हितहरिवश थे।

---

(१) अष्टछाप परिचय, पृष्ठ ३-१७ के आधार पर लिखित।

महाप्रभु वल्लभाचार्य को गोकुलस्थ नही कहा जा सकता। गोकुल को तो गो० विट्ठलनाथ ने बाद मे सं० १६२८ मे बसाया था।

वल्लभाचार्य के ८४ शिष्य हुए, जिनकी कथा 'चौरासी वैष्णवन की वार्ता' मे है। इन ८४ मे ४ बहुत प्रसिद्ध हैं—कुभनदास, सूरदास, कृष्णदास अधिकारी और परमानद दास। इनकी गणना अष्टछाप के कवियो मे है।

वल्लभाचार्य का उल्लेख मात्र विष्णुस्वामी के सप्रदाय वाले छप्पय (४८) मे हुआ है। भक्तमाल मे इन पर कोई स्वतत्र छप्पय नही है। छप्पय ८२ मे एक वल्लभ हैं, जो भक्तमाल की रचना के समय जीवित थे, अत. प्रसिद्ध वल्लभाचार्य से भिन्न हैं।

५१६।४७१

२३. विट्ठलनाथ गोकुलस्थ, गोस्वामी वल्लभाचार्य के पुत्र, स० १६२४ मे उ०। यह महाराज वल्लभाचार्य के पुत्र परमभक्त वात्सल्य निष्ठ हुए हैं। इनके सात पुत्रो की सात गद्दियाँ गोकुल जी मे चली आती है। इनकी कविता, पद इत्यादि बहुत से रागसागरोद्भव मे है।

सर्वेक्षण

गोसाई विट्ठलनाथ का जन्म स० १५७२, पौष कृष्ण ६, शुक्रवार को, काशी के निकट चरणाट नामक गाँव मे हुआ था। यह महाप्रभु वल्लभाचार्य के द्वितीय पुत्र थे। इनकी पहली पत्नी रुक्मिणी से ६ पुत्र, ४ पुत्रियाँ तथा दूसरी पत्नी से घनश्याम नामक एक पुत्र उत्पन्न हुआ था।

इन्ही सातो पुत्रो की बाद मे सात गद्दियाँ चली। इनके बडे भाई गोपीनाथ जी स० १५८७ मे महाप्रभु वल्लभाचार्य के देहावसान के अनतर आचार्य हुए। १२ वर्ष के बाद ही स० १५६६ मे उनकी मृत्यु जगदीशपुरी मे हो गई। उस समय उनके पुत्र पुरषोत्तम जी केवल १२ वर्ष के थे। कुछ लोग पुरुषोत्तम जी को आचार्य बनाना चाहते थे और कुछ लोग विट्ठलनाथ जी को। इस गृह-कलह को लेकर श्रीनाथ जी के मदिर के अधिकारी कृष्णदास ने विट्ठलनाथ जी का मदिर-प्रवेश तक रोक दिया था। पर स० १६०६ मे पुरुषोत्तम जी का भी देहावसान १६ वर्ष की अल्प आयु मे हो गया। फलत. गृह-कलह स्वत. शात हो गया। स० १६०७ मे विट्ठलनाथ जी विधिपूर्वक पुष्टि-संप्रदाय के आचार्य हुए। इसी वर्ष इन्होने अष्टछाप की स्थापना की। इनका तिरोधान स० १६४२ मे फाल्गुन कृष्ण ७ को हुआ। इनकी मृत्यु के अनतर इनके सात पुत्रो की सात गद्दियाँ चली, जिनके वशधरो की गद्दियाँ आजकल निम्नाकित स्थानो पर हैं—

१ गिरिधर जी के वंशधरो की गद्दी	कोटा
२ गोविंद राय ,,	नाथद्वारा, मेवाड
३ बालकृष्ण ,,	कांकरोली
४ गोकुलनाथ ,,	गोकुल
५ रघुनाथ ,,	कामवन
६ यदुनाथ ,,	सूरत
७ घनश्याम ,,	कामवन

गोसाई विट्ठलनाथ के रचे संस्कृत-ग्रंथ ५० हैं।[1] विट्ठलनाथ जी ने भी व्रजभाषा मे कविता नही की। व्रजभाषा गद्य मे इनके चार टीका ग्रंथ हैं—

१. यमुनाष्टक १९१२। २८, १९३२। ७२ ए। वल्लभाचार्य के इसी नाम के संस्कृत ग्रंथ की व्रजभाषा गद्य मे टीका।

२ नवरत्न सटीक १९१२। २८, १९३२। ७२ सी।

३. शृगार रस मडन १९०९। ३२।

४. सिद्धात मुक्तावली १९३२। ७२ वी।

रागसागरोद्भव रागकल्पद्रुम मे विट्ठलछापयुक्त पद अन्य विट्ठलो के हैं। सरोज मे इनके नाम से जो पद उद्धृत है, उसमे विट्ठल गिरिधरन छाप है।

'श्री विट्ठल गिरिधरन सी निधि अब भक्त को देत हैं विनहि मागी'

विट्ठल गिरिधरन छाप वाले पद गोसाई विट्ठलनाथ की शिष्या गगावाई कृत हैं। गगावाई के पदो का एक सग्रह खोज मे मिला है। यह क्षत्राणी थी और महावन मे रहा करती थी। विट्ठलनाथ[2] के २५२ शिष्य थे। इनकी कथा 'दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता' मे है। व्रजभाषा के इस गद्य ग्रंथ मे गगावाई की भी वार्ता है।

विट्ठलनाथ जी के शिष्यो मे गोविद स्वामी, छीतस्वामी, चतुर्भुजदास और नददास, ये चार श्रेष्ठ कवि हैं और अष्टछाप मे परिगणित हैं।

भक्तमाल मे विट्ठलनाथ का विवरण छप्पय ७९ मे है। इनके सातो पुत्रो की नामावली छप्पय ८० मे है।

---

५२० । ४८८

२४ विपुल विट्ठल २, गोकुलस्थ श्री स्वामी हरिदास के शिष्य, १५८० मे उ०। इनके पद रागसागरोद्भव मे हैं। यह महाराज मधुवन मे बहुधा रहा करते थे।

सर्वेक्षण

विट्ठल विपुल स्वामी हरिदास के शिष्य तो थे ही, उनके मामा भी थ। हरिदास जी का जन्मकाल स० १५३७ और तिरोधानकाल स० १६३२ माना जाता है। यही समय विट्ठल विपुल का भी होना चाहिए। सरोज मे दिया हुआ स० १५८० रचनाकाल ही है। यदि इसे जन्मकाल माना जायगा तो मामा, भाजे से ४३ वर्ष कनिष्ठ हो जायगा।

सर्वेश्वर के अनुसार वीठल विपुल स्वामी हरिदास के मामा नही थे, ममेरे भाई थे। यह हरिदास जी से ५ वर्ष बड़े थे। इनका जन्म स० १५३२ में अगहन शुक्ल पचमी को हुआ था। यह तिथि नागरीदास जी ने स्वरचित इनकी वधाई मे दी है —

प्रगटे विपुल सुजनि सुखदाता
श्री वृदा विपिन विहार प्रकाश्यो सोभानिधि गुन गाता
मँगसिर सुकल विहार पचमी रसिकनि हिय हुलसाता

---

(१) अष्टछाप परिचय, पृष्ठ २४-४१ के आधार पर (२) खोज रि० १९३५। २४

इनके पिता का नाम गुरुजन और माता का श्रीमती कौसल्यादेवी था। इनका जन्म वृन्दावन के ही निकट राजपुर में हुआ था। इनका देहात हरिदास जी की मृत्यु के कुछ ही दिनो बाद हुआ। स्वामी जी की मृत्यु से विकल हो यह निधुवन मे पडे थे। इनकी सात्वना के लिए हरीराम व्यास आदि वैष्णवो ने रास का आयोजन किया और इन्हे वहाँ ले गए। रसिको की मत्रणा के अनुसार स्वामिनी-स्वरूप ने इनका हाथ पकड लिया और कहा, "बाबा, आँखें खोल और मेरा दर्शन कर।" बीठल विपुल ने दर्शन के लिए आँखें खोली और स्वामिनी-स्वरूप मे सदा के लिए लीन हो गए। इसीलिए भक्तमालकार ने इन्हे 'रस सागर' कहा है। इस कथा का उल्लेख विट्ठल विपुल के शिष्य विहारिन देव ने एक पद मे किया है। प्रियादास जी ने भी भक्तमाल की टीका मे इस घटना का उल्लेख किया है।[१]

हरिदास वशानुचरित्र के अनुसार बीठल विपुल की मृत्यु हरिदास जी के देहावसान के सात दिन बाद कातिक वदी ७ स० १६३२ को हुई। यह स० १५८० मे स्वामी हरिदास जी के मुख्य शिष्य हुए थे। सरोज मे यही सवत् दिया गया है। इस ग्रथ मे इनका जन्म काल स० १५५०, मार्गशीर्ष शुक्ल ५ दिया गया है, जो ठीक नही।[२] इनके दो प्रमुख शिष्य, कृष्णदास और विहारिन दास हुए हैं।

सरोज के अनुसार विट्ठल विपुल जी मधुवन मे बहुधा रहा करते थे। ग्रियर्सन (६२) में इसका यह अर्थ किया गया कि यह मधुवन के राजा के आश्रित थे। विनोद (७६) मे भी ग्रियर्सन का अधानुकरण कर यही कहा गया है। मधुवन स्थान का नाम है, किसी राजा-रानी का नाम नही। सरोजकार ने भी संभवत. प्रमाद से निधुवन के स्थान पर मधुवन लिख दिया है। निधुवन वृन्दावन का एक भाग है। यही स्वामी हरिदास रहा करते थे। वृन्दावन मे यह स्थान अब भी जगल के रूप मे सुरक्षित है। सभवत. यही विट्ठल विपुल भी रहते रहे होगे। विट्ठल विपुल जी की बानी[३] खोज मे मिल चुकी है। इसमे केवल ४० पद है।

भक्तमाल छप्पय ६४ मे वृन्दावन की माधुरी का आस्वाद लेने वाले १४ भक्तो की नामावली मे विट्ठल विपुल का भी नाम है। इन्हे 'रस सागर' कहा गया है। स० १६३२ के आस-पास ही स्वामी हरिदास की मृत्यु के अनतर इनका देहावसान हुआ। प्रियादास ने रस सागर की व्याख्या करते हुए यह कहा है :—

स्वामी हरिदास जू के दास, नाम बीठल है,
गुरु से वियोग, दाह उपज्यो अपार है
रास के समाज में विराज सब भक्तराज,
बोलि के पठाए, आए आज्ञा बडो भार है
युगल सरूप अवलोकि, नाना नृत्य भेद
गान तान कान सुनि, रही न सँभार है

(१) सर्वेश्वर, वर्ष ५, अक-१-५, चैत्र स० २०१३, पृ० २३८ (२) हरिदासवशानुचरित्र, पृष्ठ ३१,३६ (३) खोज रि० १६०५ और १६१२।२६

सिलि गए चाही ठौर, पायो भाव तन और
कहै रस सागर, सो ताकों यों विचार है ३७७

५२१।४६६

२५. वीठल कवि ३। इनके शृङ्गार मे अच्छे कवित्त है।

सर्वेक्षण

वीठल का एक कवित्त सरोज मे 'दिग्विजय भूषण' से उद्धृत है। यह रीति परम्परा मे डूबे हुए कोई अज्ञात कविद हैं। यह उक्त कवित्त के अतिम चरण मात्र से भलीभाँति अनुमान किया जा सकता है।

विरह ने दही, रात पिय बिन रही, रात
आवै नियरात, तिय जात पियरात है।

ग्रियर्सन (३५) मे इस कवि के विट्ठलनाथ से अभिन्न होने की बेतुकी कल्पना की गई है।

५२२।४७०

२६. वलि जू कवि। ऐजन। इनके शृङ्गार मे अच्छे कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

सरोज मे आगे सख्या ५६६ पर एक और वलि जू कवि का विवरण है। इन दोनो कवियो की कविता का पृष्ठ-निर्देश (२१६) एक ही है। अत. दोनो कवि एक ही है। विनोद (४४६) मे भी दोनो कवियो का अभेद स्वीकृत है। यहाँ इनका जन्मकाल स० १६६४ और रचनाकाल १७२२ दिया गया है, जो सरोज ५६६ सख्यक वलि जू के अनुसार है। प्रथम सस्करण मे कवि का नाम वलिराम है, तृतीय मे राम छूट गया है केवल 'वलि' रह गया है, सप्तम मे 'जू' और लगकर कवि 'वलि जू' वन गया है। तृतीय एव सप्तम सस्करणो मे पृष्ठ-निर्देश भी अशुद्ध है।

५२३।४९३

२७. बलराम दास व्रजवासी। इनके पद रागसागरोद्भव मे हैं।

सर्वेक्षण

बलरामदास व्रजवासी थे। इनके पद रागकल्पद्रुम भाग २, मे कीर्तन सम्बन्धी पदो मे हैं। यह कृष्णभक्त कवि थे। सरोज मे चीर-हरण सम्बन्धी इनका एक पद उद्धृत है। इनके सम्बन्ध मे कोई प्रामाणिक सूचना सुलभ नही। ग्रियर्सन (७६८) के अनुसार यह वह बलरामदास हैं, जिनका उल्लेख तासी ने सृष्टि-विधान सम्बन्धी 'चित विलास' नामक ग्रन्थ के कर्ता रूप में किया है। विनोद

(५३१) में पदो के रचयिता एक बलिराम है, जो सं० १७५० मे उपस्थित कहे गए हैं। कुछ कहा नही जा सकता कि यह सरोज के बलरामदास से भिन्न है अथवा अभिन्न। स० १८१० के लगभग उपस्थित रामधाम[1] के रचयिता, बेंधुआ हसनपुर जिला सुलतानपुर के नानकपथी महत से तो यह निश्चय ही भिन्न हैं।

५२४।४६५

२८ बशीधर। ऐजन। इनके पद रागसागरोद्भव मे है।

सर्वेक्षण

यह वल्लभ-सम्प्रदाय के अनुयायी थे। इनका एक ग्रन्थ 'दानलीला[2]' खोज मे मिला है। रिपोर्ट मे इन्हे १६ वी शताब्दी के मध्य मे उपस्थित कहा गया है। इनके गुरु का नाम द्वारिकेश कहा गया है, जो ठीक नही प्रतीत होता। यह शब्द कृष्ण के लिए प्रयुक्त हुआ है। वल्लभाचार्य इनके गुरु प्रतीत होते हैं।

द्वारिकेश पद कमल कौ बंसीधर धरि ध्यान
श्री वल्लभ जिह हेत ते करयो भक्ति को दान

रिपोर्ट एव सरोज मे उद्धृत अशो से प्रतीत होता है कि कृष्ण का गिरिधर रूप इनका इष्ट था।

रिपोट—प्यारी गोरस दान दै, भेंटे गिरिधर पीय
यह लीला निन प्रीनि सो, बसीधर को जीय ३३
सरोज— बसीधर गिरिधर पर वारी अब कछु और न होना री

इनके पद रागकल्पद्रुम भाग २ मे हैं।

५२५।४७६

२६ बशीधर मिश्र सदीलेवाले, स० १६७२ मे उ०। इनके शातरस के चोखे कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

सरोज मे बशीधर मिश्र का विवरण महेश दत्त के काव्यसग्रह से लिया गया है। सरोज मे दिया स० १६७२ भाषा काव्यसग्रह के अनुसार बशीधर का मृत्यु काल है।[3] यह कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे।

५२६।४६४

३० विष्णुदास १। इनके पद रागसागरोद्भव मे है।

---

(१) खोज रि० १६३२।१६ (२) खोज रि० १६४४।३८२ (३) भाषा काव्यसग्रह, पृष्ठ १२५-२६

सर्वेक्षण

विष्णुदास महाप्रभु वल्लभाचार्य के अतरग सेवक थे[1] और सरोज मे उद्धृत निम्नाकित पद से इनका वल्लभनन्दन गोसाईं विट्ठलनाथ जी का समकालीन होना सिद्ध है—

प्रात समय, श्रीवल्लभ सुत को परम पुनीत विमल जस गाऊं
अबुज वदन, सुभग नयना अति, स्रवनन लै हिरदे बैठाऊँ
जब जब निकट रहत चरनन तर पुनि पुनि निरखि निरखि सुख पाऊ
विष्णुदास प्रभु करो कृपा मोहि वल्लभ नन्दन दास कहाऊं

८४ वैष्णवो मे से एक यह भी है। उक्त वार्ता मे यह ५० वें वैष्णव हैं। यह जाति के छीया थे। इनका रचनाकाल स० १५८० और १६४० के बीच होना चाहिए।

भक्तमाल मे तीन विष्णुदास हैं—

१—विष्णुदास, कृष्णदास पयअहारी के शिष्य। छप्पय ३९ मे कृष्णदास पयअहारी के शिष्यो मे परिगणित।

२—विष्णुदास, मथुरा मडल मे बसे पहले के एव स० १६४९ मे वर्तमान २१ भक्तो मे से एक, छप्पय १०३।

३—विष्णुदास, दक्षिण दिशा मे स्थित काशीर ग्राम के रहने वाले, छप्पय १५७। इनमे से दूसरे विष्णुदास सरोज के अभीष्ट विष्णुदास जान पडते हैं।

५२७।४६९

३१. विष्णुदास २। इनके कूट दोहे बहुत हैं।

सर्वेक्षण

सरोज मे उद्धृत ५ कूट दोहो और कवि नाम के सहारे ही इस कवि को निम्नलिखित ६ विष्णुदासों मे से खोज निकालना सम्भव नही। यह भी हो सकता है कि यह इनमे से कोई भी न हो—

१—विष्णुदास, स० १४९२ के लगभग वर्तमान। गोपाचलगढ (ग्वालियर) के राजा डोगर सिंह के आश्रित। इनके निम्नाकित ग्रथ मिले है :—

क. महाभारत कथा, १९०६।२४८ ए, १९२९।३२८ ए। १९०६ वाली रिपोर्ट के अनुसार इसकी रचना स० १४९२ मे हुई।

ख. रुक्मिणी मगल, १९१७।१९३, १९२६।४९८, १९२९।३२८ बी, १९४१।५६०८, १९३१।६

ग स्वर्गारोहण पर्व, १९०६।२४८ बी, १९२९।३२८ सी, डी, ई, एफ, १९४४।३८८। यह ग्रथ महाभारत कथा का एक अश मात्र है।

---

(१) श्री वल्लभाचार्य महाप्रभु जी की प्राकट्य वार्ता—प्रारम्भ में गुजराती प्रकरण, पृष्ठ १

२—विष्णुदास कायस्थ। पन्ना बुंदेलखड निवासी, अठारहवी शताब्दी के आरम्भ मे वर्तमान। एकादशी माहात्म्य १६६६।११७

३—विष्णुदास स० १८०७ के पूर्व वर्तमान। भाषा वाल्मीकीय रामायण १६४१।२५४

४—विष्णुदास, स० १८५१ के लगभग वर्तमान, झाझर के निवासी, गुरु का नाम सभवतः ढंढीराय सुख था। बारह खडी, १६०६।३२७, १६२३।४४२, १६४७।३६७

५—विष्णुदास, पाराशरी जातक १६२०।२०४ ए, सनेहलीला १६२०।२०४ बी, १६२६। ५६६। यह ग्रथ सुदर सरस, सरल दोहो मे विरचित है।

६—विष्णुदास, ओरछा वासी, रचनाकाल स० १७३५। मकरध्वज चरित्र, स्वर्गारोहिणी और भूगोल पुराण के रचयिता। बुदेल वैभव, भाग २, पृष्ठ ४६७

हो सकता है कि दूसरे और छठे विष्णुदास एक ही हो।

५२८।४५१

३२. वशीधर कवि, ३। इनके बहुत सुदर कवित्त है।

सर्वेक्षण

वशीधर नामक अनेक कवि हुए है। सभवत बहुत सुंदर कवित्त रचनेवाले वशीधर वह हैं, जिन्होने दलपतिराय श्रीमाल के साथ मिलकर अलकाररत्नाकर नामक भाषा भूषण की प्रसिद्ध टीका लिखी। यह अहमदाबाद निवासी मेदपाट ब्राह्मण थे और स० १७६८ के आस पास वर्तमान थे। इनका विशेष विवरण पीछे ३३३ सख्या पर देखिए।

५२६।४१७

३३. ब्रजेश कवि, बुंदेलखडी।

सर्वेक्षण

ब्रजेश का जन्म स० १७६० और कविताकाल स० १७६० है। यह ओरछे के रहने वाले थे। [१]

५३०।४४२

३४. ब्रजचद कवि स० १७६० मे उ०। इनकी कविता अत्यन्त ललित है।

---

(१) बुंदेल वैभव, भाग २, पृष्ठ ४१८

सर्वेक्षण

व्रजचद का एक खडित ग्रथ 'आनद सिंधु' मिला है। इसका प्रथम प्रसग ही बचा है। यह करुणरस सम्बन्धी है। इसमे ईश्वर के विनय सम्बन्धी १०१ कवित्त सवैये हैं। कवि के विषय मे अभी कोई जानकारी प्राप्त नही।

५३१।४४३

३५ व्रजनाथ कवि, स० १७८० मे उ०। इनका रागमाला काव्य महा सुदर है।

सर्वेक्षण

श्री विश्वनाथ प्रसाद मिश्र[२] का अनुमान है कि सभवत. यही व्रजनाथ घनानद कवित्त के सकलयिता हैं और इन्होने घनानद की प्रशस्ति मे ८ छद लिखे, जिनमे से प्रथम दो प्रमाद से स्वय घनानद विरचित माने जाते रहे हैं।

खोज मे भी एक व्रजनाथ मिले हैं। इन्होने स० १७३२ मे पिंगल[३] नामक ग्रथ की रचना की थी। यह महीपति मिश्र के वशज थे और कपिला निवासी थे।

५३२।४४४

३६ व्रजमोहन कवि। इनके शृगार के चोखे कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही।

५३३।४४७

३७ व्रज, लालागोकुल प्रसाद, कायस्थ बलरामपुर वाले, वि०। इनके बनाए हुए दिग्विजय भूषण अष्टयाम, चित्र कलाधर, दूती दर्पण इत्यादि ग्रथ मनोहर हैं।

सर्वेक्षण

लाला गोकुलप्रसाद व्रज का जन्म चैत्र कृष्ण १, स० १८७७ को बलरामपुर जिला गोडा के एक श्रीवास्तव दूसरे कायस्थ परिवार मे अखावरी वश मे हुआ था। कवि ने स्वय निम्नाकित दोहे मे अपना जन्म सवत् दिया है—

> सवत रिषि[७] 'मुनि[७] नाग[८] ससि[१] संबत सोह स्वच्छ
> नखत रेवती, लगन झख, गोकुल जन्म प्रतत्यच्छ

---

(१) खोज रि० १९१२।३० (२) घनआनंद ग्रंथावली, पृष्ठ ७० (३) खोज रि० १९०६।१४२, १९४७। ३७२

कवि ने ३० वर्ष की वयमे काव्यके प्रति अभिरुचि दिखलाई। इन्होने रामप्रसाद भिनगा के प्रसिद्ध ठाकुर शिवसिंह, गदाधर प्रसाद एवं हिन्दी के प्रसिद्ध कवि बाबा दीनदयाल गिरि से काव्य-ग्रन्थ पढे थे। इन्होने चित्र कलाधर मे दीनदयाल गिरि को गुरु रूप मे स्मरण भी किया है।

पाए जा पद प्रीति सों, कबित रीति सारंस
श्री गुरु दीनदयाल गिरि परम हस अवतस

ब्रज जी सं० १६०५ मे दिग्विजय सिंह के आश्रय मे आए—

बुधि विद्या दुइ चद्रमा, सोहै भादो मास
महाराज दिग्विजय सिंह बोलि, पठै निज पास

ब्रज जी का देहावसान स० १६६२, वैशाख शुक्ल ६, शनिवार को रात ढाई बजे हुआ। ब्रज जी के बनाए हुए ग्रन्थो की तालिका निम्न है—

१—अष्टयाम, रचनाकाल वसतपचमी, सं० १६१६। इसमे दिग्विजय सिंह की दिनचर्या है। ग्रन्थ खोज मे भी मिल चुका है।[1]

२—दिग्विजय भूषण, इस ग्रन्थ की रचना स० १६१६ मे हुई—

खंड[9] इंदु,[1] नव[9] चद्र[1] प्रकास
विक्रम संवत सित मधु मास
ग्रन्थ दिग्विजै भूषन नाम
अलकार वृज बिरचि ललाम

यह ग्रन्थ स० १६२५ मे लीथो मे छपा था। प्रमाद से लोगो ने प्रकाशनकाल को ही रचनाकाल समझ लिया है। यह ब्रज जी का सर्वाधिक प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। इसमे १६२ अन्य कवियो की भी रचनाएँ सकलित हैं।

३—दूती-दर्पण, यह श्लेष और मुद्रालकार मे वर्णित है और दिग्विजय भूषण में समाहित है।

४—नीति रत्नाकर, रचनाकाल स० १६२१।

५—चित्र कलाधर, रचनाकाल, सं० १६२३। यह चित्र काव्य का ग्रन्थ है।

६—पचदेव पचक, रचनाकाल स० १६२४।

७—नीति मार्तण्ड, रचनाकाल स० १६२६। सभवत यही ग्रन्थ नीति-प्रकाश भी है, जिसका उल्लेख विनोद मे (२०६६) हुआ है।

८—वाम विनोद, रचनाकाल स० १६२६ है। ग्रथ खोज मे मिल चुका है।[2]

रुद्र[9] उभै[2] ग्रह[6] चंद्रमा[1] संवत अस्विन मास
कथि दसमी सित सुभ घरी, वाम विनोद प्रकास

---

(१) खोज रि० १६२३।१२६, १६२६।१४२ ए (२) खोज रि० १६०६।६४ बी

९—सुतोपदेश, रचनाकाल स० १९३० ।

१०—चौबीस अवतार, रचनाकाल सं० १९३१ । सम्भवत यही ग्रन्थ नाम रत्नाकर भी है, जो खोज मे (१९०६।६५ ए) मिल चुका है । रिपोर्ट मे इसका रचनाकाल स० १९०० दिया गया है, जो अशुद्ध है, क्योकि व्रज का रचनाकाल सं० १९१९ से प्रारम्भ होता है ।

११—शोक विनाश, स० १९३३ मे कवि के ३ पुत्रो की मृत्यु हो गई । इसी वर्ष उसने यह दार्शनिक ग्रन्थ रचा ।

१२—शक्ति प्रभाकर, रचनाकाल स० १९३६ । यह अध्यात्म रामायण का अनुवाद है ।

१३—टिट्टिभि आख्यान
१४—सुहृदोपदेश
१५—मृगया मयक
} रचनाकाल सं० १९३७

१६—दिग्विजय प्रकाश, स० १९३९ मे महाराज दिग्विजय सिंह की मृत्यु हुई । इसी वर्ष कवि ने इस ग्रन्थ मे उक्त महाराज का जीवन चरित लिखा, जिसे स० १९४६ मे उनकी विधवा महारानी ने बलरामपुर के ही एक लीथो प्रेस से छपाया ।

१७—महारानी धर्मचन्द्रिका, यह मनुस्मृति का अनुवाद है । यह ग्रन्थ बलरामपुर की विधवा महारानी साहिबा के लिए स० १९३९ के बाद किसी समय रचा गया ।

१८—एकादशी माहात्म्य, यह भी स० १९३९ के बाद ही उक्त महारानी के लिए लिखा गया ।

व्रज जी के ये सभी ग्रन्थ बलरामपुर दरबार से सम्बन्धित हैं । इनके निम्नलिखित ३ ग्रन्थ अन्य दरबारो से सम्बन्धित है—

१—कृष्णदत्त भूषण, यह गोडा नरेश कृष्णदत्त के लिए लिखा गया ।

२—अचल प्रकाश, यह मेहनौन के राजा अचल सिंह के लिए लिखा गया ।

३—महावीर प्रकाश, यह पयागपुर जिला बहराइच के भइया विजयराज सिंह के लिए लिखा गया ।

लाला गोकुलप्रसाद 'व्रज' पर किन्ही रामनारायण मिश्र ने माधुरी[1] मे विस्तृत लेख लिखा था । व्रज जी का चित्र भी छपा था । इसी लेख के आधार पर इनका विवरण प्रस्तुत किया गया है ।

लाला गोकुलप्रसाद जी ने मदनगोपाल सुकुल, फतुहाबाद कृत अर्जुन विलास की पद्यबद्ध भूमिका भी लिखी थी ।[2]

---

(१) माधुरी, जून १९२४ ई० (२) माधुरी, वर्ष ६, खड २, अंक ५, जून १९२८ ई०, पृष्ठ ६६१

५३४।४५३

३८ ब्रजवासीदास कवि १। इन्होने प्रबोध चद्रोदय नाटक भाषा मे किया है।

सर्वेक्षण

एक बार इस कवि का उल्लेख ३७५ सख्या पर दास ब्रजवासी के नाम से हो चुका है। यह वस्तुतः ब्रजविलास के प्रसिद्ध रचयिता ब्रजवासीदास हैं। इनका विस्तृत विवरण आगे सख्या ५३७ पर देखिए।

प्रबोध चंद्रोदय खोज मे मिला चुका है। रिपोर्ट मे विना किसी आधार का सकेत किए हुए इसका रचनाकाल स० १८१६ दिया गया है।[1]

५३५।४५५

३९ ब्रजदास कवि प्राचीन, स० १७५५ मे उ०। इनके कवित्त सुन्दर हैं। हजारे मे इनका नाम है।

सर्वेक्षण

ब्रजदास की कविता हजारे मे थी, यह इस बात का प्रमाण है कि कवि या तो स० १८७५ मे उपस्थित था अथवा वह और पूर्ववर्ती है।

५३६।४६२

४०. ब्रजलाल कवि स० १७०२ मे उ०। इनके कवित्त हजारे मे है।

सर्वेक्षण

ब्रजलाल के कवित्त हजारे मे थे, अत. स० १८७५ के पूर्व इनका अस्तित्व स्वत. सिद्ध है। इन्होने स० १८८१, सावन वदी ५, भृगुवार को छद रत्नाकर[2] की रचना की थी। यह वेतिया के वदीजन थे और काशी नरेश महाराज उदित नारायण सिंह के आश्रित थे।

५३७।४७८

४१ ब्रजवासीदास २, वृदावन निवासी, स० १८१० मे उ०। इन्होने सवत् १८२७ मे ब्रजविलास नामक ग्रथ बनाया।

सर्वेक्षण

ब्रजवासीदास वल्लभ सम्प्रदाय के वैष्णव थे। ब्रजविलास मे उन्होने वल्लभाचार्य की वदना की है।

---

(१) खोज रि० १९०४।८, १९०६।१४१, १९२३।६६ (२) खोज रि० १९०४।१६

वंदौ प्रथम कमलपद नीके
श्री वल्लभ आचारज जी के
—खोज रि० १६२०।२२ ए, १६४६।२६१

ब्रजविलास की रचना स० १८२७ मे हुई थी—
संवत् सुभ पुराण सत जानौ
तापर और नछत्रन आनौ
माघ सु मास पच्छ उजियारा
तिथि पंचमी सुभग ससिवारा
श्री बसत उत्सव दिन जानी
सकल विश्व मन आनद दानी
—खोज रि० १६२०।२२ ए, १६४१।२६१

ब्रजविलास के अत मे छद सख्या दे दी गई है।
सिगरे दोहा आठ सौ और नवासी आहिं
है इतने ही सोरठा, ब्रज विलास के माहिं
दस सहस्र पट सौं अधिक चौपाई बिस्तार
छंद एक शत पट, अधिक मधुर मनोहर चारु
सब कौं नुप्टुप छद करि दस सहस्र परिमान
खडित होन न पावई लिखियो जानि सुजान
—खोज रि० १६२०।२२ ए, १६४१।२६१

ब्रजविलास मे छद क्रम यह है—
द्वादस चौपाई प्रति दोहा
तंह प्रति एक सोरठा सोहा
कहूँ कहूँ सुभ छद सोहाए
भापा सरल, न अर्थ दुराए

'ब्रजविलास' सूरसागर के आधार पर है। दोहा-चौपाइयो मे रचित यह काव्य हिन्दी के अत्यन्त जनप्रिय काव्यो मे से है। अनेक बार यह छप चुका है। खोज मे भी इसकी अनेक पूर्ण प्रतियाँ मिली हैं।[1] इस ग्रथ के विभिन्न प्रसग भी अलग-अलग ग्रथ रूप मे मिले हैं, यथा माखनचोरी लीला,[2] मानचरित लीला,[3] अघासुरबध लीला,[4] पुरातन कथा[5] आदि।

सरोज में दिया हुआ स० १८१० कवि का रचनाकाल ही है, क्योकि इसके ६ वर्ष बाद ही स० १८१६ में इन्होने 'प्रबोध चद्रोदय' नाटक का अनुवाद किया है।

---

(१) खोज रि० १६०६।२६, १६२०।२० ए बी, १६२६।४७ ए बी सी डी, १६४१।२६१
(२) खोज रि० १६२६।५७ ई, (३) खोज रि० १६२६।५७ जी, (४) खोज रि० १६२६।५७ एफ
(५) खोज रि० १६३५।१०६

विनोद के अनुसार व्रजवासीदास माथुर ब्राह्मण थे। यह वल्लभाचार्य के वशज मोहन गोसाई के शिष्य थे। इनके गुरु का पता व्रजविलास से लगता है। व्रजवासीदास का उल्लेख सरोज मे ३७५ और ५३४ सख्याओ पर दो बार और हो चुका है।

५३८।४८१

४२ व्रजराज कवि बुंदेलखडी, स० १७७५ मे उ०। इनके कवित्त बहुत सुदर हैं।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही।

५३६।४६२

४३ व्रजपति कवि, स० १६८० मे उ०। इनके पद रागसागरोद्भव मे है।

सर्वेक्षण

खोज मे एक व्रजपति भट्ट का ग्रथ 'रग भाव माधुरी'[१] मिला है। इनके पिता का नाम हरिदेव भट्ट था। रिपोर्ट मे इनका जन्मकाल स० १६६० और रचनाकाल स० १६८० दिया गया है, जिसका मूल आधार सरोज ही है। स्वय ग्रथ मे न तो रचनाकाल दिया गया है और न प्रतिलिपि काल ही। यह नव रस नायिकाभेद, नखशिख, अलकार एव ऋतु-वर्णन का ग्रथ हैं। ग्रथ के चार छद उद्धृत हैं, पर किसी मे कवि छाप नही है। यह ग्रथ कवित्त सवैयो का है। प्रवृत्ति से यह व्रजपति शृ गारी और रीतिकालीन प्रकट होते हैं। यद्यपि रिपोर्ट मे यह सरोज वाले व्रजपति से भिन्न नही समझे गए हैं, पर सरोज के व्रजपति इनसे भिन्न जान पडते हैं, क्योकि सरोज मे इनका एक चीरहरण सम्बन्धी पद उद्धृत है, जिससे यह भक्त ज्ञात होते हैं। भक्त कवियो ने भी कवित्त सवैये लिखे हैं, पर सामान्यतया नायिका भेद के ग्रथ नही लिखे हैं। जब तक कोई निचत आधार न मिल जाय,इन कवियो को एक कर देना समीचीन नही।

५४०।४१८

४४. विजयाभिनन्दन बुदेलखडी, स० १७४० मे उ०। यह राजा छत्रशाल बुदेला पन्नाधिपति के यहाँ थे।

सर्वेक्षण

छत्रसाल का शासनकाल स० १७२२-८८ है। यही विजयाभिनन्दन का भी काव्यकाल होना चाहिए। अत. सरोज मे दिया स० १७४० ठीक है और कवि का उपस्थितिकाल है। सरोज मे

(१) खोज रि० १६१२।२३

इनके दो कवित्त उद्धृत हैं, जिनसे इनका छत्रसाल का प्रशस्तिगायक कवि होना सिद्ध है।

१—एक छत्र छत्ता छितिपाल होइ छत्रिन में
वहै छवि छाजी त्याग तेग के अजूबा मे

इस चरण मे आए 'छत्ता' का अर्थ है छत्रसाल।

२—रचो करतार अवतार भू को भरतार
मही मे महेवा वाल तेग त्याग ऑकरे

इस चरण का उत्तरार्द्ध अशुद्ध है। इसका शुद्ध रूप यह है—

मही मे महेवा वाल तेग त्याग ऑकरे

महेवा छत्रसाल की राजधानी थी। भूषण ने भी छत्रसाल को 'मरद महेवा वाल' कहा है।[१]

५४१।४२१

४५ वशरूप कवि बनारसी, स० १९०१ मे उ०। यह महाराज बनारस के प्रशसक सत्कवि थे।

सर्वेक्षण

सरोज मे उद्धृत वशरूप के चार कवित्तो में से प्रथम मे काशिराज की बाहो की प्रशसा है—

पुन्य अवगाहैं, ये भुवन पर दाहैं, बाहैं
साहन निवाहैं, कासिराज महाराज की

यह कौन काशिराज है, स्पष्ट उल्लेख नही हुआ है। विनोद (१९८८) मे सरोज के अनुसार इनका जन्मकाल स० १८७५ और रचनाकाल स० १९०१ दिया गया है।

५४२।४२२

४६ वश गोपाल कवि वदीजन।

सर्वेक्षण

सरोज मे इनका एक छद उद्धृत है जिसमे वदीजन की मनोवृत्ति स्पष्ट झलकती है—

सान करें बडी साहिबी की फिरि दान मे देत है एक अधेला

इस कवि का उल्लेख सरोज मे सख्या ५८५ पर पुन. हुआ है।

५४३।४२३

४७ बोधा कवि, स० १८०४ मे उ०। इनके कवित्त महा सुन्दर हैं।

---

(१) भूषण, पृष्ठ २२९, छद ४२०

सर्वेक्षण

हिन्दी काव्य जगत् मे दो बोधा हुए हैं, एक फिरोजाबादी और दूसरे बुदेलखडी। इनमे बुदेलखडी बोधा ही प्रसिद्ध हैं। विनोद (८८७) मे दोनो बोधाओ को मिला दिया गया है।

बुदेलखडी बोधा यमुना तट स्थित प्रसिद्ध राजापुर, जिला बाँदा मे उत्पन्न हुए थे। यह सरयूपारीण ब्राह्मण थे। लडकपन ही मे यह पन्ना चले गए। इनका नाम बुद्धिसेन था। पन्नानरेश महाराज खेत सिंह ने इन्हे प्यार से बुद्धिसेन से बोधा बना दिया। दरबार की यवनी नर्तकी सुभान पर यह आसक्त हो गए थे। फलत. साल भर के लिए देश निकाला हो गया। इस निर्वासनकाल मे इन्होने 'विरह वारीश' अथवा 'माधवानल कामकदला' की रचना की। जब लौटकर आए, तब दरबार मे 'विरह वारीश' पढकर सुनाया। राजा खेत सिंह ने प्रसन्न होकर कहा, जो कहो दें। बोधा ने कहा, 'सुभान अल्ला'। सुभान इन्हे मिल गई। 'विरह वारीश' नौ खडो मे है। इसमे दोहा-चौपाई एव कतिपय अन्य छद भी प्रयुक्त हुए हैं। बोधा का दूसरा ग्रन्थ है 'विरही सुभान दपति विलास' अथवा 'इश्कनामा।'[१]

प्रो० प० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने 'बोधा ग्रन्थावली' सपादित कर ली है। यह प्रकाशन की प्रतीक्षा मे है। इश्कनामा भारत जीवन प्रेस, काशी से पहले प्रकाशित हो चुका है। यह बोधा के फुटकर कवित्त सवैयो का सग्रह है।

सरोज मे दिया स० १८०४ ठीक है और कवि का रचनाकाल है। पन्नानरेश खेत सिंह का शासनकाल स० १८०६ १५ है। स० १८१५ मे भाई द्वारा इनकी हत्या कर दी गई थी। इसी समय बोधा इनके दरबारी कवि रहे और इसी बीच 'विरह वारीश' रचा।

५४४।४२४

४८ बोध कवि बुदेलखडी, स० १८५५ मे उ०। ऐजन। इनके कवित्त महा सुन्दर है।

सर्वेक्षण

ग्रियर्सन (५००) मे इन बोध के प्रसिद्ध बोधा होने की सभावना की गई है। यह सभावना ठीक प्रतीत होती है। बोधा का स० १८५५ तक जीवित रहना असभव नही।

५४५।४४६

४९. बलभद्र कायस्थ २, पन्ना निवासी, स० १९०१ मे उ०। यह राजा नरपति सिंह बुदेला पन्ना महिपाल के यहाँ थे। कविता मे निपुण थे। इनका काव्य सरस है।

---

(१) बोधा का वृत्त, ना० प्र० पत्रिका, वर्ष ५२, अंक १, सं० २००४

सर्वेक्षण

पन्ना के राजा हरवश राय स० १९०६ मे नि. सतान मरे। इससे इनके भाई नृपति सिह राज्य के उत्तराधिकारी हुए। इन्होने स० १९२७ तक राज्य किया।[1] अत इनके दरबारी कवि बलभद्र कायस्थ का भी समय यही होना चाहिए। ऐसी स्थिति मे सरोज मे दिया स० १९०१ कवि का रचनाकाल ही हो सकता है। यह जन्मकाल नही जैसा कि ग्रियर्सन (५११) और विनोद (२२२३) मे स्वीकार किया गया है।

सरोज मे बलभद्र रचित नृपति सिह की प्रशसा का एक कवित्त उद्धृत है, जिससे सिद्ध है कि यह उक्त राजा के दरबारी कवि थे।

परना पुरंदर महीपति नृपति सिह
सुजस तिहारो कलानिधि ते सरस है

ओरछा नरेश वीर सिंह देव के आश्रय मे रहने वाले, 'अबुल फजल विजय' नामक काव्यग्रन्थ रचने वाले बलभद्र कायस्थ नाम के एक कवि बहुत पहले और हो चुके है।[2]

२४६।५४६

५० विश्वनाथ कवि १, स० १९०१ मे उ०। यह लखनऊ निवासियो के चलन-व्यवहार पर बहुत कवित्त बनाए हैं।

सर्वेक्षण

खोज में एक विश्वनाथ भाट मिले है, जो बिसवा जिला सीतापुर के रहने वाले थे। इनके दो ग्रन्थ मिले हैं —

१—अलकारादर्श, १९१२।१९५। यह ग्रन्थ जालिम सिह गौर के लिए स० १८७२, क्वार सुदी १०, बुधावार को बना—

विवि[2] सुर[7] वसु[8] अरु इन्दु[1] जहँ संवतसर बुधवार
क्वार सुदी दसमी विजय भयो ग्रन्थ अवतार २
अलकार आदरस यह नाम ग्रन्थ को जानि
अलकार मूरति सबै यामे भासत आनि ३
जालिम सिह, नरेश बहु दानी बुद्धि निकेत
अलंकार को ग्रन्थ यह कीन्हों है सह हेत ४

इस ग्रन्थ मे कुल २९९ छद एव ११० पन्ने हैं। इसमे १०१ अलकारो का निरूपण हुआ है।

अब के अरु प्राचीन के तिनके मतहिं बिचारि
अलंकार सत एक है लच्छन ते निरधारि २९९

२—अलकार दर्पण, १९१२।१९५ बी। यह ग्रन्थ भी स० १८७२, क्वार सुदी १० बुधवार को रचा गया—

उभय[2] सप्त[7] वसु[8] इन्दु[1] जहं संवतसर बुधवार
क्वार शुक्ल दसमी विजय भयो ग्रन्थ अवतार २

---

(१) बुदेलखड का सक्षिप्त इतिहास, अध्याय २२, पैरा १९,२० (२) बुदेल वैभव, भाग २, पृष्ठ २८०

इस ग्रन्थ का नाम अलंकार दर्पण है—।

अलंकार दर्पण धरयो नाम ग्रन्थ को आनि
अलकार मूरति सबै जामो भासित आनि ३

इन ग्रन्थ का दूसरा नाम 'शिवबख्श प्रकाशक' भी है—

श्री स्यों बक्स प्रकासक नाम दूसरो जानि
कवि कोविद सुख पाइहै जो सुभ उत्तम बानि ४

यह ग्रन्थ देव सिंह के पुत्र शिवबख्श सिंह, कटेसर जिला खीरी के लिए बना ।

देब सिह नदन बडो दानी बुद्धि निकेत
अलकार को ग्रन्थ यह कीन्हो है तेहि हेत ५

इस ग्रन्थ मे केवल १७ पन्ने हे और छद भी ७५ ही हैं। ग्रन्थात मे पुका नही है। मुझे यह ग्रन्थ खडित प्रतीत होता है।

अलकार एव अलकारादर्श दर्पण दोनो सभवत. एक ही ग्रन्थ है क्योकि दोनो की रचना तिथि एक ही है। लगता है कि इस कवि ने एक ही ग्रन्थ से दो दो आश्रयदाताओ को तुष्ट किया। हो सकता है दोनो मे थोडा हेर-फेर भी हो। जो कवि फरेब कर सकता हो, सभवतः वही लखनऊ के लोगो के चाल व्यवहार मे छिद्रान्वेषण भी कर सकता है। यदि ऐसा है तो सरोज-दत्त स० १६०१ कवि का उपस्थितिकाल है।

५४७।४५०

५१. विश्वनाथ २, वदीजन, टिकई जिले रायवरेली के, वि ०। यह सामान्य कवि हैं।

सर्वेक्षण

विश्वनाथ वदीजन टिकई जिले रायवरेली के रहने वाले थे। इन्होने सरोजकार के पिता ठाकुर रनजीत सिंह की प्रशस्ति मे छद रचना की है। ऐसा एक छद सरोज मे उद्धृत है—

कहाँ लौं सराही, तेरे भुज की उमाही बीर
रनजीत सिंह तेरे बादशाही नक्से।

सरोजकार ने महानद वाजपेयी कृत शिवपुराण भाषा को स्वरचित पद्यबद्ध भूमिका सहित प्रकाशित कराया था। इस भूमिका मे उन्होने अपना और अपने पिता का परिचय दिया है। यही उन्होने लिखा है कि कवि लोग इनके पिता की प्रशसा मे छद रचना किया करते थे। ऐसा कहकर वे सरोज मे उद्धृत विश्वनाथ कवि का यही छद उद्धृत करते हैं।[१] बहुत सम्भव है कि सरोजकार इस कवि से परिचित भी रहा हो।

५४८।४६८

५२ विश्वनाथ ३, महाराज विश्वनाथ सिंह बघेले, बाधव नरेश, स० १८९१ मे उ०।

---

(१) खोज रि० १६२३।२४२, पृ० ६६१

यह महाराज कविकोविदो व ब्राह्मणो के कल्पतरु और कविता क्या, सर्वविद्या-निधान थे। इन्होने सब सग्रह नामक ग्रन्थ सस्कृत का बहुत ही सुन्दर बनाया है, और कबीर के बीजक नाम ग्रन्थ, विनय पत्रिका का तिलक और रामचद्र की सवारी, ये बहुत सुन्दर ग्रन्थ बनाए है। इस रियासत मे सदैव कविकोविदो का मान रहा है। महाराज राम सिंह ने अकबर के समय मे एक दोहे पर हरिनाथ कवि की एक लक्ष मुद्राएँ दी थी।

सर्वेक्षण

रीवा नरेश महाराज विश्वनाथ सिंह महाराज जयसिंह के पुत्र थे। जयसिंह ने बडी लम्बी आयु पाई थी। उन्होने अपने जीवनकाल ही मे इन्हे स० १८९२ मे रीवा की गद्दी दे दी थी। विश्वनाथ सिंह का जन्म चैत्र शुक्ल १४, स० १८४३ को हुआ था[१]। विश्वनाथ सिंह जी ने स० १८९२ से स० १९११ तक राज्य किया। इनकी मृत्यु कार्तिक कृष्ण ७ भृगुवार स० १९११ को हुई।[२] रीवा नरेश प्रसिद्ध रघुराज सिंह इन्ही के पुत्र थे। बख्शी समन सिंह, शिवनाथ, गंगाप्रसाद, अजवेश आदि कवि इनके आश्रय मे थे।

विनोद (१७८४।१) मे (विश्वनाथ सिंह जू देव के कुल ३१ ग्रन्थो का नामोल्लेख है। शुक्ल जी के यहां यह संख्या ३२ है। डॉ० भगवती प्रसाद सिंह ने विश्वनाथ सिंह जी के ३८ ग्रथो की सूची दी है।[३] इस सूची मे आगे दी हुई सूची की अपेक्षा अनेक ग्रथ अधिक है। पूरी छानबीन करने पर यह सख्या घट भी सकती है। इन्होने टीकाएँ बहुत सी लिखी है। गद्य रचनाएँ भी पर्याप्त की ह। इनके लिखे ग्रन्थो की सूची यह है।

टीकाए

अ कबीर के ग्रथों की

१—आदि मगल, १९०९।३२९ ए। यह कबीर के बीजक की टीका है। इस टीका का नाम पाखड खडिनी (१९०६।२४९ सी) है। यह ग्रथ विनोद एव शुक्ल जी के इतिहास मे तीन नामो से तीन वार दिया गया है—क कबीर के बीजक की टीका ख पाखड खडिनी ग आदि मगल।

२—वसन्त, १९०९।३२९ बी

३—चौतीसी, १९०९।३२९ सी ४—चौरासी रमैनी, १९०९।३२९ डी

५—कहरा, १९०९।३२९ ई ६—सबद, १९०९।३२९ जी ७—साखी, १९०९।३२९ एच

ग्रंथ २ से ६ तक प्रथम ग्रथके विभिन्न अशहैं।

ब. अन्य कवियों के ग्रंथों की

१—विनय पत्रि

---

(१) राम भक्ति में रसिक सम्प्रदाय, पृष्ठ ४३१ (२) वही (३) वही, पृष्ठ ४३५

७—गीत रघुनन्दन प्रामाणिक टीका, १९००।४४। जमुनादास एक रामोपासक वैष्णव साधु थे। गीत गोविन्द के ढग पर इन्होने गीत रघुनन्दन की रचना की थी। यह इसी की टीका है। विनोद और शुक्ल जी के इतिहास मे यही ग्रथ दो-दो वार लिखा गया है और वह भी अशुद्ध नाम से। यह अशुद्धि खोज रिपोर्ट के रोमन लिपि मे होने के कारण है। पहली वार इसे 'गीता रघुनन्दन-शतिका' कहा गया है। गीता और शतिका के स्थानो पर क्रमश गीत और सटीक होना चाहिए। दूसरी वार इसे 'गीता रघुनन्दन प्रामाणिक' कहा गया है। होना चाहिए 'गीतरघुनन्दन प्रामाणिक टीका सहित'। यह ग्रन्थ सं० १९०१ मे रचा गया।

स अपने ही सटीक ग्रन्थ

१—उत्तम नीतिचद्रिका, १९०६। २४९ ए, डी। यह ध्रुवाष्टक नामक नीति ग्रन्थ की वस्तुत टीका है। ध्रुवाष्टक मे आठ कवित्त हैं।

२—वेदात पचक सटीक, १९०४।८४। इस ग्रन्थ को भी विनोद और लजी के इतिहास वेदात पचक शतिका' कहा गया है।

३—शातशतक की मुक्तिप्रदीपिका टीका, १९०९।३२९ आई। इस ग्रन्थ मे अध्यात्म सम्वन्धी ३२ छद हैं, जिनकी यह टीका है। विनोद एव शुक्ल जी के इतिहास मे यह 'ग्रन्थ-शाति शतक' नाम से आया है।

४—धनुर्विद्या मूल और टीका, १९००।४७,१९०१।२०

काव्य-ग्रन्थ

१—अष्टयाम आह्निक, १९००।४३। सीताराम की दिनचर्या। रचनाकाल स १८८७।

२—उत्तम काव्यप्रकाश, १९०४।१४५। रचना काल स० १९०४।

३—आनन्द रामायण, १९०१।६, १९०९।३२९ एफ। यह ग्रन्थ रामायण और आनन्द रामायण नाम से विनोद और शुक्ल जी के इतिहास मे दो-दो वार उल्लिखित है।

४—सर्वसग्रह, सरोज के अनुसार यह सस्कृत ग्रथ है।

५—रामचन्द्र की सवारी।

६—भजन।

७—पदार्थ।

८—परम तत्व प्रकाश, १९००।४८, १९२०।२०५ ए। दोहा, चौपाई, सोरठा आदि छदो मे भक्ति निरूपण।

९—गीतावली पूर्वार्द्ध, १९०४।११४।

१०—अवाध नीति, शुक्ल जी ने इसका नाम अबोध नीति दिया है।

११—राग सागर, १९२०।२०५ बी।

गद्य गन्थ

१—परम धर्म निर्णय, १९०१।१६,१२,१८। ग्रन्थ चार भागो मे है। केवल तीन भाग खोज मे मिले है। इसमे प्राचीन आचार्यो के अनुसार वैष्णव धर्म की व्याख्या है।

२—विश्व भोजन प्रकाश, १९०९।३२९ जे। यह पाकशास्त्र का ग्रन्थ है।

नाटक

१—आनन्द रघुनन्दन नाटक—हिन्दी साहित्य के इतिहास मे महाराज विश्वनाथ सिंह अपने इस नाटक के लिए सदा स्मरण किए जायँगे। यह हिन्दी का पहला नाटक है। इसमे ब्रजभाषा का प्रयोग हुआ हैं। पद्य की भरमार है। इसका प्रकाशन नवल किशोर प्रेस, लखनऊ से बहुत पहले हुआ था। सभा भी इसके एक सुसपादित सस्करण की व्यवस्था मे है।

५४६।४८५

५३ विश्वनाथ अताई ४, बघेलखड निवासी, स० १७८४ मे उ०। इनके कवित्त और दोहे सत्कवि गिराविलास नामक ग्रन्थ मे है।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही है। इनकी छाप केवल विश्वनाथ है। सत्कवि-गिराविलास मे इनकी रचना है, अत यह स० १८०३ के पूर्ववर्ती है।

५५०।४८०

५४ विश्वनाथ कवि प्राचीन ५, स० १६५५ मे उ०।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही।

५५१।४१४

५५ विहारी लाल चौबे, व्रजवासी, स० १६०२ मे उ०। यह कवि जयसिंह कछवाहे महाराजा आमेर के यहां थे। जयपुर की तवारीख देखने से प्रकट है कि महाराजा मान सिंह से, जो स० १६०३ मे विद्यमान थे, स० १८७६ तक तीन जयसिंह हो गए हैं पर हमको निश्चय है कि यह कवि मान सिंह के पुत्र जयसिंह के पास थे जो महा गुणग्राहक थे। दूसरे सवाई जयसिंह इन जय सिंह के प्रपौत्र सवत् १७५५ मे थे। यह वात प्रकट है कि जब महाराजा जयसिंह किसी एक थोडी अवस्था वाली रानी पर मोहित होकर रात दिन राजमदिर मे रहने लगे, राज्य के सपूर्ण काम काज वन्द हो गए, तव विहारीलाल ने यह दोहा बनाकर राजा के पास तक किसी उपाय से पहुँचवाया।

> नहि पराग, नहिं मधुर मधु, नहि विकास यहि काल
> अली कली ही सो बिंध्यो, आगे कौन हवाल,

इस दोहे पर राजा ने अत्यन्त प्रसन्न होकर १०० मोहरे इनाम देकर कहा, इसी प्रकार के और दोहे बनाओ। विहारीलाल ने ७०० दोहे बनाए और ७०० अशर्फियां इनाम मे पाईं। यह सतसई ग्रथ अद्वितीय है। बहुत कवियो ने इसके ढग पर सतसइया बनाकर अपनी कविता का रग

जमाना चाहा, पर किसी कवि को सुर्ख रूई नहीं प्राप्त हुई। यह ग्रन्थ ऐसा अद्भुत है कि हमने १८ तिलक तक इसके देखे हैं और आज तक तृप्ति नहीं हुई। लोग कहते है कि अक्षर कामधेनु होते है, सो वास्तव मे इसी ग्रन्थ के अक्षर कामधेनु दिखाई देते हैं। सब तिलको मे सूरति मिश्र, आगरेवाले का तिलक विचित्र है और सब सतसइयो मे विक्रम सतसई और चन्दन सतसई लगभग इसके टक्कर की हैं।

सर्वेक्षण

बिहारी माथुर ब्राह्मण थे। स० १६५२ मे इनका जन्म ग्वालियर के निकट बसुवा गोविन्दपुर नामक गाँव मे हुआ। इनकी बाल्यावस्था बुन्देलखण्ड मे बीती और तरुणाई मे ये अपनी ससुराल मथुरा मे रहे। यह जयपुर नरेश मिरजा राजा जयसिंह (शासनकाल स० १६७८-१७२४) के दरबार मे थे। बिहारी सतसई के निर्माण की जो कथा सरोजकार ने दी है, वह परम प्रसिद्ध एव सर्वमान्य है। रत्नाकर जी के अनुसार सतसई की समाप्ति स० १७०४ मे हुई। इसमे कुल ७१३ दोहे हैं, जिनमे कुछ सोरठे भी ह। बिहारी सतसई की पहली टीका स० १७१९ मे हुई। लोगो ने इसी को सतसई का रचनाकाल समझ रखा है। बिहारी की मृत्यु स० १७२१ मे हुई। सरोज मे दिया स० १६०२ अशुद्ध है।

५५२।४६०

(५६) बिहारी कवि, प्राचीन २ स० १७३८ मे उ०। इनके हजारे मे महा सुन्दर कवित्त है।

सर्वेक्षण

हजारे मे बिहारी के कवित्त थे। अत सं० १८७५ के पूव इनका अस्तित्व स्वत सिद्ध है।

५५३।४७२

(५७) बिहारी कवि ३, बुदेलखण्डी, स० १७८६ मे उ०। इन्होने सरस कविता की हैं।

सर्वेक्षण

बिहारी बुन्देलखण्डी का एक कवित्त सरोज मे उद्धृत है। इसमे रामचन्द्र के घोडो का वर्णन है।

मन ते सरिस चलिबे की चपलाई अंग
राजत कुरंग ऐसे बाजी रघुबीर के

प्रतीत होता है कि कवि राम भक्त है। खोज मे बिहारी का एक ग्रन्थ 'नखशिख रामचन्द्र को'[1] मिला है। इसकी रचना स० १८२० के आस-पास हुई। इसमे ५० कवित है। यह रामभक्त बिहारी

---

(१) खोज रि० १९१७।२५

सरोज के ही विहारी जान पडते हैं। विनोद मे (६१६) इनका जन्मकाल स० १७६६ और रचना काल स० १८२० दिया गया है। विनोद मे ८४७ सख्या पर एक और बिहारी है, जो ओरछा बुन्देलखण्ड के रहने वाले कायस्थ हैं। सरोज के आधार पर इनका जन्मकाल स० १७८६ और रचनाकाल स० १८१० दिया गया है। इनके ग्रन्थ का नाम है 'दम्पति ध्यान मजरी'। सम्भवतः इस ग्रन्थ मे दम्पति सीता और राम का ध्यान वर्णित है। अत यह कवि भी सरोज के अभीष्ट विहारी हैं। विनोद मे (८६६) एक और बुन्देलखण्डी विहारी लाल ह, जिन्होने स० १८१५ मे हरदौल चरित्र[1] की रचना की। सम्भवत रामभक्त बुन्देलखण्डी विहारी ही ने एक बुन्देलखण्डी वीर के प्रति अपनी श्रद्धा-भक्ति प्रकट करने के लिए यह ग्रन्थ रचा। अस्तु, विहारी ओरछा के रहने वाले कायस्थ है, जो स० १७८६ के आस-पास उपस्थित थे। यह रामभक्त थे। इन्होने रामचन्द्र जी को नखशिख, दम्पति ध्यान मजरी एव हरदौल चरित्र नामक ग्रन्थ लिखे। इनमे से अन्तिम का रचनाकाल स० १८१५ है।

५५४।४८६

(५८) विहारीदास कवि ४, व्रजवासी, स० १६७० मे उ०। इनके पद रागसागरोद्भव राग कल्पद्रुम मे हैं।

सर्वेक्षण

विहारीदास जी व्रजवासी थे, टट्टी सम्प्रदाय के वैष्णव थे तथा स्वामी हरिदास के शिष्य विट्ठल विपुल के यह शिष्य थे। इनकी रचना 'श्री बिहारिनिदास जी की बानी'[2] नाम से मिली हे। एक हस्तलिखित प्रति की प्रारम्भिक पक्तियो से इनके सम्प्रदाय आदि की सूचना मिलती है।

अर्थ श्री स्वामी हरिदास जी के शिष्य श्री वीठलविपुल जिनकी कृपा कौ समुद्र श्री विहारिनिदास जी, तिनकी बानी प्रगट, जासौ श्री स्वामी को घम जान्यो जाइ, सो लिख्यते।

—खोज रि० १६०५।६१

रिपोट[3] के अनुसार यह २५ वर्ष की ही वय मे भक्त हो गए थे और इन्होने ब्रह्मचर्य-जीवन विताया था।

विहारीलाल के पिता श्री मित्रसेन दिल्ली के बादशाह के उच्च पदाधिकारियो मे थे। स्वामी हरिदास के आशीर्वाद से मित्रसेन जी ने आपको पाया था। हरिदास वशानुचरित्र के अनुसार विहारीलाल जी का जन्म स० १५५० मे श्रावण शुक्ल ५ को हुआ था। इन्होने ६१ वर्ष श्री वृन्दावन मे निवास किया। इनकी मृत्यु ६८ वर्ष की वय मे स० १६५६ मे मार्गशीर्ष शुक्ल १३ को प्रात काल सूर्योदय के समय हुई। मित्रसेन की मृत्यु के पश्चात् यह कुछ दिनो तक राजसेवा मे रहे। फिर विरक्त हो हरिदास जी के शरण आ वीठल विपुल के शिष्य हो गए।[4] हरिदास जी के पश्चात् आप ही गद्दी के अधिकारी हुए थे। सम्प्रदाय मे यह 'गुरुदेव' के नाम से अभिहित किए जाते है। आपने अपनी वाणी मे हरिदास जी के सिद्धान्तो का बडी अनन्यता एव स्पष्टता से विवेचन किया है।[5] सरोज मे दिया सवत् १६७० अशुद्ध है। कविता मे इनकी छाप विहारीदास और विहारिनिदास दोनो है।

---

(१) खोज रि० १६०५।६२ (२) खोज रि० १६०५।६१,१६१२।२७ (३) खोज रि० १६१२।२७ (४) हरिदास वशानुचरित्र, पृष्ठ ३७, ६६ (५) सर्वेश्वर, वर्ष ५, अङ्क १-५, चैत्र स० २०१३, पृष्ठ २४०३

५५५।४१५

(५९) बालकृष्ण त्रिपाठी १, बलभद्र जी के पुत्र और काशीनाथ कवि के भाई, स १७८८ मे उ० । इन्होने रसचन्द्रिका नामक पिङ्गल बहुत सुन्दर बनाया है ।

सर्वेक्षण

यह बालकृष्ण त्रिपाठी बलभद्र त्रिपाठी के पुत्र और काशीनाथ त्रिपाठी[1] के भाई थे। इनका रचा हुआ रसचन्द्रिका[2] नामक ग्रन्थ खोज मे मिल चुका है। इनका रचनाकाल स० १७८८ ही माना-जाना चाहिये, जब तक इसके विरुद्ध कोई निश्चित प्रमाण न मिल जाय। प्राप्त प्रति से रचनाकाल पर कोई प्रकाश नही पडता। बालकृष्ण त्रिपाठी न तो नखशिख के रचयिता प्रसिद्ध बलभद्र मिश्र के पुत्र थे, न महाकवि केशव के भतीजे थे, न काशीनाथ मिश्र के भाई थे और न इनका समय ही स० १६५७ था, और न यह त्रिपाठी के स्थान पर मिश्र ही थे। ग्रियर्सन (३८), विनोद (२११) और बुन्देल वैभव[3] मे इस कवि की यही छीछा-लेदर बडे इत्मीनान से की गई है।

५५६।४१६

(६०) बालकृष्ण कवि, २। इनकी कविता सामान्य है।

सर्वेक्षण

खोज मे निम्नलिखित पाँच बालकृष्ण प्राप्त हुए हैं, पर इनमे से किसी के साथ सरोज के इस कवि का अभेद स्थापित करना सम्भव नही—

१ बालकृष्ण, बोरटा के रहने वाले, स० १७०५ मे रागरूपमाल[4] नामक ग्रन्थ बनाया।

२ बालकृष्ण, स० १८०४ के लगभग वर्तमान, भागवत एकादश स्कन्ध[5] के रचयिता।

३ बालकृष्ण भट्ट, गोकुल निवासी, द्रविड ब्राह्मण। वैद्यमार्तंड[6] के रचयिता।

४ बालकृष्णदास, गो० गिरिधरलाल बनारसी के शिष्य। वल्लभ सम्प्रदाय के अनुयायी स० १८८५ के लगभग वर्तमान। गिरिधरलाल का समय स० १८८५-१९०० है। बालकृष्णदास ने अपने गुरु की आज्ञा से सूरदास के दृष्टिकूट की टीका[7] गुजरात के भाम नगर मे की।

---

(१) देखिए, यही ग्रन्थ कवि सख्या ६५ (२) खोज रि० १९४१।१५७ (३) बुन्देल वैभव, भाग १, पृष्ठ २०७, ८ (४) खोज रि० १९३२।१३ (५) खोज रि० १९२६।२६, १९३१।१० (६) खोज रि० १९१२।११ (७) खोज रि० १९००।६

५ बालकृष्ण, इनका सुदामा चरित[1] नामक ग्रन्थ प्राप्त हुआ है। अनुमान से यह स० १८२० के लगभग उपस्थित थे। कहा गया है कि इस ग्रन्थ मे ८८ अत्यन्त प्रौढ छन्द है।

५५७।४२५

(६१) बोधीराम कवि।

सर्वेक्षण

कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही। सरोज मे एक शृ गारी कवित्त है, जिसमे छाप बोधी है।

५५८।४२६

(६२) बुद्धिसेन कवि।

सर्वेक्षण

बुद्धिसेन नाम प्रसिद्ध बुन्देलखण्डी बोधा का था। यही नाम फिरोजाबादी बोधा का भी था। सरोज के यह बुद्धिसेन प्रसिद्ध बोधा बुदेलखण्डी नही हैं। यह या तो फिरोजाबादी बुद्धिसेन हैं या और कोई। सरोज मे उद्धृत कवित्त मे कवि छाप बुद्धिसेन है। यदि यह फिरोजवादी बुद्धिसेन है, तो यह १९ वी शताब्दी के उत्तरार्द्ध मे हुए। विनोद (८८७) के अनुसार यह स० १८८७ मे वर्तमान थे। इनका एक पत्र स० १८४५ का लिखा हुआ मिला है। खोज मे इनके निम्नाकित ग्रन्थ मिले हैं।

१—बाग विलास या बाग वर्णन १९३२।३१ ए, २—बारह मासो, १९३२।३१ बी, ३—फूलमाला १९३२।३१ सी, ४—पक्षी मजरी, १९३२।३१ डी।

५५९।४२९

(६३) बिदादत्त कवि। इनके शृ गार के महा सुन्दर कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही है।

५६०।४३०

(६४) वदन कवि।

सर्वेक्षण

वदन कवि का एक ग्रन्थ 'रस-दीप' मिला है। इस ग्रन्थ की रचना स० १८०९ मे हुई थी।

मास पक्ष अस्वनि असित तिथि दसमी निसि मान
वर्ष रंध्र[९] नभ[०] वसु[८] ससो[१] संवतसर चित्र भान—

खोज रि० १९०५।५७

---

१ राज रि०, भाग १

यह अलङ्कार और नायिका भेद का सम्मिलित ग्रन्थ है। कवि ने इस ग्रन्थ मे अपना पूरा परिचय दिया है। वदन जी अग्निहोत्री ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम दामोदर, पितामह का दयाराम और प्रपितामह का मनीराम था। यह बांदा जिले के गिरवा (गिरिग्राम) के रहने वाले थे।

छत्रसाल के पुत्र हृदयसाहि थे, जिन्हे छत्रसाल के राज्य का एक तिहाई भाग मिला था। इनके हिस्से मे पन्ना, मऊ, गढाकोटा, कालिजर, शाहगढ और आस-पास का इलाका आया था। हृदयसाहि ने स० १७८८ से १७९६ तक राज्य किया। हृदयसाहि के ९ पुत्र थे। इनके देहावसान के अनन्तर वडे पुत्र सभासिह राजा हुए, जिन्होने स० १७९६ से १८०९ तक राज्य किया। इन्ही ९ लड़को मे एक पृथ्वीराज थे। यह पेशवा वाजी राव के पास गए। पेशवा ने सभासिह को विवश कर इन्हे शाहगढ और गढाकोटा का इलाका दिला दिया। पृथ्वीराज ने वदले मे पेशवा को चौथ दी।[1] वदन कवि इन्ही पृथ्वीराज के यहाँ रहा करते थे।

भूप छत्रसाल वस भयो अवतस
हिरदेस नरनाह जाको जग जस छायो है।
ताकौ सुत भयो महाराज प्रथी सिंह
कविराजन कौ कल्पतरु पुहुमी सुहायो है।
गढकोटा जाकी राजधानी जाने जाहिर है
पुरी पुरहूत की समान समदायो है।
ग्रंथ रस दीपक विचारि के वदन कवि
वासी गिरवा के तिहि बैठक वनायो है।

—खोज रि० १९०५।५७

बुन्देल वैभव[2] के अनुसार इनका जन्मकाल स० १७७८ है।

५९१।४३१

(६५) वंदन पाठक, काशीवासी, विद्यमान हैं। 'मानस शकावली रामायण' की टीका वहुत अद्भुत वनाई है। आज के दिन रामायण के अर्थ करने मे ऐसा दूसरा कोई समर्थ नही है।

सर्वेक्षण

मानस शकावली[3] ग्रन्थ खोज मे मिल चुका है। इसके अनुसार वदन पाठक मिरजापुर के रहने वाले थे। मिरजापुर के प्रसिद्ध रामायणी प० रामगुलाम द्विवेदी के शिष्य चोपईदास के यह शिष्य थे।

---

(१) बुन्देलखण्ड का सक्षिप्त इतिहास, अध्याय २४, पैरा १२ (२) बुन्देल वैभव, भाग २, पृष्ठ ४०४ (३) खोज रि० १९२०।२०१, १९२३।४३८

श्रीसद्रामगुलाम के सिष्य सो चोपईदास
तासु सिष्य बदन नमत श्री मिरजापुर वास ५

१६२० वाली रिपोर्ट मे मिरजापुर पाठ है, जो अशुद्ध है। बदन पाठक लक्ष्मण पाठक के पुत्र, वेनीराम पाठक के पौत्र, और शिवप्रसाद पाठक के प्रपौत्र थे।

शिवप्रसाद पाठक विमल, ता सुत वेनीराम
तासु पुत्र लच्छमण लसत, ता सुत बदन नाम ६

यह ग्रन्थ काशीनरेश महाराज ईश्वरीनारायण सिंह के आश्रय मे बना।

श्री काशीपति ईश्वरी नारायण नृपराज
तेहि के सुभग सनेह ते प्रगट ग्रन्थ द्विजराज ७

रामचरित मानस के सम्बन्ध मे जो शकाएँ की जाती हैं, उन सब का समाधान इस ग्रन्थ मे गद्य में किया गया है।

श्री मानस शका सकल रही विश्व मे छाइ
ताके उत्तर बोध हित ग्रन्थोद्भव सुख पाइ

इस ग्रन्थ की रचना स० १६०६ मे हुई।

सवत् रस[६] नभ[०] अंक[९] ससि[१] ऋतु बसत मधु मास
शुक्ल पक्ष नौमी सु तिथि संकावली प्रकास

विनोद मे (२४६४) इनका जन्मकाल स० १६१५ दिया गया है। इसके ६ वर्ष पहले पाठक जी मानस शकावली की रचना कर चुके थे। इनका जन्मकाल स० १८७५ के आस-पास होना चाहिए।

५६२।४२८

(६६) वृदावन कवि। इनके कवित्त सुन्दर हैं।

सर्वेक्षण

सरोज मे इस कवि के नाम पर जो कवित्त उद्धृत है, उसके चौथे चरण मे वृन्दावन शब्द आया है, पर यह वृन्दावनचन्द अर्थात् कृष्ण के एक अग के रूप मे आया है, न कि कवि छाप के रूप में।

वृदावन चंद नख चद समता के हेत
चद यह मद कोटि छद करिबो करै

वृन्दावन नाम के अनेक कवि खोज मे मिले हैं, पर जब सरोज के इस कवि का कोई अस्तित्व ही नही रह गया, फिर किसी से इसके तादात्म्य की चर्चा उठाना ही व्यर्थ है।

५६३।४३२

(६७) विश्वेश्वर कवि ।

सर्वेक्षण

विनोद मे (१५८५) विश्वेश्वर को वैद्यक ग्रन्थ का रचयिता माना गया है, पर कोई प्रमाण नही दिया गया है। सरोज मे उदार वैद्य सम्बन्धी इनका एक सवैया अवश्य उद्धृत है। पर यह क्षीण-सूत्र कवि के वैद्य होने और वैद्यक ग्रन्थ रचयिता होने का अपार भार नही सँभार सकता।

खोज मे किसी विश्वेश्वर के ये तीन लघु ग्रन्थ मिले हैं—

१—दोहा पचीसी, १६३८।१६२ ए, रामभक्ति सम्बन्धी २५ दोहे।

२—उलथा श्री सत्यनारायण, १६३८।१६२ बी, तीन कवित्तो मे सत्यनारायण की कथा।

३—कृष्णपदाष्टक, १६३८।१६२ सी, भ्रमरगीत सम्बन्धी ८ पद।

एक और विश्वेश्वरदास मिले हैं, जो काशीवासी महाराष्ट्र ब्राह्मण थे। यह नारायण के पुत्र और शकर के पौत्र थे। इन्होने 'काशीखण्ड कथा'[1] की रचना की है।

शिवशकर की कथा सोहाई
दास विसेसर ने यह गाई
द्विज महाराष्ट्र जाति मम जानो
नारायण को पुत्र बखानो
तिनके भ्रात गोविंद सुनामा
उनके सुत माधव गुणवाना
मम पितु पिता रहे कछु ज्ञानी
तिन करि कृपा दीन्ह मोहि बानी
तिनकर शंकर नाम बखानो
बादशाह के चाकर जानो
आनद वन आनंद पुरी श्री काशी शिव धाम
तीन साख तहँ वास हर दिन्हु मोहि विश्राम

ग्रन्थ की रचना स० ००४७ मे हुई—

• •• रहे, सत्त ऊपर चालीस
भादौं कृष्ण अष्टमी, बुद्धवार रजनीस

५६४।४३३

(६८) विदुष कवि इन्होने श्रीकृष्ण जी की लीला कवित्तो मे वर्णन की है।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही।

---

(१) खोज रि० १६४१।२५३

५६५।४५२

(६६) वारन कवि, राउत गढ, भूपाल वाले, स० १७४० मे उ०। यह कवि, सुजाउलशाह नव्वाव राजगढ के यहाँ थे और रसिकविलास' नामक ग्रन्थ साहित्य का अति अद्भुत बनाया है। यह ग्रन्थ अवश्य देखने योग्य है।

सर्वेक्षण

वारन कवि के दो ग्रन्थ खोज मे मिले हैं—

१—रसिक विलास, १९०५।६३। यह ग्रन्थ राजगढ भूपाल के नवाव सुजाउल्लशाह के आश्रय मे बना।

'सुलतान साह साहेब सुजा कवि वारन यह उच्चरत'

कवि वारन मुसलमान थे और करीम के करम की आशा रखते थे।

कोई करै आस आय बुधि वर वाहन की,
वारन को आस तो करीम के करम के

इस ग्रन्थ का रचनाकाल कवि ने इन सोरठो मे दिया है—

तीन दहा विधि वार, सवत सत्रह सै हुते
उज्ज्वल पच्छ की वार, बुध भद्रा तिथि द्वादसी
सन तुरकी सहसेक, नेनवे ऊपर दोय है
सुनहु चतुर नर नेक, तब कवि के इच्छा भई

ग्रन्थ का रचनाकाल बहुत स्पष्ट नही है। यह सम्भवत स० १७३७ है। तीन दहा ८३०, 'विधि' सम्भवत वृद्धि, वढती है। 'वार' सात का सूचक है। यह हिजरी स० १०९२ है। यह ग्रथ नायिका-भेद का है।

२—रत्नाकर, १९०४।७९। यह छद शास्त्र और शब्द कोष साथ-साथ है। इस ग्रन्थ मे कवि ने अपना असल नाम वरारी दिया है। बडा मानिकपुर के सैयद अशरफ जहाँगीर इनके पीर थे। इन्होने इनका नाम वारन रखा।

बारन की जाति है, काव्य शाल परमान
नाम बरारी जनम को, मोगल है सब जान
कवि बारन पदवी दई, गुरू मया करि ताहि
कडे नगर वासी सदा, सब जग जानै वाहि

इस ग्रन्थ मे कुल ५०८ दोहे हैं—

किए पाच से दोहरे, आठ अधिक पुनि जानि
भई प्रगट सब जगत में, वारन कवि की बानि

इस ग्रन्थ की रचना १०६५ हिजरी मे शाहजहा के जलूस सावत् २८ मे, विक्रम स० १७१२ मे आषाढ सुदी ८, मगलवार को हुई।

सन तुरकी सहसेक पर, साठि अधिक अरु पाच
साहिजहान जलूस के, अट्ठाइस है साँच
सुकुल पच्छ तिथि अष्टमी, मंगल मास अषाढ
संवत सत्रह से हुते, बारह तापै बाढ

इन ग्रन्थो के मिल जाने से कवि का रचनाकाल स० १७१२-३७ स्थिर हो जाता है। सरोज मे दिया स० १७४० ठीक हैं और कवि का उपस्थितिकाल है।

विनोद मे 'रसिक विलास' और 'रत्नाकर' ग्रन्थो के रचयिता बारन भिन्न-भिन्न समझे गये हैं, यह ठीक नही। रत्नाकर मे जो शाहसुजा की प्रशस्ति है, उसी से मिश्रबन्धुओ को भ्रम हो गया। उनके ध्यान मे यह मोटी बात नही चढी कि यह शाहसुजा राजगढ वाले सुजाउलशाह का सक्षिप्त रूप हो सकता है। विनोद मे इनका उल्लेख ४५२।२ और ३९९ सख्याओ पर हुआ है।

५६६।४५६

(७०) वृन्द कवि।

सर्वेक्षण

वृन्द शाकद्वीपीय ब्राह्मण थे। इनके पूर्वज बीकानेर के रहने वाले थे। कारणवश इनके पिता जी मेडता मे बस गये थे। यही मेडता, जोधपुर, मे इनका जन्म स० १७०० मे हुआ। इनकी माता का नाम कौसल्या और पत्नी का नवरग गदे था। १० वर्ष की वय मे यह विद्याध्ययनार्थ काशी आए। यहाँ तारा नामक पण्डित से इन्होने साहित्य और वेदान्त आदि पढा, साथ ही इन्ही से काव्य-रचना भी सीखी। यहाँ से पढकर जब यह वापस गये, तब 'भाषा भूषण' के रचयिता जोधपुर नरेश प्रसिद्ध जसवत सिंह ने इनका बडा सम्मान किया और कुछ भूमि भी दी। जसवत सिंह के द्वारा इनका परिचय औरगजेब के मन्त्री नवाब मुहम्मद खाँ से हुआ और इनके लिए शाही दरबार का दरवाजा सदा के लिए खुल गया। औरगजेब ने इनकी काव्य-प्रतिभा से प्रसन्न होकर इन्हे अपने ज्येष्ठ पुत्र मुअज्जम (बहादुरशाह) तथा पौत्र का अध्यापक बनाया था। कालान्तर मे यह अजीमुश्शान के बगाल का सूबेदार होकर जाने पर उसके साथ बगाल गये थे। स० १७६४ के लगभग रूपनगर के राजा राजसिंह ने वृन्द को बहादुरशाह से माँग लिया और इन्हे अच्छी जागीर देकर अपने राज्य मे बसा लिया। यही स० १७८० मे भादौं बदी ३ को[१] इनका देहान्त हुआ। इनके वशज अब भी किशनगढ मे हैं। वृन्द जी डिंगल और पिंगल, दोनो के कवि थे। इनके लिखे ८ ग्रन्थ है।

१—वृन्द सतसई अथवा दृष्टान्त सतसई, १९००।१२१,१९०२।९,१९१७।३३० बी,१९२३। ४४६ बी। अजीमुश्शान के लिए इसकी रचना स० १७६१ मे ढाका हुई।

> संवत ससि[१] रस[६] वार[७] ससि[१] कातिक सुदि ससिवार
> सातैं ढाका सहर मैं, उपज्यो याहि विचार

इस ग्रन्थ मे नीति के ७१३ दोहे हैं।

२—यमक सतसई, १९४१।२५६ ग, १९४४।३९९। इस ग्रन्थ मे कला और भाव पक्ष का अपूर्व सन्तुलन हुआ है। इसका नाम 'वृन्द विनोद' भी है। इसकी रचना १७६३ मे हुई।

---

(१) राज रि०, भाग ३, पृष्ठ १०६

गुन[३] रस[६] सुख[७] अमृत[१] वरस वरस सुकुल नभ मास
दृज सुकवि कवि वृंद ये दोहा किए प्रकास १४

× × ×

जमक सतसया को वरयो नाम सु वृंद विनोद

कवि ने एक दोहे मे अपने निवास-स्थान मेडता की भी सूचना दी है—

आगर नागर नरन कौं नगर मेरते वास

पुष्पिका से कवि का पूरा नाम वृन्दवन ज्ञात होता है—

"इति श्री षोडस जातीय पुष्करना कवि वृन्दावन विरचिताया यमकालकार सतसया सम्पूर्ण ।"

३—भाव पचासिका, १६०६।३३० ए, १६२३।४४६ ए, १६४१।५६२। इस ग्रन्थ मे २५ दोहे और २५ सवैये हैं। इनकी रचना स० १७४३ मे औरगावाद मे हुई।

सत्रह तैंतालीस सुदि, फागुन मगलवार
चौथ भाव पचासिका प्रगटी अवनि उदार

४—शृङ्गार शिक्षा, १६०२।४२। औरगजेव के मत्री नवाव मुहम्मद खाँ के पुत्र मिरजा कादरी, अजमेर के सूवेदार की कन्या को पातिव्रत-धर्म की शिक्षा देने के लिए, इस ग्रन्थ की रचना स० १७४८ मे हुई।

सतरह अठतालैं समै, उत्तम आसू मास
सुदि पाचैं बुधवार सुभ, पोथी भई प्रकास

५—वचनिका, रचनाकाल स० १७६२। इस ग्रन्थ मे धौलपुर के उस युद्ध का वर्णन है, जो स० १७१५ मे औरगजेव और उसके भाइयो मे दिल्ली की गद्दी के लिये हुआ था। रूपनगर नरेश रूपसिंह इस युद्ध मे दारा की ओर से लडे थे और मारे गये थे। रूप सिंह की कीर्ति को अक्षय बनाने के लिए यह ग्रन्थ रचा गया था। नाम से यह गद्य-ग्रन्थ प्रतीत होता है, पर इसे कविता का ग्रन्थ कहा गया है।

६—सत्य स्वरूप, रचनाकाल स० १७६४। यह वृन्द की अन्तिम रचना है। इसमे औरगजेव की मृत्यु के वाद दिल्ली की गद्दी के लिये गृह-युद्ध का वर्णन है। इसमे रूपनगर के नरेश राजसिंह ने शहजादा मुअज्जम (बहादुरशाह) का पक्ष लिया था। इस लडाई की विजय का श्रेय इन्ही को प्राप्त है।[१] खोज मे इनके दो ग्रन्थ और प्राप्त हुए हैं।

१—पति मिलन, १६४१।२५६ क। ग्रन्थ खण्डित है। इसमे कवित्तो मे आगतपतिका का शृगार वर्णित है।

२—पवन पचीसी, १६४१।१५६ ख। यह षट्ऋतु वर्णन सम्बन्धी ग्रन्थ है।

५६७।४५७

(७१) वाजीदा कवि, स० १७०८ मे उ०। इस कवि की कुछ कविता हजारे मे है।

---

(१) राजस्थानी भाषा और साहित्य, पृष्ठ १६४-६८ के आधार पर।

सर्वेक्षण

वाजीदा जी का असल नाम वाजिद था। यह मुसलमान थे। यह दादू के शिष्य थे और बाबा वाजिद के नाम से प्रसिद्ध थे। खोज रिपोर्ट मे इन्हे स० १६५७ के लगभग उपस्थित माना गया है। इनके निम्नलिखित ग्रन्थ खोज मे मिले है।

१—गुन राजा कृत, १६३३।२२७ सी। यही ग्रन्थ राज कीर्तन[1] नाम से भी मिला है। इसमें दोहा-चौपाइयो मे एक राजा की कथा है, जिसे अपने पूर्व जन्म के भाइयो को अपने ही राज्य मे साहु, बढई और कोढी के रूप में देखकर विरक्ति हुई।

२—निरजन गुननामा
३—गुन पवेरा
४—गुन विरहनामा
} १६३२।३२७ ए। तीनो ग्रन्थ एक ही जिल्द मे मिले हैं।

५—नैन नामों, १६३२।३२७ वी। आंखो के ऊपर नीति और अध्यात्म के दोहे।

६—अरिल्ल, १६२६।३२७ ए। इस ग्रन्थ मे निम्नाकित ६ अग है—१—विरह, २—सुमिरण ३—काल, ४—उपदेश, ५—कृपन, ६—चाणक, ७—विश्वास, ८—साध, ६—पतिव्रता। इस ग्रन्थ मे ज्ञानोपदेश सम्बन्धी १३३ अरित्ल है।

७—साखी, १६२६।३२७ वी। प्राप्त प्रति खण्डित है। यह भी सुमिरन आदि अगो के क्रम से है।

दादू का जन्म-सवत् १६०१ और मृत्यु-सवत् १६६० माना जाता है।[2] वाजिद स० १६६० के पहले दादू के शिष्य हो गये रहे होगे। दादू के प्रसिद्ध शिष्य सुन्दरदास का जीवनकाल स० १६५३-१७४६ है। लगभग यही जीवनकाल वाजिद का भी होना चाहिये। अत. सरोज मे दिया स० १७०८ ठीक है और कवि का उपस्थिति काल है।

राजस्थानी भाषा और साहित्य के अनुसार[3] वाजिद पठान थे। एक बार हरिणी का शिकार करते समय इनके मन मे दया उत्पन्न हुई और ये अहिंसक होकर, दादू के शिष्य हो गए तथा भगवद्भजन मे काल-यापन करने लगे। इनके ग्रन्थो की यह सूची दी गई है—

१ अरिल्लै, २ गुण कठियारानामा, ३ गुण उत्पतिनामा, ४ गुण श्रीमुखनामा, ५. गुण घरियानामा, ६ गुण हरिजननामा ७ गुण नावमाला, ८ गुण गजनामा, ६ गुण निरमोहीनामा, १० गुण प्रेम कहानी, ११. गुण विरह का अग, १२ गुण नीसानी, १३ गुण छन्द, १४ गुण हित उपदेश, १५ पद, १६ राज कीर्तन।

५६८।४५६

(७२)—बुधराम कवि स० १७२२ मे उ०। हजारे मे इनके कवित्त है।

सर्वेक्षण

हजारे मे बुधराम के कवित्त है, अत स० १७५० के पूर्व इनका अस्तित्व सिद्ध है। विनोद

---

(१) खोज रि० १६०२।७८ (२) हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ ८९ (२) राजस्थानी भाषा और साहित्य, पृष्ठ २२६

(४४७) मे सरोज दत्त स० १७२२ कवि का रचनाकाल स्वीकार किया गया है। यह रचनाकाल ही प्रतीत होता है।

५६६।४६१

(७३) वलि जू कवि, स० १७२२ मे उ०। ऐजन। इनके हजारे मे कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही है।

५७०।४६३

(७४) वनवारी कवि, स० १७२२ मे उ०। यह कवि राजा अमर सिंह, हाडा, जोधपुर के यहाँ थे।

सर्वेक्षण

वनवारी जोधपुर नरेश प्रसिद्ध 'भाषा भूषण' के सुप्रसिद्ध रचयिता जसवत सिंह के बडे भाई अमर सिंह राठौर (हाडा नही) के प्रशस्ति गायक कवि थे। अमर सिंह ने गँवार कह देने के कारण सलावत खाँ को शाहजहाँ के भरे दरबार मे मार डाला था और आगरे के किले से घोडे पर बाहर कूद पडे थे। सरोज मे बनवारी के दो कवित्त उद्धृत हैं। एक मे उक्त घटना का उल्लेख हुआ है। शुक्ल जी ने वनवारी का रचनाकाल स० १६६०–१७०० माना है।[1] वनवारी स० १७२२ मे भी उपस्थित रह सकते हैं। सरोज का सवत् अशुद्ध नही कहा जा सकता। इसी कवित्त के सहारे यह नही कहा जा सकता कि यह अमर सिंह के दरबारी कवि थे ही। इस उत्तेजित करने वाली घटना को आधार बनाकर आज भी नाटक और नौटकियाँ लिखी गई है।

५७१।४६४

(७५) विश्वम्भर कवि। इनके शृ गार के कवित्त सुन्दर हैं।

सर्वेक्षण

सरोज मे विश्वम्भर कवि का एक शृ गारी सवैया उद्धृत है, अतः यह रीतिकालीन कवि हैं। इनके सम्बन्ध मे इतना ही निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है।

५७२।४७३

(७६) वैताल कवि वन्दीजन, स० १७३४ मे उ०। इनके सामयिक नीति सम्बन्धी छप्पै बहुत सुन्दर हैं। महाराजा विक्रम शाह के यहाँ थे।

(१) हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ ३२५

सर्वेक्षण

वैताल ने अपने छप्पयो मे विक्रम को सम्बोधित किया है। इतिहासकारो के अनुसार यह विक्रम चरखारी नरेश विजय विक्रमाजीत (शासनकाल स० १८३९-८६) हैं। अत वैताल का भी रचनाकाल यही होना चाहिये। ऐसी स्थिति मे सरोज में दिया स० १७३४ कम से कम १०० वर्ष पूर्व है और अशुद्ध है।

तासी ने उर्दू के एक कवि सन्तोष राय वैताल का उल्लेख किया है। ग्रियर्सन ने (५१५) तासी के इस उर्दू कवि को सरोज के इस हिन्दी कवि से व्यर्थ के लिए मिला दिया है। इसी प्रकार खोज मे किसी कवि का किया हुआ 'वैताल पचीसी' का भाषानुवाद मिला हैं, जिसे रिपोर्ट[१] मे वैताल के नाम मढ दिया गया है। पुष्पिका मे इसे वैताल की रचना कहा गया है और रिपोर्ट मे स्वीकार कर लिया गया है। इस ग्रन्थ की भाषा वैताल के छप्पयो की भाषा से बहुत पुरानी है।

५७३।४७४

(७७) वेचू कवि स० १७८० मे उ०। इनके कवित्त बहुत सुन्दर हैं।

सर्वेक्षण

वेचू शृगारी कवि हैं। विनोद के अनुसार (६८७) इनका जन्मकाल स० १७५० और रचनाकाल स० १७८० है। इस कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही। इतिहासो मे जो भी उल्लेख हुए हैं, सब सरोज के ही आधार पर। विनोद का भी कथन सरोज पर निर्भर है।

५७४।४७५

(७८) बजरग कवि, ऐजन। इनके कवित्त बहुत सुन्दर हैं।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही है।

५७५।४७७

(७९) बकसी कवि, इनके कवित्त सुन्दर हैं।

सर्वेक्षण

बकसी कवि की छाप है, यह उसका नाम नही है। प्राय कायस्थ लोग बख्शी हुआ करते हैं। यह रीतिकालीन कवि हैं। ग्रियर्सन मे (८६१) इन्हे तानसेन से भी पूर्वकालीन प्रसिद्ध सगीतज्ञ बकसू से मिलाने का प्रयास किया गया है, जो ठीक नही। इस कवि के सम्बन्ध मे कोई प्रामाणिक सूचना सुलभ नही।

---

(१) खोज रि० १९२६।२७

५७६।४८४

(८०) वाजेश कवि, बुन्देलखण्डी, स० १८३१ मे उ० । इन्होने अनूप गिरि की तारीफ मे बहुत कवित्त कहे है।

सर्वेक्षण

सरोज मे वाजेश कवि का एक कवित्त उद्धृत है, जिससे इनका अनूपगिरि का प्रशस्ति-गायक कवि होना सिद्ध है।

महाराज राजा श्री अनूपगिरि तेरी धाक
गालिब गनीमन के पैर गरे जात हैं

अनूपगिरि गोसाई की मृत्यु स० १८६१ मे अत्यन्त वृद्धावस्था मे हुई। इनका शौर्य स० १८२० मे वक्सर की लडाई मे पहली वार चमका था, जब इन्होने अवध के नवाव शुजाउद्दौला की जान अपनी जाँघ मे एक घाव खाकर भी बचाई थी। अत. इनका शौर्यकाल स० १८२०-६१ है। यही वाजेश का रचनाकाल होना चाहिये। अत सरोज मे दिया हुआ स० १८३१ ठीक है और वाजेश का उपस्थितिकाल है। विनोद मे (६६१) इसे रचनाकाल ही स्वीकार भी किया गया है।

५७७।४८६

(८१) वालनदास कवि, स० १८५० मे उ०। इन्होने रमल भाषा ग्रन्थ बनाया है। रमल विद्या के ग्राहकों के लिए यह ग्रन्थ बहुत अच्छा है।

सर्वेक्षण

सरोज मे दिया स० १८५० 'रमलसार' का रचनाकाल है। रचनाकाल सूचक यह दोहा स्वय सरोज मे उद्धृत है।

इदु[1] नाग[8] अरु वान[5] नभ[0] अंक अव्द श्रुति मास
कृस्न पच्छ तिथि पचमी वरनेउ वालनदास १

कवि अपनी छाप 'वाल' भी रखता है—

गुरु गनेश सुभ सेप मुनि गरुडध्वज गोपाल
रमल कथा मुख कमल करि बरनन की रज वाल २

इस ग्रन्थ का विषय इस दोहे में दिया गया है—

चौसठि प्रश्न विचारि के, संकर कीन प्रकास
तेहि मा सुख ससार को, वरनत वालनदास ३

इनका बनाया हुआ 'साठिका' नाम का एक ग्रन्थ ज्योतिष-ग्रन्थ और भी खोज मे मिला है।[1] इस ग्रन्थ मे ६० वर्ष के समय-चक्र का ज्योतिष सम्वन्वी सिद्धान्त निरूपण है। कहा जाता है कि साठ-साठ वर्ष के वाद समय चक्र वदला करता है। प्राप्त प्रति का लिपिकाल सं० १८४५ माना गया है, जो ठीक नहीं। यह रचनाकाल है। पुष्पिका मे इसका प्रतिलिपिकाल अलग से स० १८६४ दिया गया है।

---

(१) खोज रि० १९१२।१०

इनका एक अन्य खण्डित ग्रन्थ 'स्वरोदय' मिला है।[1] बालनदास का नाम बालदास और बालचन्द्र भी है।

५७८।४६६

(८२) वृन्दावनदास २, ब्रजवासी, सं० १६७० मे उ०। इनके पद रागसागरोद्भव मे है।

सर्वेक्षण

चाचा हित वृन्दावनदास, जिनका रचनाकाल सं० १८००-४४ है, और जो हित-सम्प्रदाय के प्रसिद्ध भक्त तथा हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध कवि हैं, उनसे यह वृन्दावनदास ब्रजवासी भिन्न है। चाचा जी की रचनाओ मे नाम के पूर्व हित अवश्य लगा रहता है। सरोज मे, उद्धृत पद मे कवि नाम के पहले हित नही लगा है, जो इनकी हित-सम्प्रदाय वाले इसी नाम के कवि से विभिन्नता प्रकट करता है।

"चित्र लिखी सी रहि गई ता छिन, वृन्दावन प्रभु वृन्दावन मे"

परन्तु डॉ० विजयेन्द्र स्नातक का अभिमत है कि चाचा हित वृन्दावनदास की रचनाओं मे तीन छापे मिलती है—(१) वृन्दावन हित रूप (२) वृन्दावन हित, (३) वृन्दावन।[1] यदि यह तथ्य ठीक है तो उक्त पद प्रसिद्ध राधावल्लभी कवि चाचा हित वृन्दावनदास का भी हो सकता है।

चाचा हित वृन्दावनदास का जन्मकाल संवत् १७६५ माना जाता है। इनकी पहली संवताकित रचना अष्टयाम है, जिसका रचनाकाल स० १८०० कार्तिक शुक्ल एकादशी है। अन्तिम ज्ञात रचना 'सेवक परिचयावली' है, जिसका रचनाकाल सं० १८४४ है। इन्हे गौड ब्राह्मण माना जाता है। यह प्रारम्भ से ही विरक्त थे और कभी भी गृहस्थ नही रहे। स० १७६४ के पहले यह राधावल्लभ सम्प्रदाय के गोस्वामी हित रूप लाल के शिष्य हो चुके थे। यह ब्रजवासी एव वृन्दावन वासी थे, पर इनके जन्मस्थान का ठीक पता नही।

राधावल्लभीय ग्रन्थसूची मे चाचा हित वृन्दावनदास के १५८ ग्रन्थ कहे गये है। इनके सवा लाख पद कहे जाते हैं। इन्होने १४ तो अष्टयाम ही लिखे है, जिनके रचनाकाल स० १८०० से १८३७ तक हैं। श्री विजयेन्द्र स्नातक ने इनके ६८ ग्रन्थो की सूची दी है जिनमे से २७ का रचना-काल नही ज्ञात है, शेष ७१ का रचनाकाल ज्ञात है और स्नातक जी ने उनका उल्लेख भी किया है।

स्नातक जी ने अपने ग्रन्थ मे चाचा जी के निम्नलिलिखित १२ ग्रन्थो की आलोचना भी दी है —

(१) लाड सागर (२) ब्रज प्रेमानन्द सागर (३) वृन्दावनजस प्रकाश वेली (४) विवेक पत्रिका वेली (५) कलिचरित्र वेली (६) कृपा-अभिलाषा वेली (७) रसिकपथ चन्द्रिका (८) जुगल-सनेह पत्रिका (६) श्री हित हरिवंश सहस्र नाम (१०) छद्म लीला (११) आर्त पत्रिका (१२) स्फुट पद। इनमे से ग्यारहवां अप्रकाशित हैं, शेष ११ प्रकाशित है।

ब्रज के भक्ति सम्प्रदायो मे जितने वाणीकार हुए हैं, परिभाषा की दृष्टि से चाचा वृन्द्रावन दास की रचनाओ की सख्या सर्वाधिक है।[2]

---

(१) खोज रि० १६३६।३० २) राधावल्लभ सम्प्रदाय सिद्धान्त और साहित्य, पृष्ठ ५१२-५२८

५७६।४६७

(८३) विद्यादास व्रजवासी, स० १६५० मे उ० । ऐजन । इनके पद रागसागरोद्भव मे हैं ।

सर्वेक्षण

रागकल्पद्रुम द्वितीय भाग मे विद्यादास जी के पद हैं । स० १८२५ मे प्रतिलिपित वाणी सग्रह[1] मे विद्यादास के पद, पृष्ठ २५१ पर है और गुटका विविध सग्रह[2] मे भी इनके पद है । इनके सम्बन्ध मे कोई अन्य सूचना सुलभ नही है ।

५८०।

(८४) वारक कवि, स० १६५५ मे उ० ।

सर्वेक्षण

कोई सूचना सुलभ नही है ।

८१।

(८५) वनमाली दास गोसाई, स० १७१६ मे उ० । यह कवि अरबी, फारसी और सस्कृत भाषा मे महा-निपुण थे । यह दाराशिकोह के मुंशी थे । वेदान्त मे इनके दोहरे बहुत चुटीले हैं ।

जैसा मोती ओस का, वैसे है संसार
झलक्त देखा दूर से, जात न लागै बार

इन्ही महाराज ने पण्डित रघुनाथ कृत राजतरगिणी और मिश्र विद्याधर कृत राजावली का सस्कृत से फारसी मे उल्था किया है ।

सर्वेक्षण

स० १७१५ मे औरगजेब गद्दी पर बैठा । इसी समय उसने दारा आदि अपने अन्य भाइयो को हराया । अत दारा के मुन्शी वनमालीदास गोसाई का सरोज मे दिया स० १७१६ ठीक है और यह कवि का उपस्थितिकाल है ।

५८२।

(८६) बेनीमाधव भट्ट ।

सर्वेक्षण

बेनीमाधव भट्ट का उपनाम प्रवीन था । यह स० १७९८ के पूर्व वर्तमान थे । खोज मे इनके ये दो ग्रन्थ मिले हैं ।

१—विचित्रालकार
२—चतुर्विध पत्री[3] } १९४४।३९८

---

(१) राज रि०, भाग ३, पृष्ठ ४१ (२) वही, पृष्ठ ९९ (३) खोज रि० १९२६।३२

खोज मे एक ग्रन्थ वेनीमाधो की 'वारहमासी'[१] मिला है। इसके रचयिता वेनीमाधो माने गए हैं, जो ठीक नही। यह रचना किसी सूरदास की है। अन्तिम छन्द मे सूरदास छाप है भी। इसी रिपोर्ट मे अन्यत्र यही ग्रन्थ महाकवि सूरदास के नाम पर चढा हुआ है।[२]

५८३।

(८७) वशीधर वाजपेयी, चिन्ताखेरा, जिले रायवरेली, १६०१ मे उ०। इन्होने वहुत ग्रन्थ बनाये हैं।

संग किसी के मत चलै, यह जग माया रूप
ताते तुम वाको भजहु, जो जगदीस अनूप

सर्वेक्षण

सप्तम सस्करण मे इन्हे स० १६०१ मे उ० कहा गया है, जो प्रेस की भूल है। विनोद (१६८७) एव सरोज तृतीय सस्करण मे इनका समय स० १६०१ दिया गया है। वशीधर वाजपेयी रायवरेली, जिलान्तर्गत चिन्ताखेडा के रहने वाले कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। यह सस्कृत-व्याकरण के अच्छे अध्येता थे। पहले यह पश्चिमोत्तर प्रदेश (अब उत्तरप्रदेश) के शिक्षा-विभाग मे पुस्तको के भाषानुवाद के लिए नियुक्त हुए थे, फिर आगरा के नार्मल स्कूल मे सेकण्ड मास्टर हुए थे।[३]

वशीधर जी ने हिन्दी-उर्दू का एक पत्र निकाला था। हिन्दी वाले अश का नाम 'भारत-खण्डामृत' और उर्दू कालम का नाम 'आवे हयात' था। उनकी लिखी पुस्तको के नाम यह है—

१. पुष्प वाटिका (गुलिस्ता के एक अश का अनुवाद, सं० १६०६)
२ भारतवर्ष का इतिहास (स० १६१३)
३ जीविका परिपाटी (अर्थशास्त्र की पुस्तक, सं० १६१३)
४ जगत् वृत्तान्त (स० १६१५)[४]

५८४।

(८८) वशीधर कवि वनारसी, गणेश, वन्दीजन कवीद्र के पुत्र, स० १६०१ मे उ०। इन्होने साहित्य वशीधर, भाषा राजनीति, ये दो ग्रन्थ बनाये हैं, जिनके नाम विदुर प्रजागर और मित्र मनोहर हैं। ये दोनो ग्रन्थ नीति के न्यारे-न्यारे हैं।

सर्वेक्षण

वशीधर बनारसी का एक ग्रन्थ साहित्य-तरगिणी[५] खोज मे मिला है। इनकी रचना सं० १६०७ मे आषाढ सुदी ५, रविवार को हुई—

मुनि[७] अकास[०] अकनि[९] अवधि ससि[१] सवतसर नाम
तह अषाढ़ सुदि पचमी, रवि बासर सुख धाम

---

(१) खोज रि० १६२६।४७१ ओ (२) कवित्त रत्नाकर, प्रथम भाषा कवि १ (३) हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ ४३७ (४) खोज रि० १६२०।१२

यह ग्रन्थ काशीनरेश महाराज ईश्वरीनारायण सिंह के खवास (अंग-रक्षक) औघड के लिए बना—

औघड वीर खवास वर, कासीपति को जानि
तिनकी कृपा सुपाय के, रचत ग्रन्थ सुखदानि २

× × ×

राम सिया मोद लेइ
ईश्वरी नरेश सेइ
विश्वनाथ रूप होइ
औघड सनाथ सोइ

इस ग्रन्थ मे कवि ने अपना वंश परिचय भी दिया है। इसके अनुसार यह गणेश के पुत्र, गुलाब के पौत्र एवं लाल के प्रपौत्र थे। लाल, गुलाब एवं वंशीधर, ये तीनो काशीनरेशो के दरबारी कवि थे।

भए कवि लाल, जस जगत विसाल, जाके
गुन को न वारापार, कहाँ लौं सो गाइये
ताके भये सुकवि गुलाब प्रीति मन्तन में
कविता रसाल सुभ सुकृत सुनाइये
सुकवि गनेस की कविता गनेस राम
करै को बखान मम पितु सोइ गाइये
तिन तें सु पढि कीन्हों मति अनुसार
जानो सिया राम जम ग्रन्थ औघड सु भाइये

यह ग्रन्थ पांच तरगो मे विभक्त है। प्रथम तीन तरगो मे ध्वनि-काव्य का निरूपण है। चतुर्थ मे नायिका-भेद और पञ्चम मे चित्र-काव्य है।

'भाषा राजनीति' अथवा 'मित्र मनोहर'[१] नामक ग्रन्थ खोज मे मिला है। यह ग्रन्थ वंशीधर बनारसी का नहीं है। यह वंशीधर प्रधान (कायस्थ) की कृति है। इसकी रचना सं० १७७४ ई० मे हुई थी।

प्रभु को पञ्चम[५] रूप पर, मिलवहु वेद[४] पुरान[१८]
सत्रह सै पर वदित, संवत् गनौ प्रमान
पूस मास गनि ऊख त्यों, ग्रन्थ सरस रस चाहि
हर तिथि रवि सुत सुदिन लहि, चोरहन लयो सराहि
मकनेस नन्द आनन्दमय, मान महीप महीप मनि
कह वंशीधर ग्रन्थ यह गुनि मित्र मनोहर नाम भनि

इन्हीं वंशीधर प्रधान का बनाया हुआ हिसाब का एक ग्रन्थ 'दस्तूर मालिका'[२] भी खोज मे मिला है। इसकी रचना सं० १७६५ मे हुई।

---

(१) खोज रि० १९०२।६८ (२) खोज रि० १९०२।१०

संवत सत्रा सैकरा, पैंसठ अधिक पुनीत
करि वर्णन यहि ग्रन्थ कौं, ह्वै चरनन कौ मीत ६

यह वंशीधर प्रधान किसी उग्रसेन राजा के पुत्र सकतसिंह के आश्रय मे थे, जो सकतपुर मे रहता था। उस समय दिल्ली मे आलमगीर और बुन्देलखण्ड मे छत्रसाल तप रहे थे। यह उल्लेख कवि ने ग्रन्थारम्भ मे किया है।

विनोद (९९२८) मे 'विदुर प्रजागर' या 'साहित्य वंशीधर' को वंशीधर बनारसी की कृति माना गया है। वंशीधर प्रधान का उल्लेख विनोद मे ६२८ संख्या पर उचित ही अलग हुआ है।

ग्रियर्सन मे (५७४) इस कवि के सम्बन्ध मे भद्दी भूलें भरी पड़ी है। एक तो सरोज के संवत् को इसमे जन्मकाल माना गया है, दूसरे दो-दो नाम वाले ग्रन्थो को चार भिन्न-भिन्न ग्रन्थ समझ लिया गया है।

५८५।

(८९) वंशगोपाल वन्दीजन, जालवन निवासी, सं० १९०२ मे उ०।

सर्वेक्षण

वंशगोपाल वन्दीजन, जालौन के रहनेवाले थे। सरोज-दत्त सं० १९०२ इनका कविता-काल ही है। 'भाषा सिद्धान्त' नामक ब्रजभाषा गद्य मे लिखा हुआ इनका एक ग्रन्थ छतरपुर मे है।[1]

५८६।

(९०) वृन्दावन, ब्राह्मण, सेमरौता, जिले रायबरेली, विद्यमान हैं।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही है।

५८७।

(९१) बुध सिंह पंजाबी। इन्होंने 'माधवानल' की कथा का कविता के साथ बहुत सुन्दर भाषा की है।

सर्वेक्षण

'माधवानल' और 'सभा प्रकाश'[2] के रचयिता एक बुध सिंह, कायस्थ, बुन्देलखण्डी का उल्लेख विनोद (१९००) मे हुआ है। यह कवि नाम और ग्रन्थनाम तथा स्थान-वैषम्य, निश्चय ही विचित्र है। हो सकता है, सरोज मे प्रमाद से कवि को पंजाबी कहा गया हो। बुन्देलखण्डी बुध सिंह का रचना काल सं० १८९७ है।

---

(१) विनोद १९७२ (२) खोज रि० १९०६।१७

५८८।

(९२) बाबू भट्ट कवि।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही है।

५८९।४६७

(९३) ब्रह्म, श्री राजा बीरबर।

सर्वेक्षण

सरोज मे ब्रह्म कवि का विवरण एक बार पहले आ चुका है। देखिये, यही ग्रन्थ-संख्या ४६७। यह कवि प्रथम एवं द्वितीय सस्करणो मे नही हैं, तृतीय से बढा है।

५९०।

(९४) विद्यानाथ कवि, अन्तर्वेद वाले, स० १७३० मे उ०।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही है। विनोद (१५८२) मे न जाने क्यो इस कवि को अज्ञातकालीन प्रकरण मे स्थान दे दिया गया है।

५९१।

(९५ बैन कवि।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही।

५९२।

(९६) विजय सिंह उदयपुर के राना, स० १७८७ मे उ०। यह महराज कवि थे। इन्होने 'विजय विलास' नामक एक ग्रन्थ बनवाया है, जिसमें एक लक्ष दोहे हैं। इस ग्रन्थ मे जो युद्ध, विजय सिंह और उनके भान्जे राम सिंह, अजय सिंह के पुत्र, से हुआ है, सो पढने योग्य है। इसी लडाई के कारण मरहठे लोग मारवाड देश मे गये। इस ग्रन्थ का एक दोहा है—

याद घने दिन आवैं, आया बोला हेल
मांगं तीनो भूपती, माल खजाना मेल ॥१॥

सर्वेक्षण

विजय सिंह जोधपुर के राजा थे, उदयपुर के राना नही। यह ऊपर दिये विवरण मे मराठो के मारवाड प्रवेश वाले अंश से प्रकट है। ग्रियर्सन ने (३७१) भी टॉड के आधार पर यही बात कही है और इनका शासन काल स० १८१०-४१ दिया है। अत. सरोज मे दिया हुआ सं० १७८७ ठीक नही। यह हो सकता है कि विजय सिंह इस संवत् के आस-पास उत्पन्न हुए रहे हो।

५९३।

(९७) वरवै सीता कवि, राठौर, कन्नौज के राजा, स० १२४९ मे उ० । यह महाराजाधिराज कन्नौज के राजा, भाषा मे वडे कवि हो गये है ।

सर्वेक्षण

इस कवि का न तो ग्रियर्सन मे और न तो विनोद ही मे उल्लेख है । इस कवि की कविता भी आज तक कही देखने मे नही आई । इस नाम का कोई राजा कन्नौज मे नही हुआ । न जाने किस आधार पर सरोज मे इस कवि का उल्लेख हुआ है ।

५९४।

(९८) वारदरवेरण कवि, वन्दीजन, राठौरो का प्राचीन कवि, स० ११४२ मे उ० । जब महाराज जयचन्द का जमाना पलटा और शिव जी जयचन्द के पुत्र, मेवाड देश की ओर भाग गये, तब यह कवि उनके साथ गया और वहाँ मुधियावार नामक एक लक्ष रूपये का इलाका उसके पास था ।

सर्वेक्षण

इस कवि का उल्लेख ग्रियर्सन मे नही हुआ है, विनोद मे (११) हुआ है । इस कवि का समय सं० १२५० के आस-पास होना चाहिये । सरोज मे दिया गया स० ११४२ कदापि ठीक नही ।

५९५।

(९९) वेनीदास कवि, वन्दीजन, मेवाड देश के निवासी, स० १८९२ मे उ० । यह कविराज, सं० १८९० के करीब मारवाड देश के प्रवन्ध-लेखक अर्थात् तारीखनवीसो मे नौकर थे ।

सर्वेक्षण

स० १८९० के करीव यह मारवाड के इतिहास-लेखको मे थे । अत. स० १८९२ कदापि जन्मकाल नही हो सकता, जैसा कि ग्रियर्सन मे (६७१) स्वीकार किया गया है । इस कवि के सम्वन्ध मे कोई अन्य सूचना सुलभ नही है ।

५९६।४८७

(१००) वादेराय कवि, वन्दीजन, डलमऊ वाले, सं० १८८२ मे उ० । यह कवि महराजा दयाकृष्ण, दीवान, सरकार लखनऊ के यहाँ थे ।

सर्वेक्षण

खोज मे बादेराय का एक ग्रन्थ रामायण मिला[१] है । इसमे ५९२ पन्ने हैं । कवि ने इस ग्रन्थ मे अपना परिचय दिया है—

(१) खोज रि० १९२९।१६

नगर तिलोई मेरो धामा
नाम पिता को राम गुलामा
राज तिलोई बहुत बखानी
बहुत काल तक कीन्ह दिवानी
अन्त काल हरि पद चित लायो
राम कृपा से धाम सिधायो

ग्रन्थ की रचना स० १६१४ मे हुई—

संवत कौं परगास, नौ दस सत चौदह रच्यो
राम चरन धरि आस, अर्थ कियो तब यह कथा

इन्होंने अपनी जाति का नाम नही लिखा है। ग्रन्थ की पुष्पिका मे इन्हे वादीराय कहा गया है। इससे प्रतीत होता है कि यह कायस्थ थे। नाम के आगे राय लगा देख सरोजकार ने इन्हे वन्दीजन समझ लिया है।

अपने अन्तिम दिनो मे यह लाला मक्खनलाल की जमीदारी जफरपुर, परगना देवा, जिला बाराबकी चले गये थे। यही इनकी देख-रेख मे उक्त रामायन की प्रतिलिपि पांच दिनो मे की गई थी। यह सूचना प्राप्त-प्रति की पुष्पिका से प्राप्त होती है—

"पोथी रामायन तफनीस लाला वादीराय साहब, साकिन तिलोइ, हाल वारिद दर मुकाम जफरपुर, जमीदारी लाला मक्खनलाल कानूनगो अज इत्तिफाकात वक्त रफतन खुद दर मुकाम मजकूरह सुद पोथी रामायन वामुआइना खुद आमदा व समल मासफ सुदन नकल तहरीर करद व मुआविनत साहिदान आजा दर पज राज जुमला पोथी समाप्त करदीद दर सन् १२६६ फसली सुरु माह पूस दर मुकाम जफरपुर मुतअल्लिकै परगनै देवा जमीदारी ला० मक्खनलाल साहब कानूनगो कथा रामायन समाप्त।"

सरोज मे दिया स० १८८२ इनका प्रारम्भिक रचनाकाल हो सकता है।

भ

५६७।५१६

(१) भूषण त्रिपाठी, टिकमापुर जिले कानपुर, स० १७३८ मे उ०। रौद्र, वीर, भयानक, ये तीनो रस जैसे इनके काव्य मे है, ऐसे अन्य कवियो की कविता मे नही पाये जाते। यह महाराज प्रथम राजा छत्रसाल पन्ना नरेश के यहाँ छ महीने तक रहे। तेहि पीछे महाराज शिवराज सोलंकी, सितारागढ वाले के यहाँ जाय बडा मान पाया। जब यह कवित्त भूषण जी ने पढा, 'इन्द्र जिमि जंभ पर' तब शिवराज ने पांच हाथी और २५ हजार रुपये इनाम मे दिए। इसी प्रकार भूषण ने बहुत बार बहुत रुपये, हाथी, घोडे, पालकी इत्यादि दान मे पाये। ये ऐसे कवित्त, ऐसे शिवराज बनाये हैं, जिनके बराबर किसी कवि ने वीर यश नही बना पाया। निदान जब भूषण अपने घर को चले, तो पन्ना होकर राजा छत्रसाल से मिले। छत्रसाल ने विचारा अब तो शिवराज ने इनको ऐसा कुछ धन-धान्य दिया है कि हम उसका दसवाँ हिस्सा भी नही दे सकते। ऐसा सोच-विचार कर चलते समय भूषण की पालकी का बांस अपने कधे पर धर लिया। ब्राह्मण कोमल हृदय तो

होते ही हैं, भूषण जी ने बहुत प्रसन्न होकर यह कवित्त पढा—

साहू को सराहौ की सराहौ छत्रसाल को

और दूसरा यह कवित्त बनाया—

तेरी बरछी ने बर छीने है खलन के

इनके सिवा दो दोहे और बना कर छत्रसाल को देकर आप घर मे आये—

यक हाडा बंदी धनी, मरद महेवा वाल
सालत औरंगजेब के, ये दोनों छत्रसाल
वे देखो छत्ता पता, ये देखो छत्रसाल
वे दिल्ली का ढाल, ये दिल्ली ढाहनवाल

भूषण जी थोडे दिन घर मे रह, बहुत देशान्तरो मे घूम-घूम रजवाडो मे शिवराज का यश प्रकट करते रहे। जब कुमाऊ मे जाय राजा कुमाऊँ के यश मे यह कवित्त पढा—

उलदत मद अनुमद ज्यों जलधि जल

तब राज ने सोचा कि ये कुछ दान लेन आये हैं और हमने जो सुना था कि शिवराज ने लाखो रुपये इनको दिये, सो सब झूठ है। ऐसा विचार कर हाथी, घोडे, मुद्रा, बहुत कुछ भूषण के आगे रक्खा। भूषण जी बोले, इसकी अब भूख नही। हम इसलिये यहाँ आये थे कि देखे शिवराज का यश यहाँ तक फैला है या नही। इनके बनाये हुए ग्रन्थ शिवराज भूषण, भूषण हजारा, भूषण उल्लास, दूषण उल्लास, ये चार सुने जाते है। कालिदास जी ने अपने ग्रन्थ हजारा के आदि मे ७० कवित्त नवरस के इन्ही महाराज के बनाये हुए लिखे हैं।

सर्वेक्षण

'भूषण' कवि का उपनाम है, मूल नाम नही, जैसा कि शिवराज-भूषण के इस दोहे से प्रकट है—

कुल सुलक चित्रकूट पति, साहस सील समुद्र
कवि भूषण पदवी दई, हृदैराम सुत रुद्र

चित्रकूट पति और रुद्र के सुत हृदय राम ने कवि को 'कविभूषन' की उपाधि दी। कब उपाधि दी, किसको उपाधि दी, ये प्रश्न विचारणीय हैं।

पिछले कुछ दिनो से भूषण का मूल नाम जानने का प्रयास प्रारम्भ हुआ है। मतिराम के वजन पर पतिराम[1] और मनिराम[2] की कल्पना पहले की गई थी। श्री विश्वनाथप्रसाद मिश्र ने घनश्याम नाम का अनुमान किया है।[3] मातादीन मिश्र ने कवित्त रत्नाकर मे भूषण का परिचय देते समय इनका नाम व्रजभूषण दिया है। यह नाम प्रामाणिक प्रतीत होता है, पर यह भी अनुमान ही पर आश्रित है।

इधर भूषण के दो नए ग्रन्थ मिले हैं। जिसमे इनका नाम मुरलीधर दिया गया हैं। इनका एक ग्रन्थ है, अलकार प्रकाश[4] जिसकी रचना स० १७०५ मे हुई।

---

(१) डॉ० पीतम्बरदत्त बडथ्वाल का लेख सग्रह 'मकरद' (२) भूषण, पृष्ठ १०२–६ (३) ना० प्र० पत्रिका, वर्ष,६०, अक २, स०,२०१२,मे प्रकाशित लेख 'महाकवि भूषण का,समय' (४) भूषण, पृष्ठ६८,

पाँच सुन्न सत्रह वरिस कातिक सुदि छठि जानु
अलकार परकासु को कवि कीनो निरमानु

भूषण ने इस ग्रन्थ की रचना देवी सिंह के लिए की थी। अलकार प्रकाश के अन्त मे कवि ने अपना वंश-परिचय इस प्रकार दिया है—

"वीराधवीर राजाधिराज श्री राजा देवीशाह देव प्रोत्साहित त्रिपाठी रामेश्वर आत्मज कवि भूषण मुरलीधर विरचिते अलकार प्रकाश अविधा निरूपनो नाम दसमो उल्लास । समाप्तम् शुभम्भूयात् ।"

ग्रन्थ के ४३२वे दोहे मे भी भूषण ने अपना वंश-परिचय इस प्रकार दिया है—

रामकृष्ण कस्यप कुलहि, रामेश्वर सुत तासु
ता सुत मुरलीधर कियो, अलकार परकासु

कश्यप कुल मे रामकृष्ण के पुत्र रामेश्वर हुए और रामेश्वर के पुत्र मुरलीधर हुए, जिन्होंने 'अलकार प्रकाश' की रचना की। ग्रन्थ मे आये छन्दो मे कवि ने अपना नाम भूषण दिया है। यह ग्रन्थ अगस्त १९६३ मे भारतीय प्रकाशन मन्दिर, अलीगढ से प्रकाशित हो गया है।

दूसरा नया प्राप्त ग्रन्थ 'छन्दो हृदय प्रकाश'[1] है। यह पिंगल ग्रन्थ है। इसकी रचना १७२३, कार्तिक पूर्णिमा को हुई—

संमत सतरह सय वरस तेइस कातिक मास
पूनिव का पूरन भयो छंदो हृदय प्रकास

इस ग्रन्थ में भी कवि ने अपना नाम मुरलीधर, पिता का नाम रामेश्वर, पितामह का नाम रामकृष्ण तथा आश्रयदाता का नाम पञ्चम देवी सिंह दिया है। कवि अपने पिता का पाँचवाँ पुत्र था।

गहवर गुन मंडित, कवि, पंडित, रामकृष्ण कस्यप कुल पूषन
रामेसर ता तनय सुकबि जा जहि न निरखेउ नेकु दूषन
मुरलीधर ता सुअनु, सु पचम देवी सिंघ कियउ कवि भूषन
छंदो हृदय प्रकासु रचउ तिन जगम मातु जिमि मिहिर मयंकन

इस ग्रन्थ का पुष्पिका भी महत्वपूर्ण है—

"इति श्री पौलस्त्य वंश वारिज विकासन मार्तंड, दुर्गाधिराज लक्ष्मी, रक्षण विचक्षण दोदंड, चतुषष्टि कलाविलासनीभुजग, महाधिराजधीरा, श्री महाराज हृदयनारायण देव प्रोत्साहित त्रिपाठी रामेश्वरात्मज मुरलीधर कवि भूषण विरचिते छंदो हृदय प्रकाशे गद्य विवरण नाम त्रयोदशोध्याय ॥१३॥"

इस प्रति का लिपिकाल भी बहुत पुराना है—

"लिखितमिद पुस्तक त्रिपाठी शंभुनाथेन स० १७३० माघ सुदो ११ हरिधवलपुर ग्रामे समाप्त ।

राज० रि० मे हृदयनारायण को मार्तंडगढ का राजा कहा गया है। यह भ्रम, अर्थ ठीक-ठीक न समझने के कारण है। मार्तंड का सम्बन्ध गढा से नहीं है, पौलस्त्य वंश वारिज विकासन से है। हृदयनारायण जी गढा दुर्ग के अधिराज हैं। यह गढा जबलपुर जिले मे है।

(१) राज० रि०, भाग २, पृष्ठ ११

इस ग्रन्थ की सारी सूचनाएँ 'अलकार प्रकाश'[1] की सूचनाओ के मेल मे हैं। यह ग्रन्थ हिन्दी विद्यापीठ, आगरा विश्वविद्यालय से १९५९ ई० मे प्रकाशित भी हो गया है।

'शिवराज भूषण' भूषण का सर्वाधिक प्रसिद्ध ग्रन्थ है। इसमे भी कवि ने अपना परिचय दिया है—

दुज कनौज कुल कस्यपी, रतनाकर सुत धीर
वसत तिविक्रमपुर सदा, तरनि तनूजा तीर २६
धीर वीरवर से जहाँ, उपजे कवि अरु भूप
देव विहारीश्वर जहाँ विश्वेश्वर तद्रूप २७

इसके अनुसार, भूषण कश्यप गोत्रोत्पन्न कान्यकुब्ज ब्राह्मण रत्नाकर के पुत्र थे। यह यमुना के किनारे स्थित त्रिविक्रमपुर, तिकवापुर, मे वसते थे। इस ग्रन्थ मे पितामह का नाम नहीं दिया गया है, पिता का नाम दिया गया है। पर यह अलकार प्रकाश और छन्दो हृदयप्रकाश मे दिए पिता के नाम से मेल नही खाता। शूर वीर सिंह ने 'महाकवि भूषण का समय' शीर्षक लेख मे अनुमान किया है कि रत्नाकर महाकवि भूषण के पिता रामेश्वर का उपनाम था। जिस प्रकार मुरलीधर कवि, भूषण के उपनाम से प्रसिद्ध हुए, उसी प्रकार उनके पिता रामेश्वर, रत्नाकर नाम से प्रसिद्ध हुए होगे।[1]

श्री विश्वनाथप्रसाद मिश्र ने भूषण मे शिवराज भूषण या शिव भूषण का पाठ स० १८१८ की लिखी इस ग्रन्थ की प्राचीनतम प्राप्त प्रति के आधार पर दिया है। इस प्रति मे उक्त दोहे का रूप यह है—

द्विज कनौज कुल कश्यपी, रतिनाथ कौ कुमार
वसत त्रिविक्रमपुर सदा, जमुना कठ सुठार २६

यहाँ पिता का नाम रतिनाथ हो गया है। विश्वनाथ जी का मत है कि रतिनाथ असल नाम है और रत्नाकर उपनाम।

इस सारे विवरण से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि शिवराज भूषण के रचयिता भूषण और छन्दो हृदयप्रकाश तथा अलकार प्रकाश के रचयिता मुरलीधर कवि भूषण, दो अलग-अलग व्यक्ति हैं। इस निष्कर्ष तक पहुँचने मे ये चार तर्क सहायक हैं—

(१) महाकवि भूषण को 'कवि भूषण' बनाने वाले 'हृदयराम सुत रुद्र' थे और मुरलीधर को 'कवि भूषण' बनाने वाले देवी सिंह। हृदयराम सोलकी थे और देवी सिंह चन्देरी के पचम या बुन्देला राजा।

(२) महाकवि भूषण के पिता का नाम रतिनाथ अथवा रत्नाकर था, मुरलीधर के पिता का नाम रामेश्वर था।

(३) अलकार प्रकाश दस उल्लासो मे और छन्दो हृदयप्रकाश तेरह उल्लासो मे है। दोनो ग्रन्थों मे प्राय. एक सी पदावली मे प्रत्येक उल्लास के अन्त मे कवि परिचयात्मक पुष्पिका दी गई है।

(१) ना० प्र० पत्रिका, वर्ष ६०, अक २, स० २०१२।

शिवराज भूषण मे ऐसी कोई पुष्पिका नहीं है। यदि दोनो कवि अभिन्न होते, तो शिवराज भूषण मे भी इस प्रकार की परिचयात्मक पुष्पिका अवश्य होती।

(४) दोनो कवियो के काव्यादर्श मे भी घोर अन्तर है। मुरलीधर, कृष्णचरित से युक्त रचना को ही काव्य मानते है—

कहिए वहे कविता सब गुन सून जऊ है जू
जसुमति बालक लीला बरनित जिती साधु सुखिन सुनिकै है जू
—छन्दो हृदय प्रकाश, पृष्ठ ६१, छन्द २३

और भूषण का आदर्श है—

'पुन्य पवित्र सिवा सरजै बरम्हाय पवित्र भई वर बानी'

शिवराज भूषण का रचनाकाल स० १७३० है—

सम सत्रह सै तीस पर सुचि वदि तेरस भान
भूषन शिव भूषन कियो पढ़ियो सुनो सुजान

भूषण के दो ग्रन्थ और प्रचलित हैं—शिवा बावनी और छत्रसाल दशक। इन नामो से भूषण ने कभी कोई ग्रन्थ नही रचे। नि सन्देह इन ग्रन्थो मे सकलित रचनाएँ भूषण की है। पर ये सकलन भूषण के किये हुए नही हैं। ये सकलन स० १९४७ के पश्चात् किसी समय प्रस्तुत किये गये। सरोज मे इन ग्रन्थो का उल्लेख नही है। विश्वनाथ जी ने इन सकलनो का इतिहास 'भूषण' मे दिया है।[1]

सरोज मे शिवराज भूषण के अतिरिक्त भूषण उल्लास, दूषण उल्लास और भूषण हजारा नामक तीन अन्य ग्रन्थो का भी उल्लेख हुआ है। ये ग्रन्थ आज तक कही देखे नही गये। प्रतीत होता है कि भूषण ने काव्य के दसो अगो का विवेचन करने वाला कोई ग्रन्थ लिखा था, जिसमे अध्यायो को उल्लास कहा गया था। अलकार प्रकाश मे अध्यायो को उल्लास ही कहा भी गया है। एक-एक उल्लास मे एक-एक अग रहे होगे। भूषण उल्लास और दूषण उल्लास इसी सम्भाव्य ग्रन्थ के दो अध्याय प्रतीत होते हैं। प्राचीनकाल मे आवश्यकतानुसार बडे ग्रन्थो के विभिन्न खण्ड अलग पुस्तक रूप मे लिख लिये जाते थे। रामचरित मानस सूरसागर, ब्रजविलास के ऐसे अनेक खण्ड अलग-अलग उपलब्ध भी हुये हैं। इन ग्रन्थ खण्डो से स्वतन्त्र ग्रन्थो की भ्रान्ति असम्भव नही। भूषण हजारा मे या तो भूषण के १००० मुक्तक छन्द रहे होगे या यह भी सम्भव है कि कालिदास के समान उन्होने भी पूर्ववर्ती और सम सामयिक कवियो की एक हजार चुनी कविताएँ सकलित की हो।

चिन्तामणि भूषण, मतिराम और जटाशकर सगे भाई थे अथवा नही, इस सम्बन्ध मे भी लोगो ने विवाद उठाया है। श्री विश्वनाथप्रसाद मिश्र ने लोगो की शकाओ का समाधान भूषण की भूमिका मे कर दिया है और सिद्ध कर दिया है कि ये चारो भाई-भाई थे।[2]

श्री भगीरथ दीक्षित ने भूषण के समय के सम्बन्ध मे आपत्ति उठाई है। वे सरोज मे दिये 'स० १७३८ में उ०' के उ० का अर्थ उत्पन्न करके इसको जन्मकाल मानते हैं और शिवभूषण के रचनाकाल सम्बन्धी दोहे का विचित्र रहस्यमय अर्थ करते हैं, जो बुद्धि ग्राह्य नही है। सरोज के सवतो को जन्मकाल मानने वालो का पथ-निर्देश करने वाले श्री ग्रियर्सन (१४५) तक स० १७३८

---

(१) भूषण, पृष्ठ ८३-८८, ८८-९४। (२) वही, पृष्ठ ९७ १०२।

को जन्मकाल नही मानते । वे भूषण को सन् १६६० ई० मे समुपस्थित मानते हैं । ग्रियर्सन के चरण-चिह्नो पर चलने वालो मे अग्रगण्य मिश्रवन्धुओ ने भी विनोद मे (४२६) भूषण का जन्मकाल अनुमान से सं० १६७० के लगभग माना है और इनका देहावसान काल स० १७७२ दिया है । खोज रिपोर्ट[१] भी सरोज के इस सवत् को भूषण का जन्मकाल नही मानती । फिर भगीरथ जी को ही इस सम्वन्ध मे इतना भगीरथ प्रयत्न करने की क्या सूझ पडी, जो वे इतिहास उलटने पर उतारू हो गये । सरोज के प्रथम एव द्वितीय सस्करणो मे सवतो के साथ 'मे' उ० है ही नही, अस्तु 'मूलभास्ति कुता शाखा' ।

भूषण के सम्बन्ध मे जितनी किंवदतियाँ है, प्राय' सब का आदि स्रोत सरोज ही है ।

५६८।५२४

(२) भगवत रसिक, वृन्दावन निवासी, माधवदास जी के पुत्र, हरिदास जी के शिष्य, स० १६०१ मे उ० । इनकी कुण्डलियाँ वहुत सुन्दर है ।

सर्वेक्षण

भगवत रसिक हरिदास जी के शिष्य नही थे, उनके द्वारा स्थापित हरिदासी-सम्प्रदाय के अनुयायी अवश्य थे । साथ ही उनके पिता का नाम माधवदास नही था । इनका स० १६०१ भी अशुद्ध है । सरोजकार ने इस सवत् की कल्पना स्वामी हरिदास जी के समय को ध्यान मे रखते हुए की है । प्रश्न है कि आखिर ये सब तथ्य सरोजकार को कहाँ से मिले । उन्होने ये सब बाते योही तो दे न दी होगी । असल बात यह है कि सरोजकार ने परिचय दूसरे व्यक्ति का दिया है और नाम तथा उदाहरण दूसरे व्यक्ति का । परिचय का आधार भक्तमाल है । भक्तमाल मे एक भगवन्त मुदित नाम के भक्त हैं जिनके पिता का नाम माधवदास था ।

माधव सुत समत रसिक, तिलक दाम धरि सेव लिय
भगवत मुदित उदार जस, रस रसना आस्वाद किय १६८

प्रियादास जी की टीका के अनुसार इन भगवन्त मुदित के गुरु का नाम हरिदास था, जो वृन्दावन मे गोविन्द देव जी के मन्दिर के अधिकारी थे । सरोजकार ने गुरु का यह नाम प्रियादास से लिया, पर हरिदास को प्रसिद्ध स्वामी हरिदास समझने की भूल भी कर दी । यह भगवन्त मुदित जी नवाब शुजाउलमुल्क के दीवान थे । रूपकला जी के अनुसार यह शुजाउलमुल्क आगरे के शासक थे ।

सूजा के दीवान, भगवन्त रसवन्त भये
वृन्दावन वासिन की सेवा ऐसी करी है
विप्र कै गुसाईं साधु कोऊ व्रजवासी जाहु
दत बहु धन एक प्रीति मति हरी है
सुनी गुरुदेव अधिकारी श्री गोविन्द देव
नाम हरिदास, जाय देखें चित धरी है
जोग्यताई सीवा, प्रभु दूधभात माँगि लियो
कियो उतसाह तऊ पेखैं अरबरी है ६२७

---

(१) शिवराज भूषण, १६०३।४८, १६२३।६१ ए, वी, १६२६।६७ ए, बो ।

इन भगवन्त मुदित का समय सं० १७०७ है। इसी साल इन्होंने 'वृन्दावन शतक' नामक ग्रन्थ लिखा था।

सवत दस से सात सै अरु सात वर्ष है जानि
चेत मास मे चतुर वर भाषा कियो बखानि १४६

इनके लिखे निम्नलिखित ग्रन्थ खोज मे मिले है—

१—सेवक चरित्र, १६०६।२३ बी। इस ग्रन्थ मे हित-सम्प्रदाय के प्रसिद्ध भक्त सेवक जी का चरित्र है।

२—रसिक अनन्यमाल, १६०६।२३ सी। यह २३६ पृष्ठो का बडा ग्रन्थ है। इसमे हित-हरिवश और उनके अनुयायियो के चरित्र है। हित चरित्र और सेवक चरित्र इसी ग्रन्थ के अश हैं।

३—वृन्दावन शतक, १६१२।२११ इसमे कुल १४६ विविध छन्द हैं। इसकी रचना सं० १७०७ मे हुई। इनके ग्रन्थो मे स्वय स्पष्ट है कि यह राधावल्लभी सम्प्रदाय के थे।

भगवन्त मुदित के इस परिचय से स्पष्ट है कि सरोजकार ने भगवत रसिक का नाम और उनकी कविता का उदाहरण तो ठीक दिया है, पर परिचय भगवन्त मुदित का दे दिया है।

हरिदासी सम्प्रदाय के आठ प्रमुख आचार्य हुए हैं। सातवें आचार्य ललित किशोरी जी थे, जिनका जन्म अगहन वदी ८, स० १७३३ को और मृत्यु पौष वदी ६, स० १८२३ को हुई। आठवें आचार्य ललितमोहिनी जी थे, जिनका जन्म आश्विन सुदी १०, स० १७८० को और मृत्यु फागुन वदी ६, स० १८५८ को हुई। भगवत रसिक इन्ही आठवे आचार्य ललितमोहिनी जी के शिष्य थे। सहचरिशरण जी ने इन आचार्यो का अवतार और अन्तर्धान काल आचार्योत्सव सूचना मे दिया है।

ललित किसोरी ललित प्रगट पद अगहन वदि आठैं दिन
सत्रह सै तैंतीस मनोहर ताहि न भूलौं इक छिन
अन्तरध्यान पौष वदि छठि कौ रसिकन के उर दाहू
वर्ष अठारह सै तेईसा हर्ष हर्‍यो सब काहू
ललित मोहिनी प्रभा सोहिनी आश्विन सुदि दसमी कौं
कियो प्रकास सरद जनु चन्द्रम वर्षायो सु अमी कौं
सवत सत्रह सै सु असी कौ अति प्रमोद कौ दानी
सरन माघ वदि इकदसमी जो सबही ने यह जानी
फागुन वदि नवमी को प्रमुदित रग महल को गमने
वर्ष अठारह सौ अट्टावन निरखत राधा रमने

—व्रजमाधुरी सार, पृष्ठ २४०

व्रजमाधुरी सार[1] मे इनका जन्मकाल स० १७६५ अनुमित है। शुक्ल जी ने भी इनका

(१) व्रजमाधुरी सार, पृष्ठ २३६।

जन्मकाल यही माना है और इनका रचनाकाल स० १८३०-५० दिया है।[1] ललितमोहिनी दास जी की मृत्यु के अनन्तर स० १८५८ मे भगवत रसिक जी ही को हरिदासी सम्प्रदाय का नवाँ आचार्य होना चाहिये था। पर इन्होने अस्वीकार कर दिया और आचार्य-परम्परा समाप्त हो गई।[2]

भगवत रसिक जी ने वस्तुत. बहुत सुन्दर कुण्डलियाँ लिखी है। इन्होने छप्पय, पद, दोहे और अरिल्ल भी लिखे है। अपनी बानी के सम्बन्ध मे इनका यह कथन है—

भगवत रसिक रसिक की बातैं
रसिक बिना कोउ समुझि सकै ना

इनकी कविता मे शृङ्गार और वैराग्य दोनो का सुन्दर वर्णन हुआ है।[3] खोज मे भगवत रसिक जी के निम्नलिखित ग्रन्थ मिले हैं—

१—रसिक निश्चयात्मक ग्रन्थ, १९००|२९,१९४१|५२९। इसमे वैष्णव-सम्प्रदाय सम्बन्धी निज सिद्धान्तो तथा उपदेशो का वर्णन है। इसमे कुल ४७ छन्द हैं।

२—नित्यविहारी जुगल ध्यान, १९००|३०,१९२३|२०। राधाकृष्ण की युगल-मूर्ति वृन्दावन, सखी समाज आदि का ध्यान निरूपण।

३—अनन्य रसिकाभरण, १९००|३१। श्री राधाकृष्ण का नित्य विहार वर्णन। इसका एक अन्य नाम 'रस शृङ्गार केलि सागर' भी है। यह १२ झाँकियो मे विभक्त है।

४—निश्चयात्मक ग्रन्थ उत्तरार्द्ध, १९००|३२। इस ग्रन्थ मे वैष्णवमत सम्बन्धी निजी सिद्धान्त हैं। इसी ग्रन्थ के एक पद मे भक्तो की नामावली दी गई है, जिसमे अकबर बादशाह को भी सम्मिलित कर लिया गया है। यह पद व्रजमाधुरी सार मे सकलित ३१ वाँ पद है।

५—निर्विरोध मनरजन, १९००|३३। वैष्णवमतानुसार उपदेश, शिक्षा तथा निज सिद्धान्त कथन।

६—जुगल ध्यान, १९३२|२०। यह नित्यविहारी जुगल ध्यान से भिन्न ग्रन्थ है। इसमे राधाकृष्ण के रूप और शृङ्गार तथा उनके प्रेम और भक्ति का वर्णन है। सरोज के तृतीय सस्करण मे इनका नाम भगवत रमित है। यही नाम ग्रियर्सन (६१) मे भी है।

५९९|५१४

(३) भगवन्त राय कवि १। इन्होने सातो काण्ड रामायण की महा अद्भुत रचना कवित्तो मे की है।

सर्वेक्षण

यह भगवन्तराय असोथर, गाजीपुर, जिला फतेहपुर के प्रसिद्ध राजा भगवन्तराय खीची हैं। खीची चौहान क्षत्रियो की एक शाखा विशेष है। भगवन्त राय बडे ही वीर और गुणग्राही राजा थे। इनके दरबार मे सुखदेव मिश्र, शम्भुनाथ मिश्र, मल्ल, भूधर, गोपाल आदि अनेक कवि थे। इनके मरने पर किसी कवि ने कहा था—

---

(१) हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ ३५७। (२) व्रजमाधुरी सार, पृष्ठ २४०-४१। (३) वही।

भूप भगवन्त सुरलोक को सिधारो आजु
आजु कवि गन को कलपतरु टूटि गो

लखनऊ के नवाब सआदत खाँ के साथ इनका युद्ध हुआ था, जिसमे इन्होने परम वीरता प्रदर्शित की थी। गोपाल कवि ने इस युद्ध का वर्णन भगवन्तराय की विरुदावली[1] मे किया है।

लखनऊ मे दो सआदत हुए हैं। एक तो है सआदत खाँ बुरहानुलमुल्क, जिन्होने लखनऊ की नवाबी की नीव डाली। इनका शासनकाल स० १७७६-९६ है। इसी शासनकाल के आधार पर अनेक लोगो ने भगवन्तराय का कविताकाल स० १७८०-९७ माना है। दूसरे सआदत, सआदत अली खाँ हैं जिन्होने स० १८५५-७१ तक राज्य किया। निश्चय ही भगवन्तराय खीची का युद्ध इन दूसरे सआदत से नहीं हुआ, क्योकि प्रसिद्ध सुखदेव पिगली इनके दरबार मे रह चुके थे और इन सुखदेव का रचना-काल स० १७२८-६५ माना जाता है। अत सआदत से अभिप्राय लखनऊ के प्रथम नवाब से ही है पाँचवें नवाब से नहीं, जैसा कि खोज रिपोर्ट मे स्वीकार किया गया है।[2]

ग्रियर्सन (३३३) मे सप्लीमेण्ट टू फतेहपुर गजेटियर, पृष्ठ ८ के आधार पर लिखा है कि इन्होने कई वर्षों तक बादशाही सेना का सामना किया और अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा की। परन्तु स० १८१७ मे धोखे से मारे गये। तदनन्तर इनका पुत्र रूपराम गद्दी पर बैठा।

भगवन्त राय का लिखा हुआ एक ग्रन्थ खोज मे मिला है जिसका नाम है 'हनुमान जी के कवित्त'[3]। इसमे ५२ कवित्त है। इसी का नाम हनुमन्त पचासा' भी है। इसमे सुन्दर काण्ड की कथा तथा हनुमान के नखशिख सम्बन्धी कवित्त हैं। शुक्ल जी का अनुमान है कि बहुत सम्भव है कि ये कवित्त इनकी लिखी रामायण के ही अश हो।[4] सरोज मे भगवन्त राय के दो कवित्त उद्धृत हैं। उद्धरण देने के पहले लिखा गया है, रामायण सुन्दर काण्ड। पहला उद्धरण है—

सुबरन गिरि सो सरीर प्रभा सोनित सी
तामै झलमलै रग बाल दिवाकर को

यह हनुमन्त पचासा का पहला कवित्त है। इससे शुक्ल जी का अनुमान पुष्ट होता है। सरोज मे उद्धृत दूसरा कवित्त गजोद्धार सम्बन्धी है। विनोद (७४२) मे खोज के आधार पर इनके एक ग्रन्थ हनुमतपचीसी, रचनाकाल स० १८१७, का उल्लेख है। यह सम्भवत. हनुमन्त पचासा का ही एक अश है।

६००।५१५

४—भगवन्त कवि २। इनके शृङ्गार के कवित्त बहुत सुन्दर हैं।

सर्वेक्षण

जैसा कि ग्रियर्सन (३३३) का अनुमान है, यह शृङ्गारी भगवन्त, भगवन्तराय खीची ही हैं। कवि

(१) खोज रि० १९०१।६८। (२) वही। (३) खोज रि० १९२३।४३, १९२६।४६ए, बी। (४) हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ ३६२।

अनेक रसो की कविताएँ लिखते ही हैं। केवल रस-भेद से कविभेद करना ठीक नही। भगवन्त राय के हनुमन्त पचासा मे भी कवि छाप केवल भगवन्त है।

६०१।५०१

(५०) भगवान कवि। ऐजन। इनके शृङ्गार के कवित्त बहुत सुन्दर है।

सर्वेक्षण

ग्रियर्सन (३३३) मे इन भगवान को भी भगवन्त राय खीची मे मिला दिया गया है। किन्तु यह ठीक नही, क्योकि भगवन्तराय खीची की छाप भगवन्त है, इस कवि की छाप भगवान है। भगवान नाम के कई कवि मिले हैं, पर किसी के साथ सरोज के इन भगवान के अभेद-स्थापन के कोई सूत्र उपलब्ध नही हैं।

१—भगवान, स० १८५५ के पूर्व वर्तमान। अनुभव विलास के रचयिता।१६३८।६।

२—भगवान, इनकी रचनाएँ ख्याल टिप्पा नामक सग्रह मे है—१६०२।५७।

३—भगवान, गुरु गैबो ग्रन्थ और तमाचा के रचयिता—१६२६।३४ ए, बी।

४—भगवानदास, नल राजा की कथा के रचयिता। जन्मकाल स० १७१७, रचनाकाल स० १७४२—विनोद ५२२।

५—भगवानदास, भाषामृत के रचयिता। जन्मकाल स० १७२५, रचनाकाल स० १७५६—विनोद ६०५।

१६२३।४१ पर एक भगवान और हैं। इनके विचारमाल का विवरण दिया गया है, पर यह ठीक नही। यह रचना अनाथपुरी की है। इसका विवरण अनेक बार किया गया है। सरोज मे भी इसका उल्लेख है[1]।

६०२।५०३

(६) भगवतीदास ब्राह्मण, स० १६८८ मे उ०। इन्होने 'नासिकेत' उपाख्यान भाषा मे बनाया।

सर्वेक्षण

सरोजकार ने भगवतीदास ब्राह्मण का विवरण महेश दत्त के भाषाकाव्यसग्रह के आधार पर दिया है। इस ग्रन्थ मे स्पष्ट शब्दो मे लिखा है कि इन्होने सवत् १६८८ में नासिकेतोपाख्यान का निर्माण किया और १७१४ मे स्वर्गीय हुए।[2] इस ग्रन्थ की कई प्रतियाँ खोज मे मिली है जिनमे रचनाकाल-सूचक यह छन्द है—

---

(१) देखिए, यही ग्रन्थ, कवि सख्या २६। (२) भाषाकाव्यसंग्रह, पृष्ठ,१२०।

संवत सोलह मै अट्ठासी
जेठ मास दुतिया परगासी
सुकुल पच्छ औ सोम क बारा
मृग सिर नखत कीन्ह उपचारा
सन्त भक्ति करि सेवा, हरि चरनन कै आस
नासिकेत गुन गावै, विप्र भगौत.दास

—खोज रि० १९२३।४८ ये[1]

यह ग्रन्थ सस्कृत से अनूदित है। ग्रियर्सन (२४५) और विनोद (४०९) मे इस कवि के सवत की भ्रष्टता तो है ही, जो उ० को उत्पन्न मानने के कारण है। विनोद मे इनके एक अन्य ग्रन्थ 'चेतन कर्म चरित्र' का भी उल्लेख है। इस ग्रन्थ का रचनाकाल स० १७३२ दिया गया है। यह ग्रन्थ जैन भगवतीदास का है, विप्र भगवती दास का नही। रिपोर्ट १९२३।४८ मे इस सम्बन्ध मे नचेत भी कर दिया गया है, फिर भी यह प्रमाद, विनोद मे हो ही गया है।

६०३।५०४

(७) भगवानदास निरजनी। इन्होने भर्तृहरि शतक का कवित्तो मे भाषा किया है।

सर्वेक्षण

भगवानदास निरजनी के निम्नलिखित ग्रन्थ खोज मे मिले हैं—

१—अमृतधारा, १९०६।१३६,१९२६।४८,१९२९।३६ डी। इस ग्रन्थ मे ज्ञान और वैराग्य के विचार है। इसकी रचना स० १७२८ कार्तिक वदी ३ को हुई -

सत्रह सै अट्ठाइसा संवत सिष्य सुजान
कातिक तृतिया प्रथम ही, पूरन ग्रन्थ प्रमान

अगले दोहे मे कवि ने अपने स्थान और नाम की सूचना दी है—

मान सुकाम प्रमान यह चेत्र वास सुनान
तहाँ ग्रन्थ पूरन प्रगठ यो भाषै भगवान

कवि के गुरु का नाम अर्जुनदास था—

अमृतधारा ग्रन्थ यह कह्यो वेद परमान
अरजुनदास प्रकाश युत तत सेवक भगवान

२ कार्तिक माहात्म्य कथा १९२२।१३, १९२९।३६ ए बी सी, १९३८।१० बी। इस ग्रन्थ का प्रारम्भ स० १७४२, पौष सुदी ५ को हुआ था।

---

(१) नासिकेत गरुड पुराण १९२३।४८ ए बी, नासिकेतोपाख्यान १९२३।४८ सी, नासिकेत-कथा प्रसग १९२६।४५, पोथी नासकेत १९२९।३८, नासिकेत कथा १९४१।१७० ।

सत्रह से सवत सरिस बयालोस पुनि मान
पूस पचमी ससि सहित, आरम्भ करन दिन जान

—खोज रि० १९३८।१० बी

इसकी समाप्ति स० १७४३, फागुन कृष्ण ८, बुधवार को वारल वेहट स्थान मे हुई।

सवत सत्रह सै प्रगट, तैतालिस पुनि और
फागुन कृष्ण अष्टमी, बुधवार सिरमौर
वारल वहट अस्थान है, सुभाविं पुनु को वास
तहाँ ग्रथ पूरन भयो, निर्मल धर्म विलास

—खोज रि० १९२९।३६-ए

इस ग्रन्थ मे कुल २९ अध्याय हैं।

३—गीतामाहात्म्य, १९२३।४२ ए बी सी, १९४४।२५१। यह माहात्म्य पद्मपुराण के आधार पर है। कुछ प्रतियो की पुष्पिकाओ से सूचित होता है कि यह ग्रन्थ भगवानदास निरञ्जनी का है।[1]

४—जैमिनी अश्वमेघ, १९३८, १० ए। यह जेमिनी पुराण का हिन्दी रुपान्तर है। इसमे पाण्डवो के अश्वमेध की कथा है। इसकी रचना स० १७५५, ज्येष्ठ सुदी २, शुक्रवार को हुई।

सत्रह सै पिचावनो द्रुतिय जेठ परमान
स्वाति सुक्ला, असुर गुरु अरभ कै दिन जान ५

इस ग्रन्थ से भी इनके गुरु का नाम अर्जुनदास सिद्ध होता है।

अरजुनदास निरजनी तास सिष्य भगवान
पाडव की कीरति प्रगट कहे बुद्धि उन्मानि ६

५—अनुभव हुलास, १९३८।९। इस ग्रन्थ मे अनुभव द्वारा ब्रह्म विचार की बात १३७ दोहो मे कही गई है। १२४वे दोहे मे भगवान शब्द आया है।

अखड ब्रह्म कू खडित, जे कहिए अज्ञान
क्षेत्रनि मे क्षेत्रज्ञ हूँ, यौं भाखे भगवान १२४

यह भगवान् कृष्ण वाचक भी हो सकता हे, पर शैली से यह भगवानदास निरञ्जनी ही जान पडता है।[2]

६—भर्तृहरि वैराग्य शतक, वैराग्य वृन्द, राज० रि० भाग ४, पृष्ठ ७८-७९। यह वैराग्य वृंद नाम से भर्तृहरि के वैराग्यशतक का अनुवाद हे।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९२३।४८ बी, १९४४।२५१ (२) मिलाइए, ऊपर उद्धृत अमृतधारा का दूसरा दोहा।

मूल भर्तहरि शत यहै, ताको धरि मन आश
ता परिभाषा नाम यह, वैराग्य वृंद परकास

७—गीता वार्तिक, १६२६।३५। गीता का यह गद्यानुवाद स० १७५६ मे प्रस्तुत किया गया। रिपोर्ट मे इसे भगवानदास की रचना कहा गया है। मेरा अनुमान है कि यह इन्ही भगवानदास निरञ्जनी की रचना है। इन्होने गीतामाहात्म्य लिखा ही है, उस का अनुवाद भी यह कर सकते है। इसका रचनाकाल भी इस निष्कर्ष के अनुकूल है। भगवानदास निरञ्जनी निर्गुनिए थे, फिर भी जन साधारण के लिए इन्होने सगुणोपासना के सस्कृत ग्रन्थो का भाषानुवाद किया। इससे इनकी साम्प्रदायिक अकट्टरता और उदारता प्रकट होती है। इनका रचनाकाल स० १७२८-५६ है। अनुवादो मे इन्होने प्राय दोहा चौपाई का प्रयोग किया है। यह वारल विट्टा क्षेत्रवास के रहने वाले थे।

६०४।५२०

(८) भगवान हित रामराय, इनके पद रागसागरोद्भव मे हैं।

सर्वेक्षण

श्री रामराय जी अकबर के समकालीन थे। यह माध्व गौडेश्वर सम्प्रदाय के आचार्य थे। भक्तमाल मे (छप्पय १६७) मे इनका उल्लेख है। भारतेन्दु ने भी उत्तरार्द्धभक्तमाल (छप्पय १७५) मे इनका नाम लिया है। श्री रामराय के शिष्य महाराजा भगवानदास थे, जो सम्भवत जयपुर के नरेश थे। इन भगवानदास ने मानसी गङ्गा का पक्का घाट और हरदेव जी का मन्दिर गोवर्द्धन मे बनवाया था, ऐसा खोज रिपोर्ट[1] का अभिमत है। परन्तु भक्तमाल की प्रियादास-कृत टीका के अनुसार हरदेव का मन्दिर भगवानदास मथुरा निवासी ने बनवाया था। बहुत से लेखको और विद्वानो ने इन्हे भगवान हित रामराय मानकर श्री रामराय को हितानुयायी बताया है। हितु को हित कर देने के कारण यह भ्रम हुआ है। यह अकबरकालीन हैं, अत इनका समय स० १६५० के आस-पास होना चाहिए। यही समय इनके शिष्य इन भगवानदास का भी है, जो अपनी छाप भगवान हितु रामराय रखते थे। खोज मे इनके निम्नलिखित ग्रन्थ प्राप्त हुए हैं—

(१) प्रेम पदारथ, १६४१।१६७। इस ग्रन्थ के इस छन्द से कवि के नाम का रहस्य भेद होता है।

जाको भावे यह कथा, सोई पुरुष पुरान
रामराय के हेत जानि के, कहे दास भगवान

(२) रुक्मिणी मगल, १६४४।२५२ क। इस ग्रन्थ मे भी ऐसी दो पक्तियाँ हैं।

---

(१) खोज रिपोर्ट १६३८, पृष्ठ ५

ते धन्य सब बिधि रूप कमनी मगल तनमै गावहीं
श्री रामराय गिरिधरन भज भगवान प्रभु मन भावहीं

(३) प्रह्लाद चरित्र—१९४४।२५२ ख। इसमे भी ऐसी दो पक्तियाँ है।

भक्तवछल गुन रूप निधाना
रामराइ हित कहे भगवाना

भक्तमाल (छप्पय ११७) मे भक्तो का समादर करने वाले भक्त राजाओ की नामावली मे इन भगवानदास का भी नाम है। इन भगवानदास के पद रागकल्पद्रुम द्वितीय भाग मे है।

६०५।५२५

(६) भगवानदास मथुरा निवासी, स० १५९० मे उ०। इनके पद रागसागरोद्भव मे है।

सर्वेक्षण

मथुरा निवासी इन भगवानदास का विवरण भक्तमाल मे है—

भजन भाव आरूढ गूढ गुन वलित ललित जस
श्रोता श्री भागौत रहसि ज्ञाता अक्षर रस
मथुरापुरी निवास आस पद सतनि इक चित
श्रीजुत खोजी स्याम धाम सुखकर अनुचर हित
अति गभीर सुधीर मति, हुलसत मन जाके दरस
भगवानदास श्री सहित नित, सुहृद सील सज्जन सरस १८८

प्रियादास के अनुसार इन्ही भगवानदास ने गोवर्द्धन मे हरदेव जी का मदिर बनवाया—

जानिबे को पन पृथ्वीपति मन आई
यो दुहाई लै दिवाई माला तिलक न धारियै
मानि आनि प्रान लोभ केतिकनि त्याग दिए
छिए, नहीं जात जानि बेगि मारि डारियै
भगवानदास उर भक्ति सुख रास भर्यो
कर्यो लै सुदेस वेस, रीति लागि प्यारियै
रीझ्यो नृप देखि रीझि, मथुरा निवास पायो
मंदिर करायो हरिदेव सो निहारियै ६२१

रूपकला जी के अनुसार बादशाह ने भगवानदास जी की निष्ठा देख इन्हे मथुरा का शासक बना दिया था और भगवानदास जी का बनवाया हुआ श्री हरिदेव जी का मदिर गोवर्द्धन के समीप अब भी वर्तमान है।

भगवानदास जी, श्री खोजी जी एव श्याम जी के धाम के अनुचर थे। इन दोनो महात्माओ का उल्लेख भक्तमाल छप्पय ६७ मे १७ सन्त विटपो मे हुआ है।

सरोज मे उदाहरण देते समय इन्हे भगवानदास व्रजवासी कहा गया है। इनका एक पद उद्धत किया गया है, इस पद से यह वल्लभ-सम्प्रदाय के वैष्णव ज्ञात होते हैं। इस पद मे वल्लभ, वल्लभ सुत, विट्ठलनाथ और विट्ठलनाथ के सात पुत्रो मे से गोकुलनाथ को छोड शेष छह का उल्लेख हुआ है।

> श्री वल्लभ सुत परम कृपाल
> तैसेइ श्री गिरिधर श्री गोविंद बालकृष्ण जू नयन विसाल
> श्री वल्लभ रघुपति श्री जदुपति मोहन मूरति श्री घनश्याम
> जन भगवान जाय वलिहारी यह सुनि जपौं तिहारो नाम

भक्तमाल मे भगवत गुणानुवाद करने वाले एक जनभगवान का उल्लेख १४६वें छप्पय मे २१ भक्तो के साथ हुआ है। यही जनभगवान सम्भवत वल्लभ-सम्प्रदाय के जनभगवान हैं, जो मथुरा निवासी भगवानदास से सम्भवत भिन्न है, क्योकि मथुरा वाले भगवानदास तो खोजी एव श्यामदास के अनुयायी है। सरोजकार ने वर्णन किसी का किया है और उदाहरण किसी का दिया है।

खोज मे भाषामृत नामक श्रीमद्भगवद्गीता का ६१८ पन्ने का एक विशाल अनुवाद मिला है।[1] यह रामानुजाचार्य के भाष्य के आधार पर रचा गया है। ग्रन्थ का प्रतिलिपि काल स० १७५६ है। ग्रन्थ के प्रारम्भ और परिसमाप्ति मे लेखक की ओर से जो कथन है उसमे भगवद्दासेन शब्द आया है, जिससे अनुवादक का नाम भगवानदास प्रतीत होता है। लेखक की पुष्पिका मे प्रतिलिपिकर्त्ता की यह पुष्पिका अधिक महत्व की है।

"सवत् १७५६ मार्गशीर्ष मास शुक्ल पक्षे रविवासरे आसोपा नाम सहर के विषे ए ग्रथ समाप्त किया है। श्री स्वामी कूबा जी के पोता शिष्य। श्री स्वामी दामोददास जी के शिष्य। श्री पतिवादी भयकराचार्य के विद्यारथी नाम भगवानदास वैष्णव तिन ए भाषा ग्रथ गीता भाष्य का अर्थ व्रज बोली माहि प्रकट कियो है।"

हो सकता है यह अनुवाद प्रसङ्ग प्राप्त भगवानदास का ही हो। इस सम्वन्ध मे कुछ निश्चयपूर्वक नही कहा जा सकता।

६०६।५०५

(१०) भोज कवि प्राचीन १, स० १८७२ मे उ०।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही। ६०७ सत्यक भोज इनसे भी लगभग १०० वर्ष पुराने है, अत इन्हे भोज प्राचीन कहना ठीक नही।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९००।६६

६०७।५०६

(११) भोज कवि (२), मिश्र, स० १७८१ मे उ०। यह महाराज राव बुद्ध हाडा बूदी वाले के यहाँ थे और 'मिश्र शृङ्गार' नामक ग्रन्थ इन्होंने बहुत सुन्दर बनाया है।

सर्वेक्षण

भोज मिश्र के आश्रयदाता राव बुद्ध सिंह ने स० १७८४ मे 'स्नेह तरग' की रचना की थी[1], अत सरोज मे दिया स० १७८१ इनका रचनाकाल ही है। इस कवि के सम्बन्ध मे अभी तक कोई अन्य सूचना सुलभ नही हुई है।

६०८।५०७

(१२) भोज कवि (३), बिहारीलाल बन्दीजन चरखारी वाले, स० १९०१ मे उ०। यह कवि महाराज रतन सिंह बुन्देला चरखारी वाले के यहाँ थे। इनकी कविता महा सुन्दर है। इन्होने 'भोज भूषण' नामक ग्रन्थ बहुत अद्‌भुत रचा है। यह शरफो नामक वेश्या पर बहुत स्नेह रखते थे, अत उसकी तारीफ मे बहुत कवित्त बनाए है। 'चाह के है चाकर' यह कवित्त बहुत सुन्दर है। इनका बनाया हुआ 'रस विलास' नामक एक और ग्रन्थ बहुत सुन्दर है।

सर्वेक्षण

चरखारी वाले भोज के निम्नलिखित तीन ग्रन्थ खोज मे मिले हैं—

१ रसिक विलास, १९०३।५९। इसी ग्रन्थ का उल्लेख सरोज मे हुआ है। यह रस ग्रन्थ है।

२ उपवन विनोद, १९०६।१५ वी। यह ग्रन्थ चरखारी नरेश नृप विक्रम के लिए लिखा गया था।

सु नजर नित सेवत उपर अति हिय सुजस उमाह
सुकवि जनन को कलपतरु नृप विक्रम जग माह

नृप विक्रम का शासनकाल स० १८३९ से लेकर १८८६ तक है और इस ग्रन्थ का रचनाकाल स० १८८४ की कार्तिक पूर्णिमा है।

सवत श्रुति(४) वसु(८) वसु(८) ससि(१) हिमत
कातिक सुदि पूनो ससि लसत
यह ग्रन्थ ति दिन रचि सुकवि भोज
उर धरि करि हरि पद सरोज

ग्रन्थान्त मे कवि ने इसका विषयोल्लेख इन शब्दो मे किया है—

---

(१) खोज रिपोर्ट १९३८।१९

वृद्ध आयुरवेद भेद सभेद भुम्मि विधान
हेत स्वाद सुगध दोष अदोष औषद जान
लोक की वहुधा मुनिंदन की कही पहचान
सोध वाग विधान या विधि भोजराज वखान १३५

यह ग्रन्थ सारङ्गधर के सस्कृत ग्रन्थ के आधार पर लिखा गया है—

सारगधर कृत ग्रन्थ के कही सु कही प्रवीन
होवो अनहोवो सकल ईश्वर के आधीन १३६

३ भोजभूषण १९०५।६५, १९०६।१५ ए। इस ग्रन्थ का भी उल्लेख सरोज मे हुआ है। यह अलङ्कार ग्रन्थ है। पुष्पिका मे आश्रयदाता का नाम आया है—

"इति श्रीमन्महाराजाधिराज श्री महाराजा श्री राजा छत्रसाल जू वशावतस श्रीमन्महाराजाधिराज श्री महाराजा श्री राजा रतनसिंघ वहादुर जू देव भोजराज सुकवि विरचते भोज भूपन नाम काव्ये पड्विधलकार निरुपने नाम पष्टमो प्रकाश।"

इस ग्रन्थ मे कवि ने अपने गुरु रामानुज की वदना की है—

श्रीमत श्री रामानुजहि वदत हौं कह भोज
जिह प्रसाद ते वसत हे वानी वदन सरोज

सम्भवत यही रामानुज चरखारी वाले खुमान के भी गुरु थे, जिसका उल्लेख उन्होने लक्ष्मण-शतक मे रामाचार्य नाम से किया है।[1]

रतन सिंह विक्रमादित्य के ज्येष्ठ पुत्र रणजीत सिंह के पुत्र थे और रणजीत सिंह का समय से पूर्व मृत्यु हो जाने के कारण विक्रमादित्य के पश्चात् गद्दी पर वैठे थे। इनका शासनकाल स० १८८६-१९१७ है, अत सरोज मे दिया स० १९०१ ठीक है और कवि का रचनाकाल है।

६०९।५१८

(१३) भौन कवि प्राचीन (२), बुन्देलखडी, स० १७६० मे उ०। इनके शृङ्गार के सुन्दर कवित्त है।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्वन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही।

६१०।५१३

(१४) भौन कवि १, नरहरि वशी वदीजन, वैंती जिले रायवरेली वाले, स० १८८९ मे

(१) देखिए, यही ग्रन्थ, कवि सख्या १३५

उ० । यह महाकवि शृङ्गार-रस के वर्णन मे बडे प्रवीण थे। इनका वनाया हुआ अलङ्कार का 'शृङ्गार रत्नाकर' नामक ग्रन्थ बहुत ही सुन्दर है। इनके पुत्र दयाल कवि भी कविता मे निपुण है।

सर्वेक्षण

सरोज मे 'शृङ्गार रत्नाकर' को अलङ्कार ग्रन्थ कहा गया है। किन्तु यह ठीक नही प्रतीत होता। नाम से तो यह रस ग्रन्थ जान पडता है। भौन कवि का एक ग्रन्थ रसरत्नाकर[1] खोज मे मिला है। सम्भवत यही सरोज उल्लिखित शृङ्गार रत्नाकर ग्रन्थ है। यह नायक-नायिका भेद का ग्रन्थ हैं। इसमे कुल ४३० छन्द हैं। ग्रन्थ अत्यन्त प्रौढ है। इस ग्रन्थ की पुष्पिका से ज्ञात होता है कि यह भौन कवि महापात्र खुशालचन्द के पुत्र थे और इन्होंने इस ग्रन्थ की रचना किसी महाराजकुँवर रामबक्स सिंह के लिए की थी।

"इति श्री महापात्र खुशालचद तदात्मज श्री भौन कवि कृत श्री महाराजकुमार श्री ठाकुर राम वक्स हेत कृते रसरत्नाकरोऽय ग्रथ समाप्तम्।"

ग्रन्थ मे रचनाकाल नही दिया गया है। प्राचीनतम प्रति स० १८६१ चैत्र वदी १२ की लिखी हुई है।[2] सरोज मे दिया हुआ स० १८८१ कवि का रचनाकाल ही हो सकता है, जन्मकाल कदापि नही हो सकता, जैसा कि ग्रियर्सन (६११) मे स्वीकृत है।

स० १८५१ मे रचित 'शक्ति मजरी' इनकी रचना नही है, जेसा कि खोज रिपोर्ट मे स्वीकृत है।[3] यह भावन की कृति है। विनोद मे भी (६८७) इसे भौन की रचना मान लिया गया है तथा इसी के अनुकूल इनका जन्मकाल स० १८२५ अनुमित है।

६११।५१२

(१५) भावन कवि, भवानी प्रसाद पाठक, मौरॉवाँ, जिले उन्नाव के, स० १८६१ मे उ०। यह महाराज बडे नामी कवि हो गए है। इनका वनाया हुआ काव्यशिरोमणि नामक ग्रन्थ वहुत सुन्दर है। इस ग्रन्थ मे पिङ्गल, अलङ्कार नायक-नायिका, दूती-दूत, नव रस, षट्ऋतु इत्यादि सव काव्य के अङ्ग विस्तारपूर्वक वर्णन किए हैं। इस ग्रन्थ का दूसरा नाम काव्यकल्पद्रुम भी है।

सर्वेक्षण

भावन जी का वास्तविक नाम भवानीप्रसाद था। यह मयूरध्वज नगर, मौरावॉ जिला उन्नाव के निवासी थे। यह छितुपुरी पाठक ब्राह्मण थे। इनके छोटे भाई का नाम फणीन्द्र दत्त, पिता का नाम गङ्गाप्रसाद, पितामह का शीतल शर्मा और प्रपितामह का भाव दत्त था।[4] भावन के लिखे तीन ग्रन्थ खोज मे मिले हैं—

---

(१) खोज रिपोर्ट १६१२।२२, १६२३।५२ ए बी, १६४७।२७२ (२) खोज रिपोर्ट १६४७।७२ (३) खोज रिपोर्ट १६२३।५२ सी (४) खोच रिपोर्ट १६४७।२६० ग

(१) कवित्त १९४७।२६० क

(२) वरवै, १९४७।२६० ख। इसमे विविध जाति की नायिकाओ का वर्णन है।

(३) शक्ति-चिंतामणि, १९०६।२८, १९२३।५२ सी, १९२६।५७, १९४७।२६० ग घ।

शक्ति-चिंतामणि का रचनाकाल वैशाख सुदी ५, गुरुवार, स० १८५१ है—

१ ५ १५
शशि शर धृत सवत प्रगट, मधु रितु, माधव मास
शुक्ल पक्ष गुरु पचमी कीन्हों ग्रन्थ प्रकाश ३८

१९०६, १९२३, १९२६ वाली रिपोर्टो मे इस ग्रन्थ को भौन कवि का माना गया है। इन प्रतियो से कवि के सम्बन्ध मे कोई भी उद्धरण रिपोर्टो मे नही दिए गए है। १९४७ वाली रिपोर्ट मे इस ग्रन्थ से कवि परिचय सम्बन्धी ये छन्द उद्धृत है—

गगा जू ते उतर दिसि जोजन तीनि प्रमान
नाम मयूरध्वज नगर जाहिर सकल जहान २५

भावदत्त छितूपुरी, पाठक तहा प्रधान
आठ पुत्र तिनके भए, विद्या बुद्धि निधान ३२

तिनमें शीतल शर्म यक, ज्योतिर्विद बुधिवत
चारि पुत्र तिनके भए, ते चारयौ मतिवत ३३

तिन चहून में जानिए, जेठे गग प्रसाद
विद्या बुद्धि विवेक निधि, वैष्णव भक्त अविवाद ३४

तिनके द्वै सुत भे प्रगट, प्रथम भवानीदत्त
पुनि फर्णीद्र दत्तहि गनौ, निपट अग्य उनमत्त ३५

इनके गुरु का नाम सम्भवत दयाल था।

यदपि कुटिल वचक निपटरचक भाग न भाल
तदपि पढायो करि दया, श्री गुरु देव दयाल ३६

शक्ति-चिंतामणि नायिका भेद और नवरस का ग्रन्थ है।

भावन जी का प्रामाणिक रचनाकाल स० १८५१ है। स० १८९१ तक उनका परम वृद्ध रूप मे जीवित रहना अशक्य नही।

६१२।५०२

(१६) भीषम कवि, स० १६८१ मे उ०। हजारे मे इनके कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

सरोज मे दो भीपम हैं, एक यह ६१२ सख्यावाले, दूसरे सख्या ६२४ वाले। पहले का रचनाकाल स० १६८१ और दूसरे का स० १७०८ दिया गया है। दोनो सवतो मे केवल २७ वर्ष का अन्तर है, जो वहुत नही है। दोनो का निर्दिष्ट उदाहरण एक ही है। दोनो कवियो का विवरण कि इनकी कविता हजारे मे है, एक ही है। अत ये दोनो भीपम निश्चित रूप से एक ही हैं।

सरोज मे इन भीपम का दानलीला विपयक एक श्रृङ्गारी सवैया उद्धृत है, जिससे इनका रीतिकालीन कवि होना स्पष्ट है। इनकी रचना हजारे मे थी, अत स० १७५० के पूर्व इनका अस्तित्व असन्दिग्ध रूप से सिद्ध है। इनका रचनाकाल चाहे स० १६८१ हो चाहे १७०८ और चाहे दोनो।[1]

नखशिख और नखशिख-वर्णन[2] नाम के दो ग्रन्थ खोज मे मिले हैं, जिनके रचयिता भीपम है। सम्भवत ये भीपम सरोज के ही भीपम, हैं। नखशिख मे कुल ५१ कवित्त हैं। नखशिख-वर्णन के भीपम अतर्वेदवासी कहे गए हैं और इन्हे स० १६२४-५१ के वीच वर्तमान कहा गया है।

कुछ अन्य भीपम ये हैं—

१ भीपम, भागवत के अनुवादक[3]। यह निर्गुनियाँ हैं। इनकी गुरु परपरा[4] है—कवीर, नीर, जत्रलोक, पीतावरदास, रामदास दयानन्द, हरिदास, स्यामदास, भीपम। विनोद मे (३५६) इनका रचनाकाल स० १७१० माना गया है।

२ भीपम, पुष्पावती के राजा गोविन्दचन्द के आश्रित और स० १८०० के लगभग वर्तमान। इन्होने माधवविलास या माधवानल कामकदला[5] लिखा है।

३ भीपम, काशी नरेश महाराज वलवत सिंह के आश्रित और भागवत दशमस्कध पूर्वार्द्ध का वालमुकुन्द लीला नाम से अनुवाद करने वाले।[6]

४ भीपम, कोडा जहानावाद, जिला फतेहपुर के रहने वाले, वादा के प्रसिद्ध अनूपगिरि गोसाई उपनाम हिम्मत वहादुर के आश्रित।[7]

६१३।५२१

(१७) भीपमदास। रागसागरोद्भव मे इनके पद हैं।

सर्वेक्षण

भीपमदास का एक पद सरोज में उद्धृत है, जिससे इनका वल्लभ-सम्प्रदाय का वैष्णव होना ज्ञात होता है। इस पद मे महाप्रभु वल्लभाचार्य के पुत्र गोसाई विट्ठलनाथ की स्तुति है।

---

(१) खोज रिपोर्ट १६२६।६२ (२) खोज रिपोर्ट १६४७।२६३ (३) खोज रिपोर्ट १६१७।२५ ए वी, १६२६।४६ ए वी सी डी ई एफ (४) खोज रिपोर्ट १६३८।१२ वी, पृष्ठ ११० (५) खोज रिपोर्ट १६४४।२६१ (६) खोज रिपोर्ट १६०३।१२ (७) मातादीन मिश्र कृत कवित्त रत्नाकर, भाग २, कवि सख्या ७

यहि कलि परम सुभग जन धनि श्री विट्ठलनाथ उपासी
जो प्रगटे व्रजपति विठलेश्वर तो सेवक व्रजवासी।

विट्ठलनाथ का निधन स० १६४२ मे हुआ था, अत भीषमदास का भी रचनाकाल स० १६४० के आस-पास जान पडता है। २५२ वैष्णवो की वार्ता मे गुजरात के राजा भीम का वर्णन १८३वी वार्ता मे है। इन्हे अनेक पदो का कर्ता कहा गया है।

"सो इनके श्री गुसाई जी के तथा श्री गोकुल के अनेक पद किये हैं।"

१७० वी वार्ता भीषमदास की है, जो पूरब के रहने वाले क्षत्रिय थे, गोकुल आकर गोसाईंजी के शिष्य हुए थे और सपरिवार गोकुल ही मे बस गए, घर पुन न लौटे। इनके कवि होने का उल्लेख वार्ता मे नही हैं हो सकता है यह भी पद रचते रहे हो और अन्तिम 'छन्द से युक्त पद इन्ही का हो।

सम्भवत यही प्रसङ्ग प्राप्त भीषमदास हैं। इन भीषम का नामोल्लेख भक्तमाल छप्पय १०२ मे हरि सुयश का प्रचुर प्रचार करने वाले १६ भक्तो के अन्तर्गत हुआ है।

खोज मे एक निर्गुनिए भीषमदास मिले हैं, जिनका रचनाकाल स० १८३०-९६ है। इनके १४ ग्रन्थो का विवरण लिया गया है। इनका वास्तविक नाम भीषमदास उपनाम अनन्तदास था। यह पहले अवध के नवाब शुजाउद्दौला के यहाँ फौज मे सूबेदार थे पर किसी साधु की सङ्गति मे आकर साधु हो गए थे।[1]

६१४।५२२

(१८) भजन कवि, स० १८३१ मे उ०। इनकी कविता महा ललित है।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही। इनके केवल फुटकर छन्द मिलते हैं। ग्रियर्सन मे इन भजन (४६८) के अतिरिक्त एक और भजन मैथिल (८८१) का उल्लेख है।

६१५।५१६

(१९) भूमिदेव कवि, स० १९११ मे उ०।

सर्वेक्षण

सरोज मे सम्मिलित किए जाने योग्य अवस्था प्राप्त करने के लिए सरोज दत्त स० १९११ को रचनाकाल मानना होगा, जैसा कि विनोद (२०४५) मे स्वीकृत है, इसे जन्मकाल नही माना

(१) खोज रिपोर्ट १९३५।१४

जा सकता, जैसा कि ग्रियर्सन (६८८) मे स्वीकार किया गया है। इस कवि के भी सम्बन्ध मे कोई सामग्री सुलभ नही।

६१६।५१७

(२०) भवानीदास कवि, स० १६०२ मे उ०।

सर्वेक्षण

जैसा कि विनोद (१६६५) मे स्वीकृत है, सरोज दत्त स० १६०२ कवि का रचनाकाल है, न कि जन्मकाल, जैसा कि ग्रियसन (६८३) मे माना गया है। खोज मे इनका सूर्यमाहात्म्य[1] नामक ग्रन्थ मिला है। पद्पुराण के सम्वन्वित अश का अनुवाद हैं। इसका प्रतिलिपिकाल स० १६२० है। यह प्रतिलिपि काल स्पष्ट सूचित करता है कि सरोज-दत्त सवत रचनाकाल है।

६१७।५०८

(२१) भानदास कवि, वदीजन, चरखारी वाले, स० १८५५ मे उ०। राजा खुमान सिंह बुंदेला राजा चरखारी के पास थे और इन्होंने 'रूप विलास' नामक पिंगल वनाया है।

सर्वेक्षण

चरखारी नरेश खुमान सिंह प्रसिद्ध विक्रम साहि के पिता थे। इनका देहान्त स० १८३६ मे हुआ था, अत सरोज दत्त स० १८५५ स्पष्ट रूप से इनका रचनाकाल ही है। इनका जन्म स० १८०० के आस-पास हुआ होगा। ग्रियर्सन (५०६) मे इनका उपस्थितिकाल स० १८७२ तदनुसार विनोद (१२१०) मे इनका जन्मकाल स० १८४५ और रचनाकाल स० १८७२ दिया गया है। ग्रियर्सन और विनोद के ये सवत् ठीक नही हैं।

६१८।५०६

(२२) भूधर कवि काशीवासी, स० १७०० मे उ०। इनके कवित्त हजारे मे हैं।

सर्वेक्षण

काशीवासी किसी भूधर का कोई शोघ अभी तक नही मिल है। अन्य दो भूधर अवश्य मिले है।

(१) भूधर मिश्र, यह शाकद्वीपी मिश्र भार्गवराम के पुत्र थे। स० १७३०, माघ वदी ६ को दक्षिणगढ नादेरी मे 'रागमजरी' नामक ग्रन्थ वनाना प्रारम्भ किया था। ग्रन्थ के अन्त मे स० १७४० का निर्देश है और लिखा है कि आजमशाह के प्रयाण के समय कवि ने सैन्य के साथ दन्तिन ग्राम देखा। कवि ने अपना निवास-स्थान सूवा विहार, गढ मूगेर लिखा।[2]

---

(१) खोज रिपोर्ट १६२०।१६ (२) राज० रिपोर्ट भाग ३, पृष्ठ १५३, ६६, ६७

(२) भूधरदास जैन, यह आगरे के रहने वाले खण्डेलवाल बनिए थे। इनके बनाए तीन ग्रन्थ हैं—(१) पार्श्व पुराण, (२) जैन शतक, १०७ कवित्त, सवैये, दोहे आदि, (३) पद सग्रह कुल ८० पद है। यह अट्ठारहवी शती के अत्यन्त श्रेष्ठ कवियो मे से एक है।[1]

६१६।५१०

(२३) भूसुर कवि, स० १६११ मे उ०।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई सामग्री सुलभ नही। ग्रियर्सन मे (६८६) सरोज-दत्त स० १६११ जन्मकाल और विनोद मे (२०४६) रचनाकाल माना गया है। यह रचनाकाल ही है। कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही। सम्भवत इस कवि का वास्तविक नाम कुछ और ही है और अपनी जाति के आधार पर उसने अपना उपनाम भूसुर रख लिया है।

६२०।५११

(२४) भोलासिह कवि, पन्ना बुन्देलखण्डी, स० १८६८ मे उ०।

सर्वेक्षण

भोलासिह के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही।

६२१।४६८

(२५) भूपति कवि, राजा गुरुदत्त सिंह वधलगोती, अमेठी, १८०३ मे उ०। यह महाराज महाकवि, कवि-कोविदो के कल्पवृक्ष थे। कवीन्द्र इत्यादि इनकी सभा मे थे।

सर्वेक्षण

गुरुदत्त सिह अमेठी जिला सुलतानपुर के राजा थे। इनका रचनाकाल इनके प्राप्त ग्रन्थो के आधार पर स० १७८८–६६ है। प्रथम सरकरण मे १८०३ है और सप्तम मे १६०३। खोज मे इनके तीन ग्रन्थ मिले हैं—

(१) भूपति सतसई, १६२३।६० ए बी, या सतसैया १६२६।६६। इस ग्रन्थ की रचना स० १७६१, कार्तिक सुदी ३, बुधवार को हुई।

सत्रह शत एकानवे कातिक सुदि बुधवार
ललित तृतीया में भयो सतसैया अवतार २

(२) रस दीपक, १६०३।४२, १६०४।२८, १६२३।६० सी। यह नायिका-भेद का ग्रन्थ है।

---

(१) विनोद ६५

इसकी रचना स० १७६६, कातिक सुदी ३, बुधवार को हुई—

सत्रह सतक निन्यानवे, कार्तिक सुदि बुधवार
ललित तृतीया में भयो, रस दीपक अवतार

ग्रन्थ का नाम रसदीप भी है।

३ रसरत्न, १६२३।६० डी, १६४७।२६३। यह रस और अलङ्कार दोनो का ग्रन्थ है। इसकी रचना स० १७८८, वैशाख सुदी ६, बुधवार को हुई।

सत्रह सतक अठासि सम, माधव सुदि बुधवार
तिथि नौमी रस रतन को, भयो रुचिर अवतार ६

रसरत्न और रसदीपक ग्रन्थो मे कवि ने अपने निवास-स्थान अमेठी का वर्णन किया है—

आठौ दिसा चुनीन सम करि राखी अवरुध्य
नगर अमेठी रायपुर सोभित ज्यो मनि मध्य
पुन्य फलनि सो अति फली नगरी मोद प्रकास
भूपति तह गुरुदत्त धव नित प्रति करत निवास

भूपति निस्सन्देह कवि-कोविदो के कल्पवृक्ष थे। इनके दरबार मे उदयनाथ कवीन्द्र और कवीन्द्र के पुत्र दूलह थे। लखनऊ के नवाब सआदत खाँ से इनका युद्ध हुआ था, जिसका वर्णन कवीन्द्र ने इस प्रकार किया है—

समर अमेठी के सरोष गुरदत्त सिंह
सादत की सेना समसेरन सो भानी हैं[1]

'पक्षी विलास' गुरुदत्त शुक्ल मकरन्दपुर वाले की रचना है। 'रस रत्नाकर' रस-रत्न का ही विस्तृत नाम है। 'भागवत भाषा' गुरुदत्त कायस्थ की रचना है। इसी प्रकार कण्ठाभरण या कण्ठा-भूषण दूलह कृत कविकुल कण्ठाभरण[2] है। ये सभी ग्रन्थ इन राजा गुरदत्त के नाम पर विभिन्न ग्रन्थो मे चढे हुए है।[3]

६२२।४६६

२६ भृङ्ग कवि, स० १७०८ मे उ०। इनके कवित्त हजारे मे हैं।

सर्वेक्षण

भृङ्ग कवि के नाम पर सरोज मे जो सवैया उद्धृत है, वह सम्भवत हजारा से अवतरित

---

(१) हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ २८१ (२) देखिए, यही ग्रन्थ कवि सख्या ३५६
(३) अ—पक्षी विलास—सभा का अप्रकाशित सक्षिप्त विवरण, ब—कण्ठाभूषण, रस रत्नाकर, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ० २८६, स—कण्ठाभरण, भागवत भाषा—विनोद ७१४

है । पूर्ण अभिन्नता न होने से सरोजकार ने इस सवैये मे आए 'भृङ्ग' शब्द को कवि छाप समझ लिया है और एक कवि की वृद्धि कर दी है । यह सवैया गो० तुलसीदास कृत कवितावली, उत्तरकाण्ड का १३३वाँ छन्द है । भृङ्ग, उद्धव के लिए प्रयुक्त हुआ है ।

"व्रजराज कुमार विना सुन भृङ्ग अभग भयो जिय को गरजी"

६२३।५००

(२७) भरमी कवि, स० १७०८ मे उ० । ऐज़न । (इनके कवित्त हजारे मे हैं ।)

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही । सरोज दत्त स० १७०८ ग्रियर्सन मे (२७३) जन्मकाल और विनोद मे (३५५) रचनाकाल के रूप मे स्वीकृत है । जो हो, इनकी रचना हजारे मे थी, अत स० १७५० के पूर्व इनका अस्तित्व स्वय सिद्ध है । इनके फुटकर छद मिलते है, जो सुन्दर हैं ।

६२४।५०२

(२८) भीषम कवि, स० १७०८ मे उ० । ऐज़न (इनके कवित हजारे मे हैं ।)

सर्वेक्षण

इस कवि का विवरण ६१२ सख्या पर एक वार पहले आ चुका हैं ।

६२५।५२३

२९ भूपनारायण वदीजन, काकूपुर जिले कानपुर, स० १८५९ मे उ० । शिवराजपुर के चन्देल क्षत्रिय राजो की वशावली वनायी है ।

सर्वेक्षण

इस कवि का विवरण एक वार पहले ४४४ सख्या पर नारायण नाम से सरोज मे आ चुका है, दोनो को काकूपुर का रहने वाला कहा गया है । दोनो के सम्वन्ध मे लिखा गया है कि इन्होंने शिवराजपुर के चन्देले क्षत्रिय राजाओ की वशावली वनाई । दोनो के समय मे थोडा अन्तर है । नारायण का समय स० १८०९ और भूप नारायण का १८५९ दिया गया है । ये सवत् एक ही व्यक्ति के जीवनकाल के विभिन्न समयो की सूचना देते हैं, अत दोनो कवि एक ही हैं । पहला विवरण अधूरे नाम से और दूसरा पूरे नाम से दिया गया है । यह प्रमादत्वरा के कारण हुआ है । ग्रियर्सन मे (४५४, ६४५) और विनोद (१०४३ और ११५२) मे यही गलती दुहरा-तिहरा गई है ।

सरोजकार ने इस कवि का विवरण मातादीन मिश्र के 'कवित्त रत्नाकर' से लिया है।[1] इस ग्रन्थ मे इनका उल्लेख भूप नाम से हुआ है। यह लखनऊ के नवाव शुजाउद्दौला के समकालीन कहे गए है। शुजाउद्दोला का शासनकाल स० १८११-३२ है, अत सरोज मे दिए दोनो सवत् ठीक है और दोनो रचनाकाल ही हैं।

६२६।

(३०) भोलानाथ ब्राह्मण, कन्नौज निवासी इन्होने वैताल पचीसी छन्दो मे रची है।

कोई जो विक्रय करे, वस्तु सुधन के हेत
सदा चकरिया आपनो, तन विक्रय कर देत

सर्वेक्षण

कन्नौज निवासी घोर वैतालपचीसी के रचयिता भोलानाथ ब्राह्मण का विवरण सरोज मे मातादीन मिश्र कृत कवित्त रत्नाकर के आधार पर दिया गया है।[2] इन भोलानाथ से भिन्न दो और भोलानाथ खोज मे मिले हैं—

१ भोलानाथ दीक्षित, इनके पिता प्रजापति दीक्षित थे जो बुन्देलखण्ड के अन्तर्गत वेलाहारी के जागीरदार थे। वेलाहारी छतरपुर के निकट है। इनके दो ग्रन्थ मिले हैं।—

१ माया लीलावती, १९०६।१६ तथा २ विक्रम विलास, १९२३।५७। इसमे वेतालपचीसी की ही कथा है। इसका प्रतिलिपिकाल स० १८९० है। हो सकता है कि यह ग्रन्थ कन्नौजी भोलानाथ का हो। पूर्ण ग्रन्थ देखने पर ही कुछ कहा जा सकता है।

२ भोलानाथ श्रीवास्तव, यह कन्नौज के निकट जहानगज के रहने वाले थे। यह लावनी के अखाडिए शायर थे। जोगी लीला की लावनी मे इनका और प्रसिद्ध फर्रुखावादी लावनीवाज, कवि गणेश का नाम एक साथ आया है।

बदिश गनेश कहे भोलानाथ वखाने
धरि जोगी रूप अनूप चले बरसाने

खोज मे[3] इनके ९ ग्रन्थ मिले हैं—१ शिव पार्वती सवाद, २ जोगी लीला, ३ राधाकृष्ण लीला, ४ वारह मासा विरह, ५ पथरीगढ की लडाई, आल्हा, ६ वारहमासा-कृष्ण जी, ७ शिव-स्तुति, ८ ख्याल सग्रह, ९ वारहमासा लावनी। इनमे से पथरीगढ की लडाई का रचनाकाल स० १९०७ है।

६२७।५२६

(३१) भूधर कवि २, असोथर वाले, स० १८०३ मे उ०। यह भगवन्तराय खीची के यहाँ थे।

---

(१) कवित्त रत्नाकर, भाग १, कवि सख्या २७ (२) वही, भाग १, कवि सख्या १५ (३) खोज रिपोर्ट १९२९।४८

सर्वेक्षण

भूधर का एक कवित्त सरोज मे उद्धृत है जिसमे भगवन्तराय और लखनऊ के नवाब सआदत खाँ के युद्ध का वर्णन है। अत इनका भगवन्तराय के दरबार से सम्बन्धित होना सिद्ध है। मयाशङ्कर याज्ञिक के अनुसार यही भूधर भरतपुर नरेश सूरजमल (शासनकाल स० १८१२-२०) के छोटे भाई जवाहर सिंह (शासनकाल स० १८२०-२५) के दरबार मे थे[1]।

६२८।५५३

(१) मानदास कवि, (२) ब्रजवासी, स० १६८० मे उ०। इनके पद रागसागरोद्भव मे है। इन्होने वाल्मीकीय रामायण, हनुमन्नाटक इत्यादि रामायणो से सार खीचकर रामचरित्र को बहुत ललित भाषा मे वर्णन किया है। यह महाकवि थे।

सर्वेक्षण

सरोज मे मानदास का विवरण भक्तमाल के निम्नलिखित छप्पय के आधार पर दिया गया है—

करुणा वीर सिंगार आदि उज्ज्वल रस गायो
पर उपकारक धीर कवित कवि जन मन भायो
कोसलेस पद कमल अननि दासत ब्रत लीनौ
जानकि जीवन सुजस रहत निसि दिन रग भीनौ
रामायन नाटक की रहसि उक्ति भाषा धरी
गोप्य केलि रघुनाथ की मानदास परगट करी १३०

मानदास जी किसी पुरुषोत्तमदास के शिष्य थे, जिन्होने इन्हे ब्रज मे मक्खनदास से रामायण पढने की आज्ञा दी थी। इनके निम्नाकित ग्रन्थ खोज मे प्राप्त हुए है—

१ कृष्ण विलास, १६०६। इस ग्रन्थ की रचना स० १८१७ मे हुई। इसमे कृष्ण-लीला वर्णित है।

२ राम कूट विस्तार, १६०६। दोहा-चौपाई मे लिखित रामचरित्र सम्बन्धी ग्रन्थ। यह सम्भवत वही ग्रन्थ है जिसका उल्लेख सरोज मे हुआ है। इसकी रचना स० १८६३ मे हुई।

इन ग्रन्थो[2] के मिल जाने से सरोज मे दिया हुआ इनका स० १६८० अशुद्ध सिद्ध हो जाता है। इनका रचनाकाल स० १८१७-६३ है।

बुन्देलवैभव के अनुसार मानदास बुन्देलखण्डी थे। इनके ग्रन्थो के हस्तलेख छतरपुर, पन्ना और अजयगढ मे पाए जाते हैं। इनके एक ग्रन्थ भागवत दशमस्कध की कथा का रचनाकाल और तत्सूचक यह दोहा इसमे दिया गया है।

---

(१) माधुरी, फरवरी १६२७ मे प्रकाशित 'भरतपुर और हिन्दी' शीर्षक लेख।
(२) बुन्देलवैभव, भाग २, पृष्ठ ४५१

सवत अष्टादस जु सत अरु सत्रा की साल
भादो हरि की अष्टमी कथा रची तिहि साल

दोहे के अनुसार ग्रन्थ का रचनाकाल स० १८१७ है। मेरी समझ से यह ऊपर वर्णित 'कृष्ण-विलास' नामक ग्रन्थ ही है। दोनो का रचनाकाल और विषय एक ही हे। १९०६ वाली रिपोर्ट मे ग्रन्थो से कोई उद्धरण नही दिया गया है, अन्यथा कोई निश्चित बात कही जा सकती थी।

६२९।५२७

२ मान कवि, इनके शान्त रस के सुन्दर कवित्त है।

सर्वेक्षण

सरोज मे मान के दो कवित उद्धृत है। दोनो का चतुर्थ चरण एक ही हे—

भई जेरवारी, नहि करिए अवारी अब,
अवध विहारी सुधि लीजिए हमारी हे।

स्पष्ट है कि कवि रामोपासक है। यह कवि या तो रामोपासक व्रजवासी मानदास है अथवा बुन्देलखण्डी मान या खुमान। ग्रियर्सन मे (५१७) चरखारी वाले मान से इनके अभिन्न होने की सम्भावना व्यक्त की गई है। विनोद मे (५८४) इनके नाम पर चरखारी वाले मान या खुमान के 'महाबीर जी का नखशिख और 'हनुमान पचीसी' तथा मानदास व्रजवासी के 'राम कूट विस्तार' और 'हनू नाटक', ये चार ग्रन्थ चढे हुए हें। स्पष्ट हे इस कवि का अलग कोई अस्तित्व नही।

६३०।५२८

३ मान कवि ब्राह्मण ३ वैसवारे के, स० १८१८ मे उ०। इन्होने 'कृष्ण कल्लोल' नामक ग्रन्थ, अर्थात् कृष्ण खण्ड को नाना छन्दो मे लिखा हे। इस ग्रन्थ के आदि मे शालिवाहन से लेकर चम्पतिराय तक की वशावली है। वह अवश्य देखने योग्य है।

सर्वेक्षण

सरोज मे दिया स० १८१८ कृष्णकल्लोल का रचनाकाल हे। स्वय सरोज में रचनाकाल-सूचक यह दोहा दिया गया है—

अष्टादस सै बरस सो बरस अष्टदस साल
सुनि सैनी वर वार को, प्रगट्यो ग्रथ विसाल

इस ग्रन्थ मे चम्पतिराय के पुत्र वैरीसाल या शत्रुसाल या छत्रसाल को आशीर्वाद दिया गया है—

जब लगि ध्रुव सनकादि सब, अरुनादिक दूनौ अनुज
तब लगि नृप वैरीसाल सुख, चिरजीवि चपति तनुज

छत्रसाल की मृत्यु स० १७८८ मे हो गई थी और ग्रन्थ की रचना स० १८१८ मे उनकी मृत्यु के ३० वर्ष बाद हुई। फिर उन्हे आशीर्वाद देने का तुक क्या है ? हो सकता है कि कवि छत्रसाल के किसी पुत्र के दरबार मे रहा हो। यह भी हो सकता है कि ऊपर वाले दोहे मे बैरीलाल 'सुख' के स्थान पर बैरीसाल 'सुत' या 'सुव' पाठ हो।

६३१।५२६

४ मोहन भट्ट १ कवि पद्माकर के पिता, स० १८०३ मे उ०। यह महाराज महाकवि प्रथम राजा हिन्दूपति बुन्देला पन्ना नरेश के यहाँ और पीछे सवाई प्रताप सिंह तथा जगत सिंह के यहाँ रहे। इनकी कविता बहुत सरस है।

सर्वेक्षण

मोहन भट्ट का पूरा नाम मोहनलाल भट्ट है। यह जनार्दन भट्ट के पुत्र और प्रसिद्ध कवि पद्माकर भट्ट के पिता थे। इनका जन्म बादा मे, विनोद (५४५) के अनुसार स० १७४४ मे और पद्माकर के वशज भालेराव भट्ट के अनुसार[1] स० १७४३ मे हुआ था। मोहनलाल जी तैलग ब्राह्मण थे। यह पूरे पण्डित और कवि थे। पहले यह नागपुर के महाराजा रघुनाथ राव, अप्पा साहब के यहाँ रहे, फिर स० १८०४ मे पन्ना नरेश महाराज हिन्दू पति के यहाँ आए। वहाँ उन्हे मन्त्र दिया और दक्षिणा मे ५ गाँव पाया। यहाँ से यह स० १८४० के आस-पास[2] जयपुर नरेश प्रताप सिंह के यहाँ गए थे, जहाँ इन्हे एक हाथी, एक जागीर, सुवर्णपदक तथा कविराज शिरोमणि की पदवी मिली थी।

भालेराव ने इनके एक ग्रन्थ 'शृङ्गार सग्रह' का उल्लेख किया है।[3]

६३२।५३०

५ मोहन कवि २, स० १८७५ मे उ०। यह कवि सवाई जय सिंह ३, महाराजा आमेर के यहाँ थे।

सर्वेक्षण

खोज मे इस समय के एक मोहनदास मिश्र मिले है, जो शिवराम मिश्र के पुत्र थे और चन्द्रपुरी के रहने वाले थे। यहाँ के राजा का भी नाम मोहन महीप था। इनके निम्नलिखित चार ग्रन्थ मिले हैं—

१ कृष्ण चन्द्रिका, १९०६।१९९ ए। इस ग्रन्थ की रचना स० १८३९ मे हुई थी।

> सवत अष्टादक्ष सतक बहुरि उनतालीस
> दक्षिन रवि, बरसा सुरितु, षट गत हय शिव बीस ३७
> नभसि धवल पख ब्रह्म तिथि, वासर हर सिर वास
> कृष्ण चद्रिका ता दिन, कियो प्रकास ८३

(१) माधुरी, माघ स० १९९०, पृष्ठ ८० (२) बुन्देल वैभव, भाग २, पृष्ठ ३९५
(३) माधुरी, माघ स० ७९०, पृष्ठ ८०

२ भागवत, दशम स्कध भाषा, १९०६।१९९ बी ।

३ रामाश्वमेध, १९०६।१९९ सी ।

४ गीत गोविंद की टीका, १९०५।७२ । इस टीका का नाम 'भाव चद्रिका' भी है। इसकी रचना स० १८५१ मे हुई—

इंदु[1] बान[5] वसु[8] भूमि[1] सुचिमास सुक्रत वादि
भावचंद्रिका जा दिन आरंभित सुख सादि

सरोज मे मोहन के जो उदाहरण दिए गए हैं, उनमे से एक मे जयसिंह की प्रशस्ति है ।

मोहन भनत महराज जयसिंह तेरी
तेग रन रंग मे खिलावे खल व्याली को

सरोज मे इन जयसिंह को सवाई जयसिंह ३ कहा गया है । इन सवाई जयसिंह ३ का शासनकाल स० १७५६-१८०० है । इन्ही जयसिंह के मत्री आयामल्ल के यहाँ विहारी सतसई की कवित्त वन्ध टीका के रचयिता कृष्ण कवि थे । यदि इन्ही के यहाँ मोहन कवि थे तो सरोज मे दिया समय स० १८७५ अशुद्ध है । अथवा यह भी सम्भव है कि एक मोहन कवि सवाई जयसिंह ३, के यहाँ स० १७५६-१८०० के आस पास हुए और एक मोहन स० १८७५ के आस पास । १८७५ के कुछ पूर्व तक एक मोहन पद्माकर के पिता भी थे । एक मोहनदास मिश्र का उल्लेख ऊपर अभी-अभी हुआ है ।

६३३।५८३

(६) मोहन कवि ३, स० १७१५ मे उ०। इनके कवित्त हजारे मे हैं ।

सर्वेक्षण

हजारे मे किसी मोहन के कवित्त हैं, अत स० १७५० के पूर्व एक मोहन का अस्तित्व निश्चित रूप से है । स० १७५० के पहले तीन मोहन खोज मे मिले हैं—

१ मोहनलाल मिश्र, यह चरखारी के रहने वाले थे । यह चूडामणि मिश्र के पुत्र एव लक्ष्मीचन्द मिश्र के पिता थे । इन्होंने स० १६१६ मे 'शृङ्गार सागर'[1] नामक ग्रन्थ लिखा था ।

संवत रस[6] ससि[1] रस[6] सु ससि[1], विसद वसंत वहार
माघ सुकुल सनि पंचमी, भयो ग्रंथ अवतार

ग्रन्थ की पुष्पिका से कवि के पिता का नाम ज्ञात होता है—

"इति श्री सर्व गुनगुनालकार सर्व विद्या वितपन्य सर्वशास्त्रकोविद दुजकुल कमल प्रकासकर...पं० मिश्र चूड़ामनि जू तस्यात्मज मोहनलाल सुकवि विरचते सिंगार नवमो तरग"

मोहन लाल मिश्र ने इस ग्रन्थ की रचना अपने पुत्र लक्ष्मीचन्द के लिए की थी ।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९०५।६०

२. मोहनलाल कायस्थ, यह नैमिषारण्य के निकट स्थित कुरसथ गाँव के रहने वाले श्री यादो जी के पुत्र थे। इन्होने स० १६८७ मे 'स्वरोदय पवन विचार'[1] नामक ग्रन्थ लिखा था—

कथित मोहनदास कवि काइथ कुल अहिवान
श्री गगा के कूल ढिग कनवज के अस्थान ३६४
नीमसार के निकट ही कुरसथ गाउ विख्यात
तहाँ हमारो वास निजु श्री यादो मम तात ३६५
सवत सोरह सै रच्यो ऊपर अस्सी सात
विक्रम तें वीतो वरस मारग सुदि तिथि सात

३. मोहन उपनाम सहजसनेही, मथुरा निवासी, इन्होने जहाँगीर के शासनकाल मे स० १६६७ मे अष्टावक्र[2] नामक ग्रन्थ लिखा।

सोलह से सतसठा सु नाहा
सावन पडवा, बुध दिन राहा
× × ×
जहागीर आदिल कर राजू
× × ×
मोहन मथुरा महँ वसै कीनी कथा वनाइ

यह मोहन शिरोमणि के पिता थे। इनके तीन ग्रन्थ और मिले है—१ आनद लहरी, १९४४।३०७ क, २ कल्लोल कलि १९४४।३०७ ख, ३ मोहन हुलास, १९४४।३०७ ग। इन्ही तीनो मोहनो मे से किसी एक की सम्भवत प्रथम की रचना हजारे मे थी।

६३४।५३१

(७) मुकुन्द लाल कवि बनारसी, रघुनाथ कवीश्वर के गुरु, काश्यस्थ स० १८०३ मे उ०। इनका काव्य तो सूर्य के समान भासमान है।

सर्वेक्षण

रघुनाथ कवीश्वर का रचनाकाल स० १७६०-१८१० है, अत इनके गुरु का समय या तो यही या इससे कुछ पूर्व होना चाहिए। सरोज मे दिया स० १८०३ इनका रचनाकाल है। सप्तम सस्करण मे 'काश्यस्थ' का 'के शिष्य' हो गया है।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९००।५ (२) खोज रिपोर्ट १९०३।४

६३५।५३२

(८) मुकुन्द सिह हाडा, महाराजा कोटा, स० १६३५ मे उ० । यह महाराज शाहजहाँ बादशाह के बडे सहायक और कविता मे महा निपुण व कवि कोविदो के चाहक थे ।

सर्वेक्षण

सरोज मे इनके नाम पर यह कविता दिया गया है—

छूटै चद्रबान भले बान औ कुहुक बान
छूटत कमान जिमी आसमान छ्वै रह्यो
छूटै ऊटनालै जमनालै हथनाल छूटै
तेगन को तेज सो तानि जिमि व्वै रह्यो
ऐसे हाथ हाथन चलाइ के मुकुद सिह
अरि के चलाइ पाइ बीर रस च्वै रह्यो
हय चले हाथी चले सग छोडि साथी चले
ऐसी चलाचल मे अचल हाडा ह्वै रह्यो

यह छन्द भूषण के नाम से भी प्रसिद्ध है । यह 'छत्रशालदशक' मे सख्या २ पर सङ्कलित है । दशक मे सङ्कलित छन्द मे कही भी भूषण छाप नही और वहाँ मुकुन्द सिह भी छाप नही है । ऊपर उद्धृत छन्द मे कवि छाप मुकुन्द सिह है । यह स्वय हाडा नरेशो मे से एक नही है, हाडा नरेश के कीर्तिगायक कवि है ।

सरोज मे दिया स० १६३५ ईस्वी-सन् मे उपस्थिति किया है । ऊपर उद्धृत छन्द मे औरङ्गजेब और दारा के उस युद्ध का सङ्केत है, जिसमे दारा की ओर से हाडा नरेश लडे थे और दिवङ्गत हुए थे । यह घटना स० १७१५ के आस पास की है ।

६३६।५८४

(९) मुकुन्द कवि प्राचीन, स० १७०५ मे उ० । इनके कवित्त हजारे मे है ।

सर्वेक्षण

मुकुन्द का समय स० १७०५ से भी पहले है । इन्होने रहीम की प्रशस्ति इस छप्पय मे लिखा है ।

कमठ पीठ पर कोल कोल, पर फन फनिंद फन
फनपति फन पर पुहुमि, पुहुमि पर दिगत दीप गन
सप्त दीप पर दीप एक जबू जग लिखिखय
खानान खान बैरम तनय, तिहि पर तुअ भुज कल्पतरु
जगमगहि खग्य भुज अग्य पर खग्ग अग्य स्वामित वरु

रहीम की मृत्यु स० १६८४ मे हुई पर उनका वैभव विलास स० १६६२ के पूर्व तक ही रहा। अत यह रचना स० १६६२ के पूर्व की होनी चाहिए। ऐसी स्थिति मे कवि का जन्म स० १६३५ के आस पास होना चाहिए।[1] कवि स० १७०५ तक भी जीवित रह सकता है।

खोज मे एक मुकुन्द दास मिले है, जिन्होने शाह सलीम (जहाँगीर) के शासनकाल मे स० १६७२ एव १६९५ मे कोकशास्त्र सबधी दो ग्रथ लिखे थे।[2] एक से आवश्यक उद्धरण दिए जा रहे हैं—

साह सलीम जगत सुलताना
अहि निवास आगर अस्थाना
\+ \+ \+
सोलह सै बहत्तरी सवत् हुम जे यूना दस बीस
सनद पत्र मे देखा एक हजार पचीस

कुछ कहा नही जा सकता, यह कोकशास्त्र वाले मुकुन्ददास सरोज वाले प्राचीन मुकुन्द है अथवा नही।

६३७।५३३

(१०) माखन कवि १ स० १८७० मे उ०। इनकी कविता बहुत ही ललित है।

सर्वेक्षण

स० १८७० के आस-पास उपस्थित माखन सम्भवत' माखन पाठक है। माखन पाठक ने 'वसत मजरी' नामक नायक-नायिक भेद का एक ग्रन्थ रचा था। इस ग्रन्थ मे होली वर्णन के रूप मे ही सभी नायक-नायिकाओ की स्थापना की गई है। लक्षण दोहो मे एव उदाहरण कवित्त-सवैयो मे हैं। यह ग्रन्थ भारत जीवन प्रेस, काशी से सन् १८९४ मे प्रकाशित हो चुका है। इसकी एक प्रति महोवा वासी नारायण न.मक लेखक द्वारा स० १८६० मे लिखी गई थी। वही प्रति किसी प्रकार नकछेदी तिवारी को १८९३ ई० मे प्राप्त हो गई। इसी प्रति के आधार पर उन्होने इस ग्रन्थ को भारत जीवन प्रेस से प्रकाशित करा दिया था। इस ग्रन्थ के निम्नलिखित दोहे से कवि के नाम, ग्राम और जाति का पता चलता है।,

माखन पाठक द्विज बसे, पटी टहनगा गाँव
कृष्ण खेल व वर्णन करो, वसत मजरी नाँव

मूल प्रति स० १८६० की एक महोबी द्वारा लिखी गई है। अत कवि बुन्देलखण्डी हो सकता है और उसका रचना काल स० १८६० के आस-पास होना चाहिए।

---

(१) माधुरी, दिसम्बर १९२७, पृष्ठ ८६७–६८ (२) खोज रिपोर्ट १९०६।१८३ ए बी, १९२६।२२४

विनोद मे सरोज वाले माखन का उल्लेख १९७५ और वसत मजरी वाले माखन पाठक का ११२० सख्या पर है। १८७० को जन्मकाल मानने के कारण विनोद मे इन्हे दो अलग कवि मान लिया गया है। माखन नामक दो और भी पुराने कवियो का पता खोज से मिलता है—

(१) माखन,[1] यह रतनपुर, (विलासपुर, मध्य प्रदेश) के राजा राजसिंह, (शासनकाल स० १७५६-७६) के आश्रित थे। इनके पिता का नाम गोपाल और पितामह का गङ्गाराम था। गोपाल भी सुकवि थे। इनके बनाए हुए विनोदशतक, शृङ्गारशतक, कीर्तिशतक, पुण्यशतक, वीरशतक और कर्मशतक ये छह ग्रन्थ है। माखन के बनाए ग्रन्थो की सूची यह है—

(१) श्री नाग पिंगल, १९४१।१९१, (२) भक्ति चिन्तामणि, (३) रामप्रताप, (४) जैमिनि अश्वमेध, (५) खब तमाशा, (६) सुदामा चरित्र, (७) छन्द विलास—सभवत यह श्री नाग पिंगल का ही अन्य नाम है।

(२) माखनदास, यह रामोपासक वैष्णव थे। इनका ग्रन्थ दोहावली[2] है, जिसका प्रतिलिपि-काल स० १८६१ है। अत कवि १८६१ का पूर्ववर्ती है।

६३८।५३४

(११) माखन लखेरा २ पन्ना वाले, स० १९११ मे उ०। ऐजन। (इनकी कविता बहुत ही ललित है।)

सर्वेक्षण

लखेरा वाले माखन के नाम पर विनोद (२१२१) मे रस चौतीसी[3] नामक ग्रन्थ चढा हुआ है। इनका जन्मकाल ग्रियर्सन (६७०) के आधार पर स० १८९१ माना गया है और तदनुसार रचनाकाल स० १९२० दिया गया है। स्पष्ट है कि सरोज मे दिया स० १९११ कवि का रचनाकाल है—

कुल पहाड, हमीरपुर के रहनेवाले एक और माखनलाल चौबे मिले हैं। इनके लिखे निम्न-लिखित दो ग्रन्थ उपलब्ध हुए है—

१ गणेश जी की कथा, १९०६।६९ ए, १९२९।२२३ बी। यही ग्रन्थ गणेश की पूजा तथा होम विधि नाम से भी मिला है—१९२९।२२३ ए। इस प्रति का लिपिकाल स० १८०० है।

२ सत्य नारायण की कथा, १९०६।६९ बी।

६३९।५४३

(१२) मनसा कवि, इनकी कविता लालित्य और सुन्दर अनुप्रासो मे विदित है।

सर्वेक्षण

ग्रियर्सन (८८५) मे सम्भावना व्यक्त की गई है कि यह मनसाराम से अभिन्न हैं। यह

---

(१) खोज रिपोर्ट १९४१।१९१ (२) खोज रिपोर्ट १९४१।१९२ (३) खोज रिपोर्ट १९०६।६८

सम्भावना ठीक प्रतीत होती है। मनसाराम पूरा नाम है और मनसा अधूरा। कवि आवश्यकतानुसार दोनो छाप रखता है।

६४०।५४४

(१३) मनसाराम कवि, नायिका भेद का इनका ग्रन्थ अद्भुत है।

सर्वेक्षण

खोज मे चार मनसाराम मिले है।

१ मनसाराम भाट, यह बिलग्राम निवासी भाट थे। इनके पिता का नाम हरिवश उपनाम घसीटे था। स० १८४३ मे इनके पुत्र हरप्रसाद ने कुछ रचना की थी, अत यह इस सवत् के पूर्व वर्तमान थे। इनका एक ग्रन्थ वियोगाष्टक[1] मिला है, जो सरस एव सुन्दर है।

२ मनसाराम पाडे, स० १८६४ के लगभग वर्तमान। इन्होने भारत प्रवन्ध[2] नामक ग्रन्थ रचा है। यह महाभारत की सक्षिप्त कथा है। इसकी रचना स० १८६४ में हुई थी—

सवत अठारा सत चौंसठि प्रथम मास
मधु रितु राज वदी दसमी गनाई है।
जीव वार सुखद समाज गृह नखत
सुभ लग्न दिन सानुकूल सुखदाई है।

मङ्गलाचरण वाले छन्द मे ही कवि ने अपना नाम दे दिया है—

श्री गणेश करिवर वदन, एक रदन सुखधाम
ताहि सुमिरि वरनत चरित, पाडे मनसाराम

३ मनसाराम शुक्ल, सुवश शुक्ल के वशज, टेढा जिला उन्नाव के निवासी। इनका एक ग्रन्थ कवित[3] खोज मे मिला है।

४ मनसाराम, यह राजस्थानी कवि है। इनकी छाप मञ्छ है। यह रघुनाथ रूपक[4] के रचयिता हैं।

उपनाम की भिन्नता के कारण राजस्थानी मनसाराम निश्चय ही सरोज के मनसाराम से भिन्न हैं, पर प्रथम तीन मे से कौन से सरोज वाले मनसाराम है, यह कहना सन्देह को आमन्त्रण देना है।

६४१।५६३

१४ मन ब्राह्मण, असोथर, गाजीपुर के निवासी, स० १८६० मे उ०। यह कवि, कवि

(१) खोज रिपोर्ट १९१२।११० (२) खोज रिपोर्ट १९०५।६६ (३) खोज रिपोर्ट १९२३। २७३ (४) खोज रिपोर्ट १९०६।२८६

लोगो मे बडे विख्यात हो गए हैं। इन्होंने बहुत ग्रन्थ बनाए है पर हमारे पास केवल 'राम-रावण का युद्ध' नामक एक छोटा-सा ग्रन्थ इनका है।

सर्वेक्षण

मन का 'सीताराम विवाह' नामक ग्रन्थ खोज मे मिला है।[1] इस ग्रन्थ के अन्त मे कवि ने अपना परिचय इस दोहे मे दिया है—

सीताराम विवाह को लिख्यो मून करि नेह
असोथर शुभ ग्राम मे बैठि आपने गेह

असोथर, फतेहपुर जिले मे गाजीपुर नामक कसबे के पास एक गाँव है। यही के रहनेवाले प्रसिद्ध भगवन्तराय खीची थे। ग्रन्थ की पुष्पिका से कवि का पूरा नाम मुनिलाल ज्ञात होता है।

"इति श्री मुनलाल कृति सीताराम विवाह सम्पूर्ण सुभनस्तु सुभमभूयात्।"

६९४ सत्यक मुनिलाल इन मून से अभिन्न प्रतीत होते हैं। विनोद (१११५) मे इनके एक नामहीन नायिकाभेद के ग्रन्थ का भी उल्लेख है।

६४२।५६४

(१५) मणिदेव वन्दीजन बनारसी, स० १८९६ मे उ०। यह कवि महाकवियो मे गिने जाते है। उल्था मे गोकुलनाथ, गोपीनाथ के साथ इन्होने भी भारत के कई पर्वो का उल्था किया है। इनका काव्य महा सुन्दर है।

सर्वेक्षण

मणिदेव वन्दीजन थे। यह भरतपुर राज्य के अन्तर्गत जहानपुर के निवासी थे। यह काशी मे रहने लगे थे। यह गोकुलनाथ बनारसी के शिष्य एव काशी नरेश महाराज उदितनारायण के आश्रित कवि थे। इनकी मृत्यु स० १९२० मे हुई।[2]

ग्रियर्सन (५६६) मे इन्हे गोपीनाथ का शिष्य कहा गया है, जो ठीक नही। यह गोपीनाथ के बाप के शिष्य थे। विनोद (८८२) के अनुसार महाभारत के प्रसिद्ध अनुवाद मे इनका निम्नलिखित योग है[3]—

(१) कर्ण पर्व, (२) शल्य पर्व, (३) गदा पर्व, (४) सौप्तिक पर्व, (५) ऐपिक पर्व,[4] (६) विशोक पर्व,[5] (७) स्त्री पर्व, (८) महा प्रस्थान पर्व, (९) शाति पर्व के शेष २२५ अध्याय।

६४३।५६५

(१६) मकरन्द कवि, स० १८१४ मे उ०। श्रृङ्गार के इनके कवित्त बहुत ललित हैं।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९०९।२०१ (२) खोज रिपोर्ट १९०४।६४ (३) विनोद, भाग २, पृष्ठ ७४१ (४) खोज रिपोर्ट १९२६।२६३ ए (५) खोज रिपोर्ट १९२६।२६३ बी।

सर्वेक्षण

इस समय के आस पास एक हित मकरन्द कवि हुए हैं, जिन्होंने स० १८१८ में 'मकरन्द-बानी' नामक ग्रन्थ रचा। इसमें १०५ छन्द हैं—

जै श्री हित मकरद वरषि सुख छायो
मिष्ट इष्टि रस झरझर सरसायो
सवत दस सा आठ अठारह
आसौजी सुदि द्वैज उर धारहि
दोह कवित अरु चौपई इक सत ऊपर पाव
रति रण केलि लतानि को छिन छिन प्रति उर साव

—खोज रि० १९४१।१८०

सरोज मे मकरन्द के दो कवित हैं। एक मे मानिनी नायिका का चित्र है, दूसरे मे प्रोषित-पतिका का। हित मकरन्द भी कवित्त लिखने वाले कवि हैं। सम्भवत ये शृङ्गारी रचनाएँ दीक्षा पूर्व की इनकी प्रारम्भिक कृतियाँ है।

६४४।५६६

(१७) मकरन्दराय वन्दीजन, पुवायाँ जिले शाहजहाँपुर, स० १८८० मे उ०। यह कवि चदन कवि के घराने मे हैं। इन्होंने 'हास्यरस' नामक एक ग्रन्थ वहुत रोचक बनाया है।

सर्वेक्षण

मकरन्दराय चदन राय के घराने मे हैं, यह उनके वशज नही हैं। यह चदनराय के सम-सामयिक हैं। यह नाहिल पुवायाँ के रहने वाले वन्दीजन थे। इनके बनाए हुए दो ग्रन्थ खोज मे मिले हैं—

१ हसाभरण, १९१२।१०६। इस ग्रन्थ की रचना स० १८२१ मे हुई—

अठारह सै यकईस है नव रस मे सब आइ
सुरस हास मकरद भनि यह कलिकाल सुभाइ

इसका प्रथम छन्द यह है—

गनपति हौं गुनधाम, दीनबधु सब दुख हरन
देहु मोहि वरदान, कहा चहौं कछु हास रस

इसी हसाभरण का उल्लेख सरोज मे 'हास्यरस' नामक ग्रन्थ के रूप मे हुआ है। ऊपर उद्धृत दोहे के 'कहा चहौं कछु हासरस' के हासरस से ही सरोजकार ने ग्रन्थ का नाम निर्माण किया है।

२ जगन्नाथ माहात्म्य, १६०२।६८,१६०६।१८२।

हसाभरण के मिल जाने से सरोज मे दिया स० १८८० या तो अशुद्ध सिद्ध हो जाता है या फिर यह कवि का एक दम वृद्धकाल है।

६४५।५६७

(१८) मचित कवि, स० १७८५ मे उ०। इनकी कविता महा सरस है।

सर्वेक्षण

विनोद (६७२) के अनुसार मचित, मऊ महेवा बुन्देलखण्ड के रहने वाले ब्राह्मण थे। इन्हे 'सुरभीदान लीला' और 'कृष्णायन' नामक ग्रन्थो का रचयिता कहा गया है। पहले ग्रन्थ मे बाल-लीला, यमलार्जुन पतन तथा दानलीला का विस्तृत वर्णन सार छन्द मे हुआ है। इनमे कृष्ण का नखशिख भी सुन्दर है। कृष्णायन, तुलसीकृत रामायण के समान दोहा-चौपाइयो मे है। यह सस्कृतनिष्ठ ब्रजभाषा मे रचित है। विनोद मे सूचना सूत्र का कोई सङ्केत नही है। इनका उपस्थितकाल स० १८३६ माना गया है।

खोज मे मचित का एक ग्रन्थ दानलीला[1] मिला है। रिपोर्ट के अनुसार इसमे कृष्ण के मथुरा से प्रयाण के समय वसुदेव ने अश्वमेध यज्ञ किया है। उस समय जो कुछ दान उन्होंने किया है, उसी का वर्णन इस ग्रन्थ मे हुआ है, पर जो उद्धरण दिया गया है, उससे यह बात पुष्ट होती नही प्रतीत होती। उद्धरण से तो इसमे प्रसिद्ध गोपीकृष्ण दानलीला वर्णन की प्रतीति होती है। यथा—

एकै कहै सखी इन काजै काम देह दै डंडौ
अधर सधर रद खडन करिकै मनै लगै तौ छडौ
एकै कहै छेड कीर इनकौ फिरि इक सपत करावौ
उरज स्वयभु संभु कर अपनी तिन पर कर पसरावौ १२

यह तो सार छन्द मे लिखित वही 'सुरभी दानलीला' ग्रन्थ प्रतीत होता है, जिसका उल्लेख विनोद मे हुआ है। रिपोर्ट के अनुसार मचित, स० १७८५ के लगभग वर्तमान थे।

६४६।५६८

(१६) मुबारक, सय्यद मुबारक अली बिलग्रामी, स० १६४० मे उ०। इनका काव्य तो प्रसिद्ध है पर इनका ग्रन्थ कोई हमने नही पाया, कवित्त सेकडो हमारे पुस्तकालय मे है।

सर्वेक्षण

मुबारक के दो ग्रन्थ 'अलक शतक' और 'तिल शतक' प्रकाशित हो चुके हैं। ये सौ-सौ दोहो

---

(१) खोज रिपोर्ट १६०६।७१

वाले ग्रन्थ है। यह श्रृङ्गारी कवि है। इनके अत्यन्त सरस फुटकर कवित्त-सवैये बहुत मिलते है। यह अरबी-फारसी और सस्कृत के अच्छे जानकार थे। यह विलग्राम, जिला हरदोई के रहने वाले एक सम्भ्रान्त मुसलमान थे। सरोज दत्त स० १६४० इनका जन्मकाल स्वीकार किया जाता है, जो इस कवि के सम्बन्ध मे मुझे भी मान्य है। इसका कारण यह है कि यह पूर्ण रूप से रीति-परम्परा मे डूबे हुए कवि हैं।

६४७।५७१

(२०) मातादीन शुक्ल अजगरा, जिले प्रतापगढ, विद्यमान है। यह पडित जी राजा अजीत सिह सोमवशी प्रतापगढ वाले के यहाँ दो-चार ग्रन्थ छोटे-छोटे बना चुके है।

सर्वेक्षण

पण्डित मातादीन अजगरा वाले के सम्बन्ध मे जो भी तथ्य सरोज मे दिए गए है, सभी ठीक है। स० १९३१ मे इनके निम्नाकित सात ग्रन्थो का एक सग्रह 'नानार्थ सग्रहावली' नाम से नवल-किशोर प्रेस से कवि के जीवनकाल ही मे और सरोज के प्रणयन के तीन-चार वर्ष पूर्व ही प्रकाशित हुआ था।

(१) सग्रहावली, १९२३।२७४, १९२६।२९७ आई, जे, के, एल। यह कवि की फुटकर कविताओ का सग्रह है और कवि का श्रेष्ठतम ग्रन्थ है। ग्रन्थ मे कुल २०२ छन्द है, जिनमे अधिकाश कवित्त-सवैये है। लोकोक्ति अलङ्कार का इसमे बहुत सुन्दर प्रयोग हुआ है। कवि ने अपना परिचय इस दोहे मे दिया है। एक-एक अक्षर छोडकर पढने से कवि का परिचय प्राप्त होता है।

माधो तारो दीन नर, सुनो कुशल का देर
सब प्रभुता को पद गन्यो, ढर्यौ अरज पग नेर

मातादीन सुकुल, देस प्रतापगढ, अजगर।

(२) रामायण माला, १९२६।२९७ ई, एफ। रचनाकाल स० १८९६—

अट्ठारह सै छानवे, सवत् मिति वैसाख
रामायन माला रचो, एकादसि सित पाख

इस ग्रन्थ मे कवि ने अपने घर का पता दिया है—

जोजन चारि प्रयाग तें, उत्तर अजगर ग्राम
तासु दून है अवध तें, दक्षिन जहँ मम धाम

(३) राम गीताष्टक १९२६।२९७ सी, डी।

(४) ज्ञान दोहावली, १९२६।२९७ ए, बी, १९४१।५४०। रचनाकाल स० १९०३—

सवत् एक सहस सहित नव सै तीन समेत
रची ज्ञान दोहावली चैत पचमी श्वेत

(५) रस सारिणी, १९२६।२९७ एफ, जी। रचनाकाल स० १९०३—

एक सहस नव सै त्रिजुत, सवत् मिति वदि जेष्ठ
तेरसि तिथि शनि दिन रची, रस सारिणी सुश्रेष्ठ

यह दोहो मे नायिका भेद का ग्रन्थ है।

(६) तिथि बोध—यह ग्रन्थ सस्कृत मे है। कवि ने अपना नाम तक 'मातृ दत्त' बना लिया है। ग्रन्थ की रचना स० १८९२ मे हुई—

२ ९ ८ १
युग्म ग्रहे भ भ युक्ते, वर्षे मार्गे सितेत्तरे
पक्षे काम तिथो प्रोक्तस्तिथबोधो वृहस्पतौ

(७) वृत्त दीपिका, १९३५।६१। यह पिङ्गल ग्रन्थ भी सस्कृत मे है। इसकी रचना स० १८९९ मे हुई।

ये सातो ग्रन्थ प्रतापगट के रईस श्री अजीत सिह के निर्देश से बने थे और उन्ही की आज्ञा से इनका प्रकाशन भी हुआ था—

९ ९ ८ १
ग्रह ग्रहे भ भ युक्ते, वर्षे पौष सितेत्तरे
पक्षे कुहुतिथौ सूर्ये निर्मिता वृत्तदीपिका

———

६४८।५७२

(२१) मानिकदास कवि मथुरा निवासी। इन्होने 'मानिकबोध' नामक ग्रन्थ श्रीकृष्णचन्द्र जी की लीला का बनाया है।

सर्वेक्षण

मानिकदास रचित 'मानिक बोध' खोज मे मिल चुका है।[1] प्राप्त प्रति सटीक है। टीकाकार ग्रन्थकार से भिन्न है। प्राप्त प्रति स० १९१५ की लिखी हुई है। ग्रन्थ कवित्त सवैयो मे है। इसका दूसरा नाम 'आत्मविचार' है। ग्रन्थ कृष्णलीला विषयक नही है, जैसा कि सरोज का कथन है, यह आत्मज्ञान सम्बन्धी ग्रन्थ है। इसमे पाँच प्रकरण है—१ अनुबन्ध निरूपण २ अध्यास-निरूपण, ३ आत्मस्वरूपावधारण, ४ आत्मस्वरूपस्थिति निरूपण, ५ आत्मफल द्वारा स्तुति। सरोज मे उद्धृत सवैया इस ग्रन्थ का अन्तिम छन्द है, जिसमे कृष्ण-स्तुति है।

"मानक के मन माहि बसो ऐसो नद को नन्दन बाल कन्हैया"

सरोज मे 'नद को नद यशोदा को छैया' पाठ है।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९४१।१९३

विनोद (१६३६) मे इनके एक अन्य ग्रन्थ 'कवित्त-प्रवध'[1] का भी उल्लेख है, पर इसके रचयिता मानिकदास मथुरावासी नही थे, शिप्रा तट वासी एव उज्जैन निवासी थे। यह ग्रन्थ वेदान्त और भक्ति का है। यदि दोनो स्थानो पर रहने वाले व्यक्ति एक ही सिद्ध किए जा सकें, तो मानिकवोध और कवित्त-प्रवध के कर्ताओ मे अभेद स्थापित किया जा सकता है। विषय की दृष्टि से दोनो कवि एक ही है।

६४६।५७३

(२२) मुरारिदास व्रजवासी। इनके पद रागसागरोद्भव मे है।

सर्वेक्षण

भक्तमाल मे एक मुरारिदास है। यह राम भक्त थे। इन्होने रामवन गमन सम्बन्धी एक पद का कीर्तन करते हुए देह-त्याग किया था। यह मारवाड निवासी थे। कुछ कहा नही जा सकता कि यह कवि भी थे अथवा नही।

विदित विलौंदा भाव देस मुरधर सब जानै
महा महोच्छो मध्य सत परिषद परवानै
पगनि घूँघुरू वाधि राम को चरित दिखायो
देसी सारगपानि हस ला सग पठायो
उपमा और न जगत मे, प्रथा विना नाहिन वियो
कृष्ण विरह कु ती सरीर त्यी मुरारि तन त्यागियो १२८

यदि यह मुरारिदास कवि भी थे तो यह सरोज के अभीष्ट कवि हो सकते है। इनका समय स० १६४६ के पूर्व होना चाहिए।

६५०।५७४

(२३) मन्य कवि। इनके शृङ्गार के सुदर कवित है।

सर्वेक्षण

मन्य कवि का 'रस कन्द' नामक नायिका भेद का ग्रन्थ खोज मे प्राप्त हुआ है।[2] इसमे कुल २३५ छन्द हैं। ग्रन्थ से कवि के समय पर कोई प्रकाश नही पडता, पर उसका वशपरिचय अवश्य मिलता है। जगत दुवे के दो पुत्र थे, दामोदर और हरब्रह्म। पुन दामोदर के दो पुत्र हुए, सुखदेव और लालमनि। सुखदेव के पुत्र वृन्दावन हुए। वृन्दावन के तीन पुत्र देवकीनन्दन, सदानन्द और मायाराम ज्ञानी हुए। मन्य इन्ही मायाराम ज्ञानी के पुत्र थे। मन्य के पिता ज्ञानी जी भी सुकवि थे, पर इनकी कविता का कोई उदाहरण अभी तक नही मिला है।

(१) खोज रिपोर्ट १९०१।१३२ (२) खोज रिपोर्ट १९०९।१९३

जगत दुबे जग जासु जसु, तासु पुत्र श्रीमान
दामोदर हरब्रह्म पुनि, परम पुरुष कल्याण ३

छप्पय

दामोदर के पुत्र दोइ सुखदेव लालमन
सुखदेव के भयो पुत्र उदित वृन्दावन
वृन्दावन सुत तीन देवकीनन्द सदानन्द
मायाराम ज्ञानी सु काव्य कर ध्यावत हरि पद
मन्य सुकवि ज्ञानी सुवन, देखि सुमति रस ग्रथ सब
सो राधेकृष्ण विहार सुनि कियो ग्रथ रसकद अब ४

रोमन अक्षरो की कृपा से यह 'रसकन्द' विनोद मे (१६२८) जाकर 'रसकुड' हो गया है।

६५१।५७५

(२४) मननिधि कवि। ऐजन। (शृङ्गार के सुदर कवित्त हैं।)

सर्वेक्षण

सरोज मे उदाहृत कवित्त 'दिग्विजय भूषण' से उद्धृत हे। इस कवि के सम्वन्ध मे कोई और सूचना सुलभ नही।

६५२।५७६

(२५) मणि कठ कवि। ऐजन। (शृङ्गार के सुदर कवित्त हे।)

सर्वेक्षण

खोज मे मणिकण्ठ का एक ग्रन्थ 'वेताल पच्चीसी'[1] मिला है। इसका रचनाकाल स० १७८२ है। यह सस्कृत के इसी नाम के ग्रन्थ का भाषानुवाद है। कवि के आश्रयदाता का नाम निरतन लाल था। यह अपने पिता भवानी साहु के तीसरे पुत्र थे। यह गर्ग गोत्रीय अग्रवाल वैश्य थे और आजमपुर के रहने वाले थे।

है आजमपुर विदित ग्राम
सुख सपति आनद धाम
अगरवार के गोत सुभ, तेहि पुर वसै अनेक
गर्ग वशधर एक है, विदित धर्म की टेक

(१) खोज रिपोर्ट १६२३।२६६, १६४४।२७३ क, ख।

धर्म धुरधर सील जुत, भए भवानी साहु
मुदित जगहि लखि हित सदा, अरि उर उपजत दाह
तिनके सुत तह तीन मे, लहुरे निरतन लाल
रूप काम सस काम तरु, दाता दीन दयाल

१९२३ वाली रिपोर्ट मे मणिकण्ठ को वनियाँ कहा गया है, जो ठीक नही। १९४४ वाली रिपोट के अनुसार यह मिश्र थे और नगरा नगर, गाजीपुर के राजा फकीर सिंह के आश्रित थे। दोनो रिपोर्टो मे रचनाकाल स० १७८२ दिया है, पर रचनाकाल सूचक छन्द किसी मे भी नही उद्धृत है।

कवीन्द्राचार्य सरस्वती की प्रशस्ति मे हिन्दी कवियो ने 'कवीद्र चद्रिका' ग्रन्थ वनाया था। इसमे ३२ कवियो की रचनाएँ हैं। इनमे दो कवि सीतापति त्रिपाठी और गोपाल त्रिपाठी हैं। दोनो को मणिकण्ठ पुत्र कहा गया है। कवीन्द्राचार्य सरस्वती का समय स० १६५७-१७३२ है।[1] यही समय मणिकण्ठ का भी होना चाहिए। इस प्रमाण से यह त्रिपाठी सिद्ध होते हैं, मिश्र नही।

६५३।५७७

(२६) मोतीलाल कवि। ऐजन। (शृङ्गार के सुदर कवित्त है।)

सर्वेक्षण

सरोज मे उदाहृत कवित्त 'दिग्विजय भूपण' से उद्धृत है। इस कवि के सम्बन्ध मे कोई अन्य सूचना सुलभ नही।

६५४।५७८

(२७) मुरली कवि। ऐजन। (शृङ्गार के सुदर कवित्त हैं।)

सर्वेक्षण

सरोज मे मुरली का निम्नलिखित कवित्त उदाहृत है—

अरुनाई एडिन की रवि छवि छाजत है
चारु छवि चद आभा नखन करे रहैं
मगल महावर गुराई बुध राजत हैं
कनक वरन गुरु वनक धरे रहैं
सुक्र सम जोति, सनि राहु केतु गोदना है
मुरली सकल सोभा सौरभ भरे रहैं

(१) यही ग्रन्थ। पृष्ठ १९४-९५।

नवौ ग्रह मोहन ते सेवक सुभाइन ते
राधा ठकुराइन कै पाइन परे रहैं

इस छन्द मे कवि ने राधा के पदो की वर्णना की है। प्रतीत होता है कि इसने नखशिख सम्बन्धी कोई ग्रन्थ रचा है। खोज मे नखशिख के रचयिता एक मुरली मिलते भी है। उपलब्ध मुरली का पूरा नाम मुरलीधर मिश्र है। यह आगरा के रहने वाले ब्राह्मण थे। इनके बनाए हुए निम्नलिखित ग्रन्थ खोज मे उपलब्ध हुए है—

१ नखशिख, प १९२२।९८, १९२३।२८८ ए, १९४७।३०३ क। इस ग्रन्थ मे कुल ६१ छन्द है। इसमे राधा का नखशिख वर्णित है।

तीन लोक ठाकुर सदा दूलह नद कुमार
दुलहिनि रानी राधिका नखसिख ओप अपार २
यह नखसिख पोथी रची मुरलीधर सुखकारि
भूल्यौ होंहू जहा कछु लीजौ सुकवि सुधारि ६१

पुष्पिका मे इन्हे मिश्र कहा गया है। ऊपर उद्धृत छन्द सम्भवत इसी ग्रन्थ का है।

"इति श्री मिश्र मुरलीधर विरचित नखशिख सपूर्णम्"

२ रामचरित्र, १९३२।१४८, १९४४।३०४ ख। १९३२ वाली प्रति खण्डित है। १९४४ वाली प्रति पूर्ण है। इस पूर्ण प्रति से कवि के सम्बन्ध मे पूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। कवि का नाम मुरलीधर मिश्र है। यह भारद्वाजगोत्रीय माथुर ब्राह्मण हैं। गङ्गा-यमुना के मध्य मे गभीरी नामक कोई गाँव है। वहाँ माथुरो का निवास है। इन्हीं माथुर ब्राह्मणो मे एक परमानन्द हुए। इन परमानन्द को अकबर ने शतावधानी की उपाधि दी थी। अकबर ने इन्हे मिश्र की भी पदवी दी। उसने इन्हे आगरे मे बसाया भी। परमानन्द के पुत्र कपूरचन्द थे। इन्होंने आगरे मे यमुना के किनारे मथुरिया टोला मे घर लिया। कपूरचन्द के पुत्र पुरुषोत्तम हुए, जो शाहजहाँ के दरबार मे थे। पुरुषोत्तम के पुत्र प्रेमराज हुए, जो स्वतन्त्र प्रकृति के थे। यह किसी के नौकर नही हुए। प्रेमराज के पुत्र पृथ्वीराज हुए और पृथ्वीराज के दिनमणि। दिनमणि जी प्रसिद्ध ज्योतिषी थे। इन्ही दिनमणि जी के पुत्र मुरलीधर मिश्र हुए। यह दिल्ली के मुगल बादशाह रङ्गीले के दरबार मे थे। मुहम्मद शाह का शासनकाल स० १७७६-१८०५ है। यह मुरलीधर जी का भी समय होना चाहिए।

गगा जमुन के मधि गभीरी पुरीन को गाउ हे
बहु कोटि ऊँचो सुघर नीको परम उत्तम ठाउ हे
× × ×
माथुर बसै हैं जाय कै, तह सजे सदन सुहावने
मुनि से लसत हैं निगम आगम, गुनन ज्ञान बढावने
उनहीं मे परमानन्द प्रगटे, पढ़ी विद्या जिन भली
गुन गन सुनत ही बोलि लीनौ आगरे अकबर बली
चरचा भई दरबार के मधि •रीझि के अकबर कह्यो

हम कह्यो तुमहिं सतावधानी आन से नहिं गुन लह्यो
वकसीस कीनो वहुत उनको मिश्र की पदवी दई
उन वास अपने ग्राम राख्यो, चाकरी त्या कर लिई
उनके सनामि कपूरचद तिन वास अर्गलपुर कियो
टोला मथुरिया कालिंदी तट सदन वसिवे को लियो
वे वसे आय कुटुब के जुत, सील गुन मति खानि हैं
सवहीन जान्यो सवन मान्यो, सवन सौं हित वानि है
तिन तनय पुरुषोत्तम सु जिनकी सुनी कविता अति भली
दिल्लीस के सेनापती की चाकरी तिनकौं फली
वे मिले साहिजहाँ वली सौं मिली वकसिस प्यार में
सोभा वढाई साहि जिनकी कबित के दरवार में
तिनके भए सु हैं प्रेमराज न चाकरी चित में धरी
मिलवी करें सज्जनन ही सौं, जीविका सहजें करी
तिनके सु पृथ्वीराज तिनने लह्यो गुन अरु ज्ञान है
सवही सराहे सुघरता कौं परम वुद्धि निधान हे
नितके तनय दिनमणि भए जिन ग्रथ ज्योतिष के पढे

× × ×

तिनके सुतन में भयो मुरलीवर कछुक गुनवान है
कवि कोविदन ने कृपा करिके लई कविता मानि हे ४४
दिल्लीस महमद साहि सौं मिलि चाकरी हू करि लई
औरौ अमीरन कृपा करि मन रीझि कें वकसिस दई

जव नादिरशाह के आक्रमण से दिल्ली उजड गई तो कवि विरक्त हो गया। और उसने राम चरित्र लिखा।

वह गयो ह्वा हिंदुवान के मधि राज औरे ह्वै गयो
सव मिटि गई गुन ज्ञान चर्चा कृपन जग सिगरौ भयो
तव चित आई होहु चाकर, चरित वरनौं राम को
नेकहू जो कृपा करिहैं तो सबै हौं काम को

ग्रन्य की रचना स० १८१८ कातिक शुक्क ११, रविवार को हुई—

वसु[८] ससि[१] वसु[८] ससि[१] मै लखौ सवत कातिक मास
शुक्ल पक्ष एकादसी रवि भौ ग्रंय प्रकास ४६

पुष्पिका मे भी कवि को मिश्र मुरलीवर कहा गया है—

"इति श्रीमन्मूर्ति मिश्र मुरलीवर विरचिते श्री रामचरित्रे श्रीरामगुणानुवाद वर्णनो नाम चत्वारिंशतम प्रभाव ४० ॥"

१९३२ वाली खण्डित प्रति मे भी परिचय है, पर वह दोहा छन्दो मे है और सक्षिप्त है। रोला छन्दो मे नही है और न इतने विस्तार ही से है। ग्रन्थ कवित्त, सवैया, छप्पय, गीतिका, हरिगीतिका, तोमर, दोहा, चौपाई, हरि आदि छन्दो मे लिखा गया है। कवि सिद्धहस्त है। १९३२ वाली प्रति के अनुसधायक के अनुसार ग्रन्थ का परिमाण और कविता की उत्तमता इसे महाकाव्य का पद दे सकती हैं। इस रिपोर्ट मे प्रमाद से कवि को अकबरकालीन कहा गया है।

३ नलोपाख्यान, १९१२।११७, १९४४।३०४ क। इस ग्रन्थ मे नल-दमयती की प्रसिद्ध कथा है। इसकी रचना स० १८१४ मे माघ वदी ७, मगलवार को हुई—

४ १ ८ १
वेद भूमि वसु ससि लखो सवत माघ सु मास
कृष्ण पक्ष कुज सप्तमी कीनो ग्रथ प्रकास

पुष्पिका मे कवि नाम के साथ मिश्र जुडा हुआ है—

"इति श्री मिश्र मुरलीधर विरचिते नलोपाख्याने स्वदेशराज्ञागमनो नाम षोडसो विलास।"

१९४४ वाली प्रति मे कवि ने अपना पूरा परिचय ही दे दिया है—

विप्र माथुर वश भारद्वाज प्रगट्यो आय
पिता दिनमणि पढे ज्योतिष भए ज्योतिषराय
पुत्र मैने पढी कविता भयो रघुवरदास
नाम मुरलीधर दियो उन कियो जगत प्रकास

—खोज रिपोर्ट १९४४।३०४ क

४ पिंगल पीयूष, १९२३।२८८ बी, १९४७।३०३ ख। ग्रन्थ मे कवि का नाम आया है—

वडे वडे सत्कविन के सुनि सुनि विविध विचार
मुरलीधर छदनि रचत अपनी मति अनुसार ३

इसकी रचना १८११ मे, पौष शुक्ल ९, गुरुवार को हुई—

१ १ ८ १
विधि ससि वसु ससि में लखौ सवत पौष सु मास
शुक्ल पक्ष नवमी गुरौ कीनौ ग्रन्थ प्रकास ८५

खोज रिपोर्ट मे विधि का तीन अर्थ लेकर इसका रचनाकाल स० १८१३ दिया गया है। पुष्पिका मे कवि नाम के पहले मिश्र लगा हुआ है। ग्रन्थ ८७ पन्ने का है और पर्याप्त वढा है।

"इति श्री मिश्र मुरलीधर विरचित पिंगल पीयूष ग्रन्थ समाप्तम्।"

५ रस सग्रह, १६२३।२८८ सी। इस ग्रन्थ मे नव रसो के स्व-रचित कवित सङ्कलित है। ग्रन्थ ५६ पन्नो का है, इसकी रचना स० १८१६ मे हुई, ऐसा रिपोर्ट मे लिखा गया है और रचना-काल सूचक यह दोहा भी दिया गया है—

१ ८ १ ९

नृप वस ससि अकनि लखौ, सवत फागुन मास
असित पक्ष दसमी रवौ, कीनो ग्रथ प्रकास

यहाँ 'अङ्कानाम वामतो गति' का अनुसरण नही हुआ है। नृप का अर्थ एक लिया गया है। इस ग्रन्थ की भी पुष्पिका मे कवि नाम के पहले मिश्र लगा हुआ है—

"इति श्री मिश्र मुरलीधर विरचते रस सग्रह ग्रन्थ सतैसो सर्ग सपूर्णम्'

६ शृङ्गार सार, १६३८।१०२। यह ग्रन्थ वहुत छोटा है। इसमे १२ पन्ने एव ४३ छन्द है। यह भानुदत्त कृत रसमञ्जरी नामक सस्कृत ग्रन्थ के आधार पर वना है। यह केवल लक्षण-ग्रन्थ है, इसमे उदाहरण नही है। एक ही छन्द मे अनेक लक्षण दिए गए है। इस ग्रन्थ की पुष्पिका मे कवि नाम के पहले मिश्र नही जुडा है पर खोज रिपोर्ट मे यह इन्ही मिश्र मुरलीधर की रचना स्वीकृत हे। अत यहाँ इसका उल्लेख कर दिया गया हे।

शृङ्गार सार की पोथी और अखेराम का प्रेमरससागर एक ही हाथ के लिखे एक ही जिल्द मे वँधे मिले हैं। इससे दोनो कवियो मे भी निकटता का आभास होता है। अखैराम जी भरतपुर के राजा वदन सिह, (शासन काल स० १७७९-१८१२) एव सूरजमल (शासनकाल स० १८१२-२०) के यहाँ थे। इन्होने सिहासन वत्तीसी का अनुवाद किया था। यह भागवत के अनुवादक गीपम के वशज थे। गगा माहात्म्य, कृष्णचद्रिका तथा हस्तामलक वेदान्त इनके अन्य ग्रन्थ हैं। इसी समय भरतपुर दरवार मे एक मुरलीधर भी थे। इन मुरलीधर ने भागवत के पञ्चम स्कन्ध का अनुवाद भरतपुर नरेश जवाहिर सिह (शासनकाल स० १८२०-२५) के भाई नवलसिह के लिए किया था।

नवलसिह नृप ने कही, मुरलीधर कविराइ
स्कध पाचर्यो भागवत भाषा देहु वनाइ ४

—खोज रि० १६४४।३०३

वहुत सम्भव है ऊपर वर्णित मुरलीधर मिश्र और भागवत पञ्चम स्कन्ध के अनुवादक मुरलीधर एक ही हो।

६५५।५७६

(२८) मोतीराम कवि, स० १७४० मे मे उ०। हजारे मे इनके कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

मोतीराम की कविता हजारे मे थी, अत म० १७५० के पूर्व इस कवि का अस्तित्व स्वत सिद्ध है। मरोज मे दिया स० १७४० इस कवि का जन्मकाल कदापि नही हो सकता, जैसा कि

ग्रियर्सन (२१६) मे माना गया है। यह कवि का रचनाकाल है। विनोद मे (५०७) इसे रचनाकाल ही माना गया है। ग्रियर्सन और विनोद के अनुसार यह मोतीराम माधोनल के ब्रजभाषा-पद्यानुवादकर्त्ता हैं। लल्लू जी लाल एव मजहर अली विला ने फोर्ट विलियम कालेज, कलकत्ता के लिए इसी पद्यानुवाद का गद्यानुवाद किया था। खोज मे इस ग्रन्थ की कोई प्रति अभी मिली नही है, अत कुछ निश्चयपूर्वक नही कहा जा सकता।

६५६।५८०

(२६) मनसुख कवि, स० १७४० मे उ०। ऐज़न। (हजारे मे इनके कवित्त हैं।)

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्वन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही। इनकी रचना हजारे मे थी, अत स १७४० जन्मकाल कदापि नही हो सकता, यह कवि का रचनाकाल ही है, क्योकि इसके १५ वर्ष वाद ही हजारा का प्रणयन हुआ था और इसे जन्मकाल मानने पर यह उस समय वच्चे ही रहेगे।

६५७।५८१

(३०) मिश्र कवि, स० १७४० मे उ०। ऐजन। (हजारे मे इनके कवित्त है।)

सर्वेक्षण

मिश्र छाप से सरोजकार को कुछ छन्द हज़ारा मे मिले थे, अत यह मिश्र जी हजारा के समसामयिक कवि हैं अथवा पूर्ववर्ती। सरोज का स० १७४० यदि शुद्ध है तो यह जन्मकाल कदापि नही हो सकता। यह रचनाकाल ही है। मिश्र, कवि की जाति है, न कि उसका नाम।

६५८।५८२

(३१) मुरलीधर कवि, स० १७४० मे उ०। ऐजन। (हजारे मे इनके कवित है।)

सर्वेक्षण

मुरलीधर का एक कवित्त सरोज मे उद्धृत है, इसमे राम-जन्म का वर्णन है। यह कवित्त मुरलीधर मिश्र कृत 'रामचरित्र' का हो सकता है, हजारा मे उद्धृत मुरलीधर का नही। सम्भवत हज़ारे मे श्रीधर मुरलीधर के छन्द होगे। विनोद (६३९) में इस कवि के नाम पर जितने भी ग्रन्थ दिए गए है, वे अन्य मुरलीधरो के हैं। 'कवि विनोद', श्रीधर मुरलीधर की रचना है। सम्भवत रस विनोद भी। 'नलोपाख्यान' आगरे वाले मुरलीधर मिश्र की रचना है और 'श्री साहव जी की कविता 'प्रनामी-सम्प्रदाय' के मुरलीधर वुदेलखण्डी की।

६५६।५८५

(३२) मलूकदास कवि ब्राह्मण, कडा मानिकपुर, स० १६८५ मे उ० । इनकी कविता वहुत ललित है ।

सर्वेक्षण

प० महेशदत्त मिश्र ने अपने भापाकाव्य सग्रह मे मलूकदास को कडा मानिकपुर मे रहने वाला ब्राह्मण कहा हे । इनका मृत्युकाल स० १६६५ दिया है और लिखा है कि अयोध्या से चित्रकूट जाते समय गो० तुलसीदास की इनसे भेट हुई थी ।[1] सरोजकार ने सम्भवत यही से मलूकदास की तिथि और जाति स्वीकार की । विनोद मे दो वार इनका उल्लेख हुआ है—एक बार (२४३) इन्हे ब्राह्मण कहा गया है, दूसरी वार (६४०) इन्हे कालपीवासी क्षत्री वताया गया है । मलूकदास न ब्राह्मण थे और न क्षत्रिय, यह खत्री थे । यह कडा मानिकपुर, जिला इलाहावाद के रहनेवाले प्रसिद्ध साधु थे । इनके पिता का नाम लाला सुन्दरदास था । इनके वशज अभी तक सिराथू, इलाहावाद मे उपस्थित है । इनका जन्म वैशाख वदी ५, स० १६३१ को हुआ और इनकी मृत्यु स० १७३९ मे १०८ वर्ष की वय मे कडा मे हुई । सरोज मे दिया हुआ स० १६६५ इनका उपस्थितकाल हे और ठीक हे ।

अजगर करै न चाकरी, पछी करै न काम
दास मलूका कहि गए, सव के दाता राम

यह सुप्रसिद्ध उक्ति इन्ही की है । इनकी गद्दियाँ कडा, जयपुर, गुजरात, मुलतान, पटना, नैपाल और कावुल तक मे है ।[2]

वावू कृष्ण वलदेव वर्मा, द्विवेदी युग के एक अच्छे गद्य लेखक हुए हैं । मलूकदास जी वर्मा जी के नाना के वावा थे । वर्मा जी ने एक लेख मलूकदास पर सरस्वती मे लिखा था । इस लेख से मलूकदास के सम्वन्ध मे अनेक स्पष्ट सूचनाएँ मिलती हैं और अनेक भ्रान्तियो का निरसन हो जाता है । खोज मे मलूकदास के निम्नलिखित ग्रन्थ मिले हैं—

१ भगत वछल, १९०४।८०, १९०६।१८५ ए वी, १९२६।२९, १९३२।१३८ ए वी, १९४७।२८८ ।
२ भक्त विरदावली, १९०६।१९४ ए छ ।
३ गुरु प्रताप, १९०६।१९४ वी ।
४. पुरुप विलास, १९०६।१९४ सी ।
५ अलख वानी, १९०६।१९४ डी ।
६ रतन खान, १९०९।१८५ वी, १९४१।५३८ ।
७ ज्ञान वोध, १९१७।१०९ ए, १९४७।२८८ ग घ ङ ।

---

(१) भाषाकाव्यसग्रह, पृष्ठ १२९-३० (२) हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ ९०

८ राम अवतार लीला, १९१७।१०९ वी ।
९ मलूक जस, १९३२।१३८ सी ।
१० विष्णु सत्य नाम, १९३२।१३८ डी ।
११ प्रगट ज्ञान, १९४१।१८८ ।
१२. करखा, १९४७।२८८ क ।
१३ ज्ञानपरीक्षा, १९४७।२८८ ख ।
१४. ध्रुव चरित्र, १९४७।२८८ च ।
१५ मयूरध्वज चरित्र, १९४७।२८८ ज ।
१६. विभु विभूति, १९४७।२८८ झ ।
१७ साखी,१९४४।२७५ ।
१८ सुख सागर, १९४७।२८८ ञ ।

सरोज मे मलूकदास के नाम पर तीन घोर शृङ्गारी कवित्त-सवैये उद्धृत हैं। निश्चय ही ये सन्त मलूकदास की रचना नही है। यह शृङ्गारी मलूक कोई रीतिकालीन कवि है। खण्डन कवि[1] के पिता का नाम मलूक चन्द था। यह श्रीवास्तव कायस्थ थे। खण्डन का रचनाकाल स० १७८१-१८१९ है। मलूक चन्द भी सम्भवत कवि थे। इनका रचनाकाल स० १७५० ८० के आस-पास होना चाहिए। सरोज मे मलूकदास के नाम पर उद्धृत रचनाएँ सम्भवत इन्ही की हैं। खोज मे मलूक के नाम पर 'ऊधो पच्चीसी'[2] नामक कवित्त-सवैयो का एक लघु ग्रन्थ मिला है। यह सम्भवत इन्ही मलूकचन्द की रचना है।

६६०।५८६

(३३) मीर रुस्तम कवि, स० १७३५ उ०। इनके कवित्त हजारे मे है।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही है। हजारे मे इनके कवित्त थे, अत स० १७५० के पूर्व इनका अस्तित्व सिद्ध है। यदि सरोज का सवत् १७३५ ठीक है, तो यह रचनाकाल ही हो सकता है, जन्मकाल कदापि नही हो सकता ।

६६१।५८७

(३४) महम्मद कवि, स० १७३५ मे उ०। ऐजन। (इनके कवित्त हजारे मे हैं।)

---

(१) भाषाकाव्यसग्रह, कविसख्या १४२ (२) खोज रिपोर्ट १९४१।१८७

सर्वेक्षण

महम्मद कवि की रचना हजारे मे थी, अत इस कवि का स० १७५० के आस-पास या पूर्व अस्तित्व सिद्ध है। सरोज मे दिया स० १७३५ कवि का रचनाकाल ही हो सकता है। यदि इसे जन्मकाल माना जायगा, तो हजारे के प्रणयन काल मे कवि की वय बहुत कम रहेगी। सरोज मे इनका एक सवैया उद्धृत है, जो छन्द की दृष्टि से बहुत सफल नही है।

खोज मे किसी महम्मद साहि का 'सगीत मालिका'[1] नामक ग्रन्थ मिला है। इसका प्रारम्भिक अश खण्डित है। यह कवि पिरोज शाह के वश मे ततार शाह के पुत्र थे। सरोज के इन महम्मद से इनका तादात्म्य स्थापित कराने वाला कोई सूत्र सुलभ नही है।

६६२।५८८

(३५) मीरी माधव कवि, स० १७३५ मे उ०। ऐजन। (इनके कवित्त हजारे मे हैं।)

सर्वेक्षण

भक्तमाल की टीका मे रूपकला जी ने एक स्थान पर ११ माधवदासो का उल्लेख किया है, इनमें से एक माधवदास काबुली भी हैं। इनका उपनाम 'मीर माधव' है।[2] सम्भवत यही सरोज के मीरी माधव है। यह स० १७२० के पूर्व उपस्थित रहे होगे। सरोज मे दिया स० १७३५ इनका जन्मकाल कदापि नही हो सकता। हजारे मे इनकी रचना है। इस दृष्टि से भी यही निर्णय दिया जा सकता है। कि यह अनुप्रास प्रेमी कवि थे।

६६३।५८९

(३६) मदन किशोर कवि, स० १८०७ मे उ०। इन्होने सरस कविता की है।

सर्वेक्षण

इस कवि का उल्लेख आगे ७०६ सख्या पर पुन हुआ है।

६६४।५९०

(३७) मखजात कवि, बाजपेयी जालिपा प्रसाद, तार गाँव जिले उन्नाव, वि०।

सर्वेक्षण

विनोद (२३८४) मे इस कवि का समय स० १९४५ के लगभग स्वीकार किया गया है। यहाँ जालिपा प्रसाद, ज्वालाप्रसाद और मखजात मखजातक हो गए हैं। सरोज के तृतीय सस्करण

(१) राज० रिपोर्ट भाग २, पृष्ठ ६७ (२) भक्तमाल, पृष्ठ ९०८

मे भी मखजातक ही पाठ है। सरोज मे इनका एक ही कवित्त है, पर उसमे कवि छाप नही है। अत निश्चय नही किया जा सकता कि इनका नाम मखजात था या मखजातक।

६६५।५६१

(३८) महराज कवि। सुन्दरी तिलक मे इनके कवित्त है।

सर्वेक्षण

महराज कवि की रचना सरदार के शृङ्गार सग्रह मे है। अत यह कवि स १९०५ से पहले का है। विनोद (१२३४) मे इन्हे न जाने किस आधार पर स० १८७६ के पहले का बताया गया है।

खोज मे किसी महराज कवि का एक ग्रन्थ निघट मदनोदै[1] मिला है। यह वैद्यक का ग्रन्थ है। कवि का नाम ग्रन्थ मे आया है।

छीर सिंधु मे वास जेहि, पीत वसन, भुज चारि।
ताहि बंदि महराज कवि, नमि विर्ति निरधारि॥

कुछ कहा नही जा सकता कि यह वैद्यक ग्रन्थ रचने वाले महराज कवि सरोज के महराज कवि से भिन्न हैं अथवा अभिन्न।

६६६।५९२

(३९) मुरलीधर कवि २। ऐजन। (सुन्दरी तिलक मे इनके कवित्त है।)

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्वन्ध मे कोई प्रामाणिक सूचना सुलभ नही। विनोद मे इस नाम के कम से कम आठ कवि है।[2] अब केवल नाम के सहारे किस के साथ इनका अभेद स्थापित किया जाय।

६६७।५९५

(४०) मोतीलाल कवि, वासी राज्य के निवासी, स० १५९७ मे उ०। इन्होने गणेशपुराण भाषा मे बनाया।

सर्वेक्षण

मोतीलाल का गणेशपुराण निम्नलिखित विभिन्न नामो से खोज मे मिल चुका है—

(क) गणेशपुराण, १९०१।७९, १९०९।२००, १९२३।२८२ ए। १९२६।३०९ ए, बी, सी, डी है, १९४४।३०६ क, ख।

(१) खोज रि० १९४४।२७९ (२) विनोद, कवि सख्या ६३९, ९६१।१, ११२१, १६४१, १६४१।१, १६४२, १६४३, १६४७।१

(ख) गणेश माहात्म्य व्रत,१९२३।२८२ बी ।

(ग) गणेश कथा, १९२३।२८२ सी ।

(घ) गणेश चौथ की कथा, १९२३।२८२ डी ।

किसी भी प्रति मे रचनाकाल नही दिया गया है । प्राचीनतम प्राप्त प्रति स० १८६२ की लिखी हुई है । इस ग्रन्थ के अन्तिम छन्द मे कवि ने अपना नाम दिया है—

गन नायक की सुभ कथा, सस्कृत मध्य बिसाल
जथा बुद्धि भाषा रचित, जडमति मोतीलाल

सरोजकार ने इस कवि का विवरण महेशदत्त के भाषाकाव्य सग्रह के आधार पर दिया है । इस ग्रन्थ के अनुसार ये सरवरिया ब्राह्मण बांसी के राज्य मे बघैला ग्राम के वासी बहुत दिन पठन-पाठन कर स० १५९८ मे वही मृतक हुए ।[1] उन्होने गणेशपुराण को भाषा किया । पर महेशदत्त की बात ठीक नही प्रतीत होती । उनकी सूचनाएँ अनेक स्थलो पर भ्रष्ट हैं । १९४४ वाली प्रति के अनुसार मोतीलाल नौबस्ता, नागनगर परगना प्रयाग के निवासी थे ।

नाग नगर के प्रगणा नौ बस्ता सुभ ग्राम
सुर सरि के तट बसत हैं, तहाँ है कवि को धाम ४९
षट जोजन है ग्राम ते, पश्चिम दिसि सो गाउं
वसै विप्र बुद्धिमान तह नौबस्ता जेहि नाउ ५०

इस कवि का रचनाकाल भी ऐसी स्थिति मे असन्दिग्ध नही । अधिक से अधिक यही कहा जा सकता है कि यह कवि स० १८६२ के पहले किसी समय हुआ ।

६६८।५९७

४१ महेशदत्त ब्राह्मण धनौली, जिले बाराबकी, विद्यमान हे । इन्होने भाषा काव्य का बनाना आरम्भ किया है और सस्कृत अच्छी जानते हैं ।

सर्वेक्षण

यह वही महेशदत्त हैं, जिनके भाषाकाव्य सग्रह के परिशिष्ट रूप मे दिए गए कवि परिचय की भ्रान्तियो ने शिव सिंह को सरोज के प्रणयन की प्रेरणा दी । ग्रन्थान्त मे महेशदत्त ने अपना भी परिचय दिया है । कम से कम महेशदत्त का यह कवि परिचय तो प्रामाणिक माना ही जाना चाहिए । इस परिचय के अनुसार महेशदत्त जी सरवरिया ब्राह्मण थे । यह मझगवाँ के सुकुल थे । बाराबकी जिले की रामसनेही तहसील के अन्तर्गत गोमती नदी के उत्तारी किनारे पर स्थित धनौली ग्राम के यह निवासी थे । यह उसी जिले मे रामनगर की पाठशाला मे सस्कृत के अध्यापक थे ।[2] इनके पिता का नाम अवधराम था । कवि क्षेमकरण जी इनके नाना थे । महेशदत्त का जन्म स०

(१) भाषाकाव्य सग्रह, पृष्ठ १३० (२) वही, पृष्ठ १३८

१८६७ की आषाढ पूर्णिमा को हुआ था। विनोद के अनुसार (२१५७) इनका मृत्यु-सवत् १९६० है। विनोद मे इनके निम्नलिखित ग्रन्थो की सूची दी गई है—

१ विष्णुपुराण भाषा, गद्य-पद्य दोनो मे, १९२६।२२१ एल।
२ अमर कोष टीका १९२६।२२१ ए।
३ देवी भागवत।
४ वाल्मीकीय रामायण, १९२६।२२१ ई, एफ, जी, एच, आई, जे, के—क्रमश. सातो काण्ड।
५ नृसिहपुराण, १९२६।२२१ बी, सी, डी।
६ पद्मपुराण।
७ काव्य सग्रह—स० १९३२ मे नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ से प्रकाशित।
८ उमापति दिग्विजय।
९ उद्योग पर्व भाषा।
१० माधव निदान।
११ कवित्त रामयण टीका। इनके अतिरिक्त इनका एक ग्रन्थ खोज मे मिला है जिसका उल्लेख विनोद मे नही है।
१२ अठारह पुराण की नामावली और पचीस अवतारो के नाम १९२६।२८५।

६६९।५९८

(४२) मनभावन ब्राह्मण, मुडिया, जिले शाहजहाँपुर, स० १८३० मे उ०। यह कवि चन्दनराय के १२ शिष्यो मे प्रथम शिष्य हैं। इनका बनाया हुआ ग्रन्थ 'शृङ्गार-रत्नावली' देखने योग्य है।

सर्वेक्षण

चन्दन का कविताकाल स० १८२०-५० है।[1] अत इनके शिष्य मनभावन का सरोजदत्त स० १८३० इनका रचनाकाल ही है। कवि के सम्बन्ध मे कोई अन्य सूचना सुलभ नही।

६७०।५९९

(४३) मनियार सिंह कवि क्षत्रिय, काशी निवासी, स० १८६१ मे उ०। यह महा उत्तम कवि हो गए है। इनके बनाये हुए दो महा सुन्दर ग्रन्थ 'हनुमत छब्बीसी' और 'सौन्दर्य लहरी' भाषा हमारे पुस्तकालय मे मौजूद हैं।

---

(१) भाषाकाव्य सग्रह, कवि सख्या २२४

सर्वेक्षण

मनियार सिंह ने महिम्न कवित्त मे अपना परिचय इस प्रकार दिया है—

सम्वत् के अकरध्र, वेद वसु चन्द्र पूरो
चन्द्रमा सरद को वरद धर्म धन को,
चाकर अखडित श्री रामचन्द्र पण्डित को
मुख्य शिष्य कवि कृष्ण लाल के चरन को।
मनियार नाम स्याम सिंह को तनय
भो उदय क्षत्रि वश काशी पुरी निवसन को
पारवती कन्त जस जग मे दिगन्त कियो
भाषा अर्थवत पुष्पदत महीमन को।

इस कवित्त के अनुसार मनियार सिंह, स्यामसिंह के पुत्र थे, काशी वासी थे, जाति के क्षत्रिय थे, कृष्णलाल कवि के मुख्य शिष्य थे, रामचन्द्र पडित के अखडित चाकर थे। इन्होने स० १८४६ मे पुष्पदत कृत 'शिव महिम्न स्तोत' का अनुवाद कवित्तो मे किया। इस ग्रन्थ मे कुल ३५ कवित्त हैं। इस ग्रन्थ का एक अन्य नाम 'भावार्थ चन्द्रिका'[1] भी है।

इन्ही मनियार सिंह के समकालीन और इसी काशी मे एक और मनियार सिंह हुये हैं, उनसे यह कवि मनियार सिंह भिन्न हैं। दूसरे मनियार सिंह काशी नरेश महाराज चेतसिंह के चचेरे भाई थे, मेहरवान सिंह के पुत्र थे, जाति के भूमिहार थे और कवि नही थे। वे वारेन हेस्टिग्ज के उपद्रव के समय अपने ६०० घुडसवारो के साथ चेतसिंह के साथ थे।

मेरे पास भारत जीवन प्रेस, काशी के छपे हुए मनियार सिंह के तीन ग्रन्थ हैं—

(१) महिम्न कवित्त, ३५ कवित्त।
(२) हनुमत् छब्बीसी, २६ कवित्त।
(३) सुन्दर काण्ड, ६३ छन्द, मुख्यत कवित्त।

सरोज उल्लिखित इनका 'सौन्दर्य लहरी' नामक ग्रन्थ भी खोज मे मिल चुका है।[2] इसमे देवी की स्तुति के १०३ कवित्त हैं। इसका रचनाकाल स० १८७३ है—

रुद्र नैन सहित समुद्र वसु चन्द्र जुत
सम्वत् सुहात शुद्ध सर्व सुखखानी को,
जेठ तिथि पूरन सपूरन दिनेस दिन
महिमा बखानी सर्व सिद्धि फलखानी को।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९०३।४७ (२) खोज रिपोर्ट १९२३।२७०

सामसिंह सुत मनियार सिंह नाम
काशी नगर निवासी, विश्वनाथ राजधानी को ।
कामना कलपतरु फरो भरो वैभव ते
ग्रन्थ अवतरो श्री भवानी राजरानी को ॥ १०३ ॥

कवि अपनी छाप मनियार या यार रखता है ।

मनियार सिंह के सुन्दर काण्ड का विवरण एक खोज रिपोर्ट मे हनुमान विजय नाम से दिया गया है । कवि का नाम चिंतामनि मनियार सिंह दिया गया है ।[1] निम्नलिखित दल का ठीक अर्थ न समझ सकने के कारण यह भ्रान्ति हो गई है—

"चिन्तामनि मनियार के, हनूमान कपि भूप ।"

इसका अन्वय यह है 'कपि भूप हनुमान मनियार के चिन्तामनि' हैं ।

६७१।५४६

(४४) मधुसूदन कवि, स० १६८१ मे उ० । इनके कवित्त हजारे मे है ।

सर्वेक्षण

सरोज मे मधुसूदन के नाम पर जो सवैया उद्धृत है, वह इनका न होकर परवत कवि का है । उक्त सवैये मे आया मधुसूदन शब्द कृष्णार्थक है ।[2] इस एक सवैये के आधार पर इस कवि का अस्तित्व सम्भव नही । यदि हजारे मे इस कवि के और छन्द भी रहे हो तो बात दूसरी है ।

६७२।५४७

(४५) मधुसूदन माथुर ब्राह्मण, इष्टकापुरी के, स० १८३९ मे उ० । इन्होंने रामाश्वमेघ भाषा रचा है ।

सर्वेक्षण

रामाश्वमेघ के रचयिता मधुसूदनदास इष्टकापुरी अर्थात् इटावा के रहने वाले थे । यह माथुर चौबे थे और अपनी छाप मधु अरि दास भी रखते थे । माधुरीदास भी इनका उपनाम है । इन्होंने गोविन्द दास नामक एक धनाढ्य सज्जन के कहने पर स० १८३२ मे रामाश्वमेघ नामक ग्रन्थ बनाना प्रारम्भ किया था । यह ग्रन्थ रामचरित मानस की प्रणाली पर है । इसकी अनेक प्रतियाँ खोज मे मिल चुकी है ।[3] आचार्य शुक्ल के अनुसार यह सब प्रकार से गोस्वामी जी के रामचरित मानस का परिशिष्ट होने योग्य है । कवि ने ग्रन्थ के प्रारम्भ मे कहा है—

---

(१) खोज रिपोर्ट १९३२।४५ (२) देखिए, वही ग्रन्थ कवि संख्या ४७२ (३) खोज रिपोर्ट १९०१।८७, १९०६।१८१, १९२०।९७, १९२३।२५१ ए०, बी, १९२६।२७८ ए, बी०, सी

१—श्री गोबिंद वर दास, जिन प्रति वैभव कियो,
तिन मोहिं कीन्ह प्रकास, बरनहु रघुवर मख कथा

२—मधु अरि दास नाम यह मोरा
माथुर जाति जन्म मति थोरा
भानुसुता सुरसरिहि मझारा
पावन देस विदित ससारा
नगर इष्टिका पुरी सुहावन
निकट कलिन्द सुता वहै पावन

सम्वत वसु दस सत गनहु, पुनि बतीस मिलाइ
दिवस मास आषाढ रितु, पावस सुखद सुहाइ

शुक्ल पक्ष तिथि, द्वंज सुहाई
जीव वार सुभ मगलदाई
हसत जोग, पुनर्वस रिक्षा
प्रकटी प्रभु जय वरनन इच्छा
श्री रामानुज कूट मझारी
कीन्ह कथा आरम्भ विचारी

६७३।५५६

(४६) मनीराम कवि २, मिश्र, कन्नौज वाले, स० १८३६ मे उ० । 'छन्द छप्पनी' नामक पिंगल का बहुत ही सुन्दर ग्रन्थ इनका बनाया हुआ है । पिंगल के सकेतो को भली-भाँति खोला है ।

सर्वेक्षण

छन्द छप्पनी की प्रति खोज मे मिल चुकी है ।[1] खोज रिपोर्ट के अनुसार इसकी रचना स० १८२६ मे हुई थी । उद्धृत अशो मे रचनाकालसूचक अश नही है । ग्रन्थ की पुष्पिका से इनकी जाति मिश्र और इनके पिता का नाम इच्छाराम ज्ञात होता है—

"इति श्री मिश्र कासादनो इच्छाराम, तनय मनीराम वर्न विरचिताया छन्द छप्पनी समाप्त पूस वदि ४, सुवार स० १८५३ ।"

इस ग्रन्थ के मिल जाने से स्पष्ट है कि सरोज मे दिया हुआ सवत् १८३६ ठीक है और यह कवि का उपस्थितिकाल है ।

---

(१) खोज रिपोर्ट १६१२।१०७

६७४।५५८

(४७) मनीराम कवि १। इनके शृङ्गार के सुन्दर कवित्त है।

सर्वेक्षण

मनीराम नाम के ५ कवि खोज मे मिले हैं जिनमे से किसी के भी साथ इनका अभेद स्थापित करना सम्भव नही—

(१) मनीराम वाजपेयी, हम्मीरहठ के रचयिता चन्द्रशेखर वाजपेयी के पिता। यह मुअज्जमाबाद, जिला फतेहपुर के पास के रहने वाले थे। चन्द्रशेखर का जन्म स० १८५५ मे हुआ था, अत इनके पिता का रचनाकाल यही होना चाहिये।[१]

(२) मनीराम, सारसग्रह के रचयिता। उपलब्ध ग्रन्थ का प्रतिलिपिकाल स० १७८३ है।[२]

(३) मनीराम, मनीराम द्विज, उनियारा के राजा महासिंह तोमर के आश्रित। इन्होंने वलभद्र के नखशिख की टीका[३] गद्य मे स० १८४२ मे की थी। एक और मनीराम द्विज का नख-शिख[४] मिला है। यह दोनो मनीराम सम्भवत· एक ही है।

४ मनीराम, असनी के महापात्र, नरहरि के वशज, शाहजहाँ के दरबारी। इनके ग्रन्थ ये हैं—

(क) पातिशाही के कवित्त शाहिजहाँ के, १९४१।१८५ क।

(ख) मनीराम के कवित्त, १९४१।१८५ ख।

(५) मनीराम, आनन्द मङ्गल[५] नामक ग्रन्थ के रचयिता।

६७५।५६०

(४८) मनीराय कवि। ऐजन। (इनके शृङ्गार के सुन्दर कवित्त हैं।)

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही।

६७६।५५४

४९ मदन गोपाल शुक्ल, फतूहाबाद वाले, स० १८७६ मे उ०। यह कवि बहुत दिन तक

---

(१) विनोद १२०४ (२) खोज रिपोर्ट १९०३।१५१ (३) खोज रिपोर्ट १९१२।१०८ (४) खोज रिपोर्ट १९४१।५३५ (५) खोज रिपोर्ट १९०६।२९०

जनवार वशावतस श्री राजा अर्जुन सिंह बलरामपुर के यहाँ थे और उन्ही की आज्ञानुसार 'अर्जुन विलास' नामक महा विचित्र ग्रन्थ बनाया है। दूसरा ग्रन्थ इनका वैद्य-रत्न वैद्यक का महा सरल है।

सर्वेक्षण

सरोज मे मदनगोपाल शुक्ल का विवरण महेशदत्त मिश्र के 'भाषा काव्यसग्रह' के आधार पर है। इसके अनुसार अर्जुन विलास की रचना स० १८७६ मे हुई थी। यह ग्रन्थ खोज मे भी मिल चुका है।[1] यह ग्रन्थ किसी एक विषय का नही है। इसमे वैद्यक, ज्योतिष, नीति, न्याय, व्याकरण, तन्त्र-मन्त्र शास्त्र, अलङ्कार, शृङ्गार, अर्जुनसिंह का दान तथा इनकी महिमा और इनके पुत्र दिग्विजय सिंह का जन्म आदि वर्णित हैं।

रस[६] रिषि[७] वसु[८] इन्दु[१] सम्वत मे ग्रन्थ मञ्जु
मदनगोपाल बुध कीन्हे जो प्रकास है
भूप विरदावली सवृद्धि वेस वसावलि
मन्त्री मित्र सभा सैन धाम ग्राम वास है
व्याकरन नीति न्याय जोतिसादि धर्मशास्त्र
तन्त्र मन्त्र काव्य कोष वैदक विकास है
गुन अभिराम जामे ललित ललाम धरि
अर्जुन महीप नाम अर्जुन विलास है

मदनगोपाल साङ्कृतगोत्रीय कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। यह बलरामपुर नरेश अर्जुनसिंह के आश्रित थे। अर्जुनसिंह का शासनकाल स० १८७४-८७ है। ग्रन्थ, कवि के प्रौढ वय की कृति है। उस समय उसकी आयु कम से कम ४० वर्ष की होनी चाहिए। ऐसी स्थिति मे कवि का जन्मकाल स० १८३६ के आस-पास होना चाहिए। ग्रन्थरचना के कुछ ही दिनो के पश्चात् कवि का देहावसान हो गया। बाद मे अर्जुनसिंह के पुत्र दिग्विजय सिंह ने स० १९१८ मे यह ग्रन्थ कवि के पुत्र से लिया और इसका नाम अर्जुनविलास रखा। लाला गोकुलप्रसाद ब्रज ने प्रारम्भ मे एक पद्य-बद्ध भूमिका जोड दी। ऊपर उद्धृत छन्द इन्ही ब्रज जी का है, मदनगोपाल शुक्ल का नही है। ब्रज लिखित उक्त कवित्त के आगे के दो छन्द ये है—

अर्जुन महीप के नाम ग्रन्थ
अर्जुन समान गुन विसद पन्थ
रस अमित मञ्जु ज्यो सुमन बाग
कवि मधुकर के अनुराग जाग

प्रश्नवत दोहा

सुमन सुवासित ग्रन्थ यह, क्यो नहिं भयो प्रकास
विधिवत कहि कारन कवन, जो सुनि ससय नास

---

(१) खोज रिपोर्ट १९२३।२५०, १९४७।२७८

कवि और आश्रयदाता की मृत्यु के कारण ग्रन्थ नही प्रकाशित हो सका था । वाद मे इसके प्रकाशन की व्यवस्था दिग्विजय सिंह ने की ।[1]

वहुत सम्भव है वैद्य रत्न अर्जुनविलास का ही वैद्यक वाला अश हो ।

६७७।५९४

(५०) मदनगोपाल २ ।

सर्वेक्षण

इन मदनगोपाल का एक शृङ्गारी कवित्त सरोज मे उद्धृत है । यह कवित्त दिग्विजय भूषण मे भी है[2] और वही से सरोजकार ने इसे लिया है । व्रज जी ने मदनगोपाल फतूहावादी के अर्जुनविलास की पद्यवद्ध भूमिका लिखी थी और उससे पूर्ण परिचित थे । मेरी दृढ धारणा है कि व्रज जी ने उक्त कवित्त अर्जुनविलास से लिया है । मदनगोपाल जी के पुत्र के यहाँ से उक्त पोथी स० १९१८ मे महाराज दिग्विजय सिह ने मँगाई थी । व्रज जी ने स० १९१९ मे दिग्विजय भूषण की रचना की । अत उन्होंने इस ग्रन्थ का भी उपयोग अपने सग्रह मे किया, इसमे सन्देह नही । ऐसी दशा मे इन मदनगोपाल का समावेश मदनगोपाल सख्या ६७६ मे हो जाता है ।

६७८।५५५

(१५) मदनगोपाल कवि ३, चरखारी वाले ।

सर्वेक्षण

इनके नाम पर सरोज मे उद्धृत कवित्त मे मदन छाप है । यह छाप किसी मदनमोहन या मदनकिशोर नामक कवि की भी हो सकती है । यह कवि प्रथम एव द्वितीय सस्करणो मे नही है । ५५५ कवि सख्यक उदाहरण के पहले प्रमाद से 'मदनगोपाल कवि चरखारी वाले' लिखा हुआ है, इसी आधार पर तृतीय सस्करण से इस नवीन कवि की सृष्टि हो गई है । यह कवि वस्तुत ६७९ सख्यक मदनमोहन हैं ।

६७९।

(५२) मदनमोहन कवि, चरखारी वाले, बुन्देलखण्डी २, स० १८८० मे उ० । यह महा निपुण कवि राजा चरखारी के मन्त्रियो मे थे । इनके शृङ्गार के कवित्त सुन्दर है ।

---

(१) माधुरी, जून १९२८, पृष्ठ ६६१-६४ (२) दिग्विजय भूषण, पञ्चदश प्रकाश (नख शिख) छन्द १९

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही। मदनमोहन चरखारी वाले की कविता का उदाहरण नही दिया गया है। मेरा ऐसा ख्याल है कि ५५५ कवि सख्या पर उदाहृत कवित्त इन्ही का है। प्रमाद से उदाहरण के ऊपर 'मदनगोपाल कवि चरखारीवाले' लिखा हुआ, होना चाहिये था 'मदनमोहन कवि चरखारी वाले'।' कवित्त मे केवल 'मदन' छाप है और ६७८ सख्यक मदनगोपाल का विवरण प्रथम एव द्वितीय सस्करणो मे है भी नही। इस प्रकार ६७८-६७६ सख्यक मदनगोपाल एव मदनमोहन एक ही कवि हे, असल नाम मदनमोहन हे। प्रथम सस्करण मे १८८२ है, जो सप्तम सस्करण मे १८८० हो गया है।

६८०।५६६

(५३) मनोहर कवि १, राय मनोहरदास कछवाहा, स० १५६२ मे उ०। यह महाराज अकवरशाह के मुसाहव फारसी और सस्कृत भापा के महाकवि थे। फारसी मे अपना नाम तोसनी लिखते थे।

सर्वेक्षण

तुजुक जहाँगीरी, प्रथम भाग, पृष्ठ १७, में लिखा है कि राय मनोहरदास की युवावस्था अकवर के दरवार मे एव वृद्धावस्था जहाँगीर के दरवार मे वीती। अकवर की इन पर वडी कृपा थी। इन्हे उसने राय की उपाधि दी थी। जहाँगीर ने अपने राज्यारोहण के आठवें वर्ष, स० १६७० मे इनको एकहजारी का पद और आठ सौ घोडे प्रदान किये थे। इनके एक पुत्र था पृथ्वीचन्द, जिसको जहाँगीर ने ५०० का मनसव, ४०० घोडो सहित, प्रदान किया था और उसे भी राय की उपाधि दी थी। इसकी मृत्यु जहाँगीर के राज्यारोहण के १५वें वर्ष स० १६७७, मे कागरा के मोर्चे मे हो गई थी। पुत्र पिता के जीवनकाल ही मे मर गया था। अत राय मनोहरदास स० १६७७ के वाद तक जीवित रहे। इनका उत्कर्पकाल स० १६४५ है ?[1]

सरोज मे दिया सम्वत १५६२, ईस्वी सन् मे कवि का उपस्थिति काल है। अकवरी दरवार के प्राय सभी कवियो का समय सरोज मे ईस्वी-सन् ही मे दिया गया है। अत यह स० १६४६ मे उपस्थिति थे। यह सवत सव प्रकार से शुद्ध है।

---

(१) अकवरी दरबार के हिन्दी कवि, पृष्ठ ४६-५०

विनोद (८३) मे एव तदनुकरण पर शुक्ल जी के प्रसिद्ध इतिहास[1] मे राय मनोहर-दास का एक ग्रन्थ शतप्रश्नोत्तरी नाम का स्वीकृत है। १०० प्रश्न एव उत्तर वाला यह ग्रन्थ मनोहरदास निरञ्जनी का है।[2] ग्रियर्सन (१०७) के अनुसार इनके बाप का नाम लूनकरन था।

६८१।५७०

(५४) मनोहर २, काशीराम रिसालदार, भरतपुर वाले, विद्यमान हैं। इनका बनाया हुआ मनोहर शतक ग्रन्थ सुन्दर है।

सर्वेक्षण

श्री मयाशकर जी याज्ञिक के अनुसार भरतपुर नरेश महाराज जसवन्त सिंह, (शासन-काल स० १९०९-५०) के समय मे काशीराम जी, मनोहर, रिसालदार ने मनोहर शतक नामक शृङ्गार ग्रन्थ रचना।[3] याज्ञिक महोदय के कथन से सरोजकार की बात पुष्ट होती है।

६८२।५९३

(५५) मनोहर कवि ३, स० १७८० मे उ०।

सर्वेक्षण

भ्रमरगीत सम्बन्धी इनका एक सवैया सरोज मे उद्धृत है। इस सवैय को ध्यान मे रखते हुए स्वीकार करना पडता है कि इसके रचयिता गौड सम्प्रदाय के अनुयायी मनोहरदास थे, जो वृन्दावन मे रहा करते थे और जो प्रियादास के गुरु थे। इन्होंने स० १७५७ मे राधारमण रस सागर लीला या श्री राधिकारमण रस सागर[4] नामक ग्रन्थ कवित्त सवैयो मे लिखा था।

संवत सत्रै सै सतावन जानि कै
सावन वदि पचमी महोत्सव मानि कै
निरखि श्री राधा रमण छवि लडैती लाल कौं
हरि हाँ, मनोहर सम्पूरन वनराज विचार्यो ख्याल कौं ११४

१९४१ वाली रिपोर्ट मे मनोहरदास जी का गुरु सम्प्रदाय दिया हुआ है। चैतन्य महा-प्रभु के शिष्य श्री गोपाल भट्ट, गोपाल भट्ट के श्रीनिवासाचार्य, श्रीनिवासाचार्य के रामचरण चटराज। यही चटराज सम्भवत चटर्जी हैं। यही रामचरण मनोहरदास के गुरु थे। इनका उल्लेख रामशरण नाम से राधारमण रस सागर के इस कवित्त मे हुआ है।

---

(१) हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ २०५ (२)देखिए, भक्ती ग्रन्थ,कवि सख्या ७११। (३) माधुरी, फरवरी १९२७, पृष्ठ ८४ (४) खोज रिपोर्ट १९०९।१९१, १९१२।१०९, १९४१।१८६

प्रथम प्रणाम गुरु श्री रामशरण नाम
चन्द राज चरण सरोज मन भायो है
कृपा करि दीनी सिक्षा दीक्षा परिचर्या निज
राधिका रमण वृन्दावन दरसायो है
सद्गुण समुद्र दया सिंधु प्रेमा पारावार
सील सदाचार की वितान जग छायो है
ता दिन सफल जन्म भयो है अनाथ वन्धु
मनोहर नाम राखि मोहि अपनायो है १

निम्नलिखित कवित्त मे कवि ने अपने वृन्दावनी होने का उल्लेख किया है।

राधिका रमण रस सागर सरस सत
पठत दिवस रैनि चैन नहीं मन मै
सेवन की अभिलाष राखत छिन ही छिन
विन दरसन तलफत वृन्दावन मै
ऐसो वडभागी पै करत कृपा अभिमत
निरखें युगल हित पुलकित तन मै
मनोहर करै आस वास नित निकट मै
रहै श्री गोपाल भट परिकर मै ११३

प्रियादास ने स० १७६९ मे भक्तमाल की टीका लिखी थी। इस टीका मे इन्होने मनोहर-दास का गुरु रूप मे स्मरण किय है।[१]

सरोज मे दिया स० १७८० कदापि जन्मकाल नही हो सकता, जैसा कि ग्रियर्सन मे (४०२) स्वीकृत है। यह कवि के जीवन का सान्ध्यकाल है।

विनोद मे (६११) इनके नाम-लीला और धर्म-पत्रिका नामक दो अन्य ग्रन्थो का और उल्लेख हुआ है।

६८३।५३५

(५६) माधवानन्द भारती, काशीस्थ, स० १९०२ मे उ०। इन्होने शकर दिग्विजय को सस्कृत से भाषा किया है।

सर्वेक्षण

काशी वाले माधवानन्द भारती, रामकृष्ण भारती के शिष्य थे। इनके लिखे दो ग्रन्थ खोज मे मिले हैं।

---

(१) देखिये, खोज रिपोर्ट, कवि सख्या ४६६।

(१) कैलाश भाग—१६२६।२७७ ए। यह स्कन्द पुराण के ब्रह्मोत्तर खण्ड का अनुवाद है। इसका रचनाकाल फागुन सुदी १०, शनिवार, स० १६२६ है।

इन्दु, अंक विंशतिषट साला
आनन्दवन यह चरित रसाला
फागुन सुखद पाख उजियारा
दसमी रवि पुष्य सनिवारा

ग्रन्थारम्भ मे यह लेख है—

"अथ कैलाश मार्ग अर्थात स्कन्द पुराण का ब्रह्मोतर खण्ड जिसको श्री स्वामी रामकृष्ण भारती, शिष्य माधवानन्द भारती ने दोहा-चौपाई-छन्द रीति से काशी जी मे भाषा किया। सवत १६२६ मे शीतलाप्रसाद सराफ ने लिखा।"

(२) शकर दिग्विजय,—१६२६।२७७ बी। ग्रन्थ की पुष्पिका मे तो कवि का नाम आया ही है, बीच मे भी छन्दो मे व्यवहृत हुआ है।

जो पायो है मोद, यह मैं माधव भारती
तैसो लहै प्रमोद, सम्भु कृपा से लोग सब

ग्रन्थ का प्रतिलिपिकाल स० १६२७ है। इस सस्कृत से अनूदित ग्रन्थ मे शकराचार्य का जीवन-चरित है।

सरोज मे दिया स० १६०२ कवि का जन्मकाल कदापि नही हो सकता, जैसा ग्रियर्सन (५८७) और विनोद (२८७०) मे स्वीकृत है। यदि इसे जन्मकाल माना जायगा, तो यह स्वीकार करना पडेगा कि कवि ने २४ वर्ष की वय के पहले ही सन्यास ले लिया था। यह धारणा ठीक नही, क्योकि यह सन्यास लेने की वय नही है। अत यह कवि का उपस्थिति काल ही है।

६८४।५३६

(५७) महेश कवि, स० १८६० मे उ०।

सर्वेक्षण

जिन महेश की कविता सरोज मे उदाहृत है, वे कान्यकुब्ज ब्राह्मण पाण्डेय थे, कन्नौज के निकट मीरा की सराय के रहने वाले थे। यह ज्योतिष, कोष, पिङ्गल, अलङ्कार, नायिका भेद मे प्रवीण थे। द्विज देव जी के दरबारी थे। इनका देहान्त अपने घर पर ही १८६३ ई० (स० १६२०) मे अर्द्धाङ्ग रोग से हुआ। मातादीन मिश्र ने कवित्त रत्नाकर मे यह सब सूचना

दी है। महेश जी इन्ही मातादीन के गाँव के रहने वाले थे, अत सूचना प्रामणिक है। सरोज मे इनका समय स० १८६० दिया गया है। यह १८६० वस्तुत ईस्वी-सन् मे उपस्थितिकाल है। इन महेश के अतिरिक्त खोज मे तीन महेश और मिले है —

(१) महेश उपनाम है। कवि का पूरा नाम राजा शीतलावख्श बहादुर सिह है। यह वस्ती के राजा थे। इनके पुत्र का नाम पटेश्वरीप्रसाद नारायण सिह था। महेश जी कवि लछिराम के आश्रयदाता थे। इन्होने शृङ्गार शतक[1] की रचना की है। विनोद (२३६४) के अनुसार यह स० १९४१ के लगभग तक जीवित थे। खोज के अनुसार यह स० १८६० के लगभग वर्तमान थे। यह सूचना शृङ्गार शतक के वर्तमान स्वामी से मिली है और प्रामाणिक प्रतीत होती है।

(२) महेश, हम्मीर रासो के[2] रचयिता। प्राप्त प्रति स० १८६१ की लिखी हुई है, अत यह इस सवत के पहले के हैं।

(३) महेशदत्त त्रिपाठी, यह नन्दापुर जिला सुलतानपुर के रहने वाले थे। इन्होने नीलकण्ठ के पुत्र भट्ट शकर रचित सस्कृत ग्रन्थ व्रतार्क का अनुवाद हिन्दी गद्य मे व्रतार्क भाषा नाम से किया है।[3]

६८५।५३७

(५८) मदनमोहन, स० १६९२ मे उ०। इनके पद रागसागरोद्भव मे है।

सर्वेक्षण

यह पद रचने वाले भक्त कवि हैं। इनके पद राग कल्पद्रुम मे है। सरोज मे उद्धृत पद मे मदनमोहन छाप है, फिर भी यह सम्भव है कि यह प्रसिद्ध सूरदास मदनमोहन से भिन्न न हो।

सूरदास मदनमोहन अकवर के समय मे सडीला के अमीन थे। सारी सरकारी जमा साधुओ को खिला कर यह आधी रात मे खिसक गए थे। यह ब्राह्मण थे। भागने के अनन्तर इन्होंने गौडीय सम्प्रदाय मे दीक्षा ले ली थी। यह वृन्दावन मे रहने लगे थे। शुक्ल जी ने इनका रचना काल स० १५९०-१६०० के बीच अनुमान किया है।[4] अकवर का शासनकाल स० १६६२ तक है। सरोज मे दिया स० १६९२ इनका अन्तिम जीवनकाल हो सकता है।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९४७।२९२। (२) खोज रिपोर्ट १९०१।६२, १९४१।५३६। (३) खोज रिपोर्ट १९२९।२२२ (४) हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ १८७।

६८६।५३८

(५६) मगद कवि ।

सर्वेक्षण

सरोज वाले यह मगद यदि राजा मगद सिंह है, जिनके आश्रय मे मण्डन थे,[१] तो इनका भी रचनाकाल स० १७१६ के आस-पास होना चाहिए ।

६८७।५३६

(६०) माधवदास, ब्राह्मण, स० १५८० मे उ० । इनके पद रागसागरोद्भव मे है। यह महाराज बडे पण्डित थे और जगन्नाथपुरी मे रहा करते थे। एक बार ब्रज मे भी आये थे ।

सर्वेक्षण

सरोजकार ने माधवदास जगन्नाथी का विवरण भक्तमाल के आधार पर दिया है ।

पहिले वेद विभाग कथित पुरान अष्टादस
भारत आदि भागौत मथित उद्धारयो हरि जस
अब सोधे सब ग्रन्थ अर्थ भाषा विस्तारियो
लीला जे जै जैति गाय भव पार उतारयो
जगन्नाथ इष्ट वैराग्य सींव करुणा रस भीज्यो हियो
विनै व्यास मनो प्रगट ह्वै, जग को हित माधो कियो ७०

प्रियादास की टीका से ज्ञात होता है कि यह ब्राह्मण थे और अपनी पत्नी के मर जाने पर विरक्त हो जगन्नाथ जी मे रहने लगे थे ।

माधोदास दिवज निज तिया तन त्याग कियो
लियो मन जानि जग ऐसोई व्योहार हे
× × ×
आये नीलगिरि धाम रहे गिरि सिन्धु तीर
अति मतिधीर भूख प्यास न विचार है ३१५

प्रियादास की टीका के ही अनुसार यह एक बार वृन्दावन भी आये थे ।

देखि-देखि वृन्दावन मन मे मगन भए
गए श्री विहारी जू के चरना तहाँ पाये है। ३२५

---

(१) हिन्दी साहित्य का इतिहास सख्या ६६६

प्रियादास जी ने १२ कवित्तो मे (३१५-२६) इनके अनेक चमत्कार वर्णित किये है। माधो जगन्नाथी के निम्नलिखित ग्रन्थ खोज मे मिले हैं—

१ ध्यान लीला—राज० रिपोर्ट, भाग १, सख्या ५८। इसमे कुल ७७ छन्द हैं। विषय ईशाराधना है। ग्रन्थ के अन्तिम चरणो से जगन्नाथ से इनका सम्पर्क स्पष्ट है।

सोइ हरी श्री नील शिखर करै भोग विलास।
श्री जगनाथ को दासनुदास गावै माधोदास। ७७

नीलशिखर शब्द प्रियादास के ऊपर उद्धृत कवित्त मे भी आया है। यह स्पष्ट ही जगन्नाथपुरी की ओर इङ्गित करता है।

२ नारायण लीला—राज० रिपोर्ट, भाग १, सख्या ६२, १६०६।१७७ए। इस ग्रन्थ के भी प्रारम्भिक एव अन्तिम अशो से इसी बात की सूचना मिलती है।

आदि—जय जय जय श्री जगन्नाथ नारायण स्वामी
ब्राह्मादि कीतान्तजीवं सर्वांतरयामी

अन्त—शङ्ख चक्र गदा पदम मुकुट कुण्डल पीताम्बरधारी
नील शिखर श्री भ्राजमान सेवक सुखकारी
श्री जगन्नाथ को रूप देखि मन भयो हुलास।
श्री जगन्नाथ को दास गावै गुसाई श्री माधोदास। २९६

(३) रथ लीला, १९४१।१९६। इस ग्रन्थ की ये पक्तियाँ इन्हे माधो जगन्नाथी की रचना सिद्ध करती है।

(क) जै जै जै श्री जगनाथ रथ विजै मुरारी
(ख) श्री जगन्नाथ कौ दासानुदास गावै माधोदास १५५

स० १८२५ मे प्रतिलिपित वाणी सग्रह[1] मे माधो जगनाथी के पद पृष्ठ २५४-५५ पर हैं।

सरोज मे दिया हुआ स० १५८० माधोदास जगन्नाथी का रचनाकाल ही होना चाहिए। ग्रियर्सन (२६) और विनोद (१०१) मे यह जन्म सवत के रूप मे स्वीकृत है। सरोज मे माधवदास के नाम पर यह पद उद्धृत है।

श्री गोकुलनाथ निज वपु धरयो
भक्त हेत प्रगटे श्री वल्लभ जग ते तिमिर जू हर्यो

---

(१) राज० रिपोर्ट, भाग ३, पृष्ठ ६५

नन्द नन्दन भए तव गिरि गोप ब्रज उद्धर्‌यो
नाथ विटठल सुवन वहै कै परम हित अनुसर्‌यो
अति अगाध अपार भवनिधि तारि अपनो कर्‌यो

यह पद निश्चय ही माधौदास जगन्नाथी का नही है। सरोज मे परिचय एक माधवदास का है और उदाहरण दूसरे माधवदाम का। जिन माधवदास का उदाहरण दिया गया है, वे गोसाईं गोकुलनाथ के शिष्य हैं। गोकुलनाथ विट्ठलनाथ के सात पुत्रो मे से चौथे थे और इनकी गद्दी गोकुल मे थी। यही गोकुलनाथ वार्ता साहित्य के आदि जनक कहे जाते है। यह स० १६४२ मे आचार्य हुए थे। यही विट्ठलनाथ का तिरोधानकाल है। ऐसी स्थिति मे माधवदास का समय भी स० १६४२ के आस-पास ही होना चाहिए। स० १६५६ का रचा हुआ विनोद सागर नामक कृष्ण चरित सम्वन्धी एक ग्रन्थ मिला है। इसके रचयिता का नाम माधवदास है। समय की दृष्टि से यह माधवदास प्रसग प्राप्त माधवदास प्रतीत होते हैं।

सवत सोरह सै ओनसठा
रितु वसन्त उपजो उतकठा
चैतहि शुक्ल पक्ष तिथि सातै
गुरु मुख जोग ब्रह्म अघ घातै
अकबर पातिशाह कै राजू
एहि कथा को किएउ समाजू

—खोज रिपोर्ट १६०५।६८

ग्रियर्सन (२६) मे माधवदास को भगवत रमित या रसिक का पिता कहा गया है। भगवत रसिक के पिता का भी नाम माधवदास था, पर वह माधौदास जगन्नाथी एव गोकुलनाथ के शिष्य माधवदास से भिन्न हैं। भगवत रसिक हरिदास के शिष्य थे। 'वन परिक्रमा' के रचयिता एक माधवदास मिले हैं, जो हरिदास के शिष्य थे।

परम भगत रुचि उपजहि उर आणद प्रकाश
श्री हरिदासन ; दास गावै माधौदास

—राज० रिपोर्ट, भाग १, ग्रन्थ सख्या १२८

सम्भवत यह 'वन परिक्रमा' वाले माधवदास ही भगवत रसिक के पिता माधवदास हैं और पिता-पुत्र दोनो हरिदास के शिष्य हैं।

६८८।५४०

(६६) महाकवि, स० १७८० मे उ०।

सर्वेक्षण

महाकवि, कालिदास त्रिपाठी का उपनाम है। सरोज सप्तम सस्करण मे महाकवि की कविता के उदाहरण वाले पृष्ठ पर पाद टिप्पणी मे सशोधक रूपनारायण पाण्डेय लिखते हैं। पण्डित कृष्णविहारी मिश्र, बी० ए०, एल एल० बी० ने प्रमाणित किया है कि महाकवि कालिदास कवि ही का एक उपनाम है।

विनोद (७१९) के अनुसार भी महाकवि असल मे कालिदास त्रिवेदी का उपनाम है। वधू विनोद मे इन्होने इस नाम से भी कविता की है। ऐसा मानते हुए भी विनोद मे कालिदास का विवरण ४३१ सख्या पर और महाकवि का ७१९ सख्या पर अलग-अलग दिया गया है। यह आश्चर्यजनक तो है ही, हास्यास्पद भी है। इसी प्रकार ग्रियर्सन मे भी इनका विवरण अलग-अलग है। सरोजकार को यह भ्रांति दिग्विजय भूषण के कारण हुई। दिग्विजय भूषण मे कालिदास और महाकवि दो अलग-अलग कवियो के रूप मे स्वीकृत हैं। सरोजकार ने कालिदास त्रिवेदी का विवरण हजारे के आधार पर दिया है और महाकवि का ग्रहण दिग्विजय भूषण के आधार पर किया है। महाकवि के नाम पर उद्धृत सवैया दिग्विजय भूषण से लिया गया है। सुधा सर के अन्त मे दी हुत छापी कवि सूची मे भी कालिदास और महाकवि एक व्यक्ति के दो नाम स्वीकृत किए गए हैं।[1]

सरोज मे दिया स० १७८० कालिदास उपनाम महाकवि का अन्तिम जीवनकाल हो सकता है।

६८९।५४२

(६२) महताब कवि। इन्होने नखशिख बहुत सुन्दर बनाया है।

सर्वेक्षण

सरोज मे किसी राना और हिन्दूपति बादशाह की प्रशस्ति मे लिखा हुआ महताब का यह कवित्त भी उद्धृत है।

कहै मन चित को लगाय कै चरन रहौं
स्रवन कहत गुन माथ सो गहो करौं

---

(१) राज० रिपोर्ट भूमिका, पृष्ठ १२९

वैन यो कहत राना रूप को पढौंगो हयाँई
नैन जू कहत रूप लाह सो लहो करौं
त्योही महताब दोइ मास घर सीख विन
वैस यो कहत परदेस क्यो रहो करौं
कीजिए दुरस न्याउ हिन्दूपति बादशाह
कौन को उराहनो द्यो कौन को कहो करौं

राना और हिन्दूपति ये दोनो अभिधान मेवाड नरेशो के हैं। विनोद (७८४) मे महताव को उन हिन्दूपति का आश्रित कहा गया है, जिनके यहाँ लाला भिखारीदास थे। दास के समय को ध्यान मे रखते हुए इनका समय स० १८०० दिया गया है। पर राना और हिन्दूपति शब्दो पर ध्यान देते हुए इस समय मे सशोधन के लिए प्रचुर अवकाश है।

६६०।५४५

(६३) मीरन कवि। ऐजन। (इन्होने नखशिख बहुत सुन्दर बनाया है।)

सर्वेक्षण

इस शृङ्गारी कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही।

६६१।५५०

(६४) मल्ल कवि, स० १८०३ मे उ०। भगवतराय खीची के यहाँ थे।

सर्वेक्षण

सरोज मे मल्ल के नाम पर दो कवित्त दिए गए हैं। दोनो भगवन्तराय खीची से सम्बन्धित हैं। एक मे उनकी दुन्दुभी का और दूसरे मे उनकी मृत्यु का वर्णन हुआ है। अत इनका उक्त खीची के दरबार मे रहना सिद्ध है। भगवन्तराय का मृत्यु काल स० १८१७ माना जाता है। अत सरोज मे दिया हुआ मल्ल कवि का सवत १८०३ ठीक है और यह इनका उपस्थितिकाल है।

महाराज छत्रसाल के पौत्र और हृदय साहि के पुत्र कुँवर मैदिनीमल्ल भी मल्ल नाम से रचना करते थे। इन्होने स० १७८७ मे श्री कृष्णप्रकाश नाम से हरिवश पुराण का अनुवाद किया था।[1]

---

(१) खोज रिपोर्ट १९०५।६९

६६२।५५१

(६५) मानिकचन्द कवि, स० १६०८ मे उ० । रागसागरोद्भव मे इनके पद है ।

सर्वेक्षण

मानिकचन्द का यह पद सरोज मे उदाहृत है ।

जै जन गए सरन ते तारे
दीनदयाल प्रगट पुरुषोत्तम विट्ठलनाथ ललारे
माला कण्ठ तिलक माथे दै सङ्ख चक्र वपु धारे
मानिकचन्द प्रभु के गुन ऐसे महा पतित निस्तारे

इस पद से ज्ञात होता है कि मानिकचन्द जी वल्लभ सम्प्रदाय के वैष्णव थे और विट्ठलनाथ जी के शिष्य थे। ऐसी दशा मे सरोज मे दिया स० १६०८ एकदम ठीक है और यह कवि का उपस्थितिकाल है। मानिकचन्द की कथा २५२ वैष्णवो की वार्ता मे है। इनकी वार्ता वारहवी है। यह आगरा के रहने वाले क्षत्री (खत्री) थे।

मानिकचन्द की एक कृति गुसाई जी की वधाई उपलब्ध हुई है। यह गुसाई जी और कोई नही, विट्ठलनाथ जी हैं।

वहुरि कृष्ण श्री गोकुल प्रगटे श्री विट्ठलनाथ हमारे
द्वापर वसुधा भार हर्‌यो हरि, कलयुग जीव उधारे

× × ×

ऐसो को कवि है, जुग महियाँ वरने गुन जु तिहारे
मानिकचन्द प्रभु को सिव खोजत, गावत वेद पुकारे

—राज० रिपोर्ट भाग ३, पृष्ठ २७

यह ग्रन्थ स० १६०७ और १६४२ के वीच किसी समय रचा गया होगा।

६६३।५६१

(६६) मानिकचन्द कायस्थ, स० १९३० मे उ० । जिले सीतापुर के अच्छे कवि है ।

सर्वेक्षण

स० १९३० के ४ वर्ष वाद ही सरोज का प्रणयन हुआ, अत यह सवत कवि का रचनाकाल है। कवि सरोजकार का समकालीन है। ग्रियर्सन मे (७१०) व्यर्थ के लिए सन्देह उठाया गया है कि यह जन्म सवत है अथवा रचना सवत।

६६४।५५२

(६७) मुनिलाल कवि ।

सर्वेक्षण

मुनिलाल का रामप्रकाश नाम अलङ्कार ग्रन्थ खोज मे मिला है।[1] रिपोर्ट मे रचना-काल सूचक छन्द उद्धृत नही है, पर रचना काल स० १६४२ (?) दिया गया है। इस अलङ्कार ग्रन्थ मे सभी छन्द रामपरक है, ऐसा प्रतीत होता है। सरोज मे इनका राम के पद-नख का उज्ज्वल वर्णन करने वाला एक कवित्त उद्धृत है। हो सकता है, यह कवित्त इसी रामप्रकाश ग्रन्थ का हो। सम्भवत यह ६४१ सख्यक मून या मुनिलाल से अभिन्न हैं। मून की अधिकाश रचनाएँ रामपरक है।

६६५।५४८

(६८) मतिराम त्रिपाठी टिकमापुर, जिले कानपुर के, स० १७३८ मे उ०। यह महाराज भाषा-काव्य के आचार्यो मे गिने जाते हैं। हिन्दुस्तान मे बहुधा बडे राजो-महाराजो के यहाँ थोडे-थोडे दिन रहे और राजा उदोतचन्द, कमाऊँ नरेश और भाऊ सिंह हाडा छत्रसाल राजा कोटाबन्दी और शम्भुनाथ सुलकी इत्यादि के यहाँ बहुत दिनो तक रहे। ललित-ललाम अलङ्कार का ग्रन्थ राव भाऊ सिंह कोटा वाले के नाम से बनाया और छन्दसार पिङ्गल फतेसाहि बुन्देला श्रीनगर के नाम से रचा। रसराज नायिका भेद का ग्रन्थ बहुत सुन्दर बनाया।

सर्वेक्षण

मतिराम रीतिकाल के सुप्रसिद्ध कवियो और आचार्यो मे है। यह परम्परा से भूषण और मतिराम के भाई प्रसिद्ध हैं। इनका जन्म स० १६७४ के लगभग तिकवाँपुर, जिला कानपुर मे रत्नाकर त्रिपाठी के यहाँ हुआ था। इनका मृत्यु सवत् १७७३ माना जाता है। कृष्णविहारी मिश्र ने मतिराम ग्रन्थावली का सम्पादन किया है, जो गङ्गा पुस्तक माला, लखनऊ से प्रकाशित हो चुकी है। अभी हाल ही मे इसका एक नया सस्करण हुआ है। इसमे मतिराम के तीन सुप्रसिद्ध ग्रन्थ, रसराज, ललित-ललाम और मतिराम सतसई सङ्कलित हैं। मतिराम के निम्न-लिखित ग्रन्थ खोज मे मिले है—

(१) ललित-ललाम—१६०३।६७, १६२३।२७६ ए, बी, सी, १६२६।३०० ए, बी, सी। मतिराम बूँदी के महाराव भाव सिंह के यहाँ बहुत दिनो रहे। यही स० १७१६-४५ के बीच इन्होने किसी समय यह अलङ्कार ग्रन्थ रचा। १७१६-४५ भाव सिंह का शासनकाल है।

---

(१) खोज रिपोर्ट १६०६।२६८

(२) रसराज—१९००।४०, १९०१।६७, १९०६।१९, ६ ए, १९२०।१०५ बी, १९२३।२७६ ए, १९२६।३०० डी, ई, एफ, जी, एच, आई, जे। यह नायिका भेद और शृङ्गार रस का ग्रन्थ है। यह कवि की श्रेष्ठतम कृति है।

(३) सतसई—१९०९।१९६, १९२३।२७६ डी। १९२६।३०० के, एल। बिहारी सतसई के बाद श्रेष्ठता मे इसी सतसई का स्थान है।

(४) साहित्य सार—१९०६।१९६ बी। यह नायिका भेद सम्बन्धी ग्रन्थ है।

(५) लक्षण शृङ्गार—१९०६।१९६ सी। यह भाव अनुभाव सम्बन्धी ग्रन्थ है।

(६) अलङ्कार पञ्चाशिका—प०, १९२२।६४ ए। स० १७४७ मे कुमाऊँ के राज उदोतचन्द के पुत्र ज्ञानचन्द के लिए रचित।

(७) फूल मञ्जरी—यह ग्रन्थ खोज मे नही मिला है। इसका परिचय कृष्णविहारी मिश्र ने मतिराम ग्रन्थावली की भूमिका मे दिया है।[1]

इन ग्रन्थो के अतिरिक्त दो ग्रन्थ और भी मतिराम के कहे गए है। एक है बरवै नायिका भेद[2] और दूसरा है वृत्त कौमुदी।[3] बरवै नायिका भेद वस्तुत रहीम की कृति है। रहीम ने केवल उदाहरण लिखे थे। सम्भवत मतिराम ने इन्हे अलक्षण देख और सुलक्षण पा सलक्षण कर दिया।

यह नवीन सग्रह सुनो जो देखै चित देइ
बिविध नायका नायकनि जानि भली विधि लेइ १६७

अस्तु यह बरवै नायिका भेद किसी एक व्यक्ति की रचना नही है। यह एक नवीन सग्रह है।

वृत्त कौमुदी की उपलब्धि ने पिछले ३५ वर्षो से साहित्य जगत मे हलचल सी मचा रखी है। इस ग्रन्थ का रचनाकाल स० १७५८, कार्तिक शुक्ल १३ है।

सवत सत्रह सै बरस अट्ठावन सुभ साल
कातिक सुक्ल त्रयोदशी करि विचार शुभ काल २७

यह ग्रन्थ सरूप सिह बुन्देला के लिए रचा गया था।

वृत्त कौमुदी ग्रन्थ की सरूसी सिंह सरूप
रची सुकवि मतिराम सो पढो सुनो कवि रूप २८

---

(१) मतिराम ग्रन्थावली, पृष्ठ २२०-२२ (२) खोज रिपोर्ट १९२३।२७६ ई, (३) खोज रिपोर्ट १९२०।१०५ ए, प १९२२।६४ सी।

यह सरूप सिंह मधुकर साह के वश के हैं। मधुकर साह के ८ पुत्र थे। इनमे से एक प्रसिद्ध वीर सिंह देव थे, जिन्होंने सलीम, वाद मे जहाँगीर, के लिए अकवर के परम मित्र अवुल-फजल की हत्या की थी और जिनके लिए महाकवि केशव ने 'वीर सिंह देव चरित' की रचना की थी। इन वीर सिह देव के १२ पुत्र थे। जुझार सिंह वडे थे। यही राजा हुए। शेप ११ भाइयो को जागीरे मिली। इन्ही मे एक चन्द्रभान थे। इनको कुरीच, कोच और कोडार की जागीर मिली थी। इन चन्द्रभान के पुत्र मित्र साहि वुन्देला थे। इन्ही मित्र साहि के पुत्र स्वरूप सिंह वुन्देला थे, जो वृत्त कौमुदी के रचयिता मतिराम के आश्रयदाता थे। कवि ने ग्रन्थारम्भ मे राज वंश का यह वर्णन दिया है।

मधु साहि सुवन बुन्देल घर, वीर सिंह अवतार लिय
जय जुय प्रवल मडिय जगत, जयति विदितदिस हद्द किय ८

× × ×

हुव चन्द्रभान बुन्देल सोइ, वीर सिंह पचम सुवन
वर खग्ग दद्धि दिसि दद्धि लिय, गज्जि दुसह दव्विय दूवन ९

× × ×

बुन्देल वीर कुँजरपती चन्द्रभान महिपाल सुव
घनि घीर धरनि मण्डन प्रबल मित्र साहि नरनाह हुव १०

× × ×

नृप मित्र साहि नन्दन प्रवल गहिरवार गम्भीर भुव
कुल दीप वीर बुन्देल पर अव सरूप अवतार हुव ११

इन्ही सरूप सिंह के लिए छन्दसार अथवा वृत्त कौमुदी नामक ग्रन्थ रचा गया।

भिक्षुक आए भुवन के सवन लहै मन काम
त्योंही नृप की सुजस, भायो कवि मतिराम १३

ताहि वचन सनमानि कै कीन्हो हुकुम सुजान
ग्रन्थ सस्कृत रीति सो भाषा करौ प्रमान १५

छन्दसार सग्रह रच्यौ सकल ग्रन्थ मति देखि
बालक कविता सिद्धि का भाषा सरल विशेष १६

यहाँ तक तो कोई वाधा नही। आगे कवि ने स्ववश वर्णन किया है। इसके अनुसार मतिराम वत्स गोत्री त्रिपाठी थे, वनपुर के रहने वाले थे, चक्रमणि त्रिपाठी के प्र-प्रपौत्र, गिरि-धर के प्रपौत्र, वलभद्र के पौत्र, विश्वनाथ के पुत्र और श्रुतिघर के भतीजे थे।

तिरपाठी वनपुर वसै वत्स गोत्र सुनि गेह
विवुध चन्द्रमनि पुत्र तहं गिरिधर गिरिधर देह २१

भूमिदेव वलभद्र हुव तिनहि तनुज मुनि जान
मण्डित-पण्डित मडली मडन मही जहान २२

तिनको तनय उदार मति विश्वनाथ हुव नाम
दुतिधर श्रु तिधर को अनुज, सकल गुनन को धाम २३

तासु पुत्र मतिराम कवि, निज मति के अनुसार
सिंह सरूप सुजान को बरन्यो सुजस अपार २४

इस वशावली से स्पष्ट है कि वृत्त कौमुदी के रचयिता मतिराम प्रसिद्ध भूषण के भाई नही थे, क्योकि भूषण तो—

दुज कनौज कुल कश्यपी, रत्नाकर सुत धीर
वसत तिविक्रम पुर सदा, तरनि तनूजा तीर २६

थे। इस प्रकार वृत्त कौमुदी के रचयिता मतिराम वनपुर के रहने वाले हैं। यह वनपुर वही हैं, जहाँ के रहने वाले प्रसिद्ध कवि कालिदास, उनके पुत्र उदयनाथ कवीन्द्र, पौत्र दूलह हुए हैं और जहाँ इन्द्रजीत त्रिपाठी नामक एक अन्य कवि हुए है, जो औरङ्गजेब के आश्रित थे। भूषण वनपुर के रहने वाले नही हैं, यह त्रिविक्रमपुर अथवा तिकवाँपुर के रहने वाले थे। मतिराम विश्वनाथ त्रिपाठी के पुत्र हैं, भूषण रत्नाकर के। मतिराम १० कुल के निकृष्ट कान्य-कुब्जो मे हैं, वत्स गोत्र के हैं, भूषण पट्कुल के उत्तम कान्यकुब्जो मे है, कश्यप गोत्र के हैं। ऐसी दशा मे वृत्त कौमुदी के कर्ता मतिराम प्रसिद्ध महाकवि भूषण के भाई नही। पर परम्परा कहती है कि मतिराम भूषण के भाई थे। सरोज, ललित-ललाम और मतिराम सतसई भूषण के भाई मतिराम की रचनाएँ हैं। फिर इसका समाधान क्या।

चरखारी नरेश विक्रम साहि के दरबार मे विहारी लाल नामक एक कवि हुए हैं। इन्होने उक्त विक्रम साहि रचित विक्रम सतसई की टीका स० १८७२ मे रस चन्द्रिका नाम से की थी। इस टीका मे कवि ने अपना वश वर्णन भी किया है।[1]

वसत त्रिविक्रमपुर नगर कालिन्दी के तीर
विरचौ भूप हमीर जनु मध्य देस कौ हीर २८

भूषन चिन्तामन तहाँ कवि भूषन मतिराम
नृप हमीर सनमान ते कीना निज निज धाम २९

हैं पन्ती मतिराम के सुकवि विहारी लाल
जगन्नाथ नाती विदित सीतल सुत सुभ चाल ३०

कस्यप वस कनोजिया विदित त्रिपाठी गोत
कविराजन के वृन्द मे कौविद सुमति उदोत ३१

---

(१) ना० प्र० पत्रिका, माघ १९८५ मे प्रकाशित चरखारी राज्य के कवि शीर्षक लेख।

विविध भाँति सनमान करि ल्याए चित महिपाल
आए विक्रम की सभा सुकवि विहारी लाल ३२

इस वर्णन के अनुसार कालिन्दी तट स्थित तिकवाँपुर मे भूषण चिन्तामणि और मतिराम नामक प्रसिद्ध कवि हुए। टीकाकार विहारी लाल इन्ही मतिराल के पन्ती, प्रपौत्र, जगन्नाथ के पौत्र, एव शीतल के पुत्र थे। यह सब कश्यप गोत्रीय त्रिपाठी कनौजिए थे। विहारीलाल के इस वर्णन से परम्परा का पोषण होता है।

ऐसी स्थिति मे यह स्वीकार करना पडता है कि मतिराम नाम के दो कवि हुए। दैवयोग से दोनो समकालीन भी थे। इनमे से एक पट्कुल के प्रसिद्ध कश्यप गोत्रीय त्रिपाठी थे, तिकवाँपुर के रहने वाले थे, प्रसिद्ध कवि भूषण त्रिपाठी के भाई थे, रसराज, ललित-ललाम और मतिराम सतसई के रचयिता थे। दूसरे वनपुर के रहने वाले, दशकुल के वत्स गोत्रीय त्रिपाठी थे, विश्वनाथ के पुत्र थे और वृत्तकौमुदी अथवा छन्दसार के रचयिता थे। मतिराम के नाम पर मिलने वाले शेष ग्रन्थ साहित्य सार, लक्षण शृङ्गार के सम्वन्ध मे निश्चयपूर्वक नही कहा जा सकता कि ये किस मतिराम के हैं। अलङ्कार पञ्चाशिका भूषण के भाई मतिराम की रचना है, क्योकि भूषण का सम्वन्ध कुमाऊँ दरवार से था, उनके भाई मतिराम का भी उस दरवार से सम्वद्ध होना असमीचीन न होगा।

सरोज मे छन्दसार-पिङ्गल से दो छन्द दिए गए हैं। प्रथम कवित्त मे मित्र साहि के सुपुत्र सरूप सिंह की प्रशस्ति हे, जिससे स्पष्ट है कि छन्दसार दूसरे मतिराम की ही रचना है। इसकी रचना पहले मतिराम ने फतेसाहि बुन्देला श्रीनगर के नाम पर नही की, जैसा कि सरोज का कथन है। सरोज मे दिया हुआ स० १७३८ ठीक है और मतिराम का उपस्थिति-काल है।

६६६।५४६

(६६) मण्डन कवि, जैतपुर बुन्देलखण्डी, स० १७१६ मे उ०। यह कवि बुन्देल खण्ड मे महाकवि हो गए हैं। यह राजा मङ्गद सिंह के यहाँ रहे। रस रत्नावली, रस विलास, नयन-पचासा, ये तीनो ग्रन्थ इनके वनाए हुए महा उत्तम हैं। रस रत्नावली, साहित्य मे देखने योग्य ग्रन्थ है।

सर्वेक्षण

मण्डन का पूरा नाम है मणिमण्डन मिश्र। यह जैतपुर के रहने वाले थे और अपने युग के प्रख्यात कवियो मे थे। यह मङ्गद सिंह के आश्रित थे। इनके निम्नलिखित ग्रन्थ खोज मे मिले हैं—

(१) जनक पचीसी—१९०६।७२। किरीटधारी राम का २५ चौबोलो मे वर्णन। प्रत्येक छन्द का अन्तिम चरण यह है—

"कहैं मडन श्रीपति मुकुट धरै, हम देखे राम जनकपुर मे"

(२) रस रत्नावली—१९२०।१०३, १९२६।२९२ ए, वी, सो, डी, १९४१।१८३। यह नायिका भेद का ग्रन्थ है। रचनाकाल नही दिया गया हे। इसमे २३४ कवित्त, सवैये, दोहे छन्द हैं। १९४१ वाली प्रति स० १७८८ की लिखी हुई है।

(३) पुरन्दर माया—१९०६।२९१

(४) जानकी जू को व्याह—१९०६।७५

(५) शृङ्गार कवित्त०–१९२३।२६५। यह फुटकर कवित्तो का सग्रह है अथवा रस रत्नावली का एक अश है।

(६) वारामासी, १९४४। २६५। यह वारामासी कवित्त-सवैयो मे हे।

सरोज उल्लिखित रस विलास और नयन पचासा अभी तक खोज मे नही मिले हैं।

सुधा रस मे नाम रासी कवियो की सूची मे दो मण्डन हैं। एक तो प्राचीन मण्डन हैं, यह जैतपुरी मण्डन है। दूसरे मण्डन जैपुर वाले लाल कवि के नाती हे। जयपुर के यह लाल कवि सम्भवत श्रीकृष्ण भट्ट लाल कवि कलानिधि हैं।

कुछ लोगो का ख्याल है कि पुरन्दर माया के रचयिता और गौड क्षत्रिय राजा केशरी सिंह के आश्रित मणिमण्डन मिश्र मण्डन कवि से भिन्न है।[1] विनोद (३५८) मे यह कृति मणिमण्डन मिश्र उपनाम मण्डन के नाम पर चढी है और इसका रचनाकाल स० १७१६ दिया गया है, सून का सङ्केत नही किया गया है। पुरन्दर माया के रचयिता मणिमण्डन मिश्र का उल्लेख विनोद तृतीय भाग मे पुन पृष्ठ १४२५ पर हुआ है। इस वार इन्हे स० १९४७ से पूर्व उपस्थिति कहा गया है। इससे स्पष्ट है कि ३५८ सख्या पर पुरन्दर माया का जो रचनाकाल स० १७१६ दिया गया है, वह केवल प्रमादवश। यह वस्तुत सरोज मे दिया हुआ मडन का समय है। मेरी समझ से मण्डन और मणिमण्डन मिश्र एक ही व्यक्ति हे। आश्रयदाता की विभिन्नता से कवि की विभिन्नता वहुत आवश्यक नहीं। एक कवि का अनेक राज-दरवारो से सम्वन्वित होना प्राय देखा गया है।

विनोद (३५८) के अनुसार मण्डन गो० तुलसीदास के समकालीन थे। अव्दुल रहीम खानखाना की प्रशसा मे लिखा हुआ इनका यह कवित्त विनोद की वात को पुष्ट करता है।

---

(१) माधुरी, दिसम्बर १९२७ में कवि-चर्चा स्तम्भ के अन्तर्गत 'मण्डन' लेख, पृष्ठ ७२५-२६ और माधुरी, जून १९२८ मे कवि-चर्चा के अन्तर्गत 'हिन्दी के कुछ कवियों के विषय मे टिप्पणियां' शीर्षक लेख, पृष्ठ ६६२-६३

तेरे गुन खानखाना परत दुनी के कान
यह तेरे कान गुन अपनो धरत है
तू तो खग्ग खोलि खोलि खलन पै कर लेत
लेत यह तोपै कर नेक ना डरत है
मण्डन सुकवि तू चढत नव खण्ड पर
यह भुजदण्ड तेरे चढिए रहत है
ओहती अदलखान साहब तुरुक मान
तेरी या कमान तोसो तेहु सो करत है

स० १७१६ मण्डन का अन्तिम जीवन काल हो सकता है। रस रत्नावली मे कवि ने अपने को द्विजराज कहा है।

करि करि मथ्यो रसार्नव, कवि मण्डन द्विजराज
काढी रस रत्नावली, भाषा कवि के काज

रस रत्नावली मे मगद सिंह एव दराब खाँ की प्रशस्तियाँ भी हैं। ये सरोज मे उद्धृत हैं। मिश्र-बन्धुओ का अनुमान है कि मण्डन ने कुछ पद भी बनाए थे।

६६७।५५६

(७०) मेघा कवि, स० १८६७ मे उ०। इन्होने चित्रभूषण नामक चित्र-काव्य का ग्रन्थ बहुत सुन्दर बनाया है।

सर्वेक्षण

सरोज मे चित्र भूषण से उदाहरण दिया गया है। साथ ही रचनाकालसूचक दोहा भी उद्धृत किया गया है, जिससे सिद्ध है कि सरोज मे दिया स० १८६७ कवि का उपस्थिति-काल है।

सवत मुनि[७] रस[६] वसु[८] ससी[१], जेठ प्रथम सनिवार
प्रगट चित्र भूषण भयो, कवि मेधा सिंगार २

यह एक सग्रह-ग्रन्थ है जिसमे दूसरो की रचनाएँ एकत्र हैं।

जे भविष्य व्रतमान कवि, तिनसो विनय हमारि
परम कृपाजुत सादरन, करि हैं याहि प्रचार ३
अपनी मति लघु समुझि कै, याते सग्रह कीन
उदाहरन सतकविन के, राख्यो सुमति प्रवीन ४

६९८।५५७

(७१) महबूब कवि, स० १७६२ मे उ० । यह सत्कवियो मे गिने जाते हैं ।

सर्वेक्षण

महबूब कवि का जन्म बुन्देलखण्ड के अलीपुरा राज्य मे स० १७६० मे हुआ था । इनका रचनाकाल स० १७९० है । अलीपुरा मे इनका कोई ग्रन्थ है ।[1] सरोज के उ० का उत्पन्न अर्थ करके यह सवत् कल्पित किया गया प्रतीत होता है ।

विनोद (६५८) मे १९०६ वाली रिपोर्ट के आधार पर इनके एक ग्रन्थ कवित्त का नामोल्लेख है ।

६९९।५६२

(७२) महानन्द वाजपेयी बैसवारे के, स० १९०१ मे उ० । यह महाराज परम शैव, सारी उमर शिव जी के यशो वर्णन मे व्यतीत की । इन्होंने वृहच्छिव पुराण को सस्कृत से भाषा किया है ।

सर्वेक्षण

महानन्द वाजपेयी डलमऊ, रायबरेली के रहने वाले थे । खोज मे इनका 'शिव पुराण' नामक विशालकाय अनुवाद ग्रन्थ पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध दो खण्डो मे मिला है ।[2] प्राप्त प्रति शिवसिंह के पुस्तकालय की है । शिवसिंह ने इसे स० १९२६ मे पाया था और उर्दू मे छपवा भी दिया था । उत्तरार्द्ध की पुष्पिका मे महानन्द के पिता का नाम ठाकुरप्रसाद ज्ञात होता है—

"इति श्री वाजपेयी वशोद्भव श्री ठाकुरप्रसादात्मज श्रीमन्महानन्द विरचिते भाषा श्री शिवपुराणे ।"

विवरण के अनुसार महानन्द जी की मृत्यु शिवसिंह के ग्रन्थ पाने के १० वर्ष पहले अर्थात् स० १९१६ मे हो गई थी । रिपोर्ट के परिशिष्ट १ मे १० वर्ष पूर्व और परिशिष्ट २ मे प्रमादवश १०५ वर्ष पूर्व लिखा है । १० वर्ष पूर्व ही ठीक है, क्योकि सरोज मे इन्हे स० १९०१ मे उ० लिखा है । यदि १०५ वर्ष पूर्व की बात ठीक होती तो स० १८०१ मे उ० लिखा गया होता । १९०१ स्पष्ट ही उपस्थिति-काल है । यह रचनाकाल कदापि नही है, जैसा कि ग्रियर्सन (६१९) और विनोद (२२६९) मे स्वीकृत है ।

७००।५९६

(७३) मीराबाई, स० १४७५ मे उ० । हमने इनका जीवनचरित्र तुलसीदास कायस्थ कृत भक्तमाल मे देखा और तारीख चित्तौर से मिलाया, तो बड़ा फरक पाया गया । अब हम इनका

(१) बुन्देल वैभव, भाग २, पृष्ठ ४२८ (२) खोज रिपोर्ट १९२३।२५२ ए बी ।

हाल चित्तौर के प्राचीन प्रवन्ध से लिखते है। यह मीरावाई मारवाड देश मे राना राठौर वशावतस रतिया देशाधिपति के यहाँ उत्पन्न हुई थी। यह रियासत सारे मारवाड के फिरको मे उत्तम है। मीरावाई का विवाह स० १४७० के करीब राना मोकलदेव के पुत्र राना कुम्भकर्णसी चित्तौर नरेश के साथ हुआ था। स० १४७५ मे ऊदा राना के पुत्र ने राना को मार डाला। मीरावाई महा स्वरूपवती और कविता मे अति निपुण थी। इन्होने 'राग गोविन्द' ग्रन्थ भाषा का वहुत ललित वनाया है। चित्तौर गढ मे दो मन्दिर राना रायमल के महल के करीब थे। एक राना कुभा का और दूसरा मीरावाई का। सो मीरावाई अपने इष्टदेव श्यामदेव श्यामनाथ को उसी मन्दिर मे स्थापित कर नृत्य-गीत, भाव-भक्ति से रिझाया करती थी। एक दिन श्यामनाथ मीरा के प्रेम वश होकर चौकी से उतर अङ्क मे ले कर वोले, हे मीरा! केवल इतना ही शब्द राधानाथ के मुँह से सुन मीरावाई प्राणत्याग कर रसिक विहारी गिरिधारी के नित्य विहार मे जाय मिली। इन दोनो मन्दिरो के वनाने मे नव्वे लाख रुपया खर्च हुआ था।

सर्वेक्षण

मीरावाई मेडतिया, सरोज मे इसी को रतिया कहा गया है, के राठौर रत्न सिंह की पुत्री थी। इनका जन्म कुडकी नामक गाँव मे स० १५५५ के आस-पास हुआ था। इनका विवाह स० १५७३ मे उदयपुर एव चित्तौर के महाराना कुमार भोजराज के साथ हुआ था, न कि कुम्भकर्णसी के साथ। विवाह के कुछ ही दिनो वाद, स० १५७५ मे ये विधवा हो गईं। साधुओ के सम्पर्क के कारण राजकुल के लोगो ने इन्हे अनेक कष्ट दिए। अन्तत इन्होने स० १५९१ मे गृह त्याग कर दिया। पहले यह पीहर गई। फिर स० १५९५ मे वहाँ से भी वृन्दावन चली गईं। स० १६०३ मे द्वारिका मे इनका देहावसान हुआ। इनकी भक्ति, माधुर्य भाव की थी। इनके ग्रन्थो की सूची यह है—(१) नरसी जीरो माहेरो, (२) गीत गोविन्द की टीका, (३) राग गोविन्द, (४) सोरठ के पद, (५) मीरावाई का मलार (६) गर्वा गीत, (७) फुटकर पद।[१]

सरोज मे मीरा के नाम पर एक दोहा और एक कवित्त उद्धृत है। दोहा तो हित हरिवश जी का है—

रसन कटै आनहि रटै, फुटै आन लखि नैन
स्रवन फटै ते सुने विन, श्री राधा जस वैन

कवित्त महाकवि देव का है और परम प्रसिद्ध है—

कोऊ कहौ कुलटा कुलीन अकुलीन कहौ

महेशदत्त के काव्य-सग्रह मे मीरा के नाम पर यह सवैया दिया गया है[२]—

पल काटौं इन नैनन के गिरिधारी विना पल अन्त निहारैं
जीभ कटै न भजै नन्दनन्दन, बुद्धि कटै हरि नाम विसारैं

---

(१) मीरावाई की पदावली, पृष्ठ ६–१५ (२) भाषा काव्य-संग्रह, पृष्ठ १०५

मीरा कहै जरि जाहु हियो पद पङ्कज बिन पल अन्त न धारै
सीस नवै व्रजराज बिना वहि सीसहि काटि कुआँ किन डारै

इसी सवैये का संक्षिप्त रूप ऊपर वाला दोहा है। यह काव्य सग्रह मे इस सवैये के ठीक नीचे उद्धृत है। सरोजकार ने यह दोहा यही से लिया।

इस दोहे के पश्चात् दूसरी पक्ति मे मोटे टाइप मे देवदत्त कवि छपा है, कवि शीर्षक के नीचे विषय शीर्षक है, मीरा की प्रशसा। इस शीर्षक के नीचे 'कोऊ कहै कुलटा कुलीन अकुलीन कहै' वाला कवित्त है। सरोजकार ने कवि शीर्षक और विषय शीर्षक की ओर ध्यान नही दिया और देव के कवित्त को मीरा के नाम पर उद्धृत कर दिया।

७०१।

(७४) मनीराम मिश्र, साढि, जिले कानपुर, स० १८९६ मे उ०।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही। ग्रियर्सन (६७६) और विनोद (२१२०) मे सरोज दत्त स० १८९६ जन्मकाल माना गया है। विनोद मे इनके एक ग्रन्थ 'सीता का दर्पण' का उल्लेख है।

७०२।

(७५) मान कवि वन्दीजन चरखारी वाले। यह विक्रम शाह बुन्देला राजा चरखारी के यहाँ थे।

सर्वेक्षण

इन चरखारी नरेश के दरबारी कवि खुमान ही कभी-कभी अपनी छाप मान रखते थे। यह मान १३५ सख्यक खुमान से भिन्न नही हैं। ग्रियर्सन ने भी मान और खुमान को दो भिन्न कवि समझा है। ग्रियर्सन मे खुमान का उल्लेख १७० और मान का ५१७ सख्याओ पर हुआ है।

७०३।

(७६) मधुनाथ कवि, स० १७८० मे उ०।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नहीं है।

७०४।

(७७) मानराय, वन्दीजन असनी वाले, स० १५८० मे उ० । यह अकवर के यहाँ थे ।

सर्वेक्षण

सरोज मे दिया स० १५८० अकवरी दरवार से सम्वन्धित होने के कारण ईस्वी-सन् है और यह मानराय का उपस्थिति-काल है। यह स० १६३७ मे उपस्थित थे । इनके सम्वन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही ।

७०५।

(७८) मीतूदास गौतम, हरवोरपुर, जिले फतेहपुर, स० १६०१ मे उ० । इन्होने वेदान्त के वहुतेरे ग्रन्थ वनाए हैं ।

जीवन मुक्त अद्वैत मत, करी न सहज प्रकास
वीज मन्त्र गति गुह्य यह, समझे मीतूदास

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्वन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही है । ग्रियर्सन (६७९) और विनोद (२२७३) मे सरोज दत्त स० १६०१ जन्मकाल माना गया है । किन्तु यह ठीक नही, यह उपस्थिति-काल है ।

७०६।५८६

(७९) मदन किशोर, स० १७०८ मे उ० । यह वहादुरशाह के यहाँ थे ।

सर्वेक्षण

मदन किशोर जी वहादुर शाह (शासनकाल सन् १७०७-१२ ई०) के यहाँ थे, अत इनका रचनाकाल सन् १७०७-१२ ई० हुआ । सरोज मे दिया स० १७०८ विक्रम सवत् नही है, यह ई०-सन् है । अत मदन किशोर स० १७६५ मे उपस्थित थे ।

सरोज मे ६६३ और ७०६ सख्यक दोनो मदन किशोरो की कविता का पृष्ठ २७३ निर्दिष्ट है । पर उक्त पृष्ठ पर एक ही मदन किशोर हैं, अत दोनो मदन किशोर एक ही हैं । ६६३ सख्यक मदन किशोर का समय स० १८०७ दिया गया है । यह अङ्क-विपर्यय का खेल है और कुछ नही ।

७०७।

(८०) मीरा मदनायक मीर अहमद, विलग्रामी, स० १८०० मे उ० ।

सर्वेक्षण

मदनायक जी विलग्राम के सवसे कुशल और विख्यात सगीतकलाविद् हुए हैं। यह रसलीन (रचनाकाल स० १७५६-१८०७) के समकालीन थे। सरोज मे दिया स० १८०० ठीक है और कवि का उपस्थितिकाल है। सम्भवत इनका भी कुछ प्रभाव रसलीन पर पडा था। इनका असल नाम था सैयद निजामुद्दीन मधनायक। हिन्दी मे इन्होने दो ग्रन्थ लिखे हैं—(१) नाद चन्द्रिका, (२) मधनायक शृङ्गार।

श्री गोपाल चन्द्र सिनहा ने रसलीना नामक एक लेख[1] मे मधनायक जी के सम्बन्ध मे यह सब विवरण सर्वे आजाद, पृष्ठ ३५६, के आधार पर दिया है। यह ग्रन्थ रसलीन के ही साथी श्री मीरगुलाम अली आजाद की रचना है।

७०८।

(८१) मलिक मोहम्मद जायसी, स० १६८० मे उ०। इन्होने पद्मावत भापा वनाया है।

सर्वेक्षण

जायसी प्रसिद्ध सूफी कवि हैं। यह शेरशाह के युग मे हुए। इनका नाम मौहम्मद है, मलिक उपाधि है। जायस के रहने वाले होने के कारण यह जायसी कहलाए। इनकी ग्रन्थावली ना० प्र० सभा, काशी से प्रकाशित हो चुकी है। इसका सम्पादन आचार्य प० रामचन्द्र शुक्ल ने किया है। प्रारम्भ मे अत्यन्त प्रौढ भूमिका लगी हुई है। इसमे पद्मावत, अखरावट और आखिरी कलाम नामक तीन ग्रन्थ सङ्कलित हैं। इधर डा० माताप्रसाद गुप्त ने भी जायसी-ग्रन्थावली का सम्पादन किया है। यह ग्रन्थावली हिन्दुस्तानी एकेडेमी इलाहावाद से प्रकाशित हुई है। इसमे महरी वाईसी नामक एक और ग्रन्थ भी है।

पद्मावत जायसी का ही श्रेष्ठतम ग्रन्थ नहीं है, यह सम्पूर्ण प्रेमाश्रयी निर्गुण धारा का श्रेष्ठतम और प्रतिनिधि ग्रन्थ है। यह दोहा-चौपाइयो मे अवधी भापा मे लिखा गया है। इसमे रतनसेन, अलाउद्दीन और पद्मिनी की कथा है। वीच-वीच मे रह-रह कर अलौकिक सत्ता की भी अद्भुत झाँकी मिलती जाती है। पद्मावत का प्रारम्भ ९२७ हिजरी मे, (स० १५७७ के लगभग) हुआ, पर ग्रन्थ शेरशाह के शासनकाल (स० १५९६-१६००) मे किसी समय पूर्ण हुआ। आखिरी कलाम की रचना वावर के शासनकाल ९३६ हिजरी स० १५८५,) मे हुई थी।

---

(१) सम्पूर्णानन्द अभिनन्दन ग्रन्थ, पृष्ठ १३१

जायसी को स० १६८० मे उ० कहा गया है। सरोज का यह सवत ठीक नही। जायसी इस समय तक कदापि न जीवित रहे होगे। शुक्ल जी ने नसरुद्दीन हुसेन जायसी का उल्लेख किया है, जिन्होने जायसी का मृत्यु काल ४ रज्जव ९४९ हिजरी लिखा है। समय स० १६०० के कुछ पहले ही पड जाता है। जायसी की कब्र राजा अमेठी के किले मे है।

७०६।५४१

(८२) मलिन्द, मिहीलाल वन्दीजन लखनऊ वाले, १९०२ मे उ०।

सर्वेक्षण

सरोज मे मलिन्द जी का एक कवित्त है। इसमे भुआल सिंह की प्रशस्ति है।

भनत मलिन्द महाराज श्री भुआल सिह
तेरी भागि देखे ते दरिद्र भागि जात है

विनोद (२२७२) के अनुसार यह भुआल सिंह या भूपाल सिंह गौरा के ताल्लुकेदार थे।

ग्रियर्सन (६२३) और विनोद मे सरोज दत्त स० १९०१ को जन्मकाल माना गया है। यह ठीक नही।

७१०।

(८३) मुसाहवराजा विजावर। विनय-पत्रिका और रसराज का टीका वहुत सुन्दर वनाया है।

सर्वेक्षण

ग्रियर्सन (८९४) और विनोद (१६६८) मे मुसाहव को विजावर का राजा माना गया है और इन्हे अज्ञातकालीन प्रकरण मे स्थान दिया गया है। मुसाहव विजावर के राजा नही थे। यह विजावर के राजा के मुसाहव थे। यह कवि का नाम नही है, उसका पद है। सरोज के अभिप्रेत मुसावह का नाम है पण्डित लक्ष्मीप्रसाद। यह ब्राह्मण थे। यह विजावर नरेश भानुप्रताप सिंह के दरवारी थे। भानुप्रताप सिंह का शासनकाल, अत उनके मुसाहव पण्डित लक्ष्मीप्रसाद का रचनाकाल, स० १९०५-५६ है।[1] लक्ष्मीप्रसाद जी ने वसन्त पञ्चमी रविवार, स० १९०९ को शृङ्गार कुण्डली[2] नामक ग्रन्थ वनाया था।

---

(१) बुन्देलखण्ड का सक्षिप्त इतिहास अध्याय ३२, अनुच्छेद ३३। (२) खोज रिपोर्ट १९०५।८४।

खण्ड[१] व्योम[०] अरु भक्ति[९] पुन शुद्ध दृष्टि[१] सन वीत
तिथि वसन्त पांचे सुदी, रवि दिन माहु पुनीत

राजा भानुप्रताप के एक दोहे को सूत्र मान कर यह ग्रन्थ कुण्डलिया छन्दो मे रचा गया है। प्रत्येक कुण्डलिया के प्रारम्भ मे यही दोहा है। इसी दोहे पर सभी नायिकाओ की सृष्टि हुई है। इस सम्बन्ध मे कवि स्वय कहता है।

वालमीकि मुनि ने कियो प्रथम ज्यो अश्लोक
तामे पन्छी एक की बरनी कीरति ओक १४८

त्यो दोहा महराज ने कह्यो प्रथम सुख पाई
तामै सब साहित्य के मिले अर्थ सो पाई १४९

तिनहू के उपदेस ते बनी कुण्डली बेस
द्विज लक्ष्मी परसाद नै किया ग्रथ लवलेस १५०

रिपोर्ट मे इस ग्रन्थ की यह कुण्डलिया उद्धृत है। यह ग्रन्थ की अन्तिम कुण्डलिया है।

झर झर झर झर झर लगी, बरसत सुन्दर नीर
ताल तलैया भर गई, नदी चली गम्भीर
नदी चली गम्भीर दुरद दुय मिलि अन्हवावत
अपनी अपनी सुण्ड तुङ्ग धर मोद वढ़ावत
यह विधि राजै रमा भानु परताप भूप धर
चारौ चुरवा रोज कृपा बरसावत झर झर १४७

यदि प्रत्येक कुण्डलिया के प्रारम्भ मे एक ही दोहा है तो राजा भानु प्रतापसिंह का दोहा यह होना चाहिए।

झर झर झर झर झर लगी, बरसत सुन्दर नीर
ताल तलैया भर गई, नदी चली गम्भीर

ग्रन्थ के आदि और अन्त मे लक्ष्मीप्रसाद के पहले मुसाहब शब्द जुडा हुआ है। यह विजावर नरेश के ही मुसाहब हैं। इन अशो ने ही मुसाहब कवि का रहस्य भेद किया है। अन्यथा यह विजावर के कोई राजा ही समझे जाते रहते और ग्रियर्सन तथा विनोद इस भ्रम प्रसार मे सदा सहायक सिद्ध होते रहते, यद्यपि विजावर मे इस नाम का कोई राजा नही हुआ। विजावर राज्य की स्थापना स० १८२६ मे गुमान सिंह द्वारा हुई। सरोज के प्रणयन काल तक यहाँ निम्न लिखित पाँच राजा हुए।[१]

---

१ बुन्देलखण्ड का सक्षिप्त इतिहास, अध्याय ३२, अनुच्छेद ३२, ३३।

१ गुमान सिह, —स० १८२६–५०

२ केसरी सिह, —स० १८५०–६७

३ रतन सिह, —स० १८६८–६०

४ लछमन सिह, —स० १८६०–१६०४

५, भानु प्रताप सिह, —स० १६०४–५६

ग्रन्थ का प्रारम्भिक अश यह है—

"अथ पण्डित श्री मुसाहिव लक्ष्मीप्रसाद कृत शृङ्गार कुण्डली लिख्यते।"

और अन्तिम अश यह है।

"इति श्री शृङ्गार कुण्डली पण्डित श्री मुसाहिव लछमीप्रसाद विरचिताया शृङ्गार काव्य परपूर्ण।"

७११

(८४) मनोहरदास निरञ्जनी इन्होने ज्ञान चूर्ण वचनिका ग्रन्थ वेदान्त मे वनाया है।

सर्वेक्षण

मनोहरदास निरञ्जनी सम्प्रदाय के साधु थे। यह स० १७१७ के आस-पास विद्यमान थे। खोज मे इनके निम्नलिखित ग्रन्थ मिले हैं—

१ ज्ञान वचन चूर्णिका—१६०३।८४, १६०६।१६३ ईस्वी, १६२३।२७२वी। यह वही ग्रन्थ है जिसका उल्लेख सरोज मे ज्ञान चूर्ण वचनिका नाम से हुआ है। इस ग्रन्थ मे यत्र-तत्र वचनिका, (गद्य), का भी प्रयोग हुआ है।

२ ज्ञान मञ्जरी—१६०६।२६३ए, १६२३।२७२ए। यह ग्रन्थ वैशाख स० १७१६ को पूर्ण हुआ।

सम्वत सत्रह सै मही वर्ष सोरहे माँहि
वैसाख मासे शुक्ल पक्ष तिथि पूनो है ताहि ६६

एक छन्द मे मनोहरदास का नाम आया है—

मनोहर दास निरञ्जनी, सो स्वामी सो दास
स्वामी दास भयो एक सो, महाकाश घटाकाश १००।

इस ग्रन्थ मे कवित्त एव दोहो मे वेदान्त कथन है। कुल १०० छन्द हैं।

३ वेदान्त-परिभाषा—१६०६।२६३ वी, १६२३।२७२ सी। इस ग्रन्थ की रचना स० १७१७ आश्विन वदी १४ रविवार को हुई।

सवत सतरा से मही, सोरह बरस बितीत
व्यूष सत्रह महि करी षट मास जाहि बितीत ८७

आसौज वदि हे चसुरदसी, कृष्ण पक्ष अतवार
भाषा पूरन सब भई, मान एक कृतकार ८८

इसमे भी एक छन्द मे कवि का नाम आया है।

मनोहर दास निरञ्जनी, करी सु भाषा सार
थोरी सी विस्तार नहि, अर्थ सवै विस्तार ८५

यह ग्रन्थ दोहा-चौपाइयो मे है।

४ शतप्रश्नोतरी—१९०३।८३, १९०६।२९३सी, १९४७।२८६। इस ग्रन्थ मे वेदान्त सम्वन्धी १०० प्रश्न और उनके उत्तर हे।

५ पट् प्रश्नी निर्णय, १९०१।५८, १९०६।२९३ डी।

६ शतप्रश्नी शतिका १९०३।१५२। यह 'शतिका' सम्भवत 'सटीक' है।

७१२।

(८५) मतादीन मिश्र, सरायमीरा, । वि० । शाहनामे का अनुवाद हिन्दी मे किया और कवित्त रत्नाकर नामक सग्रह वनाया। इस ग्रन्थ के वनाने मे हमको इनसे वहुत सहायता मिली है।

सर्वेक्षण

सरायमीरा वाले पण्डित मातादीन ने स० १९३० मे कवित्त रत्नाकर नामक ग्रन्थ श्री कालिन ब्रौनिग के आदेशानुसार सङ्कलित किया था।

नभ[०] राम[३] अक[९] ससि[१] मनहि आनि
विक्रम के सम्वत लेहु जानि
श्री कालिन ब्रौनिग हुक्म दीन
तव मिश्र ग्रन्थ निर्माण कीन

स० १९३२ मे यह ग्रन्थ नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ से छपा और निस्फील्ड जी की आज्ञा से पाठ्य-क्रम मे निर्धारित हुआ।

भुज[२] राम[३] निधि[९] जलनिधिकुमार[१]
यह विक्रम सवत पुनि बिचार
निस्फील्ड वहादुर महाराज
इस्कूल शिशुन के पढन काज

छप जाय ग्रन्थ यह हुक्म दीन
अरु कोर्स मद्धि मञ्जूर कीन

श्री कालिन ब्रौनिंग और निस्फील्ड ये दोनो शिक्षा विभाग मे डायरेक्टर थे। यह ग्रन्थ दो भागो मे है। प्रथम भाग मे २६ और द्वितीय भाग मे १८ कुल ४२ कवियो की रचनाएँ सङ्कलित हैं। गिरिधर कविराय, तुलसी, देव, ब्रह्म, शुकदेव की रचनाएँ दो भागो मे हैं। दोनो भागो के अन्त मे कवि परिचय भी गद्य मे दिया गया है। सरोजकार ने इस परिचय से लाभ उठाया है।

मातादीन ने इस ग्रन्थ मे अपना भी परिचय दिया है। इस परिचय के अनुसार यह कन्नौज के पास मीरा की सराय के रहनेवाले परसू के मित्र थे। यह कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। पहले घर पर ही थोटी-बहुत कैथी और हुण्डीवाली विद्या पढी। फिर सन् १८५२ ई० मे आगरे के नार्मल स्कूल मे पढने गए। १८५४ ई० मे नार्मल पास किया। फिर क्रमश फर्रुखाबाद, कन्नौज, बाँदा, मिर्जापुर, इटावा, बिलग्राम, फैजाबाद, रायबरेली, खीरी मे अध्यापन किया। कवित्त रत्नाकर के प्रणयनकाल मे इनकी नौकरी २२ वर्ष की हो चुकी थी और यह खीरी के हाई स्कूल मे ज्येष्ठना के क्रम से पाँचवे अध्यापक थे। यह कविता भी करते थे। उसमे अपना उपनाम भोग मिश्र कहा है। विनोद (२४६६) मे इन्हे १९४० मे उपस्थित कवियो की सूची मे स्थान दिया गया है।

७१३।

(८६) मूक जी कवि वन्दीजन, राजपूतानेवाले, स० १७५० मे उ०। इस महाकवि ने खीची, जो एक शाखा चौहानो की है, उसकी वशावली और प्राचीन और नवीन राजो के जीवन-चरित्र की एक पुस्तक बहुत अच्छी बनाई है।

सर्वेक्षण

ग्रियर्सन (६६२) मे इनका नाम भोग जी दिया है और टाड के अनुसार इन्हे १८२९ ई० मे उपस्थित कहा है। अत सरोज मे दिया इनका समय स० १७५० अशुद्ध है। इनका उपस्थित काल स० १८८६ है। विनोद मे (६७२) सरोज का अनुसरण है।

७१४।

(८७) मान कवीश्वर वन्दीजन, राजपूताने के, स० १७५६ मे उ०।

यह कवि ब्रज भाषा मे महा निपुण थे। राना राज सिंह सिसोदिया मेवाडवाले की आज्ञानुसार एक ग्रन्थ राजदेव विलास नामक उदयपुर के हालात का बनाया है। इस ग्रन्थ मे राना राज सिंह और औरङ्गजेब बादशाह की लडाइयाँ बहुत कविता के साथ वर्णन की गयी है।

सर्वेक्षण

ग्रियर्सन मे (१८६) टाड के आधार पर मान का समय स० १७१७ दिया गया है, जो विनोद (४१०) मे भी स्वीकृत है। राजदेव विलास सभा से राज विलास नाम से प्रकाशित है। इसका एक नवीन सपादित सस्करण प्रकाशित हो रहा है। जिसका सम्पादन अगरचन्द नाहटा ने किया है।

राज विलास का प्रारम्भ स० १७३४ मे आसाढ सुदी ७ बुद्धवार को हुआ था। इसमे १७३७ तक की ही घटनाओ का विवरण है। इसी वर्ष राजसिंह जी का देहावसान हुआ था।

सुभ सम्वत दस सात, वरस चौंतीस बधाई
उत्तम मास असाढ दिवस सत्तमी सुखदाई
विमल पाख बुधवार सिद्धि वर जोग सम्पत्तौ
हरष कार रिसि हस्त रासि कन्या ससि रत्तौ
तिन द्यौस मात त्रिपुरा सुतारि, कीनो ग्रन्थ मंडान कवि
श्री राज सिंघ महाराज को, रचियहि जस ज्यौं चन्द रवि

—राज विलास, प्रथम विलास, छन्द ३८

कवि का पूरा नाम मान सिह था, इनकी छाप मान थी। यह चारण नही थे, जैन यती थे। दीक्षा के पहले इनका नाम कल्याण साहे था—

'कलियान साहे कवि मान कहि सक्कर चौकी छीर युत'

—राज विलास, आठवाँ विलास, छन्द ९४

स० १७७० मे विहारी मतसई की टीका करने वाले मानसिह से यह भिन्न हैं।[1]

७१५।

(८८) मानसिह महाराजा कछवाह आमेरवाले, स० १५९२ मे उ०।

यह महाराज कवि-कोविदो के वडे कदरदाँ थे। हरिनाथ इत्यादि कवीश्वरो को एक-एक दोहे पर लक्ष-लक्ष रुपया इनाम दिया। इन्होने अपने जीवन-चरित्र की किताव वहुत विस्तार-पूर्वक वनाई है। जिसका नाम मान चरित्र है। उसी ग्रन्थ मे लिखा है कि जव राजा मानसिह कावुल की ओर अकवर के हुक्म से चले और अटक नदी पर पहुँचकर धर्मशास्त्र को विचार कर उतरने मे सोच-विचार करने लगे और अकवरशाह को लिखा, तव अकवर ने यह दोहा लिखा।

---

१ राज विलास की नाहटा कृत भूमिका के आधार पर

सबै भूमि गोपाल की, तामे अटक कहा
जाके मन मे अटक है, सोई अटक रहा

यह दोहा पढ मानसिंह ने अटक पार जाकर स्वामिकार्य मे वडी वीरता की ।

सर्वेक्षण

राजा मानसिंह प्रसिद्ध ऐतिहासिक पुरुष है । सरोज मे दिया इनका स० १५६२ ईस्वी सन् है और यह मानसिंह का उपस्थितिकाल है । अकवरी दरवार से सम्वन्धित प्राय सभी व्यक्तियो का समय ईस्वी सन् ही मे दिया गया है । ग्रीयर्सन (१०६) के अनुसार इनकी मृत्यु स० १६७५ मे हुई ।

७१६।६००

(१) राम कवि १ रामवख्श । राना शिरमौर के यहाँ थे और रस सागर नामक भाषा साहित्य का एक महा सुन्दर ग्रन्थ वनाया है । सतसई का टीका भी वहुत सुन्दर किया है ।

सर्वेक्षण

सरोज मे रससागर से ३ दोहे और ३ कवित उद्धृत है । अन्तिम कवित्त मे सिरमोर राना द्वारा दान कि हुए हाथियो का वर्णन है ।

कहै राम वकस सपूत सिरमौर राना
ऐसे गज देत महा मन्दर छविन के
कारे मघवानवारे महा भयान वारे
दान वारे दान वारे द्वारे मे कविन के

इस कवित्त से रामवकस छाप वाले कवि का इनके दरवार से सम्वन्धित होना सिद्ध है । खोज मे विप्र रामवकस छाप वाले एक कवि के तीन ग्रन्थ मिले हैं । कुछ कहा नही जा सकता कि ये विप्र राम वकस सरोज के इस कवि से भिन्न हैं अथवा अभिन्न ।

(१) कवित १६२६।२८७ ए
(२) विप्र करुना सागर १६२६।२८७ वी
(३) राम वकस के कवित १६२६।२८७ सी

७१७।६०१

(२) राम सिंह कवि वुन्देलखण्डी स० १८३४ मे उ० । यह कवि हिम्मन्त वहादुर के यहाँ थे । इनका काव्य रोचक है ।

सर्वेक्षण

हिम्मत बहादुर का शौर्यकाल स० १८२०-६१ है, अत सरोज मे दिया हुआ राम सिंह का समय स० १८३४ ठीक है। यह कवि का उपस्थितिकाल है।

७१८।६०२

(३) राम जी कवि १, स० १६६२ मे उ०। इनके कवित्त हजारे मे है।

सर्वेक्षण

हजारे मे इन राम जी कवि के कवित्त थे। अत स० १७५० के पूर्व इनका अस्तित्व सिद्ध है। बुन्देल वैभव मे इन्हे ओरछा निवासी एव ओरछा नरेश महाराज सुजान सिंह का आश्रित कहा गया है। स० १६९२ को जन्मकाल माना गया है और रचना काल स० १७२०। कहा गया है कि इन्होने बिहारी सतसई का अनुक्रम लगाया।[1] विनोद मे (४३२) इनके नाम पर बरवै नायिका भेद एव शृङ्गार सौरभ नामक राम भट्ट फर्रुखाबादी की कृतियाँ चढा दी गई हैं।

७१९।६०३

(४) रामदास कवि स० १८३९ मे उ०।

सर्वेक्षण

खोज मे तीन रामदास मिले है।

(१) रामदास, मालवा के अन्तर्गत मालटी नामक गाँव के निवासी। इनके पिता का नाम मनोहरदास और माता का वीरावती था। इनके लिखे ग्रन्थ ये है—

(क) उषा अनिरुद्ध की कथा—१९०६।१०२ ए।

(ख) प्रह्लाद लीला—१९०६।१७२ बी। प्रतिलिपिकाल स० १७७७।

(ग) भागवत दशम स्कन्ध—१९४७।३३१ क ख।

(२) रामदास बरसानिया, यह नन्द गाँव बरसाना के रहने वाले थे। यह स० १८२७ के पूर्व उपस्थित थे। इनके बनाए हुये ग्रन्थ ये हैं—

(क) गोवर्द्धन लीला १९४४।३४७ क, ख, ग।

(ख) राधा विलास १९४४।३४७ घ।

---

(१) बुन्देल वैभव, भाग २, पृष्ठ २९९

(३) रामदास, वल्लभ-सम्प्रदाय के अनुयायी थे। इन्होंने 'रुक्मिणी व्याह' नामक ग्रन्थ लिखा है।

श्री गिरिधर लाल प्रताप तें मुक्त भये जु कृपाल
राम मन्द मति सुमति भइ गावत गीत रसाल
श्री विट्ठल पद कमल बल अबल सबल बल होत
प्रबल तेज तामस हरन, सरन करन उद्योत

—खोज रिपोर्ट १६४४।३४५

७२०।६०५

(५) रामसहाय कवि, कायस्थ, बनारसी, स० १६०१ मे उ० । यह कवि महाराजा उदित नारायण सिंह गहरवार काशी नरेश के यहाँ थे। इन्होंने वृत्ततरङ्गिणीसतसई नामक पिङ्गल का बहुत सुन्दर ग्रन्थ बनाया है।

सर्वेक्षण

रामसहाय दास जी चौबेपुर, जिला बनारस के रहने वाले अष्ठाना कायस्थ थे। इनके पिता का नाम भवानीदास था। यह काशी नरेश महाराजा उदित नारायण सिंह (शासन काल स० १८५३-६२) के यहाँ रहते थे। उक्त राजवंश भूमिहार है, न कि गहरवार, जैसा कि सरोज मे लिखा गया है। बिहारी सतसई के ढङ्ग पर उन्होंने अपनी राम सतसई बनाई जो भ्रान्ति शमनार्थ नाम बदल कर शृङ्गार सतसई अभिधान से भारत जीवन प्रेस काशी से प्रकाशित हो चुकी है। सरोज मे इनके ग्रन्थ का नाम वृत्त तरङ्गिणी सतसई नाम पिंगल दिया गया है। यह शब्दो के उलट-पलट का विभ्रम विलास है। सरोज वर्णित ग्रन्थ एक न होकर दो हैं। १—वृत्ततरङ्गिणी, यह पिंगल ग्रन्थ है। नाम पिंगल इसी के आगे होना चाहिये। सतसई प्रमाद से बीच मे घुस आई है। २—सतसई, इसी ग्रन्थ का विवरण पीछे राम सतसई या शृङ्गार सतसई नाम से दिया गया है। शुक्ल जी ने रामसहाय दास का रचना काल स० १८६०-८० माना है। हो सकता है, यह स० १६०१ मे जीवित रहे हो। इनके निम्नलिखित ग्रन्थ खोज मे मिले हैं—

(१) ककहरा रामसहाय दास, १६०६।२५६। इस ग्रन्थ मे जन सहाय छाप है। इससे यह भक्त प्रतीत होते हैं। ग्रन्थान्त मे श्री लाला रामसहाय भगत-कृत लिखा भी है।

(२) बानी भूषण १६०४।२३ यह अलङ्कार ग्रन्थ है। अनेक छन्दो मे छाप राम है। सुन्दरीतिलक वाले राम यही न हो। इस ग्रन्थ मे कवि ने अपना परिचय भी दिया है—

"बानी भूषन कौं भनत जस हित राम सहाय"

× × ×

सुवन भवानी दास को और भवानी दास
अष्ठाना कायस्थ हैं, वासी कासी खास

(३) राम सप्तशतिका, १९०४।२२। इस ग्रन्थ मे ७१७ दोहे हैं। ग्रन्थ की पुष्पिका मे भवानीदासात्मज लिखा हुआ है। यह वही ग्रन्थ है जिसका विवरण पीछे राम सतसई या शृङ्गार सतसई नाम से दिया गया है। यह पर्याप्त सुन्दर दोहो से सम्पन्न है।

(४) वृत्त तरङ्गिणी, १९०४।२४,१९२३।३४६ ए, बी १९२६।३९४ ए बी, १९४१।५५२। इस ग्रन्थ की रचना स० १८७३ मे हुई थी।

३ ७ ८ १
सन्ध्य सुद्धि सिधि विधु दरस, गौरी तिथि सुदि उर्ज
सुराचार्य वासर सुखद, अरु घट मे गत सूर्ज

७२१।६०८

(६) रामदीन त्रिपाठी, टिकमापुर जिले कानपुर, स० १९०१ मे उ०। यह मतिराम वशी कवि महाराजा रतन सिंह चरखारी के यहाँ वहुधा रहते थे। इन्होने एक वार कुछ अनादर देख यह दोहा शीघ्र ही पढा।

जो बाँधी छत्रसाल जू, हृदय साहि जगतेस
परिपाटी छूटे नहीं, महाराज रतनेस

सर्वेक्षण

चरखारी नरेश महाराज रतन सिंह का शासनकाल स० १८८६–१९१७ है। अत सरोज मे दिया हुआ रामदीन त्रिपाठी का स० १९०१ ठीक है।

खोज मे 'सत्यनारायण पूजन कथा भाषा'[१] नामक एक ग्रन्थ मिला है, जिसको इन्ही रामदीन की कृति माना गया है।

कठिन संस्कृत जानिके, दाया मन मै आनि
रामदीन भाषा करी, अर्थ परै सब जानि ४९
ब्राह्मण क्षत्री वैश्य पुनि, शुद्र करै जो कोइ
सत्यदेव व्रत सुभग यह, सबही कौं फल होय ५०

इसकी रचना स० १८७६ मे हुई।

(१) खोज रिपोर्ट १९२०।१४८, १९४१।५५०

सवत सत अष्टादसौ सत्तरि पर षट जान
पौष शुक्ल भृगु वासर तिथि अष्टमी बखान ५१

७२२।६०७

(७) रामदीन बन्दीजन अली गन्जवाले, स० १८९० मे उ०। यह वडे कवि हो गये हैं।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्वन्ध मे कोई सूचना नही। ग्रियर्सन (६६९) और विनोद (२१२४) मे सरोज दत्त स० १८९० जन्मकाल माना गया है पर यह उ० का उत्पन्न अर्थ करने के कारण हैं।

७२३।६०९

(८) रामलाल कवि। इनके कवित्त अच्छे हैं।

सर्वेक्षण

रामलाल नाम के अनेक कवि मिलते है। किसी के भी साथ सरोज के इन रामलाल का तादात्म्य सम्भव नही।

(१) रामलाल, स० १८६२ के पूर्व वर्तमान। भोग रामलला है। रुक्मिणी मङ्गल १९१२।१४७, १९३८।१२०, १९४९।५५१

(२) रामलाल, स० १९०० के लगभग वर्तमान। चित्त विनोद १९२०।१५० ए, राम शिरोमणि १९२०।१५० बी।

(३) रामलाल शर्मा, रामचन्द्र ज्ञान विज्ञान प्रदीपिका १९०९।२४९।

(४) रामलाल कवि, उपनाम राम कवि। भरतपुर के महाराज वलवन्त सिंह के आश्रित स० १८९२ के लगभग वर्तमान।

(५) रामलाल स्वामी, विजावर के राजा भानु प्रताप के गुरु।

(क) अमरकण्टक चरित्र, रचनाकाल स० १८६६, (ख) भवानी जी की स्तुति, (ग) महावीर जी कौ तीसा, (घ) रामसागरे या राम विलास, रचनाकाल सं०१८६६(ङ) श्री ब्रह्मसागर ग्रन्थ, रचनाकाल स० १८६७, (च) श्रीकृष्ण-

प्राकश, रचनाकाल स० १८६७। ये छहो ग्रन्थ खोज रिपोर्ट १९०६।१०६ मे उल्लिखित है।

७२४।६१०

(६) रामनाथ प्रधान अवध निवासी स० १९०३ मे उ०। ये राम कलेवा इत्यादि छोटे-छोटे ग्रन्थो के कर्त्ता है।

सर्वेक्षण

रामनाथ प्रधान रीवाँ के मन्त्रिवश मे थे। इनका भी सम्बन्ध रीवाँ दरवार से था। महाराज विश्वनाथ सिह (शासनकाल स० १८९२-१९११) कृत कवीरदास के बीजक की टीका नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, से प्रकाशित हुई थी। इसकी प्रेस कापी रामनाथ प्रधान ने तैयार की थी। यह तथ्य इनका रीवाँ दरवार से सम्बन्ध सूचित करता है। लगता है कि यह उक्त महराज को साहित्यिक कार्यो मे सहायता दिया करते थे।[1] अन्तिम दिनो मे यह अयोध्या आकर रहने लगे थे। इसीलिए सरोज मे इन्हे अवध निवासी कहा गया है, वस्तुत यह वघेलखण्डी है।

रामनाथ जाति से प्रधान या कायस्थ नही थे। यह ब्राह्मण भी नही थे, जैसा कि महेशदत्त ने भाषाकाव्यसग्रह मे लिखा है।[2] इनके पितामह का नाम जिन्दाराम था, जिन्हे राजद्वार मे अधिकार मिलने के कारण प्रधान कहा जाता था। वही प्रधान परम्परागत हो गया। रामनाथ के पिता का नाम ठाकुर राम था, जो जिन्दाराम के ज्येष्ठ पुत्र थे। रामनाथ वैश्य परिवार मे उत्पन्न हुए थे। यह सव सूचनाएँ इनके 'धनुप-यज्ञ' नामक ग्रन्थ से मिलती है।

जिन्दाराम नाम जग जाहिर, वस्य वरन सव जाना
राज द्वार अधिकार पाय भैजाको छाप प्रधाना
ताको जेठ तनय स्वधर्म रत नाम सु ठाकुर रामा
तासु तनय यह रच्यो धनुष मख रामनाथ जेहि नामा

—खोज रिपोर्ट १९२०।१५३ ए

रामनाथ प्रधान के निम्नाकित ग्रन्थ खोज मे मिले हैं—

(१) कवित्त राजनीति, १९०१।६, १९२०।१५३ वी, १९२३।३४६ ए, वी। इस ग्रन्थ का विवरण पीछे ४६२ सख्या पर प्रधान कवि के सम्बन्ध मे दिया जा चुका है।

---

(१) सिलेक्शस फ्राम हिन्दी लिटरेचर, भाग ६, खण्ड २, पृष्ठ २३४
(२) भाषाकाव्यसग्रह, पृष्ठ १३२

(२) धनुष यज्ञ, १९२०।१५३ ए। यह ग्रन्थ वैशाख अमावस्या, गुरुवार, स० १८९१ को पूर्ण हुआ, स० १८१० मे नही, जैसा कि खोज रिपोर्ट मे लिखा है।

सवत रह्यो अठारह सै को, नौ अरु एक प्रमाना
कृष्ण पक्ष वैसाख महीना, गुरौ अमावस जाना
तेहि दिन भयो चाप मख पूरन, मङ्गल मोद निधाना
कहै सुनै तेहि सबै कामना, पुजवै श्री हनुमाना ३६९

इस ग्रन्थ के अन्तिम छन्द मे कवि ने अपने पिता, पितामह एव जाति आदि का पूरा विवरण दिया है, जो ऊपर उद्धृत किया जा चुका है।

(३) राम कलेवा, १९०४।३८६ ए, बी, १९०६।१०७, २१४, १९२३।३४६ सी, डी, ई, १९४७।३३४ क, ख। यह ग्रन्थ ज्येष्ठ सुदी १०, गङ्गा दशहरा १९०२ को प्रारम्भ हुआ और उसी वर्ष क्वार विजय दशमी को पूर्ण हुआ।

उनइस सै दुइ के सवत मे जेठ दसहरा काहीं
ग्रन्थ कियो आरम्भ अनूपम बैठि अयोध्या माहीं

× × ×

जेष्ठ दसहरा ते अरम्भ करि, क्वार दसहरा काही
राम कलेवा रहस ग्रन्थ यह, पूरन भौ मुद माहीं

जिस समय ग्रन्थ पूरा हुआ, कवि की आयु ४५ वर्ष की थी—

निज पैंतालिस वरस की उमर जान परमान
कियो क्लेवा ग्रन्थ यह रामनाथ परधान

इस सूचना के सहारे कवि का जन्म-सम्वत् १९०२–४५, १८५७ सिद्ध होता है। ग्रन्थ का नाम 'रामकलेवा रहस' भी है। दोनो एक ही ग्रन्थ के भिन्न-भिन्न नाम हैं, दो स्वतन्त्र ग्रन्थ नही, जैसा कि सभा के अप्रकाशित सक्षिप्त विवरण मे माना गया है।

(४) रामहोरी रहस्य १९०१।८, १९४४।३४८। यह ग्रन्थ माघी अमावस्या स० १९१२ को प्रयाग मे प्रारम्भ हुआ और चैत्र रामनवमी को उसी वर्ष मिथिला मे पूर्ण हुआ।

ओनइस सै द्वादस सम्वत मे प्राग त्रिवेणी पाही
साधु रजाइसु पाय नाय सिर रच्यो ग्रन्थ मन माहीं
माघ अमावस मह अरम्भ करि राम जनम तिथि काहीं
मिथिला होरी रहस राम को पूरन भौ मुद माहीं

ग्रन्थ रचना के समय कवि की आयु ५६ वर्ष की थी—

वय मे छप्पन बरस की, भोगत विषय सिरान
बरन्यो होरी रहस यह, रामनाथ परधान

ग्रन्थ छह अध्यायो मे विभक्त है।

इनका प्रिय विषय रामविवाह ही प्रतीत होता है। इसीसे सम्बन्धित इनके तीन ग्रन्थ हैं।

(५) अङ्गद-रावण सवाद, १९४४। सम्भवत यह ग्रन्थ इन्ही प्रधान का है। महेश दत्त ने भापाकाव्यसग्रह मे इनका मृत्यु सवत् १९२५ दिया है।[1]

सक्षिप्त विवरण मे रामनाथ प्रधान के नाम पर 'चित्रकूट शतक' नामक एक और ग्रन्थ चढा हुआ है। यह किसी नाथूराम की रचना है, रामनाथ की नही।

राम लखन सिय बसत जहँ, वेदन कियो विवेक
सो गिरि नाथूराम कौं, जिय कौ जीवन एक १०९

—खोज रिपोर्ट १९०९।२५३, १९२०।१५२

साथ ही इस ग्रन्थ की रचना स० १८५४ मे हुई और रामनाथ प्रधान इसके ३ वर्ष वाद पैदा हुए थे। १९०९ वाली प्रति के अन्त मे 'एक सहस अरु आठ सै चौहन' लिखा हुआ है। खोज-रिपोर्ट मे इसे १८७४ माना गया है, जो भ्रष्ट है। चौहन, चौअन के निकट है, चौहत्तर के निकट नही।

७२५।६११

(१०) राम सिह देव सूर्यवशी क्षत्रिय, खडासा वाले। इन्होंने सरस कविता की है।

सर्वेक्षण

सरोज मे राम सिह का विवरण और उदाहरण महेशदत्त के भापाकाव्यसग्रह के आधार पर दिया गया है। इस ग्रन्थ के अनुसार खडासा, फैजावाद जिले मे है। दोनो ग्रन्थो मे एक-एक और एक ही कवित्त उदाहृत हैं।[2] इस कवि के सम्बन्ध मे कोई अन्य सूचना सुलभ नही।

---

(१) भापाकाव्यसग्रह, पृष्ठ १३२ (२) वही, पृष्ठ १३६

७२६।६१४

(११) रामनारायण कायस्थ, मुन्शी महाराजा मानसिंह। वि०। इनके श्रृङ्गार के सुन्दर कवित्त है।

सर्वेक्षण

रामनारायण जी अयोध्या नरेश महाराजा मानसिंह द्विजदेव के मुन्शी थे और जाति के कायस्थ थे। इनका बनाया हुआ षट्ऋतुवर्णन[1] नामक ग्रन्थ मिला है। प्रथम छन्द ही मे कवि ने अपना उपनाम 'दीन' कहा है।

सोरभ सीर समीर अरु कोमल सु दल नवीन
कोकिल कलरव कलित वन वर्ननीय कवि दीन

ग्रन्थारम्भ मे भी लिखा गया है, दीन, प्रसिद्ध नाम मुन्शी रामनारायण।

७२७।६१६

(१२) रामकृष्ण चौवे, कालिंजर निवासी, स० १८८६ मे उ०। इन्होने विनय पचीसी नामक ग्रन्थ शान्त रस का वनाया है।

सर्वेक्षण

महाराज छत्रसाल के प्रपौत्र महाराज हिन्दूपत (शासनकाल स० १८१३–३४) के तीन पुत्र थे, सरमेद सिंह, अनिरुद्ध सिंह और धौकल सिंह। हिन्दूपत अपने बडे पुत्र सरमेद सिह से अप्रसन्न थे और मझले पुत्र अनिरुद्ध सिह से प्रसन्न। अत उन्होने अनिरुद्ध सिह को युवराज, वेनी हजूरी को दीवान और कायम जी चौवे को कलिंजर का शासक नियत कर दिया। इन्ही कायम चौवे के पुत्र रामकृष्ण चौवे थे। कायम चौवे के देहान्त के अनन्तर रामकिसुन चौवे के अधिकारमे कलिञ्जर का किला आया।[2]

बुन्देल वैभव के अनुसार रामकृष्ण चौवे का जन्म स० १८०० के आस-पास हुआ और मृत्यु स० १८५८ मे, तथा यह किलेदार खैमराज के पुत्र थे।[3]

स० १८४९ मे नोने अर्जुन सिंह को परास्त करने के वाद अली वहादुर और हिम्मत वहादुर की धाक वुन्देलखण्ड मे छा गयी। इस समय कालिञ्जर का किला रामकिसुन चौवे के अधिकार मे था जो अव पन्ना राज्य से स्वतन्त्र हो गया था। अली वहादुर और हिम्मत वहादुर

---

(१) खोज रिपोर्ट १९०९।२५२। (२) बुन्देल खण्ड का सक्षिप्त इतिहास, अध्याय २४, ३१, ३२। (३) बुन्देल वैभव, भाग २, पृष्ठ ४७४।

ने इस किले पर बरसो घेरा डाल रक्खा, पर जीत न सके। इसी बीच स० १८५९ मे अली बहादुर की मृत्यु हो गई। उसके मरने पर भी हिम्मत बहादुर ने प्रयत्न न छोडा। परन्तु अली बहादुर के पुत्र शमशेर बहादुर से अनबन हो जाने के कारण अन्त मे दोनो ने कालिञ्जर से हाथ खीच लिया।[१]

अग्रेजी राजसत्ता स्थापित होते समय (बसीन की सन्धि के अनन्तर स० १८६० मे) कालिञ्जर के किले मे रामकिसुन चौबे के ८ लडके—बलदेव, दरियाव सिह, भरत जू, गोविन्ददास, गङ्गाधर, नवल किशोर, सालिगराम और छत्रमाल रहते थे। इनमे से दरियाव सिह किलेदारी करते थे। दरियाव सिह ने अग्रेजो से सुलह कर ली, पर विद्रोहियो से मिले रहे। इसलिए स० १८६९ मे अग्रेजो ने कालिञ्जर पर चढाई की।[२] इससे स्पष्ट है कि स १८६० मे रामकिसुन चौबे कालिञ्जर के किलेदार नही रह गए थे। रामकृष्ण चौबे के निम्नलिखित ग्रन्थ खोज मे मिले हैं।

१ कृष्ण विलास १९०६।१०० ए, १९०६।१९५ ए। रचनाकाल भादो कृष्ण जन्माष्टमी, स० १८१७।

सवत अष्टादस जु सत अरु सत्रह की साल
भादौं हरि की अष्टमी कथा रची ते काल १५

इस ग्रन्थ मे कवि ने अपने पिता का नाम खेमराय दिया है, अत यही प्रामाणिक है। कालिञ्जर का भी उल्लेख हुआ है।

खेमराय के पुत्र भो, रामकृष्ण एहि नाम
बरनो कृष्णविलास जिहि, यावत स्यामा स्याम ४५७
राज अनुग्रह अति कियो, किलौ कलिञ्जर दीन
निस दिन ध्यावत रहत हे, सदा कृष्ण लवलीन ४५८

हिन्दूपत स० १८१३ मे सिहासनासीन हुए थे, अत किला मिलनेवाली घटना स० १८१३ और १८१७ के बीच कभी घटित हुई।

२ विनय पचीसी, १९०६।१०० बी। इसमे कुल २५ कवित्त हैं, प्रत्येक का अन्तिम चरण यह है—

नन्द के दुलारे, रामकृष्ण दृग तारे सुनो
पीत पट वारे देर मेरी बेर क्यो करी

इसी ग्रन्थ का उल्लेख सरोज मे हुआ है। विनोद (५८९) मे इसे उन रामकृष्ण की रचना माना गया है जिनका उल्लेख सूदन की प्रणम्य कवियो की सूची मे हुआ है।

---

(१) बुन्देलखण्ड का सक्षिप्त इतिहास, अध्याय ३२ (२) वही।

३ स्फुट पद, १९०६।१०० सी। विभिन्न देवी-देवताओ की स्तुति के पद।

४ स्फुट कविता, १९०६।१०० डी। कृष्ण प्रशस्ति सम्बन्धी कवित्त।

५ रुक्मिणी मङ्गल, १९०६।१००ई। विविध छन्दो मे रचित।

६ रास पञ्चाध्यायी, १९०६।१०० एफ।

७ नायिका भेद के दोहा, १९०५।७७,१९०६।१००जी। कुल ३५ दोहे। आधे दोहे मे लक्षण और आधे मे उदाहरण।

थोरे ही मे कहत हौं, समुझि लेहु सज्ञान
आधे मे लक्षन कहे, आधे लक्ष बखान २

८ दूसरी, रुक्मिणी मङ्गल, १९०६।१००एच। यह पहले रुक्मिणी मङ्गल से भिन्न है।

९ वज्रनाभ की कथा, १९०६।१०० आई। सस्कृत हरिवश के आधार पर।

१० अवतार चेतावनी, १९०६।१००जे। ३४ दोहो मे २४ अवतारो का कथन।

११ अष्टक, १९०६।१००के। कृष्ण की भक्त-वत्सलता के ८ सवैये। प्रत्येक छन्द का अन्तिम चरण एक ही है।

"हे जु वडो समरथ्थ सदा प्रभु मारनहार ते राखनहारो"

१२ ग्वाल पहेली, १९०६।९वी, १९०६।१००एल। इस ग्रन्थ मे कृष्ण ने अपने साथियो से पहेलियाँ बुझाई है।

१३ परतीत परीक्षा, १९०६।९डी, १९०६।२४८, प १९२२।९३ए। कृष्ण द्वारा राधा के प्रेम की परीक्षा।

१४ प्रेम परीक्षा, १९०६।९सी, प १९२२।९३वी। राधा द्वारा कृष्ण के प्रेम की परीक्षा।

१५ राम कूट विस्तार, १९०६।१९५ वी।

सभा के सक्षिप्त विवरण मे रामकृष्ण का समय १७२६-४९ दिया गया है, यह ठीक नही। इसमे रामकृष्ण, वालकृष्ण नायक और मानदास ये तीन नाम एक ही कवि के माने गए हैं, यह भी ठीक नही। वालकृष्ण नायक के दो ग्रन्थ हैं, ध्यानमञ्जरी[1] और नेहप्रकाशिका।[2] इन ग्रन्थो का रचनाकाल क्रमश स० १७२६ और १७४९ हैं। एक मार्च मे रसिक सम्प्रदाय मे डॉक्टर भगवतीप्रसाद सिंह ने ग्वाल पहेली, प्रेम परीक्षा, परतीत परीक्षा, ये तीनो ग्रन्थ वालकृष्ण नायक या वाल अली के माने हैं, जो ठीक नही। ये तीनो ग्रन्थ राम से सम्वन्वित न होकर कृष्ण

(१) खोज रिपोर्ट १९१७।१६ ए (२) वही, १९१७।१६ बी।

से सम्बन्धित हैं और कालिञ्जर वासी रामकृष्ण चौबे के हैं। ऊपर हम देख चुके है कि कालिञ्जर वाले रामकृष्ण चौबे का रचनाकाल स० १८१७-६० है। अत बालकृष्ण नायक और इन रामकृष्ण की अभिन्नता कभी भी प्रतिपादित नहीं की जा सकनी। पुन मानदास भी राम कृष्ण से भिन्न हैं। इनकी रचना एकादशी माहात्म्य[१] है। इसका रचनाकाल स० १८८५ है। यदि रामकिसुन चौबे स० १८६० के आस-पास विरक्त साधु महात्मा हो गए रहे हो और अपना नाम मानदास रख लिया हो, तो दोनो की एकता सम्भव भी है।

७२८।६१८

(१३) राम सखे कवि, ब्राह्मण। इन्होने 'नृत्य राघव मिलन' नाटक ग्रन्थ बनाया है।

सर्वेक्षण

राम सखे जी की जन्म भूमि जयपुर है। इनका जन्म एक कुलीन ब्राह्मण कुटुम्ब मे हुआ था। लडकपन ही से यह राम भजन मे अनुराग रखने लगे थे। कुछ बडे होने पर यह घर-वार छोड, तीर्थ-यात्रा पर निकले। घूमते-घामते यह काशी मे माध्व-सम्प्रदाय के प्रसिद्ध केन्द्र उडुपी पहुंचे और वहाँ के तत्कालीन आचार्य वशिष्ठ तीर्थ से इन्होने दीक्षा ली। उडुपी से वह अयोध्या आये, अयोध्या से चित्रकूट गए। चित्रकूट मे कामद वन मे वारह वर्ष तक तप किया। यहाँ रहते समय पन्नानरेश हिन्दूपति (शासनकाल स० १८१३-१४) इनका दर्शन करने आए थे और कुछ गाँव भी देना चाहा था, पर रामसखे जी ने स्वीकार नही किया। स० १८३१ मे यह मैहर चले गए। यही इनका साकेतवास हुआ। अयोध्या मे इनके सम्प्रदाय का नृत्य राघवकुञ्ज नामक मन्दिर है। यह सरल भाव के उपासक थे। यह कवि तो थे ही, अच्छे सङ्गीतज्ञ भी थे। डॉक्टर भगवतीप्रसाद सिंह ने इनके १० उपलब्ध ग्रन्थो की यह सूची दी है[२]—

(१) द्वैत भूषण (२) पदावली (३) रूपरसामृत सिन्धु (४) नृत्य राघव मिलन दोहावली (५) नृत्य राघव मिलन कवितावली (६) रास पद्धति (७) दान लीला (८) वानी (९) मङ्गल शतक (१०) राम माला। इनके लिखे हुए निम्नलिखित ग्रन्थ खोज मे मिले हैं—

१ श्री नृत्य राघव मिलन, १९०५।७८, १९१७।१५८, १९२६।३५१। इस ग्रन्थ की रचना स० १८०४ मे हुई थी।

> सवत अष्टादस चतुर, शुक्ल मधुर मधु तीज
> भयो नृत्य राघव मिलन, उद्भव सव रस बीज

२ दान लीला, १९०५।८१।

३ दोहावली, १९०५।८०।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९२९।२२६। (२) रामभक्ति मे रसिक-सम्प्रदाय, पृष्ठ ४०४-४०६

४ बानी, १९०५।८२।

५ पदावली, १९०५।७९, १९०९।२५७बी, १९२०।१५८बी।

६ गीत, १९०६।१६२ए।

७ रासपद्धति और दानलीला, १९०६।२१६बी।

८ राग माला, १९०६।२१६सी।

९ मङ्गल लतिका, १९०६।२५७ ए।

१० मङ्गलाष्टक, १९१७।१५८सी, १९२६।३९५, द, १९३१।७४।

११ कवित्त, १९१७।१५८बी या कवित्तावली, १९१७।१५८ई।

१२ सीताराम रहस्य पदावली, १९१७।१५८ एफ।

डॉक्टर बदरीनारायण श्रीवास्तव के अनुसार यह मइहर के निवासी थे और रामानन्द-सम्प्रदाय के वैष्णव थे। यह गलता, जयपुर गए और वहाँ रास रस मे डूब गए और अली भाव के उपासक हो गए। इनके बनाए ४ ग्रन्थो का उल्लेख किया गया है—१ राम सखे पदावली, २ नृत्य राघव मिलन, ३ दोहा कवित्त, ४ जानकी अैरत्न माणिक्य।[1]

इन रामोपासक कवि का असल नाम ज्ञात नही। रामसखे इनका हरि सम्बन्ध नाम है।

७२९।६४५

(१४) रामकृष्ण कवि २। इनके कवित्त बहुत ही ललित हैं।

सर्वेक्षण

सरोज मे एक कवित्त कोशल नरेश के हाथियो की प्रशसा का दिया गया है, जो दिग्विजय-भूषण से लिया गया है। यह कोशल नरेश द्विजदेव हो सकते हैं।

ग्रियर्सन (५३८) मे इन्हें रामकृष्ण चौबे मे मिला दिया गया है। इनका कोई स्वतन्त्र उल्लेख नही है।

७३०।६५६

(१५) राम दया कवि। इन्होने राग माला ग्रन्थ महा सुन्दर बनाया है।

---

(१) हिन्दी अनुशीलन के १९५६ के संयुक्ताङ्क मे प्रकाशित 'रामानन्द-सम्प्रदाय के हिन्दी कवि' शीर्षक लेख।

सर्वेक्षण

राम दया के दो ग्रन्थ खोज मे मिले हैं, पर इनसे कवि के सम्वन्ध मे कोई जानकारी नहीं हो पाती—

(१) सभाजीत सार, १६१२।१४५, १६४४।३४४ क ख। इस ग्रन्थ मे ज्योतिप, सामुद्रिक, शालिहोत्र, वैद्यक आदि सभी कुछ हैं। कवि स्वय ग्रन्थ का परिचय इन शब्दो मे देता है—

> सकल ग्रन्थ को अर्थ लै, महा बुद्धि को धाम
> राम दया सग्रह कियो, सभाजीत धर नाम ३
> सभाजीत ग्रन्थ को नाम, धर्‍यो यह रीति
> समै समै के भेद कहि, लेइ सभा सब जीत ४

(२) वेद सामुद्रिक १६४४।३४४ ग। हो सकता है, यह कोई स्वतन्त्र ग्रन्थ न हो और सभाजीत सार का सामुद्रिक वाला अश ही हो। सरोज मे रागमाला से उद्धरण दिया गया है।

७३१।६६७

(१६) रामराइ राठौर, राजा खेमपाल के पुत्र। रागसागरोद्भव मे इनके पद महा-ललित है।

सर्वेक्षण

सरोजकार ने अन्य अनेक भक्तमाली कवियो के समान यहाँ भी विवरण एक रामराइ का दिया है और उदाहरण दूसरे रामराइ का। भक्तमाल मे एक राजा रामरैन[1] जी है। यह खेमाल रत्न राठौर[2] के पुत्र थे। इनकी पत्नी[3] भी परम भगतिन थी। इनके पुत्र राजकुमार श्री किशोर सिह[4] जी भी परम भागवत थे। इनका सारा घर ही भक्त था।[5] इस परिवार पर भक्तमाल के रचयिता का अपार प्रेम है। इसका परिचय उसने ५ छप्पयो मे दिया है। सरोजकार ने इन्ही राजा खेमाल रत्न राठौर के पुत्र रामरैन या रामराइ राठौर का विवरण दिया है। यह कवि थे या नही, कुछ कहा नही जा सकता।

सरोज मे उद्धृत पद से ज्ञात होता है कि रामराइ वल्लभ-सम्प्रदाय के वैष्णव थे। रामराइ जी की कथा २५२ वैष्णवन की वार्ता मे हैं। इनकी वार्ता २५२ ही है। भगवान हितु रामराय छाप रखने वाले भगवानदास इनके यजमान थे।

> जयति श्री वल्लभ सुवन उद्धरन त्रिभुवन
> फेरि नन्द के भवन को केलि ठानी

---

(१) भक्तमाल छप्पय ११६ (२) वही, ११८। (३) वही, १२०। (४) वही, १२१। (५) वही, १२२।

इष्ट गिरिवरधरन सदा सेवक चरन
द्वार चारो वरन भरत पानी

यह रामराइ अकवर के समकालीन सारस्वत ब्राह्मण थे। यह गीतगोविन्दकार के वशज थे। इनके पिता का नाम गुरु गोपाल जी था। गो० चन्द्रगोपाल जी इनके भाई थे। इन्ही रामराइ के शिष्य भगवान थे जो अपनी छाप भगवान हितु रामराइ रखते थे। भारतेन्दु वावू हरिश्चन्द्र ने इनका उल्लेख एक कुण्डलिया मे किया है—[1]

जगत विदित जयदेव कवि, सेवित चरन रसाल
वृन्दावन विलसत अजहुँ, श्री राधा माधव लाल
श्री राधा माधवलाल विहारी जी सन्निधि लखि
रामराय सम्वन्ध प्रेम वल्लभ कुल सव सुखि

नाभादास जी ने भी भक्तमाल मे इनका विवरण दिया है—

भक्ति ज्ञान वैराग्य जोग अन्तरगति पाग्यो
काम क्रोध मद लोभ मोह मतसर सब त्याग्यो
कथा कीरतन मगन सदा आनन्द रस फूल्यो
सन्त निरखि मन मुदित उदित रवि पकज फूल्यो
वैर भाव जिन द्रोह किय, तासु पाग भ्वै खसि परी
विप्र सारसुत धर जनम, रामराय हरि मत करी १९७

इस प्रकार स्पष्ट है कि सरोजकार ने विवरण रामराइ राठौर का दिया है और उदाहरण रामराइ मारस्वत का।

७३२।६६६

(१७) रामचरण ब्राह्मण, गणेशपुर, जिले वारावकी। यह पण्डित जी सस्कृत और भाषा दोनो कविताओ मे अत्यन्त निपुण थे। कायस्थकुल भास्कर सस्कृत मे और कायस्थधर्म-दर्पण भाषा मे वनाया हे। सस्कृत-काव्य का एक श्लोक इनका लिखते है—

कौशल्याशोकशल्या पहरणकुशली पादपाथोजधूल्या-
ऽहल्याकल्याणकारी शमयतु दुरित काडकोदण्डधारी।
रामो मारीचमारी रणनिहतखर क्ष्माकुमारी विहारी,
ससारीतिप्रतीत शमितदशमुख (सम्मुख सज्जनानाम् ॥

---

(१) खोज रिपोर्ट १९३८, पृष्ठ ५, ६।

सर्वेक्षण

रामचरण जी का जन्म स० १८१७ के लगभग प्रतापगढ जिले मे एक कान्यकुब्ज ब्राह्मण परिवार मे हुआ था। घर पर ही कुछ शिक्षा पाकर यह प्रतापगढ के राजा के यहाँ खजान्ची हो गए थे। यहाँ से यह विरक्त हो आयोध्या चले आए, जहाँ इनकी भेट विन्दुकाचार्य महात्मा रामप्रसाद के शिष्य रघुनाथप्रसाद से हुई। यह बाद मे रघुनाथप्रसाद के शिष्य हो गए। रामप्रसाद जी के साथ यह चित्रकूट गए थे। वहाँ रसिक भावना की शिक्षा इन्हे मिली। यहाँ से यह मिथिला गए। अयोध्या लौटने के अनन्तर यह रैवासा गए, जहाँ अग्रदास जी की गद्दी थी। यहाँ 'अग्रसागर' का अध्ययन किया। फिर अयोध्या लौट आए। यह रसिक सम्प्रदाय के अन्तर्गत स्व-सुखी शाखा के प्रवर्तक है। रामायण की इनकी कथा अयोध्या मे नित्य ही जानकी घाट पर हुआ करती थी। नवाब आसफुद्दौला ने इन्हे कई गाँव भेट कर दिए थे। मिर्जापुर के प्रसिद्ध रामायणी रामगुलाम द्विवेदी से इनको सत्सग लाभ हुआ था। विश्वनाथ सिह के बुलाने पर भी यह रीवाँ नही गए थे। साधु सन्तो की सेवा के लिए यह सदा तत्पर रहते थे, अत अयोध्या मे ये करुणासिन्धु नाम से प्रसिद्ध थे। इनकी मृत्यु अयोध्या मे माघ शुक्ल ६, स० १८८८ को हुई। इनके सुप्रसिद्ध शिष्य ये हैं—(१) जीवाराम जी 'युगल प्रिया, (२) जनकराव किशोरीशरण, रसिक अली। (३) हरीदास।

डॉ० भगवतीप्रसाद सिह ने इनके निम्नलिखित २५ ग्रन्थो के उपलब्ध होने की चर्चा की है[1]—

(१) अमृत खण्ड, (२) शतपञ्चासिका, (३) रसमालिका, (४) रामपदावली, (५) सियाराम रसमञ्जिरी, (६) सेवा विधि, (७) छप्पय रामायण,(८) जय माल सग्रह,(९) चरण-चिह्न, (१०) कवितावली, (११) दृष्टात बोधिक, (१२) तीर्थयात्रा, (१३) विरहशतक, (१४) वैराग्य शतक, (१५) नामशतक (१६) उपासना शतक,(१७) विवेक शतक,(१८) पिगल (१९) अष्टयाम सेवा विधि, (२०) कवितावली (२१) काव्य शृङ्गार (२२) झूलन (२३) कोशलेन्द्र रहस्य, (२४) रामचरित मानस की टीका (२५) राम नवरत्न सागर सग्रह।

रामचरण जी के बनाए हुए निम्नलिखित ग्रन्थ खोज मे मिले हैं—

(१) रस मालिका, १९०३।४४, १९०६।२४५ सी, १९४७।३२७ घ ड। इस ग्रन्थ मे अध्यात्म-ज्ञान, ससार से वैराग्य, भक्ति और सत्सङ्ग जैसे विषयो का निरूपण है। इसकी रचना स० १८६४ मे हुई थी।

सवत सत अष्ठादसो चौआलिस दिन सूर
सरद विजै दसमी विमल रस गरन्थ भा पूर

ग्रन्थ के प्रथम छन्द मे कवि का नाम रामचरण आया है।

---

(१) रामभक्ति मे रसिक-सम्प्रदाय, पृष्ठ ४१८–२१

"ते वैष्णवा. चरण रामचरणौ नमस्ते"

(२) कोशलेन्द्ररहस्य या रामरहस्य १९०३।६८।

(३) दृष्टान्त वोधिका १९०६।२११,१९०९।२४५ के, १९४७।३२७ क ख ग। यह ग्रन्थ दोहो मे है और ५ शतको मे विभक्त है।

(४) पिङ्गल, १९०९।२४५ ए। रचनाकाल स० १८४१—

सम्वत सत अष्टादसौ यकचालिस रितु नीर
शुक्ल पक्ष श्रावन भौम विरचत सन्तन तीर ३४५

(५) सत पञ्चासिका, १९०९।२४५ वी। यह ग्रन्थ स० १८४२ ई० मे चित्रकूट मे रचा गया—

चित्रकूट मे रचत यह लखे हरत जग ताप
दोहा सत पञ्चासिका पढहि साधु मा वाप ७६
सम्वत सत अष्टादसौ चालिस दुइ रितुराज
कृष्ण पक्ष मधु मास वुध चौथी सन्त समाज ७७

(६) रामचरित मानस टीका, १९०९।२४५ डी। इस टीका की रचना स० १८६५ मे हुई—

तक अनुभवति सु सक मह पहर डेढ दिन पाठ
अवध पूर्न दिन विज तिथि पंसठ सन्त दस आठ

(७) सियाराम रस मञ्जरी, १९०९।२४५ ई। रचनाकाल स० १८८१।

श्री सरजू तट रचित इति अवधपुरी श्री खास
सीय कुञ्ज श्री वास पुनि मिलव सीय पिय खास १५६
सवत सत अष्ठादसौ एकादसि श्रावन मास
शुक्ल जानकी तीज श्री सीय स्वामि मति मास १५७

(८) सेवा-विधि, १९०९।२४५ एफ, १९४७।३२७ अ।

(९) छप्पय रामायण, १९०९।२४५ जी। इस ग्रन्थ मे जनक प्रतिज्ञा का वरणन है।

(१०) जय माल सग्रह, १९०९।२४५एच। अयोध्या मे राम की क्रीडाओ का वर्णन।

(११) चरण चिह्न,१९०९।२४५ आई। राम और जानकी के चरण चिह्नो का माहात्म्य वर्णन।

(१२) कवितावली, १९०९।२४५ जे। कवित्तो मे राम-कथा।

(१३) तीर्थयात्रा, १९०९।२४५ एल।

(१४) रामपदावली। १९०९।२४५ एम। राम का वाल-विहार वर्णित है।

(१५) विरह शतक, १९०९।२४५ एन। यह दृष्टान्त वोधिका का पञ्चम शतक है।

यह दृष्टान्त प्रबोधिका सतक विरह को अङ्ग
रामचरण तेहि समुझि रहु राम न छोडहि अङ्ग

१६ झूलना, १६४१।२२५

१७ रामरत्न सार-सग्रह, १६४७।३२७ च ।

७३३।६६८

१८ रामदास बाबा, सूर जी के पिता, स० १७८८ मे उ० । रागसागरोद्भव मे इनके पद बहुत ललित है ।

सर्वेक्षण

सरोज मे दिया हुआ बाबा रामदास का स० १७८८ पूर्णरूपेण भ्रष्ट है। अकबर का शासनकाल स० १६६२ मे समाप्त हुआ । सूरदास अधिक से अधिक स० १६४० तक जवित रहे। फिर अकबरी दरबार के गायक तथा सूर के तथाकथित पिता बाबा रामदास स० १७८८ मे कैसे हो सकते हैं।

अकबरी दरबार के गायक सूरदास न तो प्रसिद्ध कवि सूरदास है और न तो उक्त दरबार के प्रसिद्ध गायक बाबा रामदास महाकवि सूर के पिता ही हैं। अकबरी दरबार और अकबरी दरबार के प्रसिद्ध गायक बाबा रामदास का सूर से कोई सम्बन्ध नही । श्री प्रभुदयाल मीत्तल ने 'अकबरी दरबार के गायक बाबा रामदास और उनके पुत्र सूरदास' शीर्षक लेख मे इसका पूर्ण विवेचन किया है।[1] इस लेख का सार यह है।

अबुलफजल-कृत आईन-ए-अकबरी मे अकबरी दरबार के गायको की सूची दी गई है। इस सूची मे ३६ नाम हैं। पहला नाम तानसेन का है, दूसरा बाबा रामदास का और उन्नीसवा सूरदास का। इस सूची मे सूरदास को बाबा रामदास का पुत्र कहा गया है और दोनो को ग्वालियर निवासी कहा गया है।

यह सूरदास न तो अष्टछापी सूरदास है, न सूरदास मदनमोहन हे, और न बिल्वमङ्गल सूरदास हीं। यह रामानन्दी सूरदास हैं। स्वामी रामानन्द के एक शिष्य अनन्तानन्द थे। अनन्तानन्द के शिष्य कृष्णदास पयअहारी थे। कृष्णदास पयअहारी के शिष्य अग्रदास और अग्रदास के शिष्य थे नाभादास जी। नाभादास ने भक्तमाल के ३७ वें छप्पय मे अनन्तानन्द और उनके शिष्यो का उल्लेख किया है। अनन्तानन्द के शिष्यो मे एक रामदास भी हैं। यह रामदास, कृष्णदास पयअहारी के गुरुभाई हैं। कृष्णदास पयअहारी के २४ शिष्यो का उल्लेख भक्तमाल छप्पय ३९ मे हुआ है। इन २४ मे एक शिष्य सूरज भी है। यही आईन-ए-अकबरी के सूरदास हैं।

---

(१) ब्रज भारती, वर्ष १३, अङ्क २, भाद्रपद २०१२।

गुरुभाई के शिष्य वेरागियो की परम्परा मे पुत्रवत् है। यह भी हो सकता है कि यह बावा रामदास के सगे पुत्र ही रहे हो। रामदास को बावा कहा गया है, अत यह वैरागी हैं और सूरदास, जिनको अबुलफजल ने पत्र लिखकर काशी से प्रयाग आने के लिए कहा है, वे भी प्रसिद्ध सन्त प्रतीत होते हैं। ऐसा अनुमान किया जा सकता है कि बावा रामदास और उनके तथाकथित पुत्र सूरदास, दोनो रामानन्दी साधु थे।

रामदास जी विरक्त वैष्णव होने के अतिरिक्त सङ्गीत-कला की उन्नति के भी प्रयासी थे। पहले वे लोदियो के दरबार मे रहे। बाबर द्वारा लोदियो के हरा दिए जाने पर, पुराने वैभव की समाप्ति के साथ-साथ, स० १५८३ मे, दरबारी गायक रामदास ने भी दिल्ली छोडी और लखनऊ आ रहे। हुमायूँ को हराकर जब सूर वशीय पठान दिल्ली मे पुन सिंहासनासीन हुए, तब यह फिर लखनऊ से दिल्ली आए। पहले १६०२ स० मे इस्लाम शाह सूर के दरबार मे रहे, पर बैरमखाँ ने जब फिर हुमायूँ की राज्य सत्ता की स्थापना दिल्ली मे की, तब यह बैरमखाँ के प्रिय गायक हुए। बैरमखाँ की मृत्यु के अनन्तर स० १६१९ मे इनका अकबरी दरबार मे प्रवेश हुआ। इस समय इनकी अवस्था प्राय ७० वर्ष की थी। इस समय सूरदास की वय ३०-३५ वर्ष की थी।

अकबरी दरबार मे प्रवेश के कुछ ही दिनो पश्चात् बावा रामदास का देहावसान हो गया होगा। सूरदास विरक्त हो वृन्दावन चले गए। यहाँ कुछ दिनो श्री सकेत स्थान मे रहे, तदनन्तर काशी चले आए। इन्ही सूरदास को स० १६४२ मे अबुल फजल ने अकबर के प्रयाग आगमन के अवसर पर काशी से प्रयाग आने के लिए आमन्त्रित किया था।

अक्षयकुमार दत्त ने भारतवर्ष के उपासक सम्प्रदाय मे काशी निवासी रामानन्दी सूरदास का उल्लेख किया है। यह वही सूरदास है। इनकी समाधि काशी से सलग्न शिवपुर मे है। सभा की खोज रिपोर्ट मे उल्लिखित 'राम-जन्म' और 'एकादशी-माहात्म्य' के रचयिता सूरदास यही हैं।

७३४।६१२

(१९) रघुराय कवि, बुन्देलखण्डी भाट, स० १७९० मे उ०। इन्होने बहुत काव्य लिखा है। इनका बनाया हुआ 'यमुना शतक' ग्रन्थ देखने योग्य है।

सर्वेक्षण

सरोज मे 'यमुना शतक' से एक कवित्त उद्धृत है। प्रतीत होता है कि यह ग्रन्थ सरोजकार के पास था। इस कवि के सम्बन्ध मे और कोई सूचना सुलभ नही। प्रथम सस्करण मे कवि का नाम रघुराई है।

७३५।६४४

(२०) रघुराय कवि २, स० १८३० मे उ० । इनके शृङ्गार मे सुन्दर कवित्त हैं ।

सर्वेक्षण

सरोज मे इनका एक शृङ्गारी कवित्त उद्धृत है जो दिग्विजय भूपण से लिया गया हैं । कवि के सम्वन्ध मे और कोई सूचना सुलभ नही ।

ग्रियर्सन मे (४२०) ७३४ और ७३५ सख्यक रघुराय नामक दोनो नामरासी कवियो को अभिन्न होने की सम्भावना व्यक्त की गई है ।

७३६।६४६

(२१) रघुलाल कवि, ऐजन । इनके शृङ्गार मे सुन्दर कवित्त हैं

सर्वेक्षण

रघुलाल के सम्वन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही ।

७३७।६२७

(२२) रघुराज कवि, श्री वाधव नरेश वघेले राजा रघुराज सिंह वहादुर । विद्यमान है । इन महाराज ने श्रीमद्भागवत द्वादश स्कन्ध का नाना छन्दो मे कविता की रीति से प्रति श्लोक उल्था करके 'आनन्दाम्बुनिधि' नामक ग्रन्थ वनाया है । हमने फारसी भापा इत्यादि मे वहुत से भागवत के उल्था देखे हैं, पर ऐसा कोई उल्था नही हुआ । इसके सिवा 'सुन्दर शतक' इत्यादि और ग्रन्थ भी इनके वनाए हुए महा अद्भुत हैं ।

सर्वेक्षण

रीवाँ नरेश महाराज रघुराज सिंह महाराज विश्वनाथ सिंह के पुत्र और महाराज जयसिंह के पौत्र थे । इनका जन्म स० १८८० मे कार्तिक कृष्ण ४, गुरुवार को हुआ था । सं० १९११ मे यह अपने पिता के दिवङ्गत होने पर ३१ वर्ष की वय मे रीवाँ नरेश हुए । इनका देहावसान स० १९३६ मे माघ कृष्ण ९ को, ५६ वर्ष की वय मे हुआ । इनके शिक्षा-गुरु रामानुजदास और दीक्षा-गुरु मुकुन्दाचार्य थे । इन्होंने १० वर्ष की ही वय मे कार्तिक शुक्ल ११, स० १८९० को दीक्षा ली थी ।[१] इनका उल्लेख रघुराजसिंह ने अपने राम स्वयवर नामक ग्रन्थ मे किया है । यह अत्यन्त धार्मिक पुरुप थे ।

---

१ रामभक्ति मे रसिक-सम्प्रदाय, पृष्ठ ४७०

सरोज के प्रणयनकाल मे रघुराज सिंह जीवित थे, अत सरोजकार ने उन्हे 'विद्यमान हैं' लिखा। पर ग्रियर्सन के रचनाकाल मे यह दिवङ्गत हो चुके थे। इस तथ्य पर ध्यान न देकर ग्रियर्सन (५३२) मे इन्हे सरोज के द्वितीय सस्करण के सवत् के अनुसार १९४० मे उपस्थित माना गया है।

विनोद (१८०७) मे रघुराज सिंह के २८ ग्रन्थो की सूची दी गई है पर ये सभी इनकी रचनाएँ नही हैं। इनके आश्रित कवियो की भी अनेक रचनाएँ इसमे सम्मिलित है। इस तथ्य का उल्लेख स्वय मिश्रबन्धुओ ने किया है। अच्छा होता यदि छान-बीन कर केवल इन्ही के ग्रन्थो की सूची प्रस्तुत की गई होती। रघुराज सिंह के वनाए हुए निम्नलिखित ग्रन्थ खोज मे मिले है—

(१) सुन्दर शतक, १९००।४५, १९०९।२३७। इस ग्रन्थ मे १०० कवित्तो मे हनुमान जी का चरित्र वर्णित है। इसकी रचना स० १९०४ मे हुई।

सवत उनइस सै चतुर, आस्विन सुदि सनिवार
सरद पूर्निमा को वन्यो, सुन्दर सतक उदार

यह दोहा सरोज मे भी उद्धृत है। विनोद मे यह हनुमत् चरित्र नाम से अलग ग्रन्थ गिना गया है, जो ठीक नही।

(२) विनय पत्रिका, १९००।४६। सूर और तुलसी के ढङ्ग पर, स० १९०७ मे विरचित पदावली।

(३) राम स्वयवर, १९०१।७, १९०४।३७१ वी। इस ग्रन्थ की रचना स० १९२६ मे हुई। इसका एक सक्षिप्त सस्करण सभा से प्रकाशित हो चुका हे।

(४) आनन्दाम्बुनिधि, १९०३।१७, १९२६।३७१ ए। यह भागवत का अनुवाद है। इसकी रचना मे ४ वर्ष लगे ये। ग्रन्थ स० १९११ मे पूर्ण हुआ था।

सवत ओनइस से जु पछावन
साल सात को परम सुहावन
कातिक मास अरम्भहि कीनो
आनन्द अम्वुधि ग्रन्थ नवीनो
रचत बीति गे वरसहि चारी
कियो कृपा करि पार मुरारी
ओनइस सै ग्यारह को साला
पूस मास गुरुवार विसाला
कृष्ण पक्ष दसमी सुखदाई
धन की जव सक्रातिहि आई

आनन्द अबुनिधिहिं सुभ ग्रन्था
ज्यो सन्तन सन्तत सत पन्था
तब यह ग्रन्थ समापत भयऊ
मम वाञ्छित पूरन ह्वै गयऊ

(५) श्रीमद्भागवत माहात्म्य, १९०३।१८। यह पद्मपुराण मे वर्णित माहात्म्य का भाषानुवाद है। यह अनुवाद स० १९११, फाल्गुन कृष्ण ३०, बृहस्पतिवार को पूर्ण हुआ।

रुद्र खण्ड ससि सवतं, अमासुर गुरुवार
मास फाल्गुन भागवत, भो महातम अवतार

(६) जगदीश शतक, १९०४।८२। श्री जगन्नाथ जी की स्तुति। विनोद मे इसी को जगन्नाथशतक नाम से दिया गया है।

(७) रामरसिकावली या भक्तमाल, १९०४।८९। इस ग्रन्थ मे हरि भक्तो के चमत्कार दोहा-चौपाई मे वर्णित हैं। ग्रन्थ चार खण्डो मे विभक्त है। एक-एक खण्डो मे एक-एक युग के भक्तो की कथा है। ग्रन्थ बहुत बडा है और श्री वैङ्कटेश्वर प्रेस से प्रकाशित हो चुका है। इसका प्रारम्भ स० १९००, सावन शुक्ल १४ को हुआ था।

सवत ओनइस सै चतुरदसि सावन सित पर्व
रचन रामरसिकावली कियो अरम्भ अगर्व

ग्रन्थ की समाप्ति २१ वर्ष बाद स० १९२१ मे आश्विन शुक्ल ७, गुरुवार को हुई। विनोद मे इसका उल्लेख दो ग्रन्थो के रूप मे हुआ है। रामरसिकावली और भक्तमाल, दो अलग-अलग ग्रन्थ समझ लिए गए हैं।

(८) रुक्मिणी परिणय, १९०६।२१०, १९२३।३३० ए। इसकी रचना स० १९०६ मे हुई।

(९) पदावली, १९२३।३३० बी।

(१०) कवित्त सग्रह, १९३८।११४

विनोद मे रघुराज सिंह के नाम पर दिए अन्य ग्रन्थ ये हैं। (१) भक्ति विलास, रचनाकाल स० १९२६, (२) रहस्य पञ्चाध्यायी, (३) विनय माला, (४) विनय प्रकाश, (५) गद्य शतक, (६) मृगया शतक, (७) चित्रकूट माहात्म्य, (८) गङ्गाशतक, (९) राम अष्टयाम, (१०) रघुपति शतक, (११) धर्म विलास, (१२) शम्भु शतक, (१३) राज रञ्जन, (१४) भ्रमर गीत, (१५) परम प्रबोध।

रघुराज सिंह के दो ग्रन्थ अभी हाल ही मे सभा की खोज मे और मिले हैं—[1]

---

१ आज रविवार विशेषाङ्क, १४ जुलाई १९५७—"काशी नागरी प्रचारिणी सभा ६४ वाँ वार्षिक खोज विवरण" शीर्षक लेख।

(१) विनै सुख सार—रचनाकाल स० १६०७

(२) राम कीर्त्तन—रचनाकाल स० १६०६

विनोद मे यदुराज विलास और रघुराज विलास नामक दो ग्रन्थ रघुराज सिह के नाम पर और भी चढे हैं। पर ये जगन्नाथ और रघुनाथ नामक कवियो के वनाए हुये है। स्वय रघुराज सिह इस सम्वन्ध मे कहते हैं—

सुकवि महान गुरुदत्त पुनि ताके तनै
जगन्नाथ रघुनाथ द्विज सरुआर के
औरो वहु कालहि ते ताके कुल दीन्ह्यो प्रभु
करि अति कृपा गान सास्त्र अधिकार को
वास अव जाको अहे गोविन्द सु गढ मध्य
देस सो वघेलखण्ड करत उचार को
रघुराज और जदुराज को विलास क्रम
रचना कियो है मम अज्ञा अनुसार को।

—खोज रिपोर्ट १६००।४६

वहुत सम्भव है अभी और भी कुछ ग्रन्थ अन्य विरचित होने के कारण इस सूची से निकालने पडें। डॉ० भगवतीप्रसाद सिह ने इनके ३२ ग्रन्थो की सूची दी है।[1]

रघुराज सिह के दरवार मे गोकुलप्रसाद, सुदर्शन दास, विश्वनाथ शास्त्री, रामचद्र शास्त्री रसिक नारायण, रसिकविहारी, गोविन्द किशोर, वालगोविन्द, हरि प्रसाद, जगन्नाथ और रघुनाथ आदि, आदिकवि थे, जो वहुत प्रख्यात नही है।

७३८।६५६

(२३) रघुनाथ कवि १, असेला वन्दीजन, वनारसी, स० १८०२ मे उ०। यह कवीश्वर महाराज वरिवण्ड सिंह काशीनरेश के कवि थे और चौरागाँव, काशी पञ्चकोशी के समीप रहते थे। यह महाराज भाषा-साहित्य के आचार्यो मे गिने जाते हैं। इनके वनाए हुए ग्रन्थ रसिकमोहन, जगमोहन, काव्यकलाधर तथा इश्क महोत्सव वहुत सुन्दर हैं। इनके पढने से फिर काव्य मे दूसरे ग्रन्थ की कुछ अपेक्षा नही होती। इन्होने सतसई का टीका भी किया है।

सर्वेक्षण

रघुनाथ वन्दीजन वर्तमान काशी राज्य के सस्थापक वरिवण्ड सिंह उपनाम वलवन्त सिंह (शासनकाल स० १७६७–१८२७) के आश्रित थे। उक्त काशीनरेश ने इन्हे पञ्चकोशी

---

(१) रामभक्ति मे रसिक-सम्प्रदाय, पृष्ठ ४७२

के अन्तर्गत चौरा नामक गाँव दे दिया था। इनके पुत्र गोकुलनाथ और पौत्र गोपीनाथ भी अच्छे कवि थे और काशी-राजदरबार से सम्बन्धित थे। रघुनाथ वन्दीजन के निम्नलिखित ग्रन्थ खोज मे मिले है—

(१) रसिक मोहन, १९०३।५६, १९२३।३२६ ई, एफ। यह ग्रन्थ भारतजीवन प्रेस, काशी, से प्रकाशित हो चुका है। इसकी रचना स० १७९६ की वसन्तपञ्चमी को हुई—

सवत सत्रह सै अधिक, वरिस छानबे पाय
माघ सुकुल श्री पञ्चमी, प्रगट भयो सुखदाय

इस ग्रन्थ से कवि के गुरु का नाम लालमुकुन्द ज्ञात होता है—

श्री गुरुदेव मुकुन्द की लहिके कृपा सहाइ
करिबे की पाई सकति ग्रन्थिन को समुदाय

यह अलङ्कार ग्रन्थ है और इसके लक्षण और उदाहरण बहुत साफ है।

(२) काव्य-कलाधर, १९०३।१४, १९०९।२३५ ए, १९२३।३२६ डी, १९२६।३६९ बी, सी डी। यह नायिका भेद और रस का ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ के भी प्रारम्भ मे श्लेष के सहारे गुरु वर्णन है।

सुफल होत मन कामना, मिटत बिघन के दुन्द
गुन सरसत, बरसत हरष, सुमिरत लाल मुकुन्द

इस ग्रन्थ की रचना स० १८०२ मे हुई—

अट्ठारह सै द्वे अधिक, सवतसर सुख सार
काव्य कलाधर को भयो, कातिक मे अवतार

—खोज रिपोर्ट १९०३।१४

(३) जगत मोहन, १९०३।११२, १९०९।२३५ बी, १९२०।१३८, १९२३।३२६ बी, सी। इस ग्रन्थ की रचना स० १८०७ मे वसन्त पञ्चमी को हुई—

अट्ठारह सै मुनि अधिक, सवत् अति अभिराम
माघ शुक्ल श्रीपञ्चमी, तिथि मिति सब सुख धाम।

इस ग्रन्थ मे कृष्ण की दिनचर्या वर्णित है। राजनीति, सामुद्रिक, वैद्यक, ज्योतिष, शालिहोत्र, मृगया, सेना, नगर, गढरक्षा, पशु-पक्षी तथा शतरञ्ज आदि सभी विषयो का समावेश करके कवि ने अपनी बहुज्ञता प्रकट की है। खोज मे प्राप्त ग्रन्थ भिन्न-भिन्न आकार के हैं। १९२३।३२६ बी तो २०४ पन्नो का है और केवल पिङ्गल है। इसी प्रकार दूषण-भूषण १९२३।३२६ ए कोई

स्वतन्त्र ग्रन्थ नही है। यह जगतमोहन का एक अश मात्र है। इसकी पुष्पिका मे जगतमोहने शब्द आया है।

(४) वाल गोपाल चरित्र, १९२६।३६९ ए, द १९३१।६८। ग्रन्थ की पुष्पिका मे इसे काशीवासी रघुनाथदास की कृति कहा गया है। प्रतिलिपिकाल स० १८४१ है। कवित्त-सवैयो मे रघुनाथ छाप है। शैली पूर्णतया इन्ही रघुनाथ के मेल मे हे। खोज रिपोर्ट मे भी यह इन्ही रघुनाथ की रचना स्वीकृत है।

इन ग्रन्थो के अतिरिक्त रघुनाथ के दो ग्रन्थ और हैं जिनमे एक इश्क महोत्सव है। इसमे उर्दू वाली खडीवोली के कवित्त है। सरोज के अनुसार इनका दूसरा ग्रन्थ विहारी सतसई की टीका है। ये दोनो ग्रन्थ अभी तक खोज मे नही मिले है। सरोज मे दिया स० १८०२ कवि का रचनाकाल है।

७३९।६१७

(२४) रघुनाथ २, पण्डित शिवदीन ब्राह्मण, रसूलावादी। वि०। इन्होने भाव-महिम्न इत्यादि छोटे-छोटे वहुत ग्रन्थ वनाये है।

सर्वेक्षण

सरोज मे इनके भाषा महिम्न से एक कवित्त उद्धत हे। जान पडता है कि यह ग्रन्थ सरोज-कार के पास था। किसी रघुनाथ का देवी जी के छप्पय[1] नामक एक खण्डित ग्रन्थ मिला है। सम्भवत यह इन्ही की रचना है। अत्र माहिम्न के स्थान पर भव महिम्न होना चाहिये।

ग्रियर्सन (७३६) मे इनके इस ग्रन्थ के ८५२ सख्यक शिवदीन से अभिन्न होने की सम्भावना व्यक्त की गई है। विनोद (२४७२) मे इनका नाम स० १९४० मे उपस्थित कवियो की सूची मे है।

७४०।६३९

(२५) रघुनाथ प्राचीन, स० १७१० मे उ०। इनके कवित्त हजारे मे हैं।

सर्वेक्षण

यह रघुनाथ ब्राह्मण थे और प्रसिद्ध कवि गग के शिष्य थे। जहाँगीर के शासनकाल (स० १६६२-८४)मे उपस्थित थे। इन्होने भानुदत्त की सस्कृत रसमञ्जरी का भापानुवाद रघुनाथ-विलास[2] नाम से किया है। यह ग्रन्थ रसमञ्जरी[3] नाम से भी मिला है। खोज रिपोर्ट[4] मे इन्हे स० १६६७ मे उपस्थित माना गया है।

(१) खोज रिपोर्ट १९४१।२०७, (२) वही १९०६।३१०, प १९२२।८७। (३) वही १९२६।३६७, १९४४।३१४, (४) वही १९०६।३१०

७४१।६४३

(२६) रघुनाथराय कवि, स० १६३५ मे उ०। यह कवीश्वर राना अमर सिंह जोधपुर के यहाँ थे।

सर्वेक्षण

रघुनाथराय का एक कवित्त सरोज मे उद्धृत है, जिसमे अमर सिंह के शाहजहाँ के दरवार मे विगडने का उल्लेख हुआ है—

वादशाह जहाँ वेठो जग जोरि तहाँ स्वच्छ
साहसी अमर सिंह रोप्यो रन रासे को

इसी घटना का उल्लेख वनवारी[५] ने भी किया है। इसी के आधार पर शुक्ल जी ने वनवारी का समय स० १६९०–१७०० माना है। यही समय रघुनाथराय का भी होना चाहिये। सरोज मे दिया स० १६३५ ई० सन् प्रतीत हो रहा है। यदि ऐसा है तो यह ठीक है और कवि का रचनाकाल है।

७४२।६४७

(२७) रघुनाथदास महन्त अयोध्यावासी। यह महाराज ब्राह्मण थे। इनका पैंतेपुर, जिला सीतापुर मे घर था और रामचन्द्र के उपासक थे। भगवद्भक्ति के कारण घर-वार त्यागकर अयोध्या जी में रहा करते थे। राम नाम की महिमा के सेकडो कवित्त ये वनाए हैं जिनसे लाखो मनुष्यो ने उपदेश पाया है।

डॉ० भगवतीप्रसाद सिंह ने अयोधावासी दो रघुनाथ दास स्वीकार किये हैं। पहले के सम्वन्ध मे वे लिखते हैं कि इनका जन्म सीतापुर जिले के पैंतेपुर नामक गाँव मे चैत्र शुक्ल तृतीया स० १८७४ को हुआ था और इनके पिता नाम दुर्गादत्त था। प्रारम्भ ही से यह विरक्त थे। गगा-स्नान करने के वहाने यह घर से भाग निकले और लखनऊ जाकर नवाव की सेना मे शामिल हो गए। भरती होने के आठ मास वाद प्रयाग मे कुम्भ लगा। यह ५० दिन की छुट्टी लेकर प्रयाग गए, वहाँ महात्मा वलदेवदास जी मौनी से इन्होंने दीक्षा ले ली। सेना से भी विरक्त हो, यह पुनः प्रयाग आ गए। प्रयाग से गगा के किनारे-किनारे १० वर्षो मे काशी आए और शिवपुर मे कुटी वनाकर रहने लगे। फिर गुरु के आदेश मे अयोध्या चले गए। एक वर्ष अयोध्या मे रहने के पश्चात् गुरु की आज्ञा से पुन पैंतेपुर गए। तव तक पिता का देहान्त हो गया था। माता को लेकर वद्रीनाथ गए। स्त्री ने साथ न छोडा। उसे लाकर अयोध्या मे एक वर्ष तक गृहस्थ-जीवन व्यतीत किया। इन्हे एक पुत्र उत्पन्न हुआ। तव स्त्री को घर पहुँचा आए और पूर्ण विरक्त होकर अयोध्या मे ही वासुदेव घाट पर रहने लगे। अयोध्या नरेश मानसिंह, 'द्विजदेव' काशीनरेश ईश्वरीप्रसाद नारायण सिंह एव रीवा नरेश रघुराज सिंह ने इनका दर्शन अयोध्या मे किया था। इनका साकेत वास सं०

(५) देखिये खोज रिपोर्ट, कवि संख्या ५७०

१९३० मे पौष शुक्ल ११ को हुआ। डॉ० सिंह ने इनके एक ग्रन्थ 'हरिनाम सुमिरनी' का उल्लेख किया है और कहा है कि इनकी छाप 'रघुनाथ' और 'जन रघुनाथ' हैं।[1]

दूसरे रघुनाथ 'रघुनाथदास राम सनेही' हैं। यह अयोध्या मे रामघाट पर रामनिवास नामक स्थान पर रहते थे। यही इन्होने विश्राम सागर की रचना चैत्र शुक्ल नवमी, स० १९११ मे की थी। विश्राम सागर से इनके जीवन के सम्बन्ध मे इतना ही ज्ञात होता है कि इनके गुरु देवादास नामक काशी निवासी कोई महात्मा थे। डॉ० सिंह के अनुसार रघुनाथदास रामसनेही के जीवन वृत्त सम्बन्धी तथ्यो का ठीक-ठीक पता नही चलता। इनका एक मात्र उपलब्ध ग्रन्थ विश्राम सागर है।[2]

मेरी धारणा है कि डॉ० सिंह के ग्रन्थ मे वर्णित दोनो रघुनाथदास एक ही है। डॉ० सिंह 'हरिनाम सुमिरनी' को पैंतेपुर वाले 'रघुनाथदास' की रचना मानते हैं। इसमे रघुनाथदास ने अपने गुरु का उल्लेख किया है—

श्री गुरु देवादास के चरण कमल धरि माथ
श्री हरिनाम सुमिरनी वरनत जन रघुनाथ

—खोजरिपोर्ट १९२३।३२८ ए

इसी के आगे देवादास को रामसनेही भी कहा गया है—

प्रथमहि राम प्रसाद के रहे सिस्य मे सिस्य
राम सनेही सत मिलि राम नाम दियो लिष्य

—खोजरिपोर्ट १९२३।३२८ ए

इसी प्रति के प्रारम्भ मे भी रघुनाथदास के राम सनेही होने का उल्लेख है—

"श्री गणेशाय नम ।। अथ श्री महाराज महत रघुनाथदास रामसनेही कृत हरिनाम सुमिरनी ग्रन्थ लिष्यते।"

विश्राम सागर मे कवि ने इन छन्दो मे अपना और अपने गुरु का उल्लेख किया एव ग्रन्थ का रचनाकाल दिया है—

संवत मुनि वसु निगम शत, रुद्र अधिक मधुमास
शुक्ल पक्ष रवि नौमि दिन, कीन्ही कथा प्रकाश
अवधपुरी परसिद्ध जग, सकल पुरिन सरनाम
रामघाट के बाद मे, रामनिवास सुधाम
तहाँ कीन्ह आरभ मै, रघुपति आयसु पाय
श्री गुरु देवादास के, पद निज हृदय वसाय

—खोज रिपोर्ट १९२९।२७८ सी

(१) राम भक्ति मे रसिक सम्प्रदाय, पृष्ठ ४६२-६४ (२) वही, पृष्ठ ४८०

यह देवादास, बलदेवदास का संक्षिप्त नाम है। इनके लिखे निम्नलिखित ग्रन्थ खोज मे मिले हैं—

(१) मानस दीपिका, १९२६।३७० ए, ३७२ बी, १९२९।२७८ ए, बी। यह रामचरित मानस की टीका है।

(२) हरिनाम सुमिरनी, १९२०।१३९, १९२३।३२८ ए—

श्री गुरु देवादास के चरण कमल धरि माथ
श्री हरिनाम सुमिरनी वरनत जन रघुनाथ

(३) दोहा-कवित्तादि, १९२३।३२८ बी।

(४) शङ्कावली रामायण, १९२३।३२७ ए बी, १९२६।३७० बी, ३७२ सी, १९२९।२७८ ए।

(५) विश्राम मानस, १९२६।३७० सी, ३७२ ए, १९२९।२७८ बी।

(६) भक्तमाल माहात्म्य, १९२६।३७० डी।

(७) विश्राम सागर, १९२९।२७८ सी।

(८) प्रश्नावली, १९२९।२७८ डी।

(९) ज्ञान ककहरा, १९४४।३१५

भाषाकाव्यसंग्रह मे इनके सम्बन्ध में एक चमत्कार पूर्ण घटना का उल्लेख हुआ है। इसके अनुसार यह पहले अंगेजी फौज मे थे। वही से विरक्त हो यह अयोध्या मे आ रहे।[1] वस्तुत यह लखनऊ के नवाब की फौज मे थे इनकी भरती रावर्ट नामक एक अंग्रेज ने नवाब की ओर से की थी।

७४३।६५०

(२८) रघुनाथ उपाध्याय, जौनपुर निवासी, स० १९२१ मे उ०। इन्होने निर्णय मञ्जरी नामक ग्रन्थ बनाया है।

सर्वेक्षण

निर्णय मञ्जरी के प्रारम्भ के दो दोहे सरोज मे उद्धृत हैं। ज्ञात होता है कि यह ग्रन्थ सरोजकार के पास था। इस कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही है।

---

(१) भाषाकाव्यसंग्रह, पृष्ठ १२९

७४४।६१३

(२९) रसराज कवि, स० १७८० मे उ०। इनका नखशिख वहुत सुन्दर है।

सर्वेक्षण

रसराज जी के सम्वन्ध मे कही से कोई सूचना सुलभ नही।

७४५।६५७

(३०) रसखानि कवि, सय्यद इब्राहीम पिहानीवाले, स० १६३० मे उ०। यह कवि मुसलमान थे। श्री वृन्दावन मे जाकर कृष्णचन्द्र की भक्ति मे यह ऐसे डूवे कि मुसलमानी धर्म त्यागकर माला कण्ठी धारण किए हुए वृन्दावन की रज मे मिल गए। इनकी कविता निपट ललित माधुरी से भरी हुई है। इनकी कथा भक्तमाल मे पढने योग्य है।

सर्वेक्षण

रसखान, दिल्ली के पठान थे, पिहानी के नही। इनकी भी वार्ता, २५२ वैष्णवो की वार्ता मे है। इनका प्रेम निरूपण सम्वन्धी एक लघुग्रन्थ प्रेमवाटिका है। इसमे ५३ दोहे हैं। इसकी रचना स० १६७१ मे हुई, ऐसा माना जाता है।

१ ७ ६ १
विधु सागर रस इन्दु सुभ वरस सरस रसखानि
प्रेम वाटिका रचि रुचिर चिर हिय हरष वखानि ५१

इस ग्रन्थ के तीन दोहे कवि के जीवन पर प्रकाश डालनेवाले हैं—

देखि गदर हित साहिवी, दिल्ली नगर मसान
छिनहिं वादसा वस की, ठसक छोरि रसखान ४८

प्रेम निकेतन श्री वनहि, आइ गोवर्द्धन धाम
लह्यो सरन चित चाहि के, जुगल सरूप ललाम ४९

तोरि माननि तें हियो, फेरि मोहनी मान
प्रेम देव की छविहिलखि, भए मिया रसखान ५०

वटेकृष्ण जी के अनुसार[1] स० १६१२-१३ मे साल डेढ साल के भीतर दिल्ली के लिए पाँच युद्ध हुए और चार-पाँच शासक वदले। इसी समय रसखानि दिल्ली छोड वृन्दावन आए। वटेकृष्ण जी के अनुसार प्रेमवाटिका का रचना काल स० १६४१ है। सस्कृत मे 'सागर' से चार का भी वोध होता है। वटेकृष्ण जी की वाते अधिक तर्कपूर्ण हैं, अत मान्य हैं। ऐसी दशा मे रसखानि का रचना स० १६३१–४१ वि० है।

---

(१) ना० प्र० पत्रिका स० २०१२ अङ्क १, 'रसखान का समय' शीर्षक लेख।

इनकी सबसे प्रसिद्ध रचना 'सुजान रसखान' है, जो इनके कवित्त-सवैयो का सग्रह है। इसमे कुल २१४ छन्द है। इनका एक लघुग्रन्थ दानलीला है। इसमे ११ कवित्त-सवैये हैं। इनकी रचना का श्रेष्ठतम सकलन श्री विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने 'रसखानि' नाम से स २०१० मे प्रकाशित किया है।

रसखान जी विट्ठलनाथ के शिष्य थे। इन्होने स० १६४२ के पहले किसी समय दीक्षा ली होगी। अत स० १६३० इनका उपस्थितिकाल ही सिद्ध होता है। यह जन्मकाल कदापि नही हैं।

७४६।६३१

(३१) रसाल कवि, अङ्गने लाल वन्दीजन विलग्रामी, स० १८८० मे उ०। इनका काव्य महा सुन्दर है। वरवै अलङ्कार इनका वनाया हुआ ग्रन्थ देखने योग्य है।

सर्वेक्षण

कवि का नाम अङ्गने राय है, अङ्गने लाल नही। यह विलग्राम के रहने वाले बन्दीजन थे। इनका एक ग्रन्थ वारहमास[1] खोज मे मिला है। इसका रचनाकाल स० १८८६ है।

ऋतु (६) वसु (८) सिधि (८) गुरु चन्द (१), सवत कातिक दसमि तिथि
कृष्ण पक्ष सुख कन्द, वासर जानहु देव गुरु

अत सरोज मे दिया हुआ स० १८८० स्पष्ट ही रचनाकाल है। इस ग्रन्थ मे कवि ने एक कवित्त मे अपने काव्य के सम्वन्ध मे वहुत ठीक लिखा है—

छन्द औ कवित्त चारु सोरठा सु बरवै ये
जटित किए हैं लाय प्रेम के नगीना मे
सुवरन सोधि उक्ति युक्ति कै नवीनी विधि
वृति अनुप्रासन को तापै कियो मीना मे
रची प्रेम माल है रसाल करिबे को कण्ठ
गुनन गुही है आछी जुगति नवीना मे
कृष्ण विन राधा ठकुराइन गुसाइन को
बरनौं विरह वर वारह हीना मे

विनोद (२०४०) मे इस कवि का जन्मकाल स० १८८० माना गया है और वारहमासा का रचना काल स० १८८६ दिया गया है। ग्रियर्सन जो कहे वह भी ठीक और खोज जो कहे वह तो ठीक है ही। क्या अन्धेर खाता है।

---

(१) खोज रिपोर्ट १६१२।१५१, १६२६।१७

रसाल कवि अङ्गने राय जी सरोज मे ७८६ सख्या पर वर्णित रामप्रसाद जी के बडे पुत्र थे। उन्होने अवध के नवाब मोहम्मद अलीशाह (शासन काल स० १८९४-९९ वि०) के दीवान मुन्शी अयोध्या प्रसाद खत्री बिलग्रामी को अपनी चरम वृद्धावस्था मे जो पत्र लिखा था, उसमे अपने बडे पुत्र का नाम अङ्गन दिया है और छोटे पुत्र का गोकुल चन्द, जो पुत्र लेकर लखनऊ गया था—

मोहि रिसाय सुनाय कही 'अङ्गने' जे बडे फरजन्द हमारे
× × ×
दै अपनी अरजी पठयो हम गोकुलचन्द को पास तुम्हारे

७४७।६३२

(३२) रसिकदास, व्रजवासी। इनके पद रागसागरोद्भव मे हैं।

सर्वेक्षण

रसिकदास के नाम पर सरोज मे जो पद दिया गया है, वह किसी रसिकदास का नही। इसमे कवि की छाप गदाधर है—

रसिक रूप रूपरासि, गुन निधान जानराय,
गदाधर प्रभु जुवतीजन मुनि मन मानस मराल

रसिकदास नाम के कम से कम चार महात्मा कवि हुए है। इनमे से एक राधावल्लभी-सम्प्रदाय के थे, एक हरिदासी थे और दो वल्लभ-सम्प्रदाय के थे।

राधावल्लभीय रसिकदास—हित हरिवंश के राधावल्लभी सम्प्रदाय के रसिकदास वृन्दावन मे रहते थे। इनका ज्ञात रचनाकाल स० १७४३-५१ है। आप धीरे-धीरे गोस्वामी (स० १६७०-१७६०) के शिष्य थे। प्रसार लता मे गुरुका नाम आया है इनके निम्नलिखित ग्रन्थ खोज मे मिले है।

दृढ धरि श्री धीरीधर चरणा
मङ्गल रूप अमङ्गल हरणा
राधावल्लभ सम्प्रदाय सिद्धान्त और साहित्य, पृष्ठ ५००

(१) रस कदम्ब चूडामनि, १९०९।२६२। रचनाकाल, अगहन वदी ६, रविवार, स० १७५१।

सवत सत्रह सै बरस, एक अधिक पञ्चास
अगहन वदि षष्टी सु तिथि, दिनमनि मणि सु प्रकास

इस ग्रन्थ की पुष्पिका अद्भुत है—

"इति श्री रस दम्दब चूडामणौ श्री व्रज नवतरुनि कदम्ब मुकुट मनि कृपा कटाक्षछ्टाप्रसादेन रसिकदासेन कृत विंशति तरङ्ग सम्पूर्ण"

(२) माधुर्य लता, १९१२।१५४ ए। रचनाकाल स० १७४४—

इक सत दोहा लिखि कहत सवत्सर परकास,
सत्रै सै चालीस पुनि चार और तिहि पास १०२

इस ग्रन्थ मे रचनाकालसूचक इस दोहे को छोडकर १०१ दोहे हैं। ग्रन्थ हरिवश के स्मरण से प्रारम्भ हुआ है—

सुमिरत श्री हरिवश को, दम्पति दया निधान
रस विलास उत्सव विभव, करत तिहीं छिन दान १

(३) रतिरङ्ग लता, १९१२।१५४ बी। ३४ छन्दो मे राधाकृष्ण की केलि का वर्णन है। रचनाकाल स० १७४९, आषाढ वदी ८—

सवत सत्रह सै बरस, एक घाटि पञ्चास
कृष्ण पक्ष तिथि अष्टमी, लहु असाढ सुख रासि ३४

(४) सुवा-मैनाचरित्रलता, १९१२।१५४ सी। इस ग्रन्थ मे १०१ दोहे है। पहले दोहे मे हित कुल को प्रणाम किया गया है—

श्री हित कुलहि प्रणाम करि लीला ललित विलास
करत चोज परिहास रस सखिन हेतु सुख रास १

(५) आनन्द लता, १९१२।१५४ डी। इस ग्रन्थ मे कुल ५९ दोहे है।

(६) हुलास लता, १९१२।१५४ ई। इस ग्रन्थ मे १८ कुलपैया छन्द और ८ दोहे है—

रसिकदास सु हुलास करि, लता हुलास प्रकास
कुलपैया लिखि अष्टदस, दोहा अष्ट विलास २४

ग्रन्थारम्भ मे हरिवश का स्मरण है—

श्री हरिवस प्रसस लडाऊँ
स्वारथ प्रेम पदारथ पाऊँ १

(७) अतन लता, १९१२।१५४ एफ। कुल २७ दोहे।

बीस सात दोहा लिखे, तुमहू बिस्वा बीस
सदा सर्वदा हीय मे, मुदा बसत वन ईस २७

(८) रतन लता, १९१२।१५४ जी। कुल ४५ छन्द। प्रारम्भ मे हरिवश का स्मरण है—

श्री हरिवश हिये मे आवे
अद्भुत रत्न लता दरसावे

(९) रहस लता, १९१२।१५४ एच । कुल ४६ छन्द । प्रारम्भ मे हरिवश का स्मरण है—

घरि हिय श्री धीरी धराहि, चित्त रूप अवधारि
श्री हरिवश कृपा करैं, उपजे भक्ति विचारि १

(१०) कौतुक लता, १९१२।१५४ आई । कुछ ९० छन्द ।

(११) अद्‌भुत लता, १९१२।१५४ जे । प्रारम्भ मे हरिवश स्मरण । कुल ५७ छन्द ।

श्री हरिवश नाम उच्चरौ
श्री राधा आराधन करौ १

(१२) विलास लता, १९१२।१५४ के । इस ग्रन्थ मे कुल ७४ छन्द है—

विलास लता तुक वन्द ये, साठ रुनौ निर्धार
एक कुण्डलिया सरस अति, दोहा चार विचार

ग्रन्थारम्भ मे हरिवश स्मरण है—

श्री हरिवश चरन अनुसरिए
विविध विलास लता विस्तरिए १

(१३) तरङ्ग लता, १९१२।१५४ एल । २२ निधि सिधि नामा छन्द और ३ दोहे ।

छन्द लिखे बाईस ये, दोहा तीन प्रकास
रसिकदास हित आस यह, हिय मे रहौ विलास २५

ग्रन्थारम्भ मे हरिवश का स्मरण—

नित मन प्रसन्न श्री-हरिवश की
फस सकल सेस करैं नंस की

(१४) विनोद लता, १९१२।१५४ एम । प्रारम्भ मे हरिवश स्मरण—

वलि वलि श्री हरिवश गुसाई
गुन निधि कुँवरि कपानिधि गाई १

कुल ६९ छन्द ।

विनोद लता कथि मोदमय, रसिकदास सुखरासि
साठ एक तुकवन्द ये, दोहा आठ प्रकास ६९

(१५) सौभाग्य लता, १९१२।१५४ एन । कुल ४८ छन्द ।

दोहा पाँच रु सोरठा एक सुनो चित लाइ
इकतालीस कवित्त सब जोर सितोलिस आइ ४८

(१६) सौंदर्य लता, १६१२।१५४ ओ। कुल १४३ दोहे।

इकसत दोहा महा रस, द्वै ऊपर चालीस
रसिकन की पद रज रहै, रसिकदास के सीस ४३

(१७) अभिलाप लता, १६१२।१५४ पी। कुल २८ छन्द।

तेरह कुण्डलिया रचै, अठपैया गनि लोक
रसिकदास अभिलाष लिखि, कृपा कटाछ विलोक २८

प्रथम कुण्डलिया मे हरिवश का स्मरण व्यास सुवन के रूप मे हुआ है—

"व्यास सुवन ललिता निजु, तिहिं रङ्ग रही रंगाइ'

(१८) मनोरथ लता, १६१२।१५४ क्यू। प्रारम्भ मे 'श्री हित हरिवश चन्द्रो जयति' लिखा हुआ है। इस ग्रन्थ मे कुल १३५ छन्द है और इसमे सवैये भी हैं।

इक सत तीस रु पांच सव, छन्द लिखे या मद्धि
प्रभु सम्बन्धी समझिहो, दोष न सुद्ध असुद्ध १३३

(१९) सुखसार लता, १६१२।१५४ आर। कुल ४० छन्द।

(२०) चारुलता, १६१२।१५४ एस। ५५ दोहे।

(२१) अष्टक, १६१२।१५४ टी। आठ त्रिभङ्गी छन्दो मे हित हरिवश की वन्दना—

भज मन हरिवश, अघकुल नन्श, जगतप्रसस, सश हरे

(२२) प्रसाद लता, १६०६।१८ ए। रचनाकाल स० १७४३।[1]

इन २२ ग्रन्थो मे से १ और २२ को छोड, शेष २० वावा सन्तदास, राधावल्लभ का मन्दिर वृन्दावन के पास हैं। अत ये सव राधावल्लभीय रसिकदास के है, इसमे सन्देह नही। ये सभी ग्रन्थ चन्द्रसखी थे। शिष्य रसिकदास से भिन्न रसिकदास के हैं। राधावल्लभ-सम्प्रदाय मे ५ रसिकदास हुए हैं।[2]

हरिदासी रसिकदास—यह रसिकदास हरिदास जी के टट्टी-सम्प्रदाय के वैष्णव थे। यह नरहरिदास के शिष्य थे। इनके ग्रन्थो मे हरिदास और नरहरिदास का वरावर उल्लेख हुआ है। इनके निम्नलिखित ९ ग्रन्थ मिले हैं, जिनमे से प्रथम ६ टट्टी स्थान वृन्दावन के महन्त भगवानदास

(१) राधावल्लभ-सम्प्रदाय, सिद्धान्त और साहित्य, पृष्ठ ५००-५०१ (२) वही, पृष्ठ ४९९-५००

के पास से मिले है। सर्वेश्वर के अनुसार आपने स० १७४१ से १७५८ वि० तक गद्दी को अलकृत करने के अनन्तर निकुञ्ज प्रविष्ट हुए।[1] 'हरिदास वशानुचरित्र' के अनुसार इनका जन्मकाल माघ शुक्ल५, स० १७४१ है।[2] निश्चय ही यह अशुद्ध है। यह इनका गद्दीधर होने का समय है। इनका जन्म स० १७०० के आस-पास किसी समय हुआ होगा, ऐसा अनुमान किया जा सकता है। उक्त ग्रन्थ के अनुसार इनकी मृत्यु स० १६६८ मे श्रावण कृष्ण १० को हुई।[3] निश्चय ही यह छापे की भूल है।

(१) भक्ति सिद्धान्त मणि, १६१२।१५४ यू।

श्री नरहरिदास चरन सिर नाइ
भक्ति भेद कछु कहू बनाइ

(२) रस सार, १६१२।१५४ वी।

श्री हरिदासी नरहरिदास
स्यामा स्याम रहे मन भासि
तिनकी कृपा रस सार बखानो
तिहि छवि अमित उदार बखानो

(३) कुञ्ज कौतुक, १६१२।१५४ डबलू।

"श्री नरहरिदास पग वन्दि, प्रिया की कृपा मनाऊ"

(४) ध्यान लीला, १६१२।१५४ एक्स।

जै जे श्री हरिदास परम गुरु बडे दयाकर
प्रगट करी रस रीति मुदित ज्यो उदति दिवाकर १
श्री नरहरि दास युग वंदि भजन उच्चार करो जब
प्रथम करो गुरु ध्यान जुगल को ध्यान कहौ तब २

(५) वाराह सहिता, १६१२।१५४ वाई। यह सस्कृत वाराहसहिता का पद्यमय अनुवाद है।

श्री नरहरिदास चरन चित लाउँ
श्री राधा कृष्ण सुमिरि मन ध्याऊँ

(६) अष्टक १६१२।१५४ जेड। ईश्वरी-वन्दना।

---

(१) सर्वेश्वर, वर्ष ५,अङ्क १-५, चैत्र स० २०१३, पृष्ठ २४४-४५ (२) हरिदास वशानुचरित्र, पृष्ठ ८० (३) वही, पृष्ठ ८०

(७) पूजा विलास, १९०६।२१८ डी, १९१७।१६० वी।

श्री नरहरि दास चरन उर धरौं
भक्ति भाय कछु वरनन करौं

× × ×

रसिकदास सरनागत ह्वै रह्यो
श्री नरहरि दास कृपा जस कह्यो

(८) रसिकदास जी के पद, १९२३।३५७ वी। यह २८ पन्नो का ग्रन्थ है, जिसके अन्त मे 'ध्यान लीला' भी सङ्कलित है। अत यह इन्ही की रचना है। १९३२।१८६ वी पर भी एक रसिकदास के पद ग्रन्थ का विवरण है। इसके अन्त मे रस सार सलग्न है, अत यह भी इन्ही की रचना है।

(९) गिरिराज वर्णन, १९३२।१८५ ए।

श्री हरिदास वर्य की महिमा को नाहिन कोउ पावत अन्त
सेस विधी सिव सनकादिक मुनिचाहत पद रज श्री भगवन्त
हो अति दीन मलीन हीन मति पाजी महा अघ ही की खान
ऐसे रसिकदास को दढकर, चर्ण सर्ण राखो गहि पान

रसिकदास गो० हरिराय जी—गोस्वामी हरिराय जी महाप्रभु वल्लभाचार्य के वशज है और वल्लभ-सम्प्रदाय के आचार्यो मे से हैं। यह भी अपनी छाप रसिकदास, रसिक प्रीतम, रसिक शिरोमणि और रसिकराय रखा करते थे। इनके दो ग्रन्थ मिले हैं—

(१) रसिक सागर, १९३५।८५ ए—

"रसिकदास जन टेर कहत है श्री वल्लभ चरनन टेरो"

(२) चात्रक लगन, १९३५।८५ वी।

गिरि कानन गोकुल भवन, श्री वल्लभकुल देव
आन नहीं सुपनो सखी, यह मन निश्चै टेव

रसिकदास गोपिकालङ्कारजी महाराज—यह वल्लभ-सम्प्रदाय के गोस्वामी द्वारिकेश जी के गोपिका भट्ट के नाम से भी पुत्र थे। यह ख्यात है। इनके रचे दो ग्रन्थ मिले है—

(१) कीर्तन सग्रह, १६४४।३२८ क, (२) कीर्तन समूह १६४४। ३२८ ख।

रसिक दास के नाम पर दो ग्रन्थ अभी और हैं जिनके सम्बन्ध मे निर्णय करने का कोई सूत्र नही मिला कि ये किस रसिकदास की कृति है—(१) एकादशी माहात्म्य, १६०६।२१८ ई, (२) कृष्ण जन्मोत्सव, १६४१।२१८।

सभा के अप्रकाशित सक्षिप्त विवरण मे ये पैंतीसो ग्रन्थ एक व्यक्ति के माने गए हैं। व्यक्ति-परिचय देते समय राधावल्लभी और हरिदासी रसिकदासो को एक मे मिला दिया गया है। विनोद (३७३) मे भी यह घालमेल है।

७४८।६३३

(३३) रसिया कवि, नजीब खाँ, सभासद् महाराजा पटियाला। वि०। इनके कवित्त सुन्दरी तिलक मे हैं।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई अन्य सूचना सुलभ नही।

७४९।६३८

(३४) रसिक शिरोमणि कवि, स० १७१५ मे उ०। इनके कवित्त हजारे मे हैं।

सर्वेक्षण

महाप्रभु वल्लभाचार्य के वशज श्री हरिराय जी रसिकदास, रसिक प्रीतम, रसिक शिरोमणि, रसिक राय आदि छाप रखा करते थे।[१] इनका जन्म स० १६४७, भाद्रपद वदी ५ को हुआ था।[२] यह स० १७१५ मे जीवित थे। इनका देहावसान स १७७२ मे हुआ। हजारे मे इनकी रचना रही होगी। सरोज मे रसिक शिरोमणि के नाम पर एक कवित्त कुब्जा प्रसङ्ग का है और भक्ति-भावना के प्रतिकूल नही है।

---

(१) राधावल्लभ सम्प्रदाय सिद्धान्त और साहित्य, पृष्ठ ५३८ (२) अष्टछाप, पृष्ठ १४ के पश्चात् हरि राय जी के चित्र के नीचे।

७५०।६४१

(३५) रसरास कवि, स० १७१५ मे उ० । इनके शृङ्गार के सुन्दर कवित्त हैं ।

सर्वेक्षण

कवि का वास्तविक नाम रामनारायण है—रसरास उपनाम है । यह ब्राह्मण थे और रामानुज सम्प्रदाय के वैष्णव थे । यह जयपुर के रहनेवाले थे तथा जयपुर नरेशमहाराज प्रताप सिंह के दीवान जीवराज सिन्धी के आश्रित थे । इन्होने स० १८२७ मे कवित्त रत्नमालिका नामक[1] एक काव्यसग्रह प्रस्तुत किया था । इसमे ईश्वर भक्ति सम्बन्धी ६०६ कवित्त है । इनमे से १०८ कवित्त तो स्वय रसरास जी के है और शेष ८०१ अन्य पूर्ववर्त्ती या समकालीन कवियो के । एक आशीर्वादात्मक कवित्त से रसरास जी के सम्बन्ध मे कुछ सूचना मिलती है—

जैपुर सहर सदा सुख सो सुवस बसो
सवाई प्रताप सिह राज करिवो करो
जसधारी जीवराज सङ्ग ही दिवान सदा
याही भाँति किए जेसे काज करिवो करो
देखो सुख सपति कलत्र पुत्र मित्रन के
विप्रन के भोजन समाज करिवो करो
सनमुख रहो सदा साँवरो नृपति याके
द्वार पे गयन्द ठाढे गाज करिवो करो ६०६

रसरास जी का एक लघुग्रन्थ रसिक पचीसी[2] और मिला है । इसका एक अन्य नाम 'रसरास पचीसी' भी हे । इनमे २६ कवित्त है और इसका विषय गोपी-प्रेम है । रचना सरस एव सुन्दर है ।

रसिक सभा में रस रङ्ग वरसायवे कौं
रसिक पचीसो रसरासिह बनाई है ॥ २६ ॥

पुष्पिका से इनका जयपुर नरेश सवाई प्रताप सिंह का आश्रित होना सिद्ध है—

"इति श्रीमन्महाराजाधिराज राजराजेन्द्र सवाई प्रताप सिंह जी देवाज्ञप्त रसरासि विरचिताया रसिक पचीसी सम्पूर्णम् ।

कवि का रचनाकाल स० १८२७ है, अत सरोज मे दिया स० १७१५ अशुद्ध है ।

---

(१) खोज रिपोर्ट १६०१।६३, (२) राज० रिपोर्ट भाग १, खोज रिपोर्ट १६४४।३२३ ।

७५१।६४२

(३६) रामरूप कवि। ऐजन। इनके शृङ्गार के सुन्दर कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

सरोज के प्रथम तीन सस्करणो मे इस सख्या पर रसरूप कवि हैं, न कि रामरूप। साथ ही इस कवि के आगे पीछे वर्णित अन्य कवियो के नाम भी रस से ही प्रारम्भ होते हैं। फिर बीच मे रामरूप का आ जाना सरोजकार की पद्धति के प्रतिकूल है। यह कृत्य जान या अनजान मे सरोज सशोधक से हुई है। रामरूप की कविता का पृष्ठ निर्देश २६० है, पर इस पृष्ठ पर किसी रामरूप की कविता नही है, रसरुप की है। रसरूप का विवरण आगे सख्या ७६२ पर देखिए। यह कवि दो बार आ गया है।

७५२।६५१

(३६) रसरङ्ग कवि लखनऊवाले, स० १६०१ मे उ०। ऐजन। इनके शृङ्गार के सुन्दर कवित्त है।

सर्वेक्षण

विनोद मे रसरङ्ग का विवरण १७६६ और २२७६ सख्याओ पर दो बार दिया गया है। १७६६ पर इन्हे स० १६०० के आस-पास उपस्थित माना है। २२७६ पर १६०१ को जन्मकाल माना गया है। यह ठीक नही। २२७६ पर हनुमन्तजसतरङ्गिनी और सीतारामनखशिख नामक दो ग्रन्थो का उल्लेख प्र० त्रै० रि० के आधार पर हुआ है।

७५३।६६२

(३८) रसिकलाल कवि बाँदावाले, स० १८८० मे उ०। ऐजन। इनके शृङ्गार के सुन्दर कवित्त है।

सर्वेक्षण

रसिकलाल कवि बाँदावाले का कोई विवरण अन्यत्र सुलभ नही। इनके पूर्ववर्ती रसिकलाल अवश्य मिले है। यह गो० दामोदर हित के शिष्य एव वृन्दावन निवासी थे। स० १७२४ मे इन्होने भाषा करुणाकन्द[1] नामक ग्रन्थ लिखा था।

---

(१) खोज रिपोर्ट १६४४।३१८

७५४।६६३

(३९) रसपुञ्ज दास दादूपन्थी। इनके प्रस्तार प्रभाकर, वृत्त विनोद, ये दोनो ग्रन्थ पिङ्गल मे बहुत उत्तम हैं।

सर्वेक्षण

रसपुञ्जदास रचित तीन ग्रन्थ खोज मे मिले हैं—

(१) कवित्त श्री माता जी रा, १९०२।८१। यह दुर्गा-स्तुति सम्बन्धी ग्रन्थ है।

(२) चमत्कार चन्द्रोदय, राज० रि० भाग १, सख्या ३७। यह ५ पन्ने का लघुग्रन्थ है, और दो कलाओ मे विभक्त है। पहली कला मे रस और दूसरी मे अलङ्कार निरूपण है।

(३) प्रस्तार प्रभाकर, राज० रि० भाग २, पृष्ठ ११। इस ग्रन्थ मे रचनाकाल सूचक दोहा दिया हुआ है।

समत ससि(१) मुनि(७) वसु(८) मही(१), चैत्र कृष्ण पछ सार
पचमी गुरु पूरण भयो, प्रभाकर सु प्रस्तार

रसपुञ्जदास मारवाड नरेश अभय सिह (शासनकाल स० १७८१–१८०५) के समकालीन कहे गए हैं।[1] इस बात को ध्यान मे रखते हुए मानना पडेगा कि उक्त दोहे मे अङ्कानाम् वामतो गति का अनुसरण नही किया गया है और प्रस्तार प्रभाकर का रचनाकाल स० १७८१ है।

वृत्त विनोद का उल्लेख सरोज मे हुआ है, पर यह ग्रन्थ अभी तक खोज मे नही मिल पाया है।

यह सेवक जाति के थे।[2] गोसाई रसपुञ्जदास का सम्बन्ध जयपुर नरेश महाराज प्रताप सिह (शासनकाल स० १८३५ ६० वि०) के दरवार से भी था और यह रेखता लिखने मे परम प्रवीण थे।[3]

७५५।६६४

(४०) रसलीन कवि, सय्यद गुलाम नवी विलग्रामी, स० १७९८ मे उ०। यह कवि अरवी-फ़ारसी के आलिम-फाज़िल और भापा कविता मे वडे निपुण थे। रस प्रवोध नामक अलङ्कार ग्रन्थ इनका वनाया हुआ वहुत प्रामाणिक है। इनके पुस्तकालय मे पाँच सौ जिल्दें भापाकाव्य की हैं।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९०२।८१ (२) वही (३) व्रजनिधि ग्रन्थावली, प्रस्तावना, पृष्ठ १७, १८, १९, ४९

सर्वेक्षण

सैय्यद गुलाम नबी विलग्राम के रहनेवाले थे और रसलीन नाम से कविता करते थे। इनके बनाए हुए दो ग्रन्थ खोज मे मिले है—

(१) अङ्गदर्पण या शिखनख रसलीन, १९०५।१५, १९२३।१४० स। यह ग्रन्थ दोहो मे है और यह स० १७९४ मे रचा गया। इसमे १७७ दोहे है।

सत्रह सै चौरानवे, सवत में अभिराम
यह सिखनख पूरन करी, लै सुख प्रभु को नाम

(२) रस प्रबोध, १९०५।१६, १९०६।१६६,१९२३।१४० बी, सी। दोहो मे रसवर्णन करनेवाले इस ग्रन्थ की रचना स० १७९८ मे हुई।

सत्रह सै अठानवे, मधु सुदि छठ बुधवार
बिलगराम में आइ के, भयो ग्रन्थ अवतार

इस ग्रन्थ की रचना ११५४ हिजरी मे हुई और इसमे ११५४ ही दोहे भी हैं।

ग्यारह सै चौवन सकल हिजरी सवत पाइ
सब ग्यारह सै चौवनै दोहा राखे ल्याइ

यह रस-ग्रन्थ है, अलङ्कार ग्रन्थ नही, जैसा कि सरोज मे कहा गया है। रचनाकाल सूचक दोहा सरोज मे भी उद्धृत है अत सरोजकार ने जान-बूझकर कवि का रचनाकाल दिया है। यही निष्कर्ष ठीक है।

हिन्दी के प्रसिद्ध कवि मीर अब्दुल जलील, रसलीन के चचेरे मामा थे। इन्होने रसलीन के जन्मकाल के सम्बन्ध मे यह फारसी छन्द लिखा है—

नूर चश्मे मीर बाकर गुफ्तबामन
चू गुले खुरशीद दर आलम दमीदन
साल तारीखे तवल्लुद ख़ुद बगफतम
नूर चश्मे बाकरे अब्दुल हमीदम

मीर बाकर के पुत्र ने मुझसे कहा कि मैं ससार मे सूर्यमुखी फूल के समान खिला हूँ और अपने जन्म की तारीख मैंने खुद कही है, जो यह है—

"नूर चश्मे बाकरे अब्दुल हमीदम"

इस वाक्य को फारसी लिपि मे लिखने पर प्रयुक्त होनेवाले वर्णों के अङ्को का जोड १११११ आता है। रसलीन का जन्म ११११ हिजरी मे २ मोहर्रम को,तदनुसार २० जून १६९९ ई० अर्थात् स० १७५६ के ज्येष्ठ महीने मे हुआ था।

रसलीन के विद्यागुरु मीर तुफैल मोहम्मद बिलग्रामी थे। यह मूलत अतरौली, जिला आगरा के रहनेवाले थे पर १५ वर्ष की ही वय मे बिलग्राम आकर बस गए थे। यह हिन्दी, फारसी, और अरबी के विकट विद्वान थे। रसलीन ने इनकी प्रशसा मे निम्नलिखित सवैया कहा है—

देस विदेसन के सब पण्डित सेवत हैं पग शिष्य कहाई
आयो है ज्ञान सिखावन को सुर को गुरु मानुस रूप बनाई
बालक वृद्ध सुबुद्धि जहाँ लगि बोलत हैं यह बात बनाई
को मन मेल कहै सुभ केल तुफैल तुफल मोहम्मद पाई

रसलीन शिया-सम्प्रदाय के मुसलमान थे। इनमे धार्मिक उदारता और सहिष्णुता थी। इनका पर्याप्त समय शाहजहानाबाद अर्थात् दिल्ली और इलाहाबाद मे बीता था। यह दिल्ली-सम्राट् के प्रधानमन्त्री नवाब सफदर जङ्ग के अभिन्न मित्रो मे थे। इनकी मृत्यु रामचेतौनी के युद्ध मे १३ सितम्बर १७५० ई०, स० १८०७ को हुई। १७४९ ई० मे फरूंखाबाद के दूसरे नवाब कायम खाँ, रुहेलो के द्वारा युद्ध मे मारे गए और इनका राज्य दिल्ली सम्राट् ने हडप लिया। कायम खाँ के द्वितीय पुत्र अहमद खाँ ने सेना एकत्र कर दिल्ली सम्राट् की सेना से युद्ध किया था। इसी युद्ध मे रसलीन दिल्ली सम्राट् की सेना मे थे और मारे गए थे। रामचेतौनी, डण्डवार गन्ज रेलवे स्टेशन के पास एक तीर्थ-स्थान है और यह एटा से १८ मील उत्तर है।

रसलीन के मित्र मीर गुलाम अली आज़ाद ने सर्वे आज़ाद मे इनकी मृत्यु-तिथि पर यह छन्द कहा है—

बहोदे जमाँ सैयदे खुश सखुन
ज फिर्दोस मी जदाज जाने नबी
कलम गर य सर कदाँ तारीख ओ
रक़म कर्द हय-हय गुलामें नबी

अपने समय के सैयदो मे जो अद्वितीय सुकवि था, उसने स्वर्ग मे नबी के पान-पात्र से मदिरा का पान किया और रोती हुई लेखनी से उनकी मृत्यु की यह तारीख लिखी है—'हय-हय गुलामे नबी।' 'हय-हय गुलामे नबी' से सन् ११६३ हिजरी निकलता है।

रसलीन ने रसप्रबोध और अङ्गदर्पण के अतिरिक्त ९८ फुटकर कवित्त-सवैये भी लिखे हैं, जो एक क्रम विशेष मे आबद्ध है।

श्री गोपालचन्द्र सिनहा ने रसलीन पर एक सुन्दर और प्रामाणिक लेख लिखा है।[1] उसी के आधार पर यह सारी सामग्री दी गई है।

७५६।६६५

(४१) रसलाल कवि बुन्देलखण्डी, स० १७६३ मे उ०। इनके शृङ्गार के सुन्दर कवित्त है।

सर्वेक्षण

विनोद (६२१) और बुन्देल वैभव[2] मे रसलाल का जन्मकाल स० १७३३ और रचनाकाल स० १७६० दिया गया है। सूत्र का कोई निर्देश नही है।

७५७।६२५

(४२) रसनायक, तालिब अली विलग्रामी, स० १८०३ मे उ०। इनके शृङ्गार मे अच्छे कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

पण्डित मयाशकर याज्ञिक ने लिखा है कि रसनायक ने स० १८७२ मे भ्रमरगीत के आधार पर विरह-विलास नामक ग्रन्थ रचा। इस ग्रन्थ की विशेपता यह है कि इसमे एक दोहा एक कवित्त, फिर एक दोहा एक कवित्त, यह छन्द-क्रम है। पहले दोहे मे सक्षेप मे भाव दे दिया गया है, फिर कवित्त मे उसे पल्लवित किया गया है।[3] कुछ कहा नही जा सकता कि यह रसनायक, भरतपुरी तालिब अली विलग्रामी रसनायक से भिन्न है अथवा अभिन्न। यदि अभिन्न हैं तो सरोज मे दिया स १८०३ ठीक नही है।

७५८।६१५

(४३) ऋषि जू कवि, स० १८७२ मे उ०। इनके शृङ्गार के अच्छे कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे कोइ सूचना सुलभ नही।

---

(१) सम्पूर्णानन्द अभिनन्दन ग्रन्थ, पृष्ठ १२४-३८। (२) बुन्देल वैभव, भाग, २ पृष्ठ ३८५

(३) माधुरी, फरवरी १९२७, पृष्ठ ८२

७५९।६१९

(४४) ऋषिराम मिश्र पट्टी वाले, स० १६०१ मे उ०। इन्होंने वशीकल्पलता नामक ग्रन्थ बनाया है। यह कवि महाराज बालकृष्ण शाह अवध के दीवान के यहाँ थे।

सर्वेक्षण

बालकृष्ण जी अवध के नवाब आसफुद्दौला के दीवान थे। आसफुद्दौला का शासनकाल स० १८३२-५४ है। यही समय इनके दीवान बालकृष्ण और बालकृष्ण के आश्रित कवि ऋषिराम पट्टीवाले का होना चाहिए। इस दृष्टि से सरोज मे दिया हुआ इनका समय स० १६०१ ठीक नही है, यद्यपि इस समय तक ऋषिराम जी का जीवित रह जाना असम्भव नही।

सरोज मे वशीकल्पलता से उद्धरण दिया गया हे। प्रतीत होता हे कि यह ग्रन्थ सरोज-कार के पास था।

७६०।६२०

(४५) ऋषिनाथ कवि। इनके शृङ्गार के सुन्दर कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

ऋषिनाथ जी असनी, जिला फतहपुर के रहनेवाले ब्रह्मभट्ट थे। यह काशिराज के दीवान दीहाराम के भानजे सदानन्द कायस्थ, (उत्तरप्रदेश के मुख्यमन्त्री माननीय सम्पूर्णानन्द जी के पूर्वज) दीहाराम के पुत्र रघुबरदयाल तथा काशिराज के भाई बाबू देवकीनन्दन सिंह के आश्रित थे। इनका बनाया हुआ अलङ्कारमणिमञ्जरी[1] नामक ग्रन्थ खोज मे मिला है।

वर्तमान काशी राज्य के सस्थापक महाराज बरिवण्ड सिंह उपनाम बलवन्त सिंह के दीवान दीहाराम थे। इनके पुत्र रघुबर और इनकी बहन के पुत्र सदानन्द के कथनानुसार ऋषिनाथ ने अलङ्कारमणिमञ्जरी की रचना की थी।

तासु तनय प्रगट्यो धरा दीहाराम उदड
तिन देवान कीन्हो तिन्है कासिराज बरिबण्ड
पुण्य बीज महि मे भए दीहाराम देवान
ताके फल विधि ने दए जानत सकल जहान
भो अनुजा सुत, सुत सरिस, सदानन्द कुलचन्द
बहुरो दीहाराम सुव रघुबर बखत बिलन्द

× × ×

(१) खोज रिपोर्ट १६२०।१६६

सदानन्द रघुवर कृपा करि राख्यो निज साथ
जस नीको नित करत है असनी को ऋषिनाथ
सदानन्द रघुवर हमे आयसु आछो दीन
रच्यो जथामति सो सुनी मै यह ग्रन्थ नवीन

ग्रन्थ का रचनाकाल स १८३०, वसन्त पञ्चमी, सोमवार है।

०　　　３ ८　　　　१
सवत नभ सङ्कुरनयन सिद्धि वहुरि निसिकन्त
वार सोम, सुभ माघ सुदि तिथि पञ्चमी वसत

ऋषिनाथ के पुत्र ठाकुर, ठाकुर के धनीराम और धनीराम के पुत्र सेवक हुए है। ये सभी सुकवि थे। ठाकुर और धनीराम देवकीनन्दन सिह के यहाँ थे। सेवक भारतेन्दुयुग के सुप्रसिद्ध कवि है।

७६१।६२१

(४६) रविनाथ कवि, बुन्देलखण्डी स० १७६१ मे उ०। ऐजन। इनके शृगार के सुन्दर कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

यद्यपि ग्रियर्सन (४२५) और विनोद (६२१) मे सरोज-दत्त स० १७६१ जन्मकाल स्वीकृत है, पर बुन्देल वैभव[1] मे इस कवि का जन्मकाल स० १७६० एव कविताकाल स० १७९० दिया गया है यद्यपि बुन्देल वैभव वाली वात ही ठीक है।

७६२।६२२

(४७) रविदत्त कवि, स० १७४२ मे उ०। इनके कवित्त, वलदेव कृत सग्रह मे हैं।

सर्वेक्षण

रविदत्त, सविता दत्त का उपनाम है। दो नामो से इस कवि का वर्णन सरोज मे दो वार हो गया है। ग्रियर्सन (३०४) मे दोनो का अभेद स्वीकृत है। सरोज के ही समान विनोद (६४०, ६६४) मे भी भेद वना हुआ है। विस्तृत विवरण सख्या ९०३ पर सविता दत्त के प्रसङ्ग मे देखिए।

७६३।६२३

(४८) रतनेश कवि वन्दीजन बुन्देलखण्डी, प्रताप कवि के पिता, स० १७८८ मे उ०। इन्होने शृगार के अद्भुत कवित्त वनाए हैं।

---

(१) बुन्देल वैभव, भाग २, पृष्ठ ४२५

सर्वेक्षण

प्रताप कवि, चरखारी नरेश विक्रम साहि के दरवार मे थे और इनका रचनाकाल स० १८८०–१९०० है।[1] इनके पिता का रचनाकाल स० १८५०–८० के आस-पास होना चाहिए। सरोज मे दिया इनका स० १७८८ अशुद्ध है। ग्रियर्सन (१९९) और विनोद (२६७) इन दोनो परवर्ती ग्रन्थो मे भी रतनेश का समय ठीक नही हे।

रतनेश का एक ग्रन्थ कान्ताभूपण[2] मिला है। इसमे कान्ता या नायिका और भूषण या अलङ्कार का कथन साथ-साथ हुआ है।

गनपति सुमति कृपाल ह्वै सुमति देहु मम अङ्ग
करौं नायिका नेह सो भूषन जुत इक सङ्ग

इस ग्रन्थ मे १२७ छन्द है। सम्भवत सभी दोहे हैं। ग्रन्थ केवल १० पन्नो का है। पुष्पिका मे कवि नाम आया है। प्राप्त प्रति का लिपिकाल स० १८७१ है, जो रचनाकाल से वहुत दूर नही है।

७६४।६२४

(४९) रत्न कुंवरि, वावू शिवप्रसाद सितारे हिन्द की प्रपितामही, वनारसी, स० १८०८ मे० उ०। प्रेमरत्न नामक इनका ग्रन्थ श्रीकृष्ण भक्तो की जीवन मूरि है।

सर्वेक्षण

रत्न कुंवरि जी राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द की पितामही थी, प्रपितामही नही। इन्होंने प्रेमरत्न नामक ग्रन्थ रचा था। यह दोहा-चौपाइयो मे है। इसमे कुरुक्षेत्र मे गोपी-कृष्ण पुनर्मिलन वर्णित है। ग्रन्थ नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ से प्रकाशित हो चुका है। प्रकाशन की व्यवस्था स्वय राजा शिवप्रसाद ने की थी। राजा साहव की लिखी एक भूमिका भी आदि मे जुडी हुई है। इस भूमिका मे राजा साहव अपनी दादी के सम्वन्ध मे यह कहते हैं—

"सत्तर वरस की अवस्था मे भी वाल काले और आँखो की ज्योति वालको की सी थी। वह हमारी दादी थी, इससे हमको अव उनकी अधिक प्रशसा लिखने मे लाज आती है, परन्तु जो साधुसन्त और पण्डित लोग उस समय के उनके जानने वाले काशी मे वर्तमान हैं, वह उनके गुणो को अद्यावधि स्मरण करते हैं।"

१८८७ ई० मे ग्रियर्सन ने राजा शिवप्रसाद से इनकी इन दादी के सम्वन्ध मे कुछ पूछताछ की थी। उत्तर मे राजा साहव ने कुछ लिखा था, ग्रियर्सन ने उसे अपने ग्रन्थ मे सख्या ३७६ पर ज्यो का त्यो उद्धृत कर दिया है। आवश्यक अश का हिन्दी अनुवाद यह है—

---

(१) बुन्देल वैभव, कवि सख्या ४४८ (२) खोज रिपोर्ट १९२०।१६५

"मेरी दादी रतन कुँवरि करीव ४५ वरस पहले मरी, जब मैं १६ वर्ष का ही था और स्वर्गीय महाराज भरतपुर के वकील की हैसियत से गवर्नर जनरल के अजमेर स्थित एजेंट कर्नल सदरलैंड की कचहरी मे था। जब उन्होने यह दुनिया छोडी, उनकी अवस्था ६० और ७० के बीच थी। मुझे दुख है कि मैं आपको ठीक-ठीक तिथियाँ नही दे सकता। प्रेमरत्न के अतिरिक्त उन्होने अनेक पद भी रचे थे। मेरे पास एक हस्तलिखित ग्रन्थ पद की पोथी है, जिसमे उन्होने यत्र-तत्र अपने ही हाथो अपने पद लिखे है।"

राजा शिवप्रसाद का जन्म स० १८८० मे हुआ था। अत इनकी दादी की मृत्यु स० १८६६ मे हुई। उस समय इनकी वय ६०-७० वर्ष की थी, अत इनका जन्म स० १८३०-४० के बीच किसी समय हुआ रहा होगा। ऐसी स्थिति मे सरोज मे दिया समय स० १८०८ अशुद्ध सिद्ध होता है। पर प्रेमरत्न का रचनाकाल स० १८४४ है, अत इनका जन्म काल स० १८३० के कुछ पहले ही होना चाहिए।

ठारह सै चालीस, चतुर वर्ष जब विदित भय
विक्रम नृप अवनीस, भए, भयो यह ग्रन्थ तब
माह माइ कें माह, अति सुभ दिन सित पचमी
गायो परम उछाह, मङ्गल मङ्गलवार वर

प्रेमरत्न की रचना काशी मे हुई—

काशी नाम सुठाम, धाम सदा शिव को सुखद
तीरथ परम ललाम, सुभग मुक्ति वरदान छम
ता पावन पुर माहि, भयो जन्म या ग्रन्थ को
महिमा वरनि न जाइ, सगुण रूप यश रस भर्यो

कथा का परिचय और कवि का नाम अन्तिम छन्द मे आया है—

कुरुक्षेत्र सुभ थान, ब्रजवासी हरि को मिलन
लीला रस की खान, प्रेम रतन गायो रतन

इस ग्रन्थ की छन्द सख्या इस सोरठे मे दी गई है।

कह्यो ग्रन्थ अनुमान त्रय, शत अरसठ चौपई
तिहि अर्द्ध रु अठ जान, दोहा, सोरह सोरठा

ग्रन्थ की अनेक प्रतियाँ खोज में मिली है। कुछ खोज रिपोर्ट मे इसे रत्नदास बनारसी की कृति कहा गया है। १६०६।२६७, १६२३।३५६, १६२६।२६७ए वी, १६४१।२१३ इन चार खोज-रिपोर्टो मे इस ग्रन्थ का विवरण है। १६०६ वाली रिपोर्ट मे कोई निर्णय नही दिया गया है कि

यह किस रतन की रचना है। ग्रन्थ की पुष्पिका मे किसी का नाम नही दिया गया है। १९२३ वाली प्रति की पुष्पिका मे इसे कवि रतनदास-कृत कहा गया है। इसी के आधार पर रिपोर्ट मे यह रत्नदास की कृति स्वीकृत है और लिखा गया है कि राजा शिवप्रसाद ने इस ग्रन्थ का कुछ अंश अपनी दादी के नाम से गुटका मे दिया है, यह राजा साहब की भूल प्रतीत होती है। क्या यह उक्त प्रतिलिपिकर्ता की भूल नही हैं, जिसने ग्रन्थ मे रतन देखा और रतनदास की कल्पना कर ली। पुन १९२९ वाली रिपोर्ट मे प्रेम रतन के रचयिता रतनदास माने गए है। इस वर्ष इस ग्रन्थ की दो प्रतियाँ मिली हैं। एक की पुष्पिका मे कर्ता का उल्लेख नही है, दूसरी प्रति की पुष्पिका यह है—

"इति श्री प्रेम रतन वीवी रतन कुँवरि कृत सम्पूर्ण समाप्त लिखत चेतनदास स्वपठनार्थ काशीवाशी सम्वत् १९०७ वि०।"

क्या यह पुष्पिका पर्याप्त प्रमाण नही है कि यह ग्रन्थ रतन कुँवरि का लिखा हुआ है, रतनदास का नही। ग्रन्थ रचना के समय कवयित्री की वय अधिक नही थी, अत वह लिखती है—

जो जन होहु सुजान लीजो चूक सुधारि धरि
वालक अति अज्ञान, हौं अजान जानत न कछु
अति जड वडि मति मद, नहि कवि, नहिं वुध, चतुर कछु
मोको गमहु न छन्द, यह गायो गुरु कपा ते

यहाँ वालक शब्द से पकड नही की जा सकती कि यह तो किसी पुरुप की रचना है, वालक मे वालिका अन्तर्भूक्त है। साथ ही 'वडि मति मद' मे वडि स्त्रीलिङ्ग विशेपण ध्यान देने योग्य है।

खोज रिपोर्ट से यह रचना जहाँ एक ओर किसी रतनदास की सिद्ध होती है, वही दूसरी ओर रतन कुँवरि की भी सिद्ध होती है। ऐसी दशा मे सरोज और राजा शिवप्रसाद की साक्षी पर यह रचना वीवी रतन कुँवरि की ही स्वीकृत की जा रही है।

७६५।६४६

(५०) रतन कवि १ ब्राह्मण वनारसी, स० १९०५ मे उ०। इन्होने प्रेमरत्न नामक ग्रन्थ वनाया।

सर्वेक्षण

यह रतनकवि भ्रम से उत्पन्न हो गए हैं। वस्तुत इनका कोई अस्तित्व नही। महेशदत्त ने राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द की दादी वीवी रतन कुँवरि कृत प्रेमरतन मे कवि छाप रतन देखा, ग्रन्थ मे काशी भी पाया, और वास्तविक रचयिता से अनभिज्ञ होने के कारण एक काशीवासी रत्न कवि की कल्पना कर ली। ग्रन्थ मे यद्यपि रचनाकाल स० १८४४ दिया हुआ है, फिर भी

महेश दत्त जी ने इसका रचनाकाल स० १८०५ दिया है।[1] इस ग्रन्थ से कुछ अश भाषाकाव्य-सग्रह मे सङ्कलित भी किया है। सरोजकार ने इस कवि का सारा विवरण और उद्धरण महेश दत्त के उक्त भाषाकाव्यसग्रह से लिया है। फिर भी न जाने कैसे स० १८०५ को १६०५ मे वदल दिया है। भाषाकाव्यसग्रह से उद्धृत सरोज मे उदाहृत इस कवि की निम्नलिखित कविताएँ हैं।

यह वृन्दावन सुख सदन, कुन्ज कदम के छाँहि
कनकमई यह द्वारका, ताकी रज सम नाँहि १
नृपति सभा सिहासन, जिहि लखि लजत अनङ्ग
नहि विसरत वह सखन को गाय चरावन सङ्ग २
राज साज साजे सकल तिमि नहि नेकु सुहाँहि
गुन्ज माल वन चित्र जिमि मोर मुकुट मधि माँहि ३

ये तीनो दोहे नवलकिशोर प्रेस लखनऊ से प्रकाशित वीवी रतनकुँवरि कृत प्रेमरत्न के प्रारम्भ ही मे पृष्ठ ४ पर हैं। महेशदत्त का भ्रम ठीक वैसा ही है, जैसा कि १६२३ वाली प्रति के लिपिकर्ता का। विनोद (८१३।२, २३७८) मे भी यह भ्रान्ति वनी हुई है।

———

७६६।६५२

(५१) रतन कवि २ श्रीनगर वुन्देलखण्ड वासी, स० १८३८ मे उ०। यह कवि राजा फतेशाह वुन्देला श्रीनगर के यहाँ थे। उन्ही के नाम से फतेशाह भूषण और फते प्रकाश, ये दो ग्रन्थ भाषा-साहित्य के वहुत सुन्दर वनाए हैं।

सर्वेक्षण

रतन कवि श्रीनगर नरेश फतह शाह के यहाँ थे। गढवाल गजेटियर के अनुसार यह फतह-शाह श्रीनगर गढवाल की गद्दी पर स० १७४१ से १७७३ तक रहे। शिव सिंह के पुस्तकालय मे फतह प्रकाश वर्तमान है। इस ग्रन्थ के प्रथम उद्योत की समाप्ति पर यह लेखाश है—

'श्रीनगर वासी राजा फतह शाह मेदिनी शाह आत्मजेन आज्ञप्त"

मेदिनी शाह गढवाल नरेश फतह शाह के पिता का नाम था। फतह प्रकाश के दूसरे उद्योत मे अद्भुत रस के उदाहरण मे जो छन्द है, उसका अन्तिम चरण यह है—

गढवाल नाह फतेशाह शैलगाह तोहि
जग माँहि जो ऐसे ज्ञान गुनियतु है ४२

इस छन्द से भी स्पष्ट है कि फतह शाह गढवाल नरेश थे। यह न तो वुन्देला थे, न वुन्देल-खण्डी और न वुन्देलखण्ड के किसी भू-खण्ड के अखण्ड-शासक।

---

(१) भाषाकाव्यसंग्रह, पृष्ठ १२७

फिर घर मे ग्रन्थ रहते हुए शिव सिंह ने इस कवि के सम्बन्ध मे अशुद्ध सूचना क्यों दी, यह प्रश्न विचारणीय है। इस ग्रन्थ के प्रथम उद्योत मे ४७ वे छन्द मे धुरमङ्गद बुन्देला की प्रशस्ति है। यह छन्द पञ्चम कवि का है और उद्धृत किया गया है। इसमे भूषण के भी दो छन्द उद्धृत हैं। सम्भवत धुरमङ्गद बुन्देला की प्रशस्तिवाले छन्द ने सरोजकार को भ्रम मे डाला।[1]

सरोज मे फते प्रकाश से जो छन्द उद्धत है, उसके एक चरण मे फते साहि को मेदनी साहि का नन्द या पुत्र कहा गया है।

वार न लगत ऐसे बारन बकसि देत
साह मेदनी को फतेसाह साहसी ढरै।

सरोजकार के पास दोनो ग्रन्थ थे और उन्होने दोनो से उदाहरण दिए है।

जब आश्रयदाता गढवाली सिद्ध हो गया, तब रतन कवि भी उधर ही के होगे, बुन्देल खण्डी नही होगे और इनका भी रचना काल स० १७४१–७३ होगा। तृतीय एव सप्तम सस्करण मे कवि का समय १७३८ के स्थान पर १७९८ कर दिया गया है जो अशुद्ध है।

फतेह प्रकाश की प्रतियाँ खोज मे भी मिली हैं। इसमे २२२ छन्द हैं।[2] विनोद (८७५) के अनुसार फतेह भूषण मे ४६९ छन्द है।

७६७।६५३

(५२) रतन कवि ३ स० १७९८ मे उ०। इन्होने सभा साहि पन्ना नरेश के यहाँ रस-मञ्जरी का भाषा मे उल्था किया हे। यह ग्रन्थ देखने योग्य है।

सर्वेक्षण

पन्ना नरेश सभा साहि महाराज छत्रसाल के पौत्र तथा हृदय साहि के पुत्र थे। इनका शासन काल स० १७९६–१८०९ है। इनके पुत्र अमान सिंह (शासनकाल १८०९-१८१३) हिन्दूपत (शासनकाल स० १८१३–३४) और खेत सिंह हुए। १७९८ के स्थान पर तृतीय एव सप्तम सस्करणो मे १७३८ कर दिया गया है।

रतन कवि का एक ग्रन्थ अलङ्कार दर्पण[3] खोज मे मिला है। इस ग्रन्थ की रचना सभा साहि के पुत्र हिन्दूपत के लिए हुई।

हिन्दू सिंघ दिवान भानु कुल भूषन भए सुहाए
तिनके निकट रतन कवि अनुदिन अगनित मोद बढाए

---

(१) भूषण विमर्श, पृष्ठ ११८-२१। (२) खोज रिपोर्ट १९०९।२६६, १९२३।३६० ए बी, १९२६।४०६ (३) खोज रिपोर्ट १९०६।१०३

ज्यौं पयोधि पय थम्भु मेरु भू इहि विधि हमकौ थम्भौ
अलङ्कार दर्पन वहु विधि करि नाम ग्रन्थ आरम्भौ

इस ग्रन्थ की रचना स० १८२७ मे हुई—

सवत रिस(७) भुज(२) वसु(८) परमेश्वर(१) चरन चारु उर धारौ
फागुन सुदि राका गति भद्रन सुर गुरुवार निवारौ

रस का यह सम्पूर्ण ग्रन्थ सम्भवत इसी छन्द मे लिखा गया है।

सरोज मे रतन कवि की कविता का उदाहरण 'रस मञ्जरी भाषा' से दिया गया है। यह ग्रन्थ अभी तक खोज मे नहीं मिला है। पर यह शिव सिंह के पास था । उद्धृत अश के निम्न-लिखित अश कुछ काम के हो सकते है।

अति पुनीत कलिकलुष विहण्डन
साहि सभा सबहिन सिर मण्डन

सरोजकार ने साहि सभा का अर्थ सभा साहि किया है।

रसिकराज हरिवश तिन चचरीक निज हेत
भानु उदित रस मञ्जरी मधुर मधुर रस लेत

इसमे रसिकराज हरिवश का उल्लेख है। ऊपर भी कलिकलुष-विहण्डन आया है। क्या सुप्रसिद्ध हित हरिवश तो अभिप्रेत नही हैं। यदि ऐसा है तो यह रचना और भी पुरानी है और तव साहि सभा का कुछ और ही अर्थ करना होगा।

खोज मे किसी रतन के निम्नाङ्कित ग्रन्थ मिले है, जो महाराज वनारस के पुस्तकालय मे है—

(१) चूक विवेक, १९०४।१००। यह नीत ग्रन्थ है।

(२) दोहा, १९०४।१०१। इस लघु-ग्रन्थ मे २९ शृङ्गारी दोहे है।

(३) वुध चतुर विचार, १९०४।९८

(४) विष्णु पद, १९०४।१०२ कुल २८ पद । इनका प्रतिलिपिकाल स० १८५५ है। विनोद (६२९) और बुन्देल-वैभव[1] मे ये सभी ग्रन्थ इन रतन बुन्देलखण्डी के माने गए हैं। ये काशीवासिनी रतन कुँवरि की रचनाएँ भी हो सकती है।

७६८।६५४

(५३) रतनपाल कवि। इनके नीति-सम्वन्धी दोहे पढने योग्य हैं।

(१) बुन्देल-वैभव, भाग २, पृष्ठ ५०१

सर्वेक्षण

रतनपाल करौली, राजस्थान के राजा थे। यह स० १७४२ के लगभग विद्यमान थे। प्रेम-रत्नाकर के प्रसिद्ध कवि देवीदास इनके दरबार मे थे। हो सकता है, यह रतनपाल कविता प्रेमी होने के साथ-साथ कवि भी रहे हो। यदि ऐसा है तो नीति सम्बन्धी दोहे इन्ही रतनपाल-कृत होगे। विनोद मे प्रमाद वश इन्हे राग-रत्नाकर का रचयिता कहा गया है और रचनाकाल स० १७४२ दिया गया है। विनोदकार सम्भवत प्रेम-रत्नाकर का नामोल्लेख करना चाहते थे, जो इनके आश्रित कवि देवीदास द्वारा स० १७४२ मे प्रणीत हुआ।[1]

७६६।६२६

(५४) रावराना कवि, बन्दीजन, चरखारी के निवासी, स० १८९१ मे उ०। यह कवीश्वर, बुन्देलो के प्राचीन कवीश्वरो के वश मे है। राजा रतन सिह के यहाँ इनका बडा मान था। इन्होने कवित्त सुन्दर बनाए हैं।

सर्वेक्षण

चरखारी नरेश रतन सिह का शासनकाल स० १८८६–१९१७ है।[2] रावराना का सरोज-दत्त समय स० १८९१ इसी समय के बीच पडता है, अत. यह ठीक है और कवि का उपस्थिति-काल एव रचनाकाल है।

७७०।६२९

(५५) रनछोर कवि, स० १७५० मे उ०। इन्होने सामान्य कविता की है।

सर्वेक्षण

रणछोर जी ग्रियर्सन (१८९) एव विनोद (४९४) के अनुसार राजपट्टन नामक ग्रन्थ के रचयिता है तथा इनका समय स० १७३७ है। ग्रियर्सन मे इस सवत् के सम्बन्ध मे सन्देह भी प्रकट किया गया है। राजपट्टन का उल्लेख टॉड के आधार पर हुआ है।

एक और रणछोर जी दीवान नागर गुजराती ब्राह्मण का पता चलता है, जो जूनागढ के नवाब के दीवान थे। यह शैव थे। इन्होने सोरठी तवारीख, शिव-रहस्य, भाषा शिवपुराण, काम-दहन, सदाशिवविवाह आदि ग्रन्थ बनाए है। इन्होने अपनी कविता मे विशुद्ध ब्रजभाषा का प्रयोग किया है।[3]

---

(१) बुन्देल-वैभव सख्या ३६३ (२) ना० प्र० पत्रिका, माघ १९८५, चरखारी राज्य के कवि (३) माधुरी, जून १९३७, गुजरात का हिन्दी साहित्य।

७७१।६३४

(५६) रूप कवि। इन्होंने शृङ्गार के सुन्दर कवित्त लिखे हैं।

सर्वेक्षण

रूप कवि, ७७२ सख्यक रूपनारायण से भिन्न है। यह पोकरन जाति के ब्राह्मण थे, मेडता नगर के निवासी थे, रामदास के पुत्र थे और हरिदासो के दास थे।

जाति सु पोकरना प्रगट, नगर मेडते वास
रामदास को नन्द हौं, हरदासन को दास

स० १७३७ मे प्रतिलिपित नखशिख नामक इनका एक ग्रन्थ मिला है, जिसे शृङ्गार रस की वडी प्रौढ और परिमार्जित रचना कहा गया है। इसमे १६७ कवित्त है।[1] सरोज मे रूप कवि का जो एक कवित्त उदाहृत है, वह दिग्विजय भूपण से उद्धृत है। इसमे राधा के दातो का अद्भुत वर्णन हुआ है।

रूप कवि राधिका वदन में रदन छवि,
सोरहो कला को काटि वत्तिस वनायो है।

यह कवित्त उसी नखशिख का प्रतीत होता है। इसी कवि की सम्भवत एक अन्य कृति वारहमासा[2] है। इसके दो कवित्त रिपोर्ट मे उद्धृत हैं, जिनमे से एक मे रूप छाप भी है। इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि स० १७५० मे वीकानेर मे हुई थी।

स० १९०८ के भी आस-पास एक रूप कवि हुये हैं, जिन्होने इसी वर्ष रूपमञ्जरी नामक ग्रन्थ लिखा, जिसमे भक्ति के पद हैं।

रूप मञ्जरी नाम यह रच्यो ग्रन्थ रस रीति
श्री राधा गोविन्द पद दायक मञ्जुल प्रीति ३२९

८ ० ९ १
संवत विक्रम नृपति को वसु व्योमाङ्क जु रूप
पौष मास सित पक्ष तिथि षष्टी सूर अनूप ३३०

—खोज रिपोर्ट १९४४।३३६

यह रूप, सरोज के अभीष्ट रूप से परवर्ती हैं।

७७२।६३५

(५७) रूपनारायण कवि, स० १७०५ मे उ०। हजारे मे इनके कवित्त हैं।

---

(१) राज० रिपोर्ट, भाग १, सख्या ६० (२) वही, भाग ४, पृष्ठ १६८

सर्वेक्षण

सरोज के तृतीय सस्करण मे स० १७०५ है और सप्तम सस्करण मे प्रमाद से १००५ हो गया है। इनका एक शृङ्गारी सवैया सरोज मे उदाहृत है, जो दिग्विजय भूषण से उद्धत है। सरदार के शृङ्गार सग्रह मे रूपनारायण का एक सवैया वीरवल के दान की प्रशसा मे है।

पूरव पश्चिम उत्तर दक्षिण सगहि सङ्ग फिरे दिसि चारचो
काहू महीप को मार्‍यो मर्‍यो, न रह्यो घर बीच, टर्‍यो नहि टार्‍यो
रूपनरायन याचत ही चले कोटिक भूप कितो पचि हार्‍यो
दीन को दावनगीर दरिद्र सु तो वलवीर के वीरहि मार्‍यो

प्रतीत होता है कवि, वीरवल से पुरस्कृत हो चुका है। वीरवल की मृत्यु स० १६४२ मे हुई,[1] अत रूपनारायण का समय स० १६४० के आस पास होना चाहिए। ऐसी स्थिति मे इनका समय स० १७०५ ठीक नही।

बुन्देल वैभव के अनुसार[2] रूपनारायण ओरछा के रहने वाले मिश्र ब्राह्मण थे। इनका जन्म-काल स० १७५० और रचनाकाल स० १७६० माना गया है, जो ठीक नही प्रतीत होता। इनका निम्नाङ्कित छन्द उक्त ग्रन्थ मे उद्धृत है—

लियो वीर विरसिंह बुन्देला मनहु मिलाप मिलायो
इन्द्रजीत मधुकर को वेटा, मधुकर ज्यो उठि आयो
मधुकर ज्यो उठि आय आयकर फूल रहयो अनभायो
सङ्ग मिले सङ्गीत रसिक को, नव रस गुन गन पायो

इस छन्द से स्पष्ट है कि कवि का सम्वन्ध मधुकर शाह और उनके वेटो—इन्द्रजीत सिंह और वीरसिंह देव से था। अत कवि महाकवि केशवदास का समकालीन सिद्ध होता है।

७७३।६५५

(५८) रूपसाहि कायस्थ, वाग महल पूना के निवासी, स० १८१३ मे उ०। यह महान् कवि हिन्दूपति बुन्देला पन्ना महाराजा के यहाँ थे। इनका वनाया हुआ रूपविलास ग्रन्थ कवियो के अवश्य देखने योग्य है।

सर्वेक्षण

रूपसाहि का असली नाम फौजदार था। यह रूपसाहि नाम से रचना करते थे। यह वाग महल पन्ना के रहनेवाले श्रीवास्तव कायस्थ थे, पूना के नही, जैसा कि सरोज सप्तम सस्करण मे प्रमाद से लिख गया है।

---

(१) राज० रिपोर्ट, सख्या ४६७ (२) बुन्देल वैभव, भाग २, पृष्ठ ४०५

काइथ गुनिए बारहै, श्रीवास्तवन राम
सुभ परना अस्थान है, बाग महल अभिराम

इनके पिता का नाम कमलनयन, पितामह का शिवाराम, और प्रपितामह का नारायण-दास था।

काइथ वस कुलीन अति, प्रगट नरायनदास
सिवाराम तिनके सुवन, कमल नयन सुत तासु
फौजदार तिनके तनय, रूप साहि यह नाम
कीन्हो रूपविलास तिन, ग्रन्थ अधिक अभिराम

यह पन्ना नरेश हिन्दूपति के यहाँ थे। यह हिन्दूपति, महाराज छत्रसाल के प्रपौत्र हृदय साहि के पौत्र, और सभासिह के पुत्र थे।

छत्रलाल बुन्देल मनि, ता सुत श्री हिरदेस
सभा सिंह जाके तनय, ता सुत हिन्दु नरेस

इन हिन्दूपति का शासनकाल स० १८१३–३४ है। रूपसाहि ने रूपविलास नामक ग्रन्थ स० १८१३ मे रचा, इसी से यह सब सूचनाएँ प्राप्त हुई हैं।

गुन(३) ससि(१) वसु(८) ससि(१) जानिए, स वत अङ्क प्रकास
भादों सुदि दसमी सनी, जनम्यो रूप विलास १०

यह ग्रन्थ १४ विलासो मे विभक्त है और दोहो मे रचा गया है। इसमे पिङ्गल, नायक-नायिका भेद, नव रस, अलङ्कार और षट्ऋतु वर्णन आदि सभी कुछ है। खोज मे इनके दो ग्रन्थ मिले हैं—

(१) रूप विलास, १६०५।८३, १६०६।१०५, १६२०।१६७

(२) नव रस चतुर्वृत्ति वर्णन, १६४१।२३३। यह रूपविलास का ही एक अङ्ग भी हो सकता है।

७७४।६३७

(५९) राजाराम कवि १, स० १६८० मे उ०। इनके कवित्त हजारे मे हैं।

सर्वेक्षण

राजाराम की रचना हजारे मे थी, अत स० १७५० के पहले इनका अस्तित्व सिद्ध है। किसी राजाराम का षट् पञ्चासिका[1] नामक ज्योतिष ग्रन्थ मिला है। प्राप्त-प्रति का तिथिकाल स० १७६१ है। हो सकता है, यह हजारे वाले ही राजाराम हो।

---

(१) खोज रिपोर्ट १६०६।३१७

७७५।६६५

(६०) राजाराम कवि २, स० १७८८ मे उ० । इनके शृङ्गार के सुन्दर कवित्त हैं ।

सर्वेक्षण

इस समय के दो राजाराम मिलते हैं । इनमे से एक गुजराती है, दूसरे बुन्देलखण्डी ।

गुजराती राजाराम—यह सारगपुर, राजनगर, गुजरात के निवासी थे । इनके पिता का नाम गगादास था । यह वल्लभ सम्प्रदाय के अनुयायी थे और स० १७७९ के आस-पास उपस्थित थ इसी वप इन्होने 'वल्लभकुल विस्तार कल्पवृक्ष' नामक ग्रन्थ लिखा ।

"सवत १७७९ कार्तिक शुदि १ ताई श्रीमद्वल्लभ कुल विस्तार कल्पवृक्ष लिख्यो है ।

श्रीमद्वल्लभ कुल सदा, पदपङ्कज विसराम
गुर्जर गङ्गादास सुत, सेवक राजाराम ९
रामनगर सुभ देस मधि, सारङ्गपुर निज वास
प्रेम भक्ति सो खोज करि, कीर्नो बुद्धि विलास १०"

—खोज रिपोर्ट १९४४।३३४

बुन्देलखण्डी राजाराम श्रीवास्तव—बुन्देलखण्डी राजाराम ने स० १८०६ मे यम-द्वितीया की कथा की रचना की—

श्री वास काइथ खरे, ज्ञाति उकासी वार
राजाराम प्रनाम करि, भाख्यो कथा प्रचार ८३
अष्टादस सत षट अधिक, सवत बिक्रमराज
चैत कृष्ण सुभ पञ्चमी, रवि वासर सिर ताज ८४

—खोज रिपोर्ट १९०६।९९

विनोद मे ९२२ और ८१७ सख्याओ पर दो राजाराम है, जिनका जन्मकाल सरोजदत्त स० १७८८ माना गया है । ८१७ सख्या पर यह राजाराम कायस्थ बुन्देलखण्डी हैं । इनके एक अन्य ग्रन्थ 'शृङ्गार काव्य' का भी उल्लेख हुआ है । कुछ निश्चयपूर्वक नही कहा जा सकता कि इनमे कौन से सरोज के अभीष्ट राजाराम हैं ।

७७६।६६१

(६१) राजा रणधीर सिह, शिरमौर, सिङ्गारामऊ वाले । विद्यमान है । यह राजा कवि कोविदो का वडा सम्मान करते हैं और काव्य मे महा निपुण है । इनके वनाए हुए भूपण कामुदी, काव्य रत्नाकर, ये दोनो ग्रन्थ देखने योग्य हैं ।

सर्वेक्षण

राजा रणधीर सिंह शिरमौर क्षत्रिय थे। यह सिंगरामऊ, जिले जौनपुर के तालुकेदार थे। इनका जन्म स० १८७८ मे हुआ। स० १९१४ मे यह सिगरामऊ के राजा हुए। इनका देहान्त अयोध्या मे स० १९५२ मे हुआ। इनके बनाए हुए निम्नाङ्कित पाँच ग्रन्थ हैं[1]—

(१) पिंगल नामार्णव, १९०६।३१६ ए, १९२३।३५२ सी। यह एक साथ पिगल और पर्याय कोश है। इसकी रचना स० १८९४ मे हुई पर खोज रिपोर्ट मे इसका रचनाकाल स० १८२४ लिखा है, जो स्पष्ट ही अशुद्ध है।

(२) काव्य रत्नाकर, १९०६।३१६ बी, १९२३।३५२ बी। यह नायिका भेद और अलङ्कार का ग्रन्थ है। इसकी रचना स० १९१२ मे हुई। इसकी रचना स० १८९७, ज्येष्ठ शुक्ल १२ को हुई—

सवत मुनि निधि वसु ससी, अक रीति गनि चारु
जेठ शुक्ल सुभ द्वादसी, जनित ग्रन्थ गुरु वार

रचनाकाल-सूचक यह दोहा सरोज मे उद्धृत है।

(३) सालिहोत्र, १९२०।१६१। इस ग्रन्थ की रचना स० १९१२ मे हुई। खोज रिपोर्ट मे रचनाकाल स० १८९४ दिया हुआ है, पर प्रमाण नही दिया गया है।

(४) भूषण कौमुदी, १९२३।३५२ ए। यह राजा जसवन्त सिह के भाषा-भूषण की टीका है। इसकी रचना स० १९१७ मे हुई—

सवत मुनि ससि निधि धरनि माघ त्रिदस सित चारि
सुभ मुहूर्त्त कवि वार लहि, भयो ग्रन्थ अवतार

यह छन्द भी सरोज मे उद्धृत है।

(५) रागमाला, यह भजन और गीतो का सग्रह है। स० १९४६ मे यह प्रकाशित भी हुआ है।

७७७।६४८

(६२) रज्जब कवि। इनके दोहे सुन्दर है।

सर्वेक्षण

रज्जब जी का पूरा नाम रज्जब अली खाँ था। यह पठान थे। इनका जन्म १६२४ के

---

(१) कविता कौमुदी, द्वितीय भाग।

आस-पास जयपुर राज्य के अन्तर्गत सागानेर नामक स्थान मे हुआ था। कहा जाता है कि २० वर्ष की आयु मे यह बारात लेकर विवाह करने जा रहे थे कि मार्ग मे दादू से साक्षात्कार हो गया। यह वही उनके शिष्य हो गये और विवाह नही किया। दादू के देहान्त के पश्चात् इन्होंने अपनी आँखो पर गाँधारी के समान पट्टी बाँध ली। सागानेर मे ही इनका देहान्त स० १७४६ मे हुआ। इनके बनाए दो बडे ग्रन्थ है, वाणी सर्वङ्गी।[1] सभा रज्जब ग्रन्थावली के प्रकाशन की व्यवस्था कर रही है।

७७८।६२८

(६३) राय कवि इनके शृङ्गार के कवित्त अच्छे है।

सर्वेक्षण

ग्रियर्सन (९१३) के अनुसार यह ७७९ सख्यक राय जू से अभिन्न है। अनुमान ठीक हो सकता है।

७७९।६३०

(६४) रायजू कवि। ऐंजन। इनके शृङ्गार के कवित्त अच्छे है।

सर्वेक्षण

ग्रियर्सन (९१३) मे इन्हे राय कवि से अभिन्न माना गया है, जो ठीक हो सकता है।

७८०।६५८

(६५) रायचन्द कवि नागर, गुजरात निवासी। यह कवि राजा डालचन्द अर्थात् जगतसेठ के यहाँ मुर्शिदाबाद मे थे। इन्होने गीत गोविन्दादर्श, भाषा गीत गोविन्द और लीलावती नामक ग्रन्थ नाना छन्दो मे रचा है जिसके देखने से इनका पाण्डित्य प्रकट होता है।

सर्वेक्षण

रायचन्द नागर गुजराती ब्राह्मण थे। यह मुर्शिदाबाद मे जगतसेठ राजा डालचन्द के आश्रय मे थे। यह डालचन्द जी राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द के प्रपितामह थे। रायचन्द जी के लिखे दो ग्रन्थ खोज में मिल चुके है—

(१) गीत गोविन्दादर्श, १९१७।१६३, १९२६।४११ ए, बी, सी। यह जयदेव के सुप्रसिद्ध ग्रन्थ गीतगोविन्द का अनुवाद है। कवि ने इस ग्रन्थ मे अपना परिचय दिया है—

नागर ज्ञाति अधीन, हीन छीन मति अज्ञ अति

रायचन्द द्विज दीन, नाउ गाउ गुजरात जेहि ४

---

(१) राजस्थानी भाषा और साहित्य, पृष्ठ २१६-१७

ग्रन्थ की रचना राजा डालचन्द की आज्ञा से हुई—

ताको अति मति मन्द, हौं भाषा भावारथे
चाहत कियो सुछन्द, स्वामी सासन पाय वल

× × ×

कृष्ण कृपानिधि किरपा करी
तज यह सुमति आनि उर अरी
डालचन्द नृप अज्ञा दई

ग्रन्थ की रचना मुर्शिवाद मे हुई—

नगर मुरशिदाबाद, आदि सुरसरी तीर सुभ
सुवस बसै अविषाद, जहाँ आसरम वरन सव ७
तेहि पुर अन्त माँहि, मा
महत महिमा सर नाँहि, जाको पुर को एकहू ८

ग्रन्थ की रचना स० १८३१ मे चैत सुदी, ६ सोमवार को हुई—

अट्ठारह सै अरु इकतीसा
सवत विक्रम नृप अवनीसा
सित नवमी ससि दिन मधुमास
गीत गोविन्दादर्श प्रकास

गीतगोविन्द की यह टीका कवित्तो मे है। सरोज मे इस ग्रन्थ से मगलाचरण का कवितानुवाद उद्धृत है।

(२) विचित्र मालिका, १६०६।२३६। इस ग्रन्थ की रचना स० १८३४ मे हुई।

सगुन[३] पुरान[१८] स वेद[४], दुहु दिसि तें सम्मत कहत
वेद[४] माह नहि भेद, सगुन[३] सिद्धि[८] सोइ ब्रह्म[१] इक १०५
माह माह के माह, श्री बसन्त पञ्चमि सु तिथि
सुभ ससि दिन छवि छाह, श्री विचित्र लीला जनम १०६

इस ग्रन्थ मे ब्रजवासी दास के ब्रज विलास, रचनाकाल स० १८२७, के आधार पर भागवत का सार १०६ छन्दो मे प्रतुस्त किया गया है।

सुमिरि सरस्वति राधिका, गोप गनेस मनाय
करी भागवत सार की, भाल विचित्र सुभाय १
कहैं एक सै नव जिते, यामे छन्द रसाल

ललित लाडिली लाल के लीला की जवमाल २
तज विलास वृज दास वृज, ताको सार नवीन
तासु सार नागर कहत, रायचन्द द्विज दीन ५

७८१।६४०

(६६) रग लाल कवि, स० १७०५ मे उ० । यह कवि वदन सिंह के आत्मज सुजान सिह के यहाँ थे ।

सर्वेक्षण

भरतपुर नरेश सुजान सिह का राज्यकाल स० १८१२-२० है । इनके पश्चात् जवाहिर सिह राजा हुए, जिनका शासनकाल स० १८२०–२५ हे । प मयाशङ्कर याज्ञिक इन्हे जवाहिर सिह के समय का कवि मानते हैं और इनको वीर रस की कविता रचनेवाला कहते है ।[1] अत इनका रचनाकाल स० १८१२–२५ हे, सरोज मे दिया इनका स० १७०५ अशुद्ध है । रगलाल इनके प्राय १०० वर्ष वाद हुए ।

सरोज मे रगलाल का एक छप्पय उद्धृत है, जिनसे इनका वदन सिह के आत्मज सुजान सिह और जवाहिर सिह का प्रशस्ति-गायक वीररस का कवि होना सिद्ध है ।

७८२।

(६७)रामशरण ब्राह्मण, हमीरपुर जिले इटावा वाले, स० १८३२ मे उ० । यह गोसाई हिम्मत बहादुर के यहाँ थे ।

सर्वेक्षण

सरोज मे दिया हुआ रामशरण जी का समय स० १८३२ ठीक है । यह इनका उपस्थिति-काल है । हिम्मत वहादुर का उत्कप स० १८२० की वक्सर की लडाई से प्रारम्भ होता है । इनकी मृत्यु स० १८६१ मे हुई ।[2]

७८३।६०४

(६८) राम भट्ट, फर्रुखावादी, स० १८०३ मे उ० । यह नव्वाव कायम खाँ के यहाँ रह कर शृङ्गार सौरभ, वरवै नायिका भेद, ये दो ग्रन्थ वनाए हैं ।

---

(१) माधुरी, फरवरी १९२७, पृष्ठ ८० (२) यही ग्रन्थ, कवि सख्या ९९९

सर्वेक्षण

रामभट्ट के आश्रयदाता कायम खाँ फर्रुखाबाद राजघराने के सस्थापक मोहम्मद खाँ वगश के पुत्र थे। यह उक्त वश के दूसरे शासक थे। यह स० १८०० (दिसम्बर १७४३ ई०) मे गद्दी पर वैठे थे। इन्होने केवल ६ वर्ष राज्य किया। स० १८०६ मे यह एक युद्ध मे रुहेलो के हाथ मारे गए।[1]

कायम खाँ के शासनकाल को देखते हुए सरोज-दत्त रामभट्ट का समय स० १८०३ ठीक है और यह उपस्थिति काल सिद्ध होता है।

शृङ्गारसौरभ मिल चुका है।[2] पुष्पिका से ज्ञात होता है कि कवि का नाम रामभट्ट था—

"इति श्री राम जी भट्ट विरचित शृङ्गार सौरभे "

कवि की छाप राम जी सुकवि है—

राम जी सुकवि अरविन्द मे अलिन्द सम
लोयन को वन्दि वन्दि मीन मुरझाती हैं

विनोद मे इस कवि को लेकर ४३२ और ९६२ सस्थाओ पर वडा घपला किया गया है।

७८४।

(६९) राम सेवक कवि। इन्होने ध्यान चिन्तामणि ग्रन्थ वनाया है।

सर्वेक्षण

राम सेवक जी सतनामी सम्प्रदाय के साधु थे। यह वावा रामसेवक दास कहलाते थे। यह हरिचन्दपुर, जिला वारावङ्की के रहनेवाले थे। इनके शिष्य गजाधरदास ने स० १८८६, ज्येष्ठ शुक्ल ९, बुधवार को अखरावली[3] की रचना की थी। रामसेवकदास देवीदास के शिष्य और सतनामी-सम्प्रदाय के प्रवर्तक कोटवा वाले जगजीवनदाम के पोता शिष्य थे। जगजीवन दास की मृत्यु स० १८१७ मे हुई,[4] अत वावा रामसेवक दास का समय १८१७ और १८८६ के वीच होना चाहिए।

रामसेवक जी का एक ग्रन्थ अखरावली[5] नाम का मिला है। इससे इनके सम्प्रदाय और गुरु का नाम ज्ञात होता है।

अस सामरथ जग जीवन जगमग जगत पति जन क्रम दहै
प्रभु देविदास लखाइ दीन्हौ रामसेवक मिलि रहै

---

(१) सम्पूर्णानन्द अभिनन्दन ग्रन्थ, पृष्ठ १३३ (२) खोज-रिपोर्ट १९४७।३२८ (३) वही, १९२६।१२१ (४) वही कवि संख्या ३०४ (५) वही, १९०९।२५८, १९२९।२९२, १९४७।३४३

ध्यान-चितामणि की कोई गति अभी तक नहीं मिली है।

७८५।

(७) रामदत्त कवि।

सर्वेक्षण

खोज मे दो राम दत्त मिले हैं—

(१) रामदत्त ब्राह्मण, गुन्जीली, डा० वौंडी, वहराइच के रहनेवाले। इन्होंने दानलीला[1] नामक ग्रन्थ स० १८५५ मे वनाया।

पूरण पूरण इन्दु, अव्द गते नृप विक्रमा
वात नक्षत्र नग इन्दु, शाल भनित प्रवीन मति

ग्रन्थ मे कवि का नाम आया है—

रामदत्त सुमिरत सदा, गिरिधारी व्रजराज
चरन कमल हिरदै वसे, दीजे विवुध समाज

(२) रामदत्त, नारनौल, पञ्जाव के रहनेवाले भक्त और कवि। यह गौड ब्राह्मण थे। इनकी मृत्यु स० १९५९ मे हुई। इनका एक भजन सग्रह[2] मिला है।

इनमे से पहले रामदत्त के ही सरोज के अभीष्ट रामदत्त होने की सम्भावना है। पञ्जावी और समनामयिक दूसरे रामदत्त शिवसिंह के लिए सम्भवत अज्ञात ही रहे होगे।

७८६।६०६

(७१) रामप्रसाद वन्दीजन विलग्रामी, स० १८०३ मे उ०।

सर्वेक्षण

सरोज मे रामप्रसाद वन्दीजन विलग्रामी का विवरण और कविता का उदाहरण मातादीन मिश्र के कवित्त रत्नाकर से लिया गया है। इस ग्रन्थ के अनुसार रामप्रसाद जी विलग्राम के रहने वाले भाट थे। यह नायिका भेद मे प्रवीण थे और लखनऊ के नवाव मुहम्मदअली शाह के समय मे थे। इन्होंने अपनी कुछ भूमि के सम्वन्ध मे एक पद्य-वद्ध पत्र अवध के तत्कालीन दीवान मुन्शी अयोध्याप्रसाद खत्री विलग्रामी के पास भेजा था। पत्र लेकर इनके पुत्र गोकुलचन्द लखनऊ गए थे।[3] यह पत्र पूरा का पूरा कवित्त रत्नाकर मे छपा है। इनका एक सवैया सरोज मे उद्धृत

---

(१) खोज रिपोर्ट १९०३।३४१ (२) वही, प० १९२२।११८ (१) कवित्त-रत्नाकर, भाग १, कवि सख्या १।

है। प्रसिद्ध कवि अगने राम रसाल, जिनका विवरण सरोज सख्या ७४६ पर हुआ है, इन्ही रामप्रसाद जी के बडे पुत्र थे, जैसा कि उक्त चिट्ठी के इस चरण से स्पष्ट है—

मोहिं रिसाय सुनाय कहीं 'अगने' जे बड़े फरजन्द हमारे
देखिबो क्योकर ह्वै हैं वसूल तुम्है रुपया इस साल करारे

इन रसाल जी ने सवत् १८८६ मे बारहमासा नामक एक उत्तम काव्य ग्रन्थ रचा था।

लखनऊ के नवाब मोहम्मद अली शाह का शासनकाल स० १८९४-९९ है, अत रामप्रसाद वन्दीजन का भी यही समय होना चाहिए। इस समय कवि परम वृद्ध हो चुका था। उसमे लखनऊ जाने की शक्ति नही रह गई थी, अन्यथा वह स्वय जाता। यह सब चिट्ठी के सरोज मे उद्धृत सवैये से भी स्पष्ट है। अत कवि स० १८२५ के आस-पास उत्पन्न हुआ रहा होगा। सरोज मे दिया स० १८०३ अशुद्ध है।

खोज रिपोर्टो मे इनके नाम पर जैमिनि पुराण,[1] जुगल पद,[2] वभ्रुवाहन की कथा,[3] ज्ञान बारहमासा[4] चढे हुए हैं। इनमे से जैमिनि पुराण का रचनाकाल स० १८०५ है।

विसिख (५) व्योम (०) बसु (८) बुधवर, (१) सुकुल अष्टमी फाग
पूरण भई श्री गुरु कृपा, कथा युधिष्ठिर राज

वभ्रुवाहन की कथा इसी का एक अश है, अत इसका भी रचनाकाल स० १८०५ हुआ। अभी ऊपर हम देख चुके हैं कि रामप्रसाद जी का जन्म स० १८२५ के आस-पास हुआ। यदि हम इनका जन्मकाल स० १८०० भी मान लें, तो भी ये ग्रन्थ रामप्रसाद वन्दीजन विलग्रामी के नही हो सकते। ये किसी दूसरे रामप्रसाद के हैं। जुगल पद और ज्ञानबारहमासा के सम्वन्ध मे भी निश्चयपूर्वक नही कहा जा सकता कि ये इन्ही की रचनाएँ है।

७८७।

(७२) रघुराम गुजराती, अहमदाबाद वासी। इन्होने माधव विलास नामक नाटक बनाया है।

सर्वेक्षण

खोज मे रघुराम गुजराती के निम्नलिखित दो ग्रन्थ मिले है—

(१) सभा सार नाटक, १९०६।२३८, १९१२।१४०। यह ग्रन्थ नाटक नहीं है, नाटक शब्द इसके नाम के साथ जुडा भर है। इसकी रचना स० १७५७, चैत सुदी ३, गुरुवार को हुई।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९०६।२५४ ए (२) वही, १९०६।२५४ बी (३) वही, १९२६।३९० ए (४) वही, १९२६।३९० बी, सी, डी।

सत्रह सै सत्तावना, चैततीज गुरुवार
पच्छ उजल उज्जल सुमिति, कवि किय ग्रन्थ विचार

ग्रन्थान्त मे इस तथाकथित नाटक के पढने-सुनने के लाभालाभ का बडा ओजपूर्ण वर्णन है। इस ३१६ वे छन्द मे कवि छाप रघु है। यह नीति सम्बन्धी ग्रन्थ है।

विग्यान जान निरवान के, जोग ध्यान धन धरि लहै
पावत परम पर पुरुष गति, मति प्रमान कवि रघु कहे ३१६

(२) नीति उपदेश आदि की फुटकर कविताओ का सग्रह, राज० रि० भाग १। इस ग्रन्थ मे कवि ने अपना परिचय भी दिया है। इसके अनुसार कवि रघुराम गुजराती नागर ब्राह्मण थे। यह अहमदावाद के निकट सागरपुर के निवासी थे।

दिसि पस्यमगुर्जुर सुघर, सहर अहमदावाद
भू पर के सब नगर सर, ऊपर मण्डित वाद
ता मधि सागर पुर सुभग, सुख दायक सब धाम
नागर विप्र सुसङ्ग मति, कवि पद रज रघुराम

इस कवि का सरोज वर्णित ग्रन्थ माधवविलास अभी तक नही मिल पाया है।

७८८।

(७३) रामनाथ मिश्र, आजमगढ वाले।

सर्वेक्षण

रामनाथ मिश्र, आजमगढ के दक्षिण मेहनगर के पास महादेवपारा नामक गाँव के निवासी थे। इनके दो ग्रन्थ खोज मे मिले है--

(१) प्रस्तुत चिकित्सा, १९०९, पृष्ठ ४७१। इस रिपोर्ट के अनुसार यह यदुनाथ मिश्र के पुत्र थे और १९०९ ई० मे जीवित थे।

(२) नलोपाख्यान, १९४४।२५५। इस ग्रन्थ की रचना इन्होने भरसी मिश्र के साथ की।

७८९।

(७४) रुद्रमणि ब्राह्मण, स० १८०३ मे उ०। यह राजा युगलकिशोर के यहाँ दिल्ली मे थे।

सर्वेक्षण

दिल्लीवाले जुगलकिशोर ने स० १८०५ मे अलङ्कार निधि नामक ग्रन्थ की रचना की थी। अत: इनके दरबारी कवि रुद्रमणि मिश्र का सरोज दत्त स०१८०३ ठीक है। जुगलकिशोर ने उक्त ग्रन्थ मे अपने चार दरबारी कवियो मे इन्हे भी गिनाया है।[1]

७९०।

(७५) रुद्रमणि चौहान, स० १७८० मे उ०।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही।

७९१।

(७६) राजा रणजीत सिंह, जाँगरे, ईसानगर, जिले खीरी, विद्यमान। यह कविता मे महा चतुर है और हरिवशपुराण को भाषा मे लिखा है।

सर्वेक्षण

इस कवि के भी सम्बन्ध मे कोइ सूचना सुलभ नही।

७९२।६४२

(७७) रसरूप कवि, स० १७८८ मे उ०।

सर्वेक्षण

रसरूप जी के तीन ग्रन्थ खोज मे मिले हैं—

(१) तुलसी भूषण, १९०४।११, १९४४।३२४। यह अलङ्कार ग्रन्थ है और इसमे उदाहरण तुलसीदास से दिए गए हैं। इसकी रचना स० १८११ मे हुई थी।

दस वसु सत सवत हुतो, अधिक और दस एक
किये सुकवि रसरूप यह पूरन सहित विवेक

(२) शिखनख, १९०५।७६। इस ग्रन्थ मे ७० छन्दो मे राधा का नखशिख वर्णित है।

(३) उपालम्भ शतक, १९०९।२६१, १९२६।४०३। इस ग्रन्थ मे कवित्तो मे उद्धव-गोपी सवाद है है। छन्द सख्या १०६ है और प्राय प्रत्येक छन्द मे कवि छाप है।

---

(१) खोज रिपोर्ट, कवि सख्या २५६

हरि को जस रसरूप यह, कहा कहै मतिहीन
सज्जन जन करिहैं क्षमा, जानि श्रापनो दीन १०६

रसरूप कवि का उपनाम है। इसका वास्तविक नाम अज्ञात है। इनको सुकवि की उपाधि मिली हुई थी। यह सस्कृत और फारसी दोनो भाषाओ पर अधिकार रखते थे। स० १७८८ इनका प्रारम्भिक रचनाकाल है। यह इनका जन्मकाल नही हो सकता, क्योकि यदि इसे जन्मकाल माना जायगा, तो मानना पडेगा कि इन्होने २३ वर्ष की ही वय मे स०१८११ मे तुलसी भूषण की रचना की। इस ग्रन्थ की रचना के लिए एक तो तुलसी पर अधिकार करना है, दूसरे अलङ्कार-शास्त्र पर २३ वर्ष की अल्प वय मे दोनो पर अधिकार सम्भव नही। इस कवि का उल्लेख एक बार पहले सख्या ७५१ पर हो चुका है।

७६३।

(७८) राधे लाल कायस्थ, राजगढ, बुन्देलखण्डी, स० १९११ मे उ०।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही। २५ वर्ष बाद ही सरोज का प्रणयन हुआ, अत यह सवत् उपस्थितिकाल है।

७६४।

(७९) रसधाम कवि, स० १८२५ मे उ०। इन्होने अलङ्कार चन्द्रिका नामक ग्रन्थ बनाया है।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही। रसधाम उपनाम है।

७६५।

(८०) रसिक विहारी, स० १७८० मे उ०।

सर्वेक्षण

महाराज सावन्त सिह सम्वन्ध नाम नागरीदास की उपपत्नी वनीठनी जी रसिकविहारी उपनाम से रचना करती थीं। यह नि सन्तान थी। नागरीदास के साथ वृन्दावन मे रहती थी। नागर समुच्चय के अन्त मे इनके ५८ पद एकत्र हैं। इनका देहान्त नागरीदास की मृत्यु के १० मास पश्चात् स० १८२२ मे आषाढ पूर्णिमा को हुआ।[1] सरोज मे दिया स० १७८० इनका

---

(१) राधा कृष्णदास ग्रन्थावली, प्रथम भाग, पृष्ठ १९७।

रचनाकाल ही है, जन्मकाल नही। विनोद मे (८५१) ग्रियर्सन (४०५) के अनुसार १७८० को जन्मकाल मानकर एक रसिकविहारी की मिथ्या सृष्टि की गई है। बनीठनी का विवरण विनोद मे ६५६ पर है और कविताकाल स० १७८७ दिया गया है। सरोज प्रथम सस्करण मे १७३८ है, जो २, ३, ७ मे १७८० हो गया है।

७६६।

(८१) रावरतन राठौर, परपोता राजा उदय सिंह रतलाम वाले। यह महाराज कवि-कोविन्दो के कल्पतरु और आप भी महान् कवि थे। इन्होने अपने नाम से एक ग्रन्थ रायसाराव रतन नामक बहुत सुन्दर बनवाया है।

सर्वेक्षण

ग्रियर्सन मे टॉड के आधार पर रतलाम के राजा उदय सिंह के प्रपौत्र राव रतन राठौर का समय १७०७ वि० दिया गया है। रायसाराव रतन बनाने वाले कवि का नाम नही दिया गया है।

७६७।

(८२) राना राज सिंह राजकुमार भीम पुत्र, स० १७३७ मे उ०। यह महाराज महान् कवि थे। इन्होने राज विलास नामक अपने जीवन चरित्र का ग्रन्थ महा अद्‌भुत बनवाया है।

सर्वेक्षण

ग्रियर्सन (१८५) मे टॉड के अनुसार उदयपुर के राना राजसिंह का शासनकाल स० १७१६ से १७३८ वि० तक माना गया है। इसके अनुसार सरोज मे दिया स० १७३७ राजसिंह के जीवन का अन्तिम समय है। यह औरङ्गजेब के प्रसिद्ध प्रतिद्वन्दी है। मान कवीश्वर ने राज विलास की रचना की थी।[1]

७६८।६६६

(८३) रहीम कवि। यह रहीम कवि खानखाना के अतिरिक्त दूसरे है। इनकी कविता सरस है। काव्य निर्णय मे दास कवि ने इनका नाम एक कवित्त मे लिखा है। परन्तु दोनो रहीम अर्थात् अब्दुर्रहीम खानखाना और इन रहीम के फुटकर काव्य को छाँटना कठिन है। वह कवित्त यह है—

सूर, केसौ, मडन, बिहारी, कालिदास, ब्रह्म,
चिन्तामनि, मतिराम भवन सो जानिए

---

(१) राधा कृष्णदास, भाग १, कवि सख्या ७१४

नीलकण्ठ, नीलाधर, निपट, नेवाज, निधि,
नीलकण्ठ, मिश्रसुखदेव, देव मानिए
आलम, रहीम, खानखाना, रसलीन, वली
सुन्दर अनेक गन गनती वखानिए
ब्रजभाषा हेत ब्रज सब कीन अनुमान
एते एते कविन की बानीहू ते जानिए

सर्वेक्षण

प्रसिद्ध अब्दुर्रहीम खानखाना के अतिरिक्त रहीम नाम का कोई अन्य कवि हिन्दी-साहित्य मे नही हुआ। सरोज मे रहीम के नाम पर जो कवित्त उद्धृत है, वह रहीम का न होकर अनीस का एक मात्र प्राप्त छन्द है और स्वय सरोज मे अनीस के नाम पर चढा हुआ है।[1] परम्परा से यह अनीस की रचना के रूप मे ही प्रख्यात है। ऊपर उद्धृत भिखारीदास के कवित के तृतीय चरण मे रहीम खानखाना साथ-साथ आया है। सरोजकार ने व्यर्थ के लिए रहीम और खानखाना शब्दो के बीच अर्द्ध विराम लगाकर एक कवि के दो कवि बना दिए है। सरोजकार के इस भ्रम के ग्रियर्सन (१०८,७५६) और विनोद (१४७,६८२) भी शिकार हुए हैं और एक कवि का दो कवियो के रूप मे उल्लेख किया है।

७६६।६७०

(८४) रामप्रसाद अग्रवाल, मीरापुर वाले, तुलसीराम के पिता, स० १९०१ मे उ०। इस कवि ने शान्त रस की अच्छी कविता की है।

सर्वेक्षण

रामप्रसाद जी के पुत्र तुलसीराम ने स० १९११ मे भक्तमाल की उर्दू टीका की थी।[2] ऐसी स्थिति मे स० १९०१ इनके बाप का जन्मकाल नही हो सकता। यह रामप्रसाद जी का उपस्थितिकाल ही है।

ल

८००।६७१

(१) लाल कवि। प्राचीन १, स० १७३८ मे उ०। यह कवि राजा छत्रसाल हाडा, कोटा बूदीवाले के यहाँ थे। जिस समय दाराशिकोह और औरगजेब फनूहा मे लडे हैं और राजा

(१) राधाकृष्ण दास ग्रन्थवली, कवि सख्या ३३ (२) सरोज की भूमिका, पृष्ठ ३

छत्रसाल मारे गए, उस समय यह कवि उस युद्ध में मौजूद थे। इनका बनाया हुआ विष्णु विलास नामक ग्रन्थ नायिका भेद का अति विचित्र है।

सर्वेक्षण

वीररस के प्रसिद्ध कवि गोरे लाल, उपनाम लाल, छत्रसाल के पुरोहित थे। यह छत्रसाल न तो हाडा थे और न तो कोटा बूंदी के राजा थे। यह बुन्देला थे और महेवा के राजा थे। पन्ना इनकी राजधानी थी। गोरे लाल ने स० १७६४ के आस पास छत्रसाल का वर्णन छत्र-प्रकाश नामक प्रबन्ध काव्य मे किया है। इसमे छत्रसाल का स० १७६४ तक का ही जीवन आ सका है। ग्रन्थ अधूरा है और सभा से प्रकाशित हो चुका है। यह दोहा-चौपाइयो मे है और अत्यन्त ओजपूर्ण है। इसमे कवि ने ऐतिहासिक तथ्यो की ओर विशेष ध्यान दिया है। यहाँ तक कि छत्रसाल की हारो का भी वर्णन अत्यन्त सत्यता और निर्भीकता के साथ किया है।

लाल का जन्म स० १७१५ के लगभग हुआ था। यह मुद्गलगोत्रीय भट्ट तैलङ्ग ब्राह्मण थे तथा छत्रसाल द्वारा प्रदत्त दग्धा नामक गाँव मे रहते थे।

लाल के सम्बन्ध मे सरोजकार को भारी भ्रम हुआ है। वही भ्रम ग्रियर्सन (२०२) को भी हुआ है। लाल का सम्बन्ध उन छत्रसाल मे कभी नहीं रहा, जो औरङ्गजेब और दारा के बीच स० १७१५ मे हुए राज्याधिकार के युद्ध मे मारे गए थे। विनोद मे लाल के निम्नलिखित १० ग्रन्थो को सूची दी गई है—

(१) छत्र प्रशस्ति, (२) छत्रछाया, (३) छत्रकीर्ति, (४) छत्र-छन्द, (५) छत्रसाल-शतक, (६) छत्र हजारा, (७) छत्र-दण्ड, (८) छत्र प्रकाश, (९) राज विनोद और (१०) विष्णु-विलास।

विनोद और हिन्दी साहित्य का इतिहास[१] मे बरवै छन्दो मे लिखित विष्णु-विलास नामक नायिका भेद का ग्रन्थ इन्ही गोरेलाल का माना गया है।

गोरेलाल प्रसिद्ध कवि पद्माकर के नाना थे। नवीन कवि ने सुधासर के अन्त मे दी गई नामराशि कवियो की सूची मे यह उल्लेख किया है।[२] इसी आधार पर पण्डित मयाशङ्कर याज्ञिक भी यह सम्बन्ध स्वीकार करते है।[३] खोज मे इनके केवल तीन ग्रन्थ मिले हैं।

(१) बरवै, १९०६।४८ ए, बरवै छन्दो मे विविध-विषयक कविता।

(२) छत्र प्रकाश, १९०६।४८ बी।

(३) राज विनोद, १९०६।४८ सी, विविध छन्दो मे कृष्ण-काव्य।

---

(१) हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ ३३४ (२) यही ग्रन्थ, भूमिका पृष्ठ १२६ (३) माधुरी, फरवरी १९२७, भरतपुर राज्य और हिन्दी, पृष्ठ ७९

८०१।६७२

(२) लाल कवि २, वन्दीजन वनारसी, स० १८४७ मे उ०। यह कवि राजा चेतसिंह काशी नरेश के यहाँ थे। इन्होने आनन्द रस नामक ग्रन्थ नायिकाभेद का और लाल चन्द्रिका नामक सतसई का टीका वनाया है।

सर्वेक्षण

लाल कवि काशी राज्य दरवार से सम्वन्धित प्रसिद्ध कवि गुलाव के पिता, गणेश के पितामह और वशीधर के प्रपितामह थे। वशीधर ने अपने साहित्य तरगिणी, रचनाकाल स० १६०७, मे स्वय यह उल्लेख किया है।[1]

भए कवि लाल, जस जगत विसाल,
जाके गुन को न वारापार, कहाँ लौं सो गाइए
ताके भए सुकवि गुलाव प्रीति सतन मे
कविता रसाल सुभ सुकृत सुनाइए
सुकवि गनेस की कविता गनेस सम
करै को वखान मम पितु सोइ गाइए
तिनतें सु पढि कीन्हो मति अनुसार
जानौं सियाराम जस ग्रन्थ औघड सु भाइए

—खोज रिपोर्ट १९२०।१२

लाल कवि काशी नरेश महाराज चेत सिंह, (शासनकाल स० १८२७-३८) और महाराज महीपनारायण सिंह (शासनकाल स० १८३८-५२) के आश्रित थे। अत इनका समय स० १८२७-५२ होना चाहिए। सरोज मे दिया स० १८४७ ठीक है। यह कवि का उपस्थिति-काल है। खोज मे इनके निम्नलिखित दो ग्रन्थ मिले हैं—

(१) कवित्त महाराजा महीपनारायण वहादुर तथा और काशिराजो के, १९०३।११४, इस ग्रन्थ मे विशेप कर चेत सिंह और महीपनारायण की ही प्रशस्तियाँ हैं। प्रथम काशिराज वलवन्त सिंह या वरिवण्ड सिंह (शासनकाल स० १७९७-१८२७) तथा उनके पिता मनसाराम की प्रशस्ति के वहुत कम छन्द हैं।

(२) रसमूल, १९०३।११३। यह नायिका भेद का ग्रन्थ है। इसकी रचना चैत सिंह के आश्रय-काल मे स० १८३३ मे फाल्गुन पञ्चमी को हुई थी।

---

(१) माधुरी, वशीधर कवि ५८४

रितु वसन्त दिन फाग के, गङ्ग जमुन के कूल
राम नगर मे मोद भरि, कर्यौ ग्रन्थ रसमूल ३३
सवत ठारह सै बरस, गये बीति तैंतीस
मास फागु तिथि पञ्चमी, भयो ग्रन्थ रस ईस ३४

तैंतीसवें दोहे मे रसमूल शब्द आया है, इसी को ग्रन्थ का नाम स्वीकार कर लिया गया है। सम्भवत यही सरोज वर्णित आनन्दरस नामक नायिका भेद का ग्रन्थ है।

लाल ख्याल[1] को अनुप्रासातिशय के कारण इन्ही बनारसी लाल की रचना अनुमान किया गया है। विवरण मे न तो रचना काल है और न प्रतिलिप काल ही। दो कवित्त उद्धत हैं, जिनमे लाल की छाप है। अन्त मे यह दोहा है—

लाल ख्याल यह नाम है जानत सकल जहान
अद्भुत कथा प्रसङ्ग की यातै अद्भुत मान

यह ग्रन्थ भरतपुर राज्य की पब्लिक लाइब्रेरी में है। भरतपुर राज्य से कवि-कलानिधि कृष्ण भट्ट उपनाम लाल का सम्बन्ध था।[2] यह महाराज सूरजमल (शासनकाल सवत १८१२-२०) के समय में भरतपुर मे थे। 'लाल ख्याल' सम्भवत इन्ही लाल कलानिधि की रचना है, लाल बनारसी की नही। यदि यह लाल बनारसी की रचना होती, तो इसे भी महाराजा बनारस की लाइब्रेरी मे मिलना चाहिये था, जहाँ इनके ऊपर लिखे दोनो ग्रन्थ मिले हैं।

सरोज में लाल बनारसी की एक अन्य कृति विहारी सतसई की 'लालचन्द्रिका' नाम्नी टीका का भी उल्लेख है। यह टीका लाल बनारसी की न होकर लल्लू जी लाल आगरेवाले की है। ग्रियर्सन ने इस टीका का उल्लेख लाल बनारसी(५६१)और लल्लू जी लाल(६२९)दोनो के विवरण में किया है और एक-दूसरे को देखने का निर्देश किया है। स्पष्ट ही ग्रियर्सन के मन में सन्देह था कि लाल-चन्द्रिका नाम की एक ही टीका है, एक नाम की दो टीकाएँ नही। विनोद मे(९९८)लाल बनारसी की ग्रन्थ-सूची में 'लालचन्द्रिका का नाम नही दिया गया है। विहारी सतसई की लालचन्द्रिका टीका की प्रति खोज मे मिली है।[3] इसमे रचनाकाल सवत् १८७५ विक्रमी दिया गया है।

५ ७ ८ १
शिव आनन रिषि वसु मही सवत लेहु विचार
माघ सुदी पाचै शनौ भयो ग्रन्थ परचार १२

इस ग्रन्थ की पुष्पिका ध्यान देने योग्य है—

"इसमें अमरचन्द्रिका, अनवरचन्द्रिका, हरिप्रकाश टीका, कृष्णकवि की टीका कवित्त

(१) खोज रिपोर्ट १९१७।१०५ (२)माधुरी, फरवरी १९२७, भरतपुर राज्य और हिन्दी, पृष्ट ८१ (३) खोज रिपोर्ट १९०९।१७२

वाली, कृष्णलाल की टीका, पठान की टीका कुण्डलियो वाली, सस्कृत टीका, ये सात विहारी सतसई की टीका देख शब्दार्थ और भावार्थ, नायिका भेद और अलङ्कार उदाहरण समेत उक्ति युक्ति से प्रकाश कर लालचन्द्रिका टीका वनाइ व छपवाइ निज छापे खाने में श्रीमान पण्डित कवि रसिक आनन्दार्थ इति ॥"

स्पष्ट है कि जिस ग्रन्थ की पुष्पिका यह है वह छपा हुआ ग्रन्थ है, हस्तलिखित नही । लीथो पर छपे हुए होने के कारण हस्तलिखित प्रतीत हो, यह दूसरी बात है। छपाने वाला ही टीका वनाने वाला भी है और उसने ग्रन्थ को अपने ही छापेखाने मे छपवाया है। अत जिस लालचन्द्रिका का विवरण रिपोर्ट में है। वह लल्लू जी लाल की कृति है, जिसे उन्होने अपने ही छापेखाने में, आगरे में सन् १८१६ ई० मे छपाया था। विचारेलाल वनारसी के पास अपना छापाखाना नही था, लल्लू जी लाल के पास था। इस ग्रन्थ का दूसरा सस्करण १८६४ ई० में पण्डित अम्विकादत्त व्यास के पिता पण्डित दुर्गादत्त व्यास ने लाइट प्रेस, बनारस से प्रकाशित कराया था। उक्त खोज रिपोर्ट मे १८४७ को जन्मकाल मानकर लाल वनारसी ही द्वारा इसके सवत १८७५ मे वनाए जाने का निर्णय दिया गया है। ग्रियर्सन ने इनका उपस्थिति काल सन् १७७५ ई० दिया है, यह ठीक है। इसे रिपोर्ट मे भ्रान्त वताया गया है और कहा गया है कि यह परिवर्तन चेत सिह के समय से मेल खाने के लिये किया गया है। लाल, चेत सिह के दरवारी थे। ऊपर दिये गए इनके ग्रन्थो के विवरण से यह स्पष्ट है। फिर उनके समय से लाल के समय का मेल तो वैठाना ही होगा। सवत १८४७ मे उत्पन्न होने वाले लालन तो चेत सिह के और न महीपनारायण के ही दरवारी कवि हो सकते हैं। महीपनारायण की मृत्यु के समय सवत १८५२ मे इनकी आयु केवल ५ वर्ष की ठहरेगी। सरोज के उ० को उत्पन्न मानकर हिन्दी साहित्य मे अनेक अनर्थ इसी प्रकार किये गये है।

रत्नाकर जी ने विहारी सतसई सम्वन्वी साहित्य मे लाल कवि की टीका को काल क्रमानुसार तेरहवाँ स्थान दिया है और इसके सम्वन्ध मे लल्लू जी लाल के प्रकरण मे पण्डित अम्विकादत्त व्यास के विहार से यह उद्धरण दिया है—

"लोग कहते हैं कि काशी राज्य महाराजा चेत सिह के दरवार के कविवर लाल कवि ने भी एक सतसई की टीका लालचन्द्रिका नाम से वनाई। यदि यह सच भी हो तो यह ग्रन्थ अलभ्य है।[1]"

स्पष्ट है कि विहारी-विहार के कर्त्ता को इस वात का विश्वास नही था कि लाल वनारसी ने लालचन्द्रिका नाम की कोई टीका वनाई थी। यदि ऐसी कोई टीका होती, तो वह निश्चय ही महाराज वनारस की लाइब्रेरी मे होती, पर जो है ही नही, वह कहाँ से हो।

———

(१) नागरी प्रचारिणी पत्रिका, खण्ड ६ अङ्क २, श्रावण १६८५, पृष्ठ १६१

८०२।६७६

(३) लाल कवि ३, बिहारी लाल त्रिपाठी, टिकमापुर वाले, सवत् १८८५ मे उ० । यह कवि मतिराम वशी और बडे भारी कवि थे । इस कुल मे इन्ही तक कविता रही । पीछे जो रामदीन, शीतल इत्यादि हुए, वे सामान्य कवि थे ।

सर्वेक्षण

बिहारी लाल त्रिपाठी, चरखारी नरेश विक्रम साहि, महाराजा विजय विक्रमाजीत (राज्य-काल सवत् १८३९–८६) के दरबार मे थे । विक्रमाजीत ने विक्रम सतसई नामक काव्य ग्रन्थ लिखा है । बिहारी लाल जी ने इस विक्रम सतसई की रस चन्द्रिका नाम्नी टीका सवत् १८७२ मे की थी ।

२ ७ ८ १
दग मुनि बसु ससि वर्ष मे सिद्ध सोम मधुमास
कियो ग्रन्थ आरम्भ शुभ पांचे सिद्ध निवास ४६

अत सरोज मे दिया हुआ समय सवत् १८८५ ठीक है और यह कवि का उपस्थिति-काल है । टीका प्रारम्भ करने के पहले बिहारी लाल ने राज वश और कवि वश वर्णन किया है । कवि वश वाला प्रकरण उपयोगी होने के कारण उद्धृत किया जा रहा है—

वसत त्रिविक्रमपुर नगर कालिन्दी के तीर
विरचौ भूम हमीर जनु मध्य देस को हीर २८
भूषन चिन्तामनि तहाँ कवि भूषन मतिराम
नृप हमीर सनमान तें कीनो निज निज धाम २९
है वती मतिराम के सुकवि बिहारी लाल
जगन्नाथ नाती विदित सीतल सुत सुभ चाल ३०
कस्यप वश कनोजिया विदित त्रिपाठी गोत
कविराजन के वृन्द मे कोविद सुमति उदोत ३१
विविध भाँति सन्मान करि ल्याये चित महिपाल
आये विक्रम की सभा सुकवि बिहारी लाल ३२

इस उद्धरण से स्पष्ट है कि बिहारी लाल कानपुर जिले के अन्तर्गत यमुना तट स्थित त्रिविक्रमपुर (तिकवापुर) के रहने वाले, मतिराम वशी कश्यप गोत्रीय त्रिपाठी ब्राह्मण थे । यह मतिराम के पनति (प्रपौत्र) जगन्नाथ के नाती (पौत्र) और शीतल के पुत्र थे । सरोज के अनुसार शीतल, बिहारी लाल के बाद हुए, यह ठीक नही । यह उनके पिता थे, अत पूर्ववर्ती है ।

८०३।६७४

(४) लाल कवि ४। इन्होंने चाणक्य राजनीति का उल्था भाषा दोहो मे वहुत अच्छा किया है

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्वन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही।

८०४।६९०

(५) लाल कवि ५, लल्लू लाल गुजराती आगरे वाले, सवत् १८९२ मे उ०। यह महाराज वोल-चाल की भाषा के प्रथम आचार्य है। इनका वनाया हुआ प्रेमसागर ग्रन्थ इस वात का साक्षी है। यह दोहा-चौपाई इत्यादि सीधे सादे छन्दो के वनाने मे भी निपुण थे। सभा-विलास माधव-विलास, वार्तिक राजनीति इत्यादि इनके और ग्रन्थ भी वहुत सुन्दर है।

सर्वेक्षण

भाषाकाव्य सग्रह मे महेश दत्त जी ने लल्लू जी लाल का जन्मकाल सवत् १८३० दिया है। ग्रियर्सन (६२९) मे इन्हे सन् १८०३ ई० मे उपस्थित कहा गया है और इनके निम्नलिखित ११ ग्रन्थो की सूची विस्तृत परिचय के साथ दी गई है—

(१) प्रेमसागर, भागवत के दशम स्कन्ध का गद्यानुवाद, सवत् १८६०।

(२) लतायफ-ए-हिन्दी, १०० कहानियो का उर्दू, हिन्दी, व्रजभाषा मे सङ्कलन।

(३) राजनीति, व्रजभाषा गद्य मे हितोपदेश का अनुवाद, सवत् १८६९।

(४) सभा-विलास, व्रजभाषा के प्रसिद्ध कवियो की रचनाओ का सग्रह, स्वत १८७०।

> ० ७ ८ १
> ख ऋषि वसु चन्द्रहि गनो सवत् को परवान
> माघ शुक्ल नवमी रवौ कियो ग्रन्थ निर्मान
>
> —खोज रिपोर्ट १९४१।२४३

(५) माधव-विलास, यह व्रजभाषा गद्य-पद्य मे लिखित चम्पू है।

(६) लाल-चन्द्रिका, विहारी सतसई की सुप्रसिद्ध टीका, सवत् १८७५ मे प्रस्तुत।

> ५ ७ ८ १
> शिव आनन रिषि वसु मही सम्वत लेहु विचारि
> माघ सुदी पाचे शनौ शनौ ग्रन्थ परचार
>
> —खोज रिपोर्ट १९०९।१७२

(७) मसादिर-ए-भाषा, हिन्दी भाषा का व्याकरण, गद्य और नागरी लिपि मे लिखित।

(८) सिहासन वत्तीसी, गद्य-ग्रन्थ, सवत् १८६१ ।

(९) वैतालपचीसी, गद्य-ग्रन्थ ।

(१०) माघोनल या माधवानल की आख्यायिका, गद्य-ग्रन्थ ।

(११) शकुन्तला का उपाख्यान, गद्य-ग्रन्थ ।

विनोद (१११६) मे इनके सम्वन्ध मे लिखा गया है कि यह सहस्र औदीच्य गुजराती ब्राह्मण थे और आगरे के रहने वाले थे । इनका जन्म सवत् १८२० के लगभग हुआ था । यह फोर्ट विलियम कालेज, कलकत्ता, मे हिन्दी के पण्डित थे और सवत् १८८१ तक वर्तमान थे । इनके लिखे १२ ग्रन्थो की सूची दी गई है । ऊपर दी हुई सूची के ग्रन्थो के अतिरिक्त भाषाव्याकरण नामक एक और ग्रन्थ दिया है जो मसादिर-ए-भाषा का ही अन्य नाम प्रतीत होता है । खोज मे इनका एक ग्रन्थ 'अँग्रेजी-हिन्दी-फारसी वोली' मिला है ।[१] यह शब्द-कोष है ।

शुक्ल जी के अनुसार लल्लू जी का देहान्त सवत् १८८२ मे हुआ है । विहारी विहार मे पण्डित अम्विकादत्त व्यास ने लल्लू जी लाल का १० पृष्ठो मे विस्तृत और अति उत्तम परिचय दिया है । रतनाकर जी ने इस सारे प्रसङ्ग को विहारी सतसई सम्वन्वी साहित्य मे उद्धृत कर दिया है ।[२] इस उद्धरण का साराश यह है—

लल्लू जी लाल आगरे के रहने वाले गुजराती औदीच्य ब्राह्मण थे । इनके पिता का नाम चैनसुख था । यह पौरोहित्य करने वाले निर्वन ब्राह्मण थे । जीविकार्थ भ्रमण करते हुए लल्लू जी लाल सवत् १८४३ मे मुर्शिदावाद पहुँचे । यहाँ यह ७ वर्ष तक रह गये । सवत् १८५० में यह कलकत्ते गये । यहाँ प्रसिद्ध रानी भवानी के पुत्र रामकृष्ण से परिचय हुआ । उनके साथ यह नाटौर आये, पर पुन जीविकाहीन हो कलकत्ते गये, जहाँ वडा कष्ट उठाया । इसी आर्थिक कष्ट की दशा मे यह जगन्नाथपुरी गये । वहाँ से जव पुन कलकत्ता लौटे, तव डॉक्टर गिलकिरिस्त से भेट हुई, उन्होने उनकी सहायता की इन्हे हिन्दी ग्रन्थ लिखने को दिये और मजहर अली विला तथा मिर्जापुर काजम अली जवाँ दो सहायक लेखक दिये । तव लल्लू लाल ने एक वर्ष मे, सवत १८५७ मे, चार ग्रन्थ लिखे—(१)सिहासन वत्तीसी, सुन्दरदास कृत व्रजमाषा पद्यानुवाद का गद्यानुवाद, (२) वैतालपच्चीसी, सूरत मिश्र कृत व्रजभाषा पद्यानुवाद का गद्यानुवाद, (३) शकुन्तला नाटक, सस्कृत से अनुवाद, (४) माघोनल, मोतीराम कृत व्रजभाषा पद्यानुवाद से गद्यानुवाद । एक वार कोई अँग्रेज कलकत्ता मे गङ्गा मे डूव रहा था । लल्लू जी ने उसे तैर कर वचा लिया था । उसने कृतज्ञ होकर इनके लिये छापाखाने की व्यवस्था कर दी । इसी साल सवत् १८५७ मे यह फोर्ट विलियम कॉलेज मे पण्डित नियुक्त हुए । यह वहुत विद्वान् न थे । इनका सारा काम सस्कृत ग्रन्थो के व्रजभाषा अनुवाद पर निर्भर रहा है । कलकत्ते से

---

(१) खोज रिपोर्ट १९०६।१९२ बी, १९०६।१७४ ए (२) नागरी प्रचारिणी पत्रिका, वर्ष ६, अङ्क २, श्रावण १९८५, पृष्ठ १५४-६४

वहुत रुपया कमा कर यह आगरा आये। यहाँ अच्छा घर बनाकर यह फिर कलकत्ते चले गये। कलकत्ते ही मे इनकी मृत्यु हुई। लल्लू जी को कोई सन्तति न थी। इनके पास अँग्रेजो की वहुत-सी चिट्ठियाँ थी, जिनको अँग्रेजो को दिखाकर इनके वशज दयाल जी ने आगरा मे एक स्कूल खोला था जो वाद मे आगरा कालेज हुआ। लल्लू जी सम्भवत राधावल्लभ-सम्प्रदाय के वैष्णव थे। कितनी वर्ष की वय मे और कव लल्लू जी का देहान्त हुआ, व्यास जी को पता नही।

सरोज में लल्लू जी के नाम से सभाविलास से जो रचनाएँ उद्धृत हैं, वे इनकी नही हैं। सभाविलास जैसा कि पहले कहा गया है, पुराने कवियो की रचनाओ का सग्रह है।

८०५।६७५

(६) लाल गिरधर, वैसवारे वाले, स० १८०७ मे उ०। इन महाराज ने एक ग्रन्थ नायिका भेद का पदो मे ऐसा सुन्दर वनाया है, जिसके देखने से इनका पाण्डित्य प्रकट होता है।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्वन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही। ग्रियर्सन मे (३४५) इनके कुण्डलियाकार गिरिधर कविराय होने की हास्यास्पद सम्भावना की गई है।

८०६।६७६

(७) लालमुकुन्द कवि, सवत १७७४ मे उ०। इनके शृङ्गार के वहुत सुन्दर कवित्त हैं

सर्वेक्षण

लालमुकुन्द कवि, मुकुन्द लाल वनारसी[1] से अभिन्न है, ग्रियर्सन (३९१) मे यह सम्भावना व्यक्त की गई है। विनोद (७९१) मे लाल मुकुन्द को वनारसी कहा गया है। स्पष्ट ही मिश्रवन्धु इन्हे वनारसी कहकर मुकुन्दलाल से इनकी अभिन्नता स्वीकार करते हैं। लालमुकुन्द का समय सवत् १७७४ और मुकुन्दलाल का १८०३ दिया गया है। मुकुन्दलाल के शिष्य प्रसिद्ध रघुनाथ कवीश्वर का रचनाकाल सवत् १७९०-१८१० है। यही इनका भी समय होना चाहिये। सवत् १७७४ इनका जन्मकाल नही हो सकता। यह रचनाकाल ही है। मुकुन्दलाल का एक ग्रन्थ 'श्रीलालमुकुन्द विलास[2]' खोज मे मिला है। यह नायिका भेद का ग्रन्थ है।

८०७।६७५

(८) लालचन्द कवि। इनके कवित्त और कुण्डलिया वहुत कूट हैं।

---

(१) नागरी प्रचारणी पत्रिका, कवि सख्या ६३४ (२) खोज रिपोर्ट १९०३।६४

सर्वेक्षण

विनोद मे कई लालचन्द हैं। यथा—

(१) लालचन्द ४८७।१, लीलावती भाषा वन्ध के रचयिता। रचनाकाल संवत् १७३६ सोभाग सूरि के शिष्य तथा बीकानेर नरेश अनूप सिंह कोठारी नेणसी के आश्रित इनका उल्लेख राजस्थान रिपोर्ट, भाग १ और २ मे भी हुआ है। रिपोर्ट के अनुसार यह खरतर गक्षीय जैन यति थे। श्री शान्तिहर्ष जी के शिष्य एव कविवर जिन हर्ष के गुरुभ्राता लाभवर्धन जी का, दीक्षा से पूर्ववर्ती नाम लालचन्द था। इन्होंने सवत् १७५३ के भादों सुदी मे अक्षयराज के लिये स्वरोदय की भाषा टीका बनाई। रिपोर्ट के अनुसार आप के अन्य ग्रन्थ ये हैं —

(१) विक्रम नव सो कन्था चौपाई एव खापरा चोर चौपाई। इसकी रचना जैतारन मे श्रावण सुदी १३ को सवत् १७२३ मे हुई।

(२) लीलावती रास, रचनाकाल कार्तिक सुदी १४, सम्वत् १७२८।

(३) लीलावती रास, (गणित), सवत् १७३६, असाढ वदी ५, को बीकानेर मे कोठारा जैतसी के लिये रचित।

(४) धर्मवुद्धि पापवुद्धि रास, मवन् १७४२ मे सरसा मे रचित।

(५) पाण्डव चरित्र चौपाई, रचनाकाल सवत् १७६७।

(६) विक्रम पञ्च दण्ड चौपाई, रचनाकाल फाल्गुन १७३३।

(७) शकुन दीपिका चौपाई, रचनाकाल वैशाख सुदी ३, गुरुवार, सवत् १७७०।

(२) लालचन्द सागानेरी, विनोद ६११।१, रचनाकाल सवत् १८१८ षट्कर्मोपदेश माला, वराग चरित्र, विमलनाथ पुराण, शिखरविलास, आगमशतक, सम्यक्त्व कौमुदी, इन ६ ग्रन्थो के रचयिता।

(३) लालचन्द पाण्डेय ६५०।१, वारागना चरित्र के रचयिता, रचनाकाल सवत् १८२७।

(४) लालचन्द जैन १०२६।१, श्रीपाल चौपाई के कर्त्ता, रचनाकाल सवत् १८३७ यह चारो लालचन्द राजस्थानी हैं। सरोज के लालचन्द इन चारो से भिन्न कोई उत्तरप्रदेशी अन्य कवि प्रतीत होते हैं। इनकी भाषा तो इन्हे अवध प्रदेशीय घोषित करती है।

८०८।६८६

(६) लालनदास ब्राह्मण, डलमऊ वाले, सवत् १६५२ मे उ०। यह महाराज वडे महात्मा हो गये हैं। इनके कवित्त शान्त रस के हैं। हजारे मे भी कालिदास ने इनका नाम लिखा है।

सर्वेक्षण

लालनदास का असल नाम लालचददास था। यह रायवरेली जिले के अन्तर्गत डलमऊ के

निवासी थे। सरोजकार ने इन्हे भ्रम से ब्राह्मण समझ लिया है। यह हलवाई थे। इन्होने भागवत-दशम स्कन्ध का दोहा-चौपाइयो मे हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत किया है। इस अनुवाद की प्रतियाँ भागवत-भाषा[1] और हरि-चरित्र नाम से खोज मे मिली हैं। इस ग्रन्थ मे रचनाकाल दिया हुआ है, पर परस्पर मेल नही खाता। १९०६।१८९ मे इसका रचनाकाल सवत् १५९५ विक्रमी, १९२३।२३८ मे सवत् १५८७ विक्रमी, १९२६।२६१ ए मे सवत् १५८५ विक्रमी, १९२६।२६१ वी और विहार रिपोर्ट, भाग २, मे सवत् १५२७ वि० दिया गया है। १९२३ वाली खोज रिपोर्ट मे रचनाकाल सूचक अश यह है—

सवत पद्रह सै सत्यासी जहिया
सप्तै विलवित वरतै तहिया
मास असाढ कथा अनुसारी
हरि वासर रजनी उजियारी

विहार रिपोर्ट, भाग २, मे प्रथम चरण का पाठ यह है—

सवत पन्द्र से सत्ताइस जवही

अन्य रिपोर्टो मे रचनाकाल सूचक अश उद्धृत नही है।

कवि ने ग्रन्थ के आरम्भ मे अपने को लालच हलुवाई कहा है।

विघन हरन सतन सुखदाई
चरन गहे लालच हलुवाई

—विहार रिपोर्ट और खोज रिपोर्ट १९२३।२३८

कवि अपनी छाप जन लालच भी देता है, जैसे—

(१) भगत हेतु जन लालच, हरसित वन्दौं पाय
श्री गोपाल गुन गावौं, बुधि दे सारद माय

(२) सकल कामना पूरि कै, भगति करहि मनलाय
जन लालच के स्वामी, वासुदेव गृह जाय

—विहार रिपोर्ट, भाग २

(३) अस जगदीश्वर जो है तेहि सुमिरहु नर नाह
चरन सरन जन लालच हरि सुमिर मनमाँह

इनका एक नाम आसानन्द भी प्रतीत होता है। हरि-चरित्र की पुष्पिका मे यह नाम आया है।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९२६।२६१ ए, वी (२) वही १९०६।१८९, १९२३।२३८, १९४१।२४२ क ख, विहार रि० २।१०५

(१) इति श्री हरिचरित्रे दसम स्कन्धे श्री भागवते महापुराने कृष्णवैकुण्ठसिधारनो नाम ६० अध्याय। लालच आसानन्द कथा सम्पुरन। —खोज रिपोर्ट १९२३।२३८

(२) एती श्री हरी चरित्रे दसम स्कन्धे श्री भागवने महापुराने श्री ग पुत्र प्रसादना नाम छेवानवेमो अध्याय ९६ ऐती श्री पोथी भागवत तथा क्रीत लालच आसानन्द के संपुरन जो पोथी मो देखा सो लीखा मम दोख न दीअते। —विहार रिपोर्ट, भाग २

इस ग्रन्थ मे कवि ने अपने को रायवरेली का रहने वाला कहा है—

रायवरेली उत्तम वासा
लालच राम नाम की आसा

विहार खोज रिपोर्ट, भाग २, के अनुसार इन्ही लालचदास का एक अन्य ग्रन्थ विश्वपुराण और भी है, जिसका विवरण उक्त रिपोर्ट की ग्रन्थ सस्या १०६ पर है।

खोज-रिपोर्टो मे यद्यपि लालनदास ब्राह्मण डलमऊ वाले की एकता लालचदास हलवाई, रायवरेली वाले से स्थापित की गई है। फिर भी अविश्वास के लिये अवकाश है। सरोज मे लालनदास के दो छन्द उद्धृत हैं। इनमे से यह दोहा इनका परिचय देता है—

दालभि ऋषि की दलमऊ सुरसरि तीर निवास
तहाँ दास लालन बसे करि अकाश की आस

इस दोहे मे स्पष्ट रूप से लालनदास और डलमऊ की चर्चा है। अभी तक रिपोर्टो के किसी भी उद्धृत अवतरण मे लालनदास पाठ नही मिला है। यद्यपि इस सम्वन्ध मे अभी और प्रकाश की आयश्यकता है, फिर भी वहुत सम्भावना यही है कि दोनो कवि और दोनो ग्रन्थ अभिन्न हो। सरोज के सवत् अशुद्ध हैं। इस समय के वहुत पहले कवि नविगत हो गया रहा होगा।

८०९।६९२

(१०) लाला पाठक कवि, रुकुमनगर वाले, सवत् १८३१ मे उ०। इनका वनाया हुआ शलिहोत्र वहुत सुन्दर है।

सर्वेक्षण

लाला पाठक के सम्वन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही।

८१०।६७९

(११) लोने कवि, वन्दीजन २, वुन्देलखण्डी, सवत् १८७६ मे उ०। इन्होंने शृङ्गार की सुन्दर कविता की है।

सर्वेक्षण

लोने वुन्देलखण्डी के भी सम्वन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही।

८११।६७८

(१२) लोने सिंह १, वाछिल मितौली, जिसे खीरीवाले, सवत १८९२ मे उ०। यह कविता मे महानिपुण और क्षात्रधर्म मे वडे साहसी क्रियावान थे। इन्होने भागवत के दशम स्वन्ध की नाना छन्दो मे भाषा की है। इन्होने लडाई मे महाशूर वीरता के साथ सिर दिया।

सर्वेक्षण

लोने दास का एक ग्रन्थ राम स्वर्गारोहण खोज मे मिला है।[1] इसका रचनाकाल सवत १८९२ है।

मार्ग मास विधि अष्टमी गुरु वासर सुखुपुंज
कथा लिखी सम्पूर्ण तव सुमिरि राम पद कज
एक सहस और आठ सत, पुनि वानवे उदार
लोने तेहि सवत लिखेउ कथा मुदित विस्तार

—खोज रिपोर्ट १९२३।२४९

ग्रन्थ मे लोने छाप है। न तो ग्रन्थारम्भ मे और न पुष्पिका मे ही ग्रन्थकर्त्ता के सम्वन्ध मे कोई सूचना है। लोने नाम से ८१० सख्यक लोने वन्दीजन वुन्देलखण्डी और ८११ सख्यक लोने सिंह दोनो का वोध हो सकता है। पर तीन कारणो से यह लोने सिंह की ही रचना प्रतीत होती है। एक तो दोनो प्राप्त कृतियाँ अवध के अन्तर्गत वारावकी और लखनऊ मे मिली है और लोने सिंह भी अवध के ही अन्तर्गत खीरी के रहने वाले थे। दूसरे लोने वुन्देलखण्डी कवित्त-सवैया रचने वाले शृङ्गारी कवि हैं और अवध वाले लोने सिंह भागवत दशम स्कध के विधित छन्दो मे अनुवाद करने वाले धार्मिक प्रवृत्ति के पुरुप हैं। राम स्वर्गारोहण भी धार्मिक रचना है और नाना छन्दो मे लिखी गई हें। तीसरे, सयोग की वात यह भी है कि लोने सिंह का सरोज मे जो समय दिया गया है, वही इस ग्रन्थ का रचनाकाल है।

८१२।६८२

(१३) लीलाधर कवि, सवत् १६१५ मे उ०। यह कवि महाराज गजसिंह जोधपुर के यहाँ थे और इनका प्रमाण सत्कवि करते आये हैं।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९२३।२४९, १९२६।२७२

सर्वेक्षण

जोधपुर नरेश गज सिंह का शासनकाल सवत् १६७७-९५ है, अत सरोज मे दिया सवत् १६१५ ठीक नही। सूदन एव दास ने इनका नामोल्लेख अपने कविनामावली वाले छन्दो मे किया है। इसीलिये सरोजकार ने लिखा है कि इनका प्रमाण सत्कवि करते चले आये है। विनोद (२५१) का अनुमान है कि इन्होने सम्भवत नखशिख का कोई ग्रन्थ बनाया था। इन्होने यमक का अधिक ध्यान दिया है।

८१३।६८०

(१४) लक्ष्मणदास कवि। इन्होने पद बहुत सुन्दर बनाये है।

सर्वेक्षण

खोज मे कई लक्ष्मणदास मिले है। अभिन्नता सिद्ध हो जाने पर इनकी सख्या कम भी हो सकती है।

(१) लक्ष्मणदास छुई खदान के राजा, सम्वत् १८२४ और १९१४ के बीच वर्तमान, राधाकृष्ण रसतरङ्गिणी[१] के कर्त्ता। ग्रन्थ की रचना सवत् १९१४ मे हुई।

ओनैस सो चौदा बार पुनि गुरु दिन हो
भादो सुदि तिथि परवा बजे दस तिहि छिन हो
पुरो भयो तेह वेरि कृपा हरि गुरु करि हो
बार बार कर जोरि प्रभुपद सिरधरि हो।

(२) लछिमनदास—भगवत् स्तुति सम्बन्धी १०२ दोहो के एक सग्रह 'दोहाओ का सग्रह'[२] के रचियता। ग्रन्थ का प्रतिलिपि सवत् १८८६ है।

(३) लखनदास—गुरु चरितामृत[३] के रचयिता। विनोद मे (१८९६) इन्ही दो और तीन को न जाने किस आधार पर एक मे मिला दिया गया हे।

(४) लक्ष्मण दास—सवत १९०५ के लगभग वर्तमान। गोपीचन्दभरथरी लाल[४] और प्रहलाद चरित्र सङ्गीत[५] के रचयिता।

(५) लछिमन—यह कोई कबीर पन्थी कवि हैं। इन्होने निर्वाण रमैनी[६] की रचना की है।

सरोज के लक्ष्मणदास सगुणोपासक भक्त है। इनका कीर्तन सम्बन्धी एक पद सरोज मे उद्धृत है जिसमे भगवान के नामो की ही परिगणना है।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९४१।२३५ (२) वही, १९०६।२८४ ए (३) वही, १९०९।१६८ (४) वही, १९२६।२५५ ए, बी (५) वही, १९२६।२५५ सी, डी (६) वही, १९०६।२८३।

नामै सब सुख विलास, लछमन दासानुदास,
अज्ञ अल्प बुद्धि चरन सरन परि पुकारी।

ऊपर के पाँच लक्ष्मण दासो में से कबीर पन्थी लछिमनदास का अस्तित्व तो निश्चित रूप से अलग है। शेष चार, एक कवि भी हो सकते हैं। राधाकृष्ण रसतरङ्गिणी वाले पहले लक्ष्मण दास तो सरोज वाले लक्ष्मणदास प्रतीत होते हैं।

ग्रियर्सन मे इन लक्ष्मणदास का विवरण ७७६ सख्या पर है। इन्हे राजा खेमपाल राठौर का पुत्र कहा गया है। यह कथन वस्तुत इन लक्ष्मणदास से सम्वन्धित नही है। ७७५ सख्या पर रामराय राठौर का विवरण है। यह रामराय राठौर खेमपाल राठौर के पुत्र थे। प्रेस के भूतो की की वदौलत इनसे सम्वन्धित उक्त कथन दो पक्ति नीचे खिसक आया है और लक्ष्मणदास के विवरण से चिपक गया है।

८१४।६८१

(१५) लक्ष्मण सिह, स० १८१० मे उ०। इनके शृङ्गार के सुन्दर कवित्त है।

सर्वेक्षण

अभिज्ञान शाकुन्तलम् के प्रसिद्ध अनुवादक राजा लक्ष्मण सिंह को छोडकर, खोज मे तीन अन्य लक्ष्मण सिंह मिले हैं—

(१) लक्ष्मण सिंह, दीवान राज सिंह के पुत्र, ओडछा निवासी, तहरौली के जागीरदार, स० १७९४ के लगभग वर्तमान और शाहज्ञ पडित के आश्रयदाता।[1]

(२) लक्ष्मण सिंह, प्रधान, टीकमगढ निवासी कायस्थ, स० १८६० के लगभग उपस्थित अर्जुनसिंह के आश्रित, सभाविनोद के रचयिता।[2]

विनोद (११६१) मे इन्ही का विवरण है। इन्हे सभा विनोद, रघुवीर प्रमोद, प्रतिमाल परिणय, इन तीन ग्रन्थो का कर्त्ता माना गया है।

(३) लक्ष्मण सिह राजा विजावर, राज्यकाल स० १८९०-१९०४। इन्होने सस्कृत और भाषा दोनो मे रचना की है। यह नृपनीतिशतक, समयनीतिशतक भक्तिप्रकाश और धमप्रकाश, इन चार ग्रन्थो के रचयिता हैं।[3]

यह तीनो लक्ष्मण सिंह वुन्देलखण्डी हैं। सरोज के लक्ष्मण सिंह इनमे से ही कोई है अथवा अन्य कोई कुछ कहा नही, जा सकता।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९०६।१०७ (२) वही, १९०६।६६, (३) वही १९०६।६५ए, बी, सी, डी।

सरोज मे इन्हे कहा तो शृङ्गारी गया है, पर जो कवित्त इनकी कविता के उदाहरण मे उद्धत किया गया है, उसमे घोडे की जातियाँ गिनाई गई हैं।

८१५।६८३

(१६) लच्छू कवि, स० १८२८ मे उ० । ऐजन । इनके शृङ्गार के सुन्दर कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

लच्छू के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही ।

८१६।६८४

(१७) लछिराम कवि १, होलपुर के बन्दीजन । विद्यमान है । यह कवि शिव सिंह सरोज नामक नायिका भेद का एक ग्रन्थ हमारे नाम से बना रहे हैं।

सर्वेक्षण

यह लछिराम जी ब्रह्म भट्ट थे और कविवर होल के वशज थे । यह अलङ्कारी लछिराम के नाम से प्रसिद्ध थे । अमोढा जिला बस्ती वाले प्रसिद्ध लछिराम से यह भिन्न हैं । शिव सिंह ने सरोज के प्रणयन मे इनसे बडी सहायता ली थी । ऐसा खोज रिपोर्ट का कथन है ।[1] यह असम्भव भी नही । स्वय सरोजकार के अनुसार इन लछिराम का इनसे सम्पर्क था और यह शिव सिंह के नाम पर शिव सिंह सरोज नामक नायिका भेद का ग्रन्थ बना रहे थे । महाराज बलरामपुर और महाराज बैल इत्यादि के दरबारो मे इनका बडा सम्मान था । इनका देहावसान स० १९५७ के आस-पास हुआ । इनके खण्डित असमाप्त नायिका भेद के ग्रन्थ कृष्ण विनोद[2] की प्राप्ति के समय स० १९८० के आस-पास इनके एक पुत्र और दो पौत्र जीवित थे । इनके पौत्रो के अब भी जीवित रहने की सम्भावना है । कृष्ण विनोद मे ग्रन्थारम्भकाल दिया गया है, जो बहुत स्पष्ट नही है ।

> इन्दु[1] मानि निधि[9] भूमि[1] शुचि, शुभ्र त्रयोदसि जानि
> कृष्ण विनोद अरम्भ किय, गुरु बासर सुभ जानि

यह ग्रन्थ १९०१, १९११, १९२१, १९३१, १९४१, १९५१, मे से किसी साल रचा गया । रचना तिथि ज्येष्ठ या आषाढ शुक्ल त्रयोदशी, गुरुवार है ।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९२३।२३३ (२) वही १९२३।२३३ ।

८१७।६८७

(१८) लछिराम कवि २, ब्रजवासी। इनके पद रागसागरोद्भव मे है।

सर्वेक्षण

खोज मे लछिराम, ब्रजवासी के निम्नलिखित १० ग्रन्थो का पता चलता है—

(१) करुणाभरण नाटक, १९००।७४, १९०२।६२, १९०६।२८५ वी, राज० रिपोर्ट, भाग १, सख्या ४२। इस ग्रन्थ मे कवि ने गोपियो एव कृष्ण के कुरुक्षेत्र मे पुर्नमिलन का वर्णन किया हे। यह ग्रन्थ यद्यपि सात अङ्को मे विभक्त है, फिर भी नाटक न होकर ब्रजभाषा की दोहा-चौपाइयो मे लिखित प्रवन्ध हे। ऐसा प्रतीत होता है कि कवि ने वस्तुत करुणाभरण नामक नाटक लिखा, मित्रो को सिखाया, और उसका अभिनय किया, तद्उपरान्त उसे प्रवन्ध-काव्य का रूप दे दिया पर नाम के साथ नाटक शब्द चिपका रेह गया।

रसिक भक्त पण्डित कविन कही महाफल लेहु
नाटक करुणाभरण तुम लछीराम करि देहु १
प्रेम बढै मन निपट ही, अरु आवै अति रोइ
करुना और सिंगार रस, जहाँ बहुत करि होइ २
लछीराम नाटक करयो, दीनौ गुनिन पढाइ
भेप देखि नर्तन निपुन लाए नरन सघाइ ३
सुहृद मडली जोरि तहँ, कीनौ बडौ समाज
जा उनि नाच्यो सों कहयो कविता मे सुख साज ४

—खोज रिपोर्ट, १९००।७४

यह लछीराम प्रसिद्ध कवीन्दाचार्य सरस्वती के शिष्य थे। कवीन्द्राचार्य शाहजहाँ, (जीवन-काल स० १६४८-१७१६) के समकालीन थे और उसके द्वारा समादृत भी हुए थे। यही समय लछीराम जी का भी होना चाहिये। इस ग्रन्थ के अन्त मे कवीन्द्राचार्य का उल्लेख गुरु रूप मे हुआ है।

यो कवीन्द्र सरसती रिझाए
गाए वचन वेद के गाए
जब कवीन्द्र यो लई परिख्या
तब जानी सतगुर की सिख्या

—राज रिपोर्ट, भाग १

विनोद मे इस नाटक का नाम करुणानाटक और इसका रचनाकाल स० १७९१ दिया

गया है, जो ठीक नही । इस ग्रन्थ की पुष्पिका से ज्ञात होता है कि यही लछिराम अपनी छाप 'कृष्ण जीवन , लछिराम' रखते थे ।

"इति श्रीकृष्ण जीवनि लछीराम विरचिताया कर्णाभरण नाटक वर्ननम समाप्त अङ्क शुभमस्तु सवत् १७४३ वर्षे अगहन वदी पञ्चमी भौमे पुस्तक शुभम् ।"

राग कल्पद्रुम मे इन्ही लछिराम के पद कृष्ण जीवन लछिराम की छाप से मिलते हैं ।

(२) योग सुधानिधि, १९०६।२८५ ए । यह सस्कृत के सुप्रसिद्ध ग्रन्थ योग-वाशिष्ठ का अनुवाद इस पर है। इनके गुरु कवीन्द्राचार्य ने भी ग्रन्थ का अनुवाद किया था ।[1]

(३) भागवत के एक अश का भाषानुवाद, १९०९।१९३ । यत्र-तत्र छन्दो मे कवि की छाप है ।

(क) लयो जु धोखो लछी कहि, चन्द लछमी आनन
आनन चन्दहि देखि कै, सोभा उपजी कानन

(ख) सवरु के पर मिलिहै काम
सिव जू कही तो लछीराम

(४) दम्पति रङ्ग राज० रिपोर्ट, भाग २, पृष्ठ २१ । नायिका भेद का ग्रन्थ है ।

करि प्रनाम मन वचन क्रम, गहि कविता को ध्यवहारु
प्रकृति पुरुष वरनन करूँ, अघ मोचन सुख सारु १
रसिक भगत कारन सदा, धरत अलख अवतार
कान्ह कुँवर रवनी रवन, प्रगट भए ससार २
जिहि विधि-नाइक नाइका, वरनै रिसिन वनाइ
लछीराम तिहिं विवि कहत, सो कवियन की सिख पाइ ३

ग्रन्थ का प्रतिलिपिकाल स १७०९ है ।

(५) राग विचार, राज० रिपोर्ट भाग, २, पृष्ठ, ६२ । इस ग्रन्थ मे हनिवन्त के अनुसार ९८ पद्यो मे राग विचार है ।

देव रिषिन कीने विविध, मत सङ्गीत विचार
लछीराम हनिवन्त मतु कहे सुमति अनुसार
धैवतु ग्रह सुर रागना, अरु कामोद सुनाउ
लछीराम ए जानि के, तन मन आणद पाउ ९७

(१) खोज रिपोर्ट,कवि सख्या ७६

इन पाँच उपलब्ध ग्रन्थो के अतिरिक्त राज० रिपोर्ट, भाग २, पृष्ठ १५७, मे इनके बनाये निम्नलिखित ५ अन्य ग्रन्थो का नाम निर्देश है।

(१) ज्ञानानन्द नाटक (२) ब्रह्मानन्दनीय (३) विवेक सागर ज्ञान कहानी (४) ब्रह्म तरङ्ग (५) बुद्धि वल कथा, रचना काल स० १६८१

प्रथम चारो ग्रन्थ बीकानेर की अनूप सस्कृत लाइब्रेरी मे हैं। पाँचवे ग्रन्थ का उल्लेख इटली के प्रसिद्ध राजस्थानी के प्रेमी विद्वान एल० पी० टेसटरी के सूचीपत्र मे हुआ है। उक्त राज० रिपोर्ट मे ज्ञानानन्द नाटक से निम्नाङ्कित अश भी उद्धृत किया गया है। इससे कवि के जीवन की पर्याप्त जानकारी प्राप्त होती है।

देस भदावर अति सुख वास
तहाँ जोयसी ईसुरदास
राम कृष्ण ताके सुत भयो
धर्म समुद्र कवि तामसु छयो
तिनकें सुत शिरोमणि जानि
माथुर जाति चतुरई खानि
मोहन मिश्र सुगम ताको सुत
वसत गम्भीर सकल कलायुत
पुनि अवधानि परम विचित्र
दोउ लच्छीराम सो मित्र
तीनों मित्र सने सुख रहे
धन्नि प्रीति सब जग के कहे

अथ लच्छीराम वृत्तान्त कहीयतु है—

जमुना तीर मई इक गाऊँ
राइ कल्याण बसे तिहि ठाऊँ
लछीराम कवि ताको नन्दु
जा कविता सुनि नासे दन्दु
राइ पुरन्दर कर लघु भाई
तासो मित्रन बात चलाई
नाटक ज्ञानानन्द सुनावो
देहु सखनि अरु तुम सुख पायो

इस उद्धरण से ज्ञात होता है कि लछीराम, भदावर राज्य के अन्तर्गत, यमुना तट स्थित, मई नामक गॉव के रहने वाले थे। भदावर राज्य यमुना के दोनो ओर ग्वालियर और आगरा जिले के वर्तमान स्थान पर विस्तृत था। लछीराम के पिता का नाम राय कल्याण और बडे भाई का राय पुरन्दर था। खोज रिपोर्ट १९०६।२८५ मे इनके पिता का नाम कृष्ण जीवन कल्याण दिया गया है। इनका वास्तविक नाम कल्याण ही है। कृष्ण जीवन एक रहस्यमय उपाधि है, जिसका प्रयोग पिता और पुत्र ने समान रूप से किया है। इन लछीराम की मोहन और अवधानि नामक व्यक्तियो से परम मित्रता थी। इन्ही के कहने से कवि ने ज्ञानानन्द नाटक रचा।

कवि ने अपने परिचय के ही समान अपने मित्र मोहन का भी विस्तृत परिचय दिया है। मोहन जाति के माथुर ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम शिरोमणि, पितामह का राम-कृष्ण और प्रपितामह का जोयसी ईसुरदास था। सम्भवत यह सब भी कवि थे। इसीलिए इनका विवरण दिया गया है। रामकृष्ण के सम्बन्ध मे तो स्पष्ट कहा गया है कि कविता मे इनका यश छाया हुआ था।

"धर्म समुद्र कविता यस छयो"

सरोज मे एक कवि जोयसी हैं, जिनको स० १६५८ मे उ० कहा गया है। सम्भवत यह जोयसी यही जोयसी ईसुरदास हैं।

इस प्रकार लछीराम ब्रजवासी का रचनाकाल स० १६८१, बुद्धि बल कथा का रचनाकाल है और यह शाहजहॉ के शासनकाल के उत्तरार्द्ध मे स० १७०० के आस-पास उपस्थित थे।

८१८।६६३

(१९) लक्ष्मणशरण दास कवि। ऐंजन। इनके पद रागसागरोद्भव मे हैं

सर्वेक्षण

सरोज मे लक्ष्मणशरण दास का निम्नाङ्कित पद उद्धृत है—

श्री वल्लभ पुरुषोत्तम रूप
सुन्दर नयन विसाल कमल रँग, मुख मृदु बोल अनूप
कोटि मदन वारौं अग अंग पर, भुज मृनाल अति सरस सरूप
देवी जी बड़धारनि प्रगटी दास सरन लछिमन सुत भूप

सरोजकार ने अन्तिम चरण मे आए 'दास सरन लछिमन' से कवि नाम लक्ष्मणशरण दास की उद्भावना की है। यह उद्भावना कोरी कल्पना है। इस पद मे महाप्रभु वल्लभाचार्य की स्तुति है। वल्लभाचार्य जी लक्ष्मण भट्ट के पुत्र थे। इस पद के अन्तिम चरण का अर्थ है, यह दास

लछिमन सुत भूप अर्थात् वल्लभाचार्य की शरण मे है। इस पद का वास्तविक रचयिता कौन है, यह स्पष्ट नही।

अत सरोज मे उल्लिखित और अभीष्ट लक्ष्मणशरण दास नाम के कोई कवि नही हुए। राग कल्पद्रुम मे इस नाम के किसी कवि की कोई अन्य रचना नही है। हाँ, उन्नीसवी शताब्दी मे अयोध्या मे एक मधुकर जी हुए हैं, जिनका उपनाम लक्ष्मणशरण था, पर यह सरोज के लक्ष्मणशरण दास नही है। यह सरोज मे उद्धृत उदाहरण से ही स्पष्ट है।

८१९।६८८

(२०) लोधे कवि, स० १७७० मे उ०। इनके कवित्त हजारे मे है।

सर्वेक्षण

लोधे की कविता कालिदास के हजारे मे थी, अत स० १७५० के पूर्व इनका अस्तित्व स्वत सिद्ध है। विनोद ५११ के अनुसार इनका जन्म सवत १७१४ और रचना सवत १७४० है। सरोज के अनुसार यह स० १७७० मे उपस्थित थे। इस कवि के सम्वन्ध मे कोई अन्य प्रामाणित सूचना सुलभ नही।

८२०।६८९

(२१) लोकनाथ कवि, स० १७८० मे उ०। इनकी प्रशसा दास कवि ने काव्य-निर्णय की भूमिका मे की है।

सर्वेक्षण

विनोद (५३६) के अनुसार लोकनाथ जी राधावल्लभी सम्प्रदाय के अनुयायी थे। खोज मे इनका एक ग्रन्थ हित चौरासी की टीका मिला हे।[1] इससे भी इनका राधावल्लभीय होना स्पष्ट है। यह बूँदी के रहने वाले थे। स० १७६० मे उपस्थित थे। यह बूँदी के महाराव बुद्ध सिंह के आश्रित थे। इनकी पत्नी भी कवयित्री थी। इस प्रसङ्ग की एक कथा विनोद मे दी हुई है। एक वार रावराजा बुद्ध सिंह कावुल जा रहे थे। कवि लोकनाथ को भी साथ चलने का हुक्म हुआ। तव इनकी पत्नी ने यह छन्द लिखकर भेजा और इन्हे कावुल जाने मे मुक्ति मिली।

मैं तो यह जानी ही कि लोकनाथ पाय पति
सग ही रहौंगी अरधग जैसी गिरिजा

(१) खोज रिपोर्ट १९०६।२८८

एते पै बिलच्छन ह्वै उत्तर गमन कीनो
कैसे के मिटत जो वियोग विधि सिरजा
अब तौ जरूर तुम्हे अरज किये ही बनै
बेउ द्रुज जानि फरमाइहे कि फिर जा
जो पै तुम स्वामी, आज कटक उलघि जैहौं
पाती मांहि कैसे लिखूँ मिश्र मीर मिरजा

विनोद मे इनके एक और ग्रन्थ 'रसतरङ्ग' का उल्लेख है।

महाराव बुद्ध सिंह औरङ्गजेब के आदेशानुसार स० १७५३ मे कावुल जा रहे थे। अत स० १७५२ के पहले ही लोकनाथ विवाहित हो चुके,थे। यदि उस समय इनकी अवस्था ३० वर्ष की रही हो, तो इनका जन्म काल स० १७२० के लगभग होना चाहिए। कवि रत्नमाला मे मुन्शी देवी-प्रसाद ने लिखा हे कि लोकनाथ की मृत्यु रावराजा बुद्ध सिंह की मृत्यु के पहले हुई तथा जब बूंदी बुद्ध सिंह से छूटी, तब लोकनाथ जी के बाल-बच्चे बूंदी मे अन्यत्र चले गए। बुद्ध सिंह से बूंदी पहली वार स० १७७२ के लगभग और अंतिम वार स० १७८७ मे छूटी थी, अत लोकनाथ की मृत्यु स० १७८० के आस-पास हुई।[1]

बुद्ध सिंह ने लोकनाथ को इकलौरा और धौलपुर नामक दो गाँव दिए थे। इस तथ्य का उल्लेख लोकनाथ ने अपने इस कवित्त मे किया है।[2]

भूषण निवाज्यो जेसे सिवा महाराज जू ने
बारन दै बावन धरा पै जस छवि है
दिल्ली साह दिलिप भए हैं खानखाना जिन
गग से गुनी को लखे मौज मन भाव है
अब कविराजन पै सकल समस्या हेत
हाथी घोडा तोडा दे बढायो बहु नाव है
बुद्ध जू दिवान लोकनाथ कविराज कहै
दियो इकलौरा पुनि धौलपुर गाँव है।

एक लोकनाथ ब्राह्मण का 'राम व्याह कवित्त' नामक ग्रन्थ खोज मे मिला है।[3] यह कवि स० १९१५ का पूर्ववती है।

---

(१) माधुरी, माघ १९८५, सम्पादकीय, (२) वही, (३) खोज रिपोर्ट १९४७।३५८

८२१।६६१

(२२) लतीफ कवि, स० १८३४ मे उ० । इन्होने शृङ्गार के सुन्दर कवित्त बनाए है ।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई प्रामाणिक विवरण उपलब्ध नही । विनोद (२३२७) मे इन्हे स० १६३४ मे उपस्थित कवियो की सूची मे परिगणित किया गया है । सरोज और विनोद के समयो मे पूरे १०० वर्ष का यह रहस्यमय अन्तर सम्भवत. चक्षु दोष के कारण है ।

८२२।६८५

(२३) लेखराज कवि, नन्दकिशोर मिश्र, गन्धौली, जिले सीतापुर, विद्यामन है । यह महाराज भट्टाचार्यो के नातेदार, गँधौली ग्राम के नम्बरदार, काव्य मे महा निपुण हैं । रसरत्नाकर, लघु भूषण अलङ्कार, गङ्गा भूषण, ये तीन ग्रन्थ इनके बहुत सुन्दर है ।

सर्वेक्षण

विनोद (१८१६) मे लेखराज का परिचय पर्याप्त और प्रामाणिक दिया गया है, क्योकि इनके घराने से मिश्र बन्धुओ का निकट सम्पर्क रहा है । विनोद के अनुसार नन्दकिशोर मिश्र का जन्म स० १८८८ मे लखनऊ मे एक अत्यन्त सम्पन्न कुल मे हुआ था । स० १६१४ के स्वातन्त्र्य समर के समय इन्हे लखनऊ छोडकर अपनी जमीदारी, गँधौली जिला सीतापुर भाग जाना पडा । इन्हे कविता का बडा शौक था । इन्होने नायिका भेद का ग्रन्थ रसरत्नाकर, राधा नखशिख, और अलङ्कार के दो ग्रन्थ गङ्गा भूषण और लघु भूषण ये चार ग्रन्थ रचे । गङ्गा भूषण मे गङ्गा स्तुति और अलङ्कार निरूपण साथ-साथ है । लघु भूषण मे बरवै छन्द मे अलङ्कार कथन है । इनका शरीरपात स० १६४८ मे शिवरात्रि के दिन काशी मे मणिकर्णिका घाट पर हुआ । इनके तीन पुत्र थे, लाल बिहारी उपनाम द्विजराज कवि, जुगुलकिशोर उपनाम ब्रजराज कवि और रसिक बिहारी । ये सभी विनोद के प्रणयनकाल सन् १६१४ ई० तक दिवगत हो चुके थे । ये तीनो सुकवि थे । खोज मे इनका गङ्गाभरण मिला है ।[1] इसका रचनाकाल स० १६२६ है । गङ्गाभरण गङ्गा भूषण का अन्य नाम है ।

८२३।

(२४) लोकनाथ कवि, उपनाम बनारसीनाथ ।

---

(१) खोज रिपोर्ट १६२३।२४७, १६२६।२६७

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही।

८२४।

(२५) ललितराम कवि।

सर्वेक्षण

विनोद मे स० १९४५ मे उपस्थित कवियो की सूची मे ललितराम का नाम २५४३ सख्या पर है। इनके एक ग्रन्थ छुटक साखी छन्द का भी उल्लेख हुआ है।

८२५।

(२६) लक्ष्मीनारायण मैथिल, स १५८० मे उ०। यह कवि खानखाना के यहाँ थे।

सर्वेक्षण

सरोज मे दिया हुआ स० १५८० विक्रमी सवत न होकर ईस्वी-सन् है। इस सन् अथवा स० १६३७ वि० मे कवि उपस्थित था। खानखाना के समय को ध्यान मे रखते हुए यही कहना पड़ता है।

विनोद (२१४) मे इनके नाम पर दो ग्रन्थ चढे है—(१) प्रेम तरङ्गिनी, (२) हनुमान जी का तमाचा। ये दोनो ग्रन्थ बाद की रचनाएँ हैं, अकबर युगीन नही। प्रेम तरङ्गिनी को स्वय मिश्र-बन्धुओ ने उन्नीसवी शती की रचना कहा है।[१] हनुमान जी का तमाचा लक्ष्मण गौड, अयोध्या वाले की कृति है।[२]

८२६।

(२७) लक्ष्मण कवि। इन्होने शालिहोत्र भाषा बनाया।

सर्वेक्षण

शालिहोत्र के रचयिता लक्ष्मण के नाम पर विनोद मे (१९७८) निम्नलिखित ८ ग्रन्थ दिये गये हैं।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९०९।१९६ (२) वही, १९१७।१०३ बी।

(१) धर्मप्रकाश, रचनाकाल स० १६०५ (२) भवित्प्रकाश, रचनाकाल स १६०२ (३) नृपनीतिप्रकाश, रचनाकाल स० १६०० (४) समयनीति शकत, रचनाकाल स० १६०१ (५) शालिहोत्र (६) रामलीला नाटक (७) भावनाशतक (८) मुक्तिमाल, रचनाकाल स० १६०७ ।

मिश्रबन्धुओ ने इनका भावनाशतक और शालिहोत्र दरवार छतरपुर के पुस्तकालय मे देखा था । इन ८ ग्रन्थो मे से प्रथम ४ तो विजावर के राजा लक्ष्मण सिंह के नाम पर भी विनोद मे १८२७ सख्या पर चढे है । इन राजा लक्ष्मण सिंह का जन्म सवत १८६७ मे हुआ था । इनका रचनाकाल स० १८६०-१६०४ है । हो सकता है, शालिहोत्र के रचयिता सरोज वाले लक्ष्मण यही विजावर नरेश लक्ष्मण सिंह हो । यदि छतरपुर मे प्राप्त शालिहोत्र इन्ही लक्ष्मण सिंह का है, तो सरोज वाले लक्ष्मण को इनसे अभिन्न मानने के लिए कोई वाधा न रह जायगी ।

खोज रिपोर्टो मे निम्नाङ्कित लक्ष्मण और मिलते है—

(१) लक्ष्मण वाजपेयी, अयोध्या प्रसाद औध, सन्तनपुरवा वाले के भाई ।[१] स० १८६० के लगभग वर्तमान ।

(२) लक्ष्मण पाठक, भवानीशङ्कर के पिता । भदैनी, काशी निवासी ।[२] स० १८७१ के पूर्व वर्तमान ।

(३) लक्ष्मण, अयोध्या के गौड ब्राह्मण । रामानुज सम्प्रदाय के अनुयायी । स० १६०६ के लगभग वर्तमान । राम रत्नावली[३] और हनुमान जी का तमाचा[४] के रचयिता ।

(४) लक्ष्मण, ब्राह्मण, फतेहपुर, आगरा के निवासी । इनका ग्रन्थ है, नरसीलो[५] ।

(५) लक्ष्मण, कवीर पन्थी, निर्वाण रमैनी के रचयिता ।[६]

८२७।

(२८) लाजव कवि ।

सर्वेक्षण

लाजव के सम्वन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही ।

---

(१) खोज रिपोर्ट १६२३।२४ (२) वही, १६०१ ।१३ (३) वही, १६१७। १०३ ए (४) वही, १६१७। १०३ बी (५) वही, १६३२ १२६ (६) वही, १६०६।२८३

८२८।

(२९) लोकमणि कवि। सूदन कवि ने इनकी प्रशसा की है।

सर्वेक्षण

सूदन ने लोकमणि का नाम प्रणम्य कवियो की सूची मे दिया है। अत यह या तो सूदन (रचनाकाल स० १८१०) के पूर्ववर्ती हैं या उनके समकालीन। श्रीकृष्ण मिश्र ने स० १७९८ मे तिमिर दीप[१] नामक एक ज्योतिष ग्रन्थ लिखा था। इन श्रीकृष्ण मिश्र के पिता का नाम लोकमणि मिश्र था। हो सकता है, यह लोकमणि मिश्र सरोज वाले लोकमणि ही हो। यदि ऐसा है, तो इनका रचनाकाल स० १७९८ से कुछ पूर्व होना चाहिए।

८२९।

(३०) लक्ष्मी कवि। ऐजन। सूदन कवि ने इनकी प्रशसा की है।

सर्वेक्षण

प्रणम्य कवियो की सूची मे सूदन ने इनका नाम दिया है। अत यह या तो स० १८१० मे उपस्थित थे या इससे पूर्ववर्ती हैं।

८३०।

(३१) लाल विहारी कवि, स० १७३० मे उ०।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्वन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही।

व

८३१।६९५

(१) वाहिद कवि। इनके शृङ्गार के कवित्त वहुत ही सरस हैं।

सर्वेक्षण

यह वाहिद, विलग्राम वासी मीर अब्दुल वाहिद हैं। इनका जन्म ९१५ हिजरी (१५०९-१० ई—स०१५६७ रिपोर्ट) मे साँडी, जिला हरदोई मे हुआ था। इनके पूर्वज विलग्राम के रहने वाले थे। इनकी वेटी का व्याह विलग्राम मे हुआ, तव यह भी अपने पुरखो के गाँव विलग्राम मे ही आ बसे। इनका विवाह कन्नौज मे हुआ था। यह कुछ दिनो तक कन्नौज मे भी रहे थे।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९१२।१७८, १९१७।१८०

कन्नौज मे ही इनकी भेंट अब्दुल कादीर वदायूनी से ९७७ हिजरी या १५६९-७० ई० (स० १६२७ वि०) मे हुई थी। इन्होने शेख सफीउद्दीन साईपुरी से दीक्षा ली थी, फिर शेख हुसेन के मुरीद हुए, जो इनके पिता के मित्र थे और शेख सफीउद्दीन के उत्तराधिकारी थे। वाहिद को अकबर ने ५०० बीघे जमीन दी थी। इनका देहावसान शुक्रवार ३ रमजान १०१७ हिजरी (११ दिसम्बर १६०८ ई० स०१६६५) को हुआ। उस समय इनकी उम्र १०२ की थी।[१]

मीर अब्दुल वाहिद सूफी थे। इन्होने फारसी मे अनेक ग्रन्थ लिखे है। यह अच्छे शायर भी थे हकायके हिन्दी इनका एक फारसी ग्रन्थ है, जिसकी रचना इन्होने १५६६ ई० (स० १६२३) मे की थी। इसमे ध्रुवपदो, विष्णुपदो एव अन्य हिन्दू गीतो मे आने वाले कतिपय शब्दो के आध्यात्मिक अर्थ (फारसी मे) दिए गए है।[२] इससे इनका लगाव हिन्दी कविता और पद प्रणाली से स्पष्ट प्रकट होता है। फारसी मे कविता करने वाले इन्ही वाहिद ने, हिन्दी से भी लगाव होने के कारण सम्भवत हिन्दी मे भी रचना की है और वाहिद के नाम से जो कुछ हिन्दी छन्द मिलते है, इन्ही के ।

८३२।

(२) वजहन कवि। इनके दोहे-चौपाई वेदान्त के अच्छे हैं।

दोहा—वजहन कहें तो क्या कहें, कहने की नहिं बात
सम्मुद समान्यो वुन्द मे, अचरज वडा देखात

सर्वेक्षण

वजहन भी मुसलमान हैं। इनके भी सम्वन्ध मे कोई प्रामाणिक सूचना सुलभ नही।

८३३।

(३) वहाब। इनका वारहमासा प्रसिद्ध है।

सर्वेक्षण

वहाव भी मुसलमान हैं। यह किसी मुहम्मद के शिष्य थे। इनका वारहमासा खोज में मिल चुका है।[३]

स, ष, श

८३४।७०९

(१) श्री सुखदेव मिश्र कवि १, कम्पिलावासी, स० १७२८ मे उ०। यह कवि भाषा-

---

(१) हकायके हिन्दी, भूमिका, पृष्ठ २३-२८ (२) वही, भूमिका पृष्ठ ३१ (३) खोज रिपोर्ट-१९४७।२३५ क, ख।

साहित्य के आचार्यो मे गिने जाते हैं। प्रथम राजा अर्जुन सिंह के पुत्र राजा राज सिंह गौर के यहाँ जाकर कविराज की पदवी पाकर वृत्त-विचार नामक पिङ्गल सब पिङ्गलो मे उत्तम ग्रन्थ रचा। तत्पश्चात् फिर राजा हिम्मत सिंह वन्धलगोती, अमेठी के यहाँ आय छन्द विचार नामक पिङ्गल ग्रन्थ बनाया। फिर नवाब फाजिल अली खाँ औरङ्गजेब बादशाह के मन्त्री के नाम भाषा-साहित्य का फाजिल अली प्रकाश नामक ग्रन्थ महा अद्भुत रचा। इन तीनो ग्रन्थो के सिवा हमने कही लिखा देखा है कि अध्यात्म प्रकाश, दशरथ राय, ये दो ग्रन्थ और भी इन्ही महाराज के रचे हुए हैं।

सर्वेक्षण

सुखदेव मिश्र कम्पिला के रहने वाले थे। सवत १६६० के लगभग इनका जन्म हुआ। इनका कविताकाल स १७२८ है। यह कान्यकुब्ज ब्राह्मण हिमकर के मित्र थे। कम्पिला ही मे इनका विवाह हुआ और जगन्नाथ तथा बुलाकीराम नाम के इनके दो पुत्र हुए। इन्होने काशी आकर सन्यासी, सम्भवत कवीन्द्राचार्य सरस्वती, से तन्त्र एव साहित्य की शिक्षा ग्रहण की थी। काशी से लौटते समय यह असोथर के राजा भगवन्त राय खीची के यहाँ गये। यहाँ से डौडियाखेरे के राजा मर्दन सिंह के यहाँ गए। ये भी भगवन्तराय के समान इनके शिष्य हो गए। तदुपरान्त यह औरङ्गजेब के मन्त्री फाजिलअली खाँ के यहाँ रहे। अर्जुन सिंह के पुत्र राजसिंह गौर एव अमेठी के राजा हिम्मत सिंह वन्धलगोती ने भी इनका समादर किया। हिम्मत सिंह के छोटे भाई छत्र सिंह की भी इन्होंने प्रशसा की है। अन्त मे मुरारिमऊ के राजा देवी सिंह के यहाँ गए, जिन्होने इनके पुत्रो को दौलत-पुर गाँव दे दिया। यहाँ इनके वशज अभी तक है। इसी दौलतपुर के रहनेवाले आचार्य द्विवेदी थे। द्विवेदी जी ने सरस्वी मे सुखदेव मिश्र पर एक अच्छा ले लिखा था, जिसका सदुपयोग विनोद (४३०) मे किया गया है। सुखदेव मिश्र के लिखे हुए निम्नलिखित ग्रन्थ खोज मे उपलब्ध हुए—

(१) अध्यात्म प्रकाश, १६०५।६७, १६०६।२४०सी, १६१७।१८३ए, १६२०।१६७बी, १६२३।४१२ ए, बी,सी,डी,ई, राज० रिपोर्ट ३, पृष्ठ १,। यह ग्रन्थ वेदान्त सम्वन्धी है। गुरु-शिष्य के प्रश्नोत्तर रूप मे लिखा गया है। इसकी रचना स० १७५५ मे हुई।

> सवत सत्रह सै वरस पचपन असुनी प्रानि
> यकादशी बुध को भयो सुक्ल पक्ष शुभ जानि

इसकी रचना दुर्जन सिंह के लिये हुई थी।

> दुर्जन सिंह मुकुन्द के अर्थ लिख्यो यह जानि
> भूल्यो सो छमियो सबै श्रोता बुद्धि निधान

—खोज रिपोर्ट १६०५।६७

इसी ग्रन्थ का एक अन्य नाम (अनुभव प्रकाश[१]) भी है। १९१७ वाली रिपोर्ट मे 'अष्टादशमे उनमठा' दिया गया है जो लिपिकाल है।

(२) फाजिल अली प्रकाश, १९०६।३०७ ए, १९१७।१८३ सी, १९२०।१८७ सी, १९२३। ४१२ एम, एन, ओ, १९२६।४३५ डी, ई। यह साहित्य ग्रन्थ नवाब इनाइत खाँ के पुत्र, औरङ्गजेब के मन्त्री फाजिल अली के नाम पर सवत १७३३ मे बना—

दसमी रवि पूरन भयो फाजिल अली प्रकाश
सवत सत्रह सै जहाँ तैतीस कातिक मास
—खोज रिपोर्ट १९२३।४१२ एम

(३) नखशिख १९०६।३०७ सी। इस ग्रन्थ मे कुल ३२ छन्द हैं।

(४) रसार्णव १९०३।१२४,१९०४।३३,१९२०।१८७ डी, १९२३।४१२ आर। इस ग्रन्थ का नाम मरदान रसार्णव या रस रसार्णव भी है। इसकी रचना सवत १७३६ मे हुई। यह नायिका भेद का अत्यन्त मरम ग्रन्थ है। यह वैसा राजा मरदान सिंह के नाम पर बना।

(५) ज्ञानप्रकाश, १९२३।४१२ पी, क्यू। शिष्य और गुरु के प्रश्नोत्तर रूप मे लिखित रचनाकाल सवत १७५५।

(६) रस रत्नाकर, १९४१।२९४। यह रस ग्रन्थ है।

(७) पिङ्गल छन्द विचार, १९०३।१२३, १९०६।१२८, २८० बी, १९०६।३०७ बी १९१७।१८३ डी, १९२३।४१२ एफ, एच, जे, के, १९२६।४६५ सी, एफ। यह ग्रन्थ अमेठी के राजा हिम्मत सिंह के लिये बना।

(८) पिङ्गल वृत्त विचार १९०६।२४० ए, १९१७।१८३ बी, १९२०।१८७ ई, १९२३। ४१२ जी, आई, एम, टी, १९२६।४६५ जी। यह ग्रन्थ राज सिंह गौड आज्ञा से सवत १७२८ मे बना।

(९) छन्दोनिवास सार १९२३।४१२ एल।

विनोद मे इनके एक और ग्रन्थ शृङ्गार लता का उल्लेख हुआ है। आचार्य द्विवेदी के अनुसार यह सुखदेव मिश्र के किसी वशज की रचना है। शृङ्गार लता नामक एक ग्रन्थ सस्कृत मे भी है। उसके रचयिता भी एक सुखदेव मिश्र हैं। कहा नही जा सकता कि दोनो शृङ्गार लता एव दोनो सुखदेव मिश्र एक हैं अथवा दो।[२]

---

(१) खोज रिपोर्ट, दिल्ली १९३१।८०ए। (२) हिन्दी काव्य-शास्त्र का इतिहास, पृष्ठ ९५

८३५।७०८

(२) सुखदेव मिश्र कवि २, दौलतपुर, जिले रायबरेली वाले, स० १८०३ मे उ०। बैसवारे मे यह महाराज महाकवि हो गये हैं। राव मर्दन सिंह बेस डौडियाखेरे के यहाँ थे और उन्ही के नाम से नायिका भेद का रसार्णव नामक ग्रन्थ बहुत सुन्दर बनाया है। शम्भुनाथ इत्यादि इन्ही के शिष्य थे।

सर्वेक्षण

सरोज मे ८३४, ८३५, ८३६ सख्यक ३ सुखदेव हैं, जो वस्तुत एक ही हैं। इनका विस्तृत विवरण सख्या ८३४ पर देखिये। सरोज मे दिया सवत् १८०३ अशुद्ध है। सुखदेव मिश्र का रचना-काल सवत् १७२८-५५ वि० है। रसार्णव का रचनाकाल सवत् १७३६ है।

८३६।७०७

(३) सुखदेव कवि ३, अन्तरवेद वाले, सवत १७९१ मे उ०। यह कवि महाराजा भगवन्त राय, खीची, असोथर वाले के यहाँ थे। कुछ आश्चर्य नहीं कि यह महाराज सुखदेव मिश्र दौलतपुर वाले ही हो।

सर्वेक्षण

सरोजकार का सन्देह ठीक है। विस्तृत विवरण देखिये सख्या ८३४ पर।

८३७।७२२

(४) शम्भु कवि १, राजा शम्भुनाथ सिंह सुलङ्की, सितारागढ वाले, स० १७३८ मे उ०। यह महाराज कवि-कोविदो के कल्पवृक्ष महाकवि हो गये हैं। शृङ्गार का इनका काव्य निराला है। नायिका भेद का इनका ग्रन्थ सर्वोपरि है। यह महाराज मतिराम त्रिपाठी के बडे मित्र थे।

सर्वेक्षण

नृप शम्भुनाथ और शम्भुराज आदि इनकी छाप है। यह सोलङ्की नहीं, मराठे थे। सरोज मे दिया सवत् १७३८ इनका रचनाकाल है। इनका नखसिख, भारत जीवन प्रेस, काशी, से प्रकाशित हो चुका है। सरोज के प्रारम्भिक सस्करणो मे काव्य को स्त्रीलिङ्ग मानकर उसका निराला विशेषण निराली लगा हुआ है। ग्रियर्सन ने (१४७) इनके एक काव्य का नाम काव्य निराली मान लिया है। अब कोई इसी आधार पर इनके काव्य निराली की खोज करने लगे तो उसकी मौत है।

८३८।७२३

(५) शम्भुनाथ कवि २, वन्दीजन, सवत् १७९८ मे उ० । यह कवि सुखदेव के शिष्य थे। रामविलास नामक रामायण वहुत ही अद्‌भुत ग्रन्थ वनाया हे । रामचन्द्रिका की तरह इस ग्रन्थ मे भी नाना छन्द है ।

सर्वेक्षण

सरोज मे रामविलास रामायण से रचनाकाल सूचक उद्धरण दिया गया है ।

८ ९ ७ १
वसु ग्रह मुनि ससधर वरस, सित फागुन वरमास
सम्भुनाथ कवि ता दिनै, कीन्हो राग विलास १

इस उद्धरण से इस ग्रन्थ का रचनकाल १७९८ सिद्ध होता है । सरोज मे यही सवत् दिया गया है, जो इनका उपस्थितकाल हे । इस ग्रन्थ से इनका सुखदेव का शिष्य होना भी सिद्ध ह ।

श्री गुरु कवि सुखदेव के, चरनन ही को ध्यान
निर्मल कविता करन को, वहे हमारे ज्ञान २

भगवन्तराय खीची के दरवारी कवि श्री शम्भुनाथ मिश्र भी सुखदेव मिश्र के शिष्य थे । अलङ्कार दीपक मे इन्होने सुखदेव का शिष्यत्व स्वीकार किया है। प्रतीत होता हे कि सुखदेव मिश्र के शम्भुनाथ नाम के या तो दो शिष्य थे—एक वन्दी जन, रामविलास के रचयिता और दूसरे मिश्र, अलङ्कार दीपक के रचयिता अथवा एक ही शिष्य था जिसको सरोजकार ने एक वार प्रमाद से वन्दीजन लिख दिया और दूसरी वार मिश्र । रामविलास की कोई प्रति अभी तक खोज मे नही मिली है । मिल जाने पर समस्या सुलझ सकती है । सम्भावना यही है कि सरोजकार ने इस सम्वन्ध मे प्रमाद किया है। शम्भुनाथ मिश्र का विवरण आगे सख्या ८३९ पर है ।

८३९।७२४

(६) शम्भुनाथ मिश्र कवि ३, सवत १८०३ मे उ० । यह कवि महाराज भगवन्तराय खीची के यहां असोथर मे रहा करते थे । शिव कवि इत्यादि सैकडो मनुष्यो को इन्होने कवि कर दिया । कविता मे ये महानिपुण थे । रसकल्लोल, रस तरङ्गिणी, अलङ्कार दीपक, ये तीन ग्रन्थ इनके वनाये हुए है ।

सर्वेक्षण

शम्भुनाथ मिश्र के निम्नलिखित चार ग्रन्थ खोज मे मिले हैं —

(१) रस कल्लोल, १९१२।१६५, १९२०।१७२ ए। यह नायिका भेद का ग्रन्थ है। इसमे भगवन्तराय खीची का यश भी वर्णित है। १९१२ वाली प्रति मे और लोगो के भी छन्द जुडे हुए हैं।

(२) भगवन्तराय यश वर्णन, १९२०।१७२ बी। इस ग्रन्थ के अन्तिम छन्द मे वैसवाडे के किसी रनजीत सिंह का भी यश वर्णित है।

सदा रनजीत यह बाबू रनजीत सिंह
दीप जम्मू दीप को, महीप वैसवारे को

(३) अलङ्कार दीपक, १९०४।२७, १९०६।२३३, १९१७।१६७। इस ग्रन्थ के निम्नलिखित दोहे से इनका सुखदेव मिश्र का शिष्य होना सिद्ध है।

श्री गुरु कवि सुखदेव के चरनन को परभाउ
बरनन को हिय देत धरि बरनन को समुदाउ

निम्नाङ्कित दोहे मे कवि, विषय, छन्द और ग्रन्थ के नाम आये हैं।

बरनि सँजोग सिंगार मे राधा राधानाथ
अलङ्कार दीपक करत दोहन शम्भू नाथ ३

यह अलङ्कार ग्रन्थ है, दोहो मे लिखा गया है। शम्भुनाथ इसके कर्त्ता हैं। राधा और राधानाथ का सम्भोग शृङ्गार इसमे वर्णित है। इसमें ४३६ दोहे हैं। प्राचीनतम प्राप्त प्रति सवत् १८५९ की है। इस ग्रन्थ का गुरु वर्णन वाला दोहा २३८ सख्यक शम्भुनाथ वन्दीजन के राम-विलास रामायण मे वर्णित गुरु वर्णन वाले दोहे के पूर्ण मेल मे है, जो इन दोनो कवियो की एकता की ओर सङ्केत करता है।

(४) अलङ्कार दीपिका, १९०६।११६। इस ग्रन्थ की रचना सवत १८०७ मे हुई। इस ग्रन्थ से सरोज मे पाँच कवित्त उद्धृत हैं, जिनमे प्रथम दो मे भगवन्तराय की प्रशस्ति है। अलङ्कार दीपक मे सभी दोहे हैं। अत यह उससे भिन्न ग्रन्थ प्रतीत होता है। सरोज मे दिया हुआ सवत १८०३ कवि का उपस्थितिकाल एव रचनाकाल ही है।

८४०।७३५

(७) शम्भुनाथ कवि ४, त्रिपाठी, डोडियाखेरे वाले, सवत १८०९ मे उ०। यह महाराज राजा अचल सिंह बैस, डौडियाखेरे के यहाँ थे। राव रघुनाथ सिंह के नाम से वैतालपचीसी को

सस्कृत से भाषा किया है। मुहूर्त चिन्तामणि जोतिप का ग्रन्थ भी भाषा के नाना छन्दो मे वनाया है। ये दोनो ग्रन्थ सुन्दर ह।

सर्वेक्षण

शम्भुनाथ त्रिपाठी के निम्नाङ्कित ग्रन्थ खोज मे मिले है —

(१) मुहूर्त चिन्तामणि, १९०६।२३४ ए, १९२०।१७३, १९२३।३७१ बी, सी, दी, १९२६। ४२१ सी, दी, ई- १९४७।२७७ घ, ङ। इस ग्रन्थ के अन्य नाम मुहूर्त मञ्जरी और मुहूर्त कल्पद्रुम भी है। इसकी रचना सवत १८०३ मे हुई। ज्योतिप का यह ग्रन्थ छन्दोबद्ध है। यह सस्कृत से अनूदित है। इसकी रचना डौडियाखेरा के राजा मदन सिंह के पुत्र अचल सिंह के लिये हुई।

> सभा मध्य वेठे हुते एक समय अचलेस
> तिन कवि शम्भु नाथ को कीन्हो यहे निदेस
> जैसे जातक चन्द्रिका करि दीन्ही करि नेह
> त्यो मुहूर्त चिन्ता मन्यो भाषा मे करि देहु

पुष्पिका से इनका त्रिपाठी होना स्पष्ट है।

"इति श्रीमन्महाराज कुमार श्री अचल सिंह आज्ञा त्रिपाठी शम्भुनाथ कृत निर्मितायाम मुहूर्त मञ्ज्य्र्या। गृह प्रवेश प्रकरणे इति मुहूर्त मञ्ज्य्र्या समाप्त सुभमस्तु।"

(२) जातकचन्द्रिका, १९०६।२३४ सी, १९२६।४२१ वी, १९४७।३७७ ग। राजा अचल सिंह की आज्ञा से यह ज्योतिष ग्रन्थ लिखा गया। इसका उल्लेख ऊपर मुहूर्त चिन्तामणि मे हुआ है। अत. यह सवत १८०३ से पहले की रचना है।

(३) वैताल-पचीसी, १९०६।२३४ बी, १९२३।३७१ ई, एफ, १९२६।४२१ ग, १९४४। ४०८। यह ग्रन्थ वगसर जिला उन्नाव के राजा राय रघुनाथ सिंह की आज्ञा से वना—

> (क) सभा मध्य वैठे हुते एक समय रघुनाथ
> वीर धीर उद्भट सुभट सुजन वन्धु जन साथ
> कह्यो कृपा करि शभु सौं जी मे मानि सनेहु
> यह वैताल कथा हमे भाषा में करि देहु

(ख) "इति श्री श्री भद्राय रघुनाथ सिंहाज्ञया त्रिपाठी शम्भूनाथ कृतो वैताल पञ्चविंसति कथा सु पञ्चविंसति तमीष्टम।"

इस ग्रन्थ की रचना स० १८०९ मे हुई।

> नंद[९] व्योम[०] धृति[१८] जानि के सवतसर कवि शभु
> माघ अध्यारी द्वैज को कीन्हो ग्रन्थारम्भु

—खोज रिपोर्ट १९२६।४२१ ए

यही दोहास रोज मे भी उद्धृत है और सरोज मे दिया हुआ सम्वत् १८०६ इसी का रचनाकाल है।

(४) प्रेम सुमन माला, १६०६।३७४। इस ग्रन्थ मे प्रेम सम्बन्धी १०६ दोहे है। इसमे उर्दू शब्द भी व्यवहृत हुए हैं, जैसे जाहिर, माशूक, माफ, इशारा, तूल, अरजी, मरजी, फजूल आदि।

प्यारे जी सर्वज्ञ हो, तुम्हे इशारा तूल
सुनि अरजी मरजी करौ, लिखना अधिक फजूल १०६

(५) कवित्त, १६२४। ३७१ ए। यह तीन पन्ने का ग्रन्थ है। इसमे कुल १५ कवित्त हैं। आठ हास्य रस के, दो करुण रस के, एक वीर रस का, दो होली के और दो विरहिणी के। कवित्त नाम से एक ग्रन्थ १६४७।३७७ क पर भी वर्णित है।

(६) कृष्णविलास या भागवत, दशम स्कन्ध, १६४७।३७७ ख। यह ग्रन्थ भी रघुनाथ सिंह की आज्ञा से बना।

सभा मध्य बैठे हुते एक समै रघुनाथ
मत्री मित्र, पण्डित सुभट बन्धु, वृन्द ले साथ २
तहं कवि शभूनाथ को लीन्हो निकट बुलाय
सादर नजरि सु करि हिये परम प्रेम उमगाय ४
दुरित हटै जाके पढे कटै विकट भव बन्ध
कह्यो हमे करि दीजिये भाषा दसमस्कन्ध ५

ग्रन्थ मे रचनाकाल सूचक यह दोहा दिया हुआ है, पर रचनाकाल स्पष्ट नही होता।

साकौ वीति गयो तहाँ रस पर्वत और भूप
सगुन उज्यारी पञ्चमी भादो मास अनूप ७

इस ग्रन्थ का नाम कृष्णविलास रखने का कारण कवि ने इस दोहे मे लिखा है —

कान्ह कुवर व्रज वधुन को वरन्यो यामे रास
नाम धर्‌यो यहि ग्रन्थ को याते कृष्ण विलास ८

खोज के अनुसार शम्भूनाथ त्रिपाठी, टेढा, जिला उन्नाव के रहने वाले थे। सरोज मे वैताल पचीसी और मुहूर्त मञ्जरी से उद्धरण दिये गये है।

८४१।७२६

(८) शम्भूनाथ मिश्र ५, सातन पुरवा, वैसवारे वाले, सम्वत् १९०१ मे उ० । यह कवि राजा यदुनाथ सिंह, वैस, खजुर गाँव के यहाँ थे । थोडे ही अवस्था मे अल्पायु हो गये । वैस वशावली और शिवपुराण का चतुर्थ खण्ड भाषा बनाया है ।

सर्वेक्षण

शम्भुनाथ मिश्र का वैस वशावली ग्रन्थ खोज मे मिल चुका है ।[1] सरोज मे इस ग्रन्थ से उद्धरण दिया गया है । विनोद (१८०८) के अनुसार यह कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे और इन्होने खजुर गाँव के राना यदुनाथ सिंह की आज्ञा से सवत् १९०१ मे शिवपुराण, चतुर्थ खण्ड, का अनुवाद भाषा के नाना छन्दो मे किया । स्पष्ट है कि सरोज मे दिया सवत् १९०१ कवि का रचनाकाल और उपस्थितकाल है । यह जन्मकाल नही है जैसा कि ग्रियर्सन (६२१) मे स्वीकार किया गया है ।

८४२।७२८

(९) शम्भुप्रसाद कवि । इनके शृङ्गार के सुन्दर कवित्त है ।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्वन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही ।

८४३।७१२

(१०) शिव कवि १, अरसेला, वन्दीजन, देउतहा, जिले गोडा के निवासी, सवत् १७९९ मे उ० । यह कवि असोथर में शम्भु कवि से काव्य पढकर भैया जगत सिंह विसेन, अपनी जन्मभूमि के अधिपति के पास रहे और उनको भी कविता मे ऐसा प्रवीण किया कि जगत सिंह का पिङ्गल विख्यात है । निदान शिव कवि ने रसिक विलास नामक एक ग्रन्थ भाषा साहित्य का ऐसा अपूर्व वनाया है, जो अवश्य दर्शनीय है । अलङ्कार भूषण और पिङ्गल—ये दो ग्रन्थ और भी इनके वनाये हुए हैं । इनके वश मे अव राम कवि विद्यमान हैं ।

सर्वेक्षण

शिव सिंह ने शिव कवि के तीन ग्रन्थो—रसिकविलास, अलङ्कार भूषण एव पिङ्गल का उल्लेख किया है । इनमे से अन्तिम खोज मे मिला है । इसका नाम है पिङ्गलछन्दोवोध । ग्रन्थ इन्ही शिव कवि का है । इसका प्रमाण यह है कि एक छन्द मे कवि ने अपने गुरु शम्भु का स्मरण किया है ।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९२३।३७१जी

सकल सिद्धि आवे निकट, ध्यावत श्री गुरु शभु
नयो नयो उनयो परै, हिय जुक्ति आरम्भु

—खोज रिपोर्ट १९२३।३९१

यह ग्रन्थ सम्भवत जुल्फकार अली के लिए लिखा गया है। इसमे जुल्फकार की प्रशस्ति है—

थकित पौन रहि जात, सिंधु नहि लहरि सँभारत
फनि पति फन नहि कढत, कूर्म नहि वक्क निकारत
षट्पद भ्रमर भ्रम्यो विमल, नरपति नहि सारद
सविता रथ रहि जात, वेग भ्रमि रतन भारथ
दलमलित वरनि आतङ्क मय, जस उदित टौद्यतुत
जब जुलुफकेर करिके सँभार हय सर कटार दुल-दुल चढत

इनकी सहायता के लिए वडे-वडे पीरो का भी आवाहन किया गया है—

मोमदीन अजमेर पीर गढ ससारै
उपमा कहि कै कौन मकनपुर साह मदारे
वहिरायच सालार या रवी वढो खुदाई
दिल्ली तोखे कुतुम तास की करौ वडाई
सुमिरे हसन हुसेन जिन कुपुर मारि कीन्ही ध्वजा
मन वचस कर्म स्यहि कहै पम्वै पीर मदति सदा

जुलफकार खाँ सवत १८५९ मे अपने पिता अली वहादुर की मृत्यु के वाद वादा का नवाव हुआ था। नवावी तो इसने वहुत थोडे दिनो की, क्योकि इसका वडा भाई शीघ्र आकर नवाव हुआ, पर यह नवाव कहलाता रहा। सवत १८६१ मे अग्रेजो ने राज्य जव्त कर लिया। जुल्फकार ने सवन १९०३ मे विहारी सतसई पर कुण्डलियाँ लगाई।[१]

शिव कवि सरोज के अनुसार देउतहा के राजा जगतसिंह के काव्य गुरु थे। इन्ही से पढने के वाद उन्होने अपना प्रसिद्ध पिङ्गल 'भारती कण्ठाभरण' सवत १८६४ मे रचा था। इनका रचना-काल सम्वत १८२०-७७ है।[२] शिव कवि के गुरु शम्भुनाथ मिश्र का रचनाकाल सवत १८०३ है। यह भगवन्तराय खीची के यहाँ रहा करते थे।[३]

जुल्फिकार अली, जगत सिह एव शम्भुनाथ मिश्र के समय पर ध्यान देने से स्पप्ट हो जाता

(१) खोज रिपोर्ट १९२३।३७१ जी कवि स० ३०५, (२) वही, स० २५५ (३) वही, स० ८३९।

है कि सरोज मे दिया हुआ शिव कवि का सवत १७६६ रचनाकाल या उपस्थितिकाल नही हो सकना। यह इनका जन्मकाल हो सकता है। इनका रचनाकाल १८२० से १८६० तक होना चाहिय। सरोज मे इनके तीनो ग्रथो से उद्धरण दिये गये है।

८४४।७१३

(११) शिव कवि २, बन्दीजन, बिलग्रामी, सम्वत् १७६५ मे उ०। इन्होने शृङ्गार का रस-निधि नामक एक बहुत विचित्र ग्रन्थ बनाया है।

सर्वेक्षण

सरोज मे इनके रसनिधि नामक ग्रन्थ से उद्धरण दिया गया है। इनके सम्बन्ध मे कोई प्रामाणिक सूचना सुलभ नही।

८४५।७१४

(१२) शिव प्रसाद 'सितारेहिन्द' बनारसी, विद्यमान हैं। यह राजा साहब अरबी, फारसी, सस्कृत, अँगरेजी इत्यादि बहुत जबानो से वाकिफ है। वार्तिक मे भूगोल हस्तामलक, इतिहास तिमिरनाशक इत्यादि इनके बनाये ग्रन्थ अपूर्व व अद्वितीय हैं। हमको इसमे सन्देह नही कि आज दिन हिन्दुओ मे इन बाबू साहब के समान और मुसममानो मे सेयद अहमद के सदृश तारीख इत्यादि की विद्या मे दूसरा मनुष्य भारत मे नही हे। इनकी कविता छन्दोबद्ध न मिलने से हमको बडा अफसोस हे। भूगोल मे एक कवित्त मिला, सो निपट निरजन कवि का है।

सर्वेक्षण

ग्रियर्सन (६६६) मे राजा शिवप्रसाद 'मितारेहिन्द' का विवरण अत्यन्त विस्तार से दिया गया है। इनके १८ हिन्दी और १४ उर्दू ग्रन्थो का विवरण दिया गया है। राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिन्द' का जन्म १८८० मे काशी मे एक सम्पन्न परिवार मे हुआ था। यह बाबू गोपीचन्द के पुत्र एव राय डालचन्द तथा बीबी रत्न कुँवरि के पौत्र थे। यह भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द के विद्या गुरु थे। सस्कृत, हिन्दी अरबी, फारमी, अगरेजी और बँगला के अच्छे ज्ञाता थे। इन्होने १६०२ के सिक्ख युद्ध मे अँग्रेजो की अच्छी सहायता की थी। साहित्य से विशेप रुचि होने के कारण सरकार ने इन्हे स्कूलो का इन्स्पेक्टर नियुक्त कर दिया था। पाठशालाओ मे इन्होने हिन्दी की सुरक्षा की, पर राजनैतिक परिस्थितियो ने विवश कर इन्हे हिन्दुस्तानी का हिमायती बना दिया, जो वस्तुत देवनागरी लिपि मे उर्दू ही थी। इसीलिए भारतेन्दु की इनसे पटी नही। स० १६४४ मे इन्हे राजा की उपाधि प्राप्त हुई। स० १६५२ मे काशी मे ही इनका देहावसान हुआ। इन्होने अधिकाश मे पाठ्य पुस्तके लिखी। इनके लिखे हिन्दी ग्रन्थों की सूची यह है—

(१) वर्णमाला, (२) वाल-वोध, (३) विद्याकुर, (४) वामा मनरञ्जन, (५) हिन्दी व्याकरण, (६) भूगोल हस्तामलक, (७) छोटा भूगोल हस्तामलक, (८) इतिहास तिमिरनाशक, (९) गुटका (१०) मानव-धर्म सार, (११) सेण्डफर्ड और मर्टन की कहानी, (१२) सिक्खो का उदय अस्त, (१३) स्वय वोध उर्दू, (१४) अंग्रेजी अक्षरो के सीखने के उपाय, (१५) वच्चो का इनाम, (१६) राजा भोज का सपना, (१७) वीर राजा का वृत्तान्त। राजा साहव कवि नही थे, गद्य लेखक थे।

———

८४६।७१५

(१३) शिवनाथ कवि, वुन्देलखण्डी, स० १७६० मे उ०। यह कवीश्वर राजा जगत सिंह वुन्देला, छत्रसाल के पुत्र, के पास पन्ना मे थे और इन्होने रसरञ्जन नामक काव्य-ग्रन्थ वहुत सुन्दर रचा है।

सर्वेक्षण

छत्रसाल के पुत्र जगत सिंह वुन्देला का राज्यकाल स० १७८८-१८१५ है। इसी वीच शिवनाथ इनके दरबार मे रहे होगे। सरोज मे दिया समय स० १७६० कवि का प्रारम्भिक रचना-काल प्रतीत होता है। यह जन्मकाल नही हो सकता। सरोज मे रसरञ्जन से उद्धरण है। नायिका भेद का यह ग्रन्थ अभी तक नही मिला ह। सरोज मे उद्धृत एक कवित्त मे जगतेश की प्रशस्ति है।

अरिन पै करि कोप, काटत झिलिम टोप,
सुजस को कोस देति घोप जगतेस को

———

८४७।७१६

(१४) शिवराम कवि, स० १७८८ मे उ०। इनकी प्रशसा सूदन ने की है। इनके शृङ्गार के अच्छे कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

शिवराम सूदन के समकालीन और सूदन के ही आश्रयदाता भरतपुर नरेश महाराज सूरजमल (शासनकाल स० १८१२-२०) के आश्रित थे। नवधा भक्ति नामक इनके एक लघु ग्रन्थ पर महाराज सूरजमल ने इन्हे ३६ हजार रुपए दिए थे, जैसा कि इस दोहे से प्रकट है।[1]

---

(१) माधुरी, फरवरी १९२७, भरतपुर और हिन्दी शीर्षक लेख, पृष्ठ ८०

जबै ग्रन्थ पूरन भयो, तबै करी बकसीस
खरै रुपैया मान सो, दस सहस छतीस

सरोज मे दिया शिवराम जी का समय स० १७८८ ठीक है । यह कवि का प्रारम्भिक रचनाकाल है । शिवराम का एक ग्रन्थ प्रेमपचीसी खोज मे मिला है ।[१] इसमे उद्धव-गोपी सवाद के २५कवित्त हैं । इस ग्रन्थ की रचना महाराज सूरजमल के छोटे भाई प्रतापसिंह के लिए हुई । रिपोर्ट मे इन्हे भरतपुर नरेश सवाई प्रताप सिंह कहा गया है, जो ठीक नही । भरतपुर मे इस नाम का कोई राजा नही हुआ । रिपोर्ट मे रचनाकाल स० १८४७ दिया गया है । यह भी ठीक नही । कवि का रचनाकाल स० १७८८ से १८२० तक माना जाना चाहिए । इस ग्रन्थ का अन्तिम कवित्त परिचयात्मक है ।

कान्ह गोपी ऊधव को यामे है जुवाब स्वाल,
रसन सो पूरी उक्ति, जुक्ति सो सची सी है
अलङ्कार नाइकान वारे भाव भक्ति दृढ
विरहावलम्ब हाव भावन रची सी है
विङ्ग धुनि लच्छना औ विञ्जना अनेक भरी
कहाँ लौं गनाइयतु गनन गवी सी है
साहसी प्रताप को हुकुम पाइ आछी लीक
कीना शिवराम साची प्रेम की पचीसी है

सरोज मे दिया स० १७८८ कवि का प्रारम्भिक रचनाकाल है, जन्मकाल नही, जैसा कि ग्रियर्सन (४१६) मे स्वीकार किया गया है । यदि इसे जन्मकाल माना जायगा, तो सुजान-चरित्र की रचना के समय स० १८१० मे इनकी वय केवल २२ वर्ष के लडके की होगी, जो प्रगण्य वय नही ।

८४८।७१७

(१५) शिवदास कवि । इनकी कविता चोखी है ।

सर्वेक्षण

शिवदास जी जयपुर के रहनेवाले थे । यह उस कवि समाज मे सम्मिलित हुए थे, जिसका मयोजन सूरति मिश्र ने आगरे मे किया था । सम्भवत सूरति मिश्र इनके काव्य गुरु थे । रस सरस

---

(१) खोज रिपोर्ट १९१७।१७६ ।

या सरस रस ग्रन्थ सूरति मिश्र का कहा जाता है और इनका भी। इसकी रचना स० १७९४ मे हुई थी।

सत्रह सै चौरानवे, सवत सुभ वैसाख
भयो ग्रन्थ पूरन सु यह, छठ समि पुष सित पाख

पूरा ग्रन्थ पढने पर ही यह निर्णय दिया जा सकता है कि यह ग्रन्थ सूरति मिश्र का है या शिवदास का। खोज रिपोर्टो मे दिए थोडे से उद्धरणो के पारायण से नही।[1] ग्रियर्सन (७५८) मे शिवदास को शिव-चौपाई और लोक-उक्ति-रस-जुक्ति नामक दो ग्रन्थो का रचयिता कहा गया है। विनोद (८३७) मे इनके एक अन्य ग्रन्थ 'अलङ्कार दोहा' का भी उल्लेख है। इन्हे विहारी सतसई पर कवित्तवध टीका रचनेवाले कृष्ण कवि[2] का मित्र एव उनके आश्रयदाता जयपुर नरेश के मन्त्री राजा आयामल्ल का छोटा भाई कहा गया है। इन्ही शिवदास की लोक-उक्ति-रस-जुक्ति या लोकोक्ति रस कौमुदी के कुछ छन्द सरोज मे परवीने या पखाने कवि के नाम से उद्धृत हे। इस ग्रन्थ की रचना स० १८०९ मे हुई थी।[3] खोज रिपोर्ट मे उल्लिखित 'देवी चरित्र'[4] भी सम्भवत इन्ही की रचना है।

८४९।७१८

(१६) शिवदत्त कवि। ऐजन। इनकी कविता चोखी है।

सर्वेक्षण

शिवदत्त त्रिपाठी ब्राह्मण थे। यह वनवध (प्रयाग जिले का पश्चिमी भाग जिसमे मिंगरौर आदि है,) के राजा जत्ररेस सिंह के आश्रय मे थे। 'दशकुमार चरित्र' नामक इनका ग्रन्थ खोज मे मिला है।[5] इसमे कवि ने अपने आश्रयदाता का पूर्ण विवरण दिया है।

धरनी चक्र समस्त में, वनवध देश अनूप
नीति रीति जुत भीति विनु, विविध वसं तहँ भूप २

---

(१) खोज रिपोर्ट १९१७।११६, कवि सख्या ९३१ (२) वही कवि सख्या ८१ (३) हरिऔध, प्रथम अङ्क में मेरा लेख, शिव सिंह सरोज के परवीने कवि (४) खोज रिपोर्ट १९४४।४१५ (५) वही, १९४४।४१४

वनवध हू में अति सुगम, सोभित वेलखर देस
वसत लोक बिनु सोक तहँ, धन ते तुलति धनेस ३
ता पति सुर पति के सरिस, अदभुत वीर चरित्र
मित्रजीत भूपति भए, निज कुल सरसिज मित्र ४
जगत प्रशसा होत जेहि, वस विदित चौहान
वछगोती विख्यात महि, उदभट उदित कृपान ५
धीर सिंह ताके तनै, भए प्रवत रन धीर
को नर सके सराहि तेहि, जैसी मति गम्भीर ६
नीति रीति वस करि सवे, उदयत धीर नरेस
पटीपुर नृपपुर कियो, मध्य सकल निस देस १०
धीर सिंह के सुत भए, समर सिंह छितिपाल
नृप गुण रचि विरचि वहु, लिखे भाग्य जेहि भाल
श्री समरेस नरेस के दो सुत भे अभिराम
अमर सिंह जवरेस यों धरे जयारथ नाम १७
सो जवरेस महीपमनि मङ्गलमय सब काल
राजत राज समाज मे भूरि भाग्य भरि माल
बार-बार शिवदत्त द्विज इमि करि वुद्धि विचार
तेहि विनोद कारन रच्यो भाषा दसो कुमार

जवरेस सिंह के अग्रज का नाम अमर सिंह, पिता का समर सिंह, पितामह का धीर सिंह और प्रपितामह का मित्रजीत सिंह था। कवि के समय के सम्वन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही।

८५०।७१९

(१७) शिवलाल दुवे, डोडियाखेरे वाले, स० १८३९ मे उ०। यह वडे कवि हो गए है। यद्यपि हमको इनका कोई पूरा ग्रन्थ नही मिला, तथापि हमारा पुस्तकालय इनके काव्य से भरा पड़ा है। इनका नखशिख, पटऋतु, नीति सम्वन्धी कवित्त और हास्य रस देखने योग्य है।

सर्वेक्षण

शिवलाल दुवे के सम्वन्ध मे अभी तक कोई सामग्री खोज के द्वारा नही सुलभ हो सकी है।

किसी शिवलाल का एक ग्रन्थ कर्म विपाक,[1] एक अन्य शिवलाल का 'भक्त विरुदावली'[2] नामक ग्रन्थ खोज मे मिला है। इनका प्रतिलिपिकाल क्रमश स० १६१० और १६२३ है। खोज मे एक और शिवलाल पाठक मिले है, जिनके ग्रन्थ निम्नलिखित है —

(१) अभिप्राय दीपक, १६०४।११२, १६२६।४४६। यह रामायण की टीका है। कवि पाठक है।

पाठक श्री शिवलाल उर लसत उपाएन हार

(२) मानसमयङ्क, १६०४।११३। इसकी रचना स० १८७५ मे हुई—

५ ७ ८ १
सायक मुनि वसु नाथ गण दत वार गुरु जनि
पाठक श्री शिवलाल जू रचे चन्द कर खानि

८५१।७२०

(१८) शिवराज कवि। ये सामान्य कवि है।

सर्वेक्षण

शिवराज महापात्र थे। यह महापात्र कविराज के पुत्र सदानन्द और पौत्र सुखलाल के वशज थे। यह स० १८६६ के लगभग वर्तमान थे। इनके दो ग्रन्थ खोज मे मिले हैं।

(१) रस सागर १६४७।३८६ ख। यह नायिका भेद का ग्रन्थ है। इसकी रचना स० १७६६ मे हुई थी।

सवत् अठारह से सुखद,छासठि अति सुख पाइ
ज्येष्ठ सुदी रवि सप्तमी, ...

ग्रन्थ मे कवि ने निज वश परिचय दिया है।

महापात्र के वश में प्रगट महा कविराज
जाहिर जम्ब्व दीप में वर विद्या सुख साज १
ताके सुत भे जगत में सदानन्द मतिधीर
कालिदास महीप पर गुन सागर गम्भीर २
ताके भे सुखलाल छिति धीर धर्म के साज
क्रिया नेम आचार को राजत ज्यो रिषिराज ३

---

(१) खोज रिपोर्ट १६३२।२०३ (२) वही, १६०५।६२ ए, बी

ता कुल में भो मन्द मति महापात्र शिवराज
करत ग्रन्थ प्रारम्भ है भाषा जो रसराज ४

केशव के समान शिवराज भी गर्वोक्ति करते हैं।

भाषा जाके वस भो कवहु न वोलत कोइ
ता कुल में शिवराज अव भाषा कवि भो सोइ ७

इस ग्रन्थ मे श्री मुनि भट्ट मयूर की प्रशस्ति है। यह सम्भवत इनके गुरु थे।

श्री मुनि भट्ट मयूर भे सूरज कला प्रताप
जाके ध्याए जगत मे कटत कोटि सन्ताप
गडक तट तेहि निकट मे कीन्हो तप वहु भाँति
सूरज कर तेहि गहि कियो सूरज सम तन कन्ति ४

चौथे दोहे के प्रथम चरण का एक पाठ यह भी है—

'नगर मझौली मध्य मे'

शिवराज रामपुरा के राजा वेरीसाल के आश्रित थे—

राय श्री वेरीसाल नृप, रामपुरा नरनाह
ताको जग वर वस कहि, करत ग्रन्थ छिति माह ५

इसके आगे कवि ने वैरीसाल के वश का अत्यन्त विस्तृत वर्णन किया है। इस वर्णन के अनुसार वैरीसाल मझौली के राजाओ के वशज थे। इनके पिता युवराज महावीर ने अपने भाई महाराज से झगडकर मझौली छोड दिया। फिर इन महावीर ने प्रयाग के पश्चिम सिगरौर और मानिकपुर के क्षेत्र कोजीतकर गङ्गा तट पर रामपुरा राज्य की स्थापना की। इनकी राजधानी डेरवा थी, यह दिल्ली नरेश के भी पास गये। यहाँ इन्हे मनसरदारी मिली और मुलतान की लडाई परजाना पडा। वहाँ से विजय कर लौटे, तो वादशाह से राजराया की उपाधि पाई। तव से रामपुरा के राजा राय कहलाने लगे।

(२) कृष्णविलास, १६२३।३६६, १६४७।३८६क। यह नायिका भेद एव रस का ग्रन्थ है। प्रथम प्रति के प्रथम ८ पन्ने नही है। ग्रन्थ मे कवि नाम आया है।

वर्नों नहीं जहँ वर्नने, लक्षण लक्ष्य विचारि
कहत जो कवि शिवराज हैं लीजो सुकवि सुधारि

यह ग्रन्थ भानुदत्त की रस मञ्जरी एव चन्द्रालोक के आधार पर लिखा गया है—

भानुदत्त मत वूझि के, चन्द्रालोक विचारि
वरणो कृष्णविलास है, यथा वुद्धि अनुसारि ७३७

पुष्पिका मे ग्रन्थकर्ता का नाम शिवराज महापात्र दिया गया है। रचनाकाल सूचक दोहा अधूरा है—

'सवत अठारह सै सुखद, वा '

रस सागर की रचना स० १८६६ मे हुई। हो सकता है इसकी रचना १८६२ मे हुई रही हो। वा से बाइस, बावन, बासठ, बानवे आदि अङ्क बनते हैं। पर यहाँ बासठ ही अधिक उपयुक्त प्रतीत हो रहा है।

८५२।७२१

(१९) शिवदीन कवि। ऐजन। ये सामान्य कवि हैं।

सर्वेक्षण

विनोद (१७२२) के अनुसार यह गौरिहार के रहनेवाले कायस्थ थे। इनके सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही।

८५३।७१०

(२०) शिवसिंह प्राचीन १, स० १७८८ मे उ०। ऐजन। ये सामान्य कवि हैं।

सर्वेक्षण

शिवसिंह सेंगर के अतिरिक्त शिव सिंह नाम के एक और व्यक्ति खोज मे मिले हैं। यह भिनगा के राजा थे। इनके पिता का नाम सर्वदमन सिंह और पितामह का वरिवण्ड सिंह था। इनका रचनाकाल स० १८५०-७५ के आस-पास है। सरोज मे दिया सवत १७८८ इनका जन्मकाल भी नही हो सकता है। इनका जन्मकाल स०१८२५ के आस-पास होना चाहिए।

शिव सिंह जी के बनाए हुए निम्नलिखित ग्रन्थ खोज मे उपलब्ध हुए हैं। इनमे से प्रथम चार तो पिङ्गल ग्रन्थ हैं।

(१) भक्तिप्रकाश, १९२३।३९७ सी। रिपोर्ट के अनुसार इसका रचनाकाल सं० १८५२ है, रचनाकाल सूचक छन्द नही उद्धृत है।

(२) भाषावृत्त मञ्जरी, १९२३।३९७ डी।

(३) भाषावृत्त रत्नावली, १९२३।३९६ ई। यह संस्कृत से अनूदित ग्रन्थ है।

सुभग वृत्त रत्नावली छन्द शास्त्र सुर वानि
सो ताको भाषा कियो गिरिजा पद नुति ठानि

(४) श्रुतिबोध भाषा १९२३।३९७ एच। यह भी सस्कृत से अनूदित है।

(५) काव्य दुषण प्रकाश १९२३।३९ एफ। इस ग्रन्थ मे तीन अध्याय है। पहले अध्याय मे काव्य-दोष, दूसरे मे चित्र-काव्य और तीसरे मे प्रहेलिका है। इस ग्रन्थ मे कवि ने रचनाकाल अवश्य दिया है, पर वह बहुत स्पष्ट नही है—

वारिज जात खडानन आनन अंक
सिद्धि सदन गज मुख लखि अवदन सक २
शुक्रवार अष्टमि तिथि सित वैसाष
प्रगट कर्यो यह ग्रन्थै करि अभिलाष ३

वारिजजात या ब्रह्मा के चार मुख हैं और षडानन के छह इस बरवै मे यही दो अक दिखाई पड रहे हैं हैं। सीधा पढने पर इनसे ४६ और उलटा पढने पर ६४ बनता है। १८०० इसमे दिया नही गया है। इस ग्रन्थ की रचना या तो स० १८४६ मे हुई या फिर स० १८६४ मे।

कवि ने किसी ग्रन्थ मे अपना नाम नही दिया है। केवल भक्तिप्रकाश के अन्त मे एक कवित्त मे उनसे अपना नाम दिया है। इस ग्रन्थ मे उसने अपना नाम घुमा फिरा कर दिया है।

नाम प्रगट करि बरनै कवि निज सर्व
हां कैसे करि भाषौं मत्ति अति खर्व ८
ताते प्रगट न भाखत, राखि बिगोइ
जू कवि सुमति लखि जानै, और न कोइ ९
कौन वरने मङ्गल जग, करि रिपु कौन
सौ वरने वा ग्रन्थ, लखि कवि तौन १०

प्रश्न—कौन करन मगल जग ?

उत्तर—शिव।

प्रश्न—करि रिपु कौन ?

उत्तर—सिह।

इन दोनो प्रश्नो के उत्तर मे कवि-नाम शिव सिह छिपा हुआ है।

(६) रामचन्द्र चरित्र, १९३३।३९७ जी। रिपोर्ट के अनुसार इस ग्रन्थ की रचना स० १८५७ मे हुई। रचनाकाल सूचक दोहा बहुत स्पष्ट नही है।

वेद ससी जमकुसन तिथि, सप्तमि सित गुरुवार
मास भादि दे बीच लखि, सम्पूरन सु बिचार

कवि ने प्रच्छन्न रूप से इस ग्रन्थ मे भी अपना नाम दिया है ।

मुक्ति करन कल्यानप्रद, अर्द्ध दिवदल रिपु व्याल
ये पूरन मिलि नाम जिहि, किये ग्रन्थ हित बाल

'मुक्ति करन कल्यानप्रद' का अभीष्ट 'शिव' और 'रिपु व्याल' का अभीष्ट 'सिह' है । इनके सयोग से कवि का नाम शिव सिह सिद्ध होता है ।

ये छहो ग्रन्थ भिनगा राज्य पुस्तकालय मे एक ही जिल्द मे है । अमरकोष की तीन प्रतियाँ खोज मे उपलब्ध हुई हैं । दो[1] इन शिव सिह की कही गई हैं । एक पर इनके दरबारी कवि शिवप्रसाद का नाम चढा हुआ है ।[2] इस ग्रन्थ की रचना स० १८७४ मे हुई । एक प्रति मे रचना-कालसूचक दोहे के आगे यह छन्द है—

ता दिन ग्रन्थ अरम्भ किय, शिव प्रसाद कायस्थ
अज्ञा श्री शिव सिह के, रच्यो ग्रन्थ परसस्थ

अन्य प्रतियो मे इसका पाठ यह है—

ता दिन ग्रन्थ अरम्भ किय, श्री शिवसिह सुजान
अमर कोष भाषा कियो, दोहा को परनाम

इस ग्रन्थ मे शिव सिह के वश का पूरा विवरण दिया गया है । जो कवि अपना नाम स्पष्ट रूप मे देने मे सकुचाता है और हिचकता है, वह अपना विस्तृत वश वर्णन कैसे करेगा, यह असमञ्जस की बात हे । अत यह कृति शिवप्रसाद कायस्थ की है, न कि शिव सिह बिसेन की । इस ग्रन्थ की पुष्पिका से कवि के वश, पिता और पितामह का नाम ज्ञात होता है—

"इति श्री महाराजकुमार विनेशेनवशावतस वरिवण्ड सिहात्मज सर्वदमनसिह तनूज शिवसिह कृते भाषाया तृतीय खण्ड ।। इति।।"—खोज रिपोर्ट १९२३।३९७ ए ।

इनके पुत्रो के नाम उमराव सिह,[3] काली प्रसाद सिह,[4] एव सर्वजीत सिह,[5] थे और पौत्रो के युवराज सिह[6] और कृष्ण दत्त सिह[7] ।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९२३।३९७ ए, बी (२) वही, १९२३।३९४ (३) वही, १९२३।१९७ (४) वही, १९२३।२०२ (५) वही, १९२३।३९० (६) वही, १९२३।१९७ (७) वही, १९२३।३९०

८५४।७११

(२१) शिव सिह सेगर २, कान्था, जिले उन्नाव के निवासी, स० १८७८ मे उ०। अपना नाम इस ग्रन्थ मे लिखना बडे सङ्कोच की बात हे। कारण यह है कि हमको कविता का कुछ भी ज्ञान नही। इस हमारी ढिठाई को विद्वज्जन क्षमा करे। हमने वृहच्छिव पुराण को भाषा और उर्दू दोनो बोलियो मे उल्था करके छपा दिया है और ब्रह्मोत्तर खण्ड की भी भाषा की हे। काव्य करने की हमने शक्ति नही हे। काव्य इत्यादि सब प्रकार के ग्रन्थो के उकट्ठा करने का बडा शौक है। हमने अरबी, फारसी, सस्कृत आदि के सेकडो अद्भुत ग्रन्थ जमा किये है और करते जा रहे है। इन विद्याओ का थोडा अभ्यास भी है।

सर्वेक्षण

शिव सिह जी, मौजा कान्था, जिले उन्नाव के जमीदार, रनजीत सिंह के पुत्र और बख्तावर सिह के पौत्र थे। विनोद के अनुसार इनका जन्म स० १८९० मे और मृत्यु स० १९३५ मे ४५ वर्ष की वय मे हुई। सरोज के अनुसार शिव सिह जी स० १८७८ मे उ० थे। यह १८७८ ई० सन् है और सरोज का प्रकाशनकाल है। यह जन्मकाल नही है। इस वर्ष कवि उपस्थित था। दैवयोग ही है कि इसी वर्ष उसकी मृत्यु भी हुई। यह पुलिस इन्स्पेक्टर थे। इनके पास हिन्दी के हस्त-लिखित ग्रन्थो का बहुत अच्छा सग्रह था, जिनके आधार पर इन्होने स० १९३४ मे सरोज प्रणयन किया।[१] प्रथम सस्करण मे स० १८७८ मे उ० के स्थान पर विद्यमान हैं, लिखा है।

———

८५५।७६६

(२२) शिवनाथ शुक्ल, मकरन्दपूर वाले, देवकीनन्दन कवि के भाई, स० १८७० मे उ०। इनकी कविता सरस है, परन्तु यह भी अपना उपनाम नाथ रखते थे। इनका बनाया हुआ कोई ग्रन्थ नही मिलता, इस कारण छ-सात नाथो के बीच से शिवनाथ को निकालना कठिन हो गया है।

सर्वेक्षण

सरोज, ग्रियर्सन (६३२), विनोद (१२८६) मे शिवनाथ को देवकीनन्दन का भाई कहा गया है। यह ठीक नही। शिवनाथ देवकीनन्दन के पिता थे।[२] इनका रचनाकाल स० १८४० के पूर्व होना चाहिये। वशावली रीवा इन शिवनाथ की रचना नही है जैसा कि विनोद मे कहा गया है। इस वशावली के रचयिता अजवेस के पुत्र शिवनाथ हैं।[३]

---

(१) खोज रिपोर्ट १९२३।३९० भूमिका पृष्ठ २-७ (२) वही, कवि सख्या ३६४ (३) वही, कवि सख्या ३, खोज रिपोर्ट १९०१।१०६

———

८५६।७६८

(२३) शिवप्रकाश सिह, डुमरॉंव के वावू, स० १६०१ मे उ०। इन्होने विनय-पत्रिका का तिलक रामतत्ववोधिनी नाम से वहुत सुन्दर वनाया है।

सर्वेक्षण

शिवप्रकाश जी डुमरॉंव, जिला आरा के राजा जयप्रकाश के छोटे भाई थे। यह सुप्रसिद्ध राजा भोज के वशज थे। इनका एक ग्रन्थ रामतत्ववोधिनी टीका खोज मे मिला है।[१] यह विनय-पत्रिका की टीका है जिसका उल्लेख सरोज मे हुआ है। इस ग्रन्थ मे कवि ने अपना परिचय दिया है—

भोज वश अवतस कहि, जै प्रकाश महराज
रजधानी डुमरॉंव मे, है तिन सुभग समाज
तिनके लघु भाई सुहृद्, शिवप्रकाश जेहि नाम
तिनने यह टीका करी, सकल सास्त्र को धाम २३

इस ग्रन्थ मे कवि ने अपने वनाए सात ग्रन्थो का उल्लेख किया है—(१) सत्सग विलास, (२) भजन रसार्णवामृत, (३) भगवत रस सम्पुट, (४) अद्भुत रस-तरङ्ग, (५) इतिहास लहरी, (६) भगवत तत्व-भास्कर, (७) रामतत्ववोधिनी।

प्रथम कियो सतसङ्ग विलासा
श्री रामायण तत्व प्रकासा
दूसर भजन रसाणव आमृत
भजन तरङ्गन करियो आवृत
भगवत रस सम्पुट तोसर है
जामो रस की उठति लहर है
अद्भुत रस तरङ्ग है नाम
चौथ को सव सिद्धान्त ललाम
इतिहास लहरि पञ्चम सो भयो
कहत सुनत जेहि नित सुख नयो
भगवत तत्व भास्कर षट जो
अज्ञान तिमिर नासत झपपट जो
सप्तम विनयपत्रिका टीका
रामतत्व वोधिनी सु नीका

---

(१) खोज रिपोर्ट १६४७।३८६

८५७।७७०

(२४) शिवदीन कवि भिनगा, जिले बहिरायच वाले, स० १९१५ मे उ० । इन कवि ने राजा कृष्णदत्त सिह बिसेन, राजा भिनगा, के नाम से कृष्णदत्त भूषण नामक एक महा अद्भुत काव्य-ग्रन्थ बनाया है। भिनगा मे सब राजा बाबू कवि-कोविद होते आये हैं और अब भी भैया सुखराज सिह इत्यादि सत्कवि हे।

सर्वेक्षण

शिवदीन कवि का कृष्णदत्त भूषण तो नही, कृष्णदत्त रासा नामक ग्रन्थ खोज मे मिला है।[1] इस ग्रन्थ मे अवध के नवाब के नाजिम महमूद अली खाँ और भिनगा नरेश कृष्णदत्त सिह के युद्धो का वर्णन है। यह युद्ध स० १९०१ मे हुआ था।

> ब्रह्म[1] सहित[0] 'नभ[9] खण्ड[1] चन्द्र सवत परिमानो
> बहुरि राग रस दीप आतमा शाके जानो
> कियो समर नरनाह विदित विश्वेन वशवर
> उदित देस परदेस सुजस अस छायो घर घर
> लखि कवि शिवदीन विचारि चित, करत ताहि वर्णन सु अब
> कर जोरि विनय कवि कुल करौं, बिगरो वर्ण सम्भारि सब

ग्रन्थ की रचना स० १९०१ के बाद ही किसी समय हुई होगी। भिनगा नरेश कृष्णदत्त सिह सबजीत सिंह के पुत्र और शिव सिंह के प्रपौत्र थे। उमराव सिंह और कालीप्रसाद सिंह इनके चचा थे।[2] इन सब की भी प्रशस्ति उक्त ग्रन्थ मे है। ग्रन्थ की पुष्पिका मे शिवदीन कवि को बन्दीजन और बिल्लुलग्रामी कहा गया है। रिपोर्ट मे इन्हे शिवदीन बिलग्रामी कहा गया है और स० १९०१ को ग्रन्थ का रचनाकाल भी मान लिया गया हे। किसी शिवदीन रचित रामचरित की तिथियाँ देने वाला, ५३ दोहो का एक लघुग्रन्थ रामरत्नावली बिहार की खोज मे मिला है।[3] सम्भवत यह इन्ही शिवदीन की रचना है।

८५८।७८९

(२५) शिवप्रसन्न कवि, शाकद्वीपी ब्राह्मण, रामनगर, जिले बाराबकी। वि०। ये सामान्य कवि हैं।

सर्वेक्षण

शिवप्रसन्न का विवरण और कविता का उदाहरण महेशदत्त के भाषाकाव्यसग्रह से लिया

---

(१) खोज रिपोर्ट १९२३।३९० (२) यही ग्रन्थ, कवि सख्या ८५३ (३) बिहार रिपोर्ट, भाग २, सख्या ९०

गया है। उक्त ग्रन्थ के अनुसार इनका जन्म स० १८८८ के आस-पास हुआ था। उक्त ग्रन्थ मे इस कवि का यह विवरण दिया गया है।

शिवप्रसन्न कवि, ये जिले बाराबकी तहसील फतेहपुर ग्राम रामनगर के निवासी शाकद्वीपीय ब्राह्मण हैं। इनके पिता का नाम राम ज्यावन वैद्यराज, पितामह का श्यामदत्त और प्रपितामह का केशवराय पण्डित था। ये सस्कृत और भाषा दोनो के कवि है। इन्होने सती चरित्र नामक एक ग्रन्थ बहुत ही उत्तम बनाया है। इनकी अवस्था ४४ वर्ष की है। —कला काव्यसग्रह, पृष्ठ १३३

———

८५६।७३६

(२६) शङ्कर कवि १। इनके शृङ्गार के बहुत सुन्दर कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

खोज रिपोर्टो मे कम से कम १४ शङ्कर बिखरे हुए है। अप्रकाशित सक्षिप्त विवरण मे इन्हे एकत्र कर दिया गया है। इनमे से केवल नाम और एक शृङ्गारी कवित्त के सहारे इन शङ्कर की पहचान करना समुद्र मे खोई बूंद के ढूंढने के सदृश हे।

———

८६०।७५२

(२७) शङ्कर कवि २। ऐजन। इनके शृङ्गार के बहुत सुन्दर कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

८५६ सख्यक शङ्कर १ के समान इनकी भी पहचान सम्भव नही।

———

८६१।७५३

(२८) शङ्कर कवि ३, त्रिपाठी, बिसवाँ वाले, स० १८६१ मे उ०। इन्होने अपने पुत्र शालिक कवि की सहायता से, रामायण की कथा कवित्तो मे बहुत ललित बनाई है।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई प्रामाणिक सूचना सुलभ नही। विनोद (२२८३) मे इन्हे स० १९३० मे उपस्थित कवियो की सूची मे स्थान दिया गया है और इन्हे सरोज वर्णित रामायण तथा १९०९ वाली रिपोर्ट मे उल्लिखित वज्रसूची ग्रन्थ का कर्त्ता माना गया है। वज्रसूची ग्रन्थ

सस्कृत मे है। मूल कर्त्ता कोई शङ्कर हैं, जो इनसे भिन्न होने चाहिए। इस ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद किसी करन कवि ने प्रस्तुत किया है। इस सम्बन्ध मे विनोद और खोज रिपोर्ट दोनो भ्रान्त हैं।

सोरठा

अजसूची ग्रन्थ, सकर कथ्यो सोइ समभि के
भाषा करि मान्यो, ३५
यह उर उपज्यो सकल्प, ब्राह्मण निरनै कीजिए
भाषा भ्रष्ट विकल्ल, ते करन वरनन किए ३६

—खोज रिपोर्ट १९०९।२७८

खोज मे एक शङ्करदास राव नामक ब्राह्मण कवि मिले हैं, इन्हे बिसवाँ निवासी कहा गया है तथा स० १८६० से पूर्व उपस्थित माना गया है। इनके ग्रन्थ का नाम है, भाषा ज्योतिष या ज्योतिष लग्न प्रकाश।[१] रिपोर्ट का यह कथन सन्दिग्ध ही है।

८६२।७५४

(२९) शङ्कर सिंह कवि ४, चँडरा, जिले सीतापुर, के तालुकेदार। वि०। ये सामान्य कवि हैं।

सर्वेक्षण

विनोद (२२८४) मे स० १९३० मे उपस्थित कवियो की सूची मे इन शङ्कर सिंह का नाम है। इनके दो ग्रन्थो—काव्याभरण सटीक और महिम्नादर्श का उल्लेख तृ० त्रै० रि० के आधार पर किया गया है।[२] ये दोनो ग्रन्थ बडगावाँ, जिला सीतापुर, के जमीदार के यहाँ से मिले थे। सम्भवत इसीलिए खोज रिपोर्ट मे इन्हे उसी जिले के तालुकेदार शङ्कर सिंह की कृति मान लिया गया है। महिम्नादर्श मे कवि अपना परिचय इस दोहे मे दिया है—

सुत हुलास नृप नाम को, बरवर ग्राम स्ववास
कियो महिम्नादर्श यह, शंकर शकरदास

इस दोहे के अनुसार महिम्नादर्श के रचयिता राजा हुलास के पुत्र, बरवर ग्राम निवासी, शङ्कर के भक्त शङ्कर हैं। ग्रन्थ का प्रतिलिपिकाल स० १९५४ है। यह सस्कृत के शिवमहिम्नस्तोत्र का भाषानुवाद है। काव्याभरण का प्रतिलिपकाल स० १८७८ है। सभा के अप्रकाशित सक्षिप्त विवरण मे इन दोनो ग्रन्थो को बडगावाँ के जमीदार, हुलास सिंह के पुत्र, शङ्कर सिंह की कृति

---

(१) खोज रिपोर्ट १९४४।४०५,१९४७।३७४ (२) खोज रिपोर्ट १९१२।१६८ ए, बी।

कहा गया है, जो ठीक प्रतीत होता है। यदि चँडरा और वरवर या वडगावाँ एक ही हैं अथवा एक ही जमीदारी के गाँव है, तो ये ग्रन्थ सरोज के अभीष्ट शङ्कर सिह की ही कृतियाँ हैं, अन्यथा नही।

८६३।७४०

(३०) श्री गोविन्द कवि, स० १७३० मे उ०। यह कवि राजा शिवराज सुलकी सितारे वाले के यहाँ थें।

सर्वेक्षण

श्री गोविन्द का शिवराज प्रशस्ति सम्वन्धी एक कवित्त सरोज मे उद्धृत है—

भूप सिवराज साहि प्रवल प्रचण्ड तेग
तेरो दोरदण्ड भूमि भारत भडाका है

शिवा जी के समय (राज्याभिषेककाल स० १७३१) को ध्यान मे रखते हुए सरोज मे दिया गया श्री गोविन्दजी का समय स० १७३० उपस्थितिकाल सिद्ध होता है।

८६४।७६२

(३१) श्री भट्ट कवि, स० १६०१ मे उ०। इनके पद रागसागरोद्भव मे है। प्रिया प्रियतम के चरित्र वडी कविता मे वर्णन किए हैं।

सर्वेक्षण

श्री भट्ट जी निम्वार्क-सम्प्रदाय के वैष्णव थे। यह वृन्दावन निवासी और केशव भट्ट कश्मीरी के शिष्य थे। हरिव्यासदेवाचार्य या हरिप्रिया एव हरिदास के यह गुरु थे। सरोज मे दिया स० १६०१ ठीक है और यह इनका रचनाकाल एव उपस्थितिकाल है। इनका जन्मकाल स० १५५० के आस-पास होना चाहिए। इनका वनाया हुआ एक ही ग्रन्थ है जिसके जुगलसत, आदि-वानी आदि अनेक नाम हैं। इस ग्रन्थ मे कुल १०० पद हैं। प्रत्येक पद के पहले उसी आशय का एक-एक दोहा दिया गया है। दोहे मे पद का आभास है। विहार रिपोर्ट, भाग २, मे यही ग्रन्थ 'आभास दोहा' नाम से वर्णित हे। उक्त विहार रिपोर्ट के सम्पादक को ग्रन्थ के नाम की उपयुक्तता मे सन्देह है, जो ठीक नही। दोहो मे पदो का आभास है, अत नाम कोई बुरा नही। ग्रन्थ की पुष्पिका मे इसे आदि वानी, जुगल सत, व्रजलीला कहा गया है। विहारी सम्पादक ने श्री भट्ट को किसी जुगलकिशोर ठाकुर का चाकर कहा है। यह जुगलकिशोर कोई पार्थिव, पाँच भौतिक ठाकुर नही हैं, यह तो स्वय राधा और कृष्ण हैं।

जनम जनम जिनके सदा, हम चाकर निसिभोर
त्रिभुवन पोषक, सुधाकर, ठाकुर जुगल किशोर

इस दोहे मे किसी लौकिक ठाकुर की झलक किसी बुद्धि के दिवालिए को ही मिल सकती है।

ग्रियर्सन (५३) मे म० १६०१ को जन्मकाल माना गया है। यह ठीक नही। साथ ही इसमे विलमन के रेलिजस सेक्ट्स ग्राफ द हिन्दूज, भाग १, पृष्ठ १५१, के ग्राधार पर इनके नीमादित्य के शिष्य केशव भट्ट से ग्रभिन्न होने की सम्भावना व्यक्त की गई है। यह सम्भावना भी ठीक नही। केशव भट्ट श्री भट्ट के गुरु थे। जुगलसत के पद ६५ से दोनो की भिन्नता प्रकट है।

नित ग्रभग केलि हित हिय मे राग
फाग खेलि चलीं गावत वाद
देखत श्री भट केशव प्रसाद ६५

ग्रन्तिम चरण का ग्रर्थ है कि केशव या केशव भट्ट के प्रसाद से मैं श्री भट्ट जुगलकिशोर राधा-कृष्ण की ऊपर वर्णित लीलाएँ देख रहा हूँ। इस पद से श्री भट्ट की, केशव भट्ट से विभिन्नता तो प्रकट होती ही है, साथ ही केशव भट्ट का इनका गुरु होना भी सिद्ध होता है, क्योकि गुरु की ही कृपा से शिष्य को सूझता है।

विनोद (८७) ग्रौर हिन्दी साहित्य का इतिहास मे ग्रादिवानी ग्रौर जुगलसत को दो ग्रन्थ माना गया है। यह ठीक नही, ये एक ही ग्रन्थ के दो नाम हैं। जुगलसत का 'सत', शतक का सूचक है। इसमे १०० पद हैं, १० सिद्धान्त के, २६ व्रज लीला के, १६ सेवा-सुख के, २१ सहज-सुख के, ८ सुर के, १६ उत्सव-सुख के।

दस पद हैं सिद्धान्त वीसषट् व्रजलीला पद
सेवा सुख सोलह, सहज सुख एक वीस हद
ग्राठ सुरन, एक उनतवीस उच्छव सुख लहिए
श्रीयुत श्रीभट देव रच्यो सत जुगल जो कहिए
निज भजन भाव रुचि तें किए, इतं भेद ये उर धरौ
रूप रसिक सब सत जन, ग्रनुमोदन याकौ करौ

यही ग्रन्थ इन भिन्न-भिन्न नामो से खोज मे मिला है—

(१) ग्रादिवानी सत सिद्धान्त, १६१२।१२६, १६१२।७४, १६२३।१६२, १६४१।२७१ नौ।

(२) जुगलसत, १६००।३६, १६००।७५, १६०६।२३७, १६२३।४०० ए, वी।

(३) पद, १६३२।२०४ बी ।

(४) पदमाला १६४२।२०४ ए ।

(५) आभास दोहा, बिहार रिपोर्ट भाग २, सख्या ५ ।

श्री भट्ट जी के समय के सम्बन्ध मे पर्याप्त मतभेद है। ग्रियर्सन (५३) मे सरोज मे दिया स० १६०१ जन्मकाल स्वीकृत किया गया हे । विनोद (८७) मे इसे जन्मकाल ही समझकर रचनाकाल स १६३० दिया गया है। हिन्दी साहित्य का इतिहास, तदनुसार ब्रजमाधुरी सार, मे इनका जन्म स० १५६५ एव रचनाकाल स० १६२५ दिया गया है। यहाँ तक तो गनीमत है। पोद्दार अभिनन्दन-ग्रन्थ मे पृष्ठ ८४ पर पाँच प्राचीन पद दिए गए हे। इनमे से दो श्री भट्ट के, दो हरिव्यासदेवाचार्य के और एक परशुरामदेव का हे । यहाँ श्री भट्ट का समय स० १३५२, हरिव्यासदेवाचार्य का १३२० और परशुरामदेव का स० १४५० दिया गया है। यह समय ठीक नही। केशव भट्ट कश्मीरी के शिष्य श्रीभट्ट थे, श्रीभट्ट के शिष्य हरिव्यासदेवाचार्य थे। फिर श्रीभट्ट का समय १३५२ और इनके शिष्य हरिव्यासदेव का समय १३२० क्यो ? पुन परशुरामदेव हरिव्यासदेव के शिष्य थे। फिर गुरु का समय स० १३२० और शिष्य का स० १४५० क्यो ? यह १३० वर्ष का अन्तर अनर्थकारी है ।

श्री किशोरीदास वाजपेयी ने जुगलशतक के रचनाकाल का यह दोहा दिया है[१]—

नयन(२) बान(५) पुनि राम(३) ससि(१), मनौ अक गति वाम
प्रगट भयो श्री जुगलसत, इहि सवत अभिराम

इस दोहे से वही समय निकलता है, जो ऊपर पोद्दार अभिनन्दन-ग्रन्थ मे दिया गया है। यह दोहा विश्वसनीय नही प्रतीत होता, यद्यपि शास्त्री जी को इसकी सत्यता मे तनिक भी सन्देह नही हे। वे लिखते हैं कि परशुराम देव और गो० तुलसीदास की भेंट वृन्दावन मे हुई थी। परशुराम देव श्रीभट्ट के प्रशिष्य थे, अत तीन पीढियो का अन्तर है और साधुओ की आयु गृहस्थो की आयु से प्राय अधिक होती ही है, और तब तो और अधिक होती थी । अत जुगलशतक का रचनाकाल स० १३५२ ठीक हे। पर मुझे शास्त्री जी का यह तर्क ठीक नही लगता। परशुरामदेव का रचनाकाल स० १६६० हे।[२] इनके गुरु हरिव्यासदेव का समय स० १६४० के आस-पास होना चाहिए एव हरिव्यास के भी गुरु श्रीभट्ट का समय १६०० के आस-पास। कितनी भी दीर्घ आयु हो, तीन पीढियो का अन्तर सवा तीन-सौ वर्ष कदापि नही हो सकता। साथ ही श्रीभट्ट के गुरु केशवभट्ट कश्मीरी का समय सोलहवी शती का उतरार्द्ध है। यह स० १५७० के आस-पास चैतन्य महाप्रभु से हारे थे।[३] ऐसी स्थिति मे श्रीभट्ट का समय १३५२ नितान्त असम्भव है। सरोज मे दिया समय ठीक हे और यह कवि का रचनाकाल है। कुछ लोग 'राम' को 'राग' मानकर इसका

---

(१) माधुरी, वर्ष १२, भाद्रपद १६६०, पृष्ठ २४४-४८ (२) यही, कवि सख्या ४७
(३) यही, कवि सख्या १२२

रचनाकाल स० १६५२ मानना चाहते हैं।[1] पर यह तो श्रीभट्ट के पोता-शिष्य परशुरामदेव का समय है। अत यह सवत् भी ठीक नही।

शास्त्री जी का अनुमान है कि श्रीभट्ट जी दाक्षिणात्य ब्राह्मण थे। सर्वेश्वर के अनुसार श्रीभट्ट जी गौड ब्राह्मण थे। इनके पूर्वज हिसार जिले के वासी थे। आपके माता-पिता मथुरा मे आ बसे थे। आपके वशज अब भी ध्रुवटीला, मथुरा मे निवास करते है। यहाँ भी जुगलशतक का रचनाकाल १३५२ वि० माना जाता है।[2] इनके ग्रन्थ के आदिवानी कहे जाने का शास्त्रीजी ने यह कारण दिया है—

"श्रीभट्ट देव जी से पहले श्री निम्बार्क-सम्प्रदाय के किसी भी आचार्य ने हिन्दी मे कुछ नही लिखा था, सबने सस्कृत मे ही अपने सिद्धान्त-ग्रन्थ लिखे थे। हिन्दी को सबसे पहले प्रथम श्रीभट्ट जी ने ही दिया और सरस पदो की रचना की। इसीलिए यह श्री निम्बार्क-सम्प्रदाय मे आदिवानी नाम से प्रसिद्ध है।"

भक्तमाल मे श्रीभट्ट जी का विवरण छप्पय ७६ मे है। प्रियादास ने इस छप्पय की टीका मे एक भी कवित्त नही लिखा है।

८६५।६६६

(३२) श्रीपति कवि, पयागपुर, जिले बहिरायच के, स० १७०० मे उ०। यह महाराज भाषा-साहित्य के आचार्यों मे गिने जाते हैं। इनके बनाए हुए काव्य-कल्पद्रुम, काव्य-सरोज, श्रीपति-सरोज, ये तीन ग्रन्थ विख्यात हैं। हमने ये तीनो ग्रन्थ नही देखे हैं और न इनके कुल और जन्मभूमि से ही हमको ठीक-ठीक आगाही है।

सर्वेक्षण

सरोज मे श्रीपति का विवरण भाषाकाव्य-सग्रह के आधार पर है। यह सारा विवरण भ्रष्ट है। न तो कवि का सन्-सवत् ठीक है और न उसका निवास-स्थान ही। श्रीपति जी कालपी के रहनेवाले कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। इनका सर्वाधिक प्रसिद्ध ग्रन्थ श्रीपति-सरोज या काव्य-सरोज है। ये एक ही ग्रन्थ के दो नाम हैं, दो स्वतन्त्र ग्रन्थ नही, जैसा कि सरोज मे कथन है। इनके बनाए हुए निम्नलिखित ग्रन्थ खोज मे मिले हैं—

(१) श्रीपति-सरोज या काव्य-सरोज, १६०४।४८, १६०६।३०४ ए, १६२३।४०४ ए, बी। इस ग्रन्थ की रचना स० १७७७ मे हुई। इसके कर्ता का नाम श्रीपति है और इसकी रचना कालपी मे हुई। ये सभी सूचनाएँ इस ग्रन्थ मे दी हुई है।

---

(१) सूर पूर्व ब्रजभाषा और उसका साहित्य, पृष्ठ २०२, (२) सर्वेश्वर, वर्ष ५, अङ्क १-५, चैत्र सं० २०१३, पृष्ठ १७२

अलि सम स्वाद महान को, जासो सुख सरसाइ
रचित काव्य सरोज सो, श्रीपति पण्डितराइ ३

७ ७ ७ १
सवत मुनि मुनि मुनि ससी, सावन सुभ बुधवार
असित पञ्चमी को लियो, ललित ग्रन्थ अवतार ४
सुकवि कालपी नगर को, द्विज मनि श्रीपति राइ
जस सम स्वाद जहान को, बरनत सुख समुदाइ ५

एक खोज रिपोर्ट मे इस ग्रन्थ का विवरण विनोदाय काव्य-सरोज नाम से भी हुआ है।[1] इस ग्रन्थ के मिल जाने से कवि के सम्वन्ध की अनेक भ्रान्तियो का निराकरण हो गया है।

(२) अनुप्रास, १९०६।३०४ बी०। यह अनुप्रासमय ३० छन्दो का लघु-ग्रन्थ है।

(३) विनोदाय काव्य सरोज, १९०६।३०४ सी। यह काव्य-सरोज का एक खण्ड है। इसमे काव्य-दोपो का वर्णन है और इसकी पुष्पिका मे काव्य सरोज का उल्लेख है—'इति विनोदाय काव्य सरोजे अर्थ दोप निरुपणम्।'

(४) काव्य सुधाकर, १९२३।४०४ सी। इस ग्रन्थ की प्रथम कला ही उपलब्ध है। इसे १६ कलाओ का बडा ग्रन्थ होना चाहिए। इसका अन्तिम दोहा यह है—

कवित निरूपन पद कह्यो श्रीपति सुमति निवास
काव्य सुधाकर महँ भई पहिली कला प्रकास

किन्तु पुष्पिका मे ग्रन्थ समाप्ति की सूचना है—"इति काव्य सुधाकरे निरूपन समाप्तम् ॥इति॥"

सम्भवतः निरुपन के पहले कुछ छूट गया है। निश्चय ही यह पुष्पिका प्रतिलिपिकार की है, न कि कवि की। इस ग्रन्थ मे कवि ने अपने वश का भी वर्णन किया है, पर सम्वन्धित अश उद्धृत नही है। कुछ अन्य कवियो के सम्वन्ध मे इससे अवश्य सूचनाएँ मिलती है।

कवित किए तें पाइयतु परम सुजस धन मान
रोगन सो अरु दुखन सो कहैं सबै मतिमान ३
केसव अरु गङ्गादि को सुजस रह्यौ जग छाय
यो बैरम सुत तें लह्यो धन मुकुन्द कविराय ४

---

(१) खोज रिपोर्ट १९०६।३०४ सी।

अकबर वरु दिल्लीस तें पायो मान अनूप
ख्यालहि मे तब ह्वै गयो सुकवि वीरवर भूप ५
जगन्नाथ तै ज्यो नस्यो कवि दिनेस क‚ रोग
मनीराम ज्यायो तनय जानत सिगरे लोग ६

विनोद (६४३) मे श्रीपति के इन ७ ग्रन्थों का नामोल्लेख हुआ है—(१) श्रीपति सरोज या काव्यसरोज (२) विक्रमविलास, (३) कवि कल्पद्रुम (४) सरोज कलिका, (५) रस सागर, (६) अनुप्रास विनोद, (७) अलङ्कार गगा।

इनमे से १६ को छोड शेप अनुपलब्ध हैं। अनुप्रास विनोद ऊपर वर्णित अनुप्रास नाम का ग्रन्थ प्रतीत होता है।

८६६।७००

(३३) श्रीधर कवि १, प्राचीन, स० १७८६ मे उ०। इनके श्रृङ्गार के सरस कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

सरोज मे इन प्राचीन श्रीधर का यह सवैया उद्धृत है—

श्रीधर भावते प्यारी प्रवीन के रग रँगे रति साजन लागे
अङ्ग अनङ्ग तरङ्गन सो सव आपने आपने वाजन लागे
किंकिनि पायल पैजनियाँ विछिया घुघुरु घन गावन लागे
मानो मनोज महीपति के दरवार मरातिव वाजन लागे

यह सवैया श्रीधर उपनाम मुरलीधर का है। यह इनके ग्रन्थ मे राधाकृष्णदास जी को मिला था।[1] अत इन श्रीधर प्राचीन का कोई अस्तित्व नही रह जाता। सरोज मे दिया इनका समय भी श्रीधर मुरलीधर के समय के मेल मे है।[2]

८६७।७०१

(३४) श्रीधर कवि २, राजा सुव्वा सिंह चौहान, ओयल, जिले खीरी वाले स० १८७४ मे उ०। इन्होंने भाषा-साहित्य का एक महा अद्भुत ग्रन्थ विद्वन्मोदतरङ्गिणी नाम का वनाया है। इस ग्रन्थ मे अपने और अपने गुरु सुवश शुक्ल कवि के सिवा और भी ४४ सत्कवियो के कवित्त

---

(१) राधाकृष्णदास ग्रन्थावली, भाग १, पृष्ठ १८८ (२) यही ग्रन्थ, कवि सख्या ८६८

उदाहरण मे प्रसङ्ग-प्रसङ्ग पर लिखे हैं। इस ग्रन्थ मे नायिका-नायक भेद, चारो दर्शन सखी, दूती वर्णन, पट्ऋतु, रस निर्णय, विभाव, अनुभाव, भाव, रस, रसदृष्टि, भावसबलादि भाव उदय इत्यादि विषय विस्तारपूर्वक कहे है।

सर्वेक्षण

श्रीधर का असल नाम सूबा सिह है। यह ओयल नरेश बखत सिह के छोटे पुत्र थे, छोटे भाई नही, जैसा कि विनोद (१२४२) मे लिखा गया है।

सुबा जानियो नाम, बखत सिंह को लघु तनय
द्विज मत लै अभिराम, श्रीधर कविता मे कह्यो

इनके पितामह का नाम हेम सिह और प्रपितामह का गजराज था। श्रीधर के निम्नलिखित ग्रन्थ खोज मे मिले हैं—

(१) विद्वन्मोद तरङ्गिणी, १९१२।१७७ बी, १९२३।४०१ बी। इस ग्रन्थ मे रचनाकाल नही दिया गया है। सरोज के अनुसार इसकी रचना स० १८७४ मे और विनोद के अनुसार १८८४ मे हुई। मिश्रबन्धुओ ने इस ग्रन्थ को कान्था मे शिवसिंह के भतीजे नौनिहाल सिंह के यहाँ देखा था। इस ग्रन्थ मे श्रीधर के बहुत कम छन्द हैं। इनके काव्यगुरु सुवंश शुक्ल के छन्द अधिक हैं। इनके अतिरिक्त इस ग्रन्थ मे ४४ कवियो के भी सरस कवित्त हैं। इस ग्रन्थ मे सभी साहित्यागो का वर्णन हुआ है।

(२) शालिहोत्र प्रकाशिका, १९१२।१७७ ए, १९२३।४०१ ए, १९२६।४५५ ए, बी, १९४७।४१८। यह ग्रन्थ सस्कृत मे लिखित नकुल और सारङ्गधर आदि की रचनाओ पर आधृत है।

सारङ्गधर अरु नकुल मत, सालिहोत्र लखि ग्रन्थ
समुझि सुरुचि भाषा करी, लै औरौ कछु पन्थ १८

इस ग्रन्थ की रचना स० १८९६ मे हुई—

तिनके मतहि प्रकाशिका, कातिक वदि रविवार
सवत षट्(६) नव(९) वसु(०) ससी(१), त्रयोदसी अवतार १९

इस ग्रन्थ मे कवि ने अपना वश परिचय दिया है—

हेम सिंह नृप के भए, बखत सिंह त्यो नन्द १३
बखत सिंह के चारि सुत, जेठे नृप रघुनाथ १४
बहुरि सु जालिम सिंह भो, तासु अनुज उमराउ १५

तासु अनुज लघु जानि, सुव्वा जानौ नाम तेहि
श्रीधर नाम बखानि, विरचत छन्द प्रवन्ध मे १६

इस ग्रन्थ मे पूर्ववर्ती रचना विद्वन्मोद तरङ्गिणी का भी उल्लेख हुआ है।

विद्वन्मोद तरङ्गिणी ज्यो कीन्हीं रसखानि
त्यो विरच्यो वहु छन्द ले सालिहोत्र सुखदानि १७

यह चौहान ठाकुर थे, जैसा कि सरोज मे कहा गया है, वैसा नही थे, जैसा कि विनोद मे लिखा गया है। यह सूचना भी इस ग्रन्थ से मिलती है।

श्री चलिहे चौहान वंस याही ते भाष्यो ५
मात पिता स्वाहा अनल वत्स गोत्र चौहान
याहि वश मे प्रकट भे शकर नृपति सुजान ७
उपजे शकर वश मे पृथीराज महराज
जाहिर जम्वू दीप मे करै धर्म के काज ८

इस प्रकार यह पृथ्वीराज चौहान के भी वशज सिद्ध होते है।

८६८।७०२

(३५) श्रीधर मुरलीधर कवि। इन्होने कवि विनोद नामक पिङ्गल ग्रन्थ वनाया है।

सर्वेक्षण

श्रीधर मुरलीधर ओझा व्राह्मण थे और प्रयाग के रहने वाले। कही के नावाव मुसल्ले खाँ के आश्रित और दरवारी थे।

श्रीधर ओझा विप्रवर मुरलीधर वस नाम
तीरथराज प्रयाग मे सुवस वस्यो रवि धाम

इनकी आज्ञा से स० १७६७ मे श्रीधर मुरलीधर ने चन्द्रालोक और कुवलयानन्द के आधार पर जसवन्त सिह कृत भाषा-भूषण की शैली पर, भाषा-भूषण ही नाम का एक अलङ्कार ग्रन्थ वनाया था।

सत्रह से सतसठि लिख्यो, संवत जेठ प्रमानि
कृष्ण पक्ष तिथि अष्टमी, वुध वासर सुखदानि ५
चन्द्रालोक विलोकि कै, कलित कुवलयानन्द
यह भाषा भूषण रच्यो, कविजन आनन्द कन्द

—खोज रिपोर्ट १९४१।२७०

श्रीधर मुरलीधर का बनाया जगनामा सभा द्वारा प्रकाशित हो चुका है। इसमे जहाँदारशाह और फर्रुखसियर के उस युद्ध का वर्णन है, जो दिल्ली की सल्तनत के लिए उनमे हुआ था। इस ग्रन्थ का सम्पादन बाबू राधाकृष्णदास ने किया था। इसकी रचना स० १७६९ मे हुई थी।

सवत सत्रह सै उनहत्तरि, पूस पून्यो बधु तहीं
सन सो अग्यारह तेतिसा, माहे मुहर्रम चौदहीं

कवि-विनोद इनकी तीसरी कृति है और यह पिङ्गल ग्रन्थ है। सरोज मे इसके दो दोहे उद्धृत हैं।

श्रीधर मुरलीधर सुकवि, मानि महा मन मोद
कवि विनोद मय यह कियो, उत्तम छन्द विनोद १
श्रीधर मुरलीधर कियो, निज मति के अनुमान
कवि विनोद पिंगल सुखद, रसिकन के मन मान २

श्रीधर मुरलीधर एक ही व्यक्ति का नाम है। ग्रियर्सन (१५६,१५७) मे कवि विनोद को श्रीधर और मुरलीधर नामक दो भिन्न व्यक्तियो का सयुक्त कृतित्व स्वीकार किया गया है, जो ठीक नही। इसी प्रकार विनोद मे एक बार कवि विनोद के रचयिता श्रीधर (५१२) का विवरण है और एक बार श्रीधर मुरलीधर (५५१) का। विनोद मे श्रीधर मुरलीधर का जन्म-काल स० १७३७ अनुमान किया गया है इनके और निम्नलिखित ग्रन्थो की सूची दी गई है—

(१) जगनामा, (२) सगीत की पुस्तक, (३) जैन मुनियो के चरित्र, (४) कृष्णलीला के फुटकर पद्य, (५) चित्र-काव्य, (६) कवि विनोद पिङ्गल। इनमे से १ और ६ तो निश्चित रूप से इन्ही की रचना हैं, जैन मुनियो के चरित्र किसी जैन श्रीधर की रचना होना चाहिए और २,४, ५ के सम्बन्ध मे कुछ कहा नही जा सकता।

८६९।७०६

(३६) श्रीधर कवि ४, राजपूतानेवाले, सं० १६८० मे उ०। इस कवि ने भवानी छन्द नामक एक ग्रन्थ बनाया है, जिसमे दुर्गा की कथा है।

सर्वेक्षण

राजपूताने के श्रीधर कवि ने रणमल्ल छन्द नामक ग्रन्थ बनाया है। इसमे ७० छन्द है। इस ग्रन्थ मे ईडर के राजा रणमल्ल की उस विजय का वर्णन है, जो उसने पाटन के सूबेदार जफरखाँ पर प्राप्त की थी। यह युद्ध स १४५४ मे हुआ था। ग्रन्थ की रचना स० १४५७ मे हुई थी।[1]

भवानी छन्द और रणमल्ल छन्द मे ग्रन्थ के नामकरण की पद्धति एक है। दोनो ग्रन्थो

---

(१) राजस्थानी भाषा और साहित्य, पृष्ठ ८० तथा हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ ५२

की भाषा मे भी साम्य है। रणमल्ल छन्द उदाहरण शुक्ल जी के इतिहास मे और भवानी छन्द का सरोज मे देखा जा सकता है। मुझे दोनो कवि अभिन्न प्रतीत होते है। ऐसी स्थिति मे सरोज मे दिया स० १६८० अशुद्ध है। कवि इससे दो सौ वर्ष पुराना है।

८७०।७२६

(३७) सन्तन कवि १, बिन्दकी, जिले फतेपुर के ब्राह्मण, स० १८३४ मे उ०।

सर्वेक्षण

सन्तन कवि बिन्दकी जिला फतेहपुर के रहनेवाले उपमन्यु गोत्र के दुबे थे। यह पर्याप्त धनी थे और दान किया करते थे। जाजमऊ वाले सन्तन ने अपना और इनका अन्तर दिखलाने के लिए जो सवैया लिखा है, उसमे इन बातो का उल्लेख है।[1] इनका रचनाकाल स० १७६० है।

८७१।७३३

(३८) सन्तन कवि २, ब्राह्मण, जाजमऊ, जिले कानपुर के, स० १८३४ मे उ०।

सर्वेक्षण

यह सन्तन, जाजमऊ, जिले कानपुर के रहने वाले पाँडे थे। यह निर्धन थे और एक ही आँख वाले भी। निम्नलिखित सवैया मे इन्होने बिन्दकी वाले सन्तन से अपनी विभिन्नता प्रकट की है।

वै वरु देत लुटाय भिखारिन, ये विधि पूरव दान गऊ के
द्वै अखियाँ चितवै उत वै, इत ये चितवैं अखियाँ यकऊ क
वै उपमन्यु दुवे जग जाहिर, पांडे वनस्थी के ये मधऊ के
वे कवि सतन है बिन्दकी, हम हैं कवि सतन जाजमऊ के

विनोद (५५३) मे इनका उत्पत्तिकाल स० १७२८ और रचनाकाल स० १७६० दिया गया है। आधार का सङ्केत नही किया गया है। खोज मे इनका एक ग्रन्थ अध्यात्म लीलावती[2] मिला है।

८७२।७३२

(३९) सन्त बकस वन्दीजन, होलपुर वाले। विद्यमान हैं।

---

(१) राजस्थानी भाषा और साहित्य ८७१। (२) खोज रिपोर्ट १९४७।३९७

सर्वेक्षण

खोज मे इनका नखशिख नामक ग्रन्थ मिला है।[1] इसमे २५ कवित्तो मे श्रीराम का नख-शिख वर्णित है। इसमे न तो रचनाकाल दिया है और न लिपिकाल। प्रत्येक कवित्त मे सन्त छाप है। ग्रन्थ कवि के गाँव ही मे उसके वशजो के पास प्राप्त हुआ है, अत इससे इनकी रचना होने मे सन्देह नही।

८७३।७४७

(४०) सन्त कवि १, इनके शृङ्गार के अच्छे कवित्त है।

सर्वेक्षण

सन्त नामक तीन कवि है—

(१) सन्त, खानखाना के आश्रित, देखिए, सख्या ८७५

(२) सन्त बकस होलपुर वाले, देखिए, सख्या ८७२

(३) सन्त कविराज, रीवाँ के, यह दरभगा दरबार मे रहते थे। दरभगा नरेश लक्ष्मीश्वर सिंह के नाम पर इन्होने लक्ष्मीश्वर चन्द्रिका नामक साहित्य ग्रन्थ लिखा। इसमे नायिका भेद, अलङ्कार और नीति आदि सभी है। यह सन्त कवि भी ब्रह्मभट्ट ही थे। ग्रन्थ की रचना स० १९४२ मे हुई।

> नैन वेद ग्रह चन्द्रमा इषु विजया रविवार
> भो लछिमीश्वर चन्द्रिका भूषन ग्रन्थ तयार
>
> —खोज रिपोर्ट १९००।५१

सरोज मे दिए छन्द इन तीनो सन्तो मे से किसी के हो सकते हैं।

८७४।६९९

(४१) सन्तदास, ब्रजवासी निवरी, विमलानन्द वाले स० १६८० मे उ०। रागसागरोद्भव मे इनके पद हैं। इनकी कविता सूरदास जी के काव्य से मिलती-जुलती है।

सर्वेक्षण

सरोज का विवरण भक्तमाल के आधार पर है।

> गोपीनाथ पद राग, भोग छप्पन भु जाए
> पृथु पद्धति अनुसरन देव दपति दुलराए

---

(१) खोज रिपोर्ट १९२३।३७४

भगवत भक्त समान ठौर द्वै को वल गायो
कवित्त सूर सो मिलत भेद कछु जात न पायो
जन्म कर्म लीला जुगति, रहसि भक्ति भेदी भरम
विमलानन्द प्रवोध वस, सन्तदास सीवा धरम १२५

प्रियादास ने इन पर एक कवित्त लिखा है, जिससे इनके गाँव का नाम ज्ञात होता है—

वसत निवाई ग्राम, स्याम सो लगाई मति,
ऐसी मन आई, भोग छप्पन लगाए हैं। ४९७

हिन्दी साहित्य मे दो सन्तदास हुए हैं। एक सगुनिए है। इनका वर्णन भक्तमाल और तदनुसार सरोज मे हुआ है। सरोज मे इन्ही कृष्णभक्त सन्तदास का पद उद्धृत है। राग-कल्पद्रुम मे इनके अनेक पद हैं, जो आद्योपान्त सूर के पदो से मिल जाते है, केवल छाप का अन्तर है। इस बात को भक्तमाल के रचयिता ने आज से बहुत पहले देख लिया था। इन सन्तदास का समय स० १६५० के आस-पास हो सकता हे। स० १६८० तक यह जीवित रह सकते है।

दूसरे सन्तदास निर्गुनिए है। यह दादू-पन्थी है। इनके शिष्य चतुरदास ने इनकी आज्ञा से स० १६९२ मे श्रीमद्भागवत के ग्यारहवें स्कन्ध का अनुवाद किया था। दोनो सन्तदास समकालीन है। दोनो की रचनाएँ राग-कल्पद्रुम मे हैं। इनके बाद भी कई निर्गुनिए सन्तदास हुए हैं। चतुरदास के गुरु, दादूपन्थी सन्तदास का उल्लेख कई खोज-रिपोर्टो मे हुआ है।[1]

८७५।७८५

(४२) सन्त कवि २, प्राचीन, स० १७५९ मे उ०।

सर्वेक्षण

इन सन्त कवि का एक कवित्त सरोज मे उद्धृत है, जिसमे अब्दुर्रहीम खानखाना की प्रशस्ति है।

गाहक गुनी के, सुख चाहक दुनी के बीच
सत कवि दान को खजाना खानखाना था

यह सन्त कवि खानखाना के प्रशस्ति-गायक हैं। इन्होने ऊपर उद्धृत छन्द की रचना

---

(१) खोज रिपोर्ट १९००।७१, १९०२।११०, १९०६।१४९ए, १९१७।४०, १९२३।७६, १९२६।७६, प१९२२।२०

खाना की मृत्यु, सं० १६८३, के पश्चात् किसी समय की। इनका उपस्थितकाल स० १६८३ के आस-पास मानना चाहिए। सरोज मे दिया स० १७५९ ठीक नही। ग्रियर्सन (३१८) ने इसे जन्मकाल मान कर और भ्रष्ट कर दिया है।

८७६।७५०

(४३) सुन्दर कवि १, ब्राह्मण, ग्वालियर निवासी, स० १६८८ मे उ०। यह महाराज शाहजहाँ वादशाह के कवि थे। पहले कविराय का पद पाकर, पीछे महाकविराय की पदवी पायी। इनका वनाया हुआ सुन्दर शृङ्गार नामक ग्रन्थ भाषा साहित्य मे वहुत सुन्दर है। इन्ही कवि के पद मे यह वावछल पडा था—सुन्दर को पनही सपने।

सर्वेक्षण

सुन्दर शृङ्गार की अनेक प्रतियाँ खोज मे मिली है।[1] यह ग्रन्थ, भारत जीवन प्रेस, काशी, से प्रकाशित भी हो चुका है। सरोज मे दिया गया सारा विवरण इसी ग्रन्थ मे दिए गए विवरण के आधार पर है और ठीक है। सुन्दर कवि ग्वालियर के रहने वाले ब्राह्मण थे और शाहजहाँ के दरवारी कवि थे। इन्हे पहले कविराय की, पुन महाकविराय की उपाधि मिली थी।

देवी पूजि सरस्वती, पूजौं हरि के पाँय
नमस्कार कर जोरि, के, करै महाकविराय
नगर आगरे वसतु है, जमुना तट सुभ थान
तहाँ पातसाही करे, वैठो साहिजहान

× × ×

साहजहाँ तिन गुनिन को, दीने अनगन दान
तिननै सुन्दर सुकवि को, कियो वहुत सनमान
नग भूषन सव ही दिए, हय हाथी सिरपाव
प्रथम दियो कविराज पद, वहुरि महाकविराव
विप्र ग्वालियर नगर कौ, वासी है कविराज
जासो साहि मया करै, सदा गरीव नेवाज

---

(१) खोज रिपोर्ट १९००।१०६, १९०२।३, १९०६।२४१ ए, १९१७।१८४, १९२०।१८८ ए, बी, सी, १९२६, ४६६ बी, सी, १९३१।८७ राज० रिपोर्ट, पृ० १५०

सुन्दर शृङ्गार की रचना स० १६८८ मे हुई। सरोज मे यही समय दिया गया है।

सवत सोरह सं वरस, बीते अट्ठासीत
कातिक सुदि षष्टी गुरौ, ग्रन्थ रच्यो करि प्रीति

राज० रिपोर्ट ३, मे प्रमाद से इसका रचनाकाल स० १६८० दिया गया है। अप्रकाशित सक्षिप्त विवरण मे निम्नलिखित ग्रन्थ भी सुन्दर के कहे गए हैं—

(१) ध्रुवलीला १९२६।४६६ ए
(२) वारहमासी, १९०६।२४१ वी

इनमे से वारहमासी तो सन्त सुन्दरदास को रचना है। यह सुन्दरदास-ग्रन्थावली के प्रथम भाग म, लघु ग्रन्थावली के अन्तर्गत ३४ सख्या पर सङ्कलित है। ध्रुवलीला के रचयिता सम्भवत रुक्मागद की एकादशी की कथा,[1] रचनाकाल, स० १७०७, और वैराट पर्व[2], रचनाकाल स० १६८१, के रचयिता सुन्दरदास है। यह प्रवन्ध रुचि देखते हुए कहा जा रहा है। समय पर दृष्टि रखते हुए यह भी कहा जा सकता है कि इन तीनो प्रवन्धों के रचयिता शृङ्गारी सुन्दर ही हैं। खोज-रिपोर्टो मे भी यह सम्भावना की गई है। ग्रियर्सन (१४२) और विनोद (२८८) के अनुसार यह सिंहासनवत्तीसी के उस अनुवाद के कर्ता हैं, वाद मे जिसका उपयोग लल्लूजी लाल ने सिंहासन-वत्तीसी का अपना गद्यानुवाद प्रस्तुत करने मे किया था। ग्रियर्सन मे प्रमाद से सन्त सुन्दर के ज्ञान-समुद्र को भी इनकी रचना स्वीकार कर लिया गया है। ग्रियर्सन मे इनके एक अन्य ग्रन्थ सुन्दरविद्या का भी उल्लेख है, जिसके सम्वन्ध मे कुछ कहा नही जा सकता।

८७७।७५१

(४४) सुन्दर कवि २, दादू जी के शिष्य, मेवाड देश के निवासी। इनकी कविता शान्त रस की वहुत अच्छी है। सुन्दर साख्य नामक एक इनका वनाया हुआ ग्रन्थ भी सुना जाता है।

सर्वेक्षण

सुन्दरदास का जन्म चैत्र शुक्ल ९, स० १६५३ को जयपुर राज्य की द्योसा नगरी मे वूसर गोत्र के खण्डेलवाल वैश्य कुल मे हुआ था। इनके पिता का नाम चोखा और परमानन्द तथा माता का सती था। जव यह पाँच या छह वर्ष के ही थे, तभी इन्होने दादू से दीक्षा पाई थी। यह १६६४ से १६८२ तक विद्या प्राप्ति के लिए काशी-प्रवासी रहे। यहाँ यह असी घाट पर रहा करते थे। काशी से वापस जाने के अनन्तर यह फतहपुर, शेखावाटी मे आए और अन्त तक यही रहे।

(१) खोज रिपोर्ट १९०६।३३४ (२) खोज रिपोर्ट प० १९२२।१०५

इनका देहान्त स० १७४६ मे कार्तिक सुदी ८ को हुआ । साङ्गानेर मे इनकी समाधि वनी हुई है ।[१] सुन्दर साख्य नामक इनका कोई ग्रन्थ नही ।

सुन्दरदास की सम्पूर्ण ग्रन्थावली का सम्पादन श्री पुरोहित हरिनारायण शर्मा, जयपुर, ने किया है । यह ग्रन्थावली दो भागो मे राजस्थान रिसर्च सोसाइटी, कलकत्ता से स० १९९३ मे प्रकाशित हुई थी । इसके प्रथम भाग मे विस्तृत भूमिका और जीवन-चरित्र भी है । सुन्दर ग्रन्थावली प्रथम खण्ड मे निम्नाङ्कित ग्रन्थ हैं—

प्रथम विभाग, १ ज्ञान समुद्र, स० १७१० मे पूर्ण । द्वितीय विभाग, लघु ग्रन्थावली, छोटे-छोटे ३७ ग्रन्थ—

(१) सर्वाङ्ग योग प्रदीपिका, (२) पञ्चेन्द्रिय चरित्र, (३) सुखसमाधि, (४) स्वप्नप्रवोध, (५) वेद-विचार, (६) उक्त अनूप, (७) अद्भुत उपदेश, (८) पञ्च-प्रभाव, (९) गुरु-सम्प्रदाय, (१०) गुन उत्पत्ति नीसानी, (११) सद्गुरु महिमा नीसानी, (१२) वावनी, (१३) गुरुदया षट्पदी, (१४) भ्रमविध्वस अष्टक, (१५) गुरु कृपा अष्टक, (१६) गुरु उपदेश ज्ञान अष्टक, (१७) गुरुदेव महिमा-स्तोत्र अष्टक, (१८) राम जी अष्टक, (१९) नाम अष्टक, (२०) आत्मा अचल अष्टक, (२१) पञ्जावी भाषा अष्टक, (२२) ब्रह्मस्तोत्र अष्टक, (२३) पीर मुरीद अष्टक, (२४) अजव ख्याल अष्टक, (२५) ज्ञान झूलना अष्टक, (२६) सहजानन्द, (२७) गृह-वैराग्य वोध, (२८) हरि वोल चितावनी, (२९) तर्कचितावनी, (३०) विवेकचितावनी, (३१) पवगम छन्द, (३२) अडिल्ला छन्द, (३३) मडिल्ला छन्द, (३४) वारहमासा, (३५) आयुर्वल भेद आत्मा विचार, (३६) त्रिविध अन्त करण भेद, (३७) पूर्वी भाषा वरवै ।

द्वितीय खण्ड की रचनाएँ है—(१) सवैया, ३४ अग, (२) साखी ३१ अग, (३) पद २१८, २७ रागो मे, (४) फुटकर काव्य, (५) चित्र-काव्य ।

इन्ही हरिनारायण जी ने सुन्दरदास की कुछ चुनी रचनाएं 'सुन्दर सार' नाम से सभा से प्रकाशित कराई थी । वेकटेश्वर प्रेस, वम्वई, से भी वहुत पहले इनकी कुछ रचनाओ का सग्रह सुन्दर-विलास नाम से प्रकाशित हुआ था । डॉ० त्रिलोकीनारायण दीक्षित ने इन पर सुन्दर दर्शन नामक विवेचनात्मक ग्रन्थ भी इधर प्रस्तुत किया है ।

८७८।७४१

(४५) सखीसुख, ब्राह्मण, नरवर वाले कविन्द के पिता, स० १८०७ मे उ० ।

---

(१) सुन्दर-ग्रन्थावली की भूमिका के आधार पर

सर्वेक्षण

सखीसुख के चार ग्रन्थ खोज मे मिले है—

(१) राग माला,१६०६।३०६ ए। यह १०१ पन्ने की पुस्तक है। इसमे राधा चरित्र वर्णित है। एक कवित्त मे सखीसुख छाप है। कवि, हित हरिवश के राधावल्लभी सम्प्रदाय मे दीक्षित था।

जै नवरङ्गी जुगल वर, बहु रङ्गनि के सार
रँगे हिये हरिवश के, करत निकुञ्ज विहार

(२) आठो सात्विक, १६०६।३०६ बी। इस ग्रन्थ का प्रतिलिपिकाल स० १८५१ है। उद्धृत एक कवित्त मे सखीसुख छाप है। ग्रन्थ मे राधा-कृष्ण का हावभाव वर्णित है।

(३) भक्त उपदेशनी, १६३५।६५ ए। इस ग्रन्थ मे उपदेशमय कुल ६५ दोहे हैं। अन्तिम दोहे मे सुखसखी छाप है।

(४) विहारबत्तीसी, १६३५।६५ बी। इसमे राधाकृष्ण विहार के कुल ३६ दोहे हैं, जिनमे से अन्तिम मे सुखसखी छाप है।

सखीसुख के पुत्र कवीन्द्र ने स० १७६६ मे रसदीप[1] की रचना की थी, अत सरोज मे दिया स० १८०७ इनका जन्मकाल कदापि नही हो सकता। इस समय तक सखीसुख जी जीवित रह सकते हैं।

८७६।७४२

(४६) सुखराम कवि, स० १६०१ मे उ०। इनके शृङ्गार के सुन्दर कवित्त है।

सर्वेक्षण

ग्रियर्सन (७२६) मे सरोज के ८७६ और ६०३ सख्यक दोनो सुखरामो की अभिन्नता सम्भव मानी गई है, जो असम्भव नही।

खोज मे इसी युग के दो अन्य सुखराम मिले हैं। एक रतलाम के निवासी हैं। इन्होने स० १६०० मे बूटी सग्रह वैद्यक[2] नामक गद्य ग्रन्थ लिखा। दूसरे सुखराम ने स० १६३७ मे ज्योतिष का एक ग्रन्थ पाराशरी भाषा[3] नाम से सस्कृत से भाषा गद्य मे अनूदित किया।

---

(१) सुन्दर ग्रन्थावली, कवि सख्या ७५ (२) खोज रिपोर्ट १६३२।२०६ (३) वही, १६२६।४६८।

८८०।७४३

(४७) सुखदीन कवि, स० १९०१ मे उ० । ऐजन । इनके शृङ्गार के सुन्दर कवित्त हैं ।

सर्वेक्षण

विनोद (२२८८) मे इन्हे १९३० मे उपस्थित कवियो की सूची मे स्थान दिया गया है । इस कवि के सम्बन्ध मे कोई प्रामाणिक सूचना सुलभ नही ।

८८१।७४४

(४८) सूखन कवि, स० १९०१ मे उ० । ऐजन । इनके शृङ्गार के सुन्दर कवित्त हैं ।

सर्वेक्षण

सूखन के भी सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही ।

८८२।७४५

(४९) सेख कवि, स० १६८० मे उ० । हजारे मे इनके कवित्त हैं ।

सर्वेक्षण

सरोज मे शेख के दो शृङ्गारी कवित्त उद्धृत हैं । स्पष्ट ही ये रचनाएँ शृङ्गारी शेख आलम की बीवी और जहान की माँ की रचनाएँ है, ज्ञानदीप के रचयिता प्रेमाख्यानक कवि शेख नवी की नही । सरोजकार और ग्रियर्सन २३६ को यह नही ज्ञात था कि शेख कोई स्त्री है, अन्यथा इन्होने इसका उल्लेख अवश्य किया होता ।

आलम और शेख की प्रेम कहानी हिन्दी साहित्य-जगत् में परम प्रसिद्ध है । कपडा रँगते-रँगते इस शोख रँगरेजिन शेख ने पगडी रँगाने वाले ब्राह्मण कवि का हृदय भी रँग डाला और उसे आलम बना डाला, यहाँ तक कि कवि के पूर्व ब्राह्मण नाम का सर्वथा लोप हो गया, जिसका आज पता भी नही । आलम का समय स० १६४०-८० है । यही समय शेख का भी होना चाहिए । सरोज मे दिया स० १६८० उपस्थितकालसूचक है यह जन्मकाल कदापि नही है, जैसा कि ग्रियर्सन (२३६) ने मान लिया है । डॉ० भवानी शङ्कर याज्ञिक का अभिमत है कि शेख छाप वाले सभी छन्द प्रसिद्ध कवि आलम के ही है । 'शेख' उनकी जाति है, न कि उनकी पत्नी का नाम ।[1]

---

(१) पोद्दार अभिनन्दन-ग्रन्थ, पृष्ठ ३००-३०१ ।

८८३।७४६

(५०) सेवक कवि २, असनीवाले, स० १८६७ मे उ० । यह राजा रतन सिंह, चक्रपुर वाले के यहाँ थे ।

सर्वेक्षण

चक्रपुर या चरखारी नरेश रतन सिंह का शासनकाल स० १८८६ से १९१७ तक है। सरोज मे सेवक के चार कवित्त उद्धृत है, जिनमे से दो मे इन रतन सिंह की प्रशस्ति है ।

(१) भानु कुल भानु महादानी रतनेस जब
चक्रधर सुमिरि चलत चक्रपुर ते
(२) औनि के पनाह, नरनाह रतनेस सिंह
को न नरनाह तेरी बाँह छाँह मे रहो

इन उद्धरणो से सेवक का इन रतन सिंह से सम्पर्क सिद्ध है । सेवक असनीवासी थे, पर इनका अधिकाश जीवन बनारस मे बीता और यह बनारसी के नाम से ही प्रसिद्ध है । सम्भवत इनका प्रारम्भिक जीवन चरखारी मे बीता ।

सरोज के ८८३ और ८८४ सख्यक दोनो सेवक एक ही हैं । ग्रियर्सन मे यद्यपि दोनो को अलग-अलग (६७७, ५७६) स्वीकार किया गया है, पर इनके अभिन्न होने की भी सम्भावना व्यक्त की गई है । विनोद मे भी (१६०६, १८०५) दोनो को सरोज के समान दो विभिन्न कवियो के रूप मे स्वीकार किया गया है । सेवक का विस्तृत विवरण आगे सख्या ८८४ पर देखिए ।

८८४।७७३

(५१) सेवक कवि १, वन्दीजन, बनारसी । वि० । यह कवि काशी जी मे बाबू देवकीनन्दन, महाराज बनारस के भाई, के यहाँ हैं, शृङ्गार रस के इनके कवित्त बहुत सुन्दर हैं ।

सर्वेक्षण

सेवक का जन्म स० १८७२ वि० मे असनी, जिला फतेहपुर मे हुआ था । इनकी मृत्यु स० १९३८ मे काशी मे ६६ वर्ष की वय मे हुई । अपने प्रारम्भिक जीवन-काल मे यह कुछ दिन चरखारी नरेश रतन सिंह के यहाँ भी रहे थे । फिर यह काशी आए । यहाँ यह आजीवन बने रहे । यहाँ यह हरिशकर सिंह के यहाँ रहा करते थे । इनके पितामह असनीवाले ठाकुर, काशी नरेश के भाई देवकीनन्दन सिंह के यहाँ थे । ठाकुर के पुत्र धनीराम, देवकीनन्दन सिंह के पुत्र जानकी-

प्रसाद सिह के यहाँ थे और धनीराम के पुत्र सेवक, जानकीप्रसाद के पुत्र हरिशकर सिह के यहाँ थे। इस प्रकार इन दोनो कुटुम्वो ने तीन पुश्त तक आश्रयदाता और आश्रित का सम्वन्ध निर्वाह किया। सेवक ने एक सवेये मे अपना वश-परिचय यो दिया है—

श्री ऋषिनाथ को हौं मै पनाती, औ नाती हौं श्री कवि ठाकुर केरो
श्री धनीराम को पूत मै सेवक, शकर को लघु वन्धु ज्यो चेरो
मान को वाप, वबा कसिया को, चचा मुरलीधर कृष्णहू हेरो
अश्विनी मै घर, काशिका मै हरिशकर भूपति रच्छक मेरो

खोज मे सेवक के निम्नलिखित ग्रन्थ मिले है—

(१) वरवै नखशिख, १९०६।२८६। ग्रन्थ प्रकाशित हो चुका है।

(२) वाग्विलास, १९२३।३८३, १९४१।२९८ ख। यह नायिका भेद का ग्रन्थ है। १९२३ वाली प्रति स० १९२१ की लिखी हुई हे। इसमे ठाकुर, धनीराम, शकर, मान आदि इसी कुटुम्व के अन्य कवियो की भी रचनाएँ हैं।

(३) वाग विलास, १९४१।२९८ क। इस ग्रन्थ मे हरिशङ्कर द्वारा लगाए गए एक वाग का विस्तृत वर्णन है। विनोद (१८०५) मे इनके दो अन्य ग्रन्थो, पीपा प्रकाश और ज्योतिष प्रकाश का और भी उल्लेख है।

८८५।७५६

(५२) शीतल त्रिपाठी, टिकमापुर वाले १, लाल कवि के पिता, स० १८९१ मे उ०। यह मतिराम वशी कवि वुन्देलखण्ड मे चरखारी इत्यादि रियासतो मे आने-जाने थे।

सर्वेक्षण

शीतल त्रिपाठी, विक्रम सतसई के टीकाकार विहारीलाल के पिता थे। विहारीलाल ने अपना जो परिचय उक्त ग्रन्थ मे दिया है, उसके अनुसार वे मतिराम के प्रपौत्र, जगन्नाथ के पौत्र एव शीतल के पुत्र थे।[१] अत शीतल कवि जगन्नाथ के पुत्र और मतिराम के पौत्र थे। विहारीलाल ने उक्त टीका स० १८७२ मे रची थी। ऐसी स्थिति मे इनके वाप शीतल का समय

---

(१) पोद्दार अभिनन्दन-ग्रन्थ, कवि सख्या ८०२

१८५० के आस-पास होना चाहिए। सरोज मे दिया स० १८६१ कवि का अत्यन्त वृद्ध काल हो सकता है।

८८६।७५७

(५३) शीतलराय, वन्दीजन २, वौडी, जिले वहिरायच, स० १८६४ मे उ०। यह कवि वडे नामी हो गए है। राजा गुमान सिंह जनवार एकौना वाले ने कहा कि अव कोई गङ्ग कवि के समान छप्पय-छन्द के वनाने मे प्रवीण नही है। तव इन्होने राजा गुमान सिंह की प्रशसा मे यह छप्पय पढा— चकित पवन गति प्रवल, और एक हाथी इनाम मे पाया।

सर्वेक्षण

चकित पवन प्रवल वाला छप्पय सरोज मे उदाहृत है। इसमे गुमान सिंह का नाम गाया है—

"दव्वै जमीन, हहलत सु गिरि, जव्वे गुमान हय वर कस्यो"

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही।

८८७।७६२

(५४) सुलतान पठान, नवाव सुलतान मोहम्म खाँ १, राजगढ भूपालवाले, स० १७६१ मे उ०। यह कविता के ग्राहक थे। चन्द कवि ने इनके नाम से सतसई का टीका कुण्डलिया छन्द मे किया है।

सर्वेक्षण

सरोज मे दिया स० १७६१ उपस्थितिकाल है, न कि उत्पत्तिकाल, जैसा कि ग्रियर्सन (२१४) मे स्वीकार कर लिया गया है। नवाव सुलतान मोहम्मद खाँ स्वय कवि नही थे, यह कविता के ग्राहक थे, आश्रयदाता थे, काव्य-प्रेमी थे। इनके नाम पर जो उदाहरण दिए गए हैं, वे इनके नही है, इनके आश्रित चन्द[1] कवि के है, जिसने इनके आश्रय मे रहकर सतसई पर कुण्डलिया लगाई।

---

(१) पोद्दार अभिनन्दनग्रन्थ, कवि सख्या २१८

८८८।७६४

(५५) सुलतान कवि २। इनके शृङ्गार के सुन्दर कवित्त है।

सर्वेक्षण

सरोज मे इनका एक अत्यन्त सरस और अनूठे भाव वाला शृङ्गार-सवैया उद्धत है। इस कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही।

८८९।७६३

(५६) सहजराम वनिया १, पैंतेपुर, जिले सीतापुर, स० १८६१ मे उ०। इस कवि ने रामायण सातो काण्ड बहुत ललित, हनुमन्नाटक और रघुवश के श्लोको का उलथा करके, बनाई है।

सर्वेक्षण

सहजराम की रामायण का नाम रघुवश दीपक है। यह नाम रघु के वश और महाकवि कालिदास के रघुवश के आभार के कारण प्रतीत होता है। इसके दो काण्ड खोज मे मिले हैं—

(१) बालकाण्ड, १९१२।१६३

(२) सुन्दरकाण्ड १९२३।३६७ डी

रघुवश दीपक के बालकाण्ड मे रचनाकाल स० १७८९ दिया हुआ है।

सवत सत्रह सै नौवासी
चैत्र मास रितुराज प्रकासी
कीन्ह अरम्भ दोष दुख हरनी
रामकथा जग मगल करनी

ग्रन्थ तुलसी कृत रामचरित मानस के ढङ्ग का है। कवि के अनुसार तुलसीदास ने अपने भक्त सहजराम के हृदय मे वास कर स्वय यह ग्रन्थ लिखा है।

निज अनुगामी जानि कै, स्वामी तुलसीदास
सहजराम उर वास कर, कीन्हो ग्रन्थ प्रकास

इस ग्रन्थ की रचना अवधपुरी मे रामकोट नामक स्थान पर गुरु की आज्ञा से प्रारम्भ हुई—

अवधपुरी आरम्भ मै, रामकोट पर कीन्ह
राम प्रसाद निवास जहँ सद्गुरु आयस दीन्ह २१९

सुन्दर काण्ड के ग्रन्त मे पुष्पिका रूप मे यह लेख है—

"इति श्री रघुवश दीपक सहजराम कृत सुन्दरकाण्ड समाप्त ।"

सहज़राम के नाम पर निम्नलिखित ग्रन्थ ग्रौर भी मिले हैं—

(१) कवितावली, १९२३।३६७ ए। यह रघुवशदीपक के कर्ता की ही कृति है। रघुवश-दीपक मे कवि ने अपने श्रद्धेय कवि तुलसीदास के रामचरित मानस का अनुकरण किया है और इस ग्रन्थ मे उसने तुलसी की कवितावली की शैली का अनुकरण किया है। प्राप्त ग्रन्थ मे केवल वालकाण्ड की कथा कवित्त-सवैयो मे है। हो सकता है, कवि ने और ग्रश भी लिखे रहे हो, जो ग्रभी तक उपलब्ध नही हुए है।

(२) हनुमान वाललीला, १९२६।४१५ए, १९४७।४०५ ड। वाल्मीकि रामायण के अनुसार यह कथा है।

सहजराम कीनी कथा, वाल्मीकि मत देखि
सकल सुमगल दाहनी, मगलकारि विसेखि

१९४७ वाली प्रति का लिपिकाल स० १८२८ है।

(३) एकादशी माहात्म्य, १९३८।१३३। खोज रिपोर्ट में इस ग्रन्थ के कर्त्ता का नाम सहज दिया गया है और इन सहजराम से तादात्म्य स्थापित नहीं किया गया है। पर एकादशी माहात्म्य के सहज और रघुवशदीपक के सहजराम एक ही हैं। एकादशी माहात्म्य का अन्तिम दोहा है—

एकादशी महिमा वडी, प्रभु को हे सुखदाइ
जन सहजा चौवीस मत, हरि जू दए वताइ १८

यह हर जू जन सहजा के गुरु हैं, जिन्होने २४ एकादशियो के सम्वन्ध मे अपने शिष्य को सारी वातें वताई। रघुवश दीपक के रचयिता सहजराम भी अयोध्यावासी गुरु का नाम यही है।

हरि दास हरि भक्त रत, सदा रट सादर दीन्ह नरेस
कही कथा रघुनाथ की, मिटै तुम्हार कलेस २

—खोज रिपोर्ट १९१२।१६३

(४) प्रह्लाद चरित्र, १९१२।१६२, १९२३।३६७ वी, सी, १९२६।४१५ वी, सी, १९४१। २७९, १९४७।४०५ क,ख,ग,घ। प्राचीनतम प्रति १९४७।४०५ ग वाली है, जिसका लिपिकाल स० १८०० है। यह कोई स्वतन्त्र ग्रन्थ नही है। यह रघुवशदीपक वालकाण्ड का चतुर्थ सर्ग है। यह सूचना १९४७।४०५ क प्रति की पुष्पिका से ज्ञात होती है।

"इति श्री रघुवशदीपे सहजराम कृत हिरन्यकस्यप वध नाम चतुर्थ सर्ग प्रह्लाद चरित समापितम् सुभमस्तु . ।"

१६४१ वाली प्रति की पुष्पिका मे भी यह सूचना दी गई हैं। १६२३।३६७ वी की पुष्पिका भी इसे रामायण वालकाण्ड का अश वताती है। सरोज मे दिया सं० १८६१ अशुद्ध है, क्योकि रघुवशदीपक का रचनाकाल स० १७८६ है। ८६० सख्यक सहजराम भी यही हैं।

८६०।७८६

(५७) सहजराम २, सनाढ्य वन्धुग्रावाले, स० १६०५ मे उ०। इन्होंने 'प्रह्लाद चरित्र' नामक ग्रन्थ वनाया है।

सर्वेक्षण

वन्धुआ, जिला सुलतानपुर मे सहजराम नाम के कोई कवि कभी नही हुए। जब इनका अस्तित्व ही नही, तो फिर इनकी रचना प्रह्लाद-चरित्र का अस्तित्व कैसे हो सकता है। सरोजकार ने प्रमाद से इस कवि की मिथ्या सृष्टि कर दी है। सरोजकार ने इनका विवरण महेशदत्त मिश्र के भापाकाव्य सग्रह से लिया है। मिश्र जी इनके सम्वन्ध मे यह लिखते हैं—

"ये सनाढ्य ब्राह्मण पञ्जाव के रहने वाले थे और यहाँ सुलतांपुर के जिले मे जो वन्ववा ग्राम है, वहाँ के रहने हारे एक नानकसाही ब्राह्मण के शिष्य हुए। ये भी वडे महात्मा हुए हैं और सहजराम रामायण, प्रह्लाद-चरित, ये दो ग्रन्थ इन्ही ने रचित किए और स० १६०५ मे इस असार ससार से निराश हो स्वर्गवास किया।"

महेशदत्त ने जिस स० १६०५ को इनका मृत्यकाल घोषित किया है, सरोजकार ने उसे उ० या उपस्थितिकाल कहा है, जो ठीक कहा जा सकता है। पर ग्रियर्सन (६८६) और विनोद (२१८२) मे इसे उत्पत्तिकाल मान लिया गया है। हद हो गई। ये सभी सवत् अशुद्ध हैं। महेशदत्त के अनुसार दो वाते स्पष्ट हैं। एक तो यह कि सहजराम वन्धुआ के रहने वाले नही थे, वन्धुआ के रहने वाले इनके गुरु थे। दूसरी वात यह कि रामायण और प्रह्लाद-चरित के रचयिता दो व्यक्ति नही हैं, एक ही है। इन दो वातो को आधार मानकर ८८६ और ८६० सख्यक दोनो सहजरामो की अभिन्नता प्रतिपादित की जा सकती हैं। पीछे ८८६ सख्या पर प्रह्लाद-चरित, रघुवश दीपक का एक अश सिद्ध किया जा चुका है। ऐसी स्थिति मे सहजराम सनाढ्य वन्धुवा वाले का अस्तित्व समाप्त हो जाता है।

रघुवश दीपक के रचयिता सहजराम पञ्जावी थे अथवा पैंतेपुर जिला सीतापुर, के रहने वाले

थे, यह वनिया थे अथवा सनाढ्य ब्राह्मण थे, ये दोनो प्रश्न अभी विचारणीय हैं। उपलब्ध सामग्री के सहारे इनका निर्णय नही किया जा सकता है। जब तक अन्यथा न सिद्ध हो जाय, इन्हे सरोज ८८९ के आधार पर पैंतेपुर जिला का वनिया ही माना जाय। इस कवि का विवरण सरोजकार ने अपनी जानकारी के आधार पर दिया है, जो ठीक हो सकती है। ८९० सत्यक कवि का विवरण महेदत्त के आधार पर है और महेशदत्त की सूचनाएँ अधिकाश मे भ्रान्त हैं, अत ये प्रमाण नही मानी जा सकती।

८९१।७९१

(५८) श्यामदास कवि, स० १७५५ मे उ०। इनके पद रागसागरोद्भव मे हैं।

सर्वेक्षण

भक्तमाल मे पाँच श्यासदास है—

(१) श्याम, १७ सन्त विटपो मे से एक, छप्पय ९७।

(२३) श्याम और श्यामदास, २२ भगवद्गुणानुवाद करने वाले भक्तो मे से दो, छप्पय १४६।

(४) श्याम, सेन वशीय, छप्पय १४९।

(५) श्याम, लघु लम्व ग्राम के निवासी श्यामदास, छप्पय १७८।

ऐसी परिस्थिति मे सरोज के श्यामदास पर निर्णयात्मक रूप से कुछ कहना वहुत सम्भव नही। इनके सम्वन्ध मे इतना ही कहा जा सकता है कि यह कृष्ण-भक्त कवि थे, क्योकि सरोज मे इनका कृष्णभक्ति सम्वन्धी एक पद उद्धृत है। ख्याल टिप्पा[1] नामक सग्रह मे इनके भी पद हैं। विनोद (६८९) मे इन्हे शालग्राम माहात्म्य का कर्ता कहा गया है। खोज मे किसी श्यामदास का श्री विष्णुस्वामी चरितामृत[2] नामक ग्रन्थ मिला है। सम्भवत यह इन्ही श्यामदास की रचना हे।

८९२।७९३

(५९) श्याम मनोहर कवि। ऐजन। इनके पद रागसागरोद्भव मे है।

सर्वेक्षण

सरोजकार ने रागकल्पद्रुम के एक वडे पद का एक छन्द या कडी उद्धृत कर ली है और उनमे आए कृष्णसूचक पद श्याममनोहर को कवि छाप समझ लिया है। यह शब्द प्राय प्रत्येक

(१) खोज रिपोर्ट १९०२।५७ (२) वही,।१९४१।३०६

कडी मे आया है, इसीलिए सरोजकार को और भी भ्रम हुआ। यह पद श्री हरिदास नागर का है। *यह हरिदास, वल्लभ सम्प्रदाय के गोस्वामी हरिराय,* उपनाम रसिकदास या रसिक राय के शिष्य थे। सरोज मे प्रथम वन्द के ४ चरण और द्वितीय वन्द के २ चरण मिलाकर उद्धृत किए गए है, कोई एक पूरा वन्द नही। यह कवि सरोजकार की मिथ्या सृष्टि है। प्रमाण के लिए पूरा पद उद्धृत किया जा रहा है।

गुजरी शशिवदनी सुन्दर यौवनवाली
सिर कनक मटुकिया गोरस वेचनवाली

छन्द

चली दधि वेंचन किशोरी, कुँवरि है गजगामिनी
नख शिख रूप अनूप सुन्दर, दसन द्युति मनो दामिनी
श्यामा पियारी, कुल उज्यारी, विमल कीरति ऊजरी
यौवनवाली सरस सुन्दर, चन्द्रवदनी गूजरी १
वृन्दावन भीतर श्याम मनोहर घेरी
हौं तुम्हे जान न दैहौं लैहौं दान निवेरी

छन्द

लैहौं दान निवेर अपनो, करो नन्द दुहाइया
जाति चोरी वेंचि नित प्रति, आजु पकरन पाइयां
वोलि ग्वालि लुटाय दू दधि, करो जो भावे मना
घेरी मनोहर श्यामसुन्दर, ग्वालिनी वृन्दावना २
छाँडहु मेरो अँचरा, हठ जिनि करहु गोपाला
सुन्दर मनमोहन प्यारे, अवार होत नन्दलाला

छन्द

नन्दलाल होत अवार प्रति छन, सघन वन मे अति डरो
मेरे सङ्ग की सब वेंचि वगरी, कहा उत्तर घर करौं
कव कव तुम्हारो दान लागे, वादि झगरो ठानहू
वलि जाउँ, मानो कह्यो मेरो, लाल अँचरा छाँडहू ३
अति चतुर ग्वालिनी अन्तर नेह वढायो
श्याम मनोहर जिनको प्यारो पायो

छन्द

पायो मनोहर श्याम सुन्दर, सुरति सुभ मानो रली
नव नेह अति रस रग वाढ़यो, दान दे उठि घर चली

कहत श्री हरिदास नागर, कामिनी गुन सागरी
जिन रसिक श्री हरिराय मोहे, अधिक चातुर नागरी ४

—रागकल्पद्रुम, भाग २, पृष्ठ १४५-४६ पद ७६

८६३।७८७

(६०) श्यामशरण कवि, स० १७५३ मे उ० । इन्होने भाषास्वरोदय ग्रन्थ बनाया ।

सर्वेक्षण

श्यामशरण जी उपनाम भवभागी, चरणदास के शिष्य और नित्यानन्द के गुरु[1] थे । चरणदास का जीवनकाल स० १७६०-१८३८ है । ऐसी स्थिति मे श्यामशरण जी का उक्त सरोजदत्त स० १७५३ अशुद्ध है । इनका रचनाकाल स० १८०० के पश्चात् होना चाहिए । चरणदास का स्वरोदय तो प्रसिद्ध ही है । सरोज के अनुसार श्यामशरण ने भी स्वरोदय नामक एक ग्रन्थ बनाया था । गुरु-शिष्य का एक ही विषय पर लेखनी चलना अस्वाभाविक नही ।

८६४।७८३

(६१) श्यामलाल कवि, स० १७७५ मे उ० ।

सर्वेक्षण

सरोज मे श्यामलाल के नाम पर जो कवित्त उद्धृत है, उसमें किसी नरेश उमराऊ गिरि की प्रशस्ति है ।

स्यामलाल सुकवि नरेश उमराउ गिरि
तुमसे न नृप कोऊ आज के जमाने हैं
हम मरदाने जानि विरद बखाने, पर
द्वारे चोबदार कहँ साहब जनाने हैं

श्यामलाल जी कोई भाट प्रतीत होते हैं, जिन्हे परिहास से भी प्रेम है । इनके सम्बन्ध मे कोई भी सूचना सुलभ नही ।

खोज मे एक परवर्ती श्यामलाल मिले हैं । इनकी रचनाएँ हैं—नवरत्न भाषा[2] सैर वाटिका[3]

---

(१) खोज रिपोर्ट १९०५।४१ (२) वही, १९२१।३२१, (३) वही, १९२६।३२२,

दानलीला[1] हैं। अन्तिम दो के रचनाकाल क्रमश १८९४, १८९१ है। प्रथम का प्रतिलिपिकाल स० १९०८ है। इस कवि की भाषा उर्दू मिश्रित और रचना प्रणाली शेरो से प्रभावित है। विहारी का प्रसिद्ध दोहा 'मोर मुकुट कटि काछनी' इनके प्राय सभी ग्रन्थो मे उद्धृत है।

८९५।७७४

(९२) सवल श्याम कवि।

सर्वेक्षण

सरोज मे सवल श्याम का एक कवित्त है, जो दिग्विजय भूषण से लिया गया है। यह अमोघा नगर या अमोढा, जिला वस्ती के निवासी, सूर्यवशी क्षत्रिय थे। यह अमोढा के राजा वीरसिंह के छोटे भाई थे। इनका जन्म स० १६८८ मे हुआ था। इनके लिखे दो ग्रन्थ सरोज मे मिले हैं—

(१) वरवै पट्ऋतु, १९४४।४३८। एक वरवै मे कवि का नाम है—

सवल श्याम विनु, ग्रीषम उपतन वाग
तव शीतल अव ही तल जनु दव लाग १०

(२) भागवत भाषा दशम स्कन्ध, १९४७।४०१। इस ग्रन्थ मे कवि ने अपना जन्मकाल स० १६८८ दिया है—

संवत् सोरह सौ अट्ठासी, जन्म भयो छिति आइ
सवल श्याम पुर पुण्य ते, नगर अमोघा मे परे देखाइ ४२३

ग्रन्थान्त मे कवि ने अपना और ग्रन्थ का नाम दिया है—

राजा सवल श्याम कत, दशमोत्तर असकंध
यह समाप्त प्रमुदित भयो, संयुक्त छन्द प्रवन्ध ४२४

(३) भागवत भाषा, वारहवाँ स्कन्ध—यह अनुवाद स०१७९६ मे हुआ था।[2]

अमोढा राज्य की स्थापना स० ११९१ मे कसदेव या कसनारायण देव ने की थी। इनकी २७वी पीढी मे राजा दल सिंह हुए। दलसिंह के चार विवाह हुए थे। इनके कुल तेरह पुत्र थे। प्रथम राजा वीर सिंह, दूसरे फतेशाह और तीसरे सवल शाह या स्वल सिंह थे। इन्ही सवल शाह ने ग्रन्थो मे अपना नाम सवल श्याम रखा है। ये लोग औरङ्गजेव के समकालीन है। राजा दलसिंह

---

(१) खोज रिपोर्ट १९२६।३२२ (२) हिन्दी रिव्यू—जनवरी १९५७ मे प्रकाशित डॉ० रामअवध द्विवेदी का परिचयात्मक लेख।

को औरङ्गजेब ने कैद कर लिया था। सम्भवत यह दलसिंह भी कवि थे। सरोज मे ३३२ सख्या पर एक दलसिंह हैं, जिन्हे बुन्देलखण्ड का कोई राजा कहा गया है।

८६६।७३१

(६३) श्याम कवि, स० १७०५ मे उ०। इनके कवित्त हजारे मे हैं।

सर्वेक्षण

खोज रिपोर्टो मे श्याम नाम के दो कवि हैं। एक वैद्यक[1] के रचयिता हैं, दूसरे कृष्णध्यान चतुराष्टक[2] के। पता नही, दोनो एक कवि हैं अथवा दो। कृष्णध्यानचतुराष्टक मे चार अष्टक हैं। ये अष्टक सवैयो मे हैं। ग्रन्थ का प्रतिलिपिकाल स० १७८५ है, अत यह कवि हजारे वाले श्याम हो सकते है। ऐसी दशा मे यह सरोज वाले श्याम भी हैं।

८६७।७३४

(६४) शोभा कवि। इनके शृङ्गार के सुन्दर कवित्त है।

सर्वेक्षण

शोभा कवि की कविता के उदाहरण मे निम्नलिखित सवेया दिया गया है और उदाहरण देने समय कवि का नाम शोभ दिया गया है।

चाह सिंगार सँवारन की, नव वेस वनी रति वारन की है
सोभ कुमार सिवारन की, सिर सोहति जोहति वारन की है
हसन के परिवारन की, पग जीति लई गति वारन की है
याहि लखे सरवारन की, छनकौ रति के परिवारन की है

यह सवैया कुमारमणि शास्त्री 'कुमार' का है।[3] यह छन्द उनके प्रसिद्ध ग्रन्थ 'रसिक रसाल' का है। इसके द्वितीय चरण मे कुमार छाप हे भी। कुमार के पहले सोभ आया है जो सोभा के अर्थ मे है। पर प्रमाद से इसे कवि का नाम कल्पित कर लिया गया है और कुमार पर ध्यान नही दिया गया है। अत सरोज के यह सोभा या सोभ कवि सरोजकार की मिथ्या सृष्टि है। प्रथम सस्करण मे कवि का नाम 'सोभ' ही दिया गया है।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९४१।३०५ (२) वही, १९३८।१५० (३) वही, कवि स० ६७,

सोभ नामक एक अन्य कवि भरतपुराधीश जवाहिर सिंह, (शासनकाल स० १८२०-२५) के अनुज नवल सिंह के आश्रित थे। इनके नाम पर सोभ ने स० १८१८ मे 'नवलरस चन्द्रोदय' नामक नायिकाभेद का सुन्दर ग्रन्थ रचा था।[1]

वसु विधि वसु विधु वत्सरहि, श्रावन सुदि गुरुवार
सरब सुसिद्धि त्रयोदसी, भयो ग्रन्थ अवतार

नवल सिंह भरतपुर के राजा नही थे, जैसा कि खोज रिपोर्ट मे लिखा है। कवि ने आदर प्रकट करने के लिए ही इन्हे महाराज कहा है।

नंद नृप नंद व्रज चद आनन्द मय
रहत रछपाल नवलेस महराज पर

परन्तु पुष्पिका मे इन्हे व्रजेन्द्र, भरतपुराधीशो की उपाधि, को नन्द ही कहा गया है। व्रजेन्द्र नही—

"इति श्रीमन्महाराज जदुकुलवसावतस व्रजेन्द्र नद नृप नवल सिंह विनोदार्थे सोभ कवि विरचिते नवलरस चन्द्रोदये हावादि भेदकथन नाम सप्तमोल्लास ॥७॥ शुभमस्तु।"

—खोज रिपोर्ट १९१७।१७८

८९८।७८४

(९५) शोभनाथ कवि ।

सर्वेक्षण

इन शोभनाथ के नाम पर सरोज मे निम्नलिखित कवित्त उद्धृत है, जो वस्तुत शोभनाथ का है।[2] अत यह कवि सरोजकार की मिथ्या सृष्टि है।

दिशि विदिसान ते उमड़ि मढि लीने नभ
छोरि दिये धुरवा जवासे जूह जरिगे।
डहडहे भये द्रुम रञ्चक हवा के गुने
कुहू-कुहू मोरवा पुकारि मोद भरिगे

---

(१) भरतपुर राज्य और हिन्दी, माधुरी, फरवरी १९२७, पृष्ठ ८१ (२) सोभनाथ-रत्नावली, पृष्ठ ९४।

रहि गये चातक जहाँ के तहाँ देखत ही
सोभनाथ कहूँ-कहूँ बूँद हूँ न करिगे
सोर भयो घोर चहुँ ओर नभ मण्डल मे
आये घन आये घन आय के उघरिगे

यहाँ लिपिदोष के कारण 'म' का 'भ' हो गया है और सोमनाथ के बदले सोभनाथ की सृष्टि हो गई है। सोमनाथ का विवरण आगे सख्या ९१६ पर देखिये।

८९९।७३५

(९९) शिरोमणि कवि, स० १७०३ मे उ०। इनके कवित्त हजारे मे हैं।

सर्वेक्षण

शिरोमणि गङ्गा-यमुना के बीच स्थित पुण्डीरिन के गाँव के रहने वाले थे। यहाँ माथुर लोग बसते थे। गाँव का नाम गम्भीरा था। यहाँ माथुरो मे तिवारी लोग अधिक थे। इसी गाँव मे परमानन्द नामक पण्डित हुए, जिन्होने पुराण और वेद पढे थे। वे शतावधानी थे। उनको यह उपाधि स्वय अकबर बादशाह ने दी थी। यह परमानन्द शिरोमणि के पितामह थे।

गङ्गा यमुना बीच इकु पुण्डीरिन को गाँव
तहाँ मथुरिया बसतु हैं ताहि गम्भीरी नाम ६
माथुर भेद अनेक विधि एकु तिवारी भेदु
परमानन्द तहाँ उपजि पढ पुरान रु वेद ७
ते सत अवधानी किये समुझि चित्त की चाहि
अकबर शाहि खिताब दे प्रगट करे जग माहि ८

मोहन, शिरोमणि के पिता थे। यह जहाँगीर के दरबार मे थे। शिरोमणि शाहजहाँ के आश्रय मे थे, जब वह युवराज ही था।

"साहिजहाँ की चाकरी, जहाँगीर को राजु"

सम्भवत यह बाद मे भी उसी के आश्रय मे रहे। सरोज मे उद्धृत एक छन्द से भी इनका शाहजहाँ का आश्रित होना सिद्ध होता है।

जानि शिरोमनि साहिजहाँ ढिग बैठो महा विरहा हरु है
चपला चमको, गरजो, बरसो घन, पास पिया तौ कहा डरु है,

शिरोमणि ने नाममाला या नाम-उर्वशी[1] नामक कोषग्रन्थ बनाया है। इस ग्रन्थ मे इन्होने उक्त सारी सूचना दी है। इस ग्रन्थ की रचना सवत् १६८० मे हुई।

सवत सोरह सै असी वधनु नगर तिथि मार
मूलमहीना माघ को कृष्न पच्छ गुरुवार

ग्रन्थ की पुष्पिका मे इन्हे मिश्र कहा गया है, अत खोजरिपोर्ट मे भी इन्हे मिश्र कहा गया है। रिपोर्ट मे इन्हे तिवारी कहा गया है जो निम्नाङ्कित चरण पर निर्भर है—

"माथुर भेद अनेक विधि, एक तिवारी भेद"

इसी के आगे वाले चरण मे परमानन्द का उल्लेख है, अत परमानन्द और इनके वशज तिवारी है। इसी वश मे मुरलीधर नामक कवि हुए। मुरलीधर ने लिखा है कि परमानन्द को अकबर ने मिश्र की उपाधि दी थी,[2] अत यह लोग अपने को मिश्र ही कहते है।

सरोज मे दिया हुआ सवत् १७०३ शिरोमणि कवि का उपस्थितिकाल है, क्योकि यह शाहजहाँ के शासनकाल सवत् १६८५–१७१५ के मध्य मे पडता है। इन शिरोमणि मिश्र या तिवारी के अतिरिक्त खोज मे एक शिरोमणि जेन मिले है, जिन्होने सवत् १७५१ मे धर्मसार की रचना की।[3]

९००।७३७

(६७) सिंह कवि, सवत् १८३५ मे उ०। इन्होने बहुत सुन्दर कविता की है।

सर्वेक्षण

सिंह, कवि का पूर्ण नाम नही है। यह उसके नाम का उत्तरार्द्ध है। खोज मे एक कवि महासिंह मिले है।[4] इनका ग्रन्थ छन्द-शृङ्गार है। इसमे २२८ पद्य हैं। पहले ही छन्द मे कवि छाप 'कवि सिंघ' है।

गवरि नन्द आनन्द मय, विघन व्याधि भवभयहरन
निज नाम सीस कवि सिंघ भज, जय गनेस मगलकरन १

यह ग्रन्थ पिङ्गल का है, जो रसिको के लिये रसमार-सा है। अत इसका नाम छन्द-शृङ्गार रखा गया है।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९०६।२३५, १९२७।१७८, १९४४।४१२ (२) यही ग्रन्थ स० ६५८ (३) यही ग्रन्थ १९३२।२०९ (४) राज० रिपोर्ट, भाग ४।

छन्द बोध याते लहैं, रसिकन को रस सार
नाम धर्‌यो इन ग्रन्थ को, ताते छन्द सिंगार ४
नाम छन्द शृङ्गार है, पढतहिं प्रगट प्रमोद
छन्द भेद अरु नायका, जाको लहत प्रबोध २६

ग्रन्थ की रचना सवत् १८५३ मे हुई। इसका रचनाकाल भी सरोज के सिंह कवि के समय से मेल खाता है।

समत लोक पाडव नाग चन्दन नभ मास
धवल पच्छ पञ्चमि, कुज वार ठानियौ
स्वात नक्षत्र सुन्दर चन्द तुल रास आये
मध्य रवि समय इन्द्र जोग रमानियो
छन्द शृगार नाम यह ग्रन्थ समापति भयो
नवे नगर सहरनिज मन मानियो
कहे कवि महा सिंघ जोइ पढे वाच सोई
मेरो निते प्रने जइसी कृष्ण जानियो २२८

समय के मेल से सिद्ध होता है कि सरोज के सिंह और यह महासिंह एक ही है। इनके सम्बन्ध मे उक्त ग्रन्थ से कुछ और बाते भी ज्ञात होती है। यह मेडता के रहने वाले भारद्वाज-गोत्रीय पोहकरण सेवक जाति के ब्राह्मण थे।

भारद्वाज गोत्र पोहकरना, सेवक ख्यात कहावै
महा सघ नगर मेरते, वसे परमसुख पावै
जो कविता जन भयो अगाऊ, जाके वन्दत पारा
छन्द सिंगार ग्रन्थ यह कीनो, सा मधि हरिगुन गाया २२७

९०१।७३८

(६८) सगम कवि, स० १८४० मे उ०। यह सिंहराज के यहाँ थे।

सर्वेक्षण

सरोज मे इनके दो शृङ्गारी एव एक अन्य कवित्त उद्धृत है, जिसमे सिंहराज का नाम आया है।

राज सिरताज सिहराज महराज भूलि
ऐसो गजराज कविराज को न दीजिये

इस उद्धरण से इनका सिहराज के दरवार से सम्वन्वित होना सिद्ध होता है। सिहराज की पहचान अभी तक नही हो सकी है।

खोज मे एक सगमलाल मिले है, जो सुवश शुक्ल के वशज और टेढा विगहपुर, जिला उन्नाव के निवासी है। इनका एक ग्रन्थ कवित्त[1] नाम से मिला है।

इस ग्रन्थ मे कुल १४ कवित्त हैं। ग्रन्थ अपूर्ण है। सरोज मे उद्धृत पहला शृङ्गारी कवित्त एव ऊपर उद्धृत सिहराज वाला कवित्त इस सग्रह के क्रमश. प्रथम एव द्वितीय कवित्त हैं। इस सग्रह के ५ कवित्तो मे राजा राजसिह और व्रजनाथ के गजराजो का एव एक मे राजसिह की तलवार का वर्णन हुआ है।

सगम बखानी शम्भु रानी है रिसानी कैंधो
कैधौं है कृपानी राजसिंह महराज की १२

सुवश शुक्ल का रचनाकाल सवत् १८६१ से १८८४ तक है। सगमलाल इनके वशज हैं। अत इनका रचनाकाल सवत् १९०० के आस-पास होना चाहिये। ऐसी स्थिति मे सरोज मे दिया सवत् १८४० अशुद्ध है। अधिक से अधिक यह इनका जन्मकाल हो सकता है। सगम जी का एक अन्य ग्रन्थ "श्रीकृष्ण ग्वालिन को झगरा" मिला है।[2] यह दानलीला सम्वन्धी ग्रन्थ है।

———

९०२।७३९

(६९) सम्मन कवि, ब्राह्मण, मल्लावाँ, जिले हरदोई स० १८३४ मे उ०। इनके नीति-सम्वन्धी दोहे वहुत ही सुन्दर हैं।

सर्वेक्षण

याज्ञिक त्रय ने माधुरी मे 'सम्मन का काल'[3] शीर्षक एक लेख प्रकाशित कराया था। इसमे दोहा-सार नामक ग्रन्थ के आधार पर उन्होंने इनका रचनाकाल सवत् १७२० सिद्ध किया है

---

(१) खोज रिपोर्ट १९२३।३७२ (२) यही ग्रन्थ १९४७।३९६ (३) माधुरी, वर्ष २, खण्ड २, अङ्क ६।

खोजमे 'सम्मन के दोहे' नामक ग्रन्थ मिला है।[१] इससे कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना नही प्राप्त होती। ये दोहे नीति सम्बन्धी हैं।

विनोद (१११३) मे इनके एक ग्रन्थ 'पिङ्गल काव्यभूषण' का उल्लेख है, जिसकी रचना सवत् १८७९ मे हुई, ऐसा कहा गया है। विनोद मे सम्मन का जन्मकाल १८३४ और कविता-काल १८६० स्वीकार किया गया है। इस कवि के सम्बन्ध मे अभी और खोज की आवश्यकता है।

९०३।७४८

(७०) सवितादत्त वावू, स० १८०३ मे उ०। सत्कवि गिराविलास मे इनके कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

सविनादत्त, कवि का असली नाम है। उसने कभी-कभी रविदत्त छाप भी रख दी है। रवि, सविता का प्रसिद्ध पर्याय है। सरोज मे रविदत्त और सवितादत्त इन दोनो नामो से कवि का अलग-अलग उल्लेख हुआ है। रविदत्त को सवत् १७४२ मे उ० कहा गया है, जो ठीक है। सवितादत्त को सवत् १८०३ मे उ० कहा गया है, जो ठीक नही है। इसी वर्ष वलदेव ने अपना सत्कविगिरा-विलास सङ्कलित किया था। शिवसिह ने यही समय इसमे सङ्कलित सवितादत्त का भी दे दिया है।

सवितादत्त का एक ग्रन्थ कृष्णविलास मिला है जिससे इनके सम्वन्ध मे ठीक-ठीक जानकारी हो जाती है। कृष्णविलास नायिका भेद का ग्रन्थ है। इसकी रचना का प्रारम्भ सवत् १७३५, जन्माष्टमी भौमवार को हुआ था।

जा दिन वैस कुमार की भई वरस वाईस
साकै विक्रम भूप के सत्रह सै पैंतीस
भादर मास पुनीत अति जाते हरषित लोग
कृष्ण जन्म तिथि अष्टमी भौमवार सिद्धि जोग
कृष्ण देव जगदीश की कृपा साहि की होइ
सविता कृष्णविलास की भई जन्म तिथि सोइ
कियो सु दिन आरम्भ तिहि श्रुति मुख छन्द वनाइ
सविता सविता देव के चरण सरोज मनाइ

सवितादत्त जी, हरदोई जिले के अन्तर्गत साँडी नामक कस्वे के रहने वाले थे।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९०६।२८८

चार कोस दक्षिन बहत जामे वेई जल
तपु के भगीरथ जे काढे शिव सीस ते
साँडी नाम नगरी सिखा कन्नौज मडन की
सविता रहतु तामे साखि दस बीस ते

सवितादत्त ने अपना वश-परिचय निम्नाङ्कित छप्पय मे दिया हे ।

चतुर्वेद कुल तिलक, गोत्र गौतम मुनि जाको
विश्वनाथ वर विप्र पुत्र, केशव पुनि ताको
तासु पुत्र समरत्थ नाम, गोवर्धन गायो
जाको सुत कवि मंजु भक्त, रवि को जो कहायो
ताके सुत सविता दत्त कवि, कृष्ण साहि जस कर हरषि
पूरन प्रबन्ध सरवरु कियउ, विरद उक्ति अमृत वरषि

इस छप्पय के अनुसार सवितादत्त जा चतुर्वेदी ब्राह्मण थे और इनका गोत्र गोतम था । इनके पिता भी कवि थे । जिनका नाम मञ्जु था । वे सूर्य के उपासक थे । इसीलिये उन्होने अपने पुत्र का नाम सवितादत्त रखा था । सम्भवत बहुत दिन अपुत्र रहने के कारण सूर्य की निरन्तर आराधना करने से यह पुत्र उत्पन्न हुआ या । सवितादत्त के पितामह का नाम गोवर्धन, प्र-पितामह का केशव और प्र-प्रपितामह का नाम विश्वनाथ था । सवितादत्त ने कृष्ण साहि नरनाथ के नाम पर कृष्णविलास नामक रस एव नायिका भेद का यह ग्रन्थ रचा था ।

कृष्ण साहि आयसु भयो, आदिहि कारन जासु
नाँऊ धर्‌यो या ग्रन्थ को, याते कृष्ण विलास

भारखण्ड मे चाँदानगर है, जहाँ एक से एक उग्र एव वीर राजा हुए है । इसी वश मे एक आक साहि नामक राजा हुए, जो परम प्रतापी थे । इनके दो पुत्र हुए, वाव जी और केशव साहि । इनके आतङ्क से गोडवाना, बीजापुर, गोलकुण्डा एव निजाम हैदराबाद त्रस्त रहते थे । इसी वश मे कृष्ण साहि हुए । यह सब सूचना कवि ने ग्रन्थ के आरम्भ मे दी है, जिसका अधूरा उद्धरण रिपोर्ट मे दिया गया है ।

९०४।७४९

(७१) साधर कवि, स० १८५५ मे उ० । इनकी सामान्य कविता हे ।

सर्वेक्षण

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही ।

९०५।७५५

(७२) सम्पत्ति कवि, स० १८७० मे उ० । ऐंजन । इनकी सामान्य कविता है ।

सर्वेक्षण

सम्पत्ति कवि के सम्बन्ध मे भी कोई सूचना सुलभ नही ।

९०६।७५६

(७३) सिरताज कवि वरसाने वाले, स० १८२५ मे उ० ।

सर्वेक्षण

सिरताज के भी सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही ।

९०७।७६०

(७४) सुमेर कवि ।

सर्वेक्षण

सुमेर का उल्लेख सूदन ने किया है, अत इनका समय सवत् १८१० से पूर्व है। इनके सम्बन्ध मे कोई अन्य सूचना सुलभ नही । ग्रियर्सन(७५९)और विनोद(८३९) मे प्रमाद से इनका नाम सुमेर सिंह साहवजादे लिखा गया है। सुमेर सिंह साहवजादे तो भारतेन्दुयुगीन कवि हैं और इनका विवरण आगे ९०८ सख्या पर हे ।

९०८।७७१

(७५) सुमेर सिंह साहेवजादे । इनके कवित्त सुन्दरी तिलक मे हैं ।

सर्वेक्षण

वावा सुमेर सिंह साहेवजादे, आजमगढ के निजामावाद नामक कस्वे के रहने वाले थे । वाद मे ये पटना की हरिमन्दिर सगत के महन्त हो गये थे । यह जाति के खत्री थे । सिक्खो के तीसरे गुरु अमरदास के वशज होने के कारण यह साहेवजादे कहलाते थे । इन्होंने विहारी सतसई के दोहो पर कुण्डलियाँ लगाई थी, कवित्त नही, जैसा कि विनोद (२४८५) मे कहा गया है । रत्नाकर जी ने इस ग्रन्थ को सवत् १९६२-६३ मे देखा था । रत्नाकर जी के अनुसार इसकी

रचना संवत् १९५५-६० मे, हुई थी। बाबा जी से हरिऔध जी ने काव्य प्रेरणा पायी थी। बाबा जी भारतेन्दु के मित्रो मे थे।[2] इनके आठ सरस सवैये सुन्दरी तिलक मे हैं। इनका कोई ग्रन्थ नही मिलता। बाबा जी ने 'प्रेम प्रकाश' नामक एक वृहत प्रबन्ध काव्य सिक्खो के दस गुरुओ पर लिखा था, जो खो गया। यह ग्रन्थ १० मण्डलो मे विभक्त था। एक-एक मण्डल मे एक-एक गुरु का विवरण था। गुरु गोविन्द सिंह सम्बन्धी इसका दशम मण्डल गुरुमुखी मे छपा भी था। इन्होने कर्णाभरण नामक एक अलङ्कार ग्रन्थ भी लिखा था। गुरु गोविन्द सिंह कृत फारसी ग्रन्थ 'जफरनामा' का अनुवाद 'विजय पत्र' नाम से किया था। सन्त निहाल सिंह के साथ जाप जी की एक टीका भी लिखी थी। अन्य कई धार्मिक एव रस सम्बन्धी ग्रन्थ भी लिखे थे, पर अब सब अनुपलब्ध है।[1]

९०९।७६१

(७६) सागर कवि ब्राह्मण, स० १८४३ मे उ०। इन्होने वामा मनरञ्जन नामक शृङ्गार का ग्रन्थ बनाया है। यह कवि महाराजा टिकैत राय दीवान के यहाँ थे।

सर्वेक्षण

टिकैत राय प्रसिद्ध दानी लखनऊ के नवाब आसफुद्दौला के वजीर थे, अत आसफुद्दौला, टिकैत राय और सागर कवि समकालीन हुए। आसफुद्दौला का शासनकाल सवत् १८३२-५४ है, अत सरोज मे दिया हुआ समय सवत् १८४३ सागर कवि का उपस्थितिकाल या रचनाकाल है। यह जन्मकाल नही है जैसा कि ग्रियर्सन (४८२) और विनोद (११२८) मे स्वीकार किया गया है। विनोद के अनुसार सागर, लखनऊ निवासी ऊँचे वाले वाजपेयी थे। वामा मनरञ्जन की कोई प्रति अभी तक खोज मे नही मिली है।

लखनऊ वाले इन सागर से भिन्न एक अन्य सागर कवि मालवा नरेश जोरावर सिंह के आश्रित थे। राजा जोरावर सिंह ने रामगढ किला के निकट मानपुर ग्राम मे कवियो की एक सभा बुलाई थी, जिसमे चन्द के पुत्र बाघोरा भाट और आमेरगढ के कवि नान्हू राम उपस्थित थे। इस सभा मे जोरावर सिंह ने साहित्य-शास्त्र पर ग्रन्थ रचने को कहा था। तब इन्होने कविता कल्पतरु[2] नामक साहित्य ग्रन्थ की रचना सवत १७८८ मे की थी।

सवत सतरह सत सुनौ बरस अठासी जान
नवमी आदि असाढ पख रचना ग्रन्थ प्रमान

एक सागर कवि के अनेकार्थी नाममाला[3] एव धनजी नाममाला[4] नामक कोष ग्रन्थ तथा

---

(१) हिन्दी भाषा और साहित्य का विकास, पृष्ठ ५२२-२३ (२) खोज रिपोर्ट १९४७।४०६ (३) राज रिपोर्ट, भाग २, पृष्ठ २ (४) वही, पृष्ठ ५

रागमाला[1] नामक सगीत ग्रन्थ राजपूताने मे मिले हे। प्रथम दो का लिपिकाल १९ वी और अन्तिम का १८ वी शताब्दि है। ये तीनो ग्रन्थ ब्रजभाषा मे है। वहुत सम्भव है कि ये तीनो ग्रन्थ जोरावर सिंह के आश्रित सागर कवि की ही रचना हो।

९१०।७६५

(७७) सुखलाल कवि, स० १८५५ मे उ०।

सर्वेक्षण

सुखलाल कायस्थ थे। यह पहले काशी मे रहते थे, वाद मे अयोध्या मे रहने लगे थे। इनका लिखा ग्रन्थ हनुमान जन्म[2] है जिसकी प्रतिलिपि सम्वत् १९१२ की हुई है।

मै कायस्थ काशी को वासी
गुरु प्रसाद भयउ अवध को वासी
नहिं कछु वल वुधि नहिं चतुराई
आपन काज लागि गुनगाई
गुन गावत सुखलाल के उर आनन्द अधिकान

सम्भवत इन्ही का वनाया हुआ विवेक सागर या सुखसागर[3] नामक ग्रन्थ भी है। इसकी रचना सवत् १८४४ मे हुई।

सुकल पच्छ तिथि तीज मास असाढ सुहावनो
आदित वार कही जू ग्रन्थ भयो पूरन तवे ७६
सम्वत् सत्रा से असी वास वीस फिर वीस
ऊपर चार विचार के सम्मतसर कहि दीस ७७

ग्रन्थ मे कवि का नाम भी हे—

सुखसागर सुखलाल कहि सत सरोवर ऊव
सूझौ अन्जन ज्ञान दे मजन करयत खूव ७५

सरोज मे इनका निम्नलिखित छन्द उद्धृत है—

दसरथ के वेटे खरे खरेटे धनुष करेटे सर टेंटे
गोरे साँरेटे उर वघनेटे जरी लपेटे सिर फेटे

---

(१) राज० रिपोर्ट, पृष्ठ ६२ (२) खोज रिपोर्ट १९४७।४१५ (३) वही १९४७।४१६

नैना कजरेटे रन दुलहेटे रमा पलेटे चरनेटे
सुखलाल समेटे चारो वेटे हसि करि भेंटे सौरेटे ।

इस उद्धरण से सरोज का कवि, अवधवासी सुखलाल कायस्थ प्रतीत होता है। विनोद (७६४।१) मे राधावल्लभी सम्प्रदाय के एक सुखलाल गोस्वामी हैं जो सवत १८०० मे उपस्थित थे और अपने सम्प्रदाय के आचार्य थे। इन्होने स्फुट पद, भाषामृत, रासपञ्चाध्यायी की टीका एव हित चौरासी की टीका ग्रन्थो की रचना की है। यह सुखलाल सरोज के सुखलाल से भिन्न हैं।

विहाररिपोर्ट, भाग २, सख्या १०३ पर राधा सुधानिधि की टीका इन्ही सुखलाल गोस्वामी की मानी गई है। किन्तु यह ठीक नही। यह टीका इन गोस्वामी जी के एक शिष्य तुलसीदास ने की थी। इस ग्रन्थ मे तुलसीदास का नामस्मरण नही किया गया है, जैसा कि विहाररिपोर्ट मे लिखा गया है। राधावल्लभी तुलसी ने अपना दैन्य प्रकट किया है।

आरत तुलसीदास को श्री वचननि विसराम

अन्त मे तो वहुत स्पष्ट कथन है—

श्री हित वश मे प्रगट हैं श्री सुखलाल अनूप
मेरे सव सुक्खनि हनौ अद्भुत कृपा सरूप ३३

विहाररिपोर्ट इसी प्रकार की अनेक भ्रष्टताओ से भरी हुई है।

९११।७३०, ७६७

(७८) सुजान कवि भाट। इनके शृङ्गार के अच्छे कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

सरोज के प्रथम, द्वितीय एव तृतीय सस्करणो मे सुजान कवि भाट के स्थान पर केवल सुजान है। प्रो० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र का अनुमान है कि यह सुजान घनानन्द प्रिया सुजान हैं। यह मुसलमान वार वधू थी, मुहम्मद शाह रगीले के दरवार की गायिका थी, यह उसका हिन्दू नाम है। प्रवीन राय के ही समान सुजान राय को समझना चाहिये। राय लगा देखकर शिव सिंह ने इसे कोई पुरुष भाट समझ लिया था। सप्तम सस्करण मे उदाहरण देते समय भी सुजान कवि भाट लिखा हुआ है। यदि शिव सिंह ने ही ऐसा लिखा था, तो उनकी भूल का कारण मिश्र जी ने स्पष्ट कर दिया है।[1] इसका रचनाकाल स० १८०० के आस-पास है।

---

(१) घन आनन्द ग्रन्थावली, भूमिका, भाग २, पृष्ठ ६१-६७

९१२।७६९

(७९) सवल सिंह कवि । इन्होने षट्ऋतु वरवै और भाषा ऋतुसहार, ये दो ग्रन्थ साहित्य के बहुत ही सुन्दर वनाये हैं । दोनो ग्रन्थो मे कवि का गाम, कुल और सन्-सम्वत् नही है ।

सर्वेक्षण

ग्रियर्सन, विनोद एव आचार्य शुक्ल, सभी ने षट्ऋतु वरवै एव भाषा ऋतुसहार के रचयिता सवल सिंह तथा महाभारत के रचयिता प्रसिद्ध सवल सिंह की एकता स्वीकार की है । इनको अभिन्न मान लेने मे कोई बाधा नही । सवल सिंह चौहान का विवरण आगे सख्या ९१३ पर है ।

९१३।७९५

(८०) सवल सिंह चौहान, स० १७२७ मे उ० । इन्होने दोहा-चौपाइयो मे महाभारत के २४ हजार श्लोको का उल्था वहुत ही सक्षेप के साथ किया है । कोई कहता है कि यह कवि चन्दगढ के राजा थे तो कोई कहता है कि सवलगढ के थे । इनके वश वाले आज तक जिले हरदोई मे हैं । परन्तु हम इसे ठीक नही मानते । हम कहते हैं कि यह कवि जिला इटावा के किसी ग्राम के जमीन्दार थे और आप ही १० पर्वो का उल्था किया सूचीपत्र लिखा है ।

सर्वेक्षण

भाषाकाव्य सग्रह मे महेश दत्त मिश्र इनके सम्वन्ध मे यह लिखते हैं—

"ये फर्रुखावाद जिले मे रामगगा के तट पर सवलपुर के रहने वाले वडे परिश्रमी पण्डित थे कि देखो सम्पूर्ण महाभारत को भाषा किया । अव इनके लडके-वाले हरदोई जिले के साई ग्राम मे रहते हैं ।"

शिव सिंह जी ने इसी सवलपुर का सवलगढ कहकर खण्डन किया है । सवल सिंह चौहान क्षत्रिय के रूप मे प्रसिद्ध है, न कि पण्डित रूप मे ।

पण्डित मातादीन मिश्र ने सवल सिंह के सम्वन्ध मे एक दूसरी कथा दी है । इनके अनुसार सवल सिंह चन्दगढ के राजा थे । इन्हे कोई पुत्र नही हो रहा था । पण्डितो ने इनका नाम चलाने के लिये सम्वत् १७२७ मे इनके नाम से महाभारत का अनुवाद प्रारम्भ किया । सवत् १७२७ तो सरोजकार ने यहीं से लिया है पर चन्दगढ का खण्डन किया है । इस कथा को भी नहीं स्वीकार किया है । महाभारत का रचयिता इन्ही को माना है अज्ञातकुल शील पण्डितो को नही ।

सबल सिंह ने सवत १७१२ से १७८१ के बीच सम्पूर्ण महाभारत का सुन्दर अनुवाद किया। सर्गो के अन्त मे रचनाकाल भी दे दिया है,[1] जिससे यह तथ्य प्रकट होता है, यथा—

(१) भीष्म पर्व सवत् १७१२ (२) कर्ण पर्व, स० १७२४ (३) शल्य पर्व, स० १७२४ (४) सभा पर्व, स० १७२७ (५) द्रोण पर्व, स० १७२७ (६) मुशल पर्व, स० १७३० (७) आश्रमवासिक पर्व स० १७५१ (८) स्वर्गारोहण पर्व, स० १७८१। —— खोज रिपोर्ट १९०६।११२

शिव सिंह को केवल १० पर्वो का पता था। महाभारत के अतिरिक्त इनके निम्नाकित ग्रन्थ और कहे जाते हैं—

(१) रूपविलास पिङ्गल १९०६।११२, इसका रचनाकाल स० १७५६ है।

(२) षट्ऋतु बरवै अथवा भाषा ऋतुसहार——यह एक ही ग्रन्थ है, दो नही। जैसा कि सरोज मे एव अन्यत्र लिखा मिलता है। उदाहरण देते समय दोनो की एकता स्वय सरोज मे मान ली गई है।

(३) भागवत दशमस्कन्ध भाषा।

सबल सिंह ने स्वर्गारोहण पर्व को छोड महाभारत के प्राय अन्य सभी पर्वो मे औरङ्गजेब और राजा मित्र सेन का उल्लेख किया है। इससे मिश्र बन्धुओ का अनुमान है कि इन लोगो से सबल सिंह सम्बन्धित थे, सम्बन्ध चाहे जो रहा हो।

९१४।७७२

(८१) शेखर कवि। इनके शृङ्गार के सुन्दर कवित्त है।

सर्वेक्षण

शेखर का पूरा नाम चन्द्रशेखर बाजपेयी है।[2] इनका जन्म पौष शुक्ल १०, स० १८५५ मे असनी, जिला फतेहपुर के निकट मुअज्जमाबाद मे हुआ था। इनके पिता मनीराम जी भी सुकवि थे। असनी के करनेस कवि इनके काव्य-गुरु थे। चन्द्रशेखर जी २२ वर्ष की वय मे स० १८७७ मे घर से निकले। पहले यह दरभगा नरेश के यहाँ गए, जहाँ यह ७ वर्षो तक रहे। स० १८८४ मे जोधपुर नरेश मान सिंह के यहाँ गए। यहाँ यह १०० रु० मासिक पर ६ वर्षो तक रहे। जोधपुर से यह पजाब केशरी रणजीत सिंह के दरबार मे जा रहे थे पर पटियाला मे रह गए, जहाँ यह अन्त तक रहे। अब भी इनके वजश पटियाला मे है। इनकी मृत्यु स० १९३२

---

(१) विनोद कवि सख्या ३६० (२) शिवाधार पाण्डेय लिखित शेखर शीर्षक लेख, मर्यादा, भाग ४, स० १, १९१२ ई०।

मे हुई। यह पटियाला मे महाराज कर्म सिंह के समय मे गए और महाराज नरेन्द्र सिह के समय तक वर्त्तमान रहे।

चन्द्रशेखर जी के तीन ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके है और तीनो का सम्पादन रत्नाकर जी ने किया था।

(१) नख शिख, भारत जीवन प्रेस, काशी से प्रकाशित।

(२) हम्मीर हठ, सभा द्वारा प्रकाशित। इसकी रचना पटियाला नरेश महाराज नरेन्द्र सिह की आज्ञा से फागुन वदी ४, स० १९०२ को हुई थी। इसमे कुल ४०३ छन्द है।

(३) रसिक विनोद, रचनाकाल माघ सुदी ७, शनिवार, स० १९०३। भारत जीवन प्रेस, काशी से प्रकाशित।

इनके अप्रकाशित ग्रन्थ ये है—(१) माधवी वसन्त, (२) हरि-भक्ति विलास, (३) राजनीति (४) वृन्दावन शतक, (५) गुरुपञ्चाशिका, (६) ज्योतिष का ताजक। शुक्ल जी ने इनके एक अन्य ग्रन्थ विवेक-विलास का और उल्लेख किया है। शुक्ल जी के इतिहास मे 'गुरुपञ्चासिका' 'गुह पञ्चासिका' हो गई है।

९१५।७७७

(८२) शशिशेखर कवि, स० १७०५ मे उ०। इनके कवित्त हजारे मे है।

सर्वेक्षण

हजारे मे शशिशेखर जी के कवित्त थे, अत स० १७५० के पूर्व या आस-पास इनका अस्तित्व सिद्ध है। इससे अधिक इनके विषय मे कोई सूचना सुलभ नही।

९१६।७७५

(८३) सोमनाथ कवि, स० १८८० मे उ०।

सर्वेक्षण

सोमनाथ जी छिरौरा वशीय माथुर नरोत्तम मिश्र के प्रपौत्र थे। नरोत्तम जी जयपुर नरेश राम सिंह, (राज्यारोहण काल स० १७२४) के मन्त्र-गुरु थे।[1] नरोत्तम मिश्र के दो पुत्र हुए, देवकीनन्दन और श्रीकण्ठ। देवकीनन्दन जी सोमनाथ के पितामह थे। देवकीनन्दन के चार पुत्र

(१) विनोद ७२०

हुए—नीलकण्ठ, मोहन, महापति और राजाराम। नीलकण्ठ जी सोमनाथ के पिता थे। सोमनाथ के दो वडे भाई और थे, आनन्दनिधि और गगाधर। यह विस्तृत परिचय सोमनाथ जी ने अपने सुजान विलास एव रामचरित्र रत्नाकर[1] मे दिया है। दोनो ग्रन्थो मे एक ही छन्द हैं।

मिश्र नरोत्तम नरोत्तम, भए छरौरा वस
राम सिह के मन्त्र गुरु, माथुर कुल अवतंस ३६
तिनके पुत्र प्रसिद्ध, देवकी नन्दन भए
विद्या बुद्धि समुद्र, जगत उत्तम जस लए ३७
तिनके अनुज अनूप, एक श्रीकण्ठ सुहाए
ताके जागे भाग, जिनन वे दरसन पाए ३८
उपजे नन्दन मिश्र के, चारि पुत्र सुखदानि
नीलकण्ठ मोहन वहुरि, मिश्र महापति जानि ३६
चौथे राजाराम पुनि, मन मे पहिचान
सवै भाति लाइक सवै, निपट रसिक उर आनि ४०

काम अवतार से अनूप अति रूप करि,
सील करि सुन्दर सरद सुधाधर से
कविता मे व्यास के प्रमान कहि सोमनाथ
जुद्ध रीति जानिवे की पारथ से दरसे
बुद्धि करि सिन्धुर वदन के समान अरु
उद्धत उदारता मे भूमि सुर तरु से
सिद्धता मे विमल वसिष्ठ मुनिवर से औ
जोतिस मे नीलकण्ठ मिश्र दिनकर से ४१

तिनके पुत्र अनन्द निधि वडे उजागर जानि
तिनकौ जस सु दिगन्त लौं महा उजागर आनि ४२
गगाधर तिनके अनुज, गगाधर परवान
सोमनाथ तिनको अनुज, सव तें निपट अज्ञान ४३

सोमनाथ जी भरतपुर नरेश वदन सिंह के पुत्रद्वय सूरजमल एव प्रताप सिह के आश्रय मे

(१) खोज रिपोर्ट १६१७।१७६ डी

रहकर साहित्य सेवा करते रहे। इनका असल नाम तो सोमनाथ था, किन्तु कभी-कभी यह शशिनाथ छाप भी रखा करते थे। सोमनाथ छाप कवित्तो और ससिनाथ छाप सवैयो मे प्राय देखी जा सकती हैं। यह अपनी छाप कभी-कभी नाथ भी रखते थे।[1] कभी-कभी छाप देते ही नही थे।[2] इन रहस्य को न जानने के कारण दिग्विजय भूषण, सरोज और ग्रियर्सन मे सोमनाथ तथा शशिनाथ अलग-अलग दो कवि समझ लिए गए है। सोमनाथ जी के निम्नलिखित ग्रन्थ खोज मे मिल चुके है—

(१) रस पीयूषनिधि, १९०६।२९८ ए, १९१७।१७९ एफ। यह दशाग काव्य का अत्यन्त उत्कृष्ट ग्रन्थ है। यह प्रताप सिह के लिए रचा गया गया था। इसका रचनाकाल स० १७९४, ज्येष्ठ वदी १०, भृगुवार हैं।

> **सत्रह सै चौरानवा, संवत जेठ सु मास**
> **कृष्ण पक्ष दशमी भृगो, भयो ग्रन्थ परकास**

(२) रास पञ्चाध्यायी, १९०६।२९८ बी। रिपोर्ट मे ग्रन्थ का वर्णन कृष्ण-लीलावती पञ्चाध्यायी नाम से हुआ है। सम्पूर्ण ग्रन्थ सोमनाथ रत्नावली मे सङ्कलित है। इस ग्रन्थ की रचना स० १८०० मे, अगहन शुक्ल २, बुधवार को हुई।

> **सवत ठारह सै बरस, उत्तम अगहन मास**
> **शुक्ल द्वितीया, वुद्ध दिन, भयो ग्रन्थ परकास**

कवि ने अन्त मे शशिनाथ छाप दी है—

> **माथुर कवि शशिनाथ को, सुकविन कौं परनाम**
> **भूले होय सो सोधियो, यही गुनिन कौ काम**

इसमे आश्रयदाता का नाम नही है।

(३) रामचरित्र रत्नाकर, १९१७।१७९ डी ई। यह वाल्मीकि रामायण का अनुवाद है। यह भाषान्तर प्रताप सिह के लिए प्रस्तुत किया गया था। खोज मे इसके अयोध्याकाण्ड, अरण्य-काण्ड, किष्किन्धाकाण्ड और सुन्दरकाण्ड मिल चुके हैं। अयोध्याकाण्ड मे रचनाकाल स० १७९९ दिया गया है।

> **सत्रह सै निन्यानमौ, सवत सावन मास**
> **शुक्ला दसमी वार भृगु, भयो ग्रन्थ परकास**

(४) राम कलाधर १९१७।१७९। मी। यह रामचरित्र सम्बन्धी ग्रन्थ है। कुछ पता नही

---

(१) सोमनाथ रत्नावली, पृष्ठ ८५।१७, ९०।३१ (२) वही, पृष्ठ ८७।२३, ९१।३४

कि यह रामचरित्र रत्नाकर से किसी प्रकार सम्बद्ध है अथवा कोई स्वतन्त्र ग्रन्थ है। बहुत सम्भावना है कि यह उक्त ग्रन्थ ही हो। इसके अन्त मे निषाद और राम की प्रथम भेट का वर्णन है, अत इसमे पूरी कथा आ नही पायी है। ग्रन्थ मे न तो रचनाकाल है और न आश्रयदाता का उल्लेख ही।

(५) सुजान विलास, १९००।८२, १९१७।१७९ जी। यह सूरजमल उपनाम सुजान के लिए लिखा गया सिंहासनबत्तीसी का अनुवाद है। इसकी रचना स० १८०७ मे जेठ सुदी ३, रविवार को हुई।

सवत विक्रम भूप को अट्ठारह सै सात
जेठ सुद्ध त्रितिया रवी भयो ग्रन्थ अवदात

कवि ने आश्रयदाता का स्पष्ट उल्लेख किया है—

श्री वदन सिंह भुवाल जदुकुल मुकुट गुननि विसाल है
तिहि कुँवर सिंह सुजान सुन्दर हिन्द भाल दयाल है
तिहि हेत कवि ससिनाथ ने यह किय सुजान विलास है
बत्तसि पुतरीं की कथा यह पुर्न ग्रन्थ प्रकास है ८८

(६) माधव विनोद नाटक, १९०४।४७। यह मालती माधव का प्रबन्धकाव्य के रूप मे अनुवाद है, नाटक नही है। यह ग्रन्थ प्रताप सिंह के लिए स० १८०९ मे, आश्विन शुक्ल १३, भृगुवार को पूर्ण हुआ।

ठारह सै अरु नव बरस, सवत आश्विन मास
शुक्ल त्रोदसो, भृगु दिना, भयो ग्रन्थ परकास

(७) ध्रुव चरित्र, १९१७।१७९ बी। इस ग्रन्थ की रचना स० १८१२, जेठ वदी १३, भृगुवार को हुई।

सवत ठारह सै बरस, बारह जेठ सुमास
कृष्ण त्रोदसी, वार भृगु, भयो ग्रन्थ परकास ५७

कवि ने निम्नलिखित दोहे मे अपने को ग्रन्थ का कर्त्ता कहा है—

माथुर कवि ससिनाथ ने, ध्रुव चरित्र यह कीन
जाके गुन बर्नन सुने रीझै हिये प्रवीन ५६

(८) ब्रजेन्द्र विनोद, १९१७।१७९ ए। सोमनाथ ने श्रीमद्भागवत के दशम स्कन्ध का

भाषानुवाद किया था। प्राप्त ग्रन्थ इसी का उत्तरार्द्ध है। इसमे रचनाकाल नही दिया गयाहै। यह ग्रन्थ सूरजमल के लिए रचा गया था। सूरजमल की मृत्यु स० १८२० मे हुई, अत यह ग्रन्थ स० १८२० से पहले रचा गया रहा होगा।

ब्रज इन्द्र परम सुजान सूरज मल्ल सुन्दर हेत ही
कवि सोमनाथ विचित्र ने वरन्यो सुबुद्धि समेत ही
भागवत दशम स्कध भाषा अति पवित्र सुभाइ कै
यह नव्वयो अध्याय ताकौ भयो हरि गुन गाइ के

इन ८ ग्रन्थो के अतिरिक्त सोमनाथ रत्नावली मे इनके निम्नलिखित तीन ग्रन्थ और कहे गए हैं।

(१) शशिनाथ विनोद, इसमे शिव-पार्वती का विवाह वर्णित है। (२) कमलाधर, हो सकता है यह राम कलाधर का विकृत नाम हो। (३) प्रेम पच्चीसी, यह सोमनाथ के सम्भवत प्रेम-सम्बन्धी २५ कवित्त-सवैयो का सग्रह है।

शिव सिंह को सोमनाथ की कोई जानकारी नही थी, ऐसा प्रतीत होता है। सरोज मे इनका जो एक छन्द है, वह दिग्विजय भूषण से उद्धृत है। इनका समय स० १८८० अनुमान से दिया गया है जो अशुद्ध है। ऊपर दिए गए ग्रन्थो के विवरण से इनका रचनाकाल स० १७९४-१८१२ सिद्ध है। इनका जीवनकाल स० १७६०-१८२० माना जा सकता है।

९१७।७७६

(८४) शशिनाथ कवि। इनके शृङ्गार के सुन्दर कवित्त है।

सर्वेक्षण

प्रसिद्ध कवि सोमनाथ कवित्तो मे अपनी छाप सोमनाथ और सवैयो मे शशिनाथ या केवल नाथ रखते थे। एक ही ग्रन्थ के विभिन्न छन्दो मे यह बात देखी जा सकती है। नवीन ने भी सुधासर के अन्त मे सलग्न दुत छापी कवि-सूची मे ससिनाथ और सोमनाथ को एक कवि कहा है। सरोज मे शशिनाथ के नाम पर जो छन्द उदाहृत है, वह दिग्विजय भूषण से उद्धृत है। दिग्विजय भूषण मे सोमनाथ और शशिनाथ की भिन्नता स्वीकृत है, आधार के भ्रान्त होने के कारण सरोज मे यह अभेद मे भेद आ गया है। सोमनाथ का पूर्ण विवरण पीछे सख्या ९१६ पर देखा जा सकता है।

९१८।७७८

(८५) सहीराम कवि, स० १७०८ मे उ०। हजारे मे इनके कवित्त है।

सर्वेक्षण

सहीराम के सम्वन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही।

९१९।७७९

(८६) सदानन्द कवि, स० १६८० मे उ०। इनका काव्य वहुत ही सुन्दर है। हजारे मे इनका केवल एक ही कवित्त है और दिग्विजय भूषण मे दोहे है।

सर्वेक्षण

सदानन्द नाम के निम्न चार कवियो का पता चलता है—

(१) सदानन्द मिश्र—यह जौनपुर और आजमगढ के रहने वाले थे और वलदेव मिश्र के वडे भाई थे। इन्ही सदानन्द के पुत्र हरजू मिश्र थे, जिन्होने स० १७६६ मे अमरकोप टीका की रचनाकी थी एव विहारी सतसई का आजमशाही अनुक्रम प्रस्तुत किया था। इन सदानन्द की कविता हजारे मे हो सकती हे।[१]

(२) सदानन्द महापात्र—यह कविराज महापात्र के पुत्र और सुखलाल महापात्र के पिता थे। इन्ही के वश मे आगे चलकर शिवराज[२] महापात्र स० १८६६ मे हुए। इन सदानन्द की भी कविता हजारे मे हो सकती है।

(३) सदानन्ददास—इनकी रचना नन्दजी की वशावली[३] है। इसके अन्तिम दो चरण है–

इह वंशावली वखानी ढाढी, हर्षे वल्लवराज
श्री सदानन्द प्रानन वारत, रग भीनी सकल समाज

यदि वल्लवराज से अभिप्राय महाप्रभु वल्लभ से है, तो यह वल्लभ-सम्प्रदाय के कोई व्यक्ति हैं। यह हजारे वाले सदानन्द से पूर्ववर्ती और भिन्न है।

---

(१) सोमनाथ रत्नावली, कवि सख्या ९८७ (२) यही ग्रन्थ, कवि सख्या ८५१ (३) खोज रिपोर्ट १९०९।२७१, १९२३।३६५

(४) सदानन्द—भगवन्त राय खीची के आश्रित कवि और भगवन्त राय रासा[१] के रचयिता। यह हजारे वाले सदानन्द से परवर्ती हैं।

हजारे वाले सदानन्द या तो पहले हैं या दूसरे। यह शृङ्गारी कवि हैं। सरोज मे उदाहृत कवित्त दिग्विजय भूषण[२] से उद्धृत है। सम्भवत यही एक कवित्त हजारे मे भी था। मिश्रबन्धुओ ने इनके तीन कवित्त देखे थे। विनोद २८३ मे उद्धृत कवित्त सरोज मे उदाहृत कवित्त से भिन्न है। विनोद मे इनका कविताकाल स० १६८५ माना गया है।

९२०।७८०

(८७) सकल कवि, स० १६९० मे उ०। हजारे मे इनके कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

सकल कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही। यह सं० १७५० के पूर्ववर्ती है, क्योकि इनकी रचना हजारे मे थी।

९२१।७८१

(८८) सामन्त कवि, स० १७३८ मे उ०। यह कवि औरङ्गजेब के यहाँ थे। हजारे मे इनके कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

सामन्त कवि की रचना हजारे मे थी और यह औरङ्गजेब के यहाँ थे, अत सरोज मे दिया स० १७३८ कवि का रचनाकाल या उपस्थितिकाल ही है, उत्पत्तिकाल नही। सरोज मे इनका एक कवित्त उद्धृत है, जिसमे औरङ्गजेब की प्रशस्ति है।

९२२।७८२

(८९) सेन कवि नापित, बान्धवगढ के सं० १५६० मे उ०। हजारे मे इनमे कवित्त हैं। यह कवि स्वामी रामनन्द जी के शिष्य थे।

सर्वेक्षण

सरोज मे सेन के नाम पर यह कवित्त दिया गया है।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९२३।३६४ ए, बी (२) दिग्विजय भूषण, अष्टम प्रकाश, सङ्करालङ्कार, छन्द ३९।

जब ते गोपाल मधुवन को सिधारे आली,
मधुवन भयो मधु दावन विषम सो
सेन कहै सारिका सिखण्डी खञ्जरीट सुक
मिलि के कलेस कीनौ कालिंदी कदम सो
जामिनी वरन यह जामिनी मे जाय जाय
वधिक को जुगुति तनावै टेरि तम सों
देह कारी किरच करेजो कियो चाहत है
काग भई कोयल कगायो करै हम सो

यह कविता प्रसिद्ध भक्त सेन की नही हो सकती। भक्त सेन की कविता का उदाहरण सिक्खो के गुरुग्रन्थ साहब मे देखा जा सकता है। यह कवित्त तो सवत् १६५० के बाद की रचना प्रतीत होता है। मिश्र बन्धुओ ने भी इस तथ्य को समझा है, अत उन्होंने इस शृङ्गारी सेन को भक्त सेन से अलग किया है और विनोद सख्या ५१ पर उल्लेख किया है। सरोज मे विवरण एक सेन का और उदाहरण दूसरे सेन का दिया गया है। भक्त सेन रामानन्द के द्वादश शिष्यो मे से एक हैं। यह रीवाँ के नाई थे और स० १४५७ के आस-पास उपस्थित थे। भक्तमाल मे इनका उल्लेख छप्पय ६३ मे हुआ है।

९२३।७८८

(९०) सीतारामदास, वनिया वीरापुर, जिले बारावकी। वि० । ये जोड-गाँठ लेते है।

सर्वेक्षण

सरोजकार ने सीतारामदास वनिया का विवरण महेशदत्त के भाषाकाव्यसग्रह के आधार पर दिया है। उदाहरण भी वही से लिया है। विनोद (२३३८) के अनुसार इनका जन्मकाल स० १९०७ है और इन्होने ज्ञानसारावली नामक ग्रन्थ रचा था।

९२४।७९०

(९१) सुकवि कवि, स० १८५५ मे उ०। इनके शृङ्गार के सुन्दर कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

सुकवि किसी भी व्यक्ति का नाम नही हो सकता, यह उपाधि है। यह या तो कवि द्वारा स्वय धारण कर ली गई है अथवा किमी आश्रयदाता द्वारा प्राप्त हुई है। सुकवि छाप वाले सरोज के इस कवि का वास्तविक नाम क्या है, कहा नही जा सकता।

९२५।७९४

(९२) सगुणदास कवि। इनके कवित्त रागसागरोद्भव मे है।

सर्वेक्षण

सरोज मे सगुणदास का एक पद उद्धृत है, जिसमे वल्लभाचार्य की स्तुति है। अत यह वल्लभ-सम्प्रदाय के भक्त कवि है।

नेही श्री वल्लभ के ह्वै गाजो
चरनाबुज गहि, मान ग्रन्थि तजि, स्वामी पद ते भाजो
गीता भागवत निगम से साखी, तौ काहे को लाजो
गीत गोविन्द विल्व मङ्गल सी बाँकी कहि सके अनदाजो
पुरुषोत्तम इनहीं तैं पैये नृह दृढ मति तुम साजो
सगुणदास कहे जुवति सभा मे गिरिधर महल विराजो

यह गोसाईं विट्ठलनाथ के अन्तरङ्गीय सेवक[1] थे। गोसाईं जी का देहावसानकाल १६४२ है, अत सगुणदास का रचनाकाल सं १६००-१६४० के आसपास होना चाहिए। सम्भवत सूर की भाँति पहले यह भी स्वामी थे और शिष्य किया करते थे, तभी इन्होने कहा है—

"स्वामी पद ते भाजो"

९२६।७५८

(९३) सुवश शुक्ल, विगहपुर, जिले उन्नाव वाले, सवत् १८३४ मे उ०। यह महाराज प्रथम राजा उमराव सिह वन्वल गोती अमेठी के यहाँ रहे। अमर कोष, रस तरङ्गिणी, रस मञ्जरी, ये तीन ग्रन्थ सस्कृत से भापा मे किए। फिर राजा सुब्बासिह ओयल के यहाँ जाकर विद्वन्मोद-तरङ्गिणी नामक ग्रन्थ के वनाने मे राजा साहव की सहायता की। यह महाकवि हो गए है और इनका काव्य देखने योग्य है।

---

(१) श्री आचार्य महप्रभु की प्राकट्य कर्ता—गुजराती मे लिखित अंश, पृष्ठ १३।

सर्वेक्षण

सुवश शुक्ल, टेढा विगहपुर, जिला उन्नाव के रहने वाले थे। यह केशी के शुक्ल थे और इनके पिता का नाम प्रयागदत्त था। इनके मुख्य आश्रयदाता, विसवाँ, जिला सीतापुर के कायस्थ चौधरी उमराव सिह थे। सरोज मे उमराव सिह को वन्धल गोती क्षत्रिय और अमेठी का राजा कहा गया है, जो अशुद्ध है। अमर कोश या उमराव कोश मे कवि ने उमराव सिह का पूरा वश परिचय दिया है। उमराव सिह पाँच भाई थे–(१) धौकल सिह,(२) भूम सिह, (३) उमराव सिह, (४) बखतावर सिह, (५) ईश्वरी सिह। उमराव सिह के पिता का नाम शिव सिह और चाचा का भवानी सिह था। इनके पितामह का नाम अमर सिह और प्रपितामह का वालचन्द था। सुवश के अन्य आश्रयदाता ओयल के सुव्वा सिह उपनाम श्रीधर थे। इन्ही श्रीधर ने इनकी सहायता से विद्वन्मोद तरङ्गिणी नामक ग्रन्थ वनाया था। इनके कुछ अन्य आश्रयदाता साधौराम मिश्र, डौडियाखेरे के राजा रघुनाथ सिह एव सुदर्शन सिह भी थे। सुवश जी के वनाए हुए निम्नांकित ग्रन्थ खोज मे मिले है —

(१) रस तरङ्गिणी, ११२६।४७५ ए, फ। यह ग्रन्थ स० १८६१ मे रचा गया।

> १ ६ ८ १
> ससि रस अरु वसु वसुमती सवत् वर्ष विचार
> कातिक सुदि गुरु तीज को भयो ग्रन्थ अवतार

यह रस और नायिका भेद का ग्रन्थ है। इसकी रचना उमराव सिह के लिए हुई।

> वानी के पद वन्दि के महा मोद सरसाइ
> कवि सुवस उमराव को देत असीस वनाइ

(२) उमराव कोश या अमरकोश, १६०५।८८, १६२०।१६१, १६२३।४२२डी, १६२६।४७५, ए, वी, १६४७।४१६क। इस ग्रन्थ की रचना स० १८६२ मे हुई।

> २ ६ ८ १
> युग रस वसु अरु निसापति, सवत् वर्ष विचारि
> माघ कृष्ण प्रतिपदा को भयो ग्रन्थ अवतार

यदि युग का अर्थ चार लिया जाय, तो इसका रचनाकाल स० १८६४ हो जायगा। यह ग्रन्थ भी उमराव सिह के लिए लिखा गया। ग्रन्थ मे उमराव सिह को आशीर्वाद दिया गया है।

> "सुख देव नृपति उमराव को, उमा उमानन्दन हरषि"

इसमे विसवाँ की भी प्रशसा है—

> देस देस जाहिर नरेस यो वखान को
> वेस औध मण्डल मे विसवाँ वसत है।

ग्रन्थ की पुष्पिका से भी पर्याप्त सूचनाएँ मिलती हैं।

"इति श्री विश्वनाथ पुराखण्ड मण्डल धराधीश कायस्थ चौधरी सिवसिह वसावतस उमराव सिह कारिते सुवस कवि विरचिते उमराव कोषे तृतीय काण्डे अनेकार्थ पुस्तक अमरकोष समाप्त मृ।।" यह अमर कोष का पद्यानुवाद है।

(३) उमराव वृत्ताकर या पिङ्गल, १६०६।३०६, १६२३।४२२ ई, १६२६।४७५ सी,डी। यह ग्रन्थ भी उमराव सिंह के ही लिए वना—

गनपति गौरि गिरीस गिरा गुरु गोपाले ध्याय
कवि सुवस उमराव को देत असीस बनाय

इस ग्रन्थ की रचना स० १८६५ मे वसन्तपञ्चमी को हुई —

५ ६ ८ १
सर रस वसु ससि जानियो, सवत वर्ष विचार
माघ शुक्ल सित पञ्चमी, भयो ग्रन्थ अवतार

उमराव वृत्ताकर और पिङ्गल एक ही ग्रन्थ के दो नाम हैं, दो अलग-अलग ग्रन्थ नही, जैसा कि अप्रकाशित सक्षिप्त विवरण मे स्वीकार किया गया है।'

(४) रस मञ्जरी, १६२६।४७५ ई। इस ग्रन्थ की रचना स० १८६५, सावन सुदी १३, गुरुवार को हुई—

५ ६ ८ १
सर षट वसु अरु ससि कह्यो, सवत वर्ष विचार
सावन सुदि तेरसि गुरौ, भयो ग्रन्थ अवतार

रिपोर्ट मे उद्धृत अश मे उमराव सिह का नाम कही नही आया है।

(५)राम चरित्र, १६२३।४२२ वी। इस ग्रन्थ की रचना स० १८७६ मे आषाढ वदी ११ को हुई।

६ ७ ८ १
रस रिसि वसु औ वसुमती, सवत बरस विचार
असित असाढ एकादसी, राम चरित अवतार

रामचरित्र की रचना साधोराम मिश्र की आज्ञा से हुई थी।—

साधोराम सुवस पै जितनी करी सहाइ
सो तो रसना एक सो कैसे बरनी जाइ

जासो विन श्रम ही मिलै चारि पदारथ मित्र
एक द्योस मोसो कह्यो बरनौ राम चरित्र

(६) द्विघटिका, १९१२।१८० । यह सस्कृत के इसी नाम के ज्योतिप-ग्रन्थ का भाषानुवाद है--

द्विघटिका शिव कृपा ते भाषा कीन सुवस
शम्भु कृपा ते सुधी कवि करिहैं सकल प्रसस

यह अनुवाद स० १८८३ मे हुआ--

गुन[3] वसु[8] वसु[8] अरु वसुमती[1], सवत वर्ष विचार
फागुन सित दसमी गुरौ, द्वैघटिका अवतार

(७) ढेकी या झगरो राधा-कृष्ण १९०२।१०७, १९२३।४२२ ए, १९४७।४१९ ख । इस ग्रन्थ मे न तो किसी आश्रयदाता का नाम है, और न रचनाकाल ही दिया हुआ है। यह अत्यन्त सरस-काव्य है। इसमे अ से लेकर ह तक के अक्षरो से प्रारम्भ होने वाले दोहा, कवित्त और कहावते है। पहले दोहा है, तदनन्तर कवित्त, फिर कहावत। कुछ पता नही, इस ग्रन्थ का नाम ढेंकी क्यो रखा गया। १९२३ वाली रिपोर्ट मे 'ठेकि' पाठ है।

(८) स्फुट-काव्य, १९२३।४२२ सी। इस गन्थ मे सुवश जी के फुटकर छन्द सङ्कलित है। इसमे रचनाकाल नही दिया गया है। इसमे डोडियाखेरे के राजा रघुनाथ सिह और सुदर्शन सिह की भी प्रशस्ति है। प्रारम्भ मे गणेश और कृष्ण की स्तुति, वसन्त और वर्षा-वर्णन, भङ्ग-प्रशस्ति, फिर नर-काव्य, तदनन्तर वीर, रौद्र, करुण, हास्य, भयानक, वीभत्स रसो और भक्ति-भाव तथा गङ्गा एव उपदेश सम्वन्धी छन्द है। ग्रन्थ अच्छा है।

सुवश के काव्य-शिष्य श्रीधर कृत विद्वन्मोद तरङ्गिणी, (रचनाकाल स० १८७४ या १८८४) मे उदाहरण स्वरुप इनकी वहुत सी कविताएं उद्धृत हैं। पूर्व वर्णित ग्रन्थो के रचनाकाल पर ध्यान देने से सुवश शुक्ल का रचनाकाल स० १८६१-८४ ज्ञात होता है। अत सरोज मे दिया स० १८३४ इनके जन्मकाल के निकट है।

विनोद (११२२) मे उमराव कोष के आधार पर सुवश के दो अन्य ग्रन्थो—उमराव शतक और उमराव प्रकाश, का उल्लेख हुआ है, जो अभी तक खोज मे नही उपलब्ध हो सके है।

९२७।९९७

(९४) सरदार कवि वन्दीजन वनारसी। वि०। यह महाकवि महाराजा ईश्वरीनारायण सिंह काशी-नरेश के यहाँ विद्यमान है। इस महानीच काल मे ऐसे उत्तम मनुष्यो का होना महा

लाभ समझना चाहिये । इनके बनाए हुए जो ग्रन्थ हमने देखे-सुने वे है—साहित्य सरसी, हनुमत् भूपण, तुलसी भूपण, मानस भूपण, कविप्रिया का तिलक, रसिकप्रिया का तिलक, श्रृङ्गार-सग्रह और तीन सौ अस्सी सूरदास के कूटो की टीका । इनके शिष्य नारायण राय इत्यादि बडे कवि हैं ।

सर्वेक्षण

सरदार भारतेन्दु-युग के प्राचीन काव्यधारा के श्रेष्ठ कवियो मे से है । यह ललितपुर, झाँसी के रहनेवाले थे । इनके पिता का नाम हरिजन वन्दीजन था । यह काशीनरेश महाराज ईश्वरीनारायण सिंह के आश्रित थे । इनका रचनाकाल स० १९०२-४० है । यह सुकवि होने के साथ-साथ सुन्दर टीकाकार भी थे । इनके शिष्य नारायणराय भी अच्छे कवि थे । इन्होने सरदार के कई साहित्यिक कार्यो मे योग दिया है । सरदार चरखारी के प्रसिद्ध कवि प्रताप साहि के शिष्य थे । यह काशी मे भदैनी महल्ले मे रहा करते थे । इनका देहावसान स० १९४० मे हुआ । सरदार के वनाए ग्रन्थो की सूची यह है--

(क) टीका ग्रन्थ—

(१) काशिराज प्रकाशिका, १९०४।५६ । यह केशव कृत कविप्रिया की टीका है ।

(२) सुख विलासिका, १९०४।५७ । यह केशवकृत रसिकप्रिया की टीका है । इसके प्रणयन मे नारायण का भी कुछ सहयोग रहा है । इसकी रचना स० १९०३ मे हुई ।

शिव दग(३), गगनो(०), ग्रह(९) सु पुन, रद(१) गनेस को साल
जेठ शुक्ल दसमी सु गुरु, करो ग्रन्थ सुखमाल

यह ग्रन्थ नवल किशोर प्रेस, लखनऊ, से प्रकाशित हो चुका हे ।

(३) साहित्य लहरी की टीका--यह सूरदास के ३८० दृष्टिकूटो की टीका हे । यह टीका भी नवल किशोर प्रेस, लखनऊ, से प्रकाशित, हो चुकी है ।

(४) विहारी सतसई की टीका—सरोज मे इस टीका का उल्लेख हुआ है । रत्नाकर जी के पास इस टीका की एक प्रति थी । रत्नाकर जी का अनुमान हे कि यह टीका स० १९२० और १९३० के बीच किसी समय वनी ।

(ख) अन्य ग्रन्थ—

(५) ऋतु वर्णन, १९०९।२८३ सौ । इस ग्रन्थ मे २४३ छन्द हैं । मेरा अनुमान है कि यह कोई स्वतन्त्र ग्रन्थ नही है । यह श्रृङ्गार-सग्रह का षट्ऋतु वर्णन वाला अश है । श्रृङ्गार-सग्रह के इस प्रकरण मे २७७ कवित्त-सवैये है ।

(६) शृङ्गार-सग्रह, १६०६।२८३ए । यह सग्रह ग्रन्थ है और इसका रचनाकाल स० १६०५, भादौ कृष्ण अष्टमी, मङ्गलवार है—

सवत वान[५] खहो[०] ग्रह[९] सो पुनि गौरि के नन्दन को द्विज[१] धारन
भादव कृष्ण अनूपम अष्टमी, रोहिनि ऋच्छ, मही सुत वारन
उत्तम जो कवि हैं तिनके अति उत्तम जानि कवित्त विचारन
संग्रह सो सरदार कियो यह इश्वरी सिंह महीपति कारन

इस सग्रह मे १२५ पुराने कवियो की कविताएँ है। कवि ने अपने छन्द भी इसमे दिए हैं। इसमे नायिका भेद, नायक भेद,पूर्वानुराग, छवि वर्णन, नखशिख, ऋतु वर्णन, नर काव्य, नीति, भडौआ तथा काव्य विचार आदि विषयो के कवित्त विभिन्न अध्यायो मे सङ्कलित है। पजनेस, नारायण और भारतेन्दु के पिता गोपालचन्द्र के कुछ छन्द अलग अलग इन कवियो के नाम-शीर्षको से सङ्कलित हैं। यह सग्रह नवल किशोर प्रेस, लखनऊ से प्रकाशित हो चुका है। ग्रियर्सन ने इस ग्रन्थ का उपयोग अपने ग्रन्थ 'द मॉडर्न वर्नाकुलर लिटरेचर आफ नदर्न हिन्दुस्तान' के प्रस्तुत करने मे किया था।

(७) व्यग्यविलास, १६०६।२८३ बी। नायिका भेद का यह लघु ग्रन्थ बरवै छन्दो मे रचा गया है। इसकी रचना स० १६१६ मे विजयादशमी को हुई थी।

सवत उनइस उनइस, आसिन मास
विजय मुहूरत सुचि दिन ग्रन्थ प्रकास

(८] साहित्य सुधाकर, १६०३।६२, १६२०।१७४। इस ग्रन्थ मे काव्य-लक्षण, शव्द-अर्थ, ध्वनि-लक्षण, आलवन, उद्दीपन, ध्वनिनिरूपण, मध्यम काव्यनिरूपण, अलङ्कार, नायिकाभेद, नव रस आदि का वर्णन है। इस ग्रन्थ की रचना स० १६०२ मे चैत्र रामनवमी को हुई थी।

संवत इक घट बीस सत, ताके ऊपर दोइ
पूरन किय सरदार कवि, राम जनम तिथि जोइ

इस ग्रन्थ मे कवि ने अपना पूरा परिचय निम्नलिखित दोहे मे दिया है—

नगर ललितपुर वास हे, काशीपति के पास
कीनी हरिजन नन्द जहँ, हरि जन हेत विलास

(६) रामरण रत्नाकर, १६०४।७६। यह रामायण हे, केवल सुन्दरकाण्ड मिला है। इसका प्रतिलिपिकाल स० १६०३ है।

(१०) रामरस वज्रमन्त्र १६०४।८६। इस ग्रन्थ मे सरदार कवि के दुहरे अर्थ वाले १७६ कवित्तो का सग्रह है। टीका भी दे दी गई है।

(११) मानस-रहस्य, १६४१।२७६। इसकी रचना स० १६०४ मे हुई—

४ ० ९ १
फल प्रकास ग्रह आतमा, माघ शुक्ल बुधवार
काशीपति की कृपा तें, किय पूरन विस्तार

(१२) तर्कप्रकाश भाषा, १६४४।४४१ क।

(१३) रामकथाकल्पद्रुम, १६४४।४४१ ख।

(१४) रामलीला प्रकाश, १६०३।१५४। विनोद (१८०६) के अनुसार इसकी रचना स० १६०६ मे हुई।

इन रचनाओ के अतिरिक्त सरदार के निम्नङ्कित ग्रन्थो का नाम और भी मिलता है— (१) साहित्य सरसी, (२) हनुमत् भूषण (३) तुलसी भूषण (४) मानस भूषण। इन चारो ग्रन्थो का सर्वप्रथम उल्लेख सरोज मे हुआ है और विनोद मे भी इनका निर्देश है।

(५) मुक्तावली नामक सस्कृत के न्याय-ग्रन्थ का दोहा चौपाइयो मे अनुवाद। इसकी सूचना रत्नाकर जी ने विहारी सतसई सम्वन्धी साहित्य मे दी है।[१]

९२८।६६८

(९५) सूरदास व्राह्मण, व्रजवासी, वावा रामदास के पुत्र, वल्लभाचार्य के शिष्य, स० १६४० मे उ०। इन महाराज के जीवन चरित्र से सव छोटे-वडे आगाह है। भक्तमाल इत्यदि मे इनकी कथा विस्तारपूर्वक है। इनका वनाया सूरसागर ग्रन्थ विख्यात हे। हमने इनके पद ६० हजार तक देखे हैं, समग्र ग्रन्थ कही नही देखा। इनकी गिनती अष्टछाप अर्थात् व्रज के आठ महाकवीश्वरो मे हैं।

सर्वेक्षण

सूरदास का जन्म स० १५३५, वैशाख शुक्ल ५, को दिल्ली के निकटवर्ती सीही ग्राम मे एक निर्धन सारस्वत व्राह्मण परिवार मे हुआ था। यह जन्मान्ध थे और चार भाइयो मे सवसे छोटे थे। ये वाल्यावस्था ही मे विरक्त होकर घर से निकल गए और अपने जन्मस्थान के एक निकटवर्ती गाँव मे ही शकुन विचार और गान-विद्या से पेट भरने लगे। यहाँ से भी विरक्त होकर यह मथुरा-आगरा के वीच रुनकता नामक ग्राम मे आकर कुछ दिन रहे, जिसे लोगो ने इनका जन्मस्थान समझ लिया है। फिर यहाँ से तीन मील पश्चिम जमुना के किनारे गऊघाट पर रहने लगे। यहाँ

---

(१) ना० प्र० पत्रिका, कार्तिक १६८५, पृष्ठ ३३३

यह ३१ वर्ष की वय तक रहे। यही महाप्रभु वल्लभाचार्य ने स० १५६७ मे इन्हे अपने वल्लभ-सम्प्रदाय मे दीक्षित किया। तदनन्तर सूरदास गोवर्द्धन आए और श्रीनाथ जी की सेवा मे लग गए। यहाँ इनका स्थायी निवास निकटवर्ती गाँव परासोली था। अभी तक विद्वान् इन्हे स० १६२० तक ही जीवित मानते आए थे, पर प्रभुदयाल मीतल के अनुसार वे स० १६४० तक जीवित रहे और सरोज के अनुसार वे स० १६४० मे उपस्थित थे। इसी साल या इसके शीघ्र ही बाद इनका देहान्त हुआ।[1]

सूरदास के तीन ग्रन्थ प्राय· सर्वमान्य है, (१)—सूरसागर, (२) सूरसारावली (और ३) साहित्य-लहरी। सूरसागर का एक सुन्दर सरकरण सभा से प्रकाशित हो चुका है। इसमे ५ हजार पद है। न जाने कैसे शिवसिह जी ने ६० हजार पद देख लिए। साहित्य-लहरी सूर के दृष्टकूटो का सग्रह सा है। इसकी कई टीकाएँ हो चुकी है। यह ग्रन्थ भी कई स्थानो से और कई टीकाकारो के परिश्रम से प्रकाशित हो चुका है। नवीनतम टीका अभी कुछ दिनो पहले लहेरिया सराय से प्रकाशित हुई हे। इस ग्रन्थ मे रचनाकाल भी दिया हुआ है।

मुनि पुनि रसन के रस लेख
दसन गौरीनन्द को लिखि सुबल सवत् पेख।

रसन के अर्थ पर मतभेद होने से इसका रचनाकाल १६०७,१६१७ और १६२७ माना जाता है। सूरसारावली स्वतन्त्र रूप से प्रकाशित देखने मे नही आई। बहुत पहले राधाकृष्णदास जी ने १६०० ई० के आस-पास सूरसागर का जो सस्करण बम्बई से प्रकाशित कराया था, उसके प्रारम्भ मे यह ग्रन्थ भी सलग्न है। यह सूर के ६७ वे वर्ष मे स० १६०२ मे लिखी गई थी।

"गुरुप्रसाद होत यह दरसन सरसठ वरस प्रवीन"

सूरदास न तो अकबरी दरबार के गायक थे और न तो अकबरी दरबार के गायक बाबा रामदास के पुत्र ही।[2]

९२९।७०३

(९) सूदन कवि, स० १८१० मे उ०। यह कवि राजा बदन सिंह के पुत्र सूजान सिंह के यहाँ थे। इन्होने कविता बहुत सुन्दर की है, दस कवित्त कवियो के नाम गणना के लिखे है। हमारे पास वे दस कवित्त थे, परन्तु किसी कारण से केवल अन्त वाला एक कवित्त रह गया, सो हम लिखते है।

---

(१) अष्टछाप परिचय, पृष्ठ १३४-४१ (२) यही ग्रन्थ, कवि स० ७३३ तथा सूर मिश्र निर्णय, पृष्ठ १०३-४

सोभनाथ, सूरज, सनेही, शेख, श्यामलाल,
साहेब, सुमेरु शिवदास, शिवराम हैं
सेनापति, सूरति, सरवसुख, सुखलाल
श्रीधर, सबल सिंह, श्रीपति सु नाम हे
हरिपरसाद, हरिदास, हरिवश, हरि,
हरिहर, हीरा से हुसेन हितराम हे
जस के जहाज जगदास के परम पति
सूदन कविन्दन को मेरो परनाम है

सर्वेक्षण

सूदन का पूरा नाम मधुसूदन[1] था। यह मथुरा निवासी थे और वसन्तराम चौबे के पुत्र थे।

मथुरा पुर सुभ धाम माथुर कुल उतपत्ति वर
पिता वसत सु नाम, सूदन जानहु सकल कवि

सूदन भरतपुर के जाट राजा वदन सिंह के पुत्र सूरजमल उपनाम, सुजान के आश्रित थे इनकी आठ लडाइयो का वर्णन सूदन ने सुजान-चरित्र नामक ग्रन्थ मे किया है। यह ग्रन्थ खोज मे मिल चुका है।[2] १९०२ ई० मे सभा ने इसका एक सस्करण प्रकाशित भी किया था। इसका सम्पादन राधाकृष्णदास जी ने किया था। इस ग्रन्थ मे स० १८०२ से लेकर स० १८१० तक की घटनाओ का वर्णन है। ग्रन्थ सम्भवत खण्डित है। प्रत्येक अङ्क की समाप्ति पर अन्तिम चरण मे अल्प परिवर्तन के साथ निम्नलिखित छन्द दुहराया जाता रहा है—

भूपाल पालक भूमिपति व दनेस नन्द सुजान हैं
जाने दिलीदल दक्खिनी, कीने महा कलिकान हैं
ताको चरित्र कछूक सूदन कह्यो छन्द बनाइकैं
कहि देव ध्यान कवीस नृपकुल, प्रथम अक सुनाइकैं

ग्रन्थ की समाप्ति पर यह छन्द नही है। ग्रन्थ की रचना स० १८१० या इसके बाद शीघ्र ही किसी समय हुई। जिस समय की घटनाओ का विवरण इस ग्रन्थ मे है, उस समय वदन सिंह (राज्यकाल सवत् १७७९-१८१२) भरतपुर नरेश थे, सूरजमल युवराज थे। सूरजमल का शासन-काल स० १८१२-२० है। इस समय यदि सूदन जीवित होते, तो ग्रन्थ अवश्य ही पूर्ण हो गया

---

(१) माधुरी, फरवरी १९२७, भरतपुर और हिन्दी, पृष्ठ ७९ (२) खोज रिपोर्ट १९००।८१, १९१२।१८१, १९१७।१८१

होता। इस ग्रन्थ मे परिगणन-प्रणाली अत्यधिक मात्रा मे प्रयुक्त हुई है। शब्दो की तोड-मरोड भी पर्याप्त है। पञ्जावी, मारवाडी, पूरवी, तथा खडीवोली मे भी अनेक छन्द इस ग्रन्थ मे लिखे गए हैं। सूदन, हिन्दी के वीररस के श्रेष्ठ कवियो मे से है। इन्होने सुजान चरित्र के प्रारम्भ के ६ कवित्तो मे (छन्द ४ से ६ तक) हिन्दी के १७५ कवियो के नाम दिए है और उन्हे प्रणाम किया है। यह नामसूची १० कवित्तो मे नही है, जैसा कि सरोज मे लिखा गया है। हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखनेवालो ने इस सूची से पर्याप्त लाभ उठाया है। पहले लाभ उठाने वाले स्वय शिव सिंह हैं।

सरोज मे स० १८१० उपस्थितिकाल है, यह जन्मकाल कदापि नही हो सकता, जैसा कि ग्रियर्सन ३६७ मे स्वीकृत है।

९३०।७०४

(९७) सेनापति कवि, वृन्दावनवासी, स० १६८० मे उ०। इन महाराज ने वृन्दावन मे क्षेत्र-सन्यास लेकर सारी वयस वही व्यतीत की। इनके काव्य की प्रशसा हम कहाँ तक करे, अपने समय के ये भानु थे। इनका काव्यकल्पद्रुम ग्रन्थ वहुत ही सुन्दर है। हजारे मे इनके वहुत कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

सेनापति जी कान्यकुब्ज दीक्षित ब्राह्मण थे। इके पिता का नाम गङ्गाधर, पितामह का परशुराम और गुरु का हीरामणि दीक्षित था। इन्होने अपना परिचय निम्न कवित्त मे दिया है—

दीछित परसुराम दादो है विदित नाम
जिन कीन्हे जज्ञ, जाकी जग मे वडाई है
गङ्गाधर पिता गङ्गाधर के समान जाके
गङ्गा तीर वसति अनूप जिन पाई है
महा जानमनि, विद्या दानहू मे चिन्तामनि,
हीरामनि दीछित तें पाई पण्डिताई है
सेनापति सोइ सीतापति के प्रसाद जाकी
सव कवि कान दै सुनत कविताई है

'गङ्गातीर वसति अनूप जिन पाई है' के 'अनूप' शब्द को पकडकर विद्वानो ने कल्पना की है कि यह वुलन्दशहर जिले के अन्तर्गत गङ्गा तट स्थित अनूपशहर के निवासी थे। श्री जितेन्द्र भारतीय शास्त्री का अभिमत है कि सस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान् भट्ट नागेश दीक्षित ही का उपनाम सेनापति था। लोगो ने भ्रमवश सेनापति को अनूपशहर का निवासी मान रखा है।

यह गङ्गा तट स्थित सिंगरौर के राजा रामदत्त चन्द्र के आश्रय मे थे। नागेश जी का जन्म स० १६७० वि० के लगभग हुआ था। शास्त्री जी के विचार मे पर्याप्त बल है।[1]

सेनापति का एक ही काव्यग्रन्थ कवित्त रत्नाकर सुलभ है। इसका एक सुन्दर संस्करण प्रयाग विश्वविद्यालय की हिन्दी परिषद् ने प्रकाशित किया है। इस ग्रन्थ की रचना स० १७०६ मे हुई—

सवत सत्रह सौ छ मे, सेइ सियापति पाय
सेनापति कविता सजी, सज्जन सजौ सहाय

इस ग्रन्थ की अनेक पूरी अधूरी प्रतियाँ खोज मे मिली हैं। इसमे पाँच तरङ्गें हैं—(१) श्लेष, (२) शृङ्गार, (३) ऋतु वर्णन, (४) रामायण, और (५) राम रसायन। ये सभी तरङ्ग अलग-अलग ग्रन्थो के रूप मे भी मिली हैं, यथा—कवित्त १९०६।२३१, १९४१।२९७, कवित्त रत्नाकर १९०९।२८७, १९२३।३७९ ए, बी, १९२६।४३३ ए, बी, कवित्त रामायण १९३२।१९६ ए। रस तरङ्ग १९१२।१७१, रसायन १९३८।१९६ बी, श्लेष १९२०।१७६, षट्ऋतु कवित्त १९०४।५१। अन्तिम पाँच प्रतियाँ तो उक्त ग्रन्थ की एक-एक तरङ्गे मात्र हैं। लोगो ने अपनी-अपनी रुचि के अनुसार उतार लिया है।

सरोज के अनुसार सेनापति ने वृन्दावन मे क्षेत्र संन्यास ले लिया था, इसकी पुष्टि सेनापति के इस कवित्त से होती है—

सेनापति चाहत है सकल जनम भरि
वृन्दावन सीमा तें न बाहिर निकसिबो
राधा मन रञ्जन की, शोभा नैन कञ्जन की
माल गरे गुञ्जन की, कुञ्जन की बसिबौ

सरोज मे सेनापति के एक काव्यकल्पद्रुम का उल्लेख है। कवित्त-रत्नाकर की इसमे चर्चा नही है। काव्यकल्पद्रुम से जो चार कवित्त सरोज मे उदाहृत हैं, उनमे से तीन प्रकाशित कवित्त-रत्नाकर मे उपलब्ध हैं। ऐसी दशा मे मेरा विश्वास है कि कवित्त रत्नाकर का ही दूसरा नाम काव्यकल्पद्रुम भी है।[2] विनोद २७८ मे सेनापति का जन्मकाल स० १६४६ दिया गया है।

---

(१) ब्रज भारती, वर्ष १२, अङ्क २,३, स० २०११ (२) वही।

९३१।७०५

(९८) सूरति मिश्र, आगरे वाले, स० १७६६ मे उ० । इस महान् कवीश्वर ने वहुत ग्रन्थ वनाए हैं। इन्होंने सतसई का टीका वहुत ही विचित्र वनाया है और सरस रस, नख-शिख, रसिक प्रिया का तिलक, अलङ्कार माला, ये चार ग्रन्थ भी इन्होने वहुत सुन्दर वनाए हैं।

सर्वेक्षण

सूरति मिश्र आगरा के रहने वाले कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे, जैसा कि इन्होंने स्वय कहा है—

सूरति मिश्र कनौजिया, नगर आगरे वास

यह जोधपुर के दीवान अमर सिंह, नसरुल्ला खाँ, वीकानेर नरेश जोरावर सिंह और दिल्ली के वादशाह मुहम्मद शाह के आश्रित थे। जयपुर वाले राय शिवदास और हास्यरस की प्रसिद्ध कृति खटमल वाईसी के रचयिता अली मुहिव्व खाँ प्रीतम के यह काव्य-गुरु थे। इनका रचनाकाल स० १७६६-१८०० है। खोज मे सूरति मिश्र के निम्नलिखित ग्रन्थ मिले हैं—

टीका ग्रन्थ—

(१) अमर चन्द्रिका, १९०६।२४३ सी, १९०९।३१४ सी, १९२३।४१९ सी, १९२६।४७४ ए, राज० रिपोर्ट, भाग १। यह विहारी सतसई की टीका है। जोधपुर नरेश महाराज अभय सिंह के मन्त्री भण्डारी नाडूला अमर सिंह के निर्देशानुसार यह टीका वनी।

जोधपुर राज महाराज श्री अभय सिंह
नौ कोटि नाथ गाथ प्रसिद्ध वखानियै
तिनके सचिव रायराया श्री अमर सिंह
कोविद सिरोमनि जगत जस गानियै
तिन्हों मिश्र सूरत सुकवि सौं कृपा सनेह
करिकै कही यौं एक वात उर आनियै
कविन विहारी सतसइया तापै टीका कीजे
जी कौ सुखदाई नीकौ अर्थ यातें जानियै

कवि ने अपने आश्रयदाता का वश परिचय भी दिया है—

भण्डारी परसिद्ध जग, नाडौला गुन धाम

यह टीका स० १७९४ मे प्रस्तुत की गई—

सत्रह सै चौरानवे, आस्विन सुदि गुरुवार
अमर चन्द्रिका ग्रन्थ कौ, विजय दसमि अवतार ११

यह टीका गद्य,पद्य और प्रश्नोत्तर रूप मे है।

(२) कविप्रिया सटीक, १९१२।१८६, १९२३।४१९ ए। यह टीका भी गद्य-पद्य और प्रश्नोत्तर रूप मे है। शृङ्गार सार मे इसका नाम नही है, अत यह १७८५ के वाद की रचना है।

(३) रसिक प्रिया की टीका, यह टीका दो नामो से मिलती है—

(अ) रस गाहक चन्द्रिका, १९०६।२४३ ए, १९०९। ३१४ ए, १९२६।४७४ जी। यह टीका सवत् १७९१, वैशाख शुक्ल पक्ष रविवार को वनी—

सत्रह सै इक्यानवे, माधव सुदि रविवार
यह रस गाहक चन्द्रिका, पुष्य नखत अवतार २९

'माधव सुदि' के वदले 'माघ सुदी' पाठ भी मिलता है। इसकी रचना जहानावाद के नसरुल्ला खाँ, उपनाम रस गाहक, के लिए हुई थी, इसीलिए इस टीका का नाम रसगाहक चन्द्रिका पडा।

रसिक प्रिया टीका रची, सूरत सुकवि वनाय
यह रस गाहक चन्द्रिका, नाम धर्‌यो सुख पाय २
तखत जहानावाद मे, श्री नसरुल्ला खान
दान ज्ञान विरयान विधि जस जिहि प्रगट जहान ४

यह जहानावाद सम्भवत शाहजहानावाद या दिल्ली है—

वादशाह दिय नाम निवाज, मुहम्मद खॉ जग जानै
रस गाहक यह नाम, आपनो कविताई मैं आनै

(व) जोरावर प्रकाश, १९०६।२४३ डी, १९१७।१८९ ए, १९२६।४७४ एफ, राज० रिपोर्ट, भाग ३, पृष्ठ १४४। इसकी रचना स० १८०० मे हुई—

सवत सत अष्टादशे, फागुन सुदि गुरुवार
जोरावर प्रकास कौ, तिथि सप्तमि अतवार

इसकी रचना वीकानेर नरेश जोरावर सिह के आदेश से हुई—

वीकानेर प्रसिद्ध है, अति पुनीत सुभ धाम
× × ×
श्री जोरावर सिह जू, राज करत तिहि ठौर
सव विद्या में अति निपुन, जिन समान नहिं और
× × ×
तिन कवि सूरति मिश्र पै कृपा नेह अति कीन

जोरावर प्रकाश, वस्तुत रसगाहक चन्द्रिका ही है। आगे-पीछे के भूमिका और उपसंहार वाले अश निकालकर, उनके स्थान पर नवीन दोहे जोडकर नवीन आश्रयदाता के नाम पर नवीन ग्रन्थ बना लिया गया है।

अन्य काव्य-ग्रन्थ—

(४) अलङ्कार माला, १६०३।१०४। सरोज मे इस ग्रन्थ से तीन दोहे उद्धृत हैं। पहला दोहा मङ्गलाचरण का है और दूसरे मे कवि ने आत्म परिचय दिया है।

सूरति मिश्र कनौजिया, नगर आगरे वास
रच्यो ग्रन्थ नव भूषनन, वलित विवेक विलास

तीसरे दोहे मे रचनाकाल स० १७६६ दिया गया है—

संवत सत्रह सै वरस, छासठि सावन मास
सुर गुरु सुदि एकादसी, कीन्हो ग्रन्थ प्रकास

सरोज मे सूरति मिश्र का यही समय दिया गया है। यह अलङ्कार का ग्रन्थ है और इसमें ३१७ दोहे हैं।

(५) काव्य सिद्धान्त, १६०६।२४३ ई, राज० रिपोर्ट ३, पृष्ठ १२४। राजस्थान रिपोर्ट के अनुसार इस ग्रन्थ की रचना स० १७६८ कार्तिक सुदी ७, बुधवार को हुई। परन्तु कवि सिद्धान्त का नाम श्रृङ्गार सार मे आया है। कवि सिद्धान्त और काव्य सिद्धान्त एक ही ग्रन्थ के दो नाम प्रतीत होते हैं। यदि ऐसा है तो इसका रचनाकाल स० १७८५ से पहले का होना चाहिए। इस ग्रन्थ मे कुल १५० छन्द हैं।

(६) छन्द सार, १६४१।२६३ ख, राज० रिपोर्ट २, पृष्ठ १०। श्रृङ्गारसार मे इसका नाम है, अत यह स० १७८५ के पहले की रचना है। इसमे २६७ छन्द हैं।

(७) नख-शिख राधा जू को, १६२३।४१६ वी। इस ग्रन्थ मे कुल ४१ कवित्त हैं। श्रृङ्गार-सार मे नाम है, अत यह स० १७८५ से पहले की कृति है।

(८) प्रबोध चन्द्रोदय नाटक, १६४१।२६३ क। श्रृङ्गार सार मे इसका नाम नही है, अत यह स० १७८५ के बाद की रचना है।

(९) भक्त विनोद, १६१७।१८६ वी, राज० रिपोर्ट १। इस ग्रन्थ मे नीति, वैराग्य, ईश-भक्ति, षट्ऋतु वर्णन तथा नायिकाभेद आदि विभिन्न विषयो के ३२४ फुटकर दोहे, कवित्त, सवैया आदि सङ्कलित हैं। श्रृङ्गार सार मे नाम है, अत यह सं० १७८५ के पहले की रचना है। इसी का नाम भक्ति-विनोद भी है।

(१०) रस रत्नमाला, १९०१।८६, १९०२।६६, १९०६।२४३ बी, १९२०।१९० । इस ग्रन्थ का नाम रसरत्न और रस रत्नाकर[1] भी है । इसकी रचना स० १७६८ मे हुई थी ।

८ ६ ७ १
वसु रस मुनि ससि सम्मतहिं, माधव, रवि दिन पाय
रच्यौ ग्रन्थ सूरति सु यह, लहि श्रीकृष्ण सहाय ६६

यह एक लघु रस-ग्रन्थ है । रस रत्न नामकरण का कारण कवि ने इस दोहे मे दिया है—

चौदह ए सब कवित्त हैं, चौदह रत्न प्रमान
याते नाम सो ग्रन्थ को, यह रस रत्न बखान

कवि ने अपने इस ग्रन्थ की टीका भी कर दी है । यह टीका मेडता के ऋषभगोत्रीय ओसवाल सुलतानमल के लिए स० १८०० श्रावण मे की गई थी—

सवत सत अष्टादशै, सावन छठि भृगुवार
—राज० रिपोर्ट ३, पृष्ठ १४०

(११) सरस रस या रस सरस, १९०९।३१४ बी । इस ग्रन्थ की रचना स० १७९४ वैशाखसुदी ६, को हुई ।

सतरह सै चौरानवे, सवत सुभ वैसाख
भयो ग्रन्थ पूरन सु यह, छठि ससि पुष सित पाख ३०

इस ग्रन्थ की रचना आगरे मे समवेत एक कविमण्डल के आदेश से हुई थी । खोज रिपोर्ट एव राज० रिपोर्ट १ मे इसे राय शिवदास की रचना कहा गया है ।

एक समै मधि आगरे, कवि समाज को जोग
मिल्यो आइ सुखदाइ हिय, जिनकी कविता जोग २२
तब सबही मिलि मंत्र यह, कियो कविन बहु जान
रच्यो सु ग्रन्थ नवीन इक, नए भेद रस ठान २३
जिहि विधि कवि मिलि कै कही, जथा जोग लहि रीति
उनहीं मे सब सभवै, कहे भेद युत प्रीति २४
अपनी मति परमान सो, कहे भेद विस्तार
लखौ सु यामे न्यूनता, सो कवि लेहु सुधारि २५
कवि अनेक मति मै हुते, पै मुख कवि परवीन
जाके सम्मत से भयो, पूरन ग्रन्थ नवीन २६

---

(१) खोज रिपोर्ट १९२६।४७४ एच ।

सूरति राम सुकवि सरस, कान्यकुब्जहू जान
वासी ताही नगर को, कविता जाहि प्रमान २७
केतक धरे सु ग्रन्थ मे, करि कवित्त कविराइ
ताही सो गम्भीरता, अरथ बरन दरसाइ २८
आठौ रस रस भेद मे, जे बरने मति ठान
राजनीति मे सम्भवै, ते मति लीजो मान २९

एक प्रति की पुष्पिका मे इसे लाल कवि सचित कहा गया है--

"इति श्री लाल सचित सर सरस ग्रन्थे रसनिरूपणो नाम अष्टमो विलास सम्पूर्ण ग्रन्थ समाप्तम्शुभमस्तु कल्याणमस्तु ॥ ८ ॥ सवत १८७७ मे श्री लल्लू जी लाल कवि ब्राह्मण, गुजराती सहस्र उदीच आगरेवारे ने सूरत कवि के सर सरस ग्रन्थ कौ प्राचीन कवियो के कवित्त मिलाय बढाय शोधकर छपवायौं निज छापाघर में श्रीमान् पण्डित कवि रसिकनि के आनदार्थ इति ॥"

—माधुरी वर्ष ३, खण्ड १, अङ्क ३

स्पष्ट है कि सर सरस या सरस रस ग्रन्थ मूलत सूरति मिश्र की रचना है। १८७७ मे लल्लू जी लाल ने इसे परिवर्द्धित किया। इस परिवर्द्धित सस्करण मे आठ विलास १३१ छन्द है। इसमे निम्नलिखित कवियो की रचनाएँ सचित है।[1]

(१) आलम, (२) उदयनाथ, (३) कल्याण, (४) कवीन्द्र, (शायद उदयनाथ ही), (५) केशवदास, (६) गग, (७) दत्त, (८) दयाराम, (९) भगवत, (१०) मतिराम, (११) महाकवि, (कालिदास त्रिवेदी) (१२) लाल, (शायद सङ्कलयिता स्वय), (१३) वीर, (१४) सुजान, (घनानन्द प्रिया), १५ सूरति मिश्र, (१६) सेनापति, (१७) हठी।

(१२) श्रृङ्गार सार, १९३२।२१३। इस ग्रन्थ की रचना स० १७८५ मे आपाढ सुदी ३, गुरुवार को हुई थी—

सवत सत्रह सै तहाँ, वर्ष पचासी जानि
भयो ग्रन्थ गुरु पुष्य मे, मित अषाढ त्रय मानि

इस ग्रन्थ से कवि के पिता का नाम सिघमनि मिश्र और गुरु का गगेश ज्ञात होता है।

नगर आगरौ वसत सौ, वाँकी ब्रज की छाँह
कालिन्दी कलमष हरनि, सदा वहति जा माँह

---

(१) माधुरी, वर्ष १, खण्ड २, अङ्क ४, अप्रैल १९२३, सुमन सञ्चय।

भगवत पारायन भए, तहाँ सकल सुखधाम
विप्र कनावज कुल कलस, मिश्र सिन्धमनि नाम
तिनके सुत सूरति सुकवि, कीने ग्रन्थ अनेक
परम रम्य वरणन विषै, पूरी अधकसी टेक
माथे पर राजित सभा, श्रीमद्गुरु गगेस
भक्तिकाव्य की रति लही, लहि जिनके उपदेस

इस ग्रन्थ मे कवि ने १७८५ तक के लिखित अपने ११ ग्रन्थो के नाम भी दिए हैं—

(१) श्रीनाथ विलास, (२) कृष्ण चरित्र, (३) भक्त विनोद, (४)भक्तमाला (५)कामधेनु, (६) नख-शिख, (६) छन्द सार, (८) कवि सिद्धान्त, (९) अलङ्कार माला, (१०) रसरत्न, (११) शृङ्गार सार । इनमे से श्रीनाथ विलास, कृष्ण चरित्र, भक्तमाला और कामधेनु ये चार ग्रन्थ अभी तक नही मिले हैं।

प्रथम कियो सत कवित्त मे, इक श्रीनाथ विलास
इकही तुक पर तीन सौ, प्रास नवीन प्रकास
श्री भागवत पुरान के, तह श्रीकृष्ण चरित्र
वरने गोवर्द्धन धरन, लोला लागि विचित्र
भक्त विनोद सु दीनता, प्रभु सो भिक्षा चित्त
देव तीर्थ अरु पूर्व के, समय समय सु कवित्त
वहुरि भक्तमाला कहीं, भक्तन के जस नाम
श्री वल्लभ आचार्य के, सेवक जो गुन धाम
कामधेनु इक कवित्त मे, कढत सत वरन छन्द
केवल प्रभु के नाम तँह, धरे करन आनन्द
इक नखशिख माधुर्य है, परम मधुरता लीन
सुनत पढत जिहि होत है, पावन परम प्रवीन
छन्द सार इक ग्रन्थ है, छन्द रीति सब आहि
उदाहरन मे प्रभु जसे, यो पवित्र विधि ताहि
कीनो कविसिद्धान्त इक, कवित्त रीति कों देखि
अलङ्कार माला विषै, अलङ्कार सब लेखि
इक रस रत्न कोन्हो वहुरि, चौदह कवित्त प्रमान
ग्यारह से वावन तहा, नाइकान को ज्ञात

सार सिंगार तहँ, उदाहरन रस रीति
चारि ग्रन्थ के लोक हित, रचे धारि हिय प्रीत

(१३) वैताल पचीसी ,१९२६।४७४ बी, सी, डी, ई। यह सस्कृत वेताल पचविंशतिका का ब्रजभाषा गद्य मे अनुवाद है। इसी का सहारा लेकर लल्लू जी लाल ने फोर्ट विलियम कॉलिज के लिए अपनी वैताल पचीसी का अनुवाद प्रस्तुत किया था। विनोद के अनुसार यह अनुवाद जयसिंह सवाई की आज्ञा से हुआ।

(१४) रास लीला।
(१५) दान लीला। } —राज० रिपोर्ट, भाग ४, पृष्ठ २९, ३०

ये दोनो ग्रन्थ एक ही जिल्द मे मिले है। रासलीला का प्रारम्भिक एव दानलीला का अन्तिम छन्द उद्धृत हैं। दानलीला वाला यह छन्द सरोज मे भी उद्धृत है। दानलीला मे कुल ५० छन्द हैं। इस प्रकार खोज मे सूरति मिश्र के कुल १५ ग्रन्थ मिल चुके हैं। इनके ५ और भी ग्रन्थो का नाम ज्ञात हैं जो अभी तक अनुपलब्ध हैं। इनमे से ४ की सूची शृङ्गार सार के विवरण के अन्त मे दी गई है। पाँचवाँ ग्रन्थ रामचरित्र है जिसका उल्लेख विनोद मे याज्ञिक त्रय की सूचना के आधार पर हुआ है।

खोज के अनुसार सूरति मिश्र जोधपुर नरेश जसन्वत सिह के शिक्षक थे।[1] राजस्थान रिपोर्ट २ मे इसका खण्डन किया गया है।[2] सूरति मिश्र का रचनाकाल स० १७६६-१८०२ है। जसन्वत सिह का देहावसान स० १७३५ मे हो चुका था, अत दोनो की भेंट भी सम्भव नहीं, गुरु-शिष्य होना तो दूर की बात है।

सूरति मिश्र ने वल्लभ-सम्प्रदाय के भक्तो पर भक्तमाला नामक परिचयात्मक ग्रन्थ लिखा है। इससे इनका वल्लभ सम्प्रदाय मे दीक्षित होना सूचित होता है, अन्यथा इस ग्रन्थ मे अन्य सम्प्रदायो के भक्त भी सम्मिलित किए जा सकते थे।

९३२।

(९१) शारग कवि, वन्दीजन चन्द कवीश्वर के वश के स० १३५० मे उ०। यह प्राचीन कवि चन्द कवीश्वर के वश मे सवत १३३० के करीब उत्पन्न हुए थे और राजा हमीर देव चौहान रनथम्भौर वाले के यहाँ, जो राजा विशाल देव के वश मे था, रहा करते थे। इन्होंने हमीर रासा और हमीर काव्य, ये दो ग्रन्थ महा उत्तम बनाए हैं। हमीर रासा राजा हमीर की प्रशसा मे लिखा है।

(१) खोज रिपोर्ट ९०।८६ (२) राज० रिपोर्ट, भाग २, पृष्ठ १९३

सिहगमन सुपुरुष वचन, कदलि फरै इक बार
तिरिया तेल हमीर हठ, चढै न दूजी बार

सर्वेक्षण

सप्तम सस्करण मे स० १३५० मे उ० नही दिया गया है और तृतीय सस्करण मे है। सरोज मे सारगधर के नाम पर ७६६ सख्या पर जो कवित्त उद्धृत है, वह इनका न होकर ६५८ सख्यक असोथर वाले सारग की रचना है। प्रथम सस्करण मे कवि का नाम 'शारगधर' एव समय १३५७ दिया गया है।

शारङ्गधर पद्धति शारङ्गधर द्वारा सकलित एक सुभाषित सग्रह है। इसमे कवि ने अपना परिचय भी दिया है। इस ग्रन्थ के अनुसार रणथम्भौर के राजा हम्मीरदेव के प्रधान सभासदो मे एक राघव देव थे। इन राघवदेव के तीन पुत्र—गोपाल, दामोदर और देवदास थे। पुन दामोदर के तीन पुत्र हुए—शारङ्गधर, लक्ष्मीधर और कृष्ण। यही हम्मीर के दरबारी राघवदेव के पौत्र, और दामोदर के पुत्र 'शारङ्गधर पद्धति' के रचयिता हैं।[1] ग्रियर्सन के अनुसार (८) शारगधर पद्धति की रचना सवत १४२० मे हुई।

सरोज मे दिया सवत १३३० या १३५० इस मान्यता के साथ दिया गया है कि स्वय शारगधर हम्मीर के दरबारी थे, पर ऐसा है नही, जैसा कि हम ऊपर देख चुके हैं। अत सरोज मे दिए सवत ठीक नही। इस समय तो सम्भवत यह उत्पन्न भी न हुए रहे होगे।

शारङ्गधर चन्द के वशज थे, इसका कोई प्रमाण नही। इनका रचित हम्मीर रासो उपलब्ध नही। हम्मीर-काव्य सम्भवत सस्कृत मे है। इनका आयुर्वेद का ग्रन्थ तो प्रसिद्ध है ही, यह अच्छे कवि और सूत्रकार भी थे। शुक्लजी को प्राकृत पिङ्गल सूत्र उलटते-पुलटते इनके 'हम्मीर रासो' के कुछ छन्द मिल गए थे, जिनको उन्होने अपने सुप्रसिद्ध इतिहास मे उद्धृत किया है और इनकी भाषा के अपभ्रंश के अधिक निकट होने के कारण इनका अर्थ भी दे दिया है।[2]

९३३।

(१००) सदाशिव कवि वन्दीजन, स० १७३४ मे उ०। यह कवीश्वर राना राजसिह, जो औरङ्गजेब बादशाह के दिली शत्रु थे, उनके पास रहा करते थे और उन्ही राना के जीवनचरित्र के वर्णन म राज रत्नगढ नामक ग्रन्थ बनाया है।

सर्वेक्षण

ग्रियर्सन (१८७) के अनुसार राणा राजसिह का शासनकाल स० १७११-३८ है। ऐसी स्थिति मे सरोज मे दिया राणा राज सिह के दरबारी कवि सदाशिव का स० १७३४ ठीक है।

---

(१) हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ २४ (२) वही

विनोद (४१२) में सदाशिव के ग्रन्थ का नाम राज रत्नाकर और इसका रचनाकाल स० १७१७ दिया गया है।

९३४।

(१०१) शिव कवि प्राचीन, स० १६३१ मे उ०। इनके कवित्त हजारे मे हैं।

सर्वेक्षण

शिव कवि प्राचीन के कवित्त हजारे मे थे, अत इनका स० १७५० के पूर्व अस्तित्व स्वय-सिद्ध है। इस कवि के सम्बन्ध मे और कोई सूचना सुलभ नही।

९३५।

(१०२) सुखलाल कवि, स० १८०३ मे उ०। यह कवि राजा युगलकिशोर मैथिल के पास दिल्ली मे थे।

सर्वेक्षण

राजा युगलकिशोर के आगे मैथिल छप गया है, जो ठीक नही। यह शब्द कैथल है, जो इनके निवास-स्थान का नाम है।[1] कैथल, करनाल जिला, पञ्जाब मे है।

राजा युगलकिशोर मुहम्मद शाह रगीले के दरबारी थे। इन्होने स० १८०५ मे अलङ्कार-निधि नामक ग्रन्थ बनाया था। इस ग्रन्थ मे अपने दरबारी कवियो का नाम इन्होने इस दोहे मे दिया है, जिसमे सुखलाल का भी नाम है।

मिश्र रुद्रमनि विप्रवर, औ सुखलाल रसाल
सन्तजीव सु गुमान हैं, सोभित गुनन विसाल

यह दोहा सरोज मे भी जुगलकिशोर भट्ट के परिचय मे उद्धृत है। अत सुखलाल का इनके यहाँ रहना सिद्ध है और सरोज मे दिया हुआ इनका स० १८०३ ठीक है और यह कवि का उपस्थितिकाल है।

विनोद (७६३) के अनुसार जुगलकिशोर के दरबारी कवि सुखलाल, गोडा नरेश गुमान सिह के भी आश्रित थे और इन्होने वैद्यक सार नामक ग्रन्थ की रचना की है। यह ग्रन्थ खोज मे मिल चुका हे।[2] इस ग्रन्थ के अनुसार कवि मदावल देश मे अटेरपुर का निवासी था।

---

(१) हिन्दी साहिक का इतिहास, कविसख्या २५६ (२) खोजरिपोर्ट १९०९।३१०, १९२३।४१२

देश भदावल मे कह्यो अटेर - कवि थान
तिन कह गउडानोय ने दिए विविध विधि दान

रिपोर्ट मे इन 'अलप ज्ञान सुखलाल द्विज' के जुगलकिशोर भट्ट के दरबारी कवि होने की सम्भावना व्यक्त की गई है। इसी सम्भावना को विनोद मे वास्तविकता का रूप दे दिया गया है। यह भदावल और अटेर ग्वालियर और आगरा के बीच हैं। यही के रहने वाले प्रसिद्ध कवि छत्र सिंह थे।[1] पर यह वैद्यकसार वाले सुखलाल द्विज युगलकिशोर के दरबारी सुखलाल से भिन्न है, क्योकि वैद्यकसार की रचना स० १८९२ मे प्राय ९० वर्ष बाद हुई—

सवत लोचन रन्ध्र वसु, ससि मधु मास विचार
(२ ९ ८ १)
कृष्ण चतुर्दश सौम्य दिन पूरन 'बैदक सार'
—१९२३।४१३

श्री कृष्ण-स्तोत्र[2] नामक नौ कवियो का एक ग्रन्थ मिश्र सुखलाल के नाम से मिला है। हो सकता है कि यह इन्ही सुखलाल की रचना हो।

सुख लालची हौं मुख लाल जी के देखिये कौ
कवि सुखलाल कृष्ण चन्द्र सुख कनी कै ६

९३६।

(१०३) सतजीव कवि, स० १८०३ मे उ०। ऐजन,। यह कवि राजा युगलकिशोर मैथिल के पास दिल्ली मे थे।

सर्वेक्षण

पीछे ९३५ सख्या पर सुखलाल कवि के प्रसङ्ग मे राजा युगलकिशोर भट्ट का उनके दरबारी कवियो का उल्लेख करने वाला जो दोहा उद्धृत है, उसमे सन्तजीव का भी नाम है। अत यह भी उक्त युगलकिशोर के दरबारी कवि थे और इनका भी रचनाकाल स० १८०३ है। यहाँ भी 'कैथाल' 'मैथिल' हो गया है।

---

(१) खोज रिपोर्ट, कवि सख्या २५३ (२) यही ग्रन्थ १९४१।२९२।

९३७।८००

(१०४) सुदर्शन सिंह राजा चन्दापुर के राजकुमार, स० १९३० मे उ०। यह महाराज महा निपुण थे। एक ग्रन्थ इन्होने बनाया है, जिसमे अपने बनाए पद और कवित्त आदि का सग्रह किया है।

सर्वेक्षण

सरोज मे दिया स० १९३० सुदर्शन सिंह का जन्मकाल कदापि नही हो सकता, क्योकि इनके ५ वर्ष बाद ही सरोज का प्रथम सस्करण हुआ। अत. यह कवि का उपस्थितिकाल है। चन्दापुर बहराइच जिले के अन्दर है। यहाँ के राजा के यहाँ प० अयोध्याप्रसाद बाजपेयी औध गए थे और सम्मानित हुए थे।

९३८।

(१०५) शख कवि। इनके कवित्त तुलसी कवि के सग्रह में हैं।

सर्वेक्षण

शख कवि की कविता तुलसी कवि के सग्रह मे थी, अत इनका रचनाकाल स० १७१२ के आप-पास या उससे कुछ पूर्व होना चाहिये।

९३९.

(१०६) साहब। ऐजन। इनके कवित्त तुलसी कवि के सग्रह मे हैं।

सर्वेक्षण

साहब कवि की रचना तुलसी कवि के सग्रह मे थी, अत इनका रचनाकाल स० १७१२ के आस-पास या कुछ पूर्व होना चाहिए।

खोज मे साहब राय का खण्डित ग्रन्थ रामायण[1] मिला है। यह औध के रहने वाले सक्सेना कायस्थ थे। इनके पिता का नाम नारायणदास, पितामह का दयालदास और प्र-पितामह का रामराय था। यह ब्रजवासी बाबा नन्द के शिष्य थे। यह जन्म से ही अपनी ननसाल मैनिज मे दक्खिन मे रहे। कभी अपना असली घर औध देखा भी नही। इसके नाना का नाम

---

(१) खोज रिपोर्ट १९३२।१३२।

खेतलदास था। प्राप्त ग्रन्थ खण्डित है, अत इसका रचनाकाल ज्ञात नही हो सका। यह नही कहा जा सकता कि यह तुलसी के सग्रह मे आए साहव ही हैं अथवा उनसे भिन्न कोई अन्य साहब।

एक राय साहव सिंह का रामायण कोष[1] नामक ग्रन्थ और मिला है। इसके रचयिता ऊपर वर्णित रामायण के रचयिता साहव राय ही प्रतीत होते है।

९४०।

(१०७) सुवुद्धि। ऐजन। इनके कवित्त तुलसी कवि के सग्रह मे हैं।

सर्वेक्षण

तुलसी के काव्य-सग्रह मे इनकी कविता सकलित है, अत इनका समय स० १७१२ के आस-पास या कुछ पूर्व होना चाहिए।

सुवुद्धि का 'आरम्भ नामकमाला'[2] नाम पर्याय कोश मिला है जिसमे रचनाकाल नही दिया गया है।

जो कवित्त भाषा पढ़े, जो रह भाषा शुद्ध
तिनकै समुभन कों इन्है, बरने विवध सुबुद्ध

९४१।

(१०८) सुन्दर कवि, वन्दीजन असनीवाले। इन्होने रस प्रवोध ग्रन्थ बनाया है।

सर्वेक्षण

असनीवासी सुन्दर के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही। विनोद (१७५५) मे इन्हे प्रभाद से बारहमासी का भी कर्ता कहा गया है। यह बारहमासी सन्त सुन्दरदास की रचना है।

९४२।

(१०९) सोभनाथ ब्राह्मण, नाथ उपनाम साँडीवाले, स० १८०३ मे उ०।

(१) खोज रिपोर्ट १९१७।१६४ (२) राज० रिपोर्ट, भाग २, पृष्ठ ३-४

सर्वेक्षण

ग्रियर्सन मे यह कवि एक बार सोभनाथ नाम से (४४७) और एक बार ब्राह्मणनाथ नाम से (४४३) उल्लिखित हुआ है। ब्राह्मण और नाथ शब्दो के बीच अर्द्ध विराम है। विनोद (८३६) मे इन सोभनाथ का रचनाकाल स० १८०९ दिया गया है और इन्हे किसी कुँवर बहादुर का आश्रित कहा गया है।

९४३।

(११०) सुखराम ब्राह्मण चहोतर, जिले उन्नाव के। वि०।

सर्वेक्षण

विनोद (२४८४) मे इस सुखराम को १९४० मे उपस्थित कवियो की सूची मे स्थान दिया गया है और इन्हे नृप सवाद का रचयिता कहा गया है। ग्रियर्सन (७२९) मे इनके ८७९ सख्यक सुखराम से अभिन्न होने की सम्भावना व्यक्त की गई है।

९४४।

(१११) समनेस कवि कायस्थ रीवाँ, बघेलखण्डवासी सवत्, १८८१ मे उ०। यह कवि महाराज जया सिंह, विश्वनाथ सिंह बाघव नरेश के पिता, के यहाँ थे और काव्य भूषण नामक ग्रन्थ बनाया है।

सर्वेक्षण

समनेस का पूरा नाम बख्शी समन सिंह था। इनके पिता का नाम शिवदास और पितामह का केशवराइ था। यह रीवाँ नरेश जय सिंह और उनके पुत्र महाराज विश्वनाथ सिंह जू के दरबारी कवि थे। इनके पूर्वज गुजरात से आकर दिल्ली मे रहने लगे थे। शाहजहाँ के शासनकाल मे इनके पूर्वज दिल्ली से रीवाँ आए। इनके लिखे दो ग्रन्थ खोज मे मिले हैं —

(१) रसिक विलास, १९०६।२२७। यह नायिका भेद का ग्रन्थ है। इसकी रचना स० १८४७ मे हुई।

> ७ ४ ८ १
> सवत रिषि जुग बसु ससी कुज पून्यो नभ मास
> सपूरन सनेतस कुल बनिगो रसिक विलास १

(२) पिङ्गल काव्यविभूषण १६००।४२, १६४७।४०३। इसी ग्रन्थ का नामोल्लेख सरोज मे हुआ है। इस विशद पिङ्गलग्रन्थ की रचना स० १८७६ मे हुई।

सवत निधि मुनि सिधि अवनि, राम नौमि रविवार
पिंगल काव्य विभूषनहि, किय समनेस तयार १५

इस ग्रन्थ की रचना युवराज विश्वनाथ सिंह जी की आज्ञा से हुई थी। इन दोनो ग्रन्थो के रचनाकाल से स्पष्ट है कि सरोज मे दिया स० कवि का रचनाकाल है।

९४५।

(११२)शत्रुजीत सिंह बुन्देला, दतिया के राजा। इन्होंने की रसराज टीका बनाया है। इस ग्रन्थ मे अलङ्कार, ध्वनि, लक्षण, व्यन्जना और व्यग्य का यथावत् वर्णन है।

सर्वेक्षण

शत्रुजीत सिंह ने स्वय ही रसराज की टीका नही बनाई। इन्होने अपने दरबारी कवि वखतेस से यह यह टीका बनवाई। खोज मे यह टीका मिल चुकी है।[1] इसका रचनाकाल स० १८२२, मार्गशीर्ष वदी १, रविवार है।

प्रथम दोइ पुनि दोइ वसु एक सु संवत जान
मारग पहिली, द्वंज रवि कीन्हो अर्थ विधान १

कवि ने अपने आश्रयदाता और ग्रन्थ के सम्बन्ध मे निम्नलिखित दोहे लिखे हैं—

नृप वली रतनेश के अनुज महा मतिवान
सत्रुजीत मोसो कह्यो कीवो अर्थ विवान २
रावत नृप रतनेस सों स्वामि धर्म की प्रीति
जाहिर सकल जहान मे सत्रुजीत की जीत ३
यातें नृप रतनेस ने तन्त समर को पोत
सत्रुजीत आगे कह्यो सत्रजीत क्यो होत ४
सुकवि महा मतिराम ने कियो ग्रन्थ रसराज
तामे राखी विन्जना उक्ति जुक्ति की खान ५

---

(१) खोज रिपोर्ट १६०६।७

भरी ऊक्ति रसराज की वरनौं ललित ललाम
दीजौ मति मतिराम की जो मतिराम दीजौ ६
लिखियत तिहि रसराज को अर्थ सुमति अनुसार
वनी वनोई, अनवन्यो लीज्यो सुकवि सुवारि ७

विनोद (६२३)के अनुसार भी शत्रुजीत दतिया के राजा थे। पर यह ठीक नही। शत्रुजीत दतियानरेश रतनेस या रतन सिंह के अनुज थे। विनोद मे भी रसराज के टीकाकार वखतेख ही कहे गए हैं। अप्रकाशित सक्षिप्त विवरण मे रतनेश को विजावर का राजा कहा गया है। इस ग्रन्थ की रचना स० १८२२ मे हुई थी। इसके ४ वर्ष के बाद विजावर राज्य अस्तित्व मे आाय और विजावर के तीसरे राजा रतन सिंह हुए, जिनका शासनकाल स० १८६७-६० है। स्पष्ट है कि सक्षिप्त विवरण की बात ठीक नही।

९४६।

(११३) शिवदत्त ब्राह्मण काशीस्थ, स० १९११ मे उ०।

सर्वेक्षण

शिवदत्त जी काशी के सनाढ्य ब्राह्मण थे, पर मथुरा के अन्तर्गत सादाबाद मे जाकर वस निम्नलिखित तीन ग्रन्थ खोज मे मिले हैं—

१))वैद्यक भाषा १९३२।२०२। यह ग्रन्थ गद्य मे है। वर्तमान ग्रन्थ स्वामी के पिता प० श्री नारयण थे, इन श्रीनारायण के पिता शिवदत्त जी थे, जो स्वय एक अच्छे वैद्य थे। सस्कृत ग्रन्थो के आधार पर इन्होने यह रचना की थी। इनके पिता का नाम वलदेव दत्त, पितामह का जीसुखराम, प्रपितामह का दौलतराम और प्र-प्रपितामह का टीकाराम था। ये सव सूचनाएँ इस ग्रन्थ से मिलती हैं।

(२) उत्पलारण्य माहात्म्य या ब्रह्मावर्त माहात्म्य १९२६।४४३ ए, वी, सी। इसका रचना-काल स० १९२६ है।

सवत् रस[६] द्दग[२] विक्रम, तापर निधि[९] अरु चन्द[१]
ग्रन्थ कियो सपूरन रचि करि सुन्दर छन्द

(३) ज्ञान प्राप्ति वारहमासी १९२६।४४३ डी, ई। इस ग्रन्थ की रचना स० १९२३ मे हुई खोजरिपोर्ट मे इन्हे रामप्रसाद का पुत्र कहा गया है। इसका आधार ये पक्तियाँ हैं—

इकइस अध्याय भये अब शिव गिरिजा संवाद
भई सहिता पूरण शिवदत्त रामप्रसाद

इसी प्रकार वारहमासी मे ये पक्तियाँ हैं—

करि प्रेम नेम समेत जोइ जन वारहमासी गावहीं
शिवदत्त राम प्रताप तें सोइ आतमा लखि पावहीं

इन पक्तियो के आधार पर पिता का नाम रामप्रताप होना चाहिए। वस्तुत ऐसा है नही। रामप्रसाद का अर्थ है राम के प्रसाद से और रामप्रताप का अर्थ हुआ राम के प्रताप से। कवि हिन्दुस्तानी है, गुजराती नही।

९४७।

(११४) श्रीकर कवि। इनके कवित्त तुलसी कवि के सग्रह मे हैं।

सर्वेक्षण

श्रीकर कवि की रचनाए तुलसी कवि के सग्रह मे है, अत इनका अस्तित्व स० १७१२ के पूर्व या आस-पास सिद्ध है। विनोद (३९३) मे इनका उल्लेख श्री कवि के नाम से हुआ है।

९४८।

(११५) सनेही कवि। सूदन ने इनकी प्रससा की है।

सर्वेक्षण

सनेही कवि का उल्लेख सूदन ने किया है, अत इनका रचनाकाल स० १८१० के पूर्व या आस पास सिद्ध है। इनका पूरा नाम सनेही राम है। नायिका भेद का इनका ग्रन्थ रसमञ्जरी[1] खोज मे मिला है। रचनाकाल नही दिया गया है।

९४९।

(११६) सूरज कवि। ऐजन। सूदन ने इनकी प्रशसा की है।

---

(१) १९०९।२७५

सर्वेक्षण

सूरज कवि का उल्लेख सूदन ने किया है, अत इनका रचनाकाल स० १८१० के पूर्व या आस-पास होना चाहिए ।

खोज मे श्री सूर्य का एक ज्योतिष ग्रन्थ कर्म विपाक[1] मिला है। प्रतिलिपिकाल स० ८७८ है। रिपोर्ट मे सम्भावना व्यक्त की गई है कि यह सम्भवत सूदन द्वारा उल्लिखित सूरज कवि ही हैं।

खोज मे एक सूरजदास भी मिले है।यह सम्भवत स्वामी प्राणनाथ के शिष्य थे। प्राणनाथ जी छत्रसाल (शासनकाल स० १७२२-८८) के समकालीन थे। यही समय सूरजदास का भी होना चाहिए। अत यह सूरजदास भी स० १८१० के पूर्ववर्ती हैं। इनका भी उल्लेख सूदन द्वारा हो सकता है। इनके बनाए ग्रन्थ निम्नलिखित हैं ।

(१) एकादशी व्रत माहात्म्य १९१७। १८७ बी, १९२३।४१७ ए, बी, १९२६।४७३ ए, १९४१।५७४ । इसी ग्रन्थ का नाम रुक्माङ्गद की कथा भी है।[2]

(२) राम जन्म—१९१७।१८७ ए, १९२३।४१७ सी, १९२६।४७३ बी, १९४१।५७४ ख, बिहार रि०२, स०४७ ।

सूरजदास कवि बरनो, प्राननाथ जिव मोर
राम कथा कछु भाखौ कहत न लागै भोर

९५०।

(११७) सुखानन्द कवि बन्दीजन चचेडीवाले, स० १८०३ मे उ० ।

सर्वेक्षण

प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय सस्करण मे कवि का नाम सुखानन्द है। सप्तम मे अशुद्ध सुखाननन्द छप गया है। इस कवि के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही ।

खोज मे सुखानन्द नाम के कई कवि मिले हैं। इनमे से एक ही ऐसे हैं जिनका समय १८३३ के पूर्व माना गया है। यह सुखानन्द निधान के गुरु थे।[3]

---

(१) १९०६।३०५ (२) १९२३।४१७ (३) १९१७।१३७

एक सुखानन्द माघ स० १८८७ के पूर्व वर्तमान थे । यह शैव थे । हरिहरानन्द के शिष्य थे । इन्होंने पशुमर्दन भाषा[1] नामक ग्रन्थ लिखा है ।

९५१।

(११८) सर्वसुख लाल स० १७९१ मे उ०। इनकी प्रशसा सूदन कवि ने की है ।

सर्वेक्षण

सूदन ने सर्वसुख लाल का नाम प्रणम्य कवियो की सूची मे दिया है, अत इनका रचनाकाल स० १८१० के पूर्व या आस-पास होना चाहिए । इनके सम्बन्ध मे अभी तक कोई सूचना नही सुलभ हो सकी है ।

९५२।७९६

(११९) श्री लाल गुजराती माँडेर, राजूपतानेवाले, स० १८५० मे उ०। इन्होने भाषा चन्द्रोदय आदि छ ग्रन्थ बनाए हे ।

सर्वेक्षण

श्री लाल जी शास्त्रावदीच गुजराती ब्राह्मण थे । यह जयपुर राज्यान्तर्गत माँडेर ग्राम के निवासी थे । यह सस्कृत एव गणित मे बडे मान्य थे । पहले इन्होने आगरा कॉलेज मे कुछ दिन पढाया १८४८ ई० से स्कूलो के लिए नवीन काव्यग्रन्थ लिखने के लिये पश्चिमोत्तर प्रदेशीय सरकार की ओर से नियुक्त हुए । उस समय उन्होने विद्यार्थियो के उपयोग के लिए अनेक ग्रन्थो का अनुवाद किया । इनके बनाये कुछ शास्त्रोपयोगी ग्रन्थ है— शालापद्धति, समय प्रबोध, अक्षर-दीपिका, गणित प्रकाश, बीजगणित, भाषाचन्द्रोदय, ईश्वरता निदर्शन, ज्ञानचालीसा। आदि । सन् १८५२ मे आगरा मे नार्मल स्कूल खुला और उसके ये पहले हेडमास्टर हुये । सन १८५७ मे चन्देरी जिले मे स्कूलो के डिप्टी इन्सपेक्टर हुए । १८५८ ई० मे ग्वालियर कालेज के हेड-मास्टर हुए । उस समय इनका वेतन १५०) मासिक था । १८६७ मे ज्वरग्रस्त हो आगरा मे जमुना किनारे दिवङ्गत हुए ।[2] सरोज मे दिया समय १८५० कवित्त रत्नाकर के अनुसार है और ईस्वी सन् मे उपस्थिति काल है । श्री लाल जी ने स० १९०९ मे पत्रमालिका नामक ग्रन्थ लिखा था ।

---

(१)खोज रिपोर्ट १९४४।४५५,(२)कवित्त रत्नाकर, भाग १, कवि सख्या ७ (३) हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ ४३७

९५३।७२७

(१२०)शम्भुनाथ मिश्र,-गञ्ज मुरादाबाद वाले।

सर्वेक्षण

विनोद (११९७) के अनुसार शम्भूनाथ का रचनाकाल स० १८६७ है और इन्होंने राजकुमार प्रबोध नामक ग्रन्थ लिखा है।

९५४।

(१२१) समर सिंह क्षत्रिय, हडहा, जिले बाराबङ्की। वि०। इन्होने सातो काण्ड रामायण बहुत ही ललित पदो मे बनाई है।

सर्वेक्षण

समर सिंह के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही।

९५५।७९७

(१२२) श्यामलाल कवि कोडा, जहानाबाद वाले, स० १८०४ में उ०। यह कवि भगवन्त राय खीची के यहाँ थे।

सर्वेक्षण

श्यामलाल का समय भगवन्तराय खीची (मृत्युकाल स० १८१७[1]) के समय के मेल मे है, अत सरोज मे दिया इनका स० १८०४ रचनाकाल ही है। इनके सम्बन्ध मे कोई और सूचना सुलभ नही।

९५६।

(१२३) श्रीहठ कवि, स० १७६० मे उ०। तुलसी कवि के सग्रह मे इनके कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

श्रीहठ के कवित्त तुलसी कवि के संग्रह मे है, अत इनका रचनाकाल स० १७१२ के आस-पास या पूर्व होना चाहिये। सरोज मे दिया इस कवि का समय स० १७६० अशुद्ध है।

---

(१) खोज रिपोर्ट कविसंख्या ५९९

९५७

(१२४) सिद्ध कवि, स० १७८५ मे उ० । ऐज़न । तुलसी कवि के सग्रह मे इनके कवित्त हैं ।

सर्वेक्षण

सिद्ध कवि की रचना तुलसी कवि के सग्रह में है, अत इनका रचनाकाल स० १७१२ के आस-पास या पूर्व होना चाहिए । सरोज मे दिया इनका स० १७८५ अशुद्ध है ।

९५८।७९९

(१२५) शारङ्ग कवि, असोथर वाले, स० १७९३ में उ० । यह कवि राजा भवानी सिंह खीची, भगवन्तराय जी के भतीजे, के पास असोथर में रहा करते थे ।

सर्वेक्षण

सरोज मे इनका जो कवित्त उद्धृत है, उससे इनका भवानी सिंह का आश्रित होना स्पष्ट है ।

सारङ्ग सुकवि भने भूपति भवानी सिंह
पारथ समान महाभारथ सो करि गो

सरोज मे दिया सारङ्ग कवि का समय स० १७९३ भगवन्तराय के समय(मृत्यु १८१७ वि०) के मेल मे है[1], अत ठीक है और रचनाकाल है । किसी शारङ्गधर का विराह चन्द्रिका[2] नामक ग्रन्थ खोज मे मिला है । इसमे छन्दो मे सोनारो की वोली का विवेचन किया गया है । प्राप्त प्रति का लिपिकाल स० १७७४ है ।

ह

९५९।८०७

(१) हरिनाथ कवि, महापात्र वन्दीजन असनीवाले, स० १६४४ मे उ० । यह महान् कवीश्वर नरहरि जी के पुत्र वडे भाग्यवान् पुरुष थे । जहाँ जिस दरवार मे गए, लाखो रुपए, हाथी, घोडे, गाँव, रथ, पालकी पाकर लौटे । इन्होने श्री वाधव नरेश राजाराम वघेल की प्रशंशा मे यह दोहा पढा—

---

(१) खोज रिपोर्ट कविसख्या ५९९ (२) यही ग्रन्थ १९४७।४०८

लका लौं दिल्ली दई, साहि विभीषन काम
भयो बघेल रमायण, राजा राजाराम

इस दोहे पर इन्होने एक लाख रुपए का इनाम पाया। राजा मान सिंह सवाई आमेरवाले के पास ये दोहे पढकर दो लक्ष रुपए का दान पाया—

वलि बोई कीरति लता, करन करी द्वै पात
सींची मान महीप ने, जव देखी कुँभिलात
जाति जाति ते गुन अधिक, सुन्यो न कवहूँ कान
सेतु बाधि रघुवर तरै, हेला दे नृप मान

जव हरिनाथ जी रुपए और सव सामान लेकर घर को चले तो मार्ग मे एक नागर पुत्र मिला और उसने हरिनाथ जी की प्रशशा मे यह दोहा पढा—

दान पाय दोई वढै, की हरि की हरिनाथ
उन वढि ऊँचो पग कियो, इन वढि ऊँचौ हाथ

हरिनाथ ने सव धन-धान्य जो पाया था, इसी नागर पुत्र को देकर आप खाली हाथ घर को चले आए। यह अपनी और अपने पिता की कमाई तमाम उमर इसी भाँति लुटाते रहे।

सर्वेक्षण

भाषाकाव्य सग्रह मे महेशदत्त ने हरिनाथ जी के सम्वन्ध मे लिखा है कि यह उन्होंने नरहरि का मृत्युकाल स० १६६६ दिया हैं। इसी आधार पर सरोजकार ने हरिनाथ -का समय स० १६४४ दिया है। स्पष्ट ही यह जन्म-सवत् दिया गया है, जो ठीक भी हो सकता है।

वाधव नरेश का नाम राजाराम या राम सिंह था, नेजाराम नही, जैसा कि सरोज के सप्तम सस्करण मे अशुद्ध छप गया है। हरिनाथ की रचनाएँ वहुत कम मिलती है।

९६०।८०१

(२) हरिदास कवि एकाक्ष कायस्थ, पन्ना के निवासी, स० १९०१ मे उ०। इनका बनाया हुआ रसकौमुदी नामक ग्रन्थ भाषा साहित्य मे वहुत सुन्दर है। इसके सिवा छन्द, अलङ्कार इत्यादि भाषाकाव्य के अङ्गो-उपाङ्गो के १२ और ग्रन्थ वनाए है।

सर्वेक्षण

हरिदास जी पन्ना निवासी कायस्थ थे। इनका असल नाम हरिपरसाद था। कविता मे

इनकी छाप हरिदास हे। इनके पिता का नाम वगसी भैरवप्रसाद था। इनका जन्म स० १८७६ मे तथा मृत्यु २४ वर्ष की अल्प आयु मे स० १९०० मे हुई। इस छोटी सी आयु मे १३ ग्रन्थो की रचना गौरवपूर्ण है। सरोज अथवा रिपोर्टो मे उद्धृत इनकी सभी रचनाएँ उच्चकोटि की हैं। इनके निम्नलिखित तीन ग्रन्थ खोज मे मिले हैं—

(१) रस कौमुदी १९०५।९५, १९०६।४६ ए। यह नायिकाभेद का ग्रन्थ है। इसकी रचना पन्ना के तत्कालीन राजा हरवश राय, (राज्यकाल स० १८९७-१९०६) के आदेशानुसार हुई। इसका रचनाकाल स० १८९७ है।

सवत मुनि पुनि ग्रह,गनौ वतुससे भनौ सुजान
राजनृपति हरवश कौ, सुभ परना अस्थान

—खोज रिपोर्ट १९०५।९५

'वतु ससे' का ठीक पाठ 'वसु ससी' प्रतीत होता है।

(२) गोपाल पचीसी १९०६।४६ बी। इस लघुग्रन्थ मे २५ दोहे हैं और प्रत्येक के अन्त मे 'जयति विजै गोपाल' है।

(३) अलङ्कार दर्पण १९०६।४६ सी। रचनाकाल स० १८९८।

सुभ सवत वसु खण्ड बसु ससी शुक्ल वैसाख
मदवार एकादशी ग्रन्थ जन्म अभिलाख

'मन्द वार' के स्थान पर सम्भवत 'चन्द्रवार' चाहिए। इस ग्रन्थ की पुष्पिका से इनके पिता का नाम ज्ञात होता है—

"इति श्री अलङ्कार दर्पन नाम ग्रन्थे श्री वगसी भैरवप्रसादस्य पुत्रश्री हरिपरसाद विरचित अलङ्कार सम्पूर्न सुभमस्तु सुभम्याभूत् .

९९१।८०२

(३) हरिदास कवि २, वन्दीजन बादावाले, नौने कवि के पिता, स० १८९१ मे उ०। इन्होंने राधा भूषण नामक शृङ्गार का वहुत सुन्दर ग्रन्थ वनाया हे।

सर्वेक्षण

खोज रिपोर्ट मे वांदावाले हरिदास के निम्नलिखित दो ग्रन्थो का विवरण है—(१) भाषा भागवत समूल एकादश स्कन्ध १९०४।५५। यह टीका स० १८१३ मे महाराज अरिमर्दन के समय मे गुरु गुलाल दास के निर्देश से श्रीधर तिलक का सहारा लेकर प्रस्तुत की गई थी।

३ १ ८ १
राम सुधाकर महीधर धरणी अङ्क समान
सवत विक्रम नृपति कौ तब यह कीन बखान
गुरु गुलाल सेवा रसिक अरिमर्दन भूपाल
काशिराज कुल कुमुद विधु, विशद विवेक मराल
विप्र नाम हरिदास हरिजन पद कमल पराग
× × ×
दास गुलाल निदेश लहि श्रीधर तिलक विचारि
निज मति यथा तथा कह्यो हरि जन लेहु सुधारि

(२) ज्ञान सतसई १६०४।७२। परम भागवत राजा अरिमर्दन के आदेश से गीता का यह दोहाबन्ध अनुवाद स० १८११ मे प्रस्तुत किया गया—

१ १ ८ १
एक एक वसु एक मिति, सम गत विक्रमराज
हितकर यह श्रम होउ मम सतत सत समाज
परम भागवत भूपवर अरिमर्दन विख्यात
चित प्रमोद हित तासु यह दोहा वध सु जात
भगवत गीता श्लोक के करन सदर्थ प्रकाश
ज्ञानवती सतसई यह कीन्ही जन हरिदास

खोज रिपोर्ट १६०६।४७ मे इन हरिदास के नाम पर भाषाभूषण की एक टीका का भी विवरण है। यह टीका इनकी नही हैं, प्रसिद्ध टीकाकार हरिचरणदास की है।[१] प्राप्त दो ग्रन्थो के आधार पर इन हरिदास जी का समय १८११ या १८१३ है, अत सरोज मे दिया सं० १८६१ अशुद्ध हैं। नौने कवि के विवरण और उदाहरण के स्थलो पर इनके पिता का नाम हरिलाल दिया हुआ है।

९६२।८३७

(४) हरिदास स्वामी वृन्दावन निवासी, स० १६४० मे उ०। इन महाराज का जीवन-चरित्र भक्तमाल मे है। यहां हमको केवल काव्य का ही वर्णन करना जरूरी है। सौ सस्कृतकाव्य के जयदेव कवि से इनकी कविता कम नही है। भाषा मे तो इनके पद सूर और तुलसी के पदो के

(१) खोज रिपोर्ट कविसख्या ६६५

समान मधुर और ललित है। इन्होने बहुत ग्रन्थ बनाए हैं पर हमने इनकी कविता वही देखी है जो रागसागरोद्भव, राग कल्पद्रुम मे है। तानसेन को इन्ही महाराज ने काव्य और सङ्गीत विद्या पढाई थी।

सर्वेक्षण

स्वामी हरिदास जी वृन्दावन मे रहते थे, यह निम्बार्क-सम्प्रदाय के अन्तर्गत टट्टी सम्प्रदाय के सस्थापक थे और सिद्ध भक्त तथा सङ्गीत कलाकोविद् थे। अकबर ने छद्मवेश मे तानसेन के साथ जाकर इनका सङ्गीत सुना था। यह सनाढ्य ब्राह्मण थे। अन्तिम दिनो मे यह वृन्दावन के एक भाग निधुवन मे रहने लगे थे।

सरोज मे दिया हुआ सवत् १६४० न तो इनका जन्मकाल ही है और न रचनाकाल ही। इनका जन्म-सवत् १५३७ और मृत्यु सवत् १६३२ स्वीकार किया गया है।

स्वामी हरिदास जी देवचन्द, अनन्य रसिक, सहचरीशरण, तानसेन, वल्लभ रसिक विटठल विपुल आदि प्रसिद्ध भक्तो, कवियो और सङ्गीतज्ञो के गुरु थे। यह धीर के पुत्र, ज्ञान धीर के पौत्र और ब्रह्मधीर के प्रपौत्र थे। यह पहले हरिदासपुर मे रहते थे। धीर का विवाह वृन्दावन के गङ्गाधर की पुत्री से हुआ था। इसी विवाह से स्वामी हरिदास जी का जन्म हुआ।[1]

'सर्वेश्वर' के अनुसार हरिदास जी के पिता का नाम गङ्गाधर एव माता का चित्रा देवी था। आसधीर इनके पिता गङ्गाधर के एव इनके भी गुरु थे। आसधीर वृन्दावन के अन्तर्गत निधि मे रहा करते थे, जहाँ बाद मे हरिदास जी रहने लगे थे। हरिदास जी ने वृदावन मे ७० वर्षो तक निवास किया था।[2] स्वामी हरिदास के पदो की गणना एक कवित्त मे की गई है—

अनन्य नृपति स्वामी श्री हरिदास जू के
पद रस अमल बीज बकुला न जास मे
प्रथम राग कानरे मे तीस सुखदाई सब
बाइस केदारे माझ सरस रस रास मे
बारह कल्यान, ग्यारह सारङ्ग मे सुख बन्धान
दस हैं बिभास, द्वै बिललाव प्रकास मे,
आठ है मलार, द्वै गौड़, पाँच हैं बसन्त
गौरी छै, नट द्वै, जुग छवि पास मे

—खोज रिपोर्ट १९००।३७

---

(१) खोज रिपोर्ट १९००।३७ (२) सर्वेश्वर वर्ष ५, अङ्क १–५, चैत्र सं० २०१३, पृष्ठ २३३-२३८

कान्हरा मे ३०, केदारा मे २२, कल्यान मे १२, सारङ्ग मे ११, विभास मे १०, विलावल मे २, मलार मे ८, गौड मे २, वसन्त मे ५, गौरी मे ६, नट मे २, कुल मिलाकर ११ रागो मे ११० पद है।

शिव सिंह ने हरिदास जी के पदो को संस्कृत के मधुर कवि जयदेव की तुलना मे रखा है और इनके सस्कृत पद को उद्धृत भी किया है। रागसागर कृत रागकल्पद्रुम मे हरिदास के पद हैं, हिन्दी मे भी और सस्कृत मे भी। हिन्दी वाले पद तो प्रसिद्ध स्वामी हरिदास के हैं। सस्कृत वाले पद किसी दूसरे हरिदास के हैं। यह दूसरे हरिदास वल्लभ-सम्प्रदाय के थे और महाप्रभु वल्लभाचार्य के पुत्र गोस्वामी विट्ठलनाथ क शिष्य थे रागकल्पद्रुम मे प्राप्त हरिदास छाप से युक्त सभी पदो मे यह सङ्केत हैं। यहाँ तक कि सरोज मे उद्धृत पद मे भी यह सङ्केत स्पष्ट है।

'जयति राधिकारमण वरचरण परिचरण रति वल्लभाधीश सुत विट्ठलेशे' रागकल्पद्रुम भाग २ के निम्नलिखित पदो मे यह सङ्केत है—

पृष्ठ १०० पद ११ सरोज मे उद्धृत पद, १०१।१३, १५८।१८, १५९।१९, २०, १६०।२१ १६६।४१, ४२, ४३, १६७।४४, ४५, ४६, १६८।४७, ४८, १६९।४९, ५०। इनमे तो सङ्केत मात्र है, निम्नाङ्कित पद मे तो महाप्रभु का पूरा परिवार आ गया है—

जयति भट्ट लक्ष्मण कृष्णवदनानलश्रीमदिल्लमगारुगर्भरत्ने
दैवकृतजनसमुद्धृतिकरणकृत निजाविर्भवनविहित बहुविविधयत्ने
महालक्ष्मीपतौ गोपीनाथ श्रीविट्ठलनिधसुभगतनुजतापे
पृथित मायावादवर्तिवदन ध्वसि विहितनिजदासजनपक्षपाले
पुष्टिपथकथन रचितानेकसुग्रन्थमथित भागवत पीयूष सारे
रास युवतीभाव सतत भावित हृदय सदयमानसजनित मोदभारे
निजचरणकमल धरणीपरिक्रमण कृति मात्र पावित वितत तीर्थजाले
कृष्णसेवनविहित शरणागत शिक्षणक्षयितसदेह दासैकपाले
निजवचन पीयूषवर्षपोषित सततसाहित्य पुरुष जन भृत्यभुक्त
विविधवाचोर्युक्ति निगमवचनोदितेरपिच दुरितदुष्टजन दुरुक्ते
ईदृशेसति शिरसिसवेदावल्लभे सकल-कर्त्तरिदयालौ
कैवपरिदेवता भवति हरिदासके सकलसाधनरहित जनकृपालौ

—रागकल्पद्रुम, भाग २, पृष्ठ १०१, पद १४

सरोज मे दिया हुआ हिन्दी का कवित्त भी प्रसिद्ध स्वामी हरिदास जी का नहीं है। यह भी इन्हीं सस्कृतवाले हरिदास की रचना है। इसमे भी विट्ठलेसराय का उल्लेख है और यह

भी रागकल्पद्रुम, प्रथम भाग, पृष्ठ १५०, से सङ्कलित है। भक्तमाल छप्पय ६१ मे स्वामी हरिदास का विवरण है। इसका अंतिम चरण यह है—

"आसधीर उद्योतकर, रसिक छाप हरिदास की"

रुपकला जी के अनुसार इस चरण मे आया आसधीर हरिदास जी के पिता का नाम है। हरिदासवशानुचरित्त के अनुसार 'आशुधीर' हरिदास जी के गुरु का नाम है। इस ग्रन्थ के अनुसार हरिदास जी का जन्म सवत् १५७७ भाद्रपद शुक्ल अष्टमी, बुधवार को राजापुर ग्राम जिला मथुरा मे हुआ था और ये जाति के सनाढ्य ब्राह्मण थे। युवावस्था मे एक रोज ये घोडे पर बैठ कर वृन्दावन आए। वहाँ इनको घोडे पर बैठा देख कर श्री स्वामी आशुधीर ने कहा—

नहि पावत ब्रह्मादि सुर, विलसत जुगल सिहाय
अस बल कोमल भूमिपर, तुरग फिरावत हाय

स्वामी जी के ऐसा कहते ही हरिदास जी को दिव्य दृष्टि प्राप्त हो गई और वे विरक्त हो उनके शिष्य हो गये।[1] इसी ग्रन्थ मे यह भी लिखा है कि हरिदास जी को सवत् १५६७ मार्गशीर्ष कृष्ण ५ को बिहारी जी ने दर्शन दिए।[2] स्पष्ट है कि इनका ऊपर दिया जन्म सवत् १५७७ अशुद्ध छप गया है और सर्वस्वीकृत स० १५३७ ही इनका जन्म सवत् है। हरिदास जी के शिष्य सहचरिशरण जी ने इनके सम्बन्ध मे अनेक सूचनाएँ दी हैं—

श्री स्वामी हरिदास रसिक सिर मौर अबीहा
द्विज सनाढ्य सिरताज, सुजस कहि सकत न जीहा
भादो सुकुल अष्टमी औ बुधवार पुनीता
सवत् पद्रह सौ सैतिस को ताविच उदित सुभीता

हरिदासवशानुचरित के अनुसार स्वामी जी का देहावसान ९५ वर्ष की वय मे सवत् १६३२ आश्विन शुक्ल पूर्णिमा को हुआ था[4]।

९६३।८०३

(५) हरिदेव कवि, बनिया, वृन्दावननिवासी। इन्होने छन्द-पयोनिधि नामक पिङ्गल का ग्रन्थ बहुत सुन्दर बनाया है।

---

(१) हरिदासवशानुचरित, पृष्ठ १२ (२) वही, पृष्ठ १३ (३) आज, २० मार्च १९६०, 'सङ्गीत सम्राट स्वामी हरिदास'—जवाहरलाल चतुर्वेदी (४) वही, पृष्ठ ३८।

सर्वेक्षण

हरिदेव जी के दो ग्रन्थ खोज के मिले है—

(१) छन्दपयोनिधि १९१७।७२ए, १९४७।४३३। इसी ग्रन्थ का उल्लेख सरोज मे हुआ है। इसकी रचना स० १८९२ मे माघ सुदी ५, रविवार को हुई—

धरौ नैन[२] निधि[९] सिद्धि[८] ससि[१] समत सुखद उदार
माघ शुक्ल तिथि पंचमी रवि नन्दन सुभवार २०३

ग्रन्थ की पुष्पिका से इनके पिता का नाम रतीराम सूचित होता है—

"इति श्रीराधिकारमणपदारविंदमकरन्दपानानन्दित अलिंद श्रीरतीराम आत्मज छन्द-पयोनिधे नाम पद्याधिकानेअष्टमोतरग ॥८॥ —खोज रिपोर्ट १९४७।४३३

(२) भूषणभक्ति विलास १९१७।७२ बी। इस ग्रन्थ का रचनाकाल स० १९१४ का मधुमास है—

वेद[४] छन्द[१] नवनिधि[९] विसद, व्रह्म[१] अक मधु मास
हरिदेव सु कीनो विसद भूषन भक्ति विलास ३९८

यह अलङ्कार का ग्रन्थ है। कवि के गुरु का नाम रसिक गोविन्द था।[१] विनोद (११४८) मे सरोज के ९९३ और ९८९ सख्यक हरिदेव और हरदेव को एक कर दिया गया है। यह ठीक नही।

९९४।८०४

(६) हरीराम कवि, स० १७०८ मे उ०। इन्होने पिङ्गल वहुत अच्छा वनाया है।

सर्वेक्षण

हरीराम के पिङ्गल ग्रन्थ रत्नावली की चार प्रतियाँ खोज मे मिली हैं[२]। इसकी रचना स० १७९५ मे डीडवाना, जोधपुर, मे हुई।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९१७।७२ (२) वही १९०६।२५७ १९१२।७३, १९४७।४३५, राज रिपोर्ट ३, पृष्ठ १२६।

५ ९ ७ १
सवत सर नव मुनि ससी नव नवमी गुरु भाँति
डीडवान दढ कूप तट ग्रन्थ जन्म थल जानि ११०
—राज० रिपोर्ट ३

राज० रिपोर्ट मे इसका रचनाकाल स० १७९७ दिया गया है। यद्यपि यह प्रमादवश हुआ है। सर का निश्चित अक ५ है, न कि ७। १९४७ वाली प्रति के स्वामी के कथनानुसार इसका रचनाकाल स० १६५१ है। पर प्रमाणाभाव मे यह कथन मान्य नही। इस ग्रन्थ मे छन्द और अलङ्कार साथ साथ हैं, अत इसका नाम छन्दरत्नावली रखा गया।

ग्रन्थ छन्द रत्नावली सारथ याको नाम
भूषन भारती तैं भर्यौ कहे दास हरीराम १०९

इसमे कुल ११० छन्द है। राज० रिपोर्ट के अनुसार इनका पूरा नाम हरीराम दास निरञ्जनी है।

सरोज मे दिया स० १७०८ अशुद्ध है। यह रचनाकाल तो है ही नही, जन्मकाल भी नही हो सकता। इनका जन्म स० १७५० के आस-पास किसी समय हुआ रहा होगा। सरोज मे पिलङ्ग नाम से अभिहित ग्रन्थ प्राप्त 'छन्द रत्नावली' है।

९६५।८०५

(७) हरदयाल कवि। इन्होने शृङ्गार की सुन्दर कविता की है।

सर्वेक्षण

हरिदयाल कवि के सम्वन्ध मे कोई भी सूचना सुलभ नही।

९६६।८०६

(८) हिरदेश कवि, वदीजन, झाँसीवाले, स० १९०१ मे उ०। इन्होने शृङ्गार का नवरस नामक ग्रन्थ वनाया है।

सर्वेक्षण

हिरदेश वदीजन के भी सम्वन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही।

९६७।८०८

(९) हरिहर कवि, सं० १७९४ मे उ० । यह सत्यकवि थे ।

सर्वेक्षण

हरिहर कवि का नाम सूदन की प्रणम्य कवि सूची मे है, अत सं० १८१० के आस-पास या कुछ पूर्व इनका अस्तित्व सिद्ध है । सरोज मे दिया स० १७९४ उपस्थितिकाल या रचनाकाल ही है । यह जन्मकाल कदापि नही हो सकता, जैसा कि ग्रियर्सन (४२९) और विनोद (९२९) मे स्वीकार किया गया है, क्योकि सूदन की प्रणम्य कवि सूची मे सम्मिलित होने के लिए १६ वर्ष की आयु अपर्याप्त है ।

९६८।८०९

(१०) हरिकेश, जहाँगीराबाद, सेहुडा, बुन्देलखण्डवासी, सं०१७६० मे उ० । यह कवि राजा छत्रसाल के यहाँ पन्ना मे थे । इनका काव्य बहुत ललित है ।

सर्वेक्षण

हरिकेश जी जहांगीराबाद, परगना सैनुहडा, राज्य दतिया के निवासी थे । इनके निम्न लिखित दो ग्रन्थ खोज मे मिले हैं—

(१) जगतराज दिग्विजय १९०६।४९ ए । इसमे जगतराज की दिग्विजय का वर्णन है । जैतपुर नरेश जगतराज के जीवन के अतिरिक्त इसमे चन्देल, भूमिहार, गौड आदि अन्य शासक जातियो का भी वर्णन है । ग्रन्थ इतिहास की दृष्टि से महत्वपूर्ण है ।

महाराज छत्रसाल (राज्यकाल स० १७२२-८८) और उनके दो पुत्रो, हृदयसाहि राज्यकाल (१७८८-९६) और जगतराज (राज्यकाल स० १७८८-१८१५) के आश्रय मे हरिकेश जी थे । जगतराज और दलेल खा पठान के बीच स० १७७६ मे युद्ध हुआ था । जगतराज दिग्विजय मे मुख्यतया इसी युद्ध का विवरण है, अत॰ यह ग्रन्थ स० १७७६ के बाद किसी समय रचा गया । इस ग्रन्थ से कवि के सम्बन्ध मे केवल इतना ज्ञात होता है कि कवि ब्राह्मण था ।[1]

उबीश पुनि विप्रहि कह्यौ जो चहो छिप्र सु मागिए ८४५

(२) ब्रज लीला १९०६।४९ बी । इस ग्रन्थ मे राधाकृष्ण की लीलाएँ हैं । इसमे छत्रसाल और हृदयसाहि की प्रशस्ति के भी कुछ छन्द हैं ।

---

(१) चरखारी राज्य के कवि, ना० प्र० पत्रिका, भाग ६, अङ्क ४, सं० १९८५

सरोज मे दिया स० १७६० हरिकेश का उपस्थितिकाल है। अनुमान से इनका जन्मकाल स०१७४० के आस-पास होना चाहिये। यह स० १८०० के आस-पास तक जीवित रहे होगे।

९९९।८१०

(११) हरिवश मिश्र, विलग्रामी, स०१७२९ मे उ०। यह महाकवि अमेठी मे वहुत दिन तक राजा हनुमन्त सिह के पास रहे हे। हमने इनके हाथ के लिखे हुए पदमावत ग्रन्थ मे यह वात देखी है कि इन्होने अब्दुलजलील विलग्रामी को भापाकाव्य पढाया था।

सर्वेक्षण

हरिवश मिश्र अब्दुलजलील विलग्रामी के काव्यगुरु थे। जलील औरङ्गजेव के समकालीन थे। इनका रचनाकाल स० १७३९ है, अत सरोज मे दिया हुआ सवत् १७२९ ठीक है और हरिवश का रचनाकाल है। हरिवश मिश्र के पुत्र का नाम दिवाकर मिश्र था।[१]

खोज मे एक और हरिवश मिले है। यह विलग्राम के निकट गङ्गातट पर स्थित श्रीनगर नामक गाँव, जिला हरदोई के रहने वाले थे। यह जाति के भाट थे। इनके पिता का नाम जगदीश था और यह विलग्राम के रहने वाले नीर अहमद या मीरा मदनायक[२] के आश्रित थे। इन्होने स० १७६१ मे नखशिख की रचना की। यह ग्रन्थ खोज मे मिल चुका है[३] और इसी ग्रन्थ से यह सव सूचनाएँ मिलती हैं।

मुकुत देत अनयास, जग नायक की नायिका
मधुनायक को दास, नख शिख वरने आस के २
सवत सत्रह सै वरस एकसठ अधिक गनाइ
कातिक दुतिया चन्द को बुधवार सुख पाइ ३

कवि ने वश वर्णन इन शब्दो मे किया है—

सन्दोही के वंस मे हरिहर सिव प्रसाद
ताको सुत जगदीस हौं जामे कछु न विवाद
ता कुल हरिवंश भयो प्रगट घसीटे नाम
भाट वसत श्रीनगर मे गङ्गा तट सुभ ग्राम

---

(१) नागरी प्रचारिणी पत्रिका, भाग ६, अङ्क ४, कवि संख्या २९७ (२) वही ग्रन्थ, कवि सख्या ७०७ (३) खोज रिपोर्ट १९१२।७१

हरिवश मिश्र और हरिवश भाट, दोनो समकालीन हैं और दोनो का सम्वन्ध विलग्राम से है। हो सकता है कि दोनो एक ही हो। केवल जाति का अन्तर वाधक है। यदि सरोज-वर्णित इन हरिवश की जाति मिश्र न हो, तो दोनो कवि अभिन्न हो सकते हैं।

९७०।८२०

(१२) हित हरिवश स्वामी गोसाई वृन्दावन निवासी, व्यास स्वामी के पुत्र स०१५५९ मे उ०। इनके पिता व्यास जी ने राधावल्लभी सम्प्रदाय चलाया। यह देववन्द के रहने वाले गौड ब्राह्मण थे। हित हरिवश जी महान् कवि थे। सस्कृत मे राधा सुधानिधि नामक ग्रन्थ और भाषा मे हित चौरासी धाम ग्रन्थ इन्होने महा सुन्दर वनाया है।

सर्वेक्षण

हित हरिवश का जन्म वैशाख शुक्ल ११, चन्द्रवार, स० १५५९ को मथुरा से चार मील दक्षिण वादगाँव मे हुआ था और अन्तर्धान आश्विन शुक्ल शरत्पूर्णिमा स० १६०९ को। वहुत से लोग इनका जन्मकाल उक्त तिथि को सवत् १५३० मे मानते है। पर उक्त वर्ष मे उक्त तिथि शनिवार को पडी थी। वाणी ग्रन्थो मे १५५९ ही स्वीकार किया गया है—

सवत पन्द्रह सौ अधिक, उनसठ कौ वैसाख
सुदि एकादसी प्रकट हित, पुजई रस अभिलाख

—उत्तमदास कृत 'रसिक माल' से

हरिवश जी गौड ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम व्यास मिश्र और माता का तारावती था। यह देववन्द जिला सहारनपुर के रहने वाले थे। व्यास मिश्र का ही एक अन्य नाम केशवदास मिश्र भी कहा जाता है जो ठीक नही। केशवदास मिश्र, व्यास मिश्र के अग्रज थे। उक्त केशवदास मिश्र ने सन्यास ले लिया था। उनका सन्यासी नाम नृसिहाश्रम था। हरिवश जी का जन्म यात्राकाल मे हुआ था। कहा जाता है कि राधिका जी ने इन्हे स्वप्न मे मन्त्र दिया था। कुछ लोग इन्हे गोपाल भट्ट का शिष्य कहते हैं पर यह वात प्रमाणित नही होती। गोपाल भट्ट जी की साम्प्रदायिक भावना, धार्मिक निष्ठा, भक्ति पद्धति, व्रजभूमि आगमन काल, जीवन काल आदि धार्मिक एव ऐतिहासिक पहलुओ पर विना विचार किए ही यह सव निराधार लिख दिया गया है। साम्प्रदायिक विद्वेष और ईर्ष्या भावना का इसमे योग है।

१६ वर्ष की आयु मे इनका विवाह रुक्मिणी देवी से हुआ। इनसे इन्हे तीन पुत्र और एक

कन्या उत्पन्न हुई—(१) वनचन्द्र, सवत् १५८५, चैत्र वदी ६, मङ्गलवार, (२) कृष्णचन्द्र, संवत् १५८७, माघ सुदी ६, (३) गोपीनाथ, सवत् १५८८, फागुन पूर्णिमा, (४) पुत्री साहिवदे, सवत् १५८६।

हरिवश जी की माता तारा का देहावसान स० १५८६ मे एव पिता व्यास जी का स० १५६० मे हुआ। १५६० मे ही इन्होने देववन छोडा और वृन्दावन को चले। रास्ते मे निरथावल ग्राम मे आत्मदेव नामक ब्राह्मण ने इन्हे अपनी दो युवा कन्याएँ कृष्णादासी और मनोहरीदासी व्याह दी। यह उनके साथ १५६० फाल्गुन एकादशी को वृन्दावन पहुँचे १५६१ मे इन्होने 'राधा-वल्लभ' की मूर्ति सेवाकुञ्ज मे स्थापित की। १५६८मे मनोहरीदासी से इनके चौथे पुत्र मोहनचन्द्र का जन्म हुआ।इनका देहावसान स० १६०६ अश्विन पूर्णिमा को हुआ—

सवत सोलह सै रु नौ, आश्विन पूनौ स्वच्छ
ता दिन श्री हरिवश वपु दीसत नहि जग अच्छ

—उत्तमदास की वानी[1]

इन्होंने राधावल्लभी सम्प्रदाय की स्थापना की। इनके पिता व्यास जी इस सम्प्रदाय के सस्थापक नही थे, जैसा कि सरोज मे लिखा हे।

हरिवश जी व्रजभापा के श्रेष्ठ कवियो मे हैं। इनका हित चौरासी परम प्रसिद्ध ग्रन्थ है। इसमे ८४ पद हैं। ११, १२ सख्यक पद नरवाहन छाप युक्त है। इनकी स्फुटपदावली मे कुल २७ छन्द है। यमुनाष्टक (८ श्लोक) और रावासुवानिवि (२७० श्लोक) सस्कृत मे हैं। इनका सारा साहित्य स० १६६३ मे श्री हित सुधा सागर नाम से प्रभुदयाल मीतल के अग्रवाल प्रेस मथुरा से प्रकाशित हो चुका है।

९७१।८११

(१३) हरि कवि। यह महान कवि थे। इन्होने चमत्कारचन्द्रिका नामक ग्रन्थ भापा भूपरण का टीका और कवि प्रियाभरण नामक ग्रन्थ कविप्रिया का तिलक विस्तारपूर्वक वनाया है। इन्होने तीनो काण्ड अमरकोप की को भापा भी किया है।

---

(१) हित हरिवश जी का सारा विवरण, 'रावावल्लभ सम्प्रदाय सिद्धान्त और साहित्य', अध्याय ३ के अनुसार है।

सर्वेक्षण

यह हरि कवि, वस्तुत ६६५ सख्यक हरिचरणदास हैं।

६७२।८१२

(१४) हरिवल्लभ कवि। इन्होंने शान्त रस की कविता की है।

सर्वेक्षण

हरिवल्लभ जी के निम्नलिखित ग्रन्थ खोज मे मिले हैं—

(१) भगवत गीता की टीका, १६०२।६०, १६०६।२६०, १६०६।११७, १६१७।७०, १६२३।१५० ए, बी, सी, डी, १६२६।१७३ सी, १६२६।१४७ ए, बी, सी, डी, ई, एफ, एच, आई, जे,प १६२२।३५ ए बी। यही ग्रन्थ भाषागीता ज्ञान नाम से वर्णित है।[1] इस ग्रन्थ की रचना स० १७०१ माघ ११ को हुई।

सत्रह सै एकोतरा माघ मास तिथि ग्यास
गीता की भाषा करी हरिवल्लभ सुख रास

—खोज रिपोर्ट १६०६।११७

(२) राधा नाम माधुरी, १६२६।१४७ बी, १६४४।४८७।

(३) सङ्गीत दर्पण, १६२३।१५० ई, एफ, राज० रि० १। यही ग्रन्थ सङ्गीत भाषा[2] नाम से भी प्राप्त हे। इसी ग्रन्थ का एक अध्याय 'सङ्गीत सार सुराध्याय'[3] नाम से अलग पुस्तक स्वीकार किया गया है। इसी प्रकार राज० रि० १ मे भी 'रागमाला' नाम से इसका एक अध्याय है।

(४) प्रवोधचन्द्रोदय नाटक, राज रिपोर्ट २, पृष्ठ ६६। इस ग्रन्थ से पता लगता है कि हरिवल्लभ जी हित हरिवश के अनुयायी थे। इस ग्रन्थ के प्रारम्भ मे हित हरिवश और उनके पुत्र हित वनचन्द्र जी की स्तुति है।

श्री राधा वल्लभ पद, कमल मधु के भाइ
हित हरिवश वड़ी रसिक, रह्यो तिननि लपटाइ १

---

(१) खोज रिपोर्ट १६२६।१७३ ए। (२) यही ग्रन्थ १६०१।६१। (३) यही ग्रन्थ १६२६।७३वी।

ताके चरननि वन्दि के, वनचन्दहि सिर नाइ
रचना पोथी की करो, जाते करै सहाइ २

प्रतीत होता है कि हरिवल्लभ जी वनचन्द जी के शिष्य थे। ग्रन्थान्त मे कवि ने अपनी छाप यो लगाई है—

हरि वल्लभ भाषा रच्यो चित मे भयो निसङ्क
श्री प्रवोधचन्द्रोदयहि छठश्रो वीत्यो श्रङ्क

(५) भागवत भाषा, राज० रिपोर्ट ४, पृष्ठ १३-१४। यह अनुवाद मथुरादास के पुत्र किशोर के कथनानुसार प्रस्तुत किया गया था—

दडन मथुरादास सत श्री किशोर बड भाग
हौं दग जुगलकिशोर की वल्लभ सौं अनुराग ३०
भाषा श्री भागवत की तिनके उपजी चाह
हरिवल्लभ निज वुद्धि सम कीनौ ताहि निवाह ३१

इस अनुवाद मे कुछ सहायता चतुर्भुज के पुत्र कमल नयन ने भी की थी।

चतुर चतुरभुज को तनय, कमल नैन थिर वित्त
बँध्यो नेह गए सो रहे हरि, वल्लभ सग नित्त ३२
गुरु की कृपा प्रताप तें, कविन मे सु प्रवीन
भाषा भागवत की करत, कछु सहाय तिन कीन ३३
यह द्वादस भाषा रच्यो, हरि वल्लभ सज्ञान
त्रयोदसी अध्याय मे, आश्रय सहित वखान ३४

हरिवल्लभ कृत गीता के भाषानुवाद की चोरी एक आनन्द राय ने की है। साहित्यिक चोरी का यह एक अच्छा उदाहरण है। खोज के निरीक्षक रायवहादुर हीरालाल ने हरिवल्लभ जी के पक्ष मे निर्णय दिया है।[1]

रीतिकाल के प्रसिद्ध कवि कुमारमणि भट्ट के पिता का नाम भी हरिवल्लभ था। हो सकता है कि यह हरिवल्लभ जी कुमारमणि भट्ट के पिता ही हो। कुमारमणि के रसिक रसाल का रचनाकाल स० १७७६ है। अनेक रिपोर्टो मे गीता का अनुवाद काल स० १७७१ दिया भी है।

---

(१) खोज रिपोर्ट १६१७,पृ १४

९७३।८१३

(१५) हरिलाल कवि। इन्होने सामान्य कविता की है।

सर्वेक्षण

खोज मे चार हरिलाल मिले है—

(१) हरिलाल कवि—मथुरा निवासी, माथुर ब्राह्मण। अनुमानत माथुर कृष्ण कवि के वशज। दशम स्कन्ध भाषा, १९३२। ७५, व्रज वनोद लीला पञ्चाध्यायी १९१७।७३, व्रजविहार लीला १९४७।४३८।

(२) हरिलाल मिश्र—आजमगढ निवासी, बादशाह आलम के आश्रित। सं० १८५० के लगभग वर्तमान। राम जी की वशावली १९०९।११३।

(३) ¬रिलाल व्यास स० १८३७ के लगभग वर्तमान राधावल्लभी सम्प्रदाय के वैष्णव। सेवकवानी सटीक रसिक मेदिनी १९०९।११४।

(४) हरिलाल गोस्वामी—रूपलाल गोस्वामी के पुत्र, राधावल्लभी सम्प्रदाय के वैष्णव स० १७३८ के लगभग वर्तमान। इनका कोई ग्रन्थ नहीं मिला है। रूपलाल गोस्वामी के प्रसङ्ग मे १९१२।१५८, इनका उल्लेख हुआ है। सरोज मे ९७३ और ९९० सख्याओ पर दो हरिलाल हैं। पहले की कविता सामान्य कही गई है, एक सवैया उदाहृत है, जिसमे कवि की छाप लाल है, हरिलाल नही। दूसरे हरिलाल सुन्दर श्रृङ्गारी कवि हैं। इनका एक कवित्त उद्धृत है, जिसमे हरिलाल छाप है। सरोज के ये दोनो हरिलाल ऊपर वर्णित चारो हरिलालो मे मे कौन हैं, इनमे से हैं भी या नही, कुछ कहा नही जा सकता।

९७४।८१४

(१६) हठी कवि व्रजवासी, स० १८४७ मे उ०। इन्होने राधाशतक नामक ग्रन्थ वनाया है।

सर्वेक्षण

राधाशतक का नाम राधासुधा शतक है। इसी नाम से यह ग्रन्थ भारत जीवन प्रेस, काशी से प्रकाशित हो चुका है। इसमे प्रारम्भ मे ११ दोहे, फिर १०३ कवित्त है जिनमे सवैये मिले हुए है। एक दोहे मे रचनाकाल १८३७ दिया हुआ है—

रिषि सु देव वसु ससि सहित, निरमल मधु को पाय
माधव तृतिया भृगु निरखि रच्यो ग्रन्थ सुखदाय १०

इस ग्रन्थ की दो प्रतियाँ खोज मे भी मिली हैं ।[1] १९२३।१६३ वाली प्रति के अनुसार इसका रचनाकाल स० १८४७ है । सम्भवत 'देव' उलटकर 'वेद' हो गया है । १९०५।८९ की पुष्पिका मे हठी कवि को द्विज कालिञ्जरवासी कहा गया है । हो सकता है, यह पहले कालिञ्जर-वासी रहे हो, फिर विरक्त हो जाने पर व्रजवासी हो गए हो । व्रजमाधुरी सार के अनुसार यह हित सम्प्रदाय मे दीक्षित थे ।

सरोज (३,७ सस्करण)मे दिया स० १८८७ ठीक नही । कवि का रचनाकाल स० १८३७ या १८४७ है । १८८७ तक तो यह शायद जीवित भी न रहे हो, फिर यह जन्मकाल कैसे हो सकता है, जैसा कि ग्रियर्सन (६६४) मे स्वीकृत है । प्रथम सस्करण मे इनका समय स० १८४७ दिया गया है ।

९७५।८१५

(१७) हनुमान कवि, वन्दीजन बनारसी । वि० । इन्होने शृङ्गार की सरस कविता की है । सुन्दरीतिलक मे इनके बहुत कवित्त है ।

सर्वेक्षण

हनुमान बनारसी वन्दीजन थे । यह गोकुलनाथ के शिष्य मणिदेव के पुत्र थे । इनका जन्म स० १८९८ मे हुआ था । ३८ वर्ष की अल्प आयु मे ही इनका देहावसान स०१९३६ मे हुआ । इनका कोई ग्रन्थ नही मिलता । सरस फुटकर शृङ्गारी कवित्त-सवैये इनके बहुत मिलते हैं । द्विज कवि मन्नालाल से इनकी अच्छी घनिष्टता थी ।

९७६।८१६

(१८) हनुमन्त कवि । यह राजा भानुप्रताप सिंह के यहाँ थे ।

सर्वेक्षण

भानुप्रताप सिंह बिजावर के राजा थे । यह स० १९०४ मे गद्दी पर बैठे थे । इनका देहान्त स० १९५६ मे हुआ ।[2] यही समय इनके दरबारी कवि हनुमन्त का भी होना चाहिए ।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९०५।८९, १९२३।१६३ (२) बुन्देलखण्ड का सक्षिप्त इतिहास, अध्याय ३२, उपशीर्षक बिजावर ।

विनोद (२२३१) मे इन्हे विजावर का ब्राह्मण और गीतमाला का रचयिता कहा गया है। इनकाजन्मकाल स० १६०३ दिया गया है, जो वहुत ठीक नही प्रतीत होता। स० १६३५ मे इन्होने पारासरी भाषा या उडुदाय प्रदीप की रचना की थी।[1] इस ग्रन्थ से ज्ञात होता है कि यह किसी नग्र स्थान के निवासी थे और जाति के ब्राह्मण थे।

सरोज मे उदाहृत इनके दो छन्दो मे से एक कवित्त मे राजा भानुप्रताप का गुणानुवाद है। इससे इनका उक्त राजा का दरबारी कवि होना सिद्ध है।

९७७।८१७

(१९) होलराय कवि, बन्दीजन, होलपुर, जिले वारावकी स० १६४० मे उ०। यह महान् कवि अकवर के दरवार तक, राजा हरिवश राय दीवान कायस्थ वदरकावासी के वसीले से पहुँचे और एक चक पाकर उमी मे होलपुर नामक ग्राम वसाया। एक दिन श्री गोस्वामी तुलसीदास जी अयोध्या से लौटते समय होलपुर मे आए। होलराय ने गोसाई जी के लोटे की प्रशसा मे कहा—

"लोटा तुलसीदास को, लाख टका को मोल"

सुनकर गोसाई जी बोले—

"मोल तोल कछु है नही, लेहु राय कवि होल"

होलराय उस लोटे को मूर्ति के समान स्थापित कर उसके ऊपर चबूतरा बाँध पूजन करते रहे। हमने अपनी आँखो से देखा है कि आज तक उसकी पूजा होती है। इस होलपुर मे सिवा गिरिधर और नीलकण्ठ इत्यादि के कोई नामी कवि नही हुए। इन दिनो लछिराम और सन्तवकस, ये दो कवि अच्छे हैं। यह गाँव आज तक इन्ही वन्दीजनो के पास है।

सर्वेक्षण

होलराय के सम्वन्ध मे इससे अधिक सूचना कही भी नही दी गई है। ग्रियर्सन (१२६) और विनोद (१४६) मे सरोज मे दिए स० १६४० को उचित ही उपस्थितिकाल स्वीकार किया गया है। शुक्ल जी का इनके सम्वन्ध मे यह मन्तव्य ठीक प्रतीत होता है—

"रचना इनकी पुष्ट होती थी, पर जान पडता है कि ये केवल राजाओ और रईसो की विरुदावली वर्णन किया करते थे जिसमे जनता के लिये ऐसा कोई विशेष आकर्षण नही था कि इनकी रचना सुरक्षित रहती।"—हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ २१५

---

(१) खोज रिपोर्ट १९४४।४७४

९७८।८१९

(२०) हितनन्द कवि । यह सत्कवि थे ।

सर्वेक्षण

हितनन्द कवि के सम्वन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही ।

९७९।८२१

(२१) हरिभान कवि । इन्होने भाषासाहित्य का नरेन्द्र भूषण नामक ग्रन्थ महासुन्दर वनाया है । इन्होने अपने घर और सन्-सवत् का कुछ हाल नही लिखा ।

सर्वेक्षण

हरिभानु, कवि का पूरा नाम है और कविता मे भानु छाप है । इनका वनाया नरेन्द्र भूषण नामक अलङ्कार ग्रन्थ खोज मे मिला हे ।[1] यह ग्रन्थ वुन्देला रनजोर के लिये लिखा गया था । १७६, १८०, १९५, २०१, २०३, २११, २२४, २२६, २२८, २३४, और २६९ सख्यक छन्दो मे रनजोर सिह दीवान की प्रशसा है । सरोज मे इसी ग्रन्थ से दो कवित्त उद्धृत है । इनमे से दूसरे मे रनजोर सिह की प्रशस्ति है ।

९८०।८२२

(२२) हुसेन कवि, स० १७०८ मे उ० । इनके कवित्त हजारे मे हैं ।

सर्वेक्षण

हुसेन कवि के कवित्त हजारे मे थे, अत स० १७५० के पूर्व इनका अस्तित्व सिद्ध है । विनोद (२७६) मे,सरोज मे दिया गया स० १७०८ रचनाकाल माना गया है । प्रेमाख्यानक कवि गाजीपुरी उसमान के पिता का भी नाम हुसेन था, जो स० १६७० के पूर्व उपस्थित थे । हो सकता है, यह हुसेन वही हो । पर इनकी सम्भावना वहुत कम है, क्योकि सरोज के हुसेन शैली एव भाव धारा से रीतिकालीन कवि सिद्ध होते हैं ।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९२३।५२

९८१।८२३

(२३) हेमगोपाल कवि, स० १७८० मे उ०। हमने इनका एक ही कवित्त महाकूट पाया है।

सर्वेक्षण

हेमगोपाल के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही।

९८२।८२४

(२४) हेमनाथ कवि। यह केहरी कल्यान सिंह के यहाँ थे।

सर्वेक्षण

केहरी कल्यान सिंह की पहचान नही हो सकी। हेमनाथ का महाभारत विराटपर्व खोज मे मिला है।[1] प्राप्त प्रति का लिपिकाल स० १८७५ है, अत कवि इससे पहले का है।

९८३।८२५

(२५) हेम कवि। इनके शृङ्गार के सुन्दर कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

सरोज के हेम कोई घोर शृङ्गारी रीतिकालीन कविद है। इनसे भिन्न राजस्थान के रहने वाले हेम कवि थे। यह जैन थे। इनके गुरु का नाम गुणचन्द था। जेन-सम्प्रदाय सम्बन्धी इनका एक ग्रन्थ चूनरी[2] प्राप्त हुआ है।

९८४।८२६

(२६) हरिश्चन्द्र बाबू बनारसी, गोपालचन्द्र साह उपनाम गिरिधरदास के पुत्र। वि०। यह विद्या के प्रचार मे रात-दिन लगे रहते हैं। सब विद्याओ की पुस्तकें अपने सरस्वती भण्डार मे इकट्ठी की है। सब प्रकार के गुणीजन इनकी सभा मे विराजमान रहते हैं। यह भाषा और उर्दू दोनो जबानो के कवि हैं। इन्होने सुन्दरीतिलक नामक बहुत ही ललित सग्रह छपवाया है और जो ग्रन्थ इन्होने बनाए हैं, उनके हालात से हम नावाकिफ है।

---

(१) खोज रिपोर्ट १९४७।४४५ (२) वही १९३८।९४

सर्वेक्षण

हरिश्चन्द्र का जन्म भाद्र शुक्ल ५, स० १९०७ को काशी मे एक अत्यन्त सम्पन्न अग्रवाल कुल मे हुआ। इनके पिता का नाम गोपालदास उपनाम गिरिधरदास था। हरिश्चन्द्र हिन्दी के बहुत बड़े स्रष्टाओ एव पोषको मे से हैं। यह आधुनिक हिन्दी के जन्मदाता, हिन्दी नाटको के प्रमुख प्रारम्भिक प्रणेता एव हिन्दी गद्य को नए साँचे मे ढालने वाले है। इनके ग्रन्थो की सख्या १७५ तक कही गई हैं। ये सभी सभा से तीन भागो मे प्रकाशित हो चुके है। इनका निधन ३५ वर्ष की अल्प आयु मे स० १९४२, मे (६ जनवरी, १८८५) हुआ। सरोज मे इनके सम्बन्ध मे जो भी सूचनाएँ दी गई, ठीक हैं।

९८५।८२७

(२७) हरिजीवन कवि। इनके कवित्त सुन्दर हैं।

सर्वेक्षण

हरिजीवन कवि काठियावाड, पोरबन्दर के निवासी थे और यह बडे ब्रह्मनिष्ठ थे। इनकी बहुत सी ब्रजसम्बन्धी कविताएँ पायी जाती हैं। यह स० १९३८ के आस-पास उपस्थित थे और सरोजकार के समकालीन थे।[1]

९८६।८३०

(२८) हरिजन कवि, स० १६९० मे उ०। इनके कवित्त हजारे मे है।

सर्वेक्षण

हरिजन के कवित्त हजारे मे थे, अत स० १७५० के पूर्व इनका अस्तित्व सिद्ध है।

९८७।८३१

(२९) हर जू कवि, स० १७०५ मे उ०। ऐजन। इनके कवित्त हजारे मे है।

सर्वेक्षण

इन हर जू कवि के कवित्त हजारे मे थे, अत स० १७५० के पूर्व इनका अस्तित्व सिद्ध है।

---

(१) गुजरात का हिन्दी साहित्य, माधुरी, जून १९२७

हरजू मिश्र आजमगढ के रहने वाले थे। यह सरयूपारीण ब्राह्मण थे। इनके पूर्वज सरवार से पहले जौनपुर आए, फिर आजमगढ। हरजू के पितृव्य बलदेव मिश्र जौनपुर से आजमगढ आए थे, पर जौनपुर से सम्पर्क नही टूटा था। हरजू मिश्र के वशज श्री दयाशङ्कर मिश्र आजमगढ के गुरुटोला मुहल्ले मे आज भी विद्यमान है। इनके पूर्वज आजमगढ के राजाओ के गुरु थे। इन्ही लोगो के नाम पर इस मुहल्ले का नाम गुरुटोला पडा। आजमगढ की स्थापना स० १७२२ मे आजन खाँ ने की थी। बलदेव मिश्र इनके समय मे थे। हरजू मिश्र आजम खाँ के वशज राजा इरादत्त खाँ के मन्त्री, सहायक और शुभचिन्तक थे। इरादत खाँ के भतीजे जहाँयार खाँ ने उन्हे ५१ बीघे जमीन दी थी। हरजू मिश्र के बनाए हुए दो ग्रन्थ हैं और दोनो खोज मे मिल चुके है।

(१) अमरकोष भाषा —१९०९।११२। इस ग्रन्थ का रचनाकाल स० १७९२ है—

ससि(१) मुनि(७) निधि(९) अरु पच्छ(२) गनि सवत विक्रम लेहु
वार दिवाकर द्वैज सित माह उदित भव एह

इस ग्रन्थ मे कवि ने अपना वश-परिचय भी दिया है, पर यह अश रिपोर्ट मे उद्धृत नही है। दयाशङ्कर मिश्र से प्राप्त यह अश नीचे दिया जा रहा है।

ब्राह्मण सरयूपार के बसे जौनपुर आनि
जगन्नाथ मिश्रहि दियो ग्राम दिलीश्वर मानि
तिनके कुल पचादरित वैद्यराज भए सर्व
चरक सुश्रुत आदिक पढै ग्रन्थ सबै तजि गर्व
तिनके कुल बलदेव कवि भए काव्यपथ पेख
भाषा प्राकृत ससकृत तीनो बचन विशेख
अग्र सहोदर ताहि के सदानन्द विख्यात
तिनके हरजू मिश्र भे भाषा कवि गुन ज्ञात

यह ग्रन्थ आजमगढ के किसी सेठ अमीचन्द के लिए प्रस्तुत किया गया था।

(२) बिहारी सतसई की टीका—१९४१।३१२, १९४४।४७७। रिपोर्ट मे हरजू जौनपुर निवासी, किसी रामदत्त के अश्रित और स० १७९१ मे वर्तमान कहे गए है। यह वही टीका है, जिसमे सतसई के दोहो को वह अनुक्रम दिया गया, जो आजमशाही क्रम के नाम से ख्यात है।

धरौ अनुक्रम ग्रन्थ कौ नायकादि अनुसार
सहर जौनपुर मे बसत हरजू सुकवि विचार ७१७

सकल वितिक्रमौ होइ अर्थ अति गौर
रामदत्त के हुकुम सो करौं सरल सव ठौर ७१६

हरजू मिश्र ने आजम खाँ के लिये स० १७८१ मे सतसई को आजमशाही क्रम दिया था—

सतरह सै एकाशिया अगहन पाँचै सेत १
लिखि पोथी पूरन करो आजम खाँ के हेत

सरोज में दिया स० १७०५ अशुद्ध है।

६८८।८३२

(३०) हीरामणि कवि, स० १६८० मे उ०। ऐजन। इनके कवित्त हजारे मे है।

सर्वेक्षण

हीरामणि जी का एक ग्रन्थ एकादशी माहात्म्य[२] खोज मे मिला है। दोहा-चौपाइयो मे है। इसके कर्त्ता प्रसिद्ध कवि सेनापति के गुरु हीरामणि दीक्षित कहे गए है, जो सत्रहवी शती के मध्य मे हुए हैं और जिनका उल्लेख सेनापति ने अपने प्रसिद्ध काव्य ग्रन्थ कवित्त रत्नाकर (रचना-काल स० १७०६) मे बडे गर्व से किया है—

महा जानमनि विद्या दानहू मे चिन्तामनि
हीरामनि दीछित तें पाई पण्डिताई है

सरोज मे दिया स० १६८० ठीक है और कवि का उपस्थितिकाल या रचनाकाल है।

६८६।८२८

(३१) हरदेव कवि, स० १८३० मे उ०। यह कवि रघुनाथ राव पेशवा के यहाँ थे।

सर्वेक्षण

हरदेव कवि नागपुर के रघुनाथ राव, (स० १८७३-७५) के यहाँ थे, अत हरिदेव कवि का रचनाकाल स० १८७५ है। सरोज मे दिया स० १८३० इनका जन्मकाल या बाल्यकाल हो सकता है। इनके बनाए हुए दो ग्रन्थ माने गए है।

---

(१) ना० प्र० पत्रिका, वैशाख १९८५, पृष्ठ ७८ (२) खोज रिपोर्ट १९२३।१६७

(१) नायिका लक्षण—११०६।१७१।

(२) पिङ्गलचरणपद दोहा–विहार रिपोर्ट २। यह १९ चरणो का पिङ्गल ग्रन्थ है।

इसी समय के हरदेव नामक दो और कवि मिले हैं—

(१) हरदेव भट्ट—इनके दो ग्रन्थ मिले हैं—

क—रङ्गभावमाधुरी १९२९।१४३ए। इसका लिपिकाल स० १८७३ है।

ख—केशव जसचन्द्रिका १९२९।१४३बी। इसमे कृष्ण स्वामी के शिष्य, मिश्र मोहनलाल के पुत्र, सखी सम्प्रदाय के अनुयायी केशव जी का यश वर्णित है। इसका रचनाकाल स० १८६९ है।

सवत सकल पराण के रस नव ऊपर सारु
हिय हरिबोध प्रबोधिनी भई चन्द्रिका चारु

इस ग्रन्थ से इनके गुरु का नाम नन्दकिशोर ज्ञात होता है—

श्री गुरु नन्दकिशोर पद वन्दौ करि मन चाव
छिप्यो जानि जिन प्रकट किय केशव हिय को भाव २

यह नन्दकिशोर जी वृन्दावन मे रहते थे—

"वृन्दावन विहारहिं सदा तिहि पद कज मकरद"

रङ्गभावमाधुरी के विवरण के अन्त मे इनका उपनाम 'दरस' लिखा गया है। मेरी समझ से यह पठन दोष के कारण 'दास' के स्थान पर 'दरस' हो गया है। इसी ग्रन्थ की पुष्पिका से ज्ञात होता है कि यह गोकुल के रहनेवाले थे और इनके पिता ज्योतिषी थे।

(२) हरिदेव ब्राह्मण—इनके भी दो ग्रन्थ मिले हैं—

क—गुरु सत १९४४।४८५क। इसकी रचना स० १८८९ मे हुई।

९ ८ ८ १
अंक नाग वसु चन्द्र युत सवत कियौ प्रमान
सुदि षष्टी आषाढ की रच्यौ ग्रन्थ सुभ थान ९९

ख—रामायण रामवैभव—९४४।४८५ख। इसका रचनाकाल स० १८९४ है।

४ ९ ८ १
वेद अंक वसु चन्द्रमा सवत मिती पुनीत
आश्विन शुक्ला सप्तमी वार वरनि बुध मीत

९९०।८२९

(३२) हरिलाल कवि २। इनके शृङ्गार के सुन्दर कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

खोज मे चार हरिलाल मिले हैं जिनका विवरण ६७३ सख्या पर दिया गया है। कुछ कहा नहीं जा सकता कि सरोज के ये दोनो हरिलाल अभिन्न हैं अथवा भिन्न, और ये खोज मे प्राप्त चार हरिलालो मे से हैं अथवा नही, और हैं तो कौन से है।

९९१।८३३

(३३) हरिराम प्राचीन, स० १६८० मे उ०। इनका नखशिख बहुत सुन्दर है।

सर्वेक्षण

इन हरिराम प्राचीन के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही। ग्रियर्सन (१४१) और विनोद (२७७) मे सरोज के ६६४ और ६६१ सख्यक दोनो हरीरामो को मिला दिया गया है।

९९२।८३४

(३४) हिमाचल राम कवि, शान्ति जी श्री ब्राह्मण जिले फैजावाद, स० १६०४ मे उ०। इनकी सीधी-साधी कविता है।

सर्वेक्षण

हिमाचलराम का विवरण सरोजकार ने महेशदत्त के भाषा काव्यसग्रह से लिया है। महेश द्वारा दिया गया पूरा विवरण यह है—

"ये शाकद्वीपीय ब्राह्मण जिले वहिरायच भटौली के राज्य मे वडे ग्राम के रहने वाले थे। इन्होंने नागलीला, दधिलीला आदि ग्रन्थ वनाए और सवत् १६१५ मे वही मृतक हुए।"

—भाषा काव्यसग्रह, पृष्ठ १३४

स्पष्ट है 'शाति जी श्री' भ्रष्ट हैं। यह शाकद्वीपी ब्रह्मण थे। यदि हिमाचलराम का मत्युकाल स० १६१५ है, तो सरोज मे दिया स० १६०४ निश्चित रूप से रचनाकाल है, यह जन्मकाल नहीं है, जैसा कि ग्रियर्सन (६२६) और विनोद (२२६४) मे स्वीकृत है।

९९३।८३५

(३५) हीरालाल कवि। इनके शृङ्गार के वहुत सुन्दर कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

हीरालाल जी दलपतिराय के पौत्र और हेमराज के पुत्र थे। इनके दो ग्रन्थ खोज मे मिले हैं।

(१) राधा शतक—१६०५। सरोज मे उद्धृत छन्द इसी ग्रन्थ का ज्ञात होता है। इसका रचनाकाल सं० १८३६ है।

(२) रुक्मिणी मङ्गल—१६०५।६४।

इनके अतिरिक्त दो हीरालाल और हैं जिनका विवरण विनोद मे २१०१ और २५०६।१ सख्याओ पर हुआ है।

९९४।८३६

(३६) हुलास कवि। ऐजन। इनके शृङ्गार के वहुत सुन्दर कवित्त हैं।

सर्वेक्षण

सरोज मे इस कवि के नाम पर चित्रालङ्कार सम्वन्धी एक सवैया उद्धृत है। इसके तीन चरण प्रश्न करते है और चतुर्थ चरण उत्तर देता है। तृतीय चरण मे हुलास शब्द व्यवहृत है और यह उल्लास के अर्थ मे प्रयुक्त है, यह कवि छाप नही है।

"काहे हुलास सयोगिनि के जिय ?"

अत इस उदाहरण के सहारे हुलास का अस्तित्व स्वीकार नही किया जा सकता।

९९५।८३८

(३७) हरिचरणदास कवि। इन्होने भाषा साहित्य का महासुन्दर, अद्भुत, अपूर्व वृहतकविवल्लभ नामक एक ग्रन्थ वनाया है। इस ग्रन्थ मे अपने ग्राम और सन्-संवत् का वर्णन नही किया। हरिचरणदास के निम्नलिखित ग्रन्थ खोज मे मिले हैं—

क। टीका ग्रन्थ

(१) कवि प्रियाभरण, १६०४।५८, १६०६।१०८, राज० रिपोर्ट १, सख्या २३, राज० रिपोर्ट ३, पृष्ठ १२१, १९४७।४३१ क। कविप्रिया की यह टीका स० १८३५ के रची गई।

मवत अठारह सौ बिते पैंतिस अधिकै लेखि
साक अठारह सौ जवै कियो ग्रन्थ हरि देखि १४
माघ मास तिथि पञ्चमी शुक्ला कवि को वार
हरि कवि कृति सौं प्रीति हो राधा नन्द कुमार १५
—राज० रिपोर्ट ३, पृष्ठ १२१

(२) चमत्कारचन्द्रिका या भाषा भूषण की टीका—१९०६।४७, १९२०।५९ ए। प०१९२२।३६ ए, वी। अलङ्कारचन्द्रिका नाम से राज० रिपोर्ट ३, पृष्ठ १११।

भाषा भूषन ग्रन्थ को किय जसवत नरेस
टीका हरि कवि करत है उदाहरण दै वैस २
जहाँ सु चन्द्रालोक मे भाषा भुषन विरुद्ध
लच्छ सु लच्छन केरि तेहि करत सु हरि कवि सुद्ध

इस ग्रन्थ मे कुल ४९८ छन्द हे। पहले पद्य मे लक्षण, फिर गद्य मे टीका, अन्त मे विहारी और मतिराम से उदाहरण। १९०६ वाली रिपोर्ट मे इसे हरिदास, बाँदा वाले, ब्राह्मण की कृति कहा गया हे। इमका खण्डन पञ्जाव रिपोर्ट मे हुआ हे। इस टीका की रचना स० १८३४ मे हुई।

सवत ठारह सो वितै तापर चौतिस जान
टीका कीन्ही पूस दिन गुरु दसमी अवदान—पञ्जाव रिपोर्ट

ग्रन्थ मे कवि वश-परिचय सम्बन्धी यह दोहा है—

पुरोहित श्री नन्द के, मुनि साहित्य महान
मै हो तिनके गोत मे, मोहन मौ जजमान ४७३
—खोज रिपोर्ट १९०६।४७

यह दोहा विहारी सतसई की टीका मे भी है, अत सिद्ध हे कि यह ग्रन्थ हरिचरणदास का ही है।

(३) विहारी सतसई की हरिप्रकाश टीका—१९०४।४, १९१७।७१, १९४१।३१६, १९४७।४३१ग, राज रिपोर्ट ३, पृष्ठ १३५। यह टीका कृष्णजन्माष्टमी १८३४ को रची गई—

मवत अठारह सै विते तापर तीस रु चार
जन्माठै पूरो कियो कृष्ण चरन मन धारि

रत्नाकर जी ने विहारी सतसई सम्बन्धी साहित्य मे इस टीका की अत्यन्त प्रशसा की है। यह टीका भारत जीवन प्रेस, काशी से प्रकाशित भी हुई थी।

ख—अन्य ग्रन्थ

(१) कवि वल्लभ—१६०६।२५५ए, १६४७।४३१ख, राज० रिपोर्ट १, सं० २४, राज० रिपोर्ट ३, पृष्ठ १२२। इस ग्रन्थ मे ४३० पद्य ह। गद्य मे भी व्याख्या है। कवि ने विहारी सतसई, कविप्रिया, श्रुति भूषण, साहित्य दर्पण और स्व-रचित मोहनलीला नामक ग्रन्थो से उदाहरण दिए है। इसमे काव्य दोषो का विवेचन है और इसका रचनाकाल स० १८३६ है।

९ ३ ८ १
सवत नद हुतासन दिग्गज इन्दुहू सौ गनना जु दिखाई

—खोज रिपोर्ट १६०६।४७

(२) सभा प्रकाश—१६०६।२५५ बी, १६२०।५६बी, राज० रिपोट ३, पृष्ठ १४६। इस गन्थ की रचना स० १८१४, श्रावण शुक्ल त्रयोदशी को हुई—

४ ४ ८ १
वेद इन्दु गज भू गनित सवत्सर रविवार
सावन शुक्ल त्रयोदसी रच्यो ग्रन्थ विस्तार

हरिचरणदास ने भरत और वामन का आधार लेकर खण्डन-मण्डन की दृष्टि से इस ग्रन्थ की रचना की थी।

जो पे चाहत कवित सौं खण्डन मडन आस
सो चित दे नित देखिहै हरि कृत सभा प्रकाश ४
लिख्यो निरख मत भरत की वामन हू को सत्र
दोष बुद्धि करिहै नही जो कवि माँहि सुपुत्र ५—राज० रिपोर्ट ३

सर्वेक्षण

मोहनलीला इनका एक और ग्रन्थ हे, जो अनुपलब्ध है। इसके उद्धरण कविवल्लभ मे दिए गए हैं। अप्रकाशित सक्षिप्त विवरण मे रामायण सार[1] नामक एक और ग्रन्थ का उल्लेख है। यह इन हरिचरणदास की रचना नही प्रतीत होती। यह सम्भवत अयोध्यावासी उन हरिचरण की रचना हे जिन्होने स० १८७० मे रामचरितमानस की टीका लिखी।

विहारी सतसई की हरिप्रकाश टीका, कविप्रिया की टीका, और कविवल्लभ मे कवि ने अपने सम्बन्ध मे सूचनाएँ दी है।

---

(१) खोज रिपोर्ट १६४१।३१५

राजत सूबे विहार मे है सारन सरकार
सालग्रामी सुर सरित सरजू सोभ अपार १
सालग्रामी सरजु जहँ मिलीं गङ्ग सो जाय
अतराल में देस है हरि कवि को सरसाय २
परगन्ना गोवा तहाँ गाँवा चैन पुर नाम
गङ्गा सों उत्तर तरफ तहँ हरि कवि को धाम ३
सरजूपारी द्विज सरस वासुदेव श्रीमान
ताकौ सुत श्रीराम धन, ताको सुत हरि जान ४
नवापार मे ग्राम हैं, वढ़या अभिजन तास
विस्वसेन कुल भूप वर करत राज रवि मास ५
मारवाड मे कृष्ण गढ तहँ नित सुकवि निवास
भूप वहादुर राज हे विरद सिंह जुवराज ६
राधा तुलसी हरि चरन हरि कवि चित्त लगाइ
तहँ कवि प्रियाभरन यह टीका करी वनाय ७
सत्रह सै छ्यासठ महीं कवि को जन्म विचारि
कठिन ग्रन्थ सूधों कियो लेहैं सुकवि सुधारि ८

—कवि प्रियाभरन, राज० रिपोर्ट ३

सालग्रामी सरजू जहाँ मिलीं गङ्ग सो आय
अतराल मे देस सो हरि कवि को सरसाय १
सेवी जुगल किशोर के प्रान नाथ जी नाँव
सप्तसती तिनसो पढी वसि सिङ्गार वढ गाँव २
जमुना तट सिङ्गार वट तुलसी विपिन सुदेस
सेवत सन्त महन्त जेहि देखत हरत कलेस ३
पूरोहित श्री नन्द के मुनि साण्डिल्य महान
हम है ताकै-गौत मे मोहन मो जजमान ४

—विहारी सतसई की टीका

नवापुरा सुभ देस में राजा वढ़ैया ग्राम
श्री विश्वम्भर वश मे वासुदेव सम नाम १

ताके सुत श्री रामधन कियो चैनपुर वास
परगन्ना गोवा तहाँ चारि बरने सहलास २
सालग्रामी सरजु तहँ मिली गङ्ग की धार
अन्तराल मे देस तहँ है सारन सरकार ३
तनय रामधन सूरि कौ हरि कवि किय मरु वास
कवि वल्लभ ग्रन्यहि रच्यो कविता दोष प्रकास ४—कवि वल्लभ

इन उद्धरणो से कवि के सम्बध मे निम्नलिखित सूचनाएँ प्राप्त होती हैं। हरिचरणदास शण्डिल्य गोत्रीय सरयूपारीण ब्राह्मण थे। इनके पितामह वासुदेव नवापार वढैयामे रहते थे। यहाँ पर बिसेन ठाकुरो का राज्य था। इनके पिता रामधन वढैया को छोडकर चैनपुर मे आ बसे। चैनपुर गङ्गा और सरयू के सङ्गम के पास गङ्गा के उत्तर और परगना गोवा, जिला सारन, बिहार मे पडता है। कवि का जन्म स० १७६६ मे हुआ था। कवि ने यमुना के किनारे तुलसी वन या वृन्दावन मे कृष्णभक्त प्राणनाथ से श्रृङ्गार वट के नीचे बिहारी सतसई का अध्ययन किया। तदनन्तर वही १८३४ मे सतसई की टीका लिखी। यह मरुदेश राजपूताने मे कृष्णगढ नरेश बहादुर सिंह के आश्रय मे थे। यह बहादुर सिंह प्रसिद्ध नागरीदास के भाई थे। कवि वल्लभ मे रामधन के आगे सूरि लगा है। रत्नाकर जी का इसी से अनुमान है कि यह सम्भवत जैन थे।[१] जो हो, बात रहस्यमय है।

रत्नाकर जी ने इनके एक अन्य ग्रन्थ कर्णाभरण कोष का भी नाम लिखा है। रत्नाकर जी ने सरोज के ९७१ हरि और ९९५ हरिचरणदास की अभिन्नता स्वीकार की है, जो ठीक है।[२] सरोज मे कवि वल्लभ से जो कवित्त उदाहृत है, वह हरिचरणदास का नहीं है, ठाकुर प्राचीन का है।

राजस्थानी भाषा और साहित्य मे हरिचरणदास को कृष्णगढ का निवासी कहा गया है और इनका मृत्युकाल १८३५ दिया गया है।[३] दोनो बातें भ्रान्त हैं। हरिचरणदास बिहारी कवि हैं। इन्होंने कुछ दिनो तक ही कृष्णगढ मे निवास किया था। १८३९ इनके कवि वल्लभ का रचनाकाल है, अत १८३५ इनका मृत्युकाल नही हो सकता। हरिचरणदास की छाप 'हरि' है।

---

(१) बिहारी सतसई सम्बन्धी साहित्य, ना० प्र० पत्रिका, अंङ्क २, श्रावण १९८५, पृष्ठ १३२ (२) वही, पृष्ठ १३३ (३) राजस्थानी भाषा और साहित्य, पृष्ठ १८६

९९६।८३९

(३८) हरिचन्द कवि बरसाने वाले। इन महाराज ने छन्द स्वरुपिणी ग्रन्थ पिङ्गल का बहुत सुन्दर बनाया है।

सर्वेक्षण

इस कवि का एक ग्रन्थ हरिचन्द सत और मिला है।[१] इस कवि के सम्बन्ध मे कोई ग्रन्य सूचना सुलभ नही।

९९७।८१८

(३९) हजारी लाल त्रिवेदी, अलीगञ्ज, जिले खीरी। वि०। इनका नीति शान्तरस सम्बन्धी काव्य सुन्दर है।

सर्वेक्षण

हजारी लाल त्रिवेदी के सम्बन्ध मे कोई सूचना सुलभ नही।

९९८।३४४

(४०) हरिनाय ब्राह्मण, काशी निवासी, स० १८२६ मे उ०। इन्होने अलङ्कार दर्पण नामक ग्रन्थ बनाया है।

सर्वेक्षण

अलङ्कार दर्पण खोज मे मिल चुका है।[२] सरोज मे इनका विवरण एक बार और नाथ ५ के नाम से दिया गया है। यहाँ सरोज मे इस ग्रन्थ का रचनाकाल १८२६ और रचनाकाल-सूचक यह दोहा दिया गया है—

रस (६) भुज (२) वसु (८) अरु रूप (१) दे सवत कियो प्रकास
चन्द वार सुभ सप्तमी माधव पच्छ उजास

इस दोहे मे पहले ८६ दोहो मे लक्षण फिर, ४० छन्दो मे उदाहरण और तदुपरान्त १७ दोहो

---

(१) खोज रिपोर्ट, १९०९।१०७ (२) वही १९०६।१७०

में अनुप्रास कथन है। विनोद (८७६) के अनुसार इतिहास सम्बन्धी इनका एक और ग्रन्थ पृथी-साह मुहम्मद साह है, जो वृटिश म्यूजियम लाइब्रेरी, लन्दन मे ६६५७ सख्या पर है।

९९९।

(४१) हिम्मत वहादुर नवाव, स० १७६५ मे उ०। वलदेव कवि ने सत्कवि गिरा विलास मे इनके कवित्त लिखे हैं।

सर्वेक्षण

हिम्मत वहादुर का नाम अनूप गिरि था। नवाव शुजाउद्दौला, लखनऊ के यहाँ इनके गुरु थे। उनके मरने पर अनूप गिरि गोसाइयो के सैनिक सरदार हुए। यह वडे वीर थे। स० १८२० मेवक्सर मे जो लडाई अवध के नवाव शुजाउद्दौला और ईस्ट इण्डिया कम्पनी के बीच हुई थी, उसने अनूप गिरि ने अपनी जाँघ मे एक घाव खाकर नवाव की जान वचाई थी। इससे प्रसन्न होकर नवाव ने इन्हे सिकन्दरा और विन्दकी के परगने दे दिए थे।

अनूप गिरि किसी एक पक्ष को लेकर चलने वाले जीव नही थे। जहाँ लाभ देखते थे, लोभ से वही चले जाते थे।। इसीलिए चिढकर लाला भगवान दीन ने स्व-सम्पादित हिम्मत वहादुर विरदावली मे इनके सम्वन्ध मे कहा है—

"हिम्मत वहादुर भिक्षावृत्ति धारी सनाढ्या ब्राह्मण का लडका और पराया माल उडाने वाले गोसाई का चेला था।"

नवाव शुजाउद्दौला की प्रेरणा से हिम्मत वहादुर ने पहले वाँदा पर आक्रमण किया। तेंदवारी के पास वाँदा नरेश गुमान सिंह के सेनापति नौने अर्जुन सिंह से इनका युद्ध हुआ जिसमे हिम्मत वहादुर की हार हुई और यमुना तैर कर किसी प्रकार इन्होने अपनी जान वचाई।

हिम्मत वहादुर ने दूसरी वार फिर नवाव की सहायना से वुन्देलखण्ड पर आक्रमण किया इस वार दतिया के राजा रामचन्द्र को हराकर चौथ वसूल की और मराठो के भी कुछ क्षेत्र दवा लिए। तदनन्तर स० १८३२ मे मराठो ने हिम्मत वहादुर और इनके गोसाइयो को कालपी के निकट हराया। तव हिम्मत वहादुर और इनके गोसाई सिन्धिया की सेना मे भरती हो गए।

जव वुन्देलखण्ड मे मराठो की सत्ता की अवहेलना वुन्देलो ने प्रारम्भ की, तव यहाँ के मराठो की सहायता के लिए अली वहादुर भेजे गए। वाजीराव पेशवा को महाराज छत्रसाल ने अपना तिहाई राज्य दे दिया था। पन्ना दरवार की वेश्या की पुत्री मस्तानी को वाजीराव वहुत

---

(१) बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास, अध्याय २७, पैरा २

चाहते थे। मस्तानी के गर्भ से शमशेर वहादुर नामक पुत्र उन्हे उत्पन्न हुआ था । इन्ही शमशेर वहादुर के पुत्र अली वहादुर थे। स० १८४६ मे यह पूना से बुन्देलखण्ड आए। उस समय हिम्मत वहादुर सिन्धिया की सेना मे थे। अली वहादुर ने हिम्मत वहादुर को मिलाया और उन्हे अली वहादुर ने देश का कुछ भाग देने का वचन दिया तथा उन्हे को बाँदा का नवाव वनाने की प्रतिज्ञा की। एक वार फिर नौने अर्जुन सिह और हिम्मत वहादुर का युद्ध अजयगढ और वनगाँव के वीच के मैदान मे स० १८४६, वैशाख वदी वुधवार को हुआ। इस युद्ध मे नौने अर्जुन मारे गये और हिम्मत वहादुर तथा अली वहादुर की धाक जम गई। इस युद्ध का वर्णन पद्माकर ने 'हिम्मत वहादुर विरुदावली' मे किया है।

दूसरे मराठा युद्ध (स० १८६०-६३) मे हिम्मत वहादुर अँगरेजो की ओर हो गए थे। इन्ही की वीरता से वुन्देलखण्ड मे अँगरेजो की विजय हुई थी। अँगरेजो ने इन्हे सिकन्दरा और विन्दकी के परगने अन्तर्वेद मे और मौदहा छीन हमीरपुर और दोसा के परगने वुन्देलखण्ड मे दिए। इन्हे महराज वहादुर की पदवी भी दी। स० १८६१ मे इनकी अत्यन्त वृद्धावस्था मे मृत्यु हुई। इनके मरने पर इनका पुत्र नरेन्द्र गिरि उत्तराधिकारी हुआ । इसकी मृत्यु स० १८९७ मे हुई तव अँगरेजो ने उक्त जागीर जब्त कर ली और वशजो को पेन्शन दे दी।[1]

हिम्मत वहादुर की कविता वलदेव कवि के 'सत्कवि गिरा विलास' मे है। यह सङ्कलन सवत् १८०३ मे प्रस्तुत किया गया था। अत सरोज मे दिया गया सं० १७६५ इनका जन्मकाल हो सकता है।

१०००।

(४२) हितराम कवि। इनकी सूदन कवि ने प्रशसा की है।

सर्वेक्षण

हितराम जी का एक ग्रन्थ 'हरिभक्ति सिद्धान्त समुद्र या 'श्रीकृष्णश्रुति विरदावली'[2] नाम का मिला है। इसका रचना काल सवत् १७२२ वैशाख शुक्ल ३ है—

पुनर्वस सु नक्षत्र को चतुरथ चरण सु ताम
फते सिंह सु प्रसिद्ध जग जन्म नाम हितराम

(१) वुन्देलखण्ड का सक्षिप्त इतिहास, अध्याय २७, ३०, ३१ (२) खोज रिपोर्ट १९२६। १२०।

२ २ ७ १
नयन नयन रिषि बुद्धि अब्द सुभ अति मङ्गल जन
पुनि पवित्र वैसाख सुक्ल पख तीज अखै तन
तहाँ प्रगट भयो ग्रन्थ कृपा श्री जदुबर की करि
पढ़ै सुनै हिय धरै ताप कुल कोटिक उद्धरि

इस छन्द से सूचित होता है कि इनका ससार मे प्रसिद्ध नाम फते सिह था और जन्म का नाम हितराम था।

हितराम जी कछवाहा क्षत्रिय थे। इसी वश मे जगन्नाथ जी हुए हैं जो परम प्रसिद्ध भक्त थे और वृन्दावन मे रहा करते थे। इन जगन्नाथ के पुत्र राम साहि नरेश जो अत्यन्त दाता, शूर और सुजान थे। इन्ही राम साहि के पुत्र फते सिंह हुए।

कछवाहि तिहि कुल जानि धुर धर्म क्षत्री मानि
तिहि वश श्री जगन्नाथमुनि रूप जिनकी नाथ
तिहि सुनि राम साहि नरेस जस विख्यात अति देस
तिनके फते सिंह कुमार निस दिन एक भक्ति विचार
पुनि इह रच्यो ग्रन्थ पवित्र जामे कृष्ण भक्ति चरित्र

फते सिंह जी हित हरिवश सम्प्रदाय मे दीक्षित थे। इन्होने ग्रन्थ मे अपने गुरु के कुल का भी वर्णन किया है। हित हरिवश—उनके पुत्र वनचन्द्र—वनचन्द्र के पुत्र सुन्दर—सुन्दर के पुत्र दामोदर —और दामोदर के पुत्र कृपाल। यही हित कृपाल, फते सिंह के गुरु थे।

इहै जानि आयो सरन, गुन गायो नन्दलाल
भली बुरो तउ रावरो, कीजे कृपा कृपाल

हितराम जी अपने पितामह के समान वृन्दावन मे रहा करते थे।

१००१।

(४३) हरिजन कवि, ललितपुर निवासी, स० १९११ मे उ। इन कवि ने महाराज ईश्वरी नारायण सिंह का शिवराज के नाम से रसिक प्रिया की टीका बनाई है।

सर्वेक्षण

महाराज काशी नरेश के दरबार मे रहने वाले, ललितपुर झाँसी निवासी, हरिजन कवि प्रसिद्ध कवि सरदार बनारसी के पिता थे। सरदार कृत शृङ्गार सग्रह की पुष्पिका मे इसका स्पष्ट उल्लेख हुआ है—

"स्वस्ति श्रीमन्महाराजाधिराज काशीराज श्रीमदीश्वरीप्रसाद नारायणस्याज्ञाभिगामी, ललितपुरनिवासी हरिजनक्वीश्वरात्मज सरदाराख्यकवीश्वरेण विरचिते, तच्छिष्य नारायणदास कवीश्वरेण शोधन, शृङ्गारसग्रह समाप्त।"

हरिजन कवि का एक मात्र खोज मे प्राप्त ग्रन्थ तुलसी चिन्तामणि[1] है। इसमे दोहा चौपाइयो मे राम कथा है। इसकी रचना स० १९०३ मे हुई—

सवत दस नव सत त्रय धारू
श्रावन सुदि दुतिया भृगुवारू

रिपोर्ट मे इन हरिजन को टीकमगढ का कायस्थ कहा गया है। विनोद (१९८२) मे भी हरिजन कायस्थ टीकमगढ का उल्लेख है।

रसिक प्रिया की टीका सरदार की बनाई हुई है, सरदार के बाप हरिजन की बनाई नही। सरोज मे प्रमाद से यह उल्लेख हो गया प्रतीत होता है।

१००२।

(४४) हरिचन्द कवि, वन्दीजन, चरखारी वाले। यह राजा छत्रसाल चरखारी वाले के यहाँ थे।

सर्वेक्षण

चरखारी राज्य की स्थापना के पश्चात् यहाँ पर छत्रसाल नाम का कोई राजा नही हुआ। सरोजकार का अभिप्राय पन्ना-नरेश प्रसिद्ध छत्रसाल से हैं। चरखारी के गोपाल कवि ने चरखारी नरेशो के दरबारी कवियो का उल्लेख एक छप्पय मे किया है। इसके प्रथम चरण मे ही हरिचन्द और उनके आश्रयदाता महाराज छत्रसाल का उल्लेख है—

"प्रथम पढिव हरिचन्द, भूप छतसाल निवासह"—सरोज, पृष्ठ ६६

---

(१) खोज रिपोर्ट १९०६।४८

यहाँ से सरोजकार ने इस कवि का विवरण लिया है ।

छत्रसाल का राज्यकाल स० १७२२-८८ है । यही इनके दरबारी कवि हरिचन्द का भी जीवनकाल होना चाहिए । विनोद (५१४) मे इनका रचनाकाल स० १७४० माना गया है ।

१००३।

(४५) हुलासराम कवि । इन्होंने शालिहोत्र भाषा मे बनाया है ।

सर्वेक्षण

शालिहोत्र के रचयिता हुलासराम पाठक थे । इनके वैद्यक सम्बन्धी दो ग्रन्थ मिले हैं—(१) शालिहोत्र १९२६।१८३ ए,(२) वैद्य विलास १९२६।१८३ बी । प्रथम ग्रन्थ के कर्त्ता हुलास और द्वितीय के हुलास पाठक कहे गए हैं । पर दोनो अभिन्न हैं, क्योकि दोनो ग्रन्थो मे त्रिपुर सुन्दरी की वन्दना एक सी है—

(क) शालिहोत्र—

श्री अम्बा हुलास मुख वानी
त्रिपुर सुन्दरी आदि भवानी
प्रफुलित अरुण कमल तन जासू
अरुण किरण सम आस्य प्रकासू
अरुण वचन अभरण शृङ्गारा
अरुण सुमन सुन्दर उर हारा

(ख) वैद्य-विलास—

पुनि सेवे हुलास मुख वानी
त्रिपुर सुन्दरी आदि भवानी
रक्त वसन उर हार विराजै
पग नूपुर किङ्किनि कटि भ्राजै
नगन जटित कुंकुम कर मलवा
कुमकुम कलित सुचर्चित वलया
अरुन किरन सम अस्य प्रकासा
भृकुटी कुटिल मनोहर नासा

इस कवि के सम्बन्ध मे कोई और सूचना सुलभ नही।

भाषाकाव्यसग्रह मे भी एक हुलासराम है। यह शाकद्वीपी ब्राह्मण थे। इनका निवास-स्थान रामनगर, तहसील फतेपुर, जिला बाराबङ्की था। इनके पिता का नाम प्रयागदत्त था। यह स० १८४५ मे उत्पन्न और स० १९१२ मे दिवङ्गत हुए। इनके बनाए ग्रन्थ बुद्धि प्रकाश, वैताल पञ्चविंशतिका, तथा लङ्काकाण्ड आदि है।[1] इनके दो ग्रन्थ खोज मे मिले है—

(१) बुद्धि प्रकाश १९२३।१७० ए। इसमे रचनाकाल सूचक दोहा है—

अट्ठारह के अङ्क मे भयो सृष्टि विस्तार
सवत विक्रम भूप को श्रावन पूरनमास

कवि की छाप जन हुलास, दास हुलास और हुलास है। यह ग्रन्थ रामनगर-नरेश गुरुबख्श सिंह के लिए लिखा गया। इसमे छन्द नायक-नायिका और राग का वर्णन है। पुष्पिका मे इन्हे हुलास मिश्र कहा गया है।

(२) हुलास अष्टक, १९२३।१७० बी। यह हुलास मिश्र शालिहोत्र के रचयिता हुलास से भिन्न है अथवा अभिन्न, कुछ कहा नही जा सकता।

---

(१) भाषाकाव्य सग्रह, पृष्ठ १२७

उपसंहार

उपसंहार

तिथि-निर्णय

सरोज मे कुल १००३ कवियो का विवरण है। इनमे से ६८७ कवियो के सन्-सवत् भी दिये गये है। इन सवतो के आगे उ० लिखा हुआ है। ग्रियर्सन ने इस उ० का अर्थ उत्पन्न किया है। भूमिका मे मैंने उ० का अर्थ उपस्थित किया है। सर्वेक्षण मे एक-एक कवि को लेकर विचार किया गया है और सरोज के सन्-सवतो की परीक्षा की गई है यथा, वह जन्मकाल है या उपस्थितिकाल है या अशुद्ध है, वह विक्रम सवत है या ईसवी-सन् है। परन्तु प्रत्येक तिथि के जांचने के आधार नही मिल सके। लगभग ७० प्रतिशत तिथियो की जॉच सम्भव हो सकी है।

१. सरोज के जॉचे हुए संवत्

सरोज मे दी हुई ६८७ तिथियो मे से ४८२ तिथियो की जांच की जा सकी है। इस जाँच के परिणाम अत्यन्त आकर्षक और भव्य निकले हैं। सामान्यतया समझा जाता रहा है कि सरोज के सभी सवत् विक्रमीय है और विक्रमी सवन् मान कर ही उनका उपयोग किया जाता रहा है। भूमिका मे मैंने सङ्केत किया था कि सरोज मे कुछ सवत् ईसवी-सन् भी प्रतीत होते हैं। सवतो के परीक्षण से यह बात सत्य सिद्ध हुई है। कुछ सवत् जन्मकाल भी सिद्ध हुए है। अधिकाश संवत् उपस्थितिकाल और कुछ अशुद्ध भी सिद्ध हुए है। इन तिथियो के आधार पर उन तिथियो के सम्वध मे भी एक सामान्य धारणा वनाई जा सकती है।

(क) सरोज के सवत और ईसवी-सन्—सरोजकार का उद्देश्य सदैव-विक्रम सवत् देने का रहा है, ऐसा प्रतीत होता है। परन्तु शीघ्रता और अनवधानता तथा प्रमाद के कारण कुछ सवत् विक्रम के न होकर ईसवी-सन् हो गए हे। ऐसा प्रतीत होता हे कि सरोज का प्रारूप प्रस्तुत करते समय सरोजकार को राजाओ महाराजाओ और मुगल वादशाहो के सन्-सवतो से वहुत सहायता

मिली । ये सवत् मुख्यत इतिहास-ग्रन्थो से लिए गए, जहाँ ईसवी-सन् का एकछत्र साम्राज्य है। इतिहास ग्रन्थो से लिए जाने के कारण प्रारूप मे ये सन् ज्यो के त्यो ले लिए गए,इस आशा के साथ कि अन्त मे इन्हे विक्रम-सवत् मे बदल दिया जायेगा,पर अन्त मे कुछ सन् अनवधानता के कारण अपने प्रारूप वाले रूप ही मे, विना परिवर्तित हुए ही, चले आए, यद्यपि इनकी सख्या अधिक नही है। सर्वेक्षण के पश्चात् मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि कुल ६८७ सवतो मे से ३० सवत् विक्रम-सवत् न होकर ईसवी-सन् हैं । इन सनो की सूची आगे है । इस सूची के अवलोकन से स्पष्ट हो जायगा कि इन ३१ मे से २१ का सम्वन्ध तो केवल अकवर से है। अकवर का शासनकाल १५५६-१६०५ ईसवी है । २१ मे से १९ कवियो का समय अकवर के इस शानसकाल के भीतर पडता है । दो का समय इससे कुछ वाद का दिया गया है । इन २१ कवियो मे से केवल जमाल ऐसे एक कवि हैं जिनके सम्वन्ध मे यह लेख नही है कि यह अकबरकालीन है, पर सम्भवत सरोजकार को यह तथ्य ज्ञात था । अकवरी दरवार का केवल एक कवि जगन है, जिनका सम्वत् विक्रमीय है । इस कवि का नाम उस सवैयै मे आया है, जिसमे अकवरी दरवार के कवियो की नामसूची दी गई हे । पर विवरण मे इस तथ्य का कथन नही हुआ है कि यह कवि अकवरी दरवार से सम्वद्ध था । लक्ष्मी नारायण मैथिल खानखाना के आश्रित थे और खानखाना अकबर के प्रसिद्ध नव रत्नो मे से थे, अत अप्रत्यक्ष रूप से इन्हे भी अकवरी दरवार का कवि कहा जा सकता है । इनका भी सवत् ईसवी-सन् मे है । आलम का सवत् अशुद्ध है, शेप सभी सन् उपस्थितिकाल है । ऐसी धारणा न होनी चाहिए कि सरोज के अधिक से अधिक सवतो को उपस्थितिकाल सिद्ध करने के लिए ऐसा किया जा रहा है । यह कोई आकस्मिकता नही हे कि एक ही सम्राट् से सम्वन्धित एक दो नही इक्कीस सवत् ईसवी-सन् माने जाकर उपस्थितिकाल सिद्ध हो जायँ ।

अकवरकालीन २१ कवि

१।१	अकवर	१५८४
२।२१.	अमृत	१६०२
३।३७	आसकरन दास	१६१५
४।६८	करनेस	१६११
५।१३८	खानखाना रहीम	१५८०
६।१४८	गङ्ग	१५९५
७।२७३	जैत	१६०१
८।२८०	जमाल	१६०२
९।२९४	जगदीश	१५८८

१०।३००	जौध	१५६०
११।३०८	टोडर	१५८०
१२।३२०	तानसेन	१५८८
१३।३८८	नरहरि	१६००
१४।४६०.	प्रसिद्ध	१५६०
१५।४६५	फैजी	१५८०
१६।४६६	फहीम	१५८०
१७।४६७	ब्रह्म, वीरवल	१५८५
१८।६८०	मनोहरदास कछवाहा	१५६२
१६।७०४	मान राय	१५८०
२०।७१५	मान सिंह आमेर नरेश	१५६२
२१।८२५	लक्ष्मीनारायण मैथिल	१५८०

अन्य ६ कवि

२२।१६	आलम	१७१२	कुतुवुद्दीन आलम या वहादुर शाह (शासनकाल १७०७–१२ई०) के तथाकथित दरवारी।
२३।२२	आनन्दघन	१७१५	मुहम्मद शाह रङ्गीले (शासनकाल १७१६-४८ ई०) के दरवारी।
२४।३२	अब्दुर्रहिमान	१७३८	मुअज्जम शाह या कुतुवुद्दीन शाह आलम वहादुर शाह (शासनकाल १७०७-१२ ई०) के आश्रित।
२५।७६	कवीन्द्राचार्य सरस्वती	१६२२	शाहजहाँ शासनकाल(१६२८-५८ई०)
२६।२४१	छत्रसाल	१६६०	१६४६-१७३१ ई० जीवनकाल।
२७।२६६	जय सिंह सीसौदिया मेवाड नरेश	१६८१	इसी ईसवी-सन् मे यह सिंहासनासीन हुए।
२८।७०६	मदनकिशोर	१७०८	वहादुर शाह, (शासनकाल १७०७-१२, ई०) के आश्रित।
२६।७४१,	रघुनाथ राय	१६३५	अमर सिंह राठौर ने १६३४-५८ई० के वीच किसी समय शाहजहाँ के भरे दरवार मे सलावत खाँ की हत्या की थी।

३०।८५४	शिव सिंह सेंगर	१८७८	इसी ईसवी-सन् मे शिवसिंह सरोज प्रकाशित हुआ।
३१।९५२	श्रीलाल गुजराती	१८५०	मातादीन के कवित्त रत्नाकर के अनुसार यह १८५२ ई० मे आगरा नार्मल स्कूल मे हेड-मास्टर हुए थे।
३२।६८४	महेश	१८६०	मातादीन के कवित्त रत्नाकर के अनुसार इनका देहावसान १८५३ मे हुआ।

(ख) सरोज के सवत् और ग्रन्थ-रचनाकाल—सरोज मे दिए गए कतिपय कवियो के सवत् उनके किसी न किसी ग्रन्थ के रचनाकाल है। यह तथ्य स्पष्ट सिद्ध करता है कि सरोजकार ने कवियो का रचनाकाल दिया है, न कि जन्मकाल। सरोज के ३९ सवत्, ग्रन्थरचनाकाल सिद्ध होते हैं। इनमे से २२ तो स्वय सरोज से रचनाकाल सिद्ध है। २१ के तो रचनाकालसूचक छन्द सरोज मे उद्धृत है, शिव सिंह सरोज का रचनाकाल और प्रकाशन काल १८७८ ई० है, यही समय शिव सिंह सेंगर का दिया गया है।

सरोज के सिद्ध ग्रन्थ रचनाकाल

सख्या	कवि	सवत्	ग्रन्थ
१।४८	इच्छाराम अवस्थी	१८८५	ब्रह्मविलास
२।६९	करन भट्ट	१७९४	साहित्यचन्द्रिका
३।७३	कालिदास त्रिवेदी	१७४९	वुध विनोद
४।७४	कवीन्द्र उदयनाथ	१८०४	विनोदचन्द्रोदय
५।१८१	गुरुदीन पाण्डे	१८९१	वाक् मनोहर
६।१८८	ग्वाल	१८७९	यमुना लहरी
७।२३७	चैतन चन्द	१६१६	अश्व विनोदी
८।२५२	छेदीराम	१८९४	कवि नेह
९।३१८	तुलसी, यदुराय के पुत्र	१७१२	कवि माला
१०।३३९	दयानाथ दुवे	१८८९	आनन्द रस

सं०	कवि	संवत्	ग्रन्थ
११।३५६	दीनदयाल गिरि	१९१२	अन्योक्ति कल्पद्रुम
१२।४३४	नाथ ५	१८२६	अलङ्कार दर्पण
१३।४५७	प्राणनाथ १ वेसवारे वाले	१८५१	चकाव्यह इतिहास
१४।५७७	वालनदास	१८५०	रमलसार
१५।६३०	मान ब्राह्मण ३ वेसवारा के	१८१८	कृष्णकल्लोल
१६।६९७	मेधा	१८६७	चित्र-भूषण
१७।७३८	रघुनाथ बनारसी	१८०२	काव्यकलाधर
१८।७५५	रसलीन	१७९८	रस-प्रवोध
१९।७७३	रूप साहि	१८१३	रूप-विलास
२०।८३८	शम्भुनाथ वन्दीजन	१७९८	राम-विलास
२१।८४०	शम्भुनाथ त्रिपाठी	१८०९	वैताल पचीसी
२२।८५४	शिव सिंह सेगर	१८७८	शिवसिंह सरोज
२३।८६७	श्रीधर, सुब्बा सिंह	१८७४	विद्वन्मोदतरङ्गिणी
२४।८७६	सुन्दर, शृङ्गारी	१६८८	सुन्दरशृङ्गार
२५।९३१	सूरति मिश्र,	१७६६	अलङ्कारमाला
२६।९९८	हरिनाथ ब्राह्मण काशी	१८२६	अलङ्कारदर्पण
२७।	हृष्ठी	१२४७	रावासुधानिधि

इन २२ कवियो मे से नाथ ५ और हरिनाथ ब्राह्मण काशी वाले एक ही हैं। गुरुदीन पाण्डे का रचनाकाल सरोज मे १८९१ दिया गया है। सरोजकार ने अपनी समझ से वाकमनोहर का रचनाकाल ही दिया है। उसने रस से ९ और नभ से १ का अर्थ लिया है, पर रस ६ और नभ से ० का ही वोघ सामान्यतया होता है। अत इस ग्रन्थ का रचनाकाल स० १८६० है, न कि १८९१।

अन्य सूत्रो से सिद्ध ग्रन्थ का रचनाकाल

सख्या	कवि	समय	ग्रन्थ	सूत्र
१।४२	आकूब खा	१७७५	रस भूषण	विनोद ६७३
२।७१	करन वन्दीजन, जोधपुर	१७८७	सूरजप्रकाश	खोज १९४१।२४
३।११०	काशिराज कवि	१८८९	चित्रचन्द्रिका	खोज १९०९।१४५

सख्या	कवि	समय	ग्रन्थ	सूत्र
४।११२	कृपाराम १ जयपुर	१७७२	समयबोध,	खोज १६०६।१५६, १६२६।२४५ बी
५।५०४	बलदेवदास जौहरी	१६०३	कृष्ण खण्ड,	खोज १६२३।३० ए, १६४७।२३
६।५०६	विक्रम, विजयबहादुर बुन्देला	१८८०	हरिभक्ति विलास,	खोज १६०३।७३
७।६०२	भगवतीदास ब्राह्मण	१६८८	नासकेतोपाख्यान,	खोज १६२३।४८ ए
८।६७६	मदनगोपाल १ सुकुल	१८७६	अर्जुन विलास,	खोज १६२३।२५०
६।७२४	रामनाथ प्रधान	१६०२	रामकलेवा	खोज, १६०६।१०७
१०।८११	लोने सिंह १ खीरी	१८६२	राम स्वर्गारोहण,	खोज १६२३।२४६
११।८३४	सुखदेव मिश्र	१७२८	पिङ्गलवृत्त विचार,	१६२०।१८७ ई
१२।८४१	शम्भुनाथ मिश्र, सातनपुरवा	१६०१	शिवपुराण	विनोद, १८०८
१३।६१३	सबल सिंह चौहान	१७२७	सभापर्व, द्रोणपर्व,	विनोद ३६०

(ग) सरोज के उपस्थितिकालसूचक सवत्—सरोज के सवतो की जांच मे उनके खोज मे प्राप्त ग्रन्थो के रचनाकाल, उनके आश्रयदाता राजाओ के शासनकाल या उनके ग्रन्थो मे वर्णित समसामयिक घटनाओ के काल से बडी सहायता मिली है। आगे ऐसे २४५ सवतो की सूची दी जा रही है, जिन्हे सर्वेक्षण मे भली-भाँति उपस्थितिकाल सिद्ध किया जा चुका है। उपस्थितिकाल होने का प्रमाण भी अत्यन्त सक्षेप मे दे दिया जा रहा है।

सख्या	कवि	सवत्	प्रमाण
१।३	अजबेस नवीन	१८६२	१८६८ बिहारी सतसई की टीका
२।५	अवधेश बुन्देलखण्डी	१६०१	१८८६-१६१७ चरखारी नरेश रतन सिंह का शासनकाल
३।६	अवधेश सूपा के	१८६५	,, ,,
४।८	औघ	१८६६	१८६० जन्मकाल
५।१२	अम्बुज	१८७५	१८१०-६० पद्माकर का जीवनकाल, अतः १८७५ इनके पुत्र का रचनाकाल ही है।
६।१४	अहमद	१६७०	१६७८ कोकसार का रचनाकाल
७।१५	अनन्य	१७६०	जीवनकाल १७१०-६०

संख्या	कवि	संवत्	प्रमाण
८।१७	असकन्द गिरि	१९१६	१९०५ रसमोदक का रचनाकाल
९।२३	अभिमन्यु	१६८०	१६८३ इनके आश्रयदाता रहीम का मृत्युकाल
१०।२१	अनाथदास	१७१६	१७२६ विचारमाला का रचनाकाल
११।३४	अपर	१६२६	१६३२ स्वीकृत उपस्थितिकाल
१२।३५	अग्रदास	१५९५	" " "
१३।४३	अनवर खाँ	१७८०	१७७१ अनवरचन्द्रिका का रचनाकाल
१४।४९	ईश्वर कवि	१७३०	१७१५-६४ आश्रयदाता औरङ्गजेब का शासनकाल
१५।५३	ईन्द्रजीत त्रिपाठी	१७३९	" " "
१६।६३	केशवदास	१६२४	१६१२-७४ जीवन काल
१७।६५	केशव राय बाबू बघेलखण्डी	१७३६	१७५३ जेमुन की कथा का रचनाकाल
१८।६७	कुमारमणि भट्ट	१८०३	१७७६ रसिक रसाल का रचनाकाल
१९।७२	कुमारपाल महाराज अन्हलवाडा	१२२०	११९९-१२३० शासनकाल
२०।७७	किशोर	१८०१	१८०५ अलङ्कारनिधि का रचनाकाल
२१।७८	कादिर	१६३५	१६१२-४१ रसखानि का रचनाकाल
२२।७९	कृष्ण कवि १	१७४०	१७१५-६४ इनके आश्रयदाता औरङ्गजेब का शासनकाल
२३।८६	कमल नयन	१७८४	१७७१ अनवरचन्द्रिका का रचनाकाल
२४।९४	कवि दत्त	१८३६	१७९१ लालित्यलता का रचनाकाल १८०४ सज्जनविलास का रचनाकाल
२५।९६	काशीराम	१७१५	१७१५-६४ औरङ्गजेब का शासनकाल
२६।१०४	कलानिधि	१८०७	१७२९-१८०९ जीवनकाल
२७।१०५	कुलपति मिश्र	१७१४	१७२७ रसरहस्य का रचनाकाल
२८।१०६	कार बैग फकीर	१७५६	१७१७ रचनाकाल
२९।१०८	कृष्ण सिंह बिसेन, भिनगा	१९०९	१९०१ मे अवध के नाजिम महमूदअली से इनका युद्ध हुआ था
३०।१११	कोविद उमापति	१९३०	१९२४ अयोध्यामाहात्म्य का रचनाकाल १९३० मृत्युकाल

सख्या	कवि	सवत्	प्रमाण
३१।११५	किशोर सूर	१७६१	१६३२ अग्रदास और उनके गुरु भाई का समय, १७२६ अग्रदास के शिष्य नाभादास का मृत्युकाल, अत १७६१ कील्हदास के पोता शिष्य किशोर सूर का रचनाकाल
३२।११६	कुम्भनदास	१६०१	१५२५-१६४० जीवनकाल
३३।११८	कल्याणदास	१६०७	१६३२ इनके गुरु भाई अग्रदास का स्वीकृत समय
३४।१२१	कृष्णदास गोकुलस्थ	१६०१	१५५३-१६३६ जीवनकाल
३५।१२२	केशवदास, कश्मीरी	१६०८	१५८४ से पूर्व किसी समय चैतन्य महाप्रभु से शास्त्रार्थ मे पराजित हुए थे
३६।१२४	कान्हरदास, व्रजवासी	१६०८	१६५२ मे इनके भण्डारे मे नाभादास को गोस्वामी की उपाधि मिली
३७।१३५	खुमान चरखारी वाले	१८४०	१८३०-८० रचनाकाल
३८।१४७	खड्गसेन, कायस्थ	१६६०	१६४६ भक्तमाल मे उल्लेख
३९-१५४	गङ्गाराम बुन्देलखण्डी	१८६४	१८४६ ज्ञानप्रदीप का रचनाकाल
४०।१५५	गदाधर भट्ट	१६१२	१८६०-१९५५ जीवनकाल
४१।१५८	गदाधर मिश्र व्रजवासी	१५८०	१५४२-८४ इनके गुरु चैतन्यमहाप्रभु का जीवनकाल
४२।१५९	गिरिधारी,ब्राह्मण,बैसवाडा	१६०४	१६८४ मे इनके प्रौढ पौत्र उपस्थित
४३।१६१	गिरिधर कवि	१८४४	१८३२-५४ लखनऊ के नवाब आसफुद्दौला का शासनकाल
४४।१६३	गिरिधर, बनारसी	१८९६	१८६०-१९१७ जीवनकाल
४५।१६५	गोपाल १, कायस्थ, रीवाँ	१६०१	१८८५ शृङ्गारपचीसी का रचनाकाल
४६।१६६	गोपाल २, चरखारी	१८८४	१८९१ शिखनख दर्पण का रचनाकाल
४७।१६७	गोपाल लाल, कवि ३	१८५२	१८३१ बोधप्रकाश और १८५३ सुदामाचरित्र का रचनाकाल
४८।१७०	गोपालदास, व्रजवासी	१७३६	१७५५ रासपञ्चाध्यायी का रचनाकाल
४९।१७२	गोकुलनाथबन्दीजन, बनारसी	१८३४	१७९७ १८२७ इनके एक आश्रयदाता काशीनरेश बरिवण्ड सिंह का शासनकाल
५०।१७३	गोपीनाथ	१८५०	१८५२-९२ काशीनरेश उदितनारायण सिंह का शासनकाल

५१।१७६	गुरुगोविन्द सिंह	१७२८	१७२३ ६५ जीवनकाल।
५२।१७६	गोविन्ददास ब्रजवासी	१६१५	१५६२-१६४२ जीवनकाल।
५३।१८०	गोविन्द कवि	१७६१	१७६७ कर्णाभरण का रचनाकाल।
५४।१८४	गुरुदत्त शुक्ल २	१८६४	१८५६ मे इनके भाई दवकीनन्दन ने अवधूत-भूषण लिखा।
५५।१८५	गुमान मिश्र साडी	१८०५	१८०३ नैषधचरित का अनुवादकाल।
५६।२०१	गुलाव सिंह पञ्जाबी	१८४६	१८३४ भावरसामृत और १८३५ मोक्ष वन्ध प्रकाश का रचनाकाल।
५७।२०२	गोवर्धन	१६८८	१७०७ कुडलिया पद्मसिंह जोराका रचनाकाल।
५८।२०५	गुलाल सिंह	१७८०	१७५२ दफ्तरनामा का रचनाकाल।
५९।२०७	ज्ञानचन्द यती	१८७०	१८८० टॉड कृत राजस्थान का रचनाकाल।
६०।२१८	चन्द २	१७४९	१७६१ इनके आश्रय दाता पठान सुलतान का समय।
६१।२२१	चिन्तामणि त्रिपाठी	१७२९	१७५१ कविकुल कल्पतरु का रचनाकाल।
६२।२२४	चन्दन राय	१८३०	१८१०-६५ रचनाकाल।
	चतुर विहारी व्रजवासी	१६०५	गोसाई विट्ठलनाथ के शिष्य।
६३।२३१	चतुर्भुज दास	१६०१	१५८७-१६४२ जीवनकाल।
६४।२३५	चण्डीदत्त	१८९८	१९०७ द्विजदेव की शृङ्गारलतिका का रचना-काल।
६५।२४३	हेमकरन धनोली	१८७५	१८३५-१९१८ जीवनकाल।
६६।२४७	हेम	१७५५	१७४३ इनके अनुज और पद्माकर के पिता मोहनलाल भट्ट का जन्मकाल।
६७।२५१	छीत स्वामी	१६०१	१५७२-१६४२ जीवनकाल।
६८।२५४	हेम कवि २	१५८२	१५८७-९७ हुमायूं का शासनकाल।
६९।२५६	जुगलकिशोर भट्ट	१७९५	१८०५ अलकारनिधि का रचनाकाल।
७०।२६३	जानकीप्रसाद वनारसी	१८६०	१८७२ रामचन्द्रिका की टीका का रचनाकाल।
७१।२६५	जसवन्त सिंह तिरवा	१८५५	१८७१ मृत्युकाल।
७२।२६७	जवाहिर १ भाट	१८४५	१८२६ जवाहिर रत्नाकर का रचनाकाल।
७३।२६९	जेनुद्दीन अहमद	१७३६	१७२९ इनके आश्रित चिन्तामणि त्रिपाठी का रचनाकाल।

७४।२७०	जयदेव कम्पिला वाले	१७७८	१७६० तक इनके काव्यगुरु सुखदेव मिश्र का जीवनकाल।
७५।२७५	जय कवि भाट, लखनऊ	१९०१	१९०४-१३ लखनऊ के नवाब वाजिदअलीशाह का शासनकाल।
७६।२७७	जगन कवि	१६५२	१६१३-६२ अकबर का शासनकाल।
७७।२७८	जनार्दन कवि	१७१८	१७४३ मे इनके दूसरे पुत्र मोहनलालभट्ट का जन्म।
७८।२८१	जीवनाथ भाट	१८७२	१८३२-५४ लखनऊ के नवाब आसफुद्दौल का शासनकाल।
७९।२८८	जसोदा नन्दन	१८२८	१८२७ बरवे नायिकाभेद का रचनाकाल।
८०।२९०	जोडसी	१६५८	१७०० लछिराम ब्रजवासी का समय, १६५८ इनके मित्र मोहन के पितामह का समय।
८१।२९५	जय सिंह आमेर नरेश	१७५५	१७४५-१८०० जीवनकाल।
८२।२९७	जलील बिलग्रामी	१७३९	१७१५-६४ औरङ्गजेब का शासनकाल।
८३।२९८	जमालुद्दीन	१६२५	१६१३-६२ अकबर का शासनकाल।
८४।३१६	गो० तुलसीदास	१६०१	१५८९-१६८० जीवनकाल।
८५।३२५	ताज कवि	१६५२	१६४२ के पहले विट्ठलनाथ की शिष्या हुई।
८६।३२७	तीर्थराज	१८००	१८०७ समर-सार का रचनाकाल।
८७।३३०	तोष	१७०५	१६९१ सुधानिधि का रचनाकाल।
८८।३३१	तोष निधि	१७९८	१७९४ रतिमञ्जरी का रचनाकाल।
८९।३३५	दयाराम त्रिपाठी	१७९९	१७७९ दयाविलास का रचनाकाल।
९०।३३८	दयानिधि बैसवारे के	१८११	१८०७ मे इनके आश्रयदाता अचल सिंह के लिए तीर्थराज ने समरसार की रचना की थी।
९१।३४२	दत्त साढि वाले	१८३६	१७९१ लालित्य लता और १८०४ सज्जन-विलास का रचनाकाल।
९२।३४३	दास, भिखारी	१७८०	१७९१ रस-साराश का रचनाकाल।
९३।३४४	दास, वेनी माधव	१६५५	१६८७ मूल-गोसाइंचरित का रचनाकाल और १६९९ मृत्युकाल।
९४।३५८	द्विजदेव	१९३०	१९०७ शृङ्गारलतिका का रचनाकाल और १९३० मृत्युकाल।

९५।३५८	दुर्गा	१८६०	१८५३ के एक युद्ध का आँखो देखा वर्णन किया है।
९६।३५९	दूलह	१८०३	१८०४ मे इनके वाप कवीन्द्र ने रमचन्द्रोदय की रचना इनके लिए की।
९७।३६४	देवकीनन्दन शुक्ल	१८७०	१८५६ अवधूतभूपण का रचनाकाल।
९८।३८२	धनीराम वनारसी	१८८८	१८८० काव्यप्रकाश का रचनाकाल।
९९।३८३	धीर	१८७२	१८७० 'कवि प्रिया का तिलक' का रचना काल।
१००।३८७	धौकल सिंह वैस	१८६०	१८६४ रमल प्रश्न का रचनाकाल।
१०२।४०३	नरवाहन	१६००	१५३०-१६०१ इनके गुरु हितहरिवंश का जीवनकाल।
१०२।४०६	नारायण भट्ट गोसाई	१६२०	१६४१ भक्तमाल मे उल्लेख।
१०३।४०१	निधान १ प्राचीन	१७०८	१६७४ जसवन्त विलास का रचना काल।
१०४।४११	निधान २ ब्राह्मण	१८०८	१८१२ शालिहोत्र और १८३२ वसन्तराज का रचनाकाल।
१०५।४१४	निवाज ३, वुन्देलखण्डी	१८०१	१८१७ इनके आश्रयदाता भगवन्तराय खीची का मृत्युकाल।
१०६।४१९	नीलकण्ठ त्रिपाठी	१७३०	१६९८ अमरेश विलास का रचनाकाल।
१०७।४२२	नरिंद २, महाराजा पटियाला	१९१४	१९१९ मृत्युकाल।
१०८।४३३	नाथ ४	१८११	१८०३ मुहूर्त्त चिन्तामणि और १८०७ अलङ्कारदीपिका का रचनाकाल।
१०९।४३६	नाथ ६, व्रजवासी	१६४१	१६४९ भक्तमाल मे उल्लेख।
११०।४३९	नवल सिंह कायस्थ	१९०८	१८७३-१९२६ रचनाकाल।
	४४४ नारायण	१८०९	१८११-३२ अवध के नवाव शुजाउद्दौला का रचनाकाल।
१११।४४३	पद्माकर	१८३८	१८१० जन्मकाल, १८९० मृत्युकाल।
११२।४४९	प्रवीणराय पातुर	१६४०	१६५८ मे केशव ने इनके लिए कवि-प्रिया की रचना की थी।
११३।४५५	प्रेमी यमन	१७९८	१७६३-७६ वहादुर शाह और फर्रुखसियर का शासनकाल।

११४।४५८	प्राणनाथ २, कोटा वाले	१७८१	१७६५ कल्कि-चरित का रचनाकाल।
११५।४५१	परमानन्द दास	१६०१	१५५०-१६४१ जीवनकाल।
११६।४६२	प्रधान कवि	१८७५	१८५७ जन्मकाल।
११७।४६३	पञ्चम प्राचीन, बुन्देलखण्डी	१७३५	१७२२-८८ छत्रसाल का शासनकाल।
११८।४६७	पुरुषोत्तम	१७३०	,, ,, ,,
११९।४६९	पण्डित प्रवीण, ठाकुरप्रसाद	१९२४	१९०७ द्विजदेव का रचनाकाल।
१२०।४७०	पतिराम	१७०१	१६१२-७४ इनके मित्र केशव का जीवन काल।
१२१।४७१	पृथ्वीराज	१६२४	१६०६-१६५७ जीवनकाल।
१२२।४७४	परशुराम २, ब्रजवासी	१६६०	१६७७ विप्रमती का रचनाकाल।
१२३।४८४	पराग बनारसी	१८८३	१८५२-९२ इनके आश्रयदाता काशी-नरेश महाराज उदित नारायण सिंह का शासनकाल।
			४९०।३३-७७० पुण्यकृत शिलालेख का रचनाकाल।
१२४।४८७	प्रेमनाथ	१८३५	१८३९ महाभारत का रचनाकाल।
१२५।४९३	फूलचन्द ब्राह्मण बेसवारे वाले	१९२८	१९३० अनिरुद्ध स्वयवर का रचनाकाल।
१२६।४९८	बुद्धराव, हाड़ा बूँदी	१७५५	१७४२ जन्मकाल।
१२७।४९९	बलदेव बघेलखण्डी	१८०९	१८०३ सत्कविगिराविलास का रचनाकाल
१२८।५००	बलदेव चरखारी	१८९६	१९१७-३७ के बीच किसी समय चरखारी वापस आए।
१२९।५०१	बलदेव क्षत्रिय, अवध	१९११	१९०७ इनके काव्य शिष्य द्विजदेव की शृङ्गारलहरी का रचनाकाल।
१३०।५०५	विजय, विजयबहादुर बुन्देला	१८७८	१८३९-८६ शासनकाल।
१३१।५०८	बेनी बेतीवाले	१८४४	१८५१ अलङ्कारप्रकाश का रचनाकाल
१३२।५०९	बेनी प्रवीण	१८७६	१८७४ नवरस तरङ्ग का रचनाकाल।
१३३।५१२	वीर, वीरवर कायस्थ, दिल्ली	१७७७	१७७९ काव्यचन्द्रिका का रचनाकाल।
१३४।५१३	बलभद्र सनाढ्य	१६४२	१६१२-७४ इनके अनुज केशव का जीवन काल।
१३५।५१५	व्यास स्वामी हरीराम शुक्ल	१५९०	१५६७ जन्मकाल।
१३६।५१६	वल्लभ रसिक	१६८१	१६३२ मे इनके गुरु स्वामी हरिदास का देहान्त।

१३७।५१६	विठ्ठल नाथ	१६२४	१५७२-१६४२ जीवनकाल।
१३८।५२०	विपुल विठ्ठल	१५८०	१५३७ इनके भाञ्जे स्वामी हरिदास का जन्मकाल।
१३९।५२५	वशीधर मिश्र सडीला	१६७२	१६७२ मृत्युकाल।
१४०।५३७	व्रजवासी दास	१८१०	१८२७ ब्रजविलास का रचनाकाल।
१४१।५४०	विजयाभिनन्दन	१७४०	१७२२-८८ इनके आश्रयदाता छत्रसाल का शासनकाल।
१४२।५४३	वोधा	१८०४	१८०९-१५ पन्नानरेश खेतसिंह का शासनकाल।
१४३।५४४	वोध बुन्देल खण्डी	१८५५	" "
१४४।५४५	वलभद्र कायस्थ पन्ना	१९०१	१६०६-२७ नृपति सिह का शासनकाल
१४५।५४६	विश्वनाथ १	१९०१	१८७२ अलङ्कारादर्श का रचनाकाल।
१४६।५४८	विश्वनाथ सिह रीवाँ	१८९१	१८९२-१९११ शासनकाल।
१४७।५५३	विहारी ३, बुन्देलखण्डी	१७८६	१८१५ हरदौल चरित्र का रचनाकाल।
१४८।५५४	विहारीदास व्रजवासी	१६७०	१६३२ इनके पिना गुरु स्वामी हरिदास का मृत्युकाल।
१४९।५६५	वारन	१७४०	१७१२ रत्नकाकर का रचनाकाल।
१५०।५६७	वाजीदत्त	१७०८	१६६० मे इनके गुरु दादू की मृत्यु।
१५१।५७०	वनवारी	१७२२	१६९०-१७०० रचनाकाल।
१५२।५७६	वाजेस	१८३१	१८२०-६१ हिम्मतवहादुर का शौर्य-काल।
१५३।८८१	वनमाली दाम गोसाईं	१७१६	१७१५ दाराशिकोह का मृत्युकाल।
	५८३ वगीधर वजपेयी जितना हो सकते	१९०१	१९०९ गुलिस्ताँ का पुस्तवाटिका नाम से अनुवाद
१५४।५८४	वशीधर वनारसी	१९०१	१९०७ साहित्यतरङ्गिणी का रचना काल।
१५५।५९५	वेनी दास	१८९२	१८९० मे मारवाड मे प्रवन्धलेखक थे।
१५६।५९६	वादे राय	१८८२	१९१४ रामायण का रचनाकाल।
१५७।५९७	भूषण	१७३८	१७०५ अलङ्कारप्रकाश, १७२३ छन्द हृदय प्रकाश, १७३० शिवराज भूषण का रचनाकाल।

१५८।६०७	भोज कवि २, मिश्र	१७८१	१७६४-६७ इनके आश्रयदाता राव वुद्ध सिंह का शासनकाल।
१५६।६०८	भोज कवि ३, विहारी लाल	१६०१	१८८४ उपवन-विनोद का रचनाकाल।
१६०।६१०	भौन, वेती वाले	१८८१	१८६१ रसरत्नाकर की प्राचीनतम प्रति का लिपिकाल।
१६१।६११	भावन, भवानीप्रसाद पाठक	१८६१	१८५१ शक्तिचिन्तामणि का रचनाकाल।
१६२।६१६	भवानी दास	१६०२	१६२० सूर्यमाहात्म्य का लिपिकाल।
१६३।६१७	भान दास चरखार	१८५५	१८३६ चरखारीनरेश खुमान सिंह का मृत्युकाल
६२५	भूमनारायण कामूपुर वाले १८५६		१८११-३२ अवध के नवाब शुजाउद्दौल का रचनाकाल
१६४।६२७	भूधर २, असोथर वाले	१८०३	१८१७ भगवन्त राय खीची का मृत्युकाल
१६५।६३१	मोहन भट्ट १	१८०३	१७४३ जन्मकाल।
१६६।६३४	मुकुन्द लाल वनारसी	१८०३	१७६६ मे इनके शिष्य रघुनाथ बनारसी ने रसिकमोहन रचा।
१६७।६३६	मुकुन्द प्राचीन	१७०५	१६८३ रहीम का मृत्युकाल।
१६८।६३७	माखन १	१८७०	१८६० वसत मञ्जरी का लिपिकाल।
१६६।६३८	माखन लखेरा	१६११	१८६१ जन्मकाल।
१७०।६४२	मणिदेव वन्दीजन वनारसी	१८६६	१८८४ महाभारत का समाप्तिकाल।
१७१।६४३	मकरन्द	१८१४	१८२१ हसाभरण का रचनाकाल।
१७२।६४५	मचित	१७८५	१७८५ उप० खोजरिपोर्ट १६०६।७१
१७३।६५६	मलूक दास	१६८५	१६३१-१७३६ जीवनकाल।
१७४।६६६	मनभावन	१८३०	१८२०-५० इनके गुरु चदनराय का रचनाकाल।
१७५।६७०	मनियार सिंह	१८६१	१८४८ महिम्न कवित्त और १८७३ सौन्दर्य लहरी का रचनाकाल।
१७६।६७२	मधुसूदन दास माथुर	१८३६	१८३२ रामाश्वमेध का रचनाकाल।
१७७।६७३	मनीराम मिश्र २	१८३६	१८२६ छन्द-छप्पनी का रचनाकाल।
१७८।६८२	मनोहर ३	१७८०	१७६६ मे इनके शिष्य प्रियादास ने भक्तमाल की टीका लिखी।
१७६।६८३	माधवानन्द भारती	१६०२	१६२६ कैलाश मार्ग का रचनाकाल।

१८०।६८४	महेश	१८६०	उपस्थिति काल, खोज रिपोर्ट १९४७।२९२
१८१।६८५	मदन मोहन	१६६२	१६१३-६२ अकबर का शासनकाल।
१८२।६८८	महाकवि	१७८०	१७५५ हजारा का रचनाकाल।
१८३।६९१	मल्ल	१८०३	१८१७ भगवत राय खीची का मृत्युकाल।
१८४।६९२	मानिक चन्द	१६०८	१५९९-१६०६ मे पुरुषोत्तम और विट्ठलनाथ साथ-साथ आचार्य थे। उस समय यह विद्यमान थे।
१८५।६९५	मतिराम	१७३८	१६७४-१७७३ जीवनकाल।
१८६।६९६	मण्डन	१७१६	१६८३ मे खानखाना की मृत्यु।
१८७।६९९	महानन्द	१९०१	१९१६ मृत्युकाल।
१८८।७०७	मीरा मदनायक	१८००	१७५६-१८०७ इनके समसामयिक रसलीन का जीवनकाल।
१८९।७१७	राम सिंह बुन्देलखण्डी	१८३४	१८२०-६१ हिम्मत बहादुर का शौर्य काल
१९०।७२०	रामसहाय बनारसी	१९०१	१८६०-८० रचनाकाल। १८७३ वृत्ततरङ्गिणी।
१९१।७२१	रामदीन त्रिपाठी	१९०१	१८७६ सत्यनारायण पूजन कथा भाषा का रचनाकाल।
१९२।७४५	रसखानि	१६३०	१६४२ मे इनके गुरु विट्ठलनाथ की मृत्यु।
१९३।७४६	रसाल, अङ्गने लाल	१८८०	१८८६ बारह मासा का रचनाकाल।
१९४।७४९	रसिके शिरोमणि	१७१५	१६४७ जन्मकाल।
१९५।७६६	रतन श्रीनगर वाले	१७९८	१७४१-७३ गढवालनरेश फतेशाह का शासन-काल।
१९६।७६९	राव राना	१८९१	१८८६-१९१७ रतन सिंह का शासनकाल।
१९७।७७०	रनछोर	१७५०	१७३७ राजपट्टन का रचनाकाल।
१९८।७८२	रामशरण	१८३२	१८२०-६१ हिम्मत बहादुर का शौर्यकाल।
१९९।७८३	राम भट्ट फर्रुखाबादी	१८०३	१८००-०६ फर्रुखाबाद से नवाब खाँ का शासनकाल।
२००।७८९	रुद्रमणि ब्राह्मण	१८०३	१८०५ मे ही इनके आश्रयदाता जुगलकिशोर भट्ट ने अलङ्कारनिधि की रचना की।
२०१।७९२	रस रूप	१७८८	१८११ तुलसी भूषण का रचना काल।

२०२।७९५	रसिक विहारी	१७८०	१८२२ मृत्युकाल १७५६-१८२१ नागरीदास का जीवनकाल।
२०३।७९७	राना राज सिंह	१७३७	१७११-३८ शासनकाल।
२०४।७९९	रामप्रसाद अग्रवाल	१९०१	१९११ मे इनके पुत्र तुलसी राम ने भक्तमाल उर्दू अनुवाद किया।
२०५।८००	लाल प्राचीन	१७३८	१७१५ जन्मकाल।
२०६।८०१	लाल २	१८४७	१८३३ रस मूल का रचनाकाल।
२०७।८०२	लाल, बिहारी लाल त्रिपाठी	१८८५	१८७२ विक्रम सतसई की टीका का रचनाकाल।
२०८।८०६	लाल मुकुंद	१७७४	१७९६ मे इनके शिष्य रघुनाथ बनारसी ने रसिकमोहन की रचना की।
२०९।८२०	लोक नाथ	१७८०	१७६४-९७ राव बुद्ध सिंह का शासनकाल।
२१०।८३७	शम्भु नृप शम्भु	१७३८	१६७४-१७७३ इनके मित्र मतिराम का जीवन-काल।
२११।८३९	शम्भुनाथ मिश्र	१८०३	१८०७ अलङ्कारदीपिका का रचनाकाल।
२१२।८४६	शिवनाथ बुन्देलखण्डी	१७६०	१७८८-१८१५ जगत सिंह का शासनकाल।
२१३।८४७	शिवराम	१७८८	१७८८-१८२० रचनाकाल।
२१४।८५७	शिवदीन मिनगा	१९१५	१९०१ मे मिनगा नरेश कृष्णदत्त सिंह और अवध के नाजिम के बीच हुए युद्ध का वर्णन।
२१५।८६३	श्री गोविंद	१७३०	१७३१ शिवाजी का राज्यारोहणकाल।
२१६।८६४	श्री भट्ट	१६०१	१६०८ इनके गुरु केशव कश्मीरी का समय।
२१७।८६६	श्रीधर प्राचीन	१७८९	१७६९ जगनामा का रचनाकाल।
२१८।८७४	सन्त दास व्रजवासी	१६८०	१६४९ भक्तमाल मे उल्लेख।
२१९।८७८	सखीसुख	१८०७	१७९९ मे इनके पुत्र कवीद्र ने रसदीपक की रचना की।
२२०।८८२	सेख	१६८०	१६४०-८० इनके पति आलम का रचनाकाल।
२२१।८८३	सेवक असनी	१८९७	१८७२-१९३८ जीवनकाल।
२२२।८८५	शीतल त्रिपाठी टिकमापुर	१८९१	इनके पुत्र बिहारीलाल ने १८७२ मे विक्रम-सतसई की टीका की।

संख्या	कवि	संवत्	प्रमाण
२२३।८८७	सुलतान पठान	१७६१	१७४६ इनके आश्रित चन्द कवि का समय
२२४।८६६	शिरोमणि	१७०३	१६८० नाममाला का रचनाकाल
२२५।६००	सिंह	१८३५	१८५३ छन्दशृङ्गार का रचनाकाल
२२६।६०६	सागर	१८५३	१८३२-५४ लखनऊ के नवाब आसफुद्दौला का शासनकाल
२२७।६१०	सुखलाल	१८५५	१८४४ सुखसागर का रचनाकाल
२२८।६२१	सामन्त	१७३८	१७१५-६४ औरङ्गजेब का शासनकाल
२२६।६२८	सूरदास	१६४०	१६४० मृत्युकाल
२३०।६२६	सूदन	१८१०	१८१२-२० इनके आश्रयदाता सूरजमल का शासनकाल
२३१।६३०	सेनापति	१६८०	१७०६ कवित्त रत्नाकर ऐसे प्रौढ ग्रन्थ का रचनाकाल
२३२।६३३	सदा शिव	१७३४	१७१७ राजरत्नाकर का रचनाकाल
२३३।६३५	सुखलाल	१८०३	१८०५ मे इनके आश्रयदाता जुगलकिशोर भट्ट ने अलङ्कारनिधि की रचना की
२३४।६३६	सन्त जीव	१८०३	” ” ” ”
२३५।६४२	सोमनाथ साडी	१८०३	१८०६ रचनाकाल, विनोद
२३६।६४४	समनेस कायस्थ	१८८१	१८४७ रसिकविलास और १८७६ पिङ्गलकाव्य-विभूषण का रचनाकाल
२३७।६४६	शिवदत्त ब्राह्मण	१६११	१६२६ उत्पलारण्य माहात्म्य का रचनाकाल
२३८।६५५	श्यामलाल	१८०४	१८१७ भगवन्त राय खीची का मृत्युकाल
२३६।६५८	सारङ्ग असोथर	१७६३	” ” ” ”
२४०।६६८	हरिकेश	१७६०	१७७६ के युद्ध का वर्णन किया है
२४१।६६६	हरिवंश मिश्र, विलग्रामी	१७२६	१७३६ इनके शिष्य जलील विलग्रामी का रचनाकाल
२४२।६७०	हित हरिवश	१५५६	१५३०-१६०६ जीवनकाल
२४३।६७७	हौल राय	१६४०	गो० तुलसीदास के समसामयिक
२४४।६८८	हीरामणि	१६८०	१७०६ मे इनके शिष्य सेनापति ने कवित्त रत्नाकर की रचना की

संख्या	कवि	संवत्	प्रमाण
२४५।६६२	हिमाचल राम	१६०४	१६१५ मृत्युकाल
२४६।१००१	हरिजन	१६११	१६०३ तुलसी चिन्तामणि का रचनाकाल

घ तर्कसिद्ध उपस्थितिकाल—सरोज मे कुछ कवि ऐसे भी हैं, जिनके सवतो की जाँच के लिए कोई वाह्य आधार तो नही मिलते, फिर भी तर्क के सहारे उनके सवत उपस्थितिकाल सिद्ध हो जाते हैं।

सरोज का प्रणयन १६३४-३५ मे हुआ। इसमे किसी ऐसे कवि के सम्मिलित किए जाने की सम्भावना नही, जिसकी वय २५ वर्ष से कम हो। इससे कम वय वाला कवि अप्रसिद्ध ही बना रहेगा और विना प्रख्यात हुए किसी काव्यसग्रह मे स्थान पा जाना समीचीन एव सम्भव नही प्रतीत होता। सरोज मे निम्नलिखित कवियो के सवत् १६१० या और वाद के है। यदि इन सवतो को जन्मकाल माना जाता है, तो इन कवियो की वय वहुत कम ठहरती है। अत ये सभी सवत् जन्मकाल न होकर उपस्थितिकाल है।

१।२६	अलीमन	१६३३
२।४०	शङ्कर भाट	१६१०
३।८३	कुन्ज लाल मऊरानी पुरे	१६१२
४।८७	कान्ह कवि कन्हई लाल	१६१४
५।६७	कामताप्रसाद	१६११
६।१३३	कामताप्रसाद ब्राह्मण लखपुरा	१६११
७।२३३	चैन सिंह खत्री, लखनऊ	१६१०
८।२६४	जनकेश भाट, मऊ	१६१२
६।२६८	जवाहिर २ भाट, वुन्देलखण्डी	१६१४
१०।३५७	दीनानाथ, वुन्देलखण्डी	१६११
११।४८६	पन्चम, डलमऊ	१६२४
१२।६१५	भूमि देव	१६११
१३।६१६	मैसूर	१६११
१४।६६३	मानिकचन्द कायस्थ	१६३०
१५।७४३	रघुनाथ उपाध्याय, जौनपुर	१६२१
१६।७६३	राधे लाल, कायस्थ	१६११
१७।६३७	सुदर्शन सिंह	१६३०

इसी प्रकार कालिदास हजारा का रचनाकाल स० १७५५ है। सरोज मे कुछ ऐसे कवि भी सम्मिलित किए गए हैं, जो हजारा मे थे और जिनका समय १७३५ के वाद का दिया गया है। हजारा के सङ्कलन काल मे इन कवियो की वय २० वर्ष या उससे भी कम की होती है। कुछ का तो समय १७५५ के भी वाद का दिया गया है। तो क्या यह मान लिया जाय कि इनका जन्म हजारा के सङ्कलन के पश्चात् हुआ ? निश्चय ही ये सभी सवत् भी उपस्थितिकाल ही सिद्ध होते हैं।

१।८४ कुन्दन	१७५२
२।१७८ गोविन्द	१७५७
३।२४६ छैल	१७५५
४।५३५ व्रजदास, प्राचीन	१७५५
५।५५२ विहारी, प्राचीन २	१७३८
६।६५५ मोतीराम	१७४०
७।६५६ मनसुख	१७४०
८।६५७ मिश्र	१७४०
९।६५८ मुरलीघर	१७४०
१०।६६० मीर रुस्तम	१७३५
११।६६१ मुहम्मद	१७३५
१२।६६२ मोरी मावव	१७३५
१३।८१९ लोथे	१७७०

इसी प्रकार कमच कवि की कविता सरोजकार को स० १७१० के एक सग्रह मे मिली थी। कमच कवि का समय स० १७१० दिया गया है। इसे किसी भी प्रकार जन्मकाल नही माना जा सकता, यह उपस्थितिकाल ही हे। विश्वनाथ अताई की रचना १८०३ मे सङ्कलित वलदेव कवि के सत्कवि-गिराविलास मे हैं और इनका समय सं० १७८४ दिया गया है। यदि यह जन्मकाल है तो उक्त ग्रन्थ के सङ्कलन के समय कवि की वय केवल १९ वर्ष की होगी। अत यह भी उपस्थितिकाल ही है। इस प्रकार तर्क के सहारे ३२ कवियो के सरोज-दत्त सवत् उपस्थितिकाल सिद्ध होते हैं।

ङ. सरोज के सवत् और जन्मकाल—ग्रियर्सन ने उ० का अर्थ उत्पन्न किया और सरोज के सभी सवतो को या तो जन्मकाल स्वीकृत किया या फिर कतिपय कवियो के सम्वन्ध मे

कुछ नए सूत्रो के सहारे नए सवत् दिए। तब से सरोज के सवतो को जन्मकाल मानने की अन्ध-परम्परा चल पडी। सरोजकार ने केवल गुरु नानक का जन्मसवत् दिया है और विवरण मे उसने यह उल्लेख कर दिया है। अन्य सभी सवत् उसने अपनी समझ से उपस्थितिकाल के ही दिए हैं। यह दूसरी बात है कि इनमे से कुछ अशुद्ध हो जाँय और कुछ जन्मकाल भी। पीछे जो सर्वेक्षण दिया गया है, उसके विश्लेपण से पता चलता है कि सरोज के प्राय २५ सवत् जन्मकाल है। इसका यह अर्थ कदापि नही है कि ये सवत् वस्तुत जन्मसवत् है। इसका इतना ही अर्थ है कि इस सवत् के आस-पास प्रसङ्गप्राप्त कवि का जन्म किसी समय हुआ।

सख्या	कवि	सवत्	अन्य ज्ञातसवत्
१।३०	अक्षर अनन्य	१७१०	स० १७६४ तक अवश्य जीवित, १७६० के लगभग मृत्यु
२।३३	अमरदास	१७१२	१७५२ भक्तविरुदावली का रचनाकाल
३।६२	कवि राम १	१८६८	१६३५ मे विद्यमान
४।१५२	गङ्गा पति	१७४४	१७७५ विज्ञानविलास का रचनाकाल
५।१८६	गुमान त्रिपाठी	१७८८	१८३८ कृष्णचन्द्रिका का रचनाकाल
६।१६२	गजराज उपाध्याय काशी	१८७४	१६०३ वृत्तहार पिङ्गल का रचनाकाल
७।२१४	घनराय	१६६२	१७४६-६२ इनके आश्रयदाता ओरछा नरेस का रचनाकाल
८।२५५	जगत सिंह विसेन	१७६८	१८२०-७७ रचनाकाल
९।३६३	देवीदास बुन्देलखण्डी	१७१२	१७४२ प्रेमरत्नाकर का रचनाकाल
१०।३६८	देवीदास वन्दीजन	१७५०	१७६४ सूमसागर का रगनाकाल
११।३८५	धीरज नरिन्द	१६१५	१६१२-७४ इनके आश्रित केशवदास का जीवनकाल
१२।३६१	नानक	१५२६	स्वय सरोज मे इसके जन्मकाल होने का उल्लेख
१३।४१३	नियाज अन्तर्वेदी	१७३६	१८०० रचनाकाल
१४।४१५	नरोत्तमवाडी सीतापुर वाले	१६०२	सुदामा चरित का रचनाकाल स० १६४० के आस-पास होना चाहिए, क्योकि इसी के लगभग कवित्त-सवैया का पूर्ण प्रचलन हुआ
१५।४२८	नन्ददास, अप्टछापी	१५८५	१५६० अप्टछाप परिचय के अनुसार जन्मकाल

संख्या	कवि	सवत्	अन्य ज्ञातसवत्
१६।४५३	प्रेम सखी	१७६१	१८८० विनोद के अनुसार रचनाकाल
१७।४७८	पद्मनाभ	१५६०	१६३२ इनके गुरु भाई अग्रदास का सर्वस्वीकृत रचनाकाल
१८।६४६	मुवारक	१६४०	अन्य इतिहासकारो द्वारा स्वीकृत और पूर्ण रीति मग्नता भी इसका प्रमाण
१९।८४३	शिवकवि,अरसेला वन्दीजन	१७६६	१८५० रचनाकाल
२०।६०१	सङ्गम	१८४०	१६०० रचनाकाल
२१।६३६	सुवश शुक्ल	१८३४	१८६१-७६ रचनाकाल
२२।६५६	हरिनाथ महापात्र	१६४४	भाषाकाव्यसग्रह के अनुसार जन्मकाल
२३।६८६	हरदेव	१८३०	१८७३-७५ रघुनाथ राव का शासनकाल
२४।६६६	हिम्मत वहादुर	१७६५	१८२०-६१ शौर्यकाल

च सरोज के अशुद्ध सिद्ध सवत्—सरोज के सवत् अधिकतर अनुमान पर आश्रित हैं, अत इनमे से यदि अनेक अशुद्ध सिद्ध हो जाय, तो कोई आश्चर्यजनक वात नही। पीछे जो सर्वेक्षण किया जा चुका है, उसके विश्लेषण से सिद्ध होता है कि सरोज मे दिए गए ६८७ सवतो मे से ११३ अशुद्ध हैं। ये न तो जन्मकाल सिद्ध होते है और न तो उपस्थितकाल ही।

सख्या	कवि	संवत्	प्रमाण
१।२	अजवेश प्राचीन	१५७०	इस कवि का अस्तित्व सिद्ध नही होता, अत मूलो नास्ति कुतो शाखा
२।१३	आजम	१८६६	१७८६ इनके शृङ्गारदर्पण का रचनाकाल
३।१६	आलम	१७१२	१६४०-८० रचनाकाल
४।२७	अनीस	१६११	१७६८ के पूर्व रचनाकाल
५।३६	अनन्यदास चकदेवा वाले	१२२५	इस कवि का अस्तित्व ही नही
६।३८	अमर सिंह	१६२१	१६७० जन्मकाल
७।३६	आनन्द	१७११	१६६० कोकसार का रचनाकाल
८।४७	अजीत सिंह राठौर	१७८७	१७३७ ८१ जीवनकाल
६।५५	उदय सिंह माडवार नरेश	१५१२	१५८४ ई० मे उपस्थित, ग्रियर्सन और टॉड

संख्या	कवि	संवत्	प्रमाण
१०।६२	उनियारे के राजा	१८८०	१८४२ वलभद्र के नखशिख की टीका का काल
११।७०	कर्ण ब्राह्मण	१८५७	१७९४ साहित्यचन्द्रिका का रचनाकाल
१२।७५	कवीन्द्र, सखीसुख के पुत्र	१८५४	१७९९ रसदीप का रचनाकाल
१३।८०	कृष्णलाल	१८१४	१८७२ कृष्णविनोद का रचनाकाल
१४।८१	कृष्ण कवि २ जयपुरी	१६७५	१७८२ विहारी सतसई की कवित्त वन्ध टीका का रचनाकाल
१५।८६	कान्ह प्राचीन	१८५२	१८०४ रसरङ्ग का रचनाकाल
१६।९८	कवीर	१६१०	१४५६-१५७५ जीवनकाल
१७।१००	कलीराम (कालीराम)	१८२६	१७३१ सुदामा चरित का रचनाकाल
१८।१०१	कल्याण	१७२६	१६६० के आस पास कविताकाल
१९।१०२	कमाल	१६३२	१५००-५० के आस-पास कविताकाल, १४५६ इनके पिता का जन्मकाल
२०।११७	कृष्णानन्द-व्यासदेव	१८०६	१८५१-१९४५ जीवनकाल
२१।१२३	केवलराम	१७६७	१६४९ के पूर्व, भक्तमाल मे विवरण
२२।१२५	केदार वन्दीजन	१२८०	१२५० के पूर्व उपस्थित
२३।१३१	कुम्भकर्ण	१४७५	१४१९-९९ शासनकाल
२४।१३७	खुमान सिह सिसौदिया	८१२	८७०-९०० खुमान द्वितीय का शासनकाल, खुमान रासो का रचनाकाल १७६७ और १७९० के वीच है
२५।१४२	खण्डन	१८८४	१७८१-१८१८ रचनाकाल
२६।१७१	गोपा या गोप	१५९०	१७९३-१८०९ इनके आश्रयदाता ओरछा नरेश पृथ्वी सिंह का शासनकाल
२७।१९९	गड्डु कवि	१७७०	१८६०-१९०० रचनाकाल
२८।२१२	घन आनन्द	१६१५	१८१७ मृत्युकाल
२९।२१७	चन्द वरदाई	१०९८	१२२५-४९ रचनाकाल
२३९	चन्द्रसखी	१६३८	१७१७ चन्द्रसखी के गुरु वालकृष्ण के गुरु हरीलाल का समय
३०।२३६	चरणदास	१५३७	१७६०-१८३८ जीवनकाल
३१।२५३	छत्र कवि	१६२५	१७५१-७६ रचनाकाल

संख्या	कवि	संवत्	प्रमाण
३२।२६०	जुगुल कवि	१७५५	१८२१ हितचौरासी की टीका का रचनाकाल
३३।२६६	जसवन्त कवि २	१७६२	१६८३-१७३७ जीवनकाल
३४।२८२	जीवन कवि	१८०३	१८७३ वरिवण्ड विनोद का रचनाकाल
२८६	जगनन्द	१६५८	१७८१ वल्लभ वंशावली का रचनाकाल
३५।३०४	जगजीवनदास चन्देल	१८४१	१७२७-१८१७ जीवनकाल
३६।३०५	जुल्फकार	१७८२	१६०३ कुण्डलिकावृत्त का रचनाकाल
३७।३०६	जगनिक	११२४	१२२५-५० रचनाकाल
३८।३२३	तत्ववेत्ता	१६८०	१५५० रचनाकाल
३६।३३३	दलपति राय वंशीवर	१८८५	१७६८ अलङ्कार रत्नाकर का रचनाकाल
३४१	दत्त	१७०३	१७३० जन्मकाल
४०।३४६	दामोदरदास व्रजवासी	१६००	१६८७-६२ रचनाकाल
४१।३६०	देव, महाकवि	१६६१	१७४६ भावविलास का रचनाकाल
४२।३७०	देवा राजपूतानावाले	१८५५	१६३२ रचनाकाल
४३।३८६	निपट निरञ्जन	१६५०	१७४० के आस-पास रचनाकाल
४४।३६८	नागरी दास	१६४८	१७५६-१८२१ जीवनकाल
४५।४०२	नाभादास	१५४०	१६४६ भक्तमाल का रचनाकाल और १७१६ मृत्युकाल
४६।४०४	नरसिया	१५६०	१६००-५३ जीवनकाल
४७।४१८	नीलकण्ठ मिश्र	१६४८	यह कवि सरोजकार की मिथ्या सृष्टि है
४८।४२०	नील सखी	१६०२	१८४० रचनाकाल
४६।४५०	नवलदास क्षत्रिय	१३१६	१८१७-३८ रचनाकाल
५०।४४१	नीलाधर	१७०५	यह कवि मरोजकार की मिथ्या सृष्टि है
५१।४४५	परसाद	१६००	१७६५ शृङ्गारसमुद्र का रचनाकाल
५२।४४८	परताप साहि वन्दीजन	१७६०	१८८२-६६ रचनाकाल
५३।४६५	पञ्चम नवीन वन्दीजन बुन्देलखण्डी	१६११	१८२२-३५ गुमान सिंह का शासनकाल
५४।४६६	प्रिया दास	१८१६	१७६६ भक्तमाल की टीका का रचनाकाल
५५।४६८	पहलाद	१७०१	१६१३-६२ अकबर का शासनकाल
५६।४७२	परवत	१६२४	१७१० रचनाकाल

संख्या	कवि	संवत्	प्रमाण
४७७	पुखी	१८०३	अकबरी दरबार के कवि हैं
५७।५०७	वेनी प्राचीन असनी	१६६०	१८१७ रसमय का रचनाकाल
५८।५११	वीर कवि दाऊ दादा मुण्डिला	१८७१	१८१८ प्रेमदीपिका का रचनाकाल
५९।५१४	व्यास जी कवि	१६८५	१५६७ जन्मकाल और १६६३-७५ के वीच किसी समय मृत्यु
६०।५१८	वल्लभाचार्य	१६०१	१५३५-८७ जीवनकाल
६१।५५१	विहारीलाल चौवे	१६०२	१६५२-१७२१ जीवनकाल
६२।५७२	वेताल	१७३४	१८३९-८६ चरखारीनरेश विक्रम का शासन काल
६३।५९२	विजय सिंह उदयपुर के राजा	१७८७	१८१०-४१ शासनकाल
६४।५९४	वार दरवेश	११४२	१२२५-५० रचनाकाल
६५।५९८	भगवन्त रसिक	१६०१	१७९५ जन्मकाल, १८३०-५० रचनाकाल
६६।६२१	भूपति, राजा गुरुदत्त सिंह, अमेठी	१९०३	१७८८ रसरत्न का रचनाकाल
६७।६२२	भृङ्ग	१७०८	यह कवि सरोजकार की मिथ्या सृष्टि हे
६८।६२८	मानदास व्रजवासी	१६८०	१८१७ कृष्णविलास और१८६३ रामकूट विस्तार का रचनाकाल
६९।६३५	मुकुन्द सिंह हाडा	१६३५	१७१५ रचनाकाल
७०।६४४	मकरन्द राय	१८८०	१८२१ हसाभरण का रचनाकाल
७१।६६३	मदन किशोर	१८०७	१७६५ रचनाकाल
७२।७००	मीरावाई	१४७५	१५५५-१६०३ जीवनकाल
७३।७०८	मलिक मुहम्मद जायसी	१६८०	१५७७ पदमावत का रचनाकाल
७४।७१३	मूक जी राजपूतानावाले	१७५०	१८८६ रचनाकाल
७५।७१४	मान कवीश्वर	१७५६	१७१७ रचनाकाल
७६।७२७	रामकृष्ण चौवे कालिञ्जर	१८८६	१८१७-६० रचनाकाल
७७।७३३	रामदास वावा	१७८८	१६१९ मे अत्यन्त वृद्धावस्था मे अकवरी दरवार मे प्रवेश

सख्या	कवि	सवत्	प्रमाण
७८।७५०	रस रास	१७१५	१८२७ कवित्त-रत्नमालिका का रचनाकाल
७९।७५९	ऋषिराम	१९०१	१८३२-५४ लखनऊ के नवाब आसफुद्दौला का शासनकाल
८०।७६३	रतनेस	१७८८	१८७१ कान्ता भूषण का रनाचकाल
८१।७६४	रत्नकुँवरि बीवी	१८०८	१८४४ प्रेमरत्न का रचनाकाल
८२।७६५	रतन, ब्राह्मण बनारसी	१९०५	यह कवि सरोजकार की मिथ्या सृष्टि है
८३।७६७	रतन कवि ३	१७३८	१८२७ अलङ्कार दर्पण का रचनाकाल
८४।७७२	रूपनारायण	१७०५	१६४२ वीरबल की मृत्यु के समय रचनाकाल
८५।७८१	रङ्ग लाल	१७०५	१८१२-२५ भरतपुर नरेश सूरजमल और जवाहर सिंह का शासनकाल
८६।७८६	रामप्रसाद वन्दीजन	१८०३	१८९४-९९ मोहम्मद अली, नवाब लखनऊ का शासनकाल
८७।८०४	लाल, लल्लू जी लाल	१८९२	१८२०-८२ जीवनकाल
८८।८०८	लालनदास, लखनऊ	१६५२	१५८७ भागवत भाषा का रचनाकाल
८९।८१२	लीलाधर	१६१५	१६७७-९५ गर्जसिंह,जोधपुर नरेश का शासनकाल
९०।८३५	सुखदेव मिश्र, दौलतपुर	१८०३	१७२८-५५ रचनाकाल
९१।८३६	सुखदेव अन्तर्वेदी	१७९१	,, ,,
९२।८५३	शिव सिंह प्राचीन	१७८८	१८५०-१८७५ रचनाकाल
९३।८५५	शिवनाथ शुक्ल	१८७०	१८४० के पूर्व उपस्थित
९४।८६५	श्रीपति	१७००	१७७७ काव्य सरोज का रचनाकाल
९५।८६६	श्रीधर, राजपूताने वाले	१६८०	१४५७ रणमल्ल छन्द का रचनाकाल
९६।८७०	सन्तन, बिन्दकी	१८३४	१७२८ ६० रचनाकाल
९७।८७१	सन्तन, जाजमऊ	१८३४	१७२८-६० रचनाकाल
९८।८७५	सन्त २, प्राचीन १७५९	१६८३	रहीम की मृत्यु के पूर्व
९९।८८९	सहजराम बनिया १	१८६१	१७८९ रघुवशदीपक का रचनाकाल
१००।८९०	सहजराम सनाढ्य २	१९०५	,, ,, ,, ,,
१०१।८९३	श्यामशरण	१७५३	१८०० के लगभग रचनाकाल
१०२।९०२	सम्मन	१८३४	१७२० रचनाकाल
१०३।९०३	सविता दत्त	१८०३	१७३५ कृष्णविलास का रचनाकाल

सख्या	कवि	सवत्	प्रमाण
१०४।९१६	सोमनाथ	१८८०	१७९४-१८२० रचनाकाल
१०५।९२२	सेन नापित	१५६०	१४५७ के आस पास उपस्थित
१०६।९३२	सारङ्ग	१३५०	१४२०शारङ्गधर पद्धति का रचनाकाल
१०७।९५६	श्रीहठ	१७६०	१७१२ के पूर्व रचनाकाल
१०८।९५७	सिद्ध	१७८५	१७१२ के पूर्व उपस्थित
१०९।९६०	हरिदास कायस्थ, पन्ना	१९०१	१८९७ रस कौमुदी का रचनाकाल १९०० मृत्युकाल
११०।९६१	हरिदास, बाँदा	१८९१	१८११ ज्ञान सतसई का रचनाकाल
१११।९६२	हरिदास स्वामी	१६४०	१५३७ १६३२ जीवनकाल
११२।९६४	हरीराम	१७०८	१७९५ छन्द रत्नावली का रचनाकाल
११३।९७४	हठी कवि	१८८७	१८३७ राधासुधा शतक का रचनाकाल

२. सरोज के वे सवत् जिनकी जॉच न हो सकी

सरोज के ६८७ सवतो मे से निम्नलिखित १९५ सवतो की जाँच सम्भव न हो सकी। वहुत सम्भव है भविष्य मे शोध द्वारा और भी साधन सुलभ हो जाने पर इनमे से कुछ और की भी जाँच सम्भव हो सके। तव तक इतने ही से सन्तोष करना चाहिए। और जव तक अन्यथा न सिद्ध हो जाय तव तक इन सवतो को उपस्थितिकाल या रचनाकाल ही मानना चाहिए, क्योकि सरोजकार ने इन्हे उपस्थितिकाल ही माना हे।

१।७　अवध वकस १९०४
२।९　अयोध्याप्रसाद शुक्ल १९०२
३।११　अमरेश १६३५
४।१८　अनूपदास १८०१
५।१९　ओली राम १६२१
६।२०　अभयराम वृन्दावनी १६०२
७।२४　अनन्त कवि १६९२
८।२६　आदिल १७६२
९।२८　अनुनैन १८९६
१०।४१　अनूप १७९८
११।४४　आसिफ खाँ १७३८
१२।४५　आछे लाल भाट १८८९
१३।५०　इन्दु १७६६
१४।५२　ईश १७९६
१५।५४　ईसुफ खाँ १७९१
१६।५६　उदयनाथ, काशी १७११
१७।५७　उदेश भाट वु० १८१५
१८।५८　ऊधोराम १६१०
१९।५९　ऊधो १८५३
२०।६०　उमेद १८५३
२१।६५　केशवराय वावू, वघेलखण्डी १७१९
२१।८२　कृष्ण कवि ३, १८८८

२२।८५ कमलेश कवि १८७०
२३।९० कविराज १८८१
२४।९१ कविराइ १८७५
२५।९५ काशीनाथ १७५२
२६।९० किंगर गोविन्द बु० १८९०
२७।१०३ कलानिधि १ प्राचीन १६७२
२८।१०७ केहरी कवि १६१०
२९।१३० कनक १७४०
३०।१४६ खेम ब्रजवासी १६३०
३१।१४९ गङ्ग, गङ्गाप्रसाद सपोलीवाले १८९०
३२।१६२ गिरिधर कविराय १७७०
३३।१६४ गोपाल कवि, प्राचीन १७१५
३४।१६९ गोपालशरण राजा १७४८
३५।१७४ गोकुल विहारी १६६०
३६।१७५ गोपनाथ १६७०
३७।१७७ गोविन्द अटल १६७०
३८।१८३ गुरुदत्त प्राचीन १८८७
३९।१८७ गुलाल १८७५
४०।१८९ ग्वाल प्राचीन १७१५
४१।१९० गुनदेव १८५२
४२।१९५ गुन सिन्धु बु० १८८२
४३।१९६ गोसाईं, राजपूताना १८८२
४४।२०३ गोधू १७५५
४५।२०४ गणेश जी मिश्र १६१५
४६।२११ घनश्याम शुक्ल, असनी १६३५
४७।२१३ घासीराम १६८०
४८।२१५ घाघ १७५३
४९।२२३ चूडामणि १८६१
५०।२२६ चतुर विहारी ब्रजवासी १६०५
५१।२२७ चतुर सिंह राना १७०१
५२।२३८ चिरञ्जीव ब्राह्मण १८७०
५३।२३९ चन्दसखी ब्रजवासी १६३८
५४।२५० छीत १७०५
५५।२७१ जयदेव २ १८१५
५६।२८३ जगदेव कवि १७९२
५७।२८७ जलालुद्दीन १६१५
५८।२८९ जगनन्द १६५८
५९।२९१ जीवन १६०८
६०।२९२ जगजीवन १७०५
६१।२९३ जदुनाथ १६८१
६२।३०९ टेर, मैनपुरी १८८८
६३।३११ ठाकुर १७००
६४।३१२ ठाकुरप्रसाद त्रिपाठी १८८२
६५।३२१ तारापति १७९०
६६।३२२ तारा कवि १८३६
६७।३२४ तेगपाणि १७०८
६८।३२६ तालिव शाह १७६८
६९।३३२ राजा दल सिंह बु० १७८१
७०।३४१ दत्त प्राचीन, कुसमडी १७०३
७१।३५१ द्विजचन्द १७५५
७२।३५२ दिलदार १६५०
७३।३६२ देवदत्त १७०५
७४।३६५ देवदत्त २ १७५२
७५।३६९ देवीराम १७५०
७६।३७१ दौलत १६५१
७७।३७७ दीनानाथ अध्वर्यु १८७६

७८।३८१ धन सिंह १७९१
७९।३९० निहाल निगोहाँ १८२०
८०।३९४ नोने १९०१
८१।३९५ नेसुक १९०४
८२।४०५ नव खान १७९२
८३।४०८ नारायणदास कवि ३ १६१५
८४।४१२ नियाज १ जुलाहा, विलग्रामो १८०४
८५।४१६ नरोत्तम वु० १८५६
८६।४१७ नरोत्तम अन्तर्वेदी १८९६
८७।४२१ नरिन्द प्राचीन १७८८
८८।४२३ नन्दन १६२५
८९।४२५ नन्द लाल १, १६२१
९०।४२६ नन्द लाल २, १७७४
९१।४३१ नाथ २, १७३०
९२।४३२ नाथ ३, १८०३
९३।४४२ निधि १७५१
९४।४४३ निहाल प्राचीन १६३५
९५।४४४ नारायण वन्दीजन, काकूपुर १८०९
९६।४४७ पजनेस १८७२
९७।४५० प्रवीण कविराय १६९२
९८।४५१ परमेश प्राचीन १६६८
९९।४५२ परमेश २, १८९६
१००।४५४ परम महोवा १८७१
१०१।४५६ परमानन्द लल्ला पौराणिक १८९४
१०२।४७५ पुण्डरीक १७६९
१०३।४७६ पद्मेश १८०३
१०४।४७७ पुवी १८०३
१०५।४९० पुण्ड ७७०
१०६।४९४ फालका राव १९०१
१०७।५०२ वलदेव प्राचीन ४, १७०४
१०८।५१० वेनी प्रगट १८८०
१०९।५१७ वल्लभ कवि २, १६८९
११०।५३० व्रजचन्द १७६०
१११।५३१ व्रजनाथ १७८०
११२।५३६ व्रजलाल १७०२
११३।५३८ व्रजराज वु० १७७५
११४।५३९ व्रजपति १६८०
११५।५४१ वशरूप, वनारसी १९०१
११६।५५० विश्वनाथ प्राचीन १६५५
११७।५५५ वालकृष्ण त्रिपाठी १७८८
११८।५६८ वुवराम १७२२
११९।५६९ वलि जू १७२२
१२०।५७३ वेच्रू १७८०
१२१।५७८ वृन्दावनदास २, व्रजवासी १६७०
१२२।५७९ विद्यादास व्रजवासी १६५०
१२३।५८० वारक १६५५
१२४।५८३ वशीधर वाजपेयी १९०१
१२५।५८५ वशगोपाल जालवन १९०२
१२६।५९० विद्यानाथ १७३०
१२७।५९३ वरदे सीता कवि १२४९
१२८।६०५ भगवानदास मथुरा निवासी १५९०
१२९।६०६ मौज कवि प्राचीन १, १८७२
१३०।६०९ मोन प्राचीन १७६०
१३१।६१२ भीपम १६८१
१३२।६१४ भञ्जन १८३१
१३३।६१८ भूधर, काशी १७००

१३४।६२० भोला सिंह पन्ना १८६८
१३५।६२३ भरमी १७०८
१३६।६२४ भीषम १७०८
१३७।६२५ भूपनारायण वन्दीजन, काकूपुर १८५६
१३८।६३२ मोहन २, १८७५
१३९।६३३ मोहन ३, १७१५
१४०।६४१ मून, असोथर १८६०
१४१।६५१ मन निधि १८४३
१४२।६६७ मोतीलाल बाँसी १५६७
१४३।६७१ मधुसूदन १६८१
१४४।६७९ मदनमोहन चरखारी १८८०
१४५।६८७ माधवदास ब्राह्मण १५८०
१४६।६९८ महबूब १७६२
१४७।७०१ मनीराम मिश्र साढि १८९६
१४८।७०३ मधुनाथ १७८०
१४९।७०५ मीतूदास १९०१
१५०।७०९ मलिन्द मिही लाल १९०२
१५१।७१८ राम जी कवि १, १६९२
१५२।७१९ रामदास कवि १८३९
१५३।७२२ रामदीन वन्दीजन, अलीगञ्ज १८९०
१५४।७३४ रघुराय बु० भाट १७९०
१५५।७३५ रघुराय २, १८३०
१५६।७४० रघुनाथ प्राचीन १७१०
१५७।७४४ रसराज १७८०
१५८।७५२ रस रङ्ग १९०१
१५९।७५३ रसिक लाल १८८०
१६०।७५६ रस लाल १७९३
१६१।७५७ रस नायक १८०३
१६२।७५८ ऋषि जू १८७२
१६३।७६१ रविनाथ १७९१
१६४।७६२ रविदत्त १७४२
१६५।७७४ राजाराम१ १६८०
१६६।७७५ राजाराम२ १७८८
१६७।७९० रुद्रमणि चौहान १७८०
१६८।७९४ रसधाम १८२५
१६९।८०५ लाल गिरिधर वैसवारे वाले १८०७
१७०।८०९ लाला पाठक रुकुमनगर वाले १८३१
१७१।८१० लोने वन्दीजन १ बु० १८७६
१७२।८१४ लक्ष्मण सिंह १८१०
१७३।८१५ लच्छू १८२८
१७४।८२१ लतीफ १८३४
१७५।८३० लालविहारी १७३०
१७६।८४४ शिव कवि २, वन्दीजन विलग्रामी १७९५
१७७।८५० शिवलाल दुबे १८३९
१७८।८५६ शिवप्रकाश सिंह, डुमरांव १९०१
१७९।८६१ शङ्कर त्रिपाठी, बिसवाँ १८९१
१८०।८७९ सुखराम १९०१
१८१।८८० सुखदीन १९०१
१८२।८८१ सूखन १९०१
१८३।८८६ शीतल राय १८९४
१८४।८९१ श्यामदास १७५५
१८५।८९४ श्यामलाल १७५५
१८६।८९६ श्याम कवि १७०५
१८७।९०४ साधर कवि १८५५
१८८।९०५ सम्पति १८७०
१८९।९०६ सिरताज १८२५
१९०।९१५ शशि शेखर १७०५

१६१।६१८ महीराम १७०८
१६२।६१६ सदानन्द १६८०
१६३।६२० सकल कवि १६६०
१६४।६२४ सुकवि १८५५
१६५।६३४ शिव प्राचीन १६३१
१६६।६५० सुखानन्द १८०३
१६७।६५१ सर्व सुखलाल १७६१
१६८।६५२ श्रीलाल, गुजराती १८५०
१६६।६६६ हिरदेश १६०१
२००।६६७ हरिहर १७६४
२०१।६८० हुसेन १७०८
२०२।६८१ हेम गोपाल १७८०
२०३।६८६ हरिजन १६६०
२०४।६८७ हर जू १७०५
२०५।६६१ हरीराम प्राचीन १६८०

३. सरोज के 'वि०' कवियो का विवरण

सरोज मे कुल ५३ कवियो को वि० कहा गया है। वि० का अर्थ है स० १६३५ मे विद्यमान। इन कवियो मे से २६ के सम्बन्ध मे नए सवतो का भी परिज्ञान हुआ है जिनकी सूची निम्न है।

सख्या	कवि	नवीन ज्ञान सवत्
१।४	अयोध्याप्रसाद वाजपेयी	१८६०-१६४२ जीवनकाल
२।१०	आनन्द सिंह उपनाम दुर्गा सिंह	१६१७ पहलाद चरित का रचनाकाल
३।५१	ईश्वरीप्रसाद त्रिपाठी	१६१६ रामविलास का रचनाकाल
४।८८	कान्ह, कन्हैया वख्श वैस	१६०० जन्मकाल
५।१२०	कालीचरण वाजपेयी	१६०२ वृन्दावन प्रकरण का रचनाकाल
६।१६७	गणेश वन्दीजन, वनारसी	१८६६ हनुमत पचीसी का रचनाकाल
७।२००	गिरिधारी भाट, मऊरानीपुर	१८८६ राधा नख शिख का रचनाकाल
		१६१२ भावप्रकाश का रचनाकाल
		१६१३ मनोजलतिका का रचनाकाल
८।२४२	छिति पाल, माधव सिंह अमेठी	१६०८ राम नवरत्न का रचनाकाल
६।२६१	जानकीप्रसाद पँवार	१६४० मे रीवाँ नरेश के यहाँ थे
१०।३०७	जवरेश	१६२३ रघुनाथशतक नामक सग्रह कासङ्कलनकाल
११।३४६	द्विज कवि मन्नालाल, वनारसी	१६२५ उद्धव-व्रजगमन चरित्र का रचनाकाल
१२।४०७	नारायण राय वन्दीजन, वनारसी	१८६७ जन्मकाल, १६२६-६२ रचनाकाल, १६७० मृत्युकाल
१३।५०२	वलदेव अवस्थी	

सख्या	कवि	नवीन ज्ञात संवत्
१४।५३३	व्रज, गोकुलप्रसाद	१८७७ जन्मकाल, १९६२ मृत्युकाल
१५।५६१	वन्दन पाठक, काशीवाले	१९०६ मानस शङ्कावली का रचनाकाल
१६।६४७	मातादीन शुक्ल अजगरावाले	१८९२-१९०३ रचनाकाल
१७।६६८	महेशदत्त ब्राह्मण	१८९७ जन्मकाल, १९६० मृत्युकाल
१८।७१८	मातादीन मिश्र	१९३० कवित्त-रत्नाकर का रचनाकाल
१९।७३७	रघुराज सिंह रीवाँ नरेश	१८८० जन्मकाल, १९११ सिंहासनारोहण काल, १९३६ मृत्युकाल
२०।७७६	राजा रणधीर सिंह	१८७८-१९५२ जीवनकाल
२१।८१६	लछिराम, हौलपुर	१९५१ कृष्ण विनोद का रचनाकाल
२२।८२२	लेखराज	१८८८ जन्मकाल, १९२६ गङ्गाभरण का रचनाकाल, १९४८ मृत्युकाल
२३।८४५	शिवप्रसाद सितारे हिन्द	१८८० जन्मकाल, १९५२ मृत्युकाल
२४।८५८	शिव प्रसन्न	१८८८ जन्मकाल
२५।८८४	सेवक वनारसी	१८७२ जन्मकाल, १९३८ मृत्युकाल
२६।९२३	सीताराम दास वनिया	१९०७ जन्मकाल
२७।९२७	सरदार वनारसी	१९०२-४० रचनाकाल, १९४० मृत्युकाल
२८।९७५	हनुमान वनारसी	१८९८ जन्मकाल, १९३९ मृत्युकाल
२९।९८४	हरिश्चन्द्र भारतेन्दु	१९०७ जन्मकाल, १९४२ मृत्युकाल

निम्नलिखित २४ कवियो के सम्वन्व मे कोई नवीन सवत् ज्ञात नही हुए—

१।६१	उमराव सिंह	१३।५८६	वृन्दावन ब्राह्मण
२।९३	कवि राम २	१४।६६४	मखजात, जालपाप्रसाद त्रिपाठी
३।१०९	कालिका	१५।६८१	मनोहर, भरतपुर
४।१५३	गङ्गादयाल दुवे	१६।७२६	रामनारायण, कायस्थ
५।१८२	गुरुदीन राय वन्दीजन	१७।७३९	रघुनाथ २, प० शिवदीन रसूलावादी
६।१९१	गुणाकर त्रिपाठी कान्था	१८।७४८	रमिया, नजीव खाँ
७।२४०	चौवा वन्दीजन	१९।७९१	राजा रणजीत सिंह जाङ्गरे
८।२८५	जगन्नाथ अवस्थी	२०।८६२	शङ्कर सिंह
९।३१४	ठाकुरप्रसाद त्रिपाठी, खीरी	२१।८७२	सन्त वकस, हौलपुर
१०।३२८	देवीदीन, वन्दीजन विलग्रामी	२२।९४३	सुखराम
११।३८०	दयाल वन्दीजन	२३।९५४	समर सिंह
१२।५४७	विश्वनाथ टिकई वाले	२४।९९७	हजारीलाल त्रिवेदी

४ सरोज के तिथिहीन कवि और उनकी तिथियाँ

सरोज मे कुल २६३ तिथिहीन कवि हे। इनमे से १२४ के सम्बन्ध मे नई तिथियाँ ज्ञात हुई है जिनकी सूची निम्न है—

संख्या	कवि	नवीन ज्ञात तिथियाँ
१।३१	अनन्य २	१७१०-९० जीवनकाल
२।११३	कृपाराम २, नरैनापुर	१८०८ गीता के भाष्य का अनुवादकाल और १८१५ भागवत दशमस्कन्ध का अनुवादकाल
३।१२७	कृपाराम ४	१७९८ हिततरङ्गिणी का रचनाकाल
४।१२८	कुञ्ज गोपी	१८३१ ऊषाचरित्र का रचनाकाल, १८३३ पत्तल का रचनाकाल
५।१३४	कृष्ण कवि प्राचीन	१७४० उपस्थितिकाल
६।१३६	खुमान	१८३६ अमर कोष भाषा का रचनाकाल
७।१४३	खैतल	१७४३ चित्तौड गजल का रचनाकाल
८।१५०	गङ्गाधर बु०	१८९९ जन्मकाल, १९७२ मृत्युकाल
९।१५१	गङ्गाधर २	१७३९ विक्रमविलास का रचनाकाल
१०।१६०	गिरिधारी २	१७०५ भक्ति माहात्म्य का रचनाकाल
११।१६८	गोपालराय	१८८५-१९०७ रचनाकाल
१२।१९३	गुलामराम	१८८८ मृत्युकाल
१३।१९४	गुलामी	” ”
१४।२०६	गज सिंह	१८०८-४४ रचनाकाल
१५।२०८	गोविन्दराम वन्दीजन, राजपूताना	१६०९ रचनाकाल
१६।२१०	गदाधर कवि	१८६० जन्म, १९५५ मृत्युकाल
१७।२७२	जैतराम	१७९४ योगप्रदीपिका का रचनाकाल, १७९५ सदाचारप्रकाश का रचनाकाल
१८।२७४	जयकृष्ण कवि	१७७६ रूपदीप पिङ्गल, १८१७ जय कृष्ण के कवित्त, १८२४ शिवगीता भाषार्थ, १८२५ शिव-माहात्म्य का रचनाकाल

संख्या	कवि	नवीन ज्ञात तिथियां
१९।२७९	जनार्दन भट्ट	१७३० व्यवहार निर्णय, १७३५ दुर्ग सिंह शृङ्गार, १७४९ वैद्यरत्न का रचनाकाल
२०।२८४	जगन्नाथ प्राचीन	१७७६ मोह मर्द राजा की कथा, १७७८ गुरु-माहात्म्य का रचनाकाल
२१।२८६	जगन्नाथदास	१७०० उपस्थितिकाल
२२।३०१	जगन्नाथ	१६१३-६२ अकबर का शासनकाल
२३।३०२	जगामग	" " "
२४।३०३	जुगुलदास कवि	१८२१ हितचौरासी की टीका का काल
२५।३१०	टहकन पञ्जाबी	१७२६ अश्वमेध भाषा का रचनाकाल
२६।३१७	तुलसी ओझा, जोधपुर वाले	१९२६ उपस्थितिकाल
२७।३१९	तुलसी ४	१६३१ ज्ञानदीपिका का रचनाकाल
२८।३३४	दयाराम १	१८७२ उपस्थितिकाल
२९।३३६	दयानिधि २	१८९१ से पूर्व
३०।३३७	दयानिधि ब्राह्मण ३, पटना	१९३६ उपस्थितिकाल
३१।३४०	दयावेद	१८१० से पूर्व
३२।३४७	दामोदर कवि २	१८८८-१९२३ रचनाकाल
३३।३५५	दिनेश	१८८३ रस-रहस्य का रचनाकाल
३४।३६१	देव, काष्ठजिह्वा स्वामी	१८९२-१९४६ काशी नरेश ईश्वरीनारायण सिंह का शासनकाल
३५।३६६	देवीदत्त	१८१२ बैतालपचीसी का रचनाकाल
३६।३७३	देवनाथ	१८४० शिवसगुन विलास का रचनाकाल
३७।३७४	देवमणि	१८२४ के पूर्व उपस्थित
३८।३७५	दास,व्रजवासी	१८१८ प्रवोध चन्द्रोदय का रचनाकाल
३९।३७६	दिलीप कवि	१८५९ रामायन की टीका का रचनाकाल
४०।३७९	देवी सिंह	१७२१ शृङ्गारशतक का रचनाकाल
।३८६	घोघे दास	१६२८-४२ मे विट्ठलनाथ से दीक्षा ली
४१।३९२	नेही	१७९८ के पूर्व

संख्या	कवि	नवीन ज्ञात तिथियां
४२।३९६	नायक	१८१० के पूर्व, (सूदन)
४३।४००	नवीन	१८९५ सुधासर और १९०७ नेहनिधान का रचनाकाल
४४।४०९	नारायण दास, वैष्णव	१८२९ छन्दसार का रचनाकाल
४५।४२७	नन्दराम	१७४४ नन्दरामपचीसी का रचनाकाल
४६।४६१	प्रवान केशव राय	१७५३ जैमुन की कथा
४६।४६४	पञ्चम कवि २, डलमऊ	१९२४ उपस्थितिकाल
४७।४८०	प्रेम कवि	१७४० प्रेममञ्जरी का रचनाकाल
४८।४८३	पुष्कर	१६७३ रसरत्न का रचनाकाल
४९।४८५	पहलाद, वन्दीजन, चरखारी	१८१५ के लगभग उपस्थित
५०।४८८	प्रेम पुरोहित	१८१२-६२ उपस्थितिकाल
५१।४९१	फैरन	१८९२-१९११ उपस्थितिकाल, महाराज विश्वनाथ सिंह, रीवाँ नरेश का शासनकाल
५२।५२२	वलि ज्रू	१७२२ उपस्थितिकाल
५३।५२६	विष्णुदास	१५८०-१६४० रचनाकाल
५४।५२९	प्रवेश	१७६०-९० रचनाकाल
५५।५३४	व्रजवासीदास १	१८१६ प्रवोध-चन्द्रोदय का रचनाकाल
५६।५४२	वंशगोपाल, वन्दीजन	१९०२ उपस्थितिकाल
५७।५६०	वदन	१८०९ रसदीप का रचनाकाल
५८।५६६	वृन्द	१७००-८० जीवनकाल, १७६१ वृन्द सतसई का रचनाकाल
५९।५८२	वेनीमाधव भट्ट	१७९८ के पूर्व उपस्थित
६०।५८९	ब्रह्म, राजा वीरवर	१६४२ मृत्युकाल
६१।५९९	भगवन्त राय	१८१७ मृत्युकाल
६२।६००	भगवन्त कवि २	,, ,,
६३।६०३	भगवानदास निरञ्जनी	१७२८ अमृतधारा और १७५५ जैमिनी अश्वमेघ का रचनाकाल
६४।६०४	भगवान हितु रामराय	१६५० के लगभग उपस्थित
६५।६१३	भीषमदास	१६४० रचनाकाल

संख्या	कवि	नवीन ज्ञात तिथियाँ
६६।६२६	मान कवि १	१८३०-४० रचनाकाल
६७।६५२	मणिकण्ठ	१७८२ वैतालपचीसी का रचनाकाल
६८।६५४	मुरली	१८११ पिङ्गलपीयूष, १८१४ नलोपाख्यान, तथा १८१६ रस सग्रह का रचनाकाल
६९।६७७	मदनगोपाल २	१८७६ अर्जुनविलास का रचनाकाल
७०।६९४	मुनि लाल	१६४२ रामप्रकाश रचनाकाल
७१।७०२	मान चरखारी यह भी खुमान ही है।	१८३०-८० रचनाकाल
७२।७१०	मुसाहब राजा बिजावर	१९०९ शृङ्गारकुण्डली का रचनाकाल
७३।७११	मनोहरदास निरञ्जनी	१७१६ ज्ञानमञ्जरी और १७१७ वेदान्तभाषा का रचनाकाल
७४।७२८	राम सखे	१८०४ नृत्य राघव मिलन का रचनाकाल
७५।७३१	रामराइ राठौर	१६४९ भक्तमाल मे उल्लेख
७६।७३२	रामचरण	१८४१-८१ रचनाकाल
७७।७४२	रघुनाथदास महन्त	१८७५-१९२५ रचनाकाल
७८।७४७	रसिकदास ब्रजवासी	१७४४-५१ राधावल्लभीय रसिकदास का रचनाकाल
७९।७५१	रसरुप, रामरूप नही	१८११ तुलसीभूषण का रचनाकाल
८०।७५४	रसपुञ्जदास	१७८१ प्रस्तार प्रभाकर का रचनाकाल
८१।७६०	ऋपिनाथ	१८३० अलङ्कारमणि मञ्जरी का रचनाकाल
८२।७६८	रतनपाल	१७४२ मे इनके लिए देवीदास ने प्रेमरत्नाकर की रचना की
८३।७७१	रूप	१८३७ इनके नखशिख की प्राचीनतम प्रति का लिपिकाल
८४।७७७	रज्जब	१६२४ जन्म, १७४६ मृत्युकाल
८५।७८०	रायचन्द नागर	१८३१ गीतगोविन्दादर्श और १८३४ विचित्र-मालिका का रचनाकाल
८६।७८४	रामसेवक	१८५० उपस्थितिकाल
८७।७८५	रामदत्त	१८५५ उपस्थितिकाल
८८।७८७	रघुराम गुजराती	१७५७ सभासार नाटक का रचनाकाल

सख्या	कवि	नवीन ज्ञात तिथियाँ
८६।७८८	रामनाथ मिश्र	१९६४ मे जीवित थे
९०।७९६	रावरतन राठौर	१७०७ उपस्थितिकाल, ग्रियर्सन
९१।७९८	रहीम	१६१३-८३ जीवनकाल
९२।८१३	लक्ष्मणदास	१८८६ के पूर्व, (विनोद)
९३।८१७	लछिराम २ व्रजवासी	१७०९ के पूर्व
९४।८२६	लक्ष्मण	१९००-७७ रचनाकाल
९५।८२८	लोकमणि	१८१० सूदन मे उल्लेख
९६।८२९	लक्ष्मी	" "
।८३१	वाहिद	१५६७ ई० जन्म स० मृत्यु सं० १६६५ वि०
९७।८४८	शिवदास	१८०९ लोकोक्ति रसकौमुदी का रचनाकाल
९८।८५१	शिवराज	१८६६ रससागर का रचनाकाल
९९।८६८	श्रीधर मुरलीधर	१७६९ जङ्गनामा का रचनाकाल
१००।८७७	सुन्दरदास, सन्त	१६५३ जन्म, १७४६ मृत्युकाल
१०१।८९५	सवल श्याम	१६८८ जन्मकाल
१०२।९०७	सुमेर	१८१० सूदन मे उल्लेख
१०३।९०८	सुमेर सिंह, साहवजादे	१९६३ तक जीवित
१०४।९११	सुजान	१८०० के आस-पास उपस्थिति
१०५।९१२	सवल सिह	१७२७ सभा पर्व और द्रोणपर्व का रचनाकाल
१०६।९१४	शेखर कवि	१८५५ जन्म, १९३२ मृत्युकाल
१०७।९१७	शशिनाथ	१७९४-१८२० रचनाकाल
१०८।९२५	सगुणदास	१६०० के आस-पास उपस्थित
१०९।९३८	शङ्ख	१७१२ तुलसी की कवि-माला मे उल्लेख
११०।९३९	साहव	" " " "
१११।९४०	सुवुद्धि	" " " "
११२।९४५	शत्रुजीत वुन्देला	१८२२ उपस्थितिकाल
११३।९४७	श्रीकर	१७१२ तुलमी की कविमाला मे उल्लेख
११४।९४८	सनेही	१८१० से पूर्व, (सूदन)
११५।९४९	सूरज	" "
११६।९६३	हरिदेव वनिया वृन्दावनी	१८९२ छन्द पयोनिधि और १९१४ भूपणभक्ति-विलास का रचनाकाल

संख्या	कवि	नवीन ज्ञात तिथियाँ
११७।६७१	हरि कवि	१७६६ जन्म, १८३५ मृत्युकाल
११८।६९५	हरिचरण दास	,, ,, ,,
११९।६७२	हरिवल्लभ	१७०१ गीता का टीकाकाल
१२०।६७६	हनुमन्त	१६०४-५६ इनके आश्रयदाता भानुप्रताप सिंह का शासनकाल
१२१।६८२	हेमनाथ	१८७५ के पूर्व उपस्थित
१२२।६९३	हीरालाल	१८३९ राधाशतक का रचनाकाल
१२३।१०००	हितराम	१७२२ हरिभक्तिसिद्धान्त-समुद्र का रचनाकाल
१२४।१००२	हरिचन्द	१७२२-८८ छत्रसाल का शासनकाल

निम्नलिखित १३० अ-तिथि कवियो की तिथियाँ अभी तक ज्ञात नही हो सकी हैं। सम्भव है और भी सामग्री सुलभ हो जाने पर भविष्य मे इनमे से कुछ और की भी तिथियाँ ज्ञात हो सके।

१।४६ अमर जी राजपूतानेवाले
२।६४ केशवदास २
३।६६ केशवराम
४।११९ कालीदीन कवि
५।१२६ कृपाराम ३
६।१२९ कृपाल
७।१३१ कल्याण सिंह भट्ट
८।१३९ खूबचन्द
९।१४० खान
१०।१४१ खान सुलतान
११।१४४ खुसाल पाठक
१२।१४५ खेम १ बु०
१३।१५६ गदाधर
१४।१५७ गदाधर राम
१५।१९८ गीध
१६।२०९ गोपाल सिंह व्रजवासी
१७।२१६ घासी भट्ट
१८।२१९ चन्द ३
१९।२२० चन्द ४
२०।२२२ चिन्तामणि २
२१।२२५ चौखे
२२।२२८ चतुर कवि
२३।२२९ चतुर विहारी
२४।२३० चतुर्भुज
२५।२३२ चैन
२६।२३४ चैनराय
२७।२४४ हेमकरन अन्तर्वेदी
२८।२४५ छत्तन
२९।२४६ छत्रपति कवि
३०।२४८ छवीले व्रजवासी
३१।२५७ जुगुलकिशोर १
३२।२५८ जुगराज

३३।२५६ जुगुलप्रसाद चौबे
३४।२६२ जानकीप्रसाद २
३५।२७६ जय सिंह
३६।२६६ जगनैस कवि
३७।३१३ ठाकुर राम
३८।३१५ ढाखन
३६।३४५ दान
४०।३५० द्विजनन्द
४१।३५३ द्विजराम
४२।३५४ दिलाराम
४३।३६७ दैवी
४४।३८४ धुरन्धर
४५।३८६ घोघेदास, व्रजवासी
४६।३६३ नैन
४७।३६७ नबी
४८।३६६ नरेश
४६।४०१ नवनिधि
५०।४२४ नन्द
५१।४२६ नन्दकिशोर कवि
५२।४३० नाथ १
५३।४३५ नाथ ६
५४।४३७ नवलकिशोर कवि
५५।४३८ नवल
५६।४६१ प्रधान केशव राय
५७।४७३ परशुराम
५८।४७६ पारस
५६।४८१ पुरान
६०।४८६ पूथ पूरनचन्द
६१।४६२ फूलचन्द कवि
६२।५२१ बीठल कवि ३
६३।५२३ बलरामदास व्रजवासी
६४।५२४ बंशीधर
६५।५२७ विष्णुदास २
६६।५२८ बंशीधर ३
६७।५३२ व्रजमोहन
६८।५५६ बालकृष्ण २
६६।५५७ बोधीराम
७०।५५८ बुद्धिसेन
७१।५५६ बिन्दादत्त
७२।५६३ विश्वेश्वर
७३।५६४ विदुष
७४।५७१ विश्वम्भर
७५।५७४ बजरङ्ग
७६।५७५ बकसी
७७।५८७ बुध सिंह पञ्जाबी
७८।५८८ बाबू भट्ट
७६।५६१ बेन
८०।६०१ भगवान कवि
८१।६२६ भोलानाथ
८२।६३६ मनसा
८३।६४० मनसाराम
८४।६४८ मानिकदास, मथुरा
८५।६८६ मुरारिदास व्रजवासी
८६।६५० मन्य
८७।६५१ मननिधि
८८।६५३ मुरली
८६।६६५ महराज
६०।६६६ मुरलीधर २

९१।६७४ मनीराम १	१११।८३२ वजहन
९२।६७५ मनीराय	११२।८३३ वहाव
९३।६७८ मदनगोपाल चरखारी	११३।८४२ शम्भुप्रसाद
९४।६८६ मज्ज़द	११४।८४९ शिवदत्त
९५।६८९ महताव	११५।८५२ शिवदीन
९६।६९० मीरन	११६।८५९ शङ्कर १
९७।७१६ राम कवि १, रामवरश	११७।८६० शङ्कर २
९८।७२३ रामलाल	११८।८७३ सन्त कवि १
९९।७२५ रामसिंह देव सूर्यवंशी	११९।८८८ सुलतान २
१००।७२९ रामकृष्ण २	१२०।९४१ सुन्दर वन्दीजन, असनी
१०१।७३० रामदया	१२१।९५० शम्भुनाथ मिश्र, गञ्ज, मुरादाबाद
१०२।७३६ रघुलाल	१२२।९६५ हरदयाल
१०३।७७८ राय कवि	१२३।९७३ हरिलाल
१०४।७७९ राय जू	१२४।९७८ हितनन्द
१०५।८०३ लाल ४	१२५।९७९ हरिभानु
१०६।८०७ लालचन्द	१२६।९८३ हेम कवि
१०७।८२३ लोकनाथ उपनाम बनारसीनाथ	१२७।९८५ हरि जीवन
१०८।८२४ ललित राम	१२८।९९० हरिलाल २
१०९।८२७ लाजव	१२९।९९६ हरिचन्द वरसानिया
११०।८३१ वाहिद	१३०।१००३ हुलास राम

सरोज के निम्नलिखित ९ अ-तिथि कवि सरोजकार की मिथ्या सृष्टि हैं। इनके अनस्तित्व पर आगे विचार किया गया है—

१।३२८ तीखी	६।८९२ श्याममनोहर
२।३३९ तेही	७।८९७ शोभ या शोभा
३।४८२ पखाने या परवीनै	८।८९८ सोभनाथ
४।५६२ वृन्दावन	९।९९४ हुलास
५।८१८ लक्ष्मणशरणदास	

११०

५. निष्कर्ष

सक्षेप मे इन सारी बातो को यो रखा जा सकता है—

सरोज के कुल स-तिथि कवि ६८७

१ जाँच किए हुए कुल सवत् ४६२, ७० ६ प्रतिशत

क उपस्थिति सिद्ध सवत्—

ईस्वी-सन् मे उपस्थितिकाल	३१
ग्रन्थ रचनाकाल	३६ (शिवसिंह सरोज को छोडकर)
प्रमाणो से सिद्ध उपस्थितिकाल	२५०
तर्क से सिद्ध उपस्थितिकाल	३२
योग	३५२ जँचे सवतो का ६२ प्रतिशत

ख जन्मकाल सिद्ध सवत्	२४ जँचे सवतो का ५ प्रतिशत
ग अशुद्ध सिद्ध सवत्	११ जँचे सवतो का २३ प्रतिशत

२ सवत् जिनकी जांच नही हो सकी २०५, ३० प्रतिशत।

सरोज के वि० कवि ५३, इनमे से २६ के नवीन सवत् ज्ञात हुए हैं, २४ के नही।

सरोज के अ-तिथि कवि २६३, इनमे से १२४ के नवीन सवत् ज्ञात हुए है, ६ कवियो का अस्तित्व ही नही सिद्ध होता और १३० कवियो के सम्बन्ध मे अभी तक कोई तिथि ज्ञात नही हो सकी हैं।

---

(२) कवि निर्णय

(क) कवियों की मिथ्या सृष्टि और उनके कारण

जैसा कि भूमिका मे कहा गया है, सरोज मे अनेक कवियो की मिथ्या सृष्टि हो गई है। एक ही कवि का विवरण अनेक कवियो के रूप मे बार-बार दिया गया है। ऐसे कवियो का विवरण दिया गया है, जिनका कभी भी अस्तित्व नही रहा। ऐसे भी अनेक कवि हैं, जिनके सम्बन्ध मे निश्चयपूर्वक नही कहा जा सकता कि ये कवि कभी अवश्य ही थे। कवियो की इस मिथ्या सृष्टि के कतिपय कारण ये हैं—

(१) कभी-कभी कवि के निवासभेद से कविभेद स्वीकार कर लिया गया है। निश्चय ही यह अज्ञान के कारण है। उदाहरण के लिए एक सुखदेव मिश्र का नाम ले लेना पर्याप्त है। यह कवि एक से तीन हो गया है एक बार ८३४ सख्या पर इन्हे कम्पिला का कहा गया है, दूसरी बार ८३५ सख्या पर दौलतपुर का और तीसरी बार सख्या ८३६ पर अन्तर्वेद का। यही दशा अवधेश की है, जो सख्या ५ पर बुन्देलखण्डी कहे गए हैं और सख्या ६ पर सूपा के।

(२) कभा-कभी ऐसा हुआ है कि सरोजकार ने जिस आधार को पकडा, वही भ्रमपूर्ण था। कभी-कभी दूसरो का विश्वास करने के कारण भी लोग मारे जाते हैं। यही दशा सरोजकार की भी यत्र-तत्र हुई है। उदाहरण के लिए दिग्विजय भूषण मे शशिनाथ और सोमनाथ का तथा कवि दत्त और दत्त कवि का भेद स्वीकृत है, अत सरोज मे भी सोमनाथ (९१६) और शशिनाथ (९१७) दो कवि हो गए हैं। इसी प्रकार कवि दत्त (९४) और दत्त कवि (३३६) भी दो विभिन्न कवि समझ लिए गए हैं। अनन्यदास चकदेवा वाले (३६) और रतन ब्राह्मण, बनारसी (७६५) के विवरण महेशदत्त के भाषाकाव्यसग्रह की कृपा से मिथ्या रूप मे भी आ गए हैं।

(३) कभी-कभी प्रतिलिपिकार की थोडी सी असावधानी मिथ्याकवियो की सृष्टि मे सहायक सिद्ध हुई है। असावधानी से उसने 'म' का 'भ' कर दिया और सोमनाथ से भिन्न एक सोभनाथ (८९८) कवि की सृष्टि हो गई। इसी प्रकार 'न' का 'त' हो गया और नेही कवि से भिन्न एक तेही कवि (३२९) अस्तित्व मे आ गए।

(४) कभी-कभी ऐसा भी हुआ है कि एक ही कवि भिन्न-भिन्न आधारो से लिया गया, अत आधार-भेद से भिन्न-भिन्न समझ लिया गया। उदाहरण के लिए बीबी रतनकुँवरि, बनारसी (७६४) को लिया जाय। मूल 'प्रेमरत्न' नामक ग्रन्थ के आधार पर इनका विवरण दिया गया है। पर भाषाकाव्यसग्रह के आधार पर इन्हे रतन ब्राह्मण, बनारसी (७६५) बना दिया गया हैं। लिङ्ग-भेद हो गया, जाति-भेद हो गया, और १०० वर्षो का अन्तर भी आ गया, पर दोनो एक ही ग्रन्थ और एक ही कविता के रचयिता बने हुए हैं।

(५) कभी-कभी कवि का विवरण उसके वास्तविक नाम और उपनाम दोनो से दे दिया गया है और कवि सहज ही एक से दो हो गया है। उदाहरण के लिए अयोध्याप्रसाद वाजपेयी औध (४) और औध (८) सविता दत्त (९०३) और रविदत्त (७६२) तथा अब्दुर्रहिमान (३२) और प्रेमी-यमनी (४५५) के नाम युग्म प्रस्तुत किए जा सकते हैं।

(६) इसी प्रकार कभी-कभी कवि अपने पूरे नाम से एक बार आ गया है और अधूरे नाम से दूसरी बार, और एक ही कवि दो हो गया है। उदाहरण के लिए जुगल (२९०) और

जुगुलदास (३०३), अगर (३४) और अग्रदास (३५), अनूप (४१) और अनूपदास (१८), नारायण (४४४) और भूपनारायण (६२५), किशोर (७७) और जुगुलकिशोर (२५६) आदि के नाम युग्म देखे जा सकते हैं।

(७) कभी-कभी कवि छाप को ठीक से न पकड पाने के कारण मिथ्या कवि सृष्टि हो गई है। उदाहरण के लिए, सोभ (९७) और श्याममनोहर (८९२) आदि के नाम लिए जा सकते हैं।

(ख) एक से अनेक कवि

इन सब कारणो से एक कवि दो या तीन कवियो के रूप मे सरोज मे वर्णित हुआ है। नीचे ऐसे ५९ कवियो की सूची प्रस्तुत की जा रही है, जिनका विवरण सरोज मे १२४ कवियो के रूप मे दिया गया है। इस प्रकार ६५ कवियो की मिथ्या सृष्टि हुई है।

(१) अजवेस रीवाँ वाले	१।२ अजवेस प्राचीन
	२।३ अजवेस नवीन
(२) अवधेश	१।५ अवधेश बुन्देलखण्डी
	२।६ अवधेश सूपा के
(३) अयोध्याप्रसाद वाजपेयी औध	१।४ अयोध्याप्रसाद वाजपेयी औध
	२।८ औध
(४) अक्षर अनन्य	१।१५ अनन्य
	२।३० अक्षर अनन्य
	३।३१ अनन्य २
	४।३६ अनन्यदास चकदेवा वाले
(५) आनन्द घन	१।२२ आनन्द घन
	२।२१२ घन आनन्द
(६) अग्रदास	१।३४ अगर
	२।३५ अग्रदास
(७) अनूपदास	१।१८ अनूपदास
	२।४१ अनूप
(८) अब्दुर्रहिमान	१।३२ अब्दुर्रहिमान
	२।४५५ प्रेमी यमन

(९) कर्ण	१।६९ करन भट्ट
	२।७० कर्ण ब्राह्मण
(१०) कालिदास त्रिवेदी	१।७३ कालिदास त्रिवेदी
	२।६८८ महाकवि
(११) किशोर	१।७७ किशोर
	२।२५६ जुगुलकिशोर भट्ट
(१२) कृष्ण कवि	१।७९ कृष्ण कवि १
	२।१३४ कृष्ण कवि प्राचीन
(१३) सन्तन कवि	१।९१ कविराइ
	२।८७१ सन्तन
(१४) रामनाथ कायस्थ	१।९२ कवि राम १
	२।९३ कवि राम २
(१५) कृपाराम जयपुर वाले	१।११२ कृपाराम, जयपुर १
	२।१२७ कृपाराम ४
(१६) खुमान चरखारी वाले	१।१३५ खुमान चरखारी
	२।१३६ खुमान
	३।६२९ मान कवि १
	४।७०२ मान कवि वन्दीजन चरखारी वाले
(१७) अब्दुर्रहीम खानखाना	१।१३८ खानखाना रहीम
	२।७९८ रहीम
(१८) गदाधर भट्ट	१।१५५ गदाधर भट्ट, पद्माकर के पौत्र
	२।२१० गदाधर कवि
(१९) गुरुदत्त	१।१८२ गुरुदत्त १ प्राचीन
	२।१८४ गुरुदत्त शुक्ल २
(२०) रामगुलाम द्विवेदी	१।१९३ गुलाम राम
	२।१९४ गुलामी
(२१) जुगुलदास	१।२६० जुगुल कवि
	२।३०३ जुगुलदास
(२२) जगन्नाथ मिश्र	१।२७७ जगन
	२।२९९ जगनेस

	३।२०१ जगन्नाथ
(२३) जमाल	१।२८० जमाल
	२।२६८ जमालुद्दीन
(२४) व्रजवासी दास	१।३७५ दास व्रजवासी
	२।५३४ व्रजवासी दास १
	३।५३७ व्रजवासी दास २
(२५) निवाज व्राह्मण	१।४१३ निवाज २ अन्तर्वेदी
	२।४१४ निवाज ३ वुन्देलखण्डी
(२६) नरोत्तम	१।४१६ नरोत्तम वुन्देलखण्डी
	२।४१७ नरोत्तम अन्तर्वेदी
(२७) नीलकण्ठ त्रिपाठी	१।४१८ नीलकण्ठ मिश्र
	२।४१९ नीलकण्ठ त्रिपाठी
(२८) शम्भुनाथ मिश्र	१।४३३ नाथ ४
	२।८३९ शम्भुनाथ मिश्र
(२९) हरिनाथ गुजराती	१।४३४ नाथ ५
	२।९९८ हरिनाथ गुजराती
(३०) लीलाधर	१।४४१ नीलाधर
	२।८१२ लीलाधर
(३१) भूपनारायण वन्दीजन	१।४४४ नारायण वन्दीजन, काकूपुर
	२।६२५ भूपनारायण वन्दीजन, काकूपुर
(३२) रामनाथ प्रधान	१।४६२ प्रधान
	२।७२४ रामनाथ प्रधान
(३३) पञ्चम कवि डलमऊ	१।४६४ पञ्चम, कवि २, डलमऊ
	२।४८६ पञ्चम डलमऊ
(३४) व्रह्म, राजा वीरवल	१।४९७ व्रह्म कवि राजा वीरवल
	२।५८९ व्रह्म राजा वीरवर
(३५) विक्रम साहि चरखारी नरेश	१।५०५ विजय, विजयवहादुर वुन्देला
	२।५०६ विक्रम, विजयवहादुर वुन्देला
(३६) हरीराम व्यास	१।५१४ व्यास जी कवि

	२।५१५ व्यास स्वामी हरीराम शुक्ल
(३७) वलि जू	१।५२२ वलि जू
	२।५६६ वलि जू
(३८) वशगोपाल वन्दीजन	१।५४२ वशगोपाल वन्दीजन
	२।५८५ वशगोपाल जालवन
(३९) वौधा	१।५४३ वौधा
	२।५४४ वोध बुन्देलखण्डी
(४०) भगवन्त राय खीची	१।५९९ भगवन्त राय कवि
	२।६०० भगवन्त कवि
(४१) भीषम	१।६१२ भीषम
	२।६२४ भीषम
(४२) मनसाराम	१।६३९ मनसा
	२।६४० मनसाराम
(४३) मून	१।६४१ भून
	२।६९४ मुन्नीलाल
(४४) मदनकिशोर	१।६६३ मदनकिशोर
	२।७०६ मदनकिशोर
(४५) मदनगोपाल सुकुल	१।६७६ मदनगोपाल १
	२।६७७ मदनगोपाल २
(४६) रघुराय	१।७३४ रघुराय बुन्देलखण्डी भाट
	२।७३५ रघुराय २
(४७) रस रूप	१।७५१ सरोज तृ० स० मे रसरूप और सप्तम स० मे राम रूप
	२।७९२ रस रूप
(४८) सवितादत्त	१।७६२ रविदत्त
	२।९०३ सवितादत्त
(४९) रत्न कुवरि	१।७६४ रत्न कुंवरि, वनारसी
	२।७६५ रतन ब्राह्मण, वनारसी

(५०) राय	१।७७८ राय कवि
	२।७७९ राय जू
(५१) लालमुकुन्द बनारसी	१।८०६ लाल मुकुन्द
	२।६३४ मुकुन्द लाल
(५२) सुखदेव मिश्र	१।८३४ सुखदेव मिश्र १ कम्पिला
	२।८३५ सुखदेव मिश्र २ दौलतपुर
	३।८३६ सुखदेव मिश्र ३
(५३) शम्भुनाथ	१।८३८ शम्भुनाथ बन्दीजन
	२।८३९ शम्भुनाथ मिश्र
(५४) श्रीधर मुरलीधर	१।८६६ श्रीधर प्राचीन
	२।८६८ श्रीधर मुरलीधर
(५५) सेवक बनारसी	१।८८३ सेवक असनी
	२।८८४ सेवक बनारसी
(५६) सहजराम	१।८८९ सहजराम बनिया १
	२।८९० सहजराम सनाढ्य २
(५७) सोभनाथ	१।९१६ सोभनाथ
	२।९१७ शशिनाथ
(५८) सबल सिंह चौहान	१।९१२ सबल सिंह
	२।९१३ सबल सिंह चौहान
(५९) हरिचरणदास	१।९७१ हरि कवि
	२।९९५ हरिचरण दास

(ग) सरोज के पूर्णरूपेण अस्तित्वहीन कवि

सरोज मे १२ ऐसे कवि है जिनका प्रादुर्भाव कभी भी नही हुआ । ये कवि सरोजकार की विशुद्ध कपलना की उद्‌भावना हैं, जिनमे से अधिकाश कवि छाप की अशुद्ध पकड के कारण है ।

१।५९ ऊधो—'ऊधो' उद्धव के लिए प्रयुक्त है—

ऊधो जू कहत हमे करने कहा री बाम
　　हम तो करत काम श्याम की रटन के

२।३२८ तीखी—कवित्त मे प्रयुक्त तीखी शब्द अनी का विशेषण है, तीक्ष्ण के अर्थ मे आया है और उक्त कवित्त प्रियादास का है।

३।३३९ तेही—लिपि-दोष के कारण न त मे वदल गया है और नेही कवि के प्रतिविम्व तेही की सृष्टि हो गई है।

४।४८२ पखाने—सरोज के तृतीय सस्करण मे पखाने पाठ है और सप्तम मे पखाने को साफ कर परवीने मे वदल दिया गया है। कवि न तो पखाने है और न परवीने। पखाने का अर्थ है उपाख्यान या लोकोक्ति। उदाहृत छन्द दिविजय भूषण से लिए गए है, जहाँ कवि का नाम पखाने दिया हुआ है। ये छन्द वस्तुत राय शिवदास के लोकोक्ति रस कौमुदी नामक रस ग्रन्थ के हैं।

५।५६२ वृन्दावन—कवित्त मे 'वृन्दावन चन्द नख चन्द' पदावली प्रयुक्त हुई है। यहाँ वृन्दावन कवि छाप नही है, यह कृष्ण के अर्थ मे प्रयुक्त 'वृन्दावन चन्द' का एक अश मात्र है।

६।६२२ भृङ्ग—भृङ्ग शब्द उद्धव के अर्थ मे प्रयुक्त है। कविता गोस्वामी तुलसीदास की कवितावली की है।

७।६७१ मधुसूदन—कविता मे मधुसूदन शब्द कृष्ण के अर्थ मे प्रयुक्त हुआ है। सवैया परवत कवि का है।

८।८१८ लक्ष्मणशरणदास—'दास शरण लक्ष्मण सुत भूप' पदावली से सरोजकार ने लक्ष्मणशरण दास नामक कवि की उद्‌भावना की है। यह पद छाप हीन है। यहाँ लक्ष्मणशरण से अभिप्राय वल्लभाचार्य के पिता लक्ष्मण भट्ट से है। इसमे भक्त ने कहा है कि यह दास लक्ष्मण सुत की शरण मे है।

९।८९२ श्याममनोहर—श्याममनोहर कृष्ण के लिए व्यवहृत हुआ है। सरोज मे एक वडे पद का एक वन्द मात्र उद्धृत किया गया है। प्राय प्रत्येक वन्द मे श्याममनोहर शब्द प्रयुक्त हुआ है। पद किसी हरिदास नागर का है। अन्तिम वन्द मे छाप है।

१०।८९७ शोभ या शोभा—सोभ शब्द विशेषण है, शोभा के अर्थ मे प्रयुक्त हुआ है। यह कवि छाप नही है। उद्धृत सवैये मे कवि छाप कुमार है। यह छन्द कुमारमणि शास्त्री के रसिक रसाल ग्रन्थ का है।

११।८९८ शोभनाथ—म का मत्था फूट जाने से यह कवि अस्तित्व मे आया है। वास्तविक कवि सोमनाथ हैं।

१२।९९४ हुलास—हुलास कवि छाप नही है। वह उल्लास के अर्थ मे प्रयुक्त है। कवि प्रश्न कर रहा है—

"काहे हुलास सयोगिनि के हिय ?"

घ संदिग्ध नाम वाले कवि

सरोज मे कई कवि ऐसे हैं, जिनके नामो के सम्बन्ध मे सहज ही सन्देह उठता है कि सरोज मे दिए नाम कवि नाम है अथवा नही। नीचे ऐसे ६ कवियो का उल्लेख है —

१।७ अवध बकस कवि—इस कवि की कविता के उदाहरण मे जो कवित्त दिया गया है, उसका कवि छाप वाला चरण यह है—

अवध बकस भूप कीरति है छन्द ऐसी
छाजत गिरा के मुख सुषमा अपार सी

कुछ पता नही अवध बकस कवि का नाम है अथवा भूप का।

२।१४१ खान सुलतान—इस कवि की कविता का जो उदाहरण दिया गया है, उसका कवि छाप वाला चरण यह है—

दादुर दरोगा इन्द्रचाप इतमाम घटा
जाली बगजाल ठाढौ खान सुलतान है

कुछ पता नही कवि का नाम खान है या खान सुलतान है। सुलतान रूपक का अङ्ग भी हो सकता है।

३।१७४ गोकुल विहारी—इस कवि की कविता का कविछाप वाला चरण यह है—

कोमल कमल उत गोकुल विहारी लाल
जैसी कोऊ कुन्ज मे फिरन कन्ज नाल की

बहुत सम्भव है कि गोकुलविहारी लाल केवल कृष्ण के लिए प्रयुक्त हुआ हो। यदि यह कविछाप ही है, तो भी यह निश्चयपूर्वक नही कहा जा सकता कि कवि का नाम गोकुलविहारी है या गोकुलविहारी लाल है या गोकुल है या लाल है।

४।१७७ गोविन्द अटल—इनका एक छप्पय उद्धृत है, जिसका अन्तिम चरण यह है—

"गोविन्द अटल कवि नन्द कहि, जौ कीजै सौ समय सिर"

यह निश्चयपूर्वक नही कहा जा सकता कि कवि का नाम गोविन्द अटल है अथवा कवि नन्द अथवा यह गोविन्द कवि किसी अटल कवि के नन्द (पुत्र) है।

५।२२९ चतुर बिहारी २—इस कवि का एक कवित्त उद्धृत है, जिसका प्रथम चरण यह है—

चतुर विहारी पै मिलन आई बाला साथ
मांगत है आजु कछु हम पै दिवाइए

चतुर विहारी कृष्ण के अर्थ मे प्रयुक्त प्रतीत होता है। चतुरविहारी का विशेषण भी हो सकता है। यदि यह कवि छाप ही है, तो भी यह कह सकना शक्य नही कि कवि का नाम चतुर विहारी है या केवल चतुर। चतुर गोपिका के लिए भी व्यवहृत हुआ हो, तो भी असम्भव नही।

६।३५७ दीनानाथ, कवि बुन्देलखण्डी—इनकी उदाहृत कविता का एक चरण यह है—

दीनवन्धु दीनानाथ एतै गुन लिए फिरौ
करम न यारी देत ताकौ मै कहा करौ

यदि कवि का नाम दीनानाथ है, तो उसका नाम दीनवन्धु भी क्यो नही हो सकता। वहुत करके दीनानाथ शब्द परमात्मा के लिए ही प्रयुक्त हुआ है।

ये ६ नाम तो उदाहरणो के सहारे सन्दिग्ध सिद्ध होते हैं। इनके अतिरिक्त एक ही नाम के न जाने कितने कवि है जो अभिन्न हो सकते हैं, पर प्रमाणाभाव मे कुछ कहना ठीक नही। नाथ १,२,३,६ तो निश्चित रूप से सन्दिग्ध अस्तित्व वाले कवि हैं और शिवनाथ, शम्भूनाथ, हरिनाथ आदि मे समा जाने वाले हैं।

ङ अनेक से एक कवि

सरोज मे यही नही है कि एक कवि अनेक कवियो के रूप मे प्रस्तुत किया गया है, यहाँ कुछ कवि ऐसे भी है जो अनेक को एक मे समेटे हुए हैं, यद्यपि इनकी सख्या वहुत ही कम है। ऐसे कुछ उदाहरण यहाँ उपस्थित किए जा रहे है।

१।४०२ नाभादास—सरोज मे माना गया है कि नाभादास और नारायणदास एक ही व्यक्ति के दो नाम हैं। सामान्यतया अभी तक यही स्वीकार भी किया जाता रहा है। इस मान्यता का आधार सम्भवत सरोज ही है। पर सर्वेक्षण मे हमने भलीभाँति दिखला दिया है कि यह मान्यता ठीक नही। मूल भक्तमाल के प्रस्तुतकर्ता नारायणदास हैं, जिन्होंने १०८ छप्पयो मे भक्तो की माला गूँथी थी। यह नाभादास से ज्येष्ठ थे। नाभा ने वाद मे भक्तमाल को पल्लवित किया। भक्तमाल का वर्तमान रूप इन्ही का दिया हुआ है।

२।६९५ मतिराम—सरोज मे भूषण त्रिपाठी के भाई मतिराम को ही छन्दसार का रचयिता माना गया है किन्तु यह वात ठीक नही। वस्तुत दो मतिराम हुए हैं, जिनको सरोज मे मिला दिया गया है। एक मतिराम तो प्रसिद्ध भूषण त्रिपाठी के भाई हैं। यह पटकुल के कश्यपगोत्रीय कान्य-

कुब्ज त्रिपाठी थे और तिकवापुर, जिला कानपुर के रहनेवाले थे। यह रसराज, ललित ललाम, सतसई के प्रसिद्ध रचयिता थे। दूसरे मतिराम दशकुल के वत्सगोत्रीय कान्यकुब्ज त्रिपाठी थे। यह वनपुर, जिला कानपुर के रहनेवाले थे। इनके पिता का नाम विश्वनाथ था। यह सरूप सिंह बुन्देला के आश्रित थे, जिसके लिए इन्होने वृत्तकौमुदी या छन्दसार की रचना की। सम्भव है, यदि सरोज मे दो मतिरामो का अस्तित्व स्वीकार किया गया होता तो आज दो मतिराम माने जाते होते।

३।७४७ रसिकदास—इस कवि को व्रजवासी कहा गया है और इस कवि के उदाहरण मे किसी गदाधर कवि की कविता उद्धत है। इस नाम के चार कवि मिलते है और सभी व्रजवासी हैं। अब किससे इनका तादात्म्य स्थापित किया जाय? सरोजकार ने यदि थोडा-सा विवरण और दे दिया होता तो यह अनिश्चय न रह जाता। चार रसिकदास ये हैं—(१) रसिकदास राधावल्लभी सम्प्रदाय के, (२) रसिकदास हरिदासी सम्प्रदाय के, (३) रसिकदास वल्लभ सम्प्रदाय के गो० हरिराय जी तथा (४) रसिकदास वल्लभ से सम्प्रदाय के, गो० द्वारिकेश जी के पुत्र, गोपिका लङ्कार नाम भी प्रसिद्ध। सर्वेक्षण मे इन पर और इनके ग्रन्थो पर पूरा विचार किया गया है।

इन तीन उदाहरणो के अतिरिक्त सरोज मे ऐसे अनेक कवि है जो एक मे दो को समेटे हुए है। परिचय एक कवि का हे और उदाहरण उसी नाम के दूसरे कवि का। ऐसे कवियो का विवरण आगे अन्यत्र और अलग दिया गया है—

च सरोज के नामहीन कवि

सरोज मे कुछ ऐसे भी कवियो का विवरण है जिनका नाम ही नही दिया गया है। सर्वेक्षण के सिलसिले मे इनके नाम अप्रत्याशित रूप से ज्ञात हो गए है। ऐसे कुछ कवियो की सूची निम्न है।

१।६२ उनियारे के राजा—सरोज के अनुसार उनियारे के राजा ने वलभद्र के नखशिख का अच्छा तिलक वनाया था। सरोजकार की किताव से उक्त राजा साहव का नाम जाता रहा था। सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ है कि इन राजा साहव का नाम महासिंह था। साथ ही, यह भी ज्ञात हुआ है कि वलभद्र-कृत नखशिख का तिलक इन राजा साहव ने नही वनाया था। इस तिलक के रचयिता इन राजा साहव के दरवारी कवि मनीराम द्विज ये।

२।७२ कुमारपाल महाराज अनहलवाले—इनके सम्वन्ध मे लिखा है कि इन महाराज की

वशावली ब्रह्मा से लेकर इन तक एक कवीश्वर ने बना कर उसका नाम कुमारपालचरित रखा। इस कवि का नाम हेमचन्द सूरि है, जो जैनो के एक प्रसिद्ध आचार्य हुए हैं। कुमारपाल-चरित को द्वाश्रय काव्य भी कहते है।

३।७१० मुसाहव राजा विजावर—इस कवि को सर्वत्र इसी नाम से स्वीकार किया गया है। यह भी स्पष्ट नही था कि मुसाहव विजावर के किसी राजा का नाम है या वहाँ के किसी राजा के मुसाहव का, अथवा मुसाहव केवल दरबारी के अर्थ मे है। सर्वेक्षण से पता चला है कि विजावर मे मुसाहव नाम का कोई राजा नही हुआ। यहाँ के एक राजा भानुप्रताप सिंह के मुसाहव प० लक्ष्मीप्रसाद ने उक्त राजा के एक दोहे पर शृङ्गारकुण्डली नामक ग्रन्थ स० १९०९ मे वनाया था।

४।७९२ राना राज सिंह—इनके सम्बन्ध मे कथन है कि इन्होने अपने नाम पर राजविलास नामक ग्रन्थ बनवाया। किससे वनवाया, इसका उल्लेख नही है। राजविलास के वनानेवाले का नाम सरोजकार को ज्ञात था। उसने इसके रचयिता मान कवीश्वर राजपूताने वाले का राजविलास के कर्ता रूप मे ७१४ सख्या पर उल्लेख भी किया हे। यह ग्रन्थ सभा से प्रकाशित भी हो चुका है।

५।९०० सिंह—स्पष्ट ही यह कवि का नाम नही है। सिंह छाप वाले इस कवि का नाम मह सिंह है। इन्होने १८५३ मे छन्दशृङ्गार नामक ग्रन्थ की रचना की थी।

सरोज मे अभी और भी कुछ कवि है जिनके नामो का पता नही है। उदाहरण के लिए ६५७ सरयक मिश्र कवि को लीजिए। मिश्र ब्राह्मणो की एक जाति का नाम है, किसी व्यक्ति का नाम नही। इसी प्रकार ४७ अजीत सिंह ने राजरूप का ख्यात नामक ग्रन्थ वनवाया। किन्तु किससे वनवाया, कुछ पता नही। २९६ जय सिंह सीसोदिया, उदयपुर-नरेश ने जयदेवविलास और वहाँ के विजय सिंह ने विजयविलास नामक ग्रन्थ वनवाए किन्तु इन कवियो के नाम ज्ञात नही हो सके।

छ सरोज की कवयित्रियाँ

सरोज मे यद्यपि कई कवयित्रियो की भी रचनाएँ सङ्कलित है, पर सरोजकार को सव के स्त्री होने का पता न था। महाकवि केशव की शिष्या परम प्रवीण प्रवीणराय (४४९), भक्त-श्रेष्ठ गीतकारो मे मूर्धन्य स्थान की अधिकारिणी मीरावाई (७००) और राजा शिवप्रसाद की पितामही रत्न कुँवरि वीवी (७६४) का उल्लेख सरोज मे कवयित्रियो के रूप मे हुआ है।

इनके अतिरिक्त (३२५) ताज, चन्दसखी (२३६), रसिक विहारी (७६५), सेख (८८२), और सुजान (६११) का नामोल्लेख है, पर इनमे से किसी के भी सम्बन्ध मे यह कथन नही है कि यह स्त्री थी। चन्दसखी मीरा के ही समान राजस्थान की एक प्रसिद्ध गीतिकार हैं। इनके पदो का एक अच्छा सङ्कलन वनारस की पद्मावती शवनम जी ने किया है। ताज, सेख और सुजान मुसलमान कवयित्रियाँ है। ताज तो प्रसिद्ध मुगल वादशाह अकवर की वेगम थी। सेख, प्रसिद्ध स्वच्छन्दतावादी प्रेमी कवि आलम की प्रिया-पत्नी थी। सुजान, घनानन्द की प्रिया मुहम्मद शाह रङ्गीले के दरवार की गायिका थी। रसिक विहारी का असल नाम वनी ठनी जी था। यह महाराज नागरीदास की उप-पत्नी थी। यह सव की सव सरल काव्य करने वाली हुई हैं।

इन नामो के अतिरिक्त कुछ और भी स्त्रीवाचक नाम सरोज मे है, पर ये नाम कवयित्रियो के नही हैं। ये सखी सम्प्रदाय के भक्त कवियो के नाम हैं, यथा—नीलसखी, (४२०) कुन्ज गोपी (१२८), प्रेमसखी (४५३) आदि।

ज. सरोज में उल्लिखित कुछ अन्य कवि

सरोज मे कुल १००३ कवियो का परिचय दिया गया है। किन्ही किन्ही कवियो के परिचय मे उनसे सम्वन्धित कुछ अन्य कवियो का भी नामोल्लेख हो गया है। ऐसे कवियो की सख्या ३२ है जिनकी सूची निम्न है—

	कवि		जिस कवि के विवरण मे उल्लेख हुआ है उसका नाम
१	कवीन्द्र त्रिवेदी, गाँव वेंती, जिला रायवरैली		७४ उदयनाथ कवीन्द्र,
२	तीहर, गङ्गाप्रसाद के पुत्र		१६४ गङ्गाप्रसाद ब्राह्मण, सपौली जिला सीतापुर
३	मिही लाल	पद्माकर के पुत्र	१५५ गदाधर भट्ट
४	अम्वाप्रसाद	पद्माकर के पुत्र	१५५ गदाधर भट्ट
५	वशीधर	मिही लाल के पुत्र, पद्माकर के पौत्र	१५५ गदाधर भट्ट
६	चन्द्रधर	मिही लाल के पुत्र, पद्माकर के पौत्र	१५५ गदाधर भट्ट
७	लक्ष्मीधर	मिही लाल के पुत्र, पद्माकर के पौत्र	१५५ गदाधर भट्ट
८	विद्याधर	अम्वाप्रसाद के पुत्र और पद्माकर के पौत्र	१५५ गदाधर भट्ट

कवि		जिस कवि के विवरण मे उल्लेख हुआ है उसका नाम
९ हिम्मत सिंह १०. उमराव सिंह		२५२ छितिपाल, राजा माधव सिंह, अमेठी
११ जलाली दास १२ दूलम दास १३ देवी दास	निर्गुनिए	३०४ जगजीवनदास
१४ ठाकुर असनीवाले वन्दीजन १५ ठाकुर कायस्थ बुन्देलखण्डी		३११ ठाकुर प्राचीन
१६ अङ्गद जी १७ अमरदास १८ रामदास १९ हरिरामदास २० तेगवहादुर	सिक्ख गुरु	३९१ गुरु नानक
२१ त्रिलोचन २२ घना २३ रैदास २४ सेन २५ शेख फरीद २६ नामदेव २७ वलभद्र		३९१ गुरु नानक
२८. कील्ह २९ हठी नारायण		४७८ पद्मनाभ
३० राम कवि		८४३ शिव कवि
३१. सुखराज सिंह		८५७ शिवदीन भिनगा वाले
३२ शालिक कवि		८६१ शङ्कर त्रिपाठी, विसवाँ वाले के पुत्र

इनमे से सेन का विवरण सरोज मे अलग से भी है।

सरोज मे ८९३ कवियो की कविताएँ उदाहृत हैं। इनमे से ८३३ का परिचय भी दिया गया है। सुजान की कविता ७३० और ८३३ सख्याओ पर दो वार आ गई है। निम्नलिखित ५ कवियो का नाम जीवनचरित खण्ड मे नही आ पाया है।

१ औसेरी वन्दीजन	उदाहरण सख्या	२०
२ वलराम	,,	४७०
३ रामजी, कवि २	,,	६३६
४ लाल साहव, महाराज त्रिलोकीनाथ सिंह, द्विजदेव के भतीजे और उत्तराधिकारी, उपनाम भुवनेश		६९४
५ सीताराम त्रिपाठी, पटना वाले		७९८

८. कवि नहीं, आश्रयदाता

सरोज मे कहने के लिए तो १००३ कवियो के परिचय है, पर इनमे कुछ ऐसे भी हैं, जो वस्तुत कवि नही हैं। ये कविता के प्रेमी सहृदय आश्रयदाता हैं। नीचे कुछ ऐसे उदार व्यक्तियो के नाम दिए जा रहे हैं—

१।३८ अमर सिंह राठौर, जोधपुर ।

२।४३ अनवर खाँ—विहारी सतसई की अनवरचन्द्रिका नाम्नी टीका बनाने वाले ।

३।७२ कुमार पाल अन्हलवाडा वाले—इनके यहाँ प्रसिद्ध हेमचन्द्र सूरि थे ।

४।१३७ खुमान सिंह राना चित्तौर—यह न तो कवि थे, न आश्रयदाता ही । बहुत बाद दलपत विजय ने खुमान रासो की रचना १८ वी शती मे की। यह कवि नवी शती मे इनका आश्रित नही था ।

५।२९६ जय सिंह सीसोदिया राना उदयपुर—इन्होने जयदेवविलास नामक ग्रन्थ बनवाया था, स्वय नही बनाया था ।

६।५९२ विजय सिंह उदयपुर के राना—इन्होने विजयविलास नामक ग्रन्थ बनवाया था, स्वय नही बनाया था ।

७।७१५ मान सिंह, महाराजा आमेर—यह स्वय कवि नही थे । इन्होने नरहरि महापात्र नारके पुत्र हथि का समादर एक लाख रुपये से किया था ।

८।७९७ राज सिंह, राना उदयपुर—मान कवीश्वर से इन्होने राजविलास नामक ग्रन्थ बनवाया था ।

९।८८७ सुलतान पठान, नवाब सुलतान मोहम्मद खाँ—इनके दरबार मे चन्द नाम के कवि थे, जिन्होने विहारी सतसई पर कुण्डलियाँ लगाई है । इसी प्रकार वल्लभाचाय और विट्ठलनाय भी कवि नही थे, धर्माचार्य थे ।

एक बार जब सरोज मे इन आश्रयदाताओ को स्थान मिल गया, तब पश्चात्कालीन इतिहासकारो ने अपने-अपने इतिहासग्रन्थ मे इन्हे अन्धाधुन्ध स्थान दिया । इस तथ्य से भी सरोज का प्रभाव आँका जा सकता है ।

ञ सरोज और मुसलमान कवि

हिन्दी-काव्यसाहित्य मे प्रारम्भ मे मुसलमानो ने कितना योग दिया था, इसका पता सरोजकार को था और उसने सरोज मे इसीलिए मुसलमान कवियो को भी प्रचुर सख्या मे स्थान दिया है। सरोज मे निम्नलिखित ५७ मुसलमान कवियो का विवरण है—

१।१ अकबर, २।१३ आजम, ३।१४ अहमद, ४।१६ आलम, ५।२५ आदिल, ६।२६ अलीमन, ७।२७ अनीस, ८।३२ अब्दुर्रहिमान उपनाम प्रेमी यमन, ४५५, ६।४२ आकूब या आकूब खाँ, १०।४३ अनवर खाँ, ११।४४ आसिफ खाँ, १२।५४ ईसुफ खाँ, १३।६८ कबीर, १४।१०२ कमाल, १५।१०६ कारबेग फकीर, १६।१३८ खानखाना रहीम या ७६८ रहीम १७।१४० खान, १८।१४१ खान सुलतान, १६।२६६ जैनुद्दीन अहमद, २०।१८० जमाल या २६८ जमालुद्दीन, २१।२८७ जलालुद्दीन, २२।२६७ जलील बिलग्रामी, २३।३०५ जुल्फकार, २४।३२० तानसेन, २५।३२५ ताज, २६।३२६ तालिब शाह, २७।३५२ दिलदार, २८।३६७ नबी, २६।४०५ नवखान, ३०।४१२ निवाज, जुलाहा, बिलग्रामी,३१।४६५ फैजी, ३२।४६६ फहीम, ३३।५६५ बारन, ३४।५६७ बाजीदा, ३५।६४६ मुबारक, ३६।६६० मीर रुस्तम, ३७।६६१ महम्मद, ३८।६६२ मीरी माधव, ३६।६८६ महताब, ४०।६६० मीरन, ४१।६६८ महबूब, ४२।७०७ मीरा मधनायक, ४३।७०८ मलिक मोहम्मद जायसी, ४४।७४५ रसखनि, ४५।७४८ रसिया, नजीब खाँ, ४६।७५५ रसलीन, ४७।७५७ रसनायक तालिब अली, ४८।७७७ रज्जब, ४६।८२१ लतीफ, ५०।८३१ वाहिद, ५१।८३२ वजहन, ५२।८३३ वहाब, ५३।८८२ सेख, ५४।८८७ सुलतान पठान, ५५।८८८ सुलतान, ५६।६११ सुजान, ५७।६८० हुसेन ।

---

(३) तथ्य-निर्णय

सरोज मे जिस प्रकार सन्-सवत सम्बन्धी अनेक अशुद्धियाँ है तथा कवियो के सम्बन्ध मे अनेक भ्रान्तियाँ हैं, उसी प्रकार कवियो के जीवन के सम्बन्ध मे भी उनकी सूचनाएँ अनेक स्थलो पर अशुद्ध हैं। किसी का जन्मस्थान भ्रमपूर्ण है, तो किसी की जाति उलट-पलट गई है। किसी का आश्रयदाता ठीक नही है, तो किसी के नाम पर किसी दूसरे के ग्रन्थ चढ गए हैं। किसी के पारस्परिक सम्बन्धो मे गड-बडी हो गई है, तो किसी का परिचय कुछ है तो उदाहरण कुछ और। जीवन एक कवि का हो गया है, तो उदाहरण किसी दूसरे का है।

उदाहरण के लिए श्रीपति को पयागपुर, जिला बहराइच का रहने वाला कहा गया है, जबकि उनके ग्रन्थ से सिद्ध है कि वह कालपी के रहने वाले थे। इसी प्रकार अनन्य दास या अक्षर अनन्य को चकदेवा, जिला गोंडा का रहने वाला कहा गया है जबकि यह सेनुहडा, रियासत दतिया के रहने वाले थे। प्रसिद्ध सन्त चरणदास को पण्डितपुर, जिला फैजाबाद का रहने वाला कहा गया है जबकि यह अलवर रियासत के अन्तर्गत दहरा के रहने वाले थे। यह जन्म स्थान सम्बन्धी तीनो अशुद्धियाँ भाषाकाव्य-सग्रह का अनुसरण करने के कारण हैं।

जाति सम्बन्धी भ्रान्तियाँ भी अनेक हैं। नृप शम्भु और शिवा जी महाराज को सुलङ्की कहा गया है जबकि ये लोग सोलङ्की क्षत्रिय नही थे, यह मराठे क्षत्रिय थे। चैतन्य महाप्रभु के प्रसिद्ध शिष्य दाक्षिणात्य ब्राह्मण गदाधर भट्ट को गदाधर मिश्र कहा गया है। दिल्लीवाले प्रसिद्ध सन्त चरणदास दूसर बनिया थे, जिन्हे पण्डित और ब्राह्मण बना दिया गया है। शाहजहाँ के भरे दरबार मे सलामत खाँ का वध करने वाले अमर सिंह राठौर थे, पर इन्हे हाडा लिखा गया है।

आलम को मुअज्जम शाह, प्रसिद्ध नाम बहादुर शाह का दरबारी कवि कहा गया है, जबकि यह स्वच्छन्दतावादी कवि थे और किसी के बन्धन मे बँधनेवाले नही थे। यह लाल पन्ना के प्रसिद्ध महाराज छत्रसाल के यहाँ थे। इन्हे छत्रसाल हाडा बूँदीवाले का आश्रित कहा गया है। पदमाकर के समकालीन प्रसिद्ध कवि परताप साहि को भी छत्रसाल का आश्रित बना दिया गया है, जिस कारण इस कवि को लेकर ग्रियर्सन मे भ्रान्त ऊहापोह हुआ है। इसी प्रकार सेवक बनारसी को देवकीनन्दन सिंह का आश्रित कहा गया है। सेवक ठाकुर के पौत्र, धनीराम के पुत्र थे। ठाकुर, देवकीनन्दन सिंह के और धनीराम उनके पुत्र जानकी सिंह के तथा सेवक जानकी सिंह के भी पुत्र हरिशङ्कर सिंह के आश्रित थे। आश्रयदाताओ की इस भ्रान्ति के कारण अनेक गडबडियाँ उत्पन्न हो सकती हैं। हिन्दी साहित्य मे दो-दो आलमो की सृष्टि इसी का दुष्परिणाम है।

सरोज में कतिपय स्थलो पर एक कवि का ग्रन्थ दूसरे कवि के नाम पर चढ गया है। उदाहरण के लिए भाषा-भूषण जोधपुर वाले प्रसिद्ध जसवन्त सिंह की रचना है, पर यह तिरवा वाले जसवन्त सिंह की रचना स्वीकृत है। इस प्रसङ्ग को लेकर भी ग्रियर्सन को बहुत परेशान होना पडा है। सुधानिधि, सिङ्गरौर वाले तोष की रचना है, पर यह तोषनिधि के नाम पर चढ गयी है। इसी प्रकार की चिन्ता की एक बात बिहारी सतसई की लालचन्द्रिका, टीका को

लेकर भी हुई हे। यह टीका प्रेमसागर के प्रसिद्ध रचयिता आगरेवाले लल्लू जी लाल की है, पर चढा दी गई हे लाल बनारसी के नाम पर।

इसी प्रकार सरोज मे अनेक कवियो के सम्बन्ध मे पारस्परिक सम्बन्धो की भूलें हुई हैं। मीरा के बहुत पूर्ववर्त्ती राना कुम्भकर्ण या कुम्भा को उनका पति कहा गया है, जब कि इनके पति का नाम भोज था। मणिदेव, गोकुलनाथ बनारसी के शिष्य थे, किन्तु इन्हे गोकुलनाथ के पुत्र गोपीनाथ का शिष्य कहा गया है। इसी प्रकार गोविन्ददास, व्रजवासी को नाभादास का शिष्य कहा गया है। उदाहृत कविता के सहारे यह गोविन्ददास अष्टछाप वाले गोविन्द स्वामी सिद्ध होते हैं, जो विट्ठलनाथ जी के शिष्य थे। सरोज मे शिवनाथ, देवकीनन्दन और गुरुदत्त को परस्पर भाई कहा गया है, जब कि शिवनाथ, देवकीनन्दन और गुरुदत्त इन दो भाइयो के पिता थे। ऐसी भूलो से कवियो के समय-निर्धारण मे भयानक और भद्दी भूलो की सदैव सम्भावना बनी रहती है।

सरोज मे अनेक ऐसे कवि भी हैं जिनके जीवन-परिचय और काव्य-उदाहरण मे परस्पर सामञ्जस्य नही। वास्तविकता यह हे कि परिचय तो एक कवि का दिया गया है पर उदाहरण उसी नाम के या उसी नाम से मिलते-जुलते किसी अन्य कवि की रचना का दिया गया है। ऐसा प्राय उन कवियो के सम्बन्ध मे हुआ है जिनका जीवन विवरण भक्तमाल से लिया गया है और उदाहरण रागकल्पद्रुम से। यदि सरोज का विश्वास किया जाय तो महाप्रभु वल्लभाचार्य और उनके पुत्र गो० विट्ठलनाथ कवि भी थे, क्योकि सरोज मे इनकी कविता के उदाहरण दिए गए हैं। पर यह यथार्थ नही है। उद्धृत उदाहरणो से स्वय सिद्ध है। वल्लभाचार्य के नाम पर जो उद्धरण दिया गया है, वह इनका न होकर इनके पुत्र गो० विट्ठलनाथ के वल्लभ नामक किसी शिष्य का है। इसी प्रकार विट्ठलनाथ के नाम पर जो पद उदाहृत है, उसमे विट्ठलनाथ गिरिधरन की छाप है। इस छाप से विट्ठलनाथ की शिष्या गङ्गाबाई जी पद लिखा करती थी। इस प्रकार के कतिपय अन्य उदाहरण आगे प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

१।११८ कल्याणदास—परिचय कृष्णदास पय अहारी के शिष्य कल्याणदास का है और उदाहरण गो० गोकुलनाथ के शिष्य कल्याणदास का।

२।१७८ गोविन्द कवि—परिचय मे कहा गया है कि इनकी कविता कालिदास के हजारे मे है और इन्हे स० १७५७ मे उ० कहा गया है। पर उदाहरण मे अलि रसिक गोविन्द का पद है, जिनका रचनाकाल स० १८५०-१९०० है।

३।३९८ नागरीदास—इन्हे स० १६४८ मे उ० कहा गया है पर कविता प्रसिद्ध भक्त कवि कृष्णगढ नरेश सावन्त सिंह हरि सम्बन्ध नाम नागरीदास की है, जिनका जन्म स० १७५६ मे और देहावसान स० १८२१ मे हुआ।

४।४७८ पद्मनाभ—इन्हे कृष्णदास पय अहारी का शिष्य कहा गया है, पर उदाहृत पद महाप्रभु वल्लभाचार्य के इसी नाम के शिष्य का है।

५।६०५ भगवानदास मथुरा निवासी—सरोज मे तो उल्लेख नही हैं पर भक्तमाल से सिद्ध है कि मथुरानिवासी भगवानदास खोजी और श्यामदास के अनुयायी थे। पर उदाहृत पद वल्लभ-सम्प्रदाय के भगवानदास ब्रजवासी का है। इस पद मे वल्लभ, विट्ठल और उनके सातो पुत्रो का नाम-स्मरण हैं।

६।६८७ माधवदास ब्राह्मण—परिचय माधव जगन्नाथी का है, पर उदाहृत पद वल्लभ-सम्प्रदाय के अनुयायी माधवदास का है, जो विट्ठलनाथ के पुत्र गो० गोकुलनाथ के शिष्य थे।

७।७३१ रामराय राठौर—उदाहरण रामराय सारस्वत का है। इन्ही रामराय सारस्वत के शिष्य वह भगवानदास थे जो अपनी छाप भगवान हितु रामराय रखा करते थे।

८।७४७ रसिकदास—इनके नाम पर किसी गदाधर का पद उदाहृत है।

९।९२२ सेन—परिचय तो रामानन्द जी के प्रसिद्ध शिष्य सेन नाई रीवाँ वाले का दिया गया है, पर उदाहृत कवित्त किसी रीतिकालीन कविन्द सेन की कृति है।

इसी प्रकार कुछ और भी उदाहरण बढाए जा सकते है, पर इसकी कोई बहुत बडी आवश्यकता नही हैं।

सर्वेक्षण के पश्चात् इस प्रकार की अनेक भ्रान्तियाँ सरोज मे मिली हैं जिनका निराकरण यथास्थान कर दिया गया है, सब को दुहराने की यहाँ कोई आवश्यकता नही। यह कुछ उदाहरण तो इसलिए एकत्र कर दिए गए है कि इस बात का अनुभव किया जाय कि सरोज-सर्वेक्षण द्वारा कितनी सफाई करनी पडी है,। फिर भी यह नही कहा जा सकता कि सारी सफाई हो ही गई। सब की शक्ति और साधन सीमित है, इन्ही के भीतर रहकर काम करना पडता है। स्वय शिव सिंह के साधन अत्यन्त सीमित थे। इतना सब होते हुए भी जो कार्य वह कर गए, उसके लिए समस्त हिन्दी ससार उनका सदैव आभार स्वीकार करता रहेगा। मैंने जो यह सर्वेक्षण किया है, वह उनके प्रति अपनी कृतज्ञताज्ञापन के लिए, उनके काम को और आगे बढाने के लिए, उनके ऋण से किञ्चित् उऋण होने के लिए, क्योकि ऋपिऋण से मुक्त होने का यही एक उपाय हमारे आर्य मनीपियो ने हमे बताया है।

परिशिष्ट

परिशिष्ट

(१) सरोज के आधार पर हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास

क. आदिकाल

सरोज मे वर्णित हिन्दी का प्राचीनतम कवि पुण्ड है। जिसका उपस्थितिकाल स० ७७० कहा गया है। इस कवि की रचना का कोई भी अश आज तक उपलब्ध नहीं हो सका है और न तो इस कवि के सम्बन्ध मे कोई अन्य प्रामाणिक सामग्री ही सुलभ हुई है। पर यह कवि अभी तक लिखे हुए सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य के इतिहासो मे सरोज की साक्षी के आधार पर प्रथम स्थान का अधिकारी होता आया है।

सरोज मे नवी शताब्दी का भी एक कवि वर्णित है, जिसने खुमान रासा नामक ग्रन्थ रचा था। सरोज की साक्षी पर यह कवि हिन्दी साहित्य के इतिहास मे आदिकाल के अन्तर्गत प्रमुख-स्थान पाता आ रहा है। आज यह सिद्ध हो गया है कि यह ग्रन्थ स० १७६७ और १७९० के बीच किसी समय दौलतविजय नामक एक जैन कवि द्वारा राजस्थान मे रचा गया। पर लोग अभी तक पुरानी लीक पीटते जा रहे है।

काल-क्रम से सरोज के तीसरे कवि चन्द वरदाई हैं। यह पृथ्वीराज चौहान के मन्त्री, मित्र, सामन्त और दरबारी कवि थे। इन्होने पृथ्वीराज रासो की रचना की है और यह हिन्दी के प्रथम बडे कवि हैं। सरोज मे इनका समय १०९८ दिया गया है, जो अशुद्ध है। इनका रचनाकाल स० १२२५-५० है। सरोज मे इनकी कविता का जो उदाहरण दिया गया है, उसका एक अश निश्चित रूप से इनकी रचना नहीं है। एक तो इसकी भाषा पर्याप्त नवीनता लिए हुए है, दूसरे इसमे कवित्त जैसा बाद मे प्रचलित छन्द प्रयुक्त हुआ है। इस ग्रन्थ का एक सस्करण सभा से पहले प्रकाशित हुआ था, पर अब भी इसके एक अधिक प्रामाणिक सस्करण की आवश्यकता बनी हुई है। इस ग्रन्थ मे ऐतिहासिक दृष्टि से अनेक त्रुटियाँ भले हो पर चन्द के अस्तित्व से इनकार नही किया जा सकता। ग्रन्थ का साहित्यिक महत्त्व अत्यधिक है।

सरोज मे १२ वी शती के दो कवि कहे गए है—(१) जगनिक ११२४ मे उ०, (२) वार दरवेग़ा ११४६ मे उ०। इनमे से जगनिक का अस्तित्व स्वीकार किया जाता है। यह चन्द के समकालीन हैं और इनका भी सवत् अशुद्ध है। इनकी कोई लिखित रचना उपलब्ध नही। आल्हा इनकी रचना माना जाता है, पर गेय परम्परा के कारण यह अपना पूर्व स्वरूप कभी का खो चुका है। हिन्दी साहित्य के इतिहास मे इस कवि का चन्द के साथ-साथ सादर स्मरण किया जा सकता है। वार दरवेग़ा का अस्तित्व सन्दिग्ध है।

सरोज मे १३ वी शती के के चार कवि हैं—(१) कुमारपाल १२२० मे उ०,(२) केदार १२८० मे उ०, (३) अनन्यदास चकदेवा वाले १२२५ मे उ० तथा(४) वरबै सीता कवि १२४६ मे उ०।

इनमे कुमारपाल कवि नही, आश्रयदाता हैं। इनके यहाँ प्रसिद्ध जैनाचार्य हेमचन्द्र सूरि थे, जिन्होने कुमारपाल चरित नामक ग्रन्थ लिखा, जिसका उल्लेख सरोज मे हुआ है। सरोजकार को कृति का पता था कर्त्ता का नही। हेमचन्द्र अपभ्रश या पुरानी हिन्दी के कवि हैं। कुमारपाल चरित हिन्दी की रचना नही हे फिर भी व्याकरण मे उदाहृत पुराने कवि की अपभ्रश रचनाओ के कारण इन्हे हिन्दी साहित्य के इतिहास मे स्थान दिया जा सकता है। सरोज मे इस तथ्य का कही भी उल्लेख नही है। केदार का अस्तित्व स्वीकार किया जाता है पर इस कवि की भी कविता का कोई उदाहरण सुलभ नही। सरोज मे जिन्हे अनन्यदास चकदेवा का निवासी और स० १२२५ मे उ० कहा गया है वह वस्तुत अक्षर अनन्य हैं, जिनका जीवनकाल स० १७१०-६० है। फिर भी इस कवि का वर्णन आदिकाल मे लोग करते गए हैं। वरबै सीना नाम का कोई राजा कन्नौज मे कभी नही हुआ। न जाने कहाँ से सरोजकार ने यह मिथ्या सृष्टि कर ली है।

१४वीं शती के दो कवि सरोज मे हैं—(१) सारङ्ग १३३० मे उ० (२) नवलदास क्षत्रिय १३१६ मे उ०। इनमे से सारङ्ग तो शारङ्गधर के नाम से प्रसिद्ध है। इन्होंने हमीर को नायक बनाकर कोई काव्य ग्रन्थ लिखा था पर आज वह भी अनुपलब्ध है। अनन्यदास के ही समान व्यर्थ के लिए नवलदास को १४वी शती मे खीच ले जाया गया है। भाषा-काव्यसग्रह मे प्रेस के भूतो की बदौलत १६१३ का उलट कर १३१६ हो गया और सम्पूर्ण सन्देहो के रहते हुए भी इस कवि को १३१६ मे उपस्थित माना जाता रहा है। यह कवि १६वी शती मे हुआ और सतनामी सम्प्रदाय का था।

इस प्रकार आदिकाल मे आने वाले सरोज के ११ कवियो मे से एक मात्र चन्द महत्त्व के हैं। शेष या तो नाम शेष है या वह भी नही। इधर हिन्दी साहित्य के आदिकाल की परिपुष्ट करने वाली प्रचुर सामग्री सुलभ हुई है, जिनका उल्लेख भी सरोज मे नही हुआ है। सरोज में

सिद्ध-साहित्य, नाथ-साहित्य, तथा जैन-साहित्य का सङ्केत तक नही है। इस मे गुरु गोरखनाथ, वीसलदेव रासो के रचयिता नरपति नाल्ह, मैथिल-कोकिल विद्यापति और खडीवोली के प्रथम ज्ञात कवि अमीर खुसरो आदि नही समाविष्ट हो सके हैं। अत हिन्दी साहित्य के इतिहास के आदिकाल के निर्माण मे सरोज से कोई सहायता नही मिल सकती। सहायक होने के प्रतिकूल इसने इस काल के इतिहास को कूडा करकट से ही भरा है।

ख. भक्तिकाल

१. ज्ञानाश्रयी निर्गुणधारा

निर्गुनिए सन्तो की परम्परा कवीर से प्रारम्भ होती है। सरोज मे कवीर और उनके पुत्र कमाल की चर्चा है। कवीर को स०१६१० मे उ० कहा गया है। इनका स्वीकृत समय स० १४५६-१५७५ है। सेन कवीर के गुरुभाई थे जिनका समय स० १५६० दिया गया है। गुरु नानक का समय १५२६-९६ ठीक-ठीक दिया गया है। सिक्ख गुरुओ मे नानक के अतिरिक्त गुरु गोविन्द सिह का भी विवरण है। दिल्ली के प्रसिद्ध सन्त चरणदास का समय १५३७ दिया गया है। इनका वास्तविक समय १७६०-१८३९ है। निपट निरञ्जन औरङ्गजेबकालीन हे पर इनका समय १६५० दिया गया है। यह कम से कम १०० वर्ष पूर्व है। नरसी मेहता का समय स०१५९० दिया गया है, जो ठीक हे। 'अजगर करै न चाकरी पछी करै न काम' वाले मलूकदास भी यहाँ वर्तमान हैं। तत्त्ववेत्ता राजस्थानी साधु है। अक्षर अनन्य का उल्लेख चार बार हुआ है। इनका जीवनकाल स० १७१०-९० है। सरोज मे यद्यपि दादू का विवरण नही है, पर उनके शिष्य सुन्दरदास, रज्जव, वाजिद और रसपुञ्जदास का विवरण है। निरञ्जनी सम्प्रदाय के भी दो कवि भगवानदास निरञ्जनी और मनोहरदास निरञ्जनी सरोज मे सम्मिलित किए गए हे। सतनामी सम्प्रदाय के प्रवर्तक जगजीवनदास और उनके शिष्य नवलदास तथा रामसेवक दास १९वी शती के सन्त कवि हे। इस प्रकार सरोज मे लगभग २० निर्गुनिए सन्तो का समावेश हुआ है। रैदास, धना, धर्मदास, दादू, भीखा, दरिया विहारी, दरिया राजस्थानी, धरणीदास, पलटूदास, गुलाल, दयावाई, सहजोवाई, यारी तथा वुल्ला, आदि सन्तो का उल्लेख सरोज मे नही हुआ हे, फिर भी जो कुछ कवि इसमे समाविष्ट हो गए हं, वही कम नही है।

२. प्रेमाश्रयी निर्गुणधारा

इस काव्यधारा मे प्रेमाख्यान लिखनेवाले सूफी कवियो की परिगणना होती हे। इस धारा के केवल मलिक मोहम्मद जायसी का उल्लेख सरोज मे हुआ है। इनके सम्वन्ध मे सरोजकार को कोई जानकारी नही थी। यहाँ तक कि इनकी कविता का उदाहरण भी नही दिया गया है। इस धारा के अन्य कवि मझन, कुतवन, उसमान तथा नूर मोहम्मद आदि से सरोजकार अनभिज्ञ थे। इन कवियो का उल्लेख ग्रियर्सन तक मे नही हो सका हे। हाँ, ग्रियर्सन

मे जायसी को अत्यन्त महत्त्व दिया गया है, यहाँ तक कि इन पर अलग से एक विस्तृत अध्याय ही लिखा गया है। जायसी के प्रति शुक्ल जी का परम आकर्षण इसी का परिणाम प्रतीत होता है।

३ कृष्णाश्रयी सगुणधारा

सरोज मे कृष्णाश्रयी सगुणधारा के कवियो का पर्याप्त सख्या मे समावेश हुआ है। सूरदास, कुम्भनदास, परमानन्ददास, कृष्णदास अधिकारी, गोविन्द स्वामी, छीत स्वामी, चतुर्भुजदास और नन्ददास अष्टछाप के ये आठो कवि यहाँ है। यही नही, वल्लभ-सम्प्रदाय के सस्थापक महाप्रभु वल्लभाचाय और उनके पुत्र विट्ठलनाथ को भी कवियो मे घसीट लिया गया है। ये कवि नही थे, धर्माचार्य थे। यह अवश्य है कि इनके कारण व्रजभाषा-काव्य को अत्यन्त प्रोत्साहन मिला।

मीराबाई, हित हरिवश, स्वामी हरिदास, हरीराम व्यास, केशव कश्मीरी, श्रीभट्ट, विट्ठल विपुल, गदाधर भट्ट, कान्हरदास, रसखानि, सूरदास मदनमोहन, आसकरन दास, नागरीदास, व्रजवासीदास, भगवत रसिक तथा हठी आदि प्रसिद्ध भक्त तो यहाँ है ही, इनके अतिरिक्त और भी अनेक अप्रसिद्ध पर सिद्ध कृष्ण-भक्त कवि और उनके काव्य के उदाहरण यहाँ सुलभ है। इनमे केवल राम, कुञ्ज गोपी, कल्याणदास, खेम, गोपालदास, चतुर बिहारी, चन्दसखी, छबीले, जुगुलदास, जगन्नाथदास, ताज, तानसेन, दामोदरदास, घोंधेदास, नील सखी, नरोत्तमदास, नरसी, परशुरामदास, पद्मनाभ, प्रियादास, व्रजपति, वशीधर, वृन्दावनदास, बलरामदास, विष्णुदास, विद्यादास, भगवानदास, भगवान हितुराम राय, भीषमदास, माधवदास, मानिकचन्द, मानिकदास, मुरारिदास, मनोहरदास, रसिकदास, रामराइ, रामदास, लक्ष्मणदास, कृष्णजीवन लछिराम, श्यामदास तथा सगुणदास आदि का नाम लिया जा सकता है।

इस विस्तृत सूची का यह अर्थ नही कि सभी कृष्णभक्त कवियो का समावेश सरोज मे हो गया है। ऐसा सोचना भारी भ्रम को प्रश्रय देना होगा। ध्रुवदास, चाचा हित वृन्दावनदास, अलि रसिक गोविन्द, गङ्गाबाई आदि नाम यहाँ नही हैं।

भक्तमाल और रागकल्पद्रुम से इस कार्य मे सरोजकार को विशेष लाभ प्रतीत होता है। भक्तमाल से कवि परिचय लिया गया है और रागकल्पद्रुम से उदाहरण। ऐसा करने से कभी-कभी ऐसा हो गया है कि परिचय तो एक कवि का है पर उदाहरण उसी नाम के किसी दूसरे कवि का। उपसहार मे ऐसे कवियो पर तथ्य निरूपण के अन्तर्गत विचार किया गया है।

४. रामाश्रयी सगुणधारा

अग्रदास का नाम रामाश्रयी सगुणधारा के कवियो मे अग्रस्थानीय है। इन्होने रामोपासक सखी-सम्प्रदाय की स्थापना की। सरोज मे इनके उदाहृत पद मे अग्र अली छाप है।

नाभादास इनके शिष्य थे। देवा और किशोर सूर इसी सम्प्रदाय के कवि है। गो० तुलसीदास रामोपासक कवियो मे ही नही, सम्पूर्ण हिन्दी साहित्यकारो के मुकुटमणि हैं। उत्तरकालीन राम-भक्त कवियो मे रामसखे और रामनाथ प्रधान का विवरण सरोज मे है। इस धारा के कवि, तुलना मे कृष्ण-भक्त कवियो की अपेक्षा सख्या मे कम है। इसी अनुपात से सरोज मे भी इनकी सख्या कम है।

ग. रीतिकाल

सरोज वस्तुत रीतिकालीन कवियो और उनकी कविता का भण्डार है। इसमे रीतिकाल के प्रसिद्ध-अप्रसिद्ध सेकडो कवियो के विवरण और उनकी कविता के उदाहरण है। सरोज मे रीतिग्रन्थ रचनेवाले ऐसे अनेक सुन्दर कवि हे, जिनका उल्लेख अभी तक इतिहास-ग्रन्थ मे नही हो सका है, पर कविवृत सग्रहो मे उनका नाम अवश्य है। शुक्ल जी के इतिहास मे वर्णित कोई रीति कवि ऐसा नही, जिसका विवरण सरोज मे न हो। इसमे केशवदास, कुमारमणि भट्ट, कालिदास, कविन्द, किशोर, कुलपति, करन भट्ट, करनेश, कृष्णलाल भट्टकवि कलानिधि, गोकुलनाथ, गोविन्द कवि, ग्वाल, चिन्तामणि, चन्दन राय, जसवन्त सिह, जगत सिह विसेन, तोष, दलपति राय वशीधर, दत्त कवि, देव, दूलह, नवल सिह कायस्थ, पजनेस, पद्माकर, प्रताप साहि, वेनी, वेनी प्रवीन, वलभद्र मिश्र, भूपण, भिखारीदास, मतिराम, मण्डन, रघुनाथ वनारसी, रामसहायदास वनारसी, रूप साहि, रसलीन, श्रीधर, मुरलीधर, श्रीपति, सुखदेव, सुन्दर, सोभनाथ, सूरति मिश्र आदि सभी प्रसिद्ध रीतिग्रन्थ रचनेवाले कवि समाविष्ट हैं। अप्रसिद्ध कवियो का नामोल्लेख मैने जान-वूझ कर छोड दिया है।

यहाँ आचार्य केशव के सम्वन्ध मे कुछ विशेप कहना है। सरोज मे इनको सर्वप्रथम आचार्य कहा गया—"भापाकाव्य का तो इनको भामह, मम्मट, भरत के समान प्रथम आचार्य समझना चाहिए, क्योकि काव्य के दसौ अङ्ग पहले-पहल इन्होने कवि-प्रिया ग्रन्थ मे वर्णन किए। पीछे अनेक आचार्यो ने नाना ग्रन्थ भाषा मे रचे।"

तभी से केशवदास हिन्दी के प्रथम आचार्य माने जाते रहे है। यद्यपि इनके आचार्यत्व पर अनेक आक्रमण हुए, पर सरोज का जादू कुछ ऐसा है कि इतना होते हुए भी केवश को आचार्य पद से कोई च्युत नही कर सका।

यहाँ केशव से पूर्ववर्ती कहे जाने वाले रीति-ग्रन्थो पर भी विचार कर लेना असमीचीन न होगा। कृपाराम कृत हिततरङ्गिणी हिन्दी का प्रथम रीतिग्रन्थ माना जाता है। इसका रचना

काल स० १५९८ माना जाता है, पर सर्वेक्षण के अन्तर्गत मैंने यह सिद्ध किया है कि यह स० १७९८ की रचना है। इसी प्रकार गोप कवि भी केशव के पूर्ववर्ती समझे जाते रहे हैं। कृपाराम का तो सरोज मे कोई सवत् ही नही है, हाँ गोप के सम्वन्ध मे जो भ्रान्ति फैली हुई है, उसका उत्तरदायित्व सरोज पर है। सरोज मे गोप कवि का समय १५९० दिया गया है, पर यह भ्रामक है। गोप ओरछा नरेश पृथ्वी सिंह, शासनकाल (स १७९३-१८०९,) के यहाँ थे, यही इन्होंने रामालङ्कार नामक ग्रन्थ स० १८०० के आस-पास वनाया। अत यह भी केशव के वहुत वाद के है। अकवरी दरवार के करनेश कवि ने कर्णाभरण, भूपभूषण और श्रुतिभूषण नामक ग्रन्थ लिखे थे, यह सरोज का कथन है। ये ग्रन्थ अभी तक नही मिले हैं। सरोज मे करनेश का समय १६११ दिया गया है। सर्वेक्षण मे सिद्ध किया गया है कि यह ईस्वी-सन् है, अत इनका उपस्थित-काल स० १६६८ हुआ। मेरा अनुमान है कि करनेश के ये तीनो तथाकथित ग्रन्थ कवि-प्रिया के रचनाकाल स० १६५८ के वाद रचे गए और सम्भवत कविप्रिया की सर्वप्रियता देखकर। जव तक ये ग्रन्थ मिल नही जाते, कुछ निश्चित निर्णय नही दिया जा सकता। केवल मोहनलाल मिश्र का एक ग्रन्थ शृङ्गार-सागर है जो स० १६१६ मे रचा गया था। इस प्रकार यह सहज ही कहा जा सकता है कि केशव के पूर्व रीतिसाहित्य नगण्य मात्रा ही मे रचा गया था। शृङ्गार सागर १९१९ की भी रचना हो सकती है। पूर्ण प्रति देखने पर ही कुछ सुनिश्चित वात कही जा सकती है।

सरोज मे रीति मुक्त शृङ्गारी रचना करने वाले कवि भी वहुत हैं, जिनमे सेनापति, गङ्ग, रहीम, विहारीलाल चौवे, व्रह्म, अमरेश, जोइसी, मीरन, नरेश, नेवाज और मुवारक जैसे श्रेष्ठ कवि है।

रीतिकाल मे स्वच्छन्द प्रेम की काव्य-धारा प्रवाहित करने वाले जो कवि रसखान, आलम, शेख, घनानन्द, सुजान, वोधा और ठाकुर आदि हुए हैं, इनमे से कोई भी सरोज मे सम्मिलित होने से छूट नही गया है।

सरोजकार की दृष्टि शृङ्गार तक ही नही सीमित रह गई है, उसने सरोज मे रहीम, गङ्ग, नरहरि, कृष्ण, कादिर, वृन्द, गिरिधर कविराय, टोडरमल, वैताल, भरमी आदि नीति के कवियो को भी सादर स्थान दिया है।

सरोजकार को मुक्तको से ही नही, प्रवन्धकाव्यो से भी समान प्रेम है और उसने अनेक प्रवन्ध-काव्य लिखनेवाले कवियो का समावेश सरोज मे किया है। गोकुलनाथ, गोपीनाथ एव मणिदेव का महाभारत, सवल सिंह का महाभारत, व्रजवासीदास का व्रज विलास, मधुसूदनदास का रामाश्वमेध, हजराम का प्रह्लाद चरित, आदि सभी रीतिकालीन प्रवन्ध यहाँ हैं। भक्तिकाल के सुप्रसिद्ध प्रवन्ध रामचरितमानस, रामचन्द्रिका, पद्मावत और सुदामा चरित का उल्लेख तो यहाँ है ही। महाभारत, भागवत, शिवपुराण आदि के अनेक अनुवादो का विवरण सरोज मे हुआ है।

सरोजकार ने साहित्य की दृष्टि अत्यन्त व्यापक रखी है। ज्योतिष, रमल, वैद्यक, शालिहोत्र, वेदान्त, इतिहास, पुराण, टीका, रस, अलङ्कार, छन्द, कोष, नीति, भँडौआ आदि सभी का ग्रहण इन्होने साहित्य के अन्दर किया है।

सरोजकार ने हिन्दी के अन्तर्गत खडीबोली, व्रजी, अवधी, बुन्देली, राजस्थानी आदि सभी को समेट लिया है। सयोग से मैथिली का समावेश नही हो सका। हिन्दी साहित्य के अन्तर्गत इसे लाने का श्रेय ग्रियर्सन को है। इन्ही लोगो के दिखाए पथ का अनुसरण हम लोग आज तक करते जा रहे हैं। कैसी सर्वग्राही दृष्टि सरोजकार को मिली थी!

घ आधुनिक काल

सरोज मे आधुनिककाल के केवल भारतेन्दु युग का समावेश सम्भव था। सरोजकार ने इस युग के दीनदयाल गिरि, गिरिवर बनारसी, हरिश्चन्द्र, रघुराज सिंह, सेवक, सरदार, हनुमान, द्विजदेव सुमेरसिंह साहबजादे छितिपाल राजा माधव सिंह अमेठी, भुवनेश, मन्नालाल द्विज, तथा नारायणराय आदि प्रसिद्ध कवियो का विवरण एव उदाहरण दिया है। अप्रसिद्ध कवि भी अनेक हैं। ये सभी कवि प्राचीन काव्यधारा मे प्रवहमान थे। भारतेन्दु के नए काव्य और उनके गद्य साहित्य से सरोजकार अपरिचित ही था, अत सरोज मे प्राचीन काव्यधारा का अवसान तो देखा जा सकता है, पर नवीन काव्यधारा का आदि स्रोत यहाँ नही ढूँढा जा सकता।

सरोज को आधार बनाकर केवल पद्य साहित्य का इतिहास प्रस्तुत किया जा सकता है। गद्य साहित्य का इतिहास इसके सहारे नही गढा जा सकता। लल्लू जी लाल को इसमे बोलचाल की भाषा का आचार्य कहा गया है और इनके गद्य ग्रन्थ—प्रेमसागर और राजनीति का नामोल्लेख हुआ है। विवरण मे यत्र-तत्र वार्तिक शब्द का प्रयोग गद्य के लिए हुआ है। राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द के गद्य ग्रन्थ इतिहास तिमिर नाशक का उल्लेख किया गया है, पर साथ ही खेद भी प्रकट किया गया है कि इनकी कोई कविता सरोजकार को नही मिली। सरोजकार को हरिश्चन्द्र ऐसे पारस-साहित्यकार के केवल सुन्दरीतिलक नामक सग्रह ग्रन्थ का पता था। सरोज मे कवियो के जितने भी उदाहरण है, सभी पद्य के हैं, गद्य का एक भी उदाहरण ही नही दिया गया है। इसका कारण यह है कि सरोजकार वस्तुत एक काव्यसग्रह ही प्रस्तुत करने के ध्येय से अग्रसर हुए थे।

२—सहायक-ग्रन्थ सूची

क—प्राचीन काव्यसग्रह

१ सुधासर—नवीन
२ रागकल्पद्रुम, द्वितीय सस्करण, तीन भाग—राग सागर कृष्णानन्द व्यास देव
३ शृङ्गार सग्रह—सरदार
४ दिग्विजय भूपण—लाला गोकुलप्रसाद व्रज
५ सुन्दरी तिलक—भारतेन्दु वाबू हरिश्चन्द्र
६ भापाकाव्य सग्रह—महेश दत्त
७ कवित्त रत्नाकर, दो भाग—मातादीन मिश्र

ख—नवीन काव्यसग्रह

१ कविता कौमुदी, प्रथम एव द्वितीय भाग—रामनरेश त्रिपाठी
२ व्रजमाधुरी सार—वियोगी हरि
३ सिलेक्शन्स फ्राम हिन्दी लिटरेचर, ७ जिल्द—लाला सीताराम, बी० ए०

ग—कवियों के मूल ग्रन्थ

१ भक्तमाल, सटीक, मूललेखक नारायणदास और नाभादास, टीकाकार—प्रियादास और रूपकला जी, प्रकाशक, नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ
२ सुजान चरित—सूदन, सभा से प्रकाशित
३ जमाल दोहावली—स० महावीर सिंह
४ घन आनन्द ग्रन्थावली
५ भूपण
६ रसखानि
७ सुदामा चरित
८ केशव ग्रन्थावली
९ भिखारीदास, भाग १

(४–९) स० विश्वनाथप्रसाद मिश्र

१० ठाकुर ठसक
११ केशव पञ्चरत्न
} स० लाला भगवानदीन

१२ श्रृङ्गार लतिका
१३ श्रृङ्गार बत्तीसी
} द्विज देव, प्रकाशक, नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ

१४ देव सुधा—स० मिश्रबन्धु

१५ कवितावली—गो० तुलसीदास

१६ कवित्त रत्नाकर—सेनापति

१७ रहिमन विलास—स० व्रजरत्नदास

१८ सतसई सप्तक—स० श्यामसुन्दरदास

१९ रसिक रसाल—कुमारमणि शास्त्री, स० नीलकण्ठ मणि शास्त्री, प्रकाशक—विद्या विभाग, काँकरौली

२० सोमनाथ रत्नावली

२१ छन्दो मञ्जरी—गदाधर भट्ट, भारतजीवन प्रेस, काशी

२२ भारतेन्दु ग्रन्थावली, द्वितीय भाग—स० व्रजरत्नदास

२३ दीनदयाल गिरि ग्रन्थावली—स० श्यामसुन्दरदास

२४. मतिराम ग्रन्थावली—स० कृष्णविहारी मिश्र

२५ सुन्दर ग्रन्थावली

२६ प्रेम रत्न—रत्न कुँवरि बीबी, नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ।

२७. श्री हित सुधासागर

२८ अनन्य ग्रन्थावली

२९ चन्द्रसखी और उनका काव्य

३० चन्द्रावली नाटिका

घ—सरोज-रिपोर्ट

अग्रेजी मे

१ द फर्स्ट एनुअल रिपोर्ट आन द सर्च फार हिन्दी मैनुस्क्रप्ट्स फार द इयर १९००
२ द सेकण्ड " " " १९०१
३ द थर्ड " " " १९०२

४ द फोर्थ एनुअल रिपोर्ट ऑन द सर्च फार हिन्दी मैनुस्क्रिप्ट्स फार द इयर १६०३

५ द फिफ्थ " " " १६०४

६ द सिक्स्थ " " " १६०५

७ द फर्स्ट ट्राएनियल रिपोर्ट " " १६०६–०८

८ द सेकण्ड " " " १६०६–११

६ द थर्ड " " " १६१२–१४

१०. द टैन्थ रिपोर्ट " " " १६१७–१६

११ द इलेवेन्थ ट्राएनियल " " " १६२०–२२

१२ द ट्वेल्फ्थ " " " १६२३–२५

१३ रिपोर्ट ऑन द सर्च फार हिन्दी मैनुस्क्रिप्ट्स इन द पञ्जाब " १६२२–२४

१४ " " डेलही प्राविंस फार १६३१

हिन्दी मे

१५ खोज मे उपलब्ध हस्तलिखित हिन्दी ग्रन्थो का त्रयोदश त्रैवार्षिक विवरण १६२६–२८

१६ " " " चौदहवाँ " १६२६–३१

१७ " " " पन्द्रहवाँ " १६३२–३४

१८ " " " सोलहवाँ " १६३५–३७

१६ " " " सत्रहवाँ " १६३८–४०

अप्रकाशित

२० खोज मे उपलब्ध हस्तलिखित हिन्दी ग्रन्थो का सक्षिप्त विवरण १६००–४६

२१ खोज मे उपलब्ध हस्तलिखित हिन्दी ग्रन्थो का अठारहवाँ त्रैवार्षिक विवरण १६४१–४३

२२. खोज मे उपलब्ध हस्तलिखित हिन्दी ग्रन्थो का उन्नीसवाँ त्रैवार्षिक विवरण १६४४–४६

२३. " " बीसवाँ " १६४७–४६

राजस्थान रिपोर्ट

२४ राजस्थान मे हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थो की खोज, प्रथम भाग

२५ " " " द्वितीय भाग

२६ " " " तृतीय भाग

२७ " " " चतुर्थ भाग

बिहार रिपोर्ट

२८ प्राचीन हस्तलिखित पोथियो का विवरण—दूसरा खण्ड

ङ हिन्दी साहित्य के इतिहास ग्रन्थ

अंग्रेजी

१ द माडर्न वर्नाक्युलर लिटरेचर आफ नादर्न हिन्दुस्तान—ग्रियर्सन

हिन्दी

१ मिश्रबन्धु विनोद, तीन भाग—मिश्रबन्धु

२ हिन्दी साहित्य का इतिहास—प० रामचन्द्र शुक्ल

३ बुन्देल वैभव, भाग १, २—गौरीशकर द्विवेदी

४. राजस्थानी भाषा और साहित्य—मोतीलाल मेनारिया

५ हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास—डॉ० रामकुमार वर्मा

६. हिन्दुई साहित्य का इतिहास—मूल लेखक-तासी, अनुवादक-डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय

७. हिन्दी के मुसलमान कवि—गगाप्रसाद अखौरी

८ हिन्दी भाषा और साहित्य का विकास—हरिऔध

च. इतिहास ग्रन्थ

अंग्रेजी

१ फर्स्ट टू नवाब्स ऑफ अवध—डॉ० आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव

हिन्दी

१ भारतवर्ष का इतिहास—डॉ० ईश्वरीप्रसाद

२. बुन्देलखण्ड का सक्षिप्त इतिहास—गोरेलाल तिवाडी। ना० प्र० पत्रिका, खण्ड १२ और खण्ड १३, स० १८८८–८९

छ. आलोचनात्मक एवं अन्य ग्रन्थ

१. राधाकृष्णदास ग्रन्थावली भाग १—स० श्यामसुन्दरदास

२ हिन्दी आलोचना उद्भव और विकास—डॉ० भगवत्स्वरूप शर्मा

३. अकबरी दरबार के हिन्दी कवि—डॉ० सरयूप्रसाद

४ अष्टछाप परिचय—प्रभुदयाल मीतल

५ केशवदास
६ विचार विमर्श } चन्द्रवली पाण्डेय

७ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
८ भारतेन्दु मण्डल } व्रजरत्नदास

९ हिन्दी काव्यशास्त्र का इतिहास—डॉ० भगीरथ मिश्र

१० उत्तरी भारत की सन्त परम्परा—परशुराम चतुर्वेदी

११ देव और उनकी कविता—डॉ० नगेन्द्र

१२. भक्त कवि व्यास—वासुदेव गोस्वामी

१३ मकरन्द—डा० पीतम्वरदत्त वडथ्वाल

१४ भूषण विमर्श—भगीरथप्रसाद दीक्षित

१५ सम्पूर्णानन्द अभिनन्दन ग्रन्थ—ना० प्र० सभा, काशी

१६. कन्हैयालाल पोदार अभिनन्दन ग्रन्थ

१७ राधावल्लभ सम्प्रदाय : सिद्धान्त और साहित्य— डॉ० विजयेन्द्र स्नातक

१८ रामभक्ति मे रसिक सम्प्रदाय—डॉ० भगवतीप्रसाद सिह

१९ हिन्दी साहित्य का आदिकाल—डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी

ज. पत्र-पत्रिकाएँ

१. माधुरी

१ वर्ष १, खण्ड २, अङ्क ४, अप्रैल १९२३—सुमनसञ्चय के अन्तर्गत सूरति मिश्र का सरस रस लेख

२ वर्ष २, खण्ड १, अङ्क ३, सितम्वर १९२३—अयोध्याप्रसाद वाजपेयी औध पर लेख

३ वही, अङ्क ६, दिसम्वर १९२३—लाला गोकुलप्रसाद व्रज पर रामनारायण मिश्र का लेख

४ वर्ष २, खण्ड २, अङ्क २, फरवरी १९२४—महाकवि देव और भरतपुर राज्य—मयाशङ्कर याज्ञिक

५ वही अङ्क ६, जून १९२४—सम्मन का काल—याज्ञिक त्रय।

६. वर्ष ३, खण्ड १, अङ्क ३, सितम्वर १९२४—सूरति मिश्र का सरस रस

७ वर्ष ४, खण्ड १, अङ्क ४ अक्टूबर १९२५—कवि कलानिधि श्री कृष्णभट्ट—देवर्षि भट्ट मनमोहन शर्मा

८ वर्ष ५, खण्ड १, अङ्क ६, जनवरी १९२७—सम्पादकीय के अन्तर्गत एक अप्रकाशित ग्रन्थ

९ वर्ष ५, खण्ड २, अङ्क १, फरवरी १९२७—भरतपुर राज्य और हिन्दी—मयाशङ्कर याज्ञिक

१० वही, अङ्क ४, मई १९२७,—कवि चर्चा के अन्तर्गत—सुकवि गणेश।

११ वही, अङ्क ५, जून १९२७,—गुजरात का हिन्दी साहित्य

१२ वर्ष ६, खण्ड १, अङ्क १, अगस्त १९२७—कवि चर्चा के अन्तर्गत देवीदास—राम नरेश त्रिपाठी।

१३ वही, अङ्क ४, नवम्बर १९२७, —कवि चर्चा के अन्तर्गत—तोयनिधि।

१४ वही, अङ्क ५, दिसम्बर १९२७, कवि चर्चा के अन्तर्गत मण्डन

१५ वही, अङ्क ६, जनवरी १९२८—कवि चर्चा के अन्तर्गत हिन्दी के कुछ कवियों के सम्बन्ध मे टिप्पणियाँ—कुबेरनाथ शुकुल।

१६ वर्ष ६, खण्ड २, अङ्क ४, मई १९२८—कविचर्चा के अन्तर्गत कविवर गगाधर जी व्यास का सत्योपाख्यान।

१७ वही, अङ्क ५, जून १९२८,—कवि चर्चा के अन्तर्गत हिन्दी के कुछ कवियो के सम्बन्ध मे टिप्पणियाँ।

१८ वर्ष ७, खण्ड १, अङ्क ५, दिसम्बर १९२८,—कवि दिनेश—शिवनन्दन सहाय

१९ वर्ष ७, खण्ड २, अङ्क १, फरवरी १९२९—दुलह

२० वही, अङ्क ५, जून १९२९,—ससुरारि पचीसी · देवकीनन्दन शुक्ल कृत

२१. वर्ष १२, खण्ड २, अङ्क १, फरवरी १९३४,—महाकवि पद्माकर—भालचन्द कवीश्वर तेलङ्ग, बी० ए०, एल० टी०

२. नागरी प्रचारिणी पत्रिका

१ सवत १९७८, के अङ्क—पुरानी हिन्दी—चन्द्रधर शर्मा गुलेरी।

२ भाग ९, अङ्क १, २, स० १९८५—विहारी सतसई सम्बन्धी साहित्य—रत्नाकर

३ भाग ९, अङ्क ४, माघ १९८५—चरखारी राज्य के कवि—कुँवर कन्हैया जू

४ भाग १२, अङ्क ३, कार्तिक १९८८, वर्ष १३, अङ्क १, ३, वैशाख और कार्तिक १९८९—बुन्देलखण्ड का सक्षिप्त इतिहास—गोरेलाल तिवाडी

५ भाग १३, अङ्क ४, माघ १९८९,—खुमान कृत हनुमन्नखशिख

६ वर्ष ४४, अङ्क ४, माघ १९९६—खुमान रासो का रचनाकाल और रचयिता—अगरचन्द नाहटा

७ वर्ष ५०, अङ्क १-२, स० २००२—आलम और उनका समय—विश्वनाथप्रसाद मिश्र

८ वर्ष ५२, अङ्क १, स० २००४—बोधा का वृत्त—विश्वनाथप्रसाद मिश्र

९ वर्ष ५२, अङ्क २, स० २००४—कवीन्द्राचार्य सरस्वता वटेकृष्ण

१० वर्ष ५७, अङ्क ४, स० २००९—खुमाण रासो—मोतीलाल मेनारिया

११ वर्ष ५८, अङ्क ३, हीरक जयन्ती अङ्क स० २०१०—नरवाहन और हित चौरासी—किशोरीलाल गुप्त

१२ वर्ष ६०, अङ्क १, सवत २०१२, रसखान का समय—ले० वटेकृष्ण

१३ वर्ष ६०, अङ्क २, स० २०१२—महाकवि भूषण का समय—कैप्टेन शूरवीर सिंह

१४ वर्ष ६१, अङ्क १, स०२०१३—दयाराम सतसई

३ व्रज भारती

१ वर्ष १२, अङ्क २-३, स०२०११—(क) भट्ट नागेश दीक्षित और कवि सेनापति—जितेन्द्र भारतीय शास्त्री (ख) सेनापति का काव्य कल्पद्रुम—किशोरीलाल गुप्त

२ वर्ष १३, अङ्क १, स० २०१२—व्रजभाषा का उपेक्षित कवि कारवेग—गङ्गाप्रसाद कमठान

३ वर्ष १३, अङ्क २, स० २०१२—(क) कवयित्री ताज रचित एक महत्वपूर्ण अज्ञात ग्रन्थ—अगरचन्द नाहटा । (ख) अकवरी दरवार के गायक वावा रामदास और उनके पुत्र सूरदास—प्रभुदयाल मीतल । (ग) कम्पिल के कवि तोपनिधि—कृष्णदत्त वाजपेयी

४. मर्यादा

१ भाग ४, सख्या १, १९१२ ई०—शेखर—शिवाधार पाण्डेय

२ भाग १०, सख्या ३, १९१५ ई०

३ भाग, ११, सख्या ५, १९१६ ई०

५ हिन्दुस्तानी

१ अप्रेल-जून १९४३ ई०—शिव सिंह सरोज के सन्-सवत्—विश्वनाथप्रसाद मिश्र ।

६ हस

१ वर्ष ६, अङ्क ८, मई १९३६ उर्दू मे नाट्य कला—श्री अजहर अली फारूकी

७. हिन्दी अनुशीलन

१ १९५६ ई० का सयुक्ताङ्क—रामानन्द सम्प्रदाय के हिन्दी कवि—डॉ० वदरीनारायण श्रीवास्तव।

२ अप्रैल-जून १९५७—चन्दसखी की जीवनी और रचनाओ की खोज—प्रभुदयाल मीतल

८ हरिऔध

१ प्रथमाङ्क अप्रैल १९५६—शिव सिंह सरोज के परवीने कवि—किशोरलाल गुप्त।

९. भारतीय साहित्य

१ प्रमाङ्क जनवरी १९५६—चरणदासी सम्प्रदाय का अज्ञात हिन्दी साहित्य—मुनि कान्ति सागर।

१० ससार साप्ताहिक

काशी राज्य विशेपाङ्क दीपावली १९४९ ई०

११ आईना, उर्दू साप्ताहिक, दिल्ली

१ १९ सितम्बर १९५५ का अङ्क—औरङ्गजेब से गुस्ताखियाँ करने वाले सन्त कवि हिन्दी, उर्दू के मुश्तरका शायर—सफीउद्दीन सिद्दीकी

१२. दैनिक आज

१ रविवार विशेपाङ्क—३१ मार्च १९५७, विन्ध्यप्रदेश मे प्राप्त हिन्दी ग्रन्थो का विवरण—रघुनाथ शास्त्री

२ रविवार विशेपाङ्क—१४ जुलाई १९५७, काशी नागरी प्रचारिणी सभा ६४ वाँ वार्पिक खोज विवरण—रघुनाथ शास्त्री

१३. अंग्रेजी तारीख हिन्दी अङ्क

वर्ष १, अङ्क १२, जनवरी १९५७

---

३ कवि नामानुक्रमणिका और तुलनात्मक सारिणी

इस कवि नामानुक्रमणिका मे केवल उन कवियो का नाम है, जिनका परिचय सरोज मे दिया गया है। इससे निम्नाङ्कित प्रयोजन सिद्ध किए गए हैं —

(१) सरोज मे आए कवियो को ढूंढ निकालने मे सुविधा। कवि नाम के आगे सख्या स्तम्भ मे उस कवि की सख्या दी गई है। इस सख्या पर कवि को तत्काल खोज निकाला जा सकता है। कवि सख्या पृष्ठ सख्या से अधिक उपयोगी है और स्थिर है।

(२) विलीन कविया के सम्बन्ध मे जानकारी जो कवि किसी अन्य कवि मे मिला दिए गए है, उनके नाम कोष्टक मे दिए गए हैं और वे जिस कवि से अभिन्य सिद्ध हुए हैं, उस कवि की सख्या नाम के आगे लिख दी गई है।

(३) पूर्ण रूप से अनस्तित्व सिद्ध कवियो की जानकारी। जिन कवियो का अस्तित्व नही सिद्ध होता, उनका नाम कोष्टक मे दिया गया है और नाम के आगे कोई सख्या नही दी गई है।

(४) सन्दिग्ध अस्तित्व वाले कवियो के सम्बन्ध मे जानकारी। सन्दिग्ध अस्तित्व वाले कवियो के नाम के आगे प्रश्नवाचक चिह्न लगा दिया गया है।

(५) सरोज मे उदाहृत कवियो के सख्या मे जानकारी। कवि सख्या के आगे तिर्यक रेखा के अनन्तर जो सख्या दी गई है, उस सख्या पर सरोज मे उस कवि की कविता उदाहृत है। यदि तिर्यक रेखा से अनन्तर कोई सख्या नही दी गई है, तो इसका अर्थ यह हुआ कि उस कवि की कविता सरोज मे उदाहृत नही है।

(६) सरोज मे दिए कवि—सवतो की सूचना और उनके सम्वन्ध मे किए गए निर्णयो से अभिज्ञता। सरोज के सभी सवत विक्रमीय हैं। जो सवत इसवी सन् सिद्ध हुए हैं, उनके आगे ई० लिख दिया गया है। जिन सवतो की जाँच हुई है, उनके निर्णय सङ्केतो मे सवतो के आगे दे दिए गए है और जिनकी जांच नही हो सकी है, उनके आगे कोई सङ्केत नही दिया गया है।

(७) वि० और सवत हीन कवियो के नवीन ज्ञात सवतो की जानकारी। ये सवत कोष्टक मे दिए गए हैं।

(८) सरोज और ग्रियर्सन की तुलना। ग्रियर्सन मे सवत ईसवी सन का प्रयोग हुआ है। ग्रियर्सन स्तम्भ मे पहले कवि सख्या तदन्तर उसका सन फिर सरोज के सवतो से सङ्केतो मे तुलना। सरोज के वे कवि जो ग्रियर्सन मे नही स्वीकृत हैं, उनके स्थान रिक्त है।

(९) सरोज और विनोद की तुलना। सारी प्रक्रिया ग्रियर्सन स्तम्भ के समान है। विनोद मे सर्वत्र विक्रम सवत प्रयुक्त हुआ है।

इस अनुक्रमणिका और तुलनात्मकसारिणी मे निम्नलिखित सङ्केत प्रयुक्त ह—

अ—अज्ञातकाल,
अ०—अशुद्ध
उप—उपस्थितिकाल
ग्र—ग्रन्थ रचनाकाल
ग्रि०—ग्रियर्सन
रा—राज्यकाल
वि०—विद्यमान्
ज—१. जन्मकाल २. सरोज मे दिया स० जन्म काल के रूप मे स्वीकृत
जी—जीवनकाल
म—मृत्युकाल
र—रचनाकाल २ सरोज का स० रचनाकाल के रूप मे स्वीकृत
स०— जन्मकाल या रचनाकाल

तुलनात्मक कवि नामानुक्रमणिका

कवि		सरोज		ग्रियर्सन	विनोद
अ					
१ अम्वर भाट		४०।	१९१० उप	५५१।ज	२४३६।१९४० उप
२ अम्वुज		१२।१०	१८७५ उप	६५५।ज	१९५३।ज
३ अकवर		१।१	१५८४ ई० उप	१०४।१५५६-१६०५ ए	१३९।१५९९-१६६२ जी
४ अक्षर अनन्य		३०।३७	१७१० ज	२७७।ज	४३६।ज
५ (अगर)	३५	३४।१७	१६२६ उप	(४४।१५७५ उप)	१९१।ज
६ अग्रदास		३५।१६	१५९५ उप	४४।१५७५ उप	१४२।१६३२ र
७ (अजवैस प्राचीन)	३	२।३	१५७० अ०	२४।ज	९६।१६०० र
८ अजवैस नवीन		३।४	१८९२ उप	५३०।१८३० उप	१८३।११ २०२३।१८८६ ज, १९१० री
९ अजीत सिंह		४७।	१७८७ अ०	१९५।१६८१-१७२४ जी	५५६।१७३७-८१ जी
१० अनन्त		२४।३०	१६९२	२५०।ज	४१६।ज
११ (अनन्य १)	३०	२५।१३	१७९० उप	४१८।ज	—

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
अ				
१२ (अनन्य २) ३०	३१।२२	(१७१०–९० जी)	(४१८।ज)	—
१३ (अनन्यदास चकदेवा वाले) ३०	३६।३५	१२२५ अ०	५।११४८ ज	१२।२,१२७५ के पूर्व
१४ अनवर खाँ	४३।	१७८० उप	३९७।ज	६९८ शुभकरण।१७८५ र
१५ अनाथ दास	२९।३६	१७१६ उप	२८७।ज	५२०।ज
१६ अनीस	२७।३३	१९११ अ०	६८७।ज	१८१५।र
१७ अनुनैन	२८।३४	१८९६	६७३।ज	२१२३।१८८६ ज
१८ (अनूप) १८	४१।	१७९८	—	(९५५)
१९ अनूपदास	१८।२४	१८०१	४३६।ज	९५५।ज
२० अब्दुर्रहिमान	३२।९	१७३८ ई० उप	१८२।ज	५५४।१७६३-६८ र
२१ अभयराम	२०।२६	१६०२	६४।ज	१३१।१६१ ज
२२ अभिमन्यु	२३।२९	१६८० उप	२२९।ज	३४४।१६७९ ज
२३ अमर जी राजपूताना वाले	४६।	—	७९९।अ	१२६४।१८८० के पूर्व
२४ अमरदास	३३।२	१७१२	२८१।ज	९०।१५७७ र
२५ अमर सिंह राठौर	३८।	१६२१ अ०	१९१।१६३४ उप	४१७।ज १६९०, र १७२०
२६ अमरेश	११।१९	१६३५	९०।ज	१८१।ज
२७ अमृत	२१।२७	१६०२ ई० उप	१२१।ज	१७०।१६४१ र
२८ अयोध्याप्रसाद वाजपेयी औध ११५	४।५	वि० (१८६०-१९४२ जी)	६९३।१८८३	२०८६।।१९५० र

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
अ				
२९ अयोध्याप्रसाद शुक्ल	६।१५	१९०२	६२२।ज	१९९३
३० अलीमन	२६।३२	१९३३उप	७८४।१८६९ के पूर्व	२३०३।१९३३ र
३१ अवध बक्स ?	७।८	१९०४	६८५।ज	२००२।र
३२ अवधेश ब्राह्मण, चरखारी	५।६	१९०१ उप	५२०।१८४० उप	१९८५।र
३३ (अवधेश ब्राह्मण, सभा) ५	६।७	१८९५ उप	५४२।ज	१९८५।
३४ असकन्द गिरि	१७।२३	१९१६ उप	५२७ स०	२०९८।र
३५ अहमद	१४।१२	१६७० उप	२२४।ज	३१८।ज १६६०
आ				
३६ आकूब कवि	४२।	१७७५ग्र	३९४।ज	६७३।र
३७ आछेलाल भाट	४५।	१८८९	६६७।ज	२०६३।ज
३८ आजम	१३।११	१८६६ग्र०	६४८।ज	१८२३।१८९०र
३९ आदिल	२५।३१	१७६२	३८१।१७०३ज	६९९।१७६०ज
४० आनन्द	३९।	१७११ग्र०	(३४७)	१२९।१६२२र ३९०।र
४१ आनन्दघन	२२।२८	१७१५ई०उप	३४७।१७२०उप १७३९म	६४१।१७७१-९६र १७९६म
४२ आनन्द सिंह उपनाम दुर्गा सिंह	१०।१८	वि०(१९१७ग्र)	७११।१८८३ वि०	२०९२।वि०
४३ आलम	१६।२१	१७१२ई०ग्र०	१८१।१७००ज	५४६।अकबर कालीन
४४ आसकरनदास	३७।३८	१६१५ई०उप	७१।१५५०उप	१०२।१६०६र

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
आ				
४५ आसिफ खाँ	४४।	१७३८	२६९।ज	४९५।र
इ				
४६ इन्दु	५०।४०	१७६६	३९२।१७१९ज	१३४८।अ
४७ इन्द्रजीत त्रिपाठी	५३।४४	१७३९उप	१७६।ज	५२६।१७१९ज,१७४२र
४८ इच्छाराम अवस्थी	४८।४२	१८५५ग्र	४९७।उप	५९५।१७५५ र
ई				
४९ ईश	५२।४३	१७९६	४३०।ज	४१८।१७२०र
५० ईश्वर	४९।३९	१७३०उप	१७७।ज	६१७।ज
५१ ईश्वरीप्रसाद त्रिपाठी	५१।४१	वि० (१९१६ग्र)	७१२।१८८३ वि०	४३३।१७३०र
५२ ईसुफ कवि	५४।	१७९१	४२१।ज	९२०।ज
उ				
५३ उदयनाथ, वन्दीजन, काशी	५६।४५	१७११	२८०।ज	५०१।ज
५४ उदय सिंह महाराजा, मारवाड	५५।	१५१२ग्र०	७६।१५८४उप	१७३।१६४२र
५५ उदेश भाट	५७।४६	१८१५	४५८।ज	१०४०।ज
५६ उनियारे के राजा	६२।	१८८०ग्र०	६६०।उप	—
५७ उमराव सिंह पवार	६१।५०	वि०	७१३।१८८३ वि०	१०४१।१८४०र
५८ उमेद कवि	६०।४९	१८५३	४९४।ज	१२६६।ज

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
ऊ				
५९ ऊधौ	५९।४८	१८५३	४९५।ज	१२२२।१८७५र
६० ऊधौराम	५८।४७	१९१०	७९।ज	१०९।र
ऋ				
६१ ऋषि जू	७५८।६१५	१८७२	६५४।ज	१९५६।ज
६२ ऋषिनाथ	७६०।६२०	(१८३०ग्र)	७९४।१८६९सै पूर्व	६४७।१७८०र १८३१ अलङ्कार मञ्जरी
६३ ऋषिराम मिश्र	७५९।६१९	१९०१ग्र०	५९३।स०	२०३७।१९१०र
ओ				
६४ ओलीराम	१९।२५	१६२१	८३।ज	१८८।ज
६५ (ओध) ४	८।१४	१८९६ उप	६७४।ज	२०८६ अयोध्याप्रसाद वाजपेयी
क				
६६ कनक	१३०।४	१७४०	३०१।ज	६२५।ज
६७ कवीर	९२।१०४	१६१०ग्र०	१३।१४०० उप	३५।१४७५र
६८ कमच	११४।९८	१७१०उप	२७८।१६५३ से पूर्व	३७९।ग्रि
६९ कमलनयन, बुन्देलखण्डी	८९।७३	१७८४उप	४१०।ज	८४१।ज
७० कमलेश	८५।७०	१८७०	६५०।ज	१९५७।ज

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
क				
७१ कमाल	१०२।८२	१६३२ अ०	१६।१४५०उप	४१।ग्रि
७२ करन, वन्दीजन	७१।	१७८७ ग्र	३७०।उप	७०४।र
७३ करन भट्ट, पन्ना निवासी	६६।५७	१७९४ग्र	३४६।ज	६३६।ज
७४ करनेश, वन्दीजन, असनी	६८।६७	१६११ ई० उप	११५।ज	१४३।ज
७५ (कर्ण ब्राह्मण) ६६	७०।५६	१८५७ अ०	५०४।उप	१११०।१७५७र
७६ कलानिधि १ प्राचीन	१०३।८३	१६७२	२२८।ज	३२८।ज
७७ कलानिधि २	१०४।६५	१८०७ उप	४५२।ज	७४६।१७६१र
				८२०।१८०७र
				६१२।१८२० के पूर्व
				६६६।१७६६र
				१०१७।ज
७८ कल्याण	१०१।८१	१७१६ अ०	२६१।ज	५०१।१,१७४०र
७९ कल्याणदास	११८।७८	१६०७ उप	४८।१५७५उप	१५२।ग्रि
८० कल्याण सिंह भट्ट	१३२।	—	८०७।ग्र	——
८१ (कविदत्त) ३४२	६४।८८	१८३६ उप	४७५।ज	७१५।१,१७६१ग्र ७४७।१
८२ कविराज, वन्दीजन	६०।७६	१८८१	६६१।ज	१२८०।र
८३ (कवि राम १) ६३	६२।७६	१८६८ ज	(७८५)	(२२७७।ज)

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
क				
८४ कवि राम २ रामनाथ कायस्थ	९३।९०	वि०	७८५।१८६९ के पूर्व	२२७७।
८५ (कविराय) ८७१	९१।७७	१८७५	६५६।ज	९०७।१८१८र
८६ कवीन्द्र, उदयनाथ	७४।६१	१८०४ग्र	३३४।१७२०उप १८०४ वि०ग्र	५५०।ग्र
८७ कवीन्द्र, सखीसुख के पुत्र	७५।	१८५४ श्र०	४९६।ज	७६९।१७९९र
८८ कवीन्द्र, काशीवाले	७६।६२	१६२२ ई०उप	१५१।१६५०उप	२८६।१६५०ज १६८७ ग्र
८९ कादिर	७८।५८	१६३५उप	८९।ज	१८०।ज
९० कान्ह कवि, कन्हई लाल २	८७।७१	१९१४उप	५५७।ज	२४३९।ज
९१ कान्ह, कन्हैया बख्श बैस	८८।७५	वि० (१९००ज)	७३२।१८८३ वि०	२२३६।१९००ज १९४०उप
९२ कान्ह कवि, प्राचीन १	८६।७२	१८५२श्र०	४९१।ज	१२३७।ज
९३ कान्हरदास, ब्रजवासी	१२४।१००	१६०८उप	५२।१६००उप	२०४।ग्रि
९४ कामताप्रसाद, असौथर	९७।१०२	१९११उप	६४४।ज	१३५९।श्र
९५ कामताप्रसाद, ब्राह्मण, लखपूरा	१३३।१०३	१९११उप	(६४४।ज)	—
९६ कारवेग फकीर	१०६।८५	१७५६उप	३१७।ज	३२९।१७००र
९७ कालिका	१०९।८९	वि०	७८०।१८६३ के पूर्व	१३६१।श्र
९८ कालिदास त्रिवेदी	७३।६०	१७४९ग्र	१५९।१७०० उप	४३१।र

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
क				
९९ कालीचरण वाजपेयी	१२०।	वि०(१९०२ग्र)	८०१।ग्र	१९९४।१९०२र
१०० कालीदीन	११९।८०	—	८०२।ग्र	१३६३।अ
१०१ कालीराम (वलीराम)	१००।१०६	१८२६अ०	४६४।ज	—
१०२ काशीनाथ	९५।७४	१७५२	१३९।१६००उप	२०५।ग्रि
१०३ काशीराज, बलवान सिंह	११०।९२	१८८९ग्र	५६३।१८००उप	१२४४।ग्र
१०४ काशीराम	९६।१०१	१७१५उप	१७५।ज	५०२।ज
१०५ किङ्कर गोविन्द	९९।१०५	१८१०	४५५।ज	१००८।ज
१०६ (किशोर, दिल्ली) २५६	७७।५९	१८०१उप	—	८७२।ज
१०७ किशोर सूर	११५।९९	१७६१उप	३८५।ज	७००।ज
१०८ कुञ्ज गोपी	१२८।	(१८३१ग्र)	८०३।अ	१३७८ग्र
१०९ कुञ्जलाल, मऊरानीपुर	८३।६८	१९१२उप	५५५।ज	२४४०।१९१८ज१९४०उप
११० कुन्दन	८४।६९	१७५२उप	३०८।उप	५५८।र
१११ कुम्भकर्ण	१३१।	१४७५अ०	२१।१४००उप १४६९म	२३।१४१९-६९रा
११२ कुम्भनदास, व्रजवासी	११६।६४	१६०१उप	३९।१५५०उप	५५।१६०६र
११३ कुमारपाल, अन्हलवाडा	७२।	१२२०उप	४।११५०उप	१३।१३००र
११४ कुमारमणि भट्ट	६७।५५	१८०३उप	४३७।ज	६४१।१ १७७६र
११५ कुलपति मिश्र	१०५।८५	१७१४उप	२८२।ज	१७२७र १६७७ज

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
क				
११६ कृपाराम, जयपुर	११२।९७	१७७२ग्र	३२८।१७२० उप	६७७।ग्रि
११७ कृपाराम २ ब्राह्मण, नरेनापुर	११३।९६	१८०८ग्र १८१५ ग्र	७९७।१८७५ से पूर्व	८१५।१८०६र ८६८।१,१८१५र (८१५।)
११८ कृपाराम३ माधव सुलोचना चम्पा वाले	१२६।	—	(७९७)	
११९ कृपाराम ४ हिततरङ्गिणी वाले ११२	१२७।	१७९८ग्र	(७९७)	६१।१५९८र
१२० कृपाल	१२९।	—	८०५।अ	—
१२१ कृष्ण कवि औरङ्गजेब के आश्रित	७९।९३	१७४०उप	१८०।अ	—
१२२ कृष्ण कवि २, जयपुर वाले	८१।९६	१६७५अ०	३२७।१७२०उप	६५२।१७८५-९२र १९५८।
१२३ कृष्ण कवि ३, नीति वाले	८२।९५	१८८८	६६६।ज	—
१२४ (कृष्ण कवि प्राचीन)७९	१३४।	(१७४०उप)	—	—
१२५ कृष्णदास गोकुलस्थ	१२१।१०७	१६०१उप	३६।१५५०उप	५३।१६००र
१२६ कृष्ण लाल	८०।९३	१८१४अ०	४५६।ज	१२०९।१८७२र
१२७ कृष्ण सिंह विसैन	१०८।८७	१९०९ उप	६०५।ज	२३१७।ज
१२८ कृष्णानन्द व्यासदेव	११७।	१८०६ अ०	६३८।१८४३ उप	१७९३।ग्रि

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
क				
१२९ केदार कवि, वन्दीजन	१२५।	१२८० ग्र०	३।११५० उप	१०।—
१३० केवलराम, ब्रजवासी	१२३।६१	१७६७ अ०	४५।१५७५ उप	१५३।ग्रि
१३१ केशवदास सनाढ्य मिश्र	६३।५१	१६२४ उप	१३४।१५८० उप	६६।१६१२ ज १६७४ म
१३२ केशवदास २	६४।५२	—	—	१३८६।ग्र
१३३ केशवदास, ब्रजवासी, कश्मीरी	१२२।१८	१६०८ उप	६३।१५४१ उप	९५ ग्रि
१३४ केशवराम कवि	६६।५४	—	८०४।ग्र	१३८४।ग्र
१३५ केशवराय बाबू, बघेलखण्डी	६५।५३	१७३९	३००।ज	५९३।१७५४ र
१३६ केहरी	१०७।८६	१६१०	७०।ज	१५६।ज
१३७ कोविद कवि उमापति त्रिपाठी	१११।९४	१९३० उप १९३१ म	६९१।१८७४ म	१९५५।१९०० र
ख				
१३८ खण्डन	१४२।१११	१८८४ ग्र०	५३६।ज	६९३।१७८२ र
१३९ खड्गसेन, कायस्थ, ग्वालियर	१४७।	१६६० उप	२२०।ज	३०२।ज
१४० खान	१४०।११५	—	७८१।१८६८ के पूर्व	२१४४।१९२५ के पूर्व
१४१ खानखाना रहीम	१३८।१०९	१५८० ई० उप	१०८।१५५६ ज	१४७।१६१० ज १६८४ म
१४२ खान सुलतान ?	१४१।११३	—	८०७।ग्र	—

	सरोज		ग्रियर्सन	विनोद
ख				
१४३ (खुमान कवि) १३५	१३६।	(१८३०-८० र)	(१७०१)	(११२९)
१४४ खुमान, वन्दीजन, चरखारी	१३५।११०	१८४० उप	१७०।१६८३ ज	११२९।१८७० र
१४५ खुमान सिंह राना, चित्तौर	१३७।	८१२ अ०	२।८३० उप	२।८६६-९० र
१४६ खुलाल पाठक	१४४	—	८०८।अ	१३९१।अ
१४७ खूबचन्द, माडवारवासी	१३९।११२	—	८०९।अ	१३९३।अ
१४८ खेतल कवि	१४३।	(१७४३ ग्र)	८१०।अ	१३९४।अ
१४९ खेम कवि १, बुन्देलखण्डी	१४५।११६	—	१०३ हेमडलमऊ।१५३० उप	१९९।१६३० ज
१५० खेम कवि २, ब्रजवासी	१४६।११४	१६३०	८७।ज	१९८।ज
ग				
१५१ गङ्ग कवि १	१४८।११७	१५९५ ई० उप	११९।ज	८०।१५९०-१६७० ८६। १२२।
१५२ गङ्ग कवि २, गङ्गाप्रसाद, ब्राह्मण, सपौली वाले	१४९।११८	१८९०	५९७।ज	२४४५।१९४० उप
१५३ गङ्गादयाल दूबे	१५३।१५८	वि०	७१९।१८८३	२४४३।१९४० उप
१५४ गङ्गाधर १, बुन्देलखण्डी	१५०।११९	(१८९९ ज) (१९७२ म)	—	१४२२।ज
१५५ गङ्गाधर २	१५१।१३२	(१७३९ ग्र)	८११।अ	—

		सरोज	ग्रियर्सन	विनोद
ग				
१५६ गङ्गापति	१५२।१५७	१७७४ ज	४८१।ज	६७५।१७७६र
१५७ गङ्गाराम बुन्देलखण्डी	१५४।१६३	१८६४ उप	५४० ज	२१३।ज
१५८ गजराज उपाध्याय, काशी	१६२।१५२	१८७४ज	५८५।ज	१६६८।ज
१५९ गज सिंह	२०६।	(१८०८-४४र)	८१२।ग्र	८३०।१८०८-४४र
१६० गड्डु	१६६।१४५	१७७०ग्र०	३८६।ज	६३६।र
१६१ गणेश जी मिश्र	२०४।	१६१५	८१।ज	१६३।ज
१६२ गणेश, वन्दीजन, बनारसी	१६७।१४१	वि० (१८६६ग्र)	५७३।१८८३ वि०	१८४५।१८६६र
१६३ गदाधर कवि	१५६।१२५	—	४६।१५७५उप	—
१६४ (गदाधर कवि) १५५	२१०।१२०	(१८६०ज) (१९५५म)	—	—
१६५ गदाधर भट्ट	१५५।१२०	१६१२उप	५१२।ज	२०७६।१८३६।र, १८६४र
१६६ गदाधरदास मिश्र, व्रजवासी	१५८।१६८	१५८०उप	२५।ज	१४२।१,१६३२र
१६७ गदाधर राम	१५७।१६०	—	—	—
१६८ गिरिधर कविराय	१६२।१२४	१७७०	३४५।ज	७३१।ज
१६९ गिरिधर कवि, होलपुर वाले	१६१।१२३	१८४४उप	४८३।स	१०५४।र
१७० गिरिधर बनारसी, बाबू गोपालदास	१६३।१२६	१८६६उप	५८०।१८३२ज	१८०३।१६००र
१७१ गिरिधारी ब्राह्मण १, बैसवारा	१५६।१२१	१६०४उप	६२५।ज	१४०१।१ग्र

	सरोज		ग्रियर्सन	विनोद
ग				
१७२ गिरिधारी २	१६०।१२२	(१७०५ग्र)	—	—
१७३ गिरिधारी भाट,मऊरानीपुर	२००।	वि०(१८८६ग्र १९१२ग्र)	७३३।१८८३ वि०	२४४१।१९४०उप
१७४ गीव	१९८।१४४	—	८१३।अ	१४०३ग्र
१७५ गुणाकर त्रिपाठी, कान्धा	१९१।१६१	वि०	७२८।१८८३ वि०	२२४५।१९३०र
१७६ गुनदेव, बुन्देलखण्डी	१९०।१३०	१८५२	४९२।ज	६८३।१७५२ज
१७७ गुन सिंघ, बुन्देलखण्डी	१९५।१३९	१८८२	५३५।ज	२०३०।ज
१७८ गुमान मिश्र खाण्डी	१८५।१२८	१८०५उप	३४९।१७४०उप	७३६।१८०१,१८१८,१८२०ग्र
१७९ गुमान कवि २	१८६।१३१	१७८८ ज	(३४९।१७४०उप)	१०३२।१८३८र
१८० गुरु गोविन्द सिंह	१७६।१४७	१७२८उप	१६६।१६६६ज १७५४ वि तपकाल	५४८।१७२३ज १७६५म
१८१ (गुरुदत्त कवि १ प्राचीन) १८४	१८३।१५०	१८८७	६६३।ज	—
१८२ गुरुदत्त कवि२, शुक्ल मकरन्दपुर	१८४।१५१	१८६४उप	६३१।ज	१२४७।१८६३र
१८३ गुरुदीन पाण्डे	१८१।१६४	१८९१ग्र	६३७।स०	१११८।१८६०ग्र
१८४ गुरुदीन राय, वन्दीजन	१८२।१४६	वि०	७१४।वि० १८८३	२२४६।१९३०र
१८५ गुलाब सिंह, पञ्जाबी	२०१।	१८४६उप	४८६।ज	१०१०।१८३५र
१८६ गुलामराम कवि	१९३।१४८	(१८७४उप)	८१५।ग्र	—
१८७ (गुलामी) १९३	१९४।१४९	(१८७४उप)	८१६।ग्र	—

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
ग				
१८८ गुलाल	१८७।१३३	१८७५	६५७।ज	१९५९।ज
१८९ गुलाल सिंह	२०५।	१७८०उप	३९८।ज	५५९।१७५२र
१९० गोकुलनाथ, वन्दीजन, बनारसी	१७२।१४२	१८३४उप	५६४।१८२०उप	८८०।१८२८र
१९१ गोकुल विहारी ?	१७४।१६२	१६६०	२२१।ज	३१०।ज
१९२ गोधू	२०३।	१७५५	३१०।ज	५९७।र
१९३ गोप	१७१।१३७	१५९० ग्र०	२७।ज	११५। १२१।ज ६६३।र ७५८।१७९७र
१९४ गोपनाथ	१७५।१५६	१६७०	२२५।ज	३१९।ज
१९५ गोपाल प्राचीन	१६४।१२७	१७१५	२०८।ज	४०२।र
१९६ गोपाल, कायस्थ, रीवा १	१६५।१३४	१९०१ उप	५३१।१८३० उप	१३०४।१८८७र
१९७ गोपाल २, वन्दीजन, चरखारी	१६६।१३५	१८८४ उप	५२२।१८४० उप	—
१९८ गोपाल राय	१६८।१५९	(१८८५-१९०७र)	८१८।ग्र	१९६३। १०९४।१८५३र १२८१।
१९९ गोपालदास, ब्रजवासी	१७०।१६७	१७३६ उप	२९७।ज	३३०।१७००र
२०० गोपाल लाल	१६७।१३६	१८५२ उप	४९३।ज	१२६७।ज
२०१ गोपालशरण राजा	१६९।१६५	१७४८	२१५।ज	६७०।ज

	सरोज		ग्रियर्सन	विनोद
ग				
२०२ गोपाल सिंह ब्रजवासी	२०१।	—	८१६।अ	१४१३।अ
२०३ गोपीनाथ, वन्दीजन, वनारसी	१७३।१४३	१८५० उप	५६५।१८२० उप	८८१।
२०४ गोवर्द्धन	२०२।	१६८८ उप	२४४।ज	३६५।१७०७र
२०५ गोविन्द जी कवि	१७८।१५५	१७५७ उप	३०५।१६६३र	१११११रसिक गोविन्द१८५८र
२०६ गोविन्द कवि	१८०।१२६	१७६१ उप	—	७६५।१७६८
२०७ गोविन्द अटल ?	१७७।१५४	१६७०	२२३।ज	३३१।ज
२०८ गोविन्ददास, ब्रजवासी	१७६।१६६	१६१५ उप	४३।१५६७ उप	१६४।ज
२०९ गोविन्द राय,वन्दीजन, राजपूताना	२०८।	(१६०६र)	८२२।अ	१०८।१६०६र
२१० गोसाईं	१६६।१४०	१८८२	८१७।अ	१४१७।अ
२११ ग्वाल, मथुरा १	१८८।१३८	१८७९ ग्र	५०७।१८१५ उप	१२३६।ग्र
२१२ ग्वाल प्राचीन २	१८९।१५३	१७१५	२८३।ज	५०३।ज
घ				
२१३ (घन आनन्द) २२	२१२।१७०	१६१५अ०	—	—
२१४ घनराय	२१४।	१६९२ज	२४६।१६३३ज	४१६।ग्रि
२१५ घनश्याम शुक्ल	२११।१६६	१६३५	६२।ज	२२६।ज
२१६ घाघ	२१५।	१७५३	२१७।ज	६४८।ज
२१७ घासी भट्ट	२१६।	—	८२१।अ	१४२६।अ

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
घ				
२१८ घासीराम	२१३।१७१	१६८०	२३०।ज	२५४।र
च				
२१९ चण्डी दत्त	२३५।१९२	१८९८ उप	६०३।ज	२१४८।ज
२२० चन्द १ बरदाई	२१७।१७२	१०९८ अ०	६।११९१ उप	८।१२२५-४९र ११८३ज
२२१ चन्द २ सतसई के टीकाकार	२१८।१७५	१७४९ उप	२१३।ज	५४९।१७६१र
२२२ चन्द ३	२१९।१७४	—	—	५४९।१७६१र
२२३ चन्द ४	२२०।१७३	—	—	५४९।१७६१र
२२४ चन्दन राय	२२४।१८३	१८३० उप	३७४ उप	९६८।र
२२५ चन्द सखी	२२९।१८४	१६३८	९३।ज	१६१।र
२२६ चतुर कवि	२२८।१८९	—	(६५।)	—
२२७ चतुरविहारी १, ब्रजवासी	२२६।१७७	१६०५	६५।ज	१३४।ज
२२८ चतुरविहारी २ ?	२२९।१९०	—	(६५।)	—
२२९ चतुरसिंह राना	२२७।१८७	१७०१	२५७।ज	४६२।ज
२३० चतुर्भुज	२३०।१९१	—	(४०)	—
२३१ चतुर्भुजदास	२३१।१९४	१६०१ उप	४०।१५६७ उप	५६।१६२५र
२३२ चरणदास	२३६।१९३	१५३७ अ०	२३।ज	४५।र
२३३ चिन्तामणि १ त्रिपाठी	२३१।१८०	१७२९ उप	१४३।१६५० उप	२९२।१६६६ज

		सरोज	ग्रियर्सन	विनोद
च				
२३४ चिन्तामणि २	२२२।१८१	—	(१४३)	१४३३।अ
२३५ चिरञ्जीव, ब्राह्मण	२३८।१८५	१८७०	६०७।ज	१२०१।र
२३६ चूड़ामणि	२२३।१८२	१८६१	६४७।ज	२३४।१६६१र
२३७ चैतनचन्द्र	२३७।१८६	१६१३अ	७२।ज	१७१।ज
२३८ चैन	२३२।१७८	—	(६२७।)	१४३४।अ
२३९ चैनराय	२३४।१८८	—	—	६३५।१७६६र
२४० चैन सिंह, खत्री, लखनऊ	२३३।१७९	१९१० उप	६२७।ज	२०३२।र
२४१ चोखे	२२५।१७६	—	८२४।अ	१४३५।अ
२४२ चोवा कवि, हरिप्रसाद, वन्दीजन	२४०।१९५	वि०	—	२२४८।१९३० उप
छ				
२४३ छत्तन	२४५।१९६	—	८२५।अ	१४४१।अ
२४४ छत्र	२५३।	१६२५ अ०	७५।ज	५३४।१७५७अ
२४५ छत्रपति	२४६।१९८	—	(७५।)	१४४२।अ
२४६ छत्रसाल बुन्देला	२४१।१९७	१६९० ई० उप	१९७।१६५८ म	४३४।१७०६ज १७८८म
२४७ छबीले	२४८।२०२	—	७६३।१८४३से पूर्व	३३२।१७००र
२४८ छितिपाल, राजा माधव सिंह, अमेठी	२४२।१९९	वि०(१९१३अ)	६०४।वि०१८८३	२१०५।१,१९१६-२५ २४६८।

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
छ				
२४९ छीत कवि	२५०।२०४	१७०५	(४१।)	४६३।ज
२५० छीत स्वामी	२५१।२०५	१६०१ उप	४१।१५६७ उप	५७।१६१३
२५१ छेदीराम	२५२।२०७	१८९४ग्र	६७२। उप	९८६।१८४९र
२५२ छेम कवि १	२४७।२००	१७५५ उप	३११।ज	१४४३।ग्र
२५३ छेम कवि २	२५४।२०८	१५८२ उप	१०३।१५३० उप	९१। ग्रि
२५४ छेम करन १ वाराबङ्की	२४३।२०६	१८७५ उप	३७३।१७११ ज	११३७।१, १८२८ ज
२५५ छैम करन २ अन्तरवेद	२४४।२०१	—	(३११)	१४४४।ग्र
२५६ छैल	२४९।२०३	१७५५ उप	३१२।ज	३३३।१७०० र
ज				
२५७ जगजीवन	२९२।२३८	१७०५	२६४।ज	३४६ र
२५८ जगजीवनदास चन्देल	३०४।	१८४१ ग्र०	३२३।१७६१उप	८६५।ग्रि
२५९ जगत सिंह विसैन	२५५।२०९	१७९८ ज	३४०।१७७० उप	८७९।१८२७ ग्र
२६० जगदीश	२९४।२४०	१५८८ ई० उप	११७।ज	१२३।ज
२६१ जगदेव	२८३।२३१	१७९२	४२७।ज	९१३।ज
२६२ (जगन) ३०१	२७७।२१२	१६५२ उप	९८।ज	२६४।ज
२६३ जगनन्द कवि वृन्दावन निवासी ११७	२८९।२३४	१६५८	२१८।ज	३०५।ज

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
ज				
२६४ जगनिक	३०६।	११२४ अ०	७।११९१ उप	९१।
२६५ (जगनेश) ३०१	२९९।	—	८२६।अ	१४४७।अ
२६६ जगन्नाथ कवि १ प्राचीन	२८४।२३२	(१७७६अ)	७६४।१८४३ के पूर्व	६७६।१७७६ र
२६७ जगन्नाथ २ अवस्थी	२८५।२३३ वि०	६०१।	वि० १८८३	२४४७।१९४० उप
२६८ जगन्नाथ	३०१।	(१६१३।६२ उप)	—	१४४८।अ
२६९ जगन्नाथदास	२८६।२४४	(१७००उप)	(७६४)	३२५।१७००र
२७० जगामन	३०२।	(१६१३-६२ उप)	१२३।१५७५ उप	१५५।१६३२। ग्रि
२७१ जदुनाथ	२९३।२३९	१६८१	२३८।ज	२०३३।१८८१ ज
२७२ जनकेश भाट	२९४।२१३	१९१२ उप	५५६।ज	२३३४।ज
२७३ जनादन	२७८।२१६	१७१८ उप	२८८।ज	५२७।ज
२७४ जनार्दन भट्ट	२७९।२४९	१७३० ग्र १७३५ ग्र १७४९ ग्र	८२७।ज	१९२५।१९०० के पूर्व
२७५ जवरेस	३०७।	वि०१९४०उप	७३४।वि० १८८३	२४४९।१९४० र
२७६ (जमाल) २९८	२८०।२२५	१६०२ ई०उप	(८५)	१२२।ज
२७७ जमालुद्दीन पिहानी	२९८।	१६२५ उप	८५।ज	१९२।ज
२७८ जय कवि, भाट–लखनऊ	२७५।२२९	१७७८ उप	५९८।१८४५ उप	१९८६।र

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
ज				
२७९ जयकृष्ण कवि	२७४।२२४	(१७७६ग्र) (१८२५ग्र)	८३०।ग्र	६७८।१७७७-१८२५ र
२८०जगदेव कवि १ कम्पिलावासी	२७०।२१८	१७७८ उप	१६१।१७०० उप	६०९।१७५६ र
२८१ जगदेव २	२७१।२१९	१८१५	४५९।ज	११५४।१८३५ ज
२८२ जय सिंह	२७६।२४२	—	८३१।ग्र	—
२८३ जय सिंह कछवाहे	२९५।	१७५५ उप	३२५।१६९९-१७४३ रा	६०३।
२८४ जय सिंह सीसोदिया	२९६।	१६८१ई०उप	१८८।१६८१-१७००	४९७। ग्रि
२८५ जलालुद्दीन	३८७।२४१	१६१५	८२।ज	१६५ज
२८६ जलील, विलग्रामी	२९७।२४६	१७३९उप	१७९।ज	६२४।१७३८ज
२८७ जवाहिर कवि१,विलग्रामी	२९७।२१०	१८४५उप	४८५।ज	१०६०।र
२८८ जवाहिर कवि २,भाट	२९८।२११	१९१४उप	५५८।ज	२४५०।१९१५ज
२८९ जसन्त सिंह बघेले	२९५।२२६	१८५५उप	३७७।१७९७उप १८१४म	११०५।ज
२९० जसवन्त कवि २	२९६।२३७	१७९२ग्र०	७४७।१७१८ से पूर्व	२९५।१६८२ज १७३८म
२९१ जसोदानन्दन	२८८।२४७	१८२८उप	४६५।ज	११०६।ज
२९२ जानकीप्रसाद पवार १	२९१।२२१	वि० (१९०८ग्र)	६९५।वि०१८८३	२८१२।१९०६ग्र

	सरोज	ग्रियसन		विनोद
ज				
२९३ जानकीप्रसाद २	२६२।२२२	—	(६६५)	—
२९४ जानकीप्रसाद, बनारसी ३	२६३।२२३	१८६०उप	५७७।१८१४उप	११३१।१८७२र
२९५ जीवन १	२८२।२२८	१८०३अ०	४३८।ज	६४५।ज
२९६ जीवन कवि २	२९१।२३६	१६०८	७७।ज	१५८।ज
२९७ जीवनाथ भाट	२८१।२२७	१८७२उप	५९४।ज	६५७।१८०३ज
२९८ जुगराज	२५८।२३०	—	७६५।१८४३ से पूर्व	१४६५।ज
२९९ (जुगलदास) २६०	३०३।	(१८२१अ)	(३१३।)	९२८।१,१८२१र १४६७।ज
				६८४।ज
३०० जुगुल कवि	२६०।२४३	१७५५अ०	३१३।ज	
३०१ जुगुलकिशोर कवि १	२५७।२१४	—	(३४८)	१४६६।ज
३०२ जुगुलकिशोर, भट्ट २	२५६।२१५	१७९५उप	३४८।१७७४०उप	८०६।१८०३र
३०३ जुगुलप्रसाद चौबे	२५९।२४८	—	८२९।अ	१४६७।१अ
३०४ जुलफकार कवि	३०५।	१७८२अ०	४०९।ज	१९९१।१,१९०३र
३०५ जैत	२७३।२४५	१७०१ई०उप	१२०।ज	१३५।ज
३०६ जैतराम	२७२।२२०	(१७९४अ)	(१२०)	७५५।१७९५र
३०७ जैनुद्दीन अहमद	२६९।२१७	१७३६उप	१४४।ज	४८७।र
३०८ जोइसी	२९०।२३५	१६५८उप	२१९।ज	२९०।१६८८र

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
ज				
३०९ जोध	३००।	१५९०ई०उप	११८।ज	११६।ज
३१० ज्ञानचन्द यती, राजपूतानेवाले	२०७।	१८७०उप	६५१।ज	१०४५।१८१३ज, १८४०र
ट				
३११ टहकन	३१०।	(१७२६ग्र)	८३२।अ	४५२।१,१७२६र
३१२ टेर	३०९।	१८८८	६६५।ज	२११४।ज
३१३ टोडर	३०८।२५०	१५८०ई०उप	१०५।ज	७६।ज
ठ				
३१४ ठाकुर प्राचीन	३११।२५१	१७००	१७३।उप	—
३१५ ठाकुरप्रसाद त्रिपाठी १	३१२।२५२	१८८२	५७०।ज	२१४१।ज
३१६ ठाकुरप्रसाद त्रिवेदी	३१४।२५४	वि०	७१७।वि०१८८३	२४५३।१९४०उप
३१७ ठाकुर राम	३१३।२५३	—	८३३।अ	१४७४।अ
ढ				
३१८ ढासन	३१५।२५५	—	८३५।अ	१४७५।अ
त				
३१९ तत्ववेत्ता	३२३।२६२	१६८०अ०	२३१।ज	३८१।ज

	सरोज		ग्रियर्सन	विनोद
त				
३२० ताज	३२५।२७०	१६५२उप	६६।ज	२६७।१७००र
३२१ तानसेन	३२०।२६८	१५८८ई०उप	६०।१५६०उप	८१।ग्रि
३२२ तारा	३२२।२६१	१८३६	(४१६)	१४७६।अ
३२३ तारापति	३२१।२६०	१७६०	४१६।ज	६१४।ज
३२४ तालिब शाह	३२६।२७१	१७६८	(४३६।१७४६स० सरोज ७५७	७७४।ज
३२५ (तीखी)	३२८।२६६	—	७४८।१७१८ से पूर्व	६६४।ग्रि
३२६ तीर्थराज	३२७।२६६	१८००उप	३६४।ज	७४१।१८०६ग्र
३२७ तुलसीदास गोस्वामी	३१६।२५६	१६०१उप १५८३ज १६८०म	१२८।१६००उप १६२४म	६५।१५८६ज१६८०म
३२८ तुलसी २ ओझा जोधपुर	३१७।२५७	(१६२६उप)	७८६।१८६६ के पूर्व	२२०५।१६२६ के पूर्व
३२६ तुलसी ३ कवि यदुराय के पुत्र	३१८।२५८	१७१२ग्र	१५३।उप	३३५।१७००र
३३० तुलसी ४	३१६।२५६	(१६३१ग्र)	—	—
३३१ तेगपाणि	३२४।२६३	१७०८	२७१।ज	४८३।ज
३३२ (तेही)	३२६।२६७	—	७४६।१७१८ से पूर्व	६६५।ग्रि
३३३ तोप	३३०।२६४	१७०५उप	२६५।ज	२६४।१,१६६१ग्र
३३४ तोपनिधि	३३१।२६५	१७६८उप	४३२।ज	६८४।१,१८३०ज १८५०र

	सरोज		ग्रियर्सन	विनोद
द				
३३५ दत्त प्रानीन, देवदत्त कुसमडा	३४१।	१८७०	२६१।१६४६ज	४६४।ग्रि
३३६ दत्त,देवदत्त साढ,कानपुर	३४२।३०३	१८३६उप	५०८।१८१५उप	८७३।१८२७र
३३७ दयादेव	३४०।२७४	(१८१० से पूर्व)	८३६।ग्र	५७४।१७५४ से पूर्व
३३८ दयानाथ दुबे	३३९।३०४	१८८९ग्र	६६८।उप	१३२१।र
३३९ दयानिधि कवि, बैसवारे	३३८।२९२	१८११उप	३६५।ज	१०२१।ज
३४० दयानिधि ब्राह्मण, पटना के ३	३३७।२९४	(१९३६उप)	७८७।१८६९ से पूर्व	२३९३।१९३६र
३४१ दयानिधि २	३३६।२९३	(१८९१ से पूर्व)	(७८७)	१४८४।१ग्र
३४२ दयाराम कवि १	३३४।२८९	(१६७२उप)	(३८७)	(७५६)
३४३ दयाराम त्रिपाठी	३३५।२९१	१७९९उप	३८७।ज	७५६।ज
३४४ दयाल	३८०।३१०	वि०	७२०।वि०१८८३	—
३४५ दलपतिराय वशीधर	३३३।२८२	१८८५ग्र०	६३५,६३६।स०	७१६,७१७।१७९२ग्र
३४६ दल सिंह राजा	३३२।२७९	१७८१	४०७।ज	६९१।र
३४७ दान कवि	३४५।२८७	—	८३७।ग्र	—
३४८ दामोदर कवि	३४७।२७५	(१८८८-१९२३र)	(८४)	१३१७।१८८८र
३४९ दामोदरदास ब्रजवासी	३४६।३०८	१६०० ग्र०	८४।१५६५ज	२८५।१६८७ग्र
३५० दास, वेनीमाधवदास पलका	३४४।२७७	१६५५ उप	१३०।१६००उफ	२१२।१६२५ज १६९९म
३५१ दास, भिखारी दास	३४३।२८०	१७८० उप	३४४।ज	७१३।१७८५-१८०७र

		सरोज	ग्रियर्सन	विनोद
द				
३५२ (दास, ब्रजवासी) ५३७	३७५।	(१८१६ग्र)	(३६६)	—
३५३ दिनेश	३५५।२८८	(१८८३ग्र)	६३३।१८०७र	११७३।ग्रि
३५४ दिलदार	३५२।२७६	१६५०	६६।ज	२६०।ज
३५५ दिलाराम	३५४।२६०	—	७५०।१७१८ से पूर्व	६६७।ग्रि
३५६ दिलीप	३७६।	(१८५६ग्र)	८३८।ग्र	२०६६।१६१६र
३५७ दीनदयाल गिरि	३५६।२६७	१६१२ग्र	५८२।उप	१२४३।ग्र
३५८ दीनानाथ अध्वर्यु	३७७।	१८७६	६५८।ज	१६६६।ज
३५९ दीनानाथ बुन्देलखण्डी ?	३५७।२७८	१६२१ उप	५५२।ज	२०४४।र
३६० दील्ह	३७२।	१६०५	३२।ज	१००।र
३६१ दुर्गा	३५८।२८३	१८६०उप	६४६।ज	१२६३।ज
३६२ दूलह	३५६।३०१	१८०३उप	३५८उप	७३७।१७७७ज
३६३ दव महाकवि	३६०।३०२	१६६१अ०	१४०।ज	५३३।ज१७३० म १८२५
३६४ देव काष्ठीजिह्वा स्वामी	\३६१।३००	(१८६२-१६४६उप	५६६।१८५०	१७६०।१८६७ग्र
३६५ देवकीनन्दन शुक्ल, मकरन्दपुर	३६४।२६६	१८७०उप	६३०।ज	६७६।१८०१ज १८५७ग्र
३६६ देवदत्त कवि	३६२।३०५	१७०५	(२६१।)	—

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
द				
३६७ देवदत्त कवि २	३६५।३०६	१७५२	(२६१)	(४६४।१७०३ज)
३६८ देवनाथ	३७३।	(१८४०ग्र)	८३६।ग्र	९७१।१, १८३२र १४९७।ग्र
३६९ देवमणि	३७४।	(१८२४ से पूर्व	८४०।ग्र	१४९८।अ
३७० देवा कवि राजपूताना	३७०।२९८	१८८५ग्र०	४७।१५७५उप	१५६।ग्रि
३७१ देवी	३६७।२८५	—	८४१।ग्र	—
३७२ देवीदत्त	३६६।२८४	(१८१२ग्र)	८४२।ग्र	१५००।ग्र
३७३ देवीदास कवि बुन्देलखण्डी	३६३।२८१	१७१२ज १७४२ग्र	२१२।१६८५उप	५२१।ग्रि
३७४ देवीदास, बन्दीजन	३६८।२८६	१७५०ज	३०६।ज	६७१।ज
३७५ देवीदीन बन्दीजन, बिलग्रामी	३७८।	वि०	७३०।वि०१८८३	२४५६।१९४०र
३७६ देवीराम	३६९।३०९	१७५०	३०७।ज	६८५।ज
३७७ देवी सिंह	३७९।	(१७२१ग्र)	८४३।ग्र	२३९९।१९३७- २०५५।१९१४ से पूर्व
३७८ दौलत	३७१।	१६५१	९७।ज	२७१।ज
३७९ द्विजकवि मन्नालाल, बनारसी	३४९।२७३	वि० (१९२३ग्र)	५८३।वि०१८८३	२२५९।१९३०र
३८० द्विजचन्द	३५१।३०७	१७५५	३१४।ज	६८६।ज

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
द				
३८१ द्विजदेव	३४८।२७२	१९३०म, उप	५९९।१८५०उप १८७३ म	१७८३।१९०६र १९३०म
३८२ द्विजनन्द	३५०।२९६	—	८४४।अ	१५०८।अ
३८३ द्विजराम	३५३।२९५	—	—	१५०९।अ
ध				
३८४ धन सिंह	३८१।३२१	१७९१	४२२।ज	८४४।ज
३८५ धनीराम, बनारसी	३८२।३१३	१८८८उप	५७८।ज	११३०।१८४०ज
३८६ धीर कवि	३८३।३१५	१८७२उप	४६१।१७६५उप	१२०३।१८७०र
३८७ धीरज नरिन्द	३८५।३१२	१६१५ज	१३६।१५८०	२००।१६३७ज
३८८ धुरन्धर	३८४।३१४	—	७८२।२८६८ से पूर्व	१९२८।१९०० से पूर्व
३८९ धोंधेदास, ब्रजवासी	३८६।३१७	—	७६६।१९०० से पूर्व	३३६।१७००र
३९० धवल सिंह	३८७।३१६	१८६०उप	५९१।ज	८१२।१७६०ज
न				
३९१ नन्द	४२४।३३७	—	(६९७)	१५२९।१अ
३९२ नन्दकिशोर	४२६।३५४	—	(६९७)	१५३०।अ
३९३ नन्ददास	४२८।३७०	१५८५ज	४२।१५६७उप	५८।१६२३र

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
न				
३९४ नन्दन	४२३।३३६	१६२५	८६।ज	१९५।ज
३९५ नन्दराम	४२७।३३९	(१७४४ग्र)	८४६।ग्र	५२५।१७४४र
३९६ नन्द लाल कवि १	४२५।३२८	१६११	८०।ज	१६८।ज
३९७ नन्द लाल कवि २	४२६।३३८	१७७४	३९०।ज	७७५।ज
३९८ नबी	३९७'३५६	—	८४८।ग्र	—
३९९ नर वाहन	४०३।३२७	१६००उप	५७।१५६०उप	६६।१ज १५३०
४०० नरमिया	४०४।३६६	१५९०ग्र०	२८।ज	१२४।ज १३६।१६३०र
४०१ नरहरि राय	३८८।३१८	१६००ई०उप	११३।१५५०उप	६६।१५६२ज १६६७म
४०२ नरिन्द १ प्राचीन	४२१।३६८	१७८८	४१४।ज	९१६।ज
४०३ नरिंद २ नरेंद्र सिंह, पटियाला	४२२।३६१	१९१४उप	६९०।उप १८६२म	२०६०।१९१४र
४०४ नरेश	३९९।३५८	—	७९१।१८६९ से पूर्व	२२०६।ग्रि
४०५ (नरोत्तम अन्तर्वेदी) ४१६	४१७।३६२	१८९६	६७५।ज	२११६।ज
४०६ नरोत्तम, बुन्देलखण्डी	४१६।३४७	१८५६	५०१।ज	१२७०।ज
४०७ नरोत्तमदास, ब्राह्मणवाड़ी	४१५।३४८	१६०२ज	३३।१५५३ज	७२।१५८२र
४०८ नवखान	४०५।३६९	१७९२	४२६।ज	९१७।ज
४०९ नवनिधि	४०१।३२४	—	७८९।१८६९ से पूर्व	२२०७।ग्रि

न	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
४१० नवल	४३८।३५२	—	(८४९)	—
४११ नवलकिशोर	४३७।३५१	—	८४९।अ	१५२१।अ
४१२ नवलदास क्षत्रिय	४४०।३६०	१३१९अ०	७९८।१८७५ से पूर्व	१४।र
४१३ नवल सिंह कायस्थ	४३९।३५३	१९०८उप	५२६।१८४१ज	६३६।१८२३से पूर्व ११३३।१८७३
४१४ नवीन	४००।३५९	(१८९५अ) (१९०७अ)	७९०।१८९९ से पूर्व	१९२६र १७९५।१८९९अ
४१५ नागरीदास	३९८।३५७	१६४८अ०	९५।ज	६४६।१७५६ज
४१६ नाथ १ ?	४३०।३४०	—	८५०।अ	१८२१म
४१७ नाथ २ ?	४३१।३४१	१७३०	१६९२।१७००उप	—
४१८ नाथ ३ ?	४३२।३४२	१८०३	४४०।ज	६१०।१७५७-१८१७र
४१९ (नाथ४) ८३९	४३३।३४३	१८११उप	(१६२)	९५८।ज
४२० (नाथ ५ हरिनाथ गुजराती, काशी) ९९८	४३४।३४४	१८२अ	—	—
४२१ नाथ ६ ?	४३५।३४५	—	—	—

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
न				
४२२ नाथ७, व्रजवासी	३३६।३४६	१६४१उप	६८।ज	१३७।१६०५न २३६।ज
४२३ नानक	३९१।३२३	१५२६ज १५९६म	२२।सरोजवत	४७।सरोजवत
४२४ नाभादास	४०२।३६५	१५४०अ०	५१।१६००उप	१७६।१७२१म
४२५ नायक	३९६।३५५	(१८१० से पूर्व)	७८३।१८६८ से पूर्व	५७७।१७५४ मे पूर्व
४२६ नारायण भट्टगोसाई १	४०६।३२९	१६२०उप	६६।ज	१९४।ज
४२७ नारायणराय, वन्दीजन, बनारसी २	४०७।३२१	वि० (१९२५अ)	५७२। वि० १८८३	१५२४। २१५२।१९२५र २४५७।१९४०उप
४२८ नारायणदास, कवि ३	४०८।३६४	१६१५	—	१६७।ज
४२९ नारायणदास, वैष्णव ४	४०९।३६७	(१८२९अ)	—	९५३।१८२१र
४३० (नारायण, वन्दीजन, काकूपुर) ६२५	४४४।	१८०९	४५४।ज	१०४३।ज
४३१ निधान १	४१०।३३३	१७०८उप	२५४।ज	३२२।१६९८र
४३२ निधान२	४११।३३४	१८०८ उप	३५०।उप	८३१।र
४३३ निधि	४४२।	१७५१	१३१।१६००उप	२०८।ग्रि
४३४ निपट निरञ्जन	३८९।३३५	१६५०अ०	१२९।ज	७०।१५९५र

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
न				
४३५ निहाल ब्राह्मण, निगोहा	३९०।३१९	१८२०	४६०।ज	१०७९।ज
४३६ निहाल प्राचीन	४४३।	१६३५	९१।ज	२३०।ज
४३७ निवाज १, जुलाहा, बिलग्रामी	४१२।३२२	१८०४	४४८।ज	९४९।ज
४३८ निवाज ब्राह्मण अन्तर्वेद	४१३।३२५	१७३९ज	१९८।१६५०इप	४३९।१८०० से पूर्व
४३९ (निवाज ३ ब्राह्मण, बुन्देलखण्डी) ४१३	४१४।३२६	१८०१ उप	३४२।१७५०र	८२२।ग्रि
४४० (नीलकण्ठ मिश्र, अन्तर्वेद) ४१९	४१८।३६३	१६४८अ०	१३२।१६००उप	२०७।ग्रि
४४१ नीलकण्ठ त्रिपाठी	४१९।३५०	१७३०उप	१४८।१६५०उप	२९६।१६९८ग्र
४४२ नील सखी	४२०।३३०	१९०२अ०	५४८।ज	२२६०।ज
४४३ (नीलाधर) ८१२	४४१।	१७०५अ०	१३३।१६००उप	२१०।ग्रि
४४४ नैही	३९२।३३१	(१७९८ से पूर्व)	८५१।अ	१५२७।अ
४४५ नैन	३९३।३३२	—	८५२।अ	—
४४६ नैसुक	३९५।३४९	१९०४	५५०।ज	२२६१।ज
४४७ नोनै	३९४।३२०	१९०१	५४५।ज	२२६२।ज
प				
४४८ पञ्चम १ प्राचीन, बन्दीजन	४६३।४०१	१७३५उप	२०५।१६५०उप	३६८।१७०७र
४४९ (पञ्चम २, लखनऊ) ४८६	४६४।४०२	(१९२४उप)	—	७७०।१७९९र —

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
प				
४५० पचम डलमऊ	४८६।४०२	१९२४उप	७०७।सा०	२१८३।र
४५१ पचम ३ नवीन बन्दीजन	४६५।४०३	१९११ग०	५५३।ज	२८५८।ज
४५२ पण्डित प्राचीन, ठाकुर प्रसाद	४६९।३९८	१९२४उप	६००।१८५०उप	१८१४
४५३ पजनेस	४४७।३७४	१८७२	५१०।१८१६ज	१८०४।ज
४५४ पतिराम	४७०।३९६	१७०१उप	२५८।ज	४६५।ज
४५५ पदमनाभ जी, ब्रजवासी	४७८।३९०	१५६०ज	५०।१५७५उप	१५७।ग्रि
४५६ पद्माकर	४४६।३७२	१८३८उप	५०६।१८१५उप	१२३३।१८१०ज १८९०म
४५७ पद्मेश	४७६।३८६	१८०३	४४१।ज	९६०ज
४५८ परताप साहि	४४८।३७३	१७६०अ०	१४६।१६३३उप	१२४१।१८५२-९६र
४५९ परवत	४७२।३८८	१९२४अ०	७४।उप	१३०।र
४६० (परवीने या पवाने)	४८२।३९४	—	८५३।अ	१५३०।अ
४६१ परम	४५४।३८२	१८७१	५३३।ज	१९६९।ज
४६२ परमानन्न लल्ला पौराणिक	४५६।३८४	१८९४	५४१।ज	२११७।ज
४६३ परमानन्ददास, ब्रजवासी	४५९।४०९	१६०१उप	३८।१५५० उप	५४।१६०६र
४६४ परमेश १ प्राचीन	४५१।३७५	१६६८	२२२।ज	३३७।ज
४६५ परमेश, बन्दीजन २	४५२।३७६	१८९६	६१६।ज	२१५३।ज

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
प				
४६६ परशुराम १	४७३।३९५	—		—
४६७ परशुराम, ब्रजवासी२	४७४।३७९	१६६०उप	५५।ज	३११।ज
४६८ परसाद	४५५।३७१	१६००अ०	१८३।१६२३ज	३८३।ग्रि
४६९ पराग, बनारसी	४८४।४१०	१८८३उप	५६७।१८२०उप	—
४७० पहलाद	४६८।३९७	१७०१अ०	२५९।ज	४६६।ज
४७१ पहलाद, बन्दीजन, चरखारी	४८५।	(१८१५उप)	५१३।१८१०उप	११८५।ग्रि
४७२ पारस	४७९।३९१	—	७९२।१८६९ से पूर्व	२२०८।१९२६र
४७३ पुण्ड (पुष्प)	४९०।	७७०	१।उप	१।र
४७४ पुण्डरीक	४७५।३७८	१७६९	३८८।ज	७७९।ज
४७५ पुरान	४८१।३९३	—	८५६।अ	१८७८।१८९७ से पूर्व
४७६ पुरुषोत्तम	४६७।४००	१७३०उप	१६५०।उप	११७।१६१५र
४७७ पुखी	४७७।३८७	१८०३अ०	४४२।ज	८७४।ज
४७८ पुष्कर	४८३।४०७	(१६७३अ)	८५७।अ	—
४७९ पूख पूरनचन्द	४८९।	—	८५८।अ	—
४८० पृथ्वीराज	४७१।३८९	१६२४उप	७३।उप	८२।१६१७र
४८१ (प्रधान कवि) ७२४	४६२।४०५	१८७५उप	(८५४)	१९७०।ज
४८२ प्रधान केशवराय	४६१।४०४	(१७५३र)	८५४।अ	१५५०।अ

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
प				
४८३ प्रवीण कविराय	४५०।३८९	१६९२	२५१।ज	४२१।ज
४८४ प्रवीणराय	४४६।३८०	१६४०उप	१३७।१५८०उप	१७७।१६५०र
४८५ प्रसिद्ध	४६०।४०८	१५९०ई०उप	१२५।ज	१२५।ज
४८६ प्राणनाथ १ ब्राह्मण वैसवारे के	४५७।३८५	१८५१ग्र	४९०।१७९३उप	१०८०।ग्रि
४८७ प्राणनाथ २ कोटावाले	४५८।४०६	१७८१उप	४०८।ज	५०४।१७१४ज
४८८ प्रियादास	४६६।३९९	१८१९ग्र०	३१९।१७१२र	५५७।१७६९ग्र
४८९ प्रेम	४८०।३९२	(१७४०ग्र)	(३५१)	—
४९० प्रेमनाथ	४८७।	१८३५उप	३५१।१७७०उप	९४९।ग्रि
४९१ प्रेम पुरोहित	४८८।	(१८१२-९२उप)	—	—
४९२ प्रेम सखी	४५३।३७७	१७९१ज	४२३।ज	१२३९।१८८०र
४९३ (प्रेमी यमन) ३२	४५५।३८३	१७९८उप	४३३।ज	९७२।ज
फ				
४९४ फहीम	४९६।	१५८०ई०उप	१११।१५५०ज	१०४।१६०७र
४९५ फालकाराय, ग्वालियर	४९४।	१९०१	६७८।ज	२२६४।ज
४९६ फूलचन्द	४९२।४१२	—	—	—
४९७ फूलचन्द ब्राह्मण वैसवारे के	४९३।४१३	१९२८उप	७०८स०	२२३०।१९२८।र
४९८ फेरन	४९१।४११	(१८९२-१९११उप)	८६०।ग्र	१५५७।ग्र, २०८२।१९२०

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
फ				
४९९ फँजी	४९५।	१५८० ई०उप	११०।१५४७ज	—
ब				
५०० वन्दन पाठक, काशी	५६१।४३१	वि० (१९०६ग्र)	५७६।वि ०१८८३	२४६४।१९१५ज
५०१ वशगोपाल जालौन	५८५।	१९०२	५४९।ज	१९७२।१९००र
५०२ (वशगोपाल वदीजन) ५८५	५४२।४२२	(१९०२उप)	(५४९)	—
५०३ वशरूप, वनारसी	५४१।४२१	१९०२	५८६।ज	१९८८।र
५०४ वशीधर १	५२४।४९५	—	(५७४)	—
५०५ वशीधर मिश्र२, सडीले वाले	५२५।४७९	१६७२उप	८६४।ग्र	२५६।र
५०६ वशीधर कवि३	५२८।४५१	—	(५७४)	—
५०७ वशीधर कवि, वनारसी	५८४।	१९०१उप	५७४।ज	१९२८।र
५०८ वशीधर वाजपेयी, चिन्ताखैरा	५८३।	१९०१	६१७।ज	१९८७।र
५०९ वक्सी	५७५।४७७	—	८६१।अ	१५८५।ग्र
५१० वजरङ्ग	५७।।४७५	—	८६२।ग्र	१५६०।ग्र
५११ वदन	५६०।४३०	(१८०९ग्र)	८६३।ग्र	८३४।१८०८र
५१२ वनमालीदास गोसाईं	५८१।	१७१६उप	२८६।ज	४०६।र
५१३ वनवारी	५७०।४६३	१७२२उप	१९२।१६३४उप	२९४।१६९०र
५१४ वरवै सीता कवि	५९३।	२२४९	—	—

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
ब				
५१५ बलदेव १, बघेलखण्डी	९९।४३८	१८०९उप	३५९।१७४६ग्र	१०१३।ज
५१६ बलदेव २, चरखारी	५००।४३९	१८९६उप	५४३।ज	१८४६।र
५१७ बलदेव क्षत्रिय ३, अवधवाले	५०१।४४८	१९११उप	६०२।१८५०उप	१८१३।गि
५१८ बलदेव कवि, प्राचीन ४	५०२।४५८	१७०४	२६३।ज	४६७।ज
५१९ बलदेव अवस्थी ५, दासापुर	५०३।४८२	वि० (१८९७ज १९७०म)	७१५वि०१८८३	२०८८।१८९७ज
५२० बलदेवदास जौहरी	५०४।४८३	१९०३ग्र	६८४।ज	२०३६।१९१०र
५२१ बलभद्र, सनाढ्य १, ओरछा	५१३।४४५	१६४२उप	१३५।१५८०उप	१४५।१६००
५२२ बलभद्र, कायस्थ २, पन्ना	५४५।४४६	१९०१उप	५११।ज	२२२३।ज
५२३ बलराम दास, ब्रजवासी	५२३।४९३	—	७६८।१९०० से पूर्व	५३१।१७५०र
५२४ बलिराम	५२२।४६१	—	७५५।१७२३ से पूर्व	४४६।
५२५ बलिह्	५६९।४६१	१७२२	२८९।उप	(४४६)र
५२६ बल्लभ	५१७।४७६	१६८९	(२३९)	३००।१६८१र
				१५६६।१ ग्र
५२७ बल्लभ रसिक	५१६।४६५	१७८१उप	२३९।ज	३८४।ग्र
५२८ बल्लभाचार्य	५१८।४९१	१६०१ग्र०	३४।१४७८ज	४९।१५३५ज
			म १५८७ विक्रमी	१५८७म
५२९ बाजीदा	५६७।४५८	१७०८उप	२७२।उप	४८०।ज १५७२।ग्र

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
ब				
५३० बावेश, बुन्देलखण्डी	५७६।४८४	१८३१उप	४६७।ज	६६१।र
५३१ बादेराय	५६६।४८७	१८८२उप	६१२।ज	१६०६।ज
५३२ बाबू भट्ट	५८८।	—	८६६।अ	१७५४।अ
५३३ बारक	५८०।	१६५५	१०१।ज	२७२।ज
५३४ बार दरवेश	५६४।	११४२अ०	—	११।
५३५ बारन	५६५।४५२	१७४०उप	१५८।ज	४५२।२,१७२६र ३६६।१७१२र
५३६ बालकृष्ण त्रिपाठी १	५५५।४१५	१७८८	१३८।१६००उप	२११।ग्रि
५३७ बालकृष्ण कवि २	५५६।४१६	--	—	—
५३८ बालन दास	५७७।४८६	१८५०ग्र	४८८।उप	१०८१।ग्र
५३९ बिन्दादत्त	५५६।४२६	—	८६८।अ	१५६०।अ
५४० बिक्रम, राजा विजयबहादुर, बुन्देला)	५०६।४२०	१८८०ग्र	५१४।१७८५ज	१२६०।१८७८र
५४१ (विजय, राजा विजयबहादुर, बुन्देला) ५०६	५०५।४१६	१८७८उप	(५१४)	११००।१८५५-१८८५र
५४२ विजय सिंह, उदयपुर	५६२।	१७८७अ०	३७।१७५३-८४रा	८४६।ग्रि
५४३ विजयाभिनन्दन	५४०।४१८	१७४०उप	२०।१६५०उप	७६०।१७६७र
५४४ विट्ठलनाथ	५१६।४७१	१६२४उप	३५।१५५०उप	७१।१५७२ज १६४२भ

		सरोज	ग्रियर्सन	विनोद
ब				
५६१ बिहारीदास ४, ब्रजवासी	५५४।४८९	१६७०उप	२२६।ज	८८।१६३०र
५६२ बीर कवि दाऊ दादा, वाजपेयी	५११।४४०	१८७१ग्र०	५१६।१८२०उप	९११।२,१८१८ग्र
५६३ बीर, बीरवर, कायस्थ	५१२।४४१	१७७७उप	३९५।१७२२उप	६४५।१७७९ग्र
५६४ बीठल	५२१।४६६		(३५)	१५८१।ग्र
५६५ बुद्ध राव	४९८।४२७	१७५५उप	३३०।१७१०-४०उप	
५६६ बुद्धि सैन	५५८।४३६		८७१।अ	१५९२।ग्र
५६७ बुधराम	५६८।४५९	१७२२	२९०।उप	४४७।ज
५६८ बुध सिंह, पञ्जाबी	५८७।	—	८७२।अ	१९००।१८९७र
५६९ बृन्द	५६६।४५६	(१७००-८०जी)	८७९।ग्र	४४२।१७४२र
५७० (बृन्दावन कवि)	५६२।४२८	—	—	—
५७१ बृन्दावन, ब्राह्मण तेमरीता वाले	५८६।	वि०	७२२।वि०१८८३	२४६३।१९५३ग्र
५७२ बृन्दावन दास	५७८।४९६	१६७०	२२७।ज	२५०र
५७३ बैद्य	५७३।४७४	१७८०	३९९।ज	६८७।र
५७४ बेनी प्राचीन १, असनी	५०७।४३४	१६९०ग्र०	२४७।ज	२९३।र
५७५ बेनी २, बेती वाले	५०८।४३५	१८४४उप	४८४स०	९८५।१८४९ग्र १८७४ग्र
५७६ बेनीदास कवि, मेवाड़	५९५।	१८९२उप	६७१।ज	१८३२।र
५७७ बेनी प्रवीन वाजपेयी	५०९।४३६	१८७६उप	६०८।ज	११०४।१८७८ग्र

		सरोज	ग्रियर्सन	विनोद
व				
५९५ (ब्रजवासीदास) ५३७	५३४।४५३	(१८१६ग्र)	(३६६)	—
५९६ ब्रजवासीदास २, वृन्दावन निवासी	५३७।४७८	१८१०उप १८२७ग्र	३६६।ज,उप	८७८।१८१६ग्र १८२७ग्र
५९७ ब्रजेश, बु०	५२६।४१७	(१७६०-६०२)	८७८।ग्र	१६०५।ग्र
५९८ ब्रज	४९७।४६७	१५८५ ई० उप	१०६।ज	७७।ज,१६४०म
५९९ (ब्रह्म राजा बीरबर) ४९७	५८६।४६७	(१६४२म)	(१०६)	(७७)
भ				
६०० भञ्जन	६१४।५२२	१८३१	४६८।ज	११०६।१८३०ज
६०१'(भगवन्त) ५९९	६००।५५	(१८१७म)	(३३३)	—
६०२ भगवन्त राय	५९९।५१४	(१८१७म)	३३३।१७५०उप १७६०म	७४२।१८०६र १८१७ग्र
६०३ भगवत रसिक	५९८।५२४	१६०१ग्र०	६१।१५६०उप	१३३।१६२७र
६०४ भगवतीदास ब्राह्मण	६०२।५०३	१६८८ग	२४५।ज	४०६।१६६०म
६०५ भगवान कवि	६०१।५०१	—	(३३३)	—
६०६ भगवानदास निरञ्जनी	६०३।५०४	(१७२८ग्र १७५५ग्र	८८०।अ	४४७।१,१७२२ग्र
६०७ भगवानदास मथुरावासी	६०५।५२५	१५९०	२९।ज	११८।ज
६०८ भगवान हितु रामराय	६०४।५२०	(१६५०उप)	७७०।१८४३ से पूर्व	१४०।१६३१र
६०९ भरमी	६२३।५००	१७०८	२७३।ज	३५५।१७०८

भ

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
६१० भवानीदास	६१६।५१७	१९०२उप	६८३।ज	१९९५।र
६११ भानदास, बन्दीजन, चरखारी	६१७।५०८	१८५५उप	४०९।१८१५उप	१२१०।१८४५ज
६१२ भावन कवि, भवानीप्रसाद पाठक	६११।५१२	१८९१उप	६१८।१८४४ज	१८३१।र
६१३ भीषम	६१२।५०२	१६८१	२४०।ज	३५६।१७१०र
६१४ (भीषम) ६१२	६२४।५०२	१७०८	(२४०)	(३५६)
६१५ भीषमदास	६१३।५२१	(१६४०र)	(२४०)	—
६१६ भूधर १, काशी	६१८।५०९	१७००	२५६।ज	—
६१७ भूधर २,असोथर	६२७।५२६	१८०३उप	३३६।१७५०उप	७४४।१८०९र
६१८ भूपति राजा गुरुदत्त सिंह, अमेठी	६२१।४९८	१९०३अ०	३३२।१७२०उप	७१४।१७९१र
६१९ भूपनारायण, बन्दीजन, कोकपुर	६२५।५२३	१८५९	६४५।१८०१ज	१११२।ज
६२० भूमिदेव	६१५।५१६	१९११उप	६८८।ज	२०४५।र
६२१ भूषण त्रिपाठी	५९७।५१९	१७३८उप	१४५।१६६०उप	४२६।१६७०ज१७७२म
६२२ भूसुर	६१९।५१०	१९११उप	६८९।ज	२०४६।र
६२३ (भृ ग)	६२२।४९९	१७०८अ०	२७४।ज	५०६।ज
६२४ भोज १	६०६।५०५	१८७२	६५३।ज	—
६२५ भोज मिश्र २	६०७।५०६	१७८१	३३१।१७२०उप	६७९।१७५०ज १७७७र

सरोज		ग्रियर्सन		विनोद
भ				
६२६ भोज कवि ३ विहारीलाल, वन्दीजन, चरखारी	६०८।५०७	१९०१उप	५१९।१८४०उप	{ १८९८।ग्रि ११४१।१८५७र
६२७ भोलानाथ, ब्राह्मण, कन्नौज	६२६।	—	८८३।अ	१६२२।अ
६२८ भोला सिंह पन्ना	६२०।५११	१८९८	५४४।१८३९ज	१८४७।१८६२र
६२९ भौन १ प्राचीन वु०	६०९।५१८	१७६०	३८३।ज	—
६३० भौन २ वेतीवाले	६१०।५१३	१८८१उप	६११।ज	९८७।१८२५ज
म				
६३१ मञ्जुद	६८६।५३८		८८४।अ	१६५२।अ
६३२ मञ्चित	६४५।५६७	१७८५उप	४१२।ज	९७२।१८३६र
६३३ मण्डन	६९६।५४९	१७१६उप	१५४।ज	३५८।१६९०ज
६३४ मकरन्द	६४३।५६५	१८१४उप	४५७।ज	—
६३५ मकरन्दराय, वन्दीजन	६४४।५६६।	१८८०अ०	६१०।ज	२०३८।ज
६३६ मखजात वाजपेयी, जालपा प्रसाद	६६४।५९०	वि०	—	२३८४।१९४५उप
६३७ मणिकण्ठ	६५२।५७६	(१७८२अ)	७७२।१८४३ से पूर्व	५८३।१७५४ से पूर्व
६३८ मणिदेव	६४२।५६४	१८९९उप	५९६।१८२०उप	८८२।१९२०म
६३९ मतिराम	६९५।५४८	१७३८उप	१४६।१६५०-८२उप	३५९।१६७४ज १७७३म

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
म				
६४० (मदन किशोर) ७०१	६६३।५८६	१८०७अ०	४५०।ज	—
६४१ मदन किशोर	७०१।५८६	१७०८-१०उप	३८६।१७१०उप	६३३।ग्रि
६४२ मदनगोपाल शुक्ल, फतहाबादी १	६७६।५५४	१८७६अ	५६६।ज	१९७४।ज
६४३ (मदन गोपाल २) ६७६	६७७।५६४	(१८७६अ)	—	
६४४ मदनगोपाल ३, चरखारी	६७८।५५५	—	—	१६२४।अ
६४५ मदनमोहन १	६८५।५३७	१६६२उप	२५३।	—
६४६ मदनमोहन २, चरखारी	६७९।	१८८०	५३७।ज	१०८२।१८२३
६४७ मधुनाथ	७०३।	१७८०	४०१।ज	८१३।ज
६४८ (मधुसूदन)	६७१।५४६	१६८१	२४१।ज	३५०।ज
६४९ मधुसूदनदास, माथुर	६७२।५४७	१८३९उप	४७६।ज	९७३।१८३२अ
६५० मन निधि	६५१।५७५	—	७७१।१८४३ से पूर्व	१६२६।अ
६५१ मनभावन, ब्राह्मण	६६९।५९८	१८३०उप	३७५।१७८०उप	८८५।ज
६५२ (मनसा) ६४०	६३९।५४३	—	(८८५)	१३२७।अ
६५३ मनसाराम कवि	६४०।५४४	—	८८५।अ	—
६५४ मनसुख	६५६।५८०	१७४०उप	३०२।ज	६३७।ज
६५५ मनियार सिंह	६७०।५९९	१८६१उप	५८४।ज	९७७।१८४१अ
६५६ मनीराम १	६७४।५५८	—	(६७६)	१०३८।१८४० से पूर्व १२०४।१८७०

	सरोज	ग्रियसन		विनोद
म				
६५७ मनीराम मिश्र, साढि कानपुर	७०१।	१८९६	६७६।ज	२१२०।ज
६५८ मनीराम २ मिश्र, कन्नौज	६७३।५५९	१८३९उप	४७७।ज	८८४।१८२९ग्र
६५९ मनीराय	६७५।५६०	—	८८६।ग्र	—
६६० मनोहर कवि १, राय मनोहरदास कछवाहा	६८०।५६९	१५९२ई०उप	१०७।१५७७उप	८३१।६२०र
६६१ मनोहर,२, काशीराम, रिसालदार	६८१।५७०	वि०	—	—
६६२ मनोहर ३	६८२।५९३	१७८०उप	४०२।ज	६११।१७५७ग्र
६६३ मनोहरदास निरञ्जनी	७११।	(१७१६ग्र)	८८८।ग्र	३७०।१७०७ग्र
६६४ मन्य	६५०।५७४	—	८८७।अ	१६२८।अ
६६५ मलिक मोहम्मद जायसी	७०८।	१६८०ग्र०	३१।१५४०उप	६२।१५७५र
६६६ मलिन्द, मिहीलाल, वन्दीजन	७०९।५४१	१९०२	६२३।ज	२२७२।ज
६६७ मलूकदास	६५९।५८५	१६८५उप	२४३।ज	२८४।ज ९४०।१८३४
६६८ मल्ल	६९१।५५०	१८०३उप	३३७।१७५०उप	७४३।ग्रि
६६९ महताव	६८९।५४२	—	८८९।ग्र	६८४।१८००र
६७० महबूब	६९८।५५७	१७६२	३८४।ज	६५८।१७६१ज

	सरोज	ग्रियर्सन	विनोद
म			
६७१ महम्मद	६६१।५८७	१७३५उप २६६।ज	६२०।ज
६७२ महराज	६६५।५९१	— ७९३।१८६९ से पूर्व	१२३४।१८७६ से पूर्व
६७३ (महाकवि) ७३	६८८।५४०	१७८०उप ४०३।उप	—
६७४ महानन्द वाजपेयी	६९९।५६२	१९०१उप ६१९।ज	२२६६।ज
६७५ महेश	६८४।५३६	१८६०उपई० (६९६)ज	१२९४।ज २३६४।१९४१उप
६७६ महेशदत्त, ब्राह्मण धनौली	६६८।५९७	वि० (१८९७ज) (१९६०ई०) ६९६। वि०१८८३	२१५७।१८९७ज
६७७ माखन १	६३७।५३३	१८७०उप (६७०)ज	११२०।१८६०र १९७५।ज
६७८ माखन २, लखेरा, पन्नावाले	६३८।५३४	१९११उप ६७०।१८३४ज	२१२१।१८९१ज
६७९ मातादीन मिश्र, सरायमीरा	७१२।	व०(१९३०प्र) ६९८।वि०१८८३	२४६६।१९४०र
६८० मातादीन शुक्ल अजगरा	६४७।५७१	वि०(१८९२) १९०३र) ७३१।वि०१८८३	२३२२।१९३४उप
६८१ माधवदास, ब्राह्मण	६८७।५३९	१५८० २६।ज	१०१।ज
६८२ माधवानन्द भारती, काशी	६८३।५३५	१९०२उप ५८७।ज	२२७०।ज
६८३ (मान कवि १) १३५	६२९।५२७	(१८३०-८०र) (५१७)	५८४।१७५४ से पूर्व

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
म				
६८४ मान कवि ३,ब्राह्मण, वैसवारा के	६३०।५२८	१८१८ग्र	३७२।उप	९११।र
६८५ मान कवीश्वर, बन्दीजन, राजपूताना	७१४।	१७५६अ०	१८६।१६६०उप	४१०।ग्रि
६८६ (मान बन्दीजन, चरखारी,) १३५	७०२।	(१८३०-८०२)	५१७।१८२०उप	१२५३।१८७७र
६८७ मानदास २, ब्रजवासी	६२८।५५३	१६८०अ०	१७२।ज	३८५।ज
६८८ मानराय, बन्दीजन, असनी	७०४।	१५८०ई०उप	११६।ज	१११।ज
६८९ मान सिंह, महाराजा कछवाहा, जयपुर	७१५।	१५९२ई०उप	१०६।ज	२६२।ज
६९० मानिकचन्द	६९२।५५१	१६०८उप	७८।ज	१६६।ज
६९१ मानिकचन्द, कायस्थ	६९३।५६१	१९२०उप	७१०स०	२२७१।१९३०उप
६९२ मानिकदास मथुरा	६४८।५७२	—	८६१।अ	१६३६।अ
६९३ मिश्र	६५७।५८१	१७४०उप	३०३।अ	६३८।ज
६९४ मीतूदास गौतम	७०५।	१९०१	६७६।ज	२२७३।ज
६९५ मीर रुस्तम	६६०।५८६	१७३५उप	२९४।ज	४८४।र
६९६ मीरन	६६०।५४५	—	८९२।अ	१६३६।१अ
६९७ मीराबाई	७००।५९६	१४७५अ०	२०।१४२०उप	६३।१५७३ज १६०३म
६९८ मीरा मदनायक	७०७।	१८००उप		११५८।१८६०र
६९९ मीरी माधव	६६२।५८८	१७३५उप	२९५।ज	४८५।र

	सरोज	ग्रियसन		विनोद
म				
७०० मुकुन्द प्राचीन	६३६।५८४	१७०५उप	२६६।ज	४६८।ज
७०१ मुकुन्द लाल बनारसी	६३४।५३१	१८०३उप	५६०स०	६६१।ज
७०२ मुकुन्द सिंह हाडा, कोटा	६३५।५३२	१६३५अ०	१२७।ज	२३२।ज
७०३ (मुनि लाल) ६४१	६६४।५५२	(१६४२अ)	८६३।अ	१६२६।अ १६०११, १६३७र
७०४ मुबारक	६४६।५६८	१६४०ज	६४।ज	१८५।ज
७०५ मुरली	६५४।५७८	(१८११अ)	—	६६११,१८३०र
७०६ मुरलीधर १	६५८।५८२	१७४०उप	१५६स०	६३६।ज
७०७ मुरलीधर २	६६६।५६२	—	—	—
७०८ मुरारिदास, ब्रजवासी	६४६।५७३	—	७७३।१८४३ से पूर्व	१६३४।ग्रि
७०९ मुसाहबराजा, बिजावर	७१०।	(१६०६अ)	८६४।अ	१६६८।अ
७१० मूक जी, बन्दीजन, राजपूताना	७१३।	१७५०अ०	६६२।१८२६उप	६७२।ज
७११ मून, ब्राह्मण, असोथर	६४१।५६३	१८६०	८६५।अ	१११५।र
७१२ मेधा	६६७।५५६	१८६७अ	६४६।उप	११८८।र
७१३ मोतीराम	६५५।५७६	१७४०उप	२१६।ज	५०७।र
७१४ मोतीलाल	६५३।५७७	—	—	—
७१५ मोतीलाल कवि, बासी	६६७।५६५	१५६७	३०।१५३३ज	६२।१५६०र

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
म				
७१६ मोहन भट्ट १	६३१।५२६	१८०३उप	५०२।१८००उप	५४५।१७४४ज
७१७ मोहन कवि २	६३२।५३०	१८७५	३२६।१७२०उप	(५०८)
७१८ मोहन कवि ३	६३३।५८३	१७१५	२८४।ज	५०८।ज
र				
७१६ रङ्ग लाल	१८१।६४०	१७०५अ०	३६८।१७५०ज	८२५।१८७०र
७२० रघुनाथ, १ बनारसी	७३८।६५६	१८०२अ	५५६।उप	७२३।१७६६ १८०७र
७ २१ रघुनाथ २, शिवदीन, ब्राह्मण, रसूलावा दी	७३६।६१७	वि०	७३६।वि० १८८३	२४७२।१६४०र
७२२ रघुनाथ प्राचीन	७४०।६३६	१७१०	२७६।ज	५०६।ज
७२३ रघुनाथ उपाध्याय, जौनपुर	७४३।६५०	१६२१उप	६८०।१८४४अ	२७२६।१६०१ज
७२४ रघुनाथदास महन्त, अयोध्या	७४२।६४७	(१८७५-१६२५ र)	६६२।१८८३उप	१८१८।१६११अ
७२५ रघुनाथ राय	७५१।६४३	१६३५ ई०उप	१६३।१६३४उप	३१३।ग्रि
७२६ रघुनाथ रीवा, नरेश	७३७।६२७	वि० १८८०ज १६११गद्दी १६३६म	५३२।वि०१८८३	१८०७।१८८०ज १६३६म

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
र				
७२७ रघुराय १ कवि, बुन्देलखण्डी भाट	७३४।६१२	१७९०	४२०।ज	९०१।ज
७२८ (रघुराय कवि २) ७३४	७३५।६४४	१८३०	(४२०)	११५९।ज
७२९ रघुराम गुजराती	७८७।	(१७५७अ)	८६६।अ	३४१।१७०१र
७३० रघु लाल	७३६।६४९	—	८६७।अ	१६५९।अ
७३१ रज्जब	७७७।६४८	(१६२४ज १७४६म)	८६८।अ	३३९।१७००र
७३२ (रतन १, ब्राह्मण, बनारसी) ७६४	७६५।६४६	१९०५अ०	—	८१३।२,१८०५र
७३३ रतन २ श्रीनगर, बुन्देलखण्डी	७६६।६५२	१७९८उप	(१५५)	८७५।ज
७३४ रतन ३, पन्नावाले	७६७।६५३	१७३८अ०	१५५।ज	६२९।ज
७३५ रतनपाल	७६८।६५४	(१७४२उप)	८६९।अ	५२३।१७४२र
७३६ रतनेश बन्दीजन बुन्देलखण्डी	७६३।६२३	१७८८अ०	१९९।१६२०उप	२६७।१६७८उप
७३७ रत्न कुँवरि, बनारसी	७६४।६२४	१८०८अ०	३७६।१७७७ज	२३७८।१९४४अ
७३८ रन छोर	७७०।६२९	१७५०उप	१८९।१६८०उप	४९४।अि
७३९ (रविदत्त) ९०३	७६२।६२२	१७४२	३०४।ज	६४०।ज
७४० रविनाथ, बुन्देलखण्डी	७६१।६२१	१७९१	४२५।ज	९२१।ज
७४१ रसगानि	७४५।६५७	१६३०उप	६७।ज	१५१।१६२५ज, १६८५म
७४२ रस धाम	७९४।	१८२५	४६२।ज	१०८३।ज
७४३ रसनायक तालिब अली बिलग्रामी १२१	७५७।६२५	१८०३	४३९स०	८०७।र

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
र				
७४४ रमपुञ्जदास	७५४।६६३	(१७८१ग्र)	९०१।ग्र	७०६।१७८७र
७४५ रमरङ्ग	७५२।६५१	१९०१	६२०।ज	१७९६।१९००र, २२७६।ज
७४६ रसराज	७४४।६१३	१७८०	४०४।ज	८४६।१७८५ज, १८१०र
७४७ रस रास	७५०।६४१	१७१५ग्र०	२८५।उप	२२४।१६६० से पूर्व
७४८ (रसरूप) ७९२ (रामरूप)	७५१।६४२	(१८११ग्र)	—	—
७४९ रसरूप	७९२।६४२	१७८८उप	४१५।ज	८५०।१८१०र
७५० रसलाल बुन्देलखण्डी	७५६।६६५	१७९३	४२८।ज	६२१।१७७३ज, १७६०र
७५१ रसलीन	७५५।६६४	१७९८ग्र	७५४।१७२३ से पूर्व	७२१।र
७५२ रसाल, अङ्गने लाल, बन्दीजन	७४६।६३१	१८८०उप	६०९।ज	२०४०।ज
७५३ रसिकदास, ब्रजवासी	७४७।६३२	(१७४४-५१र)	७७४।१८४३ से पूर्व	३७३।१७०७।र
७५४ रसिक विहारी	७९५।	१७८०उप	४०५।ज	८५१।ज
७५५ रसिक लाल	७५३।६६२	१८८०	५३४।ज	१९९५।२ ग्र
७५६ रसिक शिरोमणि	७४९।६३८	१७१५उप	२९७।१६४८ज	३४७।१७०५र
७५७ रसिया नजीब खाँ, पटियाला	७४८।६३३	वि०	७८८।१८६९ से पूर्व	२२१२।ग्रि
७५८ (रहीम) १३८	७९८।६६९	(१६१३-८३जी)	७५६।१७२३ से पूर्व	६८२।ग्रि
७५९ राजा रणजीत सिंह जाङ्गरे, ईसानगर	७९१।	वि०	७१६।वि० १८८३	२४७४।१९४०उप
७६० राजा रणधीर सिंह, शिरमौर सिंगरामऊ	७७६।६६१	वि० (१८७८-१९५२जी)	७३५।१८४०ग्र १८६०ग्र	२९८८।१८७७ज१९५२उप

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
र				
७६१ राजाराम १	७७४।६३७	१६८०	२३३।ज	३८६।ज
७६२ राजाराम २	७७५।६६०	१७८८	३९६।१७२१ज	९२२।ज
७६३ रावेलाल, कायस्थ	७९३।	१९११उप	५५४।ज	२४७६।ज,१९४०उप
७६४ राना राजसिंह	७९७।	१७३७उप	१८५।१६५४-८०रा	—
७६५ राम कवि १ रामवरण	७१६।६००	—	९०७।अ	१६७९।अ
७६६ रामकृष्ण चौबे, कालिञ्जर	७२७।६१६	१८८६अ०	५३८।ज	५८९।१७५४ से पूर्व
७६७ रामकृष्ण २	७२९।६४५	—	(५३८)	२१२३।ज, १८८६
७६८ रामचरण	७३२।६६६	(१८४१-८१२)	९०२।अ	१६७१।अ
७६९ राम जी कवि	७१८।६०२।६३६	१६९२	२५२।ज	४३२।१७०३ज
७७० रामदत्त	७८५।	(१८५५उप)	९०३।अ	१६७३।अ
७७१ रामदया	७३०।६५९	—	९०४।अ	१६७४।अ
७७२ रामदास	७१९।६०३	१८३९	४७८।ज	११७८।ज
७७३ रामदास बाबा	७३३।६६८	१७८८अ०	११२।१५५०उप	१०५।ग्रि
७७४ रामदीन त्रिपाठी, टिकमपुर	७२१।६०८	१९०१उप	५२४।१८४०उप	१९४१।ग्रि
७७५ रामदीन, बन्दीजन, अलीगञ्ज	७२२।६०७	१८९०	६६९।ज	२१२४।ज
७७६ रामनाथ प्रधान, अवध	७२४।६१०	१९०२अ	६२४।ज	१२४५।१८५७ज
७७७ रामनाथ मिश्र, आजमगढ़	७८८।	(१९६४उप)	९०६।अ	२०५२।१९१२र

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
र				
७७८ रामनारायण, कायस्थ	७२६।६१४	वि०	७३७।वि०१८८३	२४७७।१९४०उप
७७९ रामप्रसाद अग्रवाल, मीरापुर	७९९।६७०	१९०१उप	६३९स०	२०४१।१९१०र
७८० रामप्रसाद, वन्दीजन, बिलग्रामी	७८६।६०६	१८०३अ०	४४४।स०	८०९।र
७८१ राम भट्ट, फर्रुखाबादी	७८३।६०४	१८०३उप	४४५।ज	९६२।ज
७८२ रामराइ राठौर	७३१।६६७	(१६४९उप)	७७५।१८४३ से पूर्व	१९३९।ग्रि
७८३ रामलाल	७२३।६०९	—	९०८।ग्र	२०२११,१९०६ से पूर्व
७८४ रामशरण ब्राह्मण	७८२।	१८३२उप	३७९।१८००उप	११४३।ग्रि
७८५ रामसखे	७२८।६१८	(१८०४ग्र)	९०९।ग्र	८६०।१८१५र
७८६ रामसहाय कवि,कायस्थ, बनारसी	७२०।६०५	१९०१उप	५६८।१८२०उप	१२३५।१८७३र
७८७ राम सिंह, बुन्देलखण्डी	७१७।६०१	१८३४उप	३८०।१८००उप	११४४।ग्रि
७८८ राम सिंह देव सूर्यवंशी क्षत्रिय, खडासावाले	७२५।६११	—	९०५।ग्र	१६७७।अ
७८९ रामसेवक	७८४।	(१८५०उप)	९१०।ग्र	१६८८।ग्र २३०२।१९०८ज
७९० राय कवि	७७८।६२८	—	९१३।ग्र	—
७९१ रायचन्द नागर, गुजराती	७८०।६५८	(१८३१ग्र)	९१२।ग्र	३२६।१७००र
७९२ (राय जू) ७७८	७७९।६३०	—	(९१३।ग्र)	१६९२।अ
७९३ राव रतन राठौर रतलाम	७९६।	(१७०७उप)	२०७।१६५०उप	३७६।ग्रि

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
र				
७९४ राव राना, वन्दीजन, चरखारी	७६६।६२६	१८६१उप	५२१।१८४०उप	१९०२।ग्रि
७९५ रुद्रमणि चौहान	७९०।	१७८०	४०६।ज	८५२।ज
७९६ रुद्रमणि ब्राह्मण	७८९।	१८०३उप	३५२।१७४०उप	७६२।ग्रि
७९७ रूप	७७१।६३४	(१८३७ से पूर्व)	(२६८)	१६९६।अ
७९८ रूपनारायण कवि	७७२।६३५	१७०५अ०	२६८।ज	५१०।१७११ज, १७४०म
७९९ रूप साहि, कायस्थ	७७३।६५५	१८१३अ	५०३।१८००उप	८५८।र
ल				
८०० लक्ष्मण	८२६।	(१९००-०७र)	९१४।अ	१९७८।१९००र
८०१ लक्ष्मणदास	८१३।६८०	(१८८६ से पूर्व)	७७६।१८४३ से पूर्व	१८६६।१८८६ से पूर्व
८०२ (लक्ष्मणशरणदास)	८१८।६९३	—	७७७।१८४३ से पूर्व	१२७।१९२०र
८०३ लक्ष्मण सिंह	८१४।६८१	१८१०	९१५।अ	११६१।१८६०र
८०४ लक्ष्मी	८२९।	(१८१० से पूर्व)	९१६।अ	५९०।१७५४ से पूर्व
८०५ लक्ष्मीनारायण मैथिल	८२५।	१५८०ई० उग	१२४।१६००उप	२१४।ग्रि
८०६ लछिराम १, वन्दीजन, होलपुर	८१६।६८४	त्रि० (१९८१ग्र)	७२३ वि० १८८३	२२८१।१९३०र
८०७ लछिराम २, ब्रजवासी	८१७।६८७	(१७०९ से पूर्व)	—	१०८४।१८५०।१७९१
८०८ लच्छू	८१५।६८३	१८२८	४६६।ज	११०१।ज
८०९ लतीफ	८२१।६९१	१८३४	४७०।ज	२३२७।१९३४ र

	सरोज		ग्रियर्सन	विनोद
ल				
८१० ललितराम	८२८।	—	६१७।अ	२५४३।१९४५र
८११ लाजव	८२७।	—	६१८।अ	१७१०।अ
८१२ लाल कवि, प्राचीन	८००।६७१	१७३८उप	२०२।१६५८उप	५५३।१७१५ज । १७६४ग
८१३ लाल कवि २, वन्दीजन, बनारसी	८०१।६७२	१८४७उप	५६१।१७७५उप	९९८ग्रि
८१४ लाल कवि ३, बिहारी लाल त्रिपाठी, टिकमापुर	८०२।६७३	१८८५उप	५२३।१८४०उप	१८९६।ग्रि
८१५ लाल कवि ४	८०३।६७४	—	६१९।अ	—
८१६ लाल कवि ५, लल्लू लाल गुजराती	८०४।६९०	१८९२अ०	६२९।१८०३उप	१११६।१८२०ज, १८८१उप
८१७ लाल गिरिधर, वेसवारेवाले	८०५।६७५	१८०७	४५१।ज	७९२।१८००र
८१८ लालचन्द	८०७।६७७	—	६२०।अ	—
८१९ लालनदास ब्राह्मण, डलमऊ	८०८।६८६	१६५२अ०	१००।ज	१७८।१६५२र
८२० (लालमुकुन्द कवि) ६३४	८०६।६७६	१७७४उप	३९१।ज	७९१।ज
८२१ लाल बिहारी	८३०।	१७३०	२९३।ज	६०२।ज
८२२ लाला पाठक, रुकुमनगर वाले	८०९।६९२	१८३१	४६९।ज	११६२।ज
८२३ लीलाधर	८१२।६८२	१६१५अ०	१९०।१६२०उप	२५१।१६७६र
८२४ लेखराज	८२२।६८५	वि० (१८८८ज १९४८म)	६९७।वि०१८८३	१८१९।१८८८ज १९४८म

	सरोज		ग्रियर्सन	विनोद
ल				
८२५ लोकनाथ	८२०।६८९	१७८०उप	७५३।१७२३ से पूर्व	५३६।१७६०र
८२६ लोकनाथ उपनाम बनारसीनाथ	८२३।	—	—	—
८२७ लोकमणि	८२८।	(१८१०से पूर्व)	९२१।अ	५९४।१७५४र
८२८ लोवे	८१९।६८८	१७७०उप	७५२।१७१८ से पूर्व	५११।१७१४ज
८२९ लोने, वन्दीजन बुन्दलखण्डी	८१०।६७९	१८७६	९२२।अ	१९८०।ज
८३० लोने सिंह वाछिल मितौली	८११।६७८	१८९२अ	६१४।ज	२१२७।ज
व				
८३१ वजहन	८३२।		९२३।अ	१५६१।अ
८३२ वहाब	८३३।	—	९२४।अ	१३२९।अ
८३३ वाहिद	८३१।६९५		९२५।अ	१५८०।अ
श				
८३४ शङ्कर १	८५९।७३६	—	(६१३)	—
८३५ शङ्कर २	८६०।७५२	—	—	—
८३६ शङ्कर ३ त्रिपाठी, बिसवा	८६१।७५३	१८९१	६१३।ज	२२८३।१९३०र
८३७ शङ्कर सिंह ४, चउरा, सीतापुर	८६२।७५४	वि०	—	२२८४।१९३०र
८३८ शम्भु	९३८।	(१७१२से पूर्व)	७४१।१६५५ से पूर्व	३९८।ग्रि

	सरोज		ग्रियर्सन	विनोद
श				
८३९ शम्भु १ राजा शम्भुनाथ	८३७।७२२	१७३८उप	१४७।१६५०उप	३५२।ग्रि
८४० शम्भुनाथ २, वन्दीजन	८३८।७२३	१७९८ग्र	३५७।१७५०उप	—
८४१ (शम्भुनाथ ३ मिश्र) ८३८	८३९।७२४	१८०३उप	३३८।१७५०उप	७४०।१८०६उप
८४२ शम्भुनाथ कवि ४ त्रिपाठी डाडियाखेरा वाले'	८४०।७२५	१८०९ग्र	३६६।उप	८२६।र
८४३ शम्भुनाथ मिश्र ५, सातनपुरवा	८४१।७२६	१९०१ग	६२१।ज	१८०८।र
८४४ शम्भुनाथ मिश्र, गञ्ज मुरादाबाद	९५३।७२७	—	९२८।ग्र	११९१।१८६७र
८४५ शम्भुप्रसाद	८४२।७२८	—	९२९।अ	१७१।६ग्र
८४६ शत्रुजीत सिंह, बुन्देला	९४५।	(१८२२उप)	९२६।अ	९२३।१८२०र
८४७ (शशिनाथ) ९१६	९१७।७७६	(१७९४–१८२०र)	९३१।ग्र	—
८४८ शशि शेखर	९१५।७७७	१७०५	२५५।१६४२ज	४७०।ग्रि
८४९ शिरोमणि	८९९।७३५	१७०३उप	२६२।ज	२९८।१७००र
८५० शिव कवि, प्राचीन	९३४।	१६३१	८८।ज	—
८५१ शिव कवि १, अरसैला,वन्दीजन	८४३।७१२	१७९६ज	३३९।१७७०उप	७३४।१८००र
८५२ शिव कवि २, वन्दीजन बिलग्रामी	८४४।७१३	१७९५	४३१।१७३९ज	९२४।१७९६ज

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
श				
८५३ शिवद	८४९।७१८	—	(५८८)	—
८५४ शिवदत्त, ब्राह्मण, काशी	९४६।	१९११उप	५८८।ज	• २४८१।ज,१९४०र
८५५ शिवदास	८४८।७१७	(१८०९ग्र)	७५८।१७५३ से पूर्व	८३७।ग्रि
८५६ शिवदीन	८५२।७२१	—	—	१७२२।अ
८५७ शिवदीन मिनगा	८५७।७७०	१९१५उप	६०६।ज	२०७४।र
८५८ शिवनाथ बुन्देलखण्डी	८४६।७१५	१७६०उप	१५२।१६६०उप	७६७।१७९८र
८५९ शिवनाथ शुक्ल, मकरन्दपुर	८५५।७६६	१८७०अ०	६३२।ज	१२८६।१८८२र
८६० शिवप्रसन्न शाकद्वीपी, ब्राह्मण	८५८।७८९	वि० (१८८८ज)	७२६।वि०१८८३	२४८२।१९४०उप
८६१ शिवप्रसाद सितारे हिन्द	८४५।७१४	वि० (१८८०ज१९५२म)	६९९।१८२३ज१८८७जीवित	१८१६।१८८०ज, १९५२म
८६२ शिवप्रकाश सिंह, डुमराव	८५६।७६८	१९०१	६४३।ज	२१२८।१८९१ज
८६३ शिवराज	८५१।७२०	(१८६६ग्र)	९३२।अ	१७२३।अ
८६४ शिवराम	८४७।७१६	१७८८उप	४१६।ज	—
८६५ शिवलाल दुवे	८५०।७१९	१८३९	४७९।ज	११७९।ज
८६६ शिव सिंह, प्राचीन	८५३।७१०	१७८८अ०	४१७।ज	६२५।ज
८६७ शिवसिंह सेगर	८५४।७११	१८७८ई०ग्र	५९५।ज	२१९९।१८९०ज, १९३५म
८६८ शीतल त्रिपाठी टिकमापुर	८८५।७५६	१८९१ उप	५२५।१८४०उप	१९०५।ग्रि
८६९ शीतलराय, वन्दीजन	८८६।७५७	१८९४	६१५।ज	१८३८।र

सरोज		ग्रियर्सन		विनोद
श				२२१५।ग्रि
८७० शेखर	९१४।७७२	(१८५५ज१९३२ग)	७९५।१८६६ से पूर्व	—
८७१ (शोभनाथ)	८९८।७८४	—	९३७।ग्र	९११।३,१८१८र
८७२ (शोभा)	८९७।७३४	—	९३६।ग्र	४७१।ज
८७३ श्याम	८९६।७३१	१७०५	२९९।ज	६८९।ज
८७४ श्यामदास	८९१।७९१	१७५५	३१९।ज	१९४७।ग्रि
८७५ (श्याममनोहर)	८९२।७९३	—	७७९।१८४३से पूर्व	४७२।ग्रि
८७६ श्यामलाल	८९४।७८३	१७७५	(२९९)	८२७।ग्रि
८७७ श्यामलाल, कोडा जहानाबाद	९५५।७९७	१८०४उप	३४१।१७५०उप	६९०।ज
८७८ श्यामशरण	८९३।७८७	१७५३ग्र०	३०९।ज	३९३।ग्रि
८७९ श्रीकर	९४७।	(१७१२से पूर्व)	७४५।१६५५ से पूर्व	४७३।र
८८० श्री गोविन्द	८६३।७४०	१७३०उप	२११।स०	९०२।ज
८८१ (श्रीधर१ प्राचीन)८६८	८६६।७००	१७८९उप	—	१२४२।१८५०ज, १८८४ग्र
८८२ श्रीधर २ राजा सुब्बा सिंह	८६७।७०१	१८७४ग्र	५९०।उप	.५१२ श्रीधर।१७४०र
८८३ श्रीधर मुरलीधर ३	८६८।७०२	(१७६९ग्र)	१५७ श्रीधर १६८३	५५१।१७३७ज
			१५६ मुरलीधर। स०	३८७।ज
८८४ श्रीधर ४ राजपूताना वाले	८६९।७०६	१६८०अ०	१६६।ज	६४३।१७७७ग्र
८८५ श्रीपति	८६५।६९९	१७००अ०	१५०।ज	

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
श				
८८६ श्री भट्ट	८६४।७९२	१६०१उप	५३।ज	८७।१६३०र
८८७ श्रीलाल गुजराती	९५२।७९६	१८५०ई०उप	४८६।ज	१२३२।ज
८८८ श्री हठ	९५६।	१७६०अ०	७४६।१६५५ मे पूर्व	३९४।ग्रि
स				
८८९ सङ्कम	९०१।७३८	१८४०ज	४८०।ज	१२०५।ज
८९० सन्त १	८७३।७४७	—	—	—
८९१ सन्त २, प्राचीन	८७५।७८५	१७५९ग्र०	३१८।ज	—
८९२ सन्तन१, बिंदकी	८७०।७२९	१८३४ग्र०	४७२।ज	५४४।१७३०ज
८९३ सन्तन २, जाजमऊ	८७१।७३३	१८३४अ०	४७३।ज	५४३।१७२८ज
८९४ सन्तदास, ब्रजवासी	८७४।६९९	१६८०उप	२३५।उप	२७६।र
८९५ सन्तवकस, वन्दीजन, हौलपुर	८७२।७३२	वि०	७२४।वि०१८८३	२४८७।१९४०उप
८९६ सम्पति	९०५।७५५	१८७०	६५२।ज	१९८१।ज
८९७ सकल	९२०।७८०	१६९०।	२४८।ज	४२४।ज
८९८ सखीसुख, ब्राह्मण	८७८।७४१	१८०७उप	४५३।ज	१०१८।ज
८९९ सगुणदास	९२५।७९४	(१६००उप)	७७८।१८४३ से पूर्व	१९४९।ग्रि
९०० सन्तजीव	९३६।	१८०३उप	३५३।१७४०उप	७६४ग्रि

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
स				
९०१ सदानन्द	९१९।७७९	१६८०	२३४।ज	२८३।१६८५र
९०२ सदाशिव	९३३।	१७३४उप	१८७।१६६०उप	४१२।ग्रि
९०३ सनेही	९४८।	(१८१० से पूर्व)	७५७।१७५३ से पूर्व	८३८।ग्रि
९०४ सबल श्याम	८९५।७७४	(१६८८ ज)	९२७।अ	१३३०।अ १३७८।अ
९०५ (सबल सिंह) ९१३	९१२।७६९	(१७२७अ)	(२१०)	(३६०)
९०६ सबल सिंह चौहान	९१३।७९५	१७२७अ	२१०।ज	३६०।१७१८–८१अ
९०७ समनेश, कायस्थ, रीवा	९४४।	१८८१उप	५२८।१८१०उप	१०७०।१,१८४७र
९०८ सम्मन	९०२।७३९	१८३४अ०	४७१।ज	१११३।ज
९०९ समर सिंह क्षत्रिय	९५४।	वि०	७२५।वि०१८८३	—
९१० सरदार बनारसी	९२७।६९७	(वि०१९०२र, १९४०म)	५७१।वि०१८८३	१८०९।१९०२–४०र
९११ सर्वसुख लाल	९५१।	१७९१	४२४।ज	५९२।१७५४ से पूर्व
९१२ सवितादत्त बाबू	९०३।७४८	१८०३अ०	(३०४ रविदत्त १६८५ ज)	९६४।ज
९१३ सहजराम बनिया	८८९।७६३	१८६१ अ०	५९२।ज	७०९।१,१७८९ र
९१४ (सहजराम सनाढ्य) ८८९	८९०।७८६	१९०५ अ०	६८६ ज	२१८२।ज
९१५ सहीराम	९१२।७७८	१७०८	२७५।ज	४९६।ज
९१६ सागर	९०९।७६१	१८४३ उप	४८२।ज	११२८।ज
९१७ साधर	९०४।७४९	१८८५	४९८१७९८ ज	१२७७।ज

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
स				
९१८ सामन्त	९२१।७८१	१७३८ उप	१७८।ज	४९८।र
९१९ सारङ्ग	९३२।	१३३० अ०	८।१३६३ उप	१८।१३५७ र
९२० सारङ्ग असोधर वाले	९५८।७९९	१७९३ उप	३४३।१७५० उप	८२८।ग्रि
९२१ साहव	९३९।	(१७१२ से पूर्व)	७४२।१६५५ से पूर्व	३९५।ग्रि
९२२ सीरताज वरसाने व	९०६।७५९	१८२५	४६३।ज	१०८६।ज
९२३ सिद्ध	९५७।	१७८५ अ०	७४३।१६५५ से पूर्व	३९६।ग्रि
९२४ सिंह	९००।७३७	१८३५ उप	४७४।ज	११६४।ज
९२५ मितारामदास वनिया	९२३।७८८	वि० (१९०७ ज)	७२७।वि० १८८३	२३३८।१९०७ ज
९२६ सुन्दर १, ग्वालियर	८७६।७५०	१६८८ ग्र	१४२।उप	२८८।र
९२७ सुन्दरदास २	८७७।७५१	(१६५३ ज १७४६ म)	१६४।१६२० उप	२५२।१६७७-१७४६।र
९२८ सुन्दर, वन्दीजन, असनी	९४१।	—	९३४।अ	१७५५।अ
९२९ सुकवि	९२४।७९०	१८=५	४९९।१७९८ज	१२७८।ज
९३० सुखदेव मिश्र १ कपिल ।	८३४।७०९	१७२८ ग्र	१६०।१७००उप	४३०।र' १६९०ज
९३१ (सुखदेव मिश्र २ दौलतपुर)	८३५।७०८	१८०३ अ०	३५३।१७४० उप	(४३०)

८३४

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
स				
९३२ (मुदेखव कवि ३ अन्तरवेद)८३४	८३६।७०७	१७९१ अ०	३३५।१७५० उप	(४३०)
९३३ सुखदीन	८८०।७४३	१९०१	६८१।ज	२२८८।ज
९३४ सुखलाल	९१०।७६५	१८५५ उप	—	—
९३५ सुखलाल	९३५।	१८०३ उप	३५४।१७४० उप	७६३।ग्रि
९३६ सुखराम	८७९।७४२	१९०१	(७२९) स०	—
९३७ सुखराम	९४३।	वि०	७२९।वि० १८८३	२४८४।१९४० र
९३८ सुखानन्द	९५०।	१८०३	४४६।ज	९६६।ज
९३९ सुजान	९११।७४० ७६७	(१८०० उप)	९३३।अ	१७५२।अ
९४० सुदर्शन सिंह	९३७।८००	१९३० उप	७०९ स०	२२८९।१९३० र
९४१ सुबुद्धि	९४०।	(१७१२ से पूर्व)	७४४।१६५५ से पूर्व	३९७।ग्रि
९४२ सुमेर	९०७।७६०	(१८१० से पूर्व)	—	८३९।१८१० से पूर्व
९४३ सुमेर सिंह साहबजादे ·	९०८।७७१	(१९६३ जीवित)	७५९।१७५३ से पूर्व	८३९।१८१० से पूर्व
				२४८५।१९४०र
९४४ सुलतान पठान, नबाव सुलतान	८८।७६२	१७९१ उप	२१४।ज	५४१।र
मोहम्मद खाँ, राजगढ, भोपाल				—
९४५ सुलतान २	८८८।७६४	—	९३५ अ	

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
स				
९४६ सुवश शुक्ल	९२६।७५८	१८३४ ज	५८९।ज	११२२।१८६२ ग्र
९४७ सूखन	८८१।७४४	१९०१	६८२।ज	२२९०।ज
९४८ सूदन	९२९।७०३	१८१० उप	३६७।ज	८५५।र
९४९ सूरज	९४९।	(१७१२ से पूर्व)	७६०।१७५३ से पूर्व	८४०।ग्रि
९५० सूरति मिश्र	९३१।७०५	१७६६ ग्र	३२६।१७२० उप	५५५।१७४० ज, १७६६ ग्र
९५१ सूरदास	९२८।६९८	१६४० म,उप	३७।१५५० उप	५२।१५४० ज, १६२० म
९५२ सेख	८८२।७४५	१६८० उप	२३६।ज	५४७।१७७५ से पूर्व
९५३ सेन	९२२।७८२	१५६० अ०	१२।१४०० उप	२७।ग्रि ५१।र
९५४ सेनापति	९३०।७०४	१६८० उप	१६५।ज	२७८।१६४६ ज
९५५ सेवक १, वनारसी	८८४।७७३	वि० (१८७२ ज १९३८ म)	५७९। वि० १८८३	१८०५।१८७२ ज १९३८ म
				१९०९।र
९५६ (सेवक २, असनी) ८८४	८८३।७४६	१८९७ उप	६७७।उप	७२०।१७९४ग्र
९५७ सोमनाथ	९१६।७७५	१८८० अ०	—	८३६।१८०९ उ
९५८ सोमनाथ ब्राह्मण, साठी वाले	९४२।	१८०३ उप	४४३ ब्राह्मण नाथ।ज , ४४७ सोमनाथ	
ह				
९५९ हजारी लाल त्रिवेदी	९९७।८१८	वि०	७१८। वि १८८३	२४८८।१९४० उप

सरोज		ग्रियर्सन		विनोद
ह				
९६० हठी	९७४।८१४	१८८७ अ०	६६४।ज	९८२।१८४७ ग्र
९६१ हनुमन्त	९७६।८१७	(१९०४-५६ उप)	९३८।ग्र	२२३१।१९०३ ज
९६२ हनुमान	९७५।८१५	वि० (१८९८ ज, १९३६)	७९६।१८६९ से पूर्व	२१८५।१८९८ ज, १९३६म
९६३ हरजू	९८७।८३१	१७०५	२७०।ज	७५३।१७९२ र
९६४ हरदयाल	९६५।८०५	—	९४१।ग्र	१७६८।ग्र
९६५ हरदेव	९८९।८२८	१८३० ज	५०५।१८०० उप	—
९६६ (हरि कवि)९९५	९७१।८११	(१७६६ ज, १८३५ म)	७६१।१७५३ से पूर्व	८५३।१८१० र
९६७ हरिकेश	९६८।८१०	१७६० उप	२०३।१६५० उप	६६१।१७८८र
९६८ हरिचन्द वन्दीजन, चरखारी	१००२।	(१७२२-८८ उप)	२०४।१६५० उप	५१४।१७४० र
९६९ हरिचन्द बरसाने वाले	९९६।८३९		९४२।ग्र	१७७०।ग्र
९७० हरिचरणदास	९९५।८३८	(१७६६ ज, १८३५म)	९३९।ग्र	८५९।१७६६ ज, १८३५ ग्र
९७१ हरिजन	९८६।८३०	१६९०	२४९।ज	४२५।ज
९७२ हरिजन, ललितपुर	१००१।	१९११ उप	५७५।स०१८५१	१९८२।१९०४ र
९७३ हरि जीवन	९८५।८२७	(१९३८ उप)	९४०।ग्र	१७७१।ग्र
९७४ हरिदास १, कायस्थ, पन्ना	९६०।८०१	१९०१ अ०	५४६।ज	१८४८।१८७६ ज १९००।म
९७५ हरिदास २, वन्दीजन, बादा	९६१।८०२	१८९१ अ०	५३९।ज	२०७५।ज
९७६ हरिदास स्वामी, वृन्दावनी	९६२।८३७	१६४० अ०	५९।१५६० ज	६४।१६०७र

	सरोज		ग्रियर्सन	विनोद
ह				
९७७ हरिदेव बनिया	९६३।८०३	(१८९२-१९१४ र)	९४३।ग्र	११४८।१८३० र
९७८ हरिनाथ महापात्र	९५९।८०८	१६४४ ज	११४।उप	३१२।१६९० र
९७९ हरिनाथ गुजराती	९९८।	१८२६ ग्र	३५५।ज	८७७ ग्र
९८० हरि भानु	९७९।८२१	—	९४५।ग्र	१७७२। ग्र
९८१ हरिराम प्राचीन	९९१।८३३	१६८०	१४१।ज	(३७७) १७०८ र
९८२ हरि लाल १	९७३।८१३	—	(९४६)	—
९८३ हरि लाल २	९९०।८२९	—	९४६।ग्र	—
९८४ हरिवंश मिश्र, बिलग्रामी	९६९।८११	१७२९ उप	२०९।१६६२ उप	४१५।१७१९ र
९८५ हरिवल्लभ	९७२।८१२	(१७०१ ग्र)	९४४।ग्र	२९८।१,१७०१ र
९८६ हरिश्चन्द्र	९८४।८२६	वि० (१९०७ ज	५८१।१८५० ज	२१६९।१९०७ ज
		१९४२ म)	१८८५ म	१९४१ म
९८७ हरिहर	९६७।८०९	१७९४	४२९।ज	९२६।ज
९८८ हरीराम	९६४।८०४	१७०८ ग्र०	(१४१) स०	३७७।र
९८९ हित नन्द	९७८।८१९	—	९४७।ग्र	—
९९० हितराम	१०००।	(१७२२ ग्र)	७६२।१७५३ से पूर्व	७९९।१८०० र
९९१ हित हरिवंश	९७०।८२०	१५५९ उप	५६।१५६० उप	६०।१५३० ज, १६०९ म
९९२ हिमाचल राम	९९२।८६४	१९०४	६२६।ज	२२९४।ज

	सरोज	ग्रियर्सन		विनोद
ह				
९९३ हिम्मत बहादुर	९९९।	१७६५ ज	३७८।१८०० उप	८१०-१८०३-५७ र
९९४ हिरदेश वन्दीजन	९९६।८०६	१९०१	५४७।ज	२१६८।ज
९९५ हीरामणि	९८८।८३२	१६८० उप	२३७।ज	३४८।ज
९९६ हीरालाल	९९३।८३५	(१८३९ अ)	९४८।अ	१०३५।२,१८३९ र
९९७ (हुलास)	९९४।८३६	—	(९४९।अ)	—
९९८ हुलासराम	१००३।	—	९४९।अ	१२०५।१, १८७० र, १८४५ ज ४७४।१७०८ ज
९९९ हुसैन	९८०।८२२	१७०८	२७६।ज	३७८।र
१००० हेम	९८३।८२५	—	९५०।अ	—
१००१ हेम गोपाल	९८१।८२५	१७८०	९५१।अ	८५४।ज
१००२ हेमनाथ	९८२।८२४	(१८७५ से पूर्व)	९५२।अ	१७९९।अ
१००३ होतराय	९७७।८१८ अ	१६४० उप	१२६।उप	१४६।र

४ पुनश्च

सरोज सर्वेक्षण जुलाई ५७ मे उपाधि हेतु प्रस्तुत किया गया था और जनवरी ५९ मे यह प्रकाशनार्थ हिन्दुस्तानी एकेडेमी को सशोधित करके दिया गया। अव दिसम्बर ६६ के अत मे प्राय साढे सात वर्ष वाद ग्रन्थ छप पा रहा है। इन साढे सात वर्षो मे अनेक कवियो के संवध मे नवीन सूचनाएँ मिली है और कालिदास हजारा के सम्बन्ध मे विशेष शोध कार्य हुआ है। यद्यपि भूमिका मे हजारा के सम्बन्ध मे कोई विवेचन नही किया जा सका है, पर 'सर्वेक्षण' के थोडे वहुत अश जो मेरे पास प्रूफ-शोध के लिए आए, उनमे यथासम्भव हजारा सम्बन्धी शोध का लाभ उठा लिया गया है। शिवसिंह का खयाल है कि कालिदास ने सवत १७७५ के आस पास कालिदास हजारा नामक सग्रह प्रस्तुत किया था। इसी के आधार पर उन्होंने सैकडो कवियो का काल निर्णय किया है और अनेक 'प्राचीन' कवियो की सृष्टि कर ली है। पर मेरी शोध के अनुसार स०१८७५ के आस-पास किसी ने एक सग्रह प्रस्तुत किया था, जिसे सरोजकार ने कालिदास का किया हुआ सग्रह मान लिया और उनका रचनाकाल सौ वर्ष पूर्व का समझ लिया। इस शोध से अनेक प्राचीन कवियो का अस्तित्व परवर्ती नवीन कवियो मे समाविष्ट हो जाता है और अनेक कवियो की पूर्व काल रेखा १०० वर्ष इधर खिसक आती है। इस शोध का उपयोग समस्त सर्वेक्षण मे नही हो सका है। आज जव ग्रन्थ प्रकाशन के लिए प्रस्तुत है, यह आवश्यक है कि इसको अद्यतन वना दिया जाय और जो भी नवीन सूचनाएँ सुलभ हो सकी हैं, उनका समावेश इस ग्रन्थ मे कर दिया जाय।

जव मैंने सर्वेक्षण प्रारभ किया, मेरे पास सरोज का अतिम सस्करण था। यह सस्करण १९२६ ई० मे हुआ था। इसका उप-सम्पादन रूपनारायण पाण्डेय ने नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ के लिए किया था। यह ग्रन्थ प्रारम्भ से ही उसी प्रेस से प्रकाशित होता आ रहा है। वाद मे इसका तीसरा सस्करण भी मुझे मिल गया। यह सस्करण नवम्वर १८८३ ई० मे हुआ था। इसकी एक प्रति प्रो० विश्वनाथप्रसाद मिश्र के पास एव एक प्रति सभा मे है। मैंने सर्वेक्षण मे सप्तम संस्करण का ही उपयोग किया है। कवि परिचय वाले उद्धरण इसी से दिए गए हैं। जव मैं पी-एच० डी० की उपाधि लेने नवम्वर ५७ मे आगरा गया, तव मथुरा मे प० कृष्णदत्त जी वाजपेयी के यहाँ से सरोज की एक खण्डित प्रति लाया, जो परीक्षण से द्वितीय सस्करण की प्रति ठहरी। लौटने पर काशी मे ही सरोज का प्रथम सस्करण भी मिल गया। यह सस्करण अप्रैल १८७८ मे हुआ था। द्वितीय सस्करण अप्रैल १८७८ और नवम्वर १८८३ के वीच किसी समय हुआ होगा। सरोज के चतुर्थ सस्करण की एक प्रति श्री गोवर्द्धन लाल उपाध्याय, काशी के

पास है, जो प्राय पूर्णतया तृतीय संस्करण के मेल मे है। सरोज के पञ्चम, एव षष्ट सस्करण मेरे देखने मे नही आए। प्राप्त सभी सस्करणो का उपयोग मैंने शर्विसिंह सरोज के सम्पादन मे किया है, जो हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग से प्रकाश्यमान हे।

सर्वेक्षण जुलाई ५७ मे ही प्रस्तुत हो गया था और इस पर १६ नवम्बर ५७ को ही डॉक्टरेट की उपाधि भी मिल गई थी, पर यह ग्रन्थ अव, १९६६ के अन्त मे प्रकाशित हो रहा हे। इस अन्तराय मे मुझे और भी जो नवीन सामग्री मिली है, उसका सदुपयोग मैं इस पुनश्च मे कर ले रहा हूँ अत ग्रन्थ पूर्णता को ही प्राप्त हुआ है। मैं फारसी की इस उक्ति मे विश्वास रखता हूँ—"देर आयद दुरुस्त आयद", हिन्दी की इस उक्ति मे नही—"काता और ले दौडी"।

३ अजवेस—'असनी के हिन्दी कवि' मे डॉ० विपिनविहारी त्रिवेदी ने इस कवि पर अच्छा प्रकाश डाला हे। इस ग्रन्थ के अनुसार अजवेस के वाप शिवनाथ का जीवन काल स० १८१०-९४ वि० हे। शिवनाथ का सवध उदयपुर, रीवा और वलरामपुर दरवार मे था। अजवेस का जन्म असनी मे स० १८४१ वि० मे हुआ और निधन रीवा मे १९२६ वि० मे। यह रीवा दरवार मे महाराज विश्वनाथ सिह के यहाँ रहे। सवत १९०१ मे यह रीवा के राजा के वकील होकर उदयपुर नरेश महाराणा स्वरूप सिह के यहाँ गए, जहाँ इन्होने 'स्वरूप विलास' नामक नर-काव्य रचा। इन्ही के प्रयास से रीवा के तत्कालीन राजकुमार रघुराज सिंह का विवाह १९०८ वि० मे महाराणा सरदार सिंह की सुपुत्री से सपन्न हुआ। उसी विवाह के अवसर पर उदयपुर के राजकवि 'प्रसाद' ने जव'वाढी पातसाही प्रनै काल के जलद ज्योही' प्रतीक वाला प्रशस्ति कवित्त पढा, तव उसी के प्रत्युत्तर मे अजवेश ने रीवा नरेश की प्रशस्ति मे 'वाढी वादशाही ज्योही सलिल प्रलै के वढै' प्रतीकवाला कवित्त पढा था।

रीवा-नरेश की ओर से यह स० १९१७ से १९२२ वि० तक जोधपुर-नरेश के यहाँ भी रहे थे।

पृष्ठ १३० पर प्रमाद से शिवनाथ को अजवेस का पुत्र कह दिया गया है।

११ अमरेस—श्री वासुदेव गोस्वामी ने 'व्रज भारती' वर्ष १६ अक १०-१२ मे 'नीलसखी' पर एक लेख प्रकाशित कराया था, जिसका सार प्रभुदयाल मीतल ने 'चैतन्यमत और व्रज साहित्य मे नीलसखी के वर्णन मे सन्निविष्ट कर लिया है। मीतल जी के अनुसार नीलसखी जी का मूल नाम अमर जू था और वे अपनी प्रारभिक रचनाओ मे अमरेश छाप रखते थे। वे प्रसिद्ध भक्त कवि हरीराम व्यास के वशज थे और वाद मे वृन्दावन जाकर चैतन्य के गौडीय सप्रदाय मे दीक्षित होकर नीलसखी नाम से सखी-भाव की उपासना करने लगे थे। इनका जन्म १८८१ वि० मे वुन्देल

खड के सतारी नामक गाँव मे हुआ था। उक्त गाँव इनके पूर्वजो को स० १७६४ मे महाराज छत्रसाल द्वारा जागीर मे प्राप्त हुआ था। अमरेश छाप से षट्ऋतु वर्णन सम्बन्धी इनके कवित्त मिलते है। नीलसखी नाम से इनकी पदावली मिलती है, जिसमे ११० पद है।

सरोज मे दिया इनका समय स० १६३५ अशुद्ध हे। स० १७८१ इनका जन्मकाल है, ऐसी स्थिति मे १७७५ मे किसी सग्रह मे इनकी रचना का होना असम्भव है। हजारा १८७५ के आस-पास की रचना है, उसमे इनका सरोज मे उद्धृत प्रथम कवित्त 'मानुस कहाइ' है।

२० **अभयराम वृन्दावनी**--स० १९९७ वि० मे वृन्दावन से प्रकाशित 'निंवार्क माधुरी' मे निंवार्क सम्प्रदाय के भक्त-कवियो की रचनाओ का सग्रह है। इसमे अभयराम वृन्दावनी भी हैं। इस ग्रन्थ के अनुसार अभयराम जी निंवार्क सम्प्रदाय के थे। यह जाति के गौरवा ठाकुर थे—उसी जाति के जिस जाति के अष्टछापी कुम्भनदास थे। इनका जन्म वृन्दावन मे हुआ था। इनके प्रपौत्र नत्थी सिह सवत १९९७ मे विद्यमान् थे। अभयराम के पुत्र रूप सिह, रूप सिह के पुत्र वलवन्त सिह, वलवन्त सिह के पुत्र नत्थी सिह। यह १९९७ मे प्राय डेढ सौ वर्ष पहले अर्थात सवत १८५० वि० के आस-पास उपस्थित थे। स्पष्ट ही सरोज का सवत भ्रष्ट है। इनके एक नवीन ग्रथ की पाडुलिपि सभा मे है।

५८ **ऊधोराम**, ५९ **ऊधोकवि**—ऊधोराम की कविता १८७५ के आस-पास सकलित हजारा मे थी, अत इनका समय १६१० ठीक नही'। यह १८७५ के पूर्व अवश्य थे। यह १८५३ मे उपस्थित ऊधो से अभिन्न हो सकते है। ५९ सख्यक ऊधो का उदाहृत कवित्त भ्रमर गीत सम्वन्धी है। इसमे आया ऊधो कवि-छाप नही प्रतीत होता।

६३ **केशवदास**—महाकवि केशवदास वी समस्त रचनाओ का प्रकाशन, प० विश्वनाथ मिश्र द्वारा सम्पादित होकर, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहावाद से तीन भागो मे हुआ हे। प्रथम भाग मे दो ग्रन्थ हैं—(१) रसिक प्रिया (२) कवि प्रिया। द्वितीय भाग मे तीन ग्रन्थ है—(१) रामचन्द चद्रिका, (२) छन्द माला (यह नवीन ज्ञात पिगल ग्रन्थ हे), (३) शिखनख (यह भी नवीन ज्ञात ग्रन्थ है और कवि प्रिया वाले नखशिख से भिन्न हे)। तृतीय भाग मे चार ग्रन्थ है—(१) रतन वावनी, (२) वीर चरित्र, (३) जहाँगीर जस चद्रिका, (४) विज्ञान गीता।

७३ **कालिदास त्रिवेदी**—स्व० कृष्णविहारी मिश्र ने स्व-सम्पादित 'साहित्य-समालोचक' के भाग ३, सख्या ४ शिशिर (माघ-फाल्गुन) १९८४ वि० (१९२८ ई०) वाले अङ्क मे कालिदास के वधू-विनोद' नामक ग्रन्थ को 'वार वधू विनोद' नाम से प्रकाशित किया था।

जिसे शिवसिह ने कालिदास हजारा कहा है, वह वस्तुत स० १८७५ के आसपास का विरचित सग्रह है और कालिदास कृत नही है। इस सम्वन्ध मे—'नागरी प्रचा

२०१८, अङ्क २–४ (मालवीय शती विशेपाङ्क) मे प्रकाशित 'कालिदास हजारा' शीर्षक मेरा लेख पठनीय है।

७५ कवीन्द्र—खाजरिपोर्ट १९०४। २८ मे वर्णित 'रसदीपक' भी कालिदास त्रिवेदी के पुत्र उदयनाथ कवीन्द्र का ही 'रम चन्द्रोदय' नामक ग्रन्थ है। यह सखीमुख के पुत्र कवीन्द्र का 'रस दीपक नही है। शुक्ल जी ने कवीन्द्र के ग्रन्थ का रचनाकाल स० १७७७ दिया है, सरोज मे १८०४ दिया गया है। और खोज रि० १९०४।२८ के अनुसार इमका रचनाकाल १७९९ है। अत वास्तविक रचनाकाल अभी ऊहापोह का विषय है।

९२ कवि राम—एक 'राम कवि 'सवत १८१५ से पूर्व हुए है। इनका एक ग्रन्थ 'जस कवित्त' है। इममे इनकी लिखी किमी सावित खा तथा अन्यो की प्रशस्तियाँ है। ग्रन्थ का प्रतिलिपिकाल (जो रचनाकाल भी हो मकता है) सवत १८१५ है। ग्रन्थ भरतपुर की पब्लिक ल।इब्रेरी मे है।

९९ किंकर गोविन्द—'देवी पूजि सरस्वती' वाला दोहा महाकविराय शृगारी सुन्दर के 'सुन्दर शृगार' का मगलाचरण है।

१०३ कलानिधि कवि—(१) प्राचीन हजारा का रचनाकाल मवत १८७५ सिद्ध हो जाने मे इम कवि का अस्तित्व १०४ सख्यक कलानिधि मे विलीन हो जाता है।

११३ कृपाराम—रसिक प्रकाश भक्तमाल छप्पय ३४ के अनुसार कृपाराम गूदड रामदास गूदड के शिष्य हैं। यह कृपाराम बालकृष्ण के शिष्य है। अत दोनो भिन्न कवि हैं।

११८ कल्याणदास—यह गो० विठ्ठलनाथ के पौत्र थे, उनके द्वितीय पुत्र गोविन्द राय जी के पुत्र थे, प्रमिद्ध गो० हरि राय (१६४७-१७७२ वि०) के पिता थे। इनका जन्मकाल १६२५ के आम-पाम होना चाहिए।

१२१ कृष्णदास—अब कृष्णदाम अधिकारी के ममस्त पदो का सग्रह विद्या विभाग काकरौली से मन् २०१९ वि० मे 'कृष्णदाम' नाम मे प्रकाशित हो गया है। इसमे कुल ११३४ पद है।

१२२ केशव कश्मीरी—श्री भट्ट के गुरु इन केशव काश्मीरी ने व्रजभाषा मे रचना नही की है। इनके नाम पर सरोजकार ने जो पद उद्धृत किया है वह किमी दूसरे केशव का है। श्री भट्ट निम्बार्क मम्प्रदाय के प्रथम व्रजभाषा कवि हें, इमीलिए इनका 'युगल शतक' आदिवाणी भी कहलाता है। चैतन्य महाप्रभु नदिया मे सवत् १५६२-६६ मे रहे। इमी ममय कभी चैतन्य एव केशव कश्मीरी का शास्त्रार्थ हुआ रहा होगा।

१२४ कान्हरदास—मोभूराम जी हरिव्याम देवाचार्य के बारह प्रमुख शिष्यो मे मे प्रथम थे। यमुना तट पर पजाब मे बूडिया नामक स्थान पर जगादारी के निकट इनकी गद्दी थी। कान्हरदास

१७८ (रसिक) गोविन्द—अब हजारा का समय सवत् १८७५ सिद्ध हो गया है। अत हजारा मे इन रसिक गोविन्द की रचना हो सकती हे।

१८७ गुमान मिश्र—नैषध के अनुवादक गुमान मिश्र के आश्रयदाता महम्मदी जिला सीतापुर वाले अली अकवार खाँ का शासन काल सवत १८१४-२६ वि० है। अत नैपध का अनुवाद काल १८२४ ही ठीक हे। प्रकृति का अर्थ २४ ही करना चाहिए। स्वर्गीय डॉ० व्रजकिशोर मिश्र ने अपने शोध-प्रवन्ध 'अवध के प्रमुख कवि' मे पृष्ठ ४०–४२ पर इसका सम्यक विवेचन किया है और अली अकवर खाँ का यह कुर्सीनामा भी दिया है—
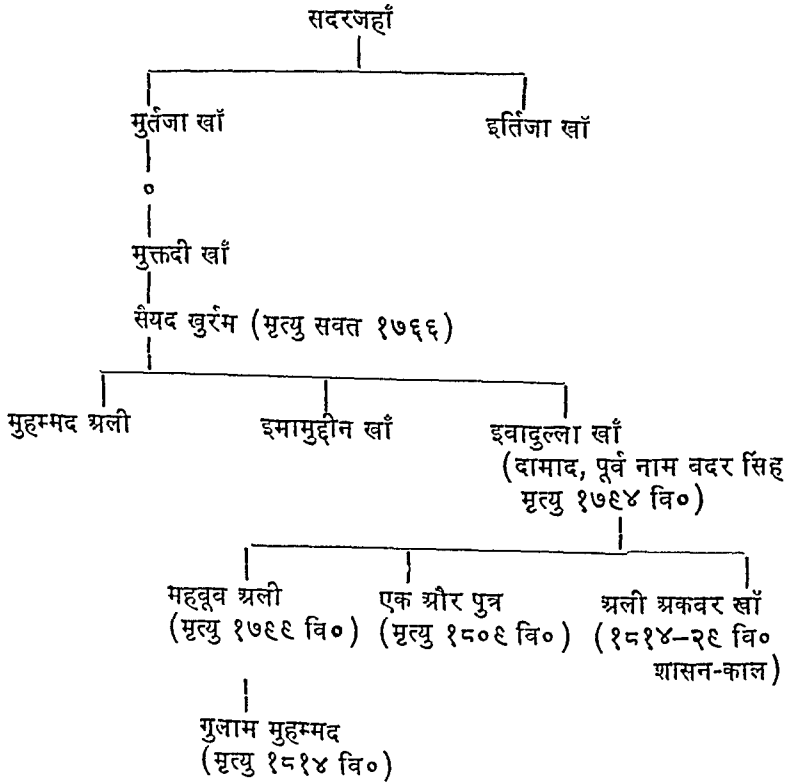
२०१ गुलाव सिह पजावी—'पजाव प्रातीय हिंदी साहित्य का इतिहास' मे प० चन्द्रकांत वाली ने इनकी माता का नाम गौरी और पिता का नाम रायचद दिया है।

गौरी जननी लोक मे, राइया जनक महान।
गुलाव सिंह सुत ताहि के, नाटक कीन वखान।—प्रवोधचन्द्र नाटक

वाली जी के अनुसार इनके चार ग्रन्थ उपलव्ध हे—

१ भाव रसामृत—यह वैराग्य शतक का अनुवाद है।

२ अध्यात्म रामायण—रचनाकाल १८३६ वि० ।

विविध छदो मे सस्कृत अध्यात्म रामायण के आधार पर लिखित ।

३ प्रवोधचन्द्र नाटक—सस्कृत के 'प्रवोध चन्द्रोदय' नाटक का अनुवाद ।

४ मोक्षपन्थ प्रकाश—सस्कृत के वेदात ग्रन्थ । 'स्वराज्य सिद्धि' का अनुवाद ।

यह लडकपन ही मे विरक्त होकर घर से वाहर निकल गए और मानसिह के शिष्य हो गए । इनके माता-पिता मानसिह के पास इन्हे वुलाने के लिए गए और कुल-नाश की वात कही, तव उन्होने कहा कि मैं अपने प्रत्येक ग्रन्थ मे अपने माँ-वाप का नाम लिखकर उन्हे अमर कर दूँगा, घर लौटकर विवाह नही करूँगा । गुलाव सिंह ने अपनी वात निभाई भी । इनका जन्म सवत १७८९ के आसपास अनुमित है ।

२११ **घनश्याम शुकल असनी वाले**—घनश्याम जी फतूहावाद (जिला फतेहपुर) के सुकुल थे और असनी मे रहा करते थे। इनका जीवनकाल स० १७३७-१८३५ वि० हे। यह पहले रीवा-नरेश अजीत सिह के यहाँ रहते थे । पर इन्होने एक करचुली सरदार पर भँडौआ लिख दिया, फलत इन्हे रीवा छोडना पडा । तव ये काशी नरेश महाराज चेतसिह के दारवार मे गए । सवत १८३२ वि० (१७७५ई०) मे जव वारेन हेस्टिग्ज महाराज चेतसिह से ५० लाख रुपया जुरमाना वसूल करने काशी आया, तव शिवाला घाट वाले महल की खिडकी से निकलकर एक नाव पर वेठकर महाराज चेतसिह चुनार की ओर निकल गए थे । इस नाव मे जानेवाले लोगो मे घनश्याम शुक्ल भी थे। यह कोरे कवि ही नही थे। उस अवसर पर इन्होने भी तलवार के दो हाथ दिखाए थे। यह विस्तृत वर्णन डॉ० विपिनविहारी त्रिवेदी ने 'असनी के हिन्दी कवि' नामक अपने शोध-ग्रन्थ मे पृष्ठ १४९-१५४ पर दिया है ।

विनोद मे घनश्याम शुक्ल का जो दलेल खान वाला कवित्त उदाहृत है—'प्रवल पठान तू दलेलखान वलवान' मेरी समझ से वह अपपाठ युक्त हे और इस कवित्त मे औरगजेव के किसी सेनापति दलेल खाँ की प्रशस्ति नही हे—औरगजेव के सेनापति का नाम दिलरे खाँ था, न कि दलेल खाँ । इस कवित्त का जो रूप डॉ० विपिनविहारी ने अपने ग्रन्थ के पृष्ठ १५२ पर दिया हे, वही ठीक प्रतीत होता हे । इसमे चेतसिह के वारेन हेस्टिग्ज के चगुल से छूट निकलने का वर्णन हे ।

हजारा मे इन्ही घनश्याम शुक्ल के कवित्त सकलित होने चाहिए, क्योकि यह १८७५ से पूर्ववर्ती है।

२२४ चन्दन—चन्दन कवि के सीत-वसत कथा का एक बडा अश एव प्रज्ञा विलास का चतुर्थ विलास लाला सीताराम द्वारा 'हिन्दी सिलेक्शन्स, भाग ६, खण्ड २ मे पृष्ठ १३१-६७ पर दिया गया है।

लाला जी ने चन्दन को लाला चन्दनराय कायस्थ बना दिया है। हो सकता है लाला जी ही ठीक हो।

२६६ जसवन्त कवि २—हजारा का रचनाकाल सवत् १८७५ है, अत तिरवा वाले जसवत सिह (मृत्युकाल १८७१) की भी रचना हजारा मे हो सकती है।

२८४ जगन्नाथ १ प्राचीन—मोहमर्दराज की कथा के कर्त्ता जन जगन्नाथ तुरसीदास के शिष्य थे, तुलसीदास के नही। तुरसीदास निरजनी सम्प्रदाय के प्रसिद्ध सन्त है। यह द्वादश प्रसिद्ध निरजनी महतो मे हे और निरजनी सप्रदाय के उद्धारक हरिदास निरजनी के समसामयिक हैं।

२८६ जगन्नाथ दास—जगन्नाथ कविराय गोसाई विठ्ठलनाथ के दौहित्र थे। यह अकबर के समकालीन थे।

३१० टहकन कवि—जेमिनीय अश्वमेध का रचनाकालसूचक दोहा यह है—

समतसर दस सप्त सत, अधिक वरस षट वीस।
तिथत्रयोदस आषाढ वदि, बुध वासर सुभ दीस॥

टहकन का एक अन्य ग्रथ 'अमर कोश' भी है, जिसकी एक मात्र ज्ञात पाण्डुलिपि पटियाला के पुरातत्व विभाग मे है।

टहकन गुरु गोविन्द सिंह के दरबारी कवियो मे प्रमुख थे।

—प० चन्द्रकान्त वाली कृत 'पजाव प्रान्तीय हिन्दी साहित्य का इतिहास,' पृष्ठ २६२

३२३ तत्ववेत्ता कवि—तत्ववेत्ता का असल नाम टीकमदास था, इनका जीवनकाल सवत् १५७० से १६८० के आस-पास है। ब्रह्मचारी विहारीशरण ने इनका जीवन परिचय पर्याप्त विस्तार से निम्बार्क माधुरी 'नामक सग्रह ग्रथ मे दिया है।

३६० महाकवि देव—प्रेम चन्द्रिका की रचना डौडियाखेरा से राजा राव मर्दान सिंह के पुत्र उद्योत सिंह, जो वाद मे पाटन, विहार (जिला उन्नाव) के राजा हुए, के लिए स १७७० के आसपास हुई थी।

४१२, ४१३, ४१४, **निवाज**—तीनो निवाज वस्तुत एक ही है। यह हे निवाज तिवारी। इनका जन्म सवत १७३९ के आसपास एव निधन स० १८०४ के आसपास हुआ। नेवाज नाम से सरोजकार को भी भ्रमवश एक मुसलमान नेवाज बिलग्रामी की कल्पना करनी पडी।

४२० **नील सखी**—यह अमरेश हैं। देखिए यही ग्रथकवि सख्या ११। सरोज मे दिया इनका समय स० १९०२ अशुद्ध है। इनका जीवनकाल,स० १७८१-१८५० वि० है।

४३८ **नवल कवि**—सूदन की प्रणम्य-कवि-सूची मे नवल कवि का नाम है। अत इनका उपस्थिति काल स० १८१० के आसपास माना जा सकता है।

४५९. **परमानन्ददास**—अब परमानन्द सागर के दो सस्करण प्रकाशित हो गए हैं—

(१) परमानन्द सागर—सम्पादक डॉ० गोवर्द्धननाथ शुक्ल, प्रकाशक, भारत प्रकाशन मदिर, अलीगढ, १९५८ ई०, पद-सख्या ९३० (२) परमानद सागर—स० २०१६ वि०, विद्या विभाग, काकरौली, पद सख्या १३८७।

४८३ **पुष्कर**—'रस रतन' का सम्पादन डॉ० शिवप्रसाद सिंह ने किया है, जो १९६३ ई० मे नागरी प्रचारिणी सभा, काशी से प्रकाशित हुआ है। भूमिका परिश्रम लिखी गई है और विस्तृत एव विद्वत्तापूर्ण है, परन्तु सम्पादन सन्तोपजनक नही हो सका हे।

५१६ **वल्लभ रसिक**—'वाणीवल्लभ रसिक जी की' बाब कृष्णदास जी, कुसुम सरोवर गोवर्द्धन द्वारा स० २००५ मे प्रकाशित हो चुकी हे। इसमे निम्नलिखित रचनाएँ हैं—

(१) वर्षोत्सव पद, (२) माझ, (३) दोहावली, (४) कवित्तावली, (५) सुरतोल्लास, (६) पद नित्य गान को, (७) बारह बाट अठारह पैंडे।

इनकी रचना अनुप्रास एव यमक से परिपूर्ण है।

५१८ **वल्लभाचार्य**—वल्लभाचार्य के प्रथम पुत्र गोपीनाथ जी का जन्म अरइल मे नही,

अरइल से दो मील पूर्व की ओर स्थित देवरख नामक गाँव मे हुआ था। यही वल्लभाचार्य की वैठक है। पुष्टिमार्ग मे यह देवरख ही अरइल नाम से जाना जाता है। देवरख मे तैलग ब्राह्मणो की ही वस्ती मुख्य रूप मे है, ये लोग अपने को अपने गाँव के नाम पर देवर्षि कहते है। इसी गाँव के रहनेवाले रीतिकाल के प्रसिद्ध कवि श्री कृष्ण भट्ट 'लाल' कवि कलानिधि थे। गत १ मार्च १९६६ को महाप्रभु की अरइल वाली वैठक की खोज करते-करते देवरख के दर्शन का सौभाग्य मुझे प्राप्त हो सका था। महाप्रभु के तृतीय पुत्र गो० विठ्ठलनाथ का जन्म चरणाट मे हुआ था। यह चरणाट चरणाद्रि या चुनार है। यहाँ भी महाप्रभु की वैठक है। यहाँ भी मैं गत १० मार्च ६६ को पहुँच गया था।

रागसागरोद्भव मे वल्लभ या श्रीवल्लभ छाप वाले जो पद है, वे गो० विठ्ठलनाथ जी के चतुर्थ पुत्र गो० गोकुलनाथ जी (स० १६०८-९७ वि०) के हैं। गोकुलनाथ जी की छाप वल्लभ या श्री वल्लभ है। सरोज मे वल्लभाचार्य जी के नाम पर दो पद उद्धृत हैं। इनमे से प्रथम 'वाती कपूर की जोति जगमगे' तो गो० गोकुलनाथ जी की रचना है। दूसरा पद (कवित्त) '—गायो न गोपाल , गो० हरिराय जी का है। इसमे 'रसिक' छाप है—'रसिक कहाय अव लाज है न आवै तोहि'। 'गो० हरिराय जी के पद' मे यह ६६३ सख्या पर सकलित है। हरिराय जी का जीवनकाल स० १६४७-१७७२ वि० है। यह महाप्रभु वल्लभाचार्य की पाँचवी पीढी मे है। १—वल्लभाचार्य, २—गो० विठ्ठलनाथ, ३—गो० गोविंदराय, ४—गो० कल्याणराय, ५—गो० हरिराम।

५१९ गो० विट्ठलनाथ—गो० विठ्ठलनाथ का जन्म चरणाट या चरणाद्रि या चुनार मे हुआ था। इनकी शिष्या गगावाई 'विठ्ठल गिरिधरन' छाप से पद रचना करती थी। गगावाई का जन्म स० १६२८ के आसपास हुआ। इसने दीर्घ आयु पाई थी। स० १७२६ वि० मे जव औरगजेव के उपद्रव से श्रीनाथ जी का विग्रह गोवर्द्धन से राजस्थान ले जाया गया, तव उस दल मे गगावाई भी थी। अत इसका देहावगमन १७२६ के पश्चात किसी समय हुआ।

५२४ वशीधर—वशीधर के गुरु 'श्री वल्लभ' थे। श्री वल्लभ गो० गोकुलनाथ जी की छाप है। गोकुलनाथ जी का समय स १६०८-१६९७ वि० है। अत वशीधर जी का समय सवत १६५० से १७०० माना जा सकता है।

५२५ वशीधर मिश्र सडीलावाले—मैंने गोसाई चरित की भूमिका मे वताया है कि वशीधर

का विवरण गोसाईं चरित के आधार पर भाषाकाव्य सग्रह मे महेश दत्त जी ने सकलित किया है और इनका मृत्युकाल जो स० १६७२ दिया है, वह भ्रष्ट है। वशीधर जी का जन्म तुलसी के जावन के सान्ध्यकाल मे हुआ और इनका देहावसान स० १७५० के आसपास हुआ। गोसाईं तुलसीदास जी ने वशीधर के वाप से अपने एक यात्रा काल मे इनके जन्म लेने की भविष्य-वाणी की थी।

५३१ **व्रजनाथ**—'घनानन्द कवित्त' के सम्पादक तथा 'रागमाला' के रचयिता व्रजनाथ जी मथुरा वृन्दावनके गोसाईं थे और अतिम दिनो मे घनानन्द के सरक्षक से थे—श्री नवरत्न कपूर ने 'घनानन्दकौन थे' शीर्षक लेख मे (ना० प्र० पत्रिका, सवत २०२२, वर्ष ७० अक ३) इसतथ्य का प्रतिपादन (पृष्ठ ४४ पर) किया है।

५३३ **व्रज, लाला गोकुलप्रसाद**—व्रज जी के 'दिग्विजय भूषण' का एक अच्छा सस्करण डॉ० भगवतीप्रसाद जी ने सम्पादित करके अवध साहित्य मन्दिर वलरामपुर से स० २०१६ वि० मे प्रकाशित कराया है। इस ग्रथ के प्रारम्भ मे ११२ पृष्ठो का एक परिचय भी लगा हुआ है, जिसमे दिग्विजय भूषण मे सकलित १९५ कवियो का सक्षिप्त परिचय दिया गया है। इस परिचय को प्रस्तुत करने मे डॉ० सिह ने अप्रकाशित 'सरोज सर्वेक्षण' का सदुपयोग किया है, जिसका उल्लेख भी उन्होने साभार स्वीकार किया है। मेरे द्वारा प्रस्तुत व्रज जी के ग्रथो के सम्बन्ध मे जो त्रुटियाँ थी, उनका निराकरण डॉ० सिह ने उक्त ग्रन्थ की भूमिका मे यथास्थान कर दिया है। प्रकाशित होने के पूर्व सरोजसर्वेक्षण मे डॉ० सिह की शोध का लाभ उठा लिया गया है।

५३६ **व्रजलाल**—खुमान वदीजन चरखारी वाले के पुत्र का भी नाम व्रजलाल है। खुमान का रचनाकालस० १८३०-८० वि० है।

५३९ **व्रजपति भट्ट**—सरोज मे जिन व्रजपति का वर्णन है, उन व्रजपति के २७ पद राग कल्पद्रुम मे है। सरोज का उदाहरण रागकल्पद्रुम से ही लिया गया है। यह व्रजपति वल्लभ सम्प्रदाय के है और वल्लभाचार्य के वशज है। इनकी वशावली यह है—
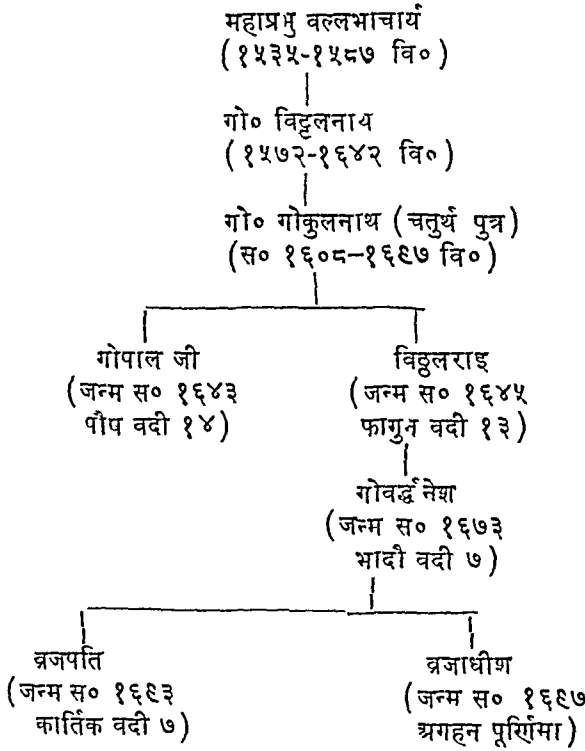
जगतानन्द ने 'वल्लभ वशावली' मे गो० गोकुलनाथ जी की तीन पीढी के पाँच वशजो का उल्लेख जन्मकाल सहित किया है। यही गोकुलनाथ जी की वश परम्परा समाप्त हो जाती है। जगतानन्द व्रजपति के पिता श्री गोवर्द्धनेश जी के शिष्य थे। इसलिए उन्होने अपनी गुरु परम्परा के सभी लोगो का जन्मकाल भी दे दिया है।

व्रजपति जी का रचनाकाल स० १७२० स्वीकार किया जा सकता है। सरोज मे दिया सवत १६८० अशुद्ध है।

५७८. वृन्दावनदास—सरोज मे जिन वृन्दावन का पद उदाहृत है, वे है निम्बार्क सम्प्रदाय के वृन्दावनदेवाचार्य। वृन्दावन जी हरिव्यासदेवाचार्य के शिष्य परशुरामदेवाचार्य द्वारा सस्थापित सलेमावाद (अजमेर के पास) की निम्बार्क गद्दी के चौथे आचार्य थे— १ श्री परशुराम देवाचार्य, २ श्री हरिवश देवाचार्य, ३ श्री नारायण देवाचार्य, ४ श्री वृन्दावन देवाचार्य। इनका आचार्य-काल स० १७५४ १७९७ वि० है। इनका जन्म स० १७०० के आसपास हुआ रहा होगा। यह गौड ब्राह्मण थे। महाकवि घनानन्द के दीक्षा गुरु यही थे। इनका एक ही ग्रन्थ प्रकाशित है–गीतामृत

गंगा, जो १४घाटो मे विभक्त है। इसमे ५०० के लगभग अत्यन्त श्रेष्ठ पद हैं। गीतामृत गगा वृन्दावन से प्रकाशित होने वाली निम्वार्क सप्रदाय की मासिकमुख पत्रिका सर्वेश्वर के एक विशेपाक रूप मे प्रकाशित है (वर्ष १, अक ३-९, माघ २००९ से श्रावण २०१० वि०)। सरोज मे उदाहृत पद इसी ग्रन्थ के दूसरे घाट का पन्द्रहवाँ पद है, जिसे सरोजकार ने कृष्णानन्द व्यासदेव रामसागर कृतराग कल्पद्रुम से उद्धृत किया है।

५८७ **बुर्धसिह पजावी**—बुर्धसिह पजावी का विवरण प० चद्रकान्त वाला कृत 'पजाव प्रान्तीय हिन्दी साहित्य का इतिहास' मे पृष्ठ ३३८-३९ पर दिया गया है। इसके अनुसार इनका रचनाकाल स० १८८०- १९१० वि० हे। यह सिख हो जाने पर भी हिन्दू पौराणिकता का छाप से युक्त है। इन्होने स्वात सुखाय रचना की। इनके ग्रन्थो के नाम हैं—(१) अद्भुत नाटक (२) माधवानल, (३) राधा मानम् (४) गुरु रत्नावली। अद्भुत नाटक मे राजा अवरीप की कथा है। पजाव की गेय नाटक परपरा मे इसका चौथा स्थान है। इसमे नाटकीय विधान का पालन पूर्णरूप से नही हुआन। इनकी रचनाओ मे साहित्य एवभक्ति का का समन्वय है। यह हिन्दी, उर्दू, पजावी के एक समान कवि हे। पजावा मे इनकी रचनाएँ है - सीहरफियाँ, माझा, वारामाँह।

५९८ **भगत रसिक**—टट्टी सस्थान वृदावन से भगवतरसिक की समस्तरचनाओ का सकलन 'श्री भगवत रसिक देव जा की वाणी' नाम से प्रकाशित हुआ है। इसका चतुर्थ सस्करण स० २० १७ वि० मे हुआ। इसमे इनकी निम्नाकित कृतियाँ हैं—(१) अनन्य निश्चयात्म ग्रन्थ पूर्वार्द्ध, (२) नित्य विहार जुगत ध्यान, (३) अनन्य रसिकाभरण ग्रन्थ, (४) अनन्य निश्चयात्म ग्रन्थ उत्तरार्द्ध, (५) निर्विरोध मन रजन ग्रन्थ (६) होरी धमार।

५९९ **भगवतराय खींची**—सदानद कवि ने भगवत रायरासा नामक ग्रन्थ मे उस युद्ध का वर्णन किया है, जो भगवत राय और लखनऊ के नवाव सआदतअला खाँ के वीच लडा गया था। सदानद के अनुसार उक्त युद्ध सवत १७९७ मे हुआ और इसी युद्ध मे भगवतराय मारे गए—

"अप्सरि सुचारु चहुँ दिसि चमर चापु ढरत आनँद भयो
राजाधिराज भगवत जू चढि विमान सुर पुर गयो। १०३

दोहा

सवत सत्रह सत्तानवे कातिक मगलवार
सित नौमी सग्राम भौ, विदित सकल ससार १०४

—खोज रि०१९२३।३६४ए

यह प्रति सावन वदी ८ सन १२५७ हिजरी (स० १७९८ या १७४१ ई०) की लिखी हुई है।

६०४ **भगवान हित रामराय**—प्रमाद से डॉक्टर पीतावर दत्त बडथ्वाल ने 'योग प्रवाह' (पृष्ठ ४६४) मे एव श्री परशुराम चतुर्वेदी ने 'उत्तरी भारत की सन्त परपरा' मे (पृष्ठ ४६८) इसे भगवानदास निरजनी की रचना समझ लिया है।

६०५ **जन भगवान**—दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता के अनुसार जन और भगवानदास दो भाई थे। इनके पदो मे 'जन भगवान' छाप है। जन भगवान का तो सीधा अर्थ है। भगवान का जन (दास, सेवक, भक्त)। यह अर्थ करने पर एक ही व्यक्ति का बोध होता हे, जो अधिक सुसगत है।

जन भगवान गौरवा क्षत्रिय थे। ये बाल्यावस्था से ही गोसाई विट्ठलनाथ के शिष्य हो गए थे। जन बडे थे और भगवानदास छोटे। दोनो भाई गृहस्थ थे। इनका विवाह हुआ था। ये तन से गृहस्थ थे, मन से विरक्त। ये लोग दो तन एक मन थे। नित्य श्रीमद्भागवत की कथा सुना करते थे और तदनुसार कीर्तन रचा करते थे। उदर भरण के निमित्त भिक्षाटन करते थे। जिस गाँव मे एक बार जाते, पुन उसमे न जाते थे।

जन भगवान का रचनाकाल स०१६४० के आसपास समझना चाहिए।

६२२ **मानदास**—खोज रिपोर्टो से ज्ञात, १८१७-६३ वि० मे उपस्थित मानदास, १६८० मे उपस्थित एव भक्तमाल मे वर्णित मानदास से निश्चित ही भिन्न है और दो मानदासो का अस्तित्व स्वीकार करना अनिवार्य है।

६४६ **मुरारिदास**—सरोज मे इनका खण्डिता सम्बन्धी एक पद उद्धृत है। यह वल्लभ सम्प्रदास के कवि हैं और गो० विट्ठलनाथ के शिष्य है। इनका नाम रूप मुरारीदास था। यह खत्री

थे। पहले अकबर की चाकरी मे थे। एक बार यह अकबर के साथ गोवर्द्धन की तलहटी मे शिकार के लिए आए थे। यही इनको गो० विठ्ठलनाथ जा के दर्शन हुए और यह इनके शिष्य हो गए। इनकी कथा २५२ वैष्णवन की वार्ता मे है। इनका जन्मकाल स० १६०० के आसपास एव रचना-काल स० १६४० के आसपास है।

६५६ **मनसुख** — इनकी रचना हजारा मे थी अत यह स० १८७५ के पूर्व उपस्थित थे। सरोज मे दिया सवत १७४० इनका जन्मकाल भी हो सकता है और रचनाकाल भी।

६५७ **मिश्र** — १७४० जन्मकाल भा हो सकता है, क्योंकि हजारा का समय स० १८७५ है।

६५८ **मुरलीधर** — हजारा मे मुरलीधर मिश्र की भी रचना हो सकती है।

६५२ **मनोहर कवि ३** — गौडीय सम्प्रदाय के मनोहर कवि की गुरु परम्परा का कुछ अश छपने से छूट गया है। गुरु परम्परा यो है—

चैतन्य महाप्रभु
|
गोपाल भट्ट
|
श्री निवासाचार्य
|
रामचरण चक्रवर्ती
|
रामशरण चटराज
|
मनोहरदास

६६१ **मल्ल कवि**—एक टोडरमल्ल नामक कवि कम्पिल। फर्रुखावाद के रहनेवाले थे, जिन्होने रस चन्द्रिका नामक रस ग्रन्थ लिखा था। इनकी भी छाप 'मल्ल' है। ग्रन्थ का मगलाचरण देखिए—

"गण गणनायक सकल सुखदायक हैं,
सिद्धि के विधायक असक अमरन हैं
गिरिजा के नन्दन अनन्दकर साधन के,
वन्दन करत मुनि घ्यान के घरन हैं

पूरन प्रकाश 'कवि मल्ल' आरा करन को,
कीरति निवास सुख सपति करन है
दारिद हरन, मन मोद वितरन,
असरन के सरन, एक दत के चरन हैं
—खोज रि० १९१७।१९४

९९५ **मतिराम**—स्व० कृष्णविहारी मिश्र एव उनके पुत्र स्व० डॉ० व्रजकिशोर मिश्र द्वारा सपादित 'मतिराम' का प्रकाशन नागरी प्रचारिणी सभा काशी से स० २०२१ वि० मे हुआ है। इसमे रसराज, ललित ललाम, मतिराम सतसई एव फूल म जरी न मक ग्रन्थ प्रसिद्ध मतिराम की कृति मानकर सकलित है। मतिराम के नाम पर मिलने वाले शेप सभी ग्रन्थो को सम्भवत दूसरे मतिराम की रचना माना गया है, इसीलिए इनको इस ग्रन्थावली मे सम्मिलित नही किया गया है।

एक वार दूसरे मतिराम के भी ग्रन्थो का पूर्ण एव सम्पादित सस्करण सामने आ जाने की आवश्यकता अभी वनी हुई है। इसमे भी चार ग्रन्थ होगे—(१) साहित्य सार, (२) लक्षण शृ गार, (३) अलकार पचाशिका, (४) वृत्त कौमुदी या छन्दसार।

९९६ **मडन**–मडनकवि का नयन पचासा मुझे खोज मे वाराणसेय सस्कृत विश्वविद्यालय के सरस्वती सदन मे मिला है। इसकी ग्रन्थ सख्या ४५८८४ है। यह अत्यन्त सरस रचना है। यह सम्पादित रूप मे नागरी प्रचारिणी पत्रिका मे प्रकाशनार्थ दे दिया गया है । सरस्वती सदन का हस्तलेख प्रारम्भ मे खडित है। नयन पचासा यहाँ 'नेत्र पचाशिका' नाम से प्रतिलिपित है। नेत्र पचाशिका के पहले मडन का कोई कवित्त ग्रन्थ है, जिसका पूर्वार्द्ध खण्डित है। उत्तरार्द्ध मे ३२-४४ सख्यक कवित्त है।

७३१ **रामराइ**— भगवान हित रामराइ के गुरु सारस्वत रामराइ वल्लभ सम्प्रदाय के न होकर गौडाय सम्प्रदाय के थे। उन्होने अपने पूर्वज जयदेव जी के गीत गोविंद का व्रजभाषा मे पद्यानुवाद किया है, जो कुसुम सरोवर गोवर्द्धन वाले वावा कृष्णदास द्वारा प्रकाशित हो चुका है। इसका अनुवाद सवत १६२२ मे हुआ था—

सवत सोलह सो वाईसा, ऋतु वसत सरसाई
माधव मास राधिका माधव की जव लीला गाई

'गीत गोविंद भाषा' के अतिरिक्त इनकी एक अन्य रचना पदावली है, जिसे 'आदि वाणी' कहते हैं। इसमे कुल १०१ पद है। 'चैतन्य मत और ब्रज साहित्य' मे प्रभुदयाल मीतल ने इनके जीवन और साहित्य पर अच्छा विचार किया है।

७४० **रघुनाथ प्राचीन**—रघुनाथ प्राचीन के नाम पर सरोज मे जो छद उद्धृत है, उसी को शुक्ल जी ने अपने इतिहास मे रघुनाथ वन्दीजन वनारसी के उदाहरण मे दिया है।

७५४.**रसपुंज**—रसपुज नामक दो कवि हैं—

(१) रसपुजदास दादूपन्थी। इनके तीन ग्रंथ हैं—

(क) चमत्कार चद्रोदय–इसका रचनाकाल सवत १८६६ वि० है।

(ख) प्रस्तार प्रभाकर—इसका रचनाकाल सवत १८७१ है।

(ग) वृत्त विनोद—इसका उल्लेख सरोज मे है। 'राजस्थान का पिंगल साहित्य' मे पृष्ठ २४६ पर इस पिंगल ग्रथ का रचनाकाल सवत १८७८ दिया गया है।

यह रसपुजदास जयपुर के थे और जयपुर नरेश प्रताप सिंह 'ब्रजनिधि' (स० १८२१–१८६० वि०) के समय मे थे।

दूसरे रसपुंज इनसे प्राय १०० वर्ष पूर्ववर्ती हैं। यह जोधपुर निवासी थे और जोधपुर नरेश महाराज अभय सिंह (शासन काल स० १७८१-१८०५ वि०) के आश्रित थे। 'कवित्त श्री माता जी, इन्ही की रचना है। यह दुर्गा-स्तुति सवधी ग्रंथ है।

विनोद (७०६) मे दोनो रसपुजो को मिला दिया गया है।

७६६ **रतन कवि**—रतन कवि कृत फतह प्रकाश कैप्टेन शूरवीर सिंह द्वारा सपादित होकर १९६१ ई० मे भारत प्रकाशन मंदिर अलीगढ से प्रकाशित हो चुका है। सपादन अत्यन्त भ्रष्ट है। इसमे कुल २२२ छद हैं। ग्रंथ के अत मे लगी पुष्पिका मे ग्रंथकार का नाम क्षेमराम ज्ञात होता है, रतन कवि की छाप है। ग्रंथ मे रतन ने पुराने कवियो के भी कुछ छद उदाहरण मे लिए हैं। प्रस्तावना के अनुसार फतह सिंह गढवाल के पँवार राजवश के उँचासवे राजा थे। इनका शासनकाल १६९९ – १७४९ ई० (स० १७५६–१८०६ वि०) है। प्रस्तावना मे शूरवीर जी को रतन को भूषण का भाई सिद्ध करने का मोह हो गया है।

७७४,७७५ —**राजाराम** सरोज मे ७७४।६३७ सख्यक राजाराम का यह कवित्त उद्धृत है—

"ठगी सी, न ठौर चित्त, ठोढी गहे ठाढी हुती,
ठौरही ठनकि परी ठॉइ दे ठनक सी
पचबान कचु मे रोमच रच रच भये,
कचु ऐसी ह्वै गई जो कायाहू कनक सी
छनक मैं छीन भई छिगुनु तें 'राजाराम'
छवीली छरी सी परा छिति मैं छनक सी
वनक सी हनी पुनि, फनक सी खाई सुनि,
स्याम के सिधारिवे की तनक भनक सी"

और ७७५ सख्यक राजाराम का यह कवित्त उद्धृत है—

छाई छवि हीरन की, रवि जोति जीरन की,
'राजाराम' चीरन की चिलकारी अलकै
अवला अहीरन की, पाली दधि छीरन की,
सोने से सरीरन की गारी दै दै वलकै
पिचकारी नीरन की, मार सम तीरन की,
देव दान चीरन की माँगिवे को ललकै
सौहे करै वीरन की, उडनि अवीरन की,
मुख लाली वीरन की, वीरन की भलकै

मैंने सर्वेक्षण मे दोनो राजारामो को स्वीकार किया है। पर दोनो के कवित्तो का तुलनात्मक अध्ययन करने पर लगता है कि ये एक ही कवि की रचना है। शिवसिंह को दोनो कवित्त दो विभिन्न सूत्रो से मिले थे, अत उन्होने एक ही कवि को दो मान लिया और दोनो को दो समय दे दिया। तुलसी कवि ने स० १७११ वि० मे 'रस कल्लोल' की रचना की थी। 'ठगी सी न ठौर चित' प्रतीक वाला कवित्त इस ग्रन्थ की छठी कल्लोल का ३४वा छन्द है। स्पष्ट है 'रस कल्लोल' मे उदाहृत राजाराम 'रस कल्लोल' का या तो समसामयिक है अथवा पूर्ववर्ती। ऐसी स्थिति मे इस कवि का सरोज मे दिया सम्वत् १६८० इसका रचनाकाल सहज ही स्वीकार किया जा सकता है। दूसरे राजाराम का जो समय १७८८ दिया गया है, वह ठीक नही। दोनो राजाराम अभिन्न है।

८०३ लाल कवि ४—यह लाल कवि प्रसिद्ध लल्लू जी 'लाल' कवि हा प्रतीत होते है। लल्लू जी ने हितोपदेश का जो गद्यानुवाद 'राजनीति' नाम से किया है, सरोजकार ने उसे भ्रम से चाणक्य राजनीति का उल्था समझ लिया है।

८०८ लालचदास—हरि चरित्र अथवा भागवत कथा मे कुल ९६ अध्याय है। ४६वे अध्याय के प्रारम्भ मे ये पक्तियाँ है—

असानद दासन के दासा। प्रभु के चरन रेनु की आसा॥
अरध प्रजत कथा जव कहेऊ। सकट प्रान लालच तव भयऊ॥
भगति करत प्रभु के मन लाए। सुरसरि निकट अर्वजल पाए॥
उन्ह जन हरि की अस्तुति ठैऊ। कृस्न चरित भाषा रस कैऊ॥
वोह जन प्रभु अस्तुति मन लीन्हा। चरित क्रिस्न भासा जो कीन्हा॥
दसम स्कधे भागवत होई। कसव वध ले भाखउ सोई।
एह वड सोच रहा जिउ आई। नहिं वरनो सव गुन जदुराई॥
मम विनती सव सत के होई। कथा समत करी मैं सोई॥
जेहि विधि जस गावो भगवाना। सुमिरत चरित गत भौ प्राना॥
समत षोडस सै एकोत्तर गैऊ। क्रिस्न चरित हृदै उपजेऊ॥
हरि गुन लिखत आसानद नाऊँ। करो कथा हरि के गुन गाऊँ॥
काएथ जाति लोग सव जाना। तासु पिता प्रताप परवाना॥
धरम मूरति गुन ग्यान विवेका। हृदै भगति क्रिस्न जिव टेका॥
अरथिति श्रीति ग्राम निज दाही। राय वरेली मदिर ताही॥
विस्नु भगति हृदै मह आई। दसम स्कध भागवत गाई॥

स्पष्ट है लालचदास ग्रथ केवल ४५ अध्याय तक, कस वध तक, लिख सके और दिवगत हो गए। इस ग्रथ को आशानद ने स० १६०१ वीतने पर पूर्ण किया। आशानद कायस्थ थे। इनके पिता का नाम प्रताप था। यह रायवरेली जिले के दाही नामक गाँव के रहने वाले थे। आशानद ने ग्रथ मे सर्वत्र लालच की ही छाप रखी है, अपनी नही। केवल पुष्पिका मे लालच के साथ अपना भी उल्लेख कर दिया है।

लालचदास की मृत्यु स० १६०१ के पहले ही हो गई थी। स्पष्ट है कि सरोज मे दिया सवत १६५२ अशुद्ध हे।

स्व० नलिनविलोचन शर्मा ने हरि चरित्र का सम्पादन प्रारम्भ किया था। सम्पादित अश धीरे-धीरे कर 'साहित्य' मे प्रकाशित होता जाता था। पर इसी वीच सपादन को अधूरा छोडकर नलिन जी भी मूल ग्रथकर्ता के समान दिवगत हो गए। साहित्य मे प्रकाशित अश विहार राष्ट्र भाषा परिषद्, पटना द्वारा स० २०२० मे पुस्तक रूप मे प्रकाशित कर दिया गया है। इसमे पाठान्तरो का वहुत वडा, पर अनावश्यक, जाल है। सपादन भी ठीक नही हुआ है।

लालच आशानद के सबध मे साहित्य सदेश जून १९६२ (पृष्ठ ५७५-७६) पर एक लेख निकला है, उसी से ऊपर वाला उद्धरण दिया गया है और उसके अनुसार आशानद जी दाही गाँव के रहने वाले थे। नलिन जी के अनुसार यह मूलत हस्तिनापुर के रहने वाले थे। वहाँ से छोडकर यह रायवरेली मे आ वसे थे। इनका पाठ हे—

हस्तिग्राम विरत सो आही
राए वरेली मदिल ताही

साथ ही नलिन जी ने आनद का रचनाकाल स० १६७१ वि० माना है। इनके अनुसार रचनाकाल सूचक अश यह है—

'खोडस सात एकोतर भएउ'

'सात' के स्थान पर सत होना चाहिए। मैं साहित्य सदेश वाला पाठ ही स्वीकार कर इनका रचनाकाल स० १६०१ मानता हूँ।

८३४ सुखदेव मिश्र—सुखदेव मिश्र ने शृगार लता की रचना मुरारमऊ के वैस राजा देवीसिंह के लिए की थी।

८५७ शिवदीन कवि भिनगा—शिवदीन कवि ने कृष्णदत्त रामा के अतिरिक्त एक और ग्रथ कृष्णदत्त भूषण भी लिखा है, जो साहित्य शास्त्र सवधी ग्रथ है। इसमे साहित्य के सभी अगो का विवेचन है। इसमे कुल १२ प्रकाश हैं। ग्रथ का परिचय डॉ० आनद प्रकाश दीक्षित ने 'कृष्णदत्त भूषण और उसका लेखक शीर्षक लेख मे दिया हे, जो राजस्थान यूनिवर्सिटी स्टडीज़ १९६५ मे प्रकाशित हुआ है।

इस लेख मे डॉ० दीक्षित ने प्रारम्भ में ही यह कहा है कि डॉ० किशोरी लाल गुप्त ने

'सरोज सर्वेक्षण' मे एव डॉ० भगवतीप्रसाद सिंह ने दिग्विजय भूषण की भूमिका मे एव हिंदी साहित्य कोश दूसरा भाग मे कृष्णदत्त की रचना कर श्रेय लाला गोकुलप्रसाद व्रज को दे दिया है। यहाँ इतना ही कहना है कि एक ही नाम के अनेक कवि और अनेक काव्य होना असभव नही, इस पर भी डॉ० दीक्षित को ध्यान देना चाहिए था। शिवदीन ने कृष्णदत्त भूषण की रचना की, जो साहित्याग का ग्रथ है। लाला गोकुलप्रसाद 'व्रज' ने भी कृष्णदत्त भूषण की रचना की। यह साहित्याग का ग्रथ नही है। इसमे नृप वशावली, धर्म, नीति और वर्ण व्यवस्था आदि का वर्णन है। दोनो कवियो के आश्रयदाता भी अलग-अलग है। शिवदीन के आश्रयदाता भिनगा नरेश कृष्णदत्त सिंह है। व्रज के आश्रयदाता सिहा चदा (गोडा) के राजा कृष्णदत्त राम पाडेय हैं। व्रज जी का ग्रथ नागरी प्रचारिणी सभा काशी की खोज मे मिल चुका है। देखिए—१९०४।७५ क,ख। इस ग्रथ का रचनाकाल स० १९३७ वि० है।

९१९ सदानन्द—भगवन्त राय रासा के रचयिता सदानन्द (स० १७९७ वि०) भी हजारा (स० १८७५ वि०) मे सकलित हो सकते है।

९२२. सेन कवि—सरोज मे सेन कवि के नाम पर जो 'जब ते गोपाल मधुवन को सिधारे आली' प्रतीक वाला कवित्त उदाहृत है, वह वस्तुत शेख आलम का कवित्त है। इसमे 'सेन कहैं' जो छाप है, उसे 'सेख कहे' होना चाहिए। आलम केलि' मे यह कवित्त पृष्ठ ९६ पर २२९ सख्या पर सकलित है। यह रहस्य-भेद हो जाने पर अब रीतिकालीन शृगारी सेन का अस्तित्व समाप्त हो जाता है और रामानन्द के शिष्य सेन नाई का अलग एव अमल अस्तित्व निखर उठता है।—

९२८ सूरदास—जैसे-जैसे शोध होती जा रही है, केवल सूरसागर सूर की कृति के रूप मे मान्य हो रहा है। सूरसारावली के इधर दो विशिष्ट सस्करण निकले है। एक तो डॉ० प्रेमनारायण टडन का है, जो लखनऊ से प्रकाशित हुआ है। इसकी भूमिका मे विद्वान लेखक ने इसे सूर की कृति नही स्वीकार किया है। दूसरा सस्करण प्रभुदयाल मीतल का है, जो मथुरा से स० २०१४ मे प्रकाशित हुआ है। इसमे इसे महाकवि सूर की ही रचना स्वीकार किया गया है। मीतल जी ने साहित्य लहरी का भी एक अच्छा नवीन स-करण स० २०१८ मे मथुरा से प्रकाशित किया है। मीतल जी ने इसे महाकवि सूर की ही रचना के रूप मे स्वीकार किया है।

डॉ० ब्रजेश्वर वर्मा ने सर्वप्रथम अपने शोध-प्रबंध 'सूरदास' मे इन दोनो ग्रन्थो को सूर की रचना मानने से अस्वीकार किया था। साहित्य लहरी को अब चद के वशज सूर की रचना मानना चाहिए, सारस्वत ब्राह्मण एव अष्टछापी सूर की रचना नही।

७५६ हरिनाथ महापात्र — डॉ० विपिन विहारी त्रिवेदी ने ,'असनी के हिन्दी कवि' मे हरिनाथ महापात्र का जन्म काल स०१६०४ एव निधनकाल स०१७०३ बताया है।

६६२ स्वामी हरिदास — स्वामी हरिदास जी की समस्त रचनाएँ श्री प्रभुदयाल मीतल ने 'स्वामी हरिदास जी जीवनी और वाणी' मे सम्पादित एव प्रकाशित की है। स्वामी जी के दो ग्रन्थ है—

१ सिद्धान्त के पद—कुल १८ पद

२ केलिमाल—कुल ११०पद

स्वामी हरिदास की कविता के उदाहरण मे निम्नाकित दो रचनाएँ दी गई है—

१ जयति राधिका रमण (सस्कृत पद)

२ गायो न गोपाल (हिन्दी कवित्त)

शिवसिह जी ने ये रचनाएँ रागकल्पद्रुम से सकलित की थी। ये रागकल्पद्रुम द्वितीय सस्करण के पृष्ठ १००,१५० पर क्रमश सकलित हैं। जैसा कि पहले कहा जा चुका है, ये प्रसिद्ध स्वामी हरिदास की रचनाएँ नही है। ये वार्ताओ के प्रणेता प्रसिद्ध गोस्वामी हरिराय (स० १६४७-१७७२ वि०) की रचनाएँ हैं। देखिए प्रभुदयाल मीतल द्वारा सम्पादित 'गो० हरिराय जी के पद'—पद सख्या ६७३,६७४। गो० हरिराय जी अपनी सस्कृत रचनाओ मे सर्वदा हरिराय ही छाप रखते थे।

६६३ हरिदेव वनिया वृन्दावनी — हरिदेव वृन्दावनवासी अग्रवाल वैश्य थे। इनका जन्म स० १८६२ मे हुआ था। यह जेठ सुदी ११ सवत १९१९ को दिवंगत हुए। इनके पिता रतिराम जी वृन्दावन मे परचून की दूकान करते थे। हरिदेव जी ने वृन्दावन के गोस्वामी दयानिधि के यहाँ ब्रज के प्रख्यात कवि ग्वाल के साथ काव्य की प्रारभिक शिक्षा पाई थी। हरिदेव जी अच्छे कवि एव काव्य मर्मज्ञ थे। यह चैतन्य सप्रदाय मे दीक्षित थे। श्री प्रभु दयाल मीतल ने चैतन्य मत और ब्रज साहित्य (पृष्ठ ३१५-१८) मे इनका परिचय और इनकी कविताओ का अच्छा उदाहरण दिया है। उन्होने इनके दो काव्य ग्रथो 'रस चद्रिका' (नायिका भेद) और 'छद पयोनिधि' का परिचय पर्याप्त विस्तार से दिया है। उन्होने इनके तीन और ग्रथो का

उल्लेख किया है—(१) काव्य कुतूहल (अलकार) (२)रामाश्वमेध, (३) वैद्य सुधानिधि ।

९६४ **हरिरामदास निरंजनी** — 'छद रत्नावली' के अतिरिक्त हरिरामदास के दो और ग्रथ है—(१) परमार्थ सतसई, (२)हरिदास निरजनी की परिचयी । परमार्थ सतसई विविध छदो मे रचित है । इसके एक हस्तलेख मे ५३७ छद है । और एक दूसरे हस्तलेख मे साढे आठ सौ । छद रत्नावली पहले प्रकाशित हो चुकी है । इनकी रचना के नमूने 'श्री महाराज हरिदास जी की वाणी सटिप्पणी व अपर निरजनी महात्माओ की रचना के अशाश' मे अशाश खड के अन्तर्गत पृष्ठ१७१–१८६ पर देखे जा सकते हैं । उक्त ग्रथ का सपादन सकलन मगलदास स्वामी ने किया है, जो १९६२ ई० मे निखिल भारतीय निरजनी महासभा दादू महाविद्यालय मोता डूंगरी रोड, जयपुर से प्रकाशित हुआ है ।

९८६ **हरिजन**—हजारा का रचनाकाल १८७५ सिद्ध हो जाने से इन हरिजन का अस्तित्व सरदार बनारसी के बाप ललितपुर निवासी हरिजन (यही ग्रथ कवि सख्या १००१) मे समाहित हो जाता है ।

[उपसहार-प्रकरण]—

१ **सरोज के सवत और ईसवी सन् (पृष्ठ ८३५-३८)**—एक और कवि का समय ईस्वी सन सिद्ध हो गया है । ये है ९५२ सख्यक श्री लाल गुजराती । इनका समय १८५० दिया गया है । इनका परिचय मातादीन मिश्र के कवित्त रत्नाकर के आधार पर सरोज मे गृहीत है और मातादीन ने इनके सभी सवत ईस्वी सन् मे दिये है । १८५२ ई० में ये आगरा नार्मल स्कूल के पहले हेडमास्टर हुए थे ।

२ **पृष्ठ ८५३**—पृष्ठ ८५३ पर दिखाया गया है कि कुदन आदि १३ कवियो का सरोज-दत्त सवत् १७३५-५५ वि० के बीच का है और इनकी रचनाएँ हजारा (रचनाकाल १७५५) मे थी, अत हजारा के रचनाकाल मे इन कवियो की वय २० वर्ष से कम ही होगी, अत इनके सरोज दत्त संवत उपस्थितिकाल ही है ।

परन्तु अब सिद्ध हो गया है कि हजारा का रचनाकाल स० १८७५ के आसपास है, ऐसी स्थिति मे इन १३ कवियो के समय को तर्क से उपस्थितिकाल नही सिद्ध किया जा सकता ।

३ **सरोज के सवत और जन्मकाल (पृष्ठ ८५३-५५)**—सरोज-दत्त एक और सवत जन्म काल सिद्ध हुआ है । यह सवत हित हरिवश का है । सरोज मे इनका दिया सवत १५५९

है। यही इनका जन्मकाल है।

४ पृष्ठ ८६०-६४—पहले सरोज के २०६ सन् सवतो की जाँच-पडताल नही हो सकी थी। अब इनमे से कुछ सवतो की और जाँच सम्भव हो गई है, जिसका परिणाम यह है।

सख्या	कवि	संवत	परिणाम
१।११	अमरेश	१६३५	अशुद्ध
२।२०	अभयराम वृ दावनी	१६०२	अशुद्ध
३।१०३	कलानिधि[१] प्राचीन	१६७२	अशुद्ध
४।१३०	कनक	१७४०	अशुद्ध
५।१६२	गिरिधर कविराय	१७७०	शुद्ध
६।२२१	घनश्याम शुक्ल	१६३५	अशुद्ध
७।२२६	चतुर विहारी	१६०५	शुद्ध
८।२३६	चद्रसखी	१६३८	अशुद्ध
९।२३८	चिरजीव	१८१७ (प्र० स०)	शुद्ध
		१८७० (स० स०)	अशुद्ध
१०।२८६	जगनद	१६५८	अशुद्ध
११।३११	ठाकुर	१७००	अशुद्ध
१२।४७७	पुखी	१८०३	अशुद्ध
१३।४६०	पुण्ड	७७०	शुद्ध
१४।५३१	ब्रजनाथ	१७८०	शुद्ध
१५।५३९	ब्रजपति	१६८०	शुद्ध
१६।५७८	वृदावन दास ब्रजवासी	१६७०	अशुद्ध
१७।५८३	वशीधर वाजपेयी	१६०१	शुद्ध
१८।६४१	मून असोथर वाले	१८६०	अशुद्ध
१९।७४०	रघुनाथ प्राचीन	१७१०	अशुद्ध
२०।७७४	राजाराम १	१६८०	शुद्ध
२१।७७५	राजाराम २	१७८८	अशुद्ध
२२।९५२	श्री लाल गुजराती	१८५० ईस्वी	शुद्ध
२३।९८६	हरिजन	१६६०	अशुद्ध
२४।९८७	हरखू	१७०५	अशुद्ध

इन नए जँचे सवतो की कुल संख्या २४ है। अत अब जाँच के लिए केवल १८२ सवत और बच रहे। २४ नव परीक्षित सवतो मे से ६ पहले ही जँच चुके हैं—

१।२२६ चतुर विहारी

२।४६० पुण्ड

३।५८३ वशीधर वाजपेयी

इनको सरोज के 'उपस्थितिकाल सूचक सवत' के अतर्गत ले लिया गया है, पर प्रमाद से ये कवि अपरीक्षित सवत वाले कवियो मे भी पुन सन्निविष्ट हो गए है। इन तीनो के सवत उपस्थितिकाल है।

इसी प्रकार निम्नाकित तीन कवियो के सवत 'सरोज के अशुद्ध सिद्ध सवत' प्रकरण मे सन्निविष्ट है—

१।२३६ चन्द्रसखी

२।२८६ जगनन्द

३।४७७ पुखी

जाँच से इनके सवत अशुद्ध सिद्ध हुए हैं।

५ **सरोज के तिथि हीन कवि और उनकी तिथियाँ**—इस प्रकरण मे कुल १३० कवि है। इनमे से ३८६ धोवे दास और ८३१ वाहिद की तिथियाँ ज्ञात हुई है और इन्हे 'सरोज के तिथिहीन कवि और उनकी तिथियाँ मे समाविष्ट कर लिया गया है, पर प्रमाद से ये उन तिथिहीन कवियो की सूची मे पुन सन्निविष्ट हो गए है, जिनकी तिथियाँ अभी तक नही मिली है।

६ **एक से अनेक कवि (पृष्ठ ८७६–८०)**—इस प्रकरण मे ५६ कवियो की सूची दी गई है, जो सरोज मे १२५ कवियो के रूप मे स्वीकृत है। इधर कुछ और कवियो की भी एकता सिद्ध हुई है। ये है—

(१) श्री कृष्ण भट्ट कवि कलानिधि 'लाल'

१।१०३ कलानिधि प्राचीन १

२।१०४ कलाविधि २

(२) अमरेश कवि

१।११ अमरेश

२।४२० नालसखी

(३) नेवाज ब्राह्मण

१।४१२ निवाज कवि १ जुलाहा
२।४१३ निवाजा कवि २ ब्राह्मण
३।४१४ निवजा कवि ३ ब्राह्मण

(४) रघुनाथ

१।७३८ रघुनाथ वनारसी
२।७४० रघुनाथ प्रवीन

(५) राजाराम

१।७७४ राजाराम १
२।७७५ राजाराम २

(६) हरिजन

१।९८६ हरिजन
२।१००१ हरिजन

७ **सरोज की कवयित्रियाँ** (पृष्ठ ८८५-८६)—चन्दसखी (२३९) स्त्री नही हैं, पुरुष हैं। सेख का अस्तित्व अव आलम मे पूर्वरूपेण मिल जाना चाहता है। सेख आलम की पत्नी नही हैं, स्वय आलम हैं।

८ **हिन्दी साहित्य का आदिकाल**—पुण्ड चार नामो से मिलता है, पुण्ड, पुष्प, पुष्य, पुसी। कवि का वास्तविक नाम पूप है। इसने सवत ७७० वि० मे एक रचना प्रस्तुत की थी, जो चित्तौर मे मान सरवर तालाव की एक शिला पर उत्कीर्ण है। सम्भवत यह लेख सस्कृत भाषा मे है। सरोजकार ने इस कवि के सम्वन्ध मे जो कुछ कहा है, प्राय सभी भ्रामक है। इस सम्वन्ध मे मैंने विशेप रूप से अपने एक लेख मे विचार किया है। अव इस कवि को हिन्दी साहित्य के इतिहासो से हटा दिया जान चाहिए।

शुद्धि-पत्र

['सरोज सर्वेक्षण' मे छपाई की अनेक भूले हैं। इनमे से जिनकी शुद्धि अत्यावश्यक है, उनकी सूची नीचे दी जा रही है। पाठक शुद्ध करके इस शुद्धि-पत्र को फाड कर फेक दें। जो अशुद्धियाँ सामान्यतया सरलतापूर्वक शुद्ध की जा सकती है, उन्हे पाठको के लिए छोड दिया गया है। व्यक्ति-वाचक सज्ञाओ, सन् सवतो एव अन्य सख्याओ तथा छदो मे हुई अशुद्धियो को यहाँ विशेष रूप से सकलित कर दिया गया है।]

पृष्ठ-पक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ-पक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१९/५	सरोजने	सरोज मे	१२	काव्यभरण	काव्याभरण
पाद टि०	१९२३,३५२ए	१९२३/२५२ए	२७/१	जयवत	जसवत
२०/८	महावीर	महा वीर	४	नार्किया	नायिका
३३	रन	रज	३४	अनयोक्ति	अन्योक्ति
२१/१७	पडित	पडित।	२८/१९	चक्राव्यूह	चकाव्यूह
३३	आयुर्वेदै	आयुर्वेद	२९/२०	भारतपुर	भरतपुर
२३/१०	कारण ही	कारण ही।	३०/१	वृहत्	वृत्त
२६	कीडियो	कौडियो	३१/२	द्विवेदी	द्विजदेव
२४/३	मे है	के हैं	१३-१४	कोप्टक दोनो सुखदेव मिश्रो मे लगना चाहिए।	
६	लाल	लाला			
२८	कल्पदुम	कल्पद्रुम	१८	देवनह	देवनहा
२६	आनल्स	अनल्स	३२	वनिया।ज	वनिया
पाद टि०	२२२	पृष्ठ २२	३२	पेतैंपुर	पैंतेपुर
२५/४,६	अक्षण	अक्षर	३४	गिंह	सिंह
२६/८	पद्ममावती	पद्मावती	३२/१-२,४-५	कोप्टक अनावश्यक है।	

३२/१६	मनीराम	मनीराम
३०	नारायाण	नारायण
३४/६	सकी	सकती
७	काल	काल ।
२२	वात	वाद,
३५	इम	इसमे
३५/२	१८३३	१८८३
३७५	कविता	कवित्त
७	नदर्न/	×
३६/१८	गार्सा	गार्सा
१६	ऐदूइ	ऐदूई
२२	गई हे	गई है ।
२७	कवियो को	कवियो को
४०/२४	नदर्न हिंदुस्तान	हिंदुस्तान
४१/१६	राम्वत्	मवत्
२६	ओर, से	ओर से'
४२/१६	नदर्न	×
३१	ग्रपनी	असनी
४३/२८,२६	नदर्न हिंदुस्तान	हिंदुस्तान
४४/८	सस्मत	ममम्त
१६	लिखने का	लिखने के
२५	प्रत्यक्षीकरण	प्रत्यक्षरीकरण
३२	निम्ना	निम्न
४५/७	कृष्णानद,	कृष्णानद
४६/१८	डमकी	डनकी
३५	ग्रथ के डम	डस ग्रथ के
४७/२०	नियमो	दो नियमो
२४	नाहियत्य	माहित्य

४७/२५	स्वतत्र	स्वतत्रता
२६	देओकी नदन सुकुल	देओकी० नदन० सुकुल
४८/३२	मेरा,	मेरा
४६/१७	नही	नही ।
५०/२२	६५-८८६	६५=८८६
५१/१५	७०-७२	७०,७२
५२ ६	२८७	३८७
२६	६६८-६७२	६६८,६७२
३१	'मरोज दत्त सवत से पूर्व उपस्थित २७८—	इसको एक पक्ति नीचे होना चाहिए ।
५३/१	नही	निश्चित नही
४	सवतो	सवतो वाले कवियो
१३	१०७२	१००२
२०	रघुनाथ	रघुराज
२१	ग्रियर्सन ने	ग्रियर्सन मे
२२,/२६	द्वितीय	तृतीय
२३	रहा	रह
२४	गये हैं	गये है ।
५४/१८	७३८	७३७
३१	१८५६३	१८५-६३
५५/३	६२२	६०२
४	४२	४३
१०	—४८२	=४८२
३४	७४१	६४१
५७/७	१५१	१४१
५८/३७	इनमे	इनमे से

६०/२	६४६	६४०	७४/१	की	को
६१/१३	१६	१८	२५	दुलह	दूलह
२६	सभा	सभा ने	३१	विजैन	विजै
६२/३	विनोद का	विनोद	३६	मतिराम	मतिराम
७	गया है	गया है ।	७५/१५	सनेह	सनेही
११	मिलेगा	भी मिलेगा	७६/११	उघृत	उद्धृत
१८	नदर्न हिंदुस्तान	हिंदुस्तान	७७/१३	सपादक	सपादन
६५/२६	८५	८६	८१/३१	मतिराम	पतिराम
३१	कोलीराम	ओलीराम	८२/२३	द्वितीय	किया है'–इस
६६/१०	मीरामाधव	मीरी माधव		वाक्य को	निकाल दे ।
१४	पक्ति के अन्त मे इतना और जोड लें-		१६	रतनाकर'	रतनाकर,
	(८६) मोहन कवि (३)		३२	पिठी	पीठि
६७/२४	वगला	वँगला	८३/६	कही	कहीं कहीं
,,	मरोजाकार	सरोजकार	१६	बुँद	बु द
,,	ग्रन्थो	ग्रन्थ	८४/२	प्यारी	प्यारो
६८/६	हितराम राय	हित गमराय	१७	रगी	रँगी
१८	२०७	२००	३०	ह्वै, गई	ह्वै गई
२६	नायिक	नायिका	८५/१०	सौगुनी	सौगुनो
७०/२१-२२	राम गर्वी	×	२७	अगिया	अँगिय
२७	भी	भी ।	२६	सव	सन
७१/१५	दूहल	दूलह	८६/२	गोविन्द	गोविंद
२८	११	१२	८	दिसी	दिसि
३१	तुल्सी	तुलसी	८७/६	भाले	घाले
३२	रसिया(१०)	रासिया	२६	नति	नीति
३३	(१०)	(११)	८८/१	के	की
	(११)	(१२)	८६/१७	गभीर	गँभीर
७३/२७	१७८०	१८०३	२१	सिंगार	सिंगार
३०	मिश्र सुखदेव मिश्र	'मिश्र सुखदेव' के मिश्र	२४	छनकी	छनकौ

पृष्ठ/पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ/पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६०/१८	सोमनाथ।	सोमनाथ का।	१२	सर्वसार उपदेश	विचार माला
६१/४	अलग	अलग अलग कवि		सर्वसार उपदेश—एक पक्ति मे	
२।	तृतीय	प्रथम, द्वितीय, तृतीय		विचारमाला—दूसरी पक्ति मे	
५६	सस्करण	सस्करणो	२३	शुखदेव	सुखदेव
६३/६	वाह्य	वाह्य	१०८/८	हिमाचलराव	हिमाचलराम
६६/३	नित	प्रस्तुत	१२	नामक	नाम
६७२६	कधू	वधू	१४	नही है	नही
३२	नामक	नायक	१५	इनका	इनकी
६८/१८	इसका	इनका	२५	लिपतम्	लिषतम्
२०	६ निधि	निधि[१]	३३	कवियो के	कवियो के साथ
२६	मे दिया है।	दिया है।	१०६/७	भूमिका के	भूमिका मे
६६/२२	रस[१]	रूप[१]	"	मग्रह ग्रथ	×
२४/२७	चक्राव्यूह	चकाव्यूह	१६	१८७२	१८७८
१०१/१४	रस साहि	रूप साहि	"	१८७८	१८८३
१४	रस विलास	रूप विलास	१७	लियो	लीथो
२२	मे १७६८ उ०	१७६८ मे उ०	११०/२६	निश्चित	निश्चय
२५	ग्राई के	ग्राइ के	३२	इ०	ई०
१०१४	सुदी	सुदि	१११/६	राममनोहर	राय मनोहर
१०	तृतीया	तृतिया	११३/१३	कवियो का	कवियो के
१०/३७	राजरूप का ख्यात	राजरूप का ख्यात	११६/२३	रामचन्द्रोदय	रसचन्द्रोदय
१०/४२	थे।२	थे।	२७	हुए है	हुए हैं
२०	वेंदी, वाले	वेंती वाले	३५	ऋतु,	ऋतु
३२	१८७०	१८६०	११७/२	मिली	मिली
१०५/५	कोयल	ओयल	६	छद,	छद
१०६/११	५७	६७	१८	है,इनके	है," "इनके
१८	छेल	छैल	२१	दाऊ, दादा	दाऊ दादा
३५	वाह्य	वाह्य	२२	मडन,	मडन
१०७/१	का सरोज मे दिया हुआ	के सरोज मे दिए हुए	११८/११	लिखा है	देखा है
			२०	उमी	उस

२२	१८६३	१८८३	१३६/१५	सवध	हरि-सवध
११६/३	ग्रथ	ग्रथो के	१४०/५	अशपूर्णरुप	एक अश
१०	कवियो के	कवियो	१६	१८१७	१८१३
११	गया है।	गया है,	१४१/२६	१६३२	१६३३
१६	माला	कविमाला	१४४/६	आदि	आदर
१२०/५	कवि की	कवि	१३	१६२६	१६०६
६	सो लिख्याते	से लिख्यते	२८	१६०६	१६०६
१२२/५	वरेवा	वोघा	३५	१६२६कर२ वी	१६०६।२ वी
२४	दूत	दुत	१४५/२८	साजत	माजम
२५	का	के	३०	काको	ताको
१२३४,५	रिगोर्ट	रिपोर्ट	३०	मनसजदा	मनसवदा
५	रही	रही	१४६/५	फरके	×
७	१६४०	१६४३	१६	विसदावली	विरुदावली
१८	४६ की	४६ वी	२१	मास	पाख
१२४/७	नदर्न	×	१४८/२६	सीता	रीता
१६	टॉड	टाड	१४६/२	किशोरा	विहारा
२२	दयागकर	मयाशकर	४	महती	महली
३२	लिखित	लिखित और	१५०/१	गणेश	महेश
१२८/११	म।य।गंकर	मयागकर	२५	कीन्ह	कील्ह
१३०/६	पुत्र	पित।	१५१/३	अकोर मरोज"	अकोर"
१३५/२८	१३२०	१६२०	१५२/३	१६२४	१६३४
३३	विसमता	वण्णवता	११	हुआ था	हुआ था[२]
१३६/४	१७१०	१७६०	१७	१६२६	१६२३
१३७/३	ई०	वि०	२१	इति	इहि
१३	पुस्तिकाएँ	पुष्पिकाएँ	१५४/१२	चारन	वारन
३२	१८२४	१८।२४	१५५/३३	सेहरो	सेहरो
१३८/६,१५	१७५०	१८७५	१५६/६	दवै ओम	द्वै वीस
३०	पूरवी	पूखी	१०	मिगनर	मिगन्नर

पृष्ठ/पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१५६/२८	से	मे
१५७/२०	दिवि	विवि
१५८/१६	१७६६	१७७६
पाद टि०	वही	यही
	८१	८४
१६०/२८	१७५०	१८७५
१६१/१६	पवार	पवार,
१६२/३५	स्टेट,	,स्टेट
१६३/५	नागेन्द्र	वलभद्र
१५	तज	तव
२२	की	को
१६४/२५	१६५४	१६६४
१६५/अंतिम पंक्ति	केशवराय	केशवराम
१६७/१८	हराम	करत हराम
२१	गुदा	गूदा
२४	जोन	जौन
३१	रहना	रसना
३२	नयुनी	नयूनी
१६८/१४	कत कित	कटकित
२१	पहिदिया	पहितिया
१६९/११	कविता	कर्ता
१७०/४	चदियो	चढियो
१७२/पाद टि०	१८	२८
१७३/१५	बुद्धू	बुद्ध
२९	लाला मे	लीलाये
१७४/१२	सखी सुत	सखी सुख
१७५/११	चाद्रिका	चद्रिका
१९	१६७	१६७९

पृष्ठ/पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१७६/१	कल्यापि	कस्यापि
५	छाय	छाप
२८	किशोर	किशोर,
१७७/५	१७४०	१६४०
१७९/२०	१९०६,	१९०६।
१८०४	भाडर	भाडेर
३६	१७५०	१८७५
१८१/९	भेद	नायिका भेद
१८२/३१	देवी विनय	देवी विनय[3]
	तीसरी पाद टिप्पणी जोडिए	(३) खोज रि० १९०६/२७७
१८३/		पाद टिप्पणी एक को हटा दीजिए
१८५/२५	मैने	मैन
१८७९	काशीगति	काशीपति
२२	१७९२	१७५२
२९	लोकभापा	लोक भाषा मे
३३	आलमगीर	आलमगीरी
१८८/१५	१६६०	१६८०
१८८/२४	काशीनाथ	काशीराम
,, ३१	वशमुख	वश के सब
१८९/अंतिम पंक्ति	१५	९५
१९१/१४	दूसरे दूसरे	दूसरे
१९२/२२	१७५०	१८७५
१९२/३१	जम्म	जन्म
१९४/११	राय	राव
२०१/अंतिम पंक्ति	१९२६	१९२६/२४५ वी
२०५/२५	जमुनावती	जमुनावतौ
३०	जिसमे	/१५५६ मे
अंतिम पंक्ति	डॉ० वदरी	डॉ० वदरी नारायण श्रीवास्तव

२०६/२७	उदय	उदयपुर	२३८/२५	क्रो	को, को
२०७/३०	जिले,	जिले	२३६/८	नागारि	नागरी
२०६/१	भक्तमाल का उल्लेख है।		२३	१६०६/२	१६०६/४२
		वह भक्तमाल	२४०/६	का अंतिम वर्ष	के अंतर्गत
२१०/३१	कृष्णदास हैं	कृष्ण-भक्त हैं	३४	किरिान	किरवान
२१३/३५	सात	मे सात	,,	भुजावन	भुजान
२१४/७	वास	वरस	२४६/१	शज	वशज
२१	(निरर्थक)	(निरर्थक	२४७/२६	(४)	४
२२	नही है।	नही है।)	२५०/५	गोविद, अष्टम	गोविद अटल
२१५/१५	कृपा	कृपाल	११	भूत	मूल
२६	से	मे	२५१/१	वितास	विलार
२१६/२५	१८७६	१८७१	७	हैंनति	तिन्है
२१८/अंतिम पंक्ति	३८३	३४३	१०	तासु	रच्यौ तासु
२२०/१४	लखशिख	नखशिख	१२	लोक	लेखक
१५	गान	भाग	२५१/२४	थन्ग्र	ग्रथ
२२२/३०	मयाशकर	मयाशकर याज्ञिक	२५	लरो	रोला
२२३/२५	राजन	राजा	२६	डछो	छोड
२२४/२६	भूषणदास	भूषणदाम	३३	नामा	नाभा
२२५/२६	सस्करणो	सस्करणो	२५२/१	भारतपुर	भरतपुर
	मे नही है।	मे नही है।	११	गोद	गोविंद
२२७/१७	कालिका	मालिका	२५	कारोकोली	काकरोली
१६	भर	पर	२५३/८	कर्नभिनर	कर्नभिरन
२२६/१६	से	सरोज मे	१७	चपित	पचपति
२३१/२५	वत	तव	२५४/५	मैपैतेपुर	पैतेपुर
२३२/२६	गुरु	गुरु काह	१७	गजात	गाजत
	काह	×	२४	मेटी	भेंटी
२३३/७०	सुढालिया	सुठालिया	२५५/७,१६	पर्व	पक्षी
२३५/२४	रसिकोत्र स	रसिकोतस	३३	कवि तानि	कवितानि

२५५/३३	सुमेरुफ्न	सुमेरुन	२७४/२१	काव्य प्रकाश	काव्य प्रकाश
३४	जतदावन	जल-दानन	२७७/१६	खरा नोन	खारी नोन
,,	सिध्रु न	सिध्रुन	१७	ये तो	येतो
२५६।१	सुभती	सुभली	३२	दोह	दोहो
२	को	की	२७९/२६	आरभ	आसपास
१०	ले	ते	२८०/२	इनकी	(इनकी
११	नैवध	नैषध		हैं।	सुदर है।)
२६	तीजो	लीजो	११	इनकी	(इनकी कविताएँ
३०	कृते	करिते		सुदर कविता है।	सुदर है।)
३३	नम	नभ०	२८१/५	गौरखा	गौरवा
२५९/२	दुसनि	दसमि	/११	करपद्रुम	राग कल्पद्रुम
५	पग	दूपग	२८२/२४	ि है क	है कि
७	इन ग्र थो	इस ग्र थ	३१	शिक्षा	दीक्षा
२६०/८	जयवत	जसवत	२८६/१४	वरतत	वरनत
१६	१३।	१३,	१७	गोपीनाथ	गोपानाय
३५	१८५७	१८७५	२८७/१०	वेस	वेदच
२६३/५	ज० स०	स०	२६	चद्रलता	चद्रलाल
२६५/१५	वेचन	वचन	२८८/२	खोचियो	खीचियो
२६७/१६	मालवा	मल्लावा	१८	वन	बनत
२६९/२३	अष्टद	अष्टदश	३१	अव दुस्ममद	अवदुस्समद
२७०/२८	१७५०	१८७५	३४	ग्राम	राम
२७२/६	११,४६	११४६	२९०/८	दूजा	दूजो
२७३/८	की	का	२९१/८	कविता	कवित्तो
२४	चक्षुर	चतुर	२९३/१४	हजारा है।	(हजारा हैं।)
२६	विवरण	विवरण मे	२९५/३५	अहेर	अटन
३०	नाम दिया	दिया	२९६/१४	यह महा	महा
२७४।१	छछममा	छमछमा	२९७/५	चुनि वनि	गुन धुनि
२७४/२१	ग्रंथ	भारी ग्र थ	५	रसग्वान	रसवान

पृष्ठ/पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२९७/१८	सुख	सुभ
२९८/६	अजवार	जनवार
३६	वह	वहु
३००/१	और	औ
३०३/२७	डलमरू	डलमऊ
३०४/३१	इनका	इनकी
३०५/२४,२५	नामा	नाभा
३०६/२९	वोफ	वोध
३०७/२५	का	को
३८८/२३	७६०	१७६०
३१०/३१	पर्वंगम	पवगम
३१२/१९	इनके चोखे है।	(इनके चोखे हैं।)
२७	कवि	कवित्त
३१३/६	इनके चोखे है।	(इनके चोखे है।)
३१५/२९,३०	वारिवड	वरिवड
३१८/१०	१८५०	१८७५
३१९/५	१८५०	१८७५
२९	१७५०	१८७५
३२०/६	इनके मे हैं।	(इनके मे है।)
८	१८५०	१८७५
१७	इनके मे है।	(इनके मे है।)
२०	१७५०	१८७५
३२३/८	यह थे।	(यह थे।)
१८	अकवर थे	(अकवर थे।)
३२४/१८	कोठवा	कोटवा
३२५।९	१२५	१०५
१४	१९१२३	१९२३
३२६/१८	नाभ	नभ
३३०।३	उसका	पसका
१६	पुर	पुरी
२२	लुनौ	लुनी
३३४/७	५२३	३२३
२१	हजारा हैं।	(इनके हजरा मे कवित्त है।)
२६	,,	,,
३१	अतप	अलप
,,	यामत	न्यामत
३ ६/११	थे	थे[१]
३३६/१५	तेहन	लहन
२०	(निरर्थक)	(निरर्थक,
,,	नही हे।	नही है।)
” — पाद टिप्पणी सख्या दो को हटा दे।		
३३७/२	निरर्थक नही है।	(निरर्थक नही है।)
३३७/१४	तोपमणि[१]	तोजमणि[२]
’ पाद टि० जोडिए—(१) देखिए यही ग्रथ कवि ३९२		
”	(१)	(२)
३३८/७	१९१२,१८९,	१९१२।१८९,
१९	सौ	औ
३३९/१२	दत्त	दल
३४०/३	कीन्ही	कीन्हो
६	मुभ	सुभ
११	साहित्य	नाहित्य[२]
३४१/पाद टि०	खोज	(२) खोज
३४३/२३	पितामह	पितामह का

३४५/१७	ओर	ओ	३७१/११	राज	राजा
३४६/७	अरवत	अरवल	२६	नारिंद	नरिंद
३४९/१९	होय	हीय	३७७/१०	वैला वाटी	चेला चाटी
३६	का	नाम का	३०	मे	मैं
३४८/	पाद टिप्पणी ३ को हटा दे।		३२	सरसा	सरसी
३४९/११,१२,२८	लाल कृपाल	लाल	३७९/१२	इन्हीने की है।	(इन्होने की है।)
३५०/१३	पद्य	पद।			
३४	लाल कृपाल	लाल स्वामी	१६	गढ	हाल गढ
३५१/पाद टि० ४०		४०८	३८१/२०	सवध	हरि-सवध
३५५/१५	अयुक्ति	अत्युक्ति	३८२/२५	काम	फाग
१६	खर्गुसे	खर्गु लै	पाद टि० भक्ति		×
३५७/पाद टि०	(१) माधुरी	(२) माधुरी	३८६/१	कालि	वालि
३५८/१५	सुभाग	सु वाग	३९०/३३	रोग	राग
३५९/पाद टि०	४१२	४१	३९२/५	नीमरावा	नीमराना
३६२/२८	अष्टयाम भारत	अष्टयाम	३९५/२३	सम	सुभ
३६६/२०	सवली	सखली	,,	खस	जस
३२	चद्रिका है[५]	चद्रिका[६] है	२५	दारि	वारि
,, पाद टि०	पक्ति२।४७ १९१७ ए	१९१७।४७ए	२६	सवाल	सबाव
पाद टि० जोडिए	(६) खोज रि०	१९०१।५७	२७	खरम	खुरम
३६७/३	१४८०	१८४०	२८	कल	फल
,,	ही है।३	ही है।	३९७/११	फर कसेर की	फरकसेर को
७	१७१२	१७५२	,,	मो हक	भो इक
३६७पाद	टिप्पणी १ को हटा दें।		२०	की	को
,,	(२)	(१)	२२	खान मुसले	खान या मुसले
,,	५०१	५०६	३९८/२३	रखयन	रखैयन
,,	(३)	(२)	३९९/१	तिप सहत	विस महत
३६८/१५	को महिमा	की महिमा	१५	'ग्रथ	भे ग्रथ
३३	गतला	गलता	४००/५	इन्होने की है।	(इन्होने की है।)
३७०/२५	ब्रह्मोत्तर	ब्रह्मोत्तर	४०१/१७	गौड़	गौड़ीय

४०२/४	दिता	दित्ता	२५	कास्यथ	कायस्थ
६	शृ गार	शृ गारी	२८	मिथेय	भिधेय
१३	१७५०	१८७५	२९	नव रस	नवलेन
२१	सूरत	सूदन	३०	पाद टिप्पणी (१) को हटा दे	
४०३/५	इनके हैं।	(इनके हैं।)		पाद टि० (२)	(१)
८	१७५०	१८७५	४१०/१	मनै	भनै
२३	हावडा जैंक	छावडा जैन	११	उ	उर
४०४/८	वावति	अवावति	२४	सुचवारू	सुचि वारु
२१	जग	जगत	२६	उत्तरा पाड	उत्तरापाढ
२४	भेदिनी	मेदिनी	३०	तरन	तूरन
४०५/२	रामपुर,	रामपुर	४११/१२	पाच	पाँचै
५	पटिया	गढिया	१७	सामित्री	सावित्री
५	अडिया	जडिया	३२	तुर्न	तूर्न
५	'अनेकार्थ	अनेकार्थ,	४१२/१३	कहा	कहौ
६	नाम	मान	३५	गुडगाव	गूढ गाँव
१३	सुहृद्ु	सुहृद,	३७	ठाक	ठीक
१४	रगपगे	रँगमगे	४१३/२	अनवार	जनवार
४०७/१७	खीचा	खीची	४१३/३	यह और	यह
४०८/१०	अनुपा	अनुगा	१४	१९२७	१९२०
१७	कवियो	कवित्तो	४१४/१८	जगतारनी	जगतारनौ
२७	जजीर	जजीर[५]	२४	और	औ
पाद टि०	१९२२६	१९२२।२६	२६	श्री	श्रौ
पाद टि० जोडिए-(५) खोज रि० १९३८।१०४, प १९२२।४३, १९३८।१०५,१९०५।३८			४१५/४	नीलावार	नीलावर
			७	इनकी की है।	(इनकी की है।)
४०९।२	इस पक्ति मे केवल इतना है— (५१) नवल कवि।		४१६/५	पचवाने	पचावनै
			६	अनववीनना	अनववानना
४,५	नील	नौल	११	नामक	नायक
१९	कोण	कोप	२१	तीठि	नीठि

४१६।२६	उतार	उतारै	४४७/१६	पुष्पी	पूषी
,,	की	को	२४	काल	भाषा
४१७/१०	नाने	नोने	३६	इनका है।	(इनका है।)
४२०/११	सिंगारही	सिगार की	पाद टि०	हाँड	टॉड
२६	श्रुति	श्रति	,,	हाँड	टॉड
४२१/ पाद	माया	मया	४४८/८	कालकाराव	फालकाराव
४२२/१०	वटकि	चटकि	,,	अनोवान	अनोवाम
३०	१७५०	१८७५	/११	म्वन्ध	सवध
४२३/४	१७५०	१८७५	४५१/२५	वघेली	वघेल
४२५/१०,१६	चकव्यूह	चकाव्यूह	४५२/२२	वघेली खडी	वघेलखडी
४२६/२२	लखनऊ	डलमऊ	२३	छपामुखाभ्युदित	छपामुखाम्युदित
४३०/१६	यह था	था	४५४/२१	था	किया था
१७	उल्लेख	यह उल्लेख	४५५/२२	वलदेल	वलदेव
४३२/१५,२५,२५	अनिन्दच	अनिन्य	४५७/३१	के	से
४३४/६	पहला	पहलाद	४६०/१४	हित०	हित
४३५/२८	राय सिह	राम सिंह	पाद टि०	१९२१	१९२३
४४०/२	१५७०	१५६०	४६२/२५	हुआ और	हुआ
४४१/२१	इनके—ह।	(इनके—है।)	४६६/अतिम पक्ति	निन	रचित
४४२/१८	इनके—हैं।	(इनके—ह।)	४६७/२०	इनेहने	इन्होने
४४४/	पाद टिप्पणी जोडिये—		४७२/१५	इनके है।	(इनके हे।)
	(५) देखिए यही ग्रन्थ, पृष्ठ २४१		४७३/७	इनके ह।	(इनके हे।)
४४५/१२	मोम्हमदी	मोहम्मदी	४७४/६	छीया	छीपा
१७	मोहे	पाडे	२१	मरीज	सरोज
४४७/२,४	राम	राय	४७६/२१	दिग्विय	दिग्विजय
१४	Pushha	Pushha	२२	भूपण	भूपण,
१७	Puhha	Pushha	२७	सोह	सोहत
१८	Verseel	Versed	२८	प्रतत्यच्छ	प्रत्यच्छ
४४७/१६	कदण	करुण	४७८/२१	मेहनीन	मेहनौन

४८०/२६	त्ग्रयन्त	अत्यन्त	५०१/२०	इनके हे।	(इनके है।)
४८१/२१	निचत	निश्चित	५०३/३१	परिभापा	परिमाण
४८२/६	मे महेवा	मेह हवा	५०४/२,३	इनके है।	(इनके है।)
४८३/२१	इनके है।	(इनके हैं।)	पादटि०	६६	१६
४८५/१०	पुका	पुष्पिका	पाद टि०(३) को हटा दे।		
१२	अलकार एव अलकारादर्श दर्पण		५०५/पाद टि० बढाइए-(१) खोजरि० १९२६/४३		
	अलकारादर्श एव अलकारदर्पण		,,	(१)	(२)
४८६/५	की	को	,,	(२)	(३)
४८६/१८	टोकाए	टीकाएँ	,,	(३)	(४)
१९	ककीर	कवीर	,,	(४)	(५)
२७	विनय पत्रि	विनयपत्रिका की टीका	५०६/१७	राम	सम
४८७/११	लजी	शुक्ल जी	२४	ई०	वि०
,,	इतिहाम	इतिहाम मे	२६	५८	५२
१४	'ग्रन्थ-शाति	ग्रन्थ 'शाति	पाद टि०	१०	१८
४९०/१८	अर्थ	ग्रथ	५०८/२९	माँगै	भागे
४९१/२१	मार्तड	मातग	५१०/१०	वादीराय	लाला वादीराय
२४	भाम नगर	भाग नगर	१३	मक्ख	मक्खन
४९३/पाद टि०	पैरा १२	पैरा १, २	३१	ऐसे कवित्त, ऐसे शिवराज	
४९४/३	मिरजापुर	गिरजापुर		ऐसे-ऐसे कवित्त शिवराज के	
४९६/१८	८३०	=३०	५११/६	वदी	बूदी
२२	वडा	कडा	१३	राज	राजा
२९	से	सै	२७	मनिराम[3]	मनिराम
४९७/१३	गदे	दे	२८	है।[3]	है।[2]
४९८/७	वृन्दवन	वृन्दावन	३२	प्रकाश[4]	प्रकाश[3]
२९	१५६	२५६		पाद टि० ४ हटा दे।	
४९९/३२	१७५०	१८७५	५१२/१७	का	को
/पाद टि०	(२) राजस्थानी	(३) राजस्थानी	१९-२०	कवि का पुत्र था	×
५००/५	इनके हे।	(इनके है।)	२६	दुर्गाधिराज	गढा दुर्गाधिराज,

५१२।२६	लक्ष्मी,	लक्ष्मी	५३९/२१	१७५०	१८७५
२७	महाविराजधीरा	महावीरांविवीर,	५४०/१८	कल्लोल	कल्लोल
		राजाविराज	५४१/५	कविता	कवित्त
५१३/१४	कवि,	कवि	८	हयनाल	हथनालै
३२	एक सौ	एक सी	९	तानि	तरनि
५१४/२०	अलकार गया है	×	१८	किया है	काल है
५१५/७	मूलनास्ति	मूलोनास्ति	२६	लिखा	लिखी
७	कुतो	कुत	२९वी पक्ति के वाद छप्पय का चौथा चरण		
५१६/९	हित चरित्र और	×	छूट गया है—		
„	के अश ह	का अश है	कवि मुकुद तहँ भरत खड उप्परहि विसिक्खिय		
५१९/५	इनके सुन्दर ह।	(इनके	३१	खग्य	खग्ग
		सुन्दर है।)		अग्य	अग्ग
१९	किया	लिया		अग्य	अग्ग
५२१/१४	१९३८, १० ए	१९३८/१० ए	५४२/१०	हम	हय
५२३/२९	भमवानदास	भगवानदास	२७	खेल व	खेल
५२७/पाद टि०	१९४७/७२	१९४७/२७२	५४४/२९	मन	मून
५२८/२१	निपटरचक	निपट, रचक	५४५/४	मन	मून
५३१/९	पद्पुराण	यह पद्म पुराण	१०	सुभनस्तु	सुभमस्तु
५३२/पाद टि०	६५	६५१	११	मूल	मून
५३३/१३	धव	अव	५४७/१९	देह	देइ
५३४/११	१७५०	१८७५	२२	अपनी	अपनौ
/२८	प्रमादत्वरा	प्रमाद त्वरा	५५०/१३	भोव	गाव
५३५/११	घोर	और	१६	ला	ता
३०	खोची	खीची	१७	प्रथा	पृथा
५३७/८	मान कवि,	मान कवि १,	१८	त्यी	त्यो
५३८।पाद टि०	७९०	१९९०	५५३/१२	मूल्यौ	भूल्यौ
२९	अप्टादक्ष	अप्टादस	१५	खण्खित	खण्डित
५३९/५	सुचिमास	सुचि मास	२२	वे	थे

२४	रङ्गीले	मुहम्मद शाह रँगीले	२०	दिवज	द्विज
२५	यह	यही	२७	चरना	चना
५५४/१६	नितके	तिनके	पाद टि० (३)	हिंदी साहित्य का इतिहास	
२४	ह्या	ह्या			(१) यही ग्रय
५५५/२४	कीनी	कीनी	५७६/१९	जगनाथ	जगन्नाथ
५५६/५	वस	वसु	२१	जगनाथी	जगन्नाथी
३२	१७५०	१८७५	५७७/२	वहै	ह्वै
५५८/२५	छ	×	५७८/३	।	.—
५५९/२४	१७५०	१८७५	१४	द्रूत	द्रुत
पाद टि०—भाषाकाव्यसग्रह देखिए यही ग्रंथ			५७९/२२	१८१७	१७९७
५६०/२	१७५०	१८७५	५८०/६	ललारे	लला रे
७	ततार	तत्तार	५८१/१५	कोटावन्दी	कोटा बूँदी
१५	१७२०	१८७५	२०	यह	×
५६१/२९	है	ई	२१	के	×
५६२/१५	ग्राम	प्राग	५८२/१	१९,६ए,	१९६ए,
५६३/ पाद टि० भाषाकाव्यसग्रह देखिए यही ग्रय			५८३/१३	द्रूवन	द्रुवन
५६४/३	रघ्र6	रघ्र९	५८४/१८	त्रुन्दर	नुन्दर
५६५/ पाद टि० देखिए वही		यही	५८७/२१	उद्धत	उद्धृत
५६६/२६	सवार	मुवार	५८८/२५	रचनाकाल	जन्मकाल
५७१/पाद टि० भक्ती		यही	५९१/९	हरघोरपुर	हरघौरपुर
२६ चटराज के पहले जोडें—चक्रवर्ती, रामचरण चक्रवर्ती के रामशरण			५९३/२३	मुसावह	मुनाहव
२६	यही	यह	५९४/१	शुद्ध	शुक्र
२६	रामचरण	रामशरण	८,९	पाई	पाइ
२७	राम चरण नाम से	×	११	ग्रय	ग्रर्थ
५७२/पादटि०	खोज रिपोर्ट	यही ग्र थ	५९५/१७	१९३ ईस्वी	२९३ई
५७३/१	भाग	मार्ग	५९६/२	नत्रह	नत्रहै
५७५/१४	विस्तारियो	विस्तारयो	५९७/५	दो	दोनो
१५	उतारयो	उतारचो	८	मित्र	मित्र

१३	भोग	(भोग)	६२४ पाद टि०	खोज रिपोर्ट	यही ग्रन्थ
५९९/१४	कि	किए	पक्ति १८ के पश्चात् पृष्ठ के मध्य मे लिख लें—		
१७	भयान	मयदान		सर्वेक्षण	
२७	हिम्मन्त	हिम्मत	६२६/२५	उद्धत	उद्धृत
६००/८	१७५०	१८७५	६२७/९	रन	रज
६०१/६	उघोत	उदद्योत	२३	तारि	तोरि
६०३/८	उस्पन्न	उत्पन्न		फेरि	फोरि
२४	जी	जू	६२८/१३	बारहमास	बारहमासा
,,	राम सागरे	राम सागर	२६	हीना	महीना
६०४/१	प्राकश	प्रकाश	६२९/२०	धीरे-धीरे	धीरीधर
२०	भैजाकी	भै जाकी	६३१/२	धीरी-धराहि	धीरीधरहि
६०६/२१	मदेशदत्त	महेशदत्त	९	रनौ	रु नौ
६०९/२५	एक मार्च	राम काव्य	१८,१९	की	कौ
६१०/१३	काशी	दक्षिण	६३२/१६	हरिवश	हरिवश
६११/११	गलता	गलता	,,	अघ	अघ
६१२/२५	ही है	वी है	,,	प्रसस	प्रसस
२८	को केलि	की केलि	२०	थे।	के
६१४/१४	मुगल	युगल	६३३/१	आपने	आप
१९	मञ्जिरी	मञ्जरी	२४	लाउ	लाऊ
६१५/८	ई०	वि०	२६	ईश्वरी	ईश्वर
१५	मह	भइ	६३४/	पक्ति २५ के प्रारम्भ मे जोटे—	
१६	सन्त	सत		पुत्र थे। यह	
६१८/६	को	के		और बीच से 'पुत्र थे। यह' इसे	
६१८/१०	इनके हें।	(इनके हैं।)		निकाल दे।	
६२०/७	अमासुर	अमा, सुर	६३६/१५	भीजन	भोजन
११	भक्तमाल	भक्तमाला	६३७/२,१२,२१	इनके है।	(इनके है।)
१४	१९००	१९१४	६३९/७	की नाम	को नाम
,,	१४	पक्ष	२३	नैर	नूर

६४०/२३	जदाज	जदज़	पाद टि०५	वही	खोज रि०
६४२/२	पट्ठी	पट्टी	६६०/७	गुञ्जीली	गुजौली
६४३/१३	इनके है।	(इनके है।)	१०	नग	नभ
१७	कसि	कवि	१०	शाल	शाक
६४४/८	हवै	ह्वै	६६१/१	राम	राय
१६	मे०	मे	६६२/१	चैततीज	चेत तीज
२८	कुछ	जो कुछ	१०	पस्यमगुर्जु र	पस्यम गुर्जुर
६४५/१४	माइ	माह	६६३/पाद टि०	खोज रिपोर्ट	यही ग्रथ
२५	त्रय,	त्रय	६६४/२६	सवध	हरि मवव
६४६/१६	कपा	कृपा	६६५/पाद टि०	राधाकृष्ण दास, भाग १	यही ग्रथ
६४८/५	उद्धत	उद्धृत	३०	भवन	भूपन
६५०/पाद टि०	वुदेल वैभव	यही ग्रथ	६६६/पादटि०	राधाकृष्ण दास ग्रथावली	यही ग्रथ
६५३/३७	१७५०	१८७५	६६८/१६	औधड	औघड
६५४/१७	भाव्यो	भाख्यो	पाद टि०	माधुरी,वशीधर	यही ग्रथ
२७	सिगारामऊ	सिगरामऊ	६७०/६	विचारेलाल	विचारे लाल
२६	कामुदी	कौमुदी	१७	लालन	लाल न
६५५/६	इसकी रचना स० १६१२ मे हुई— इस वाक्य को निकाल दे।		२३	विहार	विहारी विहार
			६७१/१६	भूम	भूप
६५६।४	सागानेर	सागानेर	१६	वती	पती
५	वाणी	वाणी और	६७२/२६	शनौ ग्रथ	भयो ग्रथ
१५	इनके हे।	(इनके हैं।)	६७३/२२	मिर्जापुर	मिर्जा
२१	भाषा गीत गोविद	(भाषा गीत गोविद)	६७४/पाद टि०	नागरी प्रचारिणी पत्रिका	यही ग्रथ
६५७/६	तज	तव	६७५/अतिम पक्ति	लालचददास	लालचदाम
८	मुर्शिवाद	मुर्शिदावाद	६७६/३	हरि चरित्र	हरि चरित्र
११	अत	अतर	६७७/६	विश्व	विष्णु
११	मा	महिमा पुर महिमा महत	१६	नविगत	दिवगत
६५६/	पाद टि०४ वही	यही ग्रथ	६७८/१३	और	औ

६७६/२०	प्रतिलिपि	प्रतिलिपि काल	१८	सरस्वी	सरस्वती
६८०/१५	लक्ष्क्षण	लक्ष्मण	,,	ले	लेख
६८१/२	उद्धत	उद्धृत	६९४/१२	वेसा	वेस
५	इनके हैं।	(इनके है।)	१७	१९२२	१९२३
१८	वैल	वेल	६९५/४	सुन्वर	सुन्दर
६८२/८	की	का	६९६/९	राग	राम
१५	करयो	करचो	६९८/५,६	दी	डी
१८	कह्यो	कह्यो	१२	चिन्ता मन्यो	चिन्तामन्यो
६८३/७	इस पर	×	१९	ग	ई
१५	ध्यवहारु	व्यवहारु	६९९/१	दोहास रोज	दोहा सरोज
२०	विवि	विधि	७०/९	मय	भय
पाद टि०	खोजरिपोर्ट	यही ग्रथ	१५	कुतुम	कुतुप
६८४/३	सागर	सार	पाद टि० १	खोज रिपोर्ट	१९२३।३०१ जी
१२	कवि तामसु	कविता यसु			यही ग्रथ
१५	सुगम	सुभग	२.	वही	यही ग्रथ
२१	अय	अथ	३	वही	यही ग्रथ
२९	पायो	पावो	७०२।३०	पाटठ्य	पाठ्य
६८५/२०	इनके हैं	(इनके हे।)	७०३।१९	को	की
६८६/११	१७५०	१८७५	७०४/२	सहस छतीस	सहस्र छतीस
६८७/१८	छवि	छाव			
६९०/२	शकत	शतक	१५	गवी	गची
पाद टि०	१९३२ १२९	१९३२।१२९	७०५/४	समि	ससि
६९१/११	सूदन की हे।	(सूदन की हे।)	१६	इनकी है।	(इनकी है।)
२६	रिपोर्ट	वि०	पाद टि० १	खोज रिपोर्ट	१९१७।११६
६९२/१	कादीर	कादिर			यही ग्रथ
१२	इन्ही के	इन्ही के हैं	७०६/२	तुलति	तुलित
१७	सम्मुद	समुद	७	प्रवत	प्रवल
६९३/९	मित्र	मिश्र	१६	भे	मैं
११	सन्यासी	एक सन्यामी		माल	भाल

७०७/१८	१७६६	१८६६	२०	वस	,जस
२३	जम्व	जम्वू	७२६/१	छद	छद का
पाद टि०२	१९०५	१९३५	पाद टि०	राजस्थानी भापा और साहित्य	
७०८/४	भो	मो		यही ग्रथ	कवि सख्या
१५	वस	वस	७२९/१	खाना	खानखाना
७०९/९,१५	ये हे।	(ये हे।')	पादटि०	१९२६,	१९२६।
२६	३९६	३९७	,,	१९३१	द १९३१
७१०/४	दुपण	दूपण	७३०/८	सन्तो	सत
११	पडानन	पडानन	७३१/ अतिम पक्ति	सखोसुख	सखीसुख
,,	छह	छह।	७३२/ पाद टि० १ को हटा दे।		
१९	जू	जु	७३३/२,८	इनके हे।	(इनके हें।)
२०	वरने	करन	७३६/१६	मोहम्म	मोहम्मद
२१	वा	या	७३७/४	उद्धत	उद्धृत
७११/४	दिव	द्वि	२३	कौन्हो	कीन्हो
७१२/६	हमने	हममे	७३८/१२	दाहनी	दाइनी
१५	सरोज	सरोज का	७३९/१९	मृत्य	मृत्यु
२६	पुत्र	पिता	७४०/११	श्यासदास	श्यामदास
७१३/२७	झपपट	झटपट	१३	२३	२,३
७१५/६	कला	भाषा	२३	इनके हैं।	(इनके ह।)
१६	इनके हे।	(इनके है।)	७४१/२५	वाटि	वादि
७१६/२१	कवि	कवि ने	७४२/पाद टि०	१९२१	१९२९
७१८/२०	१६	१९	७४३/१०	सरोज	खोज
७१९/पादटि०२,३	यही,	यही ग्रथ	७४४/२३	अथ	अर्थ
७२०/९	प्रथम	प्रश्रय	७४४/पाद टि०	वही	यही ग्रन्थ
७२२/८	१६	१,६	७४५/२०	शोभनाथ	सोमनाथ
७२३/२४	वसु°	वसु^c	२४	गुने	गुन
७२४/६	वैसा	वैस	पाद टि०	सोभनाथ	सोमनाथ
१८	नावाव	नवाव	७४६/३	सोभनाथ	सोमनाथ

१८	पढ	पढे	७७३/पाद टि०	सूर मिश्र	सूर
७४७/पाद टि०	१९२७	१९२०	७७४/१	सोभनाथ	सोमनाथ
	पाद टि० ३ यही ग्रन्थ	खोज रि०	७	जगदास	जगदीस
७४८/२१	पारा	पाया	२०	व दनेस	वदनेस
७४९/पाद टि०	यही ग्रन्थ	खोज रि०	७७५/७	सरोज मे	सरोज मे दिया
७५०/१५	कृष्ण विलास	कृष्ण विलास[२]	८	३६७	(३६७)
	जोडेपाद टिप्पणी (२)	खोज रि०	७७६/९	तरङ्ग	तरङ्गें
		१९२६।४३२	२०	की	कौ
७५२/२	इनकी है।	(इनकी—है।)	२१	एक	एक काव्य ग्रन्थ
७५४/९	की	की की	२४	२७८	(२७८)
१८	जू	जु,	७७८/१५	विरयान	किरपान
१९	वास	वीस	७८२/८	पूरी	परी
७५५/११	श्री	श्री	७८३/पाद टि०	९०	१९०१
७५७/५	निकाल दें—	खोज रिपोर्ट	७८५/७	१७५०	१८७५
		१९०६।११२	२६	मदावल	भदावल
७५८/१८	१७५०	१८७५	पाद टि०	हिंदी साहिक का इतिहास	यही ग्रथ
७६०/४	इन	इस			
८	गया गया	गया	७८६/४	की	को
१२	लीलावती	लीलावली	१४	देखिये	देखिवे
७६१/१४	वत्तसि	वत्तीस	१८-९	यह कवि थे।	(यह कवि थे।)
७६२/१३	जानकारी	खास जानकारी	१४	कैथाल	कैथल
७६३/पाद टि०	सोमनाथ रत्नावली	यही ग्रन्थ	पाद टि०	खोज रिपोर्ट	यही ग्रथ
७६४/११	१७५०	१८७५	,,	यही ग्रथ	खोजारि०
२४	रामनन्द	रामानन्द	७८७/१८	इनके मे हे।	(इनके मे है।)
७६६/१५	गृह	गूह	७८८/७	इनके मे है।	(इनके मे हे।)
७६७/१३	११२६	१९२६	११	नामकमाला	नाममाला
२९	वखान को	वखान करै	१९	प्रभाद	प्रमाद
७७०/१	वे है	हें, वे ए हैं	२३	सोभनाथ	सोमनाथ
७७१/१३	नदर्न	×	७८९/२,४	सोभनाथ	सोमनाथ

७८६/२,४	सोभनाथ	सोमनाथ	८००/११	देवचंद, अनन्य रसिक	×
१६	जया सिंह	जय सिंह		सहचरि शरण, वल्लभ रसिक	×
२६	सनेतस	समनेस	१६	निधि	निधुवन
७९०/७	स०	स० १८८१	२४	विललाव	विलावल
१०	की रसराज	रसराज की	८०१/२१	घरणी	धरणी
७९१/२	मतिराम दीजौ	दीजौ मति राम	२३	भृत्यगुक्त	भृत्यमुक्त
४	वनी	वनौ	२४	दुरुक्त	दुरुक्त
८	आय	आया	२५	सवैदा	सर्वदा
७९२/२४	सूदन है।	(सूदन है।)	८०२/१७	दी हैं	दी हैं[3]
७९३/५	८७८	१८७८	१८	अवीहा	अनीहा
२४	निघान	निधान	२०	बुघवार	बुधवार
७९४/१२,१५	मॉडेर	भाडेर	पाद टि० ४	वही	हरिदासवशानुचरित्र
१७	काव्य	पाठ्य	८०३/२	के	मे
१९	शास्त्रोपयोगी	शालोपयोगी	२३	रत्नावली	छद रत्नावली
२५	पत्रमालिका	पत्रमालिका[3]	८०४/१०	हराराम	हरीराम
७९५/४	शम्भूनाथ	शम्भु नाथ	११	इममे	इसमे
१७	१८१७	१७९७	१५	पिलङ्ग	पिङ्गल
पाद टि०	खोज रिपोर्ट	यही ग्रथ	२०	हरिदयाल	हरदयाल
७९६/२-३	तुलसी हैं।	(तुलसी है।)	२३	शृ गार का नवरस	शृ गार नवरस
१५	पार्र्थ	पारथ	८०५/२	सत्यकवि	सत्कवि
१६	१८१७	१७९७	१४	सैनुहडा	सेनुहडा
पाद टि० १	खाज रिपोर्ट	यही ग्रथ	२४	उवीश	उर्वीश
पाद टि० २	यही ग्रथ	खोज रि०	८०६/१४	नीर	मीर
७९७/१६	यह—के आगे जोड ले		२४	हो	हौ
	अपने बाप के मरने के समय २२ वर्ष के थे और स०१७०३ मे मरे। अन्यत्र उसी ग्रथ मे		पाद टि०	नागरी प्रचारिणीपत्रिका भाग ९, अक ४	यही ग्रथ
७९८/२२	सुभम्याभूतू	सुभभूयातु			
२५	नौने	नोने	८०७/१७	रसिक माल	हित चरित्र
७९९/२२	नौने	नोने	८०८/२४	की की	की
पाद टि०	खोज रिपोर्ट	यही ग्रथ	८०९/१५	वी	जी

२३	वडी	वडो
पाद टि० २,३ यही ग्र थ खोज रि०		
८१०/६	सत	सुत
१०	की	को
८१२/१०	भो	भी
८१३/२४	पुप्ट	पुष्ट
८१४/७	हरिभान	हरिभानु
७	भपण	भूषण
१६	१७५०	१८७५
८१६/२०	१७५०	१८७५
२३	इनके .हे ।	(इनके हैं ।)
२५	१७५०	१८७५
८१७/४	विद्यनाम	विद्यमान
६	आजन खा	आजम खा
१५	वसे	वसे
१८	पढ़ै	पढे
८१८/६	इनके मे ह ।	(इनके मे हैं ।)
११	दोहा	यह दोहा
२२	हरिदेव	हरदेव
८१९/१	११०६	१९०६
१४	विहार्रहि	विहरहि
२३	६४४	१६४४
२४	अंक	अक
८२०/७	१६८०	१६८०
१७	महेश	महेशदरा
८२१/११	इनके ह ।	(इनके हे ।)
२२	नही किया ।—इसके नीचे 'सर्वेक्षण छपना चाहिए ' फिर अगली पक्ति से आगे की सामग्री ।	

२५	के	मे
८२२/२	जपै	जु पै
१८	साहित्य	साडिल्य
८२३/५	व्यास्या	व्याख्या
१६	न्नी	की
२१	सत्र	सुत्र
२२	सर्वेक्षण	×
८२४/५	गाँवा	गाव
१०	मास	भास
२५	ताकै-मौत	ताके गोत
२८	सम	सुभ
८२५/२	वरने	वरन
"	सहलास	सहुलास
८	शण्डिल्य	शाण्डिल्य
"	वढया	वढैया
१०	और	ओर
१६	प्राचीन	×
८२७/११	उसने	उसमे
१६	सनाढचा	सनाढ्य
१९	नौने	नोने
८२८/४	उन्हे को	हिम्मत वहातुर ने अली वहातुर को
८२९।६	नरेश	नरेश हुए,
१२	नाथ	गाथ
२०	भली	भलो
२४	उ	उ०
२५	का शिवराज	काशिराज
८३३/१५	कवयो	कवियो
"	उनके	उसके

८३५/१६	पक्ति के आगे इतना और जोड		५	अपर	अगर
ले—जिनकी जाच नही हो सकी है।			१०	ईन्द्रजीत	इन्द्रजीत
८३६/१	मिली	मिली	२६	कार वैग	कारवेग
५	३०	३२	३०	१९३०	१९३१
६	आगे है , आगे दी जा रही है।		८४२/३	१७२९	१७१९
७	३१	३२	८	१६३९	१६३६
८	शानसकल	शासनकाल	८४३/६	१८०३	१८२४
११	जिनका	जिसका	९	जीराका	जी री का
८३७/९	जौघ	जोध	१६	क्रम सख्या मे निम्न स्थान भरले	
८३८/१२	३९	४०			९२ क।२२६
१३	२२	२७	प्रमाण मे सवत लिखे १५७२-१६४२		
१३	२१	२६	२०	हेमकरन धनोली	छेमकरनधनौली
१६	के	से	२१	हेम	छेम
२०	वुध	वधू	२४	हेम	छेम
२२	पाण्डे	पाडे	८४४/१	मित्र	मिश्र
२४	चेतन	चेतन	८	आसफुद्दोल	आसफुद्दोला
८३९ ८	चक्राव्यह	चक्राव्यूह	८४५/१०	१०२	१०१
१३	१८७८	१८७८ ई०		१५३०	१५५९
१८	२७।	२७।९७४		१६०१	१६०९
,,	हृष्ठी	हठी	१२	१६४१	१६४९
,,	१२४७	१८४७	१३	४०१	४१०
१९	२२	२७	१७	१८१७	१७९७
२०	पाण्डे	पाडे	२३	नाथ ६	नाथ ७
८४०/५	२३	३०	२५	४४४	११० क।४४४
९	खोज,	,खोज	८४६/१	कौटा	कोटा
१२	विनोद,	,विनोद	२	४५१	४५९
१६	२४५	२५१		परमानन्दु	परमानन्द
८४१/४	२१	२९	११	६२	९२

पृष्ठ/पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ/पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१४	कालम १ मे भरे—१२३क /४६०		८५१/१२	कतित्त	कवित्त
	कालम २ मे भरे—पुड		२२	१८१७	१७६७
४६०/३३		×	२७	१५३०	१५५६
२४	वेती	वेती	२८	हौल	होल
३०	१६३२	देहात १५६२ के बाद किसी समय इनके पिता गदाधर भट्ट वृ दावन आए।	८५२/६	प्रस्यात	प्रख्यात
			१५	पुरे	पुर
			२५	मैसूर	भूसुर
			८५३/१०	प्राचीन २	प्राचीन १
८४७/१७	रत्नाकाकर	रत्नाकर	१८	लोथे	लोधे
२३	५८३	१५३ क । ५८३	८५४/४	भी।	भा हो।
,,	जितना हो सकते	चिन्ताखेरा वाले	१५	वृर्त्त	वृत्त
,,	पुस्तवाटिका	पुष्पवाटिका	२४	नियाज	निवाज
२६-३०	१७०५ अलकार प्रकाश	×	२५	नरोत्तमवाडी	नरोत्तम वाडी
	१७२३ छद हृदय प्रकाश	×	८५५/१६	११३	११७
८४८/६	चरखार	चरखारी	८५६/२७	२३६	२६का।२३६
११	६२५	१६३ क।६२५	८५७/५	२८६	३४का।२८६
,,	मूमनारायण	भूपनारायण	११	३४१	३६का।३४१
,,	कामूपुर	काकूपुर	८५८/२	४७७	५६का।४७७
,,	सुजाउद्दौल	शुजाउद्दौला	५	मुगिडला	मगिडला
१३	१८१७	१७६७	८५६/५	रनाचकाल	रचनाकाल
१६	लखेरा	लखेरा	८६०/२६	२१।८२	२१का।८२
८४६/३	१७५५ हजारा का	रचनाकाल	८६१/५	किंगर	किंकर
			,,	१८६०	१८१०
	१७४६ वधूविनोद का रचना काल		२१	कुसमडी	कुसमडा
४	१८१७	१७६७		१७०३	१८७०
२०	१७४१-७३	१७५६-१८०६	८६२/७	नियाज	निवाज
२५	खाँ	कायम खाँ	२२	वरदे	वरवै
८५०/४	भक्तमाल	भक्तमाल का	२४	मौज	भोज
१७	मिनगा	भिनगा	२४	मोन	भौन

८६५/६	७१८	७१२	८७५/६	भ्रमपूरण	भ्रमपूर्ण
१०	१९५१	१९×१	२३	ग्रार	ग्रौर
१६	६२३	९२३	८७९/६	बौधा	बोधा
२८	शङ्ककर	शङ्कर	१४	भुन	मून
८६६/२	१२४	१२७	८८०/१४	धनिया	वनिया
१३	खैतल	खेतल	१६,१६	सोभनाथ	सोमनाथ
८६७/१६	दयावेद	दयादेव	८८१/८	थे	ये
२४	१८१८	१८१९	८८२/२	सम्वन्थ	सम्वन्ध
२७	।३८६	४०का।३८६	१२	इतभाम घटा	इतमाम घटा
८६८/८	४६।	४६क	२३	जौ,सौ	जो,सो
१७	प्रवेश	ब्रजेश	२६	धिहारी	विहारी
२५	१८१७	१७९७	८८३/३	चतुर विहारी	चतुर विहारी
८६९/२	४०	८०	७	एतै	एते
	१६८१ बुद्धि वल कथा का रचना काल		८८४/७	उद्धत	उद्धृत
८७०/६	१७०९ के पूर्व		११	वल्लभ से	वल्लभ
			८८५/१	ब्रहा	ब्रह्मा
१०	।८३१	९६का।८३१	१६	महसिह	महा सिंह
८७१/११	१३०	१२८	१९	राजरूप का ख्यात	राजरूपकारयात
८७१/२४	हेमकरन	छेमकरन			
८७२/४	जगनैस	जगनेस	८८६/८	सरल	सरस
११	दैवी	देवी	८८७/१६	घना	धना
१३	४५।३८६ घोघेदास ब्राजवासी	×	२८	८९३	८३९
			८८८/६	वनाने	वनवाने
१८	वेन	वैन	१६	नार के पुत्र हथि के पुत्र	हरिनाथ
८७३/७	रामवरश	रामवख्श			
२०	११०।८३१ वाहिद	×	२३	ग्रय	ग्रयो
८७४/१३	११	११७	८८९/६	ग्राकूव खां	याकूब खां
८७५/६	कभा	कभी	८९०/१४	यह लाल	लाल

पृष्ठ/पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२७	गयी	गया
८९१/१७	उद्धृत	यह उद्धृत
१८-१९	वल्लभ नामक किसी शिष्य	पुत्र गोकुल नाथ'वल्लभ
८९२/११	किसी रीतिकालीन कविन्द सेन	सेख
८९६/७	के के	के
१३	कवि	कवियो
२३	२४	१४
२८	आदिकाल की	आदिकाल को
२९	जिनका	जिसका
८९८/२५	लाभ	लाभ हुआ
८९९/१३	भट्टकवि	भट्ट कवि
१७	श्रीधर,	श्रीधर
१८	सोभनाथ	सोमनाथ
२५	केवश	केशव
९००/	अतिम प क्ति हुआ है	दिया हुआ है
९०१/११	गिरिवर	गिरिधर
१२	द्विजदेव	द्विजदेव,
२४	ही नही	नही
९०३/१६	कृष्णा विहारी	कृष्ण विहारी
२३	सरोज	खोज
९०५/५	नादर्न	×
९०६/१६	पौदार	पोद्दार
९०७/१०	तोयनिधि	तोपनिधि
१३	शुकुल	सुकुल
१९	दुलह	दूलह
९०९/३	किशोर लाल	किशोरी लाल

पृष्ठ/पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
९१०/४	सस्था	सख्या
७	कविया	कवियो
८	अभिन्य	अभिन्न
१४	के	की
१५	उदाहृत	उदाहृत
१६	इसवी	ईसवी
२५	तदन्तर	तदनन्तर
९११/११	स०-	स०-सदिग्ध

नामानुक्रमणिका का शुद्धि-पत्र

कवि सख्या	अशुद्ध	शुद्ध
३	ए	रा
७,८	अजवैस	अजवेस
	१९१० री	१९१० र
११	२५	१५
	उष	उप
२१	१६०२	१६०२अ०
	१९१	१५९१
२४	१७१२	१७१२ ज
२९	१९९३	१९९३।र
३३	सभा	सूपा
	१९८५।	(१९८५।)
५८	उमैद	उमेद
६२	मजरी	मणि मजरी
६६	१७४०	१७४०अ०
६७	९२	९८
७९	कलानिधि १ प्राचीन	(कलानिधि१ प्राचीन) १०४

१०१	क्लीराम	कलीराम	२३३	२३१	२२१
११६	कृपाराम	कृपाराम १	२३५	१८७०	१८७०,अ०
११८	चम्पा	चम्पू	२५०	१६१३	१६१३ र
११९	कृपाराम वाले	(कृपाराम-वाले)	२५७	३४६ र	३४६।र
	१७९८ ग्र	(१७९८ग्र)	२६२	२६४	२६६
१२१	कृष्ण कवि	कृष्ण कवि १	२६७	'वि०' को तीसरे और '६०१।' को चौथे	
	१८०।अ	१८०।ज		कालम मे ले जायँ।	
१३१	सनाढ्य	सनाढ्य	२६९	(१७००उप)	(१६१३-६२उप)
१३३	९५ ग्रि	९५। ग्रि	२७०	जगामन	जगामग
१४५	र	रा	२७५	१९४० उप	(१९४० उप)
१४६	खुलाल	खुसाल	२७६	१२२	१३२
१४९	हेम	छेम	२८०,२८१	जगदेव	जयदेव
१५३	१८८३	१८८३ वि०	२८३	६०३।	६०३।ग्रि
१५४	१४२२।ज	१४२२।अ	२८४	१७००	१७०० रा
१६५	२०७९।	२०७९।,	२८५	३८७	२८७
१६८	१७७०	१७७० उप	२८९	जसन्त	जसवन्त
१७४	१४०३अ	१४०३।अ	२९८	ज	अ
१७५	कान्धा	काँथा	२९९	ज	अ
१७७	गुन सिंघ	गुनसिंघु	३०१	ज	अ
१७८	खाण्डी	साडी	३०२	१७७४०	१७४०
१८३	पाण्डे	पाडे	३०५	१७०१	१६०१
२०९	८२२	८२०	३१०	यसी	यती
२१५	१६३५	१६३५अ०	३१४	१७००	१७०० अ०
२२२,२२३	५४९।१७६१र	(५४९।१७६१र)	३२४	७५७	७५७)
२२४	३७४ उप	३७४।उप	३३५	प्रानीन	प्राचीन
२२५	२२९	२३९	३५०	वेनीमाघवदास	वेनीमाधवदास
	१६३८	१६३८अ०		पलका	पमका
२२७	१६०५	१६०५ उप	३६४	काष्ठी	काष्ठ

३६४	उप	उप)	५३५	१७२६ र	१७२६ रें,
३६९	पूर्व	पूर्व)	५४०	वुदेला)	वुदेला
३८१	१९३०म,उप	१९३० अ०	५४१	र	रा
३८८	२८६८	१८६८	५४४	भ	म
३९०	घवल	धौंकल			
३९८	३९७,	३९७।	५४६	विधादास	विद्यादास
४०३	नरेद्र	नरेन्द्र	५६०	१८८६	१७८६
	उप	उप,	५७१	तेमरीता	सेमरौता
४१३	१८७३ १९२६ र १८७३	१९२६	५७२	१६७०	१६७० अ०
			५७३	वैद्य	बैंचू
४२०	१८२ ग्र	१८२६ग्र	५७५	वेती	बेती
४२४	१७२१	१७२०			
४३७	निावज	निवाज	५८२	वौध	वोध
४४२	नीलसखी	(नीलसखी)११		वुन्देखण्डी	वुन्देलखण्डी
४४९	लखनऊ	डलमऊ	५८३	वौधा	वोधा
४६२	परमानन्न	परमानन्द	५८४	वौधीराम	वोधीराम
४६८	४५५	४४५	५८७	ब्रजलाला, गोकल	ब्रज, लाला
४७९	पूख	पूथ		प्रसाद	गोकुल प्रसाद
४८३	३८९	३८१		३३	५३३
४९३	९७२	९७१	५९१	८४८।ज	२७४।र
४९७	१९२८।र	१९२८ र	६०१	५५	५१५
४९९	इ०	ई०		१८१७	१७९७
५०३	१९०२	१९०१	६०४	म	ज
५०८	१९०१	१९०१ उप	६०६	१७५५ ग्र	१७५५ ग्र)
५१०	५७।	५७४	६११	४०९	५०९
५१४	२२४९	१२४९	६१९	कोक	काकू
५१९	७१५	७१५।		१११२	११५२
५२१	१६००	१६०० ज	६२६	११४१	११४२
५२७	१७८१	१६८१	६२८	१८६	१८९६
५२९	४८०।ज	४८०।ज,			
५३०	वावेश	वाजेश	७४२	फतहावादी	फतूहावादी

६४६	१८२३	१८२३ ज	८०६	७२३	७२३।
६६०	८०१।६२० र	८३।१६२० र	८०७	१७०६ से पूर्व	१६८१ ग्र
६७५	उप्र इ०	उप		१८५०।१७६१	१८५० र
६७६	ई०	म	८१३	ग्रि	।ग्रि
६८०	८६२-	(१८६२-१६०३र)	८२८	लौधे	लोधे
	१६०३र		८२६	लौने	लोने
६८७	१६८० अ०	१६८०		वुन्दलखडी	वुन्देलखडी
६६३	अ	ज	८३०	लौंने	लोने
७०६	१५६ स०	१५६। स०	८३३	तीसरे कालम मे जोडिए	(१५६७ज
७०७	मुरली घर	मुरली घर			१६६५म)
७०६	मुसाहवराजा,	मुसाहव राजा	८४२	डाडियाखेरा	डौंडियाखेरा
७१२	मैधा	मेधा	८४५	१७११६ अ	१७१६। अ
७१६	१८१	७८१	८५३	शिवद	शिवदत्त
	१८७०	१८०७	८५७	मिनगा	भिनगा
७२०	१७६६-१८०७ र	१७६६-१८०७र	६२०	असोघर	असोथर
७२२	रघुनाथ प्राचीन	(रघुनाथ प्राचीन) ७३८	६२८	सीरताज	सिरताज
				व	वाले
			६३२	सुवदेख	सुखदेव
	१७१०	१७१० अ०	६३६	स०	। स०
७२३	अ	ज	६३६	७४०	७३०,
७२६	रघुनाथ रीव ,	रघुराज रीवा	६४०	स०	। स०
७४१	१६२५	१६१५	६४४	८८	८८७
७६१	१६८०	१६८० उप	६५२	सख	सेख
७६२	राजाराम २	(राजाराम२)७७४	६५३	सैन	सेन
	१७८८	१७८८अ०	६६२	१६३६	१६३६म
७७४	टिकमपुर	टिकमापुर	६६३	१७०५	१७०५अ०
७७६	स०	।स०	६७१	हरिजन	(हरिजन) १००१
७६६	रुद	रुद्र		१६६०	१६६० अ०
७६८					